रजि. नं. एन. पी. 17504/58

ऋग्वेद | कृणवन्तो ओ३म् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

दूरभाष · 292926

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–55 अंक : 27 सृष्टि संवत 1960853102, 6 तथा 13 जनवरी 2002 दयानन्दाब्द 178

"सत्यार्थ प्रकाश" के सप्तम् समुल्लास में:-

ईश्वर के विषय में महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घाटित कुछ सत्य

❑ *ले० श्री इन्द्रजित्, पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर-135001*

संसार में कुल तीन तत्व हैं-प्रकृति, जीव व ईश्वर। यह वैदिक मान्यता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थ रत्न "सत्यार्थ प्रकाश" में इन तीनों में से सर्वाधिक ईश्वर विषय का व्याख्यान किया है। ग्रन्थ के कुल 14 समुल्लासों में से 2 समुल्लासों (प्रथम व सप्तम समुल्लास) में ईश्वर की सिद्धि, ईश्वर के नाम, काम, ईश्वर का धाम व ईश्वर के स्वरूप आदि के विषय में अत्यन्त उपयोगी व गहन-गम्भीर सत्य उद्घाटित किए हैं। ये सत्य न उनके स्वनिर्मित हैं, न ही किसी अनाप्त और अनार्ष पुस्तकों-ग्रन्थों से लिए गए हैं। विपरीत इसके ये सभी सत्य वेद व आर्ष ग्रन्थों पर आधारित हैं। यह इनकी प्रथम विशेषता है।

जिस समय महर्षि दयानन्द कार्य क्षेत्र में अवतरित हुए, उस समय की परिस्थितियां ऐसी थीं कि ईश्वर का सही स्वरूप प्राय: लुप्त व गुप्त हो चुका था। जब वेद, जोकि ईश्वर की अपनी वाणी या कहें अपना दिया ज्ञान है, वही लुप्त था तो उसके अभाव में कोई कुछ भी कह दे या लिख दे, उसकी परीक्षा करना ही असभव था। जब दुकान पर तराजू न हो तो दुकानदार की ईमानदारी पर विश्वास क्यों व कैसे किया जा सकता है? बेईमान दुकानदारों द्वारा बिना किसी तराजू के, बिना किसी कसौटी के माल बेचना सभ्य समाज में तो सभव व उचित नहीं है। किसी असभ्य, अशिक्षित व अपठित समाज में संभव व उचित हो सकता है, मान्यता अवश्य प्राप्त कर सकता है। महर्षि द्वारा उद्घाटित इन सत्यों की विश्वसनीयता का आधार यह भी है कि महर्षि ने अपनी योग साधना से स्वयं अनुभव करके, उनको परख कर ही इनका उद्घाटन किया है अर्थात् पूर्व ऋषियों व वेदों द्वारा प्रतिपादित ईश्वर के स्वरूप का वर्णन मात्र ही इनकी विशेषता नहीं है, अपितु अनुभव जन्य तथ्यों-सत्यों का उद्घाटन भी इनकी विशेषता है। ईश्वर सम्बन्धी ये मान्यतायें तर्क पर आधारित और बुद्धिगम्य हैं। महर्षि के अनुसार ईश्वर कोई शरीरधारी व्यक्ति न होकर एक निराकार चेतन शक्ति है। इस आधारभूत सिद्धान्त को स्वीकार कर लेने के पश्चात् ही उसके अस्तित्व, स्वरूप और कार्यों आदि के विषय में सभी प्रकार की शंकाओं का समाधान किया जा सकता है।

इस लघु निबन्ध द्वारा हम अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार ईश्वर व वेद सम्बन्धी कुछ सिद्धान्तों व मान्यताओं का प्रतिपादन महर्षि दयानन्द के अनुसार करने का प्रयास कर रहे हैं।

ईश्वर एक ही है

प्रश्नोत्तर शैली में महर्षि जी ने जो सत्य ईश्वर-सम्बन्धी उद्घाटित किए हैं, उनमें प्रथम यह है कि वह एक ही है, दो, चार या अधिक नहीं। वेदों में जब ईश्वर स्वयं घोषित करते हैं कि मैं (=ईश्वर) एक हू तो फिर अधिक ईश्वर होने पर विश्वास ही क्यों किया जाए? अन्यत्र जहां कहीं एक से अधिक ईश्वर होने की बात लिखी है, वह पौरुषेय है व ईश्वर के अपने वचन के विपरीत होने से सर्वथा अमान्य है। किसी भी वेद में यह नहीं लिखा कि ईश्वर एक से अधिक है, हां यह अवश्य लिखा है कि वह एक ही है:-

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।
न पञ्चमो न षष्ठ: सप्तमो नाप्युच्यते।
नाष्टमो न नवमोदशमो नाप्युच्यते।
स एक एव एकवृदेक एव॥
अथर्ववेद 13-4-16-18

प्रजापति न त्वेदतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।....
-ऋग्वेद 10-121-10

हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पति: एक: आसीत।
-य 13-4 ऋ-20-121-2, अ 4-8-8

इन वैदिक प्रमाणों के होते हुए भी यदि कोई व्यक्ति दो या अधिक ईश्वरों की बात करता है तो वह नास्तिक है अर्थात् ईश्वर को मानता ही नहीं। सर्वशक्तिमान् होने का गुण भी ईश्वर में ही है जिसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर अपने सभी कार्य बिना किसी की सहायता के स्वयं ही करने की सामर्थ्य रखता है फिर दूसरे ईश्वर की कल्पना करना सृष्टि-नियमों के भी विपरीत सिद्ध होता है। एक से अधिक ईश्वर होने को हम सिद्धान्त मान लेगे तो अनेक ऐसे प्रश्न उत्पन्न हो जाएगे जिनके उत्तर नही बन पायेगे। इसी निबन्ध मे आगे जब ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, इसकी व्याख्या का प्रसंग आएगा, तब हम इन प्रश्नों का विवरण देंगे। आरम्भ में ईश्वर की संख्या आदि का निर्णय करना ही अभीष्ट व पर्याप्त है।

नास्तिक ने जब मान लिया कि ईश्वर एक ही है, तब उसके मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि लोक में यह भी मान्यता फैली है कि देवता 33 कोटि हैं वे ईश्वर हैं। इसका निराकरण करने के उद्दश्य से महर्षि ने लिखा है कि:-

देवता ईश्वर नहीं हैं। ईश्वर महादेव अवश्य है।

प्रश्न:-वेदों में यत्र-तत्र देवों का वर्णन आया है तो कैसे माना जाए कि ईश्वर एक ही है?

उत्तर:-ये पृथ्वी, अग्नि, वायु आदि 8 वसु, प्राण, अपान, धनजय और जीवात्मा आदि 11 रुद्र, सम्वत्सर के 12 महीने 'बारह आदित्य', इन्द्र व प्रजापति (=बिजली व यज्ञ), ये 33 प्रकार के देव इस कारण से हैं क्योंकि 'देवता' दिव्यगुणों से युक्त होने के कारण कहाते हैं, न कि ईश्वर होने से। ऋ म. 1 (सूक्त 164-मं. 36 का निम्नलिखित मन्त्रांष भी इस कथन का प्रमाण है:-

यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदु: । ...

अर्थात् सब देव जिसमें अधीन होकर रह रहे हैं, वह ईश्वर है। इससे सिद्ध है कि 33 प्रकार के देव ईश्वर में स्थित तो हैं परन्तु वे स्वयं ईश्वर नहीं हैं। हां, इन सब देवों का देव होने से ईश्वर 'महादेव' अवश्य है क्योंकि वही सब जगत् की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलयकर्त्ता है।

देवों की दिव्यता अर्थात् दिव्यगुणों का आधार व आदिमूल कारण ईश्वर स्वयं है। इन देवों को बनाने वाला व चलाने वाला ईश्वर ही है। अत: वह महादेव है।

ईश्वर अमर है, नित्य है, अपराजेय है।

ऋ म 10-सूक्त 42-मन्त्र 5 को उद्धृत करके महर्षि ने यह उद्घाटित किया है कि ईश्वर नित्य है, अमर है उसकी कभी भी पराजय नहीं होती। मन्त्र इस प्रकार है:-

अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धनं
न मृत्यवे वतस्थे कदाचन।
सोममिन्मो सुन्वन्तो याचता वसु
न म पूरव· सख्ये रिषाथन।

ईश्वर की मृत्यु इसलिए नहीं होती क्योंकि उसका जन्म हो नहीं होता। जिसका आरम्भ होगा, उसी का अन्त होता है। ईश्वर तो अनादि है, अत: अनन्त भी है। सृष्टि में सभी पदार्थ उसके बनाए हैं। केवल उसी में उनके बनाने की शक्ति है। पराजय उसी की होती है जो अल्प शक्ति, अल्प साधन व अल्प ज्ञान वाला हो। कोई अन्य अधिक शक्ति, अधिक साधन व अधिक ज्ञान सम्पन्न है ही नहीं तो ईश्वर की पराजय होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। अधिक शक्ति, साधन व ज्ञानादि होने की तो बात दूर की है, कोई ईश्वर के तुल्य भी नहीं है। लोक में कुछ मनुष्य साधन, शक्ति व ज्ञानादि से सम्पन्न जो है, वे ईश्वर की अपेक्षा से कुछ भी नहीं है तथा ये वस्तुएं भी उनकी अपनी न होकर ईश्वर प्रदत्त ही है। जीव का अपना तो कुछ भी नहीं है। ईश्वर अपराजेय भी इसी आधार पर है। (क्रमश:)

आर्य भारत के आदिवासी (मूल निवासी) हैं

❑ ले० श्री स्वामी वेद मुनि परिव्राजक अध्यक्ष-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ. प्र.)

पराधीनता के युग में जब भारत पर अंग्रेजों का शासन था तो उन्होंने दीर्घकाल तक भारत पर शासन करने की दृष्टि से भारत के इतिहास और उसकी संस्कृति को मिटाने के लिए योजनाबद्ध कार्य आरम्भ किया।

एक ओर तो लार्ड मैकाले की योजनानुसार एक शिक्षा पद्धति भारत में प्रारम्भ की, जो अभी तक चल रही है, जिसका उद्देश्य भारत में अंग्रेजी राज्य के लिए लिपिक तैयार करना था। दूसरे उस शिक्षा पद्धति में पढ़ाये जाने के लिए भारतीय इतिहास के नाम पर भारतीय इतिहास से नितांत असम्बद्ध तथा भारतीय इतिहास विरोधी स्व-कल्पित इतिहास लिखा और भारतीयों को पढ़ाना प्रारम्भ किया, जिससे भारतीय अपने इतिहास से प्राप्त होने वाले अपने अतीत गौरव को भूल जायें।

दूसरा कार्य अंग्रेजो ने भारतीयों को मिटाने का किया और इस कार्य के लिए जर्मन अध्यापक मैक्समूलर को इगलैंड में बुलाकर उससे भारतीय संस्कृति के मूलाधार वेदों के भ्रष्ट अर्थ कराने प्रारम्भ किये। अंग्रेज यह समझते थे कि इस कार्य से भारतीयों के मन में वेद के प्रति घृणा उत्पन्न करके तथा तत्पश्चात् भारतीयों को ईसाइत के रंग में रंग कर ब्रिटिश साम्राज्य को भारत में स्थाई किया जाए।

किन्तु खेद तो यह है कि अंग्रेजों के चले जाने के पश्चात् पांच दशाब्दी बीत जाने पर अभी तक भारतीयों को वही शिक्षा मिल रही है और इतिहास के नाम पर वही कुछ पढ़ना पड़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप इस शिक्षा और इतिहास से अनुप्रमाणित भारत के वर्तमान तथाकथित इतिहासवेत्ता अभी भी भारत को आर्यो का आदि देश और आर्यो को भारत के मूल निवासी मानने को तैयार नहीं। यह लोग इतने कूप-मंडूक हो गये हैं कि इनकी कूप-मडूकता दुराग्रह का रूप धारण कर चुकी है। इतना दुराग्रह कि भारतीय पक्ष को सुनने, उसके प्रमाण जान लेने के पश्चात् निरुत्तर होकर भी बिना किसी तर्क और प्रमाण के अपनी बात पर खड़े रहते हैं। निकृष्ट कोटि की कट्टर वादिता और दुराग्रह है। इससे जहां यह लोग जान-बूझ कर स्व-इतिहास से अनभिज्ञ रहना चाहते हैं, वहां भावी सन्ततियों को भारतीय इतिहास और संस्कृति से अनभिज्ञ रखने के दुष्प्रयास में लिप्त रहकर जाति को पतन और विनाश के गर्त में धकेलने का पाप भी करते हैं।

हमारा कहना यह है कि आर्य भारत के मूल निवासी हैं। आर्यो के यहां के मूल निवासी होने के कारण ही इस देश का सबसे पहला नाम आर्यवर्त्त है। यदि आर्य कहीं बाहर से यहां आते और उनके जाने से इस देश का नाम आर्यवर्त्त होता तो आर्यो के जाने से पहले कोई अन्य नाम होना चाहिए था। परन्तु तथ्य यह है कि आर्यवर्त्त से पहले इस देश का कोई दूसरा नाम नहीं था।

समस्त भूगोल में कोई भी भूखण्ड ऐसा नहीं है कि जहां पर मानवी सृष्टि हो और उसका कोई नाम न हो। मनुष्य के रहने की बात छोड़िये, यदि किसी ऐसे भूखण्ड का मानव को पता लग जाता है, जिस पर मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी आदि भी उसे न मिलें तो वह उसका कोई नाम रख लेता है। फिर यह किस प्रकार सम्भव हो सकता है कि इस भूखण्ड में आर्यो से पहले मनुष्यों की एक बड़ी संख्या निवास करती थी किन्तु इतने पर भी इसका कोई नाम नहीं था? क्या यह इतिहास और भूगोल दोनों के साथ स्वीकार न करने मिथ्याचरण नहीं है? और क्या यह इतिहास और भूगोल को न समझने की अल्प बुद्धि तथा ऐतिहासिक और भौगोलिक अयोग्यता का प्रमाण नहीं है?

एक और बात यह है कि यह देश आर्यो का आदि देश तो है ही-साथ ही आर्यो का केन्द्र भी है। यह इतिहास की सत्यता भी आर्यवर्त्त शब्द में ही निहित है। आर्य+आवर्त्त अर्थात् आर्यों का केन्द्र। इससे यह सिद्ध होता है कि न केवल यह देश आर्यों का आदि देश है अपितु आर्यों का केन्द्र भी नहीं है। इसी भूखण्ड से आर्य लोग भूगोल के अन्य भागों में जाकर बसे और कालान्तर में जलवायु के प्रभाव तथा स्व-मूल आर्यवर्त्त से दूर हो जाने तथा दीर्घकाल बीतने पर आर्य-परम्परा से विच्छिन्न हो जाने पर विविध जातियों में विभाजित हो गये।

वास्तविकता यही है कि भारत आर्यों का आदि देश है और आर्य यहां के मूल निवासी हैं तथा द्रविड़, कोल, किरात, शक, यवन, कम्बोज आदि सभी आर्यों के क्षत्रिय वर्ण में से हैं और खान-पान, आचार-विचार आदि से भ्रष्ट हो जाने के कारण यह सब लोग अलग-अलग वर्गों में बंट गये तथा पृथक-पृथक नामों से पुकारे जाने लगे।

यह पश्चिमीय दृष्टिकोण के इतिहासज्ञ सिन्धु घाटी की सभ्यता को आर्यों से प्राचीन बताते हैं। इनका कहना है कि आर्यो ने आकर सिन्धु-सभ्यता को विनष्ट किया। यह भी कहते हैं कि सिन्धु-सभ्यता पांच सहस्त्र वर्ष पुरानी हैं। स्वर्गीय डाक्टर सम्पूर्णानन्द के अनुसार वेदों का समय 18000 वर्ष पुराना है। यदि सिन्धु सभ्यता को पांच सहस्त्र वर्ष पुराना मान भी लिया जाये तो भी डॉ0 सम्पूर्णानन्द की मान्यता के अनुसार आर्य सभ्यता तथा कथित सिन्धु सभ्यता से तेरह सहस्त्र वर्ष पुरानी सिद्ध होती है। दूसरी ओर इस समय ईसवीं सन् 2000 में कलि सवत 5100 आर्थात महाभारत को जो कि कलियुग के प्रारम्भ से पहले और द्वापर के अन्त में हुआ था-कम से कम 5100 वर्ष बीत रहे हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि महाभारत युद्ध सिन्धु-सभ्यता से कम से कम एक शताब्दी पूर्व अवश्य हुआ था। महाभारत आर्य इतिहास है, वह न तो सिन्धु-घाटी सभ्यता का इतिहास है और न द्रविड़ इतिहास।

सिन्धु-घाटी की खुदाई में जो सील-मोहरें मिली हैं उनमें से एक सील पर एक वृक्ष का चित्र है। उस वृक्ष पर दो पक्षी चित्रित है। एक उस वृक्ष के फलों को खा रहा है और दूसरा उस खाते हुए को देख रहा है, खा नहीं रहा। इस सील के इस चित्र का आधार ऋग्वेद का मन्त्र है, जिसमें प्रकृति को वृक्ष मानकर उस पर जीवात्मा और परमात्मा को पक्षी-रूप में वर्णित किया है और इस प्रकार यह दिखाया गया है कि जीव प्रकृति के पदार्थों को भोगता है और परमात्मा केवल उसका द्रष्टा है।

मन्त्र इस प्रकार है-

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्धत्यनश्नन्नन्यों अभिचाकशीति॥

ऋग्वेद 1/164/20

यह सील यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि आर्य सभ्यता सिन्धु-सभ्यता से पुरानी है। यदि यह मान लिया जाये कि सिन्धु-घाटी के लोग इस मोहर का प्रयोग करते थे, यह उन्हीं की मोहर है तो यह अपने आप सिद्ध हो जाता है कि सिन्धु-सभ्यता आर्य-सभ्यता का उत्तर कालीन विकृत रूप मात्र है।

एक और बात ध्यान देने की यह है कि उक्त खुदाई में शिवालिंग पाये गये हैं। हिन्दुओं अर्थात् वैदिक आर्यो को छोड़कर शिवलिंग पूजा अन्यत्र कहीं नहीं होती। इससे भी यही सिद्ध होता है कि सिन्धु घाटी वासी आर्यो से पृथक नहीं थे।

यह भी ध्यान देने की बात हे कि वैदिक आर्यो में मूति पूजा जैनियों से चली है। इससे पहले मूर्ति पूजा नहीं थी। आचार्य शंकर ने अनीश्वरवादी जैनियों की नग्न मूर्तियों की ओर से तत्कालिक सर्व-साधारण जन का ध्यान हटाने और वैदिक धर्म के ईश्वरवाद की ओर लाने के लिये शृंगारमय लक्ष्मीनारायण की मूर्त्तियों का प्रचलन कराया था। तत्पश्चात् यहां विविध मूर्तियों की पूजा आर्यो हिन्दुओं में प्रचलित हो गयी। स्मरण रहे कि जैनमत केवल पच्चीस सौ वर्ष का है और शंकराचार्य का प्रादुर्भाव तब हुआ, जब जैनमत बड़े वेग के साथ भारत में फैल रहा था। सिन्धु-घाटी की खुदाई में शिवलिंग का पाया जाना यह सिद्ध करता है कि सिन्धु-सभ्यता पच्चीस सौ वर्ष से भी अर्वाचीन ही है, प्राचीन नहीं। इस प्रकार महाभारत इस तथा कथित

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय.....

गणतन्त्र दिवस

हमारे देश में कई पर्व मनाए जाते हैं उनमें दो पर्व राष्ट्रीय पर्व भी हैं। एक 26 जनवरी गणतन्त्र दिवस व 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस। इन दोनों पर्वों को बड़े उत्साह से सारे देश में मनाया जाता है। इस बार भी 26 जनवरी को सारे देश में गणतन्त्र दिवस मनाया जा रहा है। इस दिन को मनाते हुए हमें देश की वर्तमान स्थिति पर विचार करना चाहिए और हमारे राज नेताओं को विशेष रूप से इस ओर ध्यान देना चाहिए।

भारत देश एक महान देश है परन्तु आपसी फूट के कारण यह वर्षों गुलाम रहा है। मुहम्मद गौरी तथा दूसरे मुगल राजाओं ने इस देश पर अनेकों हमले किए उन्हें हर बार मुंह की खानी पड़ी। उस समय देश छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। सैंकड़ों छोटे-बड़े राजा बने बैठे थे। उस समय पृथ्वी राज चौहान एक शक्तिशाली राजा था जिसने मुगलों के हमलों का मुंह तोड़ जवाब दिया था परन्तु जयचन्द जैसे देशद्रोही भी उस समय देश में विद्यमान थे। जयचन्द ने गद्दारी की 17 बार पृथ्वीराज से हारने वाला गौरी आखिर आपसी फूट के कारण पृथ्वीराज चौहान को हराने में सफल हो गया। धीरे-धीरे भारत गुलामी की तरफ बढ़ा और मुगलों का गुलाम हो गया। मुगलों के साथ-साथ अंग्रेजों ने यहां अपना कदम रखा और उनकी फूट डालो और राज करो की नीति सफल हुई। उन्होंने भारत के हिन्दू और मुसलमान राजाओं में फूट डलवा कर सारे देश पर अपना अधिपत्य जमा लिया।

सन् 1857 में स्वतन्त्रता के लिए सारे भारत में एक स्वतन्त्रता आन्दोलन आरम्भ हुआ। अंग्रेजों ने इसे गदर का नाम दिया परन्तु अंग्रेज इसे दबाने में सफल हो गए।

स्वतन्त्रता की जो चिंगारी 1857 में आरम्भ हुई थी वह निरन्तर सुलगती रही और सन् 1919 में यह संघर्ष तेज हो गया आखिर 15 अगस्त 1947 को अंग्रेज भारत छोड़ कर चले गए और भारत भारतीयों के हवाले हो गया। परन्तु अंग्रेज जाते-जाते भारत का विभाजन कर गए और जाति के आधार पर पाकिस्तान नाम से भारत में ही एक नया देश दुनिया के नक्शे पर आ गया। 1947 से लेकर आज तक भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध आपस में सुधरे नहीं हैं।

पिछले लगभग 20 वर्ष से भारत में आतंकवाद फैला हुआ है और इसके पीछे पाकिस्तान का हाथ है। यह भारत सरकार कई बार स्पष्ट कर चुकी है परन्तु पाकिस्तान सरकार फिर भी इसे हवा दे रही है, इसी का परिणाम है कि गत दिनों आतंकवादियों ने दिल्ली मे असैम्बली भवन पर हमला कर दिया भले ही हमलावर मारे गए और अपने मनसूबों में कामयाब नहीं हुए परन्तु उन्होंने अपनी ओर से कोई कसर उठा नहीं रखी। जम्मू-काश्मीर में प्रतिदिन आतंकवादियों द्वारा बेकसूर लोगों की हत्याएं हो रही हैं। देश के अन्य भागों में भी आतंकवाद फैलता जा रहा है।

आज देश को अन्दर-बाहर दोनों ओर से खतरा है। ऐसी अवस्था में 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस मनाते हुए हमें अपने देश की वर्तमान स्थिति पर विचार करना चाहिए और देश की रक्षा के लिए व्रत लेना चाहिए। प्रत्येक भारत वासी का यह परम कर्त्तव्य है कि वह अपने देश की रक्षा व सुरक्षा के लिए विचार करे। हमारे देश के सभी राज नेताओं व राजनैतिक पार्टियों को 26 जनवरी को संकल्प लेना चाहिए कि हम देश की अखण्डता व रक्षा के लिए एक जुट होकर कार्य करेंगे। यह हमारे देश के लिए संकट की घड़ी है और संकट की इस घड़ी में सभी राजनैतिक पार्टियों को अपने मतभेद भुला कर देश की रक्षा व सुरक्षा के लिए आगे आना चाहिए।

26 जनवरी का राष्ट्रीय पर्व मनाना तभी सार्थक होगा यदि हम सभी इस दिन देश की सुरक्षा व रक्षा का व्रत लें।

—धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

अखिल भारतीय स्वामी श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामैंट

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में पं. हरबंस लाल शर्मा के पदार्पण में समस्त गुरुकुल वासी पूर्ण आशान्वित हैं कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपनी पुरातन परम्पराओं को शताब्दि वर्ष में पुनर्जीवित कर पाने में सक्षम हो पाएगा। इस कड़ी में श्रीयुत कुलाधिपति जी के भागीरथी रूपी आशीर्वाद से वर्षों से समाप्त हो चुकी पुरातन सभ्यता पुनर्जीवित होने जा रही है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के हॉकी क्रीड़ा स्थल में दिनांक 24/27-1-2002 से अखिल भारतीय आमंत्रित स्वामी श्रद्धानन्द हॉकी टूर्नामैंट हर्षोल्लास के साथ शुरू होने जा रहा है। विस्तृत कार्यक्रम आपको शीघ्र प्रेषित कर दिया जाएगा।

इस टूर्नामैंट में उत्तर भारत एवं देश के अनेकों राज्यों से अनेकों राष्ट्रीय स्तरीय टीमें आ रही हैं। माननीय श्री सुदर्शन शर्मा जी उपप्रधान एवं श्री देवेन्द्रनाथ शर्मा रजिस्ट्रार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कुशल मार्ग दर्शन के कारण हम टीमों को समस्त सुविधाएं देने मे सक्षम हो सके हैं।

गत कई वर्ष से यह टूर्नामैंट बंद हो गया था हमारे बार-बार कहने पर भी इस ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा था। हमें प्रसन्नता है कि गुरुकुल के वर्तमान अधिकारियों ने इस कार्य में हमारा उत्साह बढाया है। अखिल भारतीय स्वामी श्रद्धानन्द हॉकी टूर्नामैंट गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के तत्वावधान में यह कार्य आरम्भ हो गया है।

—करतार सिंह, सैक्रेटरी

सभी आर्य बन्धुओं का धन्यवाद

नव वर्ष 2002 के आगमन पर कई आर्य बन्धुओं तथा आर्य महानुभावों व शिक्षा संस्थाओं के प्रिंसिपलों व अधिकारियों की ओर से मुझे कई बधाई पत्र मिले हैं। वैसे हमारा नव वर्ष नव संवत्सर से आरम्भ होता है परन्तु अधिकतर लोग प्रथम जनवरी से ही नव वर्ष मानते हैं और अपने मित्रों आदि को बधाई पत्र भेजते हैं। मुझे जिन महानुभावों ने बधाई पत्र भेजे हैं मैं उनको अलग से पत्र नहीं डल पा रहा इसलिए आर्य मर्यादा द्वारा उन सबका धन्यवाद करता हूं और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह यह वर्ष सभी के लिए मंगलमय बनाए। सबको निरोगता व स्वस्थ प्रदान करे। यह वर्ष सबके लिए शुभ, मंगलकारी व कल्याणकारी हो और खुशियां और प्रसन्नताएं प्रदान करने वाला हो।

—हरबंस लाल शर्मा, सभा प्रधान

(पृष्ठ 2 का शेष)

सिन्धु-सभ्यता से न्यूनाधिक लगभग तीन सहस्त्र वर्ष पूर्व का सिद्ध होता है।

डा फतह सिंह का कहना है कि सिन्धु-सभ्यता उपनिषद कालीन है। उपनिषदें वेद से बाद की हैं। उपनिषदों में से सबसे प्रथम कहलाने वाली ईशोपनिषद् थोड़े से रूपान्तर के साथ यजुर्वेद का 40वां अध्याय ही है। इससे भी आर्य-सभ्यता सिन्धु-सभ्यता से बहुत प्राचीन सिद्ध होती है।

महामहोपाध्याय श्री प सदाशिव शास्त्री के मत में "महाभारत युद्ध के पश्चात् भारतीय सभ्यता हरासोन्मुख हुयी। सिन्धु-घाटी से प्राप्त अवशेष इसी विनष्ट वैदिक सभ्यता के चिन्ह हैं।"

आधुनिक युग प्रवर्तक तथा बीसवीं शताब्दी के अद्वितीय वैदिक विद्वान् महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दों में महाभारत युद्ध रो एक सहस्त्र वर्ष पूर्व ही भारत मे बिगाड पैदा हो चुका था। इसका अर्थ है कि महर्षि छ: सहस्त्र वर्ष पूर्व से अर्थात् ईसा से कम से कम चार सहस्त्र वर्ष पूर्व आर्य-सभ्यना में विकृति आना स्वीकार करते हैं। यह बात महर्षि ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में लिखी है। इस ग्रन्थ का पहला सस्करण 1875 ईसवीं में छपा था। अब 2000 में 125 वर्ष इसे छपे भी हो गये। इस प्रमाण से भी आर्य-सभ्यता सिन्धु-घाटी की सभ्यता से बहुत पुरानी सिद्ध होती है।

इन्हीं महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्याहरवें समुल्लास के अन्त में युधिष्ठिर से यशपाल पर्यन्त 4157 वर्ष राज्य करने वाले राजाओं की क्रमबद्ध सूची दी है।

यशपाल पृथ्वीराज चौहान की पांचवी पीढ़ी में वर्णित है। पृथ्वीराज को एक सहस्त्र वर्ष के लगभग हो रहे हैं। इस प्रकार महाभारत पांच सहस्त्र वर्ष से अधिक समय पूर्व सिद्ध होता है। रामायण युद्ध जो महाभारत से पहले हो चुका है, उसे एक करोड़ इक्यासी लाख उन्नचास एक सौ सहस्त्र 181,49,100 वर्ष बीत रहे है। रामायण भी आर्यों का ही इतिहास है, इसके सम्मुख सिन्धु-सभ्यता कल परसों की बात है।

लेख का कलेवर अधिक बढ़ाना हमें अभिप्रेत नहीं है। यदि संकल्प से आगे वर्णन किया जाये तो आदि सृष्टि तक ही आर्य इतिहास पहुंचेगा। हमारा उद्देश्य इस लेख में केवल यह सिद्ध करना था कि सिन्धु-सभ्यता यदि कोई थी तो वह अवाचीन ही थी और भारत के मूल निवासी आर्य ही हैं, कोई अन्य जाति नहीं। सत्य तो यह है कि आर्यो से पहले संसार में कोई अन्य जाति थी ही नहीं। आर्य जाति ही विश्व की सर्वप्रथम, सबसे प्राचीन और आदि कालीन मानव जाति है। सिन्धु-घाटी की सभ्यता नाम की कोई सभ्यता कभी नहीं थी। कहीं किसी खुदाई में किसी समय के अवशेष निकल जाने से किसी ऐतिहासिक तथ्य की कोई विशेष उपलब्धि नहीं कही जा सकती। किसी स्थान विशेष पर किसी बस्ती के खण्डहर होने के पूर्व की किसी ऐतिहासिक वस्तु की प्राप्ति का साधन भले ही बन जाये, किन्तु किसी जाति विशेष के इतिहास वर्णन का साधन सिद्ध हो, यह कल्पना मिथ्या है और केवल आर्य जाति को अर्वाचीन सिद्ध करने और स्वयं को इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने की योरुप निवासियों की कपोल-कल्पना तथा उनका इतिहास निर्माण का मिथ्या और असफल प्रयास हैं।

जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं, अन्य समस्त भारतवासी भी आर्य-सन्तान ही हैं और कलान्तर में आर्य लोग देशाटन, पर्यटन और व्यवसाय आदि की दृष्टि से भूमण्डल के अन्य देशों में गये तथा उनमें से बहुत से लोग वहीं बस गये। देश-काल की परिस्थितियों से उनके आचार-विचार और खान-पान में परिवर्तन हुआ। वही आर्य सन्तानें विविध नामों से पृथक-पृथक जातियों के रूप में विभक्त हो गयीं और उन्हीं में से कुछ लोग पुन: भारत आये, जो इतिहास में यमन-तुर्क आदि नामों से जाने जाते हैं।

अन्त में आर्य जाति की प्राचीनता के प्रमाण में हम आर्य परिवारों में विवाह आदि संस्कारों के अवसरों पर पुरोहितों द्वारा उच्चारण किया जाने वाला संकल्प पाठ देकर इस लेख को समाप्त करते है। यह संकल्प आर्य-इतिहास को लगभग दो अरब वर्ष का बताता है, जो मानव जाति की आयु का प्राचीनतम इतिहास है। ऐतिहासिक काल की कल्पना करने वाले और आर्य जाति को इतिहास-विज्ञान से अनभिज्ञ कहने वाले इतिहास विदाभास जन इस पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़े और मनन करें तथा उनमें थोड़ी सी नैतिकता है तो अपने दुराग्रह और मिथ्याभिमान को छोड़कर सत्य को स्वीकार करें। आर्य जाति में आदि सृष्टि से वर्तमान काल तक के अपने इतिहास की आयु को इस संकल्प-पाठ में ग्रंथित करके सुरक्षित कर रखा है। पाठ निम्न प्रकार है:-

ओ३म् तत्सत् अद्य ब्रहमणो द्वितीय प्रहरार्द्धे वैवस्वते मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि-प्रथम-चरणे आमुक संवत्सरे अयने ऋतौ मासे पक्षे तिथौ नक्षत्र लग्ने मुहूर्ते जम्बू द्वीपे भारत खण्डे आर्यावर्ते देशान्तर्गते इत्यादि।

अर्थः- ओ३म् तत् सत् परमेश्वर का इन शब्दों में स्मरण करके यह कहा गया है कि "ब्रह्मा परमात्मा के दूसरे प्रहर में सृष्टि के अर्द्ध भाग के निकट अठ्ठाइसवां कलियुग और उसका प्रथम चरण अर्थात् प्रारम्भ है। इसके आगे वर्ष, ऋतु, मास, पक्ष दिन, नक्षत्र, लग्न, मुहुर्त्त का विधान है। जो संस्कार के समय पर जोड़ लिया जाता है।"

इस सबको गणित की रीति से जो सज्जन जानना चाहें, वह महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के "वेदोत्पात्ति विषय" को पढ़कर जान लें, स्थानाभावं से यहां उसका वर्णन नहीं किया जा रहा।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन की एक घटना

❑ *संकलन कर्ता- रमेश चन्द्र बंसल*

श्री मुंशीराम जालन्धर में वकालत करते थे और आर्य समाज के सत्संग में भी जाते थे। प्रवचन भी करते थे। उन से लोग प्रभावित थे। 1890 की घटना है। एक नि:संतान महिला के पति का देहान्त हो गया। उसके देवर ने अपने आप को भाई का उत्तराधिकारी बनकर मकान पर कब्जा करने के लिए अदालत में दावा दायर किया। महिला मकान के कागज़ व हाउस टैक्स आदि की रसीदें लेकर श्री मुंशीराम के पास गई, कागज़ दिखाये। वकील साहब ने कागज देखकर कहा, "मैं मुकद्दमें की पैरवी करूँगा। तेरा केस सच्चा है। फीस के सौ रुपये जमा कर दो। मुंशीराम जी सच्चे ही केस लेते थे। महिला ने कहा, "मैं गरीब हूँ, सौ रूपये तो नहीं दे सकती, जो बन पड़ेगा दे दूंगी। आप चार दिन बाद मुकद्दमे की तारीख भुगता दें। इतना सुनकर वकील साहब ने कागज फेंक दिये और कहा, "जब फीस देने को नहीं थी तो मेरा समय क्यों बर्बाद किया। जाओ यहाँ से।" महिला कागज़ उठाकर चली गई। आर्य समाज के सत्संग में मुंशीराम जी अगले रविवार को गये। प्रवचन किया। महिला ने भी सुना और सत्संग के बाद वकील साहब के घर पहुँची। मुंशीराम जी ने देखा और कहा, "अब क्यों आई हो? मुकद्दमा तो तू हार गई।" महिला ने कहा," मैं मुकद्दमें के लिए वकील मुंशीराम के पास नहीं आई, मैं प्रवचन कर्ता मुंशीराम से मिलने आई हूँ। जो कह रहा था सत्य को ग्रहण करने के लिए अपनी जान भी दे दो। तू तो एक सौ रुपये के लिए बिक गया, सच को छोड़ बैठा और अन्य को जान देने को कहता है। ऐसे झूठे प्रवचनकर्ता को समाज में नहीं जाना चाहिये" कहा और चली गई।

श्री मुंशीराम जी ने सुना और उत्तर न दे सके। अगले दिन बैंक से रुपया निकाला और उस महिला के देवर से मकान की रजिस्ट्री बिक्री महिला के नाम कराकर शाम को उसके पास गये। रजिस्ट्री पत्रक के साथ पांच सौ रुपये देकर कहा,"यह तेरी गुरू दक्षिणा है, तूने मुझे आर्य समाज के नियम का सही अर्थ समझा दिया कि सत्य को ग्रहण करने का क्या मतलब है।"

इस तरह बने थे महात्मा मुंशीराम।

-कुटी २१० वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर

इतिहास की पुस्तकों से आर्यों को विदेशी होने की बात हटाई जाये

आर्य समाज की आन्दोलन करने की चेतावनी

□ *ले० अजय सहगल सम्पादक, टंकारा समाचार, ए-419, डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-110024*

नई दिल्ली 20 दिसम्बर। आर्य भारत के ही मूल निवासी हैं इस नारे में सार्वदेशिक सभा द्वारा कान्स्टीट्यूशन क्लब में आयोजित एक संगोष्ठी में एक प्रस्ताव पारित कर केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय से यह मांग की गई कि पाठ्य पुस्तकों में से वह अंश निकाल दिए जायें जिनमें आर्यों को विदेशी और आक्रमणकारी बताया गया है, तथा आर्यो का याथावर-घुमन्तु- , गौमांस भक्षी एवं वेदो को गडरियो का गीत बताया गया है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न आर्य ने यह चेतावनी दी कि यदि इतिहास की पुस्तकों मे से राष्ट्र की अस्मिता पर प्रहार करने वाले ऐसे प्रकरणों को नही निकाला गया और समुचित कहीं संशोधन नही किया गया तो विवश होकर आर्य समाज को आन्दोलन का मार्ग आपनाना पड़ेगा।

संगोष्ठी का प्रारंम्भिक भाषण देते हुए इतिहासकार एवं जनसंघ के नेता प्रो बलराज मधोक ने कहा कि आर्यो को विदेशों एवं आक्रमणकारी बता कर इतिहास की पुस्तकों को विकृत करना एक जानबूझ कर किया गया षडयंत्र है जिससे भारतीय अपने को मूल भारतीय कहकर गौरवान्वित न हो सके।

श्री मधोक ने कहा कि इतिहास की पहली शर्त उसका तथ्यपरख एवं सत्य होना है। इतिहास की व्याख्या में अन्तर हो सकता है पर सत्य की अनदेखी करने से जहां व्याख्या गलत होगी वहीं उसकी पृष्ठभूमि में लिए जाने वाले नीति सम्बन्धी निर्णय भी गलत हो जायेंगे। इस समय भारत में जिस प्रकार का इतिहास पढ़ाया जा रहा है उसको देखते हुए यह कहा जा सकता है कि भारत में भारत के सत्य इतिहास की सर्वाधिक हत्या अपने को इतिहासकार मानने वाले तथा कथित वामपंथी तत्वों द्वारा की गई है।

भारत आर्यो का ही देश है इस बारे में प्रमाणों की कमी नही है। अंग्रेजों ने इण्डो-यूरोपीय भाषा के आधार पर आर्यो को मध्य एशिया से किसी स्थान पर आकर भारत में बसने की बात प्रचारित की गई।

वेद आर्यो के मुख्य धर्मग्रन्थ हैं। यदि आर्य मध्य एशिया से आए है तो वेदो में वहां की नदियों, पहाडों, नगरों, वनस्पतियों का उल्लेख होना चाहिए जो वेदो में कहीं नहीं मिलता इसके विपरीत भारत की नदियों का विशेषरूप से सिंधु और सरस्वती का अनेक बार उल्लेख है। सप्त सिन्धु या आर्यावर्त वर्तमान भारत देश ही है।

श्री मधोक ने अनेक पाश्चात्य विद्वानों का भी उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने भी आर्यो के विदेशी होने या आक्रमणकारी होने की बात को मिथ्या एवं कपोल कल्पना बताया है। आजादी मिलने पर हम स्वतत्र हो गये परन्तु मानसिक गुलामी मे हम पहले से भी अधिक जकड गए हैं अब आवश्यकता इस बात की है कि इतिहास की पुस्तको में से पहले उन अंशों को एकदम हटाया जाये जो भारत के बच्चों में इस देश के प्रति आत्मीयता के भाव को पैदा करने में बाधक हैं। पिछले कुछ वर्षो से हम बालकों को गलत इतिहास पढ़ा रहे हैं यह कितने दुर्भाग्य की बात है।

पुरातत्व विशेषज्ञ डा. बी बी लाल ने अपने सारगर्भित भाषण में पुरातत्व की खोज में प्राप्त प्रमाणों के आधार पर यह बताया कि वैदिक सभ्यता और सिन्धु सभ्यता अलग अलग सभ्यताएँ न होकर एक ही हैं।

डा लाल ने कहा कि आर्यो के विदेशी होने की बात के समर्थक वैदिक और सिन्धु सभ्यता के अन्तर के लिए अपने पक्ष में मुख्यत: चार बातें प्रस्तुत करते हैं। ये हैं- 1. वैदिक संस्कृति में अश्व जब कि सिन्धु सभ्यता में अश्व होने का प्रमाण नही मिला। 2. वैदिक संस्कृति में रथ के पहियों में तान (स्पोक) है जब कि सिन्धु सभ्यता में स्पोंक नही है। 3. वैदिक संस्कृति घुमन्तु है जब कि सिन्धु सभ्यता नागरी सभ्यता है। 4. वेदों में सरस्वती नदी का उल्लेख है जब कि सिन्धु सभ्यता में सरस्वती नदी का उल्लेख नही है। एक ओर समस्या लिपि भेद की है। परन्तु लिपि पढ़ जाने पर सब समस्या स्वयं समाप्त हो जायेगी।

डा. लाल मोहन ने कहा कि जोदड़ो, कालीबंगा, लोथल, ढोलावीरा में खुदाई में प्राप्त प्रमाणों के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सिन्धु सभ्यता और वैदिक सभ्यताएं एक ही हैं। दोनों में अश्व है, दोनों में रथों के पहियों में स्पोक है तथा कालीबगा में सरस्वती नदी के होने का भी प्रमाण है। वैदिक सभ्यता नागरिक सभ्यता थी इस बारे में वेदों में सभा, समिति आदि का तथा राजाओं में भी सम्राट, गजन आदि में अन्तर बताया गया है।

वैदिक विद्वान श्री महेश विद्यालंकार ने वेदो तथा महर्षि दयानंद के ग्रन्थो का उल्लेख करते हुए कहा कि स्वामी जी ने त्रिविष्टप को मानव का उद्‌गम स्थान बताया है। तिब्बत की राजधानी का नाम ल्हासा है जिसका अर्थ होता है देवभूमि। भारत का नाम आर्यावर्त होना ही इस बात का प्रमाण है कि भारत ही आर्यो को भूमि है। वेद में कहा भी है कि प्रभु ने यह भूमि आर्यो को प्रदान की है। उन्होने इतिहास में की गई अन्य विकृतियों की ओर भी ध्यान खीचतें हुए गोमांस भक्षण की बात का भी खण्डन किया तथा कहा कि वेदो में अनेक बार गौ को अघ्न्या (न मारने योग्य) कहा गया है।

उच्चत्तम न्यायालय के अधिवक्ता तथा सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा के प्रधान श्री रामफल बंसल ने भी कहा कि भारत प्रारभ से ही आर्यो का हिन्दुओं का देश है। अत: सरकार को चाहिए कि उसने अन्य लोगो की भावनाओं का आदर करते हुए जिस प्रकार इतिहास की पुस्तकों में मंशोधन किया है उसी प्रकार आर्यो के विदेशी एव आक्रमणकारी होने की बात को भी निकाल दे।

सभा के अध्यक्ष कैप्टन देवरत्न आर्य ने अपने समापन भाषण मे कहा कि इतिहास की इस विकृति से आजकल के युवको में भारत के प्रति आत्मीयता का भाव पैदा नही होता है। राष्ट्रभक्त नागरिक तभी हो सकता है जब उसे इस देश के कण कण से इस देश की नदियों, पहाडों और उसके महापुरूषों के प्रति गौरव भाव हो उन्होने सरकार को चोतावनी दी कि यदि इस विकृत इतिहास को शीघ्र ही न बदला गया तो आर्य समाज को विवश होकर आन्दोलन का मार्ग अपनाना पडेगा।

होशियारपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य समाज कमालपुर होशियारपुर में 23-12-2001 को प्रात: हवन यज्ञ के पश्चात् स्वामी श्रद्धान्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर लगभग एक सौ आर्य बन्धु व बहनें वहां उपस्थित थी। प्रो तेग बहादुरों साहनी, डा रविन्द्र भारद्वाज, और मेरी गोल्ड स्कूल के विद्यार्थियो मार्मिक भजनों के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी की महानता का वर्णन किया। प्रो यशपाल जी वालिया मन्त्री आर्य समाज ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन और उनके सामाजिक धार्मिक और क्षणिक कार्यो पर प्रकाश डाला। विशेष रूप से उनके द्वारा चलाई गई गुरुकुल पद्धति का वर्णन किया और स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी ओर से व आर्य समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की।

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज सिविल लाईन पार्कलेन लुधियाना के तात्वावधान में 13.1 2001 को पारिवारिक सत्संग श्री वेद प्रकाश जी भण्डारी के घर पर 120-सी किचलू नगर में सायं 3 से 5 बजे तक । 20-1-2002 को श्री कृष्ण लाल डाबर बी-1, 501 पार्कलेन बिन्द्रावन रोड में सायं 3 30 से 5 30 बजे तक । 27-1-2002 को श्री अजय कुमार बत्रा रणधीर सिंह नगर लुधियाना में दोपहर 11 से 2 बजे तक होगा। —नरेन्द्र भल्ला

मेरे पितामह
अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी

□ ले० पुष्प शोभा विद्यालंकृता

इतने महान पुरूष की पौत्री होना, स्वयं में एक रोमांचक अनुभव है। जब लोगों को विशेष रूप से आर्य समाज से सम्बन्धित व्यक्तियों-को अकस्मात् पता चलता है कि मैं उस महान् व्यक्ति की पौत्री हूँ, तो उनके नेत्रों में श्रद्धा एवं आदर के भाव उमड़ने लगते हैं और हाथ जुड़ जाते है। कई तो पैरो की ओर हाथ बढ़ाते है। तब मैं अत्यन्त सकुचित हो उठती हूँ। सोचती हूँ कि क्या मैं इस आदर के योग्य हूं? उस समय अपने को बहुत तुच्छ पाती हूँ। पर कर भी क्या सकती हूं? दादा जी के विलक्षण व्यक्तित्व, उनकी राष्ट्र के प्रति धार्मिक, राजनैतिक व सामाजिक सेवाओं का प्रसाद मुझे मिलता ही रहा है।

सर्वप्रथम मुझे अपने दादा जी की महानता का प्रसाद तब मिला, जब कन्या गुरूकुल देहरादून में मेरा प्रवेश हुआ। गुरूकुल के कार्यकाल में पहुंचते ही, सम्पूर्ण आश्रम में समाचार फैल गया। पिता जी से विदा हो, उदास मन से, अधिष्ठात्री माँ के साथ आश्रम के परिसर में प्रवेश किया, तो आश्चर्य और उत्सुकता से भरे सैकड़ों नेत्र मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। ब्रहाचारिणियों में खलबली मच गई कि "स्वामी जी की पौत्री" आ गई। गुरूकुल कांगड़ी के संस्थापक, आर्यनेता, कुशल वक्ता और देश, धर्म के लिए बलिदान होने वाले महान् नेता, स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी को पाठ्यक्रम में पढ़ती थी। "श्रद्धानन्द बलिदान दिवस" पर सात दिन प्रभात फेरी होती थी। दिसम्बर की कड़कड़ाती सर्दी में, सवेरे साढ़े तीन बजे, आश्रम का निर्धारित वेश (सफेद खद्दर की धोती, जिसके किनारे एक इंच चौड़े नीले रंग की किनारे होते थे) खूब अच्छी तरह पहनकर, हाथ में लालटेन लेकर प्रभातफेरी के लिए निकला जाता था। भजन गाते और जयजय-कार करते, पाँच बजे ओम् के झण्डे के चारों ओर एकत्रित हो, "जयति ओम् ध्वज व्योम बिहारो" के साथ झण्डाभिवादन कर, फिर नित्यकर्मों में प्रवृत होते थे।

अस्तु, जब आश्रम में पहुँची तो "श्रद्धानन्द जी की पोती" आ गई के साथ स्वागत हुआ और फिर धीरे-धीरे "श्रद्धानन्द" गायब हो गया और केवल "पोती" रह गया। मेरी अपनी पहचान समाप्त हो गई। स्वाभाविक है मुझे बहुत बुरा लगा। दु:खी और परेशान होकर कुछ कहती भी, तो कोई असर न होता। लगभग एक डेढ़ महीने बाद पिता जी फिर देखने आए कि मैं स्वस्थ प्रसन्न तो हूँ। मैंने आँखों में आंसू भरकर उन्हें अपनी दु:ख गाथा सुनाई। पिताजी थोड़ा सा मुस्कुराए और सिर पर हाथ रखकर कहा, "बस, इतनी सी बात है। अच्छा ये बता और किसी कन्या को भी इस भांति सम्बोधन किया जाता है?"

मेरे "ना" कहने पर उन्होने हंसकर, मुझे आश्वस्त करते हुए कहा- "देख, तू विशिष्ट पोती है। इसी से तुझे ऐसा पुकारते हैं" उसके बाद उन्होने संक्षेप में दादाजो के बारे में बताया। तब मुझे लगा कि मैं तो यों ही परेशान थी, यह तो मेरे लिए गर्व का विषय है। इतनी आसान भी नहीं है यह अनुभूति। व्यंग्योक्तियां भी सुननी पड़तीं। खेलों, कूदों या पढ़ने में जरा भी ढील हुई नहीं, तो सुनो, "कहाँ इसके दादा और कहाँ यह। नाम ही बदनाम कर दिया दादा का।" कौन समझाए उन्हें कि वो-वो थे और मैं-मैं हूँ।

स्वामी जी का बलिदान २३ दिसम्बर १९२६ को हुआ था। मैं उस समय मात्र डेढ़ वर्ष की थी। अत: मेरे हृदय में दादाजी की जो भी स्मृतियाँ हैं वे पिता जी से उधार ली हुई हैं।

उस दिन की घटना पिताजी प्राय: सुनाया करते थे। उन्हीं के शब्दों में, "जैसा कि मुझे याद है कि पिताजी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) कई दिनों से निमोनिया से पीड़ित थे। डा. अन्सारी का इलाज चल रहा था। एक दिन पहले ही ज्वर नार्मल हुआ था। डाक्टर ने पूर्ण विश्राम का आदेश दिया था। वे कुछ देर पहले ही उनसे मिलकर घर-अर्थात् "अर्जुन प्रेस" के ऊपरी मंजिल पर लौटे थे और भोजन कर चुके थे कि बाबू जीवन लाल जी ने नीचे से आवाज दी कि स्वामी जी को गोली मार दी गई है। मैं वैसे ही सीढ़ियाँ उतर कर भागा। पिता जी उसी बाजार में थोड़ी दूर पर ही दूसरी मंजिल पर रहते थे। आज वह भवन "श्रद्धानन्द बलिदान भवन" के नाम से जाना जाता है। ऊपर जाकर जो दृश्य देखा वो इस प्रकार था:- पिताजी शान्त भाव से आराम कुर्सी पर सिर टिकाए लेटे थे। उनके भगवें कुर्ते पर सामने की ओर लाल रक्त के धब्बे दिखाई दे रहे थे। एक ओर सेवक धर्मसिंह अपनी जांघ दबाए बैठा था। हत्यारे ने उसे भी गोली मारी थी। अन्त में बिस्तर के पीछे की ओर पं० धर्मपाल जी विद्यालंकार पट्ट पड़े थे। मैंने सबसे पहले पिता जी की नाड़ी देखी, माथे को छुआ। एक दम ठण्डा था। कोई स्पन्दन न था। धर्मपाल जी से पूछा, "क्या आपको भी गोली लगी है?"

"नही, मैंने हत्यारे को दबा रखा है, आप मेरी चिन्ता मत कीजिये, स्वामी जी को देखिए।"

धर्मपाल जी को हम चाचाजी कहते थे। बाद में वे भी हमें यह घटना सुनाते थे। डीलडौल और कद से भव्य, पहलवान लगते थे। बाद में वे गुरूकुल कांगड़ी के सहायक मुख्याधिष्ठाता भी रहे। उस समय वे दादा जी के सैक्रेटरी थे। जब तक पुलिस नहीं आई, वे उस हत्यारे अब्दुल रशीद को उसी भांति दबाए रहे।"

"तभी की एक स्मृति, पिता जी इस घटना के साथ सुनाते थे। शहर में ज्यों-ज्यों यह खबर फैलती गई उत्तेजना फैलती गई। यह खबर सुनकर एक व्यक्ति छुरा लिए, उत्तेजना में दहाड़ता ऊपर आया और पूछा, "कहाँ है वह हत्यारा! उसको मैं जीवित नहीं जाने दूँगा।" बड़ी मुश्किल से उसे रोका। पर सांयकाल तक शहर में साम्प्रदायिक दंगे आरम्भ हो गए, जिसमें कम से ४/५ लोग मारे गए। स्वामी जी की शवयात्रा का बहुत बड़ा जलूस निकला इतना बड़ा जलूस देहली में शायद न कभी निकला था न निकलेगा। लोग पिता जी से पूछते थे कि ऐसा क्यों हुआ? स्वामी जी तो हिन्दु मुसलमानों दोनों के हृदय सम्राट् थे। जामा मस्जिद के मिम्बर से प्रवचन करने का श्रेय केवल स्वामी श्रद्धानन्द को ही प्राप्त हुआ था। फिर ऐसा क्यों हुआ?

दादा जी अत्यन्त संवेदनशील व भावुक व्यक्ति थे। जो भी करते सम्पूर्ण हृदय व शक्ति से करते। कांग्रेस मे शामिल हुए तो सम्पूर्ण हृदय से। सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन में केवल शामिल हीं नही हुए, उसका नेतृत्व भी किया। "हम" की व्याख्या वे हिन्दु और मुसलमान से करते थे। उन्होनें अपने एक पत्र में लिखा था कि "हिन्दु-मुसलमानों के संयुक्त प्रयास के बिना स्वाधीनता मिलना कठिन है" पर साथ ही वे गांधी जी के मुसलमानों के प्रति पक्षपात से रूष्ट भी थे।

उस समय समाज में यही अवधारणा थी कि अगर एक हिन्दु मुसलमानों के साथ सम्पर्क रखता है या मुसलमान बन जाता है, वह फिर हिन्दू नहीं बन सकता। मुल्लाओं द्वारा धर्म परिवर्तन, ईसाइयों द्वारा दलितों को ईसाई बनाने का कार्य, अनवरत चल रहा था। अगर कोई अपनी गलती समझकर फिर से हिन्दू धर्म ग्रहण करना चाहे, तो उसके रास्ते बन्द थे। महर्षि दयानन्द की शिक्षा व आर्य समाज की आध्यात्मिक प्रेरणा से स्वामी जी ने उन बिछड़े भाइयों को फिर से अपने साथ मिलाने के लिए शुद्धि आन्दोलन आरम्भ किया। समूह के समूह स्वेच्छा से शुद्ध होने लगे- तो मुसलमानों ने गांधी जी से शिकायत की। जिस गांधी को हिन्दुओं के मुसलमान होने पर कोई एतराज न था, मुसलमानों की शिकायत पर बौखला गए और स्वामी जी को तुरन्त इस आन्दोलन को बन्द करने का आदेश दिया। जैसा कि स्वामी जी का स्वभाव था, जो उचित समझते थे वही करते थे और सम्पूर्ण हृदय से करते थे। महात्मा गांधी के पत्र के उत्तर में उन्होने कांग्रेस की सदस्यता से ही त्याग पत्र दे दिया। महात्मा गांधी ने अपने पत्र "यंग इंडिया" में शुद्धि के विरूद्ध बहुत कुछ लिखा और उसी के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ 6 का शेष)

परिणाम स्वरूप यह घटना घटी। मुसलमानों का साहस और बढ़ गया उन्हें शह मिल गई।

उस तुष्टिकरण की नीति ने हमारे देश का अनगिनत अहित किया है, और आज भी उसी नीति पर चल कर राष्ट्र का सर्वथा अहित किया जा रहा है।

मै भावुकता मे बहुत कुछ कह गई। बताना तो चाह रही थी दादा जी की कुछ अन्तरग बाते। पर बह गई राजनीति में-

मेरे पिता जी मेरे दादा जी के मवसे छोटे व लाडले बेटे थे। अपने दादा जी की मृत्यु के समय मेरे पिता जी दो वर्ष के थे। दादा जी अपनी भाभी व भाई आत्माराम जी को गृहस्थी का सारा भार सोपा मामाजिक, धार्मिक कार्यो मे अधिक से अधिक समय देने लगे। उसी समय उन्होने जालन्धर मे शानदार कोठी का निर्माण करवाया था। दादा जी का व्यक्तित्व जितना भव्य था वैसे ही इनके कार्य भी शानदार भव्य होते थे। उस समय वे महात्मा मुशीराम थे। कोठी के साथ ही 'सद्धर्म प्रचारक'' का कार्यालय व प्रेस था। अस्तबल मे एक बड़ी बन्द बग्घी, एक छोटी गाडी, घोडे, दो गाय हर समय रहती थी। कचहरी छोटी बग्घी में जाते। उसे स्वयं चलाते और पीछे कोचवान खड़ा रहता। उस समय कोट, पैन्ट और टाई पहनते थे। अपनी अनेक व्यस्तताओं में भी बच्चों को अच्छी धार्मिक कथाएँ सुनाने का समय निकाल लेते। आर्य समाज के उत्सवों या अन्य कार्यो से जाते, तो लौटकर बच्चों की पढ़ाई आदि के बारे में पूछते।

एक बार दादा जी लाहौर आर्य समाज के अधिवेशन से लौटे तो उनका सामान, सड़क के दूसरी ओर, आर्यसमाज मन्दिर में उतारा गया। इधर खलबली मच गई। पिता जी ताई जी ने समझा कि उनसे कोई गलती हो गई। सब बच्चों को लेकर रोती हुई आर्य समाज मन्दिर पहुँची। तब दादा जी ने उन्हें शान्त करके बताया कि ''उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि गुरूकुल बनाने के लिए जब तक ३० हजार रूपया एकत्र नहीं कर लूँगा, घर में कदम नहीं रखूंगा।''

उनके जाने के बाद कोठी में सन्नाटा फैल गया। उस समय ताया जी आठवीं व पिता जी सातवीं में पढ़ रहे थे। कुछ दिनों बाद दादा जी की आज्ञा से दोनों भाइयों को ''गुजरांवाला की वैदिक पाठशाला'' भेज दिया गया। गुरूकुल के लिए हरिद्वार में भूमि प्राप्त होने के बाद वहीं से उन्होंने दादा जी के पीछे गुरूकुल में प्रवेश किया।

कालान्तर में अपनी यह कोठी भी दादा जी ने गुरूकुल को दान कर दी। इस कोठी को दान देने की भी स्मृति पिताजी को सदा उद्वेलित करती थी। उस वर्ष पिता जी व तायाजी (इन्द्र विद्यावाचस्पति व हरिश्चन्द्र वेदालकार) स्नातक बनने वाले थे। दादा जी ने अपना वसीयननामा लिखा हुआ था-जिसमे जालन्धर की कोठी बेचकर दोनों पुत्रों को बराबर देने का प्रावधान था। लगभग २० हजार रूपये कोठी के मिलेंगे। दस हजार हरिश्चन्द्र दो 'सद्धर्म प्रचारक'' देहली से निकालने के लिए व इन्द्र को दस हजार रु0 विदेश मे जाकर 'बैरिस्ट्री' पास करने के लिए।''

अकस्मात् ही उनका विचार बदल गया। देहली म एक धनाढ्य रायसाहब के यहाँ गुरूकुल के लिए दान लेने गए। वे बाहर हा... आए। उठकर डेरे पर आकर, उन्होंने आत्ममन्थन किया कि ऐसा क्यो हुआ? समझ मे आया-''तूने तो अभी पूर्णाहुति दी ही नहीं'' विचार आया और निश्चय हो गया। पिता जी बताते थे-''उत्सव से एक दिन पहले सवेरे चार बजे हम दोनो भाइयों को ऊपर बगले पर बुलाया और दानपत्र सामने रखकर कहा-''सहमत हो तो हस्ताक्षर कर दो'' असहमत होने का कोई प्रश्न ही नहीं था। हम दानो ने हस्ताक्षर कर दिये। बाद मे बड़ी बहिन वेदकुमारी जी व अन्य परिजनों ने समझाया कि अभी भी समय है। मना कर दो। बची-खुची सम्पत्ति भी दान कर दी। हम दोनो भाई मुस्कुराकर चुप रहे क्योंकि जानते थे उन्हें समझाना व्यर्थ है। हम ही जानते हैं कि उन्होंने हमें विरासत में क्या क्या दिया है?

दूसरा दिन अपील का था। उस उत्सव पर लगभग ७५ हजार आर्य नर नारी उपस्थित थे। पिता जी अपील करने खड़े हुए और देहली वाली घटना सुनाकर अपना दानपत्र पढ सुनाया। भाषण लगभग डेढ़ घन्टे का था। पण्डाल में स्तब्धता थी। लोगों की आँखों से आंसू बह रहे थे। उस समय के आर्य नेता महाशय कृष्ण जी, भक्त प्रवर लब्भूराम नैयर, सभा प्रधान लाला रामप्रसाद जी आंसू पोंछ रहे थे। भाषण समाप्त होते ही पण्डाल तालियों और नारों से गूंज उठा।

लिखते लिखते हाथ थक गए, पर स्मृतियाँ जो सुन सुन कर हृदय में संजो रखो थी, समाप्त नहीं हो रहीं। अन्त में प्रभु से यही प्रार्थना करती हूँ कि मुझे व स्वामी श्रद्धानन्द के मानस पुत्रों को शक्ति दे कि उनके बनाए पथ पर दो चार कदम भी चल सकें- इसी से वे धन्य हो जाएगे।

चम्बा में पारितोषिक वितरण समारोह

23 दिसम्बर 01 को आर्य पब्लिक स्कूल चम्बा का वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता पूज्यपाद स्वामी सुमेधानन्द जी ने की। शहर के गणमान्य व्यक्तियों व आर्य समाज के सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

विद्यार्थियो ने रगारग सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसकी लोगो ने भूरि-भूरि प्रशसा की । स्वामी जी के करकमलो द्वारा बच्चो को पुरस्कार दिए गए। स्वामी जी ने बच्चों के प्रोत्साहन हेतु 1100/- रुपए व आर्य समाज के प्रधान ने 1100/- रुपए दिए। स्वामी चक्रांश जी ने बच्चों को चरित्र-निर्माण पर सबोधित किया। स्वामी सुमेधानन्द जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे जोर दिया कि आर्य समाज की सस्थाओ को बच्चो के सुसस्कार व नैतिकता पर बल देना चाहिए ताकि अच्छे राष्ट्र का निर्माण हो सके।-शान्ता मल्होत्रा, प्राचार्या

लुधियाना में विश्व शान्तिगायत्री महायज्ञ धूमधाम से सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) म 22-23-24 नवम्बर 2001 मे बडी श्रद्धापूर्वक विश्व शान्ति गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसमे स्वामी सपूर्णानन्द जी करनाल से, सद्भावना समिति की प्रधाना माधुरी योगमति जी अमृतसर से, श्रीमती सरला भारद्वाज (फगवाडा) से, नम्रता सोनी जी, स्वामी सुमनायति जी स्वामी शोभानन्द जी, प सुरेन्द्र शास्त्री जी, लुधियाना जिला आर्य सभा लुधियाना की प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा जी, समाज सेविका प्रसिद्ध माननीय सुवर्षा कालडा जी आदि गणमान्य भाई-बहनो में भाग लिया यज्ञाग्नि श्री रणधीर शर्मा-वीना शर्मा प्रिंसिपल शान्ति निकेतन आदर्श विद्यालय ने प्रज्वल्लित की। नित्य 5 यज्ञ कुण्डों पर यज्ञमान बैठते रहे। यजमानो ने बहुत उत्साह पूर्वक भाग लिया। सत्संग हाल पूरा तीनों दिन भरा होता था।

स्वामी जी ने बहुत सुन्दर प्रवचन में कहा कि मनुष्य सुख चाहता है परन्तु उसके लिए यत्न नहीं करता। भीखा-भूखा कोई नही सब की गठड़ी लाल, गांठ खोलन जानत नहीं इस विधि भये कगाल। मानव में बहुत आत्मिक शक्ति है। श्रीमती राजेश जी ने अपने भजन मे कहा भगवान तू आज के मनुष्य को सही अर्थो मे मानव बना दे। मुख्य अतिथि माधुरी योगमति जी ने कहा कि सत्य मार्ग योग का है उन्होने यम नियमो का पालन करके ही सच्चे मानव बन सकते हैं। बहनो को बताया आप शक्ति हैं, निर्मात्री हैं समाज को बना सकती हैं, अपने अध्यक्षीय भाषण मे सरला भारद्वाज जी ने सबको सदेश दिया कि सुने हुए ऐसे पवित्र ज्ञानवर्धक प्रवचनो को धारण करने का संकल्प ले अन्त में श्रद्धेय सुमनायति जी, स्वामी शोभानन्द जी ने अपना आशीर्वाद दिया, प्रधाना इन्द्रा जी शर्मा ने आए हुए अतिथियों का, बहनों का सत्सगी भाईयों का धन्यवाद किया। सब आने वालों ने उत्सव की भूरि-भूरि सराहना की। जनक आर्य ने प्रभु का धन्यवाद करते हुए सब सहयोगियों का भी धन्यवाद किया। अन्त मे प्रसाद वितरण किया गया और जलपान के साथ उत्सव समाप्त हुआ।

-जनक आर्य, महामन्त्री

जालन्धर में माघ माह का गायत्री महायज्ञ

स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर में दिनांक 14-1-2002 से 12-2-2002 तक हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी एक माह तक श्रद्धा व उत्साहपूर्वक गायत्री महामन्त्र आयोजित किया जा रहा है जिसकी पूर्णाहुति 12-2-2002 को डाली जाएगी। आप से प्रार्थना है इस शुभ यज्ञ में इष्ट मित्रों व परिवार सहित पधार कर जीवन सफल करें।

''गायत्री गायत्र त्रायते'' गायत्री माता अपने जप करने वाले भक्तों की रक्षा करती है। इस कार्यक्रम के समय के बीच में जो भी पूर्व आयेंगे उनको भी श्रद्धा व उत्साहपूर्वक मनाये जाएगे।

समय प्रतिदिन दोपहर 2-30 से 4 40 बजे तक।

पूर्णाहुति समारोह : 12.2.2002

समय प्रात : 10-00 से 1-30 बजे तक होगा। 1-30 ऋषि लंगर होगा।

-कमलकान्ता आनन्द

स्वामी दयानन्द की मूर्ति और आर्य समाज

(गतांक से आगे)

पिछला लेख मैंने जो स्वामी दयानन्द की मूर्ति और आर्य समाज पर लेख लिखा था उस लेख को पढ़ कर मुझे श्री जगदीश प्रसाद जी वैदिक ने एक पत्र लिखा और मैंने उसका जो उत्तर उन्हें दिया था छापा है वह भी साथ दे रहा हूं।

श्री मुलखराज आर्य, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

सादर नमस्ते,

साप्ताहिक धर्म मर्यादा 31-5-98 के अंक में आपका लेख 'स्वामी दयानन्द की मूर्ति और आर्य समाज' पढ़ा।

धर्म मर्यादा 17-5-98 के अंक में प्रकाशित समाचार इंदौर में स्वामी दयानन्द नगर में स्वामी दयानन्द की मूर्ति स्थापित की गई। इस समाचार के संदर्भ में आपने लेख में प्रकाश डाला है।

उपरोक्त समाचार को आपने पूरी तरह नहीं पढ़ा और कलम चला डाली। समाचार में लिखा है कि इस नगर में बसने वाले सभी व्यक्ति पौराणिक हैं। उन्होंने अपनी इच्छा से स्वामी दयानन्द की मूर्ति स्थापित कर दी। इंदौर नगर के आर्य समाजियों को तो मालूम ही नहीं था कि स्वामी दयानन्द के नाम से नगर बस गया है और स्वामी जी की मूर्ति लग गई।

स्वामी दयानन्द नगर के संस्थापक शेरमल जी खयूरिया भी आर्य समाजी नहीं हैं किन्तु सिन्ध से ही आर्य समाज से प्रभावित हैं। इसलिए उन्होंने स्वामी दयानन्द नगर गृह निर्माण संस्था का निर्माण किया।

विनोद जी कटारिया से ही मुझे ज्ञात हुआ कि स्वामी दयानन्द के नाम से एक नगर बसाया गया है जिसको मैंने देखा भी नहीं था। जब मूर्ति लग गई और मूर्ति का अनावरण किया गया उस दिन मुझे निमंत्रित किया गया तब मैंने दयानन्द नगर व मूर्ति को देखा। उसके एक वर्ष पश्चात् मैंने विनोद जी से कहा कि इस नगर में आर्य समाज की स्थापना की जावे नियमित सत्संग किया जावे जिससे यहां के नागरिकों को स्वामी दयानन्द के नाम से ही नहीं कार्य से भी जान सकेंगे। इसलिए स्वामी दयानन्द के जन्म दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

आपने जो लिखा है वह आर्य समाजियों पर लागू होता है लेकिन श्रीमान जी आर्य समाजों, प्रांतीय सभाओं और सार्वदेशिक सभा के अधिकारी मूर्ति पूजा करते हैं और उनको आर्य समाजी दयानन्द का अनुयायी मान रखा है।

आर्य समाजी और आर्य समाज को दिन में चिराग लेकर ढूंढना पड़ेगा। आर्य समाजी है कहां ?

शराब पीने वाला, मांस खाने वाला, दो पत्नी रखने वाला, व्यभिचार करने वाला, पौराणिक, दयानन्द के सिद्धान्तों की हत्या करने वाला, आर्य समाज का धन बेईमानी करवा खाने वाला, रिश्वतखोर सरकारी कर्मचारी, झूठ बोलकर व्यापार करने वाला व्यापारी, दिन-रात झूठ बोलने वाला और रिश्वत दिलवाने वाला वकील आर्य समाज के नेता हैं और आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी धोखेबाज आर्य जनता को धोखा देकर पैसा लूट रहे हैं।

आपने भी लिखा है कि आर्य समाज के नेता सिद्धान्तों के विपरीत कार्य कर रहे हैं। आपके लेख से यह प्रतीत होता है कि मूर्ति मैंने अथवा अन्य आर्य समाजियों ने लगवाई है और आपने लिखा है कि मूर्ति को शीघ्र ही हटा देना चाहिए।

आपको ज्ञात है कि दिल्ली चांदनी चौंक के स्वामी श्रद्धानन्द जी की मूर्ति लगी हुई है प्रतिवर्ष बलिदान दिवस पर नगर निगम द्वारा फूल माला पहनाई जाती है। पानीपत के दयानन्द विश्वविद्यालय में स्वामी जी की मूर्ति लगी हुई है। भारत कला मंदिर हरिद्वार व जामनगर के श्मशान में मूर्ति लगी हुई है जिसको कई वर्ष हो गए यहां से आपने मूर्ति हटवाने का प्रयत्न करके मूर्ति हटवाना था।

दयानन्द की असली मूर्ति उनके सिद्धान्तों की हमने हत्या कर दी है। आर्य समाज के नेता व कार्यकर्ताओं के परिवारों ने आर्य समाज का बहिष्कार किया हुआ है।

कृप्या मेरे पत्र को धर्म मर्यादा में प्रकाशित करें। मेरी और इंदौर के आर्य समाजियों की छवि खराब हुई है। उसका स्पष्टीकरण हो जाए। उत्तर की प्रतीक्षा। भवदीय

जगदीश प्रसाद वैदिक

इस पत्र का उत्तर

श्री जगदीश प्रसाद जी,

सादर नमस्ते,

आपका पत्र प्राप्त हुआ धन्यवाद। आपके पत्र को पढ़ कर बहुत प्रसन्नता हुआ। आपने जो कुछ भी लिखा है उसको मैंने बड़े ध्यानपूर्वक पढ़ लिया है। उसमें यह लिखा है कि स्वामी दयानन्द जी की मूर्ति में मेरा या किसी भी अन्य आर्य समाजी का हाथ नहीं है। आपने यह भी लिखा है कि जो मैंने पत्र लिखा था उसको ध्यान से नहीं पढ़ा गया और कलम चला दी और आपने यह भी लिखा है कि दयानन्द की मूर्ति दयानन्द नगर में जो पौराणिक हैं उन्होंने अपनी इच्छा से स्थापित कर दी और यह भी लिखा है कि इन्दौर के आर्य समाजियों को ज्ञात ही नहीं था कि स्वामी दयानन्द जी के नाम से भी कोई नगर बसाया गया है। वहां स्वामी जी की मूर्ति भी लग गई है। अब आपने यह भी लिखा है कि स्वामी दयानन्द नगर के संस्थापक शेरमल जी खयूरिया भी आर्य समाजी नहीं है। किन्तु सिन्ध से आर्य समाज से प्रभावित हैं। इसलिए उन्होंने ही स्वामी दयानन्द गृह-निर्माण संस्था का निर्माण किया। अब आपने यह लिखा है परन्तु आपने पहले पत्र में यह लिखा था कि दयानन्द नगर के संस्थापक खयूरिया सिंध से ही आर्य समाज से परिचित हैं। यह भी लिखा है कि विनोद जी कटारिया ने मुझे बताया है कि यहां पर दयानन्द नगर बसाया गया है और स्वामी दयानन्द जी की मूर्ति भी लग गई है। परन्तु पहले पत्र में आपने जो लिख कर भेजा था में लिखा था कि विनोद कटारिया सेवा भावी युवक हैं इनकी प्रेरणा से ही स्वामी दयानन्द की मूर्ति स्थापित की गई। विनोद जी का यह भी कहना था कि स्वामी जी के सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए हम मूर्ति को फूल माला नहीं पहनाते तथा पूजा भी नहीं करते हैं। यह भी लिखा था कि हमारा मूर्ति लगाने का उद्देश्य यह है कि हम सब शहर वासियों तथा नई पीढ़ी को स्वामी दयानन्द जी के सम्बन्ध में ज्ञान हो सके। और अब आप यह लिख रहे हैं कि मेरा और किसी भी अन्य आर्य समाजी का हाथ नहीं है। क्योंकि विनोद जी सिद्धान्तों का ध्यान रखते हैं इससे अब सिद्ध हुआ है कि वह आर्य समाजी हैं जो कुछ भी हो गया उसकी अब बात छोड़ो परन्तु आपने यह कहा है कि यह बातें आर्य समाजियों पर लागू होती हैं। इसलिए मुझे विनोद जी का नाम देना पड़ा और आपने यह भी लिखा है कि दिल्ली में चांदनी चौक में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर फूल माला डाली जाती है। वह काम आर्य समाज का नहीं नगर निगम का है। वह बात बहुत पुरानी बात है। उस समय हम बहुत छोटे थे। आपने पानीपंत या हरिद्वार के स्थानों के बारे में लिखा है उन स्थानों पर मूर्ति स्थापित है उनके बारे में हमें ज्ञान ही नहीं है तो हम क्या लिख सकते हैं। यहां पर मुझे कुछ पता चलता है उसके बारे में मै लिख देता हूं। और जो कुछ आपने आर्य नेताओं के बारे में लिखा है। वह सब तो ठीक है परन्तु उसमें हम भी कुछ नहीं कर सकते और आप भी कुछ नहीं कर सकते जो नेता आर्य समाज के बन जाते हैं। वह आर्य समाजी होते ही नहीं हैं परन्तु आर्य समाजों में घुस कर कब्जे करके दोनों हाथों से आर्य समाजों को लूट रहे हैं। हमने तो केवल आवाज उठानी है। कोई भी नेता हो वह सिद्धान्तों के विपरीत जाता है तो मैं लिख देता हूं। मैं अपनी पुरानी बात बताने लगा हूं। पंजाब में हमारे सुलझे हुए नेता श्री वीरेन्द्र जी थे। मैंने उनके साथ मिल कर कई काम भी किए हैं। जैसा कि फरवरी, 1961 में आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर पर पंजाब सरकार द्वारा आर्य समाज पर एक महीने की मीटिंग करने का प्रतिबन्ध लगा दिया। मैं उस समय आर्य समाज का मंत्री था। हमने पंजाब सरकार की चुनौती को स्वीकर करके मीटिंग कर ली उस समय हजारों की संख्या में पुलिस ने घेर रखा था परन्तु हमारी मीटिंग 1 बजे से सायं 5 बजे तक चलती रही। अगले दिन 6 फरवरी प्रात: ही घरों से 6 व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गए। जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान आचार्य रामदेव, लाला जगत नारायण जी, श्री वीरेन्द्र जी, श्रीमती बिमला कोहली जी, लाला इन्द्रसैन जी मल्होत्रा जी एवं डा. दुर्गा दत्त जी ज्योति को गिरफ्तार कर लिया गया परन्तु मेरी गिरफतारी नहीं हुई। 10 फरवरी, 1961 को कांग्रेस के प्रधान श्री संजीवा जी रैडी जालन्धर में आ रहे थे। मैंने हजारों की संख्या में काली झंडियों से उनका स्वागत किया था और हम पर लाठी चलाई गई। प्रदर्शन शांतमय था। कांग्रेस के प्रधान के साथ पंजाब के मुख्यमंत्री स. प्रताप सिंह जी कैरों भी बैठे थे। उस समय जब हम पर लाठी बरस रही थी उस समय कांग्रेस प्रधान ने मुख्यमंत्री को झाड़ डाली एक आर्य समाज कितना शान्तमय प्रदर्शन कर रहा है और आप उस पर लाठी चलवा रहे हैं। क्यों पाबन्दी लगाई है? दूसरे दिन 11 फरवरी को जो पाबन्दी एक महीने के लिए लगाई गई वह 6 दिन में ही वापिस ले ली गई। पंजाब के मुख्यमंत्री ने समाचार पत्रों में बयान दिया कि हमने आर्य समाज पर पाबन्दी लगा गलती की है और खेद प्रकट किया। और जो नेता गिरफ्तार थे उन सबको छोड़ दिया गया। श्री वीरेन्द्र जी आर्य समाज के एक मजबूत नेता थे। और उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पर हरियाणा वालों का कब्जा था, और उस समय यह कहा जाता था कि मुलखराज आर्य, श्री वीरेन्द्र का खास आदमी है। श्री वीरेन्द्र जी की मृत्यु 31 दिसम्बर, 1993 को हो गई। मृत्यु से 5-7 वर्ष पूर्व मेरा उनसे मतभेद हो गया। उसका कारण क्या था कि श्री वीरेन्द्र जी ने यहां जालन्धर में एक कन्या महाविद्यालय की संस्था है उस विद्यालय को संस्थापक लाला देवराज जी थे। उसमें श्री देवराज जी की मूर्ति स्थापित करने का विचार किया। मुझे जब पता चला तो मैंने श्री वीरेन्द्र जी को पत्र लिखा कि मूर्ति स्थापित करना आर्य समाज के सिद्धान्त के विपरीत है परन्तु वीरेन्द्र जी से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ और मैंने इस मूर्ति के बारे में एक लेख लिखा। मेरे लेख को पढ़ कर किसी और ने भी लेख लिखा दिया। इसी बात पर मेरा श्री वीरेन्द्र जी से मतभेद हो गया और उनके साथ अन्त तक मतभेद रहा। क्योंकि मैंने अपनी आवाज उठाई थी इसलिए मैं जो कुछ देखता हूं लिख देता हूं। जैसे चौकीदार आवाज देता है कि जागते रहो। कोई उसकी आवाज सुने या न सुने। उसने तो अपनी आवाज देनी ही है। इसलिए मेरा काम तो आवाज उठाना है। मैंने जो कुछ भी लिखा है वह ठीक लिखा है अमल करना दूसरों का काम है। मैंने जो सुझाव दिए थे वह आपको अच्छे लगे तो कर लें न लगें तो न करें। यदि फिर भी आपको मेरे लिखने से कोई ठेस लगी है उसके लिए क्षमा चाहता हूं।

—मुलखराज आर्य, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य समाज के विस्मृत भजनोपदेशक ठाकुर उदय सिंह 'ठाकुर कवि'

□ *ले० श्री डा. भवानी लाल जी भारतीय*

आर्य समाज के मूर्धाभिषिक्त भजनोपदेशक भ्राता तुल्य पं. ओम प्रकाश वर्मा के मुख से अनेक बार ठाकुर कवि के पद्य तथा सुन्दर सूक्ति-सुमनों को सुनने का अवसर मिला तो इस कवि के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई। अवसर आया आर्य समाज बडा बाजार सोनीपत के वार्षिकोत्सव के अवसर पर जब मैं और वर्मा जी साथ ही आमंत्रित थे। उसके बाद जो जानकारी उनसे मिली और कवि ठाकुर की मरस काव्य रचना के कुछ नमूने उनके स्मृतिकोश से प्राप्त किए। उन्हें यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। कवि ठाकुर का वास्तविक नाम ठाकुर उदय सिंह था और वे अलीगढ जिले के प्रेमपुर ग्राम के निवासी थे। उनका जन्म 1892 में हुआ और नब्बे वर्ष की आयु प्राप्त कर 1982 में दिवंगत हुए। उनका अध्ययन तो शायद दसवीं श्रेणी तक हुआ था किन्तु हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा का उनका ज्ञान पर्याप्त था। आर्य समाज के प्रारम्भिक काल में अधिकाश भजनोपदेशक उत्तर प्रदेश के मेरठ, अलीगढ़, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर तथा बुलन्दशहर आदि जिलों में ही हुए हैं। उन्होंने मध्यकालीन इतिहास की अमर कथाओं को काव्य का रूप दिया। इनमें कुछ थीं-महाराणा प्रताप, चन्द्रहास, रणसिंह और कुंवर देवी आदि। लगभग पचास वर्ष तक वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे।

यहां उनकी कुछ काव्य रचनाओं को उद्धृत किया जा रहा है। इससे उनके काव्य रचना कौशल का अच्छा परिचय मिल सकेगा। ऋषि दयानन्द की महिमा में लिखी गई उनकी उर्दू गजल का मुलाहिजा फरमायें-

बताएं हम तुम्हें दयानन्द क्या था,

वो दस्ते कुदरत का एक मौजिजा था।

(प्रकृति के हाथ का एक आश्चर्य था)

सुनाता था अहकाम वो आसमानी

इसी वास्ते वो रसूले खुदा था।

(ईश्वरीय संदेश सुनाने के कारण उसे ईश्वर का दूत कहा जा सकता है)

लुटाता था वैदिक धर्म का खजाना,

महादानी दानी करण से सवा (सवाया-उत्कृष्ट) था।

आदित्य ब्रह्मचारी बन कर रहा वो,

कलियुग का वो मिस्ले (तुल्य) भीषम पिता था।

उसे याद करते हैं सब दोस्त दुश्मन,

कहो क्यों न 'ठाकुर' कि वह औलिया (उच्चकोटि का साधु) था।

भारत के कतिपय देश भक्तों तथा प्रतिभावान पुरुषों में दयानन्द की आत्मा का प्रकाश दिखाई देता है। उस भाव को कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है-

कोकिला न इके काहू देश मे सरोजिनी सी,

कोविद कवीन्द्र मे रवीन्द्र ही सितारो है।

काहू देश कोश में मिले न जगदीश बोस,

गामा (पहलवान) जगजीत को जीतना अखारो है।

मोती अक जवाहर (नेहरु) मिले न रत्नाकर में,

साधू न मिलेगा जैसो ये लगोटी वालो (गांधी) हैं।

कहे कवि ठाकुर मानो चाहे मत मानो।

सबकी आत्मा में दयानन्द को उजारो है॥

यदि स्वामी दयानन्द का धाराधाम पर अवतरण नहीं होता तो कैसी स्थिति हो जाती इसे कवि ने निम्न सवैया में बताया है। कवि भूषण ने शिवाजी महाराज की प्रशसा में कुछ ऐसे ही भाव व्यक्त किये हैं "जो शिवाजी न होतो तो सुनत होती सबकी" जैसे वाक्यों में व्यक्त किया हैं। **दयानन्द महिमा का ठाकुरकृत पद्य-**

वेद के भेद कहां खुलते अरु पुरानन की प्रति मोटी न होती।

तुलती ही गपों की तोल धड़ाधड़, खोटे खरे की कसौटी न होती।

हिन्दू न हिन्दी न हिन्द रहे थे, अंग में फाटी लंगोटी न होती।

'ठाकुर' राम के वंशज कर घर गौ बोटी तो होती, पर चोटी न होती।

भौतिकता को प्रधानता देने वाले वर्तमान युग की विडम्बना को कवि ने निम्न कवित्त में चमत्कारपूर्ण शैली में व्यक्त किया है-

सोचो ले जाया जाये पार किस तरह धर्म की नैया को।

जब लगा पूजने जग सारा ईश्वर की जगह रुपैया को।

वेदों की कथा के सुनने को आये तो आये चार जना।

लाखों की जनता टूट पड़ी सुनने ताता थैया (वेश्या नृत्य) को।

बाबू साहिब के कुत्ते भी यहां दूध सूंघ हट जाते हैं।

खल (गौ का खाद्य) का टुकड़ा दिया नहीं भारत की गैया मैया को।

हो एक बात तो बतलाऊ 'ठाकुर' इस पागलखाने की।

जब राष्ट्रपति को दस हजार, मिलता दस लाख सुरैया (अभिनेत्री) को ॥

सृष्टि रचयिता की रचना तो बुद्धिपूर्वक ही हुई है, चाहे हम अल्पज्ञों को उसका रहस्य समझ में न आये, यह भाव इस कविता में देखे-

दुनिया बनाने वाले दुनिया बनाई, रचना समझ में मेरे न आई।

निर्जन वन में फूल खिलाये सोने मे क्यों न सुंगध समाई।

गन्ने में फल भी लगाया तो होता, चंदन में क्यों न कलियां खिलाई।

काबुल में किशमिश ब्रज में है टैंटी (करील के फल)।

पशुओं में कैसी कस्तूरी जमाई।

यदि कोई और होता ठाकुर कवि जी, उसे मूर्ख बनाती सारी खुदाई।

सांसारिक विषयों में तल्लीन जीव को प्रबोधन देता कवि कहता है-

विषयों में फंस कर ए मूर्ख, भगवान भजन क्यों छोड़ दिया।

है शोक ऋषि और मुनियों के सब चाल चलन को छोड़ दिया।

यहां बड़े-बड़े मति वाले भी माया में हुए मतवाले,

पापिन के कटीले कांटों में गुलजार चमन (प्रफुल्लित उद्यान) को छोड़ दिया।

स्वारथ के इन टुकड़ों पर तू कुत्तों की तरह दर दर भटका,

दो रोटी के बदले में हमने संध्या हवन को छोड दिया।

तेरे प्रेम का चस्का लगते ही देखा राजे-महाराजों को,

देही पर भस्म रमा बैठे और तख्ते वतन को छोड़ दिया।

तेरे अनुराग के दीपक पर मेरा मन जब पतंग बना,

तब पार हुआ भवसागर से आवागमन को छोड दिया।

'ठाकुर' जिस पर तूने तन मन धन सब वारा था।

उसने श्मशान मे जाकर के चार हाथ कफन दे छोड़ दिया॥

जिस दीपावली के दिन महावीर स्वामी, स्वामी रामतीर्थ तथा ऋषि दयानन्द ने महाप्रस्थान किया उसे उलाहना देते हुए कवि ने लिखा-

जैन अचारी (आचार्य) गुणधारी तपी ब्रह्मचारी महावीर स्वामी की जोत बुझाई है। भक्ति रस रसना मस्ताना स्वामी रामतीर्थ उसकी छटा तूने गगा में डुबोई है। जगहितकारी वेदधर्म के प्रचारी दयानन्द ब्रह्मचारी को अनन्त में बिताई है। कहे कवि 'ठाकुर' ऐते अधम अघन (पाप) कर कारे मुखवारी तू दिवाली फिर आई है।

यहां इस प्रतिभाशाली कवि ठाकुर के रससिक्त काव्य की एक झलक ही दी जा सकी है। हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि आर्य समाज से जुड़े इन दिवंगत कवियों, गायकों और भजनोपदेशकों के जीवन और कृतित्व का लेखा-जोखा एक बार पुन: किया जाए।

आर्य समाज मन्दिर अन्धेरी का 15वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर अन्धेरी मुम्बई का 15वां वार्षिकोत्सव व 21 कुण्डीय राष्ट्र रक्षा यज्ञ 10 जनवरी से 13 जनवरी 2002 तक होगा। इस विशाल यज्ञ के ब्रह्मा सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य श्री अखिलेश्वर जी जम्मू, वेदपाठी कन्याएं आर्य कन्या गुरुकुल सासनी हाथरस उत्तर प्रदेश तथा सुमधुर गायक कलाकार श्री कंचन जी दिल्ली से पधार रहे हैं।

13.1.2002 को आर्य सम्मेलन रखा गया है इसका विषय नई पीढ़ी के निर्माण में माता पिता तथा समाज की भूमिका है।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुदर्शन कुमार जी शर्मा सुपुत्र श्री हरबंस लाल जी शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (जालन्धर) करेंगे, विशेष अतिथि श्री कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, प्रमुख वक्ता श्री स्वामी मेधानन्द जी सरस्वती, श्री ओंकारनाथ आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुंबई, डा सोमदेव जी शास्त्री प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रूज मुम्बई तथा श्री सत्यपाल सिंह जी डी.आई.जी. पोलीस नासिक पधार रहे हैं। -ज्ञानचन्द, प्रधान

आर्य समाज धूरी का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

28 नवम्बर को शोभा यात्रा बहुत ही धूमधाम, सज-धज, के साथ निकाली गई। रास्ते में सात गेट बने हुए थे। पांच स्थानों पर शोभा यात्रा की शोभा को बढ़ाने के लिए श्री महाशय प्रमोद जी (महाशय इलैक्ट्रिक स्टोर) ने मिठाई का, श्री बचन लाल गोयल (गोयल ब्रदर्स) ने बिस्कुटों का, श्री प्रवीण जी (नैशनल स्टोर ने जलपान का, श्री अनिल कुमार जी (बाम्बे क्लाथ हाऊस) ने सेबों का प्रबन्ध किया था और श्री अशोक जी (चिरंजी लाल अशोक जी मिष्ठान विक्रेता) ने मजेदार नमकीन शोभा यात्रा में बांटी।

शोभा यात्रा में कार, स्कूटर, 2 बैण्ड बाजा, 6 ट्रैक्टर ट्राली और आर्य वीर दल का झण्डाधारी दल, आर्य कालेज की छात्रायें, आर्य स्कूल के छात्र-छात्रायें तथा यश चौधरी माडल स्कूल के बच्चे व तीनों संस्थाओं के स्टाफ, प्रिंसीपल साहिबान आर्य समाज व स्त्री आर्य समाज के सभी सदस्यगण तथा अन्य समाजों से आये हुए व्यक्ति शोभा को बढ़ा रहे थे। आर्य स्कूल की भांगड़ा पार्टी लोगों को खूब मोहित रही थी। 29 नवम्बर से आर्य समाज करके प्रधान श्री प्रहलाद कुमार जी और कैशियर श्री वीरेन्द्र कुमार जी ने 2 दिसम्बर तक यजमानों की व्यवस्था की। मंत्री श्री राधेश्याम जी मोहिल जी ने मंच का संचालन बहुत सुन्दर ढंग से किया। आचार्य देवव्रत (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) के प्रवचनों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और श्री जगत वर्मा जी श्री प्रीतम जी मुसाफिर, कु० पूजा देवी के भजन होते रहे। सभी कार्यक्रम पूजनीय श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थ की अध्यक्षता में हुए। पूर्णाहुति पर स्कूल के बच्चों को पंजाब शिक्षा बोर्ड में स्थान लेने पर आर्य स्कूल की तरफ से पुरस्कार वितरित किए गए और महाशय लक्ष्मण दास जी की पुण्य स्मृति में पुरस्कार वितरित किए गए। महाशय कुन्दन लाल लाजवन्ती मैमोरियल फण्ड धूरी की पुण्य स्मृति में 9,000 रुपए तथा 4,000 रुपए के महर्षि दयानन्द जी के चित्र 28 विद्यार्थियों को वितरण किए गए।

सभी आगन्तुकों और विद्यालयों की छात्र, छात्राओं तथा स्टाफ सहित और संगरूर, तपा, करनाल, अहमदगढ़ मालेरकोटला राजपुरा के सभी समाजों के आगन्तुकों ने मिल कर प्रीति भोज किया। कार्यक्रम का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। 2 दिसम्बर को धनवन्त सिंह एम.एल.ए. भी पहुंचे और उन्होंने एक लाख रुपए का दान संस्था को दिया। श्री वासुदेव जी आर्य, श्री वीरेन्द्र जी, श्री अशोक जी ने प्रधान श्री प्रहलाद कुमार जी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया। यज्ञ के प्रारम्भ में पूर्णाहुति तक तीनों विद्यालयों के बच्चों ने एक करोड़ ओ३म् का जाप किया।

—पं. राम सागर शास्त्री

अमृतसर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर में 23 दिसम्बर रविवार को आर्य जगत के महान सन्यासी, स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्री इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर की अध्यक्षता में बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभ-आरम्भ आर्य समाज के पुरोहित पं. मुकेश आर्य ने यज्ञ द्वारा किया। इस अवसर पर बोलते हुए इन्द्रपाल आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के बाद आर्य जगत् की धरोहर को सम्भाला। महर्षि दयानन्द का अनन्य भक्त बन कर उनके गुरुकुल खोलने के स्वप्न को पूरा करने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया व सबसे पहले अपने दोनों लड़कों को गुरुकुल में भेजा। दिल्ली चांदनी चौक में उन्होंने अंग्रेज सिपाहियों के आगे अपना सीना तान दिया। आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने शुद्धि का अभियान चलाया। इसी अभियान के कारण उन्होंने अपने प्राण देने पड़े। आज के दिन अब्दुल रशीद नामक हत्यारे ने उनको शहीद कर दिया। वो ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने राष्ट्र समाज के लिए अपना बलिदान दे दिया। कार्यक्रम में प्रिं. विनोद पाल, सोमेश कपूर, रमेश वोहरा, संजीव आर्य, जवाहर लाल, मा. वजीर चन्द, प्रवीण कुमार, शुक्ला देव, कश्मीरी लाल जी उपस्थित थे। प्रधान जी के द्वारा गाया भजन "मेरा रंग दे बसन्ती चोला" स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधारित गीत से वातावरण गुंजयमान हो गया।

—सोमेश, मन्त्री

सप्तम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

झीलों की विश्व प्रसिद्ध सुरम्य नगरी उदयपुर में कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के लेखन स्थल पवित्र ऐतिहासिक नवलखा महल में 26 से 28 फरवरी 2002 तक सप्तम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव मनाया जा रहा है। जिसमें सारे भारत के प्रसिद्ध विद्वान्, सन्यासी, महात्मा पधार रहे हैं। इस उत्सव में पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाएं।

—स्वामी तत्वबोध सरस्वती, अध्यक्ष

आर्य समाज गोबिन्दगढ़ जालन्धर का उत्सव

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का 56वां वार्षिकोत्सव 8 अप्रैल 2002 से 14 अप्रैल 2002 तक बड़े उत्साह और श्रद्धा पूर्वक मनाया जाएगा जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् महात्माओं एवं भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया जा रहा है। सभी स्थानीय आर्य समाजों के अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि उक्त तिथियों में अपने आर्य समाज के कार्यक्रम न रखें अपितु इस आर्य समाज के कार्यक्रम में उपस्थित होकर सहयोग देवें।—नरेश कुमार मन्त्री

आर्य वीर दल हांसी का 10वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

हांसी-आर्य वीर दल हांसी का 10वां वार्षिक उत्सव हल्का संचालक आचार्य रामसुफल शास्त्री जी के नेतृत्व में स्थानीय डी ए वी. कालेज के प्रांगण में बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। जिसमें प्रथम दिन प्रात: 5 बजे सैंकडों नर-नारियों ने मिल कर प्रभात फेरी निकाली व सायं काल कु विजया प्रिंसिपल आर्य कन्या विद्यालय की अध्यक्षता में विशाल महिला जागृति सम्मेलन किया गया जिसकी मुख्य अतिथि डा विजया प्रभा (हिसार) थी।

दूसरे दिन प्रात: 8 बजे आचार्य रामसुफल शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। जिसमें मुख्य सपत्नीक यज्ञमान श्री राजकुमार शारसर लुहारी (भिवानी) आचार्य प्रवर पं भरत लाल जी शास्त्री व ओमप्रकाश भाटिया पूर्व कोषाध्यक्ष आर्य समाज हांसी थे। तत्पश्चात् चौ. जवाहर सिंह आर्य उपप्रधान आर्य समाज जी.टी. रोड हांसी की अध्यक्षता में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया जिसके मुख्य अतिथि श्री मोहन श्याम आर्य (हिसार) विशिष्ट अतिथि डा. भूप सिंह राजपूत थे। इस मौके पर आर.डी. पब्लिक स्कूल व डी.ए वी पब्लिक स्कूल के बच्चों ने रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किए व कु. अन्जु, कु. मन्जू ने बलिदानी गीत प्रस्तुत किया। उत्सव के दौरान स्वामी वेदानन्द जी (जालौन उ प्रदेश), महात्मा तारा चन्द जी राजस्थान, स्वामी अध्यानन्द जी (चूरू राज.) साध्वी विशोकायति (बरवाला), प्रो. ओम कुमार जी (जीन्द), प्रो. सत्यकाम जी (हिसार) पं. रणधीरजी भजनोपदेशक (सिरसा) सुदेश शास्त्री (हिसार), विरेन्द्र शास्त्री (महम) आदि साधु सन्त विद्वान् महानुभावों ने अपने-अपने विचार रखे तथा हांसी के श्री सोहन लाल भयाणा, शिक्षा विद साहित्य सेवी श्री ब्रह्मराज मित्तल, चमन लाल नारंग, लाला हंसराज आर्य, श्री राजेन्द्र कुमार आर्य, सतीश कुमार मुंजाल (मैनेजर), ओम प्रकाश पार्षद, पूर्व विधायक श्री अमीर चन्द मक्कड़ व अन्य सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उपरोक्त जानकारी देते हुए आर्य वीर दल के प्रैस सचिव राजेश शर्मा ने बताया कि श्री पं. रामसुफल श्री शास्त्री जी ने घोषणा की कि हांसी हल्के के हर गांव में आर्य वीर दल की स्थापना की जाएगी। उत्सव के दौरान दल के पूर्व संचालक वैदिक विद्वान् पं. भरत लाल शास्त्री का नागरिक अभिनन्दन भी किया गया। कार्यक्रम से प्रभावित होकर भिवानी के श्री राजकुमार शारसर ने दल के संचालक आचार्य रामसुफल शास्त्री से विनम्र निवेदन किया कि ऐसा ही भव्य कार्यक्रम हमारे यहां भी करें जिसका खर्च शारसर जी स्वयं वहन करेंगे। विशिष्ट अतिथि डॉ. भूप सिंह राजपूत ने आर्य वीरों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि अन्य युवकों को भी आगे आना चाहिए ताकि भारत फिर से आर्यवर्त्त बन सके।

– मन्त्री, आर्य वीरदल

भटिण्डा में राष्ट्रपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज आर्य समाज चौक भटिण्डा मे महर्षि दयानन्द सत्सग भवन में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बडी धूमधाम एव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम पुरोहित जी आचार्य श्री गुरु प्रसाद शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ के मुख्य यजमान श्री रणधीर सिह जी थे। आज का यह कार्यक्रम प्रधान प्रो ओ पी मगला जी की अध्यक्षता मे हुआ। हवन यज्ञ सम्पन्न होते ही श्री प्रेम भाटिया जी महामन्त्री आर्य समाज ने मच सभाला एव हासी (हरियाणा) से पधारे श्री रत्न देव जी वानप्रस्थी तथा ब्र सूर्यदेव जी वैदिक मिशनरी गुरुकुल शिल्प विद्यालय भटिण्डा का मच पर पधारने का आग्रह किया एव उनका परिचय देते हुए कहा कि आज हमारा सौभाग्य हे कि ये महानुभाव हमारे यहा पधारे। कार्यक्रम के आरम्भ मे श्रीमती वीना आर्य ने एक भजन प्रस्तुत किया जिस पर सभा उपस्थित आर्य जन झूम उठे। तदुपरान्त श्री जसविन्दर सिह जो कि डी ए वी कालेज भटिण्डा के एक हानहार छात्र हे ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर एक प्रभावशाली वक्तव्य दिया। यह आर्य माडल हाइ स्कूल का पुराना विद्यार्थी हे। पूज्य रत्न देव जी वानप्रस्थी न स्वामी श्रद्धानन्द जी का परिचय देत हुए आ विश्वानि देव इस मन्त्र का व्याख्या की। आगे उन्हाने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जा सत्यानुरागी थे एव जिस बात का वे ठाक समझते थे उसे कहने और करने मे कभा नहीं चूकत थे। व जावन भर सत्य क प्रचार के लिए अपने बेगान सभी स सघषरत रहे किन्तु उन्हाने कभी भी सत्य का मार्ग नही छोडा। श्री वानप्रस्थी जी ने नवयुवक क नो गुण बताये जो कि 1 शरीर बलिष्ठ 2 तीव्र बुद्धि 3 चातुर्य 4 अथक परिश्रम 5 कार्ति 6 साहस 7 धर्म से धन कमाना 8 प्रारब्ध 9 आत्मबल इत्यादि ब्र सूर्यदेव जा ने कहा कि हमे आधाराशला नहा दिखाइ देती अत हम उसकी प्रशसा नही करत किन्तु हम भवन का प्रशसा करते हैं। गाधी जी को महात्मा की उपाधि से विभूषित करने वाले अनुपम राष्ट्र पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। आचार्य श्री गुरु प्रसाद जी शास्त्री ने अपने वक्तव्य मे कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द महर्षि दयान्द के वेदानुमोदित सत्य सिद्धान्तो और मन्तव्या को व्यवहारिक रूप दने वाले वीर बलिदानी सन्यासी थे। स्वामी श्रद्धानन्द (मुशीराम जी) न अपनी कन्या का विवाह स्वय ऊची जाति के खत्री होत हुए भी एक अरोडा नवयुवक से कर दिया तथा अपने शेष बच्चा के विवाह भी आपने जात पात ताडकर किए। आज तो इस प्रकार क काय एक सामान्य सी बात हो गए है परन्तु उस समय अन्तर्जातीय विवाह करना किसी विरले वीर का ही काम था। आगे श्री शास्त्री जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी न गुरुकुल कागडी के अतिरिक्त भटिण्डा मे भी गुरुकुल की स्थापना कर महर्षि दयानन्द जी के स्वप्न को साकार करन की कोशिश की। प्रधान जी ने वानप्रस्थी जी ब्रह्मचारी जी पुरोहित जा एव सभी उपस्थित महानुभावा का इस कार्य म मम्मिलित होन पर हार्दिक धन्यवाद किया एव कहा कि तब स्त्री जाति का पढन का अधिकार नहीं दिया जाता था किन्तु आज स्त्री जाति जो कि शिक्षा क क्षेत्र म आग बढ रही हे यह स्वामी श्रद्धानन्द जा का देन हे।

इस अवमर पर स्थानीय शिक्षण सस्थाआ के विद्यार्थिया क अतिरिक्त आय वीर दल भटिण्डा क नवयुवक आर्य सभा जिला भटिण्डा क सरक्षक ला वजारचन्द जा श्री विनोद कुमार गग डा स्वच्छ सचदवा ना श्रीमता इन्द्रा छाबडा जी श्री अशाक गर्ग श्री गारा शकर जी श्रा नवनीत कुमार जी आदि उपस्थित थे। आज का यज्ञ शष श्रीमता स्वच्छ सचदवा की ओर से वितरण किया गया। प्रसाद वितरण स पूव शान्ति पाठ हुआ। इसके साथ हा यह कायक्रम सम्पन्न हुआ।

—प्रेम भाटिया महामन्त्री

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आय प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा आय समाज माटगा नप्पू गाडन मुम्बइ के खुले मैदन मे मुम्बई महानगर की स्थानीय समस्त आर्य समाजा की ओर स स्वामा श्रद्धानन्द जा का 85वा बलिदान दिवस रविवार दि 23 दिसम्बर 2001 का सावदशिक आय प्रतिनिधि सभा दिल्ला क प्रधान आय नता केप्टन दवरत्न आय का अध्यक्षता म मनाया गया?

दयानन्द बालक/बालिका विद्यालय माटुगा एवम् कान्दिवली मुम्बई के छात्र छात्राओ ने स्वामा श्रद्धानन्द जा क जीवन एव कार्यो पर प्रकाश डाला छात्राओ न स्वामा श्रद्धानन्द जा स सबधित गीत कविता एव भाषणा स उपस्थित लाग मन्त्र मुग्ध हो गए।

इस अवसर पर श्रामता शिवराजवती आर्य क भजन हुए। तत्पश्चात् ब्र अरुण कुमार आर्य श्री प्रभामित्र प विजयपाल शास्त्री एवम् मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा वेदिक विद्वान् प प्रभारजन पाठक जी क आजस्वी प्रवचन हुए जिसम देश की वर्तमान परिस्थितियो मे स्वामी श्रद्धानन्द जी क कार्यो की प्रासगिकता पर गहरा प्रकाश डाला गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री ओकारनाथ जी आय ने कहा कि बाहर से कहीं ज्यादा खतरनाक हमारे भीतर के शत्रु हे इनका मुकाबला करने के लिए एक एक हिन्दू को अपने अन्दर स्वामी श्रद्धानन्द जा की श्रद्धा को पेदा करना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आय न अपन अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि आज समाज को स्वामी श्रद्धानन्द जी जसे हमारा समाज सुधारका की आवश्यकता है। वेदिक सस्कृति के विकास के लिए स्वामी जी के जीवन एव कार्य प्रणाली से हम शिक्षा लेवे जिससे व्यक्ति परिवार समाज और राष्ट्र की सर्वागीण उन्नति हो सके। कार्यक्रम का सचालन आय प्रतिनिधि सभा मुम्बई के महामन्त्री श्री मिठाई लाल सिह ने किया।

तपा में पारितोषिक वितरण समारोप सम्पन्न

तपामंडी, बी.एस.एन. आर्य पब्लिक स्कूल तपा का वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह बड़ी धम-धाम से सम्पन्न हुआ। इसका उद्घाटन श्री तेज पाल पक्खो निदेशक दी नार्दरन इंडिया काटेन एसोसीएशन ने किया। अध्यक्षता सर्वहिन्द शिरोमणी अकाली दल के जिला प्रधान सत बाबा टेक सिह धनौला ने की। आर्य समाज तपा तथा एस एन आर्य हाई स्कूल तपा के अध्यक्ष डा राजकुमार शर्मा ने शम्मा रौशन की। समारोह का आरम्भ आर्य मर्यादा अनुसार 'गायत्री मंत्र' के गायन से हुआ।

स्कूल के चेयरमैन श्री बिहारी लाल शर्मा ने आये अतिथियों का स्वागत किया। स्कूल के बच्चों द्वारा रंगा रंग प्रोग्राम पेश किया गया। सचिन एण्ड पार्टी का स्वागती गीत तथा साहिल एण्ड शब्द 'मेरे लाल जीओ' गाकर माहौल को अध्यात्मक रंग दिया गया। काजल एण्ड पार्टी एक्शन सांग 'बच्चे मन के सच्चे' पसंद किया गया। बाल कलाकार शैलजा तथा बच्चों ने अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन किया। सचिन और कशिश का स्किट 'इंट्रव्यू' भी अच्छा लगा। फौजी वर्दी में नन्हें-मुन्ने कलाकारों का एक्शन शांग 'वीर तुम बढ़े चलो' पर भी खूब तालियां बर्जी, 'रैड-लाईट' कविता ने भी श्रोताओं को झूमने पर विवश किया जो अवनीष एण्ड पार्टी दारा पेश की गई थी।

समारोह के अध्यक्ष संत बाबा टेक सिंह धनौले ने अपने भाषण में कहा कि सरकारी स्कूलों के मुकाबले प्राईवेट शिक्षण संस्थाओं का शिक्षा के क्षेत्र में डाला योगदान प्रशंसनीय है। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि इनके लिए अक्षर ज्ञान अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपनी ओर से स्कूल को 11 हजार तथा राज्य सभा के सदस्य जत्थेदार गुरचरण सिंह टौहरा की ओर से 50 हजार रुपए भेजने की घोषणा की। श्री तेज पाल पक्खो, डा. राजकुमार शर्मा तथा श्री बिहारी लाल शर्मा ने बाल कलाकारों को सम्मान चिन्ह देकर बच्चों का अभिनंदन किया। पंजाबी लोक गायक श्री बलवंत सिंह हीरा ने अपना प्रोग्राम देकर श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया। श्रीमती किरना देवी ने मंच संचालन किया। **-सी. मारकंडा**

आर्यसमाज तपा मंडी

जिला आर्य सभा संगरूर द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

देश की स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेज़ों की संगीनों के सामने छाती तानकर गर्जने वाले और भारतवर्ष की वैदिक संस्कृति की रक्षा हेतु देश में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना करने वाले अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान जिला आर्य सभा संगरूर की ओर से जिला स्तर पर आर्य समाज मलेरकोटला में पूज्य महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी धूरी की अध्यक्षता में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस समारोह में आर्य समाज बरनाला धूरी तथा अहमदगढ़, संगरूर के अतिरिक्त आर्य समाज राजपुरा के सैंकड़ों आर्य भाई बहनें तथा मलेरकोटला की विभिन्न धार्मिक व सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। हिसार के स्वामी माधवानन्द जी सरस्वती व डी ए. वी. पब्लिक स्कूल के प्रिंसीपल डा. परमिन्द्र सिंह संघा मुख्यावक्ता के रूप में सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम का प्रारम्भ डी ए.वी. पब्लिक स्कूल के बच्चों ने ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना मन्त्रों के उच्चारण से किया जबकि तुरन्त बाद बहन सुनीता मालेरकोटला व दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर बरनाला के बच्चों ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर आधारित मधुर भजन प्रस्तुत किए। सभा में खचाखच भरे पंडाल में उपस्थित अतिथियों व आर्य पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए जिला सभा अध्यक्ष सतीश सिंधवानी (बरनाला) ने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित कुछ अविस्मरणीय घटनाओं का वर्णन किया। इस समारोह से पूर्व आर्य समाज मालेरकोटला में पिछले चार दिनों से चल रहे वेद प्रचार महायज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई जिसमें संगरूर क्षेत्र के सांसद श्री सिमरनजीत सिंह जी मान के सपुत्र स. ईमान सिंह मान ने पहुंचकर अपने पिता की हाज़री लगवाते हुए आर्य समाज मालेरकोटला के लिए एक लाख रुपए अनुदान की घोषणा की।

जिला आर्य समाज की ओर से इस अवसर पर धूरी के निष्काम समाज सेवक व नेत्रदान अभिमान में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले श्री प्रतिज्ञा पाल जी आर्य को विशेष रूप से सम्मानित किया गया. सभा का संचालन जिला आर्य सभा के महामंत्री श्री रामशरण आर्य ने बड़े अनूठे व विशिष्ट अन्दाज में किया।

इस आयोजन ने आर्य समाज बरनाला, धूरी, मालेरकोटला, तपा, संगरूर व अहमदगढ़ के प्रधान सर्व श्री अमृत लाल गुप्ता , प्रहलाद कुमार, के के शर्मा, राजकुमार शर्मा, वेदपाल टुटेजा, व विजय हिन्द के अतिरिकत श्री रमेश कौशल, मंगत राय गोयल, सुनीता आर्या, वासुदेव आर्य, विजय कुमार गोयल, पवन सिंगला, महेन्द्रकपिल, सी. एल मारकण्डा, राम कुमार सोबती, प्रिंसीपल बी एल. कालिया, कृष्णा आर्या, महाशय वीरेन्द्र आदि का क्रियात्मक सहयोग मिला। जिला आर्य सभा की ओर से आगामी कार्यक्रम आर्य समाज स्थापना दिवस अहमदगढ़ में मनाने का निर्णय लेने के साथ शांति पाठ से सभा सम्पन्न हुई। **-सतीश सिंधवानी**

आर्य समाज धूरी में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

22 दिसम्बर को आर्य समाज धूरी में बड़ी धूमधाम स श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस उत्सव की अध्यक्षता पूज्यपाद महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थ ने की और आर्य समाज के प्रधान श्री प्रहलाद कुमार जी ने संक्षिप्त व्यवस्था के अन्तर्गत आर्य कालेज, आर्य सी सै स्कूल और यश चौधरी माडल हाई स्कूल के स्टाफ का तीनों मंस्थानों के प्रिंसिपल साहिबानों को व सभी बच्चों को इस कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर दिया सभी बच्चों ने बढ-चढ कर कार्यक्रम की शोभा को बढाया और अपने मधुर वचनों से गीत प्रवचन कविताए इत्यादि सुनाकर सभी का मन मुग्ध कर दिया और मत्री श्री राधेश्याम जी मोहिल जी ने मच का संचालन बहुत ही खूबसूरती के साथ सम्पन्न किया और नवयुवकों को भारतीय संस्कृति से जुड़ने को कहा आर्य समाज के पुरोहित पं. राम सागर जी ने कहा कि अकेले रह कर हार न माने क्योंकि प्रवचन अकेले ही श्रद्धानन्द जी ने जामा मस्जिद में सुनाए। अन्त में श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी ने अपनी ओजस्वी वाणी में बच्चों को उद्बोधन करते हुए कहा कि मैं एक बार ईसाई स्कूल में गया और एक बच्चे से पूछा कि बेटा आपके मात-पिता क्या करते हैं तो उसने कहा कि वे तो [illegible] नहीं, अत: मुझे दुख हुआ कि बच्चा अनाथ है लेकिन जब मैंने पूछा आप रहते कहा हो तो कहा कि मैं अपने मम्मी-डैडी के साथ रहता हूं। आज के बच्चों को माता-पिता का पता नहीं मम्मी-डैडी का पता है। इस तरह से बच्चों को अपनी भारतीय संस्कृति से जोड़ने का उद्‌बोधन किया और ईश्वर भक्ति, मातृ-पितृ गुरु भक्ति और राष्ट्र भक्ति की ओर प्रेरित करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। **-राम सागर शास्त्री, धूरी**

लुधियाना में नए भवन का शिलान्यास

आर्य समाज, माडल टाऊन, लुधियाना के नये भवन का शिलान्यास, श्री सत्यान्द जी मुंजाल, प्रधान के द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब की कार्यकारी प्रधाना प्रिंसीपल श्रीमती पी.पी. शर्मा तथा मन्त्री श्री इन्द्रजीत तलवार उपस्थित थे। आर्य समाज तथा स्त्री आर्य समाज के सभी सदस्य तथा सदस्यायें उपस्थित थीं। इस समाज की स्थापना आज से 53 वर्ष पूर्व श्री संतराम जी स्याल व श्री सत्यानन्द जी मुंजाल आदि महानुभावों ने की थी। **-विजय स्याल, मन्त्री**

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ ।

रजि न एन पी 17504/८

ऋग्वेद | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

दूरभाष 292926

आर्य मर्यादा
जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–55 अक 28 सृष्टि सवत 1960853102, 20 तथा 27 जनवरी 2002 दयानन्दाब्द 178

गुरुकुल कांगड़ी में 25 से 28 अप्रैल तक शताब्दी समारोह सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में होगा

गलत इतिहास न बदला गया तो आर्य समाज एक आंदोलन का रूप लेगा

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न आर्य जी की जालन्धर में घोषणा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न महामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा पुस्तकाध्यक्ष श्री सोमदत्त जी महाजन 6 1 2002 को जालन्धर पधारे। स्टेशन पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारियो ने उनका पुष्पमालाओ से जालन्धर पधारने पर स्वागत किया।

श्री केप्टन देवरत्न जी ने एक प्रेस कान्फ्रेंस को सम्बोन्धित करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने आज एक सौ वर्ष पूर्व 1902 मे गुरुकुल कागडा की स्थापना की थी अब यह एक विश्व विद्यालय बना हुआ है। इस गुरुकुल ने देश को अनेकों देश भक्त समाज सेवक व राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् दिए हैं। इसके साथ ही गुरुकुल के स्नातक देश विदेश मे भिन्न भिन्न स्थानो पर व उच्च पदो पर कार्य कर रहे हैं। इस गुरुकुल की अपनी गरिमा रही है। कई अग्रेज अधिकारी तथा महात्मा गाधी तथा दूसरे कई राष्ट्रीय नेता देश आजाद होने से पूर्व इस के वार्षिक समारोहों को सम्बोधित करते रहे हैं। देश आजाद होने के पश्चात् भी अनेकों राष्ट्रीय नेताओ ने इस गुरुकुल के समारोहो मे भाग लिया। गुरुकुल का अपना एक उज्जवल इतिहास है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने इस गुरुकुल की उन्नति के लिए बहुत कार्य किया है।

इस लिए हमने पजाब सभा के अधिकारियों से मिल कर निश्चय किया है कि वैशाखी की भीड़ भाड निकल जाने के पश्चात् 25 अप्रल से 28 अप्रैल तक हरिद्वार मे गुरुकुल कागडी का शताब्दी समारोह मनाया जाए। दिल्ली सभा के अधिकारियो ने भी इन्हीं तिथियो का समर्थन किया है। जेसा हमने गत वर्ष बम्बई मे 23 से 25 मार्च 2001 तक अन्तराष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन किया था जिसमें देश विदेश से लाखो लोगो ने भाग लिया था उसी प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हरिद्वार मे भी किया जाएगा। अन्य देशो से भी आर्य बन्धु हरिद्वार के इस सम्मेलन मे पहुचेंगे। पजाब हरियाणा दिल्ली राजस्थान उत्तर प्रदेश उत्तराचल हिमाचल प्रदेश तथा देश के अन्य भागो से बहुत बडी सख्या मे आर्य बन्धु व बहने वहा पहुचेगा।

उन्होंने आगे कहा 25 अप्रल 200 को दोपहर को गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय का दीक्षान्त समारोह होगा रात्रि का पुराने स्नातकों का सम्मेलन होगा जिसमे सारे भारत तथा विदेशो से पधारे स्नातक भाग लेगे। 26 अप्रैल को प्रात आर्य महा सम्मेलन का उद्घाटन समारोह होगा और उसके पश्चात् हरिद्वार मे विशाल शोभा यात्रा होगी रात्रि को सम्मेलन होगा इसी प्रकार 27 व 28 अप्रैल को भी सम्मेलन होगे। यह महिला वर्ष है इसलिए एक महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया जाएगा उन्होंने आर्य जनता से आह्वान किया है कि इस शताब्दी समारोह मे अवश्य पधारे और इसे सफल बनाये।

इस अवसर पर उन्होने गत दिनो बेची गई गुरुकुल की 198 बीघे भूमि की चर्चा करते हुए कहा कि इस भूमि को हर हालत मे वापिस लिया जाएगा सारी आर्य जनता की आवाज है इस भूमि को वापिस लिया जाए। मुझे इस सम्बन्ध मे बहुत से पत्र विदेशो से भी आए हैं सभी इस भूमि के बिकने से चिन्तित हैं। इस भूमि को हम हर अवस्था मे वापिस लेकर रहेगे। उन्होने कहा स्वामी श्रद्धानन्द जी तीन श लेकर चले थे शास्त्र शस्त्र ओर शुद्धि। अग्रेज अधिकारी ने उनसे पूछा था मुझे पता चला है कि आप गुरुकुल मे बम बनाते है तो उन्होंने ब्रह्मचारियों की ओर इशारा करते हुए कहा था कि यह सभी ब्रह्मचारी देश रक्षा के लिए मेरे बम्ब है। इसलिए मै जब से सार्वदेशिक का प्रधान बना हू मैने निश्चय किया है कि शास्त्र शस्त्र ओर शुद्धि के स्वामी श्रद्धानन्द जी के इस कार्य को आगे बढाऊगा। उन्होने आगे कहा कि आर्य समाज एक बहुत बडी शक्ति है हमारे पास 8 हजार से अधिक आर्य समाज हैं एक सौ से अधिक गुरुकुल एक हजार से ऊपर स्कूल कालेज है जिनमे लाखो विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आर्य समाज एक सार्वभौमिक संस्था है जिसका फैलाव भारत से बाहर विदेशो मे भी है गुरुकुल कागडी के इस शताब्दी समारोह मे पहुच कर हम अपने सगठन का परिचय देना चाहिए।

श्री वेदव्रत जी शर्मा महामन्त्री सार्वदेशिक सभा ने कहा कि आज हमारे बच्चो को इतिहास मे पढाया जा रहा है कि आर्य लोग बाहर से आए थे। हमने इतिहास से ऐसी गलत बातो को निकलवाना है इसलिए हमने सरकार को लिख कर दिया है परन्तु यदि सरकार ने हमारी बात न सुनी तो आर्य समाज इसके लिए सघर्ष करेगा। श्री विमल वधावन जी एडवोकेट वरिष्ठ उप प्रधान ने पूरे आकडो के साथ यह सिद्ध किया कि आर्य भारत के ही रहने वाले थे उन्होने आगे कहा कि यदि आर्य भारत के रहने वाले नही थे तो उनका मूल देश कोन सा है आखिर वह कहा के रहने वाले थे यह बताया जाए श्री केप्टन देवरत्न जी ने भी युक्ति युक्त ढग से इस विषय पर प्रकाश डाला। पत्रकारो द्वारा प्रमाण के रूप मे कोई दस्तावेज पेश करने की बात कहने पर श्रीमती राजेश शर्मा सभा मन्त्री ने कहा कि ऋग्वेद ससार के पुस्तकालय मे सबसे पुरानी पुस्तक है यह बात श्री वधावन जी ने स्पष्ट रूप से रखी है सारा ससार इस बात को मानता है। ऋग्वेद मे आर्य शब्द स्थान स्थान पर आता है परन्तु उसमे कहीं भी हिन्दु मुस्लिम सिक्ख इसाई यहूदी पारसी या द्रविड आदि शब्द नहीं है। यह प्रमाण है कि आर्य लोग ही प्राचीन है।

श्री केप्टन देवरत्न जी ने कहा कि हम गलत इतिहास को बदलवा कर ही दम लेगे इसके लिए यदि आवश्यकता पडी तो आर्य समाज सघर्ष भी करेगा आन्दोलन भी करेगा।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

हमारी कुरुक्षेत्र यात्रा

नरदेव राज वर्मा वरिष्ठ उपप्रधान, आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर-पंजाब

जब महाभारत का युद्ध प्रारम्भ हुआ तो महाराज धृतराष्ट्र ने अपने मन्त्री सजय से कहा:-

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।

माम काः, पाण्डवाश्चैव किम कुर्वत संजय:॥

हे संजय। धर्मक्षेत्र में कौरवों और पाण्डवों के मध्य क्या हो रहा है? मुझे विस्तार सहित बताओ। अर्थात् इस कुरुक्षेत्र का नाम ही धर्मक्षेत्र था और इसे कहीं-कहीं ब्रह्मक्षेत्र भी कहा गया है। हम आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर के कुछ सदस्यों ने पिछले दिनों कुरुक्षेत्र भ्रमण करने का विचार बनाया, तो माननीय पंडित धर्मदेव जी कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्पर्क किया। पंडित जी ने हमें गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा) को देखने का विशेष आग्रह किया। सो हम अमृतसर से कुरुक्षेत्र गुरुकुल मे पहुंचे। आचार्य देवव्रत जी ने हमे कुरुक्षेत्र के दर्शनीय स्थल दिखाने के लिए गुरुकुल के एक अध्यापक श्री सुभाष जी को नियुक्त किया उनके अतिरिक्त डा. आचार्य सोमवेदालंकार जी जो पिहोवा के "स्वस्ति योग मन्दिर" में रहते हैं, हमारे भ्रमणार्थ वह भी साथ चल सब स्थानो का परिचय देते रहे। सर्वप्रथम हम महाभारत के महारथी भूरिश्रवा के नाम पर स्थित एक ग्राम भौरर्म्वांता के रास्ते पिहोवा में पहुंचे। पिहोवा पौराणिक पण्डों का मुख्य केन्द्र है। हमारे वहां पहुचते ही पण्डे इकट्ठे हो गए और हमें पूछने लगे "कहां के वासी ?" तो आचार्य सोमवेदालंकार जी ने उन्हें समझाया तो सब पीछे हट गए। हम सरस्वती तीर्थ के अन्दर गए वहा हमने देखा कि एक खाट पड़ी थी जिस पर कुछ बर्तन, एक छतरी, कुछ वस्त्रादि सामान पड़ा था। पूछने पर पता चला कि यह खाट वह है जो पौराणिक जन अपने मृतक को पिण्ड दान कराते हैं तो इसी खाट को संकल्प करके दान में दे देते हैं और समझते हैं कि हमारे मृतक की गति हो गई। यह चालाक पण्डे पैसे लेकर एक ही खाट न जाने कितने सालों से कितने लोगों से दान करा रहे हैं। इस प्रकार हमने देखा कि यहां पण्डों ने बड़ी लूट की दुकान चला रखी है। पास सरोवर का जल इतना गन्दा है कि बहुत बुरी बास आती है। वैसे यह पण्डे कहते हैं कि ब्रह्मा जी ने यहां से सृष्टि की रचना की थी। सफाई की तो बहुत बुरी अवस्था है। वहां से वापिस कुरुक्षेत्र के रास्ते पक्की सड़क पर हम ज्योतिसर तीर्थ जो स्टेशन से लगभग आठ किलोमीटर है। वैसे तो सम्पूर्ण ग्राम का नाम ज्योतिसर है परन्तु विशेष तीर्थ स्थान वह है जहां मोह के वशीभूत अर्जुन को योगीराज श्री कृष्ण ने ज्ञान दिया। जिसे "गीता" का ज्ञान कहते हैं। यहां अति पुरातन वट-वृक्ष भी है। ज्योतिसर तीर्थ का सरोवर 1000 फुट लम्बा और 500 फुट चौड़ा है। वहां से आगे हमने वह सरोवर देखा, जिसका नाम "नरकातारी बाण गंगा" है। किंवदन्ती है कि यहां महाभारत युद्ध के पश्चात् सब पाण्डव और उनके सैनिक एकत्रित हुए थे और इसी सरोवर में अपने शस्त्रास्त्र धोये थे। वहां से आगे हम ब्रह्म सरोवर देखने गये। ब्रह्म सरोवर का वह स्थान महाभारत युद्ध का केन्द्र स्थल था कुरुक्षेत्र अठतालीस (48) कोस में फैला मैदान था। ब्रह्मसरोवर 3600 फुट लम्बा और 1200 फुट चौड़ा और 15 फुट गहरा है। इसके चारों तरफ यात्रियों के लिए घाट और बरामदे बने हैं, सुरक्षा के लिए रेलिंग बनी हुई है। इसी ब्रह्मसरोवर के एक तरफ पुल से पार सर्वेश्वर महादेव (शिव) का मन्दिर है। ब्रह्मसरोवर के विषय में किवंदन्ती है कि दुर्योधन यहां जल में छिप गया था। वहां से चल कर हम सन्निहित सरोवर देखने गये जो कि 1500 फुट लम्बा और 450 फुट चौड़ा है। इसके चारों तरफ संगमरमर का घाट है। चालाक पण्डे यहां भी यात्रियों को भ्रमजाल में फंसा कर पूजनादि के नाम पर लूटते हैं। उसके पास ही पौराणिक मन्दिर लक्ष्मी नारायण का है और दूसरी तरफ भक्त ध्रुव का मन्दिर है। इसके पश्चात् हम राजा सेठ बलदेव दास बिरला द्वारा निर्मित बिरला मन्दिर देखने गए। मन्दिर के मुख्य द्वार पर एक शिला लगी है जिसमें लिखा है "यह मन्दिर स्वच्छता तथा पवित्रता से आने वाले हिन्दू-मात्र अर्थात् हिन्दुओं के अंग प्रत्यंग सनातनी, आर्य समाजी, जैन, सिख और बौद्ध आदि यात्रियों के दर्शनार्थ के लिए है?" मन्दिर के अन्दर मूर्ति से पहले दोनों तरफ वेद मन्त्रों की शिलायें हैं। इसके पश्चात् हम "श्री कृष्ण संग्रहालय" देखने गए, जिसकी आधारशिला 25 जुलाई 1991 में भारत के राष्ट्रपति श्री वैंकटरमन ने रखी थी और भवन की तैयारी पश्चात् इसका उद्घाटन श्री महावीर प्रसाद राज्यपाल हरियाणा ने 21 अक्तूबर 1995 को किया था। इस संग्रहालय में योगेश्वर कृष्ण से सम्बन्धित मूर्तियों, चित्र और पांडुलिपियां पड़ी हैं। इस संग्रहालय से आगे हम "पैनोरमा एवं विज्ञान केन्द्र" की तरफ गए। इस भवन में नीचे हाल में विज्ञान सम्बन्धी यन्त्रादि, प्राचीन शास्त्रास्त्रों और आयुर्वैदिक औषधियों का वर्णन है। वहां एक तरफ आयुर्वेद के आसव भस्म और रस आदि बनाने की विधि का प्रदर्शन किया गया है। इस भवन की पहली मंजिल पर पैनोरमा है। यहां महाभारत के युद्ध का दृश्य देखने योग्य है। यहां गेलरी के चारों तरफ महाभारत के युद्ध का दृश्य है जो देखने में असली और यथार्थ-रूप प्रगट करते हैं। सपीकरों से युद्ध सम्बन्धी ध्वनियां, घोड़ों की हिनहिनाहट, हाथियों की गर्जना और शंखों का नाद ऐसे होता कि मानो यथार्थ हो। कुल मिलकर पिहेवा और कुरुक्षेत्र में हमें पैनोरमा बहुत सुन्दर लगा? वापिस हम गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा में पहुंचे। इस गुरुकुल के प्रधानाचार्य श्री देवव्रत जी ऊंचे-लम्बे कद के बड़े ही सुयोग्य विद्वान् और सज्जन व्यक्ति हैं। गुरुकुल लगभग 30-35 एकड़ (43 हजार वर्ग गज) स्थान में है जिसमें सात सौ ब्रह्मचारी विद्या प्राप्त करते हैं। यहां तीसरी कक्षा से 10+2 (बारहवीं) तक की पढ़ाई होती है और यह सी.बी.एस.ई. दिल्ली से सम्बन्धित है। यहां हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम दोनों का प्रबन्ध है। परन्तु प्रत्येक विद्यार्थी के लिए संस्कृत और धर्मशिक्षा में उत्तीर्ण होना अति अनिवार्य है। कक्षाओं में अध्यापकों के अतिरिक्त आवास निरीक्षक अलग हैं। चार गोबर प्लांट हैं और गऊशाला में कुल 57 गाये हैं जिनमें से 13 गायें गर्भवति थी और शेष 44 गाये 40 से 45 लिटर दैनिक दूध देती हैं। जिनको दिन में तीन बार दोहा जाता है। इसके साथ ही छः घोड़ियां और दो नवजात घोड़े हैं। छः बैल हैं। गऊशाला के निरीक्षक अलग हैं और घोड़शाला के निरीक्षक अलग हैं। विद्यार्थियों को आहार बहुत बढ़िया दिया जाता है। दूध की तो नदियां बहती हैं। गुरुकुल की अपनी कृषियोग्य भूमि 200 एकड़ है जिससे 20 लाख रुपया वार्षिक आय आती है जो पैसा गुरुकुल पर ही खर्च किया जाता है। गुरुकुल में स्वामी श्रद्धानन्द योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय हैं। जिसमें कार्यरत् सुयोग्य डाक्टर हैं। स्त्रीयों के ईलाज के लिए अलग विभाग है यहां डाक्टर भी महिला ही हैं। बच्चों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ कम्प्यूटर शिक्षा भी दी जाती है। कम्प्यूटर कक्ष अलग बना हुआ है। दो बहुत बड़ी यज्ञशालायें हैं एक में तीसरी कक्षा से आठवीं कक्षा के छात्र यज्ञ करते हैं और दूसरी यज्ञशाला में नवम कक्षा से बारहवीं तक के छात्र यज्ञ करते हैं। ब्रह्मचारियों में शिष्टाचार अति सराहनीय है। शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को खेलादि में भी प्रवीण किया जाता है। जैसे घुड़ सवारी, फुटबाल, वालीबाल, क्रिकेट और जिमनास्टिक। भोजनालय बहुत बड़े स्थान में बनाया गया है। जिसके प्रबन्धक अलग हैं। गुरुकुल के आंगन में एक वट वृक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वारा आरोपण किया हुआ है। कुल मिला कर गुरुकुल बहुत ही सराहनीय है। गुरुकुल में रहने से हम सब को ऐसे लगा कि हमारी कुरुक्षेत्र की यात्रा अति सफल रही। इति ओ३म्।

सम्पादकीय.....

पंजाब के आर्य बन्धुओं से निवेदन

आर्य समाज अपने प्रारम्भिक काल से किसी भी राजनैतिक पार्टी के साथ बन्धा हुआ नहीं है। आर्य समाज ने देश की आजादी के लिए अनेकों बलिदान दिए और आजादी प्राप्त करने में आर्य समाज का महान् योगदान रहा है परन्तु आजादी मिलने पर आर्य समाज ने अपना कोई राजनैतिक हक नहीं मांगा। परन्तु समाज सेवा के सभी कार्य आर्य समाज निरन्तर करता आ रहा है। आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में महान कार्य किया है। हजारों की सख्या में हमारी शिक्षा संस्थाएं चल रही हैं। स्त्री शिक्षा और दलित उद्धार के लिए आर्य समाज ने महान् कार्य किया है। आज सभी लोग आर्य समाज से परिचित हैं परन्तु फिर भी आर्य समाज ने अपना कोई राजनैतिक दल नहीं बनाया जबकि इसे बनाना चाहिए था।

आर्य समाज में इस समय लगभग सभी राजनैतिक पार्टियो की विचारधारा के लोग सम्मिलित हैं इसलिए हम किसी एक राजनैतिक पार्टी का समर्थन नहीं कर सकते परन्तु व्यक्ति विशेष का समर्थन कर सकते हैं। हमारा यह उद्देश्य रहा है कि अच्छे लोग राजनीति में आगे आए और अच्छे व श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता ही देश के नेता बने अर्थात् मन्त्री, मुख्यमन्त्री व प्रधानमंत्री बने। भ्रष्ट लोग आगे न आ सके। क्योकि अच्छे लोग ही देश को आगे ले जा सकते हैं। देश को महान् बना सकते हैं। भ्रष्ट लोग तो देश को रसातल की ओर ही ले जाते हैं और देश को हानि पहुचाते हैं।

इस समय पंजाब में विधान सभा के चुनाव 13 फरवरी 2002 को हो रहे हैं। इस अवसर पर हमें ध्यान देना चाहिए और विचार करना चाहिए कि आर्य समाजियों का कीमती वोट किसे दिया जाए। हमें उसी व्यक्ति को अपना वोट देना चाहिए जो व्यक्ति भ्रष्टाचारी न हों, अर्थात् जो श्रेष्ठ व्यक्ति हो, देश का हितैषी हो और इसके साथ ही आर्य समाज की आवाज को भी सुनने वाला हो। पंजाब में हम पिछले कई वर्षों से देख रहे हैं यहां हिन्दी और संस्कृत के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है। जो भी पिछले सालों में पंजाब में सरकार बनी चाहे वह किसी भी राजनैतिक पार्टी की बनी परन्तु उसने हिन्दी व संस्कृत के सम्बन्ध में आर्य समाज की कोई आवाज नहीं सुनी। आर्य समाज के पास बहुत बड़ी शक्ति है। हमारे पास पंजाब में अनेकों स्कूल कालेज हैं। हमारी डी.ए.वी. संस्थाओं व आर्य स्कूल, कालेजों में लाखों विद्यार्थी पढ़ते हैं। उन में बहुत बड़ी सख्या में वह विद्यार्थी हैं जिनके वोट बने हुए हैं। हम अपने विद्यार्थियो को भी ऐसी प्रेरणा दें कि वह उन्हीं लोगों को अपना वोट दें जो पंजाब में हिन्दी व सस्कृत के उत्थान के लिए कार्य करने को तैयार हों और जो श्रेष्ठ आचरण वाला हो। हमें राजनीति से ऊपर उठ कर अपना वोट डालना चाहिए। प्रत्येक आर्य समाज के अधिकारियों को अपने सभी सदस्यों को प्रेरित करना चाहिए कि वह अपने इलाके के प्रत्याशी से सम्पर्क करे और उसे आर्य समाज की शक्ति का परिचय दें तथा उसे हिन्दी और संस्कृत की वर्तमान स्थिति से परिचित करा कर उसके उत्थान के लिए कार्य करने का उससे आश्वासन लें। जो यह आश्वासन न दे उसे अपना वोट न दे। क्योंकि हमारे सभी धर्म ग्रन्थ सस्कृत व हिन्दी भाषा मे लिखे हैं और हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा है। राष्ट्र भाषा के उत्थान के लिए कार्य करना प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य है। हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा भी है और सम्पर्क भाषा भी है। परन्तु पता नहीं क्यों पजाब सरकार ने हिन्दी और सस्कृत की सदा अवहेलना की है उसे पजाब मे दूसरी राज्य भाषा का भी दर्जा नही दिया गया है।

इसलिए आर्य बन्धु अपने कीमती वोट को बडा सोच विचार कर प्रयोग करें। गत पाच वर्ष के बाद अब हमे अपनी वोट देने का अधिकार मिला है और यदि इस बार हम चूक गए और इसका सही प्रयोग नही किया तो फिर हमे आगामी पाच वर्ष तक पश्चाताप करना पड़ेगा।

प्रत्येक आर्य बन्धु अपना वोट अवश्य डाले और इसका सही प्रयोग करे जिससे आर्य समाज के सगठन का भी लोगो को पता चले। इसलिए सभी आर्य बन्धु इस ओर विशेष ध्यान दे।

—हरबंस लाल शर्मा, सभा प्रधान

सभा से सम्बन्धित स्कूल-कालेजों के अधिकारियों की सेवा में

आर्य समाज ने अपनी शिक्षा संस्थाओं का निर्माण आर्य समाज की विचारधारा का विस्तार करने के लिए किया था। जहां आर्य समाज का यह उद्देश्य रहा है कि कोई भी बालक या बालिका अशिक्षित न रहे प्रत्येक को अक्षर ज्ञान आवश्यक होना चाहिए। महर्षि दयानन्द के निर्देशानुसार आर्य समाज ने अनेकों स्कूल-कालेजो की स्थापना की है परन्तु अब इन स्कूल कालेजो मे अक्षर ज्ञान तो दिया जा रहा है लेकिन आर्य समाज की विचारधारा नही दी जा रही। हमारे स्कूल कालेजों में पढ़ने वाले कई विद्यार्थियों को यह जानकारी नहीं है कि महर्षि दयानन्द कौन थे ? न ही उन्हें आर्य समाज के सम्बन्ध में पता है, न ही वेदों आदि धार्मिक ग्रन्थों की उन्हें जानकारी है ? न ही उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाया जाता है। धार्मिक शिक्षा भी चन्देक स्कूल-कालेजों मे दी जा रही है। धर्म शिक्षा की परीक्षाए भी अब नहीं होती जबकि पहले यह हुआ करती थी।

इसलिए मेरी सभी शिक्षा संस्थाओं के अधिकारियों व प्रधानाचार्यो से प्रार्थना है कि 12 मार्च 2002 को शिवरात्रि का पर्व है। हम इस पर्व को ऋषिबोध पर्व के रूप मे मनाते हैं। जहां आर्य समाजों में यह पर्व मनाया जाएगा वहां इस बार स्कूल कालेजों में भी मनाया जाए। इसके लिए एक विज्ञप्ति सभी सस्थाओं को भेज दी गई है । आशा है सभी को मिल गई होगी। पुन: भी मेरी प्रार्थना है। इस दिन आप बच्चो की भाषण प्रतियोगिता का विशाल आयोजन करें । आर्य समाज के अतिरिक्त दूसरी संस्थाओं के प्रधानाचार्यो व अधिकारियों से सम्पर्क करके उन के छात्र-छात्राओं को भी इस भाषण प्रतियोगिता में सादर आमन्त्रित करें। उन्हें अपनी ओर से बोलने के विषय देवें। इस प्रतियोगिता के सम्बन्ध में स्थान व तिथि की सूचना उन सभी स्कूल कालेजों को पूर्व से भेजें।

इस प्रतियोगिता में निम्न विषय रखे जा सकते हैं। (1) युग पुरुष महर्षि दयानन्द (2) महर्षि दयानन्द और नारी उत्थान। (3) शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान। (4) वसुधैव कुटुम्बकम्, (5) मेरी प्रिय पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश। (6) वीर भोग्या वसुन्धरा। (7) आतंकवाद समस्या-समाधान। (8) पाकिस्तान तेरे साथ क्या सलूक किया जाए। (9) आर्य समाज और आधुनिक शिक्षा पद्धति। (10) भारतीय संस्कृति की पहचान संस्कृत भाषा। (11) भारत की वर्तमान स्थिति और आर्य समाज। ऐसे और भी विषय लिए जा सकते हैं। जिनके द्वारा वेदों तथा वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी बच्चो को कराई जा सकती है।

इस प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय तथा तृतीय आने वाले विद्यार्थियो को अपनी सस्था की ओर से पुरस्कार प्रदान करे और उनका उत्साह बढ़ाए ताकि आगामी वर्ष मे और अधिक बच्चे प्रतियोगिता में भाग लें। इसके पश्चात् सभा की ओर से एक प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी जिसका सभा की ओर से आयोजन किया जाएगा और विजेता विद्यार्थियों को पारितोषिक दिये जाएगे।

मेरी यह इच्छा है कि हमारी शिक्षा सस्थाओं में पढने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को आर्य समाज व आर्य सिद्धान्तों का परिचय हो उनको आर्य समाज की गतिविधियों का पता भी चले ताकि वह आगे चल कर आर्य समाज के सदस्य बने और आर्य समाज के साथ मिल कर कार्य करें।

—हरबंस लाल शर्मा, सभा प्रधान

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

24 12 2001 सोमवार को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस स्कूल के हाल में बड़े समारोह के साथ दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में मनाया गया।

हवन यज्ञ स्कूल की प्रबन्ध समिति की माननीय सदस्य श्रीमती विनोद गाधी जी ने श्रद्धापूर्वक करवाया जिसमें स्कूल के छात्र छात्राएं यजमान बने। श्रीमती गाधी जी ने हवन की महिमा का वर्णन करते हुए बच्चों का ध्यान हवन की ओर आकर्षित किया और श्रद्धापूर्वक सभी बच्चों ने हवन में भाग लिया इस हवन में स्कूल की प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता एव सदस्य बजमोहन अरोडा जी सतपाल नारग जी एव ओम प्रकाश गुप्ता (हरपाल नगर वाले) उपस्थित थे। श्रीमती विनोद गाधी जी ने विस्तार पूर्वक श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर प्रकाश डाला एव बताया कि स्वामी दयानन्द जी के बताये मार्ग पर चलने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जाते हुए कहा कि अब तो मैं जा रहा हूं लेकिन फिर आऊंगा और मैं अपने अधूरे काम को पूरा करूंगा। मगर आज के आर्य समाज के हालात इतने बिगड गए हैं कि ऐसा नहीं लगता इस बदले हुए वातावरण में स्वामी जी दोबारा आएगें। स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने भी बच्चों को सम्बोधित करते हुए बताया यदि हम महापुरुषों के मार्ग पर हम चलने का प्रयास करे तभी इन महापुरुषो के बलिदान दिवस एव जन्म दिन मनाने सार्थक होगे। यदि समय समय पर हम इन महापुरुषों के जन्मदिन एव निर्वाण दिवस मनाते हैं। तभी तो भावी पीढी एव बच्चों को इन महापुरुषों की कुर्बानियों एव देन का पता चलेगा।

स्कूल के सदस्य श्री ओम प्रकाश गुप्ता जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला एव बच्चों को समझाया जो भी स्कूल मे बताया जाता है उसे ध्यानपूर्वक सुनो एव अमल करो। आप सभी छोटे हो इन बातों को गौर नहीं करते लेकिन आप जब बडे हो जाओगे तो इन सब बातों को याद करोगे।

इस अवसर पर छठी कक्षा के छात्र आकाशदीप ने श्रद्धानन्द जी पर एक कविता बोली। दसवीं कक्षा की रेखा आर्य ने स्वामी श्रद्धानन्द जी पर अपने विचार प्रकट किए। दसवी कक्षा की पुष्पा ने भी एक कविता बोली। इस शुभ अवसर पर स्कूल के बच्चों को वार्षिक पारितोषिक दिवस पर भाग लेने के लिए प्रमाण पत्र एव नये साल के कलण्डर बाटे। प्रसाद वितरण एव शाति पाठ के पश्चात् समारोह की समाप्ति हुई। 14 1 2002 को मकर सक्रान्ति का पर्व मनाया गया। यज्ञ स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने करवाया और मकर सक्रान्ति पर्व पर प्रकाश डाला।

—सुनीता मलिक

श्री सिद्धेश्वर शर्मा पुरस्कृत

उत्तर भारत में मोगा शहर के शिक्षा शास्त्री एव कार्यकारी प्राचार्य प्रो सिद्धेश्वर शर्मा जी (डी एम कालेज मोगा) जिनको गत दिनों दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार जेम आफ इण्डिया 2001 प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उन्हें श्री अशोक प्रधान केन्द्रीय मन्त्री ने आल इण्डिया अचीवर कान्फ्रेंस में दिया जिसका आयोजन ताज इन्टरकान्टीनेंटल होटल के सभागार कक्ष मे किया गया। इस अवसर पर बहुत से गण मान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मोगा शहर के वरिष्ठ नागरिको शिक्षाविदो व समाज सेवी सस्थाओ द्वारा श्री सिद्धेश्वर जी शर्मा को बधाईया दी गई।

—प्रो जसपाल सिह, हिन्दी विभाग

एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज रमेश नगर करनाल (हरियाणा) के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। प्रधान जी से सम्पर्क करें।

—[illegible]

(पृष्ठ 1 का शेष)

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान एव गुरुकुल कागडा के कुलाधिपति श्री हरबस लाल जी शर्मा ने कहा कि गुरुकुल की 198 बीघे गत दिनों बची गई भूमि को वापिस लिया जाएगा। इसके लिए भले ही हमें लाखो रुपया खर्च करना पडे। गुरुकुल की पुण्य भूमि को और भवन को गगा पानी मे बहा कर ले जाना चाहता था हमने ठोकर बनवा कर उसे बचवाया और सारे पुराने भवन की मुरम्मत करवाई इस पर लाखो रुपया व्यय हुआ जो हमने किया। हम गुरुकुल की इस 198 बीघे भूमि की भी रक्षा करेगे और इस गुरुकुल को वापिस दिलवा कर रहेगे।

श्री देवेन्द्र नाथ जी रजिस्टार ने कहा कि इस भूमि की रक्षा के लिए हमने कोर्ट मे कार्यवाही की हुई है। स्टे लिया हुआ है। पजाब सभा इसके लिए कार्य कर रही है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के सभी अधिकारी सभा कार्यालय भवन मे पधारे यहा पधारने पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा प्रि स्वतन्त्र कुमार जी श्री डी पी सहगल एडवोकेट श्री सुदर्शन जी शर्मा श्री आशानन्द जी उप प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा श्री मुलखराज आर्य मन्त्री श्री देवेन्द्र नाथ जी रजिस्टार श्री प्रेम भारद्वाज जी कोषाध्यक्ष श्री बलराम शक्ति एडवोकेट श्री सुधीर कुमार शर्मा श्री सरदारी लाल जी आर्य श्री वीरेन्द्र सरीन श्री मोदगिल जी तथा सभा कार्यालय के सभी कर्मचारियो ने पुष्प मालाओ के द्वारा उनका हार्दिक स्वागत किया। श्री कैप्टन देव रत्न जी ने सभा कार्यालय के भवन की सराहना करते हुए कहा कि हम सार्वदेशिक सभा का भी कार्यालय बहुत अच्छा बना रहे हैं। दोनो नीचे वाली मजिल खाली कराई जा रही है। एक मजिल पहले ही खाली कराई जा चुकी है जिसमे शीघ्र ही सभा का कार्यालय ले जाया जा रहा है। उन्होने कहा कि हम शीघ्र ही एक कम्प्यूटर विभाग सार्वदेशिक सभा मे खोल रहे है जिसमे देश विदेश की सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओ का पूरा रिकार्ड स्कूल कालेजो का पूरा रिकार्ड भूमियो का पूरा रिकार्ड गुरुकुलो का पूरा रिकार्ड व आर्य समाज का पूरा रिकार्ड फाईल कर दिया जाएगा। इससे आर्य प्रतिनिधि सभाओ व आर्य समाजो व स्कूल कालेजो के विवाद निपटाने मे भी सार्वदेशिक सभा को सुविधा रहेगी। इसके साथ ही उन्होने एक मजिल पर अतिथि गृह बनाने की भी बात कही। इसके लिए उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से आर्थिक सहयोग की माग की। सभा प्रधान जी ने उन्हे आश्वासन दिया कि हम इस सम्बन्ध मे विचार करेगे। सभा उप प्रधान श्री प्रि स्वतन्त्र कुमार जी ने श्री कैप्टन देवरत्न जी प्रधान सार्वदेशिक सभा श्री वेदव्रत जी शर्मा महामन्त्री श्री विमल वधावन वरिष्ठ उपप्रधान श्री सोमदत्त जी महाजन पुस्तकाध्यक्ष जी का जालन्धर पधारने पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से धन्यवाद किया और कहा कि इस बार आप अचानक जालन्धर पधारे है हम आपका उतना स्वागत नही कर सके जितना हम करना चाहिए था। अगली बार जब आप जालन्धर आएगे तो सारे पजाब की आर्य जनता आपका स्वागत करेगी।

आर्य समाज जामनगर का 75वॉ वार्षिकोत्सव एवम् स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान

आर्य समाज जामनगर का 75वा वार्षिकोत्सव दि 21 से 24 दिसम्बर तक हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस उपलक्ष्य मे सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसके ब्रह्मा आचार्य विद्यादेव जी शास्त्री टकारा थे। एवम् वेदपाठी उपदेशक महाविद्यालय टकारा के ब्रह्मचारी तथा आर्य समाज के पुरोहित पं अरुण शास्त्री जी थे। श्री धर्मवीर जी खन्ना (प्रधान) मुख्य यजमान पद को सुशोभित किए हुए थे।

23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। जिसमे आचार्य विद्यादेव जी डा० स्वामी शारदानद जी सरस्वती तथा विद्यालय की अध्यापिकाए छात्राए व प्रधान श्री धर्मवीर जी खन्ना ने प्रसगोचित उद्बोधन द्वारा स्वामी जी के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर कन्या विद्यालय की छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता भी हुई विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

"ऋषि सन्देश भारत नू सुनाना पै गिया मुड़ के"

ले० श्री प वेद प्रकाश टकारा वाले 73/ भार्गव नगर जालन्धर

इन्सान मूलत स्वार्थी एव अभिलाषाओ का जन्मदाता कहलाता इन्सान का पूरा कोशिश होती है कि वह हरक वस्तु से या जीवित प्राणी उसमे से लाभ कमाये और इस प्रवृत्ति की पूर्ति हेतु हर हद तक मानव जाने को तैयार हो जाता है इस मे जा कर और बदकिस्मती क्या होगा कि मृद तक भी इन्सान की लालची दृष्टि ने अपना जाल फैलाया है इन्सान को भगवान ने ... दी है ... बुद्धि के सहारे वह ... परन्तु इस ... मे पनपन वाला ... ने बगइया के सहारे इन्सान ने निकृष्टता का अन्तिम सीमा को भी छूआ है इस के ठीक विपरीत अगर बुद्धि को दिशा ठीक ... तो इन्सान पूरा प्रकृति को सुरम्य बना सकता है और इतना सुरम्य बना सकता है कि स्वर्ग की कल्पना भी इसके समक्ष फीकी पड जाए। भगवान को पाने के साधन भी इसी बुद्धि के सहारे खोज जा सकते है। महर्षि दयानन्द जी ने मानव के जीवन को दो शब्दो मे ही व्यक्त कर दिया है कि शरीर का आरम्भ वर्तमान और अन्त मे श्मशान अर्थात मृतक कर्म है

परमात्मा सर्वव्यापक है यह सभी जानते है परन्तु मानता कोई भी नहीं आप बहुत बार मृतक व्यक्ति की देह के साथ श्मशान भूमि मे गए होंगे और आपने देखा होगा कि वहा पर प्रत्येक व्यक्ति बड़ी धार्मिकता भरी बाते करेगा। इस ससार मे क्या रखा है? सभी को एक न एक दिन इसी जगह आना है प्रभु की लीला अपरम्पार ... हो दाह कर्म पूरा हुआ और श्मशान भूमि का दरवाजा पार किया आप सभी कुछ भूल कर फिर वही समाज मे अपने अपने कार्यो मे मस्त हो जाते है किसी को कुछ याद नहीं रहता न भगवान और न ही मृत्यु इसीलिए मैने कहा कि इन्सान झूठ मूठ का भगवान को सर्वव्यापक मानता है। जो भगवान को सच मे ही सब जगह मौजूद मानता है उसके लिए समाज की परिभाषा बदल जाती है वह एक ही चीज को जानता है जिस का नाम सत्य है और प्रभ जिस का अन्तिम छोर है इसलिए इन्सान का जीवन और मौत के बीच की कडी को समझना होगा क्योकि जीवन के रहते ही मौत पर विजय प्राप्त की जा सकती है जीवन बडा मूल्यवान है इसे व्यर्थ मे खोना बुद्धिमता नहीं है जीवन का व्यर्थ चले जाना इस बात का सूचक है कि आप ने जीवन को समझा ही नहीं और जिसने जीवन को नहीं समझा वह मौत को ... नहीं समझ पाएगा ऐसा व्यक्ति सिर्फ जीवन और मौत से लाभ कमाने तक ही सोच सकता है।

महर्षि दयानन्द जी ने सस्कार विधि मे सोहलवा सस्कार लिख कर आदमी को उसकी ... का ज्ञान करवाया है इस विधि को स्वामी जी ने इतना सरल बना दिया है कि सभी व्यक्ति आसानी से इसे करवा सकते है हा व्यर्थ के खर्चो को करने की जगह स्वामी जी ने शव को जलाने हेतु थोडा खर्च बतलाया है जो अत्यन्त जरूरी है परन्तु हम उस खर्च को नहीं करते और दूसरे खर्चे हम बेकार ही करते चले जा रहे है। यहा भी इस सस्कार को करवाने मे एक बात स्पष्ट होती चली जा रही है कि हमारे पडित स्वामी जी द्वारा लिखित विधि को न करवा कर समाज मे प्रचलित अन्य विधियो को ही करवाने का अभिमान ले रहे है।

स्वामी जी ने जो विधि लिखी है उसमे शव को नहला कर चार आदमी श्मशान घाट ले जाए और वहा पर लकडिया चिन कर उस पर मुर्दे को रख कर सस्कार करवाने का विधान लिखा है और इस दाह कर्म मे पडने वाली सामग्री का भी लिखा है इसके साथ साथ मन्त्रो की आहूतियो की सख्या भी बतला दी है। 121 मन्त्र हैं अगर चार व्यक्ति इन आहूतियो को डालेगे जोकि स्वामी जी ने लिखा है कि चार व्यक्ति डाल तो 484 आहुतिया हो जाएगी। दाह कर्म के पश्चात् सभी व्यक्ति नहीं पर नहा धो कर जिस घर मे मृत्यु हुई है वहां पर यज्ञ करें। तीसरे दिन मृतक का कोई सम्बन्धी श्मशान मे जाकर चिता से अस्थि उठा के उस श्मशान भूमि मे कहा पृथक रख दवे बस इसके आगे मृतक के लिए कुछ भी कर्म कर्तव्य नहीं है यह अन्त्येष्टि विधि मे लिखा गया है

आजकल हमारे पुरोहित जो विधि करवा रहे है वो भी आप देख ले सबसे पहले मृतक को नहलाकर उसे अनसिले कपडे पहना दिए जाते है उसके पश्चात जिसने भी शव को अग्नि प्रदान करना है उस व्यक्ति से पिंड भरवाए जाते है इसके पश्चात मृतक के घर वालो से मृतक के इर्द गिर्द चक्कर लगाए जाते है तथा अन्त मे मृतक के पाओ की तरफ कुछ पैसे रखवा कर सबसे मत्था टिकवाया जाता है इस क्रिया के पश्चात् शव को श्मशान भूमि मे ले जाया जाता है तथा वहा पर पहुच कर फिर पानी मे भरा घडा तुडवाया जाता है ऐसी कुछ परम्पराओ को करने पश्चात शव को जलाया जाता है तथा शव के ऊपर डाली जाने वाली सामग्री मात्र एकाध किलो से ज्यादा नहीं होती। इसके पश्चात् अस्थि चयन कर उसे गंगा मे बहाने की सलाह दी जाती है।

क्रिया के दिन एक सादा यज्ञ कर बडा समारोह किया जाता है जिसको पगडी रस्म कहा जाता है और उस पगडी रस्म मे आने वाले सभी जनो को भोजन करवाया जाता है और इस भोजन पर बहुत पैसा खर्च किया जा रहा है यह समारोह अब ज्यादातर पैलसो मे आयोजित किये जाने लगे है। इसमे श्रद्धाजलि देने का रिवाज भी चल निकला है। अब आप अपने आप फैसला करे कि यह सारे रीति रिवाज तो आर्य समाज के नहीं है फिर भी पुरोहितो द्वारा सम्पन्न करवाना कहा तक उचित है फैसला मे आप पर छोडता हू। क्रिया के दिन जिस घिनौनी हरकत की तरफ मे आपका ध्यान खींचना चाहता हू वो है मूर्ति पूजा। मृतक व्यक्ति की मूर्ति रख उसके समक्ष एक थाली मे दिया जला कर रख दिया जाता है और उस थाली मे कुछ रुपए भी रखवाये जाते हैं ताकि आने वाले सारे सगे सम्बन्धी उस थाली में रुपए रख कर मूर्ति को मत्था टेक कर अपने स्थान पर जा कर बैठ जावे। यह सब कुछ मृतक के घर मे हो तो ... परन्तु यह सारे ... समाजियो के घरो मे ... लगे तो फिर मन को ठेस लगना स्वाभाविक ही है

महर्षि दयानन्द जी ने उपदेश मञ्जरी के एकादश उपदेश मे लिखा है कि बडी बडी बिरादरियो के अन्दर बहुत से फिजूलखर्चियो के कारण बिरादरियो के सम्बन्ध मे खर्च बहुत बढता है ... जाह किसी का विवाह ... बरात मे दोनो मौको पर बिरादरी को खिलाना पडता है ऐसा खर्च किस काम आएगा ... का मरना और भूखडो का पेट भरना मरे हुए पुरुष के सम्बन्धी पुत्रादिको को कर्ज मे डुबाना इस से बढ कर नादानपन और क्या हो सकता है

महर्षि दयानन्द जी ... पूरा जोर मूर्ति पूजा के खण्डन करने पर था कितने शर्म की बात है कि हम उस महापुरुष के अनुयायी हो कर मूर्ति पूजा करने के ढग ढूढने लग पडे है और सबसे बडी बात तो यह है कि हम बडी आसानी से इस कुरीति के मोह जाल मे फसते चले जा रहे है। बडे बडे आर्य समाजो के अधिकारीगण इस विषय पर उदासीन है। उदासीनता का एक मतलब यह भी होता है कि आप कुछ करना नहीं चाहते जो चल रहा है उसे आप स्वीकार करते है अगर ऐसा हो इनकी सोच है तो फिर यह एक गम्भीर मामला है निकृष्टता की कुछ तो सीमा निर्धारित कीजिए। बाड ही खेत को खाने लगे तो खेत को कोई नहीं बचा सकता। आर्य समाज तो हिन्दुओ मे फैली कुरीतियो को ढूढ ढूढ कर समाप्त करने का सकल्प ले कर चला था। क्या बात है कि सवा सौ साल मे हमारा सकल्प धाराशायी हो गया? हम इतने कागजी शेर निकले कि जिस बुराई को समाप्त करने का बीडा उठाया था उसी को अपनाने के निकट हो गये? आज तो पूरा दिखाई देता है कि ऋषि सन्देश आर्य बन्धुओ को दुबारा सुनाना होगा। मै उनसे भी प्रार्थना करूगा जो कहते तो अपने आप को आर्य समाजी हैं परन्तु अन्दर से वो पूरे पुराणकपथी हैं इस आर्य समाजी पवित्र वृक्ष को छोड कर किसी (शेष पृष्ठ 6 पर)

आर्य समाज पिम्परी में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज पिम्परी की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में दि. 21 से 25 दिसम्बर 2001 दरम्यान पं. बृजपाल जी कर्मठ (उत्तर प्रदेश) का भजनोपदेश कार्यक्रम आयोजित किया। प्रतिदिन प्रात: 7 से 8, सायं 4 से 5.30 पारिवारिक सत्संग एवं रात्री 7 से 8.30 बजे तक भजनोपदेश हुवे। जातिभेद तथा धर्मातरण से आने वाले संकटों से युवकों को अवगत कराया और इसके विरुद्ध कार्य करने का आह्वान किया।

आर्य समाज पिम्परी की युवा शाखा आर्य वीर दल ने प्रति वर्ष की भाति 23 दिसम्बर 2001 को रक्तदान यज्ञ शिविर आयोजित किया। चिंचवड़ देवस्थान के प्रमुख विश्वस्त श्री सुरेन्द्र जी देव महाराज ने शिविर का उद्घाटन किया। 40 रक्तदाताओं ने शिविर में रक्तदान किया। इस कार्यक्रम को यशस्वी करने में सर्वश्री पं. धर्मवीर जी आर्य (हिन्दू स्वाभिमान प्रतिष्ठान), स्वामी ब्रह्मानन्द जी, पं. विश्वनाथ जी आर्य तथा आर्य समाज पिम्परी के प्रधान कृष्ण चन्द्र जी आर्य के मार्गदर्शन में मुरलीधर सुंदराणी, हरिकृष्ण गुप्ता, हरिगुल लाल गणेशवाणी, प्रा. एकनाथ नाणेकर, जगदीश वासवाणी, उत्तम दंडि में, दत्ता सूर्यवंशी, रमेश अर्धाले, अतुल आचार्य, कुमार पारोस आदि पदाधिकारी एवं सदस्यों ने विशेष परिश्रम किया।

शोक समाचार

श्री वाचस्पति जी हमारे बीच नहीं रहे। उनका निधन दिनांक 4-1-02 को हृदयगति रुक जाने के कारण भठिण्डा में हुआ। उनका अत्येष्टि संस्कार ब्र सूर्यदेव जी ने पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न करवाया। आप चार भाई थे। आप रामामण्डी के रहने वाले थे। अब लगभग बीस वर्षो से अपने छोटे बेटे के पास भठिण्डा शहर में रह रहे थे। चारों भाईयों ने गुरुकुल पोठोहार से शिक्षा प्राप्त की थी। श्री वाचस्पति जी के गुरु स्वामी आत्मानन्दजी थे। वाचस्पति जी वेदों के ज्ञाता थे, उन्हें चारों वेदों के अधिकतर मन्त्र कण्ठस्थ थे। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा मे व्यतीत किया। उनकी अंत्येष्टि में भठिण्डा के आर्य जन विशेष रूप से श्री प्रेम भाटिया, चौ बाबू राम जी, श्रीमती शान्ति जिन्दल, श्री नवनीत कुमार, श्री चमन लाल मेहता सम्मिलित हुए। दिवगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति के लिए आर्य जनों ने प्रार्थना की एवं पार्थिव शरीर पर ओ३म् ध्वज, चादर तथा पुष्प मालाए अर्पित की गई। श्री वाचस्पति जी अपने पीछे भरा परिवार जिसमें दो बेटे और दो बेटिया छोड गये हैं। —प्रेम भाटिया

(पृष्ठ 5 का शेष)

अन्य गले-सडे वृक्ष को पकड ले ताकि आप का मन्तव्य भी पूरा होता रहे और आर्य समाज भी वच सकेगा। अभी इस आर्य ममाज को बहुत काम करन है वम भा इसका काम नो कभी खत्म होने वाला नही है। आय समाज ने जो राह पकडी है उम राह की मजिल बहुत दूर हे। जब तक समाज मे आडम्बर और कुरीतिया ह तब तक आर्य समाज इनको समाप्त करन का काम करता रहेगा, यह एसा तो है नहीं कि कोई मठ बनाया ओर फिर उसी मठ के इर्द-गिर्द मारी ऊर्जा समेट कर मठ के अन्दर बैठ गये। आर्य समाज का कार्यक्षेत्र नो पूरा विश्व है जब तक अधर्म का साम्राज्य रहेगा तब तक एक-एक आर्य समाजी आर्य ध्वज उठाये अधर्म का नाश करने हेतू अपनी पूरी ताकत के साथ धर्म के फैलाव का संकल्प ही चलता रहेगा। ऐसी मेरी आशा है। विशाल दृष्टि ही मानवता के मूल्यों का सही आंकलन कर सकती है अथवा दुष्टता भरी बुद्धि ने तो पूरी प्रकृति में रहने वाले प्राणियों को नुक्सान ही पहुचाया है।

आज जरूरत इस बात की है कि हम प्रत्येक आर्य समाजी और जो वास्तव में आर्य समाज का हितैषी है अपनी पूरी ताकत से अपने प्राणों की भी प्रवाह न करते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका उठा कर समाज में फैली तमाम कुरीतियों पर कुठाराघात करें। समाज व्यक्ति नहीं बनाता है। यह सत्य है कि व्यक्तियों के समूह से समाज बनता है इस लिए समाज को बदला जा सकता है। समाज के गले सड़े अंगों को काटा जा सकता है और उस-उस जगह पर मलहम लगाई जा सकती है जहां से पीक बाहर आ कर जख्मों पर सूजन पैदा कर सकती है। आर्य भाईयो उठो अब आप को एक डाक्टर की भूमिका निभानी है कहीं आप की लम्बी सोच विचार की प्रक्रिया मरीज को मृत्यु के द्वार तक ही न ले जाए।

अमर रहे गणतन्त्र हमारा

□ पं. नन्द लाल निर्भय 'पत्रकार', ग्राम बढ़ीन, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

आओ! हम गणतंत्र मनाएं।
प्रेम-प्यार की रीति चलाएं॥
अमर रहे गणतंत्र हमारा।
जब तक गंगा, यमुना की धारा॥
भारत को जग में चमकाएं।
प्रेम-प्यार की रीति चलाएं॥
महापर्व गणतंत्र निराला।
मान रहा, हर अदना, आला॥
जग को इसका महत्व बताएं।
प्रेम-प्यार की रीति चलाएं॥
जागो, भारत वीरो ? जागो।
द्वेष, ईर्ष्या, घृणा त्यागो।
दुखी जनों को गले लगाएं।
प्रेम-प्यार की रीति चलाएं।
उग्रवाद बढ़ गया देश में।
फिरे भेड़िया, भेड़ वेश में॥
दानव दल को मार भगाएं।
प्रेम-प्यार की रीति चलाएं॥
सकल विश्व के मानव सारे।
ईश्वर के सब सुत हैं प्यारे॥
जाति-पाति का भेद मिटाएं।
प्रेम-प्यार की रीति चलाएं॥
वीरों की गणतंत्र धरोहर।
हो जाओ इस पर न्यौछावर॥
पाक, चीन के होश उड़ाएं।
प्रेम-प्यार की रीति चलाएं॥
आर्य कुमारो। कदम बढ़ाओ।
जग में वैदिक नाद बजाओ।
ओ३म् का ध्वज निर्भय लहराएं।
प्रेम-प्यार की रीति चलाएं॥

स्वामी अग्निव्रत जी का-प्रचार कार्यक्रम

वेद प्रचार अभियान-31 दिसम्बर 2001 को जमुई (बिहार) स्थित ईटासागर ग्राम में एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी अग्निव्रत जी ने वैदिक, शिक्षा पद्धति के बारे में स्थानीय ग्रामीणों को जानकारी दी। गांव के पास ही पहाड़ी के किनारे 100 एकड़ जमीन गुरुकुल के निर्माण के लिए ग्रामीणों ने उपलब्ध कराने की घोषणा की। 31 दिसम्बर सायं को स्थानीय गांव दिघौत में एक जन सभा के बीच स्वामी जी का प्रवचन वैदिक सिद्धान्तों पर हुआ। यहां भी ग्राम वासियों ने 13 एकड़ भूमि गुरुकुल निमित्त प्रदान करने की घोषणा की।

1 जनवरी 2002 को स्थानीय गांव चारण में एक जनसभा को स्वामी जी ने सम्बोधित करते हुए वैदिक धर्म की महानता पर प्रकाश डाला चारण निवासियों ने 40 एकड़ भूमि गुरुकुल वास्ते देने का वचन दिया।

स्थानीय गांव शिवदोह स्थित स्वामी विवेकानन्द आश्रम में 31 दिसम्बर एवं 1 जनवरी को रात्रि काल में विशाल सभा में स्वामी जी के प्रवचन उपदेश तथा 2 जनवरी को प्रात: हवनयज्ञ का कार्यक्रम स्वामी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ यजमान के स्थान पर आश्रम संचालक, स्वामी माध्यानन्द जी विराजमान थे। उपरोक्त त्रिदिवसीय कार्यक्रम जमुई जिला स्थित इंटा सागर ग्राम के निवासी श्री रामाशोष सिंह के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

—ब्र० समेधा आर्या

"सत्यार्थ प्रकाश" के सप्तम समुल्लास में–

ईश्वर के विषय में महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घाटित कुछ सत्य

❑ ले० श्री इन्द्रजित्देव पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग यमुनानगर 135001

(गताक से आगे)

ईश्वर का प्रत्यक्ष होता है परन्तु

नास्तिक व माकारवादी प्राय वैदिक धर्मियो से यह प्रश्न करते रहते हैं कि यदि ईश्वर का अस्तित्व है तो प्रत्यक्ष क्यो नहीं होता ? वह न्यक्ष नहीं होता तो कैसे माने कि ईश्वर का अस्तित्व है ?

रूप साकारता दो प्रकार की है। स्थूल साकारता व सूक्ष्म साकारता। हमारे नेत्र स्थूल हे अत ये स्थूल वम्तुओ को ही देख सकते हे तथा उन उन स्थूल वस्तुआ को देख सकते हे जा नत्रो की सीमा मे आ सकती है। इन्द्रियातीत वस्तुओ तक इनकी पहुच नही है ईश्वर अतीन्द्रिय है अत यह प्रकृतिजन्य तथा सीमित चक्षु उस असीम को देखने म सवथा असमथ है। केनोपनिषद् मे भी कहा गया है न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग् गच्छति।

नेत्र अग्निभृत से सम्बन्धित ह अत नेत्रा को स्थूल रूप का ही प्रत्यक्ष ज्ञान हाता हे जोकि अग्नि का गुण हे। इश्वर का क्योकि स्थूल रूप नही हे अत नेत्रा से उसका प्रत्यक्ष हो ही नही सकता परन्तु ससार मे ऐमे कई अन्य भी पदाथ हे जो नत्रो स प्रत्यक्ष नही होते तो क्या उनका अस्तित्व नहीं है वास्तविकता यह हे कि नेत्रा स प्रत्यक्ष न होने से इश्वर सिद्धि म कोई बाधा उपस्थित नही होती।

विषय को समझाने के लिए प्रत्यक्ष का तात्पर्य समझ लेना अनिवार्य है। महर्षि गौत्तम ने अपने न्याय दर्शन 1 1 4 मे प्रत्यक्ष की परिभाषा इस प्रकार की है इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्न ज्ञानमव्यपदेश्यम व्यभिचारी व्यवसायात्मक प्रत्यक्ष अर्थात् जो श्रोत त्वचा चक्षु जिह्वा घ्राण का शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध के साथ अव्यवहित (आवरण रहित) सम्बन्ध होता है इन्द्रियो के साथ मन का व मन के साथ आत्मा के सयोग से जो ज्ञान उत्पन्न हाता है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं। इस आधार पर स्पष्ट है कि कान जिह्वा त्वचा व नासिका के द्वारा जो ज्ञान अनुभव व प्रतीति अनुभूति होती है वही बाह्य प्रत्यक्ष कहाता है। इसके अतिरिक्त एक और भी प्रत्यक्ष है जिसे आन्तरिक प्रत्यक्ष कहते हैं। मानस प्रत्यक्ष भी कहते हैं। जब तक इस आन्तरिक प्रत्यक्ष का परिज्ञान प्राप्त न हो तब तक प्रत्यक्ष विषय ज्ञान अपूर्ण व अधूरा ही रहेगा। यह प्रत्यक्ष चार अन्त करणा स होता है जिनक नाम हे मन बुद्धि चित्त और अहकार। यह आन्तरिक प्रत्यक्ष यागिया तथा अन्य स्वच्छ हृदयी शभ सकल्पी लोगा का हाता है। ईश्वर चक्षुषा प्रत्यक्ष नही होता परन्तु प्रत्यक्ष को दखकर अनुमान प्रमाण से अनुभव हाता है। जेसे गुणो को देख जानकर गुणी का विश्वास होता हे वेसे ही सृष्टि रूप काय व नियम व्यवस्थादि का देख कर अनुभव का कारण व नियन्ता का अनुमान होता हे। कारण के बिना कार्य नहा हाता नियन्ता क बिना नियम नहा होते।

ईश्वर सर्वव्यापक है–इश्वर सर्वव्यापक है। हम देखते हे कि प्रत्यक्ष कि जहा जहा निमाण हे वहा निर्माता भी रहा होगा जहा व्यवस्था हे नियन्त्रण हे नियम है वहा वहा व्यवस्थापक नियन्ता व नियामक भी होगा। सृष्टि म सभी पदार्थ बनाए गए हैं सवत्र यही स्थिति है। एक देश (स्थान) पर रहने वाला ईश्वर सृष्टि का इतना विस्तृत व्यापक निर्माण नही कर सकता था। सर्वत्र नियन्त्रण नियम हैं तो नियन्ता नियामक भी सर्वत्र ही होना चाहिए। एक स्थान पर रहने वाला ईश्वर सृष्टि का कर्त्ता धर्त्ता व सहर्त्ता की भी शक्ति नही रख सकता। अत वह सर्वत्र व्यापक है। यजुर्वेद मे 10 12 मन्त्र मे प्रमाण हैं –ईशावस्यमिद सर्वम् य (त्किञ्च जगत्या जगत्।

ईश्वर निराकार ही है–महर्षि ने जोरदार युक्तियो व तर्कों के आधार पर यह स्थापना की है कि ईश्वर साकार हो ही नहीं सकता। साकार सीमित अल्पज्ञ सान्त व अल्पशक्तिमान् होता है जबकि निराकार ही सर्वज्ञ अनन्त अनादि व सर्वशक्तिमान् होता है। बिना सर्वज्ञ हुए न्यायकारी व कर्मफल प्रदाता बिना अनन्त हुए सर्वत्रव्यापक बिना सर्वशक्तिमान् हुए सृष्टि का कर्त्ता धर्त्ता व सहर्त्ता नहीं हो सकता। महर्षि ने एक अपूर्व तर्क भी दिया है कि यदि यह माना जाए कि इश्वर साकार है तो फिर यह भी मानना पडेगा कि उसे बनाने वाला कोई और है। तब दो इश्वर हो जाएगे। यदि यह कहा जाए कि अपने आप ही ईश्वर ने स्वेच्छया अपना शरीर बना लिया उस पर अग प्रत्यग फिट कर लिए तो भी यह सिद्ध तो हो गया कि साकार बनने स पूर्व निराकार ही था। जब निराकार रह कर ही इश्वर अपने सर्वशक्तिमान् होने के गुण के कारण से अपने सभी कार्य करता हे तो उसे साकार बनने का आवश्यकता ही क्या है ? एक चक्रवर्ती राजा भला पचायत का सदस्य क्या बनेगा? सूक्ष्म कारणो व नियमो स यह स्थूलाकार जगत् बनाता व चलाता है।

इस सम्बन्ध मे अनेक वेदिक प्रमाण हे

स पर्यगाच्छुक्रमकायम व्रणस्नाविर शुद्धमपापविद्धम्।

ईश्वर सर्वशक्तिमान है

य 40 8

सभी आस्तिक ईश्वर का सर्वशक्तिमान मानते हे परन्तु महर्षि दयानन्द की विशेषता यह हे कि उन्होने ही इस वास्तविक व युक्ति सगत अर्थ किया है। प्राय अन्य सभी लोग इस का यह अर्थ करते हे कि ईश्वर जा चाहे वह कर व जो चाहे वह न करे यही उसकी सर्वशक्तिमत्ता है। अर्थात् वह सब कुछ कर सकता है। महर्षि के विचार मे सर्वशक्तिमान् का तात्पर्य यह है कि वह अपने सभी कार्य स्वय ही करने की शक्ति रखता है तथा इसके लिए उसे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं पडती। उसकी सर्वशक्तिमत्ता इसी मे ही है कि अपने बनाए नियमो व व्यवस्था मे स्वय रहकर इनकी उपयोगिता मे सृष्टि व ससार मे रहने वाले प्राणिया को रखने म हे। वह कुछ भी करे ऐसा करे वेसा करे यह स्वतन्त्रता यह व्यवस्था मनुष्य पर लागू हाती हे क्योकि मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है। ईश्वर सब कुछ कर सकता है ऐसा मानने वालो को यह भी बताना पडेगा कि क्या ईश्वर अपने जेसा एक दूसरा ईश्वर भी बना सकता है ? यदि व कहे कि हा बना सकता है तो यह सृष्टि नियम के विपरीत कथन होगा व फिर वे कहे कि ऐसा नही ईश्वर सर्वशक्तिमान् न होगा। यदि ईश्वर सब कुछ कर सकता हे तो पूछा जा सकता है कि लाक मे हम देखते हे कि एक राजा किसी नागरिक का एक स्वामी अपने सेवक को अपने राज्य/घर स निकाल सकता ह परन्तु क्या इश्वर किसी मनुष्य पशु कीट या पक्षी को अपने राज्य घर से बाहर निकाल सकता है? सर्वव्यापक होने मे इश्वर का सवत्र राज्य हे। इश्वर किसी प्राणी जीव को अपने राज्य से बाहर कहा निकालेगा अथात् इश्वर अपने राज्य से बाहर किसी को भी नही निकाल सकता। सब कुछ न कर पाने का दोष ईश्वर पर लागू हो जाएगा महर्षि पूछत ह कि क्या इश्वर आत्महत्या चोरी पाप बलात्कारादि कार्य कर सकता हे ? दो बालको की मा का कुवारी कन्या बना सकता हे स्वय अन्यकारी अल्पज्ञ अत्याचारी व मूर्ख बना सकता हे ? जब एसे काय ईश्वर कर नहा सकता तो यह कहना उपयुक्त नही होगा कि वह सब कुछ कर सकता हे व सब कुछ करने की क्षमता इश्वर मे है। सर्वशक्तिमान् का यह तात्पर्य ईश्वर के प्रति अन्याय है सर्वशक्तिमान् हाने का वास्तविक अर्थ यही है कि अपने कार्य करने के लिए उसे किसी अन्य की सहायता अपेक्षित नहीं है व कार्य करने की सभी शक्तिया उसमे स्वत ही विद्यमान हैं। (क्रमश)

आर्य समाज के मूलाधार गुरु विरजानन्द

❑ *ले० श्री आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार 515-बी-3 कर्णिका सै. 5 सृष्टि काम्प्लैक्स जी.टी.रोड-ई जिला थाने (मुम्बई)*

स्वामी दयानन्द जी 35 वर्ष की अवस्था में कार्तिक सुदी 2, 1917 सम्वत् में मथुरा मे अध्ययन के लिए गुरु विरजानन्द जी के पास पहुचे। गुरु विरजानन्द जी ने कुछ शर्ते उनके सामने रखी, परीक्षा के लिए उन्होंने पूछा अब तक क्या-क्या पढ़े है। स्वामी जी का उत्तर सुन कर उन्होने कहा तुम ने जो कुछ पढा है उसका बड़ा भाग अनार्ष ह। जब तक तुम अनार्ष पद्धति का त्याग न करोगे तब तक तुम आर्ष ग्रन्थो का महत्व न समझ सकोगे। यदि तुम मेरे पास अध्ययन करना चाहते हो तो अनार्ष ग्रन्थों का विस्मरण कर दो।

दूसरी बात यह थी अपने भोजन का प्रबन्ध कर लो फिर अध्ययन प्रारम्भ होगा। दण्डी जी सिद्धान्त कौमदी के सम्पादक महर्षि जी दीक्षित पर इतने अप्रसन्न थे कि उसके नाम पर जूते लगवाया करते थे। इसके मूल में एक छोटी सी घटना थी। एक शब्द में उसमें बहुब्रीहि समास है या तत् पुरुष। दण्डी जी के शिष्यों और एक व्याकरणाचार्य के शिष्यो में विवाद हो गया था। तब से दण्डी जी को सिद्धान्त कौमुदी से घृणा हो गई थी।

आगे चलने से पहले एक अद्‌भुत बात का उल्लेख करना चाहता हूं। गुरुकुल में नवम्, दशम् श्रेणी में हम को पण्डित कन्हैया लाल जी सिद्धान्त कौमुदी से ही पढ़ाते थे। इसका प्रारम्भ ही उस श्लोक से होता है "नृत्तावसाने नटराज राजौ ननाद् दकाम् नवपञ्च वारम् उद्धर्तुकाम: सनकादि सिद्धान्त एतद् विमरशे नव सूत्र जालम्"

यह विशुद्ध पौराणिक कल्पना है। उससे यह बात स्पष्ट होती है कि गुरुकुल स्वयं भी स्वामी दयानन्द के विचारों से कहां तक परे हट गया था।

दूसरी बात यह कि 35 वर्ष की आयु तक स्वामी दयानन्द जी ने कठोर तपस्या और योग साधन किया पर तब तक उन को आर्ष और अनार्ष भेद मालूम न था। आर्ष और अनार्ष के भेद ही पर आर्य समाज और अन्य हिन्दू मतों में भेद है। इसी आधार पर आर्य समाज हिन्दू धर्म का स्वरूप और भारत का कल्याण विशुद्ध आर्य धर्म की स्थापना का विकास करना चाहता है। यह विशेष तत्व ऋषि दयानन्द के सिवाए गुरु विरजानन्द के अन्य शिष्यों ने ग्रहण नही किया।

गुरु विरजानन्द जी के पास तो स्वामी दयानन्द जी ने पाणिनी और महाभाष्य का, निरुक्तादि का अध्ययन ढाई वर्ष तक किया था। पर सत्यार्थ प्रकाश में सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य, वेद वेदांगों, उपनिषदो तक स्वामी दयानन्द का ही परिश्रम था।

ऋषि दयानन्द ने तो सिद्धान्त कौमुदी की सिद्धि पद्धति के रूप में वेदाग-प्रकाश नामक ग्रन्थों में दिया है। वहां सारी सिद्धि पद्धति का हिन्दी में ही अनुवाद है।

सिद्धान्त कौमुदी में तो पहले संस्कृत में रटना पढ़ता है। मैं जब टंकारा ट्रस्ट में काम करता था। मैंने व्याकरण वेदांग प्रकाश के आधार पर ही आरम्भ किया था उसमें स्वामी जी ने सन्धि विषय नामक आदि सब विषय अलग-अलग दिए हुए हैं। पता नहीं गुरुकुल में वेदांग-प्रकाश के भागों को न पढ़ा कर सिद्धान्त कौमुदी क्यों पढ़ाई जाती थी। मेरा विचार है कि संस्थाओं का प्रारम्भ जिन आदर्शो से होता है उन में धीरे-धीरे शिथिलता आ जाती है। यह स्वाभाविक परिवर्तन सर्वत्र है। इसके विषय में कुछ अधिक कहना आवश्यक नहीं। इसमें रत्ती भर भी संशय नहीं हिन्दू आर्य जनता का विकास इस आर्ष अनार्ष विचार पर किया जाता तो देश का रूप बदल जाता। पर इसमें दो कठिनताएं हैं। संस्कृत साहित्य में जितने भी ग्रन्थ हैं उनका मूल आधार आर्ष साहित्य ही है। यही उस का उत्कृष्ट भाग है पर भिन्न-भिन्न समयों में विद्वानों ने आर्ष रूप में ऐसा सूक्ष्म मिश्रण किया कि विवेक करना लगभग असम्भव हो जाता है। श्रीमद् भागवत् गीता इस का एक बहुत सुन्दर उदाहरण है। लगभग सब प्राचीन सिद्धान्तों के साथ अवतार वाद स्वर्ग, नरक की कल्पना शिव, ब्रह्मादि का उल्लेख ऐसी चतुरता से किया गया है कि न तो इस को छोड़ा जा सकता है और न ही पूर्णतया ग्रहण किया जा सकता है। कालिदास भवभूति भास, माघादि द्वारा संस्कृत साहित्य में अनार्ष विचारों को ऐसी सुन्दरता से गूंथा गया है कि वे बर्बस पकड़े नहीं जाते। रामायण का महाकाव्य भी ऐसा ही एक प्रयत्न है।

दूसरी बात तो यह है कि संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी जो साहित्य है वह भी खिचडी ही है।

एक बहुत बड़ी समस्या यह है। सामान्य उदार हिन्दू और आर्य समाजी मे अन्तर ही नहीं किया जा सकता जैसे सिख-हिन्दू या मुसलमान आदि में ऐसा स्पष्ट भेद नहीं है। मैंने लगभग सारी आयु आर्य समाज में ही कार्य किया है। आर्य संस्थाओं में साठ या सत्तर प्रतिशत ऐसे सज्जन हैं जिन के घरों में सनातनी रिवाज भी चलता है। विवाह-आदि में भी कोई विचार नहीं रखा जाता।

स्वामी दयानन्द जिस आयु में अपने गुरु के पास पहुंचे थे। उस समय वह समाधि सिद्ध कठोर ब्रह्मचर्य के शरीर वाले परमहंस की अवस्था तक पहुंचे हुए थे। गुरु विरजानन्द ने उनके जीवन को एक नई दिशा दी। अन्यथा वे परमहंस योगीश्वर के रूप में ही रहते। इसके बाद ऋषि जीवन का उद्देश्य प्राचीन वैदिक आर्य हिन्दू के उज्जवल पक्ष को दिखाना था। इसके लिए उन्होंने महान् अध्ययन किया और जीवन को गुरु के अर्पण कर दिया। यहां मैं यह स्पष्ट करना चाहता हू कि गुरु विरजानन्द के बहुत शिष्य थे पर किसी ने भी ऋषि दयानन्द का महान उद्देश्य ग्रहण नहीं किया। अन्त में मैं दो बात कहना चाहता हूं। स्वामी जी ने स्पष्ट कहा था कि मुझे संखिया दिया गया है उस परम हंस महान् आत्मा ने किसी भी विष देने वाले व्यक्ति का नाम प्रकट नहीं किया पर आर्य समाज ने हिन्दू मुसलमान के झगडे में उनकी बात नहीं मानी।

दूसरी बात स्वामी जी को अपने प्रैस का काम भी स्वयं सम्भालना पड़ा यह एक व्यापारिक रूप से बहुत कठिन परिश्रम है जिसने स्वामी जी के स्वास्थ्य को निचोड़ लिया। आर्य समाज की ओर से उनके इस व्यापारिक कार्य को सम्भालने वाला उन्हें कोई नहीं मिला।

यदि महात्मा बलिदानी निहाल चन्द जैसा कोई आदमी होता तो उनके कार्य में सहायक हो सकता था।

वस्तुत: परमात्मा की लीला और इच्छा सब से ऊपर है। वह बड़े से बड़े महान् पुरुष की महत्वकांक्षा को भी तोड़ देता है। ऋषिवर की महत्वकांक्षा थी वे चारों वेदों का भाष्य कर सकते और सम्भवत: आर्ष ग्रन्थों का भी स्वरूप प्रगट कर सकते पर ईश्वर की लीला के आगे किसी का कोई जोर नहीं। महात्मा गांधी भी तो पाकिस्तान में सहस्त्रों हिन्दुओं के साथ यात्रा करने का स्वप्न देख रहे थे पर श्री नत्थूराम गोड़से की गोली ने उनका स्वप्न चूर-चूर कर दिया।

आर्य समाज जीरा के तत्वावधान में मखू नगर में वेद प्रचार

आर्य समाज जीरा के कार्यकर्त्ताओं द्वारा मखू नगर में वेद प्रचार की धूम बड़ी महत्वपूर्ण रही। तिथी 30-12-2001 रविवार के दिन आर्य गर्ल्ज कालेज मखू के हाल में ला श्री राम जी गखड़ की धर्मपत्नी की बरसी पर वेद के पवित्र मन्त्रों से हवन यज्ञ श्री सुभाष चन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष ने बड़ी विधि पूर्वक करवाया। श्री राम जी की लड़कियां तथा दामाद भी मोगा तथा लुधियाने से पधारे हुए थे। सारा परिवार ही आर्य समाजी था। यज्ञ के पश्चात् ईश्वर भक्ति के बड़े सुन्दर-सुन्दर भजन हुए। श्री ओमप्रकाश जी ग्रोवर प्रधान आर्य समाज जी का प्रवचन हुआ। उपस्थित सैंकड़ों नर-नारी बड़े प्रभावित हुए। श्री ओम मुनि जी वानप्रस्थी फिरोजपुर शहर से आए हुए थे उन्होंने पंच महायज्ञों पर विस्तार पूर्वक रोशनी डाली। श्री राम जी ने सभी को जलपान करवाकर धन्यवाद किया।

वैदिक एवं वैदिकोत्तर काल में नामकरण की स्थिति

लेo पंo वेद प्रकाश शास्त्री 4-ई कैलाश नगर, फाजिल्का पंजाब

जब मानव सृष्टि हुई तो उसी समय से परस्पर व्यवहार एव सम्बोधन क लिए सर्वप्रथम नाम की ही आवश्यकता पडी। परम पिता परमात्मा ने जिन चार ऋषियो के अन्त करण मे चारो वेदो का ज्ञान प्रदान किया उनका नाम अग्नि वायु आदित्य ओर अगिरा था। जब भी प्रलय के पश्चात् मानव सृष्टि हाती है तो जिन चार सर्वोत्कृष्ट ऋषिया को ज्ञान प्राप्त होता है उनका नाम अग्नि वायु आदित्य आर अगिरा ही रहता है।

अग्न्यादि ऋषियो ने वेदज्ञान ब्रह्मा का दिया और ब्रह्मा ने प्रजापति आदि अन्य ऋषियो मुनियो एव मनुष्या तक पहुचाया। उस समय वेदो से ही जड चेतन के नाम ग्रहण किए गए। जैसा कि महर्षि मनु ने कहा है –

सर्वेषा तु स नामानि कर्माणि च पृथक पृथक।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक सस्थाश्च निर्ममे॥

मनु 1 21

उस परमात्मा ने वेद शब्दो से पूर्व सृष्टि के समान सबके अलग अलग नाम और काम निश्चित किए तथा पृथक पृथक विभाग बनाए।

इस पर टिप्पणी करते हुए श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम मथुरा लिखने है

सृष्टि में प्रचलित अनेक नाम राम कृष्ण गगा यमुना आदि वेद स लिए गए हे न कि वेद मे इनका इतिहास है।

सुन्दर कमनीय यशप्रद नामकरण के लिए वेद स्वय अत्यन्त मनोहारी शब्दो के द्वारा प्रश्नोत्तर रूप मे प्रेरित करता है– कोऽसि को नामासि ते नामा मन्महि॥1॥ यजु 7 29

प्रश्न हे बालक ! तू (क असि) कौन है ?

उत्तर–तू (क असि) सुखस्वरूप है।

प्रश्न–(क नाम असि) तू किस नाम वाला है अर्थात् तेरा नाम क्या है ?

उत्तर–तू (क नाम असि) सुख स्वरूप नाम वाला है अर्थात् तू सुन्दर सरस सरल सुबाध सुखरूप नाम वाला है। (ते नामामन्महि) हमने अभी तेरा नाम रखा है

प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से वेद मे अनेक स्थलो पर सुन्दर नामकरण के लिए सकेत उपलब्ध होता है

यस्य नाम महद् यश ॥2॥ यजु 32 3

(यस्य) जिस (परमात्मा) का (नाम) नाम (महद्यश) महान् यश वाला है।

यज्ञ के समय आचमन करते हुए बोलते हे

सत्य यश श्रीर्मयि श्री श्रयताम्॥

हे प्रभो ! हमे सत्य यश कान्ति ऐश्वर्य आदि प्रदान करो अर्थात् जैसे हम इन गुणो को धारण कर वैसे हा गुणो के अनुसार हमारे नाम भी सत्य यश कान्ति ऐश्वर्य आदि के अनुरूप है।

सुमन्तु नाम शृण्वता मनामहे ॥3॥ ऋग्वेद 10 64 1

(शृण्वताम्) उपस्थित श्रोताओ के मध्य मे हम लोग (सुमन्तु) सुन्दर माननीय एव प्रशसनीय (नाम) नाम को (मनामहे) स्वीकार और मनन करते हे।

मनामहे चारु देवस्य नाम ॥4॥ ऋ 1.24 1 2

हम (देवस्य) दिव्यगुण सम्पन्न परमात्मा के (चारु) सुन्दर शुद्ध पवित्र (नाम) नाम को (मनामहे) स्वीकार करे अर्थात् उस परम पिता परमात्मा के पुत्र होने के नाते हम भी अपने तथा अपना सन्तान के सुन्दर सार्थक रुचिकर सुबोध यशप्रद नामो को धारण करे।

प्रिया वो नाम हुवे ॥5॥ ऋ 7.56 10

(व) आप लोगो के (प्रिया) प्रिय मनोहर (नाम) नामो की (हुवे) मैं प्रशसा करता हू अर्थात् आप लोगों के द्वारा नामकरण किए गए भद्र प्रिय शिव मनोहर सरल सुबोध आदि गुणों से युक्त नाम ही प्रशंसनीय हैं।

नामानि चिद् दधिरे यज्ञियानि ॥6॥ ऋ [illegible] 14

(यज्ञियानि) यजनीय पूजनीय और प्रशसनीय (नामानि) नामो को (चित्) निश्चय पूर्वक (दधिरे) धारण करे अर्थात् प्रशसा योग्य सुन्दर सार्थक सरल नामकरण करे।

श्रुत्य नाम बिभ्रत ॥7॥ ऋ 5 30.5

(श्रुत्यम्) श्रवण योग्य अर्थात् कर्ण प्रिय सुन्दर सरस आह्लादकारक सार्थक (नाम) नाम को (बिभ्रत) धारण करो।

सदा ते नाम स्वयशो विविक्मि ॥8॥ ऋ 7 22 5

(ते) तेरे (स्वयश) अपूर्व कीतिप्रद महान् यशस्वी (नाम) नाम का (सदा) सदैव (विविक्मि) विशेष और विविध रूपो मे वर्णन करता हू।

वय नाम प्र ब्रवामा ॥9॥ यजु 17 90

(वयम्) हम लोग आप सभी के प्रति (नाम) सुयशप्रद प्रशसनीय सरल नाम का (प्र ब्रवाम) विशेष रूप से उपदेश करे अर्थात् सभी पदार्थो के नाम और अर्थ का कथन करे।

नामानि दधिरे पराणि ॥10। ऋ 10.5.2

(पराणि) दूसरे श्रेष्ठ (नामानि) नामो को (दधिरे) धारण करते हैं।

नामानि यह्वो अधि येषु वधते॥11॥

साम पूर्वार्चिक 5 9 1 (554)
ऋ 9 71

(येषु) जिसम (नामानि) अनन्त नाम हैं वह (यह्व) सबसे बडा परमात्मा (अभिवर्धत) अधिकता से वृद्धि को प्राप्त हे अर्थात् गुण कर्म स्वभाव से वह परमात्मा असख्य नामो वाला है। इसी प्रकार हम भी विभिन्न प्रकार के गुण कर्म स्वभाव को लक्ष्य म रख कर नामकरण करे।

विदद् गन्धर्वो अमृतानि नाम ॥12॥ ऋ 10 123 4

(गन्धर्व) किरणो का धारण आदित्य (अमृतानि) अमर (नाम) नाम को प्राप्त करता है।

क स्वर्ण नाम जनत प्रियाणि॥13॥ ऋ. 10 123 7

(स्व कम् न) प्रकाश के समान (प्रियाणि) प्रियकर (नाम) नाम को (जनत) उत्पन्न करता है।

पिता भूरि नाम: वन्दमानो दधाति ॥14॥ ऋ 5.3 10

(पिता) पिता (वन्दमान) स्तुति प्रशसा करता हुआ (भूरि) बहुत सुन्दर प्रिय शुभ शुद्ध (नाम) नाम को (दधाति) धारण करता है।

दधाना नाम यज्ञियम्॥15॥
साम उत्तर 4 3 2 (851)

(यज्ञियम्) सत्कार सुसगति दान श्रेष्ठ कर्म क प्रतीक (नाम) सुन्दर नाम को (दधाना) धारण करने हुए वृद्धि का प्राप्त करो

प्रश्न नाम किसे कहते हैं ?

उत्तर सत्वप्रधाननि नामानि निरुक्त। 1 1

जिनमे सत्व अथात् द्रव्य की प्रधानता हा व नाम है

सत्व क्या हे ? विद्वाना न लिग तथा सख्या स युक्त होन को हा सत्व कहा है

लिङ्ग सख्यान्वित द्रव्य सत्व इत्यमिधीयते॥

नाम शब्दा की द्रव्य प्रधानता के कारण ही बृहद् देवताकार न नाम शब्दा क स्वरूप का इस प्रकार स्पष्ट किया है

शब्देनोच्चारितनेह येन् द्रव्य प्रतीयते।
तदक्षरविधौ युक्त नामेत्याहुर्मनीषिण ॥
अष्टौ यत्र प्रयुज्यन्त नानाथेषु विभक्तय ।
तन्नाम कवय प्राहुभेद वचनलिङ्गयो ॥ 1 143

जिस शब्द के उच्चारण करने से द्रव्य की प्रधान रूप से प्रतीति हो उसे व्याकरण मे विद्वान् लोग नाम कहते हे।

इस प्रकार जिस शब्द से भिन्न भिन्न अर्थो म आठ विभक्तिया प्रयुक्त होती हैं और वचन तथा लिग की दृष्टि से अन्तर पाया जाता ह उसे आचार्य नाम कहत हैं।

इस कथन स स्पष्ट हे कि जड अथवा चेतन पदार्थो का नामकरण किए बिना तुम्हे सम्बाधित नहीं किया जा सकता और न हा उनके रूप विभक्ति लिग वचन आदि ही बन सकत हे। अत सर्वप्रथम इन सभी जड चेतन पदार्थो का नामकरण अत्यावश्यक है और सुन्दर सरल सरस प्रिय मनोहर प्रशंसनीय कीर्तिप्रद आदि गुणों से युक्त नामकरण का विवेचन उपर्युक्त वेदमन्त्रों द्वारा किया जा चुका है।

(क्रमश)

आर्य समाज के लौह पुरुष श्री मुरारी लाल जी शर्मा

श्री मुरारी लाल जी शर्मा का जन्म गांव रूढ़कां कलां जिला जालन्धर में सन् 1906 में हुआ। उनके पिता श्री पंडित मेला राम जी कृषि से सम्बन्धित एक धनाढ्य परिवार से सम्बन्ध रखते थे और कट्टर पौराणिक विचारधारा वाले थे। पंडित मुरारी लाल जी शर्मा 17 वर्ष की आयु में ही रूढ़का कलां जिला जालन्धर से कराची सिंध प्रान्त में चले गये। यहां उनका सम्बन्ध आर्य समाज केमाडी जिला कराची से स्थापित हो गया। इसी आयु से उन्होंने आर्य समाज में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर दिया था और आर्य समाज केमाडी जिला कराची के प्रधान भी रहे। वह गुरुकुल मलीर जिला कराची के महामन्त्री भी रहे और पर्याप्त समय तक वह इन संस्थाओं से जुडे रहे बल्कि भारत की आजादी तक वह इन संस्थाओं में सक्रिय रूप से कार्य रहते रहे। विभाजन के बाद वह जालन्धर में आ कर स्थापित हो गये और यहां भी उन्होंने आर्य समाज से अपने आप को जोड लिया जैसा कि सारे आर्य जगत को विदित ही है। जब स्वामी इन्द्रवेश जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान निर्वाचित हुए तो पंडित मुरारी लाल जी शर्मा को सभा के कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। उसके बाद वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री भी रहे। वह प्रत्येक कार्य को दृढ़ता व लग्न से करते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की उन्नति के लिए उन्होंने बहुत कार्य किया। उन्हें लोग लौह पुरुष कहा करते थे। वह जिस कार्य को करने का निश्चय करते थे उसे पूरा करके ही दम लेते थे। उनके कदम कभी भी पीछे नहीं हटे और वह जीवन भर आगे ही आगे बढ़ते रहे।

इस के अलावा व्यापार जगत में भी उनका विशेष स्थान था। वह पंजाब आयल मिल एसोसिएशन के प्रधान पर्याप्त समय तक रहे और पंजाब फलोर मिल एसोसिएशन के प्रधान के रूप में उन्हें कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। वह उत्तरी भारत की ओर से सैन्ट्रल एक्साईज एवं कस्टम एडवाइजरी कमेटी के सदस्य भी रहे।

आर्य समाज में उनका अपना एक विशेष स्थान था। वह पंजाब आयल मिल एसोसिएशन के प्रधान पर्याप्त समय तक रहे और पंजाब फ्लोर मिल एसोसिएशन के प्रधान के रूप में उन्हें कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। वह उत्तरी भारत की ओर से सैन्ट्रल एक्साईज एवं कस्टम एडवाइजरी कमेटी के सदस्य भी रहे।

आर्य समाज में उनका अपना एक विशेष स्थान था। उनके भाई पंडित किशन चंद जी और पंडित कर्मचन्द जी भी आर्य समाज में सक्रिय रूप से उनके साथ रहे। उन के भतीजे पंडित श्री हरबंस लाल जी शर्मा जो आर्य प्रतिनिधि मभा पजाब के प्रधान और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के चांसलर हैं, भी उनकी प्रेरणा के स्वरूप हैं। आप के सुपुत्र श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद व श्री सुधीर शर्मा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के सदस्य है और आज उन्हीं की प्रेरणा से यह भी पूरे प्रयत्नों से लग्नशील होकर आर्य समाज के कार्यों में जुटे हुए हैं। आज नि:सदेह ही वह इस ससार में नहीं हे लेकिन उनकी जीवन शैली की झलक और उनके आर्य समाज के लिए किए गए कार्यो के कारण हमेशा उन्हे आर्य समाज मे लौह पुरुष की उपाधि से कायम रखेंगे।

अमृतसर में गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

मकर सक्रान्ति के पावन पर्व पर आर्य महिला परिषद पंजाब अमृतसर की ओर स अथर्ववेद शतकम् एवं गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञशाला को ओ३म् के झण्डों से मनमोहक बनाया गया था। महायज्ञ के ब्रह्मा पद पर श्रीमती शकुन्तला एवं श्री. ओम प्रकाश आसीन थे। एवं यजमान पदों को क्रमश: वन्दना, रजनी, कश्मिश, सीना ने सुशोभित किया। समारोह की अध्यक्षता माता जगदीश आर्या ने की।

—शिवे लता, मन्त्राणी

सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री धर्मदेव जी आर्य के पिता का देहावसान

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालयाध्यक्ष श्री धर्मदेव जी आर्य के पिता श्री बख्तावर जी आर्य का 88 वर्ष की आयु में उनके पैत्रिक गांव सबीलपुर (यमुनानगर) में 20-1-2002 रविवार को दोपहर ढाई बजे देहावसान हो गया। वह पिछले कुछ समय से रुग्ण चल रहे थे परन्तु फिर भी वह चलते-फिरते रहे और अपने सारे कार्य स्वयं करते रहे। दोनों समय सन्ध्या वन्दना उनकी पिछले 50 वर्षों से निरन्तर चली आ रही थी। वह एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे उन्होंने जीवन में कभी भी किसी का भी बुरा नहीं किया, जहां तक उनसे हुआ भला ही किया। वह आजीवन आर्य समाज सबील पुर के अधिकारी रहे और सभी गांव वाले उनका पूरा-पूरा सम्मान करते थे। अपने से बड़ों की सेवा करना उनका सम्मान करना यह उनके जीवन का उद्देश्य रहा। वह धार्मिक विचारों से ओत-प्रोत थे स्वाध्याय में उनकी बहुत रूचि थी। वह बड़े स्वाध्यायशील थे। स्वाध्याय में उनकी बहुत रुचि थी। उनके चले जाने से आर्य समाज सबीलपुर की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होनी कठिन है। वह अपनी पुरानी पीढ़ी का नेतृत्व करते थे। सभी गांव वालों ने उनके अन्त्येष्टि संस्कार में भाग लिया। उनका अन्तिम शोक दिवस 1-2-2002 दिन शुक्रवार को उनके पैत्रिक गांव सबीलपुर (यमुना नगर) में दोपहर 12 बजे से 1 बजे तक मनाया जाएगा।

—गुरुदत्त मुनि

फाजिल्का में भारत की समृद्धि व विश्व शान्ति हेतु हवन-यज्ञ

आर्य समाज फाजिल्का के प्रांगण में लोहड़ी के पावन पर्व पर भारत की समृद्धि व विश्व शान्ति हेतु हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया। शहर की सभी सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक संस्थाओं के अतिरिक्त बड़ी संख्या में गणमान्य पुरुष व स्त्रियों ने भाग लिया। श्री सुरजीत कुमार ज्याणी वन मन्त्री पंजाब भी सम्मिलित हुए। श्री निवेदन कुमार शास्त्री ने वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ हवन यज्ञ करवाया। डा. अमर लाल बाघला ने भारत की स्मृद्धि व विश्व शान्ति के लिए प्रार्थना की।

हांसी आर्य वीर दल द्वारा सेवा कार्य

आर्य वीर दल हांसी की ओर से विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वर्ष 2002 के शुभारम्भ पर आर्य वीर दल के सक्रिय कार्यकर्त्ता एवं वैदिक विद्वान् आचार्य रामसुफल शास्त्री (वैदिक प्रवक्ता) के नेतृत्व में आर्य वीरों ने सरकारी हस्पताल में रोगियों को फल व दूध वितरित किए। आर्य वीर दल हांसी समाज सवा के कई कार्य कर रहा है।

—पंकज गोयल, उपमन्त्री

धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस एवं बसन्तोत्सव

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस रविवार 17 फरवरी 2002 को आर्य समाज मन्दिर, वाई ब्लाक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली में प्रात: 8.30 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर बच्चों की भाषण प्रतियोगिता भी होगी। सभी आर्य बन्धु सम्मिलित हों।

हांसी में शोक सभा

आर्य समाज हांसी के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री ला जय किशनदास आर्य के निधन पर एक शोक सभा आर्य कन्या विद्यालय हांसी के प्रांगण में हुई जिसमें हांसी तथा हिसार के सैंकड़ो आर्य विद्वानों व आर्य नेताओं ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट की। —सतीश कुमार आर्य, मन्त्री

123वां वार्षिकोत्सव आर्य समाज कानपुर

आर्य समाज, मेस्टन रोड, कानपुर का 123वां वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष [illegible] मंगलवार 12 मार्च, 2002 तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। धर्म प्रेमी सज्जन पहुंच कर धर्म लाभ उठावें।

—विजय पाल शास्त्री, मंत्री

बेटी ने किया अपने पिता का अन्तिम अन्त्येष्टि संस्कार

यमुनानगर–समाज मे प्रचलित यह मान्यता यहा निकटस्थ ग्राम साबापुर मे बिखर गई है कि मृतक पिता का दाह कर्म केवल उसका पुत्र भाई या भतीजा ही कर सकता है जब ग्राम निवासी मास्टर अजमेर सिह की चिता को उनकी बडी बेटी वीरता ने अग्नि दी व 121 वेद मत्रो के उच्चारण के बीच घी की आहुतिया देकर दाह कर्म पूर्ण किया। अजमेर सिह का अन्त्येष्टि सस्कार जिला यमुनानगर वेद प्रचार मण्डल के वरिष्ठ उपप्रधान श्री भानुराम आर्य ने कराया। इस घटना से गाव तथा क्षेत्र मे तरह-तरह की चर्चा फैल गई व प्रतिक्रिया स्वरूप कुछ लोगो ने इसका समर्थन किया जबकि कुछ लोगो ने इससे असहमति प्रकट की। असहमति प्रकट करने वालो को भानुराम आर्य ने समझाया कि पुत्र तथा पुत्री मे भेद नहीं मानना चाहिए। सत्यवादी हरिश्चन्द्र के पुत्र के मरने पर उनकी पत्नी तारामति ही अपने पुत्र का दाह कर्म करने के लिए श्मशान मे गई थी। मास्टर अजमेर सिह मृतक के परिवार मे दस दिनो तक हवन यज्ञ व मृत्यु तथा जीवन सम्बन्धी उपदेश भी चलता रहा। रस्म उठाला प्राथमिक विद्यालय के प्रागण में शान्ति यज्ञ करके सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रचार मत्री व उपदेशक श्री प इन्द्रजित् देव ने मृत्यु व जीवन सम्बन्धी विवेचन किया। यमुनानगर, जगाधरी व दूर-निकट से पधारे जनसमूह को सम्बोधित करते हुए प इन्द्रदेव ने कहा कि वेद का कोई भी मन्त्र ऐसा नहीं है जो बेटी, बहन, मा अथवा पुत्र वधु को दाह कर्म करने से वचित करता हो। किसी मृतक की मिट्टी को ठिकाने लगाना पुण्य का कार्य है व ऐसा पुण्य कार्य कोई भी कर सकता है। महिलाओं को श्मशान में जाने की मनाही इसलिए है क्योंकि प्राय: महिलाए भावुक होती हैं व अधिक रोती पीटती हैं। उनके ऐसा करने से दाह कर्म में बाधा उपस्थित होती है व श्मशान का वातावरण अधिक कारुणिक व दु:खमय हो जाता है। यदि महिला जागरूक व गभीर है तो उसे भी अन्तिम सस्कार करने का पूर्ण अधिकार है। आपने आगे कहा कि पहले बेटियो के विवाह उनके रजस्वला होने से पहले ही कर दिए जाते थे बेटियो के ससुराल मे जाकर पानी पीना भी पाप समझा जाता था परन्तु अब ये दोनो मान्यताए ढह कर बिखर चुकी हैं। इसी प्रकार महिलाओ को किसी के दाह कर्म न करने देने की गल्त मान्यता भी समाप्त होनी चाहिए। हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् सम्पादक व लेखक डा धर्मवीर भारती के निधन पर 1999 मे मुम्बई मे उनकी बेटी प्रज्ञा देवी ने ही उनका अन्तिम सस्कार किया था। अन्त मे प इन्द्रदेव ने बताया कि यमुनानगर के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री बलराज दत्ता की अत्येष्टि क्रिया भी उनके पुत्र दामाद व उनकी पुत्री ने सम्मिलित रूप मे की थी व उनकी अर्थी को कन्धा देने वालो मे उनके दामाद भी सम्मिलित थे। इस परम्परा को बढावा देना चाहिए।

—महेन्द्र पाल आर्य 503 रूपनगर कालोनी जगाधरी

फिरोजपुर

तिथि 16 12 2001 से 23-12-2001 तक आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपुर शहर मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे गायत्री महायज्ञ का आयोजन श्री महात्मा ओम मुनि जी की देख-रेख मे किया गया। प्रतिदिन नए नए यजमान बनते रहे। प्रतिदिन प्रात 6 बजे से 7.30 बजे तक यज्ञ होता । इस यज्ञ की पूर्णाहुति तिथि 23-12-2001 को हुई। इस यज्ञ को इस समाज के पुरोहित पण्डित सुनील दत्त जी ने सम्पन्न करवाया। प्रतिदिन यज्ञ के उपरान्त पण्डित जी भजन व उपदेश सुनाते थे जो बहुत प्रभावशाली होते। पूर्णाहुति वाले दिन सब आर्य सज्जनो को पण्डित जी ने पुष्पो द्वारा आशीर्वाद दिया। लोगो ने बहुत ही श्रद्धा से यज्ञ मे भाग लिया। यज्ञ के उपरान्त श्री हवन लाल जी महता ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। इस समाज के मन्त्री श्री वेद प्रकाश जी ने तथा महात्मा ओम् मुनि जी ने सब का धन्यवाद किया। सबका चायपान से स्वागत किया गया। —सर्वहितैषी भाटिया-उपमन्त्री

आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा आर्य समाजों के पदाधिकारियों की सेवा में

आशा है आप के मार्ग दर्शन मे आपकी शिक्षा सस्था/आर्य समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर होगी। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब पर्याप्त समय से यह महसूस कर रही है कि पजाब प्रान्त मे हिन्दी और सस्कृत भाषा के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है । इसका मुख्य कारण पजाब प्रान्त की राजनीतिक पार्टिया हैं। कुछ राजनीतिक दल गत कुछ वर्षों से इन भाषाओ को सरकारी तौर पर अधिमान नहीं दे रहे और कुछ राजनीतिक लोग अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए हिन्दी व सस्कृत भाषा के उत्थान हेतु कोई प्रयास व समर्थन नहीं करते। यह एक दयनीय स्थिति है। पजाब विधानसभा के आम चुनाव 13 फरवरी, 2002 को सम्पन्न होने जा रहे हैं।

इन चुनावो में जो लोग अथवा राजनीतिक दल हिन्दी व सस्कृत भाषा का विरोध करते हैं उनको आप अपना तथा अपने परिवार के सदस्यो का कीमती वोट न दे। इसके अतिरिक्त जो लोग व राजनीतिक दल पजाब प्रान्त मे सरकारी तौर पर हिन्दी भाषा को दूसरा स्थान दिलाने का समर्थन करे और सस्कृत भाषा के उत्थान का आश्वासन दे वहीं आप के कीमती वोट के सही हकदार हैं। इसी में आर्य समाज व हम सब का भला है । चूकि सस्कृत व हिन्दी भाषा का वैदिक धर्म ग्रथो तथा भारतीय सस्कृति के साथ अटूट सम्बन्ध है इसलिए जो लोग इन भाषाओं को अधिमान दिलाने मे अपना समर्थन करें, उन्हें आप अपना तथा अपने परिवार के सदस्यो का वोट प्रदान करे। कृपया यह सदेश आप अपने सदस्यो तथा कार्यकर्ताओ को हमारी ओर से दे देवें।

देवेन्द्र नाथ शर्मा
रजिस्ट्रार
आर्य विद्या परिषद पजाब

हरबंस लाल शर्मा
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का 115वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

14 जनवरी से 20 जनवरी तक आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का 115वा वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ ब्रह्मा श्री राजू वैज्ञानिक दिल्ली थे। 19 जनवरी दिन शनिवार को बच्चो की भाषण भजन कविता सिलाई तथा कढाई प्रतियोगिता करवाई जिसमे मुख्य अतिथि आर्य समाज के प्रधान व सराफा बाजार एसोसिएशन के महासचिव श्री सोहन लाल जी सेठ थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रि सुभाष चन्द्र सहगल न की।

20 जनवरी रविवार को सप्ताह से आरम्भ हुए यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई जिसमे सैकडो लोगो ने आहुति डाली। यज्ञ के पश्चात् सभी न अल्पाहार का आनन्द लिया।

इसके पश्चात् आर्य सम्मेलन श्री सोहन लाल सेठ जी की अध्यक्षता मे आरम्भ हआ। इसमे मुख्य अतिथि श्री मदन लाल जी सेठ थे। इस सम्मेलन मे प्रमुख वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कार्यालयाध्यक्ष श्री पं धमदेव जी शास्त्री श्री प सुन्दर लाल जी शास्त्री श्री राजू जी वैज्ञानिक श्री प वेद प्रकाश आय थे व श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली श्री बूटा राम श्रीमती रश्मि घई श्रीमती किरण सेठ नीलम सेठ आदि के मधुर भजन हुए। आय समाज के सरक्षक अमृत लाल जी खन्ना श्री कुन्दन लाल अग्रवाल तथा अन्य प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। सारे कार्यक्रम का मच सचालन श्री श्रवण भारद्वाज (मन्त्री आर्य समाज) ने किया। सम्पूर्ण उत्सव म आर्य समाज के सरक्षक श्री अमृत लाल जी खन्ना कोषाध्यक्ष श्री विनोद सेठ व उपप्रधान श्री रमेश कालडा जी का विशेष योगदान रहा। लब्भू राम दुआबा सी सै स्कूल क सभी अध्यापको ने भी सराहनीय कार्य किया। —राजेश आर्य

60 ईसाई परिवारों के 150 से अधिक ईसाइयों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में चल रहे धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत श्री पू स्वामी धर्मानन्द जी के निर्देशन में उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से निरन्तर पुनर्मिलन कार्यक्रम चल रहा है। इसी शृखला मे कन्धमाल जिले मे मध्यगिरी वेदभवन गुडिकिया में 13 14 जनवरी को होने वाले वार्षिक महोत्सव पर टिकाबाली और धरमपुर अचल के 60 परिवार के 150 से अधिक ईसाइयो ने उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता मे होने वाले यज्ञ मे अत्यन्त श्रद्धा भक्ति के साथ आहुति देकर ईसाई मत छोडकर वैदिक धर्म ग्रहण किया। यन का सारा कार्यक्रम सभा के उपप्रधान श्री प विशिकेसन शास्त्री जी ने करवाया। उत्सव के अन्तिम दिन क्षेत्र से 5 हजार से अधिक धर्म प्रेमी आर्य नर नारी दीक्षित बन्धुओ को आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित थे। इस आयोजन मे उस क्षत्र के आर्य सगठन के प्रमुख श्रीराधानाथ मल्लिक श्री दाशरथी प्रधान तथा सभा के प्रचारक श्री नारायण प्रधान तथा शिवराम प्रधान आदि का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर में गायत्री यज्ञ

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर म 14 जनवरी 2002 से गायत्री महायज्ञ आरम्भ हो गया है जिसकी पूर्णाहुति 12 फरवरी 2002 को होगी। यज्ञ दोपहर बाद 3 30 से 5 बजे तक प्रतिदिन हाता है। इसमे अधिक से अधिक बहन भाई पहुच कर लाभ उठावें।

—सुशीला भगत

ग्राम लाऊमुण्डा जिला बलागीर में 38 परिवारो के सदस्य वैदिक धर्म मे शामिल हुए

पुनर्मिलन (शुद्धि) की शृखला मे ही 30 दिसम्बर को बलागीर जिला के लाऊमुण्डा ग्राम के प्रभु भक्ति आश्रम के वार्षिक महोत्सव पर 38 परिवारो के 120 ईसाइयो ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। ये सज्जन वैदिक धर्म ग्रहण करन के लिए आसपास के 5 6 ग्रामो स आय थे। यह दीक्षा का कार्यक्रम सभा के उप प्रधान श्री प विशिकेसन शास्त्री जी ने करवाया। दीक्षितों को आशीर्वाद देने के लिए गुरुकुल आश्रम आमसैना के उपाचार्य ब्र कुजदेव जी मनीषी परिव्राजक शुकदेव जी आदि अनेक विद्वान् उपस्थित थे। आश्रम के सचालक श्री स्वामी मुक्तानन्द जी का इसमे विशेष पुरुषार्थ रहा।

—सुदर्शन देव आर्य

आर्य कन्या गुरुकुल का वार्षिकोत्सव

आर्य कन्या गुरुकुल (आष शोध सस्थान) आलियाबाद म शामीरपट जि रगा रेडा (आ प्र) का वार्षिकोत्सव माघ शु 5 (बसन्त पञ्चमी) रविवार 2058 वि स तदनुसार 17 फरवरी 2002 इ को मनाया जाएगा। इसमे अनेक विद्वानो एव छात्राओ के व्याख्यान-प्रवचन भजन आदि हागे तथा सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

आपसे निवेदन है कि इष्ट मित्रो सहित समारोह में भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त करें।

—आचार्या [illegible]

पुस्तक विमोचन

आय समाज मण्डी डबवाली के कार्यकर्ता डा अशोक आर्य द्वारा लिखित पुस्तक आर्य समाज की उपलब्धिया का विमाचन स्वामी जगदीश्वरानद जी सरस्वती ने अपने कर कमलो द्वारा किया।

इस पुस्तक में आर्य समाज की मान्यताओ व उपलब्धियो के सम्बन्ध में पूरी जानकारी दी गई है। इस पुस्तक मे विभिन्न कवियो क भजन भी दिए गए हैं जिनमें आर्य समाज के कार्यों की झलक मिलती है। इसका प्रकाशन श्रुति प्रकाश डबवाली तथा प गगा प्रसाद उपाध्याय प्रकाशन मन्दिर अबोहर ने किया है। इस 32 पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य 8 रु रखा गया है। —अरुणेश आर्य डबवाली

मण्डी डबवाली में वैदिक सत्संग समारोह

आर्य समाज मण्डी डबवाली मे पहली बार वार्षिक वैदिक सत्सग समारोह गत दिनो बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इसमें स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती तथा प्रो राजेन्द्र जिज्ञासु जी के ओजस्वी प्रवचन वैदिक सिद्धान्तो तथा आदर्श परिवार सम्बन्धी विषयो पर हुए। प ओम प्रकाश जी वर्मा (यमुना नगर) ने अपने उच्चकोटि के भजनो द्वारा समा बाध दिया। साध्वी विसोका जी ने भी श्रेष्ठ भजनो द्वारा प्रचार किया। इस अवसर पर एस डी ओ श्री हरीश जुनेजा श्री राजेन्द्र गुप्ता एडवोकेट श्री पूर्णचन्द जी तथा डा अवतार सिह हरचन्द के घरों पर यज्ञ व सत्संग हुए।

—डा० अशोक आर्य

ध्यान योग शिविर सम्पन्न

आर्य समाज पीपाड शहर मे दिनाक 6 1 02 से 13 1 02 तक सात दिवसीय ध्यानयोग साधना शिविर योगधाम आश्रम हरिद्वार के अध्यक्ष स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के सानिध्य मे सम्पन्न हुआ। जिसमे प्रतिदिन प्रात साय के कार्यक्रमो मे लगभग 65 साधक साधिकाओ ने भाग लिया। शिविर मे योग साधना के अतिरिक्त ब्रह्मचारी जितेन्द्र जी द्वारा आसन प्राणायाम का अभ्यास भी कराया जाता था। —चम्पा लाल आर्य मन्त्री

श्री धमदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष सम्पादक प्रकाशक मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौंक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

रजि नं एन पी 17504/58

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

दूरभाष : 292926

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–55 अंक : 29 सृष्टि संवत 1960853102, 3 से 10 फरवरी 2002 दयानन्दाब्द 178

आओ, आओ, सात्विक विचारों को सर्वोत्तम कर्मों में प्रयुक्त करो

□ ले० श्री देवी दयाल शर्मा, शर्मा निवास, 120 मॉडल टाउन, स्ट्रीट नं.-4, अमृतसर

मानव ससार में आकर और धन वैभव पाकर प्रमादी हो जाता है और जो वास्तविक कार्यकर्म हैं उनको करना भी भूल जाता है। सात्विक विचारो के उत्पन्न होने पर जो सत्ययुक्त पवित्र और नेक कर्म (Vintuous deeds) थे उनको छोड देता है (Doable acts) और माया जाल मे फस कर न करने योग्य (undo able acts) कर्मों को करता जाता है। राजसिक और तामसिक गुण उसके मन पर अपना प्रभुत्व जमा लेते हैं और सात्विकता काफूर हो जाती है। होना तो यह चाहिए कि जब सात्विकता का शासन मन पर हो, उसी वक्त सर्वोत्तम कर्म कर डालना चाहिए क्योंकि सात्विक विचारों का समय बहुत देर नहीं रहता। जो बीज हमने समय पर बोया है, वही बीज एक दिन वृक्ष के रूप में हमारे सामने आएगा जो अच्छी बात समय के अनुसार (Coppropiate Time) की जाए उसका अपना ही महत्व होता है। समय पर यदि शिक्षा प्राप्त की जाए तो जीवन भर, मानव सुख का अनुभव करता है और यदि यह कीमती समय गप-शप में व्यतीत किया जाए, आलस्य और प्रमाद के कारण, उसको जीवन भर पछताना पडता है। इस लिए विवेकी पुरुष समाज का हित चाहते हुए वर्तमान काल का पूरा-पूरा फायदा लेते हैं। किसान की आने वाली फसल उसके वर्तमान समय पर निर्भर है यदि वह ठीक समय पर अपनी जमीन मे अच्छी तरह परिश्रम के साथ हल चलाये और समय पर बीज बो दे। लेकिन यदि वह ठीक समय पर हल नहीं चलाता है और न ही बीज बोता है तो इस बात की गारन्टी है कि वह फसल प्राप्त नहीं कर सकेगा। पूर्व काल तो खत्म हो गया और भविष्य ने अभी जन्म लेना है। यदि मानव वर्तमान काल मे अपने जीवन का कीमती समय नष्ट कर दे तो यकीनन उस का भविष्य उज्जवल नहीं बनेगा। इस बात पर वेदज्ञ बल पूर्वक कहते हैं कि वर्तमान काल का प्रयोग सर्वोत्तम कर्मों में करना चाहिए अर्थात् भौतिक और अभौतिक उन्नति करने में लगाना चाहिए और परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना और उपासना भी करनी चाहिए। परमात्मा का वेदों द्वारा निर्देश है कि मानव को जीवन में बहुत परिश्रम करना चाहिए। जो समय ईश्वर की अटूट कृपा से उसे मिला है और भविष्य अपने आप अच्छा बनता जाएगा और वह काल अपनी हिफाजत (Care) स्वयं करेगा। यदि परमात्मा की अपार कृपा से मानव जन्म मिला है और स्वास्थ्य भी अदा किया है तो इसको उसकी प्रार्थना उपासना में लगाना चाहिए, परन्तु होता क्या है, मानव अपने असली कर्त्तव्य को भूल जाता है और धन एकत्रित करने मे दिन-रात मस्त रहता है फिर जब मृत्यु का बिगुल बजता है तब समझ आता है कि उसने स्वर्णमय समय यू ही गवा दिया। अब पछताए क्या होत जब चिडिया चुग गई खेत। उस समय उसका पछताना फिजूल है।

कई आदमियो का स्वभाव बन जाता है दूसरो को ठगने का। दूसरो को दु ख देने का परन्तु होता क्या है। बुरे विचारो के मध्य में मृत्यु उसको घेर लेती है और उसको खत्म कर देती है और उस मानव के बुरे विचार उसके मन में ही रह जाते हैं और मिट्टी में ही मिल जाते है।

ससार एक धर्मशाला है और हम हैं यात्री जैसे यात्री को धर्मशाला में कुछ दिन के लिए ही ठहरने की आज्ञा होती है। सो इस ससार रूपी धर्मशाला में हम को भी इस धर्मशाला मे कुछ समय के लिए परमात्मा के हुक्म से ठहरने का निर्देश मिलता है। मानव, दिन-रात इस क्षणिक सुख की प्राप्ति के बेहद यत्न करता रहता है, परन्तु दुःख को भुलाने के लिए कोई कोशिश नहीं करता वह अपने पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार अपने आप ही आ जाता है। यह हमेशा स्मरण रहे कि सुख और दुख अपने हाथ में नहीं है वह तो परमात्मा की जबरदस्त शक्ति है। जो हमारे शुभ और अशुभ कर्मों का फैसला करती है। परमात्मा अति न्याय प्रिय है। (God is the supreme Dis-penses of Justice) उसके शासन में कोई रु रियायत नहीं, न किसी की सिफारिश चलती है। वह तो हमारे कर्मों को 16 आने तोलता है "दैवी तराजू में" यदि हम चाहते हैं कि हमें परमानन्द (Beattude) प्राप्त हो तो हमें अपने आप को पूर्ण रूप से उसके समर्पित कर देना चाहिए अर्थात् स्वार्थ रहित कर्म करने चाहिए। सारा ससार चाहे धनी हो चाहे निर्धन, चाहे बादशाह हो चाहे फकीर उस परमेश्वर के सब भिखारी हैं केवल परमात्मा ही परम दानी है। (Supreme Gifter) स्वामी रामतीर्थ ने लिखा है कि यदि मानव आध्यात्मिक कर्मों को करता जाए तो उसकी भौतिक इच्छाए अपने आप पूरी होती जाती हैं। इस विचार की पुष्टि वेद ने भी की है। बाल गगाधर तिलक जो भारत के बडे दशभक्त हुए हे उन्होने अपनी गीता रहस्य म लिखा है कि ससार म उन्नति बगैर आध्यात्मिक उन्नति क देवा रहित उन्नति है। (Materalistic Prosperety without Divine Knowledge is a Godless prosperity) ससार की वस्तुए नश्वर हैं। डाक्टर राधा कृष्ण जी भूतपूर्व भारत के राष्ट्रपति अपनी गीता में लिखते हैं। ससार के असली खजाने मे नश्वर पदार्थ नहीं है परन्तु परमात्मा की दैवी विद्या और परमात्मा के वेदो में बताए हुए नियम अनश्वर तत्व हैं जो असली निधिया हैं जिनके अपनाने से मानव को पूर्ण शान्ति और आनन्द मिलता है जो सात्विक विचारों को जन्म देते हैं और परमात्मा के नियम पालने में सहायता मिलती है। नश्वर वस्तुओं को, अधिकारी निर्धन पुरुषो को दान करने से, जो आनन्द मिलता है वाणी उसका बखान नहीं कर सकती सौदा बड़ा सस्ता है यदि किसी की समझ में आ सके तो हर एक पुरुष की नश्वर वस्तुओं को प्राप्त करने को जितनी बडी दौड लगी हुई है, उतना ही आनन्द और शान्ति से वह वंचित होता जाता है।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज का जीवन चमकते हुए सूर्य के सदृश है। उन्होने जीवन काल मे ईश्वरीय गुणो और नियमो का मन कर्म और वचन से पालन किया। स्वय चमके और भारत को ही नहीं सारे ससार को वेदो के आधार पर चमका दिया। मेरी आर्य जनता से बुजुर्ग के नाते विनयपूर्वक प्रार्थना है (Earnest appeal) है कि मानव दिन प्रतिदिन सात्विकता के भावो से अपने मन को भरपूर करे राजसिक और तामसिक भाव अपने आप उनसे कोसो दूर भाग जाएगे। आर्य जनता की सेवा मे अपने मन को लगा दे। इसी मे सब की भलाई है।

कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द

❑ ले० डॉ. भवानी लाल भारतीय

अपनी आत्मकथा में स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वयं को कल्याण मार्ग का पथिक बताया था। सचमुच इनकी जीवन कथा अध: पतन के गहरे गड्ढे से निकल कर अपने जीवन को धर्म, समाज और देश के लिए बलिदान करने की ज्वलन्त कहानी है। अपने किशोर और युवाकाल में कतिपय परिस्थितियों के कारण वे अपने मार्ग से भटके तो सही, किन्तु अपनी त्रुटियों तथा कमियों पर निरन्तर विजय पाने की चेष्टा भी निरन्तर चलती रही और अन्तत: वह श्रेय के मार्ग पर चलने की पात्रता अर्जित कर सके। उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन तो तब आया जब 1871 में उन्हें ऋषि दयानन्द के तेजस्वी एवं गरिमामय व्यक्तित्व के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। उन्होंने स्वीकार किया है कि तब उन्हें अपने अनीश्वरवादी होने का बड़ा गर्व था। यूरोप के तत्त्वविदों तथा दार्शनिकों के अध्ययन ने ईश्वर के प्रति उनके विश्वास को दोलायमान कर दिया था किन्तु महान् आस्तिक महर्षि से स्वल्प समय के वार्तालाप एवं शंका समाधान ने उनके हृदय में व्याप्त संशय तथा भ्रम को नष्ट कर दिया। ऋषि के मुख से उन्होंने उपनिषद् के निम्न मंत्र को सुना- **नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधना न बहुता श्रुतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्॥**

परमात्मा की प्राप्ति भाव भरे प्रवचनों को सुनने से नहीं होती और न बहुश्रुत होने या तीव्र मेधा को प्राप्त करने से; परमात्मा तो जिसे अपने पुत्र के रूप में वरण कर लेता है उसी के समक्ष अपने स्वरूप को प्रकाशन करता है। यही वह आर्ष वाणी थी जिसने युवक मुन्शीराम को आस्तिकता की डगर का राही बनाया था।

जब तक मुन्शीराम ने स्वामी दयानन्द को निकट से नहीं देखा और न जाना तब तक तो भारत के संन्यासी वर्ग के प्रति उनकी धारणा यही थी कि ये भिक्षोपजीवी लोग समाज पर भार के तुल्य हैं।

दयानन्द के इस सम्पर्क ने उनके जीवन को श्रेयोन्मुख कर दिया। जीविकोपार्जन के लिए उन्होंने वकालत का पेशा अपनाया किन्तु धर्म और समाज की सेवा ही उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य रहा। जिन नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में उनकी आस्था रही, उन्हें स्वयं के जीवन में क्रियान्वित करने तथा अन्यों को अपनाने की प्रेरणा देने में वे सदा तत्पर रहे। इसी प्रकार जिन विचारों और कार्यक्रमों को वे महत्त्वहीन समझते रहे उन्हें त्यागने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं हुआ। लाहौर में रहते समय वे आर्यसमाज तथा ब्रह्मसमाज के प्रति समान रूप से आकर्षित हुए थे किन्तु जब सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन ने उन्हें पुनर्जन्म के प्रति पूर्ण विश्वासी बना दिया, वे आर्यसमाज के प्रति समर्पित होकर वैदिक धर्म के अनन्य प्रचारक बन गये।

श्रद्धानन्द का सार्वजनिक जीवन निरन्तर विकसित होता रहा किन्तु उसकी धुरी आर्य समाज ही रही। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में उन्होंने आर्यसमाज के माध्यम से धर्म जागृति फैलाई। लाहौर और जालंधर दोनों उनके कर्मस्थल रहे जहां से उन्होंने वैदिक ज्ञान को प्रसारित किया। अपने प्रवचनों और शास्त्रार्थों के द्वारा उन्होंने पंजाब की जनता तक वेदों की कल्याणकारी विचारधारा को फैलाया। लाहौर में रहकर वे आर्यसमाज के गौरवशाली नेता बने और उन्होंने अनेक चुनौती भरे प्रश्नों का समाधान किया। जब मांसाहार के निषेध तथा पाश्चात्य शिक्षा को महत्त्व न देने का सवाल उठा तो उन्होंने अपने चारित्रिय बल, सिद्धान्त निष्ठा तथा वैदिक धर्म के प्रति अनन्य प्रेम के कारण कठिनाईयों पर विजय पाई। दलीय संघर्ष की इस अग्नि में तप कर लाला मुन्शीराम का व्यक्तित्व कुन्दन की भांति चमका और वे न केवल आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपितु सम्पूर्ण आर्य जगत् के बेताज बादशाह माने गये।

जिस समय वकील लाला मुन्शीराम ने लाहौर आर्यसमाज की सदस्यता का फार्म भरा था, उसी समय वयोवृद्ध लाला सांईदास ने भविष्यवाणी करते हुए कहा था-"आज एक नई शक्ति का प्रवेश आय समाज में हुआ है। यह तो भविष्य ही बतायेगा कि यह आर्यसमाज को तारेगी या डूबोएगी। श्रद्धानन्द चरित का अनुशीलन करने के पश्चात् हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उन्होंने दयानन्द की शिक्षाओं को फैलाने में अपने सम्पूर्ण जीवन की आहुति दे दी थी। आज आर्य समाज के सवा सौ वर्ष के इतिहास में दयानन्द के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द के तुल्य कोई ऐसी हस्ती दिखाई नहीं देती जिसने धर्म, समाज तथा राष्ट्र की सेवा में स्वयं को सम्पूर्ण रूप से समर्पित किया हो।

भारत की शिक्षा प्रणाली में प्राचीन मूल्यों का प्रवेश कराना तथा छात्र वर्ग में चरित्र, नैतिकता, धर्म प्रेम, त्याग और बलिदान के भावों को जगाने के लिए उन्होंने 1902 में गंगा के तट पर गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की जिसने कालान्तर में विश्वविद्यालय का रूप लिया। यह तो सभी मानते हैं कि पुरातन शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धार का श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द को ही है। उन्होंने इस संस्था की स्थापना कर उस प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को पुनरु जीवित किया जिसका उल्लेख वैदिक एवं आर्ष ग्रन्थों में मिलता है। किन्तु गुरूकुल की शिक्षा एकांगी नहीं थी। उसमें प्राचीन वैदिक ग्रन्थों और संस्कृत साहित्य के साथ साथ इतिहास, भूगोल, समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र के अतिरिक्त विज्ञान की भी शिक्षा दी जाती थी। गुरुकुल शिक्षा की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी राष्ट्रभाषा के माध्यम से विद्योपार्जन कराना। जिस युग में विज्ञान के विषयों को हिन्दी के माध्यम से पढ़ाना असम्भव समझा जाता था उस समय स्नातक स्तर तक की विज्ञान की पाठ्य पुस्तकें तैयार करवाना सचमुच बड़ी बात थी। गुरुकुल ने यही कर दिखाया। गुरुकुल कांगड़ी को निकट से देखकर भारत भक्त सी. एफ एण्ड्रूज तथा कालस्तर में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने रेमजे मैकडानल्ड को आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता हुई, तो स्वयं महात्मा गांधी अपने दक्षिण अफ्रीका के कार्यक्रम को पूरा कर भारत आये तो उन्होंने अपना पहला प्रोग्राम हरिद्वार आकर गुरुकुल को देखने तथा उस महात्मा मुन्शीराम के दर्शन करने का बनाया जिनके देशभक्त शिष्यों ने अपने नाश्ते के व्यय में कमी करके दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के लिए चंदा एकत्र किया था।

गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के पद पर पर्याप्त समय तक रहने के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द ने अनुभव किया कि अब इस विद्यालय की प्रचीरों से बाहर निकल कर देश की स्वाधीनता के संग्राम में भाग लेना चाहिए। यों तो वे राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में बहुत पहले से ही जाने लगे थे किन्तु दक्षिण अफ्रीका से लौटे कर्मवीर बैरिस्टर मोहनदास कर्मचंद गांधी को सर्वप्रथम "महात्मा" कह कर उन्होंने ही पुकारा था और गुरुकुल के प्रांगण में इस महापुरुष का भावभीना स्वागत कर उसे अभिनन्दन पत्र भेंट किया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने समझ लिया था कि देश के लिए कुछ करने का समय अब आ गया है। १९१७ से १९२२ तक के पांच वर्ष उन्होंने राष्ट्रदेव की सेवा में समर्पित किये। यही वह समय था जब दिल्ली के चांदनी चौक में उन्होंने गोरे सिपाहियों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल दी थी और निर्भीक स्वर में कहा था कि भारत की जनता पर गोली चलाने से पहले उन्हें इस संन्यासी की छाती को छलनी बनाना होगा। असहयोग और सत्याग्रह का यही समय था जब दिल्ली के राष्ट्रभक्त मुसलमान उन्हें जुम्मे की नमाज के समय जामा मस्जिद में ले गए और उस धर्म स्थान की सर्वोच्च वेदी पर बैठ कर उन्होंने निखिल प्राणीजगत् के माता और पिता परमेश्वर की स्तुति इस मंत्र से की थी-

त्वं हि न: पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे॥

इस वैदिक प्रार्थना के पश्चात् उन्होंने समस्त देशवासियों को परस्पर भ्रातृभाव में बंध कर स्वयं को देश के लिए बलिदान होने की प्रेरणा दी। राजनीति में धर्म और नैतिकता को समाविष्ट करने पर उन्होंने बल दिया क्योंकि उन्होंने ही सत्याग्रह को "धर्मयुद्ध" कहा था तथा जिन्हें अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष का पद स्वीकार करने के लिए अनुरोध करते समय महात्मा गांधी ने लिखा था-"यदि आप स्वागत समिति के सभापति हो जायेंगे तो आप कांग्रेस में धार्मिक भाव पैदा कर सकेंगे।"

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय.....

अच्छी छवि वाले प्रत्याशी को ही अपना मत दें

पजाब मे 13 फरवरी को विधान सभा के लिए चुनाव हो रहे है। इसमे सभी राजनैतिक पार्टियो के प्रत्याशी चुनाव लड रहे हैं। कुछ आजाद उम्मीदवार भी खडे हैं। हमे यह विचार करना है कि इन म अच्छी छवि वाला कौन सा प्रत्याशी है। इसके साथ ही जिस प्रत्याशी ने हमे यह आश्वासन दिया है कि वह चुने जाने के बाद पजाब मे हिन्दी भाषा की उन्नति के लिए कार्य करेगा उसे ही अपना अमूल्य वोट दे।

कई प्रत्याशियो ने यह आश्वासन दिया है कि वह चुने जाने पर हिन्दी का उन्नति के लिए कार्य करेगे। परन्तु अक्सर यही देखा गया ह कि वाट लेन के लिए इस समय प्रत्येक प्रत्याशी सब कुछ कहने के लिए तयार हे। आप जो भी माग करोगे वह उसे पूरा करन का आश्वासन आपको देगा परन्तु आगे चुने जाने पर वह आपकी सुनेगा यह आवश्यक नही।

आर्य समाजी बन्धु सदा से अच्छे प्रत्याशियो को ही अपना वोट देते रहे है। हमे भी ऐसा ही करना चाहिए। क्योकि यदि हम अच्छे नेता चुन कर आगे भेजेगे तो वह देश की उन्नति के लिए कार्य करेगे केवल अपनी जेबे ही नहीं भरेगे बल्कि जनता की भी सेवा करेगे। यदि हम किसी भ्रष्टाचारी का या किसी अपराधी प्रवृत्ति क प्रत्याशी को चन कर भेजेगे तो वह समाज के लिए भी हानिकर होगा ओर देश के लिए भी हानि कर हेगा।

वाट (मत) देना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार हे। इस प्रणाला क द्वारा भी हम अपने देश की उन्नति कर सकते हे व बहुत बडी सवा भी कर सकते है। श्रेष्ठ लोगा को आगे लाना हमारा परम कत्तव्य है। जैसे लोग होते है वेसा ही समाज बनता हे और जेस नेता हात ह वैसा ही देश बनता है। इसलिए हमे देश भक्त नेताओ का आगे लाना चाहिए जो देश की उन्नति चाहने वाले हो। अपना कीमती वोट श्रेष्ठ प्रत्याशी को ही दे। —हरबस लाल शमा सभा प्रधान

बसन्त पञ्चमी का पर्व

हमारे देश मे कई पर्व मनाए जाते है। उनमे बसन्त पञ्चमी का पर्व भी अपना विशेष महत्व रखता है यह पर्व शरद् ऋतु के अन्त मे आता है। शरद ऋतु मे अधिक सर्दी पडने के कारण वृक्षो के पत्ते तक झड जाते हैं। वृक्ष ठूठ बन जाते है चारो तरफ शर्दी का साम्राज्य होता है परन्तु माघ सुदी पञ्चमी से ऋतुराज बसन्त का आरम्भ होता हे। इस अवसर पर चारो ओर नव पल्लव आने आरम्भ हो जाते हैं। चारो तरफ फूल खिल उठते है। मन्द मन्द सुगन्ध चारो ओर फैलने लग जाती है। सरसो के पीले फूल खेतो मे अपनी छटा बिखेरने लग जाते हे। जिधर भी दृष्टि जाती है हरियाली ही हरियाली छा जाती है। आमो के वृक्षो पर बौर आना आरम्भ हो जाता है। कोयल की मीठी तान सुनाई पडने लग जाती है।

17 फरवरी रविवार को यह पर्व आ रहा है। हम इस पर्व के महत्व को समझ कर इसे श्रद्धा पूर्वक मनाए।

इस पर्व के साथ हमारी एक ऐतिहासिक घटना भी जुडी हुई है वह है वीर बालक हकीकत राय का बलिदान। यह पर्व हमे जहा नव जीवन की प्रेरणा देता है हमारे हृदय मे उल्लास और उत्साह भरता है हमारे शरीर मे नव रक्त का सचार करता है वहा यह पर्व हमे वीर हकीकत राय की याद भी दिलाता है जिसने छोटी सी आयु मे धर्म के रहस्य को जान लिया था ओर धर्म के लिए अपना बलिदान दे दिया था। उस समय हमारे देश पर मुसलमानो का राज्य था। बच्चे अक्सर मदरसो मे पढते थ बालक हकीकत भी मदरसे म मुसलमान बच्चो के साथ पढता था। उसका उन बच्चा के साथ झगडा हो गया ओर इस झगडे ने इतना तुल पकड लिया कि मुस्लमाना ने इसे इस्लाम के साथ जाड लिया। इस्लाम के ठेकेदारो ने बालक हकीकत के सामने प्रस्ताव रखा कि यदि तुम मुस्लमान हो जाओ तो तुम्हे कत्ल नही किया जाएगा यदि मुस्लमान नही बनोगे तो तुम्हे मौत के घाट उतार दिया जाएगा।

हकीकत राय ने एक प्रश्न उस समय उन मुल्लाओ से किया था कि यदि मुस्लमान बनने पर मेरी मृत्यु नही होगी तो मैं मुस्लमान बनने के लिए तैयार हू यदि मुस्लमान बन कर भी मेरी मृत्यु होनी है तो मैं अपने हिन्दु धर्म को क्यो छोड। मै हिन्दु रह कर ही मरना पसन्द करता हू। उसे कई तरह के लोभ लालच भी दिए गए कि किसी तरह वह मुस्लमान बन जाए परन्तु छोटे से बालक ने किसी की भी एक न मानी और आखिर वह धर्म पर बलिदान हा गया। कई बार जब हम इस ऐतिहासिक घटना पर विचार करते हैं तो हमे पता चलता है कि हमारे देश के छोटे छोटे बच्चा मे भी धर्म के प्रति कितनी आस्था थी। इसलिए इस पर्व को बडी श्रद्धा व आस्था से मनाए और जीवन मे नई खुशिया व उमगे भरे।

—हरबस लाल शर्मा
सभा प्रधान

महर्षि जन्म दिवस व ऋषि बोध पर्व मनाएं

जन्म दिन का विशेष महत्व होता है। सभी महापुरुषो के जन्म दिवस मनाए जाते है और उन्हे मनाते हुए उनके जीवन से प्रेरणा ली जाती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे महापुरुष थे जिन्होने सारे ससार मे एक नई क्रान्ति पैदा की, विशेष रूप से भारत की आजादी के लिए व देश से जहालत को मिटाने के लिए आर्य समाज रूपी आन्दोलन आरम्भ किया। आर्य समाज ने अपने देश की आजादी के लिए व समाज सुधार के लिए महान कार्य किए है जो स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है। सारा आर्य जगत व सारा देश महर्षि दयानन्द का ऋणि है। हमारे देश में जो भी जाग्रति दिखाई पड रही है इसके पीछे महर्षि दयानन्द की देन स्पष्ट दिखाई पड रही है। इसलिए हमे उस ऋषि को कभी भी नही भूलना चाहिए।

महर्षि का जन्म दिन दिनाक 8 3 2002 दिन शुक्रवार को है और ऋषिबोध पर्व 12-3 2002 दिन मगल को है। इसलिए यह दिन सभी आर्य समाजे व शिक्षा सस्थाए उत्साह से मनाए और इस दिन महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यो पर प्रकाश डाला जाए और सभी आर्य बन्धु निश्चय करे कि हम महर्षि के बताए हुए रास्ते पर चलते हुए देश, जाति व समाज की सेवा करते रहेगे। —हरबस लाल शर्मा, सभा प्रधान

कल्यांण मार्ग के.......
(पृष्ठ 2 का शेष)

जलियांवाला हत्याकाण्ड के पश्चात् जब लोगों को पंजाब में कांग्रेस के अधिवेशन का होना असम्भव जान पड़ा था, उस समय अपनी कार्यक्षमता का परिचय देकर स्वामी जी ने उसे सफल कर दिखाया। राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए समर्पित स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में दिया। कांग्रेस के मंच से दिया गया यह पहला हिन्दी का स्वागत भाषण था। इससे पहले वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता कर चुके थे।

कांग्रेस के कार्यक्रमों में स्वदेशी का महत्त्व, नारी जागरण, गौ सेवा, अछूतोद्धार, मदिरा का बहिष्कार तथा हिन्दी प्रचार जैसे रचनात्मक कार्य स्वामी जी की रुचि के थे। महात्मा गांधी के असहयोग में उनकी कितनी प्रबल आस्था थी यह हम उनके उस पत्र में देखते हैं जो उन्होंने 25 सितम्बर 1920 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान लाला रामकृष्ण को लिखा था। इसमें उन्होंने स्पष्ट स्वीकार किया था कि इस क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि का भविष्य निर्भर है। यदि यह आन्दोलन असफल हुआ तो देश की स्वतंत्रता का प्रश्न पचास वर्ष पीछे जा पड़ेगा। यह जाति के जीवन और मृत्यु का प्रश्न हो गया है। वे सर्वात्मना कांग्रेस में गये और गुरु का बाग सत्याग्रह में भाग लेकर कारागार की यातनाओं को भी सहा। किन्तु जब उन्होंने अनुभव किया कि कांग्रेस की मुस्लिम तोषिणी नीति के शुभ परिणाम नहीं निकलेंगे तो उन्होंने इस संस्था से किनारा कर लिया। उन्हें प्रथम अनुभव तो तब हुआ जब काकीनाडा कांग्रेस के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए मौलाना मोहम्मद अली ने अछूतों का सवाल खड़ा किया और सात करोड़, दलितों को हिन्दू और मुसलमानों में बराबर बांट लेने की धृष्टतापूर्ण बात कही-"राम और कृष्ण की इन प्यारी संतानों को परस्पर बांटने की बात कहना देश की एकता को क्षति पहुंचाना है और यह त्रिकाल में भी सम्भव नहीं है। अछूत प्रथा को जन्म देने में निश्चय ही हिन्दू जाति से भयंकर भूलें हुई हैं किन्तु उसका प्रायश्चित भी हम ही करेंगे।" इसके बाद उन्होंने कांग्रेस से अछूतोद्धार का कार्यक्रम अपनाने के लिए कहा किन्तु इस कार्य के संयोजक बना देने पर भी उन्हें हाई कमाण्ड से पूरा सहयोग नहीं मिला।

अन्ततः वे कांग्रेस से दूर हट गये और लाला लाजपत राय तथा पं मदनमोहन मालवीय जैसे हिन्दू हितैषी नेताओं के सहयोग से संगठन के कार्य को आरम्भ किया। अब उनकी धारणा बनी कि देश का हित तभी तक सुरक्षित है जब तक यहां के हिन्दुओं को गौरव और सम्मान का जीवन बिताने की सुविधा मिलती है। जब तक धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से बिखरे हिन्दुओं को एकता के सूत्र में नहीं पिरोया जाता, तब तक इस देश की स्वाधीनता और समृद्धि स्वप्न ही रहेगी। इस विश्वास के साथ उन्होंने हिन्दू संगठन का आन्दोलन खड़ा किया और कहा कि किसी जाति को संगठन का लाभ तभी मिलता है जब उस जाति के लोग भाव, भाषा, विचार, संस्कृति और जीवन दर्शन में समरसता रखने वाले हों। साथ ही उन्होंने हिन्दू नेताओं को अछूतों की समस्या का हल करने के लिए कहा। शताब्दियों से पीड़ित, त्रस्त तथा शोषित कथित अछूत जातियों के जीवन को उन्नत बनाना समय की पहली मांग थी। उच्च जातियों के अत्याचारों से पीड़ित जो अछूत परमत को ग्रहण कर चुके थे अब उन्हें स्वधर्म में लौटा लाना भी आवश्यक था। जब मुसलमान मुल्ला और मौलवी तबलीग का नारा लगा कर अशिक्षित दलितों को मतान्तरण के लिए प्रेरित कर रहे थे उस समय स्वामी श्रद्धानन्द ने अन्य मतों में गयों को पुनः आर्य धर्म में दीक्षित करने का कार्यक्रम बनाया और शुद्धि संस्कार का झण्डा उठाया।

इस कार्य में उन्हें पं. मदनमोहन मालवीय जैसे उदार सनातनधर्मी नेताओं का भरपूर सहयोग मिला किन्तु महात्मा गांधी की सहानुभूति उन्हें नहीं मिल सकी। शुद्धि आन्दोलन को बंद करने के लिए जब गांधी जी ने उन्हें कहा तो स्वामी जी ने स्पष्ट कर दिया कि यदि मुसलमान तबलीग का अभियान बंद कर दें तो वे भी शुद्धि से हाथ खींच लेंगे। महात्मा जी के लिए तास्सुबी मुल्ला-मौलवियों को समझाना कठिन था। उधर कट्टर सनातनी नेताओं (भारती कृष्ण तीर्थ जैसे) ने भी उनको सहयोग नहीं दिया।

अन्ततः उन्होंने महाकवि रवीन्द्रनाथ की "एकला चलो" की नीति अपनाई। अब वे अपने कार्यक्रमों के लिए आर्यसमाज के लोगों पर ही निर्भर हो चले और महात्मा हंसराज आदि आर्य नेताओं के सहयोग से शुद्धि और संगठन के कार्य में जुट गये। उन्होंने इन दोनों कार्यक्रमों को देशव्यापी बना कर दिखा दिया कि ऋषि दयानन्द के अनुयायी धर्म और समाज की भलाई के लिए क्या कुछ कर सकते हैं? इसी शुद्धि के लिए उन्हें स्वयं का भी बलिदान करना पड़ा। क्योंकि असगरी बेगम की शुद्धि को लेकर मतान्ध मुसलमान उनके शत्रु बन गये और एक हत्यारे अब्दुल रशीद ने २३ दिसम्बर १९२६ को पिस्तौल की गोलियों के प्रहार से उन्हें अमर हुतात्मा बना दिया। कर्मयोगी श्रद्धानन्द का जीवन जितना शानदार था, उनकी मृत्यु भी उतनी ही गौरवशालिनी थी, जिस पर महात्मा गांधी को भी ईर्ष्या करनी पड़ी। प जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें निर्भीकता और साहस की प्रतिमा बताया। उनके बलिदान के पचहत्तर वर्ष बीत जाने पर भी स्वामी श्रद्धानन्द के गरिमामय जीवन तथा त्यागपूर्ण आदर्शों की चमक थोड़ी भी फीकी नहीं हुई है।

८/४२३, नन्दन वन, जोधपुर

शोक समाचार

आर्यजनों को बड़े ही दु:ख के साथ सूचित किया जाता है आर्य समाज ओहरी चौक बटाला की कर्मठ कार्यकर्त्ता स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती कैलाशवती जी का 2-2-2002 शनिवार सायं 5 बजे देहान्त हो गया उनकी आयु 78 वर्ष की थी। वह पुरानी पीढ़ी की कर्मठ आर्य समाजी थीं। जो कि नित्यकर्म देव यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ, ओ३म् वाणी निष्ठापूर्वक प्रातः आर्यसमाज के अन्तगर्त किया करती थी। उनको हम सभी सज्जन बुआ जी कह कर सम्बोधित करते थे और वह अपने अपार प्रेम की वर्षा हम पर किया करती थी उनका अन्तिम संस्कार आर्य समाज बटाला के पुरोहित ओंकार शास्त्री जी के द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से करवाया गया और ईश्वर से प्रार्थना की गयी कि शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे और हम सबको उनके श्रेष्ठ गुणों को धारण करने का सामर्थ्य प्रदान करे स्वर्गीय कैलाशवती के सम्मान में एक दिवस के लिए आर्यसमाज औहरी चौक से सम्बन्धित सभी शिक्षण संस्थायें बंद रही।

-प्रविन्द्र चौधरी, प्रधान

शोक समाचार

श्री रत्नप्रकाश आर्य मन्त्री आर्य समाज महम का निधन दिनांक 24-1-2002 को उनके निवास स्थान पर हो गया है। वे 72 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार ग्यारह वैदिक विद्वानों द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

उन्होने सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में लगाया शन्ति यज्ञ एवं शोक सभा 3-2-2002 को उनके निवास आर्यभवन महम में आयोजित की गयी। जिसमें अनेक विद्वानों एवं स्थानीय सज्जनों ने स्व० श्री रत्नप्रकाश जी आर्य के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हे भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा विभिन्न संस्थाओं के द्वारा भेजे गए शोक समाचार पढ़कर सुनाए गए।

-राम सुफल शास्त्री

साधना स्वाध्याय एवं सेवा शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान अजमेर मे साधना स्वाध्याय एव सेवा शिविर का आयोजन 16 मार्च से 25 मार्च 02 तक आचार्य श्री अमृतलाल जी खडवा के मार्गदर्शन मे किया जा रहा है। इस शिविर में जो साधक साधिकाए भाग लेना चाहें वे समय से पूर्व अपने नाम का पजीयन परोपकारिणी सभा मे करा सकते हैं एव शिविर सबधी पूर्ण जानकारी प्राप्त करने हेतु सभा से पत्र व्यवहार कर सकते है।

–डॉ धर्मवीर मत्री

पता परोपकारिणी सभा दयानद आश्रम केसरगज अजमेर

विशाल नेत्र शिविर का आयोजन

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा निर्धन नेत्र रोगियो के सहायतार्थ विशाल नि शुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमे नगर के प्रख्यात नेत्र रोग विशेषज्ञ डा रमेश क्षेत्रपाल द्वारा अपनी सेवाए दी जा रही है। नत्र शिविर के 3 चरण मे 22 दिसम्बर 30 दिसम्बर 01 एव 20 एव 29 जनवरी 02 सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जुके हैं। आगामी शिविर 3 एव 24 फरवरी 2002 को आयोजित होगे। नेत्र शिविर मे सभी नत्र रोगियो को दवाएँ चश्मे भोजन यातायात सुविधाएँ नि शुल्क प्रदान की जा रही हैं। दानदाताओ से निवेदन है कि नेत्र रोगियो की शल्य क्रिया एव उपचार हेतु 65 हजार रुपए प्रति शिविर व्यय होता है अत जो दानदाना शिविर का व्यय वहन करना चाहे वह शिविर उनके सौजन्य से लगाया जाएगा एव विज्ञापनो तथा परोपकारी पत्रिका म उनका नाम प्रकाशित किया जाएगा। –डॉ धर्मवीर मत्री

दयानन्द मठ दीनानगर मे चतुर्वेद पारायण यज्ञ

दयानन्द मठ दीनानगर मे पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जन्म दिवस 28 जनवरी 2002 से चतुर्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ हो गया है। जिसकी पूर्णाहुति 1ऽ अप्रैल 2002 को पूज्य स्वामी सर्वानन्द सरस्वती के जन्म दिवस पर होगी। सभा आर्य बन्धु इसमे सादर आमन्त्रित हैं। –सदानन्द सरस्वती

शोक-प्रस्ताव

वेद प्रचार मण्डल जिला यमुनानगर श्री बख्तावर जी आर्य के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता है।

व पूरे आध्यात्मिक व्यक्ति थे व वैदिक मर्यादाआ के निर्वाह मे सदैव प्रयत्नशील रहे। सरलता निश्छलता निरभिमानता व सादगी आदि के अपने विशिष्ट गुणो के आधार पर वे सब से पृथक महत्वपूर्ण व आदरणीय स्थान सबके हृदय मे रखते थे।

प्रभु से प्रार्थना है कि वे उनका आत्मा को सद्गति प्रदान कर। शोक के इस अवसर पर वेद प्रचार मण्डल के सभी सदस्यगण हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं। –इन्द्रजीत् देव सयोजक वेद प्रचार मण्डल

शोक प्रस्ताव

दिनाक 17 1 02 को ब्रह्मचारी श्री मोहन लाल शास्त्री की माता जी का स्वर्गवास हो गया।

दिनाक 29 1 02 को दयानन्द सस्कृत महाविद्यालय दयानन्द मठ दीनानगर के समस्त निवासियो ने तीन बार गायत्री महामत्र का जाप करके तथा 2 मिनट का मौन रख कर दिवगत आत्मा की शाति के लिए एवम् समस्त शोक सतप्त परिवार जनो को इस असहय दु ख को झेलने की शक्ति प्रदान करने हेतु प्रार्थना की। –सदानन्द प्राचार्य

पुस्तक समीक्षा

आर्य समाजी क्षेत्र मे सध्या हवन पर अनेको पुस्तके प्राप्त हैं। इस दिशा मे और प्रयास करते हुए पच महायज्ञो पर हिन्दी अग्रेजी अनुवाद सहित वैदिक उदय नाम से 220 पृष्ठो पर एक पुस्तक डा नरेन्द्र टुटेजा बी 11581 वसन्त कुज नई दिल्ली 70) ने लिखी है। इसका प्रकाशन डा रेणु टुटेजा ने किया है। इसका मूल्य 80 रुपए रखा गया है। पुस्तक का कागज बढिया व टाईटल आकर्षक है। भूमिका स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने लिखी है। पाच महायज्ञो का रेखाचित्र सहित वर्णन है। पहले पृष्ठ पर अग्रेजी और सामने दूसरे पृष्ठ पर हिन्दी मे वेद मन्त्र व अनुवाद दिया गया है। इसमे अन्त मे 62 भजन हैं जो अग्रेजी व हिन्दी दोनो भाषाओं मे आमने सामने दिए गए हैं। यह श्री टुटेजा जी का अच्छा प्रयास है। उन्होने यह पुस्तक स्व श्री उदयभान जी टुटेजा की पावन स्मृति मे प्रकाशित की है। यह पुस्तक श्री टुटेजा जी से मिल सकती है।

धर्मदेव आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्य समाज अन्धेरी का 15वा वार्षिक समारोह सम्पन्न

आर्य समाज अन्धेरा द्वारा आयोजित चतुर्वेद शतक राष्ट्र रक्षा 21 कुण्डीय यज्ञ दिनाक 10 से 13 जनवरी 2002 तक धूमधाम से उल्लास पूण वातावरण मे श्रा आचार्य अखिलेश्वर जा के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य कन्या गुरुकुल हाथरस उत्तर प्रदेश की छात्राओ को वेदपाठ के लिए विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था तथा सुमधुर गायक कचन कुमार जी आर्य भजनोपदेशक इस समारोह मे विशेष रूप से दिल्ली स पधारे हुए थे।

चार दिन के उत्सव स्थल का वातावरण यज्ञमय हो गया। इन चारो दिनो मे आशातात यज्ञमानो ने यज्ञ में भाग लेकर अपना आहूति समर्पित की। प्रतिदिन यजमानो का ताता सा लग गया। यह यन राष्ट्र रक्षा विश्वशाति तथा जनकल्याण की भावनाआ को लक्ष्य करके आयोजित किया गया।

आचार्य श्री अखिलेश्वर जी ने अपन प्रवचनो मे कहा कि विश्वशान्ति के लिए हमे सदा प्रयासरत रहना चाहिए। जीवन मे जीना और जीवन छोडना दाना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए आपने बताया कि रामायण हमे जीना और गीता हमे त्याग का सदेश देता है किन्तु वेद हम दोनो प्रकार की शिक्षाओ से अवगत करात हैं। आपने कहा वद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है वद का पढना पढाना और सुनना सुनाना मानव मात्र का परम धर्म है। वेद शाश्वत है इसका ज्ञान प्रभु की शाश्वत वाणी है यह भगवान ने विश्व कल्याण और विश्वशान्ति के लिए हमे दिया है। ज्ञान का अभाव ही अशाति का कारण है। आपने बताया अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। यही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। वेद का ज्ञान ही अज्ञान के मार्ग से हमे मुक्ति दिला सकता है। हम अपनी मर्यादाओ का अज्ञानता वश उल्लघन करत हैं अत कष्ट पाते हैं। मानव झूठे अभिमान के कारण समझता है– मैंने सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया है यही अज्ञान है यही दुख और अशान्ति का कारण बनता है।

दिनाक 13 1 2002 को प्रात काल राष्ट्ररक्षा एव विश्वशान्ति के लिए आयोजित 21 कुण्डीय चतुर्वेद शतक यज्ञ की पूर्णाहुति बड सुखद वातावरण मे सम्पन्न हुई।

वेदपाठी कन्याओ ने मधुरकठ से वेदमन्त्रो के उच्चारण से वातावरण को आकर्षक बना दिया था। श्री कचन कुमार आर्य ने अपने भजना की जनता पर विशेष छाप छोडी अन्त मे आर्य समाज अन्धेरा की मन्त्री श्रीमती उर्मिला बहल जी ने आय समाज की गतिविधियो से उपस्थित जन समुदाय को परिचित कराया तथा चारो दिन इस समाराह मे पधारे सभी महानुभावो यजमानो वक्ताआ व श्रोताओ को धन्यवाद करते हुए विशेष रूप से कन्या गुरुकुल की छात्राओ भजनोपदेशक श्री कचन कुमार एव प्रमुख यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्रा अखिलेश्वर जा का धन्यवाद करते हुए शान्तिपाठ किया

10 से 13 जनवरी 2002 तक प्रतिदिन प्रात प्रात राश तथा सायकाल ऋषि लगर की व्यवस्था की गई। शान्तिपूर्ण सद्भाव के वातावरण मे यह समारोह सम्पन्न हुआ। –अरुण अबरोल प्रधान

यज्ञोपवीत क्यों ?

❑ले० स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती

यज्ञोपवीत भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। यह यज्ञ की वेश-भूषा है। यह विद्या का चिन्ह है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगिराज श्री कृष्ण, महाराज शिव, ब्रह्माजी, वाचक्नवी गार्गी, भगवती सीता, सीता-साध्वी द्रौपदी-सभी नर-नारी यज्ञोपवीत धारण करते थे-

यज्ञोपवीत में तीन तार होते हैं। तीन तारों का सन्देश है-

1. मनुष्य पर तीन ऋण चढ़े हुए हैं-1. देवऋण, 2. ऋषि-ऋण। 3 पितृ-ऋण-इन तीनों ऋणों से अनृण होना है। यज्ञ करो, विद्वानों का सत्कार करो, परमेश्वर की उपासना करो। वेद का स्वाध्याय करो, माता-पिता की सेवा करो- इस प्रकार इन ऋणों से अनृण होंगे।

2 तीन आनादि पदार्थ हैं-1. ईश्वर, 2. जीव, 3. प्रकृति। इन तीनों को जानों। ईश्वर का और हमारा क्या सम्बन्ध है, उसे कैसे पाया जा सकता है ? मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, मुझे कहां जाना है-इन बातों का चिन्तन करें। संसार क्या है ? हम इस गोरखधन्धे में कैसे फंस गये, इससे कैसे निकल सकते है ? इन तत्वों पर चिन्तन और विचार करना।

3. सत्त्व, रज, तम (प्रोट्रान, इलैक्ट्रोन, न्यूट्रोन)-तीन गुण हैं। इन गुणों से ऊपर उठकर त्रिगुणातीत होना है।

4. माता, पिता, आचार्य-तीन गुरु हैं, तीनों की सेवा, आदर-सम्मान करो।

5. प्रातः सवन, माध्यन्दिन-सवन और सायं सवन-तीन सवन होते हैं। तीनों समय के कार्यो को यथासमय करो।

इस प्रकार तीन-तीन के अनेक जोड़े हैं। इन सभी का समावेश यज्ञोपवीत के तीन तारों में हो जाता है। इसलिए यज्ञ के तीन तारों में सारे विश्व का विज्ञान भरा हुआ है।

यज्ञोपवीत के एक-एक तार में तीन-तीन तार होते हैं-इस प्रकार कुल तारों की संख्या नौ हो जाती है। नौ तार क्या सन्देश देते हैं ? वेद में कहा है-

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ॥ अथर्व. १०-२-३१

आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली अयोध्या नामक एक नगर है। यह नगर है-मानवदेह। इसमें आठ चक्र हैं और नौ द्वार हैं। नौ द्वार हैं-दो आंख, दो कान, दो नासिका-छिद्र, एक मुख-ये सात हुए। इनके लिए वेद में कहा है-सप्त ऋषयः प्रतिहिता शरीरे। हमारे शरीर में सात ऋषि बैठे हुए हैं। इन्हें ऋषि बनाना है। ये ऋषि बन गए तो जीवन का कल्याण हो जाएगा। यदि ये राक्षस बन गये तो जीवन का विनाश हो जाएगा। दो मल और मूत्र के द्वार हैं। इस प्रकार कुल नौ द्वार हैं। यज्ञोपवीत के नौ तार यह सन्देश देते हैं कि अपनी इन्द्रियों पर एक-एक चौकीदार बैठाओ जिससे किसी इन्द्रिय से कोई बुराई जीवन में प्रवेश न करे। इन कानों से अच्छा सुनें, आंखों से अच्छा देखें। नासिका से ओम् का जप करें (जप नासिका से ही होता है), मुख से अभक्ष्य पदार्थों का सेवन न करें, मल-मूत्र के द्वारों से ब्रह्मचर्य का पालन करें।

यज्ञोपवीत में पांच गांठें होती हैं। पांच गांठों के दो सन्देश हैं-

1. काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद (अभिमान)-ये मनुष्य के पांच शत्रु हैं-इन पर विजय प्राप्त करें।

2 गृहस्थों को प्रतिदिन पांच यज्ञों का अनुष्ठान करना चाहिए। पांच यज्ञ यह हैं।

1. ब्रह्मयज्ञ-सन्ध्या और स्वाध्याय, 2. देवयज्ञ-अग्निहोत्र और विद्वानों का मान-सम्मान। 3. पितृयज्ञ-जीवित माता-पिता, दादा दादी, परदादा-इनका श्राद्ध और तर्पण करना, इनकी सेवा-शुश्रूषा करके इन्हें सदा प्रसन्न रखना और इनका आशीर्वाद प्राप्त करना, 4. बलिवैश्वदेवयज्ञ-घर में जो भोजन बने उसमें से खट्टे और नमकीन पदार्थों को छोड़कर रसोई की अग्नि में दस आहुतियां देना और कौआ, कुत्ता, कीट-पतंग, लूले-लंगड़े, पापरोगी, चाण्डाल को भी अपने भोजन में से भाग देना। 5. अतिथि यज्ञ-घर पर आने वाले वेद-शास्त्रों के विद्वान् धार्मिक उपदेशकों का भी आदर-सम्मान करना।

इसे बायें कन्धे पर डाला जाता है। यह हृदय से होता हुआ कटि तक पहुंचता है। मनुष्य जन्म से शूद्र होता है। यज्ञोपवीत संस्कार होने पर द्विज बनता है। द्विज बनने पर कर्त्तव्यों का भार वहन करना होता है। मनुष्य में बोझ उठाने की शक्ति कन्धे में होती है, इसलिए इसे कन्धे पर डाला जाता है। यज्ञोपवीत धारण करते हुए कुछ प्रतिज्ञाएं की जाती हैं, अपनी प्रतिज्ञाओं को हृदय से पालन करना होता है। इसलिए यह हृदय से होता हुआ आता है। अपने कर्त्तव्यों को करने के लिए, हम सदा कटिबद्ध रहेंगे, इसलिए यह कटि तक पहुंचता है।

संक्षेप में यह सन्देश है यज्ञोपवीत का।

इसे धारण करके उतारें नहीं, घर जाकर खूंटी पर न टांगें। सोपवीती सदा भाव्यम्-सदा यज्ञोपवीत धारी रहना चाहिए। महर्षि दयानन्द के इस कथन को सदा ध्यान में रखें-

"विद्या का चिन्ह यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़ मुसलमान व ईसाइयों के सदृश बन बैठना, यह भी व्यर्थ है। जब पतलून आदि वस्त्र पहनते हो और तग़मों (Medal) आदि की इच्छा करते हो, तो क्या यज्ञोपवीत आदि का कुछ बड़ा भार हो गया था ?"

—सत्यार्थ प्रकाश,
एकादशसमुल्लासः

प्रतिज्ञा

मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि अपने जीवन को आदर्श बनाऊंगा। परिवार, समाज, राष्ट्र को ऊंचा उठाने का भरसक प्रयत्न करूंगा। जीवन में अण्डे, मांस, मछली, शराब, कबाब का सेवन नहीं करूंगा। आर्य समाज के साथ निरन्तर सम्पर्क रखूंगा। मैं जीवन में आगे बढ़ने, ऊपर उठने, निरन्तर कर्मशील रहने, सूर्य-चन्द्रमा के समान बनने का संकल्प लेता हूं।

शिवरात्रि की घटना

❑रचयिता श्री रामसुफल शास्त्री, लाल सड़क हांसी

शिवरात्रि की घटना से ऋषिवर ने सब कुछ छोड़ दिया!
सच्चे शिव की खोज की खातिर सारा कुनबा छोड़ दिया!!
देख के चूहे शिव के ऊपर, मूल के मन संशय जागा!
मन का संशय दूर करन हित, मूल रात भर था जागा!!
मूल के मन से उसी समय से, सदा की खातिर भ्रम भागा!!!
तब से जड़ मूर्ति का पूजन, झूठा नाता तोड़ दिया ॥1॥
आकर पुत्र माता से बोला, मां ये नकली शंकर है!
जिसे समझता था मैं शिवजी, वो पूरा जड़ पत्थर है!!
सच्चे शिव की आड़ में ये तो और ही कोई चक्कर है !!!!
मैं तो शिव की खोज करूंगा, ऐसा कह मुंह मोड़ लिया ॥2॥
निकल पड़े घर बार छोड़ कर, दर-दर खाक छान डाली!
तीन वर्ष में वेद शास्त्र पढ़, शिक्षा पूरी कर डाली !!
फिर सींचा ये वैदिक बगीचा बन करके सच्चा माली !!!!
"रामसुफल" के जीवन को भी सच्चे शिव से जोड़ दिया ॥3॥

अमृतसर में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पुतलीघर अमृतसर के तत्वावधान में श्री इन्द्र कुमार जी के निवास स्थान पर पुतलीघर में पारिवारिक सत्संग सम्पन्न हुआ। निवास स्थान के बाहर ओ३म् के झण्डे अपनी अद्भुत छटा बिखेर रहे थे। यज्ञ के यजमान पद को श्री सुधीर कुमार जी ने (सपत्नीक) सुशोभित किया। माता जगदीश आर्या के मधुर भजन हुए। तत्पश्चात् श्री ओम प्रकाश जी आर्य ने मानव जीवन के उद्देश्य को दर्शाते हुए अपने सारगर्भित प्रवचन में कहा कि आज प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने के प्रयास में अपने जीवन के उद्देश्य को ही भूलता जा रहा है। उन्होंने कहा कि मानव अपनी इच्छाओं के ताने-बाने में इस प्रकार फंस गया है कि वह अपने समाज देश तथा राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों को भी भूलता जा रहा है और परमात्मा से बहुत दूर जा रहा है। इस सत्संग में लगभग 60 आर्य पुरुषों एवं आर्य महिलाओं ने भाग लिया।

—सुधीर कुमार, मन्त्री

जीने की कला

लेo डॉ. जे. पी. जौहरी

हम अपनी इच्छा से यहां पैदा नहीं हो सकते। यह जीवन हमें मिला है और उसे जीने के लिये मिला है एक शरीर जिसको सक्रिय करता है हमारा मस्तिष्क और हृदय। हमें रहने के लिये मिला है एक संसार जिसमें हमें कुछ दिनों रहना है और फिर उसे छोड़ कर चले जाना है। हमें इस संसार में सब कुछ मिला है जिसे हम अपने पास रख सकते हैं; संग्रह कर सकते हैं और उसका मनचाहा उपयोग कर सकते हैं पर फिर भी हमारा यहां कुछ भी नहीं है क्योंकि उसे हम अपने साथ नहीं ले जा सकते। तभी जे० कृष्णमूर्ति कहते हैं कि "इस संसार में अतिथि की भांति रहो" अर्थात् यहां उपलब्ध सभी वस्तुओं का आवश्यकता पड़ने पर उपयुक्त उपयोग करना परन्तु न संग्रह करना और न मोहबन्धन में फंसना। हम यह सब जानते हैं, फिर भी संग्रह करते हैं, अधिकार जताते हैं और मोह बन्धन में फंस संघर्ष और समस्याएँ उत्पन्न करते हैं, स्वयं दुःखी होते हैं और दूसरों को भी दुःखी करते हैं। हम ऐसा क्यों करते हैं?

हम अकेलेपन से भयभीत हैं। हम सोचते हैं कि यह पहाड़ सा जीवन अकेले कैसे व्यतीत कर पायेंगे क्योंकि न कोई सहारा होगा, न कोई पूछेगा और न कोई साथी होगा। अर्थात् अकेलापन नहीं वरन् अकेलेपन का विचार मुझे डरा रहा है और वही साथी और सहारा चाहता हैं जिससे बन्धकर वह अपना जीवन सुख से व्यतीत कर सके। दुर्भाग्यवश समाज भी अकेले व्यक्ति को आदर की दृष्टि से नहीं देखता। परन्तु समाज भी अजीब है, वह अकेले व्यक्ति का तो अनादर करता है परन्तु अतिथि का सम्मान करता है। विश्व में कई व्यक्ति अकेले रहते हैं और कई महान् विभूतियों ने अकेले ही सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत किया है। ईसा, बुद्ध, भीष्म, स्वामी दयानन्द, आनन्दमयी मां, मदर टेरेसा। जे० कृष्णमूर्ति जो 91 वर्ष की आयु तक अपने अन्तिम दिनों तक विश्व में अकेले घूम-घूम कर वार्ताएं देते रहे। हम अतिथि की भान्ति यहां क्यों नहीं रह पाते और मोह बन्धन में क्यों फंसते हैं?

मस्तिष्क का प्राथमिक कार्य शरीर को सुरक्षा प्रदान करना है जो वह विचार और बुद्धि के माध्यम से ही कर सकता हैं। विचार ने हमारे बाह्य क्षेत्र में आशातीत प्रगति कर हमारे जीवन को सुरक्षित और सुविधाजनक रूप तो दिया परन्तु आन्तरिक क्षेत्र में स्वयं की सुरक्षा हेतु 'मैं' का निर्माण कर हमें मोह के भ्रम-जाल में फंसा दिया। अत: हमें अपने मस्तिष्क तथा विचारों, भावनाओं और बुद्धि के उपयोग के प्रति सावधान रहना होगा अर्थात् मनोवैज्ञानिक स्तर पर मस्तिष्क जो कुछ निर्माण करता है यानि धारणाएँ, आदर्श, सिद्धान्त, उद्देश्य, विश्वास, परम्पराएँ, मान्यताएं और नैतिकता इन सब पर प्रश्न चिह्न लगाना होगा। इसका अर्थ है कि समाज और व्यक्ति पर इन सब के प्रभाव और परिणामों को व्यापक दृष्टिकोण से देखना और समझना होगा और हानिकारक और अनुपयोगी सिद्ध होने पर उन्हें सच्चाई और ईमानदारी से त्यागना होगा नहीं तो हम इस भ्रम-जाल में ही फंसे रहेंगे।

जिस संसार मे हमें रहना है उसका कुछ भाग इन्द्रियों द्वारा जाना जा सकता है, शेष अज्ञात है। हमें दोनों में ही जीना है नहीं तो जीवन अपूर्ण रह जायेगा। मस्तिष्क और इन्द्रियां हमें ज्ञात में ही जीने के लिए मिली हैं और अज्ञात में न उनकी आवश्यकता है न उपयोगिता' शरीर की भाषा संवेदन है और मस्तिष्क की विचार। शरीर अपनी आवश्यकताओं, अनुभवों और असुविधाओं को संवेदनों के माध्यम से व्यक्त करता है और मस्तिष्क उनको नाम देता है। आपकी कोई बात मुझे अच्छी लगी जिससे शरीर में संवेदन उठे और मस्तिष्क ने उसे सुख का नाम दिया। और यदि अरुचिकर लगी तब दुःख या कष्ट का नाम दिया। इसी प्रकार शरीर में उठने वाले अन्य संवेदनों को मस्तिष्क ने प्रशंसा, निन्दा, क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या आदि का नाम दिया हैं। इन संवेदनों में ऊर्जा होती है जो कर्मेन्द्रियों को कार्य करने हेतु प्रेरित या विवश करती है। क्रोध के संवेदनों से शरीर कंपकंपा उठता है। ध्यान रहे प्रेम, करुणा, दया आदि सद्गुणों का सम्वेदनों से कोई सम्बन्ध नहीं है और न मस्तिष्क से ही और इसीलिये न काल से। वे सहजता से तुरन्त उठते हैं। उसका स्थान मन हैं जो शरीर के बाहर शुद्ध वैश्विक चेतना से सम्बन्धित है और वे तब प्रकट होते हैं जब मस्तिष्क शान्त होता है।

विचार जो मस्तिष्क में संकलित ज्ञान और स्मृति से आते हैं वे भाषा, बुद्धि, तर्क, मत, विचारधारा और कल्पना के रूप में तथा 'मैं' का निर्माण कर आदर्श सिद्धान्त, विश्वास और उद्देश्य स्थापित कर हमारे जीवन को निर्देशित करते रहते हैं। इन सब का अज्ञात से कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु विचार अनाधिकृत रूप से अज्ञात में प्रवेश करने हेतु उसकी धारणाएं और प्रतीक बनाकर उन्हें भावनाओं से सजाकर तथा विश्वास का जामा पहना कर उनके आधार पर जीना प्रारम्भ करता है तभी वह विरोध और संघर्ष उत्पन्न कर जीवन में दुःख और समस्याओं के बीज बोता है। विश्वास और धारणाएं व्यक्तिगत होती हैं अत: विरोध और उसके परिणाम स्वरूप संघर्ष आदि स्वाभाविक हैं। अत: हमें अपने जीने का आधार तथ्यों को बनाना चाहिये जिनमें विरोध सम्भव ही नहीं है। आपके सामने एक दुर्घटना हो जाती है। यह तथ्य है और दुर्घटना से प्रभावित व्यक्तियों को सहायता की आवश्यकता है यह भी तथ्य हैं। परन्तु आपकी धारणा या मत है कि यदि मैं बीच में पड़ा तब पुलिस थाने या कचहरी के चक्कर काटने पड़ेंगे जिससे परेशानी तो होगी ही और समय भी नष्ट होगा। अत: इन तथ्यों की उपेक्षा कर अपनी धारणाओं के अनुसार पीड़ित व्यक्तियों की उपेक्षा कर देते हैं। ऐसी ही मानसिकता संवेदनहीनता के जन्म और पोषण का कारण बनती है।

जीवन स्वतन्त्र और अबाध्य है। उसे नियमों, सिद्धान्तों और आदर्शों से बांध, योजनाओं और अनुशासनों के आधार पर जीने का प्रयास, द्वन्द्व, भ्रम और संघर्ष को आमन्त्रित करना है। परिस्थितियां, घटनाएँ और समस्याएं जीवन में अचानक आती हैं और वे हमारे आदर्शों आदि को मोहताज नहीं हैं। उनका सामना हमें तुरन्त करना पड़ता है और उनसे पलायन उनको और जीवन को भी जटिल बनाता है। मैं नियमित रूप से ध्यान, व्यायाम और प्रार्थना करता हूँ। उसी समय मेरे घनिष्ट मित्र की दुर्घटना का समाचार मिलता है। अब मेरे अन्दर द्वन्द्व उत्पन्न होता है। अभी जाऊं या प्रार्थना के पश्चात्। उसको मेरी सहायता और सान्त्वना की आवश्यकता है और प्रार्थना न कर पाने से कुछ अनिष्ट की आशंका। अत: अपने नियम का पालन समस्या से पलायन है जो सम्बन्धों में कटुता और तनाव को उत्पन्न कर जीवन और मनुष्य को उलझनों मे फंसा देता है।

जीवन गतिशील है, स्थिर नहीं। वह क्या लायेगा और हमे कहां ले जाएगा। यह न हम जानते हैं और न जान सकते हैं। अत: हमें जीवन के साथ चलना है अर्थात् जो वह लाये सुख-दुःख, समस्या, आशा, निराशा, यश, अपयश, लाभ, हानि सभी को सहर्ष स्वीकार करते हुए और उसका सामना करते हुए आगे बढ़ते जाना है। जीवन को अपनी इच्छानुसार चलाने का प्रयास दुःख और विनाश का कारण बन सकता है। जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार "जीवन एक ऐसा शिक्षक है जो आपको कभी धोखा नहीं देगा और आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचा देगा। अत: घटनाओं और परिस्थितियों से भरी उसकी भाषा को सीखो और समझो।"

जीवन सम्बन्ध है। सम्बन्धों में हम पैदा होते हैं, सम्बन्धों में हम जीते हैं और सम्बन्धों में ही सीखते और कार्य करते हैं। पशु, पक्षी, प्रकृति और व्यक्तियों से भी हमारे सम्बन्ध हैं। हमारे चारों ओर जो हो रहा हैं और हमारे अन्दर जो क्षण प्रतिक्षण घट रहा हैं उन सबके अवलोकन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं यदि हम सजग हैं। सम्बन्धों को तोड़ कर हम जी तो लेंगे परन्तु तब जीवन खोखला, नीरस और निरर्थक होगा अर्थात् यह बहुमूल्य जीवन व्यर्थ जायेगा।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

ज्योति पर्व ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते।

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 11, 12, 13 मार्च 2002 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को ऋषि जन्म स्थली टंकारा में समारोह पूर्वक किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

यजुर्वेद-पारायण यज्ञ:-दिनांक 5 मार्च से 13 मार्च तक।

ब्रह्मा:-आचार्य विद्यादेव एवं श्री रामदेव जी।

भक्ति संगीत:-श्री सत्यपाल पथिक एवं श्री नरेन्द्र आर्य सम्पूर्ण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बृजमोहन मुजाल (प्रबन्ध निर्देशक हीरो ग्रुप इन्डस्ट्रीज)

बोधोत्सव (दिनांक 12.3.2002 को दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक)

मुख्य अतिथि :-श्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री, गुजरात सरकार

मुख्य वक्ता: कैप्टन देवरत्न आर्य (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली)

श्री बल्लभभाई कथीरिया (उद्योग राज्यमंत्री, भारत सरकार) एवं मोहन भाई कुन्डारिया (विधायक गुजरात सरकार)

ट्रस्ट की गतिविधियों से आप भली भांति परिचित ही हैं। ट्रस्ट निरन्तर वेद प्रचार और वैदिक साहित्य प्रकाशन में विशेष योगदान दे रहा है। ट्रस्ट उपदेशक विद्यालय चला रहा है, जिसमें पुरोहित, धर्मशिक्षक, उपदेशक एवं भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। इस समय 125 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसके साथ ही एक भव्य गौशाला है जिसमें लगभग 50 गाय एवं बछड़े हैं।

ऋषि भक्तों के अनुरोध पर 12 फ्लैट/कमरों/शौचालय/स्नानागार सहित पूर्ण कर लिए गए हैं। विश्वदर्शनीय यज्ञशाला का निर्माण कार्य प्रगति पर है। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि यज्ञशाला के निर्माण हेतु अथवा ऋषि लंगर हेतु एवं ट्रस्ट द्वारा चलाये जा रहे कार्यों को सुचारू रूप से चलाने हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान आप नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा **"महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा"** के नाम केवल खाते में दिल्ली कार्यालय आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर अथवा टंकारा, जिला राजकोट-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाने की कृपा करें। ऋषि लंगर हेतु खाद्य सामग्री देना चाहें तो ऋषि बोधोत्सव से पूर्व भिजवाने की कृपा करें।

आपने सानुरोध प्रार्थना है कि आप आर्य समाज, अपनी शिक्षण संस्था तथा सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेजने की कृपा करें और ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनिए। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लावें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

:निवेदक :-

ओंकार नाथ	शान्ति प्रकाश बहल	रामनाथ सहगल
मैनेजिंग ट्रस्टी	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

उपकार्यालय :-आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 दूरभाष-3360059, 3362110 3363718 टेलीफैक्स 4615195

जीने की कला

(पृष्ठ 7 का शेष)

क्या जीवन का कोई उद्देश्य है? वह विराट जीवन जो मनुष्य, प्रकृति और सभी प्राणियों में प्रवाहित हो रहा है, जो सृष्टि के सभी प्राणियों को ओजस्विता प्रदान करता है, जो सत्, चित्त आनन्द में अभिव्यक्त होता है और सौन्दर्य तथा प्रेम का आनन्दमय रूप है और जिसका आदि है न अन्त। ऐसे जीवन का उद्देश्य क्या हमारा यह तुच्छ मस्तिष्क जान सकता है? इसका एक अंश अकस्मात् हमें मिल गया और हम उसका मन-माना उद्देश्य बना उसके अनुसार जीना प्रारम्भ कर देते हैं और इस प्रकार उसकी अभिव्यक्ति की पूर्णता को जानने या उसकी अनुभूति से हम वंचित रह जाते हैं।

हमारा मस्तिष्क जो भी उद्देश्य, सिद्धान्त आदि बनाएगा, उसके प्रयास हेतु, समय का उपयोग उसकी विवशता है क्योंकि काल में ही उसका विकास हुआ है और अन्य साधन वह जानता ही नहीं। स्पष्ट है कि सांसारिक क्षेत्र में धन, यश, सुख, सम्मान तथा तकनीकी क्षेत्र में कुछ बनने का उद्देश्य, आदर्श आदि स्थापित कर जीने का कोई औचित्य हो सकता है, परन्तु जो कालातीत है और जिसे काल के माध्यम से जाना ही नहीं जा सकता इसका उद्देश्य आदि बना प्रयास करना भ्रम नहीं तो और क्या है? प्रेम, करुणा, दया आदि सद्गुण कालगत नहीं होते वरन् सहजता से उभरते हैं। अनुभूति तुरन्त आती है। अन्तर्दृष्टि अचानक उभरती है। अन्तर्बोध हो जाता है और सत्य चुपचाप प्रवेश कर जाता है। इन में समय नहीं लगता क्योंकि समय में कार्य करने वाला चेतन और अचेतन मस्तिष्क शान्त रहता है। अर्थात् जब कभी मस्तिष्क शान्त रहता है तभी अनुभूतियां होती है। शान्त मस्तिष्क स्वतन्त्र है क्योंकि वह अपने बन्धनों से मुक्त हो चुका है। तभी जे० कृष्णमूर्ति कहते हैं कि स्वतन्त्रता प्रारम्भ में है न कि अन्त में अर्थात् मस्तिष्क या मन शान्त हुए बिना मोक्ष, निर्वाण, सत्य आदि प्राप्ति हेतु साधनाएं निरर्थक हैं और ध्यान ही वह साधन है जिससे मस्तिष्क स्वत: शान्त होता है।

आज जीवन अत्यन्त अनिश्चित हो गया है। वातावरण में और मनुष्य के अन्तर मन में एक अजीब प्रकार का भय व्याप्त है कि न जाने कल क्या हो जाए? यहां कदम-कदम पर धोखा है पाखण्ड परोपकार के रूप में पनप रहा है, विकास के नाम पर भ्रष्टाचार हो रहा है, शिष्टाचार शोषण का माध्यम बन गया हैं, यहां धन कमाने का साधन बन गया है, न्याय अपराधियों का खिलौना बन गया है और भद्रलोक भ्रष्टलोक बन चुका है। यहां कदम-कदम पर मौत के कुएं खुदे पड़े हैं, न जाने किस पर पांव जाए, कोई बम फट जाए, कहीं गोली चल जाये, कहीं दंगा भड़क उठे, कोई ट्रक टक्कर मार जाए, कोई दुर्घटना हो जाए, कुछ निश्चित नहीं है। नेता अभिनेता बनते जा रहे हैं, गुरुओं की बाढ़ सी आ गई है। वे धनी होते जा रहे हैं और अपने शिष्यों की संख्या बढ़ाने में लगे हैं। देश-सेवा के नाम पर देश को लूटा जा रहा है, सुधारक सुधार का दावा करते हैं। जीवन अत्यन्त जटिल हो गया है, मनुष्य भ्रमित हैं, उलझन में है, उसके सामने धोखा है, शोषण है, विश्वासघात है, भ्रष्टाचार और अत्याचार है। आज उसे अपने चारों ओर चेहरे नहीं वरन् मुखौटे नज़र आ रहे हैं। अत: आज जीने हेतु अत्यन्त सावधानी और अवधान की आवश्यकता है। हमें अपनी समस्त इन्द्रियों को अत्यन्त चैतन्य रख कर अपने चारों ओर के वातावरण और वस्तुओं के प्रति सावधान रहना और ध्यान से देखना और सुनते रहना होगा। ज़रा सी असावधानी और धोखा, शोषण और मृत्यु।

-प्रशान्ति लेन, विद्या विहार कोटा ज

ग्राम लाऊमुण्डा जिला बलांगीर में 38 परिवारों के सदस्य वैदिक धर्म में शामिल हुए

पुनर्मिलन (शुद्धि) की श्रृंखला में ही 30 दिसम्बर को बलांगीर जि. के लाऊमुण्डा ग्राम के प्रभु भक्ति आश्रम के वार्षिक महोत्सव पर 38 परिवारों के 120 ईसाइयों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। ये सज्जन वैदिक धर्म ग्रहण करने के लिए आसपास के 5-6 ग्रामों से आये थे। यह दीक्षा का कार्यक्रम सभा के उप प्रधान श्री पं. विशिकेसन शास्त्री जी ने करवाया। दीक्षितों को आशीर्वाद देने के लिए गुरुकुल आश्रम आमसेना के उपाचार्य ब्र. कुंजदेव जी मनीषी, परिव्राजक शुकदेव जी आदि अनेक विद्वान् उपस्थित थे। आश्रम के संचालक श्री स्वामी मुक्तानन्द जी का इसमें विशेष पुरुषार्थ रहा।

-सुदर्शन देव आर्य

प्रभु कृपा उस पर होती है जो परोपकार करता है

□ ले० आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली

आज का मनुष्य स्वनिर्मित मन्दिर की खूब सफाई करता है। फर्श गन्दे तो नहीं है, उसका ख्याल रखता है। रखना भी चाहिए। प्रत्येक मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च में शराब, मांस, धूम्रपान वर्जित है।

परन्तु भगवान् ने जो मन्दिर बनाया है। उसकी देखभाल नहीं करते, न हम सफाई का ध्यान रखते हैं। भगवान् ने मनुष्य के शरीर रूपी मन्दिर का निर्माण किया है। इस शरीर में शराब, मांस की गन्दगी डालते हैं जिसका कोई हिसाब नहीं है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष के कूड़े-करकट भरे हैं, जिसका हम ध्यान ही नहीं रखते। भगवान् ने जो शरीर रूपी मन्दिर बनाया है उसका भी ध्यान रखे, मानव निर्मित मन्दिर का भी ध्यान रक्खें।

प्रभु के दिव्य काव्य का जो दर्शन करता है वह आस्तिक है। हिरण घास खाता है, कस्तूरी सृजन कौन करता है? ईश्वर कबूतर को उड़ने की सिद्धि, भैंस को तैरने की सिद्धि, रेशम के कीड़े को रेशम बनाने की सिद्धि प्रभुशक्ति से ही प्राप्त है।

भगवान् दया सबसे ऊपर करता है, कृपा किसी-किसी पर करता है। जैसे पिता के दो बेटे हैं, एक है लायक, दूसरा नालायक। पिता दोनों की परवरिश करता है, दोनो को पढ़ाता है। परन्तु जब वह व्यापार में अपना उत्तराधिकारी बनायेगा तो लायक बच्चे को ही, नालायक बच्चे को नहीं। ठीक, इसी तरह परमात्मा दया सबके ऊपर करते हैं, कृपा उस पर होती है जो परोपकार करता है।

स्मरण रहे-जो व्यक्ति संसार का जितना-जितना परोपकार एवं परहित करता है। वह उतना-उतना ईश्वर की व्यवस्था में सुखी रहता है।

जो मांगने पर देता है वह दानी है जो बिना मांगे देता है वह दाता है। वही परमात्मा है।

80 वर्षीय एक साधु मिट्टी से खेल रहा था, उधर से राजा जा रहा था। साधु को मिट्टी से खेलते देख राजा पूछने लगे-'महात्मा जी! आप इतने बड़े संन्यासी हैं और बच्चों की तरह मिट्टी से खेल रहे हैं?' साधु ने जवाब दिया-'राजन्! मिट्टी से ही जन्म मिला है, इसलिए मैं मिट्टी से खेल रहा हूँ। राजा ने पुनः पूछा-'बाबा! आप किस जगह रहते हैं? साधु कहने लगे-'राजन्! सामने मिट्टी की जो कुटिया दिखाई दे रही है। वही मेरा वास स्थान है। राजा कहने लगे-महात्मा जी ! आप इस छोटी सी मिट्टी की कुटिया में रहते हैं? आप इसे छोड़िये मेरे साथ राजमहल में चलें, वहां आपकी रहने की समुचित व्यवस्था होगी। अलमस्त फकीर ने कहा-'राजन्! इक दिन इस मिट्टी में ही मिल जाना है, इसलिए मैं मिट्टी की कुटिया में ही रहता हूँ। यह कुटी कितनी प्यारी लग रही है।'

नगरों के सुन्दर भवनों का
कुटिया में कोई चिन्ह नहीं ।
बाह्याडम्बर शून्यगतश्री
पर्णकुटी है विलग्न कहीं।
उसमें बैठा एक भिखारी
जीवन के दिन गिनता है।
मांग कहीं से भीख भूख को
सदा मिटाता रहता है।
है तथापि कुटिया का स्वामी
अपनी कुटिया में सानन्द।
राजगृहों को भूल गया या निज
दुर्लभ नींद अमन्द।
कुटिया का आनन्द तनिक तो
वृद्ध भिखारी से पूछो।
पाता क्या विश्राम थका, उस
श्रान्त पुजारी से पूछो।

आनन्दमग्न महात्मा की बात को सुनकर राजा उनके चरणों में गिर पड़े और कहने लगे-महाराज! आप मेरे साथ राजमहल चलें, मेरा और प्रजा का इसमें कल्याण है। महात्मा जी कहने लगे-'राजन् मैं तुम्हारे साथ चलूंगा, तुम यदि मेरी 4 शर्तें मानोगे तब। राजा गद्गद हो कहने लगे-महाराज! मैं आपकी प्रत्येक शर्त मानने के लिए तैयार हूँ। आप मांगिये तो साधु ने कहा-'सुनो राजन ! मेरी पहली शर्त है कि तुम मुझे खिलाओगे, स्वयं नहीं खाओगे, तब तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ। दूसरी शर्त-तुम मुझे पहनाओगे, स्वयं नहीं पहनोगे, तीसरी शर्त-तुम मुझे सुलाओगे स्वयं नहीं सोओगे और चौथी शर्त यह है कि तुम चौबीस घण्टे मेरे साथ रहोगे तो मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ।

साधु की शर्त को सुनकर राजा कहने लगा-महात्मा जी! क्षमा करना, ये शर्तें मैं पूरी नहीं कर सकता। तुम्हें खिलाऊँ और मैं न खाऊँ, ऐसा हो ही नहीं सकता। तब महात्मा जी ने मुस्कराते हुए कहा-'राजन्! फिर मैं उसके साथ ही रहना चाहता हूँ, जो मेरी शर्त पूरी कर रहा है। राजा पूछने लगे-'कौन है वह? साधु ने कहा-वह परमपिता परमात्मा है।'

वह परमात्मा मुझे खिलाता है परन्तु स्वयं नहीं खाता है।

वह प्रभु हमें सुलाता है। परन्तु स्वयं नहीं सोता है।

वह प्रभु मेरे लिए अन्न, वस्त्र और वायु बिना मांगे ही देता है, परन्तु स्वयं उसका उपयोग नहीं करता और वह 24 घण्टे मेरे साथ रहता है। साथ देता है, फिर क्यो न परमात्मा को अपना साथी बनाऊँ। दूध व पानी की मित्रता से हमें सीख लेनी चाहिए। कहा भी है-

दूध और पानी सम जग में
प्यार बढ़ाना सीखो।
दुःखिया दीन अनाथों के संताप
मिटाना सीखो।
पानी ने जिस वक्त दूध को
अपना मित्र बनाया।
बड़े प्यार से सभी दूध ने पानी
को अपनाया।
इसी तरह तुम भी औरों से
मेल मिलाना सीखो। 1।
पानी को ले साथ दूध जब
हलवाई तक आया।
नाम रूप देकर अपना अपने
ही भाव बिकाया।
अपने से जो छोटे, उन्हें ऊपर
उठाना सीखो। 2।
दिया दूध ने जब इतना सम्मान
[illegible] पानी को।
पानी हुआ कृतज्ञ दूध की देख
मेहरबानी को
और के दिल में यूं तुम भी
जगह बनाना सीखो। 3।
हलवाई ने भट्टी पर जब
रक्खा दूध उबलना।
मगर दूध से पहले पानी शुरू
हो गया जलना।
इसी तरह तुम भी साथी का
कर्ज चुकाना सीखो। 4।
दूध सोचता मेरे कारण मेरा
मित्र जला है। तभी उबलकर दूध
कड़ाही से बाहर निकला है।
तुम भी अपने साथी का यूं
साथ निभाना सीखो। 5।
हलवाई ने जल का छींटा मार
दिया तब उस पर।
बैठा हो, खामोश दूध अपने
साथी को पाकर॥
मधुर यह आदर्श प्रेम का तुम
दिखलाना सीखो। 6।

अगर आज स्वामी दयानन्द होते

□ ले० श्री पं. सूर्यदेव शर्मा, अजमेर

अगर आज स्वामी दयानन्द होते। नये सूत्र में राष्ट्र माला पिरोते॥
जगत में सभी वेद का गान करते। सुधी वेदवाणी सुधापान करते॥
हमारी मही का महा मान करते। हमीं धर्म से विश्व कल्याण करते॥
हमीं विश्व में शान्ति के बीज बोते। अगर आज स्वामी दयानन्द होते॥१॥

वही विश्व में वेद वीणा बजाते। वही विश्व में शांति सज्जा सजाते॥
वही विश्व में ज्ञान गगा बहाते। वही विश्व को प्रेम जल से निल्हाते॥
उसी वारि से विश्व के पाप धोते। अगर आज स्वामी दयानन्द होते॥२॥

न भारत किसी का कभी दास रहता। वैभव देश का देश के पास रहता॥
विदेशी जनो का न सन्त्रास रहता। न धन शोषकों का यहाँ वास रहता॥
पराधीनता मे पडे हम न रोते। अगर आज स्वामी दयानन्द होते॥३॥

न यों हिन्दुओ का भला भाग्य फिरता। न बगालियो पर विपद वज्र गिरता॥
कलेजा न माँ का किसी भाँति चिरता। विपद बादलों से न सुख "सूर्य घिरता॥
लगाते न हम रक्त मे हाय ! गोते। अगर आज स्वामी दयानन्द होते॥४॥

हमारा सभी से सुसम्बन्ध होता। न सत्यार्थ पर अन्ध प्रतिबन्ध होता॥
प्रकाशन प्रतीकार निर्द्वन्द होता। नहीं "सूर्य" का तेज यो मन्द होता॥
नहीं सिन्ध मे "सत्य" नौका डुबोते। अगर आज स्वामी दयानन्द होते॥५॥

न झुकते कभी लीग के आप आगे। बली वीर हुँकार से भीरु भागे॥
सुने 'संगठन का बिगुल' वीर जागे। सुदृढ शत्रुगढ मे अयश आग लागे॥
कभी स्वत्व अपना न हम आज खोते। अगर आज स्वामी दयानन्द होते॥६॥

वही आज बनते सजग राष्ट्र नेता। वही भारती नाव के नव्य खेता॥
वही स्वत्व स्वाधीनता के विजेता। वही देश के पथ प्रदर्शक सुचेता॥
जगाते सभी राष्ट्र के भाव सोते। अगर आज स्वामी दयानन्द होते॥६॥

अहो ऋषि दयानन्द फिर आप आओ। अभी सो रहे जो उन्हे तो जगाओ॥
दुःखी मानवों को सुपथ फिर दिखाओ। पुनः विश्व मे वेद वीणा बजाओ॥
न प्राणी रहें पाप का भार ढोते। अगर आज स्वामी दयानन्द होते॥८॥

वेदों में विमान विद्या

□ ले० छैल बिहारीलाल गोयल

जिस समय महर्षि दयानन्द ने वेदों का भाष्य आरम्भ किया उस समय ससार में कहीं भी विमान-विद्या का नाम न था। परन्तु महर्षि के वेद भाष्यों में सैकड़ों स्थलों पर विमानों के संबध में उल्लेख किया गया है। ऋग्वेद के पहले सूक्त के प्रथम मंत्र मे अग्नि के प्रयोग से विमान आदि को वेग देने वाली शिल्पकला का वर्णन किया है।

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य
देवमृत्वजम् । होतारं रत्न
धातमम्।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार वृषो ऽग्नि :। अश्वो हवा-अग्नि को अश्व व वृप का पर्याय कहा है। (आशुगमन हेतु त्वाऽश्वोऽग्नि विशेष :। जब यह अग्नि विमान आदि यन्त्रों में प्रयुक्त की जाती है तो अश्व या वृष के वेगवाली होकर दूर देशों को गमन कगती हैं।

पहले सूक्त के पांचवें मंत्र में अग्नि का सर्वज्ञ रूप दर्शाया गया है। जिसने परमाणु रूप में पदार्थो एवं उनके उत्तम-उत्तम गुण रच के दिखलाए है। जो सब विद्या-युक्त वेद का उपदेश देता है। उसके द्वारा सृष्टि के उत्तर पदार्थो का दर्शन होता है। वही कवि अर्थात् ईश्वर है। भौतिक अग्नि भी स्थूल और सूक्ष्म पदार्थों से कलायुक्त होकर देशदेशान्तर में गमन कराने वाला दिखलाया गया है और जो भौतिक पृथ्वी आदि सब पदार्थो के साथ व्यापक और शिल्पविद्या का मुख्य हेतु (चित्रा) नामक किरण द्वारा प्राप्त करने का सिद्धान्त दिया है।

एमाशुमाशशवे भर यज्ञश्रियं
नृमाद नम् ।
पतयन्मन्दयत्सरवम् ॥ ऋग्वेद१।
४।७॥

मधुच्छन्दा ऋषि के विद्युत विज्ञान में विमान मे प्रयोग होने वाले कई मिद्धान्तो का दर्शाया है। पहले चार पद, आ,ईम, आशुम, अशवे है। आ निघण्टु ४।२ मे दिये पदार्थ विशेषो में से एक पदार्थ जो सृजनशीलता का कार्य करता है। इम भी एक पदार्थ है जो सृजनशीलता का काम करता है। इम भी एक पदार्थ है जो निघुण्ट मे दिए १०१ उदकों में एक है। उदक ... पदार्थ होते हे जो ... मे पहिले (पूर्वरूप) है। इम मे ई, अग्नि दाहगुण वालम् जलवाची पदाथ विशेष भी है। इसको आज के युग में पैट्रोलियम पदार्थों के साथ समन्वय कर सकते हैं। आशुम् को वेगादि गुणवाले अग्नि , वायु आदि पदार्थ बतलाए हैं। आ और शु को टेढ़ी गति के १३ भेदों में से एक भेद बतलाया गया है। निघण्टु के १।१४ में दिए अश्व के २३भेदों मे से एक भेद आशु भी है। आज के विमान भी आकाश मे वायु को कटाते हुए उड़ते हैं। तो टेढ़ी गति से ही चढ़ते-उतरते हैं।

ऋग्वेद १।५।३ में विमान-विद्या का वर्णन है। इसमें अन्न-विद्या में सुते क्रियाद्वा सह नामक बल के साथ विद्युत-वायु के प्रयोगों का वर्णन है। (निघुण्ट के २।६ में ये २८ भेद हैं।) वाज के निघण्टु २।६ में २८ अन्न भेदों में भी बतलाया गया है। साथ में इसके प्रेशर देने वाले ,अभि को मैकडानल्ड और कीथ ने वैदिक इंडैक्स में जल को चारों तरफ दबा कर प्रेशर देनेवाला अर्थ किया है। निघण्टु ३।८ में प्रेशर देने वाले १० कर्म भेद बतलाए हैं। जो वाजेभि: में दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

युंजन्ति बध्नमरुषं चरन्तं परि
तस्थुषः।
रोचन्ते रोचना दिवि ॥
ऋग्वेद१-६-१

इस मंत्र में पृथ्वी-जल-आकाश में चलने वाले यानों में अरुषम् सूर्य प्रकाश गति के १६ भेदों में से एक तथा उषा के १६ भेदों में से एक को शिल्प विद्याओं में प्रयोग करने के सिद्धान्त दिए हैं। इस प्रकरण में तस्थुष मानक मनुष्य विशेष जो प्रकाश विज्ञान को विशेष रूप से जानकर तथा परि, नामक ६२ पदार्थ विशेषों में से एक को प्रयोग में लाने का दिशा निर्देश दिया है। इस प्रकरण में अस्य नामक सूर्य अग्नि विद्युत (१।१६।४।२) 'हरी, हरणशील आकर्षण गुण वाली विद्युत (नि १।१५) को भी इस विद्या के साथ मलग्न करना है। ऋ. 1-6-2 मे पुन: विद्युत-विजान मे 'ईम' रूपी जल को अग्नि के योग से शिल्प विद्याओ में चक्रीकृत करने का दिशा निर्देश किया गया हैं।

ऋ 1-11-1 में जेता मधुछन्दा ऋपि सिद्धान्तों मे समुद्र तथा अन्य लोको मे जाने आने वाले विमानो तथा नौकाओं में विश्वारूपी वायु तथा वाजनम् (अन्न) तथा जल को प्रयोग में लाना तथा 'बाजी' अश्व को प्रयोग करने का निर्देश है। ऋ. 1-11-1 में का वो मेधा तिथि ऋषि सिद्धान्तों में 'होतारम्' अग्नि को अग्नि विज्ञान में 'विश्वा' वायु विशेष को शिल्प विद्याओं के माध्यम द्वारा 'अस्य' रूपी विद्युत अग्नि के साथ (ऋ.1-164-1) में प्रयोग करने के सिद्धान्त दिए हैं। इसी सूक्त के 8वं मंत्र में कविम् रूपी अग्नि विशेष और देवम् नामक प्रकाश विज्ञान को शिल्प-विद्याओं में प्रयोग करने के सिद्धान्त हैं।

ऋ 1-13-4 व 6-1-2 में आप्रियो नामक पृथ्वी स्थानीय अग्नि विशेष जो संपूर्ण रूप से क्रमबद्ध रूप से अधिकांश रूप में चारों वेदों में भिन्न-भिन्न ऋषि, भिन्न ऋषि देवता और छन्दों के माध्यम से आती है जिसका प्रयोग विमान विद्या में किया गया है। ऋ 1-13-6 में ईडित नामक अन्न विशेष और अग्नि द्वारा 'होता' अग्नि को शिल्प क्रियाओं में प्रयोग करने का मनुष्यों का निर्देश दिया है। ऋ. 1-13-6 में विमानों 'देवीद्वार' नामक जलरूपी ईंधनों को अलग-अलग द्वारों द्वारा शिल्प क्रियाओं में प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है। ऋ. 1-13-8 में कवि, होतारा, दित्या पदार्थों को प्रयोग करने के दिशानिर्देश दिये हैं। ऋ. 1-13-12 में स्वाहाकृत यज्ञ अग्नि द्वारा विमानों के समूह में प्रयोग करने का निर्देश मनुष्यों को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दिया है।

ऋ. 1-15-7 व 8 में द्रविणोदा नामक अग्नि विशेष को द्रविणोदा विज्ञान सिद्धान्त में विमान-विद्या के साथ प्रयोग करवाने की याचना की है। ऋ. 1-16-2 के विद्युत विज्ञान में ईश्वर ने विद्वानों को 'हरी' नामक पदार्थ विशेष के कृष्ण और शुक्ल पक्ष (गर्म-ठंढा) या (दिन-रात) को जानकर विमान-विद्या के साथ प्रयोग करने का दिशा निर्देश दिया है।

ऋ. 1-17-2 के ऋषि काण्वो मेधा तिथि इन्द्र वरुण के द्वारा प्राप्त विज्ञान का स्पष्ट प्रस्तुतीकरण करते हैं-

गन्तारा हिस्थोऽव से हवं विप्रस्य मावत:। धर्त्तारा चर्षणी नाम्॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती इस मंत्र के भावार्थ में लिखते हैं "विद्वद्रिर्यदा कलार्यंत्रेषु युक्त्या संयोजिते अग्निजले प्रेययेंते तदा यानानां शीघ्र गमन कारक ...ऽत"।

वेदों में विमानों के लिए रथ शब्द प्रयुक्त हुआ है। निघण्टु 5-3 में यह 36 पदों मे एक है। महर्षि के ऋग्वेद भाष्य में यह 1-46-3 में इस प्रकार भावार्थ में लिखा है।

भावार्थ-यदि मनुष्याः परम विदुषां सकाशा च्छिल्प विद्यां गृह्णी युस्तर्हि विमान आदि-यान्ना नि रचयि त्वा पक्षि वदाकाशे गन्तुं शक्नुयुः।

हिन्दी-यदि मनुष्य श्रेष्ठ विद्वानों से शिल्प विद्या प्राप्त करे तो विमानादि यानों को बनाकर पक्षी की तरह आकाश में जाने में समर्थ होंगे।

ऋ 1-47-6 के प्रस्कण्व ऋषि तथा अश्विनौ देवता। इस मंत्र में ऐसे विमान का उल्लेख है जिसमें (पृक्षः) सुख संपर्क वाला साधन हों। देश देशान्तर मे जाकर अपार धन राशि ला सके। अगले मंत्र में यान के विज्ञान में सूर्य किरणों के प्रयोग का वर्णन है। तब यह निश्चित है कि विमान-चालन होता है। भविष्य में सूर्य किरणों के द्वारा विमानो का चलना संभव हो सकेगा। यह कोई आश्चर्य न होगा। रथ, पद केवल आकाश में चलने या उड़ने वाले विमानों के लिए ही नहीं वरन् समुद्र और धरती पर चलने वाले जलपोतों और भू वाहनों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है।

ऋग्वेद 1-48-3 में प्रस्कण्व ऋषि व उषा देवता है। **उवासोषा उच्छाच्च नु देवी जीरा रथानाम्। ये अस्या आचरणेषु दध्रिरे समुद्रे न श्रवस्यवः।**

इसमें उषा को यानों में प्रभावशाली होकर बसने वाली कहा है। उषा रच से समस्त यान में प्रकाश किया जाता है तब प्रकृति में व्याप्त नामों को कला-कौशल में भी प्रयोग किया जाता होगा। ऋ. 1-51-13-व 14 में सुक्रता नामक विद्युत और दिवि नामक प्रकाश को विमानों में प्रयोग करने का सिद्धान्त दिया है। 52वें सूक्त के प्रथम मंत्र में (अत्यम्) अश्व को अग्नि, जल आदि से वाजम नामक अन्न और जल द्वारा आकाश आदि में विमानों को प्राप्त करने का विद्वान् मनुष्यों को निर्देश दिया है। ऋ 1-61-4 में विद्युत विज्ञान की यानो में प्रयोग विधि का निर्देश है। ऋ. 1-66-3 में अग्नि विज्ञान द्वारा विमान में सुवर्ण आदि से निर्मित चित्रम नामक अद्भुत स्वभाव युक्त त्वेष नामक प्रकाश का वर्णन दिया है। ऋ 1-70-4 में पाराशर ऋषि के अग्नि विज्ञान में अग्नियों को बढ़ाने वाला मित्रावरुणों के उदक रूपी सूक्ष्म पदार्थों का सहयोग दर्शाया गया है। ऋ. 1 74-7 में अग्नि देवता के दूतम् भेद द्वारा विमानों में अत्यन्त शब्द कारक और शीघ्र गामी अग्नियों के भेद दिए हैं।

(परिवर्तन पत्रिका से साभार)

श्रेष्ठ संगठन-आर्य समाज

❑ ले० डॉ कृष्णलाल विश्वनीड ई-१३७, सरस्वती विहार, दिल्ली-११००३४

अमीर-गरीब छोटे बडे ऊँच नीच बाल युवा देश विदेश सभी जातियो के सच्चरित्र स्त्री पुरूषो का एकमात्र सगठन आर्यसमाज है। आर्यसमाज चरित्र पर बल देता है। आर्यसमाज का आदर्श वाक्य है कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। वह वेद पर आधारित धर्म नीति, उपासना पद्धति चरित्र निर्माण चाहता है। इसी का प्रचार वह करता है। अन्धविश्वासो को छोड कर सब आर्य बने श्रेष्ठ बने। आर्य कौन है? जो चलता है गति करता है निरन्तर कार्य करता है आलस्य मे नहीं रहता। आर्य केवल अपनी उन्नति से सन्तुष्ट नहीं होता। वह अपने साथ सम्पूर्ण समाज की सारी मानवता की सारे प्राणी जगत् की रक्षा और उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है। इस विषय में आर्यसमाज का निम्नलिखित नवम नियम स्मरणीय है ' प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए ' कैसी उन्नति अपक्षित है यह बात इससे पहले छठे नियम मे स्पष्ट कर दी गई है जहाँ यह कहा गया है कि "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

आर्यसमाज अन्य मत मतान्तरो सम्प्रदायो से इस बात मे भिन्न है कि जहाँ अन्यत्र तथाकथित भगवानों प्रजापिताओ आचार्यों आदि की बातों पर विश्वास करके उनका अन्धानुकरण किया जाता है वहा आर्य समाज के मन्तव्य ईश्वरीय वाणी वेद पर आधारित हैं। ईश्वर की वाणी मानवमात्र के व्यापक कल्याण के लिए प्रकट हुई है।

अन्य सम्प्रदाय एकाङ्गी हैं बाह्य आडम्बरो में विश्वास करते हैं चमत्कार दिखाकर प्रदर्शन के द्वारा जनता मे आकर्षण पैदा करते हैं। दूरदर्शन मे एक ऐसे साधु बाबा को कुम्भ मेले मे दिखाया गया जिसकी खडावा मे उल्टी (पावो की ओर नोक वाली) कीले और इसी प्रकार आसन पर कीले लगी हुई थीं। परन्तु हाथ मे सिगरेट सुलग रही थी। जो सिगरेट जैसे व्यसन को नही छोड सका वह औरो को उपदेश देने का अधिकारी कैसे हो गया? ऐसे आडम्बर बहुत चल रहे हैं। ये चरित्र हीन दिखावा करने वाले साधु सन्यासी समाज को कहाँ ले जाएँगे। कई सस्थाओ मे शिविर (ध्यान शिविर) लगाते हैं और भोजन आवास के नाम पर २५०/ रु प्रतिदिन लेते हैं। साधक जाने आने का व्यय अपनी जेब से करते हैं और आठ आठ दस दस दिन तक अपने कार्य की हानि करते हैं सो अलग। वहा केवल व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति का राग अलापते हैं। उनका उद्देश्य ही है कि व्यक्ति को समाज परिवार से काटा जाये। वे कहते हैं कि व्यक्ति सुधरेगा तो समाज सुधरेगा। यह कभी सम्भव नहीं क्योकि समाज से व्यक्ति को पहले ही काट दिया गया। ब्रह्माकुमारियो के सत्सग मे केवल सफेद वस्त्र पहन कर जाने का नियम है। इसी प्रकार राधास्वामियो के सत्सगो मे बहुत भीड होती है। आसाराम मुरारी बापू जैसे धर्माचार्य अपनी आरती उतरवाते हैं और अन्धविश्वासो का प्रचार करते हैं। उनके प्रवचनो मे जो कुछ थोडी अच्छी बात होती हैं वह वैदिक होती हैं परन्तु वह वेद का नाम नहीं लेते। मुझे नहीं लगता कि इनके प्रवचनो से कुछ सुधार हुआ है। वास्तव मे बहुत बार इन बापूओ बाबाओ के नाम पर उनके भक्तो द्वारा रात-दिन प्रचार के द्वारा अन्धविश्वासी लोगो की भीड इकट्ठी की जाती है। उनसे पूछो कि क्या सुना क्या समझ आया तो सब हवा। ऐसा ही रात्रि जागरणो में होता है। वहाँ बहुत से गाने बजाने वालों को शामियाने के पीछे मदिरापान करते देखा गया है। इसके अतिरिक्त ऊँची आवाज मे ध्वनिविस्तारक चलाकर आस पास के लोगो की नींद में बाधा होती है।

इन सबके विपरीत आर्यसमाज आडम्बर प्रदर्शन मे विश्वास नहीं करता। उसका उद्देश्य चरित्र निर्माण कर सबको आर्य बनाना है। यज्ञ भी प्रदर्शन नहीं है पर्यावरण की शुद्धि के लिए सब प्राणियो की सुख सुविधा के लिए आदि काल से यज्ञ प्रचलित है। श्री राम और श्रीकृष्ण स्वय भी यज्ञ करते थे और ऋषियो द्वारा अनुष्ठित यज्ञ की रक्षा करते थे। सम्पूर्ण सृष्टि यज्ञमय हैं। यज्ञ सारी सृष्टि की नाभि है उसका केन्द्र है (अय यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभि)। केवल अपने ध्यान में केन्द्रित व्यक्ति आत्म सीमित होकर समाज के लिए क्या कर सकता है? आर्य समाज व्यक्ति और समाज जीवन के दोनो छोरों को उत्प्रेरित करता है जिससे कि व्यक्ति सन्ध्या स्वाध्याय द्वारा आत्मोत्थान भी करे और हवन दान (विद्या अभय धन) के द्वारा आत्मोत्सर्ग करके समाज का उत्थान भी करे ओर उसमे यह सब करते हुए दर्प की भावना न आये। वह यह मानकर चले कि इस व्यापक अर्थ मे यज्ञ प्रकृति का नियम है।

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिक चुनाव 27 1 2002 को चुनाव निरीक्षक श्री कृष्ण लाल गुप्ता एडवोकेट की देख रेख मे हुआ। गत वर्षों की भाति इस बार भी चुनाव सर्वसम्मति से हुआ। इसमे निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित घोषित किए गए।

प्रधान -श्री जनक राज महाजन। वरिष्ठ उप प्रधान -श्री चमन प्रकाश नन्दा। उपप्रधान -श्री चन्द्र गुप्ता श्री काशी राम अग्रवाल। मन्त्री -श्री जवाहर लाल महाजन। उपमत्री -श्री अशोक जावेद। कोषाध्यक्ष -श्री रघुबीर सिह जाहौन। पुस्तकाध्यक्ष -श्री राम चन्द्र। आर्य वीर दल -श्री रमेश चन्द्र। लेखा निरीक्षक -श्री ओम् प्रशाद शर्मा।

—जवाहर लाल महाजन, मन्त्री

"सत्यार्थ प्रकाश" के सप्तम समुल्लास में—

ईश्वर के विषय में महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घाटित कुछ सत्य

❑ *ले० श्री इन्द्रजितदेव, पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर-135001*

(गताक से आगे)

ईश्वर निराकार रह कर कार्य कैसे करता है?

सामान्य व्यक्ति जब यह सुनता है कि ईश्वर निराकार है और बिना किसी अन्य शक्ति के (=सर्वशक्तिमान् रहते हुए) सहाय के सारे कार्य स्वयं ही करता है तो यह प्रश्न उसके मस्तिष्क में उठना अत्यन्त स्वाभाविक ही है कि बिना हस्त, पाद, श्रोत्र व नेत्रादि के इन्द्रियों से करने योग्य काम कैसे कर पाता है। महर्षि दयानन्द ने इस महत्वपूर्ण प्रश्न का समाधान किया है। वे श्वेता श्वेतर उपनिषद् ३/१६ का वचन उद्धृत करते हैं:-

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्य कर्णः।
स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम्॥

अर्थात् ईश्वर के हाथ नहीं, परन्तु अपनी शक्ति रूप हाथ से सबका रचन-ग्रहण करता, पग नहीं, परन्तु व्यापक होने से सबसे अधिक वेगवान् है चक्षु का गोलक नहीं परन्तु सबको यथावत् देखता है; श्रोत्र नहीं परन्तु सबकी बातें सुनता, अन्तःकरण नहीं परन्तु सब जगत को जानता है और उससे अधिक जानने वाला कोई भी नहीं है। उसी को सनातन, सबसे श्रेष्ठ, सबमें पूर्ण होने से 'पुरुष विशेष' कहते हैं। वह ईश्वर इन्द्रियों और अन्तःकरण से होने वाले सब काम अपने सामर्थ्य से करता है। प्रश्न कर्त्ता यह मान रहा था कि हाथ, पैर आदि अवयवों व इन्द्रियों का नाम ही शरीर है परन्तु चेतन सत्य को अपने कार्य-सम्पादन करने के लिए करणो की तनिक भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि जब अपने से बाहर यदि कार्य करना अपेक्षित हो तो ही करणों की आवश्यकता है। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए पैरों की, अपने से दूर किसी दूसरे व्यक्ति तक अपनी बात पहुँचाने के लिए वाणी की व अपने से परे रखी पुस्तक को उठाने के लिए हाथों की आवश्यकता पड़ती है। सर्वव्यापक प्रभु में सब समाया है व सब में प्रभु समाया है तो सिद्ध है कि अपने से बाहर उसे कुछ नहीं करना पडता। अत: उसे शरीर, अवयव व इन्द्रियों आदि की आवश्यकता ही नहीं है। सर्वशक्तिमान् होने से वह अपने सभी कार्य स्वयं ही कर लेता है। तुलसीदास ने 'राम चारितमानस' में भी स्वीकार किया है:-

बिनु पग चले, सुनै बिनु काना।
कर बिन कर्म करै विधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी।
वाणी बिनु वक्ता बड योगी॥

यदि ईश्वर सशरीर होगा तो एक देशीय हो जाएगा। एक देशीय ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वकर्त्ता, सर्वशक्तिमान् व सर्वान्तर्यामी न रहेगा जो संसार के निर्माण, सन्चालन व संहारादि के लिए परमावश्यक है। अत: शरीर व इन्द्रियों रहित ईश्वर ही मानना होगा। यही वास्तविकता है। साकार ईश सीमित, जन्म लेने वाला व मरने वाला होगा। सीमित शरीर वाला विस्तृत संसार की रचना व व्यवस्था नहीं कर सकता।

ईश्वर अवतार नहीं ले सकता, नहीं लेता है, न उसे लेने की आवश्यकता ही है।

वेदार्थ न जानने व स्वार्थियों के बहकाने में आकर बहुत से लोग ईश्वर का अवतार लेना भी मानते हैं परन्तु वेद विरुद्ध व सृष्टि के नियमों के विरुद्ध होने से महर्षि ने इसे अस्वीकार कर दिया है। नीचे कुछ वैदिक प्रमाण दिए जाते है:-

स पर्यगाच्छुक्रमकायम्.यजु ०४०/५
अजएकपाद् य० ३४/५३
क्लेशकर्म विपाकाशयैरपरा मृष्टः पुरुष विशेष ईश्वरः। योग १/२४
अपाद्शीर्षा .... ऋ. ४/१/११
अपादेति पद्वतीनाम् ऋ. १/१५२/३
शं नो अज एकं पादेवः
ऋ. ७/३५/१३

गीता का निम्नश्लोक ऐसा है जो प्राय: अवतारवादी अपने पक्ष में प्रमाण रूप में प्रस्तुत करते है:-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यम्॥ -गीता ४/७

महर्षि ने इसे वेद विरूद्ध होने के कारण से अस्वीकार कर दिया है। महर्षि ने यह स्पष्ट किया है कि चौबीस अवतारों वाली बात कोरी कल्पना, अप्रामाणिक, अनावश्यक व सृष्टि नियमों के विपरीत है। सर्वशक्तिमान् होने से सभी अपने कार्य ईश्वर जब स्वयं कर लेता है व कर रहा है तो उसे अवतार लेने की आवश्यकता ही क्या है? सर्वव्यापक होनें के कारण से ईश्वर सर्वत्र विद्यमान् है ही तो उसके लिए यह कल्पना करना कि वह एक स्थान पर उतरता है-(जो अवतार का शब्दिक अर्थ है) ईश्वर के साथ अन्याय है। पिता के वीर्य व मां के गर्भ में सर्वव्यापक ईश्वर सीमित कैसे हो सकेगा?

एक प्रश्न इस सम्बन्ध में प्राय: अवतारवादी पूछते हैं कि संसार के पापियों का संहार करने के लिए यदि ईश्वर अवतार नहीं लेगा तो भक्तजनों का उद्धार कोन करेगा? महर्षि ने भक्तजनों (=ईश्वर अनुसार आचरण करने वालों) को आश्वस्त किया है कि ऐसे लोगों का उद्धार करने का पूरा सामर्थ्य ईश्वर में है। ईश्वर सूर्य, चन्द, पृथिवी व ऊंचे पर्वत बना सकता है-बिना अवतार धारण किए-उसके लिए रावण, दुर्योधन व कंस आदि दुष्टों को मारना कौन-सा बड़ा कर्म है? वह ईश्वर पापियों के शरीरों में व्यापक होने से जब चाहे उनका संहार कर सकता है-भयंकर कोई रोग लगाकर, हार्ट अटैक करके, कोई दुर्घटना करके। जो ईश्वर पापियों का नाश करने के लिए अवतार लेता है तो ईश अब क्यों नहीं लेता? सर्वत्र अन्याय, अत्याचार, बलात्कार व चोरी-जारी की घटनाएँ चरम सीमा पर हैं। वास्तविकता यह हैं कि अवतार लेने का विचार विचारहीनता का परिचायक है। निष्क्रियता की ओर ले जाने वाली अवतारवाद की विचारधारा ने संसार की अत्यंत हानि की है। पापियों का नाश जिन लोगों द्वारा होता है, हुआ है व होगा, वे वीर, विद्वान, बलवान्, परोपकारी व बलिदानी महापुरुष होते हैं, न कि अवतार होते हैं। यदि महापुरुषों को अवतार मान लेंगे तो हमारी ही हानि होगी (व हो रही है)। हम यह मान बैठेंगे कि दुष्टों का संहार करना ईश्वर के कार्य हैं व उसी का सामर्थ्य है, हमारे वश में यह कार्य नहीं है। न ईश्वर अवतार लेगा, न वह ले सकता है। परीणामत: अत्याचारियों के अत्याचारों को कोई रोकेगा नहीं व, भय, अपमान, अभाव, अन्याय, अधर्म व अनाचार का साम्राज्य होगा। जीवन मृत्यु व अधर्म का ही दूसरा नाम बनकर रह जाएगा। न कोई व्यवस्था रहेगी, न कोई नियम होगा। अवतारवाद की मान्यता वस्तुतः विशुद्ध काल्पनिक, तर्कहीन, शास्त्रविरुद्ध, व हानिकारक है।

ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता।

हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि जिन अपराधियों को माता-पिता, समाज व राजा द्वारा दण्ड नहीं दिया जाता, वे अपराधी निर्भय होकर कालान्तर में बड़े अपराधी बन जाते हैं। ऐसे माता-पिता, समाज व राजा को न्यायकारी नहीं कहा-माना जाता। न्याय नष्ट होने से परिवार व समाज में अव्यवस्था व अराजकता फैलती है। दण्ड के भय से मनुष्य अपराध करने से भयभीत होते हैं। यही स्थिति ईश्वर की है। वह पाप क्षमा करदे तो न्याय ही नष्ट हो जाएगा व क्षमा मिलने की बात सुनकर सभी पापी निर्भय व उत्साही हो जाएंगे। पाप क्षमा करने का कोई वैदिक प्रमाण भी उपलब्ध नहीं है। इसके विपरीत, मनुस्मृति में यह लिखा है कि अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। तात्पर्य यह है कि किए हुए शुभ-अशुभ, पुण्य-पाप व धर्म-अधर्म के सभी कर्मों का फल हमें भोगना पड़ेगा ही। (क्रमशः)

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुर, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष: 292926

रजि. नं. एल. पी. 26281/74

ऋग्वेद | कृण्वन्तो विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

(3 प्रतियां)
2277. श्री पुस्तकाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–[illegible] अंक : 30 सृष्टि संवत 1960853102, 17 से 24 फरवरी 2002 दयानन्दाब्द 178

वैदिक राष्ट्र

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥ यजुर्वेद 20/25

परम पिता परमात्मा सर्वज्ञ अर्थात् सर्वज्ञानमय, सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण है, तभी तो सर्वांग सुन्दर अपनी शाश्वत प्रजाओं, जीवात्माओं की सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति और उनके समग्र विकास के साधनों से युक्त यह सृष्टि बनाई और न केवल यह ऐसी उत्तम सृष्टि ही बनाई अपितु इसमें रहने और यथोचित व्यवहार करने का आदेश (ज्ञान) भी आदि सृष्टि में ही प्रदान कर दिया। वही ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद के नाम से जाना जाता है। विश्व के सभी प्रबुद्ध जन यह मानते है कि वेद संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है।

वेद में पृथिवी से द्यौलोक पर्यन्त तथा परमाणु से लेकर सम्पूर्ण विश्व जगत पर्यन्त समस्त ज्ञान-विज्ञान प्रदाता परमेश्वर ने राष्ट्रीय परिकल्पना तथा उसके व्यवहारों का वर्णन-विवेचन तो प्रदान किया ही है, उत्तम राष्ट्र कौन हो सकता है? यह संकेत भी कर दिया है। उस परमात्मा द्वारा निरूपित राष्ट्र को ही वैदिक राष्ट्र कहा जा सकता है।

लेख के प्रारम्भ में जो मन्त्र दिया गया है, वह इसी विषय की चर्चा को प्रदर्शित करता है। राष्ट्र वादियों और राष्ट्र-भक्तों के लिये इस मन्त्र में स्पष्ट दिशा-निर्देश है। आगे की पंक्तियों में हम इसी विषय पर विचार करेंगे।

राष्ट्र-कार्य सम्पादनार्थ राष्ट्र-नायकों में समुचित ज्ञान का होना परमावश्यक है। बिना जाने, ज्ञान के अभाव से साधारण कार्य भी सम्पादन और सम्पन्न नहीं होता तो करोड़ो की जनसंख्या वाले राष्ट्र का कार्य सम्पादन करना तथा उसे पूर्ण करना किस प्रकार सम्भव हो सकता है? लाखों करोड़ों मनुष्यों की विविध समस्याओं को फूँक मारते कहो अथवा चलते फिरते सुलझाया नहीं जा सकता। इसके लिये तो बृहन्मस्तिष्क, महान बुद्धि रखने वाले विचारकों की आवश्यकता होती है। ऐसे विचारक ही राष्ट्र-संचालन तथा राष्ट्र के कार्य सम्पादन की विधि-व्यवस्था के निर्माता होते हैं। यह कार्य सामान्य मस्तिष्क के लोगों द्वारा सम्पादित नहीं हो सकता। विधि-व्यवस्था का निर्माण करने में यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि किस परिस्थिति में किस प्रकार की उलझन-बाधा उपस्थित हो सकती है तो फिर उसका निराकरण किस प्रकार से करना होगा? इस प्रकार, इस ज्ञान के बिना राष्ट्र के लिये विधि-व्यवस्था अर्थात् संविधान का निर्माण नहीं किया जा सकता। यह महद् कार्य तो ऋषिकोटि के व्यक्तियों द्वारा ही सम्भव है। इसके लिये जिन ऋषियों की आवश्यकता है, वह नाम धारी ऋषि नहीं अपितु वैदिक ज्ञान सम्पन्न ऋषि होने चाहिये।

ऋषितुल्य, ऋषि मेधा सम्पन्न [illegible] के निर्माण को सम्पादन कर प्रचारित और प्रसारित किया जाना आवश्यक तो है किन्तु परमात्मा की इस विविधताओं और विचित्रताओं से भरी हुई सृष्टि में मानव-स्वभाव और मानव-मस्तिष्क भी तो विविध प्रकार के होते है, फिर इस विविधताओं से भरी सृष्टि में अनेकानेक आकर्षण भी तो हैं, जिनमें मानव बहक कर उचित-अनुचित का विचार भी नहीं कर पाता। कर पाने भी तो भी सृष्टि की विविधताओं के आकर्षणों में दिग्-भ्रमित होकर और प्रलोभनों मे फस कर तृष्णा कामनाओं और वासनाओ के वशीभूत अन्धा होकर अकर्तव्य-न किये जाने योग्य दुष्कर्मों को भी कर बैठता है। ऐसे कर्म कर बैठता है, जिनसे दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन होता है। ऐसे व्यक्ति ऋषि-बुद्धि और उपदेशों की चिन्ता नहीं करते अपितु अनेक अवसरों पर तो पूरी-पूरी उच्छृंखलता का प्रदर्शन करते और उद्दण्डता पर उतर आते हैं।

सीमा का उल्लघन करने तथा उद्दण्डता पर उतर आने वालों के लिये दण्ड-विधान होता है, परन्तु उस दण्ड-विधान को लागू करने के लिये शासन-शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। वही शासन-शक्ति होती है दण्ड देने और दिलाने वाली, जिसे पुलिस, सेना तथा दण्डाधिकारियों के नाम से पुकारा जाता है, वही क्षत्रिय वर्ग है।

राष्ट्र की दो प्रबल और सर्वोच्च शक्ति कहो या तत्व-वह दो ही होते हैं-ब्राह्मण और क्षत्रिय, वेद के शब्दों में ब्रह्म और क्षत्र। इन दोनों का होना तो राष्ट्र में अत्यावश्यक है ही, परन्तु साथ ही इन दोनो में सन्तुलन का होना भी परमावश्यक है।

इन्हीं दोनों के लिये उपर्युक्त मन्त्र में कहा गया है 'यत्र ब्रह्म च क्षत्र' जहां ब्रह्म और क्षत्र, ब्रह्म शक्ति और क्षत्र-शक्ति दोनों 'सम्यन्चं' ठीक प्रकार से 'चरतः सह' सहयोग पूर्वक गति करती, कार्य करती है-वही लोक, वही देश, 'तम्-लोकम्' पवित्र, उत्तम समझा जाता, जाना जाता है 'पुण्य-प्रज्ञेषम्'।

किसी देश, किसी राष्ट्र को पुण्य (पवित्र) देश बनाना है तो यह आवश्यक है कि उस राष्ट्र मे ब्रह्मशक्ति, नेतृवर्ग तथा शासन-शक्ति अर्थात् प्रशासन मे पूरा-पूरा सहयोग हो। यदि नेतृवर्ग, विधि-व्यवस्था का निर्माण करने प्रणयन करने वाले तथा प्रसारक जनो और प्रशासनिक अधिकारियों में ठीक-ठीक तालमेल नहीं होगा तो राष्ट्र उन्नति तो क्या करेगा। अपनी बनी बनायी व्यवस्था की पवित्रता भी स्थिर और सुरक्षित नहीं रख सकता। इन दोनों का पारस्परिक तालमेल होना न केवल आवश्यक है अपितु परम आवश्यक है।

विधान उत्तम हो, दण्ड-व्यवस्था की जो संहिता हो, वह न केवल ठीक ही हो अपितु देवोचित हो किन्तु यदि उसे लागू करने वाला प्रशासन भ्रष्ट हो तो राष्ट्र का विनाश शीघ्र ही सुनिश्चित है, अवश्यम्भावी है, उसे, उसके विनाश से संसार की कोई भी शक्ति पतन से बचा नहीं सकती।

विधायिका, नेतृवर्ग, ब्रह्मशक्ति और शासन तन्त्र में सन्तुलन के बिना राष्ट्र की स्थिति न तो सुदृढ़ ही हो सकती है और न सुरक्षित रह सकती है। यही कारण है कि वेद ने निर्देश कर दिया है कि दोनों 'सम्यन्चौ' भलीभांति 'सह' साथ-साथ सहयोग पूर्वक सन्तुलित रूपेण अपने-अपने दायित्वों का पालन 'चरत' करते रहें।

विधायिका व्यवस्था बनाये और प्रशासन-तन्त्र को लागू करने के लिये प्रेषित कर दे किन्तु प्रशासन-तन्त्र ढीला हो, समयानुसार विधायिका द्वारा निर्देशित व्यवस्था को लागू न करे अथवा प्रशासन तन्त्र में अयोग्य लोग बैठे हुए हों तो किसी भी उत्तम से उत्तम विधि व्यवस्था से तथा किसी उत्तमोत्तम योजना के भी उत्तम परिणाम सामने नहीं आ सकते। वेद का दोनो को ठीक कार्य करने की नहीं अपितु सहकारितापूर्वक कार्य करने का स्पष्ट निर्देश है। सहकारिता सन्तुलन बनाये रखने का तत्व है। (क्रमशः)

सभा का साधारण व असाधारण अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अंतरग सभा दिनाक 17-2 2002 मे सर्वसम्मति से निश्चित किया गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का साधारण व असाधारण अधिवेशन 24 मार्च 2002 रविवार को प्रात 11 30 बजे सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर में होगा। सभी प्रतिनिधियो को इसका एजेण्डा भेज दिया गया है। –स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

आर्य समाज की उपलब्धियां

□ले० डा. अशोक आर्य, कुटिया 116 मित्र विहार मंडी डबवाली (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज को यदि सुधार कल्पतरु कहा जाए तो अयथार्थ न होगा, क्योंकि जिस समय इस संस्था ने जन्म लिया तब देश न केवल अग्रेजो की राजनीतिक दासता के शिकन्जो मे ही जकड़ा हुआ था, अपितु इसकी समाज व्यवस्था अस्त-व्यस्त तो क्या पूर्णतया नष्ट ही हो चुकी थी। इसका स्थानापन्न बन रहीं थी रूढ़िया और कुरीतिया। इस राष्ट्र की राष्ट्रीयता अर्थात् वेद धर्म तो मानो पूर्णतया ही लुप्त हो चुका था। इतना ही नहीं हमारे धर्मग्रन्थों के नाम पर मनमाने ढग से विभिन्न ग्रन्थों की रचना की जा रही थी। अत: आओ हम महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से पूर्व की एक-एक विकृति को क्रमश: सामने लाते हुए आर्य समाज की स्थापना के पश्चात् उसका परिवर्तित रूप देखें। इसके पश्चात् हम बड़ी सरलता से यह निर्णय ले सकेंगे कि जो कुछ महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ने किया है वह वास्तव मे यथार्थ है अथवा अयथार्थ, ग्राह्य भी है अथवा नहीं। इसके साथ ही साथ महर्षि दयानन्द व आर्य समाज द्वारा निर्देशित मन्तव्यों को भी एतदर्थ समझना आवश्यक है, जो कि इस प्रकार है:-

1. त्रैतवाद:-आर्य समाज तीन सत्ताओ को अनादि मानता है:-

क) ईश्वर-सर्वप्रथम ईश्वर की सत्ता को अनादि सत्ता के रूप में अगीकार किया गया है। इसके अनुसार सृष्टि की रचना हो अथवा प्रलय की अवस्था हो, ईश्वर की सत्ता सदैव एक सी ही रहती है। ईश्वर का स्वरूप आर्य समाज के दूसरे नियम में वर्णित है। यह नियम हर कंकर के शंकर बनने का पर्दाफाश करते हुए यूं कहता है: "ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि कर्ता है। उसी की ही उपासना करनी योग्य है।" इससे मूर्तिपूजक भी यह स्वीकार करने लगे कि ईश्वर निर्विकार ही है।

ख) जीव-इसके विषय में वेद में आदेश है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है किन्तु फल भोगने के लिए ईश्वर द्वारा बनाई गई व्यवस्था के पराधीन है। इसके पूर्व प्राय: यह मान्यता थी कि जीव परमात्मा का ही अंग है, इसलिए वह जो कुछ भी करता है, उसके लिए वह उत्तरदायी नहीं है, क्योंकि वह जो कुछ भी करता है ईश्वर का अंग होने के कारण उसकी इच्छा से ही करता है।

ग) प्रकृति-इसकी तीन अवस्थाएं होती हैं। महा-प्रलय की समाप्ति पर सृष्टि का बनना आरम्भ होता है! इस अवस्था को कृति कहते है। संसार की तीनों अवस्थाएं ही इसमें विद्यमान हैं। प्रकृति को अद्वैतवादी लोग 'माया' कहते हैं।

बस यही आर्यो का त्रैतवाद है, किन्तु विश्व का कोई भी कार्य इस त्रैतवाद के सिद्धान्त के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता। प्रत्येक कार्य के लिए, कार्य, कारण और कर्त्ता का होना आवश्यक है, इसी से त्रैतवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन होता है।

2. वेदज्ञान अपौरुषीय:-वेदों का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मानव मात्र के लिए दिया, जिसे बाद में चार ऋषियों ने लिपिबद्ध करके ग्रन्थों के रूप में परिणित किया। उसके अनुसार समूची सृष्टि का निर्माण एक ही समय हुआ। इस प्रकार विकासवाद का सिद्धान्त वैदिक सिद्धान्तों के अनुरूप नहीं है। आज विदेशों में भी इस सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए विकासवादियों का विरोध किया जा रहा हैं। इसके अतिरिक्त वैदिक शिक्षा सार्वभौम होने के कारण सर्वत्र एवं सदैव एक सी ही रहती है। यह विभिन्नकालों में, विभिन्न स्थानों पर एवं विभिन्न दृष्टिकोणों में भी सदैव एक सी ही रहती है।

आर्य समाज के मन्तव्यों में सदा सत्य बोलना, बड़ों की आज्ञा का पालन करना, गौ आदि पशुओं की रक्षा करना, मांस-मदिरा आदि का सेवन न करना आदि वर्णित हैं। यह तो हैं संक्षिप्त रूप में महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के मन्तव्य। अब मैं ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से पूर्व की एक-एक परिस्थिति को क्रमश: लेता हूँ और वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर ऋषि दयानन्द और आर्य समाज ने उसके निराकरण के लिए जो कार्य किए उनका उस पर क्या प्रभाव रहा, अर्थात् आईए, अब हम आर्य समाज की उपलब्धियों से परिचय प्राप्त करें।

1) नारी के अधिकार:- मनुस्मृति में एक स्थान पर आता है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता', किन्तु महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज की स्थापना से पूर्व भारतीय नारी की अवस्था अत्यन्त हीन हो चुकी थी। इसे घर की दासी, पर्दे की रानी, पांव की जूती, ताड़ना की अधिकारी आदि अनेकों निकृष्टतम पर्यायवाची शब्दों से अंलकृत किया जाता हैं। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ने इसके विरूद्ध क्रान्तिकारी पग उठाए और नारी को इस कुटिलता पूर्ण विशेषणों से निकाल बाहर करने के लिए भीषण शंखनाद किया। इसका यह परिणाम हुआ कि आज स्त्री को न केवल साधारण शिक्षा ही, अपितु वेदादि ग्रन्थों तक की, जैसा कि प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित है, शिक्षा प्राप्ति के अधिकार प्राप्त हैं। भारतीय नारी पर्दे की औट से निकल कर समाज के बड़े-बड़े महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो चुकी है। यहां तक की नारी को आज इतना सम्मान प्राप्त है कि आज किसी भी उत्सवादि के लिए आमन्त्रित करना हो, श्रीमती जी के लिए विशेष रूप से स्थान दिया जाता है।

2) दलितोद्धार:-महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के आविर्भाव से पूर्व अवस्था अति शोचनीय थी। उन्हें कुंओं पर चढ़ने का, 'घुड़' सवारी करने का, जूते पहनने का आदि इसी प्रकार के मानवीय अधिकार भी प्राप्त न थे, अन्य प्रमुख अधिकारों की तो बात ही क्या? यही कारण था कि भारत को सदियों पर्यन्त पराधीनता की बेड़ियां पहननी पड़ी। यही वह कारण था कि हमारे अपने ही हमारे शत्रु बन गये, 'काला पहाड़' आदि अनेकों नामों से हमारा अन्त करने को तत्पर हो उठे, किन्तु आर्य समाज ने उन्हें भीषण संघर्षमय जीवन से निकालते हुए यह घोषणा की कि हम सभी भाई हैं, कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं। यदि दलित भी वेद पढ़ें तो कर्म के कारण ब्राह्मण ही कहलाने लगेंगे, ऐसा उन्हें पूर्ण अधिकार होगा। इस प्रकार वर्णाश्रम व्यवस्था को पुन: प्रतिष्ठित करने का ऋषि दयानन्द और आर्य समाज ने प्रयास किया। सभी दलित आर्य हो गए और अपने नाम के साथ आर्य शब्द प्रयुक्त करने लगे, किन्तु स्वतंत्र भारत में उन्हें विशेष सुविधाएं अलग से दी गई, उस लालच से उन्हें पुन: दलित होने पर बाध्य होना पड़ा। तो भी आज दलितों और स्वर्णो का सामन्जस्य होता निरन्तर दिखाई दे रहा है। अन्यथा यह रोग तो पूर्णतया नष्ट प्राय: हो ही चुका था।

3) प्राचीन संस्कृति-इसके नाम से विदेशी लोग जो झूठे ग्रन्थों की रचना कर रहे थे, महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ने उन पर साहित्यक ढंग से और अपनी व्याख्यान माला के द्वारा ताबड़-तोड़ आक्रमण करते हुए उनके झूठ के पोलों का पर्दा जन-साधारण के सम्मुख खोल दिया। इस प्रकार भारतीयों में जागृति लाकर उन्हें विदेशियों के इस कुचक्र से बचाया।

4. भारतीय भाषा:-जब जातीय भाषा अर्थात् हिन्दी को फैशन के विरुद्ध मानने लगे थे, अंग्रेजी और उर्दू का प्रसार हो रहा था। हिन्दी गन्दी भाषा कहलाने लगी थी, इसे सड़ी-गली भाषा कहकर अपमानित किया जाता था, ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के अथक प्रयास से हिन्दी के लिए किए गये तप, और त्याग युक्त परिश्रम ने इसे पुन: समृद्ध किया। इसी के कारण ही आज हिन्दी को अनेकों साहित्यकार प्राप्त हुए हैं, जिनके कारण हिन्दी को पुन: गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हो सका है। प्रसिद्ध कहानीकार श्री सुदर्शन जी, उपन्यासकार मुन्शी प्रेमचन्द, महान् कवि व नाटककार जयशंकर प्रसाद, आचार्य द्विवेदी जी, सुमित्रानन्दन पन्त, सेठ गोविन्द दास आदि ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के कर्तृत्व से इतने प्रभावित हुए कि प्रो. क्षेमचन्द्र सुमन जी के अनुसार "इन्होंने इसी समाज की ही प्रेरणा के कारण अपने साहित्य को रचनात्मक क्षेत्र की ओर मोड़ दिया।" गोदान की एक-एक पंक्ति ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के मन्तव्यों और सिद्धान्तों का प्रतिपादन करती हुई स्पष्ट दिखाई दे रही है। मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में भारतीय वैभव भी ऋषि दयानन्द की धरोहर से ही प्राप्त हुआ दिखाई देता है। यशपाल, आचार्य चतुरसेन, पं. गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे हिन्दी साहित्य की महान् धरोहर आर्य समाज द्वारा ही प्राप्त हुए हैं। आर्य समाज द्वारा त्यागपूर्ण सेवाओं के फलस्वरूप ही हिन्दी को भारतीय संविधान सभा ने राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार किया है। अब हिन्दी विश्व भाषा की ओर अग्रसर हो रही है। युनेस्को ने अपनी स्थापना के साथ ही इसे विश्व की तृतीय भाषा के रूप में स्वीकार किया है। आज विश्व के अनेक देशों में इसे पढ़ने वालों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन,

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय.....

सभा की वास्तविक स्थिति

जैसा कि सभी आर्य बन्धुओं को पता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का साधारण अधिवेशन 17-12-2000 को सभा कार्यालय में हुआ था उसमें सर्वसम्मति से श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा को सभा का प्रधान चुना गया था और शेष पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्य आदि मनोनीत करने का उन्हें पूर्ण अधिकार दिया गया था। जैसा कि सभी को पता है कि इससे पूर्व श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट भू.पू. सभा महामन्त्री ने सभा में कई प्रकार की धांधलियां व अनियमित्ताएं की हुई थी। उसने सभा को अपनी जागीर बना लिया था । पंजाब में आर्य समाज का प्रचार व प्रसार ठप्प होकर रह गया था। हमारे स्कूल एवं कालेज अश्विनी कुमार शर्मा की धांधलियों का पूर्ण रूप से शिकार बन चुके थे। यदि सभा कोई प्रचार व प्रसार की योजना भी बनाती तो यह अश्विनी कुमार शर्मा उसे तार-पीड़ो करने में एड़ी-चोटी का जोर लगा देता था। इस प्रकार के वातावरण से दु:खी होकर वास्तवकि आर्य बन्धु पीछे हट कर बैठ गए थे और इसमें केवल एक मात्र आशा की किरण सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल शर्मा ही थे।

आर्य जगत को यह आशा थी कि नए अधिकारीगण सभा के कार्य को सुचारू रूप से चलाएंगे तथा आर्य समाज का प्रचार व प्रसार अब बहुत तेजी से बढ़ेगा परन्तु दुर्भाग्यवश भूल से सभा में कुछ ऐसे अधिकारीगण ले लिए गए थे जिनको आर्य समाज से ज्यादा अपना नीजि स्वार्थ ही प्यारा था। उनकी इस रीति-नीति ने उनका वास्तविक चेहरा जल्दी ही आर्य जनों के सामने ला दिया। इन लोगों ने लुधियाना की शिक्षण संस्थाओं को अपने नीजी स्वार्थ के लिए प्रयोग करते हुए उसका राजनीतिकरण करने का प्रयास किया। आर्य कालेज लुधियाना सभा की प्रसिद्ध व प्रमुख संस्था है परन्तु इन लोगां के घिनोने कृत्यों ने इस संस्था की शिक्षा जगत में छवि को गहरा आघात पहुंचाया है इसीलिए सारे आर्य जगत व शिक्षा जगत में इसकी भर्त्सना हो रही है।

इस सारी वस्तुस्थिति को देखते हुए सभा प्रधान श्री पं, हरबंस लाल जी ने अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए कुछ प्रभावी कदम उठाए हैं जिनकी सम्पुष्टि सभा की 17-2-2002 की अन्तरंग सभा ने कर दी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए है—

गत दिनों श्री पंडित हरबंस लाल जी शर्मा ने श्री सुरेन्द्र नाथ मुरगई को सभा व आर्य समाज को हानि पहुंचाने वाले कार्य करने के आरोप व सभा विरोधी गतिविधियों के कारण व उनके आदेशों की अवहेलना करने के कारण उनको सभा से निष्कासित कर दिया था और प्रिंसीपल श्री स्वतन्त्र कुमार जी पठानकोट को सभा का महामन्त्री नियुक्त किया था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की 17-2-2002 की अन्तरंग सभा ने सभा प्रधान जी के इस आदेश की सम्पुष्टि कर दी। इसी प्रकार डा. के.के. पसरीचा को उनकी सभा विरोधी गतिविधियों के कारण व सभा प्रधान जी के आदेशों के विरुद्ध शिक्षा संस्थाओं आदि को सभा के संविधान के विरुद्ध आदेश देने के कारण उनको सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पद से हटा दिया था और श्री सुदर्शन कुमार शर्मा को सभा का वरिष्ठ उप प्रधान नियुक्त कर दिया था। अन्तरग सभा दिनांक 17-2-2002 ने सभा प्रधान जी के इस आदेश की भी सम्पुष्टि कर दी। इससे पूर्व 30-9-2001 की अन्तरंग सभा में यह सर्वसम्मति से निश्चय हो चुका है कि सभा के संविधान में कार्यकर्त्ता प्रधान का कोई प्रावधान न होने के कारण डा के.के. पसरीचा सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान नहीं रह सकते। यह बात डा पसरीचा ने इस अन्तरंग सभा में स्वयं भी स्वीकार की थी परन्तु इसके बावजूद भी वह अनाधिकार चेष्टा करते हुए व संविधान के विरुद्ध कार्य करते हुए 30 9.2001 के पश्चात् भी अपने आप को कार्यकर्त्ता प्रधान लिख कर सभा को हानि पहुंचाने की चेष्टा करते रहें।

सभा की गत अन्तरंग सभा दिनांक 30.9.2001 में सर्वसम्मति से यह भी पारित हो गया था कि सभा के विरुद्ध व सभा प्रधान श्री पंडित हरबंस लाल जी शर्मा, मन्त्री श्रीमती राजेश शर्मा, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा के ऊपर लुधियाना की एक अदालत में एक झूठा व बेबुनियाद इस्तगासा (केस) करने के कारण संविधान की धारा 8 (च) के अनुसार श्री नवदीप भारद्वाज, श्री ओ.पी. टंडन, श्री सर्वजीत शर्मा स्वयं ही आर्य समाज की सभासदी व सभा की सदस्यता खो बैठे हैं। इस प्रकार यह तीनों स्वत: ही सभा से निष्कासित हो चुके हैं और इनका अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से कोई सम्बन्ध नहीं है।

इसी प्रकार श्री हरबंस लाल जी सेठी लुधियाना को सभा प्रधान जी के आदेशों की उलंघना करने तथा आर्य कालेज लुधियाना जो कि सभा की प्रमुख शिक्षा संस्था है में भारी मात्रा में अनियमित्ताएं करने के आरोप में सभा के उपप्रधान पद से निष्कासित कर दिया था। 17-2-2002 की अन्तरंग सभा ने सभा प्रधान जी के इस आदेश की भी सम्पुष्टि कर दी है।

18.2.2002 से श्री सुदर्शन कुमार शर्मा ने सभा के वरिष्ठ उप प्रधान और प्रिंसीपल स्वतन्त्र कुमार जी ने सभा महामन्त्री का पद व कार्यभार विधिवत रूप से संभाल लिया है। आशा है अब सभा का कार्य सुचारू रूप से चलेगा

श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने गत दिनों अपनी तथाकथित सभा भग कर दी थी और सभा प्रधान श्री पंडित हरबंस लाल जी शर्मा के साथ मिल कर सभा का कार्य क .ने की घोषणा कर दी थी। अब उन्होने विधिवत रूप से उन सभी आर्य समाजों की सूची उनके पत्रों सहित सभा कार्यालय में दी थी और सभा प्रधान जी से प्रार्थना की थी कि इन सभी आर्य समाजो के प्रतिनिधि पुन: सभा में ले लिये जायें। 17-2-2002 की अन्तरंग सभा मे जालन्धर की 16 आर्य समाजों तथा लुधियाना व पंजाब की कई दूसरी आर्य समाजों की सूची पढ़ कर सुनाई गई जिन्होंने सभा के साथ मिल कर कार्य करने का आश्वासन सभा प्रधान जी को दिया है। अन्तरग सभा ने इसकी भी सम्पुष्टि कर दी है और इस बात पर हर्ष प्रकट किया है कि इससे जब आगे सभा का संगठन और मजबूत होगा और सभा उन्नति करेगी। इस बैठक मे यह भी निश्चय हुआ कि सभा व आर्य समाज का हित चाहने वाले लोगो को सभा के साथ जोड़ लिया जाए और सभा के हितो के विरुद्ध कार्य करने वाले व सभा को हानि पहुंचाने वाले लोगों के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्यवाही की जाए।

सभा मन्त्री श्रीमती राजेश शर्मा के विरुद्ध लुधियाना में जो झूठा बे-बुनियाद और तथ्यों से दूर केस किया हुआ था, सीनियर सुपरिटैंडैंट पुलिस लुधियाना द्वारा उसकी पूरी जांच कराने के बाद उसे रद्द कर दिया गया है जिसके लिए सभी ने उन्हें बधाई दी।—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

आर्य समाजें वेद प्रचार की ओर ध्यान दें

गत कुछ समय से पंजाब में वेद प्रचार के कार्य मे कमी आई है ऐसा मैं महसूस करता हू। हमें इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। मेरा सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वह इस ओर विशेष ध्यान दें। सभी आर्य समाजों में साप्ताहिक व दैनिक सत्संग अवश्य होने चाहिएं। प्रत्येक आर्य समाज में प्रतिदिन यज्ञ हो वर्ष में कम से कम एक बार वेद सप्ताह व वार्षिक उत्सव अवश्य रखा जाए। पारिवारिक सत्संगों व सार्वजनिक स्थानों पर सत्सगो का आयोजन किया जाए। यज्ञ करने वालों को प्रोत्साहन दिया जाए। आर्य समाजों के अधिकारी व पुरोहित मिल कर यज्ञ की मुहिम चलाएं।

हम शीघ्र ही इस कार्य के लिए प्रेरित करने के लिए आर्य समाजों के प्रधानो व मन्त्रियों तथा पुरोहितों की एक बैठक सभा कार्यालय में बुला रहे हैं जिसमे वेद प्रचार के तरीकों पर बैठ कर विचार किया जाएगा। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि समाज के दलित वर्ग में आर्य समाज का प्रचार किया जाए। दलित वर्ग आज भी आर्य समाज से दूर ही दिखाई पड़ रहा है। जब कि आज हमारा देश स्वतन्त्र है और स्वतन्त्र भारत में भी हम दलितों को उतना ऊंचा नहीं उठा सके जितना हमें उन्हें उठाना चाहिए। दलित वर्ग के लोगों को भी हमें आर्य समाज के साथ जोड़ना चाहिए। आर्य समाजों में सिलाई स्कूल व डिस्पैंसरियां खोली जाएं इनके माध्यम से भी लोग आर्य समाज के साथ जुड़ेंगे।

हमें अपने स्कूल-कालेजों की ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। आर्य समाज के स्कूल, कालेजों को भी वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। स्कूल-कालेजों के पाठ्यक्रम में धर्म शिक्षा व नैतिक शिक्षा का समावेश किया जाए। अनिवार्य रूप से नैतिक शिक्षा दी जाए इसके लिए आर्य समाज के सिद्धान्तों को जानने वाले अध्यापक आर्य स्कूलों व कालेजों में रखे जाएं। धर्म शिक्षक तो अवश्य ही रखे जाएं ताकि वह बच्चों को धर्म शिक्षा दे सकें।

मैंने पहले भी कहा था कि आर्य स्कूलों व कालेजों का आर्य समाजीकरण किया जाए। प्रत्येक स्कूल व कालेज में यज्ञशाला बनी हो और उसमें कम से कम सप्ताह में एक बार अवश्य ही यज्ञ किया जाए ताकि विद्यार्थियों को यज्ञ के सम्बन्ध में पूरी जानकारी हो सके।

इस दिशा में आप जो भी पग उठाएं उसकी जानकारी सभा कार्यालय में भी दें। —स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

आर्य समाज की.....

(पृष्ठ 2 का शेष)

नागपुर, में इसे विश्व भाषा के रूप में मान्यता देने के लिए विश्व के अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने अनुरोध किया।

5) संस्कृत भाषा:-आर्यों की आदि भाषा संस्कृत है। इनके सभी ग्रन्थ मुख्यत: संस्कृत में ही मिलते हैं। इतना ही नहीं हिन्दुओं का कोई भी ग्रन्थ सस्कृत के प्रभाव से अछूता नहीं रह सका। अत: ऋषि दयानन्द और आर्य समाज को संस्कृत साहित्य की देन के विषय में भुलाया नहीं जा सकता। अन्यथा सस्कृत भाषा आज लुप्त ही हो चुकी होती। वास्तव में संस्कृत के ज्ञान के बिना भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अध्ययन किया ही नहीं जा सकता। विश्व हिन्दी सम्मेलन में अनेकों विदेशी प्रतिनिधियों ने भी अपने यही विचार व्यक्त किए कि 'हम भारतीय सस्कृति को जानने के लिए हिन्दी पढ़ते हैं किन्तु भारतीय ग्रन्थों का आधिक्य सस्कृत में होने के कारण हमें संस्कृत का ज्ञानार्जन करना भी आवश्यक हो जाता है।'

6) बाल-विवाह और बहु-विवाह:-ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से पूर्व बाल-विवाह व बहु-विवाह की प्रथा अपने यौवन पर थी। मुस्लिम युगीन भंयकर प्रताड़ना से प्रताड़ित हिन्दू समाज को बाल-विवाह प्रथा के लिए बाधित होना पड़ा, पर्दा करना भी अंगीकार करना पड़ा। यही प्रथाएं बाद में रूढ़ियों के रूप में परिणित हुई। बहु-विवाह भी समाज में एक भयकर विषधर बनकर सामने आया। इससे न केवल जातीय नस्ल का ही ह्रास हुआ, अपितु बाल-विधवाएं भी जीवन पर्यन्त तड़पती मिलती थीं। आर्य समाज की गतिविधियों से ही आज बहु-विवाह की प्रथा राजकीय विधि द्वारा समाप्त हो चुकी है और बाल-विवाह भी आज लगभग समाप्त हो चुका है। दहेजादि की कुपरम्पराओं के विरुद्ध भी आज आर्य समाज द्वारा लड़ाई लड़ी जा रही है।

7) आर्थिक व्यवस्था का ह्रास:-कर्म के प्रति निरादर के कारण भी अर्थ व्यवस्था नष्ट हो रही थी। अनाथ और विधवा समस्या भी जटिलतर हो रही थी। आर्य समाज ने अनाथालयो के माध्यम से इन्हें विधर्मी होने से बचाया और कर्म के प्रति आदर का भाव पैदा किया।

8) विधवा उद्धार:-विधवा समस्या समाज के सर्वनाश का कारण बन रही थीं। दो-दो और चार-चार वर्ष की विधवाएं रोती फिरती थी। आर्य समाज ने जो बाल-विवाह के विरुद्ध और विधवा विवाह के पक्ष में बिगुल बजाया, इसे सुन कर बाल-विवाह बन्द होने से बाल-विधवाएं कम होने लगीं और पुनर्विवाह की प्रथा ने तो इस कोढ़ का समूल नाश ही कर दिया।

9) स्त्री-शिक्षा:-ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से पूर्व स्त्री की अवस्था का वर्णन ऊपर किया जा चुका है। उन्हें शिक्षा प्राप्ति के अधिकार से भी वंचित कर दिया गया था। आर्य समाज ने समाज के विरोध की चिन्ता किए बिना स्त्री-शिक्षा के लिए भीषण नाद निनादित किया। इसी का ही परिणाम है कि आज स्त्री-शिक्षा का समुचित प्रबन्ध है। विवाह सम्बन्ध स्थापित करते समय भी सर्वप्रथम शिक्षा की जानकारी ली जाती है।

10) शुद्धि:-हमारी जातीय त्रुटियों के कारण जो लोग विधर्मी हो गए थे, उन्हें पुन: अपने धर्म में वापिस लौटा लाने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि चक्र चलाया उससे जाति को काफी बल मिला। नए लोगों को धर्म छोड़ने से रोका गया और विधर्मी हुए भाईयों को पुन: आर्यत्व की दीक्षा में दीक्षित किया जाने लगा। इसी दृष्टिकोण को आर्यों ने जीवन का सम्बल मानकर काफी कार्य किया तथा आज भी इस क्षेत्र में कार्य किया जा रहा है। पिछले दिनों आर्य युवक समाज अबोहर तथा आर्य समाज गिदड़बाहा द्वारा की गई शुद्धि भी इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। केरल वैदिक मिशन, हिन्दू शुद्धि सभा द्वारा भी काफी काम हो रहा है।

11) स्वाधीनता का पक्ष:-ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से पूर्व देश पराधीनता की भयंकर सींखचों से बुरी तरह जकड़ा हुआ था। किसी को भी स्वाधीनता पूर्वक विचरण करने का साहस नहीं हो पाता था। महर्षि दयानन्द एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी महामानव थे, जिन्होंने ऐसी विषम परिस्थिति में भी यह सिंहनाद किया कि "अच्छे से अच्छा विदेशी राज्य, एक गन्दे से गन्दे किन्तु स्वदेशी राज्य से भी गन्दा है।" इसी उद्देश्य को ही मध्यदृष्टि रखते हुए ऋषि दयानन्द, उनके गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द एवं उनके गुरू स्वामी पूर्णानन्द जी ने स्वाधीनता संग्राम की बागडोर अपने हाथों में ली और 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के लिए यह त्रिमूर्ति घूम-घूम कर सैनिक छावनियों और रजवाड़ों में वातवरण तैयार करने लगी। इसके पश्चात् भी 'शान्ति तथा क्रान्ति' से स्वाधीनता संग्राम लड़ने वाले अर्थात् गांधीवादी और क्रान्तिकारी दोनों प्रकार के हो स्वाधीनता सेनानियों में 95 प्रतिशत से भी अधिक ऋषि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज से ही प्रेरित थे। अत: इन की इस देन को झुठलाया नहीं जा सकता। शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, अशफाक उल्लाखां, श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, करतार सिंह सराभा, भाई परमानन्द आदि सभी के सभी तथा लाला लाजपत राय, महात्मा मुन्शीराम, स्व. लाल बहादुर शास्त्री, महात्मा गांधी आदि या तो सीधे ही आर्य समाजी थे या फिर इनको आर्य समाज से बल मिला था। इस प्रकार यह आन्दोलन ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की ही देन था।

अमृतसर में गुरू के बाग के मोर्चे की विजय भी आर्य समाज के कारण ही हुई, क्योंकि जब यह आन्दोलन असफल होता दिखाई दिया तो इसकी बागडोर आर्य समाजी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने अपने हाथों में लेकर मोर्चे को सफल करने का श्रेय प्राप्त किया। इसी कारण ही अमृतसर के गुरुद्वारे में स्वामी जी का चित्र लगाया गया, किन्तु अकालियों ने अपनी धर्मान्धता के कारण उनका चित्र हटवा दिया। तो भी ऐतिहासिक तथ्यों को झुठला पाना उनके लिए भी सम्भव न हो सका। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह को कोई भुला ही नहीं सकता। सिन्ध में सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन अपने प्रकार का अद्वितीय आन्दोलन था। मलेरकोटला में सनातनी मन्दिर की रक्षा के लिए स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का पहुंचना, बिड़ला मन्दिर की रक्षा में भी आर्य समाज के सहयोग को कोई नहीं भुला सकेगा। काश्मीर के भारत में विलय का कारण भी वहीं के एक आर्य नेता श्री मेहर चन्द्र जी महाजन थे। गांधी जी के नाम के साथ महात्मा लगने का कारण भी स्वामी श्रद्धानन्द जी अर्थात् आर्य समाज ही था, अन्यथा आज गांधी को महात्मा के रूप में कोई न जानता।

12) गुरुकुल शिक्षा पद्धति की पुनरुद्धार तथा डी. ए. वी. संस्थाओं के माध्यम से एक मिश्रित शिक्षा पद्धति भी आर्य समाज की एक महत्वपूर्ण तथा अनूठी देन है।

13) श्राद्ध-तर्पण आदि के विरोध द्वारा भी आर्य समाज अन्धविश्वासी जनता के भ्रम का निराकरण करने में काफी सहयोगी सिद्ध हुआ है। सभी समझने लगे हैं कि श्राद्ध के नाम पर जीवित माता-पिता की ही सेवा करनी चाहिए।

14) शराब, मांस आदि अभक्ष्य पदार्थों के सेवन का विरोध करते हुए, उसके प्रयोग से होने वाली हानियां भी विश्व मंच पर उभर रही हैं।

15) गौ-रक्षा का अभियान तो आर्य समाज का एक महत्वपूर्ण अभियान है। इसके लिए पराधीन युग में भी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हस्ताक्षर अभियान चलाया था और लाखों की संख्या में हस्ताक्षर भी करवाए थे।

16) आर्य समाज ने लोगों को अपनी प्राचीन गौरव-गरिमा का स्मरण दिलाया। सांस्कृतिक सम्पदा से परिचय कराया। जाति में आत्मविश्वास पैदा किया। स्वदेशी प्रयोग का उपदेश दिया। संगठित शक्ति का महत्व और प्रजातन्त्र पद्धति पर संगठन को शिक्षा दी।

17) सुराज्य ही स्वराज्य का विकल्प नहीं, इसका उद्घोष सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द और आर्य समाज ने ही किया।

18) सभी क्षेत्रों के लोगों के लिए प्रचुर मात्रा में साहित्यिक सामग्री प्रदान की।

19) आर्य समाज ने इतने शहीदों और देश भक्तों को जन्म दिया कि इनका एक तांता सा ही लग गया। आर्य समाज के अतिरिक्त विश्व इतिहास में इतनी संख्या में शहीद पैदा करने वाली और किसी जाति का नाम ही नहीं मिलता। इसके जीवित शहीदों की भी गिनती कर पाना असम्भव सा ही है। यह आज आर्य समाज के संगठन की स्पर्धा का एक विषय बना हुआ है।

20) भ्रमवश आर्य समाज को अनेकों राजकीय व अराजकीय परीक्षाओं में से गुजरना पड़ा। इसकी नींव सत्य पर आधारित है। अत: सभी में विजयी रहा। पटियाला का केस, हैदराबाद का धर्म युद्ध, सिन्ध का सत्यार्थ-प्रकाश सत्याग्रह, मलेरकोटले का आन्दोलन आदि इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं।

21) देश पर अनेक बार कई प्रकार की आपदाएं आई। इन आपदाओं के समय आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने तन-मन-धन से सेवा की। पिछले दिनों उड़ीसा में आए भीषणतम तूफान व गुजरात में आए भूकम्प के अवसर पर आर्य समाज, आर्य वीर दल व वैदिक सेवाश्रम के कार्यकर्ताओं ने दिन रात एक कर पीड़ितों की न केवल भोजन, वस्त्र, बिस्तरों व औषधियों से ही सेवा की अपितु गले-सड़े दुर्गन्ध मारते शवों को भी ठिकाने लगाया। ऐसे सेवा कार्यों में मेरा बेटा अरुणेश आर्य भी सम्मिलित था।

मानसा में मकर संक्रान्ति का पर्व मनाया गया

14-1-02 को आर्य समाज मन्दिर मानसा में मकर संक्रान्ति का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 9 बजे हवन यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ के उपरान्त प्रवचन एवं भजन हुए। इस अवसर पर आर्य समाज के सभी सदस्य एवम् आर्य हाई स्कूल के अध्यापक एवम् विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस आर्य समाज में सभी पर्व मनाये जाते हैं।

—कृष्ण कुमार, मन्त्री

सम्पादकीय.....

सभा की वास्तविक स्थिति

जैसा कि सभी आर्य बन्धुओं को पता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का साधारण अधिवेशन 17-12-2000 को सभा कार्यालय में हुआ था उसमें सर्वसम्मति से श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा को सभा का प्रधान चुना गया था और शेष पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्य आदि मनोनीत करने का उन्हें पूर्ण अधिकार दिया गया था। जैसा कि सभी को पता है कि इससे पूर्व श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट भू.पू. सभा महामन्त्री ने सभा में कई प्रकार की धांधलियां व अनियमिताएं की हुई थी। उसने सभा को अपनी जागीर बना लिया था। पंजाब में आर्य समाज का प्रचार व प्रसार ठप्प होकर रह गया था। हमारे स्कूल एवं कालेज अश्विनी कुमार शर्मा की धांधलियों का पूर्ण रूप से शिकार बन चुके थे। यदि सभा कोई प्रचार व प्रसार की योजना भी बनाती तो यह अश्विनी कुमार शर्मा उसे तार-पीड़ो करने में एड़ी-चोटी का जोर लगा देता था। इस प्रकार के वातावरण से दु:खी होकर वास्तविक आर्य बन्धु पीछे हट कर बैठ गए थे और इसमें केवल एक मात्र आशा की किरण सभा प्रधान श्री पं हरबंस लाल शर्मा ही थे।

आर्य जगत को यह आशा थी कि नए अधिकारीगण सभा के कार्य को सुचारू रूप से चलाएंगे तथा आर्य समाज का प्रचार व प्रसार अब बहुत तेजी से बढ़ेगा परन्तु दुर्भाग्यवश भूल से सभा में कुछ ऐसे अधिकारीगण ले लिए गए थे जिनको आर्य समाज से ज्यादा अपना नीजि स्वार्थ ही प्यारा था। उनकी इस रीति-नीति ने उनका वास्तविक चेहरा जल्दी ही आर्य जनों के सामने ला दिया। इन लोगों ने लुधियाना की शिक्षण संस्थाओ को अपने नीजी स्वार्थ के लिए प्रयोग करते हुए उसका राजनीतिकरण करने का प्रयास किया। आर्य कालेज लुधियाना सभा की प्रसिद्ध व प्रमुख संस्था है परन्तु इन लोग. के घिनोने कृत्यों ने इस संस्था की शिक्षा जगत में छवि को गहरा आघात पहुंचाया है इसीलिए सारे आर्य जगत व शिक्षा जगत में इसकी भर्त्सना हो रही है।

इस सारी वस्तुस्थिति को देखते हुए सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी ने अपने अधिकारो का प्रयोग करते हुए कुछ प्रभावी कदम उठाए हैं जिनकी सम्पुष्टि सभा की 17-2-2002 की अन्तरंग सभा ने कर दी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं—

गत दिनों श्री पंडित हरबंस लाल जी शर्मा ने श्री सुरेन्द्र नाथ मुरगई को सभा व आर्य समाज को हानि पहुंचाने वाले कार्य करने के आरोप व सभा विरोधी गतिविधियों के कारण व उनके आदेशों की अवहेलना करने के कारण उनको सभा से निष्कासित कर दिया था और प्रिंसीपल श्री स्वतन्त्र कुमार जी पठानकोट को सभा का महामन्त्री नियुक्त किया था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की 17-2-2002 की अन्तरंग सभा ने सभा प्रधान जी के इस आदेश की सम्पुष्टि कर दी। इसी प्रकार डा. के.के. पसरीचा को उनकी सभा विरोधी गतिविधियों के कारण व सभा प्रधान जी के आदेशों के विरुद्ध शिक्षा संस्थाओं आदि को सभा के संविधान के विरुद्ध आदेश देने के कारण उनको सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पद से हटा दिया था और श्री सुदर्शन कुमार शर्मा को सभा का वरिष्ठ उप प्रधान नियुक्त कर दिया था। अन्तरंग सभा दिनांक 17-2-2002 ने सभा प्रधान जी के इस आदेश की भी सम्पुष्टि कर दी। इससे पूर्व 30-9-2001 की अन्तरंग सभा में यह सर्वसम्मति से निश्चय हो चुका है कि सभा के संविधान में कार्यकर्त्ता प्रधान का कोई प्रावधान न होने के कारण डा. के.के. पसरीचा सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान नहीं रह सकते। यह बात डा. पसरीचा ने इस अन्तरंग सभा में स्वयं भी स्वीकार की थी परन्तु इसके बावजूद भी वह अनाधिकार चेष्टा करते हुए व संविधान के विरुद्ध कार्य करते हुए 30.9.2001 के पश्चात् भी अपने आप को कार्यकर्त्ता प्रधान लिख कर सभा को हानि पहुंचाने की चेष्टा करते रहें।

सभा की गत अन्तरंग सभा दिनांक 30.9.2001 में सर्वसम्मति से यह भी पारित हो गया था कि सभा के विरुद्ध व सभा प्रधान श्री पंडित हरबंस लाल जी शर्मा, मन्त्री श्रीमती राजेश शर्मा, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा के ऊपर लुधियाना की एक अदालत में एक झूठा व बेबुनियाद इस्तगासा (केस) करने के कारण संविधान की धारा 8 (च) के अनुसार श्री नवदीप भारद्वाज, श्री ओ.पी. टंडन, श्री सर्वजीत शर्मा स्वयं ही आर्य समाज की सभासदी व सभा की सदस्यता खो बैठे हैं। इस प्रकार यह तीनों स्वत: ही सभा से निष्कासित हो चुके हैं और इनका अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से कोई सम्बन्ध नहीं है।

इसी प्रकार श्री हरबंस लाल जी सेठी लुधियाना को सभा प्रधान जी के आदेशों की उलंघना करने तथा आर्य कालेज लुधियाना जो कि सभा की प्रमुख शिक्षा संस्था है में भारी मात्रा में अनियमिताएं करने के आरोप में सभा के उपप्रधान पद से निष्कासित कर दिया था। 17-2-2002 की अन्तरंग सभा ने सभा प्रधान जी के इस आदेश की भी सम्पुष्टि कर दी है।

18.2.2002 से श्री सुदर्शन कुमार शर्मा ने सभा के वरिष्ठ उप प्रधान और प्रिंसीपल स्वतन्त्र कुमार जी ने सभा महामन्त्री का पद व कार्यभार विधिवत रूप से संभाल लिया है। आशा है अब सभा का कार्य सुचारू रूप से चलेगा

श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने गत दिनों अपनी तथाकथित सभा भग कर दी थी और सभा प्रधान श्री पंडित हरबंस लाल जी शर्मा के साथ मिल कर सभा का कार्य क ने की घोषणा कर दी थी। अब उन्होंने विधिवत रूप से उन सभी आर्य समाजों की सूची उनके पत्रो सहित सभा कार्यालय में दी थी और सभा प्रधान जी से प्रार्थना की थी कि इन सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि पुन: सभा में ले लिये जायें। 17-2-2002 की अन्तरंग सभा मे जालन्धर की 16 आर्य समाजों तथा लुधियाना व पंजाब की कई दूसरी आर्य समाजों की सूची पढ़ कर सुनाई गई जिन्होंने सभा के साथ मिल कर कार्य करने का आश्वासन सभा प्रधान जी को दिया है। अन्तरंग सभा ने इसकी भी सम्पुष्टि कर दी है और इस बात पर हर्ष प्रकट किया है कि इससे जब आगे सभा का संगठन और मजबूत होगा और सभा उन्नति करेगी। इस बैठक मे यह भी निश्चय हुआ कि सभा व आर्य समाज का हित चाहने वाले लोगों को सभा के साथ जोड़ लिया जाए और सभा के हितों के विरुद्ध कार्य करने वाले व सभा को हानि पहुंचाने वाले लोगों के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्यवाही की जाए।

सभा मन्त्री श्रीमती राजेश शर्मा के विरुद्ध लुधियाना मे जो झूठा बे-बुनियाद और तथ्यों से दूर केस किया हुआ था, सीनियर सुपरिंटैंडैंट पुलिस लुधियाना द्वारा उसकी पूरी जांच कराने के बाद उसे रद्द कर दिया गया है जिसके लिए सभी ने उन्हें बधाई दी।—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

आर्य समाजें वेद प्रचार की ओर ध्यान दें

गत कुछ समय से पंजाब में वेद प्रचार के कार्य में कमी आई है ऐसा मैं महसूस करता हूं। हमें इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। मेरा सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वह इस ओर विशेष ध्यान दें। सभी आर्य समाजों में साप्ताहिक व दैनिक सत्संग अवश्य होने चाहिएं। प्रत्येक आर्य समाज में प्रतिदिन यज्ञ हो वर्ष में कम से कम एक बार वेद सप्ताह व वार्षिक उत्सव अवश्य रखा जाए। पारिवारिक सत्संगों व सार्वजनिक स्थानों पर सत्संगो का आयोजन किया जाए। यज्ञ करने वालों को प्रोत्साहन दिया जाए। आर्य समाजों के अधिकारी व पुरोहित मिल कर यज्ञ की मुहिम चलाएं।

हम शीघ्र ही इस कार्य के लिए प्रेरित करने के लिए आर्य समाजों के प्रधानो व मन्त्रियों तथा पुरोहितों की एक बैठक सभा कार्यालय में बुला रहे हैं जिसमे वेद प्रचार के तरीकों पर बैठ कर विचार किया जाएगा। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि समाज के दलित वर्ग में आर्य समाज का प्रचार किया जाए। दलित वर्ग आज भी आर्य समाज से दूर ही दिखाई पड रहा है। जब कि आज हमारा देश स्वतन्त्र है और स्वतन्त्र भारत में भी हम दलितों को उतना ऊंचा नहीं उठा सके जितना हमें उन्हें उठाना चाहिए। दलित वर्ग के लोगों को भी हमें आर्य समाज के साथ जोड़ना चाहिए। आर्य समाजों में सिलाई स्कूल व डिस्पैंसरियां खोली जाएं इनके माध्यम से भी लोग आर्य समाज के साथ जुड़ेंगे।

हमें अपने स्कूल-कालेजों की ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। आर्य समाज के स्कूल, कालेजों को भी वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। स्कूल-कालेजों के पाठ्यक्रम में धर्म शिक्षा व नैतिक शिक्षा का समावेश किया जाए। अनिवार्य रूप से नैतिक शिक्षा दी जाए इसके लिए आर्य समाज के सिद्धान्तों को जानने वाले अध्यापक आर्य स्कूलों व कालेजों में रखे जाएं। धर्म शिक्षक तो अवश्य ही रखे जाएं ताकि वह बच्चों को धर्म शिक्षा दे सकें।

मैंने पहले भी कहा था कि आर्य स्कूलों व कालेजों का आर्य समाजीकरण किया जाए। प्रत्येक स्कूल व कालेज में यज्ञशाला बनी हो और उसमें कम से कम सप्ताह में एक बार अवश्य ही यज्ञ किया जाए ताकि विद्यार्थियों को यज्ञ के सम्बन्ध में पूरी जानकारी हो सके।

इस दिशा में आप जो भी पग उठाएं उसकी जानकारी सभा कार्यालय में भी दें। —स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

आर्य समाज की.....
(पृष्ठ 2 का शेष)

नागपुर, में इसे विश्व भाषा के रूप में मान्यता देने के लिए विश्व के अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने अनुरोध किया।

5) संस्कृत भाषा:-आर्यों की आदि भाषा संस्कृत है। इनके सभी ग्रन्थ मुख्यत: संस्कृत में ही मिलते हैं। इतना ही नहीं हिन्दुओं का कोई भी ग्रन्थ संस्कृत के प्रभाव से अछूता नहीं रह सका। अत: ऋषि दयानन्द और आर्य समाज को संस्कृत साहित्य की देन के विषय में भुलाया नहीं जा सकता। अन्यथा सस्कृत भाषा आज लुप्त ही हो चुकी होती। वास्तव में संस्कृत के ज्ञान के बिना भारतीय सभ्यता और सस्कृति का अध्ययन किया ही नहीं जा सकता। विश्व हिन्दी सम्मेलन में अनेको विदेशी प्रतिनिधियों ने भी अपने यही विचार व्यक्त किए कि 'हम भारतीय संस्कृति को जानने के लिए हिन्दी पढ़ते हैं किन्तु भारतीय ग्रन्थों का आधिक्य संस्कृत में होने के कारण हमें सस्कृत का ज्ञानार्जन करना भी आवश्यक हो जाता है।'

6) बाल-विवाह और बहु-विवाह:-ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से पूर्व बाल-विवाह व बहु-विवाह की प्रथा अपने यौवन पर थी। मुस्लिम युगीन भंयकर प्रताड़ना से प्रताड़ित हिन्दू समाज को बाल-विवाह प्रथा के लिए बाधित होना पड़ा, पर्दा करना भी अंगीकार करना पड़ा। यही प्रथाए बाद में रूढ़ियों के रूप में परिणित हुई। बहु-विवाह भी समाज में एक भंयकर विषधर बनकर सामने आया। इससे न केवल जातीय नस्ल का ही ह्रास हुआ, अपितु बाल-विधवाएं भी जीवन पर्यन्त तड़पती मिलती थीं। आर्य समाज की गतिविधियों से ही आज बहु-विवाह की प्रथा राजकीय विधि द्वारा समाप्त हो चुकी है और बाल-विवाह भी आज लगभग समाप्त हो चुका है। दहेजादि की कुपरम्पराओं के विरुद्ध भी आज आर्य समाज द्वारा लड़ाई लड़ी जा रही है।

7) आर्थिक व्यवस्था का ह्रास:-कर्म के प्रति निरादर के कारण भी अर्थ व्यवस्था नष्ट हो रही थी। अनाथ और विधवा समस्या भी जटिलतर हो रही थी। आर्य समाज ने अनाथालयों के माध्यम से इन्हे विधर्मी होने से बचाया और कर्म के प्रति आदर का भाव पैदा किया।

8) विधवा उद्धार:-विधवा समस्या समाज के सर्वनाश का कारण बन रही थीं। दो-दो और चार-चार वर्ष की विधवाएं रोती फिरती थी। आर्य समाज ने जो बाल-विवाह के विरुद्ध और विधवा विवाह के पक्ष में बिगुल बजाया, इसे सुन कर बाल-विवाह बन्द होने से बाल-विधवाएं कम होने लगीं और पुनर्विवाह की प्रथा ने तो इस कोढ़ का समूल नाश ही कर दिया।

9) स्त्री-शिक्षा:-ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से पूर्व स्त्री की अवस्था का वर्णन ऊपर किया जा चुका है। उन्हें शिक्षा प्राप्ति के अधिकार से भी वंचित कर दिया गया था। आर्य समाज ने समाज के विरोध की चिन्ता किए बिना स्त्री-शिक्षा के लिए भीषण नाद निनादित किया। इसी का ही परिणाम है कि आज स्त्री-शिक्षा का समुचित प्रबन्ध है। विवाह सम्बन्ध स्थापित करते समय भी सर्वप्रथम शिक्षा की जानकारी ली जाती है।

10) शुद्धि:-हमारी जातीय त्रुटियों के कारण जो लोग विधर्मी हो गए थे, उन्हें पुन: अपने धर्म में वापिस लौटा लाने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि चक्र चलाया उससे जाति को काफी बल मिला। नए लोगों को धर्म छोड़ने से रोका गया और विधर्मी हुए भाईयों को पुन: आर्यत्व की दीक्षा में दीक्षित किया जाने लगा। इसी दृष्टिकोण को आर्यों ने जीवन का सम्बल मानकर काफी कार्य किया तथा आज भी इस क्षेत्र में कार्य किया जा रहा है। पिछले दिनों आर्य युवक समाज अबोहर तथा आर्य समाज गिदड़बाहा द्वारा की गई शुद्धि भी इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। केरल वैदिक मिशन, हिन्दू शुद्धि सभा द्वारा भी काफी काम हो रहा है।

11) स्वाधीनता का पक्ष:-ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से पूर्व देश पराधीनता की भयंकर सींखचों से बुरी तरह जकड़ा हुआ था। किसी को भी स्वाधीनता पूर्वक विचरण करने का साहस नहीं हो पाता था। महर्षि दयानन्द एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी महामानव थे, जिन्होंने ऐसी विषम परिस्थिति में भी यह सिंहनाद किया कि "अच्छे से अच्छा विदेशी राज्य, एक गन्दे से गन्दे किन्तु स्वदेशी राज्य से भी गन्दा है।" इसी उद्देश्य को ही मध्यदृष्टि रखते हुए ऋषि दयानन्द, उनके गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द एवं उनके गुरू स्वामी पूर्णानन्द जी ने स्वाधीनता संग्राम की बागडोर अपने हाथों में ली और 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के लिए यह त्रिमूर्ति घूम-घूम कर सैनिक छावनियों और रजवाड़ों में वातावरण तैयार करने लगी। इसके पश्चात् भी 'शान्ति तथा क्रान्ति' से स्वाधीनता संग्राम लड़ने वाले अर्थात् गांधीवादी और क्रान्तिकारी दोनों प्रकार के हो स्वाधीनता सेनानियों में 95 प्रतिशत से भी अधिक ऋषि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज से ही प्रेरित थे। अत: इन की इस देन को झुठलाया नहीं जा सकता। शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, अशफाक उल्लाखां, श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, करतार सिंह सराभा, भाई परमानन्द आदि सभी के सभी तथा लाला लाजपत राय, महात्मा मुन्शीराम, स्व. लाल बहादुर शास्त्री, महात्मा गांधी आदि या तो सीधे ही आर्य समाजी थे या फिर इनको आर्य समाज से बल मिला था। इस प्रकार यह आन्दोलन ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की ही देन था।

अमृतसर में गुरू के बाग के मोर्चे की विजय भी आर्य समाज के कारण ही हुई, क्योंकि जब यह आन्दोलन असफल होता दिखाई दिया तो इसकी बागडोर आर्य समाजी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने अपने हाथों में लेकर मोर्चे को सफल करने का श्रेय प्राप्त किया। इसी कारण ही अमृतसर के गुरूद्वारे में स्वामी जी का चित्र लगाया गया, किन्तु अकालियों ने अपनी धर्मान्धता के कारण उनका चित्र हटवा दिया। तो भी ऐतिहासिक तथ्यों को झुठला पाना उनके लिए भी सम्भव न हो सका। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह को कोई भुला ही नहीं सकता। सिन्ध में सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन अपने प्रकार का अद्वितीय आन्दोलन था। मलेरकोटला में सनातनी मन्दिर की रक्षा के लिए स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का पहुंचना, बिड़ला मन्दिर की रक्षा में भी आर्य समाज के सहयोग को कोई नहीं भुला सकेगा। काश्मीर के भारत में विलय का कारण भी वहीं के एक आर्य नेता श्री मेहर चन्द्र जी महाजन थे। गांधी जी के नाम के साथ महात्मा लगने का कारण भी स्वामी श्रद्धानन्द जी अर्थात् आर्य समाज ही था, अन्यथा आज गांधी को महात्मा के रूप में कोई न जानता।

12) गुरूकुल शिक्षा पद्धति की पुनरुद्धार तथा डी. ए. वी. संस्थाओं के माध्यम से एक मिश्रित शिक्षा पद्धति भी आर्य समाज की एक महत्वपूर्ण तथा अनूठी देन है।

13) श्राद्ध-तर्पण आदि के विरोध द्वारा भी आर्य समाज अन्धविश्वासी जनता के भ्रम का निराकरण करने में काफी सहयोगी सिद्ध हुआ है। सभी समझने लगे हैं कि श्राद्ध के नाम पर जीवित माता-पिता की ही सेवा करनी चाहिए।

14) शराब, मांस आदि अभक्ष्य पदार्थों के सेवन का विरोध करते हुए, उसके प्रयोग से होने वाली बुराईयां भी विश्व मंच पर उभर रही हैं।

15) गौ-रक्षा का अभियान तो आर्य समाज का एक महत्वपूर्ण अभियान है। इसके लिए पराधीन युग में भी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हस्ताक्षर अभियान चलाया था और लाखों की संख्या में हस्ताक्षर भी करवाए थे।

16) आर्य समाज ने लोगों को अपनी प्राचीन गौरव-गरिमा का स्मरण दिलाया। सांस्कृतिक सम्पदा से परिचय कराया। जाति में आत्मविश्वास पैदा किया। स्वदेशी प्रयोग का उपदेश दिया। संगठित शक्ति का महत्व और प्रजातन्त्र पद्धति पर संगठन को शिक्षा दी।

17) सुराज्य ही स्वराज्य का विकल्प नहीं, इसका उद्घोष सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द और आर्य समाज ने ही किया।

18) सभी क्षेत्रों के लोगों के लिए प्रचुर मात्रा में साहित्यिक सामग्री प्रदान की।

19) आर्य समाज ने इतने शहीदों और देश भक्तों को जन्म दिया कि इनका एक तांता सा ही लग गया। आर्य समाज के अतिरिक्त विश्व इतिहास में इतनी संख्या में शहीद पैदा करने वाली और किसी जाति का नाम ही नहीं मिलता। इसके जीवित शहीदों की भी गिनती कर पाना असम्भव सा ही है। यह आज आर्य समाज के संगठन की स्पर्धा का एक विषय बना हुआ है।

20) भ्रमवश आर्य समाज को अनेकों राजकीय व अराजकीय परीक्षाओं में से गुजरना पड़ा। इसकी नींव सत्य पर आधारित है। अत: सभी में विजयी रहा। पटियाला का केस, हैदराबाद का धर्म युद्ध, सिन्ध का सत्यार्थ-प्रकाश सत्याग्रह, मलेरकोटले का आन्दोलन आदि इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं।

21) देश पर अनेकों बार कई प्रकार की आपदाएँ आई। इन आपदाओं के समय आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने तन-मन-धन से सेवा की। पिछले दिनों उड़ीसा में आए भीषणतम तूफान व गुजरात में आए भूकम्प के अवसर पर आर्य समाज, आर्य वीर दल व वैदिक सेवाश्रम के कार्यकर्त्ताओं ने दिन रात एक कर पीड़ितों की न केवल भोजन, वस्त्र, बिस्तरों व औषधियों से ही सेवा की अपितु गले-सड़े दुर्गन्ध मारते शवों को भी ठिकाने लगाया। ऐसे सेवा कार्यों में मेरा बेटा अरुणेश आर्य भी सम्मिलित था।

मानसा में मकर संक्रान्ति का पर्व मनाया गया

14-1-02 को आर्य समाज मन्दिर मानसा में मकर संक्रान्ति का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 9 बजे हवन यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ के उपरान्त प्रवचन एवं भजन हुए। इस अवसर पर आर्य समाज के सभी सदस्य एवम् आर्य हाई स्कूल के अध्यापक एवम् विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस आर्य समाज में सभी पर्व मनाये जाते हैं। —कृष्ण कुमार, मन्त्री

महर्षि दयानन्द के.....
(पृष्ठ 8 का शेष)

5. स्त्री शूद्रा का वेदाधिकार- महर्षि दयानन्द की यह महती कृपा है कि उन्होंने स्त्री, शूद्र अति शूद्र सभी को समान रूप से वेद के पठन-पाठन का अधिकार प्रदान किया। इससे पूर्व वेद पठन केवल कुछ ब्राह्मणों तक ही सीमित था। वे कहते हैं-

सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्य मात्र को पढ़ने का अधिकार है।

शूद्र, भृत्य, स्त्री और अति शूद्र के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है।

क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता ?.......जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्र आदि के पढ़ाने सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता ?

स्त्री......जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी हों तो वे यज्ञ में स्वर सहित मन्त्रों का उच्चारण संस्कृत भाषण कैसे कर सकें ? समु. 3

6. बाल विवाह, बहु विवाह निषेध- विवाह के समय कन्या की आयु कम से कम 16 वर्ष और वर की आयु 25 वर्ष होनी चाहिए। क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बल युक्त होने से सन्तान उत्तम होते हैं।

जो.....बाल्यावस्था में विवाह करते हैं वे स्त्री पुरुष नष्ट भ्रष्ट होकर विद्वानों में प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं होते।

न बाल्यावस्था में विवाह करने से सुख होता।

अनेक विवाह कभी न होना चाहिए। समु. 4

यदि इसका पालन करें तो उसके लिए राजदण्ड होना चाहिए। छठे समु. में ऋषि लिखते हैं-

जहां तक बन सके वहां तक बाल्यावस्था में विवाह न करने देवें। युवावस्था में भी बिना प्रसन्नता के विवाह न करना, कराना और न करने देना। बहु विवाह को बन्द करें।

7. स्वर्ग नरक की यथार्थता- पुराण आदि अवैदिक ग्रन्थों में स्वर्ग के विशेष स्थान की कल्पना की गई है। इसी प्रकार नरक का भी अलग विशेष स्थान है। जहां चित्रगुप्त, यमराज, उनके दूत आदि विराजमान हैं। गरुड़ पुराण में स्वर्ग-नरक का काफी विस्तृत वर्णन है। जिस पर ऋषि ने ग्यारहवें समुल्लास में समीक्षा की है। उनका कहना है-

सुख विशेष स्वर्ग और विषयतृष्णा में फंस कर दुःख विशेष भोग करना नरक कहाता है। 'स्वः' सुख का नाम है, 'स्वः सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः' 'अतो विपरीतो दुःख भोगो नरक इति' जो सांसारिक सुख है यह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है वही विशेष स्वर्ग कहाता है।

समु.9

8. विदेशियों के भी सद्गुणों के प्रशंसक- महर्षि ने जहां देश-देशान्तर के मत-मतान्तरों का खण्डन किया है वहां उनके गुणों की प्रशंसा भी की है-

-जो यूरोपियनों में बाल्यावस्था में विवाह न करना, लड़का-लड़की को विद्या सुशिक्षा करना, कराना, स्वयंवर विवाह होना....किसी के पाखण्ड में नहीं फंसते....अपनी जाति के लिए तन, मन, धन व्यय करते हैं। देखो! अपने देश के बने जूते को कार्यालय (आफिस) और कचहरी में जाने देते हैं, इस देशी जूते को नहीं। इतने में ही समझ लो कि अपने देश के बने जूतों का भी कितना मान-प्रतिष्ठा करते हैं, उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते।

देखो। कुछ सौ वर्ष से ऊपर इस देश में आए यूरोपियनों को हुए...परन्तु उन्होंने अपने देश का चाल-चलन नहीं छोड़ा और तुममें से बहुत से लोगों ने उनकी नकल कर ली।

समु. 11

9. छूआछूत जाति-पाति ऊंच-नीच की समाप्ति- महर्षि दयानन्द जन्म से ऊचनीच या जाति पाति नहीं मानते थे। न ही विदेश जाने पर धर्म भ्रष्ट होता था। मनुष्य का श्रेष्ठता तो उसके सदाचरण में है न कि कदाचरण में। वह करते हैं-

"जो आजकल छूआछूत और धर्म नष्ट होने की शंका है वह केवल मूर्खों के बहकाने और अज्ञान बढ़ने से है।.....भला जो महाभ्रष्ट मलेच्छ [illegible] से आचार भ्रष्ट धर्म हीन नहीं होते किन्तु देश-देशान्तर के उत्तम पुरुषों के साथ समागम् में छूत और दोष मानते हैं। यह केवल मूर्खता की बात नहीं तो और क्या है?

जब हम अच्छे काम करते हैं तो हमको देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता। दोष तो पाप के काम करने में लगते हैं। समु.10

आपस में आर्यों का एक भोजन होने में कोई भी दोष नहीं दिखता।

जो आर्यों में शुद्ध रीति से बनावे तो बराबर सब आर्यों के साथ खाने में कुछ भी हानि नहीं।"समु. 10

आपातकालिक भोजन की व्यवस्था देखिए-आवश्यक युद्धादिकों में तो घोड़े आदि यानों पर बैठ के व खड़े-खड़े भी खाना-पीना अत्यन्त उचित है।

10. आर्य समाज की स्थापना- वैदिक धर्म का प्रचार कार्य निरन्तर चलते रहने के लिए ऋषि ने आर्य समाज की स्थापना की। आज देश विदेश में हजारों की संख्या में आर्य समाजें कार्यरत हैं। प्रत्येक प्रान्त में आर्य समाजों के ऊपर प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं हैं और प्रतिनिधि सभाओं के ऊपर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है जिसका कार्यालय राम लीला मैदान नई दिल्ली में है।

रचनाएं- महर्षि की महत्वपूर्ण एवं सर्व प्रसिद्ध रचना सत्यार्थ प्रकाश है। जिसमें ईश्वर के नाम तथा स्वरूप, बालकों की शिक्षा-दीक्षा, पठन-[illegible] बन्धमोक्ष, विद्या-विद्या, सृष्टि उत्पत्ति स्थिति-प्रलय, भक्ष्याभक्ष्य, आचार-अनाचार, देशीय मत मतान्तर-पौराणिक, जैन, बौद्ध, चार्वाक आदि. तथा विदेशी मत-इस्लाम और ईसाई मतों की समीक्षा है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, यजुर्वेद भाष्य, ऋग्वेदभाष्य (अपूर्ण), वेदांग प्रकाश, व्यवहारभानु तथा अन्य अनेक ग्रन्थ हैं जो महर्षि की कीर्ति का विस्तार कर रहे हैं।

12. प्रचार का माध्यम आर्य भाषा- महर्षि दयानन्द यद्यपि गुजराती थे तथापि उन्होंने अपने प्रचार का माध्यम आर्य भाषा हिन्दी को बनाया। क्योंकि वह भली प्रकार जानते थे कि भारत के अधिकतर भूभाग में हिन्दी का ही व्यवहार हो रहा है। अन्य भाषाभाषियों के लिए हिन्दी ही एकमात्र सम्पर्क भाषा बन सकती है। इसी के द्वारा एकता स्थापित हो सकती है। अतः वह कहते हैं-

"जब पांच-पांच वर्ष के लड़का-लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें, अन्य देशीय भाषाओं का भी।समु. 2

इस ऋषि बोधोत्सव के पावन पर्व पर हम सभी महर्षि के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लें, तभी इसकी सार्थकता है।

कपड़ा मार्किट बठिण्डा में भव्य हवन यज्ञ

बठिण्डा शहर की सबसे बड़ी थोक कपड़ा मार्किट में मकर संक्रान्ति के शुभ अवसर पर भव्य हवन यज्ञ एवम् प्रवचन का आयोजन किया गया। यह शुभ कार्य ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी "वैदिक मिशनरी" के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। वेद मन्त्रों की व्याख्या सुनकर मार्किट में दूर-दूर खड़े सज्जन भी इससे सम्मिलित हुए, यहां तक की पंजाब सरकार के मन्त्री महोदय श्री चिंरजीलाल गर्ग जी भी जो अपने प्रचार कार्य में संलग्न थे, वहां पर आ पधारे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ होने से पूर्व आर्य समाज बठिण्डा के प्रधान प्रो. ओ.पी. मंगला जी ने मुख्य यजमान श्री भोजराज एवम् अन्य यज्ञमानों का विस्तार से परिचय करवाया। मकर संक्रान्ति के अवसर पर प्रत्येक वर्ष यज्ञ करवाया जाता है जिसमें लाला वजीर चन्द मंगला जी का मुख्य योगदान रहता है। इस अवसर पर कपड़ा मार्किट प्रबन्ध समिति की ओर से विशाल लंगर का आयोजन किया गया।

इस आयोजन पर आर्य समाज बठिण्डा के महामन्त्री जोकि आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री भी हैं, सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त शहर के जाने-माने व्यक्ति जिनमें सर्वश्री सरदार अमर सिंह (उप प्रधान) श्री सोहन लाल, ओम् प्रकाश व इन्द्रजीत सिंह जी ने सम्पूर्ण कार्यक्रम में विशेष श्रद्धापूर्वक भाग लिया एवम् ब्रह्मचारी जी से वाणिज्य से सम्बन्धित वेद मन्त्रों के अर्थ भी समझे। शान्ति पाठ एवम् प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। -प्रेम भाटिया, महामन्त्री

आर्य समाज सिरकी बाजार भठिण्डा द्वारा वेद प्रचार

10.2.2002 रविवार को दुकान के मुहूर्त हेतु वैदिक रीति द्वारा बिना कुछ लिए सहदेव स्टूडियो का उद्घाटन हवन यज्ञ से कराया गया।

जगदीश सहदेव व उनकी धर्मपत्नी व सुपुत्रियों ज्योति, प्रीति व ऋचा सहदेव ने श्रद्धा व लगन के साथ वैदिक मंत्रों का उच्चारण किया। इस यज्ञ मे राजेश कुमार व चमन लाल मेहता का विशेष सहयोग रहा। वैदिक यज्ञ विधि को देखते हुए सारे कोर्ट रोड वासियों ने इसकी सराहना की। वैदिक भजनों को सुनकर आनन्द महसूस किया। इस विधी को देखते हुए एक सज्जन व्यक्ति ने अपनी दुकान का मुहूर्त भी 17-2-2002 रविवार को करवाया। अन्त में पंडित राजेन्द्र आर्य व श्री कृष्ण लाल बटाना ने आशीर्वाद दिया। यजमान ने 3 किलो घी हवन यज्ञ के लिए आर्य समाज को दिया। ता. 13.2.2002 को इन्दिरा छाबड़ा की पुत्र वधू ने हवन करवाया। ता. 13.2.2002 को मोहन लाल आर्य टेलर मास्टर ने हवन करवाया।

नोट:-वेद प्रचार हेतु सामग्री व हवन कुण्ड फ्री दिए जाते हैं। दरी, चादर, स्पीकर इत्यादि।

—कल्प वासुदेव, मन्त्री

दयानन्द पब्लिक स्कूल में विदाई समारोह

9-2-2002 शनिवार को दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में दसवीं कक्षा के वार्षिक परीक्षा में जाने के लिए स्कूल के हाल मे विदाई समारोह मनाया गया। समारोह का आरम्भ यज्ञ से किया गया। आठवीं और दसवीं के बच्चे बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में बैठे। स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। उन्होंने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जो व्यक्ति यथायोग्य पुरुषार्थ करता है वह जीवन में उन्नति करता है। आप खूब मेहनत करें अच्छे अंक प्राप्त करके स्कूल का नाम रोशन करें।

प्रबन्धक समिति के माननीय सदस्यों एवं स्टाफ ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। इसके पश्चात् बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसमें दसवीं कक्षा की मनप्रीत, शैली ने नृत्य प्रस्तुत किया। दसवीं कक्षा की छात्राओं ने पंजाबी गीत बोला। इसके अलावा बच्चों ने हास्यपद स्किट भी प्रस्तुत की। आठवीं कक्षा की प्रीति और एकता ने नृत्य किया। नौवीं कक्षा के छात्रों ने दसवीं कक्षा से एक मिनट गेम खिलवाई और प्रथम आने वाले विद्यार्थी को इनाम दिया। दसवीं कक्षा की छात्रा ज्योति ने स्कूल के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। मंच का संचालन श्रीमती रेनू बहल ने किया।

इसके बाद दसवीं कक्षा के छात्र-छात्राओं ने प्रबन्धकीय समिति के माननीय सदस्यों एवं स्टाफ को स्मृति चिन्ह के रूप में उपहार दिए। स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जीवन में कुछ बनने के लिए शिक्षा अति आवश्यक है। प्रबन्धक समिति के माननीय सदस्य श्री विजय सरीन जी ने कहा कि जीवन में शिक्षा ही नहीं अपितु सामाजिक होना भी आवश्यक है।

प्रबन्धक समिति की माननीय सदस्या श्रीमती विनोद गांधी जी ने बच्चों को अपने चरित्र को अच्छा बनाने पर बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि विद्यार्थी जीवन में विद्या तभी उपलब्ध हो सकती है अगर वे सादगी की ओर ध्यान दें। स्कूल के प्रधान श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता जी ने बच्चों को एवं अध्यापकों को मेहनत करने के लिए कहा। स्कूल के प्रिंसिपल श्रीमती सुनीता मलिक जी ने बच्चों से कहा कि जितने जोर-शोर से आपने पार्टी की तैयारी की है उतनी जोर-शोर से अपने पेपरों की तैयारी में भी जुट जाएं। इसके बाद खाने-पीने का उत्तम प्रबन्ध था। इसके बाद कारवाई समाप्त हुई।

—सुनीता मलिक

आर्य बन्धुओं को धन्यवाद

मेरे पिता श्री बख्तावर जी आर्य के देहावसान पर मुझे कई आर्य समाजों की ओर से पारित शोक प्रस्ताव प्राप्त हुए तथा कई आर्य बन्धुओं के पत्र व फोन मुझे प्राप्त हुए जिनमें दिवंगतात्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई तथा परिवार से सहानुभूति प्रकट की गई। मैं सभी आर्य बन्धुओं का आभारी हूं और धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस दुःख की घड़ी में मुझे सांत्वना व साहस प्रदान किया। सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा, श्री सुदर्शन जी शर्मा, श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा, आर्य समाज जालन्धर छावनी के प्रधान श्री जनक राज महाजन व श्री जवाहर महाजन, श्री चन्द्र गुप्ता, आर्य समाज चौक भठिण्डा श्री प्रेम भाटिया जी, श्री ओ.पी. मंगला, आर्य समाज नंगल श्री दीवान चन्द शर्मा, श्री आसकरणदास जी सरदाना, आर्य समाज नया नंगल श्री गुमानचंद जी तालूजा, आर्य समाज सुल्तानपुर लोधी श्री लाल बिहारी शास्त्री, आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट श्री स्वतन्त्र कुमार जी, श्री ओम प्रकाश जी पासी लुधियाना, जिला आर्य सभा भठिण्डा, श्री वजीरचन्द जी मंगला, आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना श्री आशानन्द जी, आर्य समाज गोबिन्दगढ़ व स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ़ जालन्धर श्री इन्द्र कुमार जी शर्मा तथा बहनें। श्री भवानी लाल जी भारतीय जोधपुर, श्री राम जी पथिक आर्य समाज अजनाला, आर्य समाज मानसा श्री कृष्ण कुमार मन्त्री, आर्य समाज माडल टाउन जालन्धर श्री पं. सत्य प्रकाश जी शास्त्री, आर्य समाज फतेहपुर यमुनानगर श्री प्रीतम आर्य, वेद प्रचार मण्डल यमुना नगर श्री पं. इन्द्रजित् देव, आर्य समाज नवां शहर श्री प्रेम भारद्वाज, श्री डा. नरेश जी दुआबा कालेज जालन्धर, श्री सुखदेवराज जी गुरुकुल करतारपुर, श्री राम लुभाया जी नन्दा आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर, श्री पं. मनोहर लाल जी आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर, आर्य समाज ऋषिकुंज पक्का बाग जालन्धर श्री करतार नाथ जी, आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर श्री मुलख राज जी। दुआबा सी.सै. सैकण्डरी स्कूल जालन्धर के अध्यापक व सभा कार्यालय के सभी कर्मचारियों तथा अन्य कई महानुभावों ने शोक संवेदना प्रकट की। मैं सभी का आभारी हूं।

—धर्मदेव आर्य

आर्य समाज हबीबगंज में विदाई समारोह

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना में चल रहे आर-बी स्कूल की अध्यापिका श्रीमती अमरजीत के सेवानिवृत होने पर एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की कारवाई हवन यज्ञ से प्रारम्भ हुई जिसे प्रबन्ध समिति की सदस्य श्रीमती विनोद गांधी जी ने सम्पन्न करवाया। इस यज्ञ में श्रीमती अमरजीत का सारा परिवार श्रद्धा से शामिल हुआ। उसके पश्चात् प्रबन्ध समिति के सदस्यों-स्कूल के स्टाफ ने हार पहना कर उन्हें सम्मानित किया। स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द आर्य जी ने कहा कि लगातार 36 वर्ष स्कूल की सेवा करने के बाद श्रीमती अमरजीत रिटायर हो रही हैं। इस स्कूल की 26 वर्ष से मैं प्रबन्धक के रूप में सेवा कर रहा हूं। अमरजीत अध्यापिका एक मेहनती-धार्मिक एवं बच्चों को प्यार देने वाली अध्यापिका रही हैं इसके रिटायर होने पर स्कूल की जो कमी हुई है उसे पूरा करना मुश्किल है। मैं आशा करता हूं कि रिटायर होने के पश्चात् स्कूल की उन्नति के लिए वह कार्य करती रहेंगी।

स्कूल की ओर से उन्हें शानदार स्मृति चिन्ह एवं उपहार भेंट किए गए। इस अवसर पर श्रीमती अमरजीत कौर ने अपनी ओर आर्य समाज आर-बी स्कूल, आर्य समाज में चल रहे धर्म देवी औषधालय के लिए 3300/- रुपए दान दिए-जलपान का उत्तम प्रबन्ध था।

आर्य समाज गोनियाना मण्डी (बठिण्डा) में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज गोनियाना मण्डी (जि. बठिण्डा) में साप्ताहिक सत्संग जो हर रविवार को नियमित रूप से निरन्तर चल रहा है, के साथ साथ एक वर्ष से पारिवारिक सत्संगों का कार्यक्रम भी सफलता पूर्वक चल रहा है। इस सिलसिले में 2 फरवरी 2002 दिन शनिवार को पारिवारिक सत्संग डाक्टर त्रिलोक जिंदल के निवास पर किया गया। सर्व प्रथम पवित्र वेद मंत्रों से यज्ञ हवन का आयोजन किया गया। सुन्दर भजन गाये गए फिर श्री चिरंजी लाल जी प्रधान आर्य समाज गोनियाना मण्डी ने यजमान दम्पति को आशीर्वाद दिया।

—[illegible] कुमार आर्य, महामन्त्री जिला सभा

(पृष्ठ 8 का शेष)

5. स्त्री शूद्रों को वेदाधिकार- महर्षि दयानन्द की यह महती कृपा है कि उन्होंने स्त्री, शूद्र अति शूद्र सभी को समान रूप से वेद के पठन-पाठन का अधिकार प्रदान किया। इससे पूर्व वेद पठन केवल कुछ ब्राह्मणों तक ही सीमित था। वे कहते हैं-

सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्य मात्र को पढ़ने का अधिकार है।

शूद्र, भृत्य, स्त्री और अति शूद्र के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है।

क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता ?.......जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्र आदि के पढ़ाने सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता ?

स्त्री..... जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी हों तो वे यज्ञ में स्वर सहित मन्त्रों का उच्चारण संस्कृत भाषण कैसे कर सकें ? समु. 3

6. बाल विवाह, बहु विवाह निषेध-विवाह के समय कन्या की आयु कम से कम 16 वर्ष और वर की आयु 25 वर्ष होनी चाहिए। क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बल युक्त होने से सन्तान उत्तम होते हैं।

जो.....बाल्यावस्था में विवाह करते हैं वे स्त्री पुरुष नष्ट भ्रष्ट होकर विद्वानों में प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं होते।

न बाल्यावस्था में विवाह करने से सुख होता।

अनेक विवाह कभी न होना चाहिए। समु. 4

यदि इसका पालन करें तो उसके लिए राजदण्ड होना चाहिए। छठे समु. में ऋषि लिखते हैं-

जहां तक बन सके वहां तक बाल्यावस्था में विवाह न करने देवें। युवावस्था में भी बिना प्रसन्नता के विवाह न करना, कराना और न करने देना। बहु विवाह को बन्द करें।

7. स्वर्ग नरक की यथार्थता- पुराण आदि अवैदिक ग्रन्थों में स्वर्ग के विशेष स्थान की कल्पना की गई है। इसी प्रकार नरक का भी अलग विशेष स्थान है। जहां चित्रगुप्त, यमराज, उनके दूत आदि विराजमान हैं। गरुड़ पुराण में स्वर्ग-नरक का काफी विस्तृत वर्णन है। जिस पर ऋषि ने ग्यारहवें समुल्लास में समीक्षा की है। उनका कहना है-

सुख विशेष स्वर्ग और विषयतृष्णा में फंस कर दुःख विशेष भोग करना नरक कहाता है। 'स्वः' सुख का नाम है, 'स्वः सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः' 'अतो विपरीतो दुःख भोगो नरक इति' जो सांसारिक सुख है यह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है वही विशेष स्वर्ग कहाता है।

समु.9

8. विदेशियों के भी सद्गुणों के प्रशंसक-महर्षि ने जहां देश-देशान्तर के मत-मतान्तरों का खण्डन किया है वहां उनके गुणों की प्रशंसा भी की है-

-जो यूरोपियनों में बाल्यावस्था में विवाह न करना, लड़का-लड़की को विद्या सुशिक्षा करना, कराना, स्वयंवर विवाह होना....किसी के पाखण्ड में नहीं फंसते....अपनी जाति के लिए तन, मन, धन व्यय करते हैं। देखो! अपने देश के बने जूते को कार्यालय (आफिस) और कचहरी में जाने देते हैं, इस देशी जूते को नहीं। इतने में ही समझ लो कि अपने देश के बने जूतों का भी कितना मान-प्रतिष्ठा करते हैं, उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते।

देखो। कुछ सौ वर्ष से ऊपर इस देश में आए यूरोपियनों को हुए...परन्तु उन्होंने अपने देश का चाल-चलन नहीं छोड़ा और तुममें से बहुत से लोगों ने उनकी नकल कर ली।

समु. 11

9. छूआछूत जाति-पाति ऊंच-नीच की समाप्ति-महर्षि दयानन्द जन्म से ऊचनीय या जाति पाति नहीं मानते थे। न ही विदेश जाने पर धर्म भ्रष्ट होता था। मनुष्य का श्रेष्ठता तो उसके सदाचरण में है न कि कदाचरण में। वह करते हैं-

"जो आजकल छूआछूत और धर्म नष्ट होने की शंका है वह केवल मूर्खों के बहकाने और अज्ञान बढ़ने से है।.....भला जो महाभ्रष्ट म्लेच्छ कुलोत्पन्न वेश्या आदि के समागम से आचार भ्रष्ट धर्म हीन नहीं होते किन्तु देश-देशान्तर के उत्तम पुरुषों के साथ समागम् में छूत और दोष मानते हैं। यह केवल मूर्खता की बात नहीं तो और क्या है?

जब हम अच्छे काम करते हैं तो हमको देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता। दोष तो पाप के काम करने में लगते हैं। समु.10

आपस में आर्यों का एक भोजन होने में कोई भी दोष नहीं दिखता। जो आर्यों में शुद्ध रीति से बनावे तो बराबर सब आर्यों के साथ खाने में कुछ भी हानि नहीं।"समु 10

आपातकालिक भोजन की व्यवस्था देखिए-आवश्यक युद्धादिकों में तो घोड़े आदि यानों पर बैठ के व खड़े-खड़े भी खाना-पीना अत्यन्त उचित है।

10. आर्य समाज की स्थापना- वैदिक धर्म का प्रचार कार्य निरन्तर चलते रहने के लिए ऋषि ने आर्य समाज की स्थापना की। आज देश विदेश में हजारों की संख्या में आर्य समाजें कार्यरत हैं। प्रत्येक प्रान्त में आर्य समाजों के ऊपर प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं हैं और प्रतिनिधि सभाओं के ऊपर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है जिसका कार्यालय राम लीला मैदान नई दिल्ली में है।

रचनाएं-महर्षि की महत्वपूर्ण एवं सर्व प्रसिद्ध रचना सत्यार्थ प्रकाश है। जिसमें ईश्वर के नाम तथा स्वरूप, बालकों की शिक्षा-दीक्षा, पठन-पाठन, वर्णाश्रम व्यवस्था, राजधर्म, बन्धमोक्ष, विद्या-विद्या, सृष्टि उत्पत्ति स्थिति-प्रलय, भक्ष्याभक्ष्य, आचार-अनाचार, देशीय मत मतान्तर-पौराणिक, जैन, बौद्ध, चार्वाक आदि. तथा विदेशी मत-इस्लाम और ईसाई मतों की समीक्षा है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, यजुर्वेद भाष्य, ऋग्वेदभाष्य (अपूर्ण), वेदांग प्रकाश, व्यवहारभानु तथा अन्य अनेक ग्रन्थ हैं जो महर्षि की कीर्ति का विस्तार कर रहे हैं।

12. प्रचार का माध्यम आर्य भाषा-महर्षि दयानन्द यद्यपि गुजराती थे तथापि उन्होंने अपने प्रचार का माध्यम आर्य भाषा हिन्दी को बनाया। क्योंकि वह भली प्रकार जानते थे कि भारत के अधिकतर भूभाग में हिन्दी का ही व्यवहार हो रहा है। अन्य भाषाभाषियों के लिए हिन्दी ही एकमात्र सम्पर्क भाषा बन सकती है। इसी के द्वारा एकता स्थापित हो सकती है। अत: वह कहते हैं-

"जब पांच-पांच वर्ष के लड़का-लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें, अन्य देशीय भाषाओं का भी।समु. 2

इस ऋषि बोधोत्सव के पावन पर्व पर हम सभी महर्षि के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लें, तभी इसकी सार्थकता है।

कपड़ा मार्किट बठिण्डा में भव्य हवन यज्ञ

बठिण्डा शहर की सबसे बड़ी थोक कपड़ा मार्किट में मकर संक्रान्ति के शुभ अवसर पर भव्य हवन यज्ञ एवम् प्रवचन का आयोजन किया गया। यह शुभ कार्य ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी "वैदिक मिशनरी" के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। वेद मन्त्रों की व्याख्या सुनकर मार्किट में दूर-दूर खड़े सज्जन भी इससे सम्मिलित हुए, यहां तक की पंजाब सरकार के मन्त्री महोदय श्री चिरंजीलाल गर्ग जी भी जो अपने प्रचार कार्य में संलग्न थे, वहां पर आ पधारे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ होने से पूर्व आर्य समाज बठिण्डा के प्रधान प्रो ओ.पी. मंगला जी ने मुख्य यजमान श्री भोजराज एवम् अन्य यज्ञमानों का विस्तार से परिचय करवाया। मकर संक्रान्ति के अवसर पर प्रत्येक वर्ष यज्ञ करवाया जाता है जिसमें लाला वजीर चन्द मंगला जी का मुख्य योगदान रहता है। इस अवसर पर कपड़ा मार्किट प्रबन्ध समिति की ओर से विशाल लंगर का आयोजन किया गया।

इस आयोजन पर आर्य समाज बठिण्डा के महामन्त्री जोकि आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री भी हैं, सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त शहर के जाने-माने व्यक्ति जिनमें सर्वश्री सरदार अमर सिंह (उप प्रधान) श्री सोहन लाल, ओम् प्रकाश व इन्द्रजीत सिंह जी ने सम्पूर्ण कार्यक्रम में विशेष श्रद्धापूर्वक भाग लिया एवम् ब्रह्मचारी जी से वाणिज्य से सम्बन्धित वेद मन्त्रों के अर्थ भी समझे। शान्ति पाठ एवम् प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। -प्रेम भाटिया, महामन्त्री

आर्य समाज सिरकी बाजार भठिण्डा द्वारा वेद प्रचार

10.2.2002 रविवार को दुकान के मुहूर्त हेतु वैदिक रीति द्वारा बिना कुछ लिए सहदेव स्टूडियो का उद्घाटन हवन यज्ञ से कराया गया।

जगदीश सहदेव व उनकी धर्मपत्नी व सुपुत्रियो ज्योति, प्रीति व ऋचा सहदेव ने श्रद्धा व लगन के साथ वैदिक मंत्रो का उच्चारण किया। इस यज्ञ मे राजेश कुमार व चमन लाल मेहता का विशेष सहयोग रहा। वैदिक यज्ञ विधि को देखते हुए सारे कोर्ट रोड वासियों ने इसकी सराहना की। वैदिक भजनों को सुनकर आनन्द महसूस किया। इस विधी को देखते हुए एक सज्जन व्यक्ति ने अपनी दुकान का मुहूर्त भी 17-2-2002 रविवार को करवाया। अन्त में पंडित राजेन्द्र आर्य व श्री कृष्ण लाल बटाना ने आशीर्वाद दिया। यजमान ने 3 किलो घी हवन यज्ञ के लिए आर्य समाज को दिया। ता 13.2.2002 को इन्दिरा छाबड़ा की पुत्र वधू ने हवन करवाया। ता 13.2.2002 को मोहन लाल आर्य टेलर मास्टर ने हवन करवाया।

नोट:-वेद प्रचार हेतु सामग्री व हवन कुण्ड फ्री दिए जाते हैं। दरी, चादर, स्पीकर इत्यादि।

—कल्प वासुदेव, मन्त्री

दयानन्द पब्लिक स्कूल में विदाई समारोह

9-2-2002 शनिवार को दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना मे दसवीं कक्षा के वार्षिक परीक्षा मे आने के लिए स्कूल के हाल मे विदाई समारोह मनाया गया। समारोह का आरम्भ यज्ञ से किया गया। आठवीं और दसवीं के बच्चे बडी श्रद्धा से यज्ञ में बैठे। स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। उन्होने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जो व्यक्ति यथायोग्य पुरुषार्थ करता है वह जीवन में उन्नति करता है। आप खूब मेहनत करें अच्छे अंक प्राप्त करके स्कूल का नाम रोशन करें।

प्रबन्धक समिति के माननीय सदस्यो एव स्टाफ ने बच्चो को आशीर्वाद दिया। इसके पश्चात् बच्चों ने रगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसमे दसवीं कक्षा की मनप्रीत, शैली ने नृत्य प्रस्तुत किया। दसवीं कक्षा की छात्राओ ने पजाबी गीत बोला। इसके अलावा बच्चों ने हास्यपद स्किट भी प्रस्तुत की। आठवीं कक्षा की प्रीति और एकता ने नृत्य किया। नौंवी कक्षा के छात्रो ने दसवीं कक्षा से एक मिनट गेम खिलवाई और प्रथम आने वाले विद्यार्थी को इनाम दिया। दसवीं कक्षा की छात्रा ज्योति ने स्कूल के बारे मे अपने विचार प्रस्तुत किए। मच का सचालन श्रीमती रेनू बहल ने किया।

इसके बाद दसवीं कक्षा के छात्र-छात्राओ ने प्रबन्धकीय समिति के माननीय सदस्यों एवं स्टाफ को स्मृति चिन्ह के रूप में उपहार दिए। स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जीवन में कुछ बनने के लिए शिक्षा अति आवश्यक है। प्रबन्धक समिति के माननीय सदस्य श्री विजय सरीन जी ने कहा कि जीवन में शिक्षा ही नहीं अपितु सामाजिक होना भी आवश्यक है।

प्रबन्धक समिति की माननीय सदस्या श्रीमती विनोद गांधी जी ने बच्चों को अपने चरित्र को अच्छा बनाने पर बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि विद्यार्थी जीवन में विद्या तभी उपलब्ध हो सकती है अगर वे सादगी की ओर ध्यान दें। स्कूल के प्रधान श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता जी ने बच्चों को एवं अध्यापकों को मेहनत करने के लिए कहा। स्कूल के प्रिंसिपल श्रीमती सुनीता मलिक जी ने बच्चों से कहा कि जितने जोर-शोर से आपने पार्टी की तैयारी की है उतनी जोर-शोर से अपने पेपरों की तैयारी में भी जुट जाएं। इसके बाद खाने-पीने का उत्तम प्रबन्ध था। इसके बाद कारवाई समाप्त हुई।

—सुनीता मलिक

आर्य बन्धुओं को धन्यवाद

मेरे पिता श्री [illegible] जी आर्य के देहावसान पर मुझे कई आर्य समाजों की ओर से पारित शोक प्रस्ताव प्राप्त हुए तथा कई आर्य बन्धुओं के पत्र व फोन मुझे प्राप्त हुए जिनमें दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई तथा परिवार से सहानुभूति प्रकट की गई। मैं सभी आर्य बन्धुओं का आभारी हूं और धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस दुःख की घड़ी में मुझे सांत्वना व साहस प्रदान किया। सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा, श्री सुदर्शन जी शर्मा, श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा, आर्य समाज जालन्धर छावनी के प्रधान श्री जनक राज महाजन व श्री जवाहर महाजन, श्री चन्द्र गुप्ता, आर्य समाज चौक भठिण्डा श्री प्रेम भाटिया जी, श्री ओ पी मंगला, आर्य समाज नंगल श्री दीवान चन्द शर्मा, श्री आसकरणदास जी सरदाना, आर्य समाज नया नंगल श्री गुमानचंद जी तालूजा, आर्य समाज सुल्तानपुर लोधी श्री लाल बिहारी शास्त्री, आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट श्री स्वतन्त्र कुमार जी, श्री ओम प्रकाश जी पासी लुधियाना, जिला आर्य सभा भठिण्डा, श्री वजीरचन्द जी मंगला, आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना श्री आशानन्द जी, आर्य समाज गोबिन्दगढ़ व स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ़ जालन्धर श्री इन्द्र कुमार जी शर्मा तथा बहनें। श्री भवानी लाल जी भारतीय जोधपुर, श्री राम जी पथिक आर्य समाज अजनाला, आर्य समाज मानसा श्री कृष्ण कुमार मन्त्री, आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर श्री पं. सत्य प्रकाश जी शास्त्री, आर्य समाज फतेहपुर यमुनानगर श्री प्रीतम आर्य, वेद प्रचार मण्डल यमुना नगर श्री पं इन्द्रजित् देव, आर्य समाज नवां शहर श्री प्रेम भारद्वाज, श्री डा नरेश जी द्वाबा कालेज जालन्धर, श्री सुखदेवराज जी गुरुकुल करतारपुर, श्री राम लुभाया जी नन्दा आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर, श्री पं मनोहर लाल जी आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर, आर्य समाज ऋषिकुंज पक्का बाग जालन्धर श्री करतार नाथ जी, आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर श्री मुलख राज जी। द्वाबा सी.सै. सैकण्डरी स्कूल जालन्धर के अध्यापक व सभा कार्यालय के सभी कर्मचारियों तथा अन्य कई महानुभावों ने शोक संवेदना प्रकट की। मैं सभी का आभारी हूं।

—धर्मदेव आर्य

आर्य समाज हबीबगंज में विदाई समारोह

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना में चल रहे आर-बी स्कूल की अध्यापिका श्रीमती अमरजीत के सेवानिवृत होने पर एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की कारवाई हवन यज्ञ से प्रारम्भ हुई जिसे प्रबन्ध समिति की सदस्य श्रीमती विनोद गांधी जी ने सम्पन्न करवाया। इस यज्ञ में श्रीमती अमरजीत का सारा परिवार श्रद्धा से शामिल हुआ। उसके पश्चात् प्रबन्ध समिति के सदस्यों-स्कूल के स्टाफ ने हार पहना कर उन्हें सम्मानित किया। स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द आर्य जी ने कहा कि लगातार 36 वर्ष स्कूल की सेवा करने के बाद श्रीमती अमरजीत रिटायर हो रही हैं। इस स्कूल की 26 वर्ष से मैं प्रबन्धक के रूप में सेवा कर रहा हूं। अमरजीत अध्यापिका एक मेहनती-धार्मिक एवं बच्चों को प्यार देने वाली अध्यापिका रही हैं इसके रिटायर होने पर स्कूल की जो कमी हुई है उसे पूरा करना मुश्किल है। मैं आशा करता हूं कि रिटायर होने के पश्चात् स्कूल की उन्नति के लिए वह कार्य करती रहेंगी।

स्कूल की ओर से उन्हें शानदार स्मृति चिन्ह एवं उपहार भेंट किए गए। इस अवसर पर श्रीमती अमरजीत कौर ने अपनी ओर आर्य समाज आर-बी स्कूल, आर्य समाज में चल रहे धर्म देवी औषधालय के लिए 3300/- रुपए दान दिए-जलपान का उत्तम प्रबन्ध था।

आर्य समाज गोनियाना मण्डी (बठिण्डा) में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज गोनियाना मण्डी (जि. बठिण्डा) में साप्ताहिक सत्संग जो हर रविवार को नियमित रूप से निरन्तर चल रहा है, के साथ साथ एक वर्ष से पारिवारिक सत्संगों का कार्यक्रम भी सफलता पूर्वक चल रहा है। इस सिलसिले में 2 फरवरी 2002 दिन शनिवार को पारिवारिक सत्संग डाक्टर त्रिलोक जिंदल के निवास पर किया गया। सर्व प्रथम पवित्र वेद मंत्रों से यज्ञ हवन का आयोजन किया गया। सुन्दर भजन गाये गए फिर [illegible] चिरंजी लाल जी प्रधान आर्य समाज गोनियाना मण्डी ने यजमान दम्पति को आशीर्वाद दिया।

—[illegible] कुमार आर्य, [illegible]

टंकारा में ऋषि मेला

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि टंकारा में 10, 11 व 12 मार्च को ऋषि मेले का आयोजन किया गया है। जिसमें देश-विदेश से हजारों नर नारी भाग लेने हेतु टंकारा पहुंच रहे हैं। आर्य परिवारों को बस द्वारा टंकारा ले जाने के लिए आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से स्पेशल बस चलाई जा रही है। यह बस 5-3-2002 को प्रात: 7 बजे चलेगी जो 15-3-2002 रात्रि वापिस देहली पहुंचेगी। यात्री टंकारा के अतिरिक्त मथुरा, उदयपुर, जोधपुर, अजमेर के अतिरिक्त द्वारका, बेट द्वारका, पोरबन्दर, सोमनाथ का मन्दिर, माऊन्ट आबू, श्री कृष्ण जन्म भूमि के साथ चितौड़ और पुस्कर भी देखेंगे। किराया बस केवल 2165/- रुपए प्रति यात्री होगा। निवास एवं भोजन व्यवस्था आर्य समाजों में होगी। यदि ऐसा नहीं हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेंगे।

—रामचन्द्र आर्य, 466, भीम नगर, गुड़गांव दूरभाष नं.-6326466

हैदराबाद में वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

विगत सोलह वर्षों से अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर हैदराबाद में आयोजित किया जा रहा है। विगत वर्षों में एक हजार से अधिक पुरोहित हमारे द्वारा आयोजित शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। इस शिविर में जहां मन्त्रों का उच्चारण शुद्ध कराया जाता है वहीं पर संस्कारों की विधि भी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रणीत संस्कार विधि के सर्वथा अनुरूप कराई जाती है। साथ ही आर्य समाज का सैद्धान्तिक ज्ञान तथा समस्त शंकाओं का समाधान भी कराया जाता है। प्रशिक्षणार्थियों को 15 अप्रैल तक आवेदन पत्र मंगवा कर प्रतिष्ठान के कार्यालय में भेज देने होंगे। इस वर्ष 50 (पचास) प्रशिक्षणार्थियों से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। आवेदन पत्र की प्राप्ति के क्रम से प्रवेश दिया जाएगा। अत: शीघ्र ही आवेदन पत्र के लिए निम्न पते पर पत्र व्यवहार द्वारा प्रार्थना पत्र भेजियेगा। पता: अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, वेद मन्दिर महर्षि दयानन्द मार्ग हैदराबाद-500 027 आ प्र. (कृप्या पिन कोड अंग्रेजी अंकों में ही लिखिए)।

—आचार्य वेद भूषण

विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या प्रथम है

चीनी भाषा दूसरे स्थान पर, अंग्रेजी तीसरे स्थान पर, स्पेनी भाषा चौथे स्थान पर है।

1991 की जनगणना के आधार पर कुल विश्व जनसंख्या 5848739000 है। हिन्दी बोलने वाले 1102996447 अर्थात् 18.9 प्रतिशत हैं। चीनी बोलने वाले 1060802806 अर्थात् 18 1 प्रतिशत हैं।

ेपाल व पाकिस्तान में 80 प्रतिशत, फीजी ग्वाटेमाला, गुआना, संयुक्त अरब अमीरात में 20 प्रतिशत, मारीशस में 69 प्रतिशत, सूरिनाम में 37 प्रतिशत, बंगलादेश, भूटान, ट्रिनीडाड में 30 प्रतिशत इक्वेडोर में 25 प्रतिशत हिन्दी बोलते हैं। भारत में

बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, अण्डमान निकोबार में 100 प्रतिशत, जम्मूकश्मीर में 80 प्रतिशत, गुजराज, महाराष्ट्र, पंजाब, चण्डीगढ़ में 80 प्रतिशत, गोवा में 70 प्रतिशत, दीप दमण में दादरा नगर हवेली में 65 प्रतिशत, उड़ीसा, सिक्किम, प० बंगाल में 60 प्रतिशत, असम में 50 प्रतिशत, कर्नाटक में 45 प्रतिशत, आन्ध्र में 40 प्रतिशत, केरल, मिजोरम में 35 प्रतिशत, मणिपुर, मेघालय, अरुणाचल में 30 प्रतिशत, नागालैण्ड, त्रिपुरा लक्षदीप में 25 प्रतिशत, तमिलनाडु, पांडिचेरी में 20 प्रतिशत व्यक्ति हिन्दी बोलते हैं।

भारत मे सबको मिलाकर 71.31 प्रतिशत हिन्दी भाषी हैं तो भी दुर्भाग्य है भारत की लोकसभा में प्राय: अंग्रेजी में गिटमिट होती हैं। टी वी० तो अंग्रेजी प्रचार का ठेकेदार है।

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में यज्ञ

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड में 14-1-2002 सोमवार को मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में बृहद हवन का आयोजन किया गया जोकि प्रात: 9 बजे से लेकर 11 बजे तक स्कूल के हाल में किया गया जिसमें बहुत से छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और यजमान बने। यज्ञ स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने सम्पन्न करवाया। उन्होंने बच्चों को यज्ञ की महता बताते हुए कहा कि जिस घर में नित्य यज्ञ होता है वह घर भाग्यशाली एवं धन-धान्य से भरपूर होता है। छात्रों ने बहुत उत्साह एवं लगन से यज्ञ में भाग लिया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता भी उपस्थित थे। यज्ञ मे स्कूल के प्रिंसिपल एवम् स्टाफ ने बड़ी श्रद्धा पूर्वक भाग लिया एवम् यज्ञ शेष वितरण के पश्चात् यह पर्व सम्पूर्ण हुआ।

—सुनीता मलिक, प्रिंसिपल

फीजी समिति पुरस्कार से सम्मानित- कैप्टन देवरत्न आर्य

दि. 28 दिसम्बर 2001 को फीजी हिन्दी साहित्य समिति द्वारा आयोजित दिल्ली के एक सभागार में हिन्दी भाषा, साहित्य एवम् संस्कृति के प्रचार-प्रसार निमित्त आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य को सम्मानित किया गया।

यह सम्मान उन्हें world Millennium Hindi Covention Suva, Fiji ने अपने दि. 21 से 23 जून, 2001 तक सम्पन्न हुए भव्य समारोह में किया जाना था।

ज्ञातव्य है कि कैप्टन देवरत्न आर्य, आर्य जगत् की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान हैं और जाने-माने प्रतिष्ठानों के अग्रणी नेता व पदाधिकारी है। आप प्रखर लेखक, गम्भीर चिन्तक व ओजस्वी विचारों के प्रवक्ता हैं। आपने हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार निमित्त अनेक देशों में अपने विचारों को हिन्दी भाषा में ही रखा है।

—आचार्य नरेश

'सत्यार्थ प्रकाश'' के सप्तम समुल्लास में–

ईश्वर के विषय में महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घाटित कुछ सत्य

❑ *ले० श्री इन्द्रजितदेव, पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर-135001*

(गतांक से आगे)

ईश्वर सगुण व निर्गुण दोनों है।

- सगुण न निर्गुण दोनों परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं। इसका प्रमाण आप ''हिन्दी साहित्य का इतिहास'' में पढ़ लें। निराकार ईश्वर की भक्ति को वहां निर्गुण भक्ति व मूर्ति की, अवतारों (?) की (कथित) भक्ति को वहां सगुण भक्ति नाम दिया गया है। इस मान्यता के अनुसार एक पदार्थ में एक ही गुण होना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने इस भ्रम को दूर करने का ''सत्यार्थ प्रकाश'' के सप्तम समुल्लास में सफल व अपूर्व प्रयास किया है। वे इन दोनों में भेद स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि ''अपने-अपने स्वाभाविक गुणों से सहित और दूसरे विरोधी गुणों से रहित होने से सब पदार्थ सगुण और निर्गुण हैं।'' सब पदार्थों में दोनों ही एक साथ रहते हैं। आर्य समाज के दूसरे नियम के आधार पर हम विश्लेषण करें तो बात समझ में आती हैं। इस नियम के कुछ गुण ईश्वर में है और कुछ गुण नहीं है। सच्चिदानन्द, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता ये ग्यारह गुण इस नियम में ईश्वर के अपूर्व हुए हैं परन्तु शेष ६ गुण ऐसे भी हैं जो ईश्वर में विद्यमान् नहीं हैं अर्थात् ईश्वर निराकार, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, अजर, अमर व अभय है। ईश्वर अपने अनन्त-ज्ञान-बलादि गुणों से सहित होने से सगुण और रुपादि जाड़ के तथा द्वेषादि गुणों से पृथक होने से निर्गुण कहाता है। उपरोक्त ग्यारह गुण ईश्वर में हैं। अत: वह सगुण है परन्तु शेष ६ गुण ईश्वर में नहीं है, अत: वह निर्गुण भी है। इन 20 से अधिक (असंख्य) गुण उसमें होने से वह सगुण मानना चाहिए व असंख्य गुण न उसमें न होने से निर्गुण मानना चाहिए।

परमेश्वर रागी नहीं हैं, विरक्त भी नहीं है।

ईश्वर सर्वव्यापक है। सब कुछ उसमें हैं, सब कुछ उसके पास है। राग अपने से पृथक उत्तम पदार्थ में ही होता है। ईश्वर से उत्तम व पृथक भी कुछ न होने से वह रागी नहीं है। विरक्त भी ईश्वर नहीं हो सकता क्योंकि प्राप्त को त्याग देने की क्रिया का नाम विरक्ति है। सर्वव्यापक होने से ईश्वर किसी पदार्थ, जीव व स्थानादि को त्याग हीं नहीं सकता। अत: ईश्वर को विरक्त भी नहीं माना जा सकता।

ईश्वर की लौकिक इच्छा नहीं है।

जैसी इच्छा जीवों में होती है, वैसी ईश्वर में नहीं होती। जीवों में आनन्द की कमी है और इसी की प्राप्ति हेतु जीवों के यत्न-प्रयत्न व इच्छा होती है। परमात्मा ने स्वयं कहा है:-

अकामो धीरो अमृत: स्वयम्भू रसेन तृप्तो न कुतश्चन नोन:।.........अ, १०/८/४४

अर्थात् उसकी कोई कामना नहीं है,......., सर्वदा आनन्द से परिपूर्ण है व उसमें (ईश्वर में) किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है। जब न्यूनता ही नहीं व सर्वदा आनन्द ही है तो इच्छा भी नहीं होगी। इच्छा अभाव की पूर्ति के लिए होती है, अपूर्णता की पूर्णता के लिए होती है। सर्वथा सम्पूर्ण, प्राप्त काम व परिपूर्ण ईश्वर की अपनी कोई भी इच्छा नहीं है। यहा प्रश्न उत्पन्न होता है कि फिर ईश्वर सृष्टि रचना क्यों करता है? इसका उद्देश्य क्या है? कोई तो इच्छा होगी, तभी निर्माण किया होगा? इसका उत्तर यह है कि सभी निर्माण कार्य स्वयं की इच्छा पूर्ति के लिए नहीं किए जाते। राजा प्रजाहित में अनेक विध निर्माण करता है। ईश्वर हमारा राजाओं का भी राजा है। उसने जीवों के पूर्वकृत कर्मों का फल भोगने, नए कर्म करके सुविधा व सुख से रहने व श्रेष्ठतम कर्म करके मोक्ष प्राप्त कराने के लिए इस सृष्टि का निर्माण किया है।

जीव व ब्रह्म पृथक-पृथक हैं।

नवीन वेदान्तियों ने अद्वैतवाद का बहुत प्रचार करके सिद्ध करने का यत्न किया है कि संसार में ईश्वर के अतिरिक्त कोई अन्य तत्व नहीं है। वे ''प्रज्ञानं ब्रह्म,'' 'तत्वमसि' व 'अयमात्मा ब्रह्म' जैसे ब्राह्मण-ग्रंथों के वचनों को वेदों के महावाक्य कह कर ईश्वर व जीव एक ही हैं, इसे सिद्ध करने का असफल यत्न करते हैं परन्तु महर्षि के विचार में ये वाक्य 'महावाक्य' हैं, यह किसी सत्यशास्त्र में नहीं लिखा। महर्षि ने स्पष्ट किया है कि इन वाक्यों का अर्थ यह नहीं है कि मैं ब्रह्म हूँ, आदि। इसका सही अर्थ यह है कि समाधि दशा में जब योगी को परमेश्वर प्रत्यक्ष होता है, तब वह कहता है कि यह जो मुझ में व्यापक है, वही ब्रह्म सर्वव्यापक है।'' इसी प्रकार 'तत्वमसि' का अर्थ भी यह नहीं कि नाम से ब्रह्म तू जीव है। हे जीव! तू वह ब्रह्म है।'' इस का सही अर्थ यह है कि वह परमात्मा जानने योग्य है। सब जगत् और जीव का वह आत्मा है। वह अपना आत्मा स्वयं ही है। नवीन वेदान्तियों ने महर्षि से यह भी प्रश्न पूछा कि जब जीव व ईश्वर में कई गुणों का साधर्म्य है तो दोनों को एक क्यों नहीं मानते? महर्षि ने इसका सुन्दर उत्तर देते हुए लिखा है कि दो वस्तुओं के कुछ गुणों का साधर्म्य होने से एकता नहीं होती। उदाहरणार्थ पृथ्वी जड़ और दृश्य पदार्थ है, वैसे ही जल और अग्नि आदि भी जड़ व दृश्य हैं। इन दो कारणों से इन में साधर्म्य हो जाता है? अर्थात् नहीं होता है क्योंकि इनमें परस्पर वैधर्म्य भी है, भेदकारक अर्थात् गन्ध, रुक्षता, कठोरता आदि गुण पृथ्वी में हैं। परन्तु इसके विपरीत अग्नि में ये गुण विद्यमान नहीं होकर अग्नि में दाहकता का गुण विद्यमान है। जल में भी जड़ता व रूप गुण पृथ्वी की तरह हैं, यह साधर्म्य तो है परन्तु इस द्रवत्व व कोमलता के गुण पृथ्वी से भिन्न भी हैं। अत: कुछ एकता होने का तात्पर्य यह नहीं है दो तत्व-आत्मा व परमात्मा, कुछ गुणों में समान होते हुए भी पृथक-पृथक हैं। इस सम्बन्ध में वेद का भी प्रमाण है-द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।.....ऋ. 1-264-20

अर्थात् ब्रह्म और जीव चेतनता और पालनादि गुणों से सदृश व्याप्य-व्यापक भाव से संयुक्त परस्पर मित्रतायुक्त सनातन व अनादि हैं। वैसा ही अनादि मूल रूप कारण और शाखा कार्य युक्त वृक्ष अर्थात् जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न-भिन्न हो जाता है वह तीसरा अनादि पदार्थ है।...इस वेद मन्त्र से भी सिद्ध है कि एक वृक्ष पर बैठने का गुण (-एक ही जगत् के साथ-साथ रहने का गुण) समान होने के बावजूद दोनों का अस्तित्व पृथक-पृथक है। जन्म के अन्धे को कभी रूप का स्वप्न नहीं आता। जो वस्तु कभी देखी या सुनी न हो, वह भी कभी स्वप्न में नहीं आती। इससे सिद्ध है कि यदि जीव न होता तो मान लेना भी नहीं हो सकता।

महर्षि दयानन्द ने यह भी प्रतिपादित किया है कि ब्रह्म सदैव एक है और जीव तथा प्रकृतिस्थ तत्व अनेक हैं। उनसे भिन्न कर ब्रह्म के एकत्व को सिद्ध करने हारा ''अद्वैत'' या ''अद्वितीय'' विशेषण हैं। इससे जीव का, प्रकृति का और कार्य रूप जगत् का अभाव और निषेध नहीं हो सकता। ये सब हैं परन्तु ब्रह्म के तुल्य नहीं हैं। इससे न अद्वैत सिद्धि और न द्वैत सिद्धि की हानि ही होती है।

ईश्वर का त्रिकालदर्शित्व– ईश्वर विषयक भी एक भ्रान्त धारणा समाज में प्रचलित है कि ईश्वर भूत, वर्तमान और भविष्यत् की घटनाओं को जानता है। अत: त्रिकालज्ञ व त्रिकालदर्शी है। इससे यह भी सिद्ध होगा कि जीव कर्म में स्वतन्त्र नहीं है। भविष्यत् में क्या होगा घटित, यदि वह पहले ही निश्चित हो जाएगा तो जीव को वैसा ही करना होगा। इससे जीव परतन्त्र हो गया। इससे वैदिक सिद्धान्त कि ''जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है'', भी असत्य सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त ईश्वर द्वारा जीव को दण्ड देना भी अनुचित ठहरेगा क्योंकि जीव ने वही किया था जो ईश्वर ने अपने ज्ञान से निश्चित किया था। इसमें जीव निर्दोष ही सिद्ध होता है तथा उसे दण्ड देकर ईश दोषी सिद्ध होगा।

(क्रमश:)

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष: 292926

पंजि. नं. एल. पी. 26

ओ३म्

विश्वमार्यम्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा जालन्धर

अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष—55 अंक : 30 सृष्टि संवत 1960853102, 3 से 10 मार्च 2002 दयानन्दाब्द 178

मनुर्भव—मानव तू मानव बन

□लेखक: श्री सत्यदेव कुमार आर्य
[illegible]

ऋग्वेद के एक मंत्र में आया है—कि "मनुर्भव" अर्थात् 'हे मानव—तू मानव बन' आज मानव केवल देखने में ही मानव की शक्ल का नजर आता है पर पूछने पर कहेगा "मैं हिन्दू हूँ—मैं मुसलमान हूं—मैं ईसाई हूं। कई सज्जन तो इससे भी आगे बढ़कर कहने लगते है 'हम ब्राह्मण होते हैं—हम खतरी (क्षत्रीय) होते हैं या फिर हम गोयल हैं—हम अग्रवाल हैं—हम मरवाहा हैं। पर वेद कहता है—ठीक है, आप हिन्दू हो तो हिन्दू रहो पर पहले मानव बनो। मुसलमान हो तो ठीक पर पहले मनुष्य बनो। ईसाई हो तो भी ठीक पर पहले मानव बनो। क्योंकि हम सब एक ईश्वर के पुत्र पुत्रियां हैं। पर हम तो सब एक ईश्वर की सन्तान भी कहां रह गये हैं। हम ने तो अपने अपने ईश्वर भी बांट लिये हैं। कोई अपने आप को अल्लाह या खुदा की औलाद मानता है तो दूसरा अपने आपको गाड (God) के एक मात्र पुत्र ईसामसीह का शिष्य मानता है अत: भिन्न भिन्न भगवानों के भक्त भिन्न भिन्न सम्प्रदायों में बट गये हैं और उन्होंने अपने अपने ढंग से अपने अपने ईश्वर की पूजा करनी आरम्भ कर दी है। इस पर भी हम अपनी इस मूर्खता तथा अज्ञानता को दोष परम पिता परमात्मा के ऊपर डाल देते हैं। यह सब कुछ देखकर ही किसी कवि का भावुक हृदय यह कहने पर विवश हो जाता है—

कोई बन बैठा शेख तो कोई बन गया ब्राह्मण
हर बशर आदमी था मेरी बन्दगी से पहले।

यह सब तो आज के हालात के संदर्भ में कहा जा सकता है। पर वेद के आविर्भाव के समय तो हिन्दू—मुस्लिम—ईसाई का चक्कर नहीं था तब तो केवल एक ही धर्म को मानने वाले थे वह धर्म था वैदिक धर्म, किसी कवि ने कहा भी है:

गुलशने हस्ती में यकरंगी का आलम आम था।
पहले सिर्फ एक कौम थी, इन्सान जिसका नाम था॥

फिर वेद ने क्यों कहा? "मनुर्भव" इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें इस पूरे वेदमंत्र पर विचार करना होगा, ऋग्वेद का यह मंत्र है,

"तन्तुं तन्वन रजसो भानु मन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्षधिया कृतान्॥
अनुल्बणांवयत जोगुवामयो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥

इस वेदमंत्र में बताया गया है कि मनुष्य मानव जन्म प्राप्त कर लेने से ही मानव कहलाने का अधिकारी नहीं बन जाता। मनुष्य कहलाने के लिए उसने क्या करना है इसका संकेत इस मंत्र में किया गया है। मंत्र के चार भागों में से प्रथम भाग मे कहा गया है।

तन्तुं तन्वत् रजसो भानुमन्विहि—अर्थात् "हे मनुष्य तू जीवन के ताने बाने को तनता बुनता हुआ आकाश के सूर्य का अनुसरण कर अर्थात् सूर्य के गुणों को धारण कर। सूर्य में ऐसे कौन से गुण हैं जिन्हें धारण करके मानव वास्तविक अर्थों में मानव बन जाता है। सर्व प्रथम सूर्य ही अग्नि का मूल स्रोत है। सूर्य ही अपने सौर्य जगत का जीवन ज्योति और प्राण है। सूर्य की ऊष्मा और उसी के प्रकाश से रंग, रुप और संसार आदि सृष्टि दिखाई देती है। सूर्य प्रकाश का भी मुख्य स्रोत्र है और प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है अत: जो व्यक्ति दूसरों का पथ प्रदर्शन अथवा सत्य प्रेरणा द्वारा और ज्ञान प्रदान द्वारा दूसरों के जीवन को प्रकाशित करता है, वही सच्चा मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। मन्त्र के दूसरे भाग मे वेद कहता है— "ज्योतिष्मतः पथो रक्षधियाकृतान"

हे मानव—तू बुद्धि द्वारा, विवेक से बनाये गये प्रकाशमान रास्तो की रक्षा कर। बुद्धि द्वारा बनाये गये प्रकाशमान रास्ते वो रास्ते हैं जिन पर बुद्धिमान लोग चलते रहे हैं। तभी तो प्रसिद्ध अग्रेजी कवि लौंगफैलो ने लिखा है—

Lives of great men, all remind us
We can make our lives Sublime
And departing leave behind us
Foots prints on the sands of time
Foot prints that, perhaps another
Sailing over life's solemn main,
A forlorn and ship wreeked brother
Seeing shall take heart again

भावार्थ—महान् पुरुषों के जीवन हमे यह याद दिलाते हैं कि हम भी अपने जीवन को उत्कृष्ट बना सकते हैं और मरने के उपरांत संसार—सागर के काल रूपी रेतीले तट पर अपने पद चिन्ह छोड सकते हैं ताकि यदि कभी कोई अभागा व्यक्ति जिसकी जीवन नौका तूफान में टूट गई हैं, असहाय और हताश हो जाए तो हमारे पद चिन्हों को देख देखकर साहस कर सके और अपने पुनरुद्धार में प्रयत्नशील हो सके।

आधुनिक युग में जहाजों के पथ प्रदर्शन के लिए अनेक प्रकार के नवीन ज्योति स्तम्भों (Light houses) का अविष्कार हुआ है। यह सब "धियाकृतान" अर्थात् बुद्धि के बल से बनाये हुए प्रकाशमय मार्ग हैं—

इतिहास के रेत पर भगवान रामचन्द्र के पद चिन्हों को देखो, प्रजा रामराज्य के लिए लालायित है। वेदमन्त्र कहता है कि इन मार्गों की रक्षा करो। बनाने वाले मार्ग बना गये। वर्तमान काल के मनुष्यों का कर्त्तव्य है कि इन बने हुए मार्गों की रक्षा करें। मंत्र के तीसरे भाग में कहा है "अनुल्वणां वयत जोगुवामयो" अर्थात् विद्वानों और उपासको के उलझन रहित कर्मों को तू आगे बढ़ा। विद्वानों और उपासको के कर्म उलझन रहित होते हैं। व्यक्ति उन पर आचरण करते हुए कभी उलझन मे नहीं पड़ता। वेद कहता है कि तू इस प्रकार के कर्म करता हुआ इन कर्मों की वृद्धि कर। दधीचि का त्याग, हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा, राम की पितृभक्ति, कृष्ण की न्यायपोषण, दयानन्द की क्षमाशीलता आदि ऐसे उलझन रहित कर्म हैं कि जिन्हें बढ़ाते हुए मानव वास्तव में मानव बन सकता है। तो यह सब वो साधन है जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं मनुष्य (खुद) का निर्माण कर सकता है। काश, आज का मनुष्य अपना निर्माण कर सके।

चरैवेति का पर्याय हैं-रामनाथ सहगल

□ ले० दत्तात्रेय तिवारी-टी-8 ग्रीन पार्क नई दिल्ली

जिला सरगोधा के राझियावाला ग्राम (अब पाकिस्तान) में 13 मार्च 1926 को जन्मे श्री रामनाथ सहगल कि प्रारंभिक शिक्षा कृपाराम ऐंग्लो संस्कृत हाई स्कूल भेरा मे हुई। कालान्तर मे उन्हे पजाब नेशनल बैंक रावलपिडी में नौकरी मिल गई तो वे वहा आकर रहने लगे।

रावलपिडी मे श्री सहगल किसी प्रकार श्री पिशौरी लाल प्रेम जो भारत विभाजन के उपरान्त ददाहू (रेणुका) सिरमौर मे स्थापित हो गये के सम्पर्क मे आए। वे उन्हे रावलपिडी आर्य समाज मे ले गये। श्री प्रेम की प्रेरणा से सहगल आर्य वीर दल मे जाने लगे और कुछ दिनो बाद ही उन्हे नगर नायक और समय समय पर गुरूकुल रावलपिडी मे लगने वाले आर्यवीर दल के शिविरो का सयोजक बना दिया गया। रावलपिडी आर्य समाज मे स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के उपदेशो का उन पर बडा प्रभाव पडा। कालान्तर मे वे आर्य समाज रावलपिडी के मत्री बना दिये गये।

पिछले चार दशको से आर्य समाज के कार्यक्रमो एव समारोहो मे मच पर अपनी उपस्थिति की विशेष छाप दने वाले निष्ठावान आर्य समाजी एव समाजसेवी श्री रामनाथ सहगल आगामी 12 मार्च को ऋषिबोधात्सव के बाद 13 मार्च को अपने जीवन के 76 वे वर्ष मे प्रवेश कर रह हें। इस अवसर पर हमारा यही कामना है कि वे इसी प्रकार सामाजिक कार्यो का करते हुए अपने व्यस्त और कर्मठ जीवन के शत वर्ष पूर्ण करे।

जीवेत् शरद शतम्।

जुझारू व्यक्तित्व श्री रामनाथ सहगल का नाम लेते ही एक सदा आगे रहने वाले कर्मठ ध्येयनिष्ठ एव जुझारू व्यक्ति का चित्र उभर कर सामने आता है। आज 75 वर्ष की परिपक्व आयु को पार करने के बाद भी श्री सहगल की व्यस्तता एव स्फूर्ति मे कोई कमी नहीं आई है। उनकी दिनचर्या मे विराम या विश्राम के लिए कोई स्थान नहीं है। आर्य समाज से या शिक्षण सस्थाओ से सम्बद्ध कोई भी कार्यक्रम समारोह या सभा हो अथवा किसी सस्था की कोई बैठक हो श्री सहगल अनिवार्य रूप से दिखाई देगे। विभिन्न उत्तरदायित्वो का पूरा करने के लिए प्रतिदिन 100 150 किलोमीटर की यात्रा उनके लिए सामान्य बात है। कमर में भारी पीड़ा होने पर भी डाक्टर के पूर्ण विश्राम के परामर्श के बाद भी श्री सहगल की कार के पहियो की गति में कोई कमी नहीं आई हैं। उनकी कार दिल्ली के एक कोने से दूसरे कोने में भागती रहती हैं। 60 के दशक के समय के सशक्त उच्च कद दबग और धाकड श्री सहगल में 45 वर्ष के बाद भी कोई अन्तर नहीं आया हैं। आयु के कारण होने वाले स्वाभाविक परिवर्तन के कारण उनके घने काले बाल सफेद हो गए हैं। वे श्वेतकेतु अवश्य हो गए है पर ओ३म् के गेरूवे ध्वज को उन्होने उतनी ही ऊचाई पर बडी मजबूती से थाम रखा है। उनके यौवन की उद्दाम भावना ओर कार्यो को उनका वार्धक्य परास्त नहीं कर सका है।

कार्य की नई दिशा 1958 मे आर्य समाज के नेता श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने गुडगाव क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुनाव लडा था। सारा आर्यसमाज उनकी विजय के लिए कार्य कर रहा था। इसी सिलसिले मे श्री सहगल ने चुनाव प्रचार मे रात दिन काम किया। इसी अभियान में उनका श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी से सीधा सम्पर्क हुआ। यह एक मणि काचन सयोग था। इस भेंट ने श्रमिको के लिये कार्य करने वाले श्री सहगल के कार्य क्षेत्र की दिशा ही बदल दी और श्री सहगल ने अपने आपको सर्वतोभावेन आर्य समाज वेदो के प्रचार प्रसार तथा वैदिक सस्कृति और सभ्यता के सरक्षण एव सवर्धन के लिए समर्पित कर दिया। एक चतुर पारखी के रूप मे श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने युवक श्री सहगल की क्षमता उग्रता को एकदम पहचान लिया। इसके बाद 1979 में शास्त्री की मृत्यु पर्यन्त इस जोडी ने 20 वर्षो तक आर्य समाज के लिए जो कार्य किये वह आर्य समाज के इतिहास के उज्जवल पृष्ठ हैं। इस अवधि मे आर्य समाज एक बार पुन सामाजिक कार्यो मे प्रमुखता से सामने आया। इन्ही वर्षो मे मथुरा मे दीक्षा शताब्दी सम्पन्न हुई विरजानन्द अनुसधान भवन का उद्घाटन हुआ। काशी शास्त्रार्थ का शिला लेख स्थापित हुआ मेरठ [illegible] गोष्ठियाँ नैरोबी, [illegible] पचकूला [illegible] और दिल्ली में [illegible] शताब्दी समारोहों की एक [illegible] शृखला चली। इसके अतिरिक्त 1983 में अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण [illegible] का भी कुशल सयोजन इन्हीं के द्वारा [illegible] था। इस सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने किया था। इसमें लगभग पाच लाख ऋषि भक्तों ने भाग लिया था। भारत मे भूतपूर्व राष्ट्रपति डा राजेन्द्र प्रसाद और डा राधाकृष्णन ने आर्य समाज के विभिन्न समारोहो में उपस्थित होकर उनकी कार्य कुशलता की सराहना की। सन् 1975 मे वाराणसी में आर्यसमाज शताब्दी समारोह के अवसर पर राष्ट्रपति श्री फखरूद्दीन अली अहमद तथा उपराष्ट्रपति श्री बी डी जत्ती ने भी उनकी सराहना की। परोपकारिणी सभा के प्रधान ने श्री सहगल को आर्य समाज के क्षेत्र में की गई उनकी सेवाओ के लिये पदक प्रदान किया। डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के शताब्दी समारोह मे रक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने उनको सम्मानित किया।

सम्मान व प्रशसा श्री सहगल ने 1978 में नैरोबी मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे तथा 1980 में लन्दन मे हुए सार्वभौम आर्य महासम्मेलन मे भारत से जाने वाले एक सौ प्रतिनिधियो का नेतृत्व किया। अप्रेल 1978 मे चण्डीगढ की डी ए वी सस्थाओ की ओर से चमनलाल डी ए वी सीनियर स्कूल पचकूला के वार्षिक समारोह मे उन्हे स्थानीय डी ए वी के प्रसिद्ध नेता जस्टिस पी सी पडित द्वारा स्वर्णपदक देकर सम्मानित किया गया। श्री सहगल ने पिछले 51 वर्षों मे जो आर्य समाज का कार्य किया है उसके लिये श्री मान् जस्टिस पी सी पडित ने उनकी भूरि भूरि प्रशसा की। श्री सहगल वर्षों तक आर्य सम्मेलनों के अवसर पर निकाले जाने वाले जुलूस की व्यवस्था का भार उठाते रहे हैं। जहा उन्हें यह कार्य दिया जाता था वहीं उनकी भी अपनी यह सहज प्रवृत्ति हो गई थी वह इसे अपना ही कार्य समझ कर जुलूस की कमान सभाल लेते थे। इसी प्रवृत्ति के कारण शास्त्री जी के निधन के बाद भी उदयपुर और अजमेर के सम्मेलनो में भी श्री सहगल ने जुलूसों का नेतृत्व किया। श्री शिवकुमार शास्त्री इस युगलबन्दी के लिए [illegible] प्रकाशवीर जी को श्री सहगल के रूप में एक हनुमान मिल गया है।

[illegible] श्री सहगल नेता [illegible] कार्यकर्त्ता हैं। वे अपने को कार्यकर्त्ता ही मानते है। भाषणों की बजाय कार्यों को करने में विश्वास के कारण श्री सहगल वस्तुत कार्यकर्त्ता ही हैं परन्तु भीड़ में सबों [illegible] पीछे चलते हुए नहीं [illegible] भीड़ को आगे चलाते हुए ही देखा जा सकता है। सचालन उनका स्वभाव बन गया हैं। अपनी कर्मठता और सब कामो में आगे रहने की अपनी प्रवृत्ति के कारण वे जहा भी व्यवस्था में त्रुटि अथवा कार्यक्रमों में ताल मेल की कमी और शिथिलता देखते हैं वहा उसे व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए भी श्री सहगल मच पर जाकर माइक सभाल लेते हैं। उनका नेतृत्व का गुण उनकी वाकशूरता के कारण नहीं अपितु उनका कर्म शूरता के कारण है। उन्हें कोई भी कार्य सौंपा जाये उसमे सफलता निश्चित हैं।

लोक सग्रहकर्ता सस्कृत मे एक शब्द लोक सग्रह है जिसके बडे व्यापक अर्थ हैं गीता में जहा इसका अर्थ लोक कल्याण है वहा कालिदास ने इसका अर्थ अधिक से अधिक लोगो द्वारा प्रशसित होना एव उनसे सम्पर्क रखने के रूप मे किया है। सामान्य रूप से इसे लोक प्रियता भी कहा जा सकता है। श्री सहगल मे लोग सग्रहकर्ता का निराला गुण है। अधिक से अधिक लोगों के साथ पत्र व्यवहार निरन्तर बनाये रखना ही श्री सहगल की लोग सग्रहकर्ता हैं। उनकी लोक सग्रहकर्ता में गीता और कालिदास दोनो के अर्थ समाहित है। अनुमानत औसतन श्री सहगल प्रतिदिन 100 से भी अधिक पत्र लिखते हैं। पत्र भेजने में सभवत श्री सहगल का अपना रिकार्ड हैं जो गिनीज बुक में दर्ज करने योग्य है। प्रतिदिन प्रात साय दो दो लिपिक उनक पत्रों को लिखने मे व्यस्त रहते हैं। श्री प्रकाशवीर शास्त्री के स्मृति ग्रन्थों के प्रकाशन की अवधि में मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि श्री सहगल ने एक वर्ष की अवधि में ही लोगो को अपने लेख या विचार भेजने के लिए तथा ग्रन्थो की प्रगति की सूचना देते हुए 5000 से भी अधिक पत्र लिखें। श्री सहगल किसी को भी इस शिकायत का मौका नहीं देते कि श्री सहगल ने उनके पत्र का उत्तर नहीं दिया।

(क्रमशः)

सम्पादकीय......

आर्य बन्धु भ्रान्ति में न आयें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सम्बन्ध में एक भ्रान्त समाचार प्रकाशित हुआ है। मैं इस सम्बन्ध में यहां स्पष्ट कर देना चाहता हू कि 17. 2. 2002 की आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये हैं। इस बैठक में सारे पंजाब से सभा के अधिकारी व अन्तरंग सदस्य सम्मिलित हुए हैं। अन्तरंग सभा ने श्री सुरेन्द्र नाथ जी मुरगई और श्री डा. के. के. यसरीचा को सभा में अनियमितताएं करने व सभा के संगठन को हानि पहुंचाने के कारण उन के पदों से हटा दिया है। अब यह लोग हताश और निराश होकर सभा के बारे में अनाप-शनाप बयान दे रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पंडित हरबंस लाल जी शर्मा के नेतृत्व में व मार्ग दर्शन में कार्य कर रही है। जो लोग गत दिनों किन्हीं परिस्थितियों के कारण सभा के संगठन से बाहर चले गये थे वह लोग भी अब सभा प्रधान श्री हरबंस लाल जी शर्मा में पूर्ण विश्वास प्रकट करते हुए आर्य समाज के प्रचार व प्रसार में जुट गये हैं। श्री सरदारी लाल जी आर्य तथा उन के साथियों ने सभा को अपना पूरा पूरा सहयोग देने का बचन दिया है। वह अब सभा को अपना पूरा-पूरा सहयोग दे रहे हैं। इससे यह स्वार्थी तत्व बौखला उठे हैं क्योंकि अब यह सभा तथा सभा की शिक्षण संस्थाओं को अपने स्वार्थ के लिये प्रयोग नहीं कर सकेंगे और न ही इन्हें ऐसा करने दिया जायेगा। शीघ्र ही 17. 3. 2002 रविवार को सभा कार्यालय में प्रात: साढे 11 बजे सभा से सम्बन्धित पंजाब की सभी आर्य समाजों के प्रधान, मन्त्री व कोषाध्यक्षों की बैठक पंडित हरबंस लाल जी शर्मा सभा प्रधान की अध्यक्षता में पंजाब में वेद प्रचार के कार्य को गतिशील बनाने के लिये हो रही है और उसके अगले ही रविवार 24 3 2002 को सभा कार्यालय में ही सभा के सम्बन्ध में भ्रान्तियां फैलाने वाले व सभा को हानि पहुंचाने वाले तत्वों के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई की जायेगी ताकि आर्य समाज के संगठन को आगे कोई व्यक्ति हानि पहुचाने का प्रयास न कर सके। आर्य जनता इस प्रकार के तत्वों से सावधान व सजग रहे। मैं यहां यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि श्री पंडित हरबंस लाल जी शर्मा ही सभा के प्रधान हैं और उन्हीं की देख रेख में सभा का सारा कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। श्री प्रेम भारद्वाज जी सभा के कोषाध्यक्ष हैं और वह अपना सारा कार्य कोषाध्यक्ष का बड़ी ईमानदारी से निभा रहे हैं। श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा सभा के रजिस्ट्रार हैं और वह भी अपना कार्य सुचारू रूप से कर रहे हैं।

इस समय सभा के कार्यों के लिए सबसे अधिक समय श्री प्रेम भारद्वाज जी व श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा निकाल रहे हैं। गत् दिनों यह कई बार दिल्ली गए, गुरुकुल कांगडी हरिद्वार में गए, आर्य समाज तपा, बरनाला, लुधियाना तथा इसके साथ ही कई स्थानों पर सभा के कार्य हेतु गए। श्री प्रेम भारद्वाज जी अपनी गाड़ी में सभा कार्यों के लिए कई स्थानों पर जाते हैं और उन्होंने सभा से आज तक न पट्रोल का खर्च लिया है और न ही कभी कोई मार्ग व्यय लिया है।

श्री सुदर्शन शर्मा सभा वरिष्ट उप प्रधान, श्रीमती राजेश शर्मा सभा मन्त्री, श्री आशा नन्द जी आर्य सभा उप प्रधान, श्री प्रियतमदेव, श्री सुधीर जी शर्मा तथा दूसरे कई अधिकारी सभा के कार्यों के लिए समय भी निकाल रहे हैं और कार्य भी कर रहे हैं। परन्तु कुच्छ लोग सभा के कार्य में रुकावटें डालने में ही लगे हुए हैं। इस लिए ऐसे लोगों के सम्बन्ध में सभा के साधारण अधिवेशन में 24-3-2002 को विचार किया जाएगा और सख्त से सख्त कार्यवाई की जाएगी।

मुझे उस समय बहुत दु:ख जब श्री सुरेन्द्र नाथ मुरगई के हाथ का लिखा एक प्रैस नोट मैने पढ़ा। श्री पंडित हरवंस लाल जी पर आर्थिक दोष लगाना चांद पर थूकने वाली बात है। जो लोग आज तक पंडित हरवंस लाल जी से हजारों रुपया धोखे से एंठ कर ले गये हैं वह आज उनके बारे में अनाप-शनाप लिख रहे हैं। मैं आर्य जनता की जानकारी के लिए बता दूं कि पंडित हरवंस लाल जी शर्मा प्रति वर्ष कई लाख रुपये का दान देते हैं। अभी-अभी उन्होंने जम्मू कश्मीर में आतंक से पीड़ित लोगों के लिए एक ट्रक खाद्य सामग्री व कम्बलों का पंजाब केसरी ग्रुप के द्वारा भिजवाया है। कोई कार्य हो चाहे वह भूकम्प पीड़ितो की सहायता हो, चाहे कारगिल युद्ध के शहीदों के परिवारों की सहायता का कार्य हो या समाज व राष्ट्र के सामने कोई भी आर्थिक समस्या हो श्री पंडित हरवंस लाल जी वहां दान देने में सबसे आगे की पंक्ति में खडे नजर आते हैं। वह आर्य समाज के भामाशाह हैं उन पर कोई आर्थिक दोष लगाना मैं समझता हूं कि वह एक अपराध है और ऐसा अपराध क्षमा करने योग्य नहीं है। -स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

सभा की गत अन्तरंग सभा के निश्चय अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के प्रधान, मन्त्री व कोषाध्यक्षों की एक आवश्यक बैठक दिनांक 17. 3. 2002 रविवार को सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर में प्रात: 11.30 बजे सभा प्रधान श्री पंडित हरवंस लाल जी शर्मा की अध्यक्षता में होनी निश्चित हुई है। इस बैठक में आप की आर्य समाज के तीनों अधिकारियों का आना आवश्यक है।

इस बैठक का मुख्य एजेंडा पंजाब में आर्य समाज के व वेद के प्रचार व प्रसार की योजना बनाना है और वेद प्रचार के कार्यों को गति देना है। आप अपने विचार एवं सुझाव लिखित रूप से भी साथ लाएं ताकि उन पर निर्णय लेने में आसानी हो। सभा के सभी अधिकारियों की यह हार्दिक इच्छा है कि इन सुझावों से वेद प्रचार का एक निश्चित कार्यक्रम बनाया जाये जिस का सभी पालन करे। इस अवसर पर सन्यासी व विद्वान भी आमंत्रित किये गये हैं।

मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि वेद का प्रचार व प्रसार अधिक से अधिक होना चहिए। इसीलिए मैंने यह 17-3-2002 रविवार को सभा कार्यलाय में बैठक बुलाई है। सभी आर्य समाजों को इसकी सूचना भेज दी गई है। हम इस दिन एक वेद प्रचार की विशेष योजना बनाकर अपना कार्य आरम्भ कर देंगे।

मुझे दु:ख हो रहा है कि 17-12-2000 को सभा का चुनाव हुआ था। एक वर्ष से भी ऊपर हमें कार्य करते हुए हो गया है परन्तु वेद प्रचार की ओर हमारा अभी तक ध्यान नहीं गया। अब भी हमारे पास लगभग दो वर्ष शेष हैं। हम इन दो वर्ष में बहुत कुछ कर सकते हैं। परन्तु इसमें हम सफल तभी हो सकेंगे यदि सभी आर्य समाजों के अधिकारी सभा को अपना पूरा-पूरा सहयोग दें। अब सभा के पास धन की कमी नहीं है, कमी है तो केवल काम करने वालो की हैं जो अपना कीमती समय वेद प्रचार के लिए दें। यह कार्य केवल उपदेशकों द्वारा नहीं हो सकता, जब तक प्रत्येक आर्यबन्धु व बहनें इसके लिए कार्य नहीं करेंगी तब तक हम इसमें सफल नहीं होंगे।

आर्य समाजें अपने उत्सव रखें, पारिवारिक सत्संग रखें, सार्वजनिक स्थानों पर बड़े-बड़े यज्ञ रखें। बड़ी आर्य समाजें छोटी आर्य समाजों को साथ लेकर चलें, उन्हें अपना पूरा-पूरा सहयोग दें। आर्थिक सहयोग भी उन्हें दें। सभा भी अपनी ओर से कार्य करेगी। इस प्रकार सभी मिलकर वेद प्रचार के कार्य को गतिशील करें। मैंने जैसे ऊपर लिखा है आर्यबन्धु अपने सुझाव लिखकर साथ लायें हम उन्हें आर्य मर्यादा में भी प्रकाशित करेंगे और उन पर गम्भीरता से विचार करके योजना भी बनायेंगे।

-स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री।

सभी आर्य समाजें ऋषिबोध पर्व मनायें

मैंने पहले भी लिखा था कि सभी आर्य समाजें ऋषिबोध पर्व बड़े उत्साह से मनायें, मैं फिर आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों से प्रार्थना करता हूं कि वह 12 मार्च 2002 को ऋषिबोध पर्व को आवश्य ही मनायें। मैं समझता हूं कि 12-3-2002 को रविवार नहीं है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि हम रविवार को ही अपने उत्सव मनायें। हमें अपने सभी पर्व उसी दिन मानने चाहिएं जिस दिन वह आ रहे हों।

इस दिन किसी एक विद्वान को बुला कर या आर्य समाज के अधिकारियों में से कोई एक अधिकारी महर्षि के जीवन के बारे में विस्तार से सभी को बताए और महर्षि दयानन्द के गुणों का गान करें।

सभा से सम्बन्धित सभी शिक्षा संस्थाओं में भी यह पर्व आवश्य मनाया जाए और विद्यार्थियों को महर्षि दयानन्द जी के सम्बंध में व आर्य समाज के सम्बंध में पूरी-पूरी जानकारी दी जाए।

-स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री।

चरैवेति का......
(पृष्ठ 2 का शेष)

संस्थाओं के लिए संजीवनी- श्री सहगल 50 से भी अधिक संस्थाओं, संगठनों, ट्रस्टों, गुरूकुलों और विद्यालयों आदि के प्रबन्धक, प्रधान, उपप्रधान, मंत्री, ट्रस्टी, या सदस्य के पदों पर कार्यरत हैं। ऐसी संस्थाओं की एक लम्बी सूची है। श्री सहगल जिस संस्था से भी सम्बद्ध हो जाते हैं। वह संस्था उन्नति करने लगती हैं। अनेक संस्थाएं व संगठन जो निष्प्राण थी, श्री सहगल ने उनको प्राणवान बनाने में संजीवनी बूटी का कार्य किया हैं। अनेक संस्थाएं ऐसी हैं जिनसे श्री सहगल अपना हाथ खींच ले तो वे अगले दिन से ही बंद हो जायें। अलवर जिले में स्थित कन्या गुरूकुल दाधिया के संचालन की सारी आर्थिक व्यवस्था का दायित्व श्री सहगल के कन्धों पर हैं। श्री सहगल में लोगों का विश्वास है तथा उनकी अपील पर लोग उन्हें धन भजते रहते हैं। श्री सहगल को मजाक में धन बनाने की मशीन कहा जाता हैं। यह सब उनकी सम्पर्क साधने की कला का, सबसे सम्पर्क रखने की क्षमता का तथा दान दाता को उनके धन का कहां और कैसे उपयोग हुआ हैं इसकी सूचना देते रहने का परिणाम हैं। इसी प्रकार गुरूकुल गौतम नगर के लिए भी धन सग्रह करने में श्री सहगल की प्रमुख भूमिका हैं। वे इस गुरूकुल का प्रबन्धक हैं। श्री सहगल की योजना है कि सारे देश में लड़कों और लडकियो के जितने भी गुरूकुल है उन सबका एक शीर्ष सगठन बनाया जाये, जिससे सब में एक रूपता रहे और अपने आदर्शो के बनाए रखते हुए उन्हें समय के अनुसार आधुनिकतम शिक्षा का भी महत्वपूर्ण केन्द्र बनाया जाये। आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एव डी ए वी कालेज प्रबन्धक समिति के सचिव एवं डी ए वी द्वारा सचालित अनेक विद्यालयों के अवैतनिक प्रबन्धक के रूप में वे कई वर्षो से कार्यरत हैं। बैंक की सेवा से मार्च 1986 मे सेवामुक्त होने के उपरान्त वे सम्प्रति निम्न संस्थाओं को अवैतनिक रूप से अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं:-

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के मत्री, श्री महर्षि दयानन्द समारक ट्रस्ट टंकारा के मंत्री, डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्ती समिति नई दिल्ली के मंत्री, आर्य समाज अनारकली के मंत्री, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, नई दिल्ली के अध्यक्ष, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ट्रस्ट, नई दिल्ली के प्रधान, वेद प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के सदस्य, श्रीमती परोपकारिणी सभा के ट्रस्टी, टंकारा, समाचार के मुद्रक प्रकाशक, शुद्धि समाचार मासिक के मुद्रक प्रकाशक, डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, मस्जिद मोठ, आर के पुरम् फरीदाबाद, बल्लभगढ़, एन. आई. टी. फरीदाबाद, दयानन्द मॉडल स्कूल, एवं दयानन्द माडल सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली आदि के संस्थापक प्रबन्धक तथा डी. ए. वी. खेखड़ा के संस्थापक प्रधान रहे।

उनका अपना वैयक्तिक जीवन बड़ा सादा और सरल है। प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में निद्रा त्यागने से लेकर रात्रि में निद्रा की गोद में जाने तक उनका प्रत्येक क्षण समयबद्ध कार्यक्रम में सुचालित रहता है।

वेद प्रतिष्ठान और टंकारा ट्रस्ट- श्री सहगल ने अपने जीवन में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं परन्तु वेद प्रतिष्ठान, और टंकारा ट्रस्ट के मंत्री के रूप में उन्होंने जो दो महत्वपूर्ण कार्य किए हैं, उनके लिए श्री सहगल सदा स्मरण किए जायेंगे। श्री सहगल इन दोनों संगठनों के क्रमशः 22 और 42 वर्ष से मंत्री पद का उत्तरदायित्व वहन कर रहे हैं। कोई व्यक्ति इतने वर्षों तक किसी संगठन का मंत्री रहे यह बात अपने आप में ही बड़ी महत्वपूर्ण हैं।

वेद प्रतिष्ठान की स्थापना महर्षि के वेदों के प्रचार कार्य को आगे बढाने के उद्देश्य से 1973-74 मे की गई थी। श्री प्रकाशवीर शास्त्री इसके पहले महामंत्री थे। 1979 में शास्त्री जी की मृत्यु के बाद श्री सहगल इसके महामंत्री बने। स्वामी सत्यप्रकाश के नेतृत्व में तीन वैदिक विद्वानों के सहयोग से प्रतिष्ठान ने 22 खण्डों में चारों वेदो का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करने का प्रशंसनीय कार्य किया। श्री सहगल के मंत्रित्व काल में इसके 20 खण्ड प्रकाशित हुए। अनुवाद तथा प्रकाशन के कार्य में तालमेल बिठाना तथा निरन्तर कार्य की प्रगति पर निगरानी का दायित्व श्री सहगल ने पूरी निष्ठा से उठाया वह महत्वपूर्ण कार्य पूरा हो सका। इस कार्य में 25 वर्ष लग गए। वेद प्रतिष्ठान के प्रेरणास्रोत श्री प्रकाशवीर शास्त्री की स्मृति में तीन खण्डों को प्रकाशित कर एक स्मरणीय कार्य किया है। इस सारे कार्य को भी श्री सहगल की तत्परता, लगन व व्यवस्था से ही पूरा किया जा सका।

महर्षि दयानन्द टंकारा स्मारक ट्रस्ट के मन्त्री के रूप में ऋषि जन्म स्थली का पुनरूद्धार एवं उसका कायाकल्प करना श्री सहगल का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इन कार्यों को करके श्री सहगल ऋषि ऋण से मुक्त हो गए हैं।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने जब 1959 में टंकारा स्मारक ट्रस्ट का कार्य संभाला तभी से उन्होंने श्री सहगल को अपने साथ लेकर उन्हें ट्रस्ट का मंत्री बना दिया। 1975 में जब भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी टंकारा गई थी तब इन्दिरा जी के विमान में श्री शास्त्री जी और सहगल साथ गए थे। इन्दिरा की इस यात्रा के बाद टंकारा ट्रस्ट की गतिविधियों में तेजी आई तथा पिछले 25 वर्षों में टंकारा ट्रस्ट परिसर का रूप ही बदल गया।

टंकारा ट्रस्ट का गठन जिन परिस्थितियों में हुआ था और आज उसका जो रूप हैं उसमें आकाश पाताल का अन्तर है। पहले मौरवी के राजा का लकड़ी से बना दुमंजिला महल ही टंकारा का एकमात्र भवन था। जो पर्याप्त जीर्ण अवस्था में था। आज लगभग पांच करोड़ रूपये से भी अधिक व्यय कर कई दुमंजले और कई एक मंजिले भवन खड़े हो गए हैं। ब्रह्मचारियों के लिए छात्रावास, विद्यालय, सभा भवन, कई अतिथि शालाऐं शिला सभागार एक अत्यधिक सुन्दर और नवीन ढंग की यज्ञशाला आदि बन कर तैयार हैं। सौभाग्य से श्री सहगल को इस कार्य में दिल्ली के तथा कुछ स्थानीय लोग ऐसे सहयोगी मिल गए हैं जिनसे कार्य निरन्तर प्रगति पर हैं, ट्रस्ट की एक बहुत बड़ी उपलब्धि दो वर्ष पूर्व उस स्थल को प्राप्त करना है जहां महर्षि का जन्म हुआ था। यह कार्य वर्षों से लटका हुआ था। आर्यसमाजियों के मनों में टंकारा का एक विशेष भावनात्मक स्थान हैं। इसी भावना के कारण ही टंकारा में शिवरात्री पर [illegible] आकर्षण का केन्द्र बन रहा है। [illegible] की लोकप्रियता भी बढ़ रही है।

[illegible]

में आने वाली इतनी विपुल धन राशि को जुटाना श्री सहगल के ही सामर्थ्य तथा अथक प्रयासों से ही संभव हो सका है। श्री सहगल काम करने का वायदा करके नहीं अपितु काम करके उसे दिखा कर पैसा मांगते हैं। निर्माण कार्य और धन संग्रह का कार्य दोनों साथ-साथ चल रहे हैं टंकारा ट्रस्ट परिसर अब एक ऐसा स्थान बन गया हैं जहां पहुंच कर ऋषि भक्त यह अनुभव करते है कि वस्तुतः ऋषि की पुण्य जन्म स्थली में, एक भव्य तीर्थ में आ गए हैं। टंकारा गांव के निवासियों के लिए भी टंकारा ट्रस्ट परिसर एक आकर्षण और प्रेरक केन्द्र बन गया हैं। इस केन्द्र को सेवा, ज्ञान और कर्म का क्षेत्र बनाने के लिए ट्रस्ट के सदस्य निरन्तर प्रयत्नशील हैं। ट्रस्ट के इन सारे कार्यों की धूरी या केन्द्र श्री राम नाथ सहगल हैं उनके परिश्रम व लगन से ट्रस्ट के पथ का पहिया घूम रहा है। श्री सहगल के वेद प्रतिष्ठान और ट्रस्ट के काम केवल काम नहीं है अपितु उसका सम्बन्ध उनकी भावना और आत्मा से हैं। ये दोनों ही उनके प्राण है। उनका ध्येय वाक्य है चलते रहो, रूको नहीं। चरैवेति, चरैवेति। समाज के लिये भावी कार्यकर्ताओं के निर्माण में सहगल जी अपने उदबोधनों द्वारा बच्चों को आर्य समाज में लाने का निमन्त्रण देते रहे हैं और इस क्षेत्र में अपने एक मात्र पुत्र को आर्य संस्कृति से संस्कारित कर सेवा क्षेत्र में उतारा है प्रतिदिन यज्ञ करने वाले सहगल जी के परिवार में पुत्र, पुत्रवधू एवं दो पौत्र सभी यज्ञ प्रेमी हैं। अपनी एक मात्र बेटी को सुसंस्कृत कर विवाह उपरान्त भी आर्य समाज से जुड़े रहने की प्रेरणा दी आप दिल्ली स्थित आर्य समाज में मंत्राणी पद पर अपनी सेवायें दे रही हैं।

किसी भी संगठन को भी श्री सहगल जैसे निष्ठावान, सेवाभावी कार्यकर्त्ता या संचालक सौभाग्य से मिलते हैं आर्य जगत में इस समय उनके जैसा कर्मठ व्यक्तित्व शायद विरला ही और हो। श्री सहगल चिरजीवी हो तथा महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के कार्यों को इसी प्रकार करते रहे, यही हार्दिक कामना हैं।

[illegible] है फिर से 'संस्कृत' का युग

ले० डॉ. [illegible], श्रीगंगानगर, राजस्थान

[illegible] कम्प्यूटर के ऊंचे पद पर बैठने वाली, [illegible] पहले ज्ञान-विज्ञान के भंडार को अपने आंचल में समा लेने वाली, सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में आबद्ध करने वाली, ज्ञान-गरिमा-गाम्भीर्य और चरित्र-दर्शन की साक्षात् प्रतिमास्वरूप, समस्त भाषाओं की जननी यदि कोई भाषा है तो वह है-संस्कृत।

यह सच है कि आजादी के पश्चात् संस्कृत को जो गौरव और सम्मान प्राप्त होना चाहिए था वह नहीं हुआ इसके विपरीत कई राजनैतिक और सामाजिक कारणों से उसका ह्रास होता चला गया। स्थिति यह हो गई कि संस्कृत को केवल कर्म-कांड की और साहित्य की भाषा माना जाने लगा और यह धीरे-धीरे लोग व्यवहार से हटती चली गई जबकि वास्तविकता यह है कि समूचे राष्ट्र को यदि कोई भाषा एकता के सूत्र में बांध सकती है तो वह 'संस्कृत' ही है। स्वयं डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कहा है था कि 'संस्कृत भारत की राजसभा बननी चाहिए।' लेकिन संस्कृत को एक अत्यंत कठिन और व्यवहार के लिए अनुपयोगी भाषा मानकर एक प्रकार से त्याग दिया गया। उसे 'देववाणी' की सुन्दर उपमा देकर केवल देवताओं की भाषा मानते हुए पूजा की वस्तु बना दिया गया।

किन्तु ह्रास और अपेक्षा के दौर के पश्चात् अब फिर से संस्कृत के विकास का दौर प्रारम्भ हो गया है। पिछले कुछ वर्षों में संस्कृत भाषा का प्रचार-प्रसार बड़े पैमाने पर प्रारम्भ हो गया है। न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी संस्कृत पढ़ने वालों और बोलने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है। आज यदि कोई यह समझता है कि संस्कृत के पढ़ने वाले बहुत कम हैं या यह कहीं भी व्यवहार में नहीं लाई जाती है या फिर संस्कृत केवल पूजा-पाठ की ही भाषा है अथवा आज के आधुनिक कम्प्यूटर युग में संस्कृत का कोई स्थान नहीं है और यह एक मृत भाषा है, तो वे यह जान लें कि वे आने वाले युग की पदचाप को नहीं पहचान पा रहे हैं। कारण स्पष्ट है।

भारत में छः राज्यों हिमाचल प्रदेश, देहली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और गुजरात में उच्च प्राथमिक कक्षाओं में संस्कृत अनिवार्य रूप में पढ़ाई जाती है। विद्या भारती जैसे अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान के सोलह हजार विद्यालयों में दूसरी कक्षा से ही अनिवार्य विषय के रूप में संस्कृत पढ़ाई जाती है। भारत में नौ संस्कृत विश्वविश्वविद्यालय हैं-जयपुर, वाराणसी, दरभंगा, पुरी, तिरुपति, कालडी, नागपुर, जबलपुर और देहली में। सामान्यतः पाँच हजार संस्कृत विद्यालय और महाविद्यालय हैं। सात संस्कृत अकादमियाँ हैं। 93 विश्वविद्यालयों में संस्कृत प्रचार परिषदें हैं। सात संस्थाओं के द्वारा पत्राचार माध्यम से संस्कृत पढ़ने वाले तीन करोड़ छात्र हैं। सामान्यतः पाँच लाख संस्कृत शिक्षक हैं। संस्कृत को ही प्रधान विषय के रूप में लेकर पढ़ने वाले छात्र तीन लाख हैं। तीस से अधिक पत्र-पत्रिकाएं संस्कृत में प्रकाशित होती हैं। हमारे देश की वर्तमान लोकसभा के 34 सांसदों ने संस्कृत में शपथ ग्रहण किया। और राज्य सभा के भी बहुत से सदस्यों ने संस्कृत में शपथ ग्रहण किया। भारत की संसद में संस्कृत के भी अनुवादक है। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर संस्कृत माध्यम से समाचार प्रसारित होते हैं। जर्मन रेडियो भी संस्कृत में कार्यक्रम प्रसारित करता है।

कम्प्यूटर के लिए संस्कृत को सर्वाधिक उपयुक्त भाषा घोषित किया गया है। इंडियन इन्सटीच्यूट ऑफ इन्फॉरमेशन टेक्नोलोजी, हैदराबाद में संस्कृत कम्प्यूटर के संबंध में शोधकार्य चल रहा है। संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित संस्था 'संस्कृत शिक्षण की दो CD ROM बनाई है। इंटरनेट पर भी संस्कृत का शिक्षण आरम्भ हो गया है। इंटरनेट पर संस्कृत भारती का Homepage address है: www. samskrita. bharati org. हाल ही में संस्कृत-भारती की अमेरिका स्थित शाखा ने अमेरिका में प्रथम इंटरनेट पत्रिका 'अपूर्ववाणी' का लोकार्पण किया है। यह इंटरनेट पत्रिका द्वैमासिकी है। अपूर्ववाणी पत्रिका को इंटरनेट http /www. samskrita-bharati ort/apurvavani/apurvavani/ sharat 5103 pdf पर देखा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त हैदराबाद में स्थित 'वेद-भारती' संस्था ने वेदों के तेइस CD ROMS निर्मित किए हैं। तिरुपति राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में 'संस्कृत साइंस सेंटर' का शिलान्यास हो चुका है। विश्व के पैंतीस देशों में 450 विश्वविद्यालयों में संस्कृत का पठन-पाठन होता है। सम्पूर्ण विश्व में सर्वत्र वेदान्त, आयुर्वेद, योग, ध्यान, गीता आदि भारतीय विद्याओं तथा विषयों का अध्ययन करने वाले छात्रों ने अब संस्कृत भाषा का अभ्यास शुरू कर दिया है ताकि वे उन विषयों के मूल ग्रंथो को पढ़ सकें। सम्पूर्ण भारत में अनेक 'संस्कृत-सम्भाषण-शिविरों' के द्वारा सरल संस्कृत बोलचाल का ज्ञान दिया जा रहा है। भारत से बाहर भी संस्कृत प्रचार-प्रसार हो रहा है। अमेरिका में प्रतिवर्ष बहुत से संस्कृत संभाषण शिविर होते हैं। लंदन में 'सेन्ट जेम्स इंडिपेन्डेंट स्कूल' में पहली कक्षा से ही अनिवार्य भाषा के रूप में संस्कृत भी पढ़ाई जाती है। नेपाल में भी एक संस्कृत विश्वविद्यालय है एवं दक्षिण अफ्रीका के संविधान मे संस्कृत को भी मान्यता दी गई है।

अपने यहां महाराष्ट्र और कर्नाटक में कुछ संस्कृत माध्यम से विद्यालय भी प्रारंभ हो गए हैं, जहां सभी विषय संस्कृत माध्यम से ही पढ़ाए जाते हैं।

इन सबके अतिरिक्त प्रतिवर्ष संस्कृत की अनेक नई पुस्तकें प्रकाशित होती है। संस्कृत गीतों की कुछ ऑडियो कैसेट्स भी निर्मित की गई हैं, जिनका सुमधुर संगीत किसी भी फिल्म एलबम या पॉप एलबम से किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। बच्चों की प्रसिद्ध बालपत्रिका 'चंदामामा' संस्कृत में भी प्रकाशित होती है। 'सभाषण-संदेश:' संस्कृत की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका है।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने यू जी सी. द्वारा देश के सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों मे 'सरल संस्कृत संभाषण केन्द्र' प्रारम्भ किया है। इसके लिए प्रशिक्षक तैयार करने का कार्य संस्कृत भारती के द्वारा, प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से किया जा रहा है।

सी बी एस सी पाठ्यक्रम में भी अनिवार्य रूप से संस्कृत को पढ़ाने का कार्यक्रम लागू हो चुका है। इसी क्रम में देश भर में सीनियर हा, सैकेण्डरी स्तर पर भी इस प्रकार का संस्कृत संभाषण पाठ्यक्रम लागू करने की योजना है। इसे क्रमशः उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर तक विस्तार दिया जाएगा।

इस प्रकार देश भर में लाखों विद्यालयों में करोड़ों विद्यार्थियों को प्रारंभिक समय में ही संस्कृत वार्तालाप संस्कृत माध्यम से सिखाया जा सकेगा। इस महती कार्यक्रम के लिए लाखों संस्कृत भाषा रोजगार के नवीन द्वार खोलने जा रही है। बस आवश्यकता इसी बात की है कि प्रत्येक भारतवासी आलस्य और शंकाएँ त्याग कर इसके स्वागत और उत्थान के लिए उठ खडा हो। इस प्रकार अगले पांच-दस वर्षो मे भारत मे संस्कृत के चित्र मे गौरवपूर्ण परिवर्तन होगा। सस्कृत के विकास के इस क्रांतिकारी अभियान के प्रारंभ हो जाने से इसमे कोई संदेह नहीं है कि संस्कृत का युग फिर से आ रहा है और यह सदी 'संस्कृत शताब्दी' होगी।

जयतु संस्कृतम। जयतु भारतम्॥

सफलता के पथ पर

☐ले० छाजूराम शर्मा शास्त्री, १२६ [illegible] डी०डी०ए० फ्लैट, [illegible] बदरपुर-44, नई दिल्ली

प्रत्येक मनुष्य स्वाभाविक ही अपने कार्य में सफलता चाहता है। सफलता उसका साध्य है तो उसके साधन क्या हैं, इसे विरले ही बुद्धिमान् जानते हैं। उन्हीं को सफलता मिली है। बिना साधन के साध्य-प्राप्ति की आशा करना बालू में से तेल निकालने के समान दुराशामात्र है। उन साधनों का वर्णन करना ही इस लेख का मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य को वे विचार चाहिये जिन पर आचरण करके उसे सफलता मिलती है।

मनुष्य जीवन विचारों से बना हुआ है। उच्च विचार उसे महान् बनाते हैं तो नीच विचार उसे तुच्छ बनाते हैं। उन्नति करना, आगे बढ़ना मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। वेद का सन्देश है-"उद्यानं ते पुरुष नावयानम्" इसी को अंग्रेजी के विद्वान् यों कहते हैं-"O Man! Thou art born to risth not to fallth" ऐ मानव! तू ऊपर उठने के लिए, विकास व सफलता प्राप्त करने के लिए उत्पन्न हुआ है, नीचे गिरने व असफलता के लिए नहीं।

सफलता के लिए आशावादी बनना यह पहली शर्त है। निराशावाद के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं है, आशा उत्साह की जननी है। सफलता का यह प्रथम साधन है। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर, आत्मसम्मान, स्वावलम्बन, समय की पाबन्दी, अध्यवसाय, सच्चरित्रता, ईमानदारी, परिश्रम, धैर्य, उत्साह आदि विशिष्ट गुणों का होना आवश्यक है। इनके अभाव मे दूसरों की असह्य अत्याचारों से पूर्ण दासता सहते हुए नीचों के अधीन रहना पडता है।

समय का सदुपयोग करें- मनुष्य जीवन का एक-एक क्षण बहुमूल्य है। इसे आलस्य, झगड़े-फसाद और व्यर्थ के कामो में नष्ट न करना चाहिये। निम्न उदाहरण हमारा दिशा-निर्देश करता है-

अमरीका निवासी एक मोची चार्ल्स सी० फ्रौस्ट ने अपने जूता बनाने के पेशे से एक घण्टा बचाकर गणित अध्ययन में दस वर्ष परिश्रम किया। फलतः वह संसार के उच्च गणितज्ञों में विख्यात हो गया। यह उसकी अनुपम साधना व श्रम का सुपरिणाम था।

हमें भी दृढ़ आत्मविश्वास के साथ अपने समय का सदुपयोग करते हुए अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहिये। निराशा और असफलता के विचारों को हृदय से निकालकर परिश्रम करना चाहिये। फिर सफलता की मंजिल निकट ही समझो। ऋग्वेद २८।८ का लेख है-

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय।
स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः॥

अर्थात् देव लोग श्रमशील व्यक्ति को ही चाहते हैं। आलसी और प्रमादी को नहीं। मनुष्य के अन्दर अनेक शक्तियाँ विद्यमान हैं। लेकिन उन्हें जगाने की आवश्यकता है। उसे जैसा वातावरण मिलता है, वैसा ही उसका विकास होता है। मनोविज्ञान के एक बड़े विद्वान् डा० करल जुंग का कथन है-

"Every Man has with in him something of the Criminal the gonius and the saint."

अर्थात् प्रत्येक मनुष्य अपराधी भी बन सकता है। बुद्धिमान् विद्वान् एवं महापुरुष भी बन सकता है।

विश्व के इतिहास में अनेक पापी सन्त बन गये हैं। कालीदास जैसे व्रज-मूर्ख चोटी के विद्वान् हो चुके हैं। **"यादृशो विचारो यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।"** जैसे जिसके विचार होते हैं। वह वैसा ही बन जाता है। सभी प्रकार के गुण-दोष मानव मस्तिष्क में वर्तमान हैं। उन्हीं के आधार पर व्यक्ति का उत्थान-पतन होता रहता है। इस प्रसंग में हम एक और महापुरुष का वर्णन करना आवश्यक समझते हैं। उसका नाम था 'जेम्ज कार फिल्ड' जिसको बहुत कम भारतीय जानते हैं। वह एक मजदूर का बालक था। नौ वर्ष की आयु में उसके गरीब पिता की मृत्यु हो गयी। निदान जेम्ज को अल्प आयु में ही अपनी विधवा [illegible] कारखाने में काम करना पड़ा। एक दिन उसने कुछ लड़कों को स्कूल जाते देख कर अपने साथियों से पूछा-ये कौन हैं, कहाँ जा रहे हैं? गरीब बालकों ने बताया कि 'ये अमीरों के बालक हैं' स्कूल में पढ़ने जा रहे हैं। जेम्ज ने भी पढ़ने की इच्छा व्यक्त की और अपनी मां को बताया। मां ने कहा-बेटा! तुम्हारी विधवा मां गरीब है, कैसे पढ़ोगे?

मैं अवश्य पढूंगा। जेम्ज ने साहसपूर्वक मां से कहा। यह चर्चा अमरीका की है। जहाँ गरीब बालकों को सोलह घण्टे काम करना पड़ता था। जेम्ज ने एक 'Agricalture Farm' में नौकरी कर ली। वह रात को पढ़ा करता था। कुछ समय बाद उसने एक स्कूल में घण्टी बजाने का काम ले लिया, पढ़ता भी रहा। उसका परिश्रम रंग लाया। आगे चलकर वह अमेरिका का प्रेसीडेण्ट बना। वह पचास भाषाओं का ज्ञाता भी था। उसके साहस, परिश्रम व लगन ने उसे कहां से कहां पहुँचा दिया। इससे श्रम का महत्त्व प्रकट होता है।

इसके विरुद्ध बहुत से भारतीय छात्र अपने माता-पिता के परिश्रम की कमाई से पेट भरते हैं। सिनेमा देखने, सिगरेट पीने, ताश खेलने और गप्पें मारने में अपना समय नष्ट करते हैं और श्रम से जी चुराते हैं। आज जर्मन-जापान क्यों उन्नति कर रहे हैं? इसलिए कि वहां का युवावर्ग परिश्रम के जीवन से प्यार करता है और अपने विकास कार्यों में समय लगाता है। किसी राष्ट्र, समाज अथवा व्यक्ति की सफलता परिश्रम पर निर्भर है। उसके लिए दृढ़ संकल्प चाहिये। दृढ़ संकल्पी के सामने संसार झुकता है। उसके लिए प्रत्येक वस्तु सहायक बन जाती है। बाधाएं दूर होती हैं और एक नवशक्ति का संचार होता है। वेद का वाक्य है-ओ 'न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।' देवता तब तक मनुष्य की सहायता नहीं करते, जब तक व्यक्ति खूब थक न जाये। इसे अंग्रेजी में कहते हैं-'God helps those, who help their them seilves' ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं। [illegible] वे ही उपभोग करते हैं। [illegible] की सब से बड़ी पूजा श्रमपूर्वक काम करना है। गीता भी कर्मयोगी बनने का सन्देश देती है। आलस्य वा निठल्लापन जीवन के लिए अभिशाप है।

सिकन्दर ने पैरिस जीतने के बाद कहा था कि परसियन की विलासिता की दासता ही उनकी हार का कारण है। दिल्ली सम्राट् पृथ्वीराज की विलासिता एवम् आलस्य ने ही भारत में गौरी के पैर मजबूत किये। वह शक्तिशाली होकर भी मारा गया। सफलता का राज दृढ़ संकल्प, दृढ़ आत्मविश्वास, पूर्ण साहस, धैर्य और परिश्रम में है। अंग्रेजी में प्रसिद्ध कहावत है-"Hard Work is the Key to Sucess" अर्थात् परिश्रम ही सफलता की कुञ्जी है। मनुष्य के भाग्य का निर्णय परिश्रम करता है। आलस्य मनुष्य को अवनति के गड्ढे में डाल देता है। कर्मशील परिश्रमी व्यक्ति ही सच्ची शान्ति का आनन्द लेता है। श्रमहीन न साहसहीन आलसी व्यक्ति कायर व मृतक समान होते हैं। उनसे न राष्ट्र को लाभ है, न समाज को। विश्व के महामानवों की सफलता का कारण उनका परिश्रम, लगन और आत्मविश्वास रहा है।

ध्यान रहे! यत्न करने पर भी यदि सफलता न मिले तो साहस न छोड़ना चाहिये। गिर गये तो फिर उठो। 'गिरते हैं शहसवार ही मैदाने जंग में' जो कभी चढ़े ही नहीं, वे गिरेंगे क्या? साहसी व्यक्ति असफलता में भी सफलता के दर्शन करते हैं। उनके हृदय में फिर से उठने का साहस भर जाता है।

जीवन में गिर कर जो उठने का
नाम न ले वह मुर्दा है
गिरकर उठना उठकर चलना
जीवन की यही निशानी है॥

संघर्ष ही जीवन है। जीवन का मूल्य वही जानता है जो संघर्षों से टक्कर लेता है।

जहाजों से जो टकराये उसे
तूफान कहते हैं।
जो तूफानों से टकराये उसे
इन्सान कहते हैं॥

(शेष पृष्ठ 11 पर)

वैदिक राष्ट्र

□ [illegible] दीवान, अलीगढ़ (उ०प्र०)

(गतांक से आगे)

मानव शरीर में संकल्प उत्पन्न होते हैं। मन अतीव तर्क-वितर्क पूर्वक उन संकल्पों पर सुनिश्चित होकर उन्हें बुद्धि को सौंप देता है, प्रशासन तन्त्र को तदनुसार कार्य करने का निर्देश कर देता है किन्तु प्रशासन व्यवस्था ढीली, निर्बल अथवा जर्जर है तो वह कैसा भी उत्तम संकल्प क्यों न हो लागू नहीं हो पाता और वह लागू नहीं होता तो उसका फल प्राप्त नहीं हो पाता। लागू हो, ढीलेपन से हो, त्वरित गति से न हो, विलम्ब से हो, तब भी उसका वह लाभ-जो होना चाहिये, नहीं हो पाता। उस लोकोक्ति वाली स्थिति हो जाती है "का वर्षा, जब कृषि सुखानी" एतदर्थ दोनों तत्वों, ब्रह्म और क्षत्र में सन्तुलन और सहकारिता परमावश्यक है।

मन्त्र की दूसरी पंक्ति है। "तं लोकं पुण्य प्रेक्षषं यत्र देवा: सहग्निना" इस पंक्ति में पुण्य, पवित्र, उत्तम लोक-राष्ट्र उसी को बताया है, जहां के देव अर्थात् विद्वान तेज, अग्नि, क्षत्र-शक्ति के साथ रहते हैं। जिस देश के विद्वानों को क्षत्र शक्ति द्वारा संरक्षण प्राप्त रहता है, जहां-जिस देश में क्षत्र-बल, ब्राह्मणों, मनीषियों, विचारकों को संरक्षित और सुरक्षित रखता है, उसी देश में नित नये अनुसन्धान, आविष्कार तथा परीक्षण होते रहते हैं, वही देश वास्तविक अर्थों में राष्ट्र बन पाता है अन्यथा वह मात्र भूमि का एक भाग, एक क्षेत्र मात्र है, जहां दो हाथ दो पैर का आदमी नामक प्राणी रहता है। मात्र इस प्रकार के प्राणी समूह को राष्ट्र नहीं कहा जा सकता। राष्ट्र की परिकल्पना के मन में आते ही मस्तिष्क कह उठता है कि जहां ब्रह्म और क्षत्र ठीक प्रकार कार्य कर रहे हों, जहां के ब्राह्मणों और क्षत्रियों में पारस्परिक सहकारिता पूर्वक सहयोग हो, जो स्वदेश के हित में मिलजुल कर स्व-स्व कर्तव्यों को पूर्ण करने में लगे रहते हों, वही देश 'राष्ट्र' कहलाने का अधिकारी होता है।

साथ-साथ तो भेड़ों का झुण्ड भी चरता रहता है किन्तु यदि भेड़िया आ जाय तो प्रत्येक को अपने ही प्राण बचाने की सूझती है, उनमें सहकारिता, सहयोग का तत्व नही होता। जब भेड़ों को चराने के पश्चात् भेड़ों वाले सायं काल अपने घरों को लौटते हैं तो अपनी-अपनी भेड़ों को हॉक कर अपने-अपने बाड़े में बन्द कर देते हैं और भेड़ें उनके डण्डे के प्रभाव से उनके आगे-आगे चल देती हैं।

संसार के किसी भी क्षेत्र, किसी भी देश में रहने वाले व्यक्तियों की भी जब तक उनमें सहभागिता, सहकारिता और सहयोग की भावना जागृत नहीं होती भेड़ों वाली ही स्थिति रहती है। कोई भी बाहुबली, कोई भी शक्ति और सामर्थ्य सम्पन्न व्यक्ति उन्हें भेड़ों की भांति हांकता रहता और उन पर शासन करता रहता है। इस स्थिति से उबारने का कार्य होता है ब्रह्मशक्ति के द्वारा। मानवता का वास्तविक हित सम्पादन तो ब्रह्म शक्ति से ही होता है और ब्रह्मत्व सामान्य जन में नहीं होता। यह तो उन्हीं में होता है जो जन्मजन्मान्तर के संस्कारों से संस्कारित होते हैं। ऐसे संस्कारित जन अपनी ब्रह्मशक्ति के द्वारा बृहद् जन समूह मे से कुछ ऐसे व्यक्तियों का चयन कर लेते हैं। जो अन्य की अपेक्षा कुछ सूझ-बूझ वाले होते हैं तथा ब्रह्मशक्ति सम्पन्न जन से ज्ञान प्राप्त कर उनके निर्देशानुसार उनको सहयोग करते हुए कार्य क्षेत्र में उतरते हैं और इस प्रकार इन दोनों के सहकार से वास्तविक शासन सत्ता की स्थापना होती है। वही शासन-सत्ता अपने देश को सुनियोजित ढंग से राष्ट्र में परिवर्तित कर देती है अर्थात् सर्वसाधारण जन में भी राष्ट्रीय भावनाओं को भर देती है।

राष्ट्र बन जाने पर ब्रह्म और क्षत्र का सहयोग तो रहना ही चाहिये और इसी रूप में बना रहना चाहिये, जिस रूप में वेद के उपर्युक्त मन्त्र मे बताया गया है। इतना सब होने पर भी कोई देश (कोई राष्ट्र बना हुआ) राष्ट्र भी 'पुण्य-प्रेक्षष' पवित्र जाना जाने योग्य वास्तविक रुप में नही बन जाता, जब तक इस मन्त्र के अन्तिम वाक्य 'यत्र देवा: सहाग्निना' के अनुरुप नही हो जाता।

(यत्र) जहां (देवा:) विद्वान (सह-अग्निना) अग्नि के, तेज के साथ नहीं रहते। क्षत्रशक्ति-शासनतन्त्र उन्हे सुरक्षा प्रदान करता रहे, जिससे उनके द्वारा नवीन नवीन अन्वेषण होते रहें। वह ब्रह्मशक्ति सम्पन्न लोग राष्ट्र की मेधा, राष्ट्रीय प्रज्ञा होते हैं, परन्तु इस वाक्य में एक और महान् भाव, गम्भीर रहस्य भी भरा हुआ है कि वह देवस वह ब्रह्मशक्ति सम्पन्न लोग क्षात्रशक्ति से रक्षित तो रहें किन्तु उनमें स्वयं में भी अग्नि, तेज होना चाहिये। 'सह-अग्निना' वह स्वयं भी अग्नि, तेज सहित हों, तेजस्वी हों,। स्मरण रखिये कि 'परान्न भोजी' ब्राह्मणों से राष्ट्र हित सम्पादन सम्भव नहीं। ऐसे लोगों का आत्मा मृत ही समझिये। ऐसे लोगों में मनोबल नही रहता। परान्न भोजियों के विषय में एक श्लोक यहां प्रस्तुत किया जाता है:-

भोजनं कुरु दुर्बुद्धे मा शरीरे दयां कुरु।
परान्न दुर्लभं लोके शरीराणि पुन: पुन:॥

परान्न भोजी, दूसरे के अन्न पर जीने वाले लोगों में हीनता की भावना इस सीमा तक भर जाती है कि उन्हें खाते समय यह भी विश्वास नही रहता कि दूसरे दिन तो क्या? जाने दूसरे समय भी भोजन मिलेगा या नही। ऐसे ही पेटार्थी पुजारियों का वर्णन उपर्युक्त श्लोक में किया गया है।

पण्डित जी अपने पुत्र सहित किसी यजमान के यहां निमन्त्रण पर गये हुए भोजन कर रहे थे, और बार-बार अपने पुत्र को अधिकाधिक खाने के लिये इंगित तथा आग्रह कर रहे थे। लड़के का पेट भर चुका था, उसके पेट में सांस लेने को भी स्थान नही था, भोजन मुँह में से बाहर लौट-लौट कर आ रहा था, तब पेटार्थी पण्डित जी ने संस्कृत श्लोक में बेटे को अपनी बात कही, जिससे यजमान न समझ सके। उसने कहा:-

दुर्बुद्धि, मूर्ख! भोजन कर, शरीर पर दया मत कर। पराया अन्न संसार में कठिनता से मिलता है, शरीर तो बार-बार मिलते ही रहते हैं। मर जायगा तो फिर भी शरीर तो मिल ही जायगा, क्योंकि पुनर्जन्म होना ही है, परन्तु यह पराया अन्न, दूसरे की परिश्रम की कमाई का अन्न संसार में कठिनता से प्राप्त होता है। ऐसे ब्राह्मणों की राष्ट्र को आवश्यकता नहीं। यह पेटार्थी तो देश की खाद्य समस्या पर भार तथा राष्ट्र को निर्बल और सत्वहीन बनाने का कार्य करते हैं। राष्ट्र को वास्तविक अर्थों में राष्ट्र को सबल तथा समर्थ वही ब्राह्मण बना सकते हैं, जो उपर्युक्त मन्त्र द्वारा 'देवा:सहाग्निना' वाक्य में वर्णित है अर्थात् कोई ब्रह्मशक्ति, ब्रह्म विवेचक, आध्यात्मिक और वह भी वाचिक, शाब्दिक आत्मज्ञान वाले नहीं अपितु अग्नि से, तेज से युक्त हों अर्थात् ब्रह्म तेज भी जिनमें भरा हो, जो स्वात्माभिमान भी रखते हों।

महाभारत काल के ऐसे एक ब्राह्मण की चर्चा कर देना भी इस प्रसंग में उपयोगी है अतएव उसे वर्णित कर रहा हूं। द्रूपद और द्रोण दोनों गुरु भाई थे, सहपाठी रह चुके थे। तब दोनों में परस्पर मित्रता हो गयी थी, प्रसाद मैत्री-ऐसी मैत्री कि एक बार अपनी मैत्री की भावना से अभिभूत हुए युवक द्रूपद ने अपने मित्र द्रोण से कहा, मित्र! अब कुछ दिन बाद हम लोग गुरुकुल से स्नातक होकर अपने-अपने घर चले जायेंगे। मैं राजपुत्र हूं अत: यदि कभी कोई ऐसा अवसर आये कि आपको मेरी सहायता की आवश्यकता अनुभव हो तो आप निसंकोच मेरे पास चले आना।

दैव दुर्विपाक से द्रोण की स्थिति निर्धन सुदामा वाली हो गयी और तब वह द्रूपद से सहायता प्राप्ति की दृष्टि से उसके पास गये। द्रूपद अब राजपुत्र नही अपितु पांच्चाल नरेश बनकर शासन सत्ता के सुखोपभोग में डुबे हुए थे। प्रसिद्ध लोकोक्ति है 'प्रभुता पाय काहि मद नाही' द्रूपद जी को भी राजमद चढ़ा हुआ था। वह कृष्ण तो थे नहीं, जो सुदामा की दीन दशा देखकर रो पड़ते। यह तो थे द्रूपद और पांच्चाल नरेश महाराजा द्रूपद।

बेचारा द्रोण द्वार पर गया, महाराजा को सुचना दी तो उन्होंने अन्दर बुलवा लिया और परिचय तथा आने का कारण कृपा करके पूछ लिया। द्रोण ने जब पिछली स्मृति दिलायी तो द्रूपद ने कहा, मैं तो लेश मात्र भी तुम्हे नही पहचानता, हो सकता है मेरे विद्यार्थी जीवन में आप मेरे साथ पढ़े हों, तब न जाने कितने और कौन-कौन विद्यार्थी वहां पढ़ते थे, मैं किस-किस को पहचान सकता हूं। द्रोण नामक भी कोई रहा होगा परन्तु मेरी किसी से कोई मित्रता नहीं हुई। यदि हुई भी हो तो तुम ही मेरे साथी द्रोण हो, इसका निर्णय करने का मेरे पास कोई आधार नही।

द्रूपद का यह उत्तर सुनकर द्रोण का ब्राह्मणत्व जाग उठा तो उन्होने कहा द्रूपद आज आप सम्राट हो तो अपने अनन्यतम सखा से भी इस प्रकार का व्यवहार कर रहे हो,

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सफलता के....
(पृष्ठ 6 का शेष)

अग्नि सोने को परखती है तो आपत्तियाँ मनुष्य को परखती हैं। एक शायर ने कहा-

सुर्खरू होता है इन्सा ठोकरें खाने के बाद।
रंग लाती है हिना पत्थर पै घिस जाने के बाद॥

सघर्षों से जूझना जातियों और राष्ट्रो मे नवजीवन प्रदान करता है। जीवन का पुष्प काटो मे ही खिलता है और नर्म शय्या पर गिरते ही मुर्झा जाता है। अत सफलता के लिए सघर्ष को स्वीकार करना चाहिए।

अग्रेजी मे सफलता को 'Success' (सक्सैस) कहते हैं। इस शब्द मे तीन (S) सुदृढ शरीर का प्रतीक है। दूसरा (S) सुदृढ मन का और तीसरा (S) सुदृढ आत्मा का प्रतीक है। इसका अर्थ हुआ कि जो व्यक्ति शरीर मन और आत्मा से स्वस्थ है सफलता उसी के लिए है। वह जो चाहे प्राप्त कर लेगा। 'मन चाहा फल उसको ही मिला जो आलसी बन के पड़ा न रहा' रोगी और दुर्बल व्यक्ति का कोई भविष्य नहीं। जीवन के मधुर फलो का वह आस्वादन नहीं कर सकता। अत सफलता के लिए स्वास्थय भी एक साधन है। आज तो दूसरी की चिकित्सा करने वाले डाक्टर भी रोगी देखे जाते हैं। भाँति भाँति के टॉनिक खाते हैं। यदि प्राकृतिक नियमो का पालन करे तो टॉनिक खाने की आवश्यकता ही न रहेगी। शक्ति का स्त्रोत कहीं बाहर न होकर अन्दर ही है। शक्ति के लिए अण्डे माच खाने वाले व्यक्ति स्वय को धोखा दे रहे हैं। ये दूषित पदार्थ शक्ति तो क्या देगे उल्टे शक्ति का ह्रास करते हैं। मासाहारी व्यक्ति बहादुर [illegible] हो सकता है किन्तु बहादुर नहीं। बहादुरी शरीर का विषय है नहीं, अपितु मन और आत्मा का विषय है।

सफलता के इच्छुक व्यक्ति को इसके अतिरिक्त साहस व धैर्य से परिश्रमशील जीवन पर विश्वास रखना चाहिये। किसी शायर ने कहा-

कदम चूम लेगी-खुद आके मंजिल।
मुसाफिर अगर अपनी हिम्मत न हारे॥
मुश्किलें दिल के इरादे आजमाती हैं।
स्वप्न के पर्दे निगाहो से हटाती हैं॥
हौसला मत हार गिरकर ओ मुसाफिर।
ठोकरे इन्सान को चलना सिखाती है॥

एक युग था, जब भारतीय लोग साहस एव बेजोड वीरता के लिए विश्व मे विख्यात थे। यहाँ के युवक-युवतिया वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत के ज्ञान से अनुप्रणित थे। आज उसके अभाव में वह उत्साह और वीरता दिखाई नहीं देती। विश्व के महापुरुषो के जीवन में हमें उनके अनुपम शौर्य, धैर्य, साहस व पराक्रम के दर्शन होते हैं। ससार शक्ति की पूजा करता है। दुर्बल व्यक्ति का कोई साथ नहीं देता तभी तो कहा है-

सबै सहायक सबल के कोऊ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को दीपहिं देत बुझाय॥

अत ! अपने उद्देश्य पूर्ति के लिए उपर्युक्त गुणो को अपनाकर जीवन में सफलता प्राप्ति का प्रयास करना चाहिये।

[illegible]

1 [illegible]
2 अगर [illegible] सुख चाहते हो तो सुख दो।
3 बच्चों से प्यार करो, बड़ों की सेवा करो।
4 सुबह की [illegible] कामनाओं की [illegible] होती है।
5 करम करके संसार में सबसे ऊंचा कार्य है।
6 आज का काम कल पर मत छोड़ो।
7 आसावान रहो पोजिटिव रहना सीखो।
8 संसार का पहला सुख निरोगी काया है।
9 ससार से ज्यादा प्यार ना करो संसारी चीजें सब खिलौना है।
10 कष्ट देने के लिए नहीं होता सहने के लिए होता है (शास्त्र
11 पैसा एक साधन है मंजिल नहीं।
12 दुनिया के पास बहुत कुछ है जो तुम्हारे पास उसे संभालो।
13 ईश्वर भी उसी की मदद करता है जो कर्म करे।
14 ससार में सबको सब चीजें नहीं मिल सकती।
15 जैसा बीज होता है, वैसा ही अकुर होता है।
16 सादगी ससार में सबसे ऊची है (ताश के इक्के की तरह)
17 ससार मे हल्के बने रहो ताकि जिन्दगी का सफर आसानी से कट जाए।
18 खर्चा बढाना आसान होता है बस खर्चा घटाना मुश्किल होता है।
19 अगले जन्म के बारे मे विचार करो कैसा होगा।
20 आज मैं कोई ऐसा काम नहीं करूगा जो कुदरत के विरुद्ध हो।

(पृष्ठ 7 का शेष)

जो किसी भी सभ्य पुरुष को शोभा नही देता। यदि उस समय की मैत्री को अभिभूत होकर कहे गये के आपके वह शब्द मुझे स्मरण न हो आते और यह लेश भी ज्ञात होता कि आप सत्ता के मद में विगत सब कुछ भूल बैठे हो या जान-बूझ कर भूलने का इस प्रकार नाटक करोगे तो मैं कदापि आपके पास नहीं आता। सम्राट द्रुपद तो राज-सत्ता के मद में था ही, अन्य भी कुछ अपमानजनक शब्द द्रोण को कह बैठा, तब द्रोण का ब्राह्मत्व पूर्ण 'अग्निना सहे' पूरा अग्नि के साथ अर्थात् ब्रह्मतेज के साथ प्रकट हुआ और तब उन्होंने कहा -

अग्रतश्चतुरो वेदा पृष्ठतः सशर धनु ।
इद ब्राह्म इद क्षात्र शास्त्र दपि शरादपि॥

द्रुपद आज राजमद म तुझे यह कहने का साहस हुआ है कि एक कगले-भिखारी ब्राह्मण और सम्राट की क्या मैत्री? कहीं बैठकर वेदपाठ कर, परन्तु तुझे केवल मेरा वेदपाठ ही स्मरण रहा, यह ठीक है कि मेरे आगे चारो वेद हैं किन्तु मेरी पीठ पर देख बाण धनुष भी बाणो के साथ शोभायमान हो रहा है। जिस प्रकार की तेरी इच्छा हो, मैं उसी प्रकार से तैयार हूं। तुझे शास्त्र से भी पराजित करूंगा और शस्त्र से भी. किसी भी प्रकार कम नहीं हू द्रुपद। द्रुपद बेचारा क्या बोलता? वह तो जानता था कि द्रोण का सामुख्य शास्त्र से तो क्या मै शस्त्र से भी नही कर सकता। इस प्रकार सम्राट द्रुपद का मद चूर्ण करके द्रोणाचार्य वापस अपने स्थान को लौट गये।

यह है देवा- साग्निना देव-विद्वान-ब्राह्मण न केवल क्षत्रियों द्वारा रक्षित रहें अपितु स्वयं भी तेजयुक्त, ब्रह्मतेज्युक्त हैं, परान्नभोजी नहीं। पराम भोजी होना तो मानव को आत्महीन, स्वत्वहीन बना देता है और इस प्रकार के लोग तो न केवल स्व-राष्ट्र में, ही अपितु पृथ्वी पर भी भार रुप ही होते हैं। ब्रह्मतेज रहित तथा परान्न भोजी ब्राह्मणो के कारण ही ससार का शिरोमणि राष्ट्र आर्यावर्त पदुदलित होकर लगभग एक सहस्र वर्ष तक विदेशियों द्वारा पराधीनता भोगता रहा तथा सोने की चिड़िया न रहकर दर-दर का भिखारी हो गया।

किसी देश को यदि अपने राष्ट्रीय स्वरुप को बनाये रखना है तो उसे अपने यहां ब्रह्मतेज युक्त ब्राह्मण तैयार करने होंगे। तब वह ब्रह्मबल और क्षात्रबल सयुक्त रुपेण राष्ट्र को सशक्त और सुरक्षित रख सकेंगे और तभी राष्ट्र पुण्य-राष्ट्र, श्रेष्ठराष्ट्र, वैदिक राष्ट्र बन सकेगा।

आर्य समाज सान्ताक्रुज का "पुरस्कार समारोह सम्पन्न"

रविवार दि 10 फरवरी 2002 को आर्य समाज सान्ताक्रुज (प) मुम्बई द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह आर्य समाज के विशाल सनागृह मे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह प्रात 10 00 बजे माननीय कैप्टन देवरत्न जी आर्य (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) की अध्यक्षता मे आरम्भ हुआ। आर्य समाज सान्ताक्रुज के विद्वान् धर्माचार्यो द्वारा मन्त्रोचार के साथ साथ मच पर मुख्य अतिथि डा भालचद्र मुणगेकर (कुलगुर मुम्बई विद्यापीठ), श्री वेदप्रकाश जी गोयल (केन्द्रीय जहाज रानी मन्त्री भारत सरकार), विशिष्ट अतिथि, श्री ओकारनाथ जी आर्य (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई) एव विशिष्ठ अतिथि, श्री मिठाईलाल जी सिह (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई), का आगमन हुआ। पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्वद्जनो को पुष्प वृष्टि के साथ मच पर लाया गया। श्री मती स्नेहपुरी जी के सुन्दर सुमधुर भजन हुए। आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रधान, डा सोमदेव जी शास्त्री ने अभ्यागत महानुभावों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए अतीव प्रसन्नता व्यक्त की। पुरस्कार परिचय महामन्त्री श्री यशप्रिय जी आर्य ने दिया।

महर्षि को कोटिशः प्रणाम

ले० डा. [illegible] आर्य, आवास-60 आवास विकास, जेल रोड़ अलीगढ़

योग के सर्वोन्नत शिखर पर परोपकार-गिरि श्रृंखला पर पहुंच कर वह विचारने लगा, अब अवतरित क्या होना? वह उच्च श्रृंखलाओं पर चढ़ता ही चला गया और भी अधिक ऊंचा और भी अधिक ऊंचा और भी अधिक उन्नत। उसकी ऊंचाई मापने कौन जाये? यह सामर्थ्य है किसमें?

हंसता था समस्त विश्व कि यह केवल संस्कृत पढ़ा विश्व का मार्ग प्रदर्शन कैसे करेगा? इन भयंकर बाधाओं से धन, जन रहित यह संन्यासी कैसे जूझेगा? जादूगर मानते हुये, उसमें प्रबल आकर्षण जानते भी उन्हें उसमें वह शक्ति, नेत्रों में वह तेज, बुद्धि में वह प्रखरता नहीं दीख पड़ी, क्योंकि वेदज्ञ भारतीय ही तो था।

घर बार त्यागने के पश्चात् वह साधनहीन साही दीखता था, आपत्तियों को सहते हुये वेद की डगर पर वह चला था, उपनिषदों और दर्शनों को उसने जाना पहिचाना था। अपने ज्ञान-गौरव की गठरी को लिये बिना किसी सहयोगी के, वह कौपीनधारी सत्य धर्म के पहाड़ पर चढ़ता रहा। पण्डितों ने उस पर व्यंग्य किये, राजाओं-जमींदारों ने बाधाएं दीं, अंग्रेजों ने धमकियां दीं, पर साहस के धनी के मुख की मोहिनी मुस्कराहट ज्यों की त्यों अक्षुण्ण ही रही।

क्रोध-ईर्ष्या-द्वेष और घृणा स्वंय भयभीत हो भागने लगे। विश्व कल्याण के लिये उस मूल शंकर ने कटुहलाहल का पान स्वंय किया और धैर्य धारण कर आगे बढ़ता ही रहा।

अपनी भाषा तथा धर्म पर जो सदा गर्व करता रहा, सत्य के प्रगट करने के लिये कभी झिझका नहीं, निर्भीक हो सभी के सम्मुख सत्य को स्पष्ट करता था। किसी के क्रोधित हो हानि पहुंचाने की कभी सम्भावना या चिन्ता नहीं की।

न जाने कितने शास्त्रार्थ जीवन काल में किये। एक साथ कई कई विद्वानों के गूढ़तम प्रश्नों के उत्तर चुटकी में हंसते हंसते देता था। इस प्रकार विरोधियों के वज्रसम ह्रदय भी मोम से पिघल जाते थे, श्रद्धा और भक्ति से वे ओत-प्रेत हो जाते थे।

जिसने सभी जीवों के आत्मवत् समझा, अंहिसा का वह पुजारी नहीं-नहीं देवता था क्षमा की तो साकार प्रतिमा ही था, जो अपने हत्यारे को यह कहकर क्षमा कर सकता था "मैं संसार को कैद कराने नहीं अपितु छुड़ाने आया हूं।" उसे बचाने के लिये अपने तन, मन, धन अर्पित कर दिये। उसकी इच्छायें पूर्ण की। जिसे सुनकर कल्प वृक्ष भी कथा मात्र रह गया।

यशः पर्वत की चोटियां तेरी कीर्ति का भार न संभाल सकी, ईश्वर की परम इच्छा थी कि तू उसी के पास रहे, उसकी भी इच्छा जिसने प्रसन्न मन से पूर्ण की:- उस देव सम महर्षि दयानन्द को कोटिशः प्रणाम।

25 ईसाइयों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाये जा रहे धर्मरक्षा महाभियान को उस समय एक अच्छी सफलता मिली जब 30 जनवरी को नवापारा जिले के खरियार क्षेत्र के दो ग्रामों के 5 ईसाई परिवारों के 25 लोगों ने अपने मुखिया ईसाई प्रचारक व पास्टर श्री रथिराम बाग के साथ श्रद्धापूर्वक यज्ञोपवीत ग्रहण कर यज्ञ में आहुति देकर वैदिक धर्म को ग्रहण किया। इसके पहले इन्होंने वैदिक धर्म ग्रहण करने की मजिस्ट्रेट से अनुमति भी ले ली थी। इस अवसर पर उस क्षेत्र के अनेक प्रभावशाली सज्जन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री विशिकेसन जी शास्त्री ने किया। दीक्षा लेने वाले लोगों को आशीर्वाद देने के लिए गुरदयाल जी साधक, श्री ईश्वर चन्द्र जी पटेल, श्री दाशरथी माझी, श्री सुशांत कुमार विशि आदि उपस्थित थे। इन्हें तैयार करने के लिए हेमराज जी शास्त्री व श्री पीताम्बर प्रसाद आर्य का विशेष पुरुषार्थ रहा। उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी भी उपस्थित थे। उन्होंने दीक्षितों को सत्यार्थ प्रकाश .आदि पुस्तकें भेंट की। —सुदर्शनदेवार्य उपमन्त्री।

हरयाणा प्रान्तीय विशाल आर्य महासम्मेलन

6-7 अप्रैल 2002 शनिवार, रविवार स्थान-मैदान "हुड्डा काम्पलैक्स" (शान्तमई होटल के सामने) रोहतक

आर्य समाज की शक्ति को संगठित करने, समाज में फैले पाखण्डवाद, नास्तिकता, अन्धविश्वास, शराब, दहेज, गोहत्या, जातिवाद आदि बुराइयों को दूर करने, हरयाणा के हित के लिए सुप्रीम कोर्ट के फैसले को जो सतलुज-यमुना लिंक नहर के सम्बन्ध में है, शीघ्र लागू कराने के लिये, हरयाणा में स्वच्छ प्रशासन के लिये राजार्य सभा का गठन आदि ज्वलन्त समस्याओं के समाधान हेतु "विशाल आर्य महासम्मेलन" का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें हरयाणा भर की समस्त आर्यसमाजों के प्रतिनिधि आर्य समाज के मूर्धन्य सन्यासी वैदिक विद्वान, हरयाणा सरकार एव भारत सरकार के प्रतिनिधि, आर्य कालेज, आर्य विद्यालय, गुरुकुलों के अधिकारी व छात्रगण, आर्य वीर दल युवा मण्डलों के कार्यकर्त्ता, आर्य महिला संगठन एवं कन्या गुरुकुलों की छात्रायें एवं अधिकारीगण विशाल सम्मेलन में पधार रहे हैं। हमारी हरियाणा की जनता से प्रार्थना है कि वह दलबल के साथ सम्मेलन में पधारे।

6 अप्रैल को विशाल शोभायात्रा हुड्डा मैदान से सिविल रोड, झज्जर रोड, रेलवे रोड, किला रोड, गोहाना अड्डा, सुभाष मार्ग, रेस्ट हाउस, छोटूराम पार्क होते हुये हुड्डा मैदान में सम्पन्न होगी।

—: मुख्य कार्यक्रम :—

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, ध्वजारोहण, विशाल शोभायात्रा, राष्ट्ररक्षा, सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, वेद एवं शिक्षा सम्मेलन, इतिहासपरक विचार गोष्ठी आजादी बचाओ सम्मेलन होंगे।

नोटः- सभी आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे सम्मेलन की तिथियों में अपना कोई कार्यक्रम न रखें, समाज के नाम का बैनर ओ३म् ध्वज लेकर सम्मेलन में पधारें। सम्मेलन की तैयारी के लिये जिला स्तर पर सभा गोष्ठी पदयात्रा आदि का कार्यक्रम होगा जिसकी पूर्व सूचना आपको दी जायेगी।

-: निवेदक :-

स्वामी ओमानन्द सरस्वती — सभा प्रधान

आचार्य यशपाल — सभामन्त्री

सत्र 2002-2003 के लिए प्रवेश-सूचना

आपके आर्य कन्या गुरूकुल शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब) में मात्र छठी कक्षा के लिए नये सत्र में कन्याओं के प्रवेश के इच्छुक माता-पिता नियमावली एवं पंजीकरण-पत्र प्रधानाचार्या कार्यालय से निम्न तिथि अनुसार प्राप्त करें-

पंजीकरण-पत्र प्राप्त करने की तिथि 1 से 20 मार्च

पंजीकरण-पत्र भरकर भेजने की अन्तिम तिथि-31 मार्च

प्रवेश-परीक्षा तथा साक्षात्कार 7 अप्रैल 2002 प्रातः 8.30 बजे से गुरूकुल में होगा। केवल 25 कन्याओं के प्रविष्ट करने का प्रावधान है, अतः पहले आने वाले आवेदनों को ही प्राथमिकता दी जाएगी।

गुरूकुल में वैदिक-शिक्षा के अतिरिक्त पंजाब बोर्ड की आठवीं तथा दसवीं कक्षाओं की परीक्षा भी दिलाई जाती है, साथ में कम्प्यूटर-शिक्षा का भी प्रबन्ध है। —सत्यानन्द मुंजाल, कुलपति

होशियारपुर में बसन्त पंचमी पर्व

17-2-2002 रविवार को आर्य समाज मन्दिर कमालपुर, होशियारपुर में साप्ताहिक भवन यज्ञ के पश्चात बसंत पंचमी का पर्व मनाया गया। आर्य समाज के सभा सदो के अतिरिक्त लगभग 200 नर नारियो ने इस पर्व का आनन्द मनाया। इस अवसर पर वसुदेवा और आहलुवालिया दम्पतियों ने यजमान पद को ग्रहण किया। प्री. डा धर्म वीर कपूर (संरक्षक) ने इस अवसर पर घोषणा की कि मार्च-अप्रैल में आर्य समाज मन्दिर में पहला बड़ा समागम आयोजित किया जायेगा। आचार्य भद्र सेन जी ने बसंत ऋतु के आगमन पर ऋतुओं में से बसंत ऋतु की महिमा बताई और जीवन के यथार्थ अभिप्रायः की विस्तार से चर्चा की।

-यशपाल वालिया मन्त्री।

अमृत-सुधा

श्री जयसिंह आर्य, V.P.O गमीरा, मुजफ्फर नगर-257202 (उ. प्र.)

जिस घर में सत्साहित्य नहीं वह घर श्मशान के समान है।
-स्वामी विवेकानन्द

अपने नेत्रो को चंचल न होने दो स्त्रियो की ओर गहरी दृष्टि स न देखो ब्रह्मचारी के मन मे यह क्षोभ पैदा कर देती है।
-स्वामी दयानन्द

नित्य धर्म का संचय करते चले जाओ, धर्म की सहायता से बडे-बडे दुस्तर दु:ख सागर को जीव तर जाता है। -मनु

ईश्वर ने हम लोगो को जो कुछ भी दिया है। वह बटोरकर खाने के लिए नहीं, प्रत्युत योग्य पात्र को देने के लिए है। -जरथुस्त्र

समय क्यो खो रहे हो? व्यर्थ की बातचीत से क्या लाभ? भगवान् मे ही चित्त को लगाओ। -माध्वाचार्य

जो लोगो के अत्याचारों से व्यथित नहीं होता, वही महापुरुष है।
-मंसूर

लेखको की मसि, शहीदों के रक्त बिंदुओ से अधिक पवित्र हैं।
-हजरत मोहम्मद

तुम सम्पत्ति ओर पोजीशन के चक्कर मे क्यो पड़ते हो? बिना लूट-चोरी और छल, फरेब के दो मे से एक भी चीज तुम्हारे हाथ नहीं लग सकती है। -अज्ञात

आत्मा पर विजय पाना सबसे बडा जेहाद है। -कुरान

किसी से कुछ भी नहीं लेना, ऐसा निश्चय जिसके मन में आ गया है। वही मनुष्य स्वतन्त्र है। -स्वामी विवेकानन्द

वह कामी पुरुष जो तपस्वी जैसी तेजस्वी आकृति बनाए फिरता है। उस गधे के समान हो जो शेर की खाल पहने हुए घास चरता है।
-तिरुवल्लुपुर

बुरे लेखक वे हैं जो अपने अशक्त विचारों की अभिव्यक्ति दूसरो की सुन्दर भाषा के माध्यम से करते हैं।

मेहनत वह चाबी है। जो खुशकिस्मती का दरवाजा खोल देती है।
-आचार्य चाणक्य

मित्रता करने मे धैर्य से काम लो, मित्रता कर लो तो उसे अचल ओर दृढ होकर निभाओ। -सुकरात

पूजा के योग्य सबसे प्रथम देवता माँ है।-स्वामी दयानन्द सरस्वती

बसन्त मेला-धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह

17 फरवरी 2002 को आर्य समाज सरोजिनी नगर नई दिल्ली में बसन्त मेला धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह बडी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रात: काल 8.30 से 9.30 बजे तक श्री रामाचन्द आचार्य जी द्वारा बृहद् यज्ञ कराया गया। 9.30 बजे से 10 बजे तक श्री सोहनलाल पथिक (पलवल वाले) के मनोहर भजन हुए। 10 बजे से 12 बजे तक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा हकीकत राय पर ड्रामा व बसन्त उत्सव के उपलक्ष्य में बहुत सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसकी संयोजिका श्रीमती अनिता कपिला स्कूल की प्रिंसीपल थी। सभी ने इस कार्यक्रम की बडी सराहना की। श्री अशोक सहदेव जी ने अपने पिता स्वर्गीय रतनलाल सहदेव की स्मृति में प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी बच्चों की स्मृति चिन्ह, पुस्तकें व नकद इनाम दिया। 12 बजे से 1.30 बजे तक श्रद्धांजलि सभा श्री कृष्ण लाल जी की अध्यक्षता में हुई जिस में श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्री वेद व्रत शर्मा महा मंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री बनारसी सिंह पत्रकार, श्री राम नाथ सहगल ने आदि ने अपने विचार रखे।

गुजरात में 151 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

श्री महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा द्वारा पिछले वर्ष 26 जनवरी को गुजरात में भीषण भूकम्प में अकाल मृत्यु के घाट उतरे असंख्य नर-नारियों की प्रथम पुण्य तिथि पर 151 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ उनकी स्मृति में आयोजित किया गया।

जैसा कि आपको विदित ही है कि लगभग पूरे वर्ष ही ट्रस्ट परिसर में भूकम्प पीड़ितों हेतु कुछ न कुछ राहत कार्य होता ही रहा है, चाहे वह भवन निर्माण का कार्य हो, चाहे खाद्य सामग्री एवं बर्तन आदि विस्थापितों को देने की बात हो। समस्त आर्य जगत् की ओर से ट्रस्ट परिसर को आधार शिविर बनाकर राहत कार्य किया गया।

उपरोक्त स्मृति यज्ञ टंकारा से 100 किलोमीटर के दायरे में आने वाले लगभग समस्त गांव के निजी व्यक्तियों, पंचायतों, तहसीलदारों ने भाग लिया। इस आह्वान के पीछे उपदेशक विद्यालय के उन सभी ब्रह्मचारियों का योगदान है जो कि एक वर्ष से इन गांवों मे निरन्तर सामूहिक यज्ञों का आयोजन करते रहे हैं। इस सारे आयोजन की परियोजना ब्रह्मचारी विजेन्द्र के मन मस्तिष्क की ही उपज थी। कार्यक्रम में 108 कुण्डीय यज्ञ की व्यवस्था थी लेकिन उस दिन लोगों का उत्साह देखते हुए तुरन्त ही 43 कुण्डों की व्यवस्था करनी पड़ी और एक कुण्ड पर 5 दम्पत्तियों को बिठाया गया। इस हिसाब से 1510 केवल यजमान ही थे और लगभग 5000 व्यक्तियों का अपार जन समूह इसमें सम्मिलित हुआ। गांव वासियों का उत्साह देखते ही बनता था। सभी यजमान अपने अपने गांव से शोभायात्रा निकालते हुए टंकारा गांव में घूमते हुए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान का दर्शन करते हुए उत्सव स्थल पर उपस्थित हुए। प्रत्येक यजमान एक एक किलोग्राम घृत इस यज्ञ हेतु लाया था, यह उनकी यज्ञ के प्रति अपार श्रद्धा का ही प्रतीक था।

ग्रामवासियों के इस उत्साह को देखते हुए हमें यह दृष्टिगोचर हो रहा था कि पिछले एक वर्ष में ट्रस्ट द्वारा किये गये सेवा कार्य का ही इतना प्रभाव पड़ा है कि स्थानीय लोग ट्रस्ट के साथ जुड़े है, जिसकी कमी पिछले कई वर्षो से अनुभव की जा रही थी। वह आज इस कार्यक्रम से पूर्ण हुई।

इस सारे कार्यक्रम में टंकारा, मौरवी, धोल, पडधरी, तहसील के ग्रामों ने भाग लिया और सारे कार्यक्रम के मुख्य आयोजक के रूप में आचार्य विद्यादेव जी ने ब्रह्मा का पद ग्रहण कर सम्पूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

सभी आये हुए महानुभावो हेतु ट्रस्ट की ओर से ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई जिसमें सराहनीय योगदान ग्राम नेकराम के श्री करसन भाई को जाता है, जिन्होंने अपने दल बल सहित श्रद्धाभाव से व्यवस्था की। ग्राम लखधीरगढ़ के नवयुवकों ने दूध की सारी व्यवस्था अपनी ओर से की।

इस पवित्र अवसर पर हरिद्वार से श्री मामचन्द्र आर्य भजनोपदेशक अपनी भजन मण्डली के साथ पधारे थे जो कि ब्रह्मचारी धर्मबन्धु के वैदिक मिशन के अन्तर्गत सौराष्ट्र एवं कच्छ में वेद प्रचार कर रहे हैं।

सभी पधारे हुए यज्ञ प्रेमियों ने आग्रह किया कि यह यज्ञ प्रतिवर्ष 26 जनवरी को इसी प्रकार आयोजित किया जाये। हम उन सभी महानुभावों के, ग्रामवासियों, पंचायत प्रमुखों एवं तहसीलदारों का आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने इस यज्ञ को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने में सहयोग दिया।

—आचार्य विद्यादेव

सच्चे शिवोपासक दयानन्द

□ डॉ० अ. अशोक आर्य मण्डी डबवाली (सिरसा)

विश्व के प्रत्येक भाग में चूहे से भारी नुकसान होता है। यह किसी भी वस्तु पर अपने तीखे दांत चला देते है विशेष रूप से जहां मीठे पदार्थ रखे हों वहां इनका आतक और भी बढ़ जाता है। सभी तरफ गंदगी फैलाना व मलमूत्र त्यागना यह अपना अधिकार समझते हैं, तो भी विश्व के किसी व्यक्ति ने कभी इस तरफ ध्यान ही नहीं दिया। इस त्रासदी को देख दोष भांपने वाला यदि कोई महापुरुष इस विश्व में हुआ तो वह मूलशंकर के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे।

शिव रात्रि की गहन अंधेरी रात को कर्षण जी नामक ब्राह्मण अपने बेटे को न केवल शिव का उपवास रखने का बल देता है अपितु रात्रि को शिव मंदिर में शिव-पिण्डी के पास जागरण करने का आदेश अपने 14 वर्षीय पुत्र को दे डालता है।

रात्रि की नीरवता का लाभ उठाते हुए बिल में छुपे चूहों ने अपने-अपने बिलो से निकलकर इधर-उधर कूदना फंदना आरम्भ कर दिया, भोग्य पदार्थो को जूठा करने लगे, शिव-पिण्डी पर उछल कूद मचाने लगे तथा स्थान-स्थान पर मलमूत्र त्यागने लगे। नन्हा सा बालक मूलशंकर यह देखकर सोचने लगा कि जो शिव इन छोटे-छोटे चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता, वह सर्व व्यापक, सर्वशक्तिमान् परमात्मा कैसे हो सकता हैं? बस यह विचार मनमें आते ही सच्चे शिव की खोज की उत्कृष्ट अभिलाषा लिए वहा से उठा और सीधा घर की ओर चल दिया। अभी वह कोई निर्णय भी नहीं ले पाया था कि उसके प्राणो से भी प्यारी बहन तथा प्रिय चाचा की मृत्यु ने बालक को उद्वेलित कर दिया। स्थान-स्थान पर भटकते हुए बीहड जंगलो, नदी नालों व पहाड़ों की खाक छानते हुए अंत मे गुरु विरजानद दंडी से सच्चे ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से संसार में अज्ञात, अन्याय तथा अभाव को मिटाने का संकल्प लेकर कार्यक्षेत्र में उतरे।

कार्यक्षेत्र में उतरते ही महर्षि ने पाया कि भारतीय समाज अति दीन, हीन व क्षीण अवस्था मे है। इसे अनेक बीमारिया, रूढ़िया तथा अंधविश्वास दीमक की तरह खाए जा रहे थे, इस समाज को इन बुराईयों से छुटकारा दिलाना उस महा-मानव ने अपना परम कर्तव्य समझते हुए पाखंड-खण्डिनी पताका गाड़कर अपना कार्य आरम्भ कर दिया। लोगो ने उनके जीवन व क्रातिकारी विचारों को आरम्भ में न समझा। इस कारण उन्होंने धुन के धनी इस संन्यासी पर पत्थर बरसाए लाठिया चलाई, सांप फैंके, यहा तक कि अनेक बार उन्हें विषपान भी करना पडा। इन सब भूले-भटके लोगों को सुमार्ग गामी बनाने के लिए एतदर्थ उन्होंने सर्वप्रथम भारत के अपने प्राचीन ईश्वरीय ज्ञान वेद ग्रन्थो को खोज निकाला तथा यह जयघोष लगाया-हे भारत के लोगो! इस सत्य का प्रचार करने के लिए उन्होंने स्थान-स्थान पर सभाएं की, भाषण दिए, शास्त्रार्थ भी किए। अत में ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका लिखकर वेद का सच्चा ज्ञान जन-जन के लिए सुलभ कराया।

इसी समय ऋषि ने पाया कि देश मे महिलाओं की हालत बहुत ही शोचनीय है। सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह तथा बहु-विवाह प्रथा ने महिलाओं की हालत बहुत ही शोचनीय बना रखी है। इस पर भी उन्हें शिक्षा के अधिकार से वंचित कर अंधकूप में धकेला जा रहा है। नारी की इस अवस्था को देखकर ऋषि रो दिए। उन्होंने नारी उत्थान के लिए अभियान आरभ किया, अंधविश्वासो, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह के विरूद्ध जोरदार आवाज उठाई, नारी शिक्षा पर जोर दिया तथा विधवा महिलाओं को पुन: विवाह का अधिकार देकर उनका उत्थान किया।

महर्षि ने स्वय गुजराती होते हुए भी यह समझा कि पूरे देश को एकता की कडी मे बाधने की शक्ति केवल हिन्दी में ही है, क्योकि यह सब जगह समान रूप से समझी जाती है इसलिए स्वामी जी ने हिन्दी को अपने लेखन, प्रचार व पत्र व्यवहार का माध्यम बनाया। स्वाधीनता का सबसे पहले बिगुल बजाने का श्रेय भी महर्षि दयानंद सरस्वती को ही जाता है। अछूत से असम्बद्धता के कारण जाति के लाल दूसरो को झोली मे जा रहे थे इससे जाति को बचाने के लिए उन्हें जाति का अग बनाया।

आज पुन: यह सब बुराइया सिर उठाने लगी हैं। आर्यों को एक बार फिर एकजुट होकर इन समस्याओ से जूझने की तैयारी करनी चाहिए।

योग-साधना-ध्यान शिविर

मनुष्य जीवन का लक्ष्य है "कैवल्य" (मोक्ष) की प्राप्ति अर्थात केवल परम् आनन्द एवं सुख की ही अनुभूति। यह उस के मौलिक जीवन, आध्यात्मिक जीवन या आंतरिक जीवन अथवा भीतरी जीवन (जो ईश्वर, आत्मा तथा मन के नाम से जाना जाता है) की इष्टसिद्धि एव सुसिद्धि पर आधारित है। इस के लिए चित्त की प्रखर सत्वगुणमय प्रशान्त प्रवाह युक्त स्थिति की अनिवार्यता एवं अधिकारिता होनी चाहिए।

पातञ्जल योग दर्शन विहित ऐसी स्थिति की अभिरुचि का अभ्युदय, साधने, परिपक्वता अथवा निपुणता के लिए आर्य जगत के पातञ्जल योग दर्शन के सुविज्ञ विशेषज्ञ स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती जी की देख रेख में "योग-साधना-ध्यान शिविर" का विशेष आयोजन 26 से 31 मार्च 2002 तक किया जा रहा है।

इस उपयोगी आयोजन में आप सब सादर आमंत्रित हैं।

—आर्य समाज, सैक्टर 9, पंचकूला

पुरोहित-प्रशिक्षण-शिविर

श्रीमती दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी त पलवल (बल्लभगढ़) हरियाणा के 62 वें वार्षिकोत्सव पर 11-03-02 से 17-03-02 तक पुरोहित प्रशिक्षण-शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण में दसवीं पास कोई भी स्त्री-पुरुष भाग ले सकते हैं। प्रशिक्षणार्थियों के लिए भोजन व आवास की व्यवस्था नि:शुल्क की गई हैं। प्रशिक्षण के बाद प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए जायेंगे।

भाग लेने वाले व्यक्ति अपने आने की सूचना 7 तारीख तक भिजवा दें। अपने साथ प्रतिभागी कापी और संस्कार विधि लेकर आए। —स्वामी विद्यानन्द

ओ३म्

पंजाब की पवित्र धरती, राम लीला, ग्राऊंड, पठानकोट में

विश्व शान्ति यज्ञ

स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में

दिनांक : 27 (बुधवार) 28 (वीरवार) 29 (शुक्रवार) 30 (शनिवार) 31 मार्च 2002 (रविवार)

—कार्यक्रम—

दिनांक 27 मार्च 2002	:	नगर कीर्तन, शोभायात्रा, प्रातः 10.00 बजे (आरम्भ रामलीला ग्राऊंड)
दिनांक 28 से 30 मार्च 2002	:	विश्व शान्ति यज्ञ प्रातः 7.30 से 10.00 बजे
दिनांक 28 से 30 मार्च 2002	:	भजन, प्रवचन रात्रि 8.30 से 10.30 बजे
दिनांक 31 मार्च 2002	:	यज्ञ पूर्णाहुति एवं आशीर्वाद प्रातः 8.30 से 12.00 बजे तक
दिनांक 31 मार्च 2002	:	ऋषि लंगर : दोपहर 12.00 बजे

इस शुभ अवसर पर सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधार कर जीवन सफल बनाएँ तथा तन, मन, धन से सहयोग दे कर कृतार्थ करें।

निवेदक: **विश्व शान्ति यज्ञ समिति** कार्यालय-आर्य समाज मन्दिर, मेन बाजार, पठानकोट, दूरभाषः 31713

पूर्णाहुति समारोह सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर माडल टाऊन जालन्धर में माघ माह में गायत्री महायज्ञ दिनांक 14-1-2002 से 12-2-2002 तक हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी एक माह तक श्रद्धा व उत्साह पूर्वक आयोजित किया गया जिसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वानों ने क्रमशः दस दस दिन तक जनता का मार्ग दर्शन किया।

1 डा आचार्य महावीर मुमुक्षु जी (मुरादाबाद)

2. डा. प्रचार्य डा. उमेश कुमार जी (दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार)

3. ब्रह्मचारी विश्वमं जी (ऋषि उद्यान पुष्कर मार्ग अजमेर)

पूरे माघ महिने मे 150 बहनों ने यजमान पद को सुशोभित किया। प्रत्येक यजमान को वैदिक साहित्य सप्रेम भेंट किया। यज्ञशाला को दुल्हन की तरह सजाया गया था गई सपत्नीक यजमान बनें।

यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के विद्वान पुरोहित प. सत्य-प्रकाश शास्त्री थे। इस कार्यक्रम के बीच में जो भी पर्व आए उन्हें उत्साह व श्रद्धा से मनाया गया। दूसरा निर्धन कन्यायों के विवाह के लिए धन व वस्त्र दिए गए तीसरा 3100 रु एक माता को जिसका पुत्र बलड कैन्सर से पीड़ित है दिये गये चौथा 1600 रु. एक लड़की को जिसकी टांग पर प्लस्तर लगवाना था दिए गए। हमारे अपील करने पर बहनों ने बहुत दान दिया जो भी सहायता के लिए आर्य समाज में अपना उसकी तन मन व धन से सेवा की गई।

पूर्णाहुति समारोह 11 हवन कुण्डों में सम्पन्न हुआ। यह मनोहर दृष्य देखते ही बनता था इस समारोह की मुख्यातिथि माता सन्तोश जी थी जिन्होंने कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा की। मुख्य वक्ता श्रीमति सरला भारद्वाज जी। मंच का संचालन सुशीला भगत ने किया। अन्त में आर्य समाज की प्रधाना श्रीमति के. के. आनन्द जी ने बाहर से आए अतिथियों का धन्यवाद किया। 800 व्यक्तियों ने ऋषि लंगर का आनन्द उठाया। सारे प्रोग्राम की सबने भूरि भूरि प्रशंसा की। —सुशीला भगत

आर्य समाज डिफेन्स कालोनी का शिलान्यास

17-2-2002 को बसन्त पंचमी के पावन अवसर पर आर्य समाज डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली के भवन निर्माण की आधार शिला पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा, प्रधान डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कर कमलों द्वारा रखी गई व ध्वजारोहण किया गया।

भटिण्डा में बाल हकीकत राय बलिदान दिवस

आर्य समाज चौक भठिण्डा के महर्षि दयानन्द सत्संग भवन में दिनांक 17-2-2002 को बसन्त पंचमी के शुभ अवसर पर आचार्य श्री गुरु प्रसाद जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में बृहद् यज्ञ विशेष मन्त्रों के साथ सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम ला. वजीर चन्द जी मंगला संरक्षक जिला आर्य सभा भठिण्डा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम बहन श्रीमती इन्द्रा छाबड़ा ने ईश्वर भक्ति का एक भजन प्रस्तुत किया। तदोपरान्त कुमारी श्वेता शर्मा ने बसन्तोत्सव पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा-बसन्त पंमी का पर्व हमें नव जीवन की प्रेरणा देता है, हमारे हृदय में उल्लास और उत्साह भरता है एवं हमारे शरीर में नव रक्त का संचार करता है। अतः हमें ऐसे पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाने चाहिएं एवं महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। इस कार्यक्रम में श्रीमती एस. एल. लतिका जी प्राचार्या डी. ए. वी सी. सै. स्कूल भटिण्डा को विशेष आमन्त्रित किया गया। उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए धर्मवीर बाल हकीकत राय के बलिदान का उदाहरण दिया एवं कहा कि अन्याय करना तथा अन्याय को सहन करना दोनो पाप हैं। धर्म की रक्षा करना हमारा मौलिक अधिकार है, अन्याय के सामने झुकना कायरता ही नहीं बल्कि अपने तथा अपने देश के साथ अन्याय करना है। उन्होंने कुमारी श्वेता शर्मा के इस नन्ही उमर में ऐसे विचार प्रस्तुत करने पर हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। ला. वजीर चन्द जी ने उपस्थित आर्य जनों के अतिरिक्त विशेष रुप से श्री मती लतिका जी का धन्यवाद किया। श्री महेन्द्र पाल अरोड़ा जी उप मन्त्री ने मंच संचालन सुचारु रुप से किया। शान्ति पाठ के पश्चात् प्रसाद वितरण के साथ यह कार्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। —प्रेम भाटिया

भूच्चो मण्डी में म. अमर चन्द जी मित्तल की पुण्य तिथि मनाई गई

महाशय अमर चन्द भू. प. प्रधान आर्य समाज भूच्चो मण्डी की पहली पुण्य तिथि 27-1-2002 को उनके बेटे डा. भारत भूषण मित्तल वर्तमान प्रधान आर्य समाज भुच्चो मण्डी के घर पर पूरी श्रद्धा से मनाई गई, जिस में आर्य समाज सिरकी बजार बठिण्डा के पुरोहित जी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से हवन करवाया तथा महाशय जी को श्रद्धांजली भेंट की। इस समारोह में मण्डी के गणमान्य व्यक्तियों के साथ आर्य समाज के सदस्यों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया। अन्त में भण्डारे का आयोजन किया गया। —राम नाथ शर्मा मन्त्री

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ । दूरभाषः 292926

रजि. नं. एन. पी. 26281/74

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम्

2277. श्री पुस्तकाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–55 अंक : 31 सृष्टि संवत 1960853102, 17 से 24 मार्च 2002 दयानन्दाब्द 178

वेद प्रचार के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कई महत्वपूर्ण निर्णय

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के प्रधान, मन्त्री तथा कोषाध्यक्षों की एक आवश्यक बैठक दिनांक 17–3–2002 को प्रातः 11.30 बजे सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा की अध्यक्षता में सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा, जालन्धर में सम्पन्न हुई। इससे पूर्व हवन यज्ञ हुआ।

इस बैठक में पंजाब की सभी आर्य समाजों के लगभग 400 अधिकारी व सदस्यों ने भाग लिया। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य वेद प्रचार के कार्य को गतिशील बनाने के लिए योजना बनाने का था। बहुत से आर्य बन्धु और हम भी यह अनुभव कर रहे थे कि पिछले कुछ समय से पंजाब में वेद प्रचार का कार्य ढीला पड़ गया है। उसमें पहले पंजाब में उग्रवाद व आतंकवाद भी एक कारण था, परन्तु अब इस कार्य के प्रति कुछ उदासीनता दिखाई दे रही थी। कई छोटी–छोटी संस्थाएं व मत–मतान्तर अपना–अपना प्रचार बढ़ा रहे हैं परन्तु सारे संसार को जाग्रत करने वाली व सभी को रास्ता दिखाने वाली महान संस्था आर्य समाज के पंजाब में प्रचार व प्रसार मे कमी आना सभी को अखर रहा था। इसलिए यह एक बैठक इस सम्बन्ध में विचार करने के लिए बुलाई गई थी परन्तु यह बैठक एक सम्मेलन बन गया।

यह देख कर हमें बहुत प्रसन्नता हुई कि पंजाब की सभी आर्य समाजें पूर्ण रूप से जागरूक हैं और सभी अपने–अपने कार्यों में लगी हुई हैं। इस बैठक में सभा वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार, चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट उपप्रधान, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, श्री आशानन्द जी आर्य उपप्रधान, श्री धर्मपालजी सहगल एडवोकेट उपप्रधान, श्री प्रेम भारद्वाज कोषाध्यक्ष, श्री सोहन लाल जी सेठ, श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा रजिस्ट्रार, श्री प्रियतम देव, श्री प्रेम भाटिया जी मन्त्री, श्री बनारसी दास जी, श्री देशबन्धु जी चोपड़ा, श्री शादीलाल महेन्द्रु, श्री राम लुभाया जी नन्दा, श्री विजय जी साथी और श्री धर्मदेव जी आर्य ने अपने सुझाव वेद प्रचार के सम्बन्ध में दिए। इसके साथ ही कई लिखित सुझाव भी हमारे पास आए हैं। प्रधान आर्य समाज फरीदकोट, प्रधान आर्य समाज बंगा, श्री मोहन लाल सेतिया प्रधान आर्य समाज अबोहर, श्री किशोरी लाल भोला प्रधान आर्य समाज अर्बनस्टेट जालन्धर, श्री तरसेम कुमार आर्य महामन्त्री जिला आर्य सभा भठिण्डा, श्री मनोज आर्य मन्त्री आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी, श्रीमती सरला लूम्बा प्रधान आ.स. सिविल लाईन लुधियाना, श्रीमती सन्तोष अम्बा व श्री गुरबचन मन्त्री आर्य समाज गुरदासपुर, श्री सुभाष मित्तल, श्री रमेश महाजन, श्री विनोद मल्होत्रा, श्री राकेश महाजन पठानकोट, श्री धर्मपाल रल्हन प्रधान सिकन्दपुरी भटिण्डा, श्री कृष्ण लाल जटाना सिरकी बाजार भठिण्डा, श्रीमती स्वच्छ सचदेवा प्रधाना स्त्री आर्य समाज चौक भटिण्डा, स्वामी सच्चिदानन्द प्रधान आर्य समाज मोगा, श्री डा विधिचन्द मिन्हास प्रधान आर्य समाज मोहाली। इसी प्रकार कई और महानुभावों ने भी अपने विचार लिखित रूप में हमें दिए हैं जो आगामी अंक में दिए जाएंगें।

इस बैठक में मुख्य रूप से निम्न निर्णय लिए गए हैं।

1 बन्द पड़ी सभी आर्य समाजों को पुनः खोला जाए, सभी आर्य समाजों में दैनिक व साप्ताहिक यज्ञ हों, वर्ष में कम से कम एक बार वेद सप्ताह व उत्सव हो। पारिवारिक सत्संगों को बढ़ावा दिया जाए। सार्वजनिक स्थानों पर बड़े–बड़े यज्ञ किए जाएं, उनमें आर्य समाजियों के अतिरिक्त अन्य महानुभावों को भी आमन्त्रित किया जाए। अच्छे उच्चकोटि के विद्वानों से यह यज्ञ करवाए जाएं ताकि आम जनता पर आर्य समाज व यज्ञ का प्रभाव पड़ सके। प्रत्येक आर्य समाज में पुरोहित रखा जाए और उसका सम्मान किया जाए। पुरोहित को नौकर नहीं धर्म गुरु माना जाए। वेद प्रचार के लिए उपदेशकों का एक मोबाइल विंग बनाया जाए।

2. जिला स्तर पर बड़े–बड़े सम्मेलन जिला सभाओं के तत्वावधान में किए जाए और फिर प्रान्तीय स्तर पर एक महा सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में किसी भी नगर में किया जाए जिसमें सभी जिलों की आर्य समाजें सम्मिलित हों।

3. आर्य समाजों की ओर से सामाजिक कार्य किए जाएं, मैडिकल कैम्प लगाए जाएं जिन आर्य समाजों के पास स्थान है और वह समर्थ हैं उनमे धर्मार्थ औषधालय खोले जाएं। सिलाई स्कूल चलाए जाएं।

4 सभा से सम्बन्धित सभी स्कूल कालेजों में नैतिक शिक्षा पर बल दिया जाए, सप्ताह व महीना में एक बार यज्ञ अवश्य हो, विद्वानो को बुला कर प्रवचन कराए जाएं वाक्वर्धिनी सभाओ का आयोजन किया जाए और आर्य समाज के सभी पर्व मनाए जाएं और बच्चो में आर्य समाज के सिद्धान्तों व वेद के विषय को लेकर प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया जाए ताकि उन्हें आर्य समाज की पूरी–पूरी जानकारी हो। इसके साथ ही भाषण प्रतियोगिताएं भी रखी जाएं।

5 आर्य समाज के विद्वानों से वीडियो कैसेट, वेदों पर, उपनिषदों पर व आर्य समाज के सिद्धान्तों पर तैयार करवाई जाएं और उन्हें स्थानीय केबल टी वी वालों को देकर प्रतिदिन उन द्वारा यज्ञ का, वेदों का प्रचार किया जाए ताकि घर–घर में आर्य समाज का सन्देश पहुंच सके। सभा महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने बताया कि पठानकोट में हमने केबल टी वी पर वेद कथाओं व उपनिषद की कथाओं का कार्यक्रम देना आरम्भ कर दिया और इसके लिए हमें केवल टी वी वालों को कोई नकद राशि का भुगतान नहीं करना पड़ा। केवल उन्हें कई महानुभावों से व संस्थाओं से व संस्थाओं से विज्ञापन दिलवाए हैं। टेलीविजन आज प्रचार का सबसे बड़ा साधन है आर्य समाज का कार्यक्रम भी दूरदर्शन पर आना चाहिए।

6. आर्य समाज के विद्वान् जहां आर्य समाज का पत्र–पत्रिकाओं में अपने सार गर्भित व विद्वता पूर्ण लेख देते हैं वहां उन्हें दैनिक समाचार पत्रो को भी अपने लेख भेजने चाहिएं। थोड़े से शब्दों में सारगर्भित व मार्मिक लेख विद्वानों से तैयार करवाए जाएं और उन्हें दैनिक समाचार पत्रों में भी प्रकाशित करवाया जाए।

7. वैदिक 16 संस्कारो का प्रचार व प्रसार किया जाए। लोगो को सस्कारों का महत्व समझाया जाए ताकि अधिक से अधिक लोग इन संस्कारों को अपनाएं। क्योकि संस्कारों से ही बच्चों का निर्माण होता है। जैसे संस्कार किसी बच्चे व व्यक्ति को मिलते हैं वह वैसा ही बन जाता है। वैदिक संस्कारों का अपना एक विशेष महत्व है, इसलिए इस ओर सभी आर्य समाजें ध्यान दें।

8 आर्य समाज के पुरोहित पिछड़ी जातियों के लोगों के घरों में यज्ञ व संस्कार करवाएं और उन को यज्ञ का सारा सामान स्थानीय आर्य समाज की ओर से निशुल्क दिया जाए, यदि हरिजन व दूसरी बिरादरी के लोग पारिवारिक सत्संग करें व वेद प्रचार का आयोजन करें तो आर्य समाजो को दरियां, लाऊड स्पीकर तथा हवन का सारा सामान उन्हें निशुल्क दिया जाए। सभा महामन्त्री प्रिं स्वतन्त्र कुमार जी ने बताया कि पठानकोट मे हमने ऐसा करना आरम्भ कर दिया है। इससे आर्य समाज का सन्देश पिछड़ी बिरादरी में भी पहुंच रहा है।

9 आर्य समाजे छोटे–छोटे ट्रक्ट छपवाए उन्हें निशुल्क वितरित करे जब कहीं आर्य समाज का उत्सव हो रहा हो या यज्ञ हो रहा हो या पारिवारिक सत्सग हो रहा हो वहां वैदिक साहित्य वितरित किया जाए। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब आधे मूल्य पर सारा वैदिक साहित्य दे रही है। आर्य समाजे सभा से आधे मूल्य पर साहित्य लेकर आगे निःशुल्क भी वितरित कर सकती हैं।

10 आर्य समाज की ओर से जन–सम्पर्क अभियाना चलाया जाए। आर्य समाजों के अधिकारी व सदस्य सामाजिक कार्यों में रुचि लें समाज के प्रत्येक वर्ग से सम्पर्क करें, उनके दुःख, सुख के साथी बने, उनके साथ आत्मीयता बढाए, जरूरतमन्दों की सहायता करें, गरीबों को उनके कार्यों को पूर्ण करने मे आर्थिक सहयोग दें, विधवाओं, अनाथों व असहायों को पहले तरह सहयोग दे।

इन सभी सुझावों व निर्णयों को क्रियान्वित करने के लिए शीघ्र ही कार्यवाही आरम्भ की जा रही है। इस अवसर पर श्री अवतार हैनरी कैबिनैट मन्त्री पजाब सरकार और श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न को शाल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

–धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

परमात्मा परम प्रशंसनीय है उसकी शान निराली

लेखक-श्री देवी दयाल शर्मा, "शर्मा निवास, 120 माडल टाऊन, स्ट्रीट न. 4, अमृतसर

ओ३म् अग्ने-नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानिदेव वयुनानि विद्वान। युयोध्यस्मज्जुहुराण मेनो भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम॥-यजुर्वेद 40/16

अर्थ: हे सर्वप्रकाशक प्रभु, हमें भौतिक और अभौतिक प्राप्ति के लिये सुमार्ग से ले चल। तु हमारे सब भेदों को और हमारे इस जन्म के ही नहीं पूर्व जन्मो के कर्मों का भी साक्षी है हमारे निन्दनीय और कुटलता युक्त पापों को दूर कर दीजिये, हम बार-बार आपसे प्रार्थना करते हैं और नमस्कार की भेंट चढाते हैं।

व्याख्या:-हे सर्व प्रकाशमान प्रभु, हमें भौतिक सुख और आध्यात्मिक ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए सन्मार्ग पर चला। जीवन यात्रा को चलाने के लिए हमें इन दोनो की ऐश्वर्यों की आवश्यकता है इन दोनों की अनुपस्थिति में हमारा जीवन अधूरा रह जायेगा, न ही लोक सुधरेगा और न ही परलोक, पुन: पुन: हम आप से प्रार्थना करते हैं कि हमें सत्य मार्ग पर चला। हम वैज्ञानिक अनुसन्धान करें जो मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए हो ऐसे अनुसधान न करे जो मानव की तबाही का कारण बनें। हमारा अन्तिम पुरुषार्थ तो आप को प्राप्त करना है। हम खून पसीना बहा कर धन कमाए और शुभ कर्मो अर्थात याजिक कर्मो में इस का प्रयोग करें।

हे ईश्वर, आप को हमारे भले और बुरे कर्मो का पूरा ज्ञान है। हमारे इस जन्म के कर्म और पूर्व जन्म के कर्म आप के साक्षित्व मे जब हमारा मन दूषित कर्मों की ओर झुके उसी समय आप की ओर से संकेत हो, ताकि हम पाप करने से बच जायें और सात्विक विचार नमुदार हों और सर्वदा प्राणि मात्र के कल्याण के लिए स्वार्थ रहित हो करके कर्म करें। हमें शक्ति प्रदान कीजिये ताकि हम शुभ कर्म करने में लगे रहें और आप की अन्दर दैवी आवाज को सुनते रहें। हम तो आप की अन्दर की आवाज को अनसुनी कर देते हैं और पाप कर्म करने में लथपथ रहते हैं। हमारा जो टेड़ापन है, उस को काफूर कर दीजिये, ताकि हम सत्य का ही आश्रय लें जो एक (Simple) सादा और साफ सुथरा रास्ता है। आप की रहनुमाई बिना हम नहीं कह सकते कि किस समय हम पाप का शिकार बन जाएं। आजजी, इन्कसारी सरलता और ईश्वर विश्वासी होना, सत्य मार्ग पर चलने के बड़े साधन हैं। इन साधनों पर न चलने से मानव उपाधीधारी विद्वान नही कहा जा सकता। हां हम यह कह सकते हैं कि वह Literate, पढ़ा लिखा है, कुच्छ शब्दों का प्रयोग अपनी लिखने वाली पंक्तियों में कर सकता है। Learned, दार्शनिक नहीं है। परमात्मा से बताए हुए वेद मार्ग पर चलने के लिये हमें सत्य मार्ग को अपनाना होगा।

मानव को वेदानुकूल जीवन व्यतीत करने की परमात्मा ने आज्ञा दी है, वेद के अनुसार कर्म करते चलें और अपना निशाना 100 वर्ष की आयु भोगने का लक्ष्य रखें। यदि मानव 100 वर्ष से पूर्व इस संसार से चला जाए तो समझ लो कि उस ने वेद के नियमों को भंग किया है। सिवाए वेद पथ पर चलने के और कोई दूसरा रास्ता 100 साल की आयु भोगने का नहीं है। स्वार्थ रहित किये हुए वैदिक कर्म मनुष्य को बन्दीखाना में नहीं डालते हैं। मन में पक्का विश्वास रखते हुए, केवल वैदिक कर्म ही करें। यह जीवन का सब से बड़ा नियम (Disciplane) है कि हर समय हर घड़ी शुभ कर्मों में प्रवृत्त रहे। यदि इस जन्म के या पूर्व जन्मों के अनुसार कष्ट पर कष्ट आते हैं तो मृत्यु को कभी भी आमन्त्रित नहीं करना चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि मानव वीरता पूर्वक उनका मुकाबला करे और अत्यन्त यत्न करके जीवन को सार्थक बनाए। जो परिश्रम शील बन करके थक नहीं जाता, वह वैभव प्रशंसा और वाह वाही को प्राप्त नहीं कर सकता। कर्मरहित अर्थात आलसी मनुष्य, नाना प्रकार के पापों में लिप्त हो जाते हैं और कई प्रकार के दु:ख भोगते हैं। परमात्मा तो उसी का मित्र है और उसे ही स्नेह मयी दृष्टि से देखता है जो कामचोर नहीं है। सत्य कर्म करना, मानो परमात्मा की पूजा करना है और यही परमात्मा की सच्ची भक्ति है। "Work is Workship of the suprewe and Man's homage to God" जो मानव अपने आप को कर्म करने में लगा कर रखता है उसका शरीर भी हृष्ट-पुष्ट हो जाता है। सच्चा मेहनती आदमी पाप से नहीं दबता। यह याद रहे कि परीश्रमशील मनुष्य ही स्वर्णमय समय को प्राप्त करके परमात्मा के दैवी चमत्कारों को देखता है और आनन्दित होता है। कामचोर को इस संसार में जीने का कोई अधिकार नहीं है। कुच्छ काम चोरों ने यह कविता बनाई है जो नीचे दर्ज हैं:-

"राम भरोसे बैठ के, पड़े खाट पर सोए।
अनहोनी होनी नहीं, होनी सो ही होए॥"

यह उपर्युक्त विचार वेद विरुद्ध है और मानव को पतन के गढ़े में गिराता है।

सब से बड़ा भय जो मनुष्य को हर समय खाए जाता है वह है मौत का भय। वेद इस के बारे में यह कहता है कि यदि मनुष्य ने स्वार्थ रहित कर्म करने का पक्का इरादा कर लिया है और जो ब्रह्मचर्य के नियम को दिलो जान से पालन करता है, वह मानव मृत्यु को चुनौती दे सकता है और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकता है। कहा भी है-

"ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमोपाघ्नत्"

देवताओं ने अपने ब्रह्मचर्य के प्रताप से मृत्यु पर विजय प्राप्त की। वेद इस बात की पुष्टि करता है कि जो मानव परमात्मा के नियमों पर आरूढ़ रहता है अर्थात् जो नियमों को जीवन के साधन बनाता है। उसकी आयु लम्बी हो सकती है और जो इश्वरीय नियमों को तोड़ता है उसकी आयु कम हो जाती है जो लोग यह समझ बैठे हैं कि आयु नही कम हो सकती है और नहीं बढ़ सकती है वे जन, वेद के मानने वाले नहीं हैं। वेद तो डंके की चोट से कहता है कि अनियामक, कुलपथ मृत्यु का सामना करता है अर्थात् पूरी आयु (कम से कम 100 वर्ष) नहीं भोग सकता है। हमने परमात्मा के आदेश से इस संसार में जन्म लिया है केवल खाने पीने और मौज उड़ाने के लिए नहीं, परन्तु सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठ कर्म करने के लिए यदि यह सर्वोपरि मानव जीवन खाने पीने और मौज उड़ाने में ही बरबाद कर दिया तो हाथ मलते रह जाएंगे। जब मृत्यु का बिगुल बज गया उस समय यही कहना पड़ेगा कि अब पच्छताएं क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत। परमात्मा का निर्देश है कि नित्यप्रति शुभ कर्मों को करना ही चाहिए। इसीलिए महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने पांच यज्ञों का उल्लेख अपनी संस्कारविधि पुस्तक में वेद के आधार पर स्पष्ट कर दिया है जो नित्प्रति करने चाहिएं जिस से परिवार की उन्नति हो, समाज की तरक्की हो और राष्ट्र प्रशंसा को प्राप्त हो। वेद तो बार बार यही कहता है कि धन को खूब कमाओं परन्तु कमाने के साधन पवित्र और दोषरहित होने चाहिएं। कहा भी है-शत हस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर: 100 हाथों से कमाओ और हजार हाथों से शुभ कर्मों में व्यय करो। परन्तु संसार में बहुत थोड़े मनुष्य हैं जो इस वेद की सूक्ति को जीवन में उतारते हैं।

अन्त में, मैं यही कहूंगा कि हम सब को परम प्रशंसनीय प्रभु के प्रति अपने हृदय से अति कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए जो उसने हमें असंख्य अमूल्य और अनगिनत बख्शीशें अता की हैं। मानव का एक-एक अंग कितना कीमती है कोई उस का मूल्य नहीं चुका सकता। किसी अन्धे को पूच्छो कि नेत्रों की क्या कीमत है तो वह बताने में असमर्थ होगा। यदि हमारे कर्मों के अनुसार कष्ट आ जाए तो ईश्वर को उपालम्भ नहीं देना चाहिए, उस कष्ट को ईश्वर का प्रसाद समझना चाहिए क्योंकि हमारे कष्टों में हमारी बेहतरी के लिये उस का दैवी खजाना छूपा हुआ है, जो मानव को कष्ट के पश्चात पता लगता है कि हमारे कष्टों में परमात्मा की कितनी भलाई छुपी हुई थी।

"ओ३म् शम्"

सम्पादकीय.....

आर्य बन्धुओं का धन्यवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने वेद प्रचार के कार्य को तीव्र करने का निश्चय किया है और इस सम्बन्ध में 17-3-2002 को एक विशेष बैठक सभा कार्यालय में सम्पन्न हुई। मुझे प्रसन्नता है कि पंजाब के सभी आर्य बन्धुओं में बहुत उत्साह है। 24-3-2002 के सभा के साधारण व असाधारण अधिवेशन को देखते हुए लगता था कि 17-3-2002 को शायद सभी लोग न आ पाएं क्योंकि दो-दो बार आना कठिन होता है परन्तु फिर भी सभी आर्य बन्धु व बहनें इस बैठक में पहुंची। जबकि कुछ सभा विरोधी तत्वों ने इस बैठक को विफल करने का भी एक षड्यन्त्र रचा था परन्तु आर्य बन्धुओं ने उसे विफल कर दिया और पं. हरबंस लाल जी शर्मा के नेतृत्व में अपना विश्वास प्रकट करते हुए भारी संख्या में इस बैठक में पधार कर वेद प्रचार के सम्बन्ध में अपने सुझाव दिए।

पं. हरबंस लाल जी शर्मा का अपना एक व्यक्तित्व है उन जैसा व्यक्ति इस समय सभा के पास कोई दूसरा नहीं है। वह बहुत ही लोकप्रिय हैं पंजाब की सारी आर्य जनता उनका सम्मान करती है। आर्य जनता ने सर्वसम्मति से उन्हें 17-12-2000 को सभा का प्रधान चुना है और तब से उनकी देख-रेख व दिशा निर्देश में सभा चल रही है। इसके साथ ही वह गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति भी हैं। केवल पंजाब में ही नहीं सारे आर्य जगत में उनकी प्रतिष्ठा है। ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्ति के बारे में ईर्ष्यावश या पद् लोलुपता वश जो व्यक्ति कुछ गल्त लिखेगा उसे आर्य जनता सहन नहीं करेगी। पंजाब की आर्य समाजों के अधिकारियों की इस बैठक में वह प्रात: 11.30 बजे आकर बैठे थे और 2.30 बजे तक इस बैठक की अध्यक्षता करते रहे और सभी अधिकारियों ने उनका सम्मान किया। मैं सभी आर्य बन्धुओं का आभारी हूं। इस बैठक में पहुंच कर सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने अपने संगठन का परिचय दिया और सभा अधिकारियों को अपना पूरा-पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलाया। मेरी तो उन महानुभावों से भी प्रार्थना है जो सभा विरोधी गतिविधियों में लगे हुए हैं वह सभा को हानि न पहुंचा कर सभा की उन्नति के लिए कार्य करें।

मैं अपनी ओर से व सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा की ओर से उन सभी आर्य बन्धुओं का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने 17-3-2002 रविवार को जालन्धर पहुंच कर वेद प्रचार के सम्बन्ध में अपने विचार व सुझाव दिए तथा इस महत्वपूर्ण बैठक में सम्मिलित हुए।

—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

साधारण सभा के सदस्यों की सेवा में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का साधारण व असाधारण अधिवेशन 24-3-2002 रविवार को सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में प्रात: 11.30 बजे सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा की अध्यक्षता में हो रहा है। इसका एजैण्डा सभी प्रतिनिधियों को भेजा जा चुका है और सभी को मिल गया होगा। इन अधिवेशनों में केवल वही महानुभाव भाग ले सकेंगे जो सभा के प्रतिनिधि हैं। जो एजैण्डा सभा कार्यालय से भेजा गया है कृप्या उसे साथ लेकर आएं हमने उस पर पूर्व ही लिख भी दिया है कि इसे साथ लेकर आएं क्योंकि उसमें निचले भाग में प्रवेश पत्र भी साथ है उस पर प्रतिनिधि का नाम प्रतिनिधि संख्या व आर्य समाज का नाम लिखा है। इस प्रवेश पत्र को आर्य समाज के अधिकारियों से भी प्रमाणित करवा कर लाएं यह उस पर लिखा है यदि अधिकारी ही स्वयं प्रतिनिधि है तो उसे प्रमाणित करवाने की आवश्यकता नहीं। कृप्या 24-3-2002 को 11.30 बजे से पूर्व पहुंचे ताकि आप यज्ञ में भी सम्मिलित हो सकें और इससे पूर्व उपस्थिति रजिस्टर में अपनी उपस्थिति भी अंकित कर सकें। —स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

गोधरा का अग्नि काण्ड

27 फरवरी को गोधरा (गुजरात) में अयोध्या से आ रही रेलगाड़ी के डिब्बों में आग लगा कर अनेकों राम सेवकों को कुछ सम्प्रदायिक लोगों द्वारा जिंदा जला दिया गया। इस अग्निकाण्ड की सारे देश की जनता ने निन्दा और भर्त्सना की। यह एक सोचा समझा षड्यन्त्र था जो कुछ शरारती गुण्डा तत्वो द्वारा रचा गया था। रेल गाड़ी पर किया गया यह हमला न भूलने वाली एक वीभत्स घटना है जिसने सम्पूर्ण मानवता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। इस घटना के बाद गुजरात के कई शहरो व कस्बों में हिंसा भडकी और इस एक अग्नि काण्ड ने कई अग्नि काण्डों को जन्म दिया जिससे जनता की जान माल की बहुत हानि हुई। यह घटना क्यो घटी इसके पीछे किसका हाथ है यह अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका।

पिछले कई वर्षों से अयोध्या में राम मन्दिर बनाने को लेकर विवाद चल रहा है। यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम के देश मे अयोध्या में उनके स्थान पर उनका मन्दिर नहीं बनने दिया जा रहा। अयोध्या के साथ भारत के लोगों की आत्मिक भावना जुड़ी हुई है। क्योंकि भारत की महान् संस्कृति के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम राम का यह जन्म स्थान है।

भारतीय संस्कृति भारत के चमकते हुए दो सितारों के चारों ओर घूमती है, उनमें एक हैं योगीराज श्री कृष्ण जी और दूसरे हैं मर्यादा पुरुषोत्तम राम। इसलिए भारत के प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में राम के प्रति श्रद्धा है और इसी भावना से राम के जन्म स्थान पर राम मन्दिर बनाने का कुछ लोग प्रयास कर रहे हैं परन्तु विडम्बना की बात है कि स्वतन्त्र भारत में भी इस मन्दिर के बनाने मे कई प्रकार की कठिनाईयां पैदा की जा रही हैं।

आर्य समाज मूर्ति पूजा को नहीं मानता परन्तु अपने सभी महापुरुषो का मान करता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगीराज श्री कृष्ण का सारा आर्य जगत सम्मान करता है।

राम मन्दिर निर्माण को लेकर अयोध्या में जो विवाद चल रहा है यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बात है। इसका कोई सर्व सम्मत हल अवश्य ही निकला चाहिए। साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने वाली ताकतों से देश की जनता को सावधान रहना चाहिए और देश में सद्भावना बनाए रखनी चाहिए। आज हमारे देश पर आतंकवाद व अराजकता के बादल मंडरा रहे हैं। देश विरोधी ताकतें कई प्रकार की समस्याएं देश के सामने पैदा कर रहे हैं। देश भक्त लोगों को सावधान रहना होगा कि कोई भी देश का शत्रु अन्दर बाहर से देश को कोई हानि नहीं पहुंचा सके।

गत दिनों हुए गोधरा अग्निकाण्ड तथा उसके बाद गुजरात में अन्य स्थानो पर हुए अग्नि काण्डो में मरने वाले लोगों की आत्मिक शान्ति के लिए हम परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं और उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेट करते हैं।

—हरबस लाल शर्मा, सभा प्रधान

श्री रामरत्न जी महाजन की धर्मपत्नी का देहावसान

आर्य समाज सै 22 चण्डीगढ के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के साहित्य विभाग के अधिष्ठाता व आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री रामरत्न जी महाजन की धर्म पत्नी श्रीमती स्वर्ण देवी जी का देहावसान 8 मार्च 2002 को प्रात: 10.30 बजे हो गया। 17-3-2002 को उनका अन्तिम शोक दिवस मनाया गया जिसमें भारी सख्या मे लोगों ने सम्मिलित होकर उन्हे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की है। चण्डीगढ तथा उसके आस-पास की सभी आर्य समाजो के सदस्य तथा श्री राम रत्न जी महाजन के सभी रिश्तेदार-सम्बन्धी उसमें सम्मिलित हुए। श्रीमती स्वर्ण देवी जी अपने पीछे भरा परिवार छोड़ गई हैं उनके सात बेटे व तीन बेटिया हैं। सारा परिवार आर्य समाज से जुड़ा हुआ है। सभी पुत्र-पुत्रियां सुयोग्य हैं। माता निर्माता भवति, उन्होने इस उक्ति को चरितार्थ किया है, उन्होने अपने बच्चो को बहुत योग्य बनाया है और माता के कर्त्तव्य को भली भान्ति निभाया है।

वह एक धार्मिक महिला थी यज्ञ के प्रति उनकी बडी आस्था थी इसके साथ ही वह बड़ी मिलनसार थीं आर्य समाज के सत्सगों में वह बढ़-चढ कर भाग लेती थी पिछले कुछ समय से वह बीमार चली आ रही थी और 8.3.2002 को वह हमसे सदा लिए विदा हो गई। उनकी याद सदा आती रहेगी उनका अभाव सदा खटकता रहेगा।

हम सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा की ओर से व सभा के समस्त अधिकारियों व सदस्यों की ओर से, सभा के सभी कर्मचारियो की ओर से व सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओ की ओर से उन्हे अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं और परमपिता परमात्मा से उनकी सद्गति व आत्मिक शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। —स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

सिरोही में 34 वर्षों के पश्चात पारिवारिक सत्संग से वेद प्रचार

उदयपुर, प्रसिद्ध आर्य संत एवं वेद विद्वान स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती ने, एक मार्च से 10 मार्च 2002 पर्यन्त सिरोही नगर (राजस्थान) में आर्य समाज, सिरोही के तत्वावधान में आयोजित पारिवारिक सत्संगो में प्रवचन करके पौराणिक नगर मे वैदिक धर्म प्रचार का अजस्र झरना प्रवाहित किया।

उल्लेखनीय है कि बगैर किसी आमन्त्रण के स्वामी जी ने 23-24 फरवरी को सिरोही प्रवास करके सुप्तप्राय: समाज को जागृत किया व 1967 के बाद 34 वर्ष पश्चात दस दिवसीय पारिवारिक सत्संग के माध्यम से सैकडो उच्च शिक्षित सम्भ्रान्त परिवारों में वेदों का डंका बजाकर आर्य समाज की श्रेष्ठता प्रतिपादित की। ज्ञात रहे कि यहां का आर्य समाज 58 वर्ष प्राचीन हैं।

इन सत्संगों में आर्य समाजियों सहित अनेक अन्य किशोर, तरूण व वृद्ध नर-नारियों ने स्वेच्छा से यज्ञोपवित भी धारण किए तथा अभक्ष्य पदार्थों को त्यागने के स्वत: स्फूर्त संकल्प किये। स्थानीय समाज के समर्पित व संकल्पित मन्त्री श्री कन्हैया लाल आर्य ने सम्पूर्ण कार्यक्रमों की सफलता के लिए श्रम पूर्वक अनुपम सहयोग प्रदान किया।

सच्चे निराकार शिव की जगह जड़ पूजा ही दु:खों का कारण-स्वामी संकल्पानंद

उदयपुर 12 मार्च। शिवरात्री के दिन के ऋषि दयानन्द बोधात्सव पर्व के उपलक्ष्य आर्य समाज हिरण मगरी में व्याख्यान करते हुए प्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती ने बताया शिव, शंकर, रूद्र, गणेश, दुर्गा, विष्णु, महादेव इत्यादि सभी नाम उस एक ही परमेश्वर के गुण वाचक नाम हैं किन्तु जमाने को सहज ढंग से समझाने हेतु कतिपय विद्वान कलाकारो ने इनके पृथक-पृथक अलकारिक चित्र बना दिये किन्तु हमने सत्य सनातन, निराकार, अजन्मा, अजर-अमर ईश्वर को जाने व समझे बगैर जड पूजा प्रारंभ कर दी जो केवल मात्र हमें मार्ग से भटका कर विभिन्न दु:खो का कारण बन गयी है।

आर्य समाज हिरण मगरी में उपस्थित ईश भक्तो को सम्बोधित करते हुए उन्होंने भगवान की आलंकारिक प्रतिमा का भाष्य करते हुए बताया कि ज्ञान रूपी गगा का मस्तिष्क से अजस्र प्रवाह, आह्लादकारी दूज का चन्द्रमा धारण करना, काम-क्रोध, लोभ-मोह-मद व ईर्ष्या नाम के षडरिपुओं को विषधर नाग के रूप मे अन्तस से बाहर निकालना तथा परम वैराग्य रूपी श्मशान का निवास इत्यादि ससार मे रहते हुए विरक्त बन कर रहना और महान योगी बनकर आत्म कल्याण व जन कल्याण के गुणों का प्रतिपादन व प्रेरणा का चित्रांकन मात्र है।

उन्होंने बताया कि वेदों के पौराणिक भाष्यों को पढ़कर प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान मैक्समूलर भट्ट् उन्हें गड़रियों के गीत कहता था किन्तु जब उसने योगी राज महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत निरूक्त ग्रन्थ के अनुसार जब वेद का यौगिक अर्थ पढ़ा तो मैक्समूलर ने कहा कि विश्व में वेद के समकक्ष कोई दूसरी अन्य पुस्तक नही है।

उन्होंने विभिन्न उदाहरण प्रस्तुत करते हुए महर्षि दयानन्द को महाभारत के बाद अब तक का सबसे बड़ा लोकोद्धारक बताया जिन्होंने स्वयं को जहर देने वाले अनेक लोगों को क्षमा कर दिया था।

प्रवचन से पूर्व पन्ना लाल अरोड़ा के पौरोहित्य में सम्पादित अग्निहोत्र में मुख्य यजमान दम्पति टीकम चन्द शर्मा, इन्दर ममतानी, अनन्त देव शर्मा व वीरेन्द्र चौधरी थे तथा इन्द्रदेव पीयूष ने भजन प्रस्तुत किये अन्त में समाज प्रधान जितेन्द्र पाल शर्मा ने आभार व्यक्त किया तथा संचालन डा. अमृत लाल तापड़िया ने किया।

–गिरीश जोशी,
संयुक्त मंत्री

जालन्धर छावनी में ऋषि बोध पर्व

आर्य समाज, जालन्धर छावनी में ऋषि बोध उत्सव 12 मार्च को बड़े उत्साह से मनाया गया, जिसमें आर्य समाज के सदस्यों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम प्रात: 9 बजे हवन से आरम्भ हुआ। कालेज की छात्राओं ने भजन एवं गीत प्रस्तुत किए और महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। नारी जाति के उत्थान के लिए उनके योगदान को उजागर किया एवं श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

मुख्य वक्ता डा. नरेश जी, प्राध्यापक दोआबा कालेज ने महर्षि के भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि 1858 के चार्टर से ही अंग्रेजों ने ब्रिटिश साम्राज्य की नीव को मजबूत करना प्रारम्भ कर दिया था, उस को समझते हुए उन्होंने अपने प्रवचनों में अपने ही मूल के लोगों का, अपने ही देश पर राज्य की बात कही। विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो अपने राज्य की अपेक्षा निम्न होता है उनके यह शब्द अपने देश की स्वतन्त्रता के प्रति प्रखर विचार प्रकट करते है। हमें अपनी उन्नति किसी विदेशी सरकार के कन्धों पर नहीं अपितु स्वयं अपने आपको देशभक्त, प्रखर जागरूक और समर्पित देशसेवक बनकर करनी होगी। उनके उस समय के कहे शब्द आज भी सत्य हैं।

इस के बाद प्रसाद एवं लंगर का वितरण हुआ। मंच संचालन श्री कांशी राम जी ने किया और आये हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद किया।

-जवाहर लाल महाजन मन्त्री।

आर्य समाज तलवाड़ा में महर्षि दयानन्द जी का जन्म दिवस एवं बोधोत्सव

आर्य समाज तलवाड़ा में 8-3-2002 को साय. 5.30 बजे से लेकर 10 बजे तक महर्षि दयानन्द जी का जन्म दिवस धूमधाम श्रद्धा और उल्लास से मनाया गया पहले यज्ञ किया गया जिसमें सभी आर्य सदस्य परिवार सहित यजमान बने उसके उपरान्त स्त्री समाज की ओर से कृष्णा देवी, शान्ति देवी, मधु भाटिया, और महिलाओं व माताओं ने बहुत सुन्दर भजन सुनाये। श्री किशोरी लाल जी, नवदीप जी, जगमोहन सिंह जी ने भी बहुत अच्छे महर्षि जीवन से सम्बन्धित और ईश्वर भक्ति के भजन सुना कर सब को मन्त्रमुग्ध कर दिया इसके उपरान्त पं. परमानन्द जी, श्री अमर नाथ जी आर्य, श्री मनोहर लाल जी आर्य ने ऋषि जी के जीवन पर बहुत प्रभावशाली ढ़ग से प्रवचन दिये।

इसी प्रकार 12-3-2002 को भी आर्य समाज मन्दिर में ऋषि बोधोत्सव बहुत श्रद्धा से मनाया गया। इस अवसर पर महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल तलवाड़ा को भी बुलाया गया था। सभी ने मिल कर यज्ञ किया उसके उपरान्त स्त्री समाज की ओर से, कृष्णा देवी, शान्ति देवी, ऊर्मला, मधु भाटिया ने बहुत सुन्दर भजन गाये, पुरुष समाज की ओर से भी नवदीप, किशोरी लाल, जगमोहन सिंह, प. परमानन्द जी ने भजन पेश किये, अमर नाथ जी आर्य और श्री मनोहर लाल जी आर्य ने ऋषि दयानन्द जी द्वारा समाजिक क्षेत्र, धार्मिक क्षेत्र, में की गई जागृति पर उसके किये गये कार्यो पर और आर्य समाज का संसार को जो संदेश है इस पर बहुत ही प्रभावशाली प्रवचन दिये।

दोनों प्रोग्रामों के अन्त में प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया सदस्य अपने-अपने घरों से भोजन तैयार करके लेकर आए थे और सभी ने मिल कर बांट कर खाना खाया।

6 मार्च को पं० लेखराम जी का भी शहीदी दिवस इसी प्रकार मनाया गया। मनोहर लाल आर्य, मन्त्री

शुभ कर्म करें

□ डॉ० ओंकार शास्त्री आर्य समाज मन्दिर-बटाला

क्षण भंगुर जीवन की कालिका कल प्रात: को जो जान खिली न खिली, मलयाचल की शुचि शीतल मन्द सुगन्ध समीर चली न चली, कलिकाल कुठार लिए फिरता तन नम्र है चोट झिली न झिली॥ भज ले ओम् नाम अरी रसना फिर अन्त समय में हिली न हिली॥

यह वचन किसी कवि ने बिल्कुल सत्य ही कहा है। हे! कर्मशील मनुष्य इस शरीर रूपी नौका का कोई भी भरोसा नहीं, कब यह संसार रूपी समुद्र में डूब जाये। अत: कर्म करो। कर्म भी दो प्रकार के होते है शुभ और अशुभ आप शुभ कर्म करें। वैदिक कर्म करें। अशुभ और अवैदिक कर्म कदापि न करें। जिन कर्मों के करने में भय शंका और लज्जा की अनुभूति हो वे अशुभ कर्म हैं और जिसमें भय शंका न लगे वे शुभ कर्म हैं शुभ कर्म ही श्रेष्ठ पूजा है। **यज्ञो वैश्रेष्ठतमम् कर्म- यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ कर्म है।**

नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्य कर्म कृत:। गीता॥

मनुष्य एक क्षण के लिए भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता वेद का स्तोता अपने कर्णधार से इस जीवन नौका को भवसागर से पार करने के लिए कर्म से अनुप्राणित करने की प्रार्थना करता है। वेद की कर्म भावना की वृद्धि करने वाली प्रार्थनाएं हमें जीवन यात्रा में कभी भुलानी नहीं चाहिएं। किन्तु मनुष्य आलस्य के वशीभूत होकर सब कुछ भूल जाता है।

भतृहरि जी ने कहा है-

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपु:।

नास्त्युद्यमसमो बन्धु यं कृत्वा नावसीदति॥

आलस्य मनुष्य के शरीर में बैठा हुआ सबसे बड़ा शत्रु है और उद्यम के समान मनुष्य का कोई मित्र नहीं है। उद्योगी मनुष्य को जीवन में कभी दु:खी नहीं होता।

कुरंग मातंग पतंग भृंगा- हरिण शब्द से, हाथी स्पर्श से, पतंग रुप से, भौंरा गन्ध से, मछली रस से ये पांचों एक विषय के सेवन से मारे जाते हैं तो फिर प्रमादी मनुष्य जो पांचों का सेवन करता है, वह तो अवश्य मारा जायेगा। किसी पदृश्चात्य विचारक ने भी कहा है- Motion is life and Stagnation is death.

कर्म ही जीवन है और अकर्म ही मृत्यु है।

उत्तिष्ठ ब्राह्मणस्पते देवान यज्ञेन बोधय॥

उठ खड़ा हो। जाग जा। हे ज्ञानी यज्ञ द्वारा अपने दबे भावों को जगा ले। वेद आदेश करता है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि- कर्म करो फल की इच्छा मत करो। आचार्य पाणिनि ने सूत्र लिखा-**स्वतन्त्र कर्ता**-जीव कर्म करने में स्वतन्त्र होता है और फल भोगने में परतन्त्र। जिनके हाथ में कर्म नहीं वे संसार में कीर्ति और यश प्राप्त नहीं कर सकते उन्हें तो चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देता है।

क्या कहूं अहबाब क्या कारे नुमाया कर गये।

बी. ए. किया नौकर हुए पेंशन मिली फिर मर गये॥

इतना ही नहीं गीता के अंतर्गत परिश्रम लगन और कुशलता से कर्म करने को योग माना है। योग: **कर्मसु कौशलम्। जीवेम शरद: शतम्**- सौ वर्ष तक जीते हुए कर्म करे, कर्म के अनुसार ही मनुष्य को जीवन प्राप्त होता है।

करम गति टारे नाही टरे- जैसा कर्म किया वैसा ही फल प्राप्त होगा। कर्म प्रधान विश्व रचि राखा जो जस करहिं सो तस फल चाखा कृष्ण, राम, दयानन्द, श्रद्धानन्द, भगतसिंह, लेखराम, इनका नाम सभी लेते किन्तु कंस और रावण का नहीं क्योंकि कर्म दोनों ने किये परन्तु किस तरह किये ये नाम इनके कर्मानुसार हैं। अर्थात् वेद में कहा- पक्तारं पक्व: पुनरा विशाति। जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है।

ऊधो कर्मन की गति न्यारी- कर्मों की गति बड़ी विचित्र है॥

आर्य समाज बस्ती टैंकावाली फिरोजपुर की गतिविधियां

1. दिनांक 13-1-2002 को लोहड़ी का त्योहार मनाया गया। पं. मनमोहन शास्त्री ने विशेष यज्ञ करवाया तथा पर्व पर विचार रखे।

2. दिनांक 14-1-2002 मकर संक्रान्ति पर भी विशेष यज्ञ हवन हुआ। बहन प्रकाश लुथरा जी ने यज्ञ करवाया तथा विचार रखे।

3. दिनांक 8-3-2002 को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का जन्म दिवस मनाया गया। बहन प्रकाश लुथरा जी ने विशेष यज्ञ करवाया तथा भजन रखे। रात को समाज में रोशनी भी की गई।

4. दिनांक 12-3-2002 को शिवरात्री का पर्व बड़ी धूम धाम से मनाया गया। प मनमोहन शास्त्री जी ने यज्ञ हवन करवाया। कार्यक्रम बड़ा रोचक रहा। प. अशोक कुमार संगीतकार के सुन्दर भजन हुए तथा प, चन्द्र पाल आचार्य का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। जनता पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा। समाप्ति पर मन्त्री जी ने सब का धन्यवाद किया तथा विशेष कर छावनी समाज के प्रधान श्री किशोर जी छाबड़ा तथा मन्त्री श्री मनोज आर्य विशेष रूप से यहां पधारे हुऐ थे और हमारी समाज की रौनक को बढ़ाया। श्री अनिल शर्मा कोषाध्यक्ष तथा उन की धर्म पत्नी कुसम शर्मा समाज में बहुत रूचि रखते हैं और सभी कार्यों को बड़ी प्रसन्नता से करते हैं। श्रीमति प्रकाश लुथरा कोषध्यक्ष स्त्री समाज धर्म पत्नी डा. चौथ राम लुथरा उप प्रधान आर्य समाज का समाज सेवा के लिये विशेष योगदान है तथा दान भी देती रहती हैं। विजय आनन्द का भी इस समाज से बहुत प्रेम है और सदा सहयोग देते हैं।

शन्ति पाठ के बाद जनता का लड्डवों तथा चाय इत्यादि से स्वागत किया गया।

—सत्य पाल शर्मा मन्त्री

आर्य समाज अबोहर में ऋषि बोधोत्सव धूम धाम से सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर अबोहर में दिनांक 12-3-2002 को ऋषि बोधोत्सव (महा शिवरात्रि) प्रधान श्री सोहन लाल जी सेतिया एवं संरक्षक श्री बी. एल. नागपाल जी की अध्यक्षता में सर्व श्री अशोक कुमार जी शर्मा व विजय कुमार जी शास्त्री पुरोहितों के तत्वावधान में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हवन यज्ञ 8.30 बजे प्रात: आरम्भ हुआ। सत्संग हाल धर्म प्रेमी बंधुओं, बहिनों तथा बच्चों से खचाखच भरा था। मंच संचालन श्री प्रेम प्रकाश आर्य महामंत्री द्वारा किया गया जिन्होंने इस पवित्र दिन की महत्ता तथा महर्षि के हम पर किये उपकारों बारे विस्तार से प्रकाश डाला। पुरोहित जी ने ओजस्वी विचारों से ओत प्रोत प्रेरणा दायक भाषण दिया। श्रीमति रेणु जी छोडा प्रचार मंत्री, श्री सुशील कुमार जी महता उप प्रधान एवं श्री ओम प्रकाश जी मतवाला रेडियो गायक द्वारा बड़े मधुर भजन गाये गए। श्री बी. एल. वैदिक कन्या हाई स्कूल तथा आर्य पुत्री पाठशाला के बच्चों द्वारा भजन तथा भाषण प्रस्तुत किये गए। बच्चों को कापियां तथा पैंन वितरित किये गए। आर्य समाज मन्दिर को बड़े अच्छे ढंग से सजाया गया था। महामंत्री ने सभी लाभान्वित होने वालों का आर्य समाज की ओर से आभार व्यक्त किया। शान्ति पाठ एवम् प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

- प्रेम प्रकाश आर्य
महामन्त्री

नंगल टाऊनशिप में शिवरात्रि पर्व

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप में 12-3-2002 को शिवरात्रि पर्व ऋषि बोधोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर पं. कृष्ण कान्त शास्त्री, श्री पं. सुशील कुमार शास्त्री, श्री आसकरण दास जी सरदाना ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। नंगल टाऊनशिप के सभी आर्य बन्धुओं व बहनों तथा डी.ए.वी. स्कूल के छात्रों तथा स्टाफ ने भाग लिया। छात्रों को सत्यार्थ प्रकाश व अन्य साहित्य देकर प्रोत्साहित किया।

'सत्यार्थ प्रकाश'' के सप्तम समुल्लास में–

ईश्वर के विषय में महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घाटित कुछ सत्य

☐ ले० श्री इन्द्रजित् देव, पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर-135001

(गतांक से आगे)

महर्षि दयानन्द ने इस विषय का भी तर्क व युक्ति से गम्भीरतापूर्वक प्रतिपादन किया है। वे लिखते हैं कि ईश्वर त्रिकालदर्शी नहीं है। काल सूर्य के भ्रमण का फल मात्र है। यदि सूर्य न हो तो भूत-भविष्यत् ही न हो, केवल वर्तमान ही रहे। भूत, वर्तमान व भविष्यत्-ये विभाजन केवल जीवों के हिसाब से है। ईश्वर सदैव एकरस है। अतः इसका ज्ञान व कर्म नित्य है। जैसा जीव कर्म करता है, ईश्वर वैसा ही जानता है। एक जीव में कौन-सा कर्म करने, किस सीमा तक करने व वह किस-किस प्रकार से कर सकता है, यह सम्पूर्ण जानकारी तो ईश्वर को है परन्तु जीव कर्म करने में स्वतन्त्र होने से यह निश्चित नहीं है कि भविष्य में वह कैसा कर्म करेगा, कितना करेगा व किस प्रकार करेगा, करेगा भी या नहीं। 'कर्तुमकर्तुम अन्यथा कर्तुम्' का सिद्धान्त जीव पर पूरी तरह से लागू होता है। जीव का कर्म करना और ईश्वर का उसे जानना एक साथ होता है। कर्म करने से न तो पहले व न ही बाद में ईश्वर जाने, न यह कि पूर्वकाल मे ही ईश जान ले व जीव बाद में वैसा ही कर्म करे। ईश्वर के लिए काल विभाजन नहीं होता। ईश्वर की त्रिकालज्ञता जीवों के कर्म की अपेक्षा से है, स्वतः नहीं, ऐसी महर्षि दयानन्द ने व्याख्या की है। इसी के आधार पर जीव द्वारा कर्म करने व ईश्वर द्वारा उसे फल प्रदान करने के सिद्धान्त की रक्षा होती है। यह व्याख्या अपूर्व है।

ईश्वर अनादि है, नित्य है।

कोई पदार्थ अनादि तभी हो सकता है यदि तीनो कारणों, उपादान, नैमित्तिक व साधारण, इनमें मे कोई एक भी कारण उसके निर्माण में न हो। ईश्वर के अनादि होने में वैदिक प्रमाण अनेक हैं–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्ष परिषस्वजाते। ऋ 1-164-20

इसमे वृक्ष के रूप में प्रकृति पाप-पुण्य के फल स्वरूप पदार्थो का उपभोग करने वाले जीव का और केवल साक्षी रूप मे ईश्वर का कथन करके ईश्वर, जीव व प्रकृति के अनादित्व का प्रतिपादन किया है।

एक और प्रमाण है–

स पर्यगाच्छुक्रम् अकायमव्रणं- अस्नाविरं शुद्धमपाप विद्धम्।

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथा तथ्यतोऽर्थान् व्यदधा- च्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥

य. 40-8

महर्षि ने इस मन्त्र में प्रयुक्त 'स्वयम्भूः' का अर्थ अनादि स्वरूप वाला, जिसकी संयोग से उत्पत्ति व वियोग से विनाश नहीं होता, जिसके माता-पिता कोई नहीं, जिसका गर्भवास, जन्म, वृद्धि और क्षय नहीं होते हैं, किया है। 'शाश्वतीभ्यः' का अर्थ भी महर्षि ने ''सनातन, अनादि स्वरूप वाला, अपने स्वरूप के दृष्टि से उत्पत्ति और विनाश से रहित'' किया है। क्योंकि ईश्वर स्वयं से है, सदैव है, इसका आरम्भ नहीं है, इसका अंत नहीं है, यह किसी अन्य सत्ता या तत्व से नहीं है, अतः वह आदि है अर्थात् सादि नहीं है। गीता ने इसका समर्थन किया है–

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः। गीता 2-16

अर्थात् असत् वस्तु की सत्ता नहीं हो सकती व जिसका अस्तित्व है, इसका अभाव नहीं होता। यदि हम यह मानेंगे कि ईश्वर सादि है, अनादि नहीं तो फिर यह प्रश्न उत्पन्न होगा कि जब वह नहीं था तो किसने बनाया ? क्यों बनाया? कितने काल के लिए बनाया? आदि क्योंकि असत् से सत् की उत्पत्ति नहीं होती, अतः वह सदैव से है, अनादि है, नित्य है।

अब तो आधुनिक विज्ञान ने भी मान लिया है कि–A matter cannot the destrogil, not it can he created अर्थात् कोई भी पदार्थ न तो नष्ट किया जा सकता है और न ही इसका निर्माण ही किया जा सकता है। अतः यही सिद्ध होता है कि अनादि है–तीनों पदार्थ, प्रकृति, जीव व ईश्वर। जो अनादि होगा, अनन्त व नित्य भी होगा ही।

ईश्वर दयालु और न्यायकारी है–यह दोनों गुण ईश्वर में एक साथ हैं, ऐसा महर्षि दयानन्द का दृढ़ विश्वास है। उनके विचार में दया का यह अर्थ नहीं है कि अपराधी को दण्ड न दिया जाए। यदि ईश ऐसा करने लग जाए तो संसार में पापों-अपराधों में वृद्धि होती जाएगी। यदि अपराधी को दण्ड न दिया जाए तो दया का नाश हो जाता है। महर्षि पूछते हैं कि एक अपराधी डाकू को छोड देना (=दण्ड न देना) सहस्रों धर्मात्मा पुरुषों को दुःख देना है। एक अपराधी को दण्ड न देने से न तो अपराधी का कल्याण होता है और न ही समाज के हितों की रक्षा होती है। दया यही है कि अपराधी को जेल में डाला जाए। इससे अपराधी व समाज-इन दिनों पर दया होगी। अपराधी पर दया इस अर्थ में है कि वह जेल में रह कर अपराध करने में असमर्थ हो जाएगा, कारागार में रह कर वह पिछले कृत कर्मों पर विचार करते-करते संभवतः इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वह पापाचरण करता रहा है जिसका फल उसे मिला है। कारागार से बाहर निकल कर वह जब दोबारा कर्मक्षेत्र में आएगा तो पापों-अपराधों से दूर रहेगा, इसकी प्रबल संभावनाएं हैं। दूसरी ओर, अपराधी को कारागार में डालने या मार देने से अन्य सहस्रों मनुष्यों को उसके अपराधों का परिणाम भोगना नहीं पड़ेगा तथा समाज में सुव्यवस्था बनी रहेगी व सुख की स्थापना होगी।

जीवात्मा मनुष्य शरीर पाकर पाप-अपराध करता है। शेष योनियां भोग योनियां हैं। मनुष्य शरीर में किए पापों का फल घोड़ा, गधा व कुत्ता आदि शरीर पाकर ही जीव भोग सकता है–प्रारब्ध कर्मों की स्थिति में। इससे कुकर्मों को करते रहने के जो संस्कार जीव पर मनुष्य शरीर पाकर बने थे, वे धुलने लगते हैं। समय व्यतीत होने पर बुराई करने का मार्ग-अभ्यास भी छूटने लगता है क्योंकि मनुष्येतर शरीरों में कोई भी नया कर्म करने का सामर्थ्य ही ईश्वर प्रदान नहीं करता। शुद्धि करके जीव को मनुष्य शरीर में फिर लाया जाता है। यह जीव के कल्याण व पाप-मुक्ति की अलौकिक व्यवस्था है। ईश्वर की दया दोनों पर स्पष्ट ही है। अपराधी का सुधार व समाज में सुख की स्थापना इसी प्रकार हो सकती है। यही ईश्वर का न्याय है व यही उसकी दया है।

महर्षि ने यह भी स्पष्ट किया है कि दया व न्याय में कोई अर्थ भेद नहीं है। ईश्वर की यही दया है कि उसने जगत् में सभी जीवों के उद्देश्यपूर्ति के लिए शरीर, इन के अंग-प्रत्यंग, नस-नाड़ियां व इन्द्रियां आदि व सकल भौतिक पदार्थ बना कर दान स्वरूप दे दिए हैं। महर्षि के विचार में यह सब से बड़ी दया है। वे न्याय इसमें मानते हैं कि सुख-दुःख की व्यवस्था कर्मानुसार सब जीवों के लिए करना अर्थात् संसारस्थ प्राणियों में जो सुख-दुःख का तारतम्य है, वह उन जीवों के पूर्वकृत कर्मों का फल है जिसे ईश्वर अपने न्यायानुसार ही देता है। दोनों का प्रयोजन एक ही है– सब जीवों को पाप और दुःखों से पृथक करना। इन दोनों में इतना ही भेद है कि मन में सब को सुख होने और दुःख छूट जाने की इच्छा और क्रिया करना है, वह दया है जबकि बन्धन में डालना व इससे छुड़ाना न्याय है। यह लेख श्री मद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में तृतीय स्थान पर आया।

गुरदासपुर में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज (गु वि) गुरदासपुर में दिनांक 12.3.02 को शिवरात्रि उत्सव बड़ी धूमधाम से डा. सुकेश गुप्ता की प्रधानगी में मनाया गया। मुख्य वक्ता श्री सत्यपाल जी नन्दा, श्री कुन्दन लाल जी शास्त्री, श्री प्रेम पारस जी, श्री जगदीश अरोड़ा जी और श्री राम निवास शास्त्री जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन सम्बन्धी अपने-अपने विचार रखे। अन्त में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। –गुरबचन, मन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में शताब्दी समारोह

हरिद्वार–गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार वर्ष 2001–2002 को अपने शताब्दी वर्ष के रूप में मना रहा है। मार्च 2001 को इस समारोह का प्रारंभ हुआ था, जिसमें उत्तरांचल सरकार, भारत सरकार के मंत्री, अनेक विद्वान् विभिन्न कार्यक्रमों में पधारे थे। चूंकि गुरुकुल कांगड़ी विश्व प्रसिद्ध आर्य समाज से संबद्ध संस्था है। अतः हिन्दुस्तान की समस्त आर्य समाजों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने इस शताब्दी वर्ष के समापन को भव्य रूप से आयोजित करने का निर्णय लिया है। विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी डा. प्रदीप कुमार जोशी को सार्वदेशिक के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने बताया कि शताब्दी के समापन समारोह को अखिल भारतीय स्तर पर आर्य समाजी जनता को आमंत्रित कर बृहद् रूप में मनाया जाएगा। श्री कैप्टन आर्य ने कहा कि यह समारोह 25, 26, 27 एवं 28 अप्रैल को चार दिन मनाया जाएगा। 25 अप्रैल 2002 को दीक्षान्त समारोह होगा। उसी दिन देश-विदेश में रह रहे स्नातकों का पुनर्मिलन समारोह होगा [illegible] समाज को पुनः गति देने पर विचार किया जाएगा। आर्य समाज को स्वर्णिम् अतीत की ओर ले जाने पर भी विचार होगा।

26 अप्रैल को समापन समारोह का उद्घाटन शोभा यात्रा एवं भजन सध्या से आयोजित होगा। उसी दिन आर्यों के संबंध में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति में पढ़ाई जा रही निराधार बातों का निराकरण करने हेतु एक सम्मेलन होगा, जिसमें देश के विशिष्ट विद्वान् अपने व्याख्यान देंगे।

आर्य समाज के आह्वान पर सरकार द्वारा कुछ बातों को विभिन्न पाठ्य पुस्तकों से निकालने की स्वीकृति हो गई है, जिनमें मुख्य है जैसे वेदों में मांस भक्षण, गुरु तेग बहादुर को लुटेरा कहा जाना, जैन धर्म संबंधी गलत बातें आदि, परन्तु वर्तमान का मुख्य विचारणीय बिन्दु है कि आर्य बाहर से आए तथा वे आक्रमणकारी थे इसको पाठ्य पुस्तकों से निकालने की स्वीकृति अभी तक नहीं हुई। इस संबंध में पहले भी कई सम्मेलन हो चुके हैं। गुरुकुल कांगड़ी में एक विशाल सम्मेलन करने का निश्चय किया गया है। इस बात को लेकर आर्य समाज किसी भी आंदोलन के लिए उद्यत रहेगा।

महिला वर्ष होने के उपलक्ष्य में 27 अप्रैल 2002 को गुरुकुल में एक महिला सम्मेलन भी आयोजित किया जाएगा।

"माता निर्माता भवति" परिवार समाज और राष्ट्र की मुख्य निर्मात्री स्त्री है इस पर भी सम्मेलन होगा। सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रत्येक प्रांत में एक महिला दल की स्थापना की जाएगी, जो महिलाओं के अधिकारों हेतु लड़ेगी भी। इसी दिन एक वेद सम्मेलन होगा। जिसमें विभिन्न विद्वान् भाग लेंगे। जिसमें तय होगा कि वेदों की कौन सी शिक्षाएं आर्य समाज एवं राष्ट्र को आगे बढ़ा सकती हैं।

28 अप्रैल को समापन समारोह होगा। श्री देवरत्न आर्य ने कहा कि इस दिन देश के प्रधानमंत्री को आमंत्रित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस समारोह में देश-विदेश से लगभग 60-70 हजार व्यक्तियों के आने की संभावना है।

श्री आर्य ने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द की तीन मुख्य कर्म स्थलियों से तीन यात्राएं अलग-अलग चलेंगी जिनका समापन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में होगा। पहली यात्रा तलवन पंजाब से, यह स्वामी श्रद्धानन्द की जन्म स्थली है। दूसरी यात्रा बरेली से जहां स्वामी दयानन्द के प्रथम साक्षात्कार के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना जीवन मार्ग बदला था, तथा तीसरी यात्रा दिल्ली से जहां स्वामी जी ने अपना प्राणोत्सर्ग किया था। –डा. प्रदीप जोशी

टंकारा की किरण–सुबोध

□रचयिता–देव नारायण भारद्वाज

टंकारा की किरण सुबोध, शान्त कर गयी तम का क्रोध।
पाया किसने ऐसा बोध, हारे जिससे सब अवरोध॥
अन्तरिक्ष में असंख्य सूरज, उनमें एक हमारा सूरज।
सूरज कुल के नक्षत्रों में, यह पृथ्वी रही हमारी सज।
पृथ्वी के सब देश-देश में, एक हमारा भारत प्यारा।
भारत के गुजरात प्रान्त में, बसता एक ग्राम टंकारा।
टंकारा का एक अबोध, नया दे गया सूरज शोध।
पाया किसने ऐसा बोध, हारे जिससे सब अवरोध॥
कर्षन जी उत्तम अधिकारी, जिनकी रही प्रतिष्ठा भारी।
उनके घर सन्तान पधारी, अमृता यशोदा महतारी।
वे बालक धन्य मूल शंकर, जिनमें जगे ज्ञान के अंकुर।
यजुर्वेद शिव शास्त्र शुभंकर, पढ़ने लगे 'मूल जी' सुख कर।
पाया नित्य शैव-सम्बोध, पूजा शिव को बिना विरोध।
पाया किसने ऐसा बोध, हारे जिससे सब अवरोध॥
चौदह वर्ष अवस्था आई, शिव की महिमा बहुत सुहाई।
निशा-जागरण व्रत धारण में, अपनी निष्ठा खूब दिखाई।
पिता-पुजारी सोये सारे, मूल रहे निज नयन पसारे।
आयेंगे शिव आज हमारे, पायेंगे हम दर्शन प्यारे।
किया पिता ने था अनुबोध, किया मूषकों ने गतिरोध।
पाया किसने ऐसा बोध, हारे जिससे सब अवरोध।
सोई अग्नि बनी अंगारा, जग में चमका रवि टंकारा।
हो गयी यात्रा अब आरम्भ, गिरने लगे अवैदिक खम्भ।
सच्चे शिव का मान हो गया, सुरभित यज्ञविधान हो गया।
वेदों का उत्थान हो गया, दयानन्द का गान हो गया।
गुञ्जित हुआ धर्म-उद्बोध, करने लगा विश्व अनुरोध।
पाया किसने ऐसा बोध, हारे जिससे सब अवरोध॥

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना में महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व ऋषि बोधोत्सव

8 मार्च को आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना में महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का जन्म दिवस प्रातः 7.30 बजे से 9 बजे तक आर्य समाज मन्दिर में मनाया गया। पं. योगराज जी शास्त्री तथा आर्य समाज के प्रधान श्री आशानन्द जी आर्य ने ऋषि जीवन पर विस्तार से चर्चा की।

ऋषि बोधोत्सव 12 मार्च को प्रातः 9 बजे से 2 बजे बाद दोपहर तक मनाया गया। समारोह का आरम्भ यज्ञ से हुआ। लुधियाना के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री वेद भूषण मदान सपरिवार, डा. मुनीश गान्धी सपरिवार, श्रीमती बेअन्ती मुख्य अध्यापिका यजमान बने। यज्ञ आर्य समाज के पुरोहित श्री योगराज जी शास्त्री ने सम्पन्न करवाया। यजमानों को आशीर्वाद के पश्चात् समारोह श्रीमती विनोद जी गांधी प्रधान महिला विंग की प्रधानता में आरम्भ हुआ। श्री योगराज जी शास्त्री, श्रीमती विनोद गांधी जी ने अपने मधुर भजनों द्वारा महर्षि दयानन्द जी महाराज के जीवन का वर्णन किया। आर्य समाज के प्रधान श्री आशानन्द जी आर्य ने कहा कि शिवरात्रि के दिन एक छोटी सी घटना को देख बालक मूलशंकर के मन में सच्चे शिव को प्राप्त करने की अभिलाषा पैदा हुई और उन्होंने तपस्या, योगाभ्यास दण्डी स्वामी विरजानन्द जी से दीक्षा लेकर लक्ष्य को पूरा किया और सारा जीवन वेद प्रचार, स्त्री जाति के सम्मान एवं पिछड़े वर्ग को ऊपर उठाने के लिए लगा दिया। श्रीमती राजेश जी शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि ऋषि दयानन्द सत्य के पुजारी थे। हमें सत्य का सहारा लेकर आर्य समाज का कार्य करना चाहिए। श्रीमती यशवति भल्ला प्रिंसिपल ने कहा कि हमें संगठित रूप से आर्य समाज का कार्य करना चाहिए। श्री वेदव्रत जी वेदालंकार ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में वेद प्रचार और कुरीतियों के विरुद्ध कड़ा संघर्ष किया और काफी सफलता प्राप्त की। हम आर्यों का कर्त्तव्य है कि उनके अधूरे कार्य को पूरा करें। शान्ति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर में सब बहन भाईयो ने भोजन किया लंगर सायंकाल तक चलता रहा। इस समारोह में नौजवान आर्य सभा के सदस्य तथा नगर वी स्कूल के स्टाफ, छात्रों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। –जनकराज भक्त, मन्त्री

महर्षि दयानन्द-प्रमुख साहित्यकारों की दृष्टि में

महर्षि दयानन्द जी से भी बढ़ कर मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता।.....किसी दूसरे प्रतिभाशाली पुरुष से और जो कुछ उपकार देश तथा जाति का कुछ हुआ हो, सबसे पहले वेदों को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने ही हमारे सामने रखा....यदि हमें ऋषियों की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए हम गर्व करते हैं तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़ कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदों से परिचित करा दिया।

"विभिन्न मतों का प्रचलन देश के पतन का कारण है, स्वामी जी की यह निर्भ्रान्त धारणा थी। उन्होंने मत मतान्तरों पर सप्रमाण आक्षेप भी किये.....उनकी इच्छा थी कि इस मतवाद के अज्ञानपक से इस देश को निकाल कर वैदिक शुद्ध शिक्षा द्वारा निष्कलंक कर दें।"

".....आर्यावर्त के अधिकांश भागों में स्त्री-शिक्षा-विस्तार का अधिकांश श्रेय आर्य समाज को दिया जा सकता है।... "

पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"

"सन् 1883 में स्वामी दयानन्द की मृत्यु हुई और 1885 में भारतेन्दु हरिशचन्द्र की। स्वामी दयानन्द ने 20 वर्ष काम किया और भारतेन्दु ने 21 वर्ष। ये दोनों महानुभाव ऐसा सांस्कृतिक प्रभाव छोड़ गये जो दिन दिन तेजी के साथ बढ़ता....चला गया और जिसने शीघ्र ही सम्पूर्ण उत्तर भारत में जागरण की एक नई लहर पैदा कर दी।......"

"........स्वामी दयानन्द के प्रवचनों में अधिक आकर्षण यह था कि वे एकेश्वरवादी थे, रूढ़ियों के विरोधी तथा प्रगति के समर्थक थे। एक ओर वे प्राचीनतम वैदिक संस्कृति को दृढ़ता से थामे थे, दूसरी ओर वे नए-नए सुधारों का स्वागत करते और सर्वसाधारण को उन पर अग्रसर होने को कहते थे। उनके विचार पाश्चात्य विकास से मिलते-जुलते थे, परन्तु वैदिक संस्कृतिमय थे।......"

—आचार्य चतुरसेन शास्त्री

"मेरे हृदय में श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती पर अगाध श्रद्धा है। वे बहुत बड़े समाज संस्कर्ता, वेदों के बहुत बड़े ज्ञाता और भाष्यकर्ता और धर्म संस्कृति के बहुत बड़े पुरस्कर्ता थे...मैं स्वामी जी की विद्वता और उनके कार्य-कलाप को अभागे भारत के सौभाग्य का सूचक चिन्ह समझता हूं। अतएव-धन्यश्च प्राज्ञ मुर्धन्यं दयानन्दं दयाधनम्। स्वामिनं तमहं वन्दे वारं वारं च सादरम्॥"

—आचार्य महावीर प्रशाद द्विवेदी

".......रणारूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई भी नहीं हुआ। दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक केवल सुधारक थे किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आगे बढ़े। वे हिन्दू धर्म के रक्षक होने के साथ ही विश्वमानवता के नेता भी थे। "रीतिकाल के ठीक बाद वाले काल में हिन्दी भाषी क्षेत्रों में जो सबसे बड़ी सांस्कृतिक घटना घटी, वह स्वामी दयानन्द का पवित्रतावादी विचार था। इस युग के कवियों को श्रृंगाररस की कविता लिखते समय यह प्रतीत होता था जैसे स्वामी दयानन्द पास ही खड़े सब कुछ कह रहे हैं।"

—डा० रामधारी सिंह 'दिनकर'

मैं किसी समय आर्य कुमार सभा तथा आर्य समाज का सदस्य था। मेरे स्वतंत्र चिन्तन पर दयानन्द का प्रभाव है। मैं ऋषि दयानन्द को एक महामानव तथा वेदों का उद्धारक मानता हूं।

—डा० हरिवंश राय बच्चन

"......स्वामी दयानन्द ने युग निर्माता की भांति देश के सुप्तमस्तिष्क को प्रबुद्ध करने का प्रयत्न किया....सत्यार्थ प्रकाश इस दिशा में अपना निजी महत्व रखता है। सामाजिक जीवन को उत्प्रेरित करने और अतीत संस्कृति के पुनरुद्धार के निमित्त......आर्य समाज का कार्य प्रशंसनीय रहा है। उसमें प्रतिक्रिया की भावना के स्थान पर नवनिर्माण की वास्तविकता प्रमुख रही है।" —जयशंकर प्रसाद

"पैगम्बरी एकेश्वरवाद की ओर नवशिक्षित लोगों को खिंचते देख स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक एकेश्वरवाद लेकर खड़े हुए और सं. 1920 से उन्होंने अनेक नगरों में घूम-घूम कर व्याख्यान देना आरम्भ किया....."

—आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल

मैं.......आर्य समाज को जितनी धार्मिक संस्था समझता हूं उतनी ही तहजीवी (सांस्कृतिक) संस्था भी...। मैं कहूंगा कि उसके तहजीवी कारनामें उसके धार्मिक कारनामों से ज्यादा प्रसिद्ध और रोशन हैं। आर्य समाज ने साबित कर दिया है कि समाज की सेवा ही धर्म के सजीव होने का लक्षण है। सेवा का कौन सा क्षेत्र है जिसमें उसकी कीर्ति की ध्वजा न उड़ रही हो।......"

—मुन्शी प्रेमचन्द्र

वैष्णव कुल का होने पर भी मैं स्वामी दयानन्द को अपने देश का महापुरुष मानता हूं। उनके लिए मेरे मन में श्रद्धा है। कौन उनके महान् कार्य को स्वीकार न करेगा ? "जो यह वेद ध्वनि गूंजती है, उनकी कृपा से यह गूंजती है।"

—मैथिलीशरण गुप्त

स्वामी दयानन्द युग द्रष्टा, युग निर्माता थे। मेरे संस्कारों पर ऋषि दयानन्द का पर्याप्त प्रभाव है। स्त्रियों को वेदाधिकार दिलाकर उन्होंने महिलाओं में नवीन क्रान्ति का बीजारोपण किया। नारी की वेदना देख कर वह कहा करते थे भाई, इससे अधिक हृदयविदारक दुःख क्या हो सकता है ? विधवाओं की दुःखभरी आहों से इस देश का सर्वनाश हो रहा है। दयानन्द ने वेदों की वैज्ञानिक व्याख्यायें प्रस्तुत कर, वैदिक अध्ययन प्रणाली में एक नूतन युग का सूत्रपात किया। इन्हीं सब कार्यों के लिए हम उनके ऋणी हैं। —महादेवी वर्मा

"स्वामी दयानन्द के वाक्य मुझे वेदवाक्यवत् मान्य हैं और उनकी बात मेरे लिए उदाहरण स्वरूप हैं।"

"हिन्दुओं में स्वामी दयानन्द भगवान की विभूति हैं।"

"लोग स्वामी दयानन्द को मूर्तिपूजा न मानने के कारण बुरा कहते हैं पर काशी के पण्डितों पर अरबों औरंगजेब वार डालिये। दण्डी विरजानन्द जी ने सच कहा था-कथं काशी विदुष्मती?"

—वृन्दावन के वैष्णव आचार्य पं. राधाचरण गोस्वामी

आर्य समाज खरड़ में मैडिकल कैम्प

आर्य समाज खरड़ में 3-3-2002 रविवार को एक बवासीर निवारण कैम्प आयुर्वैदिक पद्धति पर आधारित आयोजित किया गया। कैम्प से पूर्व सैंकड़ों लोगों ने मिल कर हवन यज्ञ किया तत्पश्चात् श्री अजय गान्धी जी न्यूरो थैरेपी प्रमुख पंजाब ने दीप प्रज्वलित करके शिविर का उद्घाटन किया। खरड़ तथा आस-पास से आए लगभग 80 रोगियों ने सफल चिकित्सा का लगभग उठाया। डा. जे. एन. अग्निहोत्री मैडिकल आफिसर रोपड़ ने अपने चिकित्सक दल के साथ कार्य किया।

शीघ्र ही आर्य कालेज फार वूमैन खरड़ की ओर से नेत्र-चिकित्सा का कैम्प भी लगवाया जाएगा। —विश्वबन्धु आर्य, प्रधान

होशियारपुर में ऋषि जन्म उत्सव

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर, होशियारपुर में साप्ताहिक हवन यज्ञ के पश्चात् महर्षि स्वामी दयानन्द जी का जन्म उत्सव 10-3-02 को प्रातः 9.00 बजे बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। लगभग 100 श्रद्धालु नर-नारियों व बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। भजनों द्वारा ऋषि गाथा को सुनाया गया। आचार्य भद्रसेन जी ने विस्तार से देव दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए आज के परिपेक्ष्य में स्वामी जी के सन्देश को विश्व भर में फैलाने की बात को जोरदार शब्दों में कहा। डा. धर्मवीर कपूर (संरक्षक) ने यजमान पद को ग्रहण किया आर्य समाज की निरन्तर सेवा करते रहने का प्रण किया। —यशपाल वालिया, मन्त्री

आर्य समाज, सैक्टर 22-ए, चण्डीगढ़ में ऋषिबोध महापर्व (शिवरात्री) उत्सव मनाया गया

आर्य समाज के तत्वावधान में ऋषिबोध महापर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया । समारोह का आरंभ हवन-यज्ञ से हुआ। पं. जगदीश शास्त्री जी ने हवन करवाया। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं उनकी विशेषताओं को प्रकट करते हुए गुरूकुल कुरुक्षेत्र के उच्चकोटि के विद्वान वक्ता आचार्य देवव्रत जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि परमात्मा द्वारा बनाई गई सृष्टि में कुछ न कुछ घटनाएं अवश्य होती हैं। उन्होंने स्वामी दयानन्द जी की विशेषताओं को बताते हुए कहा कि स्वामी जी ने समाज में फैली हुई रूढ़िवादिता को दूर किया। संसार में अनेक प्रकार के महापुरुष आए लेकिन स्वामी दयानन्द जी ऐसे श्रेष्ठ महापुरुष थे जिन्होंने देश में पनपती चुनौतियों को स्वीकार किया। उस समय स्वामी जी के सामने सबसे बड़ी चुनौती ब्रिटिश साम्राज्य की थी जिसको स्वामी जी ने बिल्कुल स्वीकार नहीं किया। स्वामी जी ने नारी उत्थान की बात कही। नारी उत्थान के लिए नारी को शिक्षित करने का विषय हो, चाहे विधवाओं के कल्याण की बात हो, चाहे नारी के विकास की बात हो, इन सभी को ऊंचा उठाने के लिए स्वामी दयानंद जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया।

देवव्रत जी ने आगे बताया कि स्वामी दयानन्द जी ने नारी के दुखों को अपने अन्दर देखा। नारी जाति का जितना उपकार स्वामी दयानन्द जी ने किया उतना उपकार किसी और महापुरुष ने नही किया। स्वामी जी ने छुआछूत को दूर किया, जातपात की बात करते हुए उन्होंने कहा कि मैं जात-पात को कर्म के आधार पर मानता हूं।

इसी अवसर पर पंजाब विश्वविद्यालय के डा. विक्रम विवेक जी ने ऋषि बोधपर्व पर कहा कि जब-जब मानव जीवन में बोध होता है तब उस मानव में परिवर्तन अवश्य होता है उन्होंने कहा कि आज हमें इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। स्वामी दयानन्द ने सत्य धर्म, सत्य व्यवहार, सत्य दर्शन को अपनाया। पुरानी पीढ़ी के महापुरुषों ने वेदों के सन्देश को देश के कोने-कोने तक पहुंचाया। आज हमें इश्वर का अस्तित्व कहीं नहीं दिखाई देता। आजकल व्यक्ति सच्चे मार्ग को छोड़कर गलत रास्ते पर चलने लग गया है। जब तक हमें बोध नहीं होगा तब तक हम अन्धी गलियों में मारे-मारे फिरते रहेंगे।

पंजाब विश्वविद्यालय की डा. वसुन्धरा रिहाना ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि जो व्यक्ति अच्छे कर्म करता है वही श्रेष्ठ है। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी समाज, राष्ट्र तथा धर्म की रक्षा के लिए जिए। हम शिवत्व को वेदों के माध्यम से ही प्राप्त कर सकते हैं। हमें अपने जीवन को ऊंचे मार्ग पर ले जाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के बच्चों ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर मधुर गीत प्रस्तुत किया:-

टंकारा ग्राम है, मथुरा गुरू का धाम है,
ऐसे ब्रह्मचारी को बारम्बार प्रणाम है।

आर्य समाज के महामन्त्री बुद्ध राम आर्य जी ने सभी का धन्यवाद किया। ऋषि लंगर भी इस अवसर पर लगाया गया। इसी प्रकार 17-3-2002 को पं. लेखराम जी का बलिदान दिवस मनाया गया।

- रामरत्न महाजन, प्रधान

हांसी में शिवरात्रि पर्व मनाया गया

दिनांक 10-3-2002 रविवार को आर्य समाज हांसी के प्रांगण में ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य सत्यव्रत जी योगी गुरुकुल सुन्दर पुर (रोहतक) का सारगर्भित प्रवचन हुआ जिसमें आचार्य जी ने आत्मा-परमात्मा पर बोलते हुए मानव शरीर में वास करने वाली आत्मा और परमात्मा की जानकारी कराई तथा प्रभु से मिलने का रास्ता ईश्वर भक्ति करने की प्रेरणा सभी नर नारियों को दी। आचार्य जी से पूर्व महाशय श्री जबर सिंह के महर्षि देव दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित भजन हुए। मानवती आर्य कन्या स्कूल के बच्चों ने भी इस कार्यक्रम में अपना रोचक कार्यक्रम रखा। सभा के अध्यक्ष श्री. चिमन लाल जी नारंग थे तथा मुख्य अतिथि लाला हंसराज जी थे। सभा समापन के बाद आर्य समाज के मन्त्री श्री सतीश कुमार ने सभी का धन्यवाद किया सभा का संचालन पुरोहित राम किशोर शास्त्री ने किया सभी बाहर से पधारे सत्संगीय जनों को समाज में ऋषि लंगर में भोजन कराया गया। सभी ने कार्यक्रम को सराहा इति।

—सतीश कुमार आर्य,
मन्त्री।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस

डी. एम. कालेज ऑफ एजुकेशन, मोगा में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रात: 10 बजे हवन यज्ञ करवाया गया, जिसमें प्राचार्य श्री सिद्धेश्वर शर्मा, श्री जगदीश कुमार अग्रवाल, स्वामी सच्चिदानन्द जी, श्री ज्ञान मित्र, योगेश जी, पुरोहित आर्य समाज मन्दिर), अध्यापक वर्ग व विद्यार्थियों ने यज्ञ में आहुतियां डाली हवन यज्ञ के उपरान्त प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय में अंतर माहविद्यालय वाचन प्रतियोगिता करवाई गई जिसमें विद्यार्थी हरप्रीत कौर, कुलदीप कौर, सुनीति, अमनदीप सिंह, करणबीर सिंह, अमित शर्मा, कमलप्रीत, भारत, दीपक कुमार, हरविन्द्र सिंह, नीतू, इन्द्रजीत कौर, नवदीप कुमार, हर्ष गोयल, अवतार सिंह, व कुमारी अनीता, संजीव (डी. एम. कालेज, मोगा) आदि ने भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में मुख्य निर्णायक प्रो. आर. सी. शर्मा (विभागध्यक्ष वनस्पति विभाग, डी. एम. महाविद्यालय, मोगा) प्रो. मोहन लाल जी, प्रो. प्रणिता गोयल रहे। प्रभावी मंच संचालन करते हुए प्रो. जसपाल सिंह ने प्रतियोगिता का आरम्भ भजन गायन से किया जिसे कुमारी रजनी बाला ने गाया। सभी प्रतियोगियों ने बहुत सुन्दर ढंग से महर्षि जी के जीवन दर्शन पर अपने विचार प्रकट किये। प्रतियोगिता को जीतने वाले विद्यार्थियों में विद्यार्थी सुनीति, प्रथम हरप्रीत कौर, द्वितीय व कुलदीप कौर तृतीय स्थान पर रही इन सब को व संजीव को प्रोत्साहित किया गया। अन्त में प्रो. सिद्धेश्वर शर्मा जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का योगदान शिक्षा जगत में, दर्शन के क्षेत्र में स्पष्ट किया व अतिथियों का धन्यवाद किया। सारा संचालन प्रो. रणजीत सिंह मांगट व प्रो. जसपाल सिंह, प्रो. बख्तावर धालीवाल, विजय कुमार, सारे कर्मचारियों द्वारा किया गया जो कि एक ऐतिहासिक कदम साबित हुआ।

महिला सशक्तिकरण व शिक्षा सेमिनार मोगा में

डी. एम. कालेज ऑफ एजुकेशन, मोगा में गत दिवस अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिला सशक्तिकरण और शिक्षा विषय पर सेमिनार करवाया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. नेसला शर्मा, रीडर, शिक्षा विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से पहुंची। मंच संचालन प्रो. जसपाल सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में 'शब्द' गाया गया, उसके उपरान्त विद्यार्थी कमलजीत सिंह ने अपनी कविता 'उल्टी गंगा' पढ़ी। महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सिद्धेश्वर शर्मा जी ने मुख्य अतिथि का जहां स्वागत किया, वहीं उनके जीवन व दर्शन को भी स्पष्ट किया। प्राचार्य ने गुजरे पलों की याद भी ताजा करवाई जब डॉ. नेसला शर्मा, डी. एम. शिक्षा महाविद्यालय, मोगा में कार्यरत थी। प्रो. शर्मा ने मुख्य अतिथि के साथ आये अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. नेसला शर्मा जी ने अपने शोध पत्र को स्पष्ट करते हुए वर्तमान में महिलाओं की स्थिति स्पष्ट की। दिन-प्रतिदिन जागरुकता, शिक्षा व कानुनों के बन जाने पर भी महिलाओं की स्थिति वहीं खड़ी लगती है। डॉ. शर्मा का कहना था कि इस सुधार के लिए स्वयं को सुधारना अति आवश्यक है। इस अवसर पर उपस्थिति पुराने विद्यार्थी श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा (कनाडा निवासी) ने कालेज को 11000 रुपये दान दिये व अपनी पुरानी यादों को ताजा करते हुए कुछ शेयर भी कहे। उनके साथ स. उपेन्द्रजीत लाम्बा भी इस अवसर पर पधारे थे। अंत: में प्राचार्य सिद्धेश्वर शर्मा व स. उपेन्द्रजीत लाम्बा जी ने मुख्य वक्ता को स्मृति चिन्ह भेंट किया। श्री सुरेन्द्र शर्मा जी को भी प्रो. रणजीत सिंह, प्रो. मोहन लाल जैदका व प्राचार्य और लम्बा जी ने स्मृति चिन्ह प्रदान किया। प्रा. बख्तावर सिंह ने मुख्य वक्ता व अतिथियों का धन्यवाद किया। इस तरह कालेज का यह एक और सफल आयोजन रहा।

—प्रो. जसपाल सिंह (हिन्दी विभाग)

आर्य समाज सिकन्दरपुरा भठिण्डा में समारोह

गत दिनों आर्य जगत् के लिए प्रसन्नता का दिवस बना अभी सूर्य उदित भी नहीं हुआ उससे पहले आर्य समाज के कार्यकर्त्ता आर्य समाज सिकन्दरपुरा भठिण्डा में इकट्ठे हुए आर्य समाज भवन को लाईटों से दुल्हन की तरह सजाया गया आर्य समाज की तरफ आने वाले रास्तों पर पानी छिड़काव करके सड़क के दोनों ओर रंग बिरंगी रंगोली, ओ३म् के झण्डे एवं वैदिक वाक्यों से सुसज्जित बैनर रास्तों की रौनक बढ़ा रहे थे यह दृश्य देखने योग्य था।

सर्वप्रथम 'ओ३म् ध्वज' आज के मुख्य अतिथि श्री शंकर लाल जी बत्तरा (बत्तरा फ्लोर मिल्ज श्री गगानगर) ने अपने कर कमलों से फहराया, आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल के बच्चों ने 'जयति ओ३म् ध्वज' गीत गाकर ध्वज का मान बढ़ाया।

इस अवसर पर यज्ञ आचार्य सुनील कुमार शास्त्री के पुरोहितत्व किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री शंकर लाल जी बत्तरा सेवक राम जी भोला, एम सी , श्री एम पी कपूर (मैनेजर बैंक) श्री केवल कृष्ण जिन्दल श्री सुनील कुमार बंसल सपत्नीक रहे। यजमानों तथा आई हुई संगत ने भी बड़ी श्रद्धा भक्ति भाव से हवन में आहुतियां प्रदान की। आचार्य सुनील कुमार शास्त्री ने हवन यज्ञ के बीच-बीच में मन्त्रों की सरल ढंग से व्याख्या की। हवन के उपरान्त ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज आर्य समाज को जागने की जरूरत है जैसे काठ में अग्नि रहती है परन्तु बिना अग्नि के संयोग से प्रकट नहीं होती वैसे ही आर्य समाज एक चिंगारी है। फिरोजपुर से पधारे श्री विजय आनन्द जी ने भजनों के माध्यम से आर्य समाज के सिद्धान्त लोगों को बताये सभी ने इनके गीतों की सराहना की। मुख्य अतिथि श्री शंकर लाल जी बत्तरा ने अपने विचारों मे आर्य समाज एवं ऋषि दयानन्द जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को अपनाने पर जोर दिया तथा आर्य समाज में चल रहे निर्माण कार्य को बढ़ाने के लिए 21000/- रुपए दान दिए, श्री सेवक राम भोला एम.सी. ने 2100/- इसी तरह अन्य दानी महानुभावों ने भी बढ़-चढ़ कर दान दिया।

इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए स्थानीय आर्य समाजों व इनसे सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्थानीय के अतिरिक्त आर्य समाज भुच्चो मण्डी, गोनियाना मण्डी, गिदड़बाहा, मानसा, रामांमण्डी, फिरोजपुर, मुक्तसर के आर्यों ने भी हिस्सा लिया। शहर के गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए। कार्यक्रम के पश्चात् मन्दिर की ओर से ऋषि लंगर लगाया गया जो 5-6 घण्टे तक चला और इसकी व्यवस्था कौशल पुरी जी ने की। मंच संचालन एम.सी. अरोड़ा जी ने किया। अन्य में श्री धर्मपाल जी रल्हन ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया आर्य समाज सिकन्दरपुरा ने संकल्प किया कि वैदिक विचारों की बढ़ौतरी के लिए हमें आगे आना चाहिए। आर्य समाज के पास कोई अपना आय का साधन नहीं है यह समाज लोगों के दान पर निर्भर है फिर भी निश्चय करके आज दिनांक 24-2-2002 को एक सिलाई केन्द्र चालू कर दिया है साथ ही साथ जो बच्चे बेसहारा, गरीब, अपाहिज है उनके लिए फ्री शिक्षा की व्यवस्था भी आज से कर दी गयी। सिलाई केन्द्र में 5 लड़कियां तथा फ्री शिक्षा विद्यालय में 15 बच्चों को प्रवेश दिया गया है अभी बच्चे बढ़ने की संभावना है। बच्चों को मन्दिर की ओर से फ्री पैन्सिलें, कापियां किताबें भी बांटी गयी है समय-समय पर व्यवस्थाएं बढ़ाई जाएंगी।

आर्य समाज इन बच्चों के भविष्य को बनाने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रहा है और करता रहेगा। बच्चों का आत्मिक, बौद्धिक शारीरिक विकास हो इसके लिए कृत संकल्प है।

आर्य समाज ने एक वाचनालय भी प्रारम्भ कर दिया है जिसमें स्थानीय लोग रुचि लेते हैं और वाचनालय में आकर अध्ययन करते हैं ईश्वर की अनुकम्पा चाहते हैं प्रभु हमें शक्ति दे हम ऋषि ऋण को उतार सकें।

–राजेन्द्र पाल, कोषाध्यक्ष
आर्य समाज सिकन्दर पुरा, भठिण्डा

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में महर्षि दयानन्द जन्म दिवस

8 मार्च स्कूल के विशाल आंगन में प्रातः 9.00 बजे से 1.30 बजे बाद दोपहर तक बड़े समारोह से मनाया गया।

सबसे पहले हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें निम्न यजमान थे। श्री अजय कुमार बत्रा सपरिवार, श्री वेदप्रकाश भंडारी, श्रीमती शुभलता, श्री अश्विनी कुमार, श्रीमती सुनीता मलिक, श्री संदीप कुमार, श्रीमती अविनाश कुमारी थे। यज्ञ की समाप्ति एवं यजमानों को आशीर्वाद के बाद श्री अजय कुमार जी बत्रा ने ज्योति प्रचंड की। लुधियाना के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री वेद भूषण मदान जी मालिक, वी.के. स्टील ने ओ३म् का ध्वज लहराया। प्रबन्ध समिति के सदस्यों ने उन्हें हार पहना कर सम्मानित किया। ध्वज गीत श्री योगराज जी शास्त्री ने गाया। समारोह के अध्यक्ष सेठ श्री रामेश्वर दास जी गुप्ता जब स्टेज पर पहुंचे तो नगर के गणमान्य व्यक्तियों, प्रबन्ध समिति के सदस्यों ने उन्हें हारों से लाद दिया। उन्होंने समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा कि सदियों के बाद महर्षि दयानन्द जी जैसे महापुरुष का भारत में आगमन हुआ। उन्होंने देश की सोई हुई जाति को जगाया। नारी जाति, दलित वर्ग को बराबर का सम्मान देने के लिए आवाज उठाई। उन्होंने नारा लगाया स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। आज उनके जन्म दिवस पर मैं अपनी ओर से लाख-लाख बधाई देता हूं। पं. योगराज जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज हबीबगंज ने अपने सुरीले भजनों से ऋषि गुणगान किया। स्कूल के आठवीं कक्षा के विशाल ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर विचार रखे। आठवीं कक्षा की किरण ने कविता प्रस्तुत की। छठी कक्षा के आकाशदीप ने कविता पेश की। बच्चों के कार्यक्रम की तैयारी श्रीमती अविनाश और कुमारी ज्योति ने करवाई। इस अवसर पर श्रीमती राजेश जी शर्मा मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री प्रीतम देव मोगा। इसके अतिरिक्त पं. धर्मदेव जी सभा कार्यालयाध्यक्ष पधारे। उनको हार पहनाकर प्रबन्ध समिति के सदस्यों ने स्वागत किया। श्री अनिल गौतम एवं पार्टी, कुमारी नम्रता सोनी ने अपने सुन्दर गीतों से समय बांध दिया। श्री प्रीतम देव आर्य ने अपने भाषण में कहा कि ऋषि दयानन्द ने सदा सच्चाई का साथ दिया। हमें उनके मार्ग पर चल कर सच्चाई का साथ देना चाहिए। पं. धर्मदेव जी आर्य ने ऋषि जीवन की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि वह महान् गुरु थे। एक बार उनके विरोधियों ने जब उनके अपमान में उनकी शक्ल बना कर जूतों का हार डाल कर जलूस निकाला तो उनके भक्तों ने उनका उसी शैली में उत्तर देना चाहा परन्तु उन्होंने कहा कि नकली दयानन्द का यही हाल होना चाहिए। असली दयानन्द तो मैं आपके पास बैठा हूं। वेद के प्रचार के लिए सारा जीवन लगा दिया और अपने अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। अन्त में प्रबन्ध कमेटी के प्रधान ओम प्रकाश गुप्ता एवं प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने सबका धन्यवाद किया। ऋषि लंगर सायंकाल तक चलता रहा। इस समारोह को सफल बनाने जहां स्कूल का स्टाफ, छात्र-छात्राओं ने अत्यन्त मेहनत की वहां प्रबन्ध समिति के सदस्यों श्री बृज मोहन अरोड़ा, सतपाल नारंग, श्रीमती विनोद गांधी, श्री हर्ष आर्य, श्री ओम प्रकाश गुप्ता, श्री विजय सरीन ने पूरा सहयोग दिया।

–सुनीता मलिक, प्रिंसीपल
दयानन्द पब्लिक स्कूल,
लुधियाना

स्कूल के लिए एडमिनिस्टेटर की आवश्यकता

महर्षि दयानन्द हाई स्कूल सरहिन्द के लिए एक एडमिनिस्टेटर की आवश्यकता है जो डब्बल एम.ए, या सेवा निवृत्त प्रिंसिपल व हैडमास्टर हो। महिला व पुरुष दोनों ही आवेदन कर सकते हैं। पिन कोड-1463 टेलीफोन-22883, 20115, 20102 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

–राजेन्द्र शर्मा

एक महत्वपूर्ण प्रश्न और उसका समाधान

क्या सत्यार्थ प्रकाश एक अमर ग्रन्थ है

लेο डाο भवानी लाल भारतीय

आर्य सिद्धान्तों के मर्मज्ञ श्री इन्द्रजित देव ने अक्तूबर 1988 के दयानन्द संदेश के अंक में सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी प्रश्नोत्तर शीर्षक एक लेख लिख कर महर्षि दयानन्द के इस अन्यतम ग्रन्थ के बारे में समुचित जानकारी पाठकों को उपलब्ध कराई थी। इस प्रश्नोत्तर माला के अन्तिम प्रश्न 'क्या स. प्र. अमर है ?' के उत्तर में विद्वान् लेखक ने ठीक ही लिखा था कि आर्य दृष्टिकोण से वेद के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रन्थ अमर नहीं है। ऋषि दयानन्द ने सत्य अर्थ के प्रकाशन तथा असत्य, मिथ्या मतवाद के खण्डन की दृष्टि से इसकी रचना की थी। उन्होंने अत्यन्त विनम्रता पूर्वक लिखा था कि उनके कथन या लेखन को अन्तिम सत्य (शास्वत) न समझा जाए। भूलचूक के संशोधन की आवश्यकता सदा रहती है। ऋषि लोग यथार्थ धर्म के द्रष्टा होते हैं यह सत्य है किन्तु मानव रचित कोई वस्तु शास्वत तथा अमर नहीं होती। एक मात्र देवकाव्य वेद ही अमर है जो कभी जीर्ण नहीं होता।

श्री देव के वस्तुनिष्ठ विचार का खण्डन करते हुए डा. वेद प्रकाश आर्य (लखनऊ) ने दिसम्बर 1988 के द.सं. में एक लेख छपाया जिसका शीर्षक था क्या स प्र. अमर ग्रन्थ नहीं है ? इस लेखक को मैं व्यक्तिशः जानता हूं। कुछ समय पहले ये मेरे निवास पर आये तब मैंने उनसे वार्तालाप के दौरान जाना कि ये महानुभाव प्रच्छन्न पौराणिक है, महावितण्डावादी हैं तथा आर्य सिद्धान्तों का नाम लेकर पौराणिक विश्वासों की पुष्टि करने का दुष्प्रयत्न करते हैं। इनसे बात करते-करते मैं भी आवेश में आ गया, जहां तक कि पड़ौसी भी पूछने लगे कि मामला क्या है, जो आप इतने क्रुद्ध हो उठे। अस्तु। इस व्यक्ति का मूल अभिप्राय यह बताना है कि महर्षि ने मत मतान्तरों का खण्डन कर एक महान् अनर्थ का काम किया है। प्रासंगिक लेख में भी वह अनेक प्रकार के वाक्छल का सहारा लेकर ऋषि के मौलिक मन्तव्यों के विरोध में ही कहता है।

डा. वेद प्रकाश के निम्न वाक्य अत्यन्त दूषित तथा तर्क एवं युक्ति के विरुद्ध हैं-

1. खण्डन साध्य न होकर साधन मात्र है ?

2. स.प्र. मुद्रणालय में छपे हुए कुछ कागज के पन्नों का नाम नहीं है।

3. आर्य समाज रहे या न रहे स.प्र. रहेग'। हमारा निवेदन है कि स.प्र. का पोषक आर्य समाज ही नहीं रहेगा तो उसका प्रचार कैसे हो सकेगा?

4. ऋग्वेद के वाक्य यथापूर्वम्ऽकल्पयत् को उद्धृत कर लेखक डा. वेद प्रकाश सत्यार्थ प्रकाश को अमर बताते हैं। अन्ततः लेखक ने जो तीन बिन्दु प्रस्तुत किए हैं वे नितान्त भ्रामक तथा आर्य समाज की धारणाओं के प्रतिकूल हैं लेखक कहता है-

1. स.प्र. की रचना का मूल प्रयोजन सत्य की प्रतिष्ठा है न कि असत्य मत खण्डन। वाक्य के उत्तरार्द्ध से लेखक की पौराणिक असत्य मत में प्रच्छन्न निष्ठा स्पष्ट झलकती है। निश्चय ही ऋषि ने असत्य मतों का उग्र खण्डन करने के लिए ही स.प्र. के अन्तिम चार समुल्लास लिखे थे।

2 लेखक का यह शब्दाडम्बर पूर्ण वाक्य पाठकों को भ्रमित करने वाला है-यह किसी महान् लेखक की कृति न होकर महर्षि की सत्यवाणी है जो कालातीत होती है। क्या ऋषि को महान् लेखक हम नहीं मानेंगे। स.प्र. में ऋषि ने अन्य लेखकों या ग्रन्थों को अपने मत की पुष्टि में पेश किया है किन्तु उन लेखकों के कथन का दायित्व सर्वथा ऋषि पर नहीं है। उदाहरणार्थ 11वें समुल्लास के अन्त में एक पत्र मोहन चन्द्रिका को उद्धृत कर ऋषि ने युधिष्ठिर से लेकर पृथ्वीराज चौहान तक वे राजाओं की वंशावली दी, किन्तु इसकी सत्यता-असत्यता के लिए ऋ. द. को उत्तरादायी नहीं माना जा सकता।

3. ऋत और सत्य से संयुक्त होने के कारण स.प्र. भी नित्य है। लेखक का यह कथन असत्य, अप्रामाणिक तथा हेत्वाभासपूर्ण है।

उदयपुर सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर डा. भवानीलाल भारतीय का भव्य सम्मान

उदयपुर-28 फरवरी-नवलखा राजमहल में आयोजित सत्यार्थ-प्रकाश महोत्सव के अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध शोध विद्वान् लेखक तथा प्रगल्भ वक्ता डा. भवानी लाल भारतीय का जोधपुर की समस्त आर्य समाजों की ओर से सम्मान किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में अनेक आर्य संस्थाओं की ओर से उन्हें माल्यार्पण किया गया। महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास जोधपुर के कार्यकारी प्रधान श्री विजय सिंह भाटी ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया तथा भारतीय जी की साहित्य सेवा के उपलक्ष्य में उन्हें इक्कीस हजार की राशि अर्पित की। सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के प्रधान स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने शाल प्रदान किया तथा न्यास द्वारा प्रकाशित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका की प्रति भेंट की। इस सम्मान के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए डा. भारतीय ने ऋषि दयानन्द विषयक अपने विस्तृत लेखन का परिचय दिया और कहा कि सम्प्रति वे ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन शीर्षक ग्रन्थ का लेखन कर रहे हैं। डा. भारतीय के वेद, उपनिषद्, आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द विषयक 125 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। अगले वर्ष पचहत्तरवें वर्ष में प्रविष्ट होने वाले डा. भारतीय के अमृत महोत्सव के आयोजन की परिकल्पना प्रस्तुत की जा रही है।

—डाο राम कृष्ण आर्य

श्री सार्वदेशिक आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष: 292926

रजि. नं. एम. पी. 17504/58

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

दूरभाष : 292926

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष—56 अंक : 1 सृष्टि संवत 1960853102, 31 मार्च से 7 अप्रैल 2002 दयानन्दाब्द 178

सत्यार्थ प्रकाश की रचना का प्रयोजन

☐ प्रो० डॉ० भवानी लाल भारतीय, 8-423, नन्दन वन, जोधपुर, (राजस्थान)

ऋषि दयानन्द ने अपने सिद्धान्तों और वेदाधारित मन्तव्यों के स्पष्टीकरण हेतु जो विशद साहित्य लिखा, उसमें सत्यार्थप्रकाश अन्यतम है। इसके चौदह समुल्लासों में मानव द्वारा आचरणीय सार्वकालिक धर्म की विशुद्ध रूपरेखा प्रस्तुत करने के साथ-साथ संसार के विभिन्न मत-मतान्तरों में पाये जाने वाले अनेक अवैज्ञानिक विश्वासों तथा अन्ध धारणाओं की समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण मुरादाबाद निवासी राजा जय कृष्णदास के अनुरोध पर तैयार किया गया था। तब तक स्वामी जी का हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार नहीं था। उनकी मातृ भाषा गुजराती थी और 1873 तक वे संस्कृत के माध्यम से ही उत्तर भारत में अपने व्याख्यान आदि दिया करते थे। शीघ्रता वश जब इस ग्रन्थ का पहला सस्करण 1875 में छपा तो उसमें ईसाइयत तथा इस्लाम की समीक्षा में लिखे गये दो समुल्लासों का समावेश नहीं हो सका। कालान्तर मे इसके दूसरे संस्करण के छपने की तैयारी हुई तो स्वामी दयानन्द ने इसका समग्ररूप से संशोधन, परिवर्धन और सम्पादन किया। यह सशोधित द्वितीय संस्करण भी उनके निधन के एक वर्ष पश्चात् 1884 मे प्रकाशित हो सका। ('11वे समुल्लास तक के पृष्ठ स्वामी जी के जीवन काल में ही छप चुके थे।-सम्पादक)

प्रथम संस्करण की भाषा भी अधिक परिमार्जित नहीं थी किन्तु इससे भी अधिक दोषावह रहा लेखक के मन्तव्य के प्रतिकूल अनेक बातो का प्रमादवश छप जाना। कारण तो यही था कि निरन्तर प्रवास के कारण स्वामी जी अपने ग्रन्थ के प्रूफ नहीं देख सके और मुद्रण के समय सम्भवत: प्रकाशक राजा जय कृष्णदास ने भी कुछ मनमानी की। जब स्वामी जी के ध्यान मे ये बाते लाई गई तो उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि जो सिद्धान्त विरुद्ध बातें छप गई हैं उन्हें अगले संस्करण में सुधारा जाएगा। प्राय: शंका की जाती है कि सत्यार्थ प्रकाश में खण्डन-मण्डन के प्रकरण की क्या आवश्यकता थी जबकि लेखक का प्रयोजन तो सत्य अर्थ का प्रकाश करते हुए वैदिक धर्म की रूपरेखा प्रस्तुत करना ही था। क्या लेखक के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं था कि वह मानव धर्म के वास्तविक रूप को व्याख्यात करके ही अपनी लेखनी को विराम देता। क्या इस देश के तथा मध्य एशिया में जन्में सैमेटिक मजहबों की आलोचना से विरत रहना उचित नहीं था ? स्वामी जी को भी इस प्रकार की शंकाओं के उठने की पूर्ण आशंका थी। फलत: उन्होंने अपने ग्रन्थ की रचना का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए भूमिका में लिखा "मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना सत्य कहाता है।"

मत-मतान्तरों की आलोचना मे स्वामी जी पूर्णतया पूर्वाग्रह मुक्त दृष्टिकोण लेकर प्रवृत्त हुए थे। वे यह अनुभव करते थे कि वेदाधारित धर्म के दिव्य आलोक से जो मत मतान्तर जितने दूर चले गये हैं वे असत्य और पक्षपात के उतने ही निकट होते गये हैं। उन्होंने अनुभव किया कि भारत में प्रचलित शैव, वैष्णव, शाक्त आदि सम्प्रदाय किसी न किसी रूप में वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करते हुए भी वेदों मे प्रतिपादित सार्वजनिक मानवीय शिक्षाओ से दूर हट गए हैं। पैगम्बरवाद तथा किसी स्थान विशेष में निवास करने वाले ईश्वर की कल्पना को प्रश्रय देने वाले सभी मजहब स्वर्ग एवं नरक के मिथ्या विश्वासों में लोगों को उलझा रहे हैं। इसलिए उन्होंने अपना समीक्षाओं मे जहा मध्य एशिया में जन्में पैगम्बरवादी मजहबों की आलोचना की, उससे पहले भारत वर्षीय सम्प्रदायों की तर्क एव युक्तिहीन बातों का भी खण्डन किया। वेद विरुद्ध मतों के खण्डन की प्रवृत्ति अकेले दयानंद में ही उजागर हुई हो, ऐसी बात नहीं है। शंकराचार्य से लेकर राजा राममोहन राय तक के धर्माचार्यों ने वेदविरुद्ध मतों के खण्डन में ऐसी ही रुचि दिखाई है।

मत-मतान्तरों की समीक्षा में प्रयुक्त अपनी पूर्वाग्रहरहित दृष्टि को स्पष्ट करते हुए स्वामी दयानन्द ने लिखा-"यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ हू और बसता हूं तथापि जैसे उस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूं वैसे भी दूसरे देशस्थ व मतवालों के साथ ही बर्तता हूं क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आज कल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्द करने में तत्पर होते हैं वैसे ही मैं होता, परन्तु ऐसी बाते मनुष्यपन से बाहर हैं।" स्वामी जी ने इस ग्रन्थ की भूमिका में यह भी स्पष्ट किया है कि किसी ग्रन्थ का अध्ययन करते समय वाक्यार्थ बोध के लिए आकाक्षा, योग्यता, आसत्ति और तात्पर्य का जानना आवश्यक है। लेखक जिस अभिप्राय को स्पष्ट करना चाहता है वही उसके वाक्यों से स्पष्ट होता है, यह आकांक्षा कहलाती है। जिस शब्द में जिस अर्थ को प्रगट करने की शक्ति होती है, वह योग्यता है। जिस पद का जिस अन्य पद से सम्बन्ध होता है उसे उसके समीप रखना आसत्ति कहलाता है। वक्ता या लेखक के अभिप्राय को ही उसके लेख या कथन से निकालना तात्पर्य कहलाता है।

सत्यार्थ प्रकाश में उत्तरार्ध को लिखने मे स्वामी जी को पर्याप्त श्रम करना पडा था। उपदेशक रूप मे सार्वजनिक जीवन मे आने से पहले उन्होने व्यापक देश भ्रमण कर मत-मतान्तरो के पूजा स्थलो, सम्प्रदायाचार्यों तथा उनकी रीति-नीति का सूक्ष्म अध्ययन किया था। सत्यार्थ प्रकाश का लेखन करते समय उन्होने अनुभव किया था कि मत-मतान्तरों की समीक्षा का कार्य कण्टकाकीर्ण है, साथ ही वे यह भी मानते थे कि इस ग्रन्थ के समीक्षा भाग को देख कर विद्वान् और पूर्वाग्रही व्यक्ति अन्यथा अर्थ लेगे। परन्तु उन्हे मानव के विवेक पर भी पूरा भरोसा था अत: वे यह भी लिखने के लिए बाध्य हुए- "बुद्धिमान लोग यथायोग्य इस ग्रन्थ का अभिप्राय समझेंगे।" इस प्रकार ग्रन्थ लेखन में अपने अभिप्रेत को स्पष्ट करने के पश्चात् इसके पूर्वार्द्ध में उन्होने विभिन्न आध्यात्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय दार्शनिक तथा आर्थक प्रश्नों की मीमासा की है। प्रारम्भ के दस समुल्लासों में उन्होने ईश्वर का स्वरूप, बालकों की शिक्षा, अध्ययन और पालन, गृहस्थ जीवन का आदर्श, वानप्रस्थ ओर संन्यास, राजा और प्रजा के अन्योन्याश्रित कर्त्तव्य, वेद और उसकी सार्वभौम शिक्षा, सृष्टि उत्पत्ति तथा प्रलय, बन्ध और मोक्ष, आहार तथा आचार-अनाचार से जुडे प्रश्न जैसे विषयो का विवेचन किया है।

खण्डन-मण्डन प्रधान समुल्लासो के आरम्भ में स्वामी जी ने पृथक्-पृथक् अनुभूमिकाएं भी लिखी हैं। इनमे तत्-तत् सम्प्रदाय की समीक्षा के विषय मे अपने दृष्टिकोण को उन्होने स्पष्ट किया है। एकादश समुल्लास की अनुभूमिका मे उन्होने लिखा कि महाभारत युद्ध के पूर्व सर्वत्र वैदिक रीति नीति का ही प्रचलन था और ससार के सभी देश परस्पर मैत्री के भाव में बधे थे। महाभारत का युद्ध मानो आर्य सस्कृति के विनाश का अग्रदूत बना। कौरव-पाण्डवो के गृह युद्ध ने दोनो ओर के वीर पुरुषो का विनाश तो किया ही, आर्य धर्म के प्रवक्ता ऋषि मुनि भी धराधाम से विलुप्त हो गये। ऐसी स्थिति मे अज्ञान ओर अविद्या हो जाना स्वाभाविक ही था। लेखक ने वेद विरुद्ध मतो को चार वर्गो मे विभाजित किया है और उन्हे पुराणी, जैनी, कुरानी और किरानी (ईसाई) इन चार नामो से पुकारा है। वे अत्यन्त विनम्रतापूर्वक लिखते हैं कि अपनी विद्या-बुद्धि और स्वाध्याय के बल पर उनको इन मतो का जैसा बोध हुआ वैसा सबके आगे निवेदन कर दिया। ग्रन्थान्त मे स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकरण लिखने से पहले उन्होने यह भी स्पष्ट करना आवश्यक समझा कि वे किसी नवीन मत का प्रतिपादन नहीं कर रहे हैं। वे तो उस सिद्धान्त को मानते हैं जो ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त प्राचीन ऋषियो को स्वीकार्य रहा है। उसे वे सार्वजनिक धर्म कहते हैं जिसे अपना कर मनुष्य अपनी सर्वतोमुखी उन्नति करने में समर्थ होता है।

महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान व पिता जी के नाम का निर्णय

☐ ले० श्री [illegible]

आप्त पुरुष लोकैषणा से मुक्त होते हैं व आत्म-प्रचार से वे बचते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी ऐसे ही महापुरुष थे। अपने जीवन के 50 वर्ष पूर्ण कर चुकने के पश्चात् पुणे (पुराना नाम पूना) में 5 अगस्त, 1875 की उन्होंने लोगों के आग्रह पर अपने विषय में थोड़ा सा परिचय अपने एक प्रवचन में दिया। इसमें 16 नवम्बर, 1866 ई. तक की घटनाएं अति संक्षिप्त रूप से वर्णित है। बाद में थियोसोफिकल सोसायटी के मुखपत्र "थियोसोफिस्ट", मुम्बई मे भी महर्षि का जीवन वृत्त छपा था परन्तु यह पुणे में दिए प्रवचन में वर्णित घटनाओं से भी संक्षिप्त है। महर्षि दयानन्द के जीवन काल मे ही पं गोपाल राव हरि ने "श्रीमद् दयानन्द-दिग्विजया" शीर्षक से एक जीवन-चरित लिखा। परोपकारिणी सभा, अजमेर ने पं. मोहन लाल विष्णु लाल पण्ड्या को 1885 ई. में अनुरोध किया कि वे महर्षि की एक प्रामाणिक जीवनी लिखें परन्तु यह कार्य वे नहीं कर पाए। सन् 1888 मे पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने पं. लेखराम जी को महर्षि का जीवन-वृत्त लिखने के लिए नियुक्त किया इस कार्य को पं लेखराम जी ने घोर परिश्रम से किया। इस विषय मे जिस स्वर्गीय आत्मा ने विशेष योगदान किया, उसका नाम पं. देवेन्द्र नाथ मुकर्जी है जो आर्य समाजी न थे परन्तु सत्य के अन्वेषक थे व उनके हृदय मे महर्षि दयानन्द व उनके कार्यों के प्रति असीम श्रद्धा तथा भक्ति थी।

इस विवरण में उल्लिखित दो लेखकों के ग्रन्थों को विशेष सम्मान मिला। एक श्री पं. लेखराम व द्वितीय पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय (मुकर्जी) के ग्रन्थों को। इन ग्रन्थो के छपने के बाद भी दो प्रश्न हल न हो सके थे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का वास्तविक जन्म-स्थान व पिता का है। पं० गोपाल राव हरि ने अपने ग्रन्थ में इस सम्बन्ध में लिखा था-श्री स्वामी जी महाराज औदीच्य नामी गुजराती ब्राह्मण के श्रेष्ठ कुल में विक्रमी संवत् 1881 में पैदा हुए। मुल्क काठियावाड़ में राज्य मौरवी के राज्य में इनकी जन्म भूमि विख्यात है। पं. लेखराम ने निर्णय दिया-स्वामी जी का जन्म-स्थान मौरवी व पिता अम्बा शंकर थे। पं. देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय ने निष्कर्ष निकाला-महर्षि का जन्म-स्थान टंकारा है, मौरवी नहीं तथा पिता का नाम कर्सन जी तिवारी है।

मथुरा में विक्रमी 1981, वैशाख तदनुसार 25 फरवरी से 29 फरवरी, सन् 1925 तक महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मनाई गई थी। इस शताब्दी समारोह में सभी विवादास्पद विषयों का उचित निर्णय कर दिया गया था तथापि दो विषय फिर भी अछूते रह गए। पौराणिक समाज, देव समाज व इनके अनुयायी महर्षि की दिग्विजय से कुपित पराजित होकर सूर्य पर धूल फैंकने का सतत् अभियान चलाए जा रहे थे व महर्षि के जीवन सम्बन्धी अनेक कपोलकल्पित दन्त-कथाएं प्रचारित किए जा रहे थे। इनका प्रतिवाद करना अनिवार्य हो गया तो आर्य समाज ने 8 फरवरी से 11 फरवरी, सन् 1926 तक टंकारा में टंकारा शताब्दी महोत्सव मनाने का निर्णय लिया। इसमें महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान व पिता जी के नाम का निर्णय प्रमाणों के आधार पर हुआ।

इस समारोह में सहस्रों आर्यजनों के अतिरिक्त अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी सर्वदानन्द, श्री नारायण स्वामी, स्वामी शंकरानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, आचार्य रामदेव, मौरवी के राजा श्री लखधीर सिंह, वीरपुर के राजा श्री हमीर सिंह तथा तत्कालीन अन्य कई प्रसिद्ध सन्यासी, विद्वान्, उपदेशक व राज्याधिकारी भी सम्मिलित हुए थे। इस समारोह में ये सर्वसम्मति से निर्णय हो गए कि महर्षि का जन्म स्थान टंकारा ही है तथा उनके पिता जी का नाम कर्सन जी त्रिवेदी ही था। इन दो निर्णयों के आधार व प्रमाण निम्नलिखित हैं:-

1. बृहस्पतिवार 11 फरवरी को मध्याह्न की सभा में टंकारा निवासी पोपट लाल जी मञ्च पर उपस्थित हुए। ये महर्षि दयानन्द की सहोदर भगिनी की तीसरी पीढ़ी की सन्तान थे। उन्होंने दो प्रमाण प्रस्तुत करके सिद्ध किया कि टंकारा ही महर्षि का जन्म स्थान है। प्रथम-प्रमाण यह है कि महर्षि के पिता जी ने बड़ी भक्ति पूर्वक जिस शिव मन्दिर की स्थापना की थी तथा जिसमें आसीन होकर मूलशंकर (महर्षि का बाल्य नाम) ने शिवरात्रि के पर्व पर संसार के कल्याण के लिए एक दिव्य, प्रतिमा विरोधी सन्देश प्राप्त किया था, वह मन्दिर आज तक हमारे वंश के ही अधीन परम्परा से चला आ रहा है। द्वितीय प्रमाण यह है कि वह सौभाग्यशाली गृह भी हमारे ही पास है जिसमें महर्षि का जन्म हुआ था। पोपट लाल जी ने यह भी कहा कि कितने ही जिज्ञासु तथा अनुसन्धानकर्त्ता यहां आ चुके हैं। जब पं. लेखराम जी यहां आए थे, तब तक हमें यही विदित था कि ऋषि दयानन्द क्रिश्चियन थे। अतः अपने वंश की मानरक्षार्थ हमने पं. जी को अपना व दयानन्द जी के जन्म स्थानादि का परिचय यथार्थ रूप में नहीं दिया था। इस बात की पुष्टि पं. इन्द्र वाचस्पति ने अपनी पुस्तक "आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग" में पृष्ठ 305 पर इस प्रकार से की है-महर्षि के निर्वाण के पश्चात् उनके जीवन से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं की खोज का काम पं. लेखराम जी ने अपने हाथ में लिया। उन्होंने वर्षों तक अनथक परिश्रम करके जो मसाला एकत्र किया, वह आर्य पथिक के असीम परिश्रम और अटल भक्ति भाव का जीता-जागता नमूना है। वे मौरवी गये और महर्षि की जन्म सम्बन्धी घटनाओं की जांच-पड़ताल की। वे केवल इतना ही मालूम कर सके कि स्वामी जी का प्रारम्भिक नाम मूलशंकर था। इसके अतिरिक्त कोई ठीक जानकारी उन्हें न मिल सकी। इसके दो कारण थे। एक तो पं. जी काठियावाड़ की भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ थे और मौरवी में कोई हिन्दुस्तानी (हिन्दी) जानने वाला व्यक्ति न था। दूसरा कारण यह था कि पं० जी का रहन-सहन पेशावरी ढंग का था। भारत के पश्चिमी आदि भागों में कोट, पायजामा और पेशावरी पगड़ी का वेश मुसलमान का चिन्ह समझा जाता था। लोगों ने समझा होगा, यह व्यक्ति या तो मुसलमान है या ईसाई। किसी ने खुल कर बातें न की। परिणाम यह हुआ कि (जन्म, स्थान सम्बन्धी) इनकी खोज अधूरी रही। पोपट लाल जी ने आगे कहा-कुछ साल बाद जब श्रीयुत देवेन्द्र नाथ मुकर्जी यहां पधारे और हमें भी यह ज्ञान हुआ कि हमारे पूर्वज ऋषि दयानन्द क्रिश्चियन नहीं प्रत्युत वैदिक धर्म के महान् उद्धारक व उच्चकोटि के महर्षि थे-तब हमने प्रथम अज्ञान पर पश्चाताप प्रकट करते हुए उक्त मुकर्जी महोदय को अपना वास्तविक परिचय देकर उन्हें ऋषि दयानन्द के इन दोनों स्मृति चिन्हों का दर्शन करा दिया व जितना ज्ञान इस विषय में था, वह सब भी उन्हें दे दिया था।

इस लघु वक्ता के बाद महाशय पोपट लाल ने अपनी एक लिखित स्थापना जनता के सामने उपस्थित की। इसमें उन्होंने महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान तथा वंशादि का यथार्थ परिचय दिया है। उनकी इस स्थापना को सत्य तथा प्रमाणिक स्वीकार करते हुए मौरवी राज्य के पुलिस कमिश्नर ने उक्त लिखित पत्र पर राज्य के अधिकारी रुपेण अपने हस्ताक्षर किए तथा इस सम्मेलन के अध्यक्ष व मौरवी नरेश श्री लखधीर सिंह ने इसका अनुमोदन किया। इस शताब्दी समारोह सम्बन्धित एक पुस्तक दयानन्द जन्म स्थान निर्णय तथा टंकारा शताब्दी महोत्सव शीर्षक से श्री विजय शंकर मूलशंकर द्वारा लिखित व प्रकाशित हुई थी। इसमें पोपट लाल जी के उक्त पत्र की फोटो प्रति भी लगी हुई है जो गुजराती भाषा में है। इस पुस्तक में पोपट लाल का चित्र भी प्रकाशित है।

पोपट लाल जी के बैठ जाने के बाद एक अत्यन्त वृद्ध किसान इस सभा में शनैः शनैः लकड़ी का आश्रय लेकर मञ्च पर आकर उपस्थित हुआ। उस समय इस व्यक्ति की अवस्था 103 वर्ष की थी। वह महर्षि दयानन्द का बालसखा था। इनका भी चित्र उक्त पुस्तक में छपा हुआ है। इस व्यक्ति को अपने बीच में पाकर सभा में सन्नाटा छा गया। उन्होंने अपने क्षीण नेत्रों से आनन्द की अविरल अश्रु धाराएं बहाते हुए कहा-

(क्रमशः)

सम्पादकीय.....

आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों तथा शिक्षा संस्थाओं के अधिकारियों से प्रार्थना है कि 13, 14 अप्रैल 2002 को आर्य समाज स्थापना दिवस मनाएं। इस बार चैत्र सुदी प्रतिपदा 13 अप्रैल को है। 13 अप्रैल को वैसाखी का पर्व भी मनाया जाता है। 13 अप्रैल को शनिवार और 14 अप्रैल को रविवार है। इसलिए इन दोनों दिनों में समारोह पूर्वक वैसाखी का पर्व व आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया जाए।

आर्य समाज की स्थापना सन् 1875 में चैत्र सुदी प्रतिपदा को बम्बई में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने की थी। इसके पश्चात् आर्य समाज ने सारे देश में एक क्रान्तिकारी आन्दोलन सभी क्षेत्रों में चलाया और सारे संसार को वेद का सन्देश सुनाया। आज सारे संसार में आर्य समाज का अपना एक विशेष स्थान है। देश की आजादी से लेकर समाज सुधार के सभी कार्यों में आर्य समाज ने अपना महान योगदान दिया है। आज की देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए अनुभव किया जा रहा है कि देश की रक्षा के लिए आर्य समाज को फिर आगे आना चाहिए और देश रक्षा के लिए कार्य करना चाहिए।

इसलिए आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाते हुए जहां वेद प्रचार के सम्बन्ध में विचार करें, आर्य समाज की उन्नति के लिए विचार करें, वहां देश की वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध में भी विचार करें।

मैं आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों, सदस्यों, सभी आर्य शिक्षा संस्थाओं की प्रबन्ध समितियों के सदस्यों, प्रिंसिपलों व स्टाफ तथा अन्य आर्य बन्धुओं, बहनों को सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा व सभा के अन्य सभी अधिकारियों की ओर से हार्दिक बधाई व शुभ कामनाएं भेंट करता हूं।

—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

हरिद्वार पहुंचो

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों व सदस्यों से प्रार्थना है कि 25 से 28 अप्रैल 2002 तक गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय में हो रहे शताब्दी समारोह में भारी संख्या में हरिद्वार अवश्य पहुंचें।

इसके लिए अभी से तैयारी आरम्भ कर दें जिन महानुभावों ने रेलगाड़ी से जाना है वह सभा कार्यालय से किराये में विशेष छूट का प्रमाण-पत्र फार्म प्राप्त कर सकते हैं। इससे रेल के किराये में आधी छूट मिल सकती है। इस छूट का लाभ उठाना चाहिए।

हमारी सभा से सम्बन्धित सभी स्कूल-कालेजों की प्रबन्ध समितियों के अधिकारियों व सदस्यों तथा प्रिंसिपलों से प्रार्थना है कि वह अपने स्टाफ आदि को साथ लेकर इस शताब्दी समारोह में भाग लें। जो महानुभाव हरिद्वार जाना चाहते हैं यदि वह अपने जाने से पूर्व सभा कार्यालय से सम्पर्क कर लें तो उचित रहेगा और वहां व्यवस्था करने में आसानी रहेगी।

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की स्थापना में पंजाब की आर्य जनता का विशेष योगदान रहा है आज से 100 वर्ष पूर्व महात्मा मुन्शी राम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) जो तलवन ग्राम जालन्धर के रहने वाले थे उन्होंने इस गुरुकुल की स्थापना की थी, उनकी प्रेरणा से गुरुकुल के निर्माण में पंजाब की आर्य जनता ने दिल खोल कर धन देकर अपना सहयोग दिया था। अब इस स्थापना शताब्दी के अवसर पर भी पंजाब को पीछे नहीं रहना चाहिए। इस समारोह को सफल बनाने के लिए पंजाब की आर्य जनता तन, मन, धन से सहयोग दे।

हरबंस लाल शर्मा — सभा प्रधान

प्रि. स्वतन्त्र कुमार — सभा महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साधारण अधिवेशन में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए

श्री डा. के.के. पसरीचा, श्री सुरेन्द्र नाथ मुरगई, श्री ओ.पी. टण्डन, श्री हरबंस लाल सेठी, श्री नवदीप भारद्वाज, श्री सर्वजीत शर्मा, श्री अशोक आर्य सभा से छः-छः वर्ष के लिए निष्कासित।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साधारण व असाधारण अधिवेशन 24-3 2002 को सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में सम्पन्न हुए। इन अधिवेशनों में पंजाब की भिन्न-भिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधि भारी संख्या में सम्मिलित हुए और कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

इस अवसर पर सभा के सभी विभागों की रिपोर्ट पेश की गई और सभी प्रतिनिधियों को सभा की गतिविधियों की जानकारी दी गई।

सभा कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज जी ने सभा का गत वर्ष का आय-व्यय पढ़ कर सुनाया और आगामी वर्ष संवत् 2059 का बजट प्रस्तुत किया जो सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया।

इस अवसर पर सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें सभा के संगठन को हानि पहुंचाने, सभा को हानि पहुंचाने व सभा की शिक्षा संस्थाओं को हानि पहुंचाने के कारण व सभा में अनियमितताएं करने के कारण श्री डा के.के. पसरीचा, श्री सुरेन्द नाथ मुरगई, श्री ओ.पी टण्डन, श्री हरबंस लाल सेठी, श्री नवदीप भारद्वाज, श्री सर्वजीत शर्मा व श्री अशोक आर्य को आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता व सभा की सदस्यता से छः-छः वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया गया। अब इनका सभा से कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

एक अन्य प्रस्ताव के द्वारा श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न का निष्कासन वापिस ले लिया गया है। श्री सरदारी लाल जी अब सभा को अपना पूरा-पूरा सहयोग दे रहे हैं।

एक अन्य प्रस्ताव के द्वारा गत दिनों सभा प्रधान जी द्वारा दिए गए सभी आदेशों की सम्पुष्टि कर दी गई है और अन्तरंग सभा में रिक्त हुए स्थानों की पूर्ति का उन्हें पूर्ण अधिकार दे दिया गया है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन जी और महामन्त्री श्री वेदव्रत जी शर्मा भी पहुंचे हुए थे। सभी सभा अधिकारियों व प्रतिनिधियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। इन दोनों महानुभावों ने सभी प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए 25 से 28 अप्रैल 2002 तक हो रहे गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार के शताब्दी समारोह में भाग लेने के लिए पंजाब की आर्य जनता को आह्वान किया। सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वह 25 अप्रैल को हरिद्वार अवश्य पहुंचें।

इस अधिवेशन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि सभी निर्णय सर्व सम्मति से लिए गए। सभी प्रतिनिधियों ने संगठित होकर सभा की उन्नति के लिए कार्य करने का निश्चय किया।

मैं सभी प्रतिनिधियों का तथा सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने अपना अमूल्य समय निकाल कर इन दोनों अधिवेशनों को सफल बनाया। आशा है आर्य जनता का [illegible] इसी प्रकार से सहयोग मिलता रहेगा।

—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सीनेट की बैठक सम्पन्न

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सीनेट की बैठक 2-4-2002 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में पंडित हरबंस लाल शर्मा (चांसलर) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सभी शिष्ट परिषद के सदस्य पंजाब, हरियाणा व दिल्ली से शामिल हुए।

विश्वविद्यालय के नए विजिटर के चुनाव के लिए यह बैठक विशेष रूप से बुलाई गई थी। सदानंद (आई ए एस रिटायर्ड) को शिष्ट परिषद के सदस्यों ने सर्वसम्मति से विश्वविद्यालय का परिद्रष्टा चुन लिया। याद रहे कि सदानंद गवर्नर पंजाब के सलाहकार के रूप में 1991-92 में रहे हैं और उसके बाद मैम्बर कंज्यूमर इंस्टीच्यूट चंडीगढ़ के 1994 से 1999 तक आयोग के सदस्य रहे हैं। वह कमिश्नर जालन्धर और फिरोजपुर डिवीजन भी रहे। श्री हरबंस लाल शर्मा ने आशा प्रकट की कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अब अपनी ऊंची बुलंदियों पर पहुंचने के लिए कोई कसर बाकी नहीं रखेगा।

इसके बाद गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी इंडस्ट्रियल बोर्ड की बैठक हुई, जिसमें गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी को एक उच्च स्तर तक पहुंचाने के लिए विचार-विमर्श हुआ और इसके सभी सदस्यों ने गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी को ऐशिया में आयुर्वैदिक औषधियों के लिए प्रतिष्ठित रूप देने का प्रण लिया। अब उसी रूप में महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच दिल्ली वालों के नेतृत्व में और पंडित हरबंस लाल जी शर्मा चेयरमैन की रहनुमाई में दिन-दुगनी रात-चौगुनी उन्नति करेगी।

तीनों प्रांतों से आए महानुभावों ने 25 से 28 अप्रैल 2002 तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के परिसर में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे अधिक से अधिक आर्य महानुभावों को लेकर इसमें पहुंचने का प्रण लिया। याद रहे कि यह महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (इंटरनैशनल आर्यन लीग) के तत्वावधान में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सहयोग से एवं भारत और विदेशों की सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से हो रहा है।

—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

आर्य समाज स्थापना दिवस—

आर्य समाज का अन्तर

□ले० श्री आचार्य भद्रसेन बी-2, 92-7बी, शीतलनगर नगर, होशियारपुर 146001

एक बार श्री ओम प्रकाश जी आर्य प्रेम नगर, करनाल आर्य समाज होशियारपुर के वार्षिक-उत्सव पर कथा के लिए आए। मैं उनसे इन दिनो कई बार मिला, उन्होंने जाते हुए कहा-यहा के औषधालय मे कार्य कर रहे डाक्टर जी से अवश्य वार्तालाप कीजिए। म उनकी प्रेरणा पर डाक्टर जी से मिलने गया, तब वार्तालाप में डाक्टर जी ने कहा-मैं अभी किसी धार्मिक संगठन से सम्बन्ध नहीं हुआ, अत: यह बताइये आर्य समाज का दूसरो से क्या अन्तर है ? मैंने यही प्रश्न श्री ओम् प्रकाश जी से भी पूछा था और उन्होंने मूर्तिपूजा का विशेष सकेत किया था। इतने में वहां कुछ रोगी दवा लेने आ गए, अत: अपनी 'आर्य समाज दिग्दर्शन' पुस्तक दे कर मैं आ गया। डाक्टर जी का स्थानान्तरण हो जाने के कारण उनसे पुन: भेंट न हो सकी।

हां, मैंने डाक्टर जी की दृष्टि से इस पर विचार आरम्भ किया। उसी दिन सायंकाल आकाशवाणी जालन्धर पर लोकगीत के कार्यक्रम मे पीपल, बड़, तुलसी से सम्बद्ध पंजाबी लोकगीत प्रस्तुत किए गए। उस कार्यक्रम में पीपल आदि की की जाने वाली पूजा पद्धति की चर्चा थी, पर उस-उसके उपयोग की कोई बात नहीं थी। अगले दिन जब एक पीपल के पास से गुजरा, तो वहां जल चढ़ाने के बाद चारो ओर धागा लपेटते हुए एक को देखा। विशेष अवसर पर गुल-गुले जैसे भोज्य पदार्थ तथा धूप-फूल चढ़ाते, हाथ जोड़ कर माथा निवाते प्राय: देखा जाता है। साय या रात को वहां दीपक जलते देखा जाता है, हां अनेकदा पीपल पर लाल लंगोट या वस्त्र बन्धे हुए भी देखा जाता है।

ऐसे ही तुलसी और कबर पर वस्त्र चढ़ाने, दीपक जलाने, तेल-फूल-धूप-भोज्य पदार्थ भेंट करने, मत्था नवाने, मनौती मांगने आदि के कार्यक्रम यत्र-तत्र देखने में आते हैं।

मूर्तिपूजा—आइए ! इन रूपों के आधार पर मूर्तिपूजा पर कुछ विशेष विचार किया जाए। मूर्ति शब्द मूलत: ठोस के लिए आता है [-मूर्तौ घन:] पर विशेषत: किसी द्वारा तैयार हुई आकृतियुक्त वस्तु के लिए प्रचलित हो गया है। अत: पूजा में कागज आदि पर अंकित, सीसे से मढ़ित के साथ मिट्टी रेत, पत्थर तथा विविध धातुओं से बनी आकृतियुक्त का प्रयोग होता है।

पूजा शब्द आदर, सत्कार का जहां वाचक है, वहां मूर्तिपूजा इस समस्त शब्द का भाव है, कि इष्ट रूप में मान्य वस्तु का दर्शन, माथा टेकना, पूजा सामग्री [=धूप, दीप, पुष्प, भोज्य-प्रसाद आदि] का अर्पण, तत्सम्बद्ध मन्त्र, शब्द का उच्चारण, वर-कामना का प्रकट करना आदि पद्धति का पालन।

आज की प्रचलित मूर्तिपूजा के कारण व्यक्ति इतने में ही प्रसन्न, सन्तुष्ट हो जाता है कि मैंने इष्टदेव के दर्शन, पूजा-भेंट चढ़ाकर अपना कर्त्तव्य पूर्ण कर लिया है। अत: इतनी पूजा से ही मेरी सारी इ-छायें पूर्ण हो जायेंगी। तभी तो आरती में गाया जाता है—मनोवांछित फल पाए। इसी लिए हम प्राय: देखते-सुनते हैं, कि-'दे तेल की पली कुल बला टली' अर्थात् शनिवार को तेल-दान से सारे कष्ट, क्लेश दूर हो जाते हैं। प्राय: यह भावना घर कर गई है, कि धन, सफलता आदि प्राप्त करने के लिए इस पूजा से अतिरिक्त और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार की भावनाओं को सामने रख कर ही मुण्डक उपनिषद के ऋषि ने सचेत करते हुए कहा था- यह तो बच्चों जैसी बात है, [वयं कृतार्था-इत्यभि मन्यन्ति बाला: 1, 2, 9] हां, पूजा से सारी कामनायें पूर्ण हो जाती हैं, कि पुष्टि में हमारे धार्मिक जगत में अनेक कहानियां भी प्रचलित हैं।

इसी का परिणाम है, कि प्रचलित मूर्ति पूजा की भावना से प्रभावित हो कर हम न तो योग साधना में लगते हैं और न ही उसके लिए कुछ समय निकालना आवश्यक समझते हैं। कई बार अनेक धन, सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत, पढ़ाई आदि भी छोड़ बैठते हैं।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में मूर्तिपूजा के सारे पहलुओं पर विचार करते हुए, वहां 16 दोषों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। इस प्रकरण में सब से पहले इस बात को उजागर किया है, कि हमारे मान्य वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि शास्त्रों में कहीं भी मूर्ति और उसकी पूजा का विधान नहीं है। दूसरी बात है, मूर्ति पूजा की प्रचलित प्रक्रिया योग, ध्यान, जप, भक्ति की पद्धति से बिल्कुल उल्टी है। योग, ध्यान में स्वाभाविक रूप से यह नियम है, कि 'आंख-कान मुख मूंद कर नाम निरञ्जन लेय। अन्दर पट तब खुलें-बाहर के पट देय॥' और कबीर जी सावधान करते हुए कहते हैं—

'कर का मन का डाल कर, मन का मनका फेर।'

अर्थात् हाथ आदि से किए जाने वाले पूजा के ढंग को छोड़ कर मन को लगा।

वैसे कहीं भी कोई भी मूर्ति पूजा द्वारा ध्यान, योग, भक्ति करता हुआ नहीं मिलता। वैष्णो देवी, अमर नाथ यात्रा आदि में तो आंख भर कर दर्शन का अवसर भी नहीं मिलता। हां, आज की मूर्ति पूजा में मूर्ति पूजा शब्द एक ईश्वर के स्थान पर अनेक इष्टों की पूजा का वाचक बनकर सामने आ रहा है। जिस को बहु देवतावाद भी कह सकते हैं।

चर्चित प्रसंग पर गहराई से विचार करने के लिए कुछ प्रश्न उभरते हैं, कि आर्य समाज का स्वरूप क्या है ? आर्य समाज के मन्तव्यों की मूलभावना कौन सी है क्योंकि तभी आर्य समाज का दूसरों से क्या अन्तर है स्पष्ट हो सकता है ? यह ठीक है, कि धर्म शब्द से अभिहित होने वाले अर्थों से भी इस प्रश्न की विवेचना हो सकती है।

आर्य समाज के प्रादुर्भाव की कहानी—

इक्कीस वर्षीय [illegible] युवा मूलशंकर [illegible] के [illegible] और मौत को जीतने अर्थात् उसके रहस्य को जानने की भावना को लेकर घर से चला। वे इस लक्ष्य को सिद्ध कराने वाले गुरु की खोज में मूलशंकर से शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द सन्यासी बन कर लगातार 14 वर्ष नगरों, जंगलों, पहाड़ों में बसे हुए विद्वानों, योगियों के चरणों में पहुंचे। जिसने जो पढ़ाया-सो पढ़ा, योग के रूप में जिस ने जो सिखाया-सो एक विनीत शिष्य के रूप में सीखा। अन्त में ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी के यहां मथुरा पहुंचे। वहां लगभग ढाई-तीन वर्ष अष्टाध्यायी महाभाष्य का विशेष अध्ययन किया। मानसिक संकल्प को सिद्ध कराने वाला रास्ता जब हाथ में आया लगा, तो विदा के लिए अनुमति लेने गुरु के चरणों में पहुंचे। तब स्वामी दयानन्द सन्यासी के जीवन का कांटा ही बदलते हुए ब्रह्मर्षि गुरु दण्डी ने आर्ष ज्ञान की ज्योति को सारे संसार में फैलने का व्रत धारण करा दिया।

इस व्रत को पूर्ण करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती भारत के सैंकड़ों नगरों में प्रचारार्थ पहुंचे। लगभग चार हजार ग्रन्थों को पढ़ने और जनता की भावनाओं को समझने के पश्चात् महर्षि दयानन्द ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। जिससे अपने कल्याण के लिए जनता स्वयं संगठित तथा संनद्ध हो।

आर्य समाज की विचार धारा—

आर्य का अर्थ श्रेष्ठ, अच्छा, भला और समाज=व्यवस्थाबद्ध संगठन को कहते हैं। अत: भलाई के लिए भला कार्य करना ही आर्य समाज का मूल उद्देश्य है। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियमों के द्वारा आर्य समाज की विचारधारा के परिपक्व रूप में प्रस्तुत किया है। जिनमें सारे साहित्य का जहां सार है, वहां जीवन विकास के सर्वांगीण सूत्र भी है। आर्य समाज एक धर्म प्रचारक संगठन होने से आर्य समाज से सम्बद्ध या आर्य समाजी होने का अभिप्राय है—स्वयं आर्य समाज के मूलमन्तव्यों को अपनाना और दूसरों को भी वैसा बनने के लिए प्रेरित करना। जिस से आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार-प्रसार हो। (क्रमश:)

पशुवत् राक्षसी प्रवृत्तियों का परित्याग

□प्रो० डॉ० सत्येश आर्य

ईश अनुकम्पा से हमें दुर्लभ मनुष्य का जन्म मिला है। मनुष्य योनि ही में हम शुभ कर्म कर पाते हैं। सम्यक् साधना से प्रभु सान्निध्य प्राप्त करने का सुयोग जुटा पाते हैं। पर इसके लिए आवश्यक है कि हम मानवीय जीवन जीयें। भगवत् भजन करें। सत्याचरण धर्माचरण और सद्आचरण करें और पशुवत् राक्षसीय प्रवृत्तियों का परित्याग करें।

क्या हैं वे पशुवत् प्रवृत्तियां ? वे हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर। वेद इन्हें त्याज्य बताता है। निम्न वेद मन्त्र में इन पर कुच्छ विवेचन किया गया है और आदेश दिया गया है कि इन्द्र! हे आत्मन्! हे जीव! तू इनका परित्याग कर दे। इन्हें विनिष्ट कर दे। कुचल दे। चकनाचूर कर दे। मन्त्र है:-

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्रमृण रक्ष इन्द्र॥

ऋ. 7-104-22, अथर्व. 7-4-22

अन्वय:-कोकयातुम् शुशुलूक यातुमुत गृध्रयातुम् जहि। उलूक यातुम् सुपर्णयातुम् उत श्वयातुम् जहि। रक्ष: दृषदेव प्रमृण इन्द्र।

(1) कोकयातुम् जहि इन्द्र! हे इन्द्र! हे आत्मन्! हे जीव! तू कोक चक्रवाक-चकवा पक्षी के चलन को 'जहि' त्याग दे। छोड़ दे। चकवा चकवी बड़े कामी होते हैं। उनके अनुरूप कामातुर व्यक्ति समाज में हेय दृष्टि से देखे जाते हैं। उनकी इज्जत आबरू नहीं होती। वह अपना तन, मन, और धन नष्ट कर बैठते हैं। भगवत्-भजन में जी लगा नहीं पाते। ईश्वरार्पण हो नहीं पाते और उस स्थिति में मोक्षानन्द प्राप्ति का सुयोग जुटा नहीं पाते। अत: वेद आदेश देता है कि हे मनुष्य! तू 'कोक' की इस कामातुर वृत्ति को छोड़ दे। अपनी कामवासना का परित्यजन कर दे।

कोक मेंढक को भी कहते हैं। यह बड़ी अस्थिर प्रकृति का प्राणी होता है। कभी स्थिर रह नहीं पाता। उछल कूद करता ही रहता है। यदि हम एक किलो मेंढक तराजू में तोलना चाहें तो तोल नहीं पाते। वे उछल कर तराजू के पलड़े से नीचे आ गिरेंगे। ऐसी अस्थिर और चञ्चल वृत्ति मनुष्य में नहीं होनी चाहिए।

(2) शुशुलूक यातुम् जहि- शुशुलूक कहते हैं भेड़िये को। वह बड़ा 'क्रोधी' क्रूर, द्वेषी व निर्दयी प्रकृति का प्राणी होता है। चुपके से पीछे से आकर अपने भक्ष्य को पकड़ता है और निर्दयता से मार कर खा जाता है। कारणवश यदि वध नहीं करता तो अपने ही जैसा क्रोधी, क्रूर और निर्दयी बना देता है तो उसे पाल-पोष कर अपने ही जैसा क्रोधी पशुवत् प्राणी बना देता है। भेड़िये की सी यह वृत्ति अवाञ्छनीय है। इसे त्याग देना चाहिए।

(3) गृध्रयातुम् जहि-गृध्र की वृत्ति त्याग दें। गृध्र अत्यन्त 'लोभी' होता है। मरते और सिसकते प्राणियों के मांस पर अपनी गृध्रवृत्ति बनाये रहता है। उनके मांस भक्षण की लालसा लिये रहता है। भक्ष्य मिल जाने पर नोंच-नोंच कर खाता है। बड़ा लालची होता है, किसी अन्य जानवर को पास फट ने नहीं देता। ऐसी ही गृध्रवृत्ति का मनुष्य दूसरों के धन दौलत को हड़पने की नीयत बनाये रखता है और मौका मिलने पर हड़प ही लेता है। 'मा गृध: कस्य स्विद्धनम्' के विपरीत आचरण करता है। ऐसा व्यक्ति समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है। अत: वेद आदेश दे रहा है कि हे मनुष्य। तू लोभ लालच की गृध्र वृत्ति को त्याग दे।

(4) उलूकयातुम् जहि- उल्लू की चाल को छोड़ दे। उल्लू अंधकार प्रिय होता है। दिन का उजाला इसे पसन्द नहीं। अन्धकार ही में प्रगाढ मोह बनाये रखता है। अन्धकार प्रिय व्यक्ति भी तमोमयावस्था में पड़े रहना पसन्द करते हैं। अज्ञानता की अन्धकारमयी स्थिति बनाये रखते हैं। शंका, आशंका और संशय से घिरे रहते हैं। धन दौलत व सगे-सम्ब गियों के मिथ्या मोह में फंसे रहते हैं। धन दौलत पर सांप की सी कुण्डली बनाये बैठे रहते हैं। परोपकारार्थ कुछ खर्च नहीं करते। ऐसे व्यक्ति अवाञ्छनीय वृत्ति के होते हैं। वेद इस वृत्ति का त्याग कर देने का आदेश दे रहा है।

(5) सुपर्णयातुम जहि-सुपर्ण अच्छे सुन्दर सुदृढ़ परों वाले 'गरुड़' पक्षी को कहते हैं। गरुड़ की चाल को तज दें। गरुड़ अपने सुन्दर एवं सुदृढ़ परों से ऊंची ऊंची उड़ाने भरता है तथा बहुत देर तक उड़ता रहता है। इससे वह इस 'मद' में भरा रहता है कि उसके समान कोई अन्य पक्षी इतनी ऊंची और लम्बी उड़ान भर ही नहीं सकता। गरुड़ सर्पों का भक्षण भी करता है अत: वह इस 'मद' में भी मुबतिला रहता है कि वही भूमि को विष विहीन बनाये रखता है इस प्रकार जरा सा सामर्थ्य पाकर उस पर गर्व करना ठीक नहीं। मनुष्य को भी ऐसा गर्व नहीं करना चाहिए। अत: वेद आदेश देता है कि हे इन्द्र, हे आत्मन् तू सुपर्ण की सी मद भरी अभिमानी वृत्ति का त्याग कर दे।

(6) श्वयातुम् जहि-कुत्ते के चलन को छोड़ दे। कुत्ता अत्यन्त 'मत्सर' पकृति का ईर्ष्यालु जानवर होता है। बड़ा चापलूस भी। ईर्ष्या, द्वेष, डाह और जलन लिये रहता है। स्वाजाति द्रोही होता है। अपनी ही जाति के अन्य कुत्तों को भौंकता है। उन पर झपटता है। लड़-भिड जाता है। लहूलुहान हो जाता है। पर अन्यों के आगे दुम हिला-हिला कर चाटुकारिता करता है। रोटी के एक टुकड़े पर दासता दर्शाता है। ऐसी वृत्ति के लोग भी अपनों से ईर्ष्या जलन व डाह की भावना बनाये रखते हैं और चन्द चांदी के टुकड़ों पर आत्मसमर्पण कर बैठते हैं। यह वृत्ति ठीक नहीं। त्याज्य है। अत: वेद आदेश देता है कि हे मनुष्य तू कुत्ते की मत्सर भरी चाल को त्याग दे।

ये सभी काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर की राक्षसीय वृत्तियां सर्वश: त्यागने योग्य हैं अत: वेद आदेश दे रहा है कि हे इन्द्र! हे आत्मन्। तू इनको इस प्रकार नष्ट कर दे जैसे 'दृषदा+इव+प्र+मृण' पत्थर की शिला के नीचे दब कर पिस कर- मिट्टी का ढ़ेला नष्ट हो जाता है चकनाचूर हो जाता है।

तपोवन देहरादून का उत्सव

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन ग्राम नालापानी, डा० तपोवन देहरादून-248008 का ग्रीष्मोत्सव (सामवेद यज्ञ एवं योग-साधना-शिविर) चैत्र शुक्ल 4 से चैत्र शुक्ल 6 तक सम्वत् 2059 वि (बुधवार 16 अप्रैल से रविवार 21 अप्रैल 2002) तक यज्ञ के ब्रह्मा एवं योग-साधना-शिविर के निदेशक पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी।

वेदप्रवचनकर्त्ता-डा० महेश जी विद्यालंकार (दिल्ली वि.वि) एवं डा. महावीर जी, (गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.) तथा अन्य विद्वान्।

वेदपाठी:-माता नरेन्द्र आर्या, माता सुदेश धवन, महात्मा चयन मुनि जी, महात्मा उत्तम मुनि जी एवं गुरुकुल के विद्यार्थी।

भक्ति संगीत:-श्री सत्यपाल 'पथिक' (अमृतसर) तथा राष्ट्रीय पुरस्कार-प्राप्त शास्त्रीय गायक श्री सुचित नारंग।

यज्ञ के संयोजक:-श्री स्वामी भगवतानन्द जी।

कार्यक्रम प्रात: 5 से 6 बजे तक योग साधना 6.30 से 8 बजे तक यज्ञ उपदेश सायं 3.30 से 5 बजे तक यज्ञ उपदेश, रात्रि 8.30 से 10 तक भजन उपदेश होंगे।

-देवदत्त बाली, मन्त्री

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल

बृहद् यज्ञ के द्वारा आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढवाल (उत्तराचल) के आर्य सभासदो द्वारा नवसस्येष्टि (होली) का पावन पर्व बडे हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व 8 मार्च को महर्षि दयानन्द जन्म दिवस 12 मार्च महर्षि बोध दिवस तथा 17 मार्च को लेखराम तृतीय समारोह पूर्वक सम्पन्न हुए। प्रत्येक कार्यक्रम मे सभा की अध्यक्षता श्री चन्द्रप्रकाश जी अध्यक्ष तथा मच सचालन गगा प्रसाद सौम्य मत्री आर्य समाज सावली आदि के द्वारा हुआ। वक्ताओ ने महर्षि दयानन्द तथा प लेखराम के जीवन पर प्रकाश डाला। श्री बच्ची राम जी आर्य भजनोपदेशक आर्य समाज सावली आदि पचपुरी द्वारा महर्षि दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित मधुर भजन प्रस्तुत किये गये। यज्ञ का सचालन श्री वासुदेव विमल तथा श्री बच्ची राम जी आर्य द्वारा सामूहिक रूप से सम्पन्न हुआ। —गगा प्रसाद

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य का भव्य अभिनन्दन समारोह

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य के गृह त्याग के 27 वर्ष पश्चात् बीकानेर में प्रथम शुभागमन् पर आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर के तत्वावधान मे बीकानेर सभाग की समस्त आर्य समाजो द्वारा भव्य अभिनदन समारोह का आयोजन किया गया।

16 फरवरी 02 को अपरान्ह रेल गाडी से बीकानेर आगमन किया, रेलवे स्टेशन पर नगर के हजारों आर्यजनो ने वैदिक जय घोष से पुष्पहार भेट कर भव्य स्वागत किया। तत्पश्चात् कोलायत के लिए प्रस्थान किया, वहा पर सैकडो आर्य जनो ने पुष्पाहार भेट कर उनका स्वागत किया। कोलायत मे नव स्थापित कपिल आर्य गुरुकुल का निरीक्षण किया। उसके पश्चात् एक धर्म सभा का आयोजन किया, जिसका आरंभ नगर आर्य समाज बीकानेर के मंत्री श्री जसकरण जी सोनी के भक्ति गीत के साथ हुआ। सभा की अध्यक्षता नव स्थापित गुरुकुल के आचार्य श्री शिव कुमार जी शास्त्री ने की।

आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने अपने प्रवचन मे बताया कि जहां आदर्श होता है वहा धर्म अवश्य सफल होता है। हम आशावादी है, चक्रवर्ती वैदिक समाज पुन: स्थापित होगा। नैष्ठिक ब्रह्मचारियो के अभाव मे धर्म जर्जर हो गया है, गुरुकुल के माध्यम से इस तपो-भूमि पर महर्षि कपिल फिर से अवतरित करने है। आगे बताया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने पूना प्रवचन के दौरान एक बार कहा था कि उनसे लोग पूछते हैं, क्या वैदिक धर्म पुन: स्थापित होगा, तो उनका जवाब था, हम निराशावादी नहीं है, रोग बढा अवश्य है, असाध्य नहीं है। बस संकल्प चाहिए। उन्होंने कहा लुप्त होती वैदिक संस्कृति को पुन: स्थापित करना है, और वह गुरुकुल से ही सभव हो सकती है।

गत पांच हजार वर्षों से हमारी सनातन वैदिक संस्कृति विखंडित हुई, बड़े दुख की स्थिति है कि भौतिकवाद के भयकर प्रवाह की वजह से शहरी क्षेत्रो मे धर्म के प्रति आस्था क्षीण हुई है। शहरो मे लाखों रुपए खर्च कर अंग्रेजियत को बढ़ावा दे रहे हैं।

अब भी अगर हम नहीं संभले तो आगामी 20 वर्षों बाद संस्कृत की तरह हिन्दी को भी खतरा उत्पन्न हो जाएगा। आज सैंकड़ों समाजें, सन्यासी, विद्वान् विहिन है, गुरुकुल के माध्यम से नैष्ठिक ब्रह्मचारी, सन्यासी, विद्वान् समाज को देने है। निरीक्षण के दौरान उन्होने गुरुकुल के आचार्य शिव कुमार जी को आश्वस्त किया कि गुरुकुल के लिए धन की कमी नहीं आने दी जाएगी, यह ध्यान रहे कि गुरुकुल मे व्यवस्था के नाम पर ब्रह्मचारियों का शोषण न हो। गुरुकुल के लिए भवन की कमी पर आचार्य जी ने कहा, यहां मानव निर्माण की चिंता होनी चाहिए, भवन निर्माण की नही, लोगो के पास धन बहुत है, खर्च कैसे हो यह चिंता है। आपके आदर्श व लक्ष्यो के प्रति समर्पण का परीक्षण होना है। धन स्वत: लोग देगे। उन्होंने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के लिए प्रति माह एक हजार रुपए एक वर्ष तक देने की घोषणा की। इस अवसर पर स्थानीय आर्य समाज व गुरुकुल के संस्थापक ब्रह्मचारी सत्यव्रत जी ने कहा कि उनके बीस वर्ष पूर्व का सपना आज साकार हुआ।

इसी दिन रात्री में गजनेर ग्राम के आर्य समाज में भी एक धर्म सभा का आयोजन किया गया, जिसमे ग्राम के प्रधान व ग्राम आर्यजनो ने भाग लिया।

17 फरवरी "बसन्त पंचमी" को मुख्य अभिनन्दन समारोह का आयोजन आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग (जेल रोड़) प्रांगण में हुआ। इसका आरंभ दर्शन योग महाविद्यालय के ब्रह्मचारी रणवीरजी के समर्पण प्रार्थना गीत के साथ किया। पश्चात् पुष्पाहार भेंट का कार्यक्रम हुआ जिसमें बीकानेर संभाग के विभिन्न आर्य समाजों के प्रधान मंत्रियो व अधिकारियो व नगर के संभ्रान्त आर्य जनों ने भाग लिया।

आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी ने अपने प्रवचन मे गृह त्याग की परिस्थिति व आचार्य पद तक पहुंचने तक आने वाली कठिनाईयों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। इस वक्त का वातावरण भावनात्मकम था व उनके परिजन बड़े भाव-विभोर थे मानो उनके परिजनों के लिए व आर्य जनों के लिए बसंत पंचमी बीकानेर में पहली बार आई है।

आचार्य जी ने कहा वैदिक ग्रन्थों का अन्य भाषाओं में अनुवाद करना होगा, वैदिक संस्कार और निधि को समझना होगा। वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार की महत्ती आवश्यकता भी उन्होंने बताई। उन्होंने बताया कि गुरुओं के सानिध्य मे अपना निर्माण करना चाहिए, इससे जीवन की नई दिशा मिलती है। बुराईयों व दुर्व्यसनों का त्याग करें। मांस शराब, जुआ आदि की प्रवृत्तियां व्यक्ति का नैतिक पतन करती हैं।

अभिनंदन पत्र का वाचन श्रीमती बंगला देवी आर्य ने किया व श्री शंभूराम जी यादव उप प्रधान ने स्वागत गान पेश किया व अभिनंदन पत्र श्री उदयशंकर जी व्यास ने भेंट किया।

इस समारोह की अध्यक्षता प्रो. धर्मवीर जी, मंत्री परोपकारिणी सभा अजमेर ने की व अपने अध्यक्षीय प्रवचन में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता प्रकट की, विशिष्ट अतिथि बिन्नाणी कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या श्रीमती कमला जी भंडारी, पंडित अम्बिकादत्त जी शास्त्री, आर्य समाज के प्रधान श्री मनमोहन जी भाटिया, मंत्री श्री जसकरण जी सोनी आदि ने अपने विचार प्रकट किये और कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कलावती जी आर्य ने किया। श्री ठाकुर प्रसाद जी आर्य व श्री जसकरण जी सोनी ने ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ कराया।

अभिनंदन समारोह का समापन शक्तिपाठ व शांति गान के साथ किया गया।

ता. 18-2-02 को सुबह 9.30 बजे राष्ट्र सहायक विद्यालय जय नारायण व्यास कालोनी बीकानेर में स्कूल की छात्राओं और छात्रों के बीच आचार्य जी का प्रवचन हुआ। स्कूल की व्यवस्था और स्कूल में बच्चों को धार्मिक शिक्षा को देख कर आचार्य जी बहुत ही प्रभावित हुए और कहा कि इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली कहीं और देखने को नहीं आती है। तदुपरान्त अपरान्ह बीकानेर के हजारों आर्य नर, नारियों ने अपना श्रद्धा सुमनाहार भेंट कर वैदिक जयघोष के साथ आचार्य ज्ञानेश्वरार्य को भावभीनी विदाई दी।

—जसकरण सोनी

ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन

आर्य जगत् को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि ऋषि दयानन्द के जीवन एवं व्यक्तित्व विषयक लगभग पचास ग्रन्थों के लेखक डा. भवानी लाल भारतीय की रतनकृति-**ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन** शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। ऋषि के जीवन एवं कृतित्व का ज्ञान प्राप्त करने के तीन साधन हैं-1. जीवन चरित, 2. लिखित ग्रन्थ, 3. पत्र व्यवहार। स्वामी जी के जीवन चरित तथा उनके ग्रन्थों पर पर्याप्त लिखने के पश्चात् डा. भारतीय चार भागों में प्रकाशित उनके पत्र-व्यवहार का गहन गम्भीर विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने जा रहे हैं। पत्रों में लेखक के व्यक्तित्व तथा विचारों की अन्तरंग अभिव्यक्ति होती है। इस दृष्टि से ऋषि के सैंकड़ों पत्रों तथा विज्ञापनों में निहित उनकी विचारधारा, उनके कार्यक्रम तथा जीवन एवं जगत् के प्रति उनकी दृष्टि को इस ग्रन्थ में विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से यह पुस्तक दयानन्द के अध्ययन को एक नया आयाम देने वाली विशिष्ट कृति होगी। ऋषि के पत्र व्यवहार को सम्पादित तथा सुरक्षित करने में स्व. पं. भगवद्दत्त जी तथा पं. युधिष्ठिर मीमांसक के कृतित्व की यह पूरक रचना होगी क्योंकि उपर्युक्त विद्वानों द्वारा संकलित और सम्पादित ऋषि के पत्र व्यवहार में उस महापुरुष का उदात्त व्यक्तित्व किस प्रकार अन्तर्निहित धारा की भांति प्रवाहित हो रहा है, इसकी जानकारी इसी ग्रन्थ से मिलेगी। पुस्तक का मूल्य 100 रुपए होगा, अग्रिम प्रति के लिए लिखें-राहुल माथुर, प्रचार सचिव दयानन्द अध्ययन संस्थान 8-423 नन्दन बन, जोधपुर।

गुरुकुल मटपुरी का 65वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी हरियाणा का 65वां वार्षिकोत्सव सामवेद-पारायण-महायज्ञ गत दिनों सम्पन्न हुआ। पूर्णाहुति के समय यज्ञ के ब्रह्मा डा. धर्मदेव शर्मा ने अपने संदेश में शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ के आधार पर बताया कि "यो न सुनोति न यजते स निऋतिम् गच्छति" अर्थात् जो व्यक्ति संसार मे मनुष्य का जन्म लेकर समाज के लिए कार्य नहीं करता है और यज्ञ नहीं करता है अर्थात् पुरोहित के काम नहीं करता है। उसकी गिनती पापियों की श्रेणी में होती है। पाप से बचने के लिए पुरोहित के कार्य यज्ञादि सदा करने चाहिए। इस अवसर पर श्री किशोर सिंह जी, श्री लक्ष्मण सिंह बेमोल, डा. सत्यदेव गुप्ता, श्री करण सिंह श्री फतेह सिंह, पं. चिरंजी लाल जी, श्री खुशी राम, श्री राम चन्द्र के उपदेश व भजन हुए।

—स्वामी विद्यानन्द

शताब्दी महासम्मेलन मनायें

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली सभा)

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में श्रद्धानन्द नगरी बसायें।
गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महा सम्मेलन मनायें॥
अति पुनीत धरती भारत की गंगा जी के तट पर आयें।
पूर्ण हुए शत वर्ष चलो हरिद्वार शताब्दी पर्व मनायें ॥
पातक कष्ट क्लिष्ट करें वसुधा पर सुख शान्ति लायें।
अत्र-तत्र सर्वत्र सनातन वैदिक धर्म ध्वजा फैरायें॥
तन-मन-धन से सभी भान्ति महा स मेलन को सफल बनायें।
ज्ञान की ज्योति जगायें वेदामृत पीये पिलाये॥
हरिद्वार चलो। हरिद्वार चलो। दिगदिगन्त सन्देश सुनायें।
पुनः स्वरूपानन्द ऋषि की आकर जय-जयकार गुंजायें॥

शानदार परीक्षा परिणाम

एम. डी. ए. एस. सीनियर सैकेण्डरी स्कूल मोगा का वर्ष 2001-2002 का परीक्षा परिणाम निम्न अनुसार रहा।

प्रथम प्राईमरी से चौथी प्राईमरी तक 100% रहा। छठी कक्षा का परिणाम 98% रहा। सातवीं कक्षा से +1 कक्षा तक परिणाम 100% रहा।

पांचवी कक्षा की परीक्षा पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा ली गई और परीक्षा परिणाम 100% रहा।

इस शानदार सफलता का श्रेय स्कूल के परिश्रमी स्टाफ स्कूल के प्रिंसीपल सुभाष धीर और प्रबन्धक कमेटी जिसके प्रधान श्री योगेश गोयल और सैक्रेटरी श्री अश्विनी शर्मा जी को जाता है।

—सुभाष धीर, प्रिंसीपल

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना में बृहद् हवन यज्ञ

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना में चल रहे आर.बी. स्कूल की शिक्षा का सत्र आरम्भ होने पर 1.4.2002 सोमवार को आर्य समाज मन्दिर में एक बृहद हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। जिस में स्कूल के छात्र, स्टाफ एवं छात्रों के माता पिता ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान एवं स्कूल के प्रबन्धक आशानन्द आर्य ने छात्रों को आशीर्वाद देते हुए उन्हें कड़ा परिश्रम करने के लिए कहा और आर्य समाज के सत्संगों में भाग लेकर अपने जीवन को ऊंचा बनाने के लिए कहा। इस अवसर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे विद्यार्थियों को पारितोषिक प्रदान किए गए।

गुरुकुल करतारपुर में छात्रों का नया प्रवेश

(10 जून-2002 सोमवार को प्रातः)

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जि० जालन्धर) पंजाब में कक्षा-छठी से कक्षा-नौवीं तक में प्रवेश के इच्छुक छात्रों की प्रवेश परीक्षा 10 जून-2002 सोमवार को प्रातः 10 बजे ली जाएगी। कक्षा-छठी के प्रवेशार्थियों को केवल गणित, हिन्दी, अंग्रेजी में तथा शेष तीन कक्षाओं के प्रवेशार्थियों की गणित, हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी विषयो की स्तरानुकूल परीक्षा ली जाएगी। अधिक अंक पाने वाले छात्र नियत संख्या में ही प्रवेश पा सकेंगे।

ऊपर की कक्षाओ (विद्याविनोद अर्थात् 10+1 तथा अलंकार अर्थात् बी.ए.) में प्रवेश के इच्छुक नये छात्रो को जुलाई के पूर्वार्द्ध में प्रमाण पत्रों सहित उपस्थित होना होगा। शारीरिक और बुद्धि से कमजोर छात्रो को प्रवेश नहीं मिलेगा।

गुरुकुल करतारपुर का पाठ्यक्रम कक्षा-8 तक सी बी एस सी (एन.सी. आर.टी.) से तथा ऊपर की कक्षाएं गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से सम्बन्धित हैं। छात्रों को आवास, शिक्षा एवं भोजन की सुविधा निःशुल्क है। पुस्तकों, वस्त्रादि, फुटकर खर्च तथा विश्वविद्यालय का परीक्षा शुल्क अभिभावक को ही वहन करना होगा। कक्षा-छठी से कक्षा-नौंवी तक के प्रवेशार्थियों को 9 जून-2002 रविवार शाम तक गुरुकुल में पहुंच जाना चाहिए।

—सुखदेव राज शास्त्री, आचार्य
गुरुकुल करतारपुर, जिला-जालन्धर (पंजाब) 144801

आवश्यकता है

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला-जालन्धर 144801 (पंजाब) में अनुभवी विद्वानों की आवश्यकता है। जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की अलंकार (बी.ए.) कक्षाओं को वेद, दर्शन, व्याकरण पढ़ाने में समर्थ हों। अवकाश प्राप्त तथा गुरुकुल परम्परा के स्नातको को प्राथमिकता दी जाएगी। योग्यता विवरण के साथ अपना आवेदन-पत्र शीघ्र भेजें। आवास तथा भोजन की सुविधा के साथ समुचित मानदेय भी दिया जाएगा।

गुरुकुल हितैषी सज्जनो से भी निवेदन है कि यदि उनकी जानकरी में कोई ऐसे विद्वान् हों तो उसके पते सहित हमें सूचित करें, जिससे हम स्वयं उनसे सम्पर्क कर सकें।—डा० नरेश कुमार शास्त्री, मन्त्री

गुरुकुल भठिण्डा का शानदार परीक्षा परिणाम

गुरुकुल शिल्प विद्यालय बठिण्डा के प्रांगण में चल रहे गुरुकुल आर्य माडल स्कूल का परीक्षा परिणाम दिनांक 26 मार्च, 2002 को घोषित किया गया। सर्वप्रथम हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया जिसका ब्रह्मत्व, ब्रह्मचारी सूर्यदेव "वैदिक मिशनरी" जी द्वारा किया गया। इस यज्ञ में गुरुकुल विद्यालय के मैनेजर एवम् मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब श्री प्रेम भाटिया जी एवम् प्रिंसिपल श्री पुरुषोत्तम दास जी ने यज्ञमान पद ग्रहण कर पुण्य प्राप्त किया। इस यज्ञ में विद्यालय के समस्त अध्यापक गण एवम् बच्चों के अतिरिक्त क्षेत्र के जाने माने लोगों ने भी भाग लिया। यज्ञोपरान्त विद्यालय का परीक्षा-परिणाम घोषित किया गया। सभी कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी छात्रों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

आर्य समाज के अनुयायियों को शान्त नहीं बैठना चाहिए, अपितु स्वामी जी के उपदेशों को सफल बनाने के लिए प्रतिदिन अग्रसर रहना चाहिए।

पठानकोट का विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने गत दिनों निश्चय किया था कि पजाब के बडे-बडे नगरों में विशेष यज्ञों व समारोहों का आयोजन किया जाए। उसी की एक कडी में आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट तथा आर्य समाज माडल टाऊन पठानकोट तथा पठानकोट की आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से 27 मार्च से 31 मार्च 2002 तक पठानकोट के खुले मैदान रामलीला ग्राऊड मे विश्व शान्ति महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आरम्भ 27 मार्च को विशाल नगर कीर्तन (शोभा यात्रा) द्वारा किया गया। यह शोभा यात्रा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदर्शन कुमार शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम रथ पर पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज और उनके साथ श्री सुदर्शन कुमार जी शर्मा विराजमान होकर शोभा यात्रा का नेतृत्व कर रहे थे। इस शोभा यात्रा मे गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी, दयानन्द मठ चण्डरा के ब्रह्मचारी, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की कन्याए, पठानकोट के सभी स्कूल कालेजों के विद्यार्थी स्टाफ व सदस्यो व जिला गुरदासपुर की ~भी आर्य समाजो के सदस्यों व अधिकारियो ने भाग लिया। जिला गुरदासपुर के अतिरिक्त अन्य जिलो से भी बहुत सारे महानुभाव पठानकोट पहुचे थे। धूरी, पटियाला, फगवाडा, आर्य समाज कठुआ, जम्मू, नूरपुर, नवाशहर, लुधियाना तथा जालन्धर के बहुत से महानुभावों ने इस शोभा यात्रा में भाग लिया। यह शोभा यात्रा देखने योग्य थी। सभी बहनो और भाईयो ने केसरी रग के वस्त्र धारण किए हुए थे और इसके साथ ही केसरी रग का गायत्री मन्त्र का पटका गले मे डाला हुआ था। इस अवसर पर एम डी के आर्य पब्लिक स्कूल पठानकोट की ओर से "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" वेद मन्त्र को दर्शाते हुए एक झाकी निकाली गई जिसकी सभी ने भरपूर प्रशसा की। आय सी सै स्कूल पठानकोट के बच्चो ने भी प्रभावशाली ढग की झाकिया निकाली। आर्य गर्ल्ज सी सै स्कूल पठानकोट की लडकियो ने झासी की महारानी की झाकी निकाली। देश के लिए शहीद होने वाले सभी शहीदो की झाकिया निकाली गइ। इस शोभा यात्रा में हजारो लोगो ने भाग लिया। इस शोभा यात्रा की सबसे बडी विशेषता यह थी कि पठानकोट तथा उसके आसपास जितने भी लोग अन्य मतावलम्बी हैं, उन्हाने भी इस शोभा यात्रा में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। और आर्य समाज को अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया। सनातन धर्म के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी प्रकाशानन्द जी भी एक रथ पर सवार थे और उस रथ को गुरुकुल के ब्रह्मचारी स्वयं खींच रहे थे।

इस अवसर पर प्रतिदिन यज्ञ प्रातः साढ़े सात बजे से दस बजे तक होता रहा तथा रात्रि को साढ़े आठ बजे से साढ़े दस बजे तक कथा व प्रवचन होते रहे। पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी इस यज्ञ के ब्रह्मा थे और वेद मन्त्रों का उच्चारण गुरुकुल चोटीपुरा की कन्याओं ने सस्वर में किया। रात्रि को प्रतिदिन स्वामी जी महाराज का उपदेश और श्री जगत वर्मा जी भजनोपदेशक के भजन होते रहे। पूर्णाहुति वाले दिन भारी संख्या में लोगों ने इस यज्ञ व समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर 27 मार्च से 31 मार्च तक लगभग तीन सौ यजमानों ने परिवारों सहित यज्ञ वेदी पर बैठ कर यज्ञ में अपनी आहुतिया प्रदान की। इस यज्ञ की सबसे बडी विशेषता यह थी कि सभी यजमान भारतीय वेशभूषा में धोती-कुर्ता पहन कर यज्ञ में बैठते थे और बहनें साडी लगा कर यज्ञ में भाग लेती थीं। सारा वातावरण देखते ही बनता था। सारा पण्डाल भारतीय संस्कृति का परिचय दे रहा था। यजमानों को उनका स्थान तथा समय बताने के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया और इस कार्य मे आदर्श भारती कालेज पठानकोट के कम्प्यूटर विभाग ने सराहनीय कार्य किया। इस यज्ञ की सूचना प्रतिदिन केबल टी वी पर भी दी जाती रही और यज्ञ स्थल से इसका सीधा प्रसारण केबल टी वी पर किया गया। रविवार 31 मार्च को पूर्णाहुति के अवसर पर हिन्द समाचार पत्र समूह के मालिक श्री विजय चोपडा जी और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलपति आचार्य वेद प्रकाश जी भी पठानकोट पहुचे। श्री विजय चोपड़ा जी ने पठानकोट के विश्व शान्ति महायज्ञ को देख कर अपने उद्बोधन में कहा कि अब आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नेतृत्व में वेद प्रचार का कार्य बडे सुचारू ढग से चलेगा। मुझे प्रसन्नता है कि अब सभा मे सभी अच्छे-अच्छे कार्यकर्ता एकजुट होकर कार्य कर रहे हैं। श्री आचार्य वेद प्रकाश जी ने भी आई हुई जनता को सम्बोधित किया और अपना प्रभावशाली प्रवचन दिया।

इस अवसर पर विशेष रूप से जालन्धर से श्री सुदर्शन जी शर्मा सभा वरिष्ठ उप प्रधान, चौधरी ऋषिपाल सिह जी एडवोकेट सभा उप प्रधान, नवा शहर से श्री प्रेम भारद्वाज जी सभा कोषाध्यक्ष, मोगा से श्री प्रियतम देव जी, तथा अन्य नगरो से कई महानुभाव पधारे हुए थे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे श्री सुभाष जी मित्तल, श्री मुनि लाल जी नैइन, श्री रमेश जी कौशल, श्री विनोद मल्होत्रा, श्री रमेश नैब, श्री सुदेश महेन्दु, श्री राकेश लाल महाजन, श्री सत्यप्रकाश सिह, श्री पृथ्वी राज महाजन, श्री ओम जी बी.एस सी श्री वेद प्रकाश जी उप्पल, श्रीमती संतोष अम्बा, श्रीमती सविता कालड़ा, श्रीमती विमला डोगरा, और इनके अतिरिक्त प्रिंसीपल सतोष महाजन, प्रिंसीपल श्रीमती कौशल, प्रिंसीपल श्रीमती बेलू धई, तथा आर्य समाज के अन्य सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा।

इस कार्यक्रम की सफलता का बहुत सा श्रेय आदर्श भारती कालेज पठानकोट के प्रिंसिपल तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रि स्वतन्त्र कुमार जी को जाता है। उन्होने इसके लिए अपना बहुत सा अमूल्य समय दिया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से हजारों रुपये का साहित्य आधे मूल्य पर दिया गया। आर्य प्रकाशन दिल्ली व सपर्ण संस्थान की ओर से भी साहित्य विक्रय किया गया। इस अवसर पर एक लाख रुपए से अधिक का साहित्य लोगों तक पहुंचाया गया।

—धर्मेन्द्र आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

आर्य समाज को लोगों में ले आना होगा

☐ ले० श्री [illegible] कुमार आर्य, मन्त्री जिला आर्य सभा भटिण्डा

आर्य समाजियों की ओर विशेषकर अधिकारियों को शिकायत रहती है कि लोग आर्य समाजों में नहीं आते और न ही आर्य समाज से जुड़ते हैं। यह शिकवा शिकायत बिल्कुल ठीक है। हम भिन्न-भिन्न नगरों में स्थापित आर्य समाजों की सदस्य संख्या में देखें तो हम देखेंगे कि वह संख्या जो दस बीस वर्ष पहले थी, उतनी ही अब भी है हो सकता है उससे कम ही हो। पर यदि लोग आर्य समाज में नहीं भी आते तो भी आर्य समाज को तो चुप कर नहीं बैठना। आर्य समाज को ही लोगों में जाना पड़ेगा और आर्य समाज को लोगों में जाना भी चाहिए। इसके अतिरिक्त वेद प्रचार का और कोई ढंग नहीं है। आर्य समाज को आर्य समाज की चार दीवारी से बाहर निकलना ही पड़ेगा।

आर्य समाज गोनियाना मण्डी के अधिकारियों ने ऐसा ही निर्णय किया। गोनियाना मण्डी में आर्य समाज कई वर्षों से अपने चार पर्व आर्य समाज मंदिर के अन्दर न मना कर सार्वजनिक स्थानों पर लगातार मनाता आ रहा है। सर्वप्रथम आर्य समाज स्थापना दिवस अनाज मण्डी के चौक में हर वर्ष मनाया जाता है। लगातार दो दिन तक लाऊड-स्पीकर द्वारा मुनादी भी की जाती है। यह दिन चैत्र नवरात्रों का प्रथम नवरात्र होने के कारण तथा नवसम्वत होने के कारण सनातनी बन्धु भी इस पर्व में श्रद्धा पूर्वक सम्मिलित होते हैं।

इसी प्रकार आश्विन मास के प्रथम नवराते को नगर के बीचो बीच स्थित पंचायती धर्मशाला में यज्ञ हवन तथा सत्सग का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष मथुरा के गुरु विरजानन्द आर्य गुरुकुल के आचार्य स्वदेश जी अपने कई ब्रह्मचारियों के साथ इसमें शामिल हुए तथा नगर वासियों को आशीर्वाद दिया। रामामण्डी जि भटिण्डा से भी बड़ी संख्या मे आर्य जनों ने इसमें शामिल होकर नगर वासियों का हौसला बढ़ाया।

हर वर्ष 25 नवम्बर को यहां की ट्रक यूनियन अपने विशाल प्रांगण में आर्य समाज द्वारा यज्ञ हवन तथा सत्संग का आयोजन करती है जिसमें जिला स्तर के अधिकारी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी भी भाग ले चुके हैं। इस अवसर पर किसी न किसी संन्यासी अथवा वानप्रस्थी को भी आमन्त्रित किया जाता है। इस समारोह में सभी ट्रकों के मालिक, उनके ड्राईवर तथा कण्डक्टर सभी श्रद्धा से भाग लेते हैं तथा यज्ञ हवन में अपने हाथों से आहुति डाल कर अपने जीवन को सफल बनाते हैं।

इसी प्रकार हर वर्ष ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्री) अथवा उसके अगले दिन जैसे भी आर्य समाज के अधिकारियों को सुविधा हो कैनाल रैस्ट हाऊस (नहरी कोठी) में विशाल यज्ञ हवन तथा लंगर का आयोजन किया जाता है जिसमें शामिल होने के लिए सिंचाई विभाग के कर्मचारियों द्वारा निमन्त्रण छपवा कर नगर के सभी गणमान्य लोगों को आमन्त्रित किया जाता है।

पारिवारिक सत्संग—आर्य समाज गोनियाना मण्डी ने भिन्न-भिन्न खुशी के अवसरों पर यज्ञ हवन तथा पारिवारिक सत्संग के साथ-साथ एक नई योजना बनाई है। इस योजना के अधीन पिछले छः-सात महीने से हर मास की प्रत्येक अमावस तथा पूर्णिमा को पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया जाने लगा है। पहले-पहले आर्य समाज के सदस्यों ने अपने घरों में अमावस अथवा पूर्णिमा को यज्ञ हवन तथा पारिवारिक सत्संग का कार्यक्रम रखा। अब गैर आर्य समाजी भी अपने घरों पर यज्ञ हवन कराने लगे हैं। इस कार्य योजना की सफलता से उत्साहित होकर अब पिछली संक्रान्ति (संग्राद) से हर संग्राद को भी पारिवारिक सत्संग का कार्यक्रम रखा। अब गैर आर्य समाजी भी अपने घरों पर यज्ञ हवन कराने लगे हैं। इस कार्य योजना की सफलता से उत्साहित होकर अब पिछली संक्रान्ति (संग्राद) से हर संग्राद को भी पारिवारिक सत्संग का आयोजन करने का निश्चय किया गया है। इन सभी कार्यक्रमों में श्री कृष्ण लाल जटाना प्रचार मन्त्री जिला आर्य सभा भटिण्डा का पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त होता है। हम उनके अति आभारी हैं।

बठिण्डा में महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं ऋषिबोधोत्सव

हर वर्ष की भांति आर्य समाज बठिण्डा के महर्षि दयानन्द सत्संग भवन में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस एवं ऋषिबोधोत्सव (महाशिवरात्रि) पर्व दिनांक 8 मार्च से 12 मार्च 2002 तक पूज्यपाद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व एवं आचार्य श्री गुरु प्रसाद शास्त्री जी के सानिध्य में बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में ब्र० सूर्यदेव जी "वैदिक मिशनरी" का विशेष योगदान रहा। निर्धारित कार्यक्रमानुसार 8 मार्च प्रात: 8 बजे आदरणीय श्री साधुराम जी गोयल द्वारा तालियों की गूंज में 'ओ३म्' ध्वज फहराया गया । तत्पश्चात् आर्य माडल हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने ओ३म् का झंडा आता है, सोने वालो जाग उठो, यह ध्वज गीत गाया। ध्वजगीत के गायन से वातावरण अत्यन्त मनमोहक हो गया, इसके साथ ही आज के मुख्य अतिथि का शहर के जाने-माने सज्जनों एवं आर्य जनों द्वारा माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात् आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल के छात्राओं ने मुख्य अतिथि जी के स्वागत में स्वागत गान गाया। आर्य समाज चौक बठिण्डा के प्रधान प्रो. ओ.पी. मंगला जी ने मुख्य अतिथि जी का परिचय दिया एवं उन्हें इस समारोह में पधारने पर हार्दिक धन्यवाद किया। तदोपरान्त यजुर्वेद के विशेष मन्त्रों सहित मानव-कल्याण महायज्ञ प्रारम्भ हुआ। जो 8 मार्च से 12 मार्च तक दानों समय निरन्तर चलता रहा। हवन यज्ञ का शुभारम्भ मुख्य अतिथि जी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने आर्य समाज को 11000/- (ग्यारह हजार) रुपए की राशि प्रदान की।

हर्ष की बात यह है कि आर्य जगत की प्रसिद्ध भजनोपदेशिका 'आर्य वीरांगना' श्रीमती पुष्पा शास्त्री जी जो कि महारानी झांसी के नाम से जानी जाती हैं, ने अपने सुमधुर कण्ठ से आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की उपमा में गायन कर उपस्थित आर्य जनों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। विशेष उल्लेखनीय बात यह रही कि दिनांक 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने भजन के माध्यम से महिलाओं के प्रति प्राचीन काल में जो अत्याचार किया जाता रहा था उस पर रोशनी डाली तथा कहा-'माता निर्माता भवति' मां निर्माण करने वाली होती है, उस पर अन्याय करना पाप है। महर्षि दयानन्द जी की यह देन है कि आज महिला उच्च पद पर रह कर समाज और राष्ट्र की सेवा कर रही है। मैं तो कहती हूं कि पुरुषों का नारी के प्रति व्यवहार तो एक तरफ रहा, किन्तु नारी ही नारी की दुश्मन है, यह भी असत्य नहीं कि दहेज के प्रति लालसा समाज में कटुता पैदा करती है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस के शुभावसर पर आयोजित मानव-कल्याण महायज्ञ के ब्रह्मा पूज्यपाद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने उपस्थित आर्य जनों को सम्बोधित करते हुए सर्वप्रथम यज्ञ की महिमा का वर्णन किया और कहा-आज संसार के समस्त व्यक्ति चिन्तित हैं, उसका मुख्य कारण भौतिकता है। सुख की कामना करने वालों को जल, वायु आदि की शुद्धि करनी चाहिए। इसके लिए यज्ञ करना अति आवश्यक है-गीता में श्री कृष्ण जी ने कहा है-यज्ञ कर्म समुन्दव.....। आगे श्री स्वामी जी ने सत्संग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा-संसर्गजा दोष: गुणा भवन्ति ....स्वस्ति पन्थामनुचरेम.....। हमारा जीवन सूर्य और चन्द्रमा की भांति बने। चन्द्रमा की तरह हमें अपने गुणों को बढ़ाना चाहिए मनुष्य का बचपन दूज के चांद की तरह, युवावस्था मध्यदिन के सूर्य की तरह तथा वृद्धावस्था अस्त होते हुए सूर्य के समान होनी चाहिए। हमें संकल्पवान बनना चाहिए, आगे उन्होंने कहा-आत्मिक बल के बिना मनुष्य कुछ नहीं कर सकता अग्निमीडे पुरोहितं..... ..य आत्मदा बलदा.......। अग्नि कस्मात् ? अग्नि अग्रीणि भवति, अग्नि के बिना चेतना नहीं होती। अग्नि स्वरूप परमात्मा सारे विश्व को गति दे रहा है। संस्कारों के महत्व को दर्शाते हुए स्वामी जी ने कहा, प्राचीन काल में गुरुकुलों की व्यवस्था थी, शिक्षा नि:शुल्क दी जाती थी। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-गुरुकुल में सब का खान-पान, रहन-सहन कपड़े आदि समान हों। प्रारम्भ में विद्यार्थी प्रवेशार्थ हाथों में तीन समिधाएं लेकर जाते थे। वहां उनका निर्माण होता था। अन्त में स्वामी जी ने इस समाज की सेविका श्रीमती रोशनी देवी की सेवाओं का वर्णन करते हुए कहा कि मैं इस देवी की सेवाओं का बखान किन शब्दों से करुं । हमें जिस समय जिस चीज की आवश्यकता होती, उसी समय तुरन्त हमें वह सामान उपस्थित करती। मैं इन्हें आशीर्वाद देता हूं, भगवान इन्हें दीर्घायु प्रदान करे।

ऋषिबोधोत्सव के शुभ अवसर पर आर्य समाज, आर्य समाज चौक एवं आर्य समाज से सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं के मुख्य द्वारों को बिजली की लड़ियों से सजाया गया। इतना मन-मोहक वातावरण था कि बठिण्डा के नगर निवासियों ने इसकी भरपूर प्रशंसा की।

दिनांक 9 मार्च 2002 को स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी के नेतृत्व में हवन यज्ञ के पश्चात् निर्धारित समय पर शोभा यात्रा निकाली गई। जिसका शुभारंभ स्वामी जी के कर-कमलों द्वारा 'ओ३म् ध्वज' को फहरा कर किया गया। साथ में भजनोपदेशिका श्रीमती पुष्पा शास्त्री जी भी केसरिया रंग की पगड़ी धारण कर पैदल यात्रा कर रही थी।

शोभायात्रा में आर्य समाज बठिण्डा, समस्त आर्य शिक्षण संस्थाएं-आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल, आर्य माडल हाई स्कूल, डी.ए.वी. सी. सै. स्कूल, महात्मा देसराज सी.सै. स्कूल, गुरुकुल आर्य माडल स्कूल एवं आर्य समाज की महिलाओं द्वारा भव्य झांकियां निकाली गईं। छात्र-छात्राओं के हाथों में ओ३म् ध्वज थे। शोभा यात्रा में बठिण्डा के आर्यजनों, नगर निवासियों, आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाचार्यों, श्रीमती शान्ति जिन्दल, श्री हुकम चन्द गोयल, श्रीमती एस.एल. लाटिका, श्रीमती विनोद देवगण, अध्यापकों तथा छात्र-छात्राओं के साथ चल कर यात्रा की शान बढ़ाई। इस शोभायात्रा में वेदमन्त्रों के द्वारा हवन यज्ञ, स्वामी दयानन्द जी की उपमा में लगाए गय जय घोष से आकाश गूंज उठा। शहर बठिण्डा के निवासियों ने स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी एवं श्रीमती पुष्पा शास्त्री जी का माल्यार्पण कर भरपूर स्वागत किया और आशीर्वाद प्राप्त किया। शहर निवासियों ने शोभायात्रा में चल रहे सभी सज्जनों को फल, मिष्ठान्न आदि वितरण किया। शोभा यात्रा के लौटने पर आर्य समाज चौक मे आर्य समाज द्वारा इस कार्यक्रम की सफलता पर बच्चों और सभी सज्जनों में लड्डुओं का प्रसाद वितरण किया गया। दिनांक 11 मार्च 2002 को हवन यज्ञ एवं स्वामी जी के प्रवचन के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के आदेशानुसार एवं उसके द्वारा निर्धारित किए गए विषयों पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल, आर्य माडल हाई स्कूल, महात्मा हंसराज सी.सै. स्कूल, डी ए.वी सी सै. स्कूल, एम.एस.डी.सी. सै. स्कूल, गुरुकुल आर्य माडल स्कूल तथा आर्य परिवारो के बच्चो ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री केवल कृष्ण जिन्दल जी ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। उन्होने इस कार्यक्रम को बड़े सुचारू ढंग से तैयार किए जाने की खुशी में आर्य समाज को पांच सौ रुपए दान में दिए। उपस्थित जनों ने उनका तालियों द्वारा स्वागत किया। इस अवसर पर एक छोटे बच्चे कमल साखाल ने स्वामी दयानन्द जी की उपमा में एक भजन सुनाया, जिससे खुश होकर महामन्त्री जी ने बच्चे को नकद राशि से पुरस्कृत किया। भाषण प्रतियोगिता से पहले मञ्च संचालन की कार्यवाही करते-करते श्री प्रेम भाटिया जी महामन्त्री ने भाषण प्रतियोगिता की कार्यवाही हेतु मंच संचालन का कार्य श्री महेन्द्र पाल जी अरोड़ा उपमन्त्री आर्य समाज को सौंपा, जोकि उन्होंने बड़े सुचारू रूप से चलाया।

दिनांक 12 मार्च 2002 को पूर्णाहुति समारोह निश्चित समय पर सम्पन्न हुआ। इस ममारोह के मुख्य अतिथि आदरणीय श्री पवन कुमार जिन्दल जी का आर्य समाज बठिण्डा के द्वार पर पधारने पर आर्य समाज के पदाधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया। सर्वप्रथम हवन यज्ञोपरान्त इस यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने मुख्य यजमान व अन्य यजमानों को पुष्पों की वर्षा कर आशीर्वाद दिया। इस उपरान्त महामन्त्री जी ने मंच संभाला एवं घोषणा की कि आज के मुख्य अतिथि जी ने इस शुभावसर पर ऋषि लंगर के लिए आंशिक दान के अतिरिक्त आर्य समाज को 10 हजार रुपए की

(शेष पृष्ठ 10 पर)

स्वतन्त्रता सैनानी हकीम बख्शी राम स्याल का देहावसान

आर्य समाज मोहाली के सरक्षक हकीम बख्शी राम स्याल जी का देहावसान 14 फरवरी 2002 को साय लगभग 6 बजे हो गया। उन की अन्तिम शोक दिवस 20 फरवरी को दोपहर 1 बजे से 2 बजे तक सम्पन्न हुआ। जिसमें भारी सख्या मे लोगो ने पहुच कर अपनी श्रद्धाजलिया अर्पित की। जालन्धर से पडित मनोहर लाल जी भी पहुचे और उन्होने यज्ञ सम्पन्न करवाया। अपने प्रवचन के द्वारा श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उन्होने कहा कि हमारा देश हकीम बख्शी राम स्याल की सेवाओ के प्रति सदा ऋणि रहेगा जिन्होंने अपने घर में सरदार भक्त सिह जी को कई बार पनाह दी थी। उन्होने अपने जीवन मे बहुत ही महान कार्य किए। सहारनपुर कालका आदि में आर्य समाजो का निर्माण करवाया और मोहाली मे भी आर्य समाज खडी कर दी। आर्य समाज मोहाली मे उन्होने एक सुन्दर विशाल यज्ञशाला और 15×30 का हाल कमरा निर्माण करवाया है। आर्य समाज मोहाली सदा उनकी ऋणी रहेगी आर्य समाज सैक्टर 16 के पुरोहित श्री मार्कण्डेय जी ने भी अपने प्रवचन के द्वारा श्रद्धाजलि अर्पित की।

केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ के महामन्त्री श्री रघुनाथ आर्य जी ने भी केन्द्रीय सभा की तरफ से और चण्डीगढ मोहाली, पचकुला की सभी आर्य समाजों की तरफ से श्रद्धाजलि अर्पित की। श्री विशेष जी ने भी अपने शब्दों के द्वारा हकीम जी को श्रद्धाजलि दी। उसके पश्चात् आर्य समाज मोहाली के प्रधान डॉ० विधिचन्द मिन्हास जी ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि 19 मार्च 1979 में आर्य समाज, मोहाली की स्थापना हुई। उसके बाद 1991 म डॉ० श्रुति कान्त आर्य मन्त्री आर्य समाज मोहाली से हकीम जी बहुत प्रभावित हुए और मोहाली में एक यज्ञशाला का निर्माण करके एक दिया जला दिया और तेल और बत्ती का कार्य किया। वह आर्य समाज मोहाली की आत्मा थे, उनके निधन से आर्य समाज, मोहाली और स्याल परिवार को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति असम्भव है। अन्त में डॉ० श्रुति कान्त मन्त्री आर्य समाज मोहाली ने अपनी श्रद्धाजलि मे कहा कि परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति व आत्मिक शाति दे उनका परिवार उनकी तरह ही आर्य समाज की सेवा करता रहे और उनके अधूरे कार्यों को पूरा करे परमात्मा स्याल परिवार को शक्ति दे अन्त मे उन्होंने आर्य समाज मोहाली की ओर से सभी आर्य बन्धुओ का धन्यवाद किया और सभी आर्य समाजों के अधिकारियो का एवम् केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ के महामन्त्री श्री रघुनाथ राय आर्य का धन्यवाद किया।

—मन्त्री,
आर्य समाज

उदयपुर सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर डॉ० भवानी लाल भारतीय का भव्य सम्मान

उदयपुर 28 फरवरी नवलखा राजमहल में आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध शोध विद्वान्, लेखक तथा प्रगल्भ वक्ता डॉ० भवानी लाल भारतीय का जोधपुर की समस्त आर्य समाजो की ओर से सम्मान किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरल आर्य की अध्यक्षता मे आयोजित इस समारोह मे अनेक आर्य सस्थाओं की ओर से उन्हें माल्यार्पण किया गया। महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास जोधपुर के कार्यकारी प्रधान श्री विजय सिह भाटी ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया तथा भारतीय जी की साहित्य सेवा के उपलक्ष्य में उन्हे इक्कीस हजार की राशि अर्पित की। सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के प्रधान स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने शाल प्रदान किया तथा न्यास द्वारा प्रकाशित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका की प्रति भेट की। इस सम्मान के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए डॉ० भारतीय ने ऋषि दयानन्द विषयक अपने विस्तृत लेखन का परिचय दिया और कहा कि सम्प्रति वे ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन शीर्षक ग्रन्थ का लेखन कर रहे हैं। डॉ० भारतीय के वेद उपनिषद्, आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द विषयक 125 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। अगले वर्ष पचहत्तरवे वर्ष में प्रविष्ट होने वाले डॉ० भारतीय के अमृत महोत्सव के आयोजन की परिकल्पना प्रस्तुत की जा रही है।—डॉ० राम कृष्ण आर्य

बठिण्डा में.....

(पृष्ठ 1 का शेष)

राशि प्रदान करने की घोषणा की। इस पर उपस्थित सभी जनों ने उनका तालियों की गड़गड़ाहट में धन्यवाद किया। इसके बाद आर्य समाज के पदाधिकारियों, आर्य जनों एवं नगर के प्रमुख सज्जनों ने माल्यार्पण कर मुख्य अतिथि जी का स्वागत किया। इसके साथ ही प्रधान जी ने मुख्य अतिथि जी का परिचय दिया। मुख्य अतिथि जी के स्वागत में आर्य माडल हाई स्कूल की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया, जिससे खुश होकर श्री पी डी गोयल जी प्रधान आर्य सभा, जिला बठिण्डा ने बच्चो को नकद राशि प्रदान कर उनका उत्साह वर्धन किया। स्वामी सुमेधानन्द जी ने मुख्य अतिथियों को आर्य समाज का साहित्य प्रदान कर उन्हें उनके जीवन में सफलता प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया, इसके साथ ही स्वामी जी ने ब्र० सूर्यदेव जी 'वैदिक मिशनरी' जो कि गुरुकुल शिल्प विद्यालय बठिण्डा में सेवारत हैं, का परिचय बड़े ही भावनात्मक शब्दों में दिया उन्होने बताया कि मैं ब्रह्मचारी जी को जब वे कालेज में पढ़ते थे, तब से जानता हू। वे एक सम्पन्न परिवार से हैं। इन्होंने कहा मैं ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना चाहता हू परन्तु मेरे कहने पर कि वह अपनी पढाई पूरी करें, इसके उपरान्त आर्य समाज की सेवा में आपका स्वागत होगा। सारी जिन्दगी पड़ी है समाज की सेवा करने के लिए। ब्रह्मचारी जी इस समय बठिण्डा एव इसके आसपास की आर्य समाजो तथा गुरुकुल की सेवा कर रहे हैं इन सस्थाओ का सौभाग्य है कि ब्रह्मचारी जी जैसे त्यागी व्यक्ति इन्हें मिले हैं स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा ब्र० सूर्यदेव जी को शाल प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही आर्य समाज के पदाधिकारियों ला० वजीर चन्द जी भगला सरक्षक आर्य सभा, प्रो० ओ पी मगला, श्री प्रेम भाटिया, श्री पी डी गोयल, चौ बाबू राम गर्ग ला० कुलवन्त राय अग्रवाल एव श्री चमन लाल मेहता द्वारा स्वामी जी महाराज को सम्मानित किया गया तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। महामन्त्री जी ने ब्र० सूर्यदेव जी द्वारा लगन से किये जा रहे कार्यों की भरपूर प्रशसा की। इस पूरे कार्यक्रम का सचालन श्री प्रेम भाटिया जी महामन्त्री द्वारा बड़े ही सुचारू ढंग से किया गया। ऋषि लगर का प्रबन्ध जो कि इस कार्यक्रम का मुख्य अंग था, बड़े परिश्रम तथा लगन से श्री नवनीत गुप्ता, कोषाध्यक्ष, श्री एम पी अरोड़ा उपमन्त्री, श्री गौरी शकर खानवाल उपमन्त्री, श्री श्याम लाल गुप्ता, श्री विवेक सारवाल श्री पवन कुमार आर्य वीर दल के सदस्य एव श्री जीतराम श्री हरिद्वार, श्री मुरलीधर आदि ने किया। पूर्णाहुति समारोह में ला० कुलवन्त राय अग्रवाल श्री चमन लाल मेहता श्रीमती शान्ति जिन्दल प्रधानाचार्या, आर्य गर्ल्ज सी सै स्कूल, श्री विनोद कुमार गर्ग मन्त्री, श्री हुकम चन्द गोयल प्रधानाचार्य, श्री विजय कुमार लेखाकार आर्य माडल हाई स्कूल, श्री नन्द लाल जी, श्री अशोक गर्ग प्रधान युवक समाज, श्री धर्मपाल रलहन, श्री बलदेव छाबडा प्रधान आर्य समाज सिकन्दरपुरा एव सिरकी बाजार श्री तरसेम आर्य, श्रीमती इन्द्रा छाबडा, श्रीमती स्वच्छ सचदेवा, श्रीमती सुशीला सुखीजा, वीरप्रभा मींगा आदि की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

चौ० बाबूराम जी गर्ग प्रधान गुरुकुल शिल्प विद्यालय ने स्वामी सुमेधानन्द जी का इस कार्यक्रम का ब्रह्मत्व करने पर सभी सज्जनों का इस कार्यक्रम में उपस्थित होने पर धन्यवाद किया एव श्री प्रेम भाटिया जी महामन्त्री के कार्यशैली, परिश्रम, लगनता, मिलनसार, आर्य समाज की सेवा मे समय का उपयोग आदि गुणों की प्रशसा की। शान्ति पाठ, प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसके बाद ऋषि लगर सुव्यवस्थित ढग से वितरित किया गया। लोगों ने इसकी भरपूर सराहना की।

—महामन्त्री, आर्य समाज

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के सदस्य सी. मारकंडा की विदाई पर भव्य समारोह

सुखानंद आर्य हाई स्कूल तपा के भाषा-अध्यापक तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के सदस्य श्री सी. मारकंडा के सेवा मुक्त होने पर स्कूल प्रांगण में विदाई समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता आर्य विद्या परिषद पंजाब के प्रस्तोता श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा ने की। मुख्य-अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपाध्यक्ष श्री आशानंद आर्य और सचिव बहन श्रीमती राजेश शर्मा थे। सब से पहले आर्य समाज तपा की ओर से डॉ० राज कुमार शर्मा ने हवन-यज्ञ किया और वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते हुए श्री सी.मारकंडा के उज्जवल भविष्य की कामना की।

पंजाब के भूतपूर्व कैबनिट मन्त्री श्री गोबिनंद सिंह कांझला विधायक ने इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार पंजाबी केसरी तथा अध्यापक श्री सी. मारकंडा को साहित्य, समाज तथा धर्म के क्षेत्र में डाले योगदान की प्रशंसा की और कहा कि अब वह सेवा मुक्त होकर समाज की और अच्छी सेवा कर सकेंगे। पूर्व एस.पी. तथा धनौला क्षेत्र से आजाद प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़े श्री मदनजीत सिंह संगरूर ने कहा कि श्री सी. मारकंडा ने प्रत्येक क्षेत्र में अपना अच्छा नाम कमाया है जिससे तपा तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं का प्रांत में नाम ऊंचा हुआ है।

आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा ने श्री सी. की सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि वह तो आर्य जगत की एक संस्था की मानंद लग रहे हैं। हमें खुशी है कि अब हम उनकी योग्यताओं का और अधिक लाभ उठा सकेंगे और अब वह और निष्ठा तथा लगन से आर्य जगत की सेवा कर सकेंगे। श्री आशानंद आर्य ने गुरुओं की महिमा बताते हुए कहा कि श्री मारकंडा जैसे अध्यापकों पर हमें गर्व है। बहन राजेश शर्मा ने अपने काव्य मयी प्रवचन में कहा कि श्री सी. मारकंडा और आर्य समाज तपा एक दूसरे के परिपूरक हैं। इस समय राष्ट्रीय मुलाजम दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरबंस सिंह शेरपुर, अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार तथा प्रैसटन विश्व विद्यालय लंडन के निर्देशक श्री नरपाल सिंह शेरगिल, श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला के सचिव श्री भारत-भूषण मेनन, आर्य समाज तथा आर्य स्कूल तपा के अध्यापक डा. राज कुमार शर्मा, प्रिंसीपल श्री सतपाल शर्मा, मास्टर हरबंस लाल शर्मा तथा आर्य हाई स्कूल तपा के मुख्य-अध्यापक श्री सुरेन्द्र शर्मा ने की। सेवानिवृत्त हुए श्री मारकंडा की सेवाओं की भरपूर प्रशंसा की। श्री सी. मारकंडा ने कहा कि उन्होंने 35 वर्ष से अधिक इस शिक्षण संस्था की सेवा की है। अब वह अपना ज्यादा समय वैदिक तथा आर्य साहित्य के मनन तथा इसके पंजाबी अनुवाद में लगाएंगे। इस अवसर पर स्कूल की प्रबंधक कमेटी, स्कूल के स्टाफ, श्री मारकंडा के रिश्तेदारों, मित्रों तथा शुभचिंतकों ने उनकी विदाई पर सुप्रेम भेंट दीं और उनका हार्दिक अभिनन्दन किया। श्री देवेन्द्र शर्मा ने श्री सी. मारकंडा को आर्य स्कूल की प्रबंधक समिति का सदस्य नियुक्त करने की घोषणा भी की।

—सुरेन्द्र शर्मा, मुख्याध्यापक

अहंकार त्याग कर अपनी गलती होने पर क्षमा मांग लें।

स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ़ जालन्धर का उत्सव

स्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर की ओर से हर वर्ष मकर संक्रान्ति पर्व पूरा एक महीना बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से मनाया जाता है और बड़ी संख्या में बहनें बड़े उत्साह से भाग लेती हैं। यह पर्व 14 जनवरी 2002 से 12 फरवरी 2002 तक मनाया गया। उसके पश्चात् स्त्री आर्य समाज की ओर से 25 फरवरी 2002 से 3 मार्च 2002 को वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें हमारी विदूषी बहन इन्दु सूद जी (देहली वाली) ने ब्रह्मा के रूप में यज्ञ सम्पन्न करवाया। हमारी समाज के पुरोहित श्री कमल जी ने वेद मन्त्रों को पढ़ने में उनका साथ दिया और अपनी ओजस्वी वाणी से वेदों के प्रचार-प्रसार से मन्त्र-मुग्ध किया। जिसकी सभी बहनों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। इतनी छोटी आयु में जो उनमें योग्यता है इससे वो श्रद्धा के पात्र हैं।

2 मार्च को महिला सम्मेलन के अवसर पर बहन सुशीला भगत, व उनकी पुत्र वधु श्रीमती रीता भगत ने ध्वजारोहण किया जिसमें सभी ने खुशी अनुभव की क्योंकि युवा पीढ़ी द्वारा ऐसे काम प्रशंसनीय होते हैं। मुख्यातिथि के रूप में श्रीमती स्वदेश जी चोपड़ा और अध्यक्षा के रूप में कुमारी सन्तोष सूरी जी विराजमान थी। डॉ० सरला भारद्वाज के ओजस्वी भाषण के तो कहने ही क्या हैं। उनके बारे में कुछ कहना सूरज को दिया दिखाने वाली बात है। इस उत्सव को सफल बनाने में आर्य समाज के सभी बहन-भाईयों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और रश्मि घई और श्री वीरेन्द्र कुलदीप साथी तथा श्री बूटा राम जी द्वारा भजनों का कार्यक्रम रखा गया जिसकी सभी ने दिल खोल कर प्रशंसा की और आगे भी इसी तरह उत्सवों में भाग लेने की प्रार्थना की। 3 मार्च सुबह हवन, प्रवचनों के पश्चात् 10-30 बजे ऋषि लंगर के साथ हमारा सम्मेलन सम्पन्न हो गया।

—आनन्द पुरी, मन्त्री

77वें जन्म दिवस पर
श्री रामनाथ सहगल को सिक्कों से तौला गया

12 मार्च 2002 को ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर रात्री सत्र में दिल्ली से पधारे श्री सोमदत्त महाजन एव जामनगर से पधारे श्री धर्मवीर खन्ना जी द्वारा मंच के बीचोबीच एक बडी तराजू रख दी गई जिसे देख सभी व्यक्ति चकित रह गये। मंच सचालक से पाच मिनट का समय माग कर जब उन्होंने अपनी बात कही कि मध्यरात्रि होने जा रही है और श्री रामनाथ सहगल का 77वा जन्म दिवस जो कि 13 मार्च को पडता है, कुछ ही क्षणो में आने वाला है। हमारी ऐसी इच्छा है कि हम सभी आर्य जन इस समय पर उनके जन्म दिवस को सम्मिलित रूप से मनावें। और श्री खन्ना जी जाम नगर से एक बहुत बडे ट्रक में सिक्के लाये हुए थे जिसे कि चार व्यक्ति उठाए हुए थे और वह सहगल साहब के वजन के बराबर थे। और उन्होंने यह घोषणा की कि सहगल साहब को इस अवसर पर सिक्कों से तोला जाएगा, यह सुनकर उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि कर इस कार्य के लिए अपनी स्वीकृति दी।

श्री सहगल जी ने यह सुनते ही अपनी आपत्ति जताते हुए कहा कि मेरे लिए यह विचित्र घडी है क्योंकि मैं कार्यकर्त्ता होने के नाते कुछ ऐसा नहीं कर पाया हूं कि मुझे इस रूप से तौला जाए और मैं तो निरन्तर लोगों को सम्मानित करने के लिए प्रख्यात हू। मुझे स्वयं इस प्रकार से तौला जाना आपत्तिजनक लग रहा है। इसलिए अगर यह कार्यक्रम न किया जाए तो अधिक उपयुक्त होगा लेकिन सभी उपस्थित जनसमूह के आग्रह पर एवं परिवार वालों के समझाने पर वह इस कार्य के लिए तैयार हुए और उन्होंने घोषणा की कि जितनी भी राशि इस तराजू में रखी जाएगी वह टंकारा ट्रस्ट के कार्यों एवं प्रचार प्रसार हेतु दे दी जावे।

आर्य समाज नंगल टाऊन शिप में शिवरात्रि उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप में शिवरात्रि का कार्यक्रम बडे हर्षोल्लास के साथ दिनांक 12-3-2002 दिन मगलवार को प्रात: 8 बजे से प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम का प्रारम्भ ब्रह्म यज्ञ से लेकर बृहद यज्ञ तक यज्ञ ब्रह्मा प कृष्ण कान्त शास्त्री के ब्रह्मत्व में बडी ही श्रद्धा और भक्ति के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के बाद यज्ञ प्रार्थना और भजन भी हुए। जिसमें डी ए वी, बी बी एम बी के स्कूल के छात्रों ने भी भाग लिया। भजनों के बाद आर्य समाज नया नंगल के वैदिक प्रवक्ता श्रीमान प सुशील कुमार शास्त्री जी ने बडे ही सुन्दर तरीके से शिवरात्रि का महत्व ऋषि दयानन्द को आदर्श बनाकर श्रोताओं के समक्ष रखा जिसे सुनकर सभी श्रोता मंत्र मुग्ध हो गए। सुशील कुमार शास्त्री जी ने सच्चे शिव को किसी प्रकार प्राप्त किया जा सकता है यह सन्देश देकर सभी को लाभान्वित किया। सुशील कुमार शास्त्री जी के बाद श्रीमान आसकरण दास सरदाना जी ने भी अपने कार्यक्रम के अन्त में डी.ए.वी. स्कूल की अध्यापिकाओं व छात्रों को स्वामी जी का प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश व अन्य साहित्य देकर प्रोत्साहित किया गया।

—कृष्ण कान्त शास्त्री

दयानन्द पब्लिक स्कूल में नए सत्र का आरम्भ

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना का परिणाम शत प्रतिशत रहा। जिसका श्रेय स्कूल के अध्यापकों, स्कूल को प्रबन्धक समिति एव प्रिसीपल को जाता है। परिणाम के पश्चात् 1 अप्रैल को दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना के विशाल प्रांगण में हवन यज्ञ के साथ नए सत्र का आरम्भ हुआ। इस अवसर पर मेरठ के भजनोपदेशक जबर सिंह आर्य मेरठ वाले विशेष रूप से उपस्थित थे। जिन्होंने यज्ञ सम्पन्न करवाया एवं बच्चों को प्रवचन दिए। कविताओं के माध्यम से बच्चों को बुराईयों को छोड़ने, अच्छी सगति को अपनाने के लिए कहा। बच्चों को वेदों का महत्व [illegible] भी कहा कि यहां के बच्चे [illegible]पक भाग्यशाली हैं जिन्होंने यहां वेदों की शिक्षा दी जाती है एव यज्ञ होता है। स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने बच्चों को हवन की महिमा बताते हुए कहा कि जो यज्ञ करते हैं उन्हें डाक्टरों के पास नहीं जाना पडता। बीमारी उन्हें नहीं घेरती। इसकी सुगन्ध से वातावरण दूर-दूर तक स्वच्छ रहता है। इस अवसर पर स्कूल की प्रबन्धक समिति के प्रधान एव अन्य सदस्य श्री अजय जी बत्तरा, श्री अनिल जी निझावन और हर्ष जी आर्य उपस्थित थे। स्कूल की प्रिसिपल श्रीमती सुनीता जी मलिक ने बच्चों को मेहनत करने की प्रेरणा दी। स्कूल के स्टाफ एवं बच्चों ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में भाग लिया।

जवाहर नगर लुधियाना में भक्ति संगीत एवं आध्यात्मिक प्रवचन

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में भक्ति संगीत एवं आध्यात्मिक प्रवचन का एक विशेष कार्यक्रम 17 मार्च, 2002 रविवार को आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ सायं 3 बजे पवित्र यज्ञ से हुआ जिसके ब्रह्मा आर्य समाज के पुरोहित पं. बाल कृष्ण जी शास्त्री थे। श्री अनिल जी और श्री सुनील जी सूद सपत्नीक यजमान बने। उनकी पूज्य माता जी, बहन जी तथा परिवार के बच्चे भी यज्ञ में सम्मिलित हुए।

यज्ञ के बाद कार्यक्रम मंच से आरम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री सुनील जी सूद, मालिक-आटोमोबाइल एसोसिएशन आफ अपर इण्डिया ने की। आर्य समाज के अधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा उनका व उनके परिवार के सदस्यों का फूलमालाएं डाल कर हार्दिक अभिनन्दन किया गया। अध्यक्ष जी ने ज्योति प्रज्वलित कर कार्यक्रम का आरम्भ किया। मंच का संचालन आर्य समाज के महामन्त्री डॉ० विजय सरीन ने किया।

सर्वप्रथम श्रीमती प्रभा सूद जी ने एक मधुर भजन सुनाया। उनके बाद कुमारी नम्रता सोनी जी के मनोहर भजन हुए। उनकी मधुर वाणी ने आर्य जनता को आनन्दित कर दिया। तदोपरान्त प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री उपेन्द्र जी (चण्डीगढ़) ने अपने मीठे स्वर में भक्ति संगीत के कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए पांच भजन सुनाए तथा श्री अनिल जी गौतम ने दो भजन सुनाए। उनकी सुरीली आवाज से सत्संग भवन गूंज उठा और जनता हर्षित हो पड़ी। भजनों के पश्चात् आर्य जगत के प्रसिद्ध युवा सन्यासी पूज्य स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सरस्वती का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन में कहा कि मनुष्य जब किसी वस्तु से व अपनी देह, अपने परिवार से अधिक राग कर बैठता है तो वह पाप करने लग पड़ता है। राग, द्वेष से संलिप्त मनुष्य संसार की ओर भागता है। हमें विषयों के विलास से बचना चाहिए। अगर व्यक्ति को विलास से वैराग्य हो गया तो उसका प्रत्येक कार्य योग होगा। स्वामी जी ने आगे कहा कि अगर मनुष्य अपने जीवन में निखार चाहता है तो वह तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्राणिधान करे। अध्यक्ष श्री सुनील जी सूद ने सभी विद्वानों का धन्यवाद किया तथा कहा कि आर्य समाज जवाहर नगर ने भक्ति संगीत व आध्यात्मिक प्रवचन का जो यह विशेष कार्यक्रम रखा था उसमें आर्य समाज के अधिकारी व सदस्य सभी प्रकार से सफल रहे हैं। अध्यक्ष जी ने पूज्य स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, श्री उपेन्द्र जी व श्री अनिल जी गौतम को आर्य समाज की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किए। स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती वीना गुलाटी, उपप्रधाना श्रीमती किरण औल व श्रीमती प्रभा जी सूद (धर्मपत्नी श्री सुनील जी सूद) ने कुमारी नम्रता सोनी जी को स्मृति चिन्ह भेंट किया। मान्य अध्यक्ष जी को आर्य समाज की ओर से आर्य समाज के महामन्त्री श्री विजय सरीन, मन्त्री श्री बृज मोहन अरोड़ा तथा कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश गुप्ता ने स्मृति चिन्ह भेंट किया। आर्य समाज के प्रधान श्री राम लाल जी गांधी की ओर से अध्यक्ष जी का, सभी विद्वानों का, लुधियाना की सभी आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों तथा उपस्थित आर्य जनता का धन्यवाद किया गया। आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना का अपना साप्ताहिक सत्संग इस कार्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए धन्यवाद किया गया। कार्यक्रम के पश्चात् आर्य समाज की ओर से सबको जलपान कराया गया। आर्य समाज जवाहर नगर तथा स्त्री समाज जवाहर नगर के सभी सदस्यों का सहयोग के लिए धन्यवाद। परम पिता परमात्मा का कोटि-कोटि धन्यवाद जिसकी अपार कृपा से कार्यक्रम पूर्ण रूपेण सफल रहा।

—विजय सरीन, महामन्त्री

[illegible] आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष: 292926

रजि. पी. एल. पी. 17504/58

2277. श्री पुस्त
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

ऋग्वेद कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम् यजुर्वेद

दूरभाष : 292926

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 2 सृष्टि संवत 1960853102, 14 अप्रैल से 21 अप्रैल 2002 दयानन्दाब्द 179

पंजाब से आर्य बन्धु व बहनें 25 से 28 अप्रैल तक हरिद्वार में होने वाले शताब्दी समारोह में भारी संख्या में पहुंचेंगे

[illegible]

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों व स्कूल कालेजों के अधिकारियों की एक बैठक 11-4-2002 को सभा कार्यालय में सम्पन्न हुई। जिसमें विशेष रूप से गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार में 25 से 28 अप्रैल तक होने वाले शताब्दी समारोह में भाग लेने के सम्बन्ध में विचार किया गया। इस अवसर पर दिल्ली से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के महामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी पधारे हुए थे। उन्होंने बताया कि तीन वेद प्रचार यात्राएं निकाली जा रही है। पंजाब से स्वामी श्रद्धानन्द जी के पैतृक गांव तलवन से यात्रा आरम्भ होगी जालन्धर होती हुई वह फगवाड़ा, लुधियाना, खन्ना, गोबिन्दगढ़ मण्डी, सरहिन्द व राजपुरा होती हुई अम्बाला पहुंचेगी। वहां से यमुना नगर, सहारनपुर होती हुई हरिद्वार पहुंचेगी। दूसरी यात्रा उत्तर प्रदेश के बरेली से चलेगी। वहां स्वामी श्रद्धानन्द जी का महर्षि दयानन्द से साक्षात्कार हुआ था। यह बरेली से चल कर हरिद्वार पहुंचेगी। इसी प्रकार तीसरी यात्रा दिल्ली से बलिदान भवन से चलेगी जिसमें 100 मोटर साईकल सवार एक जीप लाऊड स्पीकर से मार्ग दर्शन करती हुई आगे-आगे चलेंगी और 24-4-2002 को सायं तक हरिद्वार पहुंचेगी।

पंजाब के लोगों को विशेष रूप से हरिद्वार पहुंचना चाहिए क्योंकि इस गुरुकुल की स्थापना में सबसे ज्यादा योगदान पंजाब का है। उन्होंने धन के लिए भी अपील की और बताया कि कई लाख रुपये इस समारोह पर लगेंगे। कई संस्थाओं व आर्य समाजों ने धन देने की घोषणाएं की।

श्री प्रेम भारद्वाज जी सभा कोषाध्यक्ष ने कहा कि सार्वदेशिक सभा ने धन संग्रह के लिए नोट छपवाएं हैं इसलिए शिक्षा संस्थाओं व आर्य समाजों के अधिकारी यह नोट लेकर जाएं ताकि शताब्दी के खर्च के लिए धन संग्रह करके इस समारोह के लिए दिया जा सके।

सभा महामन्त्री श्री प्रिं. स्वतन्त्र कुमार जी ने बताया कि पंजाब से बसो की व्यवस्था की जा रही है पठानकोट, जालन्धर, नवांशहर, बरनाला, मोगा और लुधियाना से विशेष बसें हरिद्वार के लिए चलेंगी। हम प्रयास करेंगे कि लोगों से कम से कम किराया लिया जाए ताकि अधिक से अधिक लोग हरिद्वार पहुंच सकें। श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा और श्री सरदारी लाल जी ने भी अपने सुझाव रखे और अधिक से अधिक संख्या में हरिद्वार शताब्दी समारोह में जाने की सभी को प्रेरणा दी। निश्चय हुआ है कि अधिक से अधिक लोग पंजाब से हरिद्वार पहुंचेगे।

धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

सभा से सम्बन्धित शिक्षा संस्थाओं का आर्य समाजीकरण किया जाएगा

सभी शिक्षा संस्थाओं में धर्म शिक्षा/नैतिक शिक्षा अवश्य पढ़ाई जाएगी

महीने में कम से कम एक बार यज्ञ अवश्य होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित शिक्षा संस्थाओं के प्रिंसिपलों तथा प्रबन्ध समितियों के सदस्यों व अधिकारियों व सभा अधिकारियों की एक बैठक सभा प्रधान श्री हरबंस लाल जी शर्मा की अध्यक्षता मे 11-4-2002 को सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में सम्पन्न हुई जिसको सभा महामन्त्री प्रिं स्वतन्त्र कुमार जी, सभा रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, सभा कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, सभा वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल, श्री बोधराज मजीठिया एडवोकेट और श्री शादी लाल जी महेन्द्र ने सम्बोधित किया और अपने-अपने सुझाव सभा से सम्बन्धित शिक्षा संस्थाओं की उन्नति के सम्बन्ध में दिए।

इस अवसर पर निश्चय किया गया कि अब सभा से सम्बन्धित सभी शिक्षा संस्थाओं के कार्यों में सुधार लाया जाएगा। प्रत्येक शिक्षा संस्था सुचारू रूप से कार्य करेगी। प्रत्येक स्कूल व कालेज का आर्य समाजी करण किया जाएगा ताकि गेट में प्रवेश करते ही आने वाले व्यक्ति को पता चले कि वह एक आर्य शिक्षा संस्था में आया है। प्रत्येक स्कूल में धर्म शिक्षा व नैतिक शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया जाएगा, संस्कृत व धर्म शिक्षा पढ़ाने वाले अध्यापक तैयार किए जाएंगे व रखे जाएंगे। बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान मे रखते हुए योग की शिक्षा भी बच्चों को दी जाएगी और योग के अध्यापक भी रखे जाएंगे जो बच्चों को योग सिखा सकें। सभी शिक्षा सस्थाओं में कम से कम महीने मे एक बार यज्ञ अवश्य किया जाएगा। अध्यापकों व प्रिंसिपलों के शिविर लगाए जाएंगे। जिन अध्यापकों को आर्य समाज की जानकारी नहीं है उन्हें इन शिविरों में आर्य समाज की पूरी-पूरी जानकारी दी जाएगी ताकि वह आगे बच्चों को पूरी जानकारी दे सकें।

कालेजों में प्रातः वेद मन्त्रों का पाठ लाऊड स्पीकर से कालेज आरम्भ होने से पूर्व किया जाएगा। अपनी-अपनी कक्षाओ में खड़े होकर सभी विद्यार्थी वेद मन्त्र व उनके अर्थ सुनेंगे। प्रयास किया जाएगा कि स्कूल, कालेजों में आर्य समाज की विचारधारा के अध्यापक व प्रोफेसर व प्रिंसिपल रखे जाएं।

प्रत्येक स्कूल, कालेज खेलों की तरफ भी ध्यान देगा और खेलो की प्रतियोगिताएं पहले खिला स्तर पर फिर प्रान्तीय स्तर पर रखी जाएंगी।

स्कूल कालेजों में, भाषण प्रतियोगिताएं, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताए तथा दूसरी प्रतियोगिताएं रखी जाएंगी। गुरु विरजानन्द, महर्षि दयानन्द पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, गुरुदत्त विद्यार्थी इत्यादि तथा अन्य महापुरुषों के जीवन पर प्रतियोगिताएं रखी जाएंगी। प्रथम, द्वितीय तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को पारितोषिक दिए जाएंगे।

–धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

"नमस्ते जी! नमस्ते जी!"

□ले० श्री वेद नारायण [illegible]
एम.आई.जी. खण्ड सं. 48 [illegible]

आप कह सकते हैं कि अभिवादन नमस्ते को कौन नहीं जानता है, यह तो सर्वत्र प्रचलित है। मिलते बिछुड़ते सभी नमस्ते कह कर एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं शुभ कामना प्रकट करते हैं। पहले भी इस पर बहुत लिखा जा चुका है। फिर आपको लिखने की आवश्यकता क्यों पड़ गई है। आप का कहना सही है। मैं भी इस पर लिखना नहीं चाहता था, पर क्या करे ? हमारे महानगर मे एक सिद्धहस्त भागवत-रामायण के कथावाचक मित्र रामायणी जी हैं, जो धार्मिक पुस्तकों एवं वस्तुओं का व्यवसाय भी करते हैं। एक दिन मै यात्रा प्रयोजनार्थ ताम्र यज्ञकुण्ड लेने उनके पास पहुंचा। उनको मैने नमस्ते निवेदित किया, उन्होने भी नमस्ते कह कर उत्तर दिया आगे जय जय श्री राधे भी बोल दिया। प्रेम पूर्वक वार्ता के बाद यज्ञकुण्ड मैंने क्रयकर लिया, तभी उन्होंने मेरे समक्ष एक पुस्तक और बढ़ा दी-"हिन्दू मान्यताओं का वैज्ञानिक आधार (संस्करण 2002)"। मैंने उसके पृष्ठों को यत्रतत्र उलट पलट कर देखा और वापिस कर दिया। घर आकर उस पुस्तक का एक विषय मुझे रह रह कर कचोटने लगा। रात्रि में भी मैं उसी विषय पर सोचता रहा और प्रात:काल को जब मैं उसे भुला नहीं सका तो दोबारा जाकर मुझे वह पुस्तक क्रय करके लानी ही पड़ी। इस पुस्तक के लेखक-दैवज्ञ शिरोमणि डॉ० भोजराज द्विवेदी, एम ए., पी एच डी डी लिट है।

ग्रन्थकार ने पुस्तक का अत्यन्त श्रम एवं योग्यता के साथ प्रणयन किया है, जो प्रशंनीय एवं ज्ञान वर्द्धक है। वे यद्यपि आर्य समाजियों का सही स्वरूप तो प्रस्तुत नहीं कर सके हैं। किन्तु कोई दुर्भावना भी प्रकट नहीं की है। हां, उन्होंने पुस्तक के पृष्ठ सं 79 एव 80 पर 'नमस्ते' के विषय में दो प्रश्न उठा कर जो समाधान किए हैं, वे अपूर्ण व अनावश्यक अवश्य प्रतीत होते है। उन्होंने प्रश्न सं. 240 नमस्ते कहना भी व्यावहारिक नहीं? का उत्तर इस प्रकार दिया है। "आर्य समाजियों ने एक दूसरे का अभिवादन करने हेतु 'नमस्ते' शब्द का प्रचलन प्रारम्भ किया। संस्कृत के व्यावहारिक ज्ञान की अनभिज्ञता के कारण ही ऐसा हुआ है। नमस्ते 'नम:' और 'ते' इन दो शब्दों के योग से बना है। नम: का अर्थ है नम्रता-झुकना, सिर नीचे करना और 'ते' का अर्थ है तेरे लिए। 'ते' युष्मद् शब्द की चतुर्थी का एक वचन है। जिसका हिन्दी में अर्थ होता है 'तू'। वास्तव में अपने आप में यह शब्द ओछा, अपूर्ण एवं गुलामी का प्रतीक है। अब कोई भी बुद्धिमान स्वयं सोच सकता है कि कोई गुरुजन अपने से छोटे के प्रति नमस्ते कहे तो उलटा पाप चढ़ता है। क्योंकि संसार की सभ्यता में पुत्र के सामने माता-पिता, शिष्य के सामने गुरु, और पत्नी के सामने पति का सिर झुकाना व्यवहार के विपरीत एवं अशुभ माना जाता है। फिर भारतीय संस्कृति में वृद्ध को 'तू' कहना उसे जीवित मार डालने के समान अक्षम्य अपराध है। आगे प्रश्न सं 241 "यदि ऐसा है तो वेद एवं संस्कृत साहित्य में अनेक जगह 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग क्यों हुआ?" उनके द्वारा लिखित उत्तर दृष्टव्य है- "उपरोक्त लोक व्यवहार में केवल ईश्वर इसका अपवाद है। आप अत्यधिक आत्मीयता के कारण ईश्वर को 'तू' कह सकते हैं। कहा भी है-बाल्यावस्था में अबोध पुत्रों द्वारा, सम्भोग काल में प्रियतमा के द्वारा, स्तुतिपाठ में कवियों द्वारा और रणांगण में योद्धाओं द्वारा 'तू' कहा जाना ही प्रशस्त है।"

आइए! इन प्रश्नोत्तरों की समीक्षा कर ले। पहले तो प्रथम प्रश्नोत्तर में उठी समस्या का समाधान दूसरे प्रश्नोत्तर से ही हो जाता है। जैसे अंग्रेजी के 'यू' एवं 'योयर्स' शब्दों का हिन्दी में रूपान्तर करते समय छोटे-बड़े का ध्यान रखते हुए हम 'तू एवं तेरा' तथा 'आप एवं आपका' प्रयोग करते हैं, वैसे ही संस्कृत के 'ते' शब्द का प्रसंगानुसार 'तेरे लिए' तथा 'आपके लिए' प्रयोग करते हैं। अभिवादन के समय छोटे-बड़े दोनों को ही अपने सिर को स्वाभाविक रूप से झुकाना पड़ता है। यदि कोई किसी बड़े के सामने झुका खड़ा होगा, तो उसके सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखने के लिए बड़े को भी किंचित झुकना ही पड़ेगा, वह और अधिक तन के तो खड़ा हो नहीं सकता। ऐसा करना सामान्य सौजन्य के अनुकूल भी नहीं है। 'ते'-तेरे लिए अपने से छोटे के प्रति प्रयोग में यदि कोई कठिनाई नहीं है, तथा 'ते' ऊंचे से ऊंचे परमात्मा के लिए प्रयोग कर सकते हैं, तो अपने से बड़े के प्रति क्यों नहीं कर सकते हैं। वहां पर 'ते' हिन्दी में 'तेरे लिए' नहीं 'आपके लिए' व्यवहृत होगा। विश्व के देश-देशान्तर में, भारत के प्रान्त-प्रान्तर में, भाषा के भेदभाव बिना, धर्म-सम्प्रदाय की सीमा रेखाओं को लांघकर अब अभिवादन के रूप में सर्वत्र नमस्ते का प्रयोग होता है। इस उपलब्धि के लिए ग्रन्थकार ने जो आर्य समाजियों को श्रेय दिया है, एतदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं। किन्तु आर्य समाजियों ने इसका श्रेय स्वयं न लेकर भारत के प्राचीन वेद-शास्त्र एवं ऋषि-मुनियों को ही दिया है। अब 'नमस्ते' की चर्चा छिड़ ही गई है, तो आर्य जगत के तपोनिष्ठ सन्यासी पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती ने इस विषय में कुछ और ज्ञान लाभ करते हैं। उन्होंने तो 'अभिवादन नमस्ते ही क्यों' पुस्तक लिख कर हम लोगों का स्थायी मार्ग दर्शन कर दिया है। आगे की पंक्तियों में इसी पुस्तक के सार का उपहार आप को समर्पित है।

देखिए! नमस्ते न तो अकेले आर्य समाज का है और न ही आज तक किसी आर्य समाजी ने ऐसा कहा। हम तो डंके की चोट कहते हैं बलपूर्वक यह घोषणा करते हैं कि जैसे सूर्य, चन्द्र, अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी औषधि वनस्पति आदि प्रभु रचित पदार्थ सबके लिए है, वैसे ही ब्रह्म-उपदिष्ट अभिवादन-प्रत्यभिवादन के लिए वेद प्रतिपादित नमस्ते जी सबके लिए है। इसका संसार के किसी सम्प्रदाय से कोई सम्बन्ध न कभी था और न अब है। कुछ वर्ष पूर्व अमेरिका के प्रसिद्ध नगर सानफ्रांसिस्को में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म सम्मेलन के अवसर पर सर्व प्रथम इस बात पर विचार किया गया कि सम्मेलन के दिनों में परस्पर सर्व सम्मत किस अभिवादन का प्रयोग किया जाए। सब धर्मों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने अभिवादन पदों की प्रशंसा एवं विशेषताओं पर प्रकाश डाला। आर्य समाज के प्रतिनिधि श्री पं. अयोध्या प्रसाद जी द्वारा प्रस्तुत व्याख्या को सुन कर लोगों को नमस्ते इतना प्रिय लगा कि सर्व सम्मति से इसे परस्पर अभिवादन के लिए अपनाया गया। अमेरिका की जनता पर भी इसका प्रभाव पड़ा और जब भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री पं. जवाहर लाल नेहरू अमेरिका यात्रा के मध्य एक विद्यालय में गये तो बालकों ने उनका अभिवादन नमस्ते कह कर किया। बच्चों के इस अभिवादन से स्वयं नेहरू जी भी प्रभावित हुए और स्वदेश लौटने पर बम्बई हवाई अड्डे पर स्वागतार्थ उपस्थित जन समूह को उन्होंने नमस्ते के द्वारा ही अभिवादन किया। जब पं. नेहरू रूस की यात्रा पर गये थे तो वहां स्थान-स्थान पर नमस्ते एवं स्वागत् की पट्टिकायें लगाकर उनका स्वागत किया गया था। रूस के प्रधानमंत्री खुश्चेव व प्रधान बुलगानिन, चीन के प्रधान मंत्री चाऊ एन लाई ने भारत यात्रा के समय नमस्ते अभिवादन का प्रयोग किया था। नेपाल राष्ट्र ने अपने यहां लोकतन्त्र की स्थापना के साथ ही अपना राष्ट्रीय अभिवादन नमस्ते उद्घोषित कर दिया। यद्यपि नमस्ते भारत का घोषित राष्ट्रीय अभिवादन नहीं है, तथापि व्यावहारिक रूप से भारतीय राजदूत विदेशों में विशेष अवसरो पर नमस्ते का ही प्रयोग करते हैं।

स्वामी जी ने विस्तार पूर्वक बताया है कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव, राम, कृष्ण, हनुमान, याज्ञवल्क्य गार्गी, महर्षि गौतम, सावित्री प्रभृति अभिवादन में नमस्ते का प्रयोग करते थे। स्वामी जी ने यह भी बताया है कि (शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय......

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म दिवस

प्रत्येक व्यक्ति के जन्म दिवस का अपना एक विशेष महत्व होता है परन्तु महापुरुषों के जन्म दिवस का तो सबसे अधिक महत्व होता है। राम हमारे देश के एक चमकते हुए सितारे हैं जो भारतीय आकाश में सदा चमकते रहेंगे। राम को हुए लाखों वर्ष हो चुके हैं लेकिन लगता ऐसे है जैसे कल ही यह घटना घटी हो।

रामायण एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है क्योंकि इसमें रघुवंशियों का इतिहास है। यह महर्षि बाल्मीकि जी की एक अनुपम रचना है। इसे महाकाव्य भी कहा जाता है। महर्षि बाल्मीकि ने इसमें मुख्य रूप से राम का चरित्र संसार के लोगों के सामने रखा है। रामायण को पढ़ने से पता चलता है कि उस समय भारत में सीमा पार से घुसपैठ हो रही थी। लंका के राजा रावण के गुप्तचर खर और दूषण व मारीच जैसे लोग भारतीय ऋषि मुनियों की तपस्चर्या में भी विघ्न बाधा डाली जा रही थी। अयोध्या के राजा महाराजा दशरथ उस समय के एक शक्तिशाली राजा थे। अन्य भी हमारे देश में कई छोटे-छोटे राजा थे। अयोध्या का राज्य भी चक्रवर्ती नहीं था हां शक्तिशाली राज्य जरूर था। परन्तु महाराज दशरथ के कोई सन्तान नहीं थी, सभी ऋषि मुनि इस बात से चिन्तित थे। एक दिन गुरु विशिष्ट के नेतृत्व में ऋषियों ने इकट्ठे होकर महाराज दशरथ से बात की और उन्हें पुत्रेष्ठी यज्ञ करने की प्रेरणा दी। इसके लिए सरयू नदी के किनारे पर एक यज्ञशाला बनाई उस समय के प्रसिद्ध विद्वान् वेदों के ज्ञाता श्रृंगी ऋषि के ब्रह्मात्व में एक बृहद पुत्रेष्ठी यज्ञ किया गया जिसके परिणाम स्वरूप चैत्र सुदी नवमी को महाराज दशरथ के घर में राम का जन्म हुआ। राम यज्ञ की देन थे और उनका सारा जीवन यज्ञमय था, मर्यादित था। इसीलिए उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम् राम कहा जाता है। पुरुषोत्तम का अर्थ है जो पुरुषों में मनुष्यों में उत्तम हो, सबसे श्रेष्ठ हो, राम वास्तव में सबसे श्रेष्ठ थे।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम अपने छोटे भाई भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न तीनों में बहुत प्यार करते थे। राम सबसे बड़े थे। केवल आयु में ही नहीं गुणों में भी सबसे श्रेष्ठ थे। युद्ध विद्या तथा अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण थे, महान बलशाली थे। कन्धे पर धनुष उनकी मुख्य पहचान थी, जैसे श्री कृष्ण को बांसुरी वाला कहा जाता है ऐसे ही राम को धनुषधारी कहा जाता है। धनुष उनके शरीर की शोभा थी। महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के लिए जब प्रथम बार वह जंगल में गए थे तो उनके धनुष की टंकार सुन कर राक्षस लोग कांप उठते थे।

राम का जीवन मर्यादाओं से बन्धा हुआ है वह केवल एक पुत्र ही नहीं एक सुपुत्र थे। पिता की आज्ञा उनके लिए बहुत बड़ा महत्व रखती थी। पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए वह चौदह वर्ष के लिए वन में चले गए। जब कि पिता ने अपने मुख से उन्हें वन जाने की आज्ञा नहीं दी, महारानी कैकेई ने राम को बताया कि मैंने तुम्हारे पिता से दो वर मांग लिए हैं। एक में भरत को राज्य दूसरे में तुम्हारे लिए 14 वर्ष का वनवास। कैकेई की यह बात सुन कर वह वन जाने के लिए तत्काल तैयार हो गए। आज का कोई बेटा होता तो पिता को दस गालियां सुनाता और कहता मैं राज्य का उत्तराधिकारी हूं। आप मुझे वन कैसे भेज सकते हैं। वह पिता पर कई प्रकार के दोष लगाता परन्तु राम ने तो एक भी शब्द पिता को नहीं बोला बल्कि यही कहा आप परेशान न हों मैं वन जाने के लिए तैयार हूं। राम पिता के साथ-साथ अपनी माता कौसल्या, भरत की माता कैकेई, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता सुमित्रा का भी पूरा-पूरा [illegible] करते थे। वह तीनों को एक समान समझते थे और वह तीनों [illegible] प्यार देती थीं। क्योंकि राम सभी प्रकार की मर्यादाओं के [illegible] वाले थे और उनका पालन करने वाले थे। वह नित्य प्रांते अपने पिता दशरथ की तथा तीनों माताओं व गुरुजनों की चरण वन्दना करते थे। अपने तीनों भाईयों के साथ तथा अयोध्या की सारी प्रजा के साथ उनका असीम प्यार था। जब राम 14 वर्ष के लिए वनवास में जाने लगे तो सारी अयोध्या के नर-नारी उनका रास्ता रोक कर खड़े हो गए उनसे बार-बार वन में न जाने की प्रार्थना करने लगे। अयोध्या से कई मील दूर तक लोग पीछे-पीछे चलते रहे बड़ी कठिनाई से राम के बार-बार कहने पर लोग वापिस लौटे। इसी से पता चलता है कि अयोध्या की जनता का राम से कितना प्यार था।

राम जब वन में चले जाते हैं तो वह वन में निवास करने वाले प्रत्येक ऋषि मुनि के आश्रम में गए और उनकी रक्षा की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और उन्हें विश्वास दिलाया कि आप निश्चिन्त होकर अपनी तपस्या करते रहें। राम के वन जाने का लाभ सभी ऋषियों मुनियों को पहुंचा। राम इतने विनम्र थे कि प्रत्येक आश्रम में जाकर वह प्रत्येक ऋषि से उसका कुशल क्षेम पूछते रहे। यह राम की बहुत बड़ी महानता थी।

राम जहां एक आदर्श पुत्र थे, आदर्श भाई थे, आदर्श मित्र थे, आदर्श पति थे वहां वह एक आदर्श राजा भी थे। उन्होंने पति के रूप में भी अपने कर्त्तव्य का दृढ़ता से पालन किया। सीता का हरण हो जाने पर राम ने सीता की खोज में रात-दिन एक कर दिया वह सारे वन में स्थान-स्थान पर उनकी खोज के लिए घूमते रहे। वह इसके लिए बेचैन हो उठे और जब तक सीता का पता नहीं चला उन्हें चैन नहीं आया, जब वह पता चला कि सीता को रावण लंका में उठा कर ले गया है तो उन्होंने लंका पर चढ़ाई कर दी और रावण को मार कर सीता को रावण की कैद से आजाद करवाया।

राम के पिता दशरथ ने तीन विवाह किए थे। सीता के चुराए जाने के पश्चात् राम भी किसी और राज कुमारी से विवाह कर सकते थे उन्हें सीता की खोज में भटकने की आवश्यकता नहीं थी परन्तु राम एक पत्नीव्रती थे वैदिक मर्यादा का पालन करने वाले थे इसलिए उन्होंने दूसरे विवाह के बारे में कभी सोचा भी नहीं था। राजसूय यज्ञ में सीता पास नहीं थी सभी ने कहा यज्ञ के यज्ञमान के साथ उसकी पत्नी का यज्ञ में बैठना आवश्यक है। इसलिए यज्ञ की मर्यादा का पालन करने के लिए आप एक और विवाह कर लें परन्तु राम इसके लिए तैयार नहीं हुए।

उन्होंने अपने जीवन में सुग्रीव और विभीषण को अपना मित्र बनाया और दोनों के प्रति अपनी मित्रता को कष्ट उठा कर भी निभाया। अन्त में सुग्रीव को किष्कन्धा का राज्य और विभीषण को लंका का राज्य अर्पण कर दिया। राम चाहते तो इन दोनों राज्यों को वह अपने अधीन रख सकते थे परन्तु उन्होंने अपनी मित्रता को निभाना था इसलिए इन दोनों राज्यों को अपने मित्रों को दे दिया।

राम के राज्य में सभी सुखी थे। राम छोटे से छोटे व्यक्ति की भी बात सुनते थे और उसकी समस्या का हल करते थे। उनके राज्य मे दुष्टों का नाश और धर्मात्माओं की रक्षा होती रही। वह एक बहुत लोकप्रिय राजा थे। आज भी यदि कोई उदाहरण देना होता है तो लोग यही कहते हैं कि राम राज्य जैसा सुख कहीं नहीं मिल सकता । भारत में फिर राम राज्य लाना चाहिए।

आज लाखों वर्ष बाद भी सारे देश में बड़ी धूम-धाम से 21-4-2002 को राम का जन्म दिवस राम नवमी के नाम से मनाया जा रहा है आओ उनके जीवन से प्रेरणा लेकर हम भी अपने जीवन का निर्माण करें।

—[illegible] आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

नमस्ते जी........
पृष्ठ 2 का शेष

क्षत्रिय-ब्राह्मणों को और ब्राह्मण, क्षत्रियों को अभिवादन हेतु नमस्ते कहते थे उन्होंने गणना करके बताया है कि वेद, पुराणों, एवं अन्यान्य सनातन शास्त्रों मे सहस्त्रों बार अभिवादन में नमस्ते का ही प्रयोग किया गया है। 'नमस्कार व प्रणाम' अभिवादन करने का संकेत तो देते हैं, किन्तु यह पूर्ण वाक्य न होने से अधूरे हैं। बिना पता लिखे लिफाफे के सदृश्य है। स्वामी जी ने भली भांति समझाया है कि नमस्ते के 'नमः' तथा 'ते' तराजू के पदार्थ एवं बांट के समान हैं। 'ते' रूप में जसा बाट होगा-वैसा ही नमः पदार्थ तुल कर सामने आ जाएगा। नमस्ते में नमः विधेय है और 'ते' उद्देश्य है। नमः का अर्थ झुकना या सत्कार करना ही मात्र नहीं है। इसका एक अर्थ अन्न है, जो दूध, दही, घी, मक्खन, मधु फलादि व्यंजन का रूप भी धारण कर लेता है। यज्ञ (देव पूजा, संगतिकरण, दान) भी इसका अर्थ है। इसका एक अर्थ वज्र अर्थात् दण्डित करने के सब ग्राधन भी है। निरुक्त अध्याय 3 खण्ड 9 मे अन्न के नामों में नमः आयुः, सुनृता ब्रह्मवर्चः यशः नाम भी पढ़े गये हैं। इस प्रकार पुत्र आदि अपने से छोटों को नमस्ते करने का अर्थ है कि उन्हें दीर्घायु, सत्य एवं मधुरभाषी ब्रह्मोपासक, वर्चस्वी और यशस्वी होने का आशीर्वाद देना। छोटे ने बड़े को नमस्ते किया। बड़े ने छोटे को नमस्ते कह कर उपरोक्त आशीर्वाद का वरद्हस्त बढ़ा दिया। अतः नमस्ते के उत्तर में नमस्ते कहने में कोई दोष की बात नहीं है। अश्वलायन गृह्य सूत्र 1-1-5 मे वर्णित ('यज्ञो वै नमः' इति ब्राह्मण भवित) अर्थात् नमः निश्चय ही यज्ञ है। यज् धातु के पाणिनीय धातु पाठ में तीन अर्थ दिए गए हैं 1. देव पूजा. 2. संगतिकरण और 3. दान। इन तीनों अर्थो की छाया में नमस्ते का आशीर्वादात्मक अर्थ होगा। छोटे अपने पुण्यजनो. विद्वानों, के आदर-सत्कार करने वाले एवं ईश्वरोपासक बनें। उन्हें सदा सज्जन-सत्पुरुषों का संग प्राप्त होता रहे। वे सदैव दान पुण्यादि शुभ कर्म करते रहें। जब छोटे बड़ों को नमस्ते करते हैं तब यह भाव होता है कि प्रभु कृपा से हम लोग सदा श्रद्धापूर्वक आप पूज्यों का आदर-सत्कार करते रहें। हमें सर्वदा आप लोगों का सत्संग शुभ सम्मति व आशीर्वाद मिलता रहे। नमः का एक अर्थ वज्र अर्थात् दण्ड भी है। निरुक्त अध्याय 3 खण्ड 11 में वज्र के अन्य नामों के साथ नमः यह पद भी पढ़ा गया है। नमस्ते यातुधानेभ्यः (अथर्व वेद) इसका अर्थ है राक्षस अर्थात् रहजन, बटमार, चोर, उचक्के, जेबकटों, समाज विरोधियों को दण्ड देना चाहिए। इस कारण शत्रु को नमस्ते करना उसके लिए दण्ड देने की भावना प्रकट करना है। अस्तु चार वर्णो के स्त्री-पुरुष, आबाल-वृद्ध-अपूज्य, प्रिय-अप्रिय, शत्रु-मित्र सभी के साथ प्रथम मिलते व पृथक होते समय परस्पर अभिवादनार्थ नमस्ते करना ही समीचीन है।

उपरोक्त तथ्यों को न समझने के कारण अनेक लोग अपने नये-नये संगठन-सम्प्रदाय खड़े होकर नये-नये अभिवादन प्रयोग करने लगते हैं। देश व महापुरुषों के नाम से अभिवादन करते हैं, किन्तु वे सब इतने सीमित व संकुचित होते हैं, जिनके कारण उनके संगठन भी बृहत्तर रूप न धारण करके लघु रूप में सिमटे प्रतीत होते हैं, जबकि नमस्ते के व्यवहार से वे परिवेश की मुख्यधारा से जुड़ जाते हैं। एक उपाख्यान बहुश्रुत है। प्रजापति की देव, मानव एवं दानव तीनों सन्तानें पृथक्-पृथक् वरदान लेने गयी। प्रजापति ने तीनों से 'द,द,द' कह दिया। तीनों वर्गों ने अपने स्वभाव के अनुसार इस 'द' का अर्थ क्रमशः दमन, दान और दया समझ लिया। इसी प्रकार नमः शब्द इतना व्यापक है कि वह सभी वर्गो की मांग तो पूरी करता ही है, साथ ही अपने मूल से भी जोड़े रखता है। स्वामी जी ने अभिवादन पद की पात्रता के लिए कुछ आवश्यक बिन्दुओं का उल्लेख किया है यथा-1. बोलने पर सुनने वाले को सहज रूप में लगे कि उसका अभिवादन किया जा रहा है। 2. उसे विश्व का प्रत्येक मनुष्य बिना किसी संकोच एवं भेदभाव के प्रयोग कर सके। 3. उसमें बड़ों के प्रति सम्मान एवं पूजा की भावना हो, समवयस्कों के लिए स्वागत की भावना हो, छोटों के लिए आशीर्वाद की भावना हो, और दुष्ट के लिए दण्ड की भावना समाहित हो। 4. अभिवादन स्वरूप क्या कहा जा रहा है और किसे कहा जा रहा है, यह दोनों बातें अवश्य हों। 5. किसी मत, मजहब या सम्प्रदाय से सम्बद्ध न हो। 6. ईश्वरोपदिष्ट व सबके लिए समान हो, 7. सृष्टि के आरम्भ से ही जिस की प्रवृत्ति हो। 8. वह पद इतना सूक्ष्म, सरल व एक हो जिसे सम्पूर्ण विश्व के आबाल-वृद्ध, स्त्री पुरुष समान रूप से व्यवहार कर सकें। 9. जो माला के मणकों की भांति सबको एकता के सूत्र में पिरो सकें।

यजुर्वेद के अध्याय 16 के मन्त्र सं. 30 एवं 32 में विशद रूप से नमस्ते का निर्देश किया गया है। यथा-

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च।

नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च॥

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चा परजाय च।

नमो मध्यमाय च चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च॥

अर्थात् शिशु, बालक, बड़े विद्यावृद्ध, आयु में बड़े, साथवालों, सत्कर्म में अग्रणी, प्रसिद्ध पुरुष, बड़े-छोटे सभी के लिए नमस्ते करो। इस अध्याय के अन्य मन्त्रों में भी नमस्ते का निरूपण होने के कारण इसे 'नमस्ते अध्याय' ही कहने लगे। वेद के अनुसार वैदिक धर्म के अन्य शास्त्रों में भी नमस्ते का निर्देश मिलता है। उपरोक्तनुसार ही महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में संकेत किया है कि "दिन-रात में जब भी प्रथम मिलें या पृथक हों तब तब प्रीति पूर्वक नमस्ते एक दूसरे से करें"। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में बाल शिक्षा प्रकरण में लिखा है कि "बड़ों को मान्य दें, उनके सामने जा के ला उत्तम आसन पर बैठावें। प्रथम उनको नमस्ते करें। उनके सामने उच्चासन पर बैठें। संस्कारविधि, व्यवहारभानु तथा पत्राचार में भी महर्षि ने नमस्ते करने का निर्देश दिया है। उन्होंने आर्योद्देश्य-रत्नमाला के अन्तिम 100वें बिन्दु पर नमस्ते का अर्थ बताया है- "मैं तुम्हारा मान्य करता हूँ"। मान्य शब्द को 73वें बिन्दु में समझा दिया है-"जो बड़े और छोटों से यथायोग्य परस्पर मान्य करा है, उसको ज्येष्ठ कनिष्ठ व्यवहार कहते हैं।" महर्षि दयानन्द महाराज ने तो वेद-शास्त्रों के इस शाश्वत अभिवादन को सर्व सुलभ बनाया। पौराणिक जनों ने इस ऋषि दयानन्द एवं आर्य समाज का आविष्कार समझ कर द्वेषवश भांति भौतिक आक्षेपों से इसका विरोध किया। उन्होंने नमस्ते को (न+मस्ते), अर्थात् मस्तक (भाग्य) में कुछ नहीं बोधक बताया, अथवा "नमस्ते नाश कर देगी" के कर्कश गीत गाये-पर उनको सुना किसी ने नहीं। नमस्ते सूर्य पर छाये मेघ उसकी किरणों से स्वयं छटते चले गए। भार्गव हिन्दी शब्द कोश में नमस्ते को "एक वाक्य जिसका अर्थ है आपको नमस्कार" कहा गया है।

अभिवादन-नमस्ते करने की विधि का अपना विशिष्ट महत्व है। इस सम्बन्ध में विष्णुस्मृतिकार लिखते हैं- मनुष्य जन्मभर मनसा, वाचा, कर्मणा जो धर्माचरण करता है, एक हाथ से अभिवादन-नमस्ते करने से वह सब निष्फल हो जाता है। इस कथन में भले अतिश्योक्ति हो, किन्तु इससे उचित विधि से नमस्ते करने की प्रेरणा तो मिलती ही है। स्मृतिकार का अभिप्राय है कि सर्वदा दोनों हाथ जोड़ कर किंचित नतमस्तक होकर नमस्ते करनी चाहिए। एक हाथ उठाकर नहीं। इसका भाव यह है कि आप अपनी बुद्धि-युक्ति से, हाथों को शक्ति से, एवं हृदय की अनुरक्ति से दूसरे के प्रति स्वागत, सत्कार, आदर, शुभकामना या आशीर्वाद प्रकट कर रहे हैं। डा. भोजराज द्विवेदी जी। आपको नमस्ते, जो आपने अपने ग्रन्थ में यह प्रश्न उठाये। पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी। आपको नमस्ते जो आपने मार्ग दर्शन किया। सम्पादक जी। आपको नमस्ते, जो इस लेख का प्रकाशन किया, और पाठक जी आपको भी नमस्ते जो आपने इसका वाचन कर लेखक के श्रम को सार्थक कर दिया। धन्यवाद।

रामां में गृह प्रवेश संस्कार सम्पन्न

दिनांक 7 अप्रैल रविवार को श्री राज कुमार जी 'तनेजा' ने अपने नव निर्मित गृह रामां (भठिण्डा) वार्ड नं. 2 गली नम्बर 16 में गृह प्रवेश संस्कार करवाया।

श्री दीनानाथ जी पुरोहित आर्य समाज रामां द्वारा श्री देशराज जी 'विलाला' के दिशा-निर्देशन में वैदिक रीति से सम्पन्न करवाया गया। यजमान को सबने मिल कर वैदिक मन्त्रों से आशीर्वाद दिया। यजमान श्री राज कुमार जी ने आर्य समाज रामां को दान एक सौ एक रुपया और एक सौ एक रुपया ही श्री पुरोहित जी को दिया-पुरोहित जी ने यह राशि आर्य समाज को दे दी। राज कुमार जी ने सभी का चाय और मिष्ठान से स्वागत व धन्यवाद किया। संख्या लगभग 65-70 थी। सब पर संस्कार का अच्छा प्रभाव पड़ा। —मन्त्री

पांचवीं कक्षा का शानदार परीक्षा परिणाम

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब से सम्बन्धित हमारे आर्य गर्ल्स सी सै स्कूल भठिण्डा का पांचवीं कक्षा का बोर्ड का परीक्षा-परिणाम, हर बार की तरह, इस वर्ष भी शत-प्रतिशत रहा है।

इसी प्रकार छठी कक्षा की एक छात्रा सन्तोष कु. सुपुत्री श्री श्यामवीर शर्मा ने तीनों सैक्शनों में से 90प्रतिशत अंक प्राप्त करके विद्यालय का नाम रोशन किया है।

छठी कक्षा की ही एक अन्य छात्रा दीक्षा बांसल सुपुत्री श्री भूषण कुमार-बांसल ने भारतीय संस्कृति व परम्परा में रुचि दिखाते हुए-संस्कृत विषय में शत-प्रतिशत (100 प्रतिशत) अंक प्राप्त करके, आर्य समाज की उज्जवल परम्पराओं की रक्षा की है।

हमारी छात्राएं जहां शिक्षा के क्षेत्र में दिन-रात परिश्रम करती हैं, वहां उनके सर्वांङ्गीण विकास के दृष्टिगत, बच्चों को धार्मिक नैतिक, देश-भक्ति, चरित्र-बल व सम्पूर्ण अनुशासन में रहने की भी शिक्षा दी जाती है। ताकि आर्य संस्थाओं की छात्राएं भारतीय परम्पराओं व संस्कृति की रक्षा करते हुए, भारतीय संस्कृति के सच्चे ध्वजावाहक बन सकें।

बच्चों की इस सफलता के लिए प्रबन्ध समिति, प्रधाना यां श्रीमती शान्ति जिन्दल, अध्यापिक वर्ग एवम् अभिभावक वर्ग धन्यवाद व बधाई के पात्र हैं। —प्रबन्धक

भठिण्डा में आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज, आर्य समाज चौक बठिण्डा के महर्षि दयानन्द सत्संग भवन में दिनांक 13 अप्रैल 2002 को 127वें आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में एक बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसके ब्रह्मा आचार्य श्री गुरु प्रसाद शास्त्री जी थे। यज्ञोपरान्त आर्य माडल हाई स्कूल के बच्चों ने स्थापना दिवस सम्बन्धी भजन गाकर उपस्थित श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया, जिससे प्रसन्न होकर सर्व श्री ला वजीर चन्द जी, चौ बाबू राम जी, श्री प्रेम भाटिया जी, श्रीमती शान्ति जिन्दल जी, श्री एम पी अरोड़ा जी ने बच्चों को नकद राशि प्रदान कर उत्साहित किया। तत्पश्चात् आर्य समाज के उपमन्त्री श्री एम पी अरोडा जी ने आर्य समाज स्थापना दिवस एव विक्रमी सम्वत् 2059, वैसाखी पर्व के महत्व को दर्शाते हुए कवि के शब्दों में कहा-बढ़ें सभी हम सत्य पथों पर करें मनुजता का श्रृंगार। नव आशा का अभिलाषा का, हो फिर जन-जन में सचार॥ आगे उन्होंने कहा 'फसल की तैयारी' पर किसान की खुशी को दर्शाते हुए कहा, ओ जट्टा आई बैसाखी फसलां दी मुक गई राखी॥ ब्र. सूर्य देव जी 'वैदिक मिशनरी' ने बड़े ही सुन्दर ढंग एवं मार्मिक शब्दों द्वारा आर्य समाज की स्थापना के महत्व महर्षि दयानन्द को आदर्श बनाकर उपस्थित आर्य जनों के समक्ष रखा, जिसे सुनकर श्रोतागण झूम उठे। उन्होंने विक्रमी संवत् को ही नये साल के रूप में मनाने पर जोर दिया। आगे ब्रह्मचारी जी ने कहा-वैदिक मार्ग पर चलना उतना सरल नहीं, किन्तु जो परिश्रम करते हैं, उनके लिए यह मार्ग कठिन भी नहीं है। अन्त में उन्होंने कहा, लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती। कोशिश करने वालो की कभी हार नहीं होती॥ तदुपरान्त आचार्य श्री गुरु प्रसाद शास्त्री जी ने युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी द्वारा संस्थापित आर्य समाज के उद्देश्यों को समझकर कार्य करने पर बल देते हुए कहा कि हम भारतीय संस्कृति को अपनाएं तथा महर्षि द्वारा बताए हुए मार्ग का अनुसरण करें। ला वजीर चन्द जी मंगला संरक्षक जिला आर्य सभा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी उपस्थित आर्यजनों, मातृशक्ति एवं आर्य गर्ल्ज सी सै स्कूल, आर्य माडल हाई स्कूल के प्रधानाचार्य श्रीमती शान्ति जिन्दल जी, श्री हुकम चन्द जी गोयल, अध्यापकगण एवं विद्यार्थियों का धन्यवाद किया तथा इस कार्यक्रम पर बढ़चढ़ कर सम्मिलित होने पर सबको स्थापना दिवस एवं नव सम्वत् 2059 तथा वैसाखी पर्व की शुभकामनाएं दीं। शान्ति पाठ के पश्चात् प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—प्रेम भाटिया, महामन्त्री

पठानकोट व दीनानगर में कैप्टन देवरत्न जी का भव्य स्वागत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न जी 13 अप्रैल को दयानन्द मठ दीनानगर पहुंचने के लिए जब प्रातः पठानकोट रेलवे स्टेशन पर पहुंचे तो पठानकोट की आर्य जनता ने उनका रेलवे स्टेशन पर भव्य स्वागत किया सैंकड़ों की तादाद में वहां स्त्री-पुरुष पहुंचे हुए थे। पठानकोट की शिक्षा संस्थाओं के प्रिंसिपल तथा प्रबन्ध समितियों के सदस्य तथा आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट तथा आर्य समाज माडल टाऊन पठानकोट के सभी सदस्य वहां पहुंचे हुए थे। श्री प्रिं. स्वतन्त्र कुमार जी महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य महानुभावों ने पुष्प मालाएं पहना कर श्री कैप्टन जी का सम्मान किया इस अवसर पर जयघोषों से आकाश गूंज उठा।

रेलवे स्टेशन से कार द्वारा श्री कैप्टन जी को दयानन्द मठ दीनानगर मे ले जाया गया। वहां पहुंचने पर भी मठ में उपस्थिति सभी महानुभावों ने उनका सम्मान किया। इस अवसर पर 13 अप्रैल को दयानन्द मठ दीनानगर मे पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 103वां जन्म दिवस मनाया गया। इसी समारोह में भाग लेने के लिए श्री कैप्टन जी विशेष रूप से दिल्ली से दीनानगर पहुंचे थे। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रति वर्ष 13 अप्रैल को विशेष समारोह किया जाता है जिसमें भारी संख्या में आर्य बन्धु व बहने भाग लेती हैं। इस बार इस अवसर पर यति मण्डल की एक बैठक भी सम्पन्न हुई जिसमें सभी सन्यासियो व वानप्रस्थियो ने भाग लिया।

लुधियाना में आर्य समाज स्थापना दिवस

13 4.2002 शनिवार प्रातः 8.30 बजे से 11.30 बजे तक आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना मे आर्य समाज का स्थापना दिवस बडे समारोह से मनाया गया। यज्ञ के यजमान जनकराज भक्त, उर्मिला भक्त, प्रवीण सपरिवार, बेअन्ती देवी, अमरजीत, राजरानी सपरिवार थे। यज्ञ के पश्चात् आर वी स्कूल के बच्चो ने प्रभु भक्ति एवम् ऋषि दयानन्द जी के जीवन के सम्बन्ध में सुन्दर गीत गाये। आर्य समाज के प्रधान श्री आशानन्द आर्य ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके सब पर उपकार किया है। परन्तु स्त्री जाति पर विशेष उपकार किया है। उनके आने से पहले उन्हे कोई गवार, कोई नरक का द्वार कहता था। वेद पढने का उन्हे अधिकार नही था। ऋषि दयानन्द ने कहा कि जिस घर मे देवी की इज्जत होती है, वहा देवता निवास करते हैं। उनके बगैर गृहस्थ जीवन अधूरा है। देवियो का विशेष कर्त्तव्य है कि वह स्त्री आर्य समाज बनाकर बुराईयों को दूर करने का यत्न करे। इस अवसर पर आर्य समाज मे स्त्री समाज की स्थापना की गई। जो हर शुक्रवार अपना सत्संग लगाएंगी।

—जनकराज भक्त, मन्त्री

रामायण और रामराज्य

प्रो. [illegible]

रामायण भारतीय साहित्य में एक प्रसिद्ध महाकाव्य है। इसके कई रूप हैं, जैसे आदि रामायण, अध्यात्म रामायण, तथा तुलसीदास का रामचरित मानस आदि। वह तो आप जानते ही होंगे कि इसका प्रसार तथा मान्यता केवल भारत में ही नहीं, अपितु कई अन्य देशों में भी है। विशेषकर दक्षिण पूर्वी एशिया मे और यह इतनी प्रिय है कि इसका प्रकाशन बाइबिल को छोड़ कर अन्य सभी धर्म-पुस्तकों से अधिक है। कलाकारों ने भी इस में वर्णित कई घटनाओ को नृत्य का रूप देकर केवल इसको आधुनिकता ही प्रदान नहीं की, अपितु मानव के आंतरिक जीवन पर भी पर्याप्त प्रभाव डाला है, अर्थात् इसको मर्यादा मे बंधे रहने के लिए प्रेरित भी किया है।

'आदि काव्य' बाल्मीकि मुनि की राम-चरित्र सम्बन्धी एक अद्वितीय तथा बेजोड़ रचना है। यह एक तथ्य है कि वास्तविक कवि थोपे नहीं जाते, अर्थात् वे बनते नहीं या बनाए नहीं जाते, प्रकट हुआ करते हैं। ऐसा ही आदि कवि वाल्मीकि के संबन्ध में माना जाता है। इस प्रसग मे एक कथा है कि एक दिन मुनि जी जब तमसा नदी की ओर से मध्याह्न-स्नान के बाद लौट रहे थे, तो उन्होंने किसी व्याध द्वारा निहत एक क्रौंच को देखा। इससे मुनि का दिल भर आया और भावावेश मे उनके मुख से यह अनुष्टुप (बत्तीस अक्षरों वाला) छन्द निकल पड़ा-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

अर्थात् हे व्याध! तू ने काम के वशीभूत पक्षी के जोड़े मे से एक को मार दिया है, तेरा कभी भला नहीं होगा।

यह शापप्रद छन्द अन्त: संवेदना से प्रस्फुटित हुआ था। ऋषि ने इसी को अपनी रचना का आधार बनाया और लगभग सारी रामायण की रचना इसी छन्द में कर दी। इस छन्द में जो शाप है, वह मर्यादा के भंग करने वाले व्याध के लिए शास्वत है, परन्तु ऋषि ने अभिशाप से मुक्त होने के लिए जिस उपचार का वर्णन किया है, वह है मर्यादा का पालन करना, और जो कोई राजा ऐसा करता है उसका शासन ही 'राम-राज्य' कहलाता है। इस आदि काव्य के पठन-पाठन से वह भी जान पड़ता है कि इसके रचियता का गूढ़ संबन्ध अयोध्या के राजाओं के साथ था। शायद इसीलिए इन्होंने अपने 'राम-राज्य' का आदर्श प्रस्तुत करने के लिए जिस आदर्श चरित्र की स्थापना की, वह अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र 'राम' ही थे।

राम राज्य क्या है? एक प्रजा-सुखकारी शासन का नाम है, जो लोकोन्मुख हुआ करता है। राम का शासन भी, जिसका इस काव्य में वर्णन किया गया है, ऐसा ही था। परन्तु वह आज के उस लोकतंत्र जैसा नहीं, जिस में इक्कावन (51) का कुशासन उनचास (49) पर छाया रहता है; अपितु वह एक ऐसी राज्य-पद्धति थी जिसमें एक तुच्छ व्यक्ति की भी राय को उतनी ही मान्यता दी जाती थी जितनी कि एक प्रसिद्ध राजपुरुष की राय को। इसीलिए, वाल्मीकि मुनि का 'रामराज्य' एक पूरा युग बीत जाने के बाद भी इतना प्रशस्त है, जितना कि उस समय था। महात्मा गांधी ने भी अपने स्वतन्त्र देश की राज्य पद्धति का जो स्वप्न देखा, वह वही राम-राज्य था।

रामायण काल में कौशल देश की राजधानी अयोध्या थी, और राजगद्दी पर विराजमान थे महाराजा दशरथ। इनकी तीन रानियां थी और चार पुत्र। सबसे बड़ी थी कौशल्या, जिसने राम को जन्म दिया था, सबसे छोटी थी सुमित्रा, जिसके दो पुत्र थे-लक्षमण और शत्रुघ्न और मंझली थी केकैयी, भरत की माता। महाराज की तीन पत्नियों का होना एक दोषयुक्त व्यवस्था मानी जा सकती है। परन्तु ऐसा होते हुए भी अंत: पुर में एक स्वस्थ और सुखद वातावरण था। राम सबको प्रिय थे और राम भी अपनी तीनों माताओं का एक समान आदरमान करते थे, विशेष कर कैकेयी का, और इसका भी पुत्र-स्नेह राम के साथ अधिक था। शायद इसका कारण था कि कैकेयी [illegible] केवल एक गृहस्वामिनी ही नहीं थी, अपितु शासनकाल में भी भाग लेती थी। युद्धोपकरणों में भी, विशेषकर रथ-विद्या में, निपुण थी। आधुनिक परिभाषा में वह सैनिक रथोपकरण विभाग की मंत्री समझी जा सकती है। एक बार युद्धक्षेत्र में महाराज दशरथ के रथ में कुछ दोष उत्पन्न हो गया, जिससे उन की हार हो जाने की संभावना थी। परन्तु कैकेयी ने जो युद्ध में उनके साथ थी, तत्काल उसे ठीक कर दिया, जिससे प्रसन्न हो महाराज ने उसे दो वर देने का वचन दिया।

राज्याभिषेक-महाराज ने जब अपनी आयु के तीसरे भाग में पदार्पण किया तो स्वाभाविक उन्हें राज्य-कार्य से अलग होने की सूझी, परन्तु ऐसा करने से पहले उन्हें किसी योग्य राजकुमार को राजगद्दी पर नियुक्त करना जरूरी था। इसके लिए उन्होंने राम को चुना और नियमानुसार जब राज्य सभा ने इसका समर्थन कर दिया, तो राजकीय आज्ञा पत्र जारी कर दिया और उद्घोषणा की गई कि कल प्रात: काल ही बड़ी धूमधाम से राज्याभिषेक-समारोह मनाया जाएगा। वह जानकर नागरिक हर्ष के अतिरेक के गद्गद् हुए समारोह में भाग लेने के लिए तैयारियां करने लगे राजप्रसाद में तीनों रानियां आनंदित हुई। अपने-आप को राजमाता कहलाने के मीठे स्वप्न देखने लगीं। कैकेयी विशेष रूप से प्रसन्न थी, क्योंकि उसका राम के साथ अधिक प्रेम था।

उस समय के शासनतंत्र में एक 'देव-सभा' भी हुआ करती थी, जो राज्य सभा के कार्यों की छानबीन करती थी। राज्याभिषेक का समाचार पाकर उस सभा का एक आपातकालीन अधिवेशन (Emergency meetting) हुआ जिसमें राम के गुणों-अवगुणों पर विचार किया गया। देव-सभा ने राजकुमार राम को हर प्रकार से राजगद्दी के योग्य पाया। परन्तु यह देखा कि राम को अभी केवल उत्तरी भारत का ही ज्ञान है और वह अपने राज्य के दक्षिण-पथ से अनभिज्ञ है। किसी राजगद्दी को संभालने से पहले उसे अपनी दूर-दूर बसी हुई प्रजा की [illegible] कि राजतिलक को अभी स्थगित किया जाए और राम चौदह वर्ष दक्षिणी वेश-भूषा में वहां के लोगों में निवास करें, जिससे वह उनके मनोभावों को ठीक-ठीक समझ सकें। परन्तु वह हो कैसे? क्योंकि कल प्रात:काल ही तो राज्यारोहण उत्सव है। केवल आज की रात ही बीच में है।

कहा जाता है कि ऐसे सोच-विचार में पड़े हुए देवों को कैकेयी की सूझी। वह राज्य-कार्यों को समझती थी और ऐसी मर्यादा-युक्त परम्परा को स्थिर रखने के लिए वह अपने तन-मन और धन का त्याग भी कर सकती थी। महाराजा से प्राप्त किए दो वरों के अनुसार वह राम के लिए दक्षिण वनों की ओर वनवास और अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी मांग कर हमारे प्रयत्न को सफल बना सकती है। परन्तु इसको तुरंत कार्यान्वित करने के लिए शायद उसको तिरिया चरित्र रचना पड़े, जिससे उसकी कीर्ति तथा यश की हानि हो। बड़े-बड़े प्रसिद्ध नेता अपने मन्तव्य के लिए सब कुछ त्याग सकते हैं, सिर भी कटा सकते हैं, परन्तु यश और कीर्ति को नहीं। क्या कैकेयी ऐसा करेगी? बड़ी संभावना है; किन्तु यह प्रस्ताव उसके समक्ष कैसे रखा जाये? इसके लिए उनका ध्यान कैकेयी की चतुर दासी मंथरा की ओर गया, जिसके द्वारा देवों को सफलता हुई। रात को जब महाराज का राजप्रसाद में आगमन हुआ, तो वे कैकेयी को एक निराली स्थिति में देखकर भौंचक्के से हो गए और इसका कारण जानकर वे मूर्छित होकर गिर पड़े और ऐसी ही स्थिति में बोलने लगे कि मैं भरत को राज्य दे दूंगा, परन्तु राम की जुदाई भारी है, इसके लिए यदि तू चाहती है, तो मैं राम को न केवल चौदह वर्ष के लिए अपितु सदा के लिए गुरुगृह में भेज सकता हूं। यदि कैकेयी को अपने पुत्र के लिए ही राजगद्दी की इच्छा होती, तो ऐसे प्रस्ताव को वह तत्काल ही मान लेती, क्योंकि इससे वह न केवल चौदह वर्ष के लिए अपितु सदा के लिए राज-माता हो जाती, कुछ समय पश्चात् जब राम वहां आए,

(शेष पृष्ठ 7 पर)

रामायण और....

(पृष्ठ 6 का शेष)

तो कैकेयी ने इन्हें सारी बात समझा दी; जिससे राम ने राजतिलक को स्थगित कर दिया और साथ ही वन जाने की तैयारी भी कर ली।

राम अपने भाई लक्ष्मण और अपनी पत्नी सीता सहित दक्षिण की ग्रामीण वेशभूषा में चित्रकूट पहुंच गए और फिर इसी स्थान को अपना मुख्यावास बनाकर वहां की प्रजा की गतिविधियों में भाग लेते हुए उसकी भावनाओं का निरीक्षण भी करने लगे। राम का बर्ताव तथा व्यवहार उन लोगों के साथ किसी प्रकार के भेद-भाव वाला नहीं था। न वहां उस समय सवर्ण जातियों तथा अनुसूचित जन-जातियों की कोई बात थी और न ही उत्तर-दक्षिण का कोई प्रश्न था। इस सबंध में रामायण में उल्लेख है, कि राम एक बार घूमते-फिरते एक ग्रामीण के झोंपड़े में जा पहुंचे। अन्दर बैठी एक वृद्ध भीलनी ने इन्हें पहचान लिया, गद्‌गद हुई स्वागत के लिए उत्सुक हो उठी। किसी प्रकार के नैवेद्य को घर में ढूंढने लगी। बेर के अतिरिक्त कुछ न मिला, और यह भी न जाने खट्टे हों या मीठे। मीठे-मीठे चुनने के लिए उनको चखने लगी, और ऐसे चयन किये हुए कुछ बेर अपनी हार्दिक इच्छा जताने के लिए महाराजा को भेंट किए। उन्होंने बेर बड़े चाव से खा लिए। क्यों? कारण यह कि आदर-सम्मान तथा श्रद्धा के उत्तर में न तो स्वास्थ्य का तर्क ठहर सकता है और न ही कोई प्रथा। न खाने से भीलनी व्याकुल हो उठती और अपनी श्रद्धा को मूर्तिमान् न कर पाने के कारण एक मानसिक डाह की शिकार हो जाती। परन्तु राम के लिए प्रेम और समानता का स्तर सब से ऊंचा था। युक्त व्यवहार क्या है? राम का यह आचरण ही इसका सही उत्तर है। आजकल की फैली हुई छूआछूत के लिए यह एक उद्‌जन बम है।

ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया, राम अपने मर्यादानुकूल चरित्र के कारण सर्व-जन प्रिय होने लगे। पर रावण को जो अपनी तानाशाही सत्ता को स्थापित करना चाहता था, यह अच्छा न लगा, जिससे उसके मन में द्वेष की आग भड़क उठी; विशेषकर जब राम ने बाली की जो रावण की सहायता से अपने छोटे भाई सुग्रीव की गद्दी को छीन कर आप राजा बन बैठा था, मार कर गद्दी वास्तविक अधिकारी सुग्रीव को सौंप दी। इसलिए रावण ने राम को अपने उद्देश्य से पतित करने की ठान ली। इसके लिए उसने अपनी विवाहिता बहिन सूर्पणखा से विचार-विमर्श किया और उस को अपनी चतुराई से राम के पतन के लिए तैयार भी कर लिया। परन्तु वह कुछ न कर सकी, इससे रावण आपे से बाहर हो गया और अकेली बैठी सीता का अपहरण कर लिया। यह घटना एक बड़े युद्ध का कारण बनी, जिसमें रावण मारा गया। राम रावण के भाई विभीषण को राज्याधिकार से युक्त कर और फिर चौदह वर्ष के बीत जाने पर लक्ष्मण तथा सीता सहित अयोध्या वापस लौट आए।

भरत ने बड़ी प्रसन्नता से अपने भाई का स्वागत किया और फिर राज्यसिंहासन को अपने उत्तराधिकारी भाई को सौंप दिया। राम अब 'राम-राज्य' के स्थापन करने में पूर्ण रूप से जुट गये।

ऐसे आदर्श राज्य का निर्माण करने के लिए अत्यावश्यक है कि शासनीय तथा प्रशासनीय कृत्य सर्व-मान्य हों और राजपुरुषों का चरित्र केवल संदेह रहित ही न हो, जन साधारण ऐसा समझें भी, जिससे उनकी ओर कोई उंगली न उठ सके। यदि किसी की उंगली किसी की ओर उठती है, तो उसे तत्काल कुर्सी छोड़ देनी चाहिए, यदि किसी बड़ी प्यारी वस्तु का त्याग करना पड़े, तो विलंब न करे। ऐसा ही राम ने किया। जब उन्हें पता लगा कि जनता, किसी नासमझी के कारण ही सही, निरापराध सीता को राजमाता के रूप में मानने में संकोच करती है, तो उन्होंने बिना किसी प्रकार के टालमटोल के सीता को त्यागने की ठान ली। सीता ने भी अपने पति को जनसाधारण की दृष्टि में निर्दोष बनाए रखने के लिए राजगृह को छोड़ गुरु गृह में वास करना अच्छा समझा। आदि कवि के अपने शब्दों में-राम ध्यान पूर्वक बैठे हैं, और एक गुप्तचर लोक-चर्चा सुनाने के लिए इस प्रकार कह रहा है-

हत्वा च रावणं सीतामाहृत्य राघवः। अमर्ष पृष्ठतः कृत्वा स्ववेश्म पुनरानयत्॥ वा. उत्त. का., 43, 16।

अशोक वाटिका में रही सीता को जो महाराज अपने साथ लाए उसके चरित्र के प्रति उनको अमर्ष होना चाहिए था। और फिर कहा कि पुरवासी विचारते हैं कि-

अस्माकमपि दारेषु सहनीयं भविष्यति। यथा हि कुरुते राजा प्रजा तथाऽनुवर्तते॥ वा. उ. कला. 43, 19।

हमें भी अब अपनी स्त्रियों की बातें सहनी पड़ेगी, क्योंकि जैसा राजा करता है, वैसा ही प्रजा भी। इसी आवाज से महाराज जनसाधारण की इच्छा को भांप गए और अपनी प्रिय अर्द्धांगिनी को त्याग दिया यह कहते हुए-

अप्यहं जीवितं जह्यां युष्मान् वा पुरुषर्षभान् अपवादभयाद भीतः किं पुनर्जनकात्मजाम्। वा. उत्त. का, 45, 14, 15।

वाल्मीकि के अनुसार यह है, रामराज्य की एक झांकी।

(नव ज्ञान से साभार)

होशियारपुर में आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर, होशियारपुर में स्त्री समाज की सभा के पश्चात् सायंकाल 4-00 बजे से 6-00 बजे तक आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। हवन यज्ञ के पश्चात् कार्यक्रम शुरू हुआ। जिसमें आर्य समाज कमालपुर के अतिरिक्त स्थानीय आर्य समाज, दयानन्द सालवेशन मिशन एवं आर्य समाज इल्लेवाल (होशियारपुर) ने बढ़ चढ़ कर भाग लिए। यज्ञ के यज्ञमान डा. धर्मवीर कपूर परिवार सहित बने। आचार्य श्री भद्रसेन जी ने ऋषि दयानन्द जी के जीवन तथा आर्य समाज स्थापना की कहानी और आर्य समाज की समाज के प्रति देन पर प्रकाश डाला। बीच-बीच में मधुर भजनों द्वारा देव दयानन्द के प्रति आभार व्यक्त किया। वैसाखी के अवसर पर मिठाई वितरित की गई और जलपान भी कराया गया।

—जगदीश भाटिया, मन्त्री

अबोहर में आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज अबोहर की ओर से आर्य समाज का 127वां स्थापना दिवस 14-4-2002 को बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर 51 हवन कुण्डों पर यज्ञमान बैठे। सभी ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में अपनी आहुतियां दीं। सभी यज्ञमानों को आर्य समाज की ओर से मोमैन्टो कैलेण्डर आदि प्रदान किए गए। यज्ञ प्रातः 8.30 बजे आरम्भ हुआ। कार्यक्रम दोपहर तक चला। भारी संख्या में धर्मप्रेमी सज्जनों ने इस यज्ञ में बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। अन्त में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

—प्रेम प्रकाश आर्य, मन्त्री

अमृत महोत्सव का भव्य आयोजन

कोटा-डा. भवानी लाल जी भारतीय की साहित्य साधना एवं उनके वैदिक लेखन से सुपरिचित आर्य बन्धुओ को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि 1 मई-2002 को उनके 75वें वर्ष प्रवेश के उपलक्ष्य में अमृत महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस समारोह के सफलता पूर्वक संचालन हेतु आर्य समाज के 21 प्रमुख विद्वानों, लेखकों उपदेशकों तथा कार्यकर्त्ताओं की एक निम्नांकित समिति गठित की गई है। यह भी निश्चित किया गया है कि अमृत मोहत्सव के उपलक्ष्य में डा. भारतीय जी द्वारा लिखित महर्षि दयानन्द के पत्र-व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन, समसामयिक पत्रकारिता और महर्षि दयानन्द आदि ग्रन्थों के प्रकाशन के अतिरिक्त डा. भारतीय जी के आर्य समाजिक जीवन से सम्बद्ध उनकी आत्मकथा को प्रकाशित किया जाए। तैयारी पूर्ण होने के बाद इस अवसर पर एक बृहद् कार्यक्रम भी जोधपुर में आयोजित किया जाएगा। जिसे डा. भारतीय जी के पुस्तकालय में संग्रहित दुर्लभ ग्रन्थों की प्रदर्शनी, सप्तम राष्ट्रीय आर्य लेखक सम्मेलन के साथ आर्य लेखक परिषद् की बैठक, विभिन्न विषयों पर विचार गोष्ठियां तथा डा भारतीय सम्मान-समारोह आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न होंगे।

—डा. राम कृष्ण आर्य,
एम.ए.पी.एच.डी

आर्य समाज धूरी का चुनाव

आर्य समाज धूरी (संगरूर) का वार्षिक चुनाव 14-4-2002 को सभा मन्त्री श्री प्रेम भाटिया जी के पर्यवेक्षण में सम्पन्न हुआ बहुसम्मति से श्री प्रहलाद कुमार जी को पुनः प्रधान चुन लिया गया और आर्य समाज के अन्य पदाधिकारी व प्रतिनिधि मनोनीत करने का उन्हें पूर्ण अधिकार दे दिया गया। वह शीघ्र ही अन्य पदाधिकारियों की घोषणा करेंगे।

आवश्यक सूचना

स्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में गत कई वर्षों से निःशुल्क सिलाई स्कूल एवं पेंटिंग स्कूल चल रहा है। दिनांक 1-4-2002 से हवन यज्ञ द्वारा नई कक्षायें आरम्भ हो गई हैं। सभी सिलाई सीखने वाली बहने स्कूल में पहुंच कर लाभ उठायें और अपना दाखिला ले लें। —सन्तोष धवन, मुख्याध्यापिका

सो-सो के लुट रहे थे हम तूने हमें जगा दिया

☐ *लेo श्री विजय भूषण आर्य, हंसराज माडल स्कूल, नई दिल्ली*

जन कल्याण और राष्ट्रोत्थान की महान् भावनाओं से प्रेरित होकर एक नूतन ज्योति ने एक महान् पुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती के रूप में इस धरती पर जन्म लिया, जिनका कार्य वैदिक संस्कृति का प्रचार करना था। जब भारत वर्ष मे अंग्रेजों के निर्मम अत्याचारों का सूर्य अपनी प्रचण्ड किरणों से भारत वर्ष को दग्ध कर रहा था, विश्व भर में प्रचण्ड लीला अपना प्रभुत्व जमा चुकी थी, भारतीय पराधीनता की गहरी निद्रा में अचेत सो रहे थे, ऐसी अन्धकारमयी अवस्था में भारतवर्ष के भविष्य के रक्षक के रूप में स्वामी दयानन्द जी इस पावन धरा पर अवतरित हुए।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से प्रख्यात बालक मूलशंकर का जन्म सन् 1824 ई० में भारत की मौरवी रियासत में टंकारा नामक स्थान पर एक सम्पन्न परन्तु रुढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बाल्यकाल में मूलशंकर बहुत ही जिज्ञासु एवं भावुक प्रकृति का बालक था। तेरह वर्ष की किशोरावस्था में शिवरात्रि पर्व पर रात्रि जागरण के समय भगवान शिव के लिंग पर एक चूहे को चढ़ते व प्रसाद खाते देख इस बालक के मन में ईश्वर के सम्बन्ध में शंका उत्पन्न हो गई। सोलहवें वर्ष में बहन जो मूलशंकर को अगाध प्रेम करती थी, हैजे के रोग से मृत्यु का ग्रास बन गई। परिवार के लोग अश्रु बहा रहे थे परन्तु मूलशंकर इस मृत्यु की घटना को देख कर रह गया और उसके हृदय में मृत्यु क्या है ? यह जानने की लालसा उत्पन्न हो गई जब मूलशंकर उन्नीस वर्ष का हुआ तो उसने अपने प्यारे चाचा का भी स्वर्गवास होते देखा। यह हृदय विदारक घटना आखिर एक समस्या बनी और इन समस्त घटनाओं ने मूलशंकर के हृदय में वैराग्य की भावना को उत्पन्न कर दिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के भारत-भू पर जन्म लेने से पहले भारत की दशा अनेक कुरीतियों से ग्रस्त होने के कारण अत्यधिक दुःखदायी थी परन्तु जिस प्रकार सूर्य के उदय होने के बाद अंधकार टिक नहीं सकता ठीक उसी प्रकार महर्षि दयानन्द ने भी बाल विवाह, वृद्ध विवाह, दहेज, जात-पात, भारतीय जनता की विदेशी संस्कृति की ओर झुकाव आदि कुरीतियो को उखाड़ फैंका और उसके स्थान पर उन्होंने जिस आर्य समाज रूपी नवीन पौधे को लगाया तथा सत्य रूपी जल से सींच कर मजबूत बनाया, उसको आज संसार की कोई भी शक्ति उखाड़ सकने में असमर्थ है।

"अगर हितैषी हमें न जगाता, तो देशोन्नति का किसे ध्यान आता"

प्रस्तुत पंक्तियां महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन का असली रूप चित्रित करती हैं। राष्ट्रीय नव जागरण के देवता दिव्य दयानन्द की प्रतिभा जहां समाज सुधार, धर्म-उद्धार, वेद प्रचार, शिक्षा प्रसार के क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से मुखरित हुई, वहां सन्1857 में भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के उत्तरकाल में वही प्रतिभा राष्ट्रीय उद्बोधन एवं स्वातन्त्र्य संग्राम के सर्वप्रथम मन्त्रदाता के रूप में भी प्रकट हुई। इस, दृष्टि से यदि हम देखें तो दयानन्द जी भारतीय स्वतंत्रता के क्रान्तिकारी अग्रदूत और राष्ट्रीय चेतना के अद्वितीय उद्घोषक थे।

महाभारत काल से पूर्व नारी का समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान था। वे प्रत्येक धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में भाग ले सकती थी। उनके इन कार्यों में भाग लेने पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं था। उनकी पुरुषों के समान यज्ञ करने का अधिकार भी था। परन्तु समय के साथ-साथ यज्ञ एवं वेद पठन-पाठन की व्यवस्था लुप्त हो गई, जिसके फलस्वरूप स्त्रियां सदा के लिये वेदाध्ययन से वंचित हो गईं। ऐसी अवस्था में 11 वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द के रूप में एक ऐसी विभूति का प्रादुर्भाव हुआ जिसने वेद के आलोक से केवल भारत को ही नहीं वरन् समस्त संसार को आलोकित कर दिया। उन्होंने कहा-वेद पढ़ने का अधिकार मनुष्य मात्र को है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, ब्राह्मण हो या शूद्र। शंकराचार्य ने जहां नारी को नरकस्य द्वार कहा, वहां तुलसीदास ने ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी कह कर तिरस्कृत किया। इस दुरावस्था में महर्षि दयानन्द ने नारी जाति को उसके खोये हुए गौरव को पुनः प्राप्त कराया। ऋषि ने नारी को पैर की जूती के स्थान पर सिर की पगड़ी के तुल्य बनाया। महर्षि मनु के स्वर में स्वर मिलकर उन्होंने कहा-यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवताः। अर्थात जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता, विद्वान लोग रमण करते हैं महर्षि दयानन्द के ही परिश्रम और पुरुषार्थ का फल है कि आज स्त्रियां भी शिक्षा के क्षेत्र में पीछे नहीं हैं और पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं। आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नही है जहां स्त्रियों ने अपना कौशल न दिखलाया हो। यह सब ऋषि के प्रयत्न, ईश्वर की कृपा और स्त्री के पुरुषार्थ का फल है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा प्रतिष्ठित कराने का महान् कार्य भी भारत मां के इसी सपूत की कोशिशों द्वारा सफल हो सका है। महर्षि दयानन्द जी का सारा जीवन हिन्दी, हिन्दू एवं हिन्दुस्तान के लिये था। उन्होंने केवल स्वराज्य की भावना ही लोगों में जागृत नहीं की, अपितु "स्वराज्य" शब्द का प्रयोग भी सर्वप्रथम उन्होंने ही किया था। कांग्रेसी नेता नौरोजी के ये शब्द इस कथन की पुष्टि करते हैं-'स्वातन्त्र्य सेतु' की प्रथम ईंट स्वामी दयानन्द ने रखी थी।

एक बार स्वामी जी दानापुर (पटना) में थे। एक दिन आधी रात को जाग गये और इधर-उधर टहलने लगे। उनके पांव की आहट से शिष्य बलदेव ने निवेदन किया-भगवन्, यदि कोई वेदना है तो औषधि-उपचार के लिये किसी वैद्य को बुलाऊं? स्वामी जी ने दीर्घ स्वास छोड़ते हुए कहा-भोले शिष्य, मैं पूर्ण स्वस्थ हूं। शरीर में कोई व्याधि नहीं है। पर आज देश को विदेशी शासन की प्रबल जंजीरों में जकड़ा देखकर व्याकुल हो रहा हूं। विदेशियों के अत्याचार से यह देश कब मुक्त होगा, बस यही मेरी पीड़ा है। स्वामी दयानन्द के हृदय में एक ओर इतनी प्रबल राष्ट्रीय भावना और देश प्रेम था तो दूसरी ओर अंग्रेजी राज्य के प्रति कितनी तीव्र घृणा, भर्त्सना, विरोध, व्यथा और असहनशीलता थी, यह उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से पता चलता है।

दिव्य ज्ञान के महान् सैनिक, ईश्वर की सृष्टि के एक अनोखे योद्धा, मनुष्यों और संस्थाओं के अद्भुत शिल्पी, आत्मा के मार्ग में संसार द्वारा पैदा की जाने वाली बाधाओं के निर्भीक विजेता महर्षि दयानन्द एक अद्भुत व्यक्तित्व थे। उनकी आत्मा में परमात्मा की अनुभूति, आंखों में अलौकिक तेज, वाणी में ओज, शरीर में प्रचण्ड बल था। परन्तु उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उनके हृदय में जाति के पुनरुद्धार के लिये एक तड़प थी। स्वामी जी ने साधनामयी शक्ति से आर्य जगत् में नये प्राण फूंक कर उसका कायाकल्प कर दिया था।

स्वामी दयानन्द ने अछूतोद्धार आन्दोलन को जन्म दिया और वे अस्पृश्यता के निवारण के लिये आमरण लड़ते रहे। सदियों से समाज द्वारा अपेक्षित शूद्रों को वैदिक धर्म में प्रवेश देकर समाज में प्रचलित जातिगत ऊंच-नीच को उन्होंने समाप्त किया। जन-सामान्य पर महर्षि जी के विचारों का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि बाल विवाह, कन्या वध, सती प्रथा तथा देवी-देव आदि पर पशुबलि के विरुद्ध जनमानस तीव्र आन्दोलन के रूप में प्रति क्रियान्वित हो उठा। लाखों कन्याओं, विधवाओं और पशुओं की रक्षा हुई। ऋषि ने अनाथाश्रम स्थापित किये जिससे विधर्मियों की गोद में जाने वाले अनाथ बच्चों की रक्षा हुई। स्वामी जी ने पर्दा प्रथा का विरोध कर उस प्रथा को दूर हटवाया जिससे स्त्रियों को समाज में सम्मानजनक स्थान मिला।

अज्ञान के गहन अन्धकार में राष्ट्रीय शिक्षा का सर्वप्रथम उद्घोष करते हुए स्वामी जी ने नवीन क्रान्ति का सूत्रपात किया। ज्ञान प्राप्त करने योग्य रमणीय स्थलों पर विद्यालय स्थापित करवा कर गुरुकुल की प्राचीन हितकारी प्रथा का प्रचार किया। गुरुकुल कांगड़ी और अन्य दयानन्द शिक्षा संस्थायें इस बात का प्रमाण हैं कि स्वामी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में महान क्रान्ति पैदा की और इसमें राष्ट्रीयता का समावेश किया।

1892 ई. के बाद भारत ने राष्ट्रवाद की धारा को पनपते देखा यह आर्य समाज का इंडियन नैशनल कांग्रेस पर सीधा प्रभाव था क्योंकि 1875 में बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी। स्वामी दयानन्द की दहकती राष्ट्रीयता से भारत का राष्ट्रवाद मजबूत बना तथा लोग इसको निकट से समझने लगे। वे भारत को एक ऐसा राष्ट्र बनाना चाहते थे जो कि पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव, शिक्षा तथा धर्म आदि से न बनकर भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति से बना हो।

स्वामी दयानन्द उन विभूतियों में से एक थे जो आध्यात्मिक शक्तियों से पूर्ण हों और जिनके कार्यों को इन सीमित शब्दों में कह सकना किसी के बस की बात न हो। वे न केवल साधु, महात्मा, संन्यासी के रूप में प्रसिद्ध हैं अपितु एक महान् कर्मयोगी, समाज सुधारक व राष्ट्र के उद्धारक के रूप में भी पूज्यनीय हैं उनका स्थान समाज सुधार व राष्ट्रोत्थान करने वालों में सबसे ऊपर है। ऐसे महान तपस्वी की आइये मिलकर अनुशंसा करें और कहें-स्वामी दयानन्द सरस्वती की-जय।

पंजाब में हिन्दी की स्थिति व आर्य समाज

□ले० प्रो० [illegible] सिंह हिन्दी विभाग डी.एम. [illegible] महाविद्यालय, मोगा

वर्तमान में सम्पूर्ण भारत मातृ भाषा हिन्दी के प्रति सजग नहीं है क्योंकि स्वतन्त्रता के पांच दशकों के उपरान्त भी हम अपने घर में अपनी राष्ट्रभाषा को अजनबी बनाये बैठे हैं। हमें अपनी भाषा की दिशा और दशा की चिंता नहीं है परन्तु आंग्ल भाषा धड़ल्ले से अपना रहे हैं. वैज्ञानिक दृष्टि से सुदृढ़ हिन्दी भाषा, जिसे बोलते हुए भी हमें शर्म महसूस होती है। यह कहना कि विश्व स्तरीय सोच को विकसित करने के लिए आंग्ल भाषा को प्रत्येक भारतीय को अपनाना चाहिए, ठीक नहीं है। यह तर्क हो सकता है यथार्थ नहीं। अब तक भारत सरकार और राज्य सरकारों ने ऐसे कुरूप खेल राष्ट्र में खेले हैं कि राष्ट्रीय भाषा प्रत्येक प्रान्त में छुपती दिखाई देती है।

शर्म आती है ऐसे राजनेताओं पर जिनमें ये साहस ही अभी तक पैदा नहीं हुआ कि कोई योजनाबद्ध तरीके से सम्पूर्ण राष्ट्र में राष्ट्रीय भाषा हिन्दी लागू करवाई जाये। पक्ष कोई राजनेता नहीं सुझाता परन्तु अपनी छवि के लिए, कुर्सी के लिए दिन प्रतिदिन राष्ट्र को हिन्दी विहीन किये जा रहे हैं। वह बच्चा क्या विचार रख सकेगा, जिसके मुख से उसकी मातृ भाषा ही नहीं निकलती। हम बच्चे को मां का दूध न देकर कृत्रिम दूध से बलिष्ठ नहीं बना सकते इसके लिए उसे मां का दूध मिलना अति आवश्यक है।

राष्ट्र जिस तीव्र गति से हिन्दी की अवहेलना कर रहा है। हम इसी गति से ज्ञानहीन, विचारहीन और नीति विहीन हो रहे हैं। हमारी वर्तमान पीढ़ी को न पूर्ण रूप से राष्ट्रीय भाषा आती है, न आंग्ल भाषा आती है और न ही प्रान्तीय भाषाओं का ज्ञान है। इसका कारण मूल रूप से राष्ट्र में राष्ट्रीय भाषा का निरादार ही है। शायद हम, हमारी पीढ़ी भाषा विहीन हो रहे हैं।

पंजाब प्रान्त स्वतन्त्रता संग्राम के प्रत्येक आंदोलन का गढ़ रहा है। यहां स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी का वर्चस्व हुआ करता था। आर्य समाज ने इसी भूमि से विश्व को हिन्दी की सार्थकता सिद्ध की थी। हिन्दी साहित्य की सर्वोत्तम रचनाएं इसी मिट्टी में जन्मे रचनाकारों की रही है। परन्तु आज स्थिति भिन्न हो गई है। पंजाब में रहने वाले हिन्दी प्रेमी तो है परन्तु भाषा के ज्ञाता नहीं रहे। उन्हें कहना अच्छा लगता है कि हमारी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी गौरवमयी है। ऐसा मेरा मानना है कि अगर पंजाब में आर्य समाज द्वारा स्थापित संस्थाएं न हों तो हमारी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी का ज्ञाता यहां दिखाई न दे। पंजाब व विश्व भर में जहां भी आर्य समाजी संस्थाएं हैं, वहां राष्ट्रीय भाषा की ज्योति जगमगाई हुई है।

एक सर्वेक्षण द्वारा पाया गया है कि होशियारपुर, लुधियाना, अबोहर, अमृतसर, मोगा और जालन्धर आदि क्षेत्रों में हिन्दी के लिए व्यापक स्तर पर कार्य हो रहा है, ये प्रमुख क्षेत्र हिन्दी भाषा के प्रसार में अपना योगदान देने में पंजाब भर में अग्रिम हैं। अन्य स्थलों पर हिन्दी मात्र 'हिन्दी दिवस' पर उपलब्ध रहती है। सारे पंजाब में हिन्दी सिनेमा को देखने वाले बड़ी मात्रा में हैं परन्तु परिणाम फिर भी हिन्दी के अनुकूल नहीं है जितनी हिन्दी यहां प्रयोग में लाई जा रही है, उसमें भी त्रुटियों की भरमार है।

आज आवश्यकता है प्रान्तीय सरकारों व केन्द्रीय सरकारों को अपनी राष्ट्रीय भाषा के प्रति सजग होने की तभी भारत मां के चरणों में सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित हो सकेगी।

हरिद्वार में पहुंचो सब नर-नारी

□ले० पं० नंदलाल 'निर्भय' पत्रकार, ग्रा. बहीन (जि. फरीदाबाद)

वैदिक धर्म निभाओ मित्रो। सुन लो विनय हमारी।
सज-धज करके हरिद्वार मे पहुचो सब नर-नारी॥
स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुरुकुल है कागडी प्यारा।
पावन तीर्थ मानता है, इस गुरुकुल को जग सारा॥
विद्या का है केन्द्र निराला, करता ज्ञान उजाला।
जिसमे पढने वाला बनता है, विद्वान् निराला।
देव धाम के गुण गाते है, दुनिया के तपधारी।
सज-धज करके हरिद्वार मे, पहुचो सब नर-नारी॥
अब तक इस गुरुकुल ने लाखों जन विद्वान् बनाए।
ईश्वर भक्त, महान तपस्वी काम जगत के आए॥
चरित्रवान, ईमानदार जो, कभी नहीं दहलाए।
धर्मपाल अरु बुद्ध देव ने ढोंगी सभी हराए।
जिनके आगे टिक न पाए, जालिम अत्याचारी।
सज-धज करके हरिद्वार मे, पहुचो सब नर-नारी॥
सौ वर्षों के बाद वहा, होगा शताब्दी सम्मेलन।
देश-विदेश से लाखों, पहुचेगे जिसमे आर्यजन॥
साधु, सन्तो, विद्वानों के, होगे वहा पर प्रवचन।
जो जाएगे वो पाएगे, वेद ज्ञान रूपी धन॥
स्वामी दीक्षानन्द, यज्ञ करवाएगे, न्यायकारी।
सज-धज करके हरिद्वार मे, पहुचो सब नर-नारी॥
स्वाध्याय, सत्सग जगत मे, जो नर नारी करते।
ईश्वर भक्त महान कभी वे, दुष्टो से ना डरते॥
बडे भाग्यशाली है वे, जन-जन की पीडा हरते।
हो जाते है अमर आर्यजन, कभी नहीं वे मरते॥
करती है यश गान रात-दिन, उनका दुनिया सारी।
सज-धन करके हरिद्वार मे, पहुचो सब नर-नारी॥
जगत् गुरु ऋषि दयानन्द का मित्रो! कर्ज चुकाओ।
स्वामी श्रद्धानद जी जैसा, करके काम दिखाओ॥
धन-दौलत अरु कोठी-बगले, साथ नहीं जाएगे।
नद लाल 'निर्भय' केवल, शुभ कर्म काम आयेगे।
प लेखराज जी जैसे, बनो वेद प्रचारी।
सज-धज करके हरिद्वार मे, पहुचो सब नर-नारी॥

श्रीमती सुभद्रा देवी जी भी अब नहीं रहीं।

रामां, 30 मार्च, 2002 : बड़े दुख के साथ सूचित किया जाता है कि श्रीमती सुभद्रा देवी पत्नी श्री सत्यदेव जी आर्य व पुत्रवधु स्व: श्री महाशय निहाल चन्द जी का तेरह साल अधरग से पीडित रह कर दिनांक 27-3-2002 को भरे सम्पन्न परिवार छोड़कर वह संसार से सदा-सदा के लिए विदा हो गई हैं।

ता० 28-3-2002 को उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से ब्र सूर्यदेव जी वैदिक मिशनरी बठिण्डा द्वारा करवाया गया।

अगले दिन से ही दैनिक यज्ञ प्रात: 7.30 बजे से होता रहा जो कि उनके अन्तिम शोक दिवस तारीख 7.4.2002 को शीला देवी ट्रस्ट में उनकी आत्मिक शान्ति के लिए पूर्णाहुति समापन के साथ उसी दिन ही सारा कार्य सम्पन्न हो गया। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह कर्मानुसार दिवंगत आत्मा को सद्गति दे और संतप्त परिवार को इस वियोग को सहन करने का साहस प्रदान करे।

—किशोर चन्द्र आर्य

डी.ए.वी. स्कूल बठिण्डा में हवन यज्ञ

4 अप्रैल 2002 को डी ए वी पब्लिक स्कूल, परसु नगर भठिण्डा में नया सत्र प्रारम्भ होने के उपलक्ष्य में आर्य समाज, आर्य समाज चौक बठिण्डा के मान्य पुरोहित श्री गुरु प्रसाद शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में पवित्र वेद मन्त्रों के द्वारा हवन यज्ञ सम्पन्न हुआ।

यज्ञोपरान्त आज की यजमान श्रीमती एस एल लाटिका जी प्रिंसिपल डी ए वी सी.सै स्कूल ने यज्ञ के लाभ को दर्शाते हुए कहा हमें जल, वायु आदि की शुद्धि के लिए हवन यज्ञ करना चाहिए, जो हमारा दैनिक कर्त्तव्य है। मन की शुद्धि किए बिना, शरीर को शुद्ध नहीं किया जा सकता इत्यादि। आर्य समाज बठिण्डा के महामन्त्री श्री प्रेम भाटिया जी ने नन्हे-नन्हे बच्चों को आशीर्वाद प्रदान किया।

—प्रेम भाटिया, महामन्त्री

महात्मा हंसराज जयन्ती पर विशेष–

गृहस्थी-जो तप और त्याग में सन्यासी से भी बढ़ गया

□ले० श्री डा. अशोक आर्य, 116 मित्र विहार मण्डी डबवाली, (हरियाणा)

यद्यपि गृहस्थ सन्यास आश्रम के मध्य आश्रम व्यवस्था के अनुसार एक और आश्रम आता है जिसे वानप्रस्थ कहते हैं, यह वह समय होता है जिसमें अपने शरीर को तपा कर कुन्दन बनाना होता है, किन्तु जब त्याग-मूर्ति महात्मा हंसराज के जीवन को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि मानो आश्रम व्यवस्था उल्ट गयी हो तथा गृहस्थाश्रम ही तप और त्याग के पश्चात् बनने वाला कुन्दन स्वरूप सन्यास आश्रम हो।

यद्यपि वह भी कमिश्नर या इसी प्रकार के किसी उच्च पद पर आसीन हो, सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते थे, किन्तु ऐसी अवस्था में उन्हें याद करने वाला आज कौन होता। वास्तव में उनका इतने योग्य होते हुए भी निर्धन अवस्था में बिताया गया त्यागमय जीवन ही तो हमारे लिए न कवल प्रेरणा-स्रोत ही बना अपितु गृहस्थी होते हुए भी उन्हें सन्यासी का सम्मान प्राप्त हुआ। ऐसा दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है।

क्या यह कोई कम त्याग है कि अपने जीवन का छब्बीस वर्ष का अमूल्य समय डी ए वी महाविद्यालय के अवैतनिक प्राचार्य के रूप में कार्य करना और अपने भोजन के लिए भाई पर आश्रित रहना? वे अवैतनिक प्रिंसीपल थे। यदि इस पद का वेतन लिया होता तो आज के हिसाब से वह लाखों की राशि बनती। कालेज के पैन व कागज के व्यक्तिगत कार्य के लिए उपयोग न करना, उन के तप व त्याग का और भी अधिक ज्वलन्त उदाहरण है। किन्तु इसमें भी आत्म गौरव व अभिमान के स्थान पर अपनी सेवा को मैनेजिंग कमेटी की दया बताना, जैसे कि उन्होंने अपने त्याग-पत्र में स्पष्ट किया है तथा दूसरे के लिए पद-रिक्त करना उनकी महानता का अन्यतम परिचायक है।

महात्मा जी ने अपने बच्चों को दो पैसे देकर बहलाने को फिजूल खर्ची समझ कर कभी ऐसा न किया कि बच्चों को कुछ पैसे देवें। किन्तु तो भी बच्चों से अगाध, प्रेम रखने का दृश्य है-कि हार्डिंग बम केस में अभियुक्त बने अपने पुत्र बलराज से जब मिलने गए तो ईश्वर के प्रसाद स्वरूप कुछ फल साथ ले गये।

महात्मा जी के शिष्यों ने पराधीन भारत की सरकार से ऊंचे-ऊंचे पद भी प्राप्त किए। किन्तु वह महात्मा जी के आदर्शों को नहीं भूले। यही कारण है कि पद की गरिमा को उन्होंने चार चांद लगा दिए। कभी रिश्वत इत्यादि लेने को तैयार नहीं हुए। यह भी तो एक आश्चर्य है।

महात्मा जी सादगी में भी अद्वितीय थे। अपना काम अपने हाथों से करना वह पसद करते थे। इसी कारण कई बार उन्हें पहचानने में भूल हो जाती थी। एक बार महात्मा जी अपनी बगीची ठीक कर रहे थे कि कोई सज्जन आकर महात्मा जी के बारे में पूछने लगे। महात्मा जी ने उनको बेठने को कहा। थोडी देर बाद उस सज्जन ने पुन: महात्मा जी के बारे में जानकारी चाही तो महात्मा जी ने कहा "कहिये। मैं आपके सामने खड़ा हूं।" यह सुनकर वह सज्जन अवाक् हो महात्मा जी की सादगी को देखने लगा।

शिक्षा के तीन गुण–

महात्मा जी शिक्षार्थ तीन आवश्यक बातों "आदर्श अध्यापक के गुण, परिश्रम तथा प्रत्येक छोटी बात को समझने के महत्व" को जानते थे। इन्हीं का साक्षात्कार करते हुए जो उत्तमोत्तम शिक्षा का प्रचार व प्रसार वह कर पाए ऐसा अन्यत्र दुर्लभ है वह जानते थे कि प्रत्येक शिक्षा संस्था की आत्मा विद्यार्थी होते हैं। अत: विद्यार्थी का सम्मान करते हुए, उनका सर्वांगीण विकास करना तथा उसको उचित सम्मान देना प्रत्येक अध्यापक का आवश्यक कर्त्तव्य होता है। महात्मा जी ने जीवन पर्यन्त इस कर्तव्य का पालन करते हुए समाज व राष्ट्र के लिए कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक तैयार करने के लिए विद्यार्थियों में तप, त्याग, कर्त्तव्य परायणता, स्वालम्बन, मितव्ययिता इत्यादि के गुण पैदा किए।

महात्मा जी के इस त्यागमय तपस्वी जीवन को देखते हुए यह प्रश्न मन में उठता है कि यदि महात्मा जी गृहस्थी थे तो फिर सन्यासी किसे कहा जाये? अत: चाहे महात्मा जी ने व्यावहारिक रूप से सन्यास दीक्षा लेने की रूढ़ि को पूर्ण नहीं किया था, किन्तु वास्तव में वह सच्चे अर्थों में सन्यासी थे।

नव वर्ष जनवरी से नहीं, अपितु चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है

□ ले० [illegible]

जब हमारे देश के दीवानों ने स्वतंत्रता आन्दोलन छेड़ा था, तो उनके हृदय में भारत को आजाद करके वैदिक संस्कृति अपना कर देश को खुशहाल करने का संकल्प था। परन्तु अंग्रेजों ने सत्ता सौंपने से पूर्व देश को मानसिक रूप से गुलाम करने के षड्यन्त्र को क्रियान्वित किया था।

आज पूरे देश के लोग ईसवी नववर्ष का स्वागत करते हुए ग्रीटिंग कार्ड आदि के माध्यम से अरबों रुपये खर्च कर देते हैं जो मूल रूप से स्वयं को हिन्दू या आर्य कहते हैं, वही लोग कर रहे हैं। हमारे देश का नाश करने का षड्यन्त्र अंग्रेजों ने सत्य को त्याग करके असत्य को स्वीकार्य करने का उपाय रेडियो, दूरदर्शन आदि के माध्यम से सौन्दर्य बढ़ाने का नकली उपाय सौन्दर्य प्रसाधन आदि को चुना है। इसे तैयार करने में गाय के खून, चर्बी आदि हिंसात्मक पदार्थों का उपयोग किया जाता है।

अंग्रेजों ने भारत को बर्बाद करने के लिए भारत के युवक युवतियों को निशाना बनाते हुए उनके चरित्र का नाश किया, और भोग-विलास को बढ़ाया त्याग की भावना नष्ट की। समर्पण व स्नेह माताओं से दूर किया।

ईसामसीह के जन्म के बाद से ईसवी सन् का प्रारम्भ हुआ। इसके अनुसार 2002वां वर्ष प्रारम्भ हो गया है परन्तु भारतीय संस्कृति के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नया वर्ष मनाया जाता था। इसमें शिशिर ऋतु का समापन तथा पौधों में नई कोपलें लगती हैं, पुराने पत्ते गिरते हैं। प्रकृति का सौन्दर्यीकरण ईश्वर की व्यवस्था में होता है। किसान उसे देख कर प्रसन्न होता है। अपनी प्रसन्नता को व्यक्त करते हुए हजारों की संख्या में एकत्रित होकर यज्ञ (हवन) करते थे। हवन से पर्यावरण शुद्ध होता था। इच्छानुसार वर्षा होती थी। रोग का नाश और चरित्र की रक्षा होती थी। यज्ञ से प्रेरणा मिलती थी कि जिस प्रकार यज्ञ कुंड में हवन सामग्री डालने से अग्नि के माध्यम से फैलती है, इससे प्राणिमात्र का कल्याण होता है। इसी प्रकार हमारे प्रत्येक कार्य से प्राणिमात्र का कल्याण हो, ऐसा प्रयास करते थे।

करोड़ों वर्ष पुराने आर्यावर्त की सभ्यता का नाश करने का प्रयास अंग्रेजों ने नग्नता, काम-वासना आदि के माध्यम से किया। हमारी सभ्यता में सूर्योदय से पूर्व उठ कर अपने दैनिक कर्म को करने की परम्परा है, जबकि पाश्चात्य सभ्यता में दिन निकलने तक सोने वाले को महान कहते हैं। आज हमारे देश के माता-पिता, भाई-बहन आदि गन्दे-गन्दे, नाच-गाना करते हुए नये वर्ष का स्वागत करते हैं, जबकि वैदिक धर्म में ईश्वर का स्मरण करते हुए हवन के माध्यम से सुगन्धि को फैलाकर अन्धकार से प्रकाश, अज्ञान से ज्ञान की ओर बढ़ने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की जाती थी लोग एक दूसरे के दुःख में सहयोग करते थे।

आज भारत के लोगों द्वारा पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने के कारण लोग हमारे ही धन को छल से लूटकर हमारे ऊपर धर्मान्तरण का जाल फैलाकर हमारे ही भाईयों को शत्रु बना रहे हैं। हम लोग अपने ही भाई को अपने से अलग करके अपना अंग काटने को पवित्र मानने लगे। भारतीय बच्चे मां को मम्मी, पिता को डैडी कहते हुए जीवित माता-पिता को मृत घोषित करते हैं, ये शब्द सुनकर माता-पिता बहुत प्रसन्न होते हैं, ऐसा लगता है कि उनका बेटा बहुत बड़ा कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। जब वही बच्चा अपने बूढ़े माता-पिता को घर से निकाल देता है, तब बेटे की शिकायत करते हुए बिलखते हैं, परन्तु तब बहुत देर हो चुकी होती है।

ऐसी समस्या से बचने का एकमात्र उपाय है कि हम इस चुनौती को स्वीकार करते हुए हवन की परम्परा को अपनायें, स्वयं को उर्ध्वगामी बनाये। गायों की रक्षा करें वैदिक वाक्यों का प्रचार करें। नग्नता पूर्ण रूप से बन्द करें कान्वेन्ट शिक्षा प्रणाली का समापन, वैदिक शिक्षा का प्रारम्भ करें, ईश्वर का धन्यवाद यज्ञ द्वारा करें। सद्विचारों के प्रचारक बनकर शहीद देश भक्तों के स्वप्न को साकार करने की परम्परा को आगे बढ़ावें, जिससे आर्यावर्त पुनः जगत गुरु बनकर विश्व का मार्ग दर्शन कर सकें।

... परिवारों के 750 से ...क धर्म में दीक्षित

उड़ीसा के कोरापुत जिले के पतांगी ब्लाक के पसवानायक ग्राम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश में उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में श्री स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा एवं देखरेख में चल रहे धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत वैदिक धर्म की दीक्षा एवं पुनर्मिलन का एक विशाल कार्यक्रम 25. 26 मार्च को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें 198 परिवारों के 750 से अधिक ईसाई वैदिक धर्म में दीक्षित हुए। कार्यक्रम का संचालन सभा के उपप्रधान श्री पं. विशिकेसन जी शास्त्री एवं आदित्य गुरुकुल आश्रम कुन्दुली के आचार्य ब्र. विनय कुमार जी ने किया। यह आयोजन सभा के प्रचारक श्री ब्र करुणाकर जी के अनथक परिश्रम से सम्पन्न हुआ

इस अवसर पर आसपास के 20 ग्राम के 5 हजार से अधिक नर-नारी यज्ञ और दीक्षा कार्यक्रम को देखने के लिए उपस्थित थे। दोनों दिन निरन्तर ऋषि लंगर भी चलता रहा। इस अवसर पर अनेक वक्ताओं ने भी वैदिक धर्म की विशेषता बतलायी।

सम्बलपुर जिले के सुबनपुर ग्राम में 25 ईसाई परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित :-धर्म रक्षा महाभियान की इसी शृंखला में सुबनपुर ग्राम में भी आचार्य सत्यप्रिय जी गुरुकुल आमसेना की अध्यक्षता में पुनर्मिलन एवं वैदिक धर्म दीक्षा का कार्यक्रम 25 मार्च को सम्पन्न हुआ। यज्ञ एवं कार्यक्रम का संचालन ब्र. दीव्येश्वर जी व्याकरणाचार्य गुरुकुल आमसेना ने किया। इस कार्यक्रम को देखने के लिए एक हजार से अधिक नर-नारी उपस्थित थे। इन दीक्षा लेने वालों को आशीर्वाद देने के लिए श्री ब्र गणनाथ जी, ब्र वेद मित्र जी, श्री तेजकरण जी ओझा आदि का आशीर्वाद एवं उपदेश हुआ। इस कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय अध्यापक श्री सरोज कुमार आर्य द्वारा किया गया। अन्त में ऋषि लंगर के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—सुदर्शनदेवार्य "व्रती"

आचार्य शम्भु प्रकाश वर्मा का देहावसान

आर्य समाज सिरपुर कागज नगर एवं आर्य समाज इसेगांव के संस्थापक, आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता, समाज सेवी, प्रसिद्ध विद्वान्, स्वाध्यायशील, चित्रकार, आयुर्वेद शास्त्र के ज्ञाता श्री आचार्य शम्भु प्रकाश वर्मा का देहावसान 19-3-2002 को सायं आठ बजे हो गया। उन्होंने आर्य समाज को नई दिशा दी है उनकी प्रेरणा से लड़कों का गुरुकुल तथा नन्दी ग्राम, आशद तला, मेदिनीपुर में कन्या गुरुकुल की स्थापना हुई। उनकी प्रेरणा से पं. निर्मलचन्द शास्त्री, पं. सुशील कुमार शास्त्री व ओम प्रकाश (भजनोपदेशक) डा. दुलाल चन्द्र जैसे विद्वान् पुरोहित आर्य समाज का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। वह अत्यन्त निडर व साहसी व्यक्ति थे। उन्होंने स्थान-स्थान पर जाकर आर्य समाज का प्रचार किया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया जिसमें 30 किलो देसी घी, 25 किलो हवन सामग्री, चन्दन, अगर-तगर की आहुतियां सैंकड़ों लोगों ने दी। उनके पुत्र संजय, अभय और रवि ने घी की आहुतियां दीं। सैंकड़ों लोगों ने उन्हे अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

—दुलाल चन्द, विद्यावाचस्पति

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना में फ्री मैडीकल कैम्प

आर्य समाज हबीबगंज, लुधियाना में चल रहे धर्मदेवी आर्य फ्री औषधालय के तत्वावधान मे 12 मई 2002 रविवार को प्रात:) 10 बजे से 4 बजे तक फ्री मैडिकल कैम्प लगाया जा रहा है। जिसमें पंजाब के छाती एवं तपेदिक के रोगों के प्रसिद्ध माहिर डा. आई.एस. छाबड़ा चीफ MBBS, DTCD, PCMS I मैडिकल आफीसर मरीजों का चैकअप करेंगे। डिस्पैन्सरी के इन्चार्ज डा. सुरेश जी राजपाल जी ए.एम.एस. डा. मुनीश जी गांधी BEMS उनकी सहायता करेंगे। छाती के हर प्रकार के एवं तपेदिक के रोगियों को फ्री चैकअप, फ्री एक्सरे एवं फ्री दवाई दी जाएगी।

—आशानन्द आर्य

आर्य समाज होडल में शिवरात्रि पर्व

आर्य समाज होडल में महाशिवरात्रि पर्व एवं महर्षि दयानन्द बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता वयोवृद्ध आर्य नेता श्री हेतराम गर्ग वानप्रस्थी ने की। सभा संयोजन श्री हृदय राम गर्ग ने किया।

इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रख्यात कवि पं नन्द लाल "निर्भय" सिद्धान्ताचार्य बहिन जनपद फरीदाबाद ने अपने भजनो-उपदेश मे महर्षि दयानन्द को मानवता का सपूत महान ईश्वर भक्त धर्मात्मा एवम् महान देश भक्त बताया।

श्री नन्द लाल निर्भय ने बताया कि महर्षि दयानन्द जी जैसा वेदों का प्रकांड विद्वान्, त्यागी, तपस्वी सन्यासी संसार मे कोई दूसरा नही हुआ। संसार का कल्याण महर्षि दयानन्द के बताए वैदिक मार्ग पर चलने से ही होगा।

आर्य नेता चौ. मया लाल पूर्व विधायक हसनपुर (हरियाणा) ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को युवा युग द्रष्टा व महान नेता बताया। श्री हेतराम गर्ग ने सभी विद्वानो व श्रोताओ का उत्सव में पधारने पर आभार व्यक्त किया।

—कृष्णा खेत्रपाल

अंहकार त्याग कर अपनी गलती होने पर क्षमा मांग लें।



आर्य समाज तलवाड़ा द्वारा हवन यज्ञ एवं वेद प्रचार

7-4-2002 को आर्य समाज तलवाड़ा द्वारा वहां से 5 कि.मी. दूर गांव धराड़ी जिला होशियारपुर में श्री अमर नाथ जी के निवास स्थान पर विशाल यज्ञ किया गया। श्री अमर नाथ जी के घर पर पांच, छः गांवों से सदस्य आये हुए थे जिनकी संख्या सैंकड़ों में थी। पं. परमानन्द जी ने बहुत श्रद्धा से हवन करवाया। उसके उपरान्त श्री मनोहर लाल जी आर्य ने हवन का हमारे जीवन में क्या लाभ है? सत्य ज्ञान और सत्य कर्म के द्वारा ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है इस विषय पर बहुत प्रभावशाली विचार दिये। तलवाड़ा से पं. नरेश जी और धर्मपत्नी स्वर्णा शर्मा जो कि भटेड़ गांव से तलवाड़ा आर्य समाज मन्दिर में प्रत्येक इतवार आते हैं विशेष रूप से वहां गये। अमर नाथ जी के सभी परिवार के सदस्य आर्य समाज के रंग में रंगे हुए हैं। परिवार के सदस्यों ने ही बहुत सुन्दर भजन, बाजे, ढोलक और चिमटे के साथ गाकर कीर्तन किया जो बहुत सुन्दर था। आर्य समाज तलवाड़ा का प्रयास है कि गांवों में बहुत से आर्य समाज की विचार धारा के बुजुर्ग मिल जाते हैं इन सबको इकट्ठा करके यहां विशाल आर्य समाज का संगठन तैयार किया जाए। इसलिए यहां बहुत पुराने आर्य समाजी सदस्यों से भी भेंट हुई सभी ने विश्वास दिलाया कि हम आर्य समाज मन्दिर में आया करेंगे। बाद में सभी गांव वालों के लिए लंगर का कार्यक्रम भी बनाया गया था लंगर के समय कम से कम 1500 के लगभग लोग पहुंच जाते थे। प्रोग्राम बहुत सफल हुआ और आर्य समाज का प्रचार भी बहुत अच्छा हुआ।

—मनोहर लाल आर्य, मन्त्री

भठिण्डा में पारिवारिक सत्संग

पारिवारिक सत्संगों एवम् हवन यज्ञ शृंखला में अब की बार श्रीमती शान्ति जिंदल (प्रिंसिपल आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल) भठिण्डा एवम् श्री शिवप्रकाश जी गोयल के आर्य परिवार में उनके सुपुत्र असीम कुमार गोयल के तेइसवें जन्म दिवस पर पारिवारिक सत्संग एवम् हवन यज्ञ गुरुकुल बठिण्डा से पधारे ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी "वैदिक मिश्नरी" के सानिध्य में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान श्रीमती शान्ति जिन्दल का पूरा परिवार बड़ी श्रद्धा के साथ उपस्थित रहा और ब्रह्मचारी जी ने सुमधुर ढंग से हवन यज्ञ एवम् सत्संग के महत्त्व पर प्रकाश डाला साथ ही जन्म दिवस मनाने के महत्त्व को भी समझाया। उपस्थित जनों ने पुष्प वर्षा कर यजमान् को दीर्घ जीवन एवम् सुस्वास्थ्य का आशीर्वाद दिया। अन्त में शान्ति पाठ एवम् प्रसाद वितरण द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अमृतसर में विश्व शान्ति यज्ञ

आर्य समाज लक्ष्मणसर के तत्वावधान में दिनांक 24 मार्च रविवार को प्रो. कालोनी तिलक नगर नजदीक भाईयां का शिवाला के खुले चौक में 'ऋषिबोधोत्सव' के उपलक्ष्य में 'विश्व शान्ति यज्ञ' का आयोजन किया गया। बहुत लम्बा चौड़ा पंडाल लगाया गया। ओ३म् के ध्वजों से सारा वातावरण देखते बनता था। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रिं. आज्ञा पाल जी मेहता ने की। यज्ञ के ब्रह्मा के सन्दर्भ में श्री विजय कुमार जी शास्त्री ने यज्ञ करवाया, व यज्ञ का सार बताया।

कार्यक्रम में श्री इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से समय बांध दिया। कार्यक्रम में जहां सभी आर्य समाजों के आर्य बन्धु उपस्थित थे वहीं इलाका निवासियों का सहयोग सराहनीय था। श्री प्रवीण कुमार, इन्द्रपाल महेन्द्र शर्मा, नरदेव राय, संजीव आर्य, सोमेश कपूर, प्रिं विनोद पाल, जुगल किशोर आहूजा, संजय कुमार, मा. वजीर चन्द जी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष सहयोग दिया।

—सोमेश कपूर, मन्त्री

[illegible]

मानवीय जीवन की सफलता हेतु प्रत्येक क्षेत्र में विकास की महती आवश्यकता है। प्रथम शारीरिक विकास, द्वितीय मानसिक विकास तृतीय बौद्धिक विकास तथा चतुर्थ है आत्मिक विकास। इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास प्राप्त करने के लिए योगाभ्यास का प्रमुख स्थान है।

ये शब्द आर्य समाज से. 9 पंचकूला में ध्यानयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए शिविराध्यक्ष डा. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने कहे। पातंजल योगधाम, आर्य नगर हरिद्वार के अध्यक्ष स्वामी जी प्रतिवर्ष यहां मार्च के अन्तिम सप्ताह में पधारते हैं। प्रातः 5.45 से प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा एवं ध्यान का एक वैज्ञानिक प्रक्रिया से प्रशिक्षण देते रहे हैं। जिससे पंचकूला के अतिरिक्त चण्डीगढ़, कैथल, पटियाला आदि स्थानों से साधक साधिकाएं आकर स्वामी जी से लाभ प्राप्त करते रहे हैं।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की मान्यता है कि गृहस्थ में योग के साथ यज्ञ आवश्यक है तथा यज्ञ के साथ योग का अभ्यास प्रत्येक के लिए अनिवार्य है। प्रातः यज्ञ के बाद यज्ञ तथा योग का महत्त्व वेद मन्त्रों के सरल विवेचन से स्वामी जी समझाते रहे हैं। सृष्टि यज्ञ, मानव शरीर यज्ञ, पारिवारिक सन्तुलन यज्ञ तथा यौगिक यज्ञों को वेदमन्त्रों की व्याख्या में बताया। सायंकालीन सत्र में प्रतिदिन 6 से 8 बजे तक योगाभ्यास तथा सत्संग का कार्यक्रम विधिवत् चलता रहा। आसनों के पश्चात् सन्ध्या का क्रम रहा उसके उपरान्त साधना की प्रेरणा परक भजनों का सम्मिलित गान स्वामी जी के द्वारा होता था। तत्पश्चात् [illegible] कार्यक्रम निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। अन्त में स्वामी जी का प्रवचन योग दर्शन के अनुसार होता रहा।

योग दर्शन के द्वितीय साधनपाद की व्याख्या करते हुए स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती सरल शब्दों के द्वारा साधक-साधिकाओं को ज्ञानामृत से तृप्त करते रहे। उन्होंने इस प्रवचन माला में तप की व्याख्या करते हुए बताया कि मनुष्य के पूर्ण विकास हेतु तप की महती आवश्यकता है। बिना तप के योग सिद्ध नहीं होता। द्वन्द्व-जाड़ा-गर्मी, भूख-प्यास, हानि-लाभ मान-अपमान ये अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने आपको सम रखना तप है। संसार के अन्य कार्यों में भी तपस्वी कर्मशील ही सफल होते हैं। तप से ही हमारी अनादि क्लेश वासनाएं समाप्त होती हैं।

स्वाध्याय के अन्दर-आत्म चिन्तन, मोक्षदायी ग्रन्थों का स्वाध्याय तथा गायत्री जप एवं 'ओ३म्' नाम का जप बताया। स्वाध्याय तथा योगाभ्यास ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों से ही ईश्वरानुभूति होती है।

ईश्वर प्रणिधान का अर्थ है ईश्वर पर पूर्ण भरोसा। अपने श्रेष्ठ कर्मों को निष्काम भाव से सम्पन्न करके, कर्तापन का अहंकार त्याग कर ईश्वर को समर्पण करना। यह क्रिया योग जनसामान्य के उपयोगी एवं आवश्यक है। शिविर में आसनों का अभ्यास जितेन्द्र पुरुषार्थी ने कराये। यज्ञ का संचालन पं. राममूर्ति पुरोहित जी ने किया। सम्पूर्ण शिविर का संयोजन समाज के मन्त्री धर्मवीर बत्रा ने किया। इस शिविर में श्रद्धालु योगप्रेमी 100 के लगभग भाग लेते रहे।

—मन्त्री

बधावा (भठिण्डा) में हवन यज्ञ सम्पन्न

22-3-2002 को बधावा जिला भठिण्डा में बधावा हास्पीटल में कार्यरत चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी श्री कपूर चन्द जी आर्य (नेत्रहीन) के सत्संग व यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री पं. राजेन्द्र जी शास्त्री ने यज्ञ करवाया। जिला आर्य सभा के महामन्त्री श्री तरसेम आर्य, श्री चमन लाल जी मेहता-मन्त्री, श्री कृष्ण लाल जी अटाना प्रचार मन्त्री व स्त्री आर्य समाज सिरकी बाजार की महिलाओं ने इस सत्संग में भाग लिया। इस अवसर पर हास्पीटल को ओ३म् के झण्डों से सजाया गया। कार्यक्रम बड़ा सफल रहा। अस्पताल के बहुत से कर्मचारियों व स्टाफ ने इसमें भाग लिया और भविष्य में भी इस प्रकार के यज्ञ करने की कामना की।

—प्रचार मन्त्री

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि न पी बी 0331/2002

(3 प्रतिया)
2277 श्री पुस्तकाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | दूरभाष 292926

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 3 सृष्टि सवत 1960853102, 28 अप्रैल तथा 5 मई, 2002 दयानन्दाब्द 179

परमात्मा के अद्भुत् चमत्कार इस संसार में उस की दैवी सत्ता को प्रकट करते हैं

ले० श्री देवी दयाल शर्मा, "शर्मा निवास" स्ट्रीट न.-4 120, माडल टाउन, अमृतसर

प्राय देखा और सुना भी जाता है कि कुछ लोग और किसी कारण परमात्मा को उपालम्भ देते रहते हैं कि वह जब ससार का मालिक है और सब जगह मौजूद है तो वह दिखाई क्यो नहीं देता। मैं उनसे पूछता हू क्या आप अपनी आख की पुतली को इस शरीर के नेत्र द्वारा देख सकते हैं। जब आख को अपनी पुतली नजर नही आती तो वह भी दिखाइ नहीं देता। उस परम पिता परमात्मा को ज्ञान द्वारा ही देखा जा सकता है या जो नेत्रो के ज्ञान मे निपुण हैं (Ophthalomology) अर्थात् जो (Ophthalomologist) हैं जिन्हान नेत्रो का ज्ञान प्राप्त करने का विद्या उपार्जित की है। वही बता सकत हे कि नेत्र मे पुतली का स्थान कहा ह और उस का Function कत्तव्य क्या है बिना नेत्रो की विद्या (Science) प्राप्त किए हर एक इन्सान नेत्र द्वारा पुतली को नहीं दख सकता। ऐसे लोग अनुभव नहा करत कि परमात्मा की कोई शक्ल है सूरत है वह अकाय है निराकार है। इन लोगो को तो केवल इतना ही पता है कि खाओ-पीओ और मौज उडाओ। यही केवल उनके जीवन का उद्देश्य है।

कुछ लोगो की एक और श्रेणी है जो परमात्मा को नहीं मानते हैं। उनका मन्तव्य यह है कि ससार की सब वस्तुए अपने आप बन रही हैं और अपने आप बिगड रही हैं। उनका न कोई बनाने वाला है और न ही बिगाडने वाला है। यह सब का सब (Per Chance) ही हो रहा है। यह सब अकस्मात हो रहा है। सूर्य, चान्द, सितारे बिजली अपनी सत्ता से चमक रहे हैं। कोई आत्मा परमात्मा नहीं जा इनको गति दे रहा है। यदि ऐसे लोग महर्षि कठ के लिखे मन्त्र अर्थ की पढें तो इनकी आखें खुल जाए और ईश्वर की सत्ता को तस्लीम करे –

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकम नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयम अग्नि। तमेव भान्त अनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिद विभाति।

न ही सूर्य न ही चन्द्रमा न ही सितारे और न ही बिजली अपनी शक्ति से चमक सकते हैं। यह केवल परमात्मा की अद्भुत ओर अनुपम चमक है जो इन सब का प्रकाशित करती है। गीता न भी इस बात की पुष्टि की है–दिवि सूर्य सहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।

यदि सा सदृषि सा स्यादभासातस्य महात्मन ॥

गीता 11 12

परमात्मा का प्रकाश महान से महान है। यदि हजारो सूर्य एक दम चमके तो वो परमात्मा के महान प्रकाश के कदाचित ही सदृष हो। परमात्मा के भक्त उसकी भक्ति में लीन हो कर उसकी महान चमक-दमक को अत्यन्त प्रशसा करते हैं और उसकी जुस्तजु मे ही मग्न हो जाते हैं।

जिन पुरुषो की आत्मा मे सदा नास्तिकता अपना डेरा जमा लेती है वह परमात्मा के कभी दर्शन नहीं पा सकते। उनके पास चमडा रहित नेत्र नहीं हैं अर्थात् उनकी अन्दर की आख नहीं खुलती हैं जिसके कारण वह ईश्वर को सैंकडो हजारो करोडो वर्षों के बीत जाने पर परम पिता परमात्मा को अपने भीतर अनुभव नहीं कर सकते। ऐसे मनुष्य जन्म मरण के चक्कर से छूट नहीं सकते क्योंकि उनको अन्धकार से प्यार है। उनकी धर्मरहित कर्मों मे चेष्टा रहती है। राजसिक और तामसिक विचार चौबीस घण्टे आठो पहर उनके भीतर अपना शासन जमाए हुए हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमारी रहनुमाई की है कि परमात्मा हमार शरीर मे कहा रहता है–नीचे लिखा गया है–

कण्ठ के नीचे दो स्तनो के बीच मे उदर के ऊपर जहा हृदयदेश है जिसको ब्रह्म नगर कहते हे उसमें एक सूक्ष्म गढा है और उसमे कमल के फूल के सदृष एक सूक्ष्म अवकाश है और उस अवकाश मे सर्वशक्तिमान प्रभु भीतर बाहर एक रस होकर भर रहा हे। उसकी घोर तपस्या करने से उसके दर्शन हो सकते हैं और कोई उत्तम मार्ग उस आनन्द स्वरुप के मिलन का नहीं है। (ऋग्वेद भाष्य भूमिका)

परमात्मा एक है और उसके तुल्य कोई नहीं है वह बड़ो से बडा है। वह सर्वशक्तिमान है सर्वज्ञ है उसके सब काम सर्वज्ञता पूर्ण हैं। जितना जितना पुरुष स्वतन्त्रता पूर्वक कर्म करता जाता है उतना ही वह सर्वज्ञतार्पूक मानव के कर्मों को देखते जाता है और उसके अनुसार फल देता है। वह सर्वव्यापक भी है। यदि परमात्मा की ऊचाई देखना चाहते हो तो आसमान की ओर देखो। यदि परमात्मा की गहराई देखना चाहते हो तो उसके बनाए हुए समुद्र की ओर देखो। यदि आप उसका न्याय देखना चाहते हैं तो उसके न्यायालय और अस्पतालो की ओर जरा ध्यान दो। यदि परमात्मा की परम सहनशीलता को मानव देखना चाहता है तो वृक्षो की ओर पृथिवी की ओर ध्यान करो। यह सब के सब उपर्युक्त उसकी महान सत्ता की ओर सकेत कर रहे हैं। यद्यपि परमात्मा सृष्टि का निर्माण करन वाला है और प्रलय भी वही करता है परन्तु वह इस चक्कर से बहुत परे है। वह कोई हरकत नहीं करता है। कोई स्थान ऐसा नहीं जिसम वह मौजूद न हो यदि हम सच्चे व सुच्चे दिल से उसकी भक्ति मे निमग्न रहते है तो वह हम पूरा फल देने मे किसी किसम का सकोच नहीं करता। थोडी भक्ति हम करेगे तो थोडा ही फल मिलेगा। (Lesser Devotion brings lesser reword)

बुत प्रस्ती (मूर्ति पूजा) परमात्मा की करनी दोष जनक है। इससे परमात्मा के दर्शन नहीं हो सकते क्योकि वह निराकार है कायावान नहीं क्रियावान है। परमात्मा वेद के माध्यम से मानव को निर्देश करते हैं "मैं हर वस्तु में मौजूद हू परन्तु मानव मेरी सत्ता को अज्ञानतावर्श नजर अन्दाज कर बुत्तो की पूजा करता है और मेरे तक नहीं पहुचता। नीचे ही ढूढता रह जाता है। मानव जीवन एक सुनहरी मौका है अपनी आत्मा की उन्नति करने का। हमें परमात्मा से प्रेम बढाने में अपना सब कुछ उसके अर्पण कर देना चाहिए। फिर ही उसके दर्शन होगे।"

(शेष पृष्ठ 8 पर)

महर्षि दयानन्द का प्रजा पालन

स्वराज्य से सुराज्य का निर्माण

ले० राधेश्याम वैदिक प्रचार मंत्री आ. प्र. सभा भीलवाड़ा (पालडी)

प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति, चाहे वह आर्यसमाजी हो या अन्य मतावलम्बी मुक्त कण्ठ से युग प्रवर्तक देशोद्धारक, आर्य राष्ट्र निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती को "स्वराज्य" का प्रथम मन्त्रदाता, युग प्रवर्तक और भारत का महान् क्रान्तिकारी विचारक मानता है। किसी भी दार्शनिक एवं क्रांतिकारी महापुरुष के विचारो को मानने से परिणाम घनात्मक होता है, यह विचार के चिन्तन पर निर्भर करता है। अस्तु! मेरी मान्यता व्यवहारिक पक्ष की है। यही कारण है कि भारत देश में अनेकानेक भागवद् दृष्टि वाले महापुरुषों ने जन्म लिया ओर अपना सर्वस्व राष्ट्र और धर्म के लिए लुटा कर कालानुसार आदर्श प्रस्तुत करके मुक्ति को प्राप्त हुए हैं। परन्तु भारत देश की स्थिति में उन अमूल्य उपदेशों एवं आदेशों का परिणाम कैसा रहा यह बात निष्पक्ष इतिहासकार एवं विचारक ही स्पष्ट कर सकते हैं। क्योंकि जहां तक मेरी मान्यता है, हम सब उपदेश सुनने के आदी है। उनको व्यवहार मे लाना हमारे लिए अब तक आवश्यक नहीं हुआ है। बस, इसी कमजोरी का परिणाम वर्तमान में हमारे समक्ष है।

राष्ट्र भक्त शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने आज से 125 वर्ष पूर्व मे अनुभव किया कि जो भारतवर्ष संसार का मुकुटमणि था, जो संसार भर को ज्ञान-विज्ञान का पाठ पढ़ाया करता था, वह सैंकड़ो वर्षो की दासता के परिणाम स्वरुप स्वयं ही अज्ञान और अनाचार में बुरी तरह फंस कर सब सुध-बुध खो बैठा है। इस भयावह स्थिति को देखकर भला ऐसा कर्मयोगी चुप कैसे रह सकता था?

महर्षि ने आर्यावर्त्त को पुनः पूर्व गौरव प्राप्त कराने के लिए जहां एक ओर विदेशी प्रभुता से उत्पन्न ईसाईयत और इस्लामियत से भयंकर टक्कर लेकर आर्य जाति को विनाश से बचाया वहां विदेशी दासता को उखाड़ कर फेंकने के लिए आर्यावर्त्त की प्रसुप्त क्षात्र शक्ति को जागृत करने के लिए राजा-महाराजाओं, राज्य कर्मचारियों एवं प्रजाजनों की आत्मा को झंझोड़ कर सचेत करने में अपने जीवन के अमूल्य दिनों में प्राणों की बाजी लगा दी। महर्षि के जीवन का अन्तिम भाग जोधपुर, उदयपुर, जयपुर, शाहपुरा आदि राज्यों में प्रचार यात्रा में बीता। इस दौरान स्वामी जी ने अनेक नरेशों से भेंट की, उन्हें राजधर्म की शिक्षा दी। सदाचार, देश भक्ति प्रजा-पालन का पाठ पढ़ाने के लिए उन्होंने मौखिक तथा पत्रों द्वारा रहस्य पूर्ण एवं हृदयमूलक उपदेश दिए। कुछ नरेशों को जो पत्र लिखे वे बड़े मार्मिक एवं तार्किक हैं, जिनके गहन अध्ययन से पता चलता है कि यदि तत्कालीन नरेशों ने उनका अक्षरशः पालन किया होता तो आज स्वराज्य की रूपरेखा कुछ और होती। वर्तमान में उसी भूल को हम लोग भी दोहरा कर, स्वयं पापमार्गी बनकर राष्ट्र की अवनति करने में गौरवानुभव कर रहे हैं। शायद ऐसा करना हमारे लिए राजनैतिक धरोहर है। इसका मूल कारण महर्षि दयानन्द को समझ नहीं पाने का है। जब स्वामी जी द्वारा स्थापित राष्ट्र धर्मोन्नति की पोषक आर्य-समाजों में भी राजनीति का दुष्चक्र चल पड़ा है तो कहने-सुनने के लिए शेष रहा ही क्या ? यदि ग्वाला स्वयं ही अपनी फसल में मवेशी चराकर आनन्दानुभूति समझ रहा हो तो भला वह दूसरों की फसल की रखवाली कैसे करेगा।

महर्षि ने अनेक पत्र लिखे हैं जो अब तक ज्ञात हुए हैं, उन्हें मनन करने से अवगत होता है कि महर्षि के हृदय में राष्ट्र को समुन्नत देखने की असीम वेदना थी। जिसके लिए उन्होंने तात्कालीन नरेशों को पत्रों और उपदेशों के माध्यम से काफी खरी खोटी बातें कहने में अपना कर्त्तव्य समझा। सचमुच में महर्षि निष्काम भावना से ओत-प्रोत थे। वे चाहते तो हमारी तरह स्वामी जी भी राजा लोगों की चमचागिरी करके अपना जीवन ठाट-बाट से गुजार सकते थे। लेकिन, वाह! मेरे ऋषि, जितनी पैनी वाणी, उतनी ही कलम। राजा-महाराजाओं को भी आपने नहीं छोड़ा। भला छोड़ते भी कैसे? स्वामी जी की मान्यता थी कि जब किसी तन्त्र को सुधारना हो तो उसके मूल यन्त्र को पकड़ लो। बस, सारी बीमारी का मूल उद्गम वही हैं। उस समय में भी प्रजातन्त्र खोखला ही था और आज भी है। लेकिन उस समय की बीमारी क्षेत्रीय थी और आज की बीमारी विश्व-व्यापी। लेकिन इन सबसे आर्य राष्ट्र को बचाने की दवा हमें महर्षि दयानन्द बता गये थे। यह बात सब जानते हैं कि जब चिकित्सक की पर्ची को मरीज या उसके परिजन नजर अन्दाज कर देते हैं तो परिणाम कैसा होता है? बस, गलती हमसे यहीं पर से हुई है। जिस प्रकार हमारा गुरु राजा लोगों की कमजोरी बता कर उन्हें सही दिशा निर्देश देने की परम्परा शुरू कर गया, हमें उसे बरकरार रखना चाहिए था। देखिए महर्षि ने कैसी छोटी-छोटी लेकिन असरदार दवाओं की पुडिया महाराजाओं को पकड़ाई थी।

श्रीः मद्राजराजेश्वर महाराजाधिराज श्री जोधपुर नरेश आनन्दित रहो।

1. इस देश में वर्षा प्रायः न्यून होती है। इसके लिए यदि मेरे कहे अनुसार एक-एक वर्ष में 10,000 रुपयों का घृतादि का नित्य प्रति और वर्षाकाल में चार महीने तक अधिक होम करावेंगें वैसे प्रतिवर्ष होता रहे, तो सम्भव है कि देश में रोग न्यून और वर्षा अधिक हुआ करे।

2. जैसे हड़के कुत्ते के दांत वा लार लगने से उसका दोष छूटना अति कठिन है। वैसे ही वेश्या, मद्यापान, चौपड, कनकौवे आदि मे व्यर्थ काल खोना ओर खुशामदी लोगों का संग करना राजाओं के लिए महा विघ्न कारक है और धन, आयु, कीर्ति ओर राज्य के नाश करने वाले होते हैं। मुझको बड़ा आश्चर्य है कि आप बड़े बुद्धिमान और शौर्यादि गुण युक्त होकर इनसे पृथक् क्यों नहीं होते।

3. जैसे आप इन नन्नी रंडी के घर को जाते उसकी मातादि रोगिणी को देखते हैं और जैसे एक दिन किसी अपने नौकर मुसलमान के लड़के के विवाह में घोड़े की लगाम पकड़ के पैदल चले थे, वैसा निन्दाकारक काम करना आपको शोभा कभी नहीं देता। किन्तु इनके जैसे महता विजय सिंह जी बीमार को जाकर देखते और जो अपने मारवाड़ के सरदार और भाई बड़े हैं जो कि राजा राज्य की उन्नति चाहने वाले हों उनके पुत्रों के विवाह में पैदल चलना आदि करते रहें तो सदा प्रशंसा लाभ और उन्नति होती रहे।

4 आप महाराजकुमार की शिक्षा के लिए किसी मुसलमान वा ईसाई को मत रखियेगा। नहीं तो महाराजकुमार भी इनके दोष सीख लेंगें और आपकी संतान राजनीति को न सीखेगी। न वेदोक्त धर्म की ओर उसकी निष्ठा होगी। क्योंकि बाल्यावस्था में जैसा उपदेश होता है वही दृढ़ हो जाता है। उसका छूटना दुर्घट है।

5. जैसे अपने गणेशपुरी आदि जो कि केवल बूरा चाल चलन सिखलाने हारे हैं उनका दुराचार देखके उनको सदा त्याग रक्खा है, वैसे वैश्या आदि मीठे ठगों से भी पृथक् आप क्यों नहीं रहते। जैसे मुसलमान और ईसाई आदि के टोपा, पैजामा, मुंडे, जूते, कोट, पतलून आदि के धारण से आप अपने उत्तम विचार से पृथक् रहे वैसे ही हजारह गुणों में वैश्यासंगादि में आप अपने अमूल्य समय को मत खोवें। आपका शरीर ऐसे क्षुद्र काम और विषयासक्ति और आराम के लिए नहीं है, किन्तु बड़े परिश्रम, न्याय, पुरुषार्थ से लाखह मनुष्यों के हितार्थ आप लोगों का शरीर है। देखिए आप। मनु स्मृति के सप्तम, अष्टम और नवम अध्यायों में कि राजाओं के लिए क्या-क्या कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य लिखा है। मुझको विश्वास है कि आप इन कड़वी और कल्याणकारक बातों को सुन कर प्रसन्न होंगें। अलमति विस्तेरण महामान्य वर्येषु। (आषाढ़ बदी 3 शनि. सं. 1940)

उपर्युक्त बाते मात्र आपका ध्यान महर्षि दयानन्द के दूरदर्शी चिन्तन और अपूर्व साहस का दिग्दर्शन कराने हेतु लिखी हैं। इस प्रकार के अनेक पत्र स्वामी जी ने अनेक राजा-महाराजाओ को लिखे थे। मूल बात यह है कि उस समय प्रजातन्त्र नहीं होते हुए भी महर्षि को वह माहौल मौन नहीं कर सका और आज हम लोग इतने कमजोर हो गए हैं कि अपने द्वारा चुनिंदा लोगों को भी सत्य कहने में भय महसूस करते हैं। महर्षि के भक्तो! यदि सही मायने मे राष्ट्र और धर्म को बचाना चाहते हो तो महर्षि के अधूरे सपनों को साकार करके दिखाओ। फिर देखिए कोई पोप या मुशर्रफ भारत में कदम रखने का साहस कैसे कर सकता है? आर्यजनो की एवं समाजों का शक्ति परीक्षण का काल चल रहा है।

सम्पादकीय.....

गुरुकुल कांगड़ी में अभूत पूर्व समारोह

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार को स्थापित हुए एक सौ वर्ष हो गए हैं। इसी उपलक्ष्य में 25 से 28 अप्रैल 2002 तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में बृहद शताब्दी समारोह हरिद्वार में मनाया गया।

इस समारोह का आरम्भ 25-4-2002 को यज्ञ से हुआ स्वामी दीक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व में पहले दिन का यज्ञ प्रातः 8 बजे आरम्भ हुआ। आचार्य वेद प्रकाश जी कार्यकारी कुलपति जी के नेतृत्व में यज्ञीय कार्यवाही आरम्भ हुई। उसके पश्चात् ध्वजारोहण हुआ, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न जी ने ओ३म् का ध्वज लहराया और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा ने गुरुकुल पताका लहराई। इसके पश्चात् सम्मेलन की कार्यवाही आरम्भ हुई।

24-4-2002 को जब हम हरिद्वार गुरुकुल में सायं काल पहुंचे तो हमें यह देख कर प्रसन्नता हुई थी हजारों लोग अलग-अलग टोलियों में अपने-अपने सिरों पर सामान उठाए गुरुकुल की ओर चले आ रहे हैं। 50 हजार से ऊपर लोग 24-4 2002 को ही पहुंच चुके थे। 20 हजार से अधिक लोग तो गुरुकुल में ही जहां जिसको स्थान मिला वहीं सो गया। बहुत से लोगों को आश्रमों, धर्मशालाओं आदि में ठहराया गया। कई महन्तों के पूरे-पूरे आश्रम शुल्क देकर लोगों के ठहरने के लिए ले गए थे।

सबसे बड़ी प्रसन्नता की बात यह थी कि गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, बंगाल, झारखण्ड, उड़ीसा, बिहार, नेपाल, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और पंजाब से बहुत बड़ी संख्या में लोग हरिद्वार पहुंचे। विदेशों से भी लोग आए थे कोई प्रदेश भारत का ऐसा नहीं था जहां से कुछ न कुछ लोग न आए हों।

हमें प्रसन्नता तब हुई जब हमने वहां देखा कि पंजाब से भी दो हजार से ऊपर लोग वहां पहुंच गए। कुछ स्थानों से बसों में लोग आए, कुछ टाटा सूमो आदि गाड़ियों द्वारा आए। कुछ ट्रेन से, कुछ निजी वाहनों से गुरुकुल में पहुंचे। सभा कार्यालय के कर्मचारियों ने पंजाब से आने वाले सभी लोगों की ठहरने की समुचित व्यवस्था की। सभा के कई अधिकारी व सदस्य वहां पहुंचे हुए थे। इस शताब्दी ने एक मेले का रूप ले लिया था। हरिद्वार के लोग यही कह रहे थे यह आर्यों का कुम्भ है। सारे भारत से व विदेशों से लोग इस कुम्भ पर आए हैं।

वास्तव में यह बृहद और महासम्मेलन था। मेले की तरह लोग चल फिर रहे थे। पुस्तकों की दुकानों पर व दवाईयों की दुकानों पर खरीदने वालों का मेला लगा रहता था। लोगों ने बहुत सा साहित्य व दवाइया खरीदी । गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी की अनेकों दवाईयां प्रसिद्ध है और लोकप्रिय हैं। फार्मेसी की दवाईयां खरीदने में लोगों ने विशेष रूचि दिखाई।

सबसे बड़ी बात यह है कि इस बार जो शोभा यात्रा निकाली गई उसका अगला छोर मोहन आश्रम में था और पिछला गुरुकुल में लगभग ग्यारह मील लम्बी यह शोभा यात्रा थी। बाजार में लोग कहते सुने गए कि इतनी बड़ी शोभा यात्रा हरिद्वार में आज तक नहीं निकली। जो लोग अपने वाहन लेकर आए थे वह अपने वाहन को साथ लेकर हो शोभा यात्रा में भाग ले रहे थे। गांव से लोग ट्रेक्टर ट्रालिया लेकर आए थे। सबसे आगे बैण्ड उसके पीछे 8 रथो पर प्रतिष्ठित महानुभाव विराजमान थे, हाथियों पर भी कई महानुभाव सवार थे। मोटर साईकलो, स्कूटरो पर लोग शोभा यात्रा मे चले रहे थे परन्तु अधिक संख्या में स्त्री-पुरुष पैदल चल रहे थे और ग्यारह मील तक यह लोग पैदल गए। लोग नाचते, कूदते, भजन गाते, नारे लगाते जा रहे थे। हरिद्वार के लोग बाजार में दोनों ओर खड़े होकर शोभा यात्रा में चलने वाले लोगों को देख रहे थे और कई स्थानों पर लोग पानी पिला रहे थे।

जब यह शोभा यात्रा मोहन आश्रम मे पहुंची तो वहां प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री ज्ञान प्रकाश जी चोपड़ा, श्री रामनाथ जी सहगल तथा डी.ए.वी. संस्थाओं के प्रतिष्ठित लोगों ने सारी शोभा यात्रा का हार्दिक स्वागत किया। वहां मंच से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कै. देवरत्न जी ने जनता को आह्वान किया कि वह आगे आकर जनता का नेतृत्व करें। उन्होंने कहा कि हम शीघ्र ही आर्य समाजों व सभाओं के सभी झगड़े समाप्त करने का प्रयास करेंगे।

यह शोभा यात्रा चिरस्मरणीय रहेगी। गर्मी की ऋतु होने के कारण उस दिन कुछ गर्मी थी परन्तु कार्यक्रम से एक दिन पहले वर्षा हो जाने के कारण गर्मी से कुछ राहत मिली।

आर्य समाज की शक्ति अथाह है जो लोग हरिद्वार गए हैं वह जानते हैं कि आर्यो मे कितना उत्साह है। जो लोग यह कहते हैं कि आर्य समाज शिथिल हो गया है उन्हें इस महा सम्मेलन में अवश्य जाना चाहिए था ताकि अपनी आंखों से वह लोग देखते कि आर्य समाज कितना शक्तिशाली है और कितना संगठित है। सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को इस सम्मेलन की व्यवस्था करने में कम समय मिला। यदि पूरा समय मिला होता तो पता नहीं कितने लोग वहां पहुंचते। लोगो का कहना था कि एक लाख से भी अधिक लोग इस समारोह में भाग लेने गुरुकुल में पहुंचे हैं।

मैं गुरुकुल के सभी अधिकारियों व सार्वदेशिक सभा के सभी अधिकारियों को बधाई देता हूं कि उन्होंने यह समारोह करके आय जनता में एक नए उत्साह का सृजन किया है।

मैं पंजाब के उन सब, बहन भाईयों का धन्यवाद करता हूं जो सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी के आदेश से भारी संख्या में हरिद्वार पहुंचे थे। मैं उन सभी आर्य संस्थाओं के अधिकारियों का भी धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस सम्मेलन की सफलता के लिए हमें धन भी भेजा है और हरिद्वार भी पहुंचे हैं। पंजाब का कोई भी ऐसा शहर नहीं था जहां से कुछ न कुछ लोग हरिद्वार न गए हों, सभा के अधिकारी सभा प्रधान श्री पं हरबंस लाल जी शर्मा, सभा वरिष्ट उप प्रधान श्री सुदर्शन जी शर्मा, सभा रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, सभा उप प्रधान चौ. ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, सभा कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, सभा मन्त्री श्री प्रेम भाटिया, अधिष्ठाता साहित्य विभाग श्री रामरत्न महाजन, मन्त्री श्री जगदीश अग्रवाल, आर्य वीर दल अधिष्ठाता श्री करतार नाथ आर्य, वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री जनक राज महाजन, श्री प्रियतम देव तथा अन्य कई अन्तरंग के सदस्य वहां पहुंचे थे। मैं इन सभी अधिकारियों का धन्यवाद करता हूं कि इन सबने अपना अमूल्य समय निकाल कर इस शताब्दी समारोह में भाग लिया। मैं पंजाब की उन सभी आर्य समाजों के अधिकारियों का भी धन्यवाद करता हूं जो इस समारोह में हरिद्वार पहुंचे। सभा कार्यालय के सभी कर्मचारी भी इस समारोह में पहुंचे थे और उन्होंने वहां आवास व्यवस्था में हाथ बंटाया।

मैं जिला केन्द्रीय सभा यमुनानगर के अधिकारियों व यमुनानगर की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों व वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर के आचार्य व विद्यार्थियों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने आर्य समाज माडल टाऊन यमुना नगर में पंजाब से जितने भी लोग बसों द्वारा गए हैं उन्हे बहुत अच्छा भोजन कराया और सभी का स्वागत किया। हम इस स्वागत को कभी भूल नहीं सकेंगे। ऐसे ही सहारनपुर पहुंचने पर जिला सहारनपुर की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने वैशाली पैट्रोल पम्प पर हमारा स्वागत किया और सभी को जलपान कराया।

अन्त में सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों विशेष रूप मे कै. देवरत्न, श्री विमल वधावन, श्री वेदव्रत जी शर्मा, श्री जगदीश जी आर्य, श्री सोमदत्त महाजन तथा गुरुकुल कांगड़ी के समस्त अधिकारियो व प्रबन्धकों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस समारोह को रात-दिन एक करके इसे सफल बनाया।

(नोटः—विस्तार से इस समारोह की कार्यवाही आगामी अंक में पढ़िए)

—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

महामति विदुर और उनका नीतिशास्त्र

ले० डा. भवानीलाल भारतीय

बाल्मीकीय रामायण तथा भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यास रचित महाभारत वाङ्मय के दो अमर रत्न हैं। महाभारत के बारे मे कहा गया है-

धर्म अर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-पुरुषार्थ चतुष्टय का विवेचन इस ग्रन्थ में हुआ है। जो विषय यहां विवेचित हुए हैं, वे अन्यत्र भी मिलेंगे किन्तु जिनका उल्लेख यहां नहीं हुआ, वे अन्यत्र भी शायद ही मिलें। धर्म, अध्यात्म, नीति, लोक-परलोक, कर्त्तव्याकर्त्तव्य, सभी मनुष्योपयोगी विषय महाभारत में विवेचित हुए हैं। इसीलिए कहा गया है:-

भारत व्यपदेशेन ह्याम्नायार्थश्च दर्शितः

महाभारत के व्यास ने महामुनि व्यास ने वेदार्थ को ही स्फुट किया है।

इस महाभारत में कौरव पाण्डवों की कथा तो प्रधान है ही, अन्यान्य उपाख्यान प्रसंग एवं संदर्भों की आवतारणा कर महर्षि धर्म, नीति, सदाचार, लोक व्यवहार, राजधर्म जैसे अनेक उपयोगी विषयों को निरूपति किया है। जब हम रामायण और महाभारत के पात्रों पर तुलनात्मक दृष्टि के विचार करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि रामायण में सत्त्वगुण प्रधान पात्रों की अधिकता है जब कि महाभारत में ऐसे पात्र कम हैं। तथापि योगेश्वर कृष्ण, वयोवृद्ध, अनुभववृद्ध तथा ज्ञानवृद्ध भीष्म तथा महामति विदुर जैसे महापुरुषों की विद्यामानता में महाभारत के कालको भी वरीयत देनी ही पड़ती है। महात्मा विदुर को धर्म का अवतार कहा गया है। वे अत्यन्त बुद्धिमान्, नीतिनिपुण, धर्मज्ञ व्यवहारकुशल तथा ईश्वरभक्त थे। धृतराष्ट्र, पाण्डु तथा विदुर तीनों भाई थे। धृतराष्ट्र ने तो उन्हें मंत्री के पद पर विभूषित किया था। पाण्डवों के धर्म पथ का अनुगामी मानने के कारण विदुर की सहानुभूति पाण्डव पक्ष की ओर रही समय समय पर उन्होंने पाण्डवों की सहायता की तथा असंख्य विपत्तियों से उन्हें बचाया। कृष्ण और विदुर के स्नेह को तो अतुलनीय कहा जा सकता है। जब कृष्ण दुर्योधन से युद्ध से विरत होने तथा पाण्डवों से विग्रह छोड़कर शान्तिपूर्वक रहने का प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर जाते हैं तो दुर्योधन उन्हें राजकीय अतिथि के रूप में सम्मानितकर भोजन का न्योता देता है। किन्तु कृष्ण उसके इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर देते हैं तथा कहते हैं-

सम्प्रीति भोज्यान्यन्नानि आपद् भोज्यानि वा पुनः।

न च सम्प्रीयसे राजन् न चैवापद्गता वयम्॥

उद्योगपर्व 11/25

हे राजन् भोजन का प्रस्ताव दो स्थितियों में स्वीकार किया जाता है। जिससे हमारी प्रीति होती है उसके यहां भोजन करते हैं अथवा आपत् काल में तो कही भी भोजन किया जा सकता है। मेरा आपका परस्पर प्रेम तो है नहीं और न मैं ही विपत्तिग्रस्त हूं। तदनन्तर कृष्ण ने महामति विदुर का आतिथ्य और भोजन ही स्वीकार किया।

महाभारत जैसे विशाल ग्रन्थ में नीति तत्व की चर्चा अनेकत्र आई है। शान्ति पर्व और अनुशासन पर्व को धर्म, नीति, अध्यात्म, सदाचार तथा कर्त्तव्याकर्त्तव्य के ज्ञान की दृष्टि से पठनीय तथा आलोचनीय है ही, उद्योगपर्व के अन्तर्गत आठ अध्यायों की 'विदुर नीति' इस ग्रन्थ का एक महत्त्वपूर्ण अंश है। जिस समय महाराज धृतराष्ट्र अपने पुत्रों के अधर्म, अनीतिमय आचरण तथा पाण्डवों के प्रति अन्यायपूर्ण आचरण की बातें सुन सुनकर तथा स्वयं को सर्वथा विवश जानकर सुख की नींद नहीं सो जाते, अचानक उन्हें महामति विदुर का स्मरण हो आता है। वे द्वारपाल को विदुर को बुला लाने का आदेश देते हैं। विदुर के आने पर वे अपना मानसिक कष्ट उसे बताते हैं तथा उससे आग्रह करते हैं कि वह उनसे श्रेय की बात कहे। प्रज्ञाचक्षु राजा को विदुर की बुद्धिमत्ता तथा नीतिमत्ता पर पूरा भरोसा है। इस प्रसंग में राजा ने विदुर को महाप्रज्ञ, दीर्घदर्शन, धर्मार्थ कुशल तथा कवि जैसे विशेषणों से विभूषित किया। उसने तो यह भी स्पष्ट कर दिया कि राजर्षि पुरुवंशियों में तुम्हीं विद्वानों के भी माननीय हो-अस्मिन् राजर्षिवंशे हि त्वमेकः प्राज्ञ सम्मतः॥1 l25

राजा के मानसिक कष्ट तथा आत्म ग्लानि से उत्पन्न पीड़ा को अनुभव कर महामति विदुर ने अपने अग्रज को जो नीति सम्मत: उपदेश दिये वे ही विदुरनीति के आठ अध्यायो तथा 513 श्लोकों में समाविष्ट हुए हैं। आरम्भ में विदुर ने पण्डित के लक्षण बताये। यह प्रकरण 'आत्मज्ञान समारम्भ' से प्रारम्भ होकर 'श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा यस्त श्रुतानुगा' (2134) तक चलता है। पण्डित के लक्षण बताकर विदुर मूढ़ के लक्षण भी बताते हैं। तथा स्पष्ट कहते हैं-

अमित्रं कुरुते मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च।

कर्म चारभते दुष्टं तमाहुर्मूढचेतसम्॥1 l38

जो शत्रु को मित्र बनाता है और मित्र से द्वेष करता है, उसकी हानि करता है, दुष्ट कर्मों में लगा रहता है। वही तो मूढ़ चित्त वाला है।

विदुर नीति के प्रथमाध्याय में एक, दो, तीन आदि संख्याओं को लेकर नाना नीतियुक्त उपदेश दिये गये हैं। उदाहरण के रूप में कतिपय द्रष्टव्य हैं-

एकः क्षमावतां दोषो द्वितीयो नोपपद्यते।

यदेनं क्षमता युक्तमशक्तं मन्यते जनः॥1/53

क्षमाशील पुरुषों में एक ही दोष का आरोप होता है, वह यह कि ऐसे पुरुष को लोग कमज़ोर मान लेते हैं।

समाजवाद और समाज में साम्य भावना फैलाने की बातें तो बहुत होती हैं किन्तु आर्थिक दृष्टि से समाज में सच्चा सामंजस्य विदुर के निम्न परामर्श को मानने से ही स्थापित हो सकता है-

द्वावम्भसि निवेष्टव्यौ गले बध्वा दृढां शलाम्।

धनवन्तमदातारं दरिद्रं चातपस्विनम्॥' 1 l65॥

इन दो श्रेणियों के लोगों को गले में पत्थर बांध कर यदि जल में डुबो दिया जाये, तब भी कोई हानि नहीं है-ये लोग हैं-धनवान होकर भी अदानशील व्यक्ति तथा कृपण मनुष्य और दरिद्रता की डुगडुगी पीटने पर भी श्रम और कष्ट सहिष्णुता से जी चुराने वाला व्यक्ति।

विदुर की दृष्टि में नरक के तीन द्वार हैं-काम, क्रोध तथा लोभ। घर में चार प्रकार के लोगों का निरन्तर वास हितकर होता है-कुलवृद्ध, संकटग्रस्त कुलीन, धनहीन मित्र तथा निस्सन्तान बहिन। देवता, पितर, मनुष्य, संन्यासी और अतिथि इन पांच का सत्कार करने वाला यश का भागी होता है। ऐश्वर्य और उन्नति चाहने वालों को इन छः का त्यागकर देना चाहिए- निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध आलस्य तथा दीर्घसूत्रता (देर करने की आदत) अन्यत्र विदुर यह भी कहते हैं-धन की प्राप्ति, नीरोगता अनुकूल तथा प्रियवादिनी पत्नी आज्ञाकारी पुत्र तथा अर्थकरी विद्या ये छः मनुष्य के लिए सुखकारी होते हैं। लोक में भी 'पहला सुख नीरोगी काया' उक्तियों के द्वारा विदुर के मत को ही सम्पुष्ट किया गया है। राजा के लिए निम्न सात दोष त्याज्य बताये गये है - विषयासक्ति, शिकार, जुआ खेलना मद्यापान, कठोरवचन बोलना कठोर दण्ड देना तथा धन का दुरुपयोग। निम्न आठ गुण मनुष्य को दीप्तियुक्त करते हैं-बुद्धि कुलीनता, इन्द्रियसंयम, शास्त्रज्ञान पराक्रम, अधिक न बोलना (वाक संयम), यथाशक्ति दान तथा कृतज्ञता का भाव। इस प्रकार एक से दस संख्या पर्यन्त अनेक विषयों की चर्चा विदुर महाराज ने प्रथमाध्याय में की है।

विदुरनीति का दूसरा अध्याय मुख्यतः राजधर्म का विवेचन करता है। यों तो राजधर्म (हमारे शास्त्र राजनीति की अपेक्षा राजधर्म शब्द का प्रयोग अधिक समीचीन मानते हैं) का उपदेश मन्वादि स्मृतिकारों तथा शुक्र, कामन्दक आदि नीतिज्ञों ने विस्तार से किया है किन्तु विदुर तो स्वयं राजपरिवार के सदस्य होने, समसामयिक राजनैतिक घटनाओं तथा कूटनीतिपूर्ण षडयंत्रों के साक्षी होने के कारण राजधर्म का प्रवचन करने के अधिकारी थे। राजा को प्रजा से राजस्व का अधिग्रहण कैसे करना चाहिए। इसके लिए भौंरें द्वारा फूलों से मधु ग्रहण करने की उपमा विदुर ने दी है-

यथा मधु समादत्ते रक्षन् पुष्पाणि षट्पदः।

तद्वदर्थान्मनुष्येभ्यः आदधाद् विहिंसया॥2 l26

राजर्षि मनु ने भी प्रजा से कर वसूलने के लिए भ्रमर की उपमा दी है-यथाल्पाऽल्पमदान्त्याऽऽद्य वार्यो कोवत्सषट्पदाः।

तथा ऽल्पाऽल्पो गृहीतव्यो (मनु, 7 l1219)

(शेष पृष्ठ 5 पर)

महामति विदुर......
(पृष्ठ 4 का शेष)

उसका यह भी कहना है–

पुष्पं पुष्पं विचिन्वीत मूलच्छेदं न कारयेत्।

मालाकार इवरामे न यथाङ्गारकारकः ॥2 ॥8

जैसे माली उद्यान में एक एक फूल तोड़ता है, उसकी जड़ नहीं काटता, उसी प्रकार राजा यथावश्यकता पुष्पसंचक की भांति राजस्व ले ले। कोयला बनाने वाले की भांति वृक्ष को ही न कांटे।

राजा को चार चक्षु (गुप्तचरों द्वारा प्रजा का वृत्तान्त जानने वाला) बताते हुए विदुर कहते हैं–

गन्धेव गावः पश्यन्ति वेदैः पश्यन्ति ब्राह्मणाः।

चारैः पश्यन्ति राजानश्चक्षुर्भ्यामितरे जनाः ॥2 ॥34

विदुर नीति के द्वितीय अध्याय में कतिपय आध्यात्मिक प्रसंग भी आये हैं। कठोपनिषद् निरूपित शरीर रूपी रथ के रूपक का संकेत विदुर देते हे–

रथः शरीरं पुरुषस्य राजन्नात्मा नियन्तेन्द्रियण्यस्य चाश्वाः।

तैरप्रमत्तः कुशली सदश्वैर्दान्तैः सुखं याति रथीव धीरः ॥2 ॥54

मनुष्य का शरीर ही रथ है। बुद्धि सारथी है, इन्द्रियां अश्व हैं, इन्हें वश में कर, सावधान, चतुर एवं धीर पुरुष अपने वश में किये घोड़ों की भांति रथी की भांति सुखपूर्वक जीवन यात्रा करते हैं। उपनिषद्कार ऋषि ने इस प्रसंग को निम्न श्लोकों में व्यक्त किया है–

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथ मेव तु।

बुद्धिं सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥ कठ० 313

इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्।

आत्मेन्द्रिय मनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥3 ॥4

विदुर की दृष्टि में बुद्धि ही मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शन करती है। देवताओं को जिसकी रक्षा अभीष्ट होती है उसे वे उत्तम बुद्धि प्रदान करते हैं–

न देवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्।

यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्ध्या संविभजन्ति तम् ॥3 ॥40

वैदिक संहिताओं में इसीलिए बुद्धि को सर्वत्र महत्त्व दिया गया है। वेद का ऋषि 'यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते' के द्वारा देवजनों और पितरों के प्रदत्त मेधा की याचना करता है तो अन्यत्र देवताओं की भद्र सुमति में हित की चाहना करता है। वयं देवानां सुमतौ स्याम (यही भाव दर्शाता है)।

विदुर की स्मृति में वृद्धों से विरहित सभा को सभा कहना उचित नहीं है। वे वृद्ध सच में वृद्ध कहलाने के अधिकारी नहीं हैं जो धर्म की बात नहीं कहते हैं। वह धर्म नही जिसमें सत्य नहीं हैं और जो छलयुक्त है वह सत्य नहीं है। 'न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा' (3 ॥48) यह तो एक सूक्ति ही बन गई है।

विदुर कथित कई नीति शिक्षाएं अन्य शास्त्रों में यथावत् आई हैं तो कहीं कहीं किञ्चित परिवर्तित रूप में। उदाहरणार्थ अतिथि सत्कार के लिए विदुर कहते हैं:–

तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी न सूनृता।

सतामेतानि गेहेषु नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥4 ॥34

यह श्लोक इसी रूप में मनुस्मृति (3/101) में भी आया हैं। भाव यह है कि एस सद् गृहस्थ के घर मे अतिथि के लिए तृण का आसन, आसन बिछाने के लिए भूमि, पीने के लिए जल तथा मीठी वाणी तो सदा उपलब्ध रहती है।

अपने से बड़ों को अभिवादन करने मे छोटो को कैसा मनो वैज्ञानिक लाभ मिलता है, उसका उल्लेख विदुर इस प्रकार करते हैं–

उर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति यूनः स्तविर आयति।

प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिपद्यते ॥ 611

जब कोई वृद्ध पुरुष निकट आता है तो उस समय अप्रतिभ हो जाने के कारण युवा पुरुष के प्राण ऊपर उठने लगते हैं। किन्तु जब वह वृद्ध का स्वागत करता है और उसे प्रणाम करता है तो उसके प्राण, पुनः स्थिर हो जाते हैं। यह श्लोक मनुस्मृति (21/20) में यथावत् मिलता है।

नारी की महिमा का बखान करते हुए महात्मा विदुर कहते हे–

पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः।

स्त्रियःश्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद्रक्ष्या विशेषतः ॥6/11

स्त्रियां घर की लक्ष्मी हैं, वे पूजनीय हैं, अत्यन्त भाग्यशालिनी हैं, पुण्यशीला हैं तथा उनसे घर की शोभा वृद्धि होती है। अतः यो विशेष रूप से रक्षा के योग्य हैं। इसी भाव को प्रदर्शित करते हुए आचार्य मनु ने लिखा–

प्रजानार्थं महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः।

स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन ॥1/26

नीतिकार चाणक्य ने किंचित परिवर्तन के साथ यह बात चाणक्य नीति (10/3) में कही है।

विदुर की दृष्टि में धर्म का आचरण सर्वोपरि है। कामना से, भय से, लोभ से तथा इस जीवन के लिए भी कभी धर्म की परित्याग न करे। कारण–धर्म नित्य है जब कि निश्चय ही सुख दुःख अनित्य हैं। जीव नित्य है किन्तु उसका हेतु अनित्य है। आठवें अध्याय के 12 वें 13 वे श्लोकार्द्धों को मिलाने से धर्म विषयक उक्त भाव अधिगत होता ह–

न जातु कामान्न लोभाद्, धर्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः।

नित्यो धर्मः सुख दुःखे त्वनित्ये, जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः ॥

महाभारत की दृष्टि से यह पर्व उद्योगपर्व के 10 वें अध्याय का माना जायेगा।

विदुर ने आत्मा को नदी के रूप मे कल्पित किया तथा उसके पुण्य कर्मो को तीर्थ, सत्य को जल, धैर्य को कूल (किनारा) दया को लहरें, यह साङरूपक इस प्रकार है–

आत्मा नदी भारत पुण्यतीर्था, सत्योदका धृतिकूल दयोर्मिः।

तस्यां स्नातः पूयते पुण्यकर्मा, पुण्यो ह्यात्मा नित्यमलोभ एव ॥8 ॥21

इस आत्मनदी में पुण्यकर्मा मनुष्य अवगाहन कर स्वयं को पवित्र करते हैं।

राजर्षि भर्तृहरि ने आशा को नदी रूप में कल्पित कर जिस रूपक का अवतरण किया वह उपर्युक्त रूपक के तुल्य ही है–

आशा नाम नदी मनोरथ जला तृष्णातरंगाकुला।

राग ग्राहवती वितर्क विहगा धैर्यद्रुध्वंसिनी ॥

मोहावर्त सुदुस्तराऽपि गहना प्रौत्तुंग चिन्ता तटी।

तस्या पारगता विशुद्ध मनसो नन्दन्ति योगीश्वराः ॥

वैराग्य शतक 41

विदुर की दृष्टि में राजा के लिए धर्म ही सर्वोपरि पालनीय और आचरणीय है–

धर्मेण राज्य विदते धर्मेण परिपालयेत्।

धर्ममूलां श्रियं प्राप्य न जहाति न हीयते ॥3131

राजा को उचित है कि वह धर्म से ही राज्य प्राप्त करे, धर्म से ही उसकी रक्षा करे क्योंकि धर्ममूलक राज्य को पाकर न तो राजा ही राज्यलक्ष्मी के त्यागता है न लक्ष्मी ही उसे छोड़ती है।

आपदर्थे धनं रक्षेद् दारान् रक्षेद् धनैरपि।

आत्मानं सततं रक्षेद् दारैरपि धनैरपि ॥5118

इसी भाव से मनु ने अपने स्मृतिग्रन्थ (71213) में प्रस्तुत किया है। आचार्य चाणक्य ने भी अपनी नीति में (126) इसे यथावत् उद्धृत किया है।

विदुर के अनुसार सत्य, न्याय धर्म तथा नीतियुक्त कथन को न तो कहना आसान है और न सुनना ही आसान हैं। वे तो अपने अग्रज धृतराष्ट्र को स्पष्ट कहते हैं–

सुलभा पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।

अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ताश्रोता च दुर्लभः॥

सदा प्रिय वचन बोलने वाले पुरुष तो बहुत मिलेंगे किन्तु अप्रिय लगने वाले हितकारी वचन को कहने वाले तथा सुनने वाले मनुष्य तो दुर्लभ ही हैं।

धृतराष्ट्र के प्रसंग में विदुर की यह सत्योक्ति सर्वथा सार्थक सिद्ध हुई। कहने तो प्रज्ञाचक्षु राजा ने स्वीकार किया–

सर्वं त्वमायतीयुक्तं भाषसे प्राज्ञसम्मतम्।

न चोत्सहे सुतं त्यक्तुं यतो धर्मस्ततो जयः ॥6 ॥1

विदुर! तुम तो कह रहे हो वह बुद्धिमानों से अनुमोदित है तथा परिणाम में भी हितकर है मैं यह भी मानता हूं जिसके पक्ष में धर्म है उसकी ही जय होती है, तथापि अधर्मी पुत्र दुर्योधन को त्यागने मे मैं असमर्थ हूं। उपसंहार में राजा ने अपनी बौद्धिक दुर्बलता को भी स्वीकार किया–

सा तु बुद्धिः कृताप्येवं पाण्डवान् प्रति मे सदा।

दुर्योधिनं समासाद्य पुनर्विपरिवर्तते ॥8 ॥31

यद्यपि मैं पाण्डवों के प्रति ऐसी ही नीतियुक्त बुद्धि रखता हूं किन्तु दुर्योधन से मिलने पर मेरी बुद्धि पलट जाती है।

अब इसके लिए दोष किसे दिया जाये? यहां राजा धृतराष्ट्र ने वाक् चातुर्य का सहारा लेकर प्रारब्ध को ही दोषी ठहराया–न दिष्टमभ्यतिक्रान्तुं शक्यं भूतेन केनाचित्।

दिष्टमेव ध्रुवं मन्ये पौरुषं तु निरर्थकम् ॥

धृतराष्ट्र की दृष्टि में पुरूषार्थ भले ही निरर्थक हो, किन्तु महामना विदुर प्रतिपादित नीति का अनुसरण करने वाला तो विश्वय ही पुरूषार्थ को प्राथमिकता देगा।

आर्य समाज गोविन्दगढ़ जालन्धर का 56वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मो० गोविन्दगढ़ जालन्धर का 56वां वार्षिकोत्सव 8 अप्रैल से 14 अप्रैल 2002 तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के सहयोग से बड़े उत्साह से मनाया गया। 8 अप्रैल से प्रातः सामवेद के मन्त्रों द्वारा विश्व शांति यज्ञ आरम्भ किया गया। वेद मन्त्रों का पाठ आर्य समाज गोविन्दगढ़ के पुरोहित श्री कमल कुमार शास्त्री जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री सुन्दर लाल शास्त्री जी करते थे। यज्ञ की पूर्णाहुति 14 अप्रैल रविवार प्रातः 9 बजे बड़ी श्रद्धा तथा हर्षोल्लास से सभी यजमानों द्वारा की गई। प्रातः सायं यज्ञ के पश्चात् श्री जगत वर्मा संगीत रत्न के मनोहर भजन और श्री सुन्दर लाल शास्त्री जी के वेद प्रवचन होते रहे।

14 अप्रैल रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के अधिकारी सर्वश्री सुदर्शन शर्मा जी, सरदारी लाल जी आर्य रत्न उप प्रधान तथा देवेन्द्र शर्मा जी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब जिनका आर्य समाज गोविन्दगढ़ के अधिकारियों की ओर से पुष्प मालाओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इसके पश्चात् श्री सुदर्शन शर्मा जी द्वारा ओम् ध्वज फहराया गया तथा ध्वज गीत श्री जगत वर्मा संगीत रत्न द्वारा गाया गया।

आर्य समाज के मन्त्री जी ने आर्य समाज गोबिन्दगढ़ की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि वर्तमान की सबसे बड़ी आवश्यकता भावी पीढ़ी को सुसंस्कृत करना है। आर्य समाज गोविन्दगढ़ की ओर से आय के साधन न होते हुए भी श्री कमल कुमार जी शास्त्री को आर्य समाज में पुरोहित नियुक्त किया गया है ताकि आर्य बाल सभा आर्य वीर दल स्थापित करके बच्चो को नैतिक शिक्षा दी जाए। दैनिक, साप्ताहिक सत्सगो के अतिरिक्त आर्य समाज गोविन्दगढ़ में सभी आर्य पर्व उत्साह पूर्वक मनाये जाते है। यज्ञशाला के पुनः उद्धार की योजना है जिसके लिए आर्य समाज के सदस्यो के सम्बन्धियों के सहयोग से लगभग 50 हजार से अधिक दान आर्य समाज को प्राप्त हो चुका है।

श्री देवेन्द्र शर्मा जी रजिस्ट्रार ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज को अपने प्रचार कार्य को और तेज करना चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोग इसके साथ जुड़ सकें। बच्चों के सेवा कार्य को देखते हुए उन्होंने हार्दिक प्रसन्नता की और सभा की ओर से आर्य समाज गोविन्दगढ़ को वेद प्रचार के लिए पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। सभा की ओर से श्री सुदर्शन शर्मा वरिष्ठ उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आर्य समाज गोविन्दगढ़ को वार्षिकोत्सव के लिए 11000/- रुपए दान दिए।

श्री डा. नरेश जी प्राध्यापक दोआबा कालेज जालन्धर ने अपने सम्बोधन में कहा कि भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए सबसे पहले आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने ही प्रयत्न किया और अंग्रेजों की कूटनीतिक चालों का अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में 1875 में ही स्पष्ट उत्तर दिया तब कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था। देश को स्वतन्त्र कराने में आर्य समाज की भूमिका का कांग्रेस के अध्यक्ष श्री पट्टाभिसीता रमैया ने भी स्वीकारा है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को यज्ञ का विस्तृत अर्थ ध्यान में रखना चाहिए। इसे केवल हवन, अग्निहोत्र तक सीमित करना भारी भूल है।

श्री डा. राम अवतार प्राध्यापक डी.ए.वी. कालेज जालन्धर ने अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत करते हुए श्री भर्तृहरि जी का एक श्लोक उदधृत करते हुए कहा कि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने किस प्रकार कांचन और कामिनि के प्रलोभन को ठुकराया और सत्य मार्ग पर अडिग रहे।

इस क्षेत्र के विधायक श्री राज कुमार गुप्ता जी भी आर्य समाज मन्दिर मे पधारे और अपने विचार प्रस्तुत किए। आर्य समाज की ओर से उनका यथोचित सम्मान किया गया।

श्री जगत् वर्मा संगीतरत्न तथा श्री वीरेन्द्र कुलदीप 'साथी' ने अपने सुरीले भजनों से समां बांध दिया। श्री निर्मल एवं राजपाल गांधी नगर वालों ने भी ऋषि भक्ति का भजन प्रस्तुत किया। अन्त में मन्त्री जी ने सभी का धन्यवाद किया।

—नरेश कुमार, मन्त्री

परमात्मा के अद्भुत.....

(पृष्ठ 1 का शेष)

अरब देशों में एक रबिआ नाम की स्त्री ईश्वर को मानने वाली प्रसिद्ध हुई है। वह अपने घर का काम काज करके जो कुछ समय उसको मिलता था ईश्वर की याद में गुजारती थी। एक दिन एक जिज्ञासु ने उसे फोन किया "बहन रबिआ क्या तुम ईश्वर से प्यार करती हो। उसने बड़ी हलीमी से जवाब दिया जी हां, "दूसरा प्रश्न फिर जिज्ञासु ने किया क्या तुम दुष्ट पुरुष से नफरत करती हो। उसने उत्तर दिया "मैं घर के काम काज में मसरूफ रहती हूं जो थोड़ा सा समय मिलता है उसको परमात्मन स्मरण में लगा देती हूं। मेरे पास इतना अवकाश नहीं कि दुष्ट पुरुष से घृणा या उसके बारे में विचार करूं। परमात्मा जगत का निमित्त कारण है। (Efficient Couse) वह अपने भक्त की हृदय की कालिमा को दैवी प्रकाशन से दूर करता है। जब हृदय का अन्धकार मिट जाता है तो उसकी पवित्र ज्योति आत्मा में चमक उठती है। इस ज्योति का वर्णन ऋषियों मुनियों ने किया है अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा वह तो फिर परमात्मा के ही बन गये।

यह सर्वदा याद रहे कि परमात्मा के गुप्त खजानों की बरकतें हमारे दुःख कष्ट क्लेशों में हमारी बेहतरी के लिए छुपे रहते हैं। जब हमारा दुःख, कष्ट के भोगों को भोग चुकता है तो फिर हमें पता लगता कि परमात्मा की हमारे दुःख में कितनी भलाई थी। परमात्मा के सच्चे भक्त तो वह हैं जो दुःख के समय घबराते नहीं हैं और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए सहते हैं बगैर शोरोगुल मचाने के। योगियों और ऋषियों में हमारे पूर्ण ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी थे। जिन्होंने जीवन के सब दुःखों और कष्टो को पूर्ण रूप से परमात्मा की देन समझ कर बरदाशत किया और किसी समय भी परम पावन प्रभु को उपालंभ नहीं दिया और मृत्यु के समय भी उनका स्वागत किया। इन नश्वर शरीर को छोड़ते हुए नीचे लिखे शब्दों का आह्वान किया:—

तेरी इच्छा हुई पूर्ण ईश्वर, मृत्यु समय शब्द यही कहता रहा, तेरी आज्ञा का पालन किया जीते जी, दयानन्द जो भक्त महान हुआ।

मैंने अपनी तरफ से भी दो शब्द महर्षि के बारे में नीचे लिखे हैं—

आकाश में चमकेंगे जब तलक, सूरज चांद तारे।

चमकेगा पवित्र नाम 'ए महर्षि' तब तक दिलों में हमारे।

॥ओ३म् शम्॥

बठिण्डा में रामनवमी का पर्व

आर्य समाज, बठिण्डा के प्रांगण में दिनांक 21-4-2002 को मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी की पावन जयन्ती पर एक बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। आर्य समाज के मान्य पुरोहित श्री गुरु प्रसाद शास्त्री जी ने पवित्र वेद मन्त्रों से शान्तमय वातावरण में यज्ञ सम्पन्न कराया। यज्ञोपरान्त बहन इन्द्रा छाबड़ा जी ने ईश्वर भक्ति का भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् ज्योतिषि श्री पदम कुमार जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के जीवन की प्रमुख घटनाओं के बारे में बताया। आचार्य श्री गुरु प्रसाद शास्त्री जी ने कहा कि हमें महापुरुषों के जीवन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। प्रो. ओ पी मंगला प्रधान जी ने बताया कि राजा दशरथ ने पुत्र प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टी यज्ञ करवाया। यह यज्ञ श्रृंगी ऋषि द्वारा सम्पन्न करवाया गया था। जिसके परिणाम स्वरूप राम भारत को मिले।

अन्त में श्री प्रधान जी ने उपस्थित आर्य जनों का धन्यवाद किया। इस शुभ अवसर पर श्री वजीर चन्द जी मंगला, श्री विनोद गुप्ता जी, डा. मनोहर लाल बांसल, श्रीमती वीरप्रभा मोंगा जी, श्रीमती शान्ति जिंदल प्रिंसिपल, श्री शिव कुमार गोयल जी, श्री चमन लाल मेहता जी आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। शान्ति पाठ के पश्चात् प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। —प्रेम भाटिया

दयानन्द स्वामी तेरा बोल बाला

ले० श्री तरसेम कुमार आर्य, महामन्त्री जिला आर्य सभा-भटिण्डा

मैं ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) पर 'Times of India' में एक लेख पढ़ रहा था। लेख का शीर्षक था। 'A Column of Light on Shivratri और इस लेख के लेखक थे, 'ब्रह्म कुमारी' संस्था के मासिक पत्र "Purity" के सम्पादक श्री B K Brij Mohan अपने इस लेख में लेखक महोदय लिखते हैं "God does not create the elements and all the constituents of nature Nor does He (God) create human beings or human souls Matter, souls and god are neither created nor destroyed They are eternal and imperi shable God does not create a new world out of nothing

लेखक के इन शब्दों का भाव है कि परमात्मा, प्रकृति के तत्वों तथा अन्य सभी अंगों का निर्माण नहीं करता। और न ही परमात्मा जीवों का तथा आत्मा का निर्माण करता है। प्रकृति, जीव तथा परमात्मा इन तीनों में से किसी का भी न तो निर्माण किया जा सकता है और न ही इनमें से किसी का विनाश किया जा सकता है। यह तीनों अनादि तथा अनन्त हैं परमात्मा अभाव अथवा शून्य से संसार की रचना नहीं करता।

इन शब्दों का पढ़ना था कि मेरे मुख से अचानक निकला 'दयानन्द स्वामी तेरा बोल बाला' क्योंकि सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम सम्मुलास में महर्षि दयानन्द ईश्वर, जीव तथा प्रकृति का विस्तार से विवेचन करते हैं जिसे आर्य जगत में वैदिक त्रैतवाद के नाम से जाना जाता है।

ऋषि दयानन्द ईश्वर, जीव तथा प्रकृति पर अपने विचारो की पुष्टि में ऋग्वेद का यह मंत्र उद्धृत करते हैं।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्व जाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाक शीति

अर्थात्:-दो सुन्दर पक्षी जो सहयोगी ? आर परस्पर मित्र हैं एक ही वृक्ष के ऊपर एक दूसरे से लिपटे हुए स्थित हैं। इन दोनों में एक इस वृक्ष के फल को मजे से खाता है। और दूसरा पक्षी कुछ न खाता हुआ केवल अध्यक्षता काम करता है।

वृक्ष का अर्थ है भौतिक जड़ जगत् या भौतिक शरीर है। इस पर दो पक्षी बैठे हैं-जीव तथा ब्रह्म। इन दोनो मे कुछ समानता भी है और कुछ विभिन्नता भी

दोनों मे समानता यह है कि दोनों का एक वृक्ष पर वास है। और मुख्य विभिन्नता यह है कि इन दोनों मे से एक फल खाता है तो दूसरा स्वयं फल नहीं खाता केवल पहले को फल खाते हुए देखता है। किसी कवि ने सच ही कहा है।

खिलाता है खाता नहीं वह खुदा है।
पिलाता है पीता नहीं वह खुदा है
चलाता है चलता नहीं वह खुदा है।
हिलाता है हिलता नहीं वह खुदा है।

आज से लगभग सवा सौ साल पहले जब ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की तो धार्मिक जगत् में केवल द्वैतवाद, या फिर अद्वैतवाद (नवीन वेदांत) का ही बोल बाला था। तब स्वामी दयानन्द के त्रैतवाद को गले के नीचे उतारने में उस समय के तथाकथित विद्वानों को बड़ी कठिनाई होती होगी परन्तु ऋषि दयानन्द की विद्वता तथा उनके तप का ही कमाल है कि एक शताब्दी के बीतते बीतते आज गैर आर्य समाजी भी उनके त्रैतवाद को न केवल अपना रहे हैं अपितु इसका प्रचार भी कर रहे हैं।

भक्त राज अमीचन्द जी ने सच ही तो लिखा है-

वो टूटा जो पड़ा था वेद विद्या पे ताला,
दयानन्द स्वामी। तेरा बोल बाला॥

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का 17वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का 17वा वार्षिक उत्सव 29 अप्रैल से 5 मई तक मनाया जा रहा है।

शनिवार-रविवार 4 5 मई 2002 को विशेष कार्यक्रम होगा। 4 मई को दोपहर बाद 2 से 5 बजे तक महिला सम्मेलन होगा। रविवार 5 मई को यज्ञ व ध्वजारोहण के बाद 12-30 से 2 बजे तक आर्य सम्मेलन होगा।

कार्यक्रम

5 मई, 2002, रविवार
चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति
प्रातः 7-00 बजे से 10-00 बजे तक
गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा

***यज्ञ ब्रह्मा:**--परम् पूज्य आदरणीय श्री स्वामी आत्मबोध जी महाराज द्वारा यज्ञमानों को आशीर्वाद व यज्ञ शेष वितरण प्रात 10-00 बजे।*

***ध्वजारोहण** : 10-30 बजे श्री सुदर्शन जी शर्मा (वरिष्ट उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब) के कर कमलो द्वारा ओ३म् की पताका लहराई जाएगी।*

***ध्वजगीत** : गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा।*

***भजन संगीत** : 10-45 बजे श्रीमति रश्मि घई जी, प राजेश अमर प्रेमी। प. जगत वर्मा जी (भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब)*

***उपदेश** : 11-15 बजे से 12 बजे तक श्री विजय कुमार शास्त्री (उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब)। 12 से 2 बजे तक आर्य महा सम्मेलन। अन्त में ऋषि लंगर होगा।*

आर्य समाज सिविल लाईन लुधियाना में समारोह

आर्य समाज सिविल लाईन लुधियाना की ओर से 41 ए टैगोर नगर में आर्य समाज का स्थापना दिवस बड़ी सज धज के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ के बाद धार्मिक भजन, वेद मन्त्रों का गान हुआ। अन्त में सभापति श्रीमति सरला लूम्बा का सार गर्भित प्रवचन हुआ। आप ने घर घर जाकर वेद प्रचार तथा दीन दुखियों की सेवा करने का कार्यक्रम बनाने पर ज़ोर दिया। जरूरतमन्द छात्रों और विधवाओं की सहायता करने पर भी जोर दिया, दैनिक जीवन में स्नेहपूर्ण व्यवहार करने को कहा। परिवार में सुख शांन्ति का वातावरण बनाने पर जोर दिया। आप ने बताया की धर्म को केवल माला फेरने तक या आहुति देने तक सीमित न रखें इस पर आचरण होना चाहिये। मनुष्य जन्म बार बार हीं मिलता इस का हर क्षण परोपकार में लगाना ही ईशेपासना है। धर्म प्रचार के लिये तथा पिछले वर्ग में शिक्षा के प्रचार और प्रचार के लिये श्री आशानन्द जी की प्रभूत प्रशंसा की। यज्ञ शेष वितरण के बाद दयानन्द के जय घोष के साथ सभा विसर्जित हुई। —वेणी प्रसाद, मन्त्री।

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में आर्य समाज स्थापना दिवस

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना के प्रांगण में आर्य समाज स्थापना दिवस 12 अप्रैल, 2002 को 11 बजे से बड़े समारोह से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में बृहद हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। हवन यज्ञ प्रबन्धक समिति की सदस्या श्रीमती विनोद गान्धी जी ने कराया। यज्ञ के पश्चात् उन्होंने एक सुरीले भजन द्वारा आर्य समाज की विचारधारा पेश की। स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने इस अवसर पर सब को बधाई देते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके हम पर बहुत उपकार किया है। आर्य समाज कोई मत नहीं है अपितु एक संस्था है। जो सत्य सनातन धर्म में महाभारत के युद्ध के बाद जो बुराईयां फैल गई थीं; उन्हें दूर करने के लिए यह संस्था स्थापित की है और इस संस्था के सदस्यों ने इस दिशा में बहुत कार्य किया है और अब भी कर रहे हैं। आपके स्कूल का नाम आर्य समाज के संस्थापक के नाम पर है। इसलिए आपको इस दिशा में कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों ने आर्य युवक सभा बनाने की घोषणा की।

इस अवसर पर प्रबन्धकीय समिति के प्रधान श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री सत्यपाल जी नारंग, श्री हर्ष जी आर्य ने बच्चों को आशीर्वाद दिया।

—सुनिता मलिक, प्रिंसिपल

आर्य समाज गोनियाना मण्डी में तीन दिवसीय यज्ञ हवन

आर्य समाज गोनियाना मण्डी (जि. बठिण्डा) द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस पर तीन दिवसीय यज्ञ हवन तथा वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम 12 अप्रैल दिन शुक्रवार को श्री असीम आहुजा के निवास पर पं. राजेन्द्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हवन तथा पारिवारिक सत्संग किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आयोजन 13 अप्रैल दिन शनिवार को नव सम्वत् तथा आर्य समाज स्थापना दिवस पर पुरानी दाना मण्डी के चौक में किया गया। सैंकड़ों की संख्या में नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। श्री प्रेम भूषण तथा उनकी धर्मपत्नी मुख्य यजमान के आसन पर विराजमान थे और यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में पं. राजेन्द्र जी उपस्थित थे। यज्ञ हवन के पश्चात् तरसेम कुमार आर्य महामंत्री जिला आर्य सभा ने इस दिन के महत्व पर प्रकाश डाला। शांति पाठ के पश्चात् सभी उपस्थित नर नारियों में मिष्ठान का प्रसाद वितरण किया। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार 14 अप्रैल को आर्य समाज में आयोजित यज्ञ हवन में डाली गई। तीनों दिन लाला चिरंजी लाल जी प्रधान आर्य समाज का तथा उनके परिवार का सारे कार्यक्रम को सुचारु ढंग से चलाने में विशेष योगदान रहा।

—सर्वजीत सिंह, मन्त्री

अमृतसर में विशाल प्रभात फेरी

आर्य सद्भावना सत्संग समिति (महिला मंच एवं पुरुष मंच) की अमृतसर की ओर से नव संवत 2059 के शुभारम्भ पर 13 अप्रैल 2002 को विशाल प्रभात फेरी निकाली गई, इसका शुभारम्भ प्रातः 6 बजे गोपाल मन्दिर, मजीठा रोड़ से हुआ, इसमें सबसे आगे-आगे सप्तऋषि के रूप में 7 बच्चे भगवां परिधान में हाथ जोड़े हुए गायत्री मन्त्र का जाप करते हुए आगे बढ़ रहे थे इनके आगे थी वेद की सवारी जिसके साथ केसरी बाने में ऋषिकाओं के रूप में 7 कन्याएं विराजमान थीं, सप्तऋषियों के पीछे-पीछे एक गड्डे पर निरन्तर यज्ञाग्नि प्रज्जवलित थी, जिसमें गायत्री मन्त्र की आहुतियों का क्रम निरन्तर चलता रहा। इस यज्ञ का संचालन निरन्तर श्रीमती कमेलश जी चोपड़ा ने सम्भाला, आर्य समाज नवां कोट, आर्य समाज लक्ष्मणसर आर्य समाज, माडल टाऊन आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द, अमृतसर आदि के अलावा आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर के प्रधान व मन्त्री श्री दर्शन लाल जी व श्री राकेश मेहरा जी ने भी आहुतियां प्रदान कीं। आर्य सद्भावना सत्संग समिति से सम्बन्धित बहनों के अतिरिक्त गोकल नगर व तिलक नगर के बहन भाईयों ने बढ़-चढ़ कर इसमें भाग लिया। पुरुषों व महिलाओं के अतिरिक्त आर्य बालवाड़ी के नन्हे-मुन्नों ने तथा गांधी विद्या मन्दिर स्कूल के बच्चों ने भी इसकी शोभा बढ़ाई, सभी महिलाएं व पुरुष केसरी चिन्हों को धारण किए जब गली मोहल्लों से गाते बजाते तथा नव वर्ष की शुभ कामनाएं देते गुजरते थे, लगता था सारा वातावरण सुगन्धित, केसरी, एवं वेद वाणी से गूंज उठता था जहां लोग छतों व चौबारों से पुष्प वर्षा करके प्रभात फेरी का स्वागत करते रहे। वहीं मार्ग में स्थान-स्थान पर प्रसाद के रूप में मिश्री-इलायची, मीठी सौंफ, फलों, शर्बत व शीतल जल से प्रभात फेरी का स्वागत किया गया। अन्त में यह प्रभात फेरी शिवाला मन्दिर से होते हुए प्रोफेसर कालोनी, तिलक नगर में सभा में परिणित हो गई। जहां पर नव वर्ष की बधाई के साथ-साथ इस दिन पर प्रकाश डाला गया कि आज से 126 वर्ष पूर्व आज के ही दिन आर्य समाज की स्थापना कर महर्षि दयानन्द ने हमें सुन्दर वरदान दिया था। आज के दिन ही नव रात्र प्रारम्भ होते हैं, जो भक्ति के लिए श्रेष्ठ दिन हैं। आज के दिन ही परमात्मा ने सृष्टि का प्रारम्भ किया था और आज सृष्टि को प्रारम्भ हुए 1, 97, 29, 49, 103वां वर्ष है आज के दिन अमृतसर में जलियां वाले बाग का कांड हुआ था, अतः शहीदों को श्रद्धा सुमन देने का दिवस है तथा वैसाखी पर्व पंजाब वासियों के लिए अत्यंत खुशी व हर्षोल्लास का दिवस है-ऐसे विचार नैः ब्रः (डॉ.) माधुरी योगमती ने दिए। अन्त में यहीं पर श्री इन्द्रपाल जी मित्र द्वारा हलवा-कचौरी का प्रसाद व चाय का प्रसाद सबको बड़ी उदारता से दिया गया। ऐसा निश्चित किया गया कि ऐसी प्रभात फेरी प्रतिवर्ष निकाली जाए। सभी बहुत प्रसन्न थे, सभी नर-नारी, बाल-वृद्ध एक दूसरे को भारतीय विक्रमी संवत की बधाईयां देते देखे गए। इस कार्यक्रम को सफल बनाने का विशेष श्रेय जाता है श्री प्रवीण जी आर्य केन्द्रीय आर्य सभा शक्ति नगर, आर्य समाज नवां कोट वालों, 'योग निकुञ्ज' परिवार श्री दिनेश जी आर्य, गोकल नगर तिलक नगर वासियों श्री भोला जी श्री अग्रवाल जी, प्रिंसीपल विनोद पाल जी मित्तु, व इन्द्रपाल जी मित्तु परिवार, श्री वीरेन्द्र जी शर्मा को।

—प्रचार मन्त्री

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

ऋग्वेद | कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम् | सामवेद | अथर्ववेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

दूरभाष :

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष-56 अंक : 4 सृष्टि संवत 1960853102, 12 मई, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

हरिद्वार में आर्यों का कुम्भ

25 से 28 अप्रैल 2002 तक गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार का शताब्दी समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान मे मनाया गया। सारे भारत देश से व अमेरिका कैनेडा, मोरीशिस आदि देशो से भी आए लोगों ने इसमे भाग लिया। शायद सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो व गुरुकुल के अधिकारियों को भी यह आशा नहीं थी कि इस समारोह में इतनी भारी सख्या में लोग हरिद्वार पहुच जाएगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारियो व पजाब की आर्य समाजों के अधिकारियों ने 11-4-2002 को सभा कार्यालय में एक बैठक में निश्चय किया था कि पजाब से अधिक से अधिक आर्य बन्धु व बहने इस समारोह में हरिद्वार पहुचेगी। आर्य शिक्षा सस्थाओ के प्रबन्धको व प्रिसिपलो ने भी इसमें पूरा-पूरा सहयोग देने का निश्चय किया था, यह भी निश्चय किया गया था कि पजाब से इस यात्रा का आरम्भ स्वामी श्रद्धानन्द जी के पैतृक गाव तलवन से किया जाएगा। पूरी व्यवस्था तो नहीं हो पाई क्योंकि समय बहुत कम था परन्तु फिर भी 23-4-2002 को सायं तीन बजे, स्वामी श्रद्धानन्द जी के पैतृक गाव तलवन में एक बृहद यज्ञ उस स्थान पर किया गया जहा स्वामी जी का जन्म हुआ था। जालन्धर जिले में तलवन एक छोटा सा ग्राम है इस ग्राम मे एक प्रसिद्ध द्विज परिवार रहता था जो पौराणिक मान्यताओं से ओत पोत था जिस परिवार ने पूजा पाठ के लिए इस गांव में अपना ही एक मन्दिर भी बनवाया था और उस मन्दिर के साथ ही स्वामी श्रद्धानन्द जी के पिता श्री नानक चन्द जी और उनके परिवार के अन्य सदस्य रहते थे जो उस जमाने के बड़े रईस माने जाते थे। आज भी वह मन्दिर खड़ा है परन्तु उसमे पूजा करने वाला कोई नहीं आता था अभी-अभी छ माह पहले गाव के दो चार महानुभावों ने इस गिरते हुए उजाड़ मन्दिर की तरफ ध्यान दिया और जब हम 22-4-2002 को तलवन पहुचे तो हमने देखा कि उसकी कुच्छ मुरम्मत हो गई है और उसमें एक पुजारी भी बैठ गया है जो एक सन्यासी है। स्वामी जी के परिवार के पुराने सभी मकान जो पुरानी इन्टों से बने थे गिर चुके हैं कुच्छ भूमि परिवार के कुच्छ जद्दी महानुभावो में बेच दी है केवल सात आठ मरले जगह मन्दिर की दिवार के साथ बची है जिसकी आज से छ वर्ष पूर्व सभा प्रधान श्री प हरवस लाल जी शर्मा ने अपने पास से 50 हजार रुपया देकर चार दीवारी बनवाई थी श्री विजय सेठी जी भू पू प्रधान आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर एक तलवन के व्यक्ति द्वारा वहा कार्य करवा रहे थे कि अचानक श्री सेठी जी की हृदय गति रुकने से मृत्यु हो गई और उसके बाद कार्य बन्द हो गया और काम करने वाले गाव के व्यक्ति ने कोई ध्यान नहीं दिया और कहा कि जो पच्चास हजार उसे मिला था वह समाप्त हो गया। छ: वर्ष के पश्चात जब मैं 22-4-2002 को तलवन गया तो देखा कि फिर उस स्थान पर लोगो ने मलवा भर रखा है हम उस व्यक्ति से भी मिले जिसने पहले कार्य करवाया था उसने विश्वास दिलाया कि कल 23-4-2002 को वहा सफाई हो जाएगी परन्तु जब हम 23-4-2002 को तलवन पहुचे तो कोई सफाई वहा नहीं हुई थी थोड़ी सी सफाई करके 23-4-2002 को वहा हमने यज्ञ किया। इस यज्ञ की सूचना गाव में एक दिन पूर्व हम स्वय देकर आए थे कुच्छ व्यक्तियों से मिल कर भी आए थे। उन्होने वायदा किया था कि हम वहा अवश्य आएगे परन्तु 23-4-2002 को वहा केवल मन्दिर के पुजारी व कुच्छ चन्देक बच्चो के सिवाए कोई भी गाव से नहीं आया।

जालन्धर से सभा कार्यालय अध्यक्ष प धर्म देव आर्य, आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर के प्रधान श्री कमल किशोर जी, उप प्रधान श्री प मनोहर लाल जी, श्री अशोक नन्दा जी, श्री शशी कान्त तथा अन्य महानुभाव वहा गए थे और हम यज्ञ करके रात्रि को वापिस जालन्धर आ गए।

जालन्धर से एक बस हरिद्वार के लिए की गई इसका सारा प्रबन्ध श्री कमल किशोर जी प्रधान आर्य समाज भार्गव नगर तथा श्री प मनोहर लाल जी ने किया। इस बस में 55 महानुभाव, धूरी से श्री राधेश्याम मोहिल व श्री प्रहलाद कुमार के नेतृत्व में 70 महानुभाव, श्री वासुदेव के साथ 5 महानुभाव, होशियारपुर से श्री यशपाल जी वालिया अपने 15 साथियो सहित, लुधियाना से श्री अरुण जी परिवार सहित, नवाशहर से श्री प्रेम भारद्वाज जी के नेतृत्व में एक बस 50 महानुभाव, पठानकोट से श्री प्रि स्वतन्त्र कुमार जी के नेतृत्व में एक बस 50 महानुभाव, दयानन्द मठ दीनानगर से श्री योगेन्द्रपाल, श्री काशी नाथ, स्वामी सुकर्मानन्द, दयानन्द मठ चण्डरा के ब्रह्मचारी व सन्यासी महानुभाव मोगा से श्री उपेन्द्र जी व श्री लाम्बा जी के नेतृत्व में 60 महानुभाव श्री प्रियतम देव, श्री जगदीश जी अग्रवाल श्री अश्विनी जी शर्मा तथा अन्य कई महानुभाव फिरोजपुर से श्री मनोज आर्य के नेतृत्व में 23 महानुभाव, पटियाला से श्री राज कुमार कौशिक तथा अन्य 15 महानुभाव, राजपुरा से श्री चन्द्र किशोर के नेतृत्व में 54 महानुभाव, सुल्तान पुर लोधी से श्री लाल बिहारी शास्त्री दो महानुभाव, अमृतसर से 8 महानुभाव, जण्डियाला गुरु से श्री स्वतन्त्र कुमार जी के साथ 15 महानुभाव फगवाड़ा से श्री देशबन्धु जी चोपड़ा के साथ 11 महानुभाव, प्रीत नगर जालन्धर से श्रीमती खजानकौर, श्री विजय कुमार जी के साथ 15 महानुभाव, जालन्धर से ऋषि कुज पक्का बाग से, श्री ऋषिपाल सिह एडवोकेट, श्री करतारनाथ आर्य, श्री डा एच पी सच्चर श्री प सुभाष जी शास्त्री आदि 15 महानुभाव, आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर के प्रधान श्री कमल किशोर उप प्रधान श्री प मनोहर लाल जी आर्य ने बस का प्रबन्ध किया। 24-4-2002 को यह बस और एक टाटा सुमो ने सभा प्रधान प हरबस लाल जी शर्मा की आज्ञा से माडल टाऊन जालन्धर से प्रात. 9 बजे महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के जयकारे लगाते हुए हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। जालन्धर से आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर आर्य समाज दानिशमन्दा, बस्ती बावाखेल, आर्य नगर, कबीर नगर, गाधी नगर वेद मन्दिर गढ़ा के महानुभाव इस बस

(शेष पृष्ठ 6 पर)

महर्षि व्यास का रचना संसार

ले० डॉ० भवानी लाल जी भारतीय 8-423 नन्दन वन जोधपुर

वैदिक धर्म और संस्कृति के अपूर्व व्याख्याता, महाभारत तथा वेदान्त सूत्रादि अद्‌भुत ग्रन्थों के लेखक तथा भारत युद्ध कालीन घटनाओं के प्रत्यक्ष द्रष्टा, सत्य, धर्म और न्याय के उद्घोषक महर्षि व्यास का पूरा नाम कृष्ण द्वैपायन व्यास था। उनके पिता महर्षि पाराशर थे तथा माता का नाम सत्यवती था जो एक कैवर्त की पुत्री थीं। व्यास जी का जन्म एक द्वीप पर हुआ था। इसलिए वे द्वैपायन कहलाते थे । उनका वर्ण श्याम (कृष्ण) था इसलिए वे कृष्ण द्वैपायन कहलाते थे। व्यास जी ने आगे चल कर महाभारत तथा वेदान्त सूत्रों की रचना की। उन्हें अठारह पुराणों का रचयिता भी माना जाता है किन्तु इन ग्रन्थों के विश्लेषणात्मक अध्ययन, उनमें वर्णित विषयों तथा लेखन शैली का विवेचन करने के पश्चात् विद्वानों का मत है कि ये ग्रन्थ न तो एक व्यक्ति के द्वारा लिखे गए हैं और न ही ये एक काल की रचना हैं। व्यास का युग महाभारत का युग था जो द्वापर की समाप्ति तथा कलियुग का आरम्भ माना जाता है। इसे पांच हजार वर्ष से कुछ अधिक ही मानना होगा। इस परिप्रेक्ष्य में जब हम उपलब्ध पुराणों को देखते हैं तो ज्ञात होता है कि इनका रचना काल पांच हजार वर्षो से बहुत बाद का है। इतिहास विदों ने अधिकांश पुराणो का रचनाकाल गुप्त काल माना है जो दो हजार वर्ष पुराना बताया गया है। गुप्त काल में प्रमुखत: शैव और वैष्णव मत का प्रभाव रहा इसलिए इन सम्प्रदायों से सम्बद्ध अधिकांश पुराणों की रचना गुप्तकाल में हुई होगी।

'अष्टादश पुराणों के कर्त्ता सत्यवती सुत:' की उक्ति इतिहास की कसौटी पर खरी नहीं उतरती, कारण कि ब्रह्मवैवर्त, स्कन्द, पद्यम तथा भविष्य आदि पुराणों का रचना काल पर्याप्त बाद का है। वायु, वराह और विष्णु पुराणों का रचना काल कुछ पुराना माना जा सकता है किन्तु करक तथा दर्शन के तत्वों से भरपूर भागवत का काल गुप्त राजवंशों का समय ही है। महर्षि वेद व्यास की कीर्ति कौमुदी का दिग् दिगन्त तक विस्तार किया है उनके द्वारा रचित महाभारत ने। यह इतिहास है किन्तु महाकाव्य की शैली में लिखा गया है। महाभारत के बारे में प्रसिद्ध है कि इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-चतुर्विद्या पुरुषार्थ का विस्तृत विवेचन मिलता है। सत्य तो यह है कि जो बातें महाभारत में हैं वे ही अन्यत्र मिलेंगी, किन्तु जिनका उल्लेख इस महाग्रन्थ में नहीं है वह आपको अन्यत्र भी नहीं मिलेंगी-

धर्म अर्थेण कामे च मोक्षेच भारतर्षभ।

यदि इहास्ति तदन्यत्र पन्नेद्रास्ति न तत् स्वचित्॥

मूलत: महाभारत की रचना 'जय' नामक एक काव्य से हुई थी जिसकी समस्त श्लोक संख्या चौबीस हजार बताई जाती है। जय काव्य ही विस्तार पाकर महाभारत के रूप में विकसित हुआ। कालक्रम से इसमें अनेक प्रसंग और कथ्य जुड़ते गए और यह एक लाख श्लोकों से अधिक संख्या वाला महाकाव्य (epic) संज्ञक विशालकाय ग्रन्थ बन गया। ऐसे ही ग्रन्थों को विकासशील कहा जाता है जिनमें किसी देश, जाति तथा समुदाय विशेष के इतिहास, दर्शन, विचारधारा तथा मान्यताओं का विस्तार पूर्वक उल्लेख रहता है। अठारह पर्वो में समाप्त महाभारत में कौरव-पाण्डवों के युद्ध तथा उससे सम्बद्ध अवान्तर घटनाओं का विस्तारपूर्वक विवेचन मिलता है। सरल अनुष्टुप छन्दों में लिखा गया यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण है। मुख्य घटनाचक्र के साथ-साथ व्यास ने महाभारत में ऐसे अनेक लघु ग्रन्थों को समाविष्ट कर दिया है जो नीति, धर्म, दर्शन, इतिहास तथा लोक व्यवहार की श्रेष्ठ विवेचना प्रस्तुत करते हैं। भगवद्‌गीता जैसा अद्‌भुत प्रकरण भीष्म पर्व के अठारह अध्यायों में वर्णित हुए हैं। संजय ने ग्रन्थान्त में माना है कि भगवान् व्यास की कृपा से ही मैंने कृष्ण और अर्जुन के इस संवाद को सुना और उसका यथातथ्य वर्णन सम्राट् धृतराष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत किया। यह संवाद संस्कृत साहित्य का एक उत्कृष्ट अंश है जो समस्त विश्व में अद्‌भुत लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। पुरा काल के आचार्य शंकर रामानुज, ज्ञानेश्वर आदि ने इस पर अपनी टीकाएं लिखी हैं तो आधुनिक काल के विद्वानों, मनीषियों, चिन्तकों तथा विचारकों ने भी अपनी-अपनी दृष्टि से गीता की टीकाएं लिखी हैं। लोकमान्य तिलक का गीता भाष्य 'कर्मयोग रहस्य' के नाम से प्रसिद्ध हुआ तो महात्मा गांधी ने अपनी गुजराती टीका को अनासक्ति योग नाम दिया। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने गीता की पद्यात्मक अंग्रेजी टीका लिखी जो दि लाईस सांग्स के नाम से अत्यन्त लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है। राजगोपालाचार्य तथा डा. सर राधाकृष्णन की टीकाएं भी पठित जनों में सुविख्यात हैं।

भगवद् गीता के अतिरिक्त अनुगीता, विदुरनीति, सनत सुजातीय, विष्णु सहस्र नाम आदि प्रकरण भी यथा प्रसंग महाभारत का भाग बन गये। शान्ति पर्व और अनुशासन पर्व में राजनीति, धर्मनीति, व्यवहार ज्ञान, वर्णाश्रम धर्म जैसे मानव हितकारी विषय महाभारत में विस्तार से निरूपित किए गए हैं। यदि इसे आर्य धर्म और आर्य संस्कृति का विश्वकोश कहें तो अनुपयुक्त नहीं होगा।

महर्षि व्यास की प्रतिभा तथा उनके दार्शनिक विवेचन कौशल का सर्वाधिक श्रेष्ठ प्रमाण उनके द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र है जो वेदान्त दर्शन तथा उत्तर मीमांसा के नाम से प्रसिद्ध है। ये सूत्र व्यास प्रणत हैं इसलिए इन्हें ''वैदासिक सूत्र'' तथा शरीर के भीतर स्थित परमात्मा तत्व का विवेचन करने में समर्थ होने के कारण शारीरिक सूत्र भी कहते हैं। संस्कृत लेखन की एक शैली एक विशिष्ट शैली है जहां अल्पाक्षरों में विस्तृत एवं गूढ़ विषय को अत्यन्त संक्षिप्त कर प्रस्तुत किया जाता है। ब्रह्मसूत्रों का आरम्भ अथातो ब्रह्मजिज्ञासा इस सूत्र से होता है। अब हम ब्रह्म की जिज्ञासा करेंगे। वह परमात्मा कैसा है, यह हमारी मीमांसा का विषय होगा। अगले सूत्र में 'जन्माद्यस्य यतः' कह कर उस ब्रह्म को सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति (पालन) तथा संहार (प्रलय) का कारण बताया गया। तीसरे सूत्र में ब्रह्म को वेदादि शास्त्रों का कारण कहा गया।

शास्त्र योनित्वात् ऋग्वेदादि स्वत: प्रमाण माने जाने वाले चारों वेदों का कारण (रचयिता ब्रह्म ही हैं। तत्तुसमन्वयात् इस चौथे सूत्र का आशय स्पष्ट करते हुए भाष्यकारों ने बताया है कि ब्रह्म का विवेचन करने वाले वेदों तथा उपनिषदों अध्यात्म ग्रन्थों में यत्र-तत्र भिन्न-भिन्न शैलियों, शब्दावली तथा संदर्भों में जिस सर्वोच्च सत्ता का विचार एवं विवेचन किया गया है वह ब्रह्म ही है। सारे शास्त्रों का समन्वय ब्रह्म में होता है।

ब्रह्म सूत्रों के भाष्य, शंकर, रामानुज, माध्व, निम्बार्क तथा वल्लभ आदि मध्यकालीन आचार्यों ने अपनी-अपनी दार्शनिक दृष्टि से लिखे हैं जो भाष्यकारों के द्वारा स्वीकृत सिद्धान्तों के प्रतिपादक दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार शंकर भाष्य अद्वैतवाद का प्रतिपादन करता है तो रामानुज का श्री भाष्य विशिष्टाद्वैत की स्थापना करता है। इसी प्रकार द्वैत, शुद्धाद्वैत तथा द्वैताद्वैत आदि मतों की स्थापना उपर्युक्त आचार्यो द्वारा लिखित भिन्न-भिन्न भाष्यों में है। शंकराचार्य के प्रसिद्ध भाष्य पर वाचस्पति मिश्र की भामती टीका विश्व विश्रुत ग्रन्थ है। बदरी वन में निवास करने के कारण भगवान व्यास बादरायण के नाम से विख्यात हुए।

धर्मग्रन्थों के साहित्य में व्यास के नाम से एक स्मृति तथा महर्षि पतंजलि कृत योगदर्शन का व्यास भाष्य भी उपलब्ध होते हैं। ये परिवर्ता रचनाएं प्रतीत होती हैं। कारण कि आचार्य पतंजलि का काल आज के इतिहासकार शुंगवंश के राजाओं के समय का मानते हैं जो ईसा के बाद का है। यदि इन पातंजल सूत्रों पर किसी व्यास ने भाष्य लिखा तो वह लेखक महाभारत कालीन नहीं हो सका। व्यास स्मृति को भी अधिक प्राचीन नहीं कहा जा सकता है। वेदों के चतुर्वध विभाजन की अनुभूति और व्यास के साथ जोड़ी गई है किन्तु यह निश्चित है कि व्यास के पूर्वज शक्ति तथा पाराशर के काल में भी चारों वेदों की सत्ता थी इसलिए व्यास को उनके नामकरण के लिए उत्तरदायी नहीं कहा जा सकता। निश्चय ही महर्षि व्यास की साहित्य देन न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक मूल्यवान थाती है।

सम्पादकीय.....

श्री प्रियतम देव के कुछ सुझाव

आर्य समाज मोगा के पुराने कार्यकर्ता व सभा के अन्तरग सदस्य श्री प्रियतम देव ने अपने एक पत्र मे मुझे कुछ सुझाव लिखे हैं उन्हें आर्य जनता की जानकारी के लिए यहां लिख देना उचित समझता हूं वह लिखते हैं.–

विश्व में आर्य समाज सर्वश्रेष्ठ है और इसके नियम भी सर्वश्रेष्ठ है परन्तु 1960 से आर्य समाज निरन्तर अधोगति को प्राप्त हो रहा है, यदि इस ओर ध्यान न दिया गया तो आर्य समाज की बहुत बड़ी क्षति होगी। उन्होंने लिखा है महर्षि ने 1875 मे आर्य समाज की स्थापना की थी और चन्दा रूप में शतांश का नियम बनाया था। उस समय कम से कम एक आना रुपए का 16वां भाग प्रतिमाह चन्दा सदस्य देते थे उस समय सरकारी कर्मचारियों का वेतन दो रुपए मासिक होता था। उसके अनुसार अब अनुमान लगाए कि हमें कितना चन्दा आर्य समाज को देना चाहिए। 11 सदस्यों को आर्य समाज के सगठन का अधिकार था वह आज भी है परन्तु शतांश के नियम की उल्लंघना हो रही है। इसीलिए आर्य समाजों में धन की आभाव रहता है इसलिए सभी सदस्यों को शतांश अवश्य देना चाहिए।

सभा के संविधान की धारा 9 मे लिखा है कि आर्य समाज नियत फर्म पर प्रतिवर्ष 30 अप्रैल तक सभासदों की सूचि जो अन्तरग सभा द्वारा स्वीकृत हो और जो उस वर्ष के लिए स्वीकृत हो सभा को भेजे। धारा 12 क.ख. में लिखा है सदस्यो व सभासदों के चन्दे का दसवां भाग व अन्य प्राप्त आय का दसवा भाग दशांश सभा को प्रतिवर्ष 30 अप्रैल तक भेजें, परन्तु यह सभा को नहीं भेजा जाता। सभा को इस नियम का पालन दृढता से आर्य समाजों से करवाना चाहिए।

चन्देक आर्य समाजों को छोड़ कर आर्य समाजो के पास सदस्यों का कोई रजिस्टर नहीं है जिससे यह पता चले कि अमुक सदस्य कब आर्य समाज में आया, कब सभासद बना, उसका कितना वार्षिक या मासिक चन्दा है कुछ पता नही चलता। इसका रिकार्ड प्रत्येक आर्य समाज के पास होना चाहिए। कई अधिकारी भी शतांश नहीं देते उन्हे शतांश देना चाहिए, इसके साथ ही आर्य समाज मे व आर्य परिवारो मे पच महायज्ञ, 16 संस्कार, हिन्दी व सस्कृत का प्रयोग, आर्ष ग्रन्थो का स्वाध्याय होना चाहिए। सभा अधिकारियो को आर्य समाजो मे जाना चाहिए आर्य शिक्षा सस्थाओ मे जाना चाहिए वहा का निरीक्षण करना चाहिए।

श्री प्रियतमदेव जी के यह सुझाव अच्छे है सभी आर्य समाजो का कार्य नियम पूवर्क चलना चाहिए। इस ओर सभी को ध्यान देना चाहिए।

–स्वतन्त्र कुमार
सभा महामन्त्री।

आर्य मर्यादा का शुल्क भेजें

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पिछले लगभग दो वर्ष से संकट काल से गुजर रहा था परन्तु अब इसका संकटकाल समाप्त हो गया है। अब नियमित यह ग्राहक महानुभावों को मिलता रहेगा। अब पोस्ट की स्वीकृति भी मिल गई है, गत दो वर्ष से हम दो रुपए प्रति अखबार पर टिकट लगा कर पोस्ट करते रहे अब 25 पैसे प्रति अखबार टिकट लग रही है।

मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि इसका वार्षिक शुल्क लागत से भी कम जो केवल 50 रुपए है। शीघ्र अति शीघ्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम भेजने का कष्ट करें।

–धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

हवन सामग्री भी आधे मूल्य पर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पिछले कई वर्ष से आधे मूल्य पर जनता को साहित्य दे रही है। सारे भारत में यह एक मात्र सभा है जो वैदिक साहित्य अन्य प्रकाशकों से खरीद कर आधे मूल्य पर लोगों को देती है। गत वर्ष से हवन सामग्री भी सभा ने मंगवानी आरम्भ कर दी है। सामग्री भी आधे मूल्य पर 30 रुपये के स्थान पर केवल 15 रुपए किलो की दर से सभा कार्यालय से दी जा रही है। साहित्य और सामग्री पार्सल से नहीं भेजे जाते जो भी महानुभाव लेना चाहें वह सभा कार्यालय में आकर नकद भुगतान करके साहित्य व हवन सामग्री ले सकते हैं। कार्यालय का समय प्रात: 10 बजे से सायं पांच बजे तक है आने वाले सज्जन इसी समय में सभा कार्यालय में आएं रविवार को व राष्ट्रीय अवकाश वाले दिन कार्यालय बन्द रहता है।

आर्य बन्धु इस योजना का लाभ उठावें कृप्या प्रात: 10 बजे के बाद व सायं 5 बजे से पूर्व ही सभा कार्यालय में पधारें।

–धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों ने गत दिनों निश्चय किया था कि पजाब मे वेद प्रचार के कार्य मे तेजी लाई जाए। इस दिशा मे सभा ने कार्य आरम्भ कर दिया है। हमने पहले यह निश्चय किया ह कि सभा का एक कर्मचारी प्रत्येक आर्य समाज में जाए और वहां कि सारी स्थिति को देख उस आर्य समाज के कितने सदस्य हैं उसके आय के क्या साधन हैं उसकी कितनी भूमि व मकान आदि हैं। यदि उस आर्य समाज के द्वारा वेद प्रचार का कार्य नहीं हो रहा है तो उसके क्या कारण हैं। आर्य समाज मे दैनिक साप्ताहिक सत्सग होता है या नहीं वार्षिक उत्सव हुए कितने वर्ष हो गए हैं। यदि दैनिक व साप्ताहिक सत्संग नहीं होते, वार्षिक उत्सव नहीं होता तो उसका क्या कारण है। वहा कौन-कौन सक्रिय सदस्य हैं, कौन कौन सदस्य आर्य समाज का काम कर सकते है और उस आर्य समाज की स्थिति मे कैसे सुधार लाया जा सकता है।

इस दिशा में सभा ने कार्य आरम्भ कर दिया है श्री चमन लाल जी को फिलहाल इस कार्य के लिए सभा की ओर से लगाया गया है। वह इस समय गुरदासपुर जिला की आर्य समाजो मे जा रहे हैं। कई आर्य समाजों मे वह जा चुके हैं। अन्य जिलों की भी सब आय समाजो में व्यक्ति भेजे जा रहे है जो आर्य समाजे इस समय शिथिल हो चुकी ह या जिनकी गतिविधियां बन्द प्राय: हो गई हैं। आर्य समाजे के सदस्यों को भी इस विषय में सभा को सहयोग देना चाहिए सभा का जो भी कर्मचारी उनके पास आए उसे आर्य समाज की पूरी जानकारी दे ताकि सारी रिपोर्ट आने पर सभा के अधिकारी आर्य समाजों की समस्याओं के बारे मे बेठ कर विचार कर सकें और वेद प्रचार के कार्य को तेज कर सके।

सभा के कर्मचारी की रिपोट के पश्चात् जहा जहा आवश्यक्ता पडेगी सभा के अधिकारी भी वहां वहा आएगे और सारी स्थिति को देखेगे। सभा के उपदेशको को भी आर्य समाजों मे भेजा जाएगा। मैं समझता हूं कि जहा एक भी आर्य समाजी बैठा है वहा वेद प्रचार का कार्य हो सकता है। अब इस दिशा में शीघ्र ही कार्यवाई आरम्भ कर दी जाएगी।

जिला गुरदास पुर मे कई आर्य समाजे बन्द पड़ी हैं कई स्थानो पर आर्य समाजी व्यक्तियों का आभाव है ऐसी रिपोट हमारे पास आई है मेरी जिला आय सभा तथा जिला की धनी व सक्रिय आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह अपने अपने जिला की कमजोर आर्य समाजों को अपना सहयोग दें।

लगभग प्रत्येक जिला में सभा के अंतरंग सदस्य व अधिकारी हैं हम आगे सभा के अन्तरंग सदस्यों व अधिकारियों से भी प्रार्थना करेगे कि वह अपने जिले के कमजोर आर्य समाजों व शिथिल आर्य समाजों के सुधार के लिए कार्य करें। हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित प्रत्येक आर्य समाज का कार्य सुचारू रुप से चले और प्रत्येक आर्य समाज में, दैनिक साप्ताहिक सत्सग व वार्षिक उत्सव अवश्य हो। सभी आर्य बन्धु इस कार्य में सभा को अपना पूरा पूरा सहयोग दे बिना आर्य बंन्धु के व आर्य बहनों के सहयोग से हम इस कार्य में सफल नही हो सकेंगे। इस लिए सब लोग सहयोग आवश्य दें।

–स्वतन्त्र कुमार
सभा महामन्त्री

युवाओं की मौत

ले० श्री भद्रसेन, बी-2, 9217 बी, शालीमार नगर, होशियार पुर 146001

अनेक बार अकस्मात युवाओं को मोत की घटनायें भी हमारे मामने आती हैं। नि: सन्देह, ऐसी घटनायें अधिकतम किसी न किसी प्रकार की दुर्घटना के कारण ही होती हे। तब सारी बात सामने आने पर प्राय: यही शब्द सुनाई देते हैं कि मौत कोइ न कोई बहाना बना लेती हे। भगवान् की मर्जी ही ऐसी थी विधि के विधान को कौन टाल सकता है। देखो। किस प्रकार परिस्थितियो को बदल कर क्योकि मृतक की उस दिन की दिनचर्या कुछ और थी पर तब उसमे यह परिवर्तन आया और काल ने इसको अपना ग्रास बना लिया। उस समय निकट से निकटतम रिश्तेदार जहा विलाप करते हुए अपनी हार्दिक वेदना प्रकट करते हैं, वहां ऐसे अवसर पर हर आने वाला अपना दुख प्रकट करता है। तब प्राय: प्रत्येक यही कहता हुआ सुनाई देता है, कि ऐसा नहीं होना चाहिए था। यह अच्छा नहीं हुआ, ऐसा बुरा क्यों हुआ? हमारा ऐसा सोचना, इस दुर्घटना को इस रूप में पसन्द न करना, इस बात का प्रमाण है, कि सभी का दिल यह मान रहा है, यह ठीक नहीं हुआ, क्योंकि दिल की गहराईयों से जो निकलता है, वह सत्य होता है। तभी तो कहा है-प्रमाणमन्त: करण-प्रवृत्तम:- कालिदास-अभिज्ञानशाकुन्तल। ऐसा कोई एकाध ही नहीं चाहता, अपितु सभी की यही चाहना होती है।

इस दुर्घटना के इस रूप को पसन्द न करने से यह सिद्ध होता है, कि यह सब प्रभु की इच्छा से नहीं हुआ है, क्योंकि ईश्वर तो सब का परम पिता है और पिता सदा ही अपनों का भला ही चाहता है तथा करता है व संसारी पिता हर तरह से अपने बच्चों का भला ही करने का यत्न करता है। जिस कृपालु प्रभु ने हमारे भले के लिए एक मे एक अदभुत् भौतिक, प्राकृतिक पदार्थ दिए हैं। वह दयालु प्रभु फिर किसी का बुरा कैसे कर सकता है ? जब हम सब इस को अच्छा नहीं समझते, तो सब का हित चाहने वाला कैसे ऐसा चाह सकता है। हां, ईश्वर कर्मफलदाता है, पर वह न्यायकारी कर्म फलदाता है वह सर्वज्ञ होने से पूर्ण न्याय करता है अर्थात् दूध का दूध, पानी का पानी करता है।

नि:सन्देह यह घटना, यह बात एक सामान्य घटना, बात नहीं है। क्योंकि हम अपने चारों ओर प्राय: यही देखते हैं, कि हर भौतिक चीज जो पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश जैसे पाच भूतों से बनी है, वह परिवर्तन शील होने से अपने-अपने रूप के अनरूप एक दिन पूर्ण, ओझल हो जाती है। हां, कई बार कुछ जरा-जीर्ण, वृद्ध, घिसाने से पूर्व भी पूरी हो जाती हैं। वे किसी न किसी विशेष कारण, बात के कारण ही ऐसी स्थिति को प्राप्त होती हैं। अत: उन को विशेष बात, घटना कहते हैं, तभी तो सभी को वे अनोखी, विचित्र लगती है। वहां विशेष बात क्या है ? यह विशेष रूप से विचारने वाली गुत्थी है. विशेष विचारणीय बात कही जा सकती है?

इस प्रकार की विशेष बात, घटना की गहराई, पूर्व पृष्ठ भूमि, कहानी में जब हम जाते हैं, तो उस-उस दुर्घटना में अनेक बार जहां अपनी लापरवाही, असावधानी, अज्ञानता, गलती होती है या मशीन की कुछ गड़बड़ होती है। बहुत बार वहां इस तरह की दुर्घटनाओं में कुछ की लापरवाही, असावधानी या कुछ की अपराध की भावना भी सामने आती है। जो कि योजना बना कर जान-बूझ कर अपराध करते हैं। जैसे कि कनिष्क विमान की दुर्घटना, जिस में 23 जून 1985 को 329 की मृत्यु हुई थी, तथा 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका के वाशिंगटन, न्यूयार्क में किया गया आतंकवादी हमला, जिस में 5 हजार के लगभग की मृत्यु हुई और तीन विशाल भवन अग्नि की भेंट हो गए। इस प्रकार की छोटी बड़ी दुर्घटनायें हमारे चारों ओर प्रतिदिन हो रही हैं। तब स्वाभाविक रूप से अपराधियों को खोज कर दण्ड देने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार के प्रयास को सभी पसन्द करते हैं। इससे भी यह सिद्ध होता है, कि यह भगवान की मर्जी नहीं है और न ही विधि का विधान है। तभी तो हम ऐसी मौतों को पसन्द नहीं करते और अपराधियों को दिए जाने वाले दण्ड के प्रयास को पसन्द करते हैं।

परम पिता परमेश्वर सदा ही सब का हित ही चाहता और करता है, क्योंकि सर्वज्ञ होने से वही पूरी तरह से जानता है, कि किसी का हित किस में है। फिर हमारे सर्वज्ञ पिता परमेश्वर की इच्छा से किसी की अकाल मृत्यु कैसे हो सकती है?

इस प्रकार की युवाओं की मृत्यु की रस्म पगड़ी पर प्राय: धार्मिक प्रवक्ता परिवार को और विशेषत: पिता, पत्नी, पुत्र आदि को दुर्भाग्यशाली मानते हैं और उनको कुछ प्राचीन कथानक सुना-सुना कर कोसते हैं। इस प्रकार उनमें आत्मग्लानि. आत्महीनता उभार कर उनके धैर्य को कमजोर किया जाता है। जब कि इन बदली परिस्थितियों में परिवार के लिए धैर्य ही एकमात्र आधार होता हे। सब्र ही सब से बड़ा सहारा होता है। अत: हम सबको ऐसे भाव सामने लाने चाहिएं, जिनसे उन सब वियुक्तों, दुखियों को धैर्य मिले, सब्र हो। जिस से ये इन नई आपत्ति, बाधा, अड़चन पर धीरज के साथ पार प्राप्त कर सकें। कभी न कभी हर एक के सामने किसी न किसी प्रकार की विपरीत परिस्थिति, विपत्ति, अडचन. बाधा आ ही जाती है। ऐसी स्थिति में धीरता के धारण से हो उस विपरीत परिस्थिति को सहा जा सकता है और उस से निकला जा सकता है। घबरा जाने से, धैर्य छोड़ देने से आपत्ति और अधिक बढ़ती ही हैं। दुख, कष्ट, क्लेश और भी अधिक हावी होते हैं। तभी तो दृष्टान्त के साथ समझाते हुए कहा है-त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपिकाले धैर्यात्कदाचिद् गतिमाप्नुयात् स:। यथा समुद्रेऽपि पोतभङ्गे सांयत्रिको वाञ्छति तर्तुमेव॥

पंचतन्त्र मित्रभेद-319

विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी धीरज को छोड़ नहीं देना चाहिए, क्योंकि धीरता रखने से हो प्रतिकूल परिस्थिति से बचने का रास्ता कभी हाथ लग सकता है। जैसे कि समुद्र में नौका, जहाज के गड़बड़ाने पर प्रत्येक बचने की आशा रखता है। यह आशा तभी पूरी होती है, जब कोई धैर्य के साथ हाथ-पैर मारता है, तब हो सकता है, इतने में कोई दूसरी नौका आदि आ जाए या कोई सहायक हो जाए। वैसे अधिकतर नौकाएं घबराहट में ही डूबती हैं।

जहां विपरीत परिस्थिति को सब्र के साथ रहना चाहिए वहां अपेक्षित होने पर यथाशक्ति संघर्ष भी करना चाहिए। जैसे कि कभी रोगी हो जाने पर रोग से संघर्ष करते हुए जहां उसका इलाज किया जाए, वहां रोग के कष्ट को धैर्य के साथ सहन करना चाहिए। एकदम हाय-तौबा नहीं मचाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से रोग घटने के स्थान पर बढ़ता ही है। हां, धीरज रखने से रोग आदि का कष्ट अत्यधिक बेचैन नहीं करता तथा रोग में समय के साथ सुधार आता है।

इस असह्य वेदना के समय दुखियों के धैर्य को बढ़ाना ही चाहिए। जैसे-कैसे पारिवारिक जन हिम्मत करके इस दुख को सहने का प्रयास कर रहे होते हैं, तब उनकी हिम्मत की दाद ही देनी चाहिए। यदि कोई उनको किसी प्रकार मे दुर्भाग्यशाली कह-कह कर उनके ढाढस को गिराने की बात करता है, तो यह उचित नहीं, क्योंकि उसका उलटा प्रभाव होता है। जब मौत की घटना सामयिक रूप में स्पष्ट ही हो, कम मे कम तब तो ऐसी चर्चा करना, बाप के सामने बेटे की अर्थी उठी है, अत: यह घोर कलियुग है, दुर्भाग्य की यह बात है, पूर्व के किन्हीं कर्मों का फल है ? इस प्रकार की बातों से किसी का मन धैर्य ही कमजोर होता है। वस्तुत: इस स्थिति में हर तरह से धैर्य को बढ़ाने की सब से पहली जरूरत होती है।

हां, हम यह कहते हैं, कि सभी अपने-अपने कर्मों का फल ही प्राप्त करते हैं और, कोई भी दूसरे के कर्मफल में दखल नहीं दे सकता। क्योंकि न्यायकारी परमेश्वर की यह कर्मफल व्यवस्था सर्वथा पूर्ण है। तभी तो कहा है-

मेरे दाता के दरबार मे सब लोगों का खाता।

जैसा जो कोई कर्म करे, वैसा ही वह फल पाता॥

विश्वपति जगदीश तू---

दाता तेरे दरबार में, होता सदा न्याय है।

चलती है न रिश्वत, सिफारिशें, चढ़ता न कोई दाम है॥

अब के मार के देख

❑ ले० श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ.प्र.)

एक सहस्राब्दी पुरानी बात है, जब भारत पर शहाबुद्दीन मौहम्मद गौरी ने आक्रमण किया था। उस समय भारत में पृथ्वी राज चौहान का शासन था। पृथ्वीराज चौहान वीर सम्राट था, उसकी वीरता में सन्देह का कोई स्थान नहीं है। शहाबुद्दीन मौहम्मद गौरी की सेना को बड़ी वीरता तथा अदम्य साहस के साथ-भारतीय सेनाओं ने खूब मारा काटा। यहां तक कि कई सहस्र सेना में से केवल मुट्ठी भर सिपाहियों को लेकर सुलतान शहाबुद्दीन भागने लगा था कि पृथ्वीराज के सैनिकों ने उसे गिरफ्तार कर लिया तथा हथकड़ी लगा कर सम्राट के सामने ला खड़ा किया। मौहम्मद गौरी रोने लगा और युद्ध के लिए की गई अपनी चढ़ाई को अपनी मूर्खता बताने लगा। गिड़गिड़ा कर क्षमा याचना की। जब वह अत्याधिक गिड़गिड़ाया तो सम्राट ने उसे छुड़वा दिया।

उस समय पिटा हुआ गौरी क्षमा याचना कर चला तो गया किन्तु थोड़े ही समय के पश्चात् पहले से अधिक सेना लेकर पुन: भारत पर आक्रमण कर दिया और सीमान्त क्षेत्र से मार काट मचाता दिल्ली तक आ पहुंचा। घमासान युद्ध हुआ। गौरी फिर पकड़ा गया किन्तु पिछली बार की भांति गिड़गिड़ा कर पुन: छूटा और स्वदेश लौट गया। परन्तु वह निर्लज्ज तीसरी बार पुन: एक बड़ी सेना लेकर भारत पर चढ़ आया, परन्तु भारत के परमवीर तथा नीति शून्य सम्राट ने उसे पुन: गजनी लौट जाने दिया। उस म्लेच्छ ने इस बार पुन: भारत पर चढ़ाई कर दी।

निरन्तर इसी प्रकार सम्राट पृथ्वीराज ने उसे सोलह बार क्षमा दान दे-दे कर छोड़ा। सत्रहवीं बार उस दुष्ट ने पुन: भारत पर आक्रमण कर दिया। निरन्तर सोलह बार के युद्धों में सम्राट की सेना बहुत कुछ कट गई थी। थोड़ी ही सेना लेकर सम्राट ने युद्ध किया और इस बार हार पल्ले पड़ी तथा सम्राट को बन्दी बना लिया गया और गजनी ले जाकर उसकी आंखें निकलवा कर उसे कारागार में डाल् दिया गया। सोलह बार की भयंकर भूल का परिणाम यह हुआ कि अन्धा होकर सम्राट को बन्दी गृह की दीर्घकाल तक यातना भोगनी पड़ी और भारत को लगभग एक सहस्र वर्ष तक पराधीनता का जीवन जीना पड़ा।

कहते हैं कि एक बार एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के द्वारा पिटता रहा था किन्तु हर बार यही कहता रहा था कि 'अब के मार के देख' प्रात: से सायं तक पिटा था किन्तु उसकी अब के मार समाप्त नहीं हुई थी। यही बात सम्राट पृथ्वीराज पर लागू होती है निरन्तर सोलह बार युद्ध की यन्त्रणा भोग कर भी अब के मार समाप्त नहीं हुई तो सत्रहवीं बार उसका भयंकर कुपरिणाम भोगना पड़ा। सम्राट पृथ्वीराज ने जो अब के मार प्रारम्भ की थी, वह अब तक भी समाप्त नहीं हो पाई है। हमारे वर्तमान कालिक नेता प्रत्येक बार अपनी वीरता, अपनी सेना की शौर्य गाथाएं गाते हैं और फिर 'अब के मार के देख' के स्वर गुञ्जार कर तथा फिर से 'अब के मार के देख' कहने का अवसर शत्रु को देने के लिए शान्त होकर बैठ जाते हैं।

आधुनिक युग के महान सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सुप्रसिद्ध अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि 'तुमने चौका लगाते-लगाते राज पाट धन-धाम' सब पर तो चौका लगा दिया, अब कहीं जाकर बस भी करोगे आज हमें भारत के नेताओं को यह कहना पड़ रहा है कि भारत के स्वतन्त्र होने के प श्चात् से लगातार भारत पर पाकिस्तान द्वारा आक्रमण हो रहे हैं किन्तु आप लोगों की 'अब के मार के देख' कभी समाप्त होगी या नहीं? वीर सैनिक प्रत्येक बार पाकिस्तान की सेनाओं को पृथ्वीराज सम्राट की सेनाओं की भांति धूल चटा देते हैं किन्तु सेना की वीरता के गीत गाकर आप शान्त होकर बैठ जाते हैं। सेना की वीरता और शौर्य के परिणाम स्वरूप भारत को क्या लाभ हो रहा है । प्रत्येक बार हारते नेता हैं, सेना नहीं हारती। क्या इस बार-बार की नेताओं की गतिविधि सेनाओं का मनोबल नहीं गिराती? यदि इसी प्रकार सैनिकों का मनोबल गिराया जाता रहा तो सैनिक विद्रोह भी तो हो सकता है, जो देश के लिए शुभ नहीं होगा, परन्तु उसका दायित्व तो नेताओं पर ही होगा। क्या भारत के नेताओं के पास इतनी समझ भी नहीं है? प्रश्न यही है कि अन्ततोगत्वा हमारे नेता कब तक इस प्रकार मूर्खतापूर्ण गतिविधियां अपनाये रहेंगे?

देश की स्वतन्त्रता के तुरन्त पश्चात् कबाइलियों को आगे करके पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। तब गांधी जी ने भी कहा था कि मेरी अहिंसा तो साधु की अहिंसा है शासन का इस अहिंसा से काम नहीं चलेगा। यदि कबायलियों की आड़ में पाकिस्तान की सेनायें भारत की ओर आ रही हैं तो भारत को अपनी सेनाओं का मुंह लाहौर और कराची की ओर कर देना चाहिए। तब कराची ही पाकिस्तान की राजधानी थी, इस्लामाबाद तो बाद में बसाया गया है। परन्तु भारत के तात्कालिक प्रधानमन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने अपने बूढ़े बापू की लेश भी नहीं सुनी और काश्मीर में गिलगित की पहाड़ी चोटी पर चढ़ रही भारत की सेनाओं को युद्ध-बन्दी का सन्देश भेज दिया। यदि यह सन्देश तब सेना को न दिया जाता तो दो घण्टे में भारत की सेनायें गिलगित को चोटी पर और वहां से जो पाकिस्तानी तोपें भारत की ओर गोले फैंक रही थी, उन पर भारतीय सेना का अधिकार होकर उनका मुंह पाकिस्तान की ओर मोड़ दिया जाता। कश्मीर जो भारत की घरेलू समस्या थी उसे यू.एन.ओ. में ले जाकर सदा के लिए उलझा दिया।

सन् 1962 में चीन ने आक्रमण किया और भारत की चालीस सहस्र वर्गमील, भूमि पर अधिकार कर लिया जो आज तक उसके अधिकार में है। प्रधानमंत्री श्री नेहरु तो 'हिन्दी-चीनी भाई भाई' के नारे लगाते रहे और चीन के तात्कालिक प्रधानमंत्री नेहरू जी के परम मित्र 'हिन्दी-चीनी भाई भाई' का घोष लगाते हुए अपनी सेनाओं को भारतीय भूमि कब्जाने का सन्देश देते रहे।

अंग्रेज जाते जाते तिब्बत भारत को सौंप गए थे, परन्तु हमारे बुद्धि के भण्डार नीति विशारद् श्री नेहरू जी ने तिब्बत को थाल में सजा कर चीन को भेंट कर दिया। यदि यह नादानी न की होती तो चीन और भारत के मध्य में वह 'बफर स्टेट' का काम करता और हम तिब्बतियों को हथियार बाट कर अपने घर बैठे रहते। तब तिब्बत चीन होता, भारत चीन नहीं। नेहरू जी की नीति ने तिब्बत को चीन का गुलाम बनाया और वहां सहस्रो का रक्त बहा तथा तिब्बत के प्रधान दलाई लामा को अपने लगभग एक लाख साथियों के साथ भाग कर भारत आना पड़ा, जो भारत पर स्थायी रूप से आर्थिक भार बने हुए हैं।

नश्तर को लेके हाथ में, फसाद ने कहा।

रंग-रंग में जख्म हैं, मैं लगाऊं कहां-कहां?

हमारी इन नीतियों के परिणाम स्वरूप पाकिस्तान ने फिर साहस किया और कच्छ के रन पर आक्रमण कर दिया। वह तो भारतीय सेना नायकों की जागरूकता के कारण पाकिस्तानी मुंह की खाकर भाग गये किन्तु सन् 1965 में पाकिस्तान ने फिर भारत पर आक्रमण कर दिया। उस समय लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री थे। भारत के सैनिकों ने वीरता के मानक स्थापित किए किन्तु शास्त्री जी ताशकन्द जाकर रूस के दबाव में जीती बाजी हारे और उसी अवसर पर उन्हें प्राणों से भी हाथ धोने पड़े। उस युद्ध में भारत का लाहौर पर पूर्णतया अधिकार हो गया था किन्तु यदि लाल बहादुर शास्त्री लाहौर से अपनी सेनाओं को वापिस न बुलाते तो लाहौर के बदले में पाकिस्तान ने जिस मुजफ्फराबाद का वह कश्मीरी क्षेत्र जिस पर सन् 1948 से पाकिस्तान ने अधिकार जमा रखा है, वापिस लिया जा सकता था परन्तु हमारी रंगों में तो अब के मार के देख का सूत्र प्रवाहित हो रहा है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज जी.टी. रोड फिरोजपुर छावनी का वार्षिक चुनाव दिनांक 21-4-02 को श्री अर्जुन सिंह चावला जी की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें श्री नरिन्द्र छाबड़ा जी को सर्वसम्मति से वर्ष 2002-2003 के लिए प्रधान चुना गया। प्रधान जी ने बाकी कमेटी का गठन किया जिसमें डा. रूपेश गुप्ता जी को महामंत्री तथा श्री राजेन्द्र गुप्ता जी को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। —डा० रूपेश गुप्ता

आर्य समाज उदयपुर का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज उदयपुर के मंत्री डा श्री राम आर्य ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया है कि आर्य समाज के वार्षिक चुनाव 21-4-2002 को साप्ताहिक सत्संग एवं रामनवमी पर्व मनाये जाने के तुरन्त बाद समाज के सभागार में श्री श्रवण कुमार वधवा के चुनाव अधिकारीत्व में निम्न प्रकार सम्पन्न हुए।

1 डा प्रेम चन्द गुप्ता, प्रधान। 2. श्री हरिनारायण शर्मा उप प्रधान। 3. श्रीचन्द कालरा, उप-प्रधान। 4 डा. श्रीराम आर्य, मंत्री। 5 श्री दीन दयाल शर्मा संयुक्त मंत्री। 6. श्री शिव दयाल आर्य उपमंत्री। 7 श्री हीरालाल सांचोरा प्रचार मंत्री। 8 श्री मिठनलाल चौधरी, कोषाध्यक्ष। 9. श्री शंकर लाल मरमट- पुस्तकालयाध्यक्ष। 10. श्रीमती स्नेहलता गुप्ता- प्रभारी पुस्तक विक्री विभाग। 11 श्री दुर्गाप्रसाद पारीक- लेखानिरीक्षक।

अन्तर्रग सदस्य:—श्री फतेहलाल शर्मा, श्री इन्द्रदेव पीयुष, श्री वासुदेव शास्त्री, श्री जगदीश गौड़।

—डा० श्रीराम आर्य, मंत्री

(पृष्ठ 1 का शेष)

मे सवार थे। आर्य समाज प्रीत नगर जालन्धर आर्य समाज ऋषिकुंज पक्का बाग जालन्धर के महानुभाव रेलगाड़ी के द्वारा हरिद्वार पहुंचे। सभा प्रधान श्री पं हरबस लाल जी शर्मा, वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, श्री कुन्दन लाल मेठ, श्री चतुर्भुज मित्तल, श्रीमती राज मोहनी सोंधी, श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा कारो में अपने परिवार सहित जालन्धर से गए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने अपने कार्यालय के कर्मचारी श्री वीरेन्द्र शर्मा, श्री चमन लाल, श्री जोगेन्द्र सिंह, श्री शिवाकांत को आवास की व्यवस्था के लिए गाड़ी द्वारा हरिद्वार भेज दिया था। जिन्होंने वहां जाकर 24-4-2002 से प्रात: अपना कार्यालय बनाकर वहां कार्य आरम्भ कर दिया था। 25-4-2002 को सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री पं. धर्मदेव जी, श्री सुनील कुमार जी, श्री अशोक नन्दा और श्री राजेश कुमार आर्य प्रबन्ध के लिए वहां पहुंच गए थे।

पजाब के कई शहरो से बसें चलाने का प्रोग्राम बनाया था परन्तु सफर लम्बा होने के कारण कई लोग रेलगाड़ी द्वारा हरिद्वार जाना पसन्द करते थे परन्तु फिर भी पठानकोट से एक बस, दो कारें। नवां शहर से एक बस, चण्डीगढ मे एक बस, तपा व बरनाला से एक बस, धूरी से चार मैटाडोर, मोगा से चार मैटाडोर जालन्धर से एक बम छ: कारें एक मैटाडोर, पटियाला से मैटाडोर, भठिण्डा, रामा, गोनियाना मण्डी फिरोजपुर, अमृतसर, जण्डियालागुरू आर धूरी व संगरूर, राजपुरा से सभी महानुभाव रेलगाड़ी द्वारा हरिद्वार पहुंचे।

संगरूर से श्री जगदीश, श्री राजेन्द्र जी आदि चार महानुभाव, दुलद्दीगेट नाभा से श्री नारायण दत्त आदि 12 महानुभाव, जालन्धर छावनी से श्री जनक नाभा महाजन आदि 5 महानुभाव, मोहाली से श्री डा. श्रुति कान्त आदि महानुभाव, तलवाड़ा से पांच महानुभाव, भठिण्डा से श्री प्रेम भाटिया जी के नेतृत्व मे 20 महानुभाव, रामामण्डी से 13 महानुभाव, श्री तरमेम कुमार आर्य आदि गोनियाना मण्डी से पांच महानुभाव श्री महत्ता जी आदि भठिण्डा से और भी कई महानुभाव पहुचे थे। बरनाला व तपा से श्री सी मारकण्डा के नेतृत्व मे एक बस व कुछ मेटाडोरे। कई महानुभव पंजाब से अपनी निजी गाडिया लेकर वहां पहुचे थे। सभी के नाम यहां लिखे जाने कठिन हैं। पजाब के प्रत्येक नगर से कुछ न कुछ महानुभाव अवश्य पहुंचे थे। सभी लोगों में उत्साह था और एक विशेष भावना थी कि हमने गुरुकुल कांगड़ी के शताब्दी समारोह मे भाग लिया।

यह तो संक्षेप में केवल पंजाब का ही वर्णन यहां लिखा गया है यदि कुछ महानुभावों के नाम आदि व स्थान आदि की जानकारी भूल से रह गई हो वे नाराज न हों हमें लिख दें हम पुन: इस सम्बन्ध में जानकारी आगामी अंक में देंगे। यह शताब्दी समारोह ही नहीं आर्यों का कुम्भ का मेला हरिद्वार में लगा हुआ था। शेष आगामी अंक में पढ़ें।

—धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

अब के मार.....

(पृष्ठ 5 का शेष)

सन् 1971 में बंगला देश का युद्ध हमें पाकिस्तान से लड़ना पड़ा तब पूर्वी बंगाल का वह क्षेत्र जो पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना जाता था, पाकिस्तान से पृथक् होकर बंगला देश बन गया। एक लाख के लगभग पाकिस्तानी जिन्होंने हमारी सेना के सामने हथियार डाल दिये थे, भारत द्वारा बन्दी बना लिए गए और पूरे एक वर्ष तक वह भारतीय बन्दी के रूप में यहां रहे, परन्तु उस युद्ध के कारण भारत की आर्थिक स्थिति जो चरमरा गई थी उस पर इन एक लाख सैनिकों का भारी बोझ लद गया। तत्पश्चात् शिमला समझौता हुआ। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फीकार अली भुट्टो और भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के मध्य यह समझौता हुआ था किन्तु समझौते के तुरन्त बाद लाहौर हवाई अड्डे पर पहुंचते ही मियां भुट्टो ने इस समझौते को धत्ता बता दिया और एक धूर्ततापूर्ण ब्यान पाकिस्तान के पत्रकारों को दे दिया। कितनी बार 'अब के मार के देख' का सूत्र गिनाया जाए?

हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री स्वनाम धन्य श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ही क्यों पीछे रहने लगे थे? कारगिल में युद्ध लड़ते समय इतना साहस न जुटा पाए कि भारत की एक सैनिक टुकड़ी को मुजफ्फराबाद विजय करने का आदेश कर देते। कर भी क्यों देते, क्योंकि एक सहस्र वर्ष से अपनाया गया 'अब के मार के देख' का पुरातनवाद जो दोहराना था। पाकिस्तान बराबर वार करता रहा है। कश्मीर में तो मार ही रहा है, भारत के अन्य क्षेत्रों में भी अपनी गुप्तचर एजेंसी आई.एस.आई. के द्वारा बम विस्फोट करा करा कर भारत को पीट रहा है। लाल किले और भारतीय संसद तक पर आक्रमण किए जा रहे हैं किन्तु भारत का नेतृत्व कह रहा है 'अब के मार के देख'। अमरीका में किए गए एक काण्ड पर ही अमरीका द्वारा तालिबान को तबाह कर दिया गया किन्तु भारत की रगों में तो वही सम्राट पृथ्वीराज वाला रक्त प्रवाहित हो रहा है अत एव हमारे राजनीति के अनाड़ी अपनी काल्पनिक विचारों की दुनिया में ही विचर रहे हैं।

अभी कुछ महीने पहले ही कश्मीर में एक ग्राम के पैंतीस आदमियों को पंक्तिबद्ध खड़ा करके गोलियों से भून दिया गया। यदि हमारा नेतृत्व राष्ट्रीय गौरव से गौरवान्वित होता तो यह नहीं हो सकता था। कारगिल युद्ध के समय मुजफ्फराबाद होकर यदि पाकिस्तान पर आक्रमण कर दिया गया होता तो टूटते हुए पाकिस्तान के लिए वही पर्याप्त था। लम्बे समय से बाट जोह रहे पख्तून और बिलोच और उनके साथ-साथ सिन्धी भी विद्रोह कर पृथक-पृथक हो जाते और पाकिस्तान पंजाब वाला भाग ही रह जाता, तो प्रत्येक समय भारत का ऋण चुम्बन करता अन्यथा परन्तु, बिलोच और सिन्धी पाकिस्तान को चैन की नींद नहीं सोने देते। परन्तु हमारा नेतृत्व बन्दर घुडकियां तो देता रहता है किन्तु कुछ कर गुजरने का साहस नहीं जुटा पाता। यह दुर्भाग्य है इस एक अरब से अधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र का और उधर इसराईल जैसा छोटा सा कुछ लाख की जनसंख्या वाला राष्ट्र है, जो पूरे अरब राष्ट्रों की नाक में नकेल डाले हुए है। हां, हन्त ! यदि हमने 'अब के मार के देख' का सूत्र न पढ़ा होता। इसराईल ने यह सूत्र नहीं पढ़ा है। यही कारण है कि वह विश्व में सर ऊंचा कर सीना तान कर जी रहा है।

आर्य और आर्य समाजी

□ले० श्री सुखेश्याम मोहिल, भू.प्र. मन्त्री आर्य समाज धूरी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वेद पर आधारित मान्यताओं के विकास के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करके विश्व कल्याण के लिये सर्वसम्मत समाज बनाना चाहते थे बिल्कुल उसी प्रकार से जैसे विभिन्न मतों के प्रर्वतकों की शुभ इच्छायें रही, लेकिन कार्यशैली और भावनायें अलग अलग रही हैं। महर्षि दयानन्द जी की कार्यशैली और भावनायें स्वयं का कद ऊंचा करने के लिए नहीं थी बल्कि पूर्व ऋषि, मुनियों, महापुरुषों और सबसे बढ़कर सांस्कृतिक धरोहर वैदिक मान्यताओं का आदर्श व सम्मान बहाल करने की थी। यह उपदेश महर्षि जी ने सभी मनुष्यों में किया। जिन लोगों ने वैदिक मान्यताओं को धारण कर लिया उनको महर्षि दयानन्द जी ने 'आर्य' कहा अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष कहा। धीरे धीरे इन्ही श्रेष्ठ पुरुषों (आर्यों) की संख्या बढ़ने लगी जिन्हें अनुशासित व संगठित करना था तब जाकर महर्षि जी ने 1875 में 'आर्य समाज' नामक आर्यों का सगंठन बनाया था। यानि कि पहले आर्य बनाये फिर उनका संगठन बना यानि आर्य समाजी बने

आज से केवल एक डेढ़ दशक पहले, पहले मनुष्य वैदिक विचार धारा सुनता था, फिर मनन करता फिर नियमित रूप से निस्वार्थ भाव से आर्य समाज में आता था। उसको आर्य समाज के प्रधान व मन्त्री सदस्य बनने की लगातार प्रेरणा देते, जोर देते और जब वह व्यक्ति स्वयं को मन, वचन, कर्म से आर्य महसूस करता तभी आर्य समाज का फार्म भरता था, तब जाकर आर्य समाजी बनता था। आर्य समाजी बनना कोई छोटी मोटी बात नहीं थी। आर्य समाजी बनने का साफ मतलब होता था कि अब संगठनात्मक व अनुशासन में कमर कस कर ऋषि के उपदेश व आदेश के लिए जोर लगाना है। पहले खुद आर्य बने अब जब स्वय आय समाजी बने हैं तो अब अन्य लोगों को आर्य बनाना हे। प्रत्येक आर्य समाजी ऋषि उपदेश का प्रचारक होता था। प्रत्येक आर्य समाजी अपने अपने तरीके से वैदिक मान्यताओं और महर्षि के उपदेश का प्रचार करते घूमता था। आर्य समाजी बनने का मतलब ही आर्य समाज का उपदेशक बनना होता था तभी तो केवल 100 वर्ष के अल्पकाल में ही आर्य समाज विश्व के प्रत्येक कोने-कोने में पहुंच चुका है। विशाल भारत की आज़ादी में कितने ही आर्य समाजी शहीद हुए तभी आजादी सम्भव हो पाई। इस समय भारत के संविधान को देखने से आर्य समाज के प्रभाव को बड़ी अच्छी तरह से भांपा. देखा जा सकता है इसमें आर्य समाज के सभी कार्यक्रमों को सम्मिलत किया गया है। क्योंकि आर्य समाज आजादी का मुख्य प्रेरणा स्रोत था। आर्य समाज एक सजग प्रहरी जो राष्ट्र समाज और धार्मिक वैदिक मान्यताओं का प्रहरी व उपदेशक निर्माता संस्था थी तो आर्य समाजी उसके कर्त्तव्यनिष्ठ सैनिक थे। परन्तु आज बहुत दु:ख होता है जब वर्तमान आर्य समाजियों को देखते हैं, आर्य समाजों में नये नये आदमी लाकर उनको पहले आर्य समाजी का लेबल लगा देते हैं फिर उसको "आर्य" बनने की जरूरत महसूस ही नही होती। अब स्थिति लगभग सभी आर्य समाजों की यही है कि लेबलड आर्य समाजी अधिक सख्या में हैं और 'आर्य' कम जिसका परिणाम है कि उपदेश खत्म हो गया और कुर्सी की दौड़ शुरू हो गई. हम किसी को क्यों कोसें. इसमें सबसे ज्यादा दोषी खुद आर्य समाजी ही हैं। अब आर्य समाजों में चुनाव गुण पर आधारित न होकर केवल संख्या आधारित हो गया है इस लिए अच्छे आदमी आर्य समाजों के अधिकारी नही बनाए जा रहे। आर्य संस्कारों से संस्कारित व्यक्तियों को आर्य समाजों का अधिकारी बनाया जाए और 'आर्य' भद्र पुरुषों को ही आर्य समाज का सदस्य बनाया जाए। नियमानुसार तीन वर्ष का विधान सदस्य बनने का आशय ही यही है लेकिन इसका राजनैतिक अर्थ केवल नाम दर्ज करना ही लिया जाता है जिससे वह सदस्य 'आर्य' तो बनता नहीं आर्य समाजी बन जाता है। वे आर्यत्व से कोसों दूर होते हैं, हर दृष्टि से ज्यादातर गलत व्यक्ति होते हैं, इसलिये सभी पुन: विचार कर आर्य समाजों में 'आर्य' गुणों से भरपूर व्यक्तियो को ही आगे आने देवें।

सब से पहले आर्य बनें फिर आर्य समाज के सभासद् बने, फिर अधिकारी बने। जब तक आर्य समाजो के अधिकारी आर्य विचार धारा के व्यक्ति नहीं बनेंगे तब तक आर्य समाज ऊंचा नहीं उठ सकता। पहले आर्य समाज का अधिकारी वही व्यक्ति बनता था जो आर्य होता था जो लोग पूर्णरूप से आर्य समाजी नहीं होते थे वह स्वयं ही अधिकारी बनने से इन्कार कर देते थे, चाहे आर्य समाज के सदस्य कितना ही उन्हे अधिकारी बनने के लिए कहें। आज अन्तर इतना आ गया है कि अब अधिकारी बनने के लिए संघर्ष किया जाता है। इसी लिए आर्य समाजों में शिथिलता आ रही है। इस ओर हमें ध्यान देना चाहिए।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज फोकल पवाइन्ट अर्बन एस्टेट फेस-I लुधियाना को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार शीघ्र सम्पर्क करें। फोन न 670757-676380.।

-बलदेवराज-मन्त्री

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जि जालन्धर) पजाब में कक्षा-छठी-नौवीं तक में प्रवेश के इच्छुक छात्रो की प्रवेश परीक्षा 10 जून-2002 सोमवार को प्रात: 10 बजे ली जाएगी। कक्षा-छठी के प्रवेशार्थियों की केवल गणित, हिन्दी, अग्रेजी में तथा शेष तीन कक्षाओ के प्रवेशार्थियों की गणित,, हिन्दी संस्कृत तथा अंग्रेजी विषयों की स्थानुकूल परीक्षा ली जाएगी। अधिक अक पाने वाले छात्र नियत सख्या मे ही प्रवेश पा सकेंगे।

ऊपर की कक्षाओं (विद्याविनोद अर्थात् 10+1 तथा अलकार अर्थात् बी ए) में प्रवेश क इच्छुक नये छात्रों को जुलाई के पूर्वार्द्ध मे प्रमाण पत्रों सहित उपस्थित होना होगा। शारीरिक और बुद्धि से कमजोर छात्रों को प्रवेश नहीं मिलेगा।

गुरुकुल करतारपुर का पाठ्यक्रम कक्षा-8 तक सी. बी. एस. सी (एन. सी. आर टी.) से तथा ऊपर की कक्षाओं का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से सम्बन्धित है। छात्रों को आवास, शिक्षा एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क है। पुस्तकों, वस्त्रादि, फुटकर खर्च तथा विश्वविद्यालय का परीक्षा शुल्क अभिभावक को ही वहन करना होगा। कक्षा-छठी से कक्षा-नौवी तक के प्रवेशार्थियों को 9 जून-2002 रविवार शाम तक गुरुकुल में पहुंच जाना चाहिए।

—आचार्य, सुखदेव राज शास्त्री।

आवश्यकता है

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला-जालन्धर (पजाब) मे अनुभवी विद्वानों की आवश्यकता है। जो गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की अलंकार (बी. ए.) कक्षाओं को वेद, दर्शन, व्याकरण पढ़ाने में समर्थ हों। अवकाश प्राप्त तथा गुरुकुल परम्परा के स्नातकों को प्राथमिकता दी जाएगी। योग्यता विवरण के साथ अपना आवेदन-पत्र शीघ्र भेजें। आवास तथा भोजन की सुविधा के साथ समुचित मानदेय भी दिया जाएगा।

गुरुकुल हितैषी सज्जनों से भी निवेदन है कि यदि उनकी जानकारी में कोई ऐसे विद्वान् हों तो उसके पते सहित हमें सूचित करें, जिससे हम स्वयं उनसे सम्पर्क कर सकें। दूरभाष-0181-782252

—डॉ. नरेश कुमार शास्त्री, मन्त्री।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

1. आर्य समाज वैरगनिया एवं गुरुकुल वैरगनियां का वार्षिक उत्सव दिनांक 16, 17 एवं 18 मार्च 2002 को मनाया गया।

2. आर्य समाज फुलार (वैशाली, बिहार) का सप्तम वार्षिक उत्सव 22, 23 एवं 24 मार्च 2002 को मनाया गया।

3 आर्य समाज नवादा, चौथम, खगड़िया का वार्षिकोत्सव 2, 3, 4, एवं 5 अप्रैल को मनाया गया।

4. आर्य समाज मानपुर तैतराबा (नालंदा) का 60 वां वार्षिकोत्सव 12, 13, 14 एवं 15 अप्रैल 2002 को सम्पन्न हुआ इन चारों उत्सवों में स्वामी अग्निव्रत नालंदा, पं. नवल किशोर शास्त्री, समस्तीपुर, धर्मशीला आर्य, प. दिनेश दत्त शर्मा पं. सत्य देव शास्त्री, श्री दयानन्द सत्यार्थी, श्रीमती राज बाला आर्या तथा अन्य कई विद्वानों ने भाग लिया।

आर्य समाज दीना नगर का चुनाव

21-4-02 को आर्य समाज दीना नगर का दो वर्ष के पश्चात् स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में चुनाव हुआ जिस में रघुनाथ सिंह शास्त्री को पुन: सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया शेष अधिकारियों के चुनाव का अधिकार उनको दिया गया। उन्होंने जो चुनाव किया वह इस प्रकार है।

संरक्षक-पूण्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी सदानन्द जी, डा. हरिदास जी मेहता, प हंस राज जी।

प्रधान-रघुनाथ सिंह शास्त्री।

उपप्रधान-श्री बलराज जी गुप्ता, प्रिंसिपल गन्धर्व राज जी, श्री भारत भूषण खुग्गिलिया, श्री पन्ना लाल जी महाजन, महामंत्री श्री योगेन्द्र पाल शर्मा, उपमंत्री श्री रमेश कुमार जी महाजन प्रचार मंत्री श्री वेद प्रकाश जी आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर कुमार जी महाजन। लेखा निरीक्षक-श्री राज कुमार जी नैय्यर। पुस्तकाध्यक्ष-मास्टर योगेन्द्र कुमार जी। सम्पति अध्यक्ष-मास्टर रुपचन्द जी शर्मा।

अन्तरंग सदस्य

1. श्री अरविन्द कुमार, 2. भारतेन्दु जी ओहरी, 3. विश्वइन्दु, 4. अनिल कुमार जी, 5. मनोरंजन जी ओहरी, 6. धर्मेन्दु जी गुप्ता, 7 वेद प्रकाश जी ओहरी, 8. वेद प्रकाश जी महाजन, 9. श्री अवतार किशन जी, 10. श्री योग राज जी बजाज, 11 आर. एल जी, श्री ओम प्रकाश जी महाजन।

—रघुनाथ सिंह शास्त्री प्रधान

आर्य समाज मुम्बई का उत्सव

आर्य समाज मुंबई का वार्षिक उत्सव 13-14 अप्रैल को समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। गुढीपाडवा के नवसंवत्सर के दिन ही आर्य समाज की स्थापना 126 वर्ष पूर्व गिरगांव में हुई थी। वार्षिकोत्सव के इस अवसर पर बड़ी संख्या में जनसमुदाय की उपस्थिति रही।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओंकरनाथ आर्य की अध्यक्षता में आर्यसमाज स्थापना दिवस का समारोह सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री मिठाई लालसिंह जी, पं. प्रकाशचन्द्र जी शास्त्री, डा. सोमदेव शास्त्री, डा. वागीश आचार्य पं. रामदत्त शर्मा आदि विद्वानो ने अपने महत्वपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किये। पं. देवदत्त शर्मा ने कार्यक्रम का संयोजन किया। दो दिन तक विभिन्न विषयों पर विद्वानों के प्रवचनों से जनसमूह ने प्रेरणा प्राप्त की।

प्रवेश सूचना

श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक टंकारा

जिला राजकोट-363650 (गुजरात) प्रथम पाठ्यक्रम:-महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा से मान्यता प्राप्त मध्यम, शास्त्री, आचार्य तक अध्ययन सुलभ है। वेद, दर्शन, उपनिषद संस्कृत व्याकरण एवं साहित्य तथा सभी सस्कार स्वामी दयानन्द जी द्वारा लिखित सभी ग्रन्थ उपदेश भजनोपदेश का प्रशिक्षण पाना अनिवार्य है।

योग्यता:-सातवीं कक्षा पास प्रवेश के लिए आवेदन करें।

द्वितीय पाठ्यक्रम:-पुरोहित, उपदेश एवं भजनोपदेशक का प्रशिक्षण पाने वाले छात्र आवेदन कर सकते हैं। योग्यता:-न्यूनतम दसवीं कक्षा पास।

नोट:-दोनों प्रकार के पाठ्यक्रमों के लिये प्रशिक्षण के लिये नि:शुल्क व्यवस्था है। आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि 31 मई 2002 है।

सम्पर्क करें:-आचार्य विद्यादेव, श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय, टंकारा, जिला राजकोट-363650 (गुजरात)

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज (आर्य समाज चौक) बठिण्डा को एक सुयोग्य, वैदिक रीति के अनुसार संस्कार करवाने वाले और अच्छे प्रवक्ता पुरोहित की आवश्यकता है। कृपया निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें। (दूरभाष (निवास)-213789 आर्य समाज-250141)

—प्रेम भाटिया, महामंत्री
आर्य समाज, आर्य समाज चौक बठिण्डा (पंजाब)।

लुधियाना में पारिवारिक यज्ञ

आर्य समाज पार्क लेन सिविल लाईन लुधियाना के तत्वावधान में 12-5-2002 को श्री गुर प्रसाद जी वधवा के निवास स्थान पार्क लेन लुधियाना में सायं 5 से 7 बजे तक पारिवारिक सत्संग होगा।

19-5-2002 को डा. एम.एल. चौहान विन्द्रावन रोड सिविल लाईन लुधियाना में सायं 5 से 7 बजे तक पारिवारिक सत्संग होगा।

—योगेन्द्र भल्ला

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

दूरभाष ☎ : 292926

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 5 सृष्टि संवत 1960853102, 19 मई, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

रचयिता की अद्भुत रचना

❑ ले० महात्मा प्रेम प्रकाश, वानप्रस्थी, आर्य कुटिया, धूरी

1. सूर्य पूर्व से उदय होता है और चन्द्रमा पश्चिम से उदय होता है, सूर्य गर्मी फैंकता है और चन्द्रमा शीतलता देता है। सूर्य अन्न, फल, औषधियां पका रहा है और चन्द्रमा उनमें रस का सम्पादन कर रहा है। वायु गति कर रही है और सब को गति दे रही है। पृथ्वी सूर्य का चक्र लगा रही है और चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। सूर्य पानी को खींच रहा है और बादल पानी को बरसा रहा है। कैसी विचित्र रचना है रचयिता की। कहीं वृक्ष झूम-झूम कर, पुष्प सुगन्धी छोड़-छोड़ कर, अन्न प्राणियों को प्राण दे देकर, समुद्र की लहरें छीं-छीं की ध्वनि में, बहती नदियों का जल कल-कल की ध्वनि में, वायु सर-सर की ध्वनि में पक्षी अपनी-अपनी ध्वनि में, और तपस्वी लोग उसकी स्तुति का गान हृदय में कर रहे हैं, और ऊषा उन्हें बधाई देती हुई आरती उतार रही है। मानों सारा जगत उसकी रचना का स्वयं प्रमाण बन कर खड़ा है। दूर-दूर तक उसकी कीर्ति का कीर्तन हो रहा है।

2. पाठको ! कई मेरे भाई सृष्टि रचयिता को ही नहीं मानते, उन का कहना है, वह दिखाई नहीं देता, परन्तु उनको किसी ने समझाया ही नहीं, कि जैसे देखना आंख का विषय है; सुनना कान का, सूंघना नाक का और खाना मुंह का, इसी प्रकार ईश्वर का विषय आत्मा का है, इन्द्रियों का नहीं अतः आत्मा से ही परमात्मा (देखा) अनुभव किया जाता है। तो वह कदापि ईश्वर सत्ता को अस्वीकार न करते। जैसे परमाणु की सत्ता प्रमाण से सिद्ध है परन्तु आंखों से दिखाई नहीं देता, तथा वायु और आकाश भी होते हुए दिखलाई नहीं देते, परन्तु यह सारी सृष्टि उसकी सत्ता का प्रमाण है। बन्धुओ! जो सृष्टि विज्ञान और सृष्टि नियमों को ध्यान से पक्षपात रहित होकर देखता है, वह आस्तिक बन जाता है और जो सृष्टि नियम और विज्ञान पर ध्यान न करता हुआ 'खाओ पिओ मौज उड़ाओ' अर्थात् भौतिक जगत की ही चमक-धमक में लगा रहता है वह नास्तिक बन जाता है। हे प्यारे नास्तिको! यदि आप अपनी ही शक्ति को मानते हो, तो यह बताओ, कि अच्छे कर्म करते समय अन्दर से उत्साह और प्रसन्नता क्यों उत्पन्न होती है? और जब बुरा कर्म (कुकर्म) करने का विचार ही आता है तो कर्म करने से पहले ही कौन उपदेश देता है, कि यह ठीक नहीं? और जब हम सोते हैं, तो श्वास लेता है कौन ? यदि कहो श्वास लेते हैं हम, तो मरते हैं क्यों ?

3. आंखें अपना धर्म नहीं छोड़ती, कान श्रवण के कार्य के बिना कुछ करने को तैयार नहीं, सारे विश्व में नियम और व्यवस्था है। सूर्य पृथ्वी सभी सौर मण्डल उसकी शक्ति से ठहरे या गति कर रहे हैं, इनमें अपनी कोई शक्ति नहीं। जैसे हम मानव रहित राकेट को छोड़ते हैं वह मानव की दी हुई शक्ति के आधार पर बिना सहारे चल रहा है, राकेट में अपनी कोई शक्ति नहीं, शक्ति मानव की काम करती है। ऐसे ही पृथ्वी लोक, द्यौलोक सभी ब्रह्माण्ड उसकी शक्ति से ही ठहरे और गति कर रहे है– इनमें अपनी कोई शक्ति नही, परन्तु कई लोग केवल आकर्षण के सहारे ही इस विशाल ब्रह्माण्ड को ठहरा मानते हैं, किन्तु आधार के बिना आकर्षण भी नहीं होता, चुम्बक यदि लोहे को खींचता है, तो उसका आधार पृथ्वी है। भला पृथ्वी से साढ़े तेरह लाख गुणा बड़ा सूर्य, जो नौ करोड़ तीस लाख मील (आजकल की भाषा में 15 करोड़ किलोमीटर) दूर होते हुए भी, यदि अपने आकर्षण से पृथ्वी को खींचता है, तो पृथ्वी का भाग जो सूर्य से पृथक हुआ वैज्ञानिक मानते हैं, पृथक् हो ही नहीं सकता था, कितनी विडम्बना है रचयिता को न मानना।

4. मानव ने रेल का इंजन बनाने का कारखाना लगाया, समुद्रीयान का भी और वायुयान का भी बनाने का कारखाना लगाया, तथा सभी यान बना रहा है, क्योंकि आवश्यक वस्तुओं का निर्माण आवश्यक है अतः बनानी चाहिए। मानव भी बना रहा है और परमात्मा ने भी बनाईं, अन्तर यह है कि मनुष्य बार-बार बना रहा है, परन्तु भगवान ने एक ही बार में सूर्य, चान्द पृथ्वी आदि को इस ढंग से बनाया कि आवश्यकता पूरी होती रहे और दैनिक सांचे न बनाये जाये जैसे फलों से फल पैदा हो रहे हैं, अन्न से अन्न, पक्षी से पक्षी, मनुष्य से मनुष्य आदि-आदि सभी आवश्यक वस्तुओं को भगवान ने स्वयं पैदा करने की शक्ति वस्तुओं को ही प्रदान कर दी है, परन्तु आज विज्ञान चरम सीमा पर होते हुए भी मानव अभी तक एक पैन भी ऐसा नहीं बना सका जो अपने जैसे पैन पैदा कर सके। और न ही बना सकेगा, तथा मानव की बनी वस्तुएं जिन पदार्थों से बनती हैं या बनकर चलती है, वे पदार्थ भी मानव निर्मित नही। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने कहा, सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

5. लोग पूछते हैं भगवान कैसा है ? हम पूछते हैं मिठास कैसा है? बता-बता संसार हार गया परन्तु मिठास का सार न बता सका। अन्त में थक कर कहा ये लो गुड़, मिठास वाला पदार्थ है, इसे खाओ, जैसा स्वाद लगे वह मिठास है। भौतिक मिठास को भौतिक वाणी न कह सकी और न कभी कह सकेगी, तुम आध्यात्मिक ब्रह्म को समझते हो, वाणी वर्णन कर सकेगी?

6. शरीर में आंखों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। भगवान जाने उसने आंखें बनाते समय क्या-क्या द्रव्य प्रयोग किए, नियमानुसार आंखें देखती हैं, परन्तु कान चारों ओर की बात सुन सकते हैं। एक दिन मैं सोच रहा था प्रभु ने हमें दो आंखें दी हैं। यदि भगवान एक आंख आगे लगा देते और एक पीछे, तो हम आगे पीछे दोनों ओर देख लेते, इतने में ध्यान आया, यदि भगवान ऐसा कर देते और एक बस आगे से और एक बस पीछे से आ जाती तो सड़क पर चलते ही हमारा मनीआर्डर हो जाता। भगवान का धन्यवाद करो जिसने ऐसी व्यवस्था की है। क्या व्यवस्थापक के बिना कभी व्यवस्था देखी है? व्यवस्थापक की रचना इतनी विचित्र है कि बुद्धि चक्कर खा जाती है। धूएं को देख कर अग्नि का ज्ञान किसे नहीं होता?

7. वायुयान को देखकर बनाने वाले के गुण गाने वाले लोहा और (शेष पृष्ठ 2 पर)

पृष्ठ 1 का शेष

पैट्रोल बनाने वाले को क्यों भूल गया ? कैमरा बनाने वाले को मानना और आंख बनाने वालों को न मानना। नहर खोदने वाले की प्रशंसा और समुद्र खोदने वाले की अवहेलना। नलका लगाने वाले में रुचि और जो वर्षा से जल जंगल भर दे, उसमें अरुचि। पंखा बनाने वाले तो हैं। परन्तु वायु बनाने वाला कोई नहीं? हीटर बनाने वाले की स्मृति और सूर्य बनाने वाले की विस्मृति। वाह रे मानव। हमें तो यह बातें लिखते हुए लज्जा आ रही है, किन्तु कहना पड़ेगा, तू नकलची है तूने जो कुछ बनाया, रचयिता की रचना से ली हुई शिक्षा है।

फलों को बेचने वाला, फलों को बनाने वाला नहीं होता। जो दस व्यक्तियों को भोजन पका कर खिलावे उसे भण्डारी कह देते हैं, परन्तु वह तो चींटी से हाथी पर्यन्त नभचर, जलचर और थलचर को यथा योग्य भोजन दे रहा है। दूध वाले को दूध, फल वाले को फल, अन्न वाले को अन्न, औषधि वाले को औषधि, यहाँ तक नहीं प्राणियों को प्राण भी दे रहा है। पाठको। इस विज्ञान पूर्वक रचे ब्रह्माण्ड को देख कर भी जो रचना करने वाले को न माने तो रचने वाले का क्या अपराध? यदि उल्लू को दिन मे नहीं दिखाई देता तो इसमें सूर्य का क्या दोष? यदि बसन्त ऋतु मे भी टोट के पौधे पर पत्ते नहीं आते तो इसमे बसन्त का क्या दोष ? यदि वर्षा का जल चातक के मुख मे नही पड़ता तो बादल का क्या अपराध?

8 दयालु की व्यवस्था देखो, हम अन्न, फल, दूध, दही, घृत, केला, सेब और नासपती आदि सफेद पदार्थ भी खाये, तो सफेद पदार्थों का रस सफेद होना चाहिए, परन्तु खून मे लाली क्यो है ? युवा अवस्था में बाल काले होते है और वह धीरे-धीरे सफेद हो जाते है, क्या कोई ऐसा कारीगर है जो काले रंग पर सफेद रंग चढा दे । गर वह भी मनुष्य इच्छा के विपरीत। मानव तू भूला हुआ है। कुछ दूर से देख रहा है, यहां आ जहां से ठीक दिखाई देता है, थोड़ा पास तो आ, हमारी इतनी बात तो मान जा। जिस दिन हृदय से देखेगा उस दिन ठीक दिखलाई देगा। तू तो आज तक यह नहीं कह सका कि पृथ्वी की पूरी खोज मैं कर चुका हूं। सौर मण्डल और तारों की बात तो बहुत दूर है। मानव तू अपनी शक्ति को तोल तू तो एक वृक्ष का पत्ता तोड़ कर पुनः वहीं पर नहीं लगा सकता। यदि ऐसा होता, तो संसार में कोई लंगड़ा, लूला न होता।

9. इस पृथ्वी और विशाल द्यौलोक को देख कर आश्चर्य होना स्वाभाविक है, क्यों ? क्योंकि इस सौर मण्डल में असंख्य लोक लोकान्तर है सभी में गति है परन्तु गति में भारी अन्तर है, सभी एक स्तर पर प्रोग्राम के अनुसार चक्र लगा रहे हैं। क्या कभी कोई दुर्घटना हुई? परन्तु मानव अत्यन्त सावधानी से मोटर, रेल और वायुयान चलाता है, चलने उतरने-ठहरने के स्टेशन बने हुए हैं, तार वायरलैस से चलने की सूचना भेजता है, तो भी कितनो दुर्घटनायें होती हैं, है कोई अनुमान? रचयिता की रचना एक अद्भुत कमाल है, कभी कोई ग्रह किसी ग्रह से नहीं टकरा सकता।

10. पृथ्वी के ऊपर नीचे और मध्य में जल है, दो भाग समुद्री जल एक भाग पृथ्वी का है। आप मिट्टी का ढेला पानी में डालिएगा पानी में घुल जाएगा, परन्तु पृथ्वी के ऊपर, नीचे मध्य में तथा चारों और जल ही जल है, और कितने छोटे-छोटे द्वीप है? यह जल में क्यो नहीं घुलते ? समुद्र की लहरें इन द्वीपों को हर समय टक्कर मारती रहती हैं, तथा सहस्रों (हजारों) ही नदियों का जल समुद्र में हर समय गिरता रहता है, परन्तु समुद्र नहीं उछलता। भगवान का ज्ञान महान्, बल महान, रचना महान। महान का सब कुछ महान है।

11 एक सूत्र का बटन भी कर्त्ता के बिना बना हुआ, मानने को कोई तैयार नहीं परन्तु इस विशाल ब्रह्माण्ड की विज्ञान पूर्वक रचना को देखते हुए भी कई लोग कह देते हैं कि यह सब अपने आप बन गया। आकाश में तारो को देखो। कोई बहुत छोटा, कोई बहुत बड़ा है, कोई बहुत समीप कोई बहुत दूर है। सूर्य पृथ्वी से साढ़े तेरह लाख गुणा बड़ा और उससे भी लाखों गुणा बढ़े तारे। कहीं रंग-बिरंगी भूमि को देखो। कहीं बेल-बूटे हैं और कहीं सुगन्धित फूल और कहीं फल सहित वृक्ष झूम रहे हैं। जहां जो फल लगना चाहिए वहीं लगा है, नियामक के बिना नियम कैसे स्थिर रह सकते हैं। पर्वत नदियां प्रकृति का सौन्दर्य बढ़ा रहे हैं। क्या यह जगत और जगत के महान पदार्थ रचयिता का स्वयं प्रमाण नहीं क्या यह जड़ का खेल है ? नहीं नहीं यह सारी सृष्टि रचयिता का ज्ञान करा रही है, पत्ता पत्ता उसकी सत्ता और महत्ता का स्वयं प्रमाण है। सृष्टि का कण कण उसकी प्रतीक्षा और प्रतिष्ठा का गान गा रहा है, परन्तु विरले ही उस गान को समझते हैं। बन्धुओ। रचयिता को मानने में जीवन का एक महान लक्ष्य छुपा है, मान जाओ तो बहुत अच्छा है।

उपासना का फल सुख नहीं, आनन्द है

☐ ले० आचार्य रामसुफल शास्त्री

हमारे शास्त्री निवास के सामने वाले मकान में एक दिन प्रातःकाल एक कैसेट चल रही थी। उसी समय मैं अपने स्नान घर में नहाने के लिए प्रवेश हुआ तो रोशनदान से आवाज सुनाई दी। कैसेट के बोल थे कि "राम-राम जपियो ते सदा सुखी रहियो"। मेरे मन में एक विचार आया कि किसी नाम जपने मात्र से तो कोई भी सुखी नहीं हो सकता? हां यदि थोड़ी देर के लिए राम को ईश्वर मान कर भी राम-नाम जपने की बात कही जाए तो ईश्वर की उपासना से सुख नहीं। आनन्द की अनुभूति होती है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में तीन अलभ्य अनुभूतियां हैं जो बहुत कठिनता से प्राप्त होती हैं। किन्तु जो व्यक्ति उक्त तीनों विषयों को भली प्रकार समझ लेता है उसे ये तीनों सुख-शान्ति एवं आनन्द सहज व सरलता से ही प्राप्त हो सकते हैं।

बात राम-नाम जपियो ते सदा सुखी रहियो की चल रही थी। अस्तु शरीर का विषय सुख है जो भौतिक साधन सम्पन्नता के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है । सु+ख=सु का अर्थ अच्छा-ख का अर्थ इन्द्रिय अर्थात् जो इन्द्रियों को अच्छा लगे उसे सुख कहते हैं। शान्ति मन का विषय है। जब तक मन में सन्तुष्टि नही है, तब तक सब कुछ व्यर्थ है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि-

गोधन गजधन वाजधन और रतन धन खान।

जब आवे सन्तोष धन सब धन दूलि समान॥

संसार का बहुत सारा धन वैभव प्राप्त करने के बाद भी जब तक मन में शान्ति न हो तो धन वैभव का कोई लाभ नहीं है। एक बहुत सुन्दर कहावत है कि "मन चंगा तो कठौती में गंगा" अर्थात् मन में शान्ति है तो सब ठीक है।

रही बात आनन्द की जो केवल मात्र आत्मा का विषय है। इस लेख का भी मुख्य बिन्दु है। जिसे परमात्मा की उपासना-भक्ति-चिन्तन-मनन व सन्ध्या आदि से ही प्राप्त किया जा सकता है। निष्कर्ष यह है कि उपासना का फल सुख-शान्ति से ऊपर परम-आनन्द की अनुभूति हो होता है। अतः उपासना से सुख नहीं आनन्द मिलता है।

सम्पादकीय.....

कत्लेआम-आम बात हो गई

हमारे देश में पिछले कुछ वर्षों से मानवों का कत्लेआम–आम बात हो गई है। मानव जीवन का कोई मूल्य नहीं रह गया। इस समय हमारे देश मे प्रत्येक वस्तु की महंगाई है। सभी वस्तुओं के दाम आकाश को छू रहे हैं। जितने भी खाद्य पदार्थ हैं गत 15–20 वर्षों में सब के मूल्य कोगुणे हो गए हैं। प्रतिदिन काम में आने वाली प्रत्येक वस्तु का मूल्य प्रतिवर्ष बढ़ता जा रहा है। जमीन–जायदाद, मकान, मशीनरी, स्कूटर, कार, साईकल प्रत्येक व्हीकल का मूल्य निरन्तर बढ़ता जा रहा है, डीजल, पैट्रोल, तेल, खाद्य तेल, अन्न, फल, सब्जियां, कौन सी चीज ऐसी है जिसका मूल्य गत दिनों में न बढ़ा हो। जिस भी वस्तु का मूल्य बढ़ा है वह मूल्य कभी घटा नहीं है। महंगाई हर वस्तु की बढती जा रही है जिससे निर्धन इन्सान का जीना कठिन होता जा रहा है परन्तु एक चीज सस्ती होती जा रही है वह है मानव का जीवन।

आज मानव जीवन की कोई कीमत नहीं है। पिछले 15–20 सालों मे तो इसमें बहुत वृद्धि हुई है। पहले हमने पंजाब में देखा, बसों से उतार कर, घरों में घुस कर सरेआम लोग कत्ल किए जाते रहे, इन्सान–इन्सान का शत्रु बन गया, गाजर–मूली की तरह वह कत्लेआम कर रहा है। पंजाब के साथ बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश तथा देश के दूसरे प्रदेशों में भी यही होता रहा पिछले कई वर्ष से अब फिर जम्मू–कश्मीर में भी कत्लेआम हो रहा है। इसमें केवल साधारण लोग तो मारे ही जा रहे हैं इसके साथ ही पुलिस के सिपाही, सेना के जवान भी मारे जा रहे हैं। अब गुजरात में गत दिनों क्या कुछ हुआ और अब भी हो रहा है यह किसी से छिपा नहीं है। प्रतिदिन अनेकों व्यक्ति मौत के घाट उतार दिए जाते हैं।

अभी–अभी गुजरात में भारी संख्या में नरसहार हुआ है परन्तु अब फिर 14–5–2002 को जम्मू–कश्मीर मे एक बार फिर फिदायीन ने कहर ढाया। जम्मू पठानकोट मार्ग से एक बस का अपहरण किया गया। सैनिक वर्दी में तीन उग्रवादियों ने बस में कालूचक के पास अन्धाधुन्ध गोलियां चला कर अनेक लोगों को मार दिया और बहुतों को घायल कर दिया। इसके बाद यह तीनों उग्रवादी बस से उतर कर सड़क किनारे बनी 196 फील्ड रजीमैंट की छावनी में जा घुसे और यहां भी अन्धाधुन्ध गोलियां चला कर हथ गोले फैंक कर कहर ढाया। भले ही तीनों उग्रवादी मारे गए परन्तु उन्होंने लगभग 34 लोगों को मार दिया और अनेकों को घायल कर दिया पता नहीं कितने घायल और दम तोड़ देंगे।

यह जम्मू–काश्मीर में या देश में पहली घटना नहीं है ऐसी अनेकों घटनाएं घट चुकी हैं, पता नहीं आगे और कितनी घटने वाली हैं। हमारे गृह मंत्री तथा रक्षा मंत्री इस पर कई बार ब्यान दे चुके हैं और अब भी दिए जा रहे हैं आगे भी दिए जाते रहेंगे कि उग्रवादियों का डट कर मुकाबला किया जाएगा। उग्रवाद को खुली चुनौती दी जा रही है। परन्तु इन चुनौतियों से उग्रवाद में कोई अन्तर नहीं पड़ रहा। एक विशेष समुदाय को निशाना बना कर यह कार्य किया जा रहा है। अपने ही देश में कत्ले आम किया जा रहा है। यह सिलसिला पिछले लगभग 25 वर्षों से चल रहा है। इसमें कोई रोकथाम नहीं आई बल्कि यह और बढ़ा है। सरकार भी ब्यान देकर चुप हो जाती है जैसे लगता है कि इस नरसंहार को रोकने में वह भी असमर्थ है।

मेरे कहने का भाव यह है कि जो मानव जीवन सबसे मूल्यवान था जिसकी हर कीमत पर रक्षा की जाती थी आज वह सबसे सस्ता हो गया। कोई भी उग्रवादी संगठन चन्द–एक सिक्के देकर उग्र स्वभाव के नौजवानों के द्वारा कहीं भी मानव संहार करवा सकता है। पैसे के लिए कई नौजवान लड़के, लड़कियां, मानव बम बन जाते हैं, आत्मघाती हमले करने के लिए तैयार हो जाते हैं। 14–5–2002 को तीन आत्मघाती उग्रवादियों ने सैंकड़ों व्यक्तियों की जान ले ली। उनके सामने मानव जीवन की कोई कीमत नहीं। थोड़ा सा धन लेकर उन्होंने औरों के साथ–साथ अपना जीवन भी तबाह कर दिया। थोड़ा सा धन देकर आज किसी का भी जीवन आसानी से समाप्त किया जा सकता है। आज क्या है मानव जीवन का मूल्य जरा विचार कर तो देखे? केवल चन्द–एक सिक्के।

यह तो बात उग्रवादियों की हुई उनको तो ट्रेनिंग ही उग्रवाद को फैलाने के लिए दी जाती है। सीमा पार से उन्हें तैयार करके भारत में इसी लिए भेजा जाता है कि वह यहा आकर आतंक फैलाए परन्तु इनके अतिरिक्त भी बहुत से लोग हैं जो जीवन का मूल्य कुछ भी नही समझ रहे। थोडा सा धन पाने के लिए, अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए लालच के वशीभूत होकर एक–दूसरे का कत्ल करते हुए जरा भी कतराते नही है। यहा तक कि मासूमों को भी नहीं बख्शते। आज का इन्सान, इन्सान नही हैवान बनता जा रहा है। जैसे जगल मे बलवान जानवर कमजोर जानवरो को बिना कारण मार डालते हैं। समुद्र मे बड़ी मछलिया छोटी मछलियों को खा जाती हैं वैसे ही आज का मानव भी करता जा रहा है। बडा मानव छोटे मानव को खाता जा रहा है बलवान कमजोर को दबाता जा रहा है।

जो कुछ आज विशेषकर भारत वर्ष मे हो रहा है वैसे तो सारे ससार में यही कुछ हो रहा है परन्तु हम तो बात अपने देश की कर रहे है अर्थात जो कुछ हमारे देश मे हो रहा है क्या भारत सरकार इस पर काबू पा लेगी? क्या आतंकवाद, उग्रवाद कभी भारत मे समाप्त हो जाएगा, मुझे इसकी आशा नही है। सरकार कहा–कहा इस पर काबू पाएगी। आज तो प्रत्येक प्रदेश मे यह फैलता जा रहा है। हा यदि जनता भी सरकार के साथ–साथ इस पर काबू पाने के लिए कार्य करेगी तो शायद इसमे कुछ कमी आ जाए। उग्रवाद का मुकाबला तो सभी को मिल कर करना पडेगा तभी यह कम होगा व समाप्त होगा।

मानव जीवन मूल्यवान है इस बात को जब तक लोग नही समझेगे तब तक इस दिशा मे कुछ भी नही होगा। पैदा हुए, जवान हुए, खाया–पीया, और मर गए यह कोई जीवन नही, ऐसा तो पशु–पक्षी और जीव जन्तु भी कर रहे हैं यदि मानव भी यही करेगा तो इसमे और इन जीव जन्तुओं मे अन्तर क्या रह गया। इन्सान में आज राक्षसी वृत्ति बढती जा रही है पशुता बढ़ती जा रही है, उग्रता बढ़ती जा रही है। इन्सानियत घटती जा रही है। कहा हम एक दूसरे की रक्षा किया करते थे कहा आज एक–दूसरे का कत्ल करते जा रहे है। एक दूसरे की जान के दुश्मन बने बैठे हैं। आज राक्षस बढते जा रहे हैं इन्सान घटते जा रहे है। देवता तो कहीं दिखाई ही नहीं देते। क्या इस ओर हमारा कभी ध्यान जाएगा। कुछ छीनने के स्थान पर क्या कुछ देने की भावना फिर कभी हममें पैदा होगी? क्या हम कभी एक दूसरे के दुख दर्द को समझेंगे ? क्या हम कभी विचार करेंगे कि हम इन्सानों के जीवन का क्या उद्देश्य है? आज हम उस समय खून के आंसू पीकर रह जाते हैं जब हम इन्सान को अपने थोडे से लाभ के लिए दूसरे इन्सान का कत्ल करते देखते हैं। सरकार भी मूक दर्शक बनी हुई है और हम भी मूक दर्शक बने हुए हैं। यह क्या हो रहा है, इस पर कोई नहीं सोचता।

—धर्मदेव आर्य, सभा कार्यलयाध्यक्ष

लेखक महानुभावों से निवेदन

लेखक महानुभावों से प्रार्थना है कि आप अपनी रचनाएं, लेख, कविताएं तथा वेद मन्त्रो की व्याख्याएं आर्य मर्यादा में प्रकाशनार्थ हमें भेजें। कई महानुभाव हमें सुझाव देते रहते है कि किस प्रकार का मैटर हम प्रकाशित करे। परन्तु वह उस प्रकार का मैटर हमे प्रकाशनार्थ नहीं भिजवाते। आर्य मर्यादा आपके लेखों का स्वागत करेगा। आप अपने अमूल्य लेख, कविताएं, आध्यात्मिक व धार्मिक विषयों के लेख, स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में व विद्यार्थियों के लिए लाभकारी लेख और सामाजिक विषयों पर लेख लिख कर हमें भेजें। कृप्या लेख ऐसे लिखें जो पढ़े जा सकें। वेदमन्त्रों को तथा सस्कृत के श्लोकों को स्पष्ट करके लिखे तथा वह कहा से लिए गए हैं इसके सम्बन्ध में भी लिखे ताकि यदि उनमें कोई अशुद्धि हो तो उसे ठीक किया जा सके।

इसलिए लेखक महानुभाव अपने अमूल्य लेख भेज कर पूर्व की भान्ति हमें अपना सहयोग प्रदान करें। इसके लिए हम उनके आभारी होंगे। —धर्मदेव आर्य, सभा कार्यलयाध्यक्ष

इस्लाम का सच

□ ले० श्री ब्रज भूषण वार्ष्णेय

पाञ्चजन्य साप्ताहिक के गणतन्त्र विशेषांक के एक लेख "पाकिस्तान की मजहबी नींव धराशायी हो गई" पढ़ा। लेख के अन्तिम भाग में इण्डियन पोलिटिकल रिव्यू के विद्वान् प्रबन्ध सम्पादक श्री वीरेन्द्र ग्रोवर के विचार, "मैंने कुरान मजीद को विस्तारपूर्वक पढ़ा है और उसमें कहीं भी अन्य मतावलम्बियों के प्रति दुर्भावना की बात नहीं कही गई है, एक सच्चा मुसलमान किसी अन्य मत-पंथ के अनुयायी के साथ जोर जबरदस्ती नहीं करेगा, पढ़कर घोर आश्चर्य हुआ। अमेरिका में 11 सितम्बर 2001 को जेहादी आतंक की घटना के पश्चात् मुसलमान राजनीतिज्ञों, पत्रकारों, स्तम्भ लेखकों और राजनीति प्रेरित अन्य पत्रकारों, लेखकों व राजनीतिज्ञों ने जिनका सत्य से दूर का ही सम्बन्ध है, ऐसे पूर्णत: निराधार व सत्य से एकदम पृथक् लेखों, स्पष्टीकरणों व इस्लाम की प्रशंसाओ की भरमार कर दी है। कोई कहता व लिखता है कि इस्लाम तो शान्ति का पंथ है और ये जेहादी, जो मुट्ठीभर ही हैं, उसे बदनाम कर रहे हैं, इस्लाम का इस जेहादी मानसिकता व क्रियाकलाप से कोई कैसा भी सम्बन्ध नहीं है, कोई कहता है कि धर्म तो सभी एक से ही हैं सभी के सन्देश समान हैं और जेहादी मनोवृत्ति तो किसी भी धर्मानुयायी की हो सकती है; वेद कुरान और बाइबिल सभी समान हैं, सभी शान्ति सद्भाव, मानवता व धार्मिकता का सन्देश देते हैं।

ऐसे लेखकों व विचारकों के विषय में निश्चय से कहा जा सकता है कि न वे देश और दुनिया के इतिहास को जानते हैं, न वे हिन्दू, इस्लाम व ईसाई धर्मों के तत्वों को जानते हैं न उनके सन्देशो को ही जानते हैं। निश्चय ही ऐसे लोगों ने न वेद पढ़े हैं, न कुरान न बाइबिल ये लोग केवल दम्भ करते हैं। इस्लाम के भाष्यकार, मार्गदर्शक, देवबन्दी, बरेलवी व अन्य किसी भी एक भी उलेमा ने जेहादी क्रियाकलाप की कभी न निन्दा की है, न इसे इस्लाम विरुद्ध ही बताया है। वरन् जेहादी सदैव सच्चे मुसलमान माने जाते रहे हैं। टी.पी. ह्यूज जैसे लेखकों ने जिहादुल अकबर यानी कि बड़ा जेहाद (आन्तरिक दोषों के विरुद्ध संघर्ष) और जिहादुल असगर यानी छोटा जेहाद (अविश्वासियों यानी मुस्लिमेत्तर लोगों के विरुद्ध संघर्ष) का उल्लेख किया था किन्तु बुरहारुद्दीन अली के प्रसिद्ध भाष्य "हिदाया" के बाद उन्हें भी स्वीकार करना पड़ा कि कुरान में जिहादुल असगर का ही उल्लेख है और यह अविश्वासियों (मुस्लिमेत्तर समाज) के विरुद्ध एक अन्त न होने वाला जिहाद है। जो तब तक चलता रहेगा जब तक सम्पूर्ण विश्व में इस्लाम का सम्पूर्ण व एकछत्र शासन स्थापित नहीं हो जाता, और जब तक अन्य मतावलम्बी अल्लाह के एक मात्र सच्चे पंथ इस्लाम के अनुयायी नहीं बन जाते या बलात् बना दिए जाते हैं। इस्लामी शब्दकोष के अनुसार जेहाद का अर्थ है, "उन लोगों के साथ धर्म युद्ध जो मुहम्मद के उद्देश्य में विश्वास नहीं रखते, कुरान और हदीसों द्वारा स्थापित दैवीय नियमों के रूप में प्रस्थापित और विशेषकर इस्लाम के लिए आदेशित, 'जेहाद' एक धार्मिक कृत्य है। सूरा 9 आयत 123 के अनुसार धर्म युद्ध या जेहाद प्रस्थापित करने के लिए यह बिल्कुल भी आवश्यक नहीं कि अविश्वासियों (मुस्लिमेत्तर समाज) ने कोई कैसा भी अपराध किया है। उनका अल्लाह, मुहम्मद व इस्लाम में विश्वास न करना ही सच्चा व पर्याप्त अपराध है। तलवार के बल पर इस्लाम स्वीकार करा लेना ही जेहाद का उद्देश्य है।" इस्लाम तलवार के साये में है। जन्नत तलवार के साये में है (साहीह अल बुखारी 4-73)

मुहम्मद ने इस्लाम को ही अल्लाह का एकमात्र सच्चा पंथ कहा और संसार के शेष पंथों को झूठा प्रचारित कर उनके पूर्ण विनाश व विध्वंस और उनके स्थान पर इस्लाम की बलात् स्थापना के लिए ही 'जेहाद' को धर्मयुद्ध के रूप में प्रस्थापित व प्रचारित किया था। सार्वभौमिक रूप में कुरान की ६२३० आयतों में से एक भी आयत नहीं है जो पंथिक सौहार्द या आदर प्रस्तुत करती हो। प्रारम्भ में जब मोहम्मद दुर्बल स्थिति में था, तब एक दो आयतें सूरा २ आयत १९० और २५६ जोर जबरदस्ती के विरुद्ध थीं, किन्तु जैसे ही वह सशक्त हो गया, सूरा २ आयत २५७ और सूरा ९ की आयतें ५, २९ व अन्य वैसी ही आयतों से उन्हें पूर्णत: निरस्त कर दिया था। यद्यपि देश में विगत् १३ सौ वर्षों का इतिहास इस्लाम और मुस्लिम मानसिकता व व्यवहार का देदीप्यमान उदाहरण है फिर भी निम्नांकित कुरान की आयतें और कुछ हदीसें प्रस्तुत हैं जो श्री वीरेन्द्र ग्रोवर प्रभृति विद्वानों, पत्रकारों, लेखकों, राजनीतिज्ञों द्वारा निर्मित व प्रचारित भ्रम व घोर असत्य का पूर्ण रूपेण निराकरण कर देने में समर्थ है। पाठक निष्कर्ष निकालें कि सच क्या है व भ्रम क्या है।

१. सूरा ५८ आयत २० : इस्लाम एक पंथ है जिसके अनुसार अल्लाह ने सारी मानवता को दो भागों (स्थाई प्रतिद्वन्द्वी, विरोधी) वर्गों में बांट दिया है। प्रथम वे हैं जो अल्लाह और पैगम्बर मुहम्मद में विश्वास रखते हैं उन्हें मुसलमान (यानी कि अल्लाह का दल मौमिन) कहा जाता है, दूसरे वे हैं जिन्हें अविश्वासी (मुस्लिमेत्तर) शैतान का दल कहा जाता है। प्रथम वर्ग (विश्वासियों) का प्रमुख कर्त्तव्य है कि वे अविश्वासियों का वध कर दें, कत्ल कर दें।"

२. सूरा ६१ आयत ९-१३: यह अल्लाह ही है जिसने अपने पैगम्बर (मुहम्मद) को नसीहत व सच के साथ भेजा था जिससे वह (अल्लाह) उसे मुहम्मद को अन्य पंथों का विजेता बना सके। भले कोई मूर्तिपूजक उसे न चाहें।"

३. सूरा ६० आयत ४ : "हे मूर्तिपूजकों! हम (अल्लाह) तुम्हें त्यागते हैं। हमारे और तुम्हारे मध्य शत्रुता और घृणा बनी रहेगी।"

४. सूरा ९ आयत २३ : "अरे विश्वासियों (मुसलमानों) अपने माता-पिताओं, भाईयों, को यदि वे (मुस्लिमेत्तर) अविश्वासी बने रहना चाहते हैं, तो उन्हें भी अपना सहयोगी मत बनाओ। यदि तुममें से कोई भी ऐसा करेगा तो वह भी अपराधियों में होगा।"

५. सूरा ४ आयत ७६ : "वे विश्वासी हैं जो अल्लाह के नाम पर युद्ध करें।"

६. सूरा २ आयत ७४ : "अल्लाह के नाम में, उसके उद्देश्य के लिए उन्हें युद्ध करना चाहिए जो इस जीवन को आने वाले जीवन के साथ बदल लेने को प्रस्तुत हैं। उन्हें युद्ध करना चाहिए क्योंकि अल्लाह के मार्ग में जो युद्ध करता है वह चाहे मरे, चाहे विजयी हो, हम भी उसे भारी इनाम देंगे।"

७. सूरा ४ आयत ९५ : "बिना किसी परेशानी में पड़े घर बैठे रहने वाले मौमिन, अपने धन और प्राणों के साथ अल्लाह के मार्ग में जेहाद करने वालों के बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने घर में बैठे रहने वालों की अपेक्षा अपने धन और प्राणों से 'जेहाद' करने वालों का दर्जा बड़ा रखा है।"

८. सूरा २ आयत १५४ सूरा ३ आयात १६९ : "और जो अल्लाह के मार्ग में मारे गए उन्हें मरा हुआ न समझो बल्कि वे अपने रब के पास जीवित हैं, रोजी पा रहे हैं।"

९. सूरा ६६ आयत ९ : "हे नबी! काफिरों और मुनाफिकों से (मुस्लिमेत्तर पापियों से) जेहाद करो, उन पर सख्ती करो। उनका घर जहन्नुम है।"

१०. सूरा ९ आयत १२३ : "हे ईमान वालो! (मुसलमानों) उन काफिरों (मुस्लिमेत्तरों) से युद्ध करो जो तुम्हारे आसपास हैं। तुम उन पर कठोर बनो।"

११. सूरा ९ आयत : १११: "अल्लाह ने जन्नत के बदले विश्वासियों के शरीरों और उनकी सम्पत्तियों को खरीद लिया है वे अल्लाह के मार्ग में अल्लाह के लिए ही युद्ध करते हैं, उन पर अल्लाह का बड़ा प्यार है। वे ही जीतेंगे वे कत्ल करते हैं और कत्ल हो जाते हैं। अल्लाह का वायदा सच्चा है जिससे अल्लाह बंधा है।"

१२. सूरा ७२ आय ४-५ : "हममें से कुछ मुसलमान हैं कुछ पापी हैं। वे जो इस्लाम स्वीकार कर लेते हैं, सत्य के पथ पर चलते हैं किन्तु जो इस्लाम स्वीकार नहीं करने की गलती करते हैं, वे आग के ईंधन हो जाएंगे, मारे जाएंगे।"

१३. सूरा ८ आयत ५५ : "अल्लाह की दृष्टि में (मुस्लिमेत्तर) अविश्वासी निकृष्टम्, सर्वाधिक असभ्य है क्योंकि वे कभी भी विश्वास नहीं करेंगे। अल्लाह उनसे घृणा करता है इसीलिए अल्लाह कहता है कि उन्हें दास बना लो, उन्हें दास बनाकर रखना, नीचा दिखाना एक धार्मिक कर्त्तव्य हैं क्योंकि वे अल्लाह के बड़े शत्रु हैं।"

(सार्वदेशिक से साभार)

(क्रमशः)

हरिद्वार में आर्यों का कुम्भ

☐ले० श्री धर्मवीर आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

(गतांक से आगे)

गत अंक में मैंने गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी समारोह के सम्बन्ध में लिखा था कि यह शताब्दी समारोह आर्यों का कुम्भ बन गया था।

इस शताब्दी समारोह की तिथियों आदि का निश्चय करने के पश्चात् सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न, मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा और वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन जी जालन्धर पधारे और सभा प्रधान पं. हरबंस लाल जी शर्मा के सामने सारी योजना रखी, प्रैस कान्सफ्रैन्स करके निधिवत शताब्दी समारोह की घोषणा की उन्होंने इस अवसर पर सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा के सामने आर्थिक सहयोग की अपील की ताकि कार्य आरम्भ किया जा सके। श्री पण्डित जी ने उन्हें प्रचुर मात्रा में राशि भेंट करते हुए कहा आप कार्य आरम्भ करें पैसा बहुत आ जाएगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पांच लाख रुपए गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी समारोह के लिए आर्थिक सहायता रूप में देने की घोषणा की। समारोह का कार्य आरम्भ हो गया और बड़ी अच्छी तरह से सम्पन्न हुआ।

मैंने गत अंक में लिखा था कि इस समारोह में पंजाब के सभी नगरों से कई महानुभाव हरिद्वार गए थे। अजनाला अमृतसर से श्री श्रीराम पथिक वानप्रस्थी, रायकोट से श्री राजेन्द्र कौड़ा भी परिवार सहित गए थे। जालन्धर से सभा प्रधान श्री पं हरबंस लाल जी के आदेशानुसार चलने वाली यात्रा तथा पंजाब के अन्य नगरों से चलने वाले सभी यात्री अपने-अपने वाहन लेकर दोपहर बाद यमुना नगर पहुंचे थे।

जिला केन्द्रीय सभा यमुना नगर के अधिकारियों ने अपनी एक बैठक में निश्चय किया था पंजाब से हरिद्वार जाने वाले सभी यात्री यमुना नगर होकर जाएंगे। इसलिए यमुना नगर में हम उनका स्वागत करेंगे और दोपहर का भोजन देंगे और जलपान कराएंगे। श्री केशव दास जी मन्त्री जिला केन्द्रीय सभा श्री रविन्द्र जी, तथा श्री पं. इन्द्रदेव जित महोपदेशक ने फोन पर सभा कार्यालय से सम्पर्क किया। सभा महामन्त्री प्रिं. स्वतन्त्र कुमार जी ने उन्हें बताया कि लगभग 6 बसों व कुछ अन्य वाहनों द्वारा सड़क मार्ग से पंजाब से लोग हरिद्वार जा रहे हैं। जिला केन्द्रीय सभा के अधिकारियों ने कहा जितने भी महानुभाव आएंगे हम सभी को दोपहर का भोजन कराएंगे। जब हम 24-4-2002 को यमुना नगर पहुंचे तो हमें बड़ी प्रसन्नता हुई कि यमुना नगर की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों व सदस्य भारी संख्या में वहां विराजमान थे। वैदिक साधना आश्रम के आचार्य राज किशोर जी तथा अन्य प्राध्यापक व ब्रह्मचारी सभी पंजाब से आने वाले महानुभावों की प्रतीक्षा कर रहे थे। संक्षिप्त प्रोग्राम का आयोजन किया गया कई महानुभावों ने वहां अपने-अपने विचार रखे और उसके पश्चात् सभी को भोजन कराया गया। भोजन बहुत अच्छा बनाया हुआ था जिसकी सभी सराहना कर रहे थे। जलपान की भी बहुत अच्छी व्यवस्था थी नगर के सभी प्रतिष्ठित आर्य बन्धु वहां उपस्थित थे। सभी आर्य समाजों के अधिकारी भी वहां विद्यमान थे। एक उत्सव जैसा कार्यक्रम बना हुआ था। हम इस भोजन की व्यवस्था की जितनी भी सराहना करें उतना कम है सभी लोगों ने बहुत स्नेह प्रकट किया। हम प्रतिष्ठित महानुभावों के नाम देना चाहते थे परन्तु समाचार छपने तक हमें नाम नहीं मिल सके। हम सभी महानुभावों का धन्यवाद करते हैं।

सहारनपुर के महानुभावों ने भी सभा कार्यालय से सम्पर्क किया था उप आर्य प्रतिनिधि सभा सहारनपुर के अधिकारियों की यह हार्दिक इच्छा थी कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नेतृत्व में आने वाले पंजाब के आर्य महानुभावों का वह सहारनपुर में स्वागत करें। सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा की आज्ञा से उन्हें भी इसकी स्वीकृति दे दी थी। सभा, अधिकारियों ने प्रसन्नता प्रकट की है कि हमारे सहारनपुर के भाई भी हमारा स्वागत करना चाहते हैं।

24-4-2002 को यमुना नगर के पश्चात् पंजाब के सभी महानुभाव वैशाली पैट्रोल पम्प पर जब सहारनपुर पहुंचे तो वहां भारी संख्या में जिला सहारनपुर की सभी आर्य समाजों के महानुभाव व अधिकारी उपस्थित थे। सभी लोगों ने पंजाब से गए लोगों का स्वागत किया और एक जन सभा का आयोजन किया। आर्य समाज खालापार सहारनपुर के प्रधान श्री वेदव्रत गौतम, उत्तर प्रदेश गो सेवा आयोग के सदस्य श्री विशम्भरनाथ बजाज, उप आर्य प्रतिनिधि सभा सहारनपुर के जिलाध्यक्ष चौ. अजब सिंह महामन्त्री श्री आदित्य प्रकाश गुप्ता, स्वतन्त्रता सेनानी, श्री जसवन्त सिहं, श्री प्रेम मुनि, श्री राजाराम शास्त्री, प्रियव्रत शास्त्री, डा. हरिश्चन्द्र, डा. भूपचन्द, डा. तिलक राज, डा. भीमसेन, विजय वीरेन्द्र सिंह, जनेश्वर प्रसाद, राजेश गुप्ता, विनोद गुप्ता, सोमदत्त आर्य, योगेन्द्र कुमार आर्य आदि तथा स्त्री आर्य समाज की बहुत सी माता बहनें वहां उपस्थित थीं। सैंकड़ों की संख्या में बहनें व भाई हमारे स्वागत के लिए वहां पहुंचे हुए थे दरियां बिछी थीं लाऊडस्पीकर लगा हुआ था। कई बन्धुओं ने इस अवसर पर अपने-अपने विचार भी प्रस्तुत किए। आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजाब) के महामन्त्री श्री प्रिं. स्वतन्त्र कुमार श्री कोषाध्यक्ष, श्री प्रेम भारद्वाज, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ, श्री कमल किशोर, श्री पं. मनोहर लाल, श्री सी. मारकण्डा के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

जलपान की बड़ी सुन्दर व्यवस्था की गई थी। सहारनपुर शहर की सभी आर्य समाजों के अधिकारी तो वहां आए ही थे गांव में जो आर्य समाजें हैं उनके अधिकारी भी वहां आए थे। एक उत्सव जैसा वातावरण वहां बन गया था। हम उन सभी आर्य बन्धुओं व बहनों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने सारा दिन धूप में खड़े रह कर हमारी प्रतीक्षा की और भव्य स्वागत किया। चार बजे हम जिला सहारनपुर के वैशाली पैट्रोल पम्प सहारनपुर से चलकर सायं लगभग 7.30 बजे यह बसों व गाडियों का काफला लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में पहुंचे। सभी के रात्रि निवास की व्यवस्था की गई। भोजन आदि के पश्चात् सभी ने विश्राम किया।

25-4-2002 को प्रातः राष्ट्रभृत यज्ञ से कार्यक्रम का आरम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री थे वेदपाठ कन्या गुरुकुल चोटिपुरा की ब्रह्मचारिणियों ने व गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के ब्रह्मचारियों ने किया। यज्ञ के बाद पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती का प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

ध्वजारोहण सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न आर्य ने किया, गुरुकुल पताका का ध्वजारोहण कुलाधिपति व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा ने किया।

ठीक प्रातः 11 बजे दीक्षान्त समारोह एवं महासम्मेलन उद्घाटन समारोह आरम्भ हो गया। दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने करनी थी परन्तु सुरक्षा व्यवस्था के कमियों को देखते हुए वह नहीं आ सके उनके स्थान पर विजय गोयल राज्यमंत्री प्रधान मन्त्री कार्यालय ने अध्यक्षता की। उपदेश डा. वेद प्रकाश जी शास्त्री, का. कुलपति गुरुकुल कांगड़ी का हुआ। आशीर्वाद श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी ने सभी स्नातकों को दिया। इस अवसर पर स्नातकों को प्रमाण पत्र दिए गए।

समारोह महासम्मेलन उद्घाटन भाषण श्री कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक सभा ने देते हुए कहा कि मैं भिन्न-भिन्न प्रांतों से व विदेशों से आए हुए महानुभावों का धन्यवाद करता हूं। उन्होंने आर्य समाज की उन्नति के लिए कई सुझाव रखे। इस सम्मेलन के संयोजक डॉ० महावीर कुल सचिव व श्री वेदव्रत जी शर्मा मन्त्री सार्वदेशिक सभा थे। सारा कार्यक्रम दोपहर तक चलता रहा। दोपहर बाद तीन बजे संस्कृति सम्मेलन श्री डा. रामनाथ वेदालंकार की अध्यक्षता में आरम्भ होकर सम्पन्न हुआ। रात्रि को पूर्व स्नातक पुनर्मिलन समारोह हुआ।

26-4-2002 को प्रातः 7 बजे राष्ट्रभृत यज्ञ आरम्भ हुआ 8 बजे से 9-30 बजे तक भजन व उपदेश हुए तथा 10 बजे विशाल शोभा यात्रा सिंह द्वार स्वामी श्रद्धानन्द चौंक

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'मूर्धन्य वैदिक विद्वान् आचार्य भीमसेन वेदवागीश स्मृतिशेष'

□ *ले० श्री मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून*

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना कर वेदाध्ययन की परम्परा डाली थी। आर्य समाज ने महर्षि दयानन्द के विचारो एव मान्यताओ के अनुरूप गुरुकुल खोलकर प्राचीन संस्कृत व्याकरण, वेद एव अन्य शास्त्रीय ग्रन्थो का अध्ययन एव अध्यापन किया जिसके परिणामस्वरूप अनेक वैदिक विद्वान् तैयार हुए। सम्प्रति दिन प्रतिदिन वैदिक विद्वानों की सख्या मे होती जा रही कमी को दखते हुए ऐसे वेद एव व्याकरण के अधिकारी विद्वान् आचार्य भीमसेन वेदवागीश का 10 अप्रैल 2002 को बीकानेर मे बस यात्रा करते हुए हृदयाघात से आकस्मिक देहान्त देश एव वैदिक जगत की असाधारण क्षति हे।

आचार्य भीमसेन वेदवागीश का जन्म राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में लगभग 88 वर्ष पूर्व हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल चित्तौड़ में स्वामी व्रतानन्द जी के सान्निध्य में हुई। ब्रह्मचर्य आश्रम एवं अध्ययन काल में सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान एवं आर्य जगत के महान सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती आपके सहपाठी थे। वैदिक ज्ञान की उच्चतम स्थिति में पहुंचने के कारण सम्प्रति आपको आर्य जगत में आचार्य वशिष्ठ के नाम से जाना जाता था। गुरुकुलीय अध्ययन पूरा करने के पश्चात् भी आपने स्वयं के प्रयत्नों से अपना अध्ययन जारी रखा और एक के पश्चात् दूसरा वैदिक ग्रन्थ पढ़ते गए। निरन्तर अध्ययन एव अध्यापन से आप वेद एव व्याकरण के एक ऐसे पण्डित बन गए थे जो सभी जिज्ञासुयो अथवा विद्यार्थियों की वेद, व्याकरण एव इतर शास्त्रीय विषयों संबंधी शकाओं का तत्काल समाधान करने मे समर्थ थे। आपने अनेक गुरुकुलों में अध्यापन किया जिनमें से कुछ प्रमुख गुरुकुल है- गुरुकुल गौतमनगर, मंझावली, हैदराबाद, माउण्ट आबू, चित्तौड़गढ़ एवं गुरुकुल पौधा-देहरादून। आपकी शिष्य मण्डली भी बहुत विस्तृत है। आचार्य यशदेव, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश, आचार्य सत्यव्रत शास्त्री एव आचार्य सत्यव्रत जी आपके कुछ प्रमुख शिष्य हैं। आचार्यजी की एक यह भी विशेषता रही कि इस वार्धक्य में भी वह गुरुकुल गौतमनगर एवं इससे जुड़े गुरुकुलों में आते जाते रहते थे और अध्यापन कराते थे।

अनेक गुरुकुलों के संस्थापक एवं गुरुकुल गौतमनगर, मंझावली एवं पौंधा-देहरादून के संचालक **आचार्य हरिदेवजी के अनुसार** आचार्य **भीमसेन वेदवागीश वेद दर्शन एवं व्याकरण के सूर्य थे।** उनके अनुसार आर्य जगत के सुप्रसिद्ध गुरुकुल गौतम-नगर, दिल्ली के सभी योग्य स्नातक उन्हीं के पढ़ाये हुए हैं। गुरुकुल पौंधा-देहरादून के **आचार्य धनंजय शास्त्री** के प्रति आपका अत्यधिक स्नेह था और विगत दो वर्षों में आपने अनेक बार यहां आकर प्रवास किया। धनंजय शास्त्री के अनुसार एक बार चित्तौड़ में आपके गुरु स्वामी व्रतानन्द को प्यास लगी। आस पास कहीं जल उपलब्ध नहीं था। गुरु की प्यास बुझाने के लिए **आपने उसी समय वहां कुआं खोदना आरम्भ कर दिया और कुछ ही घंटों के अन्तर पर गुरु की जल-पिपासा को शान्त किया।** गुरु भक्ति का यह एक अद्वितीय उदाहरण है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में 27 अप्रैल 2002 को महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, हिंगोली (महाराष्ट्र) के आचार्य धर्मवीर ने बताया कि आचार्य भीमसेन शास्त्री को उन्होंने व उनके सम्पर्क में आये किसी भी व्यक्ति ने कभी दुःखी नहीं देखा। वह सदैव प्रसन्न रहा करते थे। मित भाषी थे। उन्होंने कभी किसी की निन्दा नहीं की। ऐसे व्यक्ति जो उनके प्रति अच्छा व्यवहार एवं समुचित आदर नहीं करते थे उनके प्रति भी उन्होंने कभी शिकायत नहीं की। उनके चेहरे पर छोटे-बड़े व्यक्ति अथवा विद्वान् से वार्ता करते हुए सदैव मुस्कान रहा करती थी। उनके व्यक्तित्व में यह सामर्थ्य था कि वह अपने निकट के वातावरण में ऐसी शान्ति, प्रसन्नता व मधुरता घोल देते थे जिससे उनके सान्निध्य व सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति सुख व शान्ति का अनुभव करता था।

27 जनवरी 2002 को गुरुकुल पौधा में एक सत्संग में प्रवचन करते हुए आपने कहा था कि परमेश्वर ने वेदों द्वारा हमारी रक्षा की। वेदों के मंत्रों पर विचार कर उसके अनुकूल आचरण करने से हमारी रक्षा होती है। उन्होंने आगे कहा कि वेद के द्वारा वह ज्ञान प्राप्त होता कि हम सत्य व असत्य को देख सकें, वेद परम बल है और इनसे हमें बल प्राप्त होता है। वेदों के अध्ययन से आत्मिक बल बढ़ता है। वेद के मंत्रों के अर्थों पर विचार करते अपनी परिस्थितियों को उत्तम बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा था कि वेद के द्वारा ही परमपिता के दर्शन होते हैं तथा इसके बिना ईश्वर को नहीं जाना जा सकता। वेदाध्ययन को ही उन्होंने परम तप व परम धर्म कहा था। अनेक प्रमाण प्रस्तुत कर उन्होंने अपने प्रवचन में कहा था कि यज्ञ करना भी परम धर्म है। ईश्वर को जान लेने वाले मनुष्य को किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं रहता। वेद मंत्रों से ईश्वर की स्तुति एवं ध्यान करना चाहिए। ईश्वर का ध्यान करने से परम सुख की प्राप्ति होती है। उन्होंने वेद के बताये मार्ग पर चलने तथा वेदों का प्रचार करने का आह्वान किया था। अन्त में उन्होंने कहा था कि 'आर्य' ईश्वर पुत्र हैं। श्रेष्ठ व्यक्तियों की संज्ञा आर्य है। वेदों का स्वाध्याय एवं अभ्यास करने तथा वेद मार्ग को न छोड़ने की प्रेरणा उन्होंने उस दिन श्रोताओं को अपने प्रवचन में की थी। **अपने अनुभव के आधार पर हम कह सकते हैं कि आचार्य जी का स्वयं का जीवन ही वेदाचरण का वास्तविक उदाहरण था।**

आचार्य भीमसेन जी प्रत्येक वर्ष बीकानेर में बृहद यज्ञ कराया करते थे। देश के अनेक स्थानों पर भी अनेक बृहद यज्ञों के ब्रह्मा आप ही बनाये जाते रहे। गुरुकुल पौंधा-देहरादून में भी स्थापना के पश्चात् प्रथम चतुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा आप ही थे। बृहद यज्ञ के सिलसिले मे ही आप चित्तौड से बीकानेर बस से आ रहे थे। 10 अप्रैल 2002 का दिन था। बीकानेर पहुंचने से कुछ पहले ही आपको तीव्र हृदयाघात हुआ। बस के किसी भी सहयात्री को इस बात का पता न चला। सीट पर बैठे हुए ही आपकी मृत्यु हो गई। आचार्य जी को दूसरी बार यह हृदयाघात हुआ था। बस में आपके साथ आपका कोई परिचित नहीं था। अतः कंडक्टर ने आपको पुलिस थाने पहुंचा दिया। काफी समय बाद आपके परिवार को इसकी जानकारी मिली। इस प्रकार इन दुःखद परिस्थितियों में वेदों का यह प्रकाण्ड विद्वान् इस धराधाम से अपने प्रिय लोगों से सदा के लिए दूर चला गया। उनके सम्पर्क में आया प्रत्येक व्यक्ति उनके इस प्रकार के वियोग से दुःखी है। आपके परिवार में दो पुत्र एवं एक पुत्री है।

विद्वान् व्यक्तियों के भौतिक शरीर का ही अन्त होता है परन्तु वह अपने यशः शरीर से युग-युगान्तरों तक जीवित रहते हैं। आचार्य जी की शिष्य मण्डली पर्याप्त विस्तृत है। अतः आपके शिष्यों के जीवनकाल और पश्चात् उनके शिष्यों द्वारा आचार्य भीमसेन वेदवागीश जी की यश व कीर्ति अक्षुण रहेगी ऐसा विश्वास है। इस अवसर पर यह भी आशा है कि आचार्य जी के शिष्य आचार्य जी के ही समान ज्ञानार्जन, स्वाध्याय एवं आचरण करेंगे जिससे आचार्य भीमसेन जी का विद्वान् तैयार कर उनके द्वारा वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार का स्वप्न विस्तृत एवं सफल हो सके।

(पृष्ठ 5 का शेष)

से आरम्भ हुई, जो गंगा पुल पार करके शंकर आश्रम, बस अड्डा, शिवजी मूर्ति हर की पौड़ी होती हुई वैदिक मोहन आश्रम पहुंची जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 25 अप्रैल 1867 ई. में पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई थी।

इस शोभा यात्रा का नेतृत्व श्री कैप्टन देवरत्न प्रधान सार्वदेशिक सभा, पं. हरबंस लाल जी शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी, श्री सुदर्शन शर्मा जी वरिष्ठ उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री देवेन्द्र शर्मा रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब, श्री प्रिं. स्वतन्त्र कुमार महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री प्रेम भारद्वाज कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा श्री विमल वधावन वरिष्ठ उप प्रधान सार्वदेशिक सभा श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री सार्वदेशिक सभा तथा अन्य प्रतिष्ठित महानुभाव कर रहे थे। इसके संयोजक श्री डा जय देव वेदालंकार तथा डा. कश्मीरा सिंह जी थे।

यह शोभा यात्रा दर्शनीय थी। हमने बड़ा प्रयास किया कि इस शोभा यात्रा में भिन्न प्रान्तों से आए हुए सम्मलित महानुभवों ने जो अपनी आर्य समाजों के नाम पट उठाए हुए हैं उनके नाम लिखे जाएं परन्तु यह सम्भव न हो सका. केसरिया दुपट्टे धारण किए केसरिया ओम् के ध्वज उठाए तथा अपनी अपनी आर्य समाजों के नाम पट हाथ में लिए लोग इस शोभा यात्रा में भजन बोलते हुए व जयकारे लगाते हुए बड़ी मस्ती में चल रहे थे। ट्राली, ट्रैक्टर, टैम्पू, बसें, थ्री व्हीलर रिक्सांए, स्कूटर, मोटर साईकिल अर्थात् जो भी वाहन जिसे मिला लेकर चल रहे थे हजारों की संख्या में लोग पैदल चल रहे थे जब कि चमचमाती धूप सभी के शरीरों को गर्म करती हुई जा रही थी। यह शोभा यात्रा देखेने वाली थी। सभी हरिद्वार वासी कह रहे थे कि इतनी बड़ी शोभा यात्रा हरिद्वार में पहली बार निकली है। इस शोभा यात्रा का समापन दोपहर एक बजे वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार में हुआ जहां डी.ए.वी. प्रबन्धकर्तृ सभा के सभी अधिकारियों ने वहां पहुंचने पर इस शोभा यात्रा का भव्य स्वागत किया। (शेष आगामी अंक में)

30 दिन में संस्कृत सीखें

संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन तथा वैज्ञानिक भाषा है। इसी भाषा में उपलब्ध वेद गीता-उपनिषद् आदि शास्त्रों के माध्यम से भारतीय संस्कृति ने शताब्दियों से पूरे विश्व का मार्गदर्शन कर सम्मानित स्थान प्राप्त किया है, गणित, भूगोल, ज्योतिष, दर्शन शास्त्र, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र, आकाश विद्या, योग विद्या, भूगर्भ विद्या, वनस्पति विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, आयुर्वेद, राजनीति, भाषा विज्ञान, परमाणु विज्ञान तथा अध्यात्म विद्या के शिखर को छू लेने वाले विश्व कल्याण और मानव उन्नति के पथ प्रदर्शक रहस्य इसी भाषा में छिपे पडे हैं। एक ओर सम्पूर्ण विश्व संस्कृत की भाषागत गुणवत्ता तथा इस भाषा के साहित्य में छिपे खजाने की ओर तेजी से आकर्षित हो रहा है, दूसरी ओर भारतीय जनमानस की अपने इस खजाने से लाभ उठाने की प्रवृत्ति लगातार कम हो रही है, जो शोचनीय है विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इस दिशा में प्रशसनीय प्रयास कर रहा है। हम यू.जी.सी के आभारी हैं जिसने संस्कृत के प्रति भारतीय चेतना को जागरूक करने तथा बोलचाल के माध्यम से सस्कृत सिखाने के उद्देश्य से दोआबा कालेज जालन्धर में सरल संस्कृत सम्भाषण केन्द्र की स्थापना की है। 30 दिनों की अवधि वाले इस पाठ्यक्रम को यू जी सी ने संस्कृत सम्भाषाण प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम नाम दिया है, जिसका संचालन यू जी सी द्वारा नियुक्त सुयोग्य प्रशिक्षित प्राध्यापकों द्वारा किया जाएगा। पाठ्यक्रम की समाप्ति पर यू जी सी द्वारा प्रमाणपत्र भी दिए जाएंगे।

संस्कृत सीखने के इच्छुक किसी भी आयु के विद्यार्थी या स्त्री-पुरुष इस पाठ्यक्रम में अपना रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। इस पाठ्यक्रम में कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। इन सम्भाषण कक्षाओं का समय प्रात: 9 बजे से पहले अथवा सायं 4 बजे के बाद रखा जाएगा, जिसमे प्रतिभागी छात्र-छात्राओं के अपने विषयों की पढाई में कोई बाधा न हो और अधिक से अधिक व्यक्ति इन पाठ्यक्रमों का लाभ उठा सकें। इच्छुक व्यक्ति तुरन्त सम्पर्क करें।

–डा. आर.पी. भारद्वाज, प्रिंसिपल

दोआबा कालेज, जालन्धर दूरभाष : 291837, 490199

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य बन्धुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य मर्यादा साप्ताहिक अब नियमित हो गया है। पिछले दो वर्षो से इसके प्रकाशन मे कई प्रकार की कठिनाईयां आ रही थी। अब आपको नियमित रूप से आर्य मर्यादा प्रति सप्ताह समय पर मिलता रहेगा।

ले दो वर्षो से कई महानुभावो ने अपना शुल्क सभा कार्यालय में भी नहीं भेजा। हमने गत दिनो सभी को पत्र लिखे थे अब पुन: भी लिखे जा रहे है। इसका वार्षिक शुल्क मात्र 50 रुपए है और आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र 500 रुपए है। कागज व छपाई का खर्चा बढ़ जाने से इसका वार्षिक व आजीवन शुल्क भी हमे विवश होकर बढ़ाना पड़ेगा परन्तु अभी न बढ़ाया गया। इसलिए ग्राहक महानुभाव समय का लाभ उठाते हुए 500 रुपए भेज कर इसके आजीवन सदस्य बनें। आर्य समाजें व आर्य शिक्षा संस्थाएं भी अजीवन सदस्य बने। अब आर्य समाजें व आर्य शिक्षा संस्थाए भी आजीवन सदस्य बन सकती है। इसलिए पिछला शुल्क भेजकर आगे आजीवन शुल्क 500 रुपए भेजें। शुल्क आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर के नाम मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें। कृप्या अपना पिछला शुल्क शीघ्र अति शीघ्र भिजवाने का कष्ट करे ताकि आपको आर्य मर्यादा निरन्तर मिलता रहे नही तो हमें विवश होकर आपको आर्य मर्यादा भेजना बन्द करना पड़ेगा।

–धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

अहमदगढ़ में विश्वशान्ति महायज्ञ

आर्य समाज अहमदगढ़ में 19,20 और 21 अप्रैल 2002 को विश्वशान्ति यज्ञ का 11 हवन कुण्डों में आयोजन किया गया, साथ ही 21.4.02 को जिला आर्य सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। जो बेहद सफल रहा। सैंकड़ों नर-नारी और बच्चे बड़े उत्साह से यज्ञ में आहुतियां देते रहे। पूज्य स्वामी माधवानन्द जी महाराज हिसार वाले, और महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी वालों ने अपने ओजस्वी विचारों से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किए रखा। श्री सोता राम जी सहारनपुर वालों के भजन भी बड़े ध्यान से सुने गए। श्रोताओं और यज्ञ कर्त्ताओं का उत्साह देखते ही बनता था। सारा आंगन श्रोताओं से भरा रहता था। धर्म प्रेमी आर्य जनता ने बहुत देर के बाद ऐसा उत्सव देखा।

21-4-02 को जिला आर्य सभा संगरूर के प्रधान श्री सतीश सिंगवानी के नेतृत्व में जिला आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें जिला संगरूर की आर्य समाजों संगरूर, धूरी, बरनाला और मालेरकोटला के आर्यजनों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम के बीच में आर्य समाज अहमदगढ़ की ओर से जिले की सभी समाजों, सभी यजमानों और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज की लैमिनेटिड फोटो, ओ३म् (और स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्रों की अर्थ सहित) की तस्वीर भेंट की गई और साथ में कई विद्वानों को पुस्तकें भी भेंट की गई। कार्यक्रम समाप्त होने पर सभी को ऋषि लंगर से भोजन कराया गया। कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

—मनोहर लाल खुराना, मन्त्री

आर्य समाज जी.टी. रोड फिरोजपुर छावनी का वार्षिक चुनाव

प्रधान:—श्री नरेन्द्र छाबड़ा जी। उपप्रधान:—श्री चरण दास जी, श्री दीपक भगत जी। मंत्री:—डा. रूपेश गुप्ता। उपमंत्री:—श्री राकेश गुप्ता। प्रचार मंत्री:—श्री विजय आनन्द जी। निरीक्षक:—श्री राम प्रकाश जी। कोषाध्यक्ष:—श्री राजेन्द्र गुप्ता जी। सहकोषाध्यक्ष:—श्री अनिल गुप्ता जी। वस्तु भण्डारी:—श्री सुनील दत्त जी। पुस्तकाध्यक्ष:—श्री दीपक सलूजा जी। अन्तरंग सदस्य:—श्री देवराज रत्ता जी, श्री सुभाष ग्रोवर जी, श्री हरीश चड्डा जी।

-मन्त्री

लुधियाना में 24वां वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

5 मई को हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी हरपाल नगर वैलफैयर एसोसिएशन की ओर से गुलमोहर होटल के प्रांगण में 5 मई रविवार को प्रात: 8.30 से 1.30 तक 24वां वेद पारायण यज्ञ सफलता-पूर्वक सम्पन्न हुआ। अग्नि प्रचण्ड सुधीर सिंगला ने की। तीन कुण्डों के पास यज्ञमान श्रद्धापूर्वक बैठे हुए थे यज्ञ श्री बाल कृष्ण जी शास्त्री, श्री योगराज जी शास्त्री ने बड़ी श्रद्धा से कराया-पूर्ण आहुति में सैंकड़ों स्त्री-पुरुषों ने श्रद्धापूर्वक आहुति डाली।

मुख्य अतिथि श्री बलराज जी भसीन प्रधान प्रबन्धक समिति सनातन धर्म प्रचारक महिला कालेज लुधियाना ने भी सपरिवार आहुति डाली। इस अवसर पर श्रीमती विनोद गांधी, अनिल गौतम, एवम् पार्टी सत्यपाल जी योगराज जी शास्त्री ने अपने सुरीले भजनों से समय बांध दिया।

यज्ञ के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा कि हम सब श्रेष्ठ यज्ञ करना भूल गए थे। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने हमें यज्ञ करने की प्रेरणा दी। स्त्री जाति पर तो उनका विशेष उपकार है। उन्होंने ही डंके की चोट से कहा जहां देवियों का मान होता है वहां देवता निवास करते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि रामायण काल में घर-घर में यज्ञ होता था। महाभारत काल में कई बड़े-बड़े यज्ञ हुए जिस स्थान पर यज्ञ होता है वह स्थान सौभाग्य शाली एवं धन-धान्य से भरपूर होता है। हमें उस युग प्रवर्तक महर्षि का धन्यवाद करना चाहिए जिसकी अपार कृपा एवं प्रेरणा से हम इतना बड़ा यज्ञ कर रहे हैं।

महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी ने यज्ञ की पूर्णविधि एवं यज्ञ से क्या लाभ होता है विस्तार से चर्चा की जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। इस अवसर पर छाबड़ा हास्पीटल के मालिक डा. रमेश छाबड़ा, डा. रमा छाबड़ा को आशानन्द आर्य की ओर से ऋषि दयानन्दजी का बड़ा चित्र भेंट किया गया।

श्री वेद प्रकाश अग्रवाल प्रबन्धक सनातन धर्म प्रचारक हायर सैकेंड्री स्कूल ने कहा कि आज से 24 वर्ष पूर्व श्री आशानन्द जी आर्य की प्रेरणा से यज्ञ शुरू किया था। आज वह विशाल रूप धारण कर गया है और इस एरिया के हर वर्ग के लोग इस यज्ञ की प्रतीक्षा में रहता है कि अगले वर्ष 25वां यज्ञ बहुत समारोह से मनायेंगे।

लंगर में हजारों नर-नारियों ने प्रीतिभोज किया। इस यज्ञ में नगर के हर कोने से श्रद्धालु एकत्रित होते हैं।

—जगदेव लाल भण्डारी, मन्त्री,
हरपाल वैलफेयर एसोसिएशन

गुरुकुल करतारपुर हेतु अन्न संग्रह की अपील

सभी आर्य समाजों व सदस्यों तथा वैदिक संस्कृति में आस्था रखने वाले धार्मिक सज्जनों से निवेदन है कि गेहूं के इस मौसम में आप लोग गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के भोजन के लिए जो अन्न हेतु नकद राशि या अन्न दान करते हैं, उसको एकत्रित करने के लिए प्रति वर्ष की भांति श्री सुखदेवराज शास्त्री अधिष्ठाता गुरुकुल करतारपुर आपके पास पहुंच रहे हैं। आप उन्हें इस कार्य में अपना पूर्णरूप से भरपूर सहयोग देकर गुरुकुल के संचालन में सहायता करें। यदि किसी कारणवश श्री सुखदेवराज जी 30 जून तक भी आपके पास न पहुंच पाएं तो कृपया अपनी दान राशि प्रति बोरी गेहूं के हिसाब से मनिआर्डर, बैंक ड्राफ्ट द्वारा- श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट, करतारपुर (जिला जालन्धर) के नाम से सीधे भेज देवें। इस ट्रस्ट को दिया गया दान भारत सरकार के आयकर की धारा 1961-80जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

चतुर्भुज मित्तल (मन्त्री, ट्रस्ट)

आर्य समाज अजनाला द्वारा प्रचार

आर्य समाज अजनाला (अमृतसर) में आर्य स्थापना दिवस 13 अप्रैल 2002 को बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। चैत्रसुदी प्रतिपदा से राम नवमी तक प्रतिदिन विशेष कार्यक्रम चलता रहा। प्रतिदिन दोपहर बाद 2 घण्टे यज्ञ सत्संग चलता रहा। माताएं-बहनें बच्चों को साथ लेकर आती रही। प्रतिदिन वैदिक विनय का पाठ होता रहा। इस आर्य समाज में प्रत्येक शनिवार को स्त्री सत्संग होता है। प्रत्येक संक्रान्ति को विशेष कार्यक्रम होता है। प्रत्येक पर्व बड़े उत्साह से मनाया जाता है। रविवारीय सत्संग की उपस्थिति निरन्तर बढ़ती जा रही है।

—राम पथिक, वानप्रस्थी

हांसी में नव-दिवसीय विराट यज्ञ एवं दिव्य आध्यात्मिक सत्संग सम्पन्न

वैदिक यज्ञ सेवा समिति हांसी द्वारा नवं दिवसीय विराट यज्ञ एवं दिव्य अध्यात्मिक सत्संग दिनांक 13-4-2002 आर्य समाज स्थापना दिवस सृष्टि सम्वत् वि. सम्वत् वैसाखी एवं नवरात्रों के उपलक्ष्य में 21 अप्रैल 2002 श्री रामनवमी तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस विराट यज्ञ के ब्रह्मा एवं कथा वाचक युवा सन्यासी श्रद्धेय स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती तथा भजनोपदेशक पं. नरेश दत्त जी शर्मा, बिजनौर उत्तर प्रदेश थे।

उक्त आशय की जानकारी देते हुए वैदिक प्रवक्ता रामसुफल शास्त्री ने बताया कि उक्त नव-दिवसीय विराट यज्ञ में 51 श्रद्धालु दम्पति यजमानों ने भाग लिया। प्रतिदिन प्रात: 7 से 9 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन तथा रात्रि 8 से 10 बजे तक कथा, प्रवचन का आयोजन किया गया। मंच का सफल संचालन वैदिक विद्वान् पं. भरत लाल जी शास्त्री ने किया। इस कार्यक्रम में स्वामी कीर्ति देव जी, स्वामी रामानन्द जी, श्री हर नारायण मलिक, पं. विजयपाल प्रभाकर, श्री कर्मवीर प्रजापति आदि सज्जनों का विशेष योगदान रहा।

—रामसुफल शास्त्री, लाल सड़क हांसी

राउरकेला में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

दिनांक 2 से 6 अप्रैल, 2002 तक आर्य समाज सैक्टर-19 राउरकेला, ओडिशा, की प्रत्यक्ष तत्वावधान में इस नगरी में एक पञ्चदिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्कल, वेद प्रचार समिति के संचालक पूज्य स्वामी सुधानन्द सरस्वती ने की। इस यज्ञ में प्राय: 350 यजमान दम्पतियों ने सानन्द आसन ग्रहण किया। संपूर्ण यजुर्वेद का सस्वर पाठ आर्य समाज के सदस्यों ने किया। प्रात: सायं यज्ञ के पश्चात् सन्ध्या, भजन व वेद-प्रवचन का आयोजन किया गया था। प्रवचन प्रसंग में पूज्य स्वामी जी ने वैदिक धर्म की महानता को प्रकट करते हुए ईश्वर की शुद्ध स्वरूप, स्तुति-प्रार्थना-उपासना व सन्ध्या के विषय में अपने विचार अत्यन्त सारगर्भित और मार्मिक भाषा में प्रस्तुत किए।

—पदमनाभ स्वाई

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालन्धर

दूरभाष : 292926

सामवेद | अथर्ववेद

ितिनिधि सभा पंजाब (गं

वर्ष–56 अंक : 6 सृष्टि संवत 1960853102, 26 मई, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

वैदिक एवं वैदिकोत्तर काल में नामकरण की स्थिति

❑ ले० पं० वेद प्रकाश शास्त्री, 4-ई, कैलाश नगर, फजिल्का पंजाब

1. को ऽसि..... सुश्लोक सुमङ्गल सत्यराजन ॥यजु.20-4

प्रश्न–हे बालक! तू (कः असि) कौन है ?

उत्तर–(सुश्लोक) उत्तमीर्तियुक्त और सत्यवादी (सुमङ्गल प्रशस्त मंगलकारी कर्मों के अनुष्ठानकर्त्ता (सत्यराजन्) सत्य न्याय के प्रकाशक हे बालक! तू (कः) सुख स्वरूप (असि) है अर्थात्–बालक का सुश्लोक, सुमंगल, सत्यराज सदृश प्रशस्त नामकरण करें जिससे भविष्य में इन गुणों का बालक में समावेश हो सके।

'कोऽसि' का उत्तर एक अन्य वेदमन्त्र में भी उपलब्ध होता है–

2. वेदोऽसि ॥ यजु.2-21

तू (वेदः) ज्ञानस्वरूप (असि) है अर्थात् जैसे तू ज्ञान प्राप्त करने वाला हो वैसे ही तेरा नाम भी उसी के अनुरूप सार्थक हो, विपरीत नहीं।

3. शिवो नामासि ॥ यजु. 3-63।

तू (शिवः) सुख स्वरूप विज्ञानप्रद कल्याणकारी सदृश (नाम) प्रसिद्ध नाम वाला (असि) है।

4. नाम याज्ञियम् ॥ यजु. 5-9

(याज्ञियम्) यज्ञ-देवपूजा-विद्वानों का आदर सत्कार, सत्संगति, दान आदि गुणों से युक्त तू (नाम) प्रसिद्ध तेजस्वी नाम वाला हो।

5. यो देवानां नामधा ॥

यजु. 17-27

(यः) जो (देवानाम्) विद्वानों अथवा पृथिवी आदि पदार्थों का अपनी विद्या से (नामधा) नाम धरने वाला है अर्थात् वह परम पिता परमात्मा अपने वेदज्ञान मे जड़-चेतन सभी पदार्थों के नाम मूल अथवा सांकेतिक रूप में धारण कर रहा है।

इसी आधार पर ज्ञान का विकास करते हुए मनुष्य अन्य शब्दों/नामों की रचना कर सकता है।

6. ते सोमादा·ं नाम जागृवि ॥ यजु. 8-49

(सोम) हे सौम्यगुण सम्पन्न (ते) आपका (अदाभ्यम्) प्रशंसा करने योग्य (नाम) (जागृवि) जाग रहा है अर्थात् प्रकाशित हो रहा है, यश का विस्तार कर रहा है और अन्य लोगों को भी प्रशंसनीय नामकरण के लिए प्रेरित कर रहा है।

7. ऋचो नामास्मि यजूंषि नामास्मि सामानि नामास्मि ॥

यजु.18-67

मैं (ऋचः) ऋग्वेद की ऋचाओं से गृहीत (नाम) प्रसिद्ध नाम वाला (अस्मि) हूं (यजूंषि) यजुर्वेद के मन्त्रों से संकलित (नाम) प्रख्यातिकारक नाम वाला (अस्मि) हूं (सामानि) सामवेद के मन्त्र-गान के प्रतीक अर्थात्-संगीतात्मक गुण के (नाम) प्रकाशक नाम वाला (अस्मि) हूं।

वस्तुतः यह वेदमन्त्र मनुष्य को ऋग्वेद के आधार पर स्तुतिपरक, यजुर्वेद के आधार पर यज्ञपरक और सामवेद के आधार पर संगीतपरक नामकरण हेतु प्रेरित कर रहा है।

वेद महिलाओं के सुन्दर नामकरण की ओर भी संकेत कर रहा है।

8. महानाम्न्यो रेवत्यो विश्वा आशाः प्रभूवरीः यजु.23-35

हे स्त्रि। (विश्वाः आशाः) समस्त आशाओं, आकांक्षाओं के सहित (रेवत्यः) विभिन्न प्रकार के धन्य धान्य से परिपूर्ण (प्रभूवरीः) प्रभुता से युक्त (महानाम्न्यः) महान् यश-महिमा-गरिमा सदृश सुन्दर नाम वाली हो अर्थात्-स्त्रियों के नाम भी ऐसे हों जो इन गुणो को प्रकट करते हुए प्रशासित हो।

9. इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतिऽदिते सरस्वति महि विश्रुति। एता तेऽघ्न्ये नामानि ॥ यजु 8-43

(अघ्न्ये) मन वचन कर्म से पीड़ा न देने योग्य अर्थात् सत्करणीय (अदिति) आत्मा के विनाश को न प्राप्त होने वाली (ज्योते) श्रेष्ठशील से प्रकाशमान (इडे) प्रशंसनीय गुणयुक्त (हव्ये) स्वीकार्य (काम्ये) मनोहर स्वरूप वाली (रन्ते) आनन्दित करने योग्य (चन्द्रे) अत्यन्त आह्लादकारिणी (विश्रुति) अनेक अच्छी बातें और वेद जानने वाली (महि) अत्यधिक प्रशंसनीय महिमाशालिनी (सरस्वती) प्रशंसति गुणो के प्रकाशक (ते) तेरे (एता) ये (नामानि) प्रशंसित नाम हैं।

उल्लिखित दोनो मन्त्रों मे बालिकाओ के आशा, रेवती, प्रभूवरी अघ्न्या, अदिति, ज्योति, इडा, हव्या, काम्या, रन्ति., विभुति, मही, सरस्वती सदृश सुन्दर, सार्थक, सरल, सुबोध नामकरण हेतु उपदेश है। अतः सभी माता-पिता, अभिभावक, उपदेशक, पण्डित पुरोहित आदि बालक बालिकाओं के नामकरण भारतीय सभ्यता संस्कृति के अनुसार करें।

सुन्दर नामकरण के प्रचारार्थ "वैदिक बालनामवली" पुस्तक प्राप्ति हेतु दस रुपए का धनादेश उपर्युक्त पते पर भेज कर अनुगृहीत करे। (क्रमशः)

वेद सुधा

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः।
तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः ॥

अथर्व. 3-30-4 ॥

पदानि–येन। देवाः। न। विऽयन्ति। नो इति। च। विऽद्विषते। मिथः। तत्। कृण्मः। ब्रह्म। वः। गृहे। सम्ऽज्ञानम् पुरुषेभ्यः।

अन्वयः–येन देवाः न वियन्ति। मिथः च नो विद्विषेते। तत् संज्ञान ब्रह्म वः गृहे पुरुषेभ्यः कृण्मः।

अर्थ–(येन) जिससे (देवाः) दिव्य जन (न वियन्ति) विरोध नहीं करते, तथा (मिथः) परस्पर (नो विद्विषते) द्वेष भी नही करते (तत्) उस (स-ज्ञानं ब्रह्म) उत्तम ब्रह्मज्ञान का उपदेश (वः गृहे) आपके घर के (पुरुषेभ्यः) सब मनुष्यो को (कृण्मः) करते हैं।

भावार्थ :–जिस ज्ञान से आपका विरोध नहीं बढता ओर जिससे परस्पर वैर घटता है, वह ब्रह्मज्ञान ही है। वैह ज्ञान घर मे, ग्राम मे, राष्ट्र में और विश्व में रहने वाले स्त्री पुरुषो को होना चाहिए, जिससे विश्व में शान्ति रहेगी और कलह नहीं होंगे।

धर्म शिक्षा सम्बन्धी-

विद्यार्थियों के लिए कुछ उपयोगी प्रश्न-उत्तर

❑ मा० प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी आर्य कुटिया पूरी

1 प्रश्न–पूजा और उपासना मे क्या अन्तर है ?

उत्तर–पूजा का अर्थ है "सेवा" ओर उपासना का अर्थ है "प्रभु भक्ति"। पूजा (सेवा) होती है माता, पिता, गुरु की और उपासना होती हे ईश्वर की । पूजा होती है हाथों से और उपासना होती है "आत्मा" से। पूजा होती है बाहर से और उपासना होती है "अन्दर" से।

2 प्रश्न–जो सत्ता कण-कण में व्यापक है, उसका क्या नाम है?

उत्तर–उस सत्ता का मुख्य "ओम्" नाम है परन्तु गुण वाचक ईश्वर के बहुत नाम है, जैसे ईश्वर, भगवान, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, देवता, परमात्मा, शिव, गणेश आदि-आदि। जैसे आपके पिता जी का नाम राम लाल जी है उन्हे कोई चाचा, ताया, मामा फुफा और नाना जी कहता हे। यह गुण वाचक नाम हैं।

3 प्रश्न–ईश्वर की उपासना कसे करनी चाहिए?

उत्तर–निश्चित स्थान पर शुद्ध आसन पर बैठकर पहले आचमन ओर अग स्पर्श करके प्राणायाम करके ध्यान करना चाहिए। यदि प्राणायाम न हो सके तो "गायत्री मन्त्र" या "ओ" का जाप करना चाहिए।

4 प्रश्न–मूर्ति पूजा का सबसे पहले विरोध किसने किया ?

उत्तर–जगत गुरु शंकर आचार्य जी ने फिर गुरु नानक देव जी ने, फ्रि कबीर जी ने और फिर महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने।

5 प्रश्न–मूर्ति पूजा का विरोध क्यो हुआ ?

उत्तर–क्योकि मूर्तियो मे कोई शक्ति नहीं होती, यदि शक्ति होती तो मोहम्मद गौरी 'भगवान सोमनाथ' के मन्दिर को न तोड सकता, मोहम्मद बिन कासिम सिन्ध मे देवी जी के मन्दिर को न तोड़ सकता, औरंगजेब भगवान कृष्ण के मन्दिर न तोड़ सकता और बाबर भगवान राम के मन्दिर न तोड़ सकता। अतः मूर्ति पूजा का विरोध हुआ।

6 प्रश्न–ईश्वर कितने हैं और उसका स्थान कहां है तथा उसका मन्दिर कहां है ?

उत्तर–ईश्वर एक है, सर्वव्यापक है और हमारा हृदय देश ही भगवान का मन्दिर है उदाहरण ईश्वरः सर्वभूतानाम् हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति, गीता 18-61

7 प्रश्न–यह जो मन्दिर बने हुए हैं, किसके समझें ?

उत्तर–यह मन्दिर भगवान के नहीं, भगवान के भक्तों के हैं। क्योंकि भगवान ईश्वर तो एक होता है और भक्त अनेक होते हैं, इसीलिए मूर्तियां भी बहुत प्रकार की होती हैं।

8. प्रश्न–आर्य समाज की स्थापना कब और कहां हुई, और किसने की ?

उत्तर–पहली आर्य समाज की स्थापना मुम्बई में सन् 1875 को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने की।

9 प्रश्न–आर्य समाज की स्थापना क्यो की गई ?

उत्तर–क्योकि आडम्बर, पाखण्ड और जातिवाद ने सांप का रूप धारण कर लिया था। अतः इसके निवारणार्थ तथा अन्य राष्ट्रीय उत्थान अर्थ पग उठाने के लिए।

10 प्रश्न–फिर आर्य समाज ने क्या-क्या किया ?

उत्तर–एक ईश्वर की उपासना सिखलाई। बाल विवाह, बहु विवाह, अनमेल विवाह को बन्द करवाया, विधवा विवाह द्वारा अर्थी को डोली का रूप दिया। नारी जागरण से देश खड़ा किया, स्वधर्म, स्वभाषा, स्व संस्कृति और स्वराज्य से देश आजाद करवाया। वेद प्रचार से पाखण्ड का नाश किया। आदि-आदि।

11. प्रश्न–महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के विचारो को कैसे समझें?

उत्तर–उन्होंने बहुत ग्रन्थ लिखे हैं, परन्तु उनके विचारों को जानने के लिए कम से कम 3 ग्रन्थ अवश्य पढ़ने चाहिएं, "संस्कार विधि" ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और सत्यार्थ प्रकाश तथा उनका जीवन चरित्र।

12. प्रश्न–आर्य समाज को लोक राष्ट्रीय संस्था क्यों कहते हैं ?

उत्तर–क्योंकि इसके सब काम राष्ट्र उत्थान के हैं इसके 10 नियम हैं, पहले 5 नियमों में व्यक्ति निर्माण योजना है, और पिछले 5 नियमों में समाज निर्माण योजना है, जब व्यक्ति अच्छे होंगे तो समाज भी अच्छा होगा, अच्छा समाज ही अच्छा राष्ट्र होता है। अर्थात् आर्य समाज मानव निर्माण फैक्टरी है।

13. प्रश्न–धर्म किसे कहते हैं?

उत्तर–जिसके धारण करने से, व्यक्ति का वर्तमान चमक उठता है, और भविष्य जगमगाता है, उन्हीं शुभ कर्मों का नाम धर्म है।

14. प्रश्न–आर्य किसे कहते हैं?

उत्तर–जो सत्यवादी, जितेन्द्रीय, दाता, दयालु, नम्र, ज्ञानी और तपस्वी है उसे ही आर्य कहते हैं।

15. प्रश्न–प्रातःकाल कितने बजे उठना चाहिए ? और क्या करना चाहिए ?

उत्तर–सूर्य निकलने से दो घन्टे पहले उठकर जलपान, व्यायाम, भ्रमण, घरेलु और विद्यालय का काम करना चाहिए।

16 प्रश्न–प्रातःकाल उठकर सबसे पहले क्या करना चाहिए ?

उत्तर–सबसे पहले पूज्य लोगो को माता-पिता, गुरु आदि-आदि जो भी घर में हों उनके पांव छूकर नमस्ते जी कहना चाहिए, इससे आपको आशीर्वाद मिलेगा, जिससे आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होगी।

17. प्रश्न–विद्यार्थी का सर्वश्रेष्ठ गुण क्या है ?

उत्तर–नम्रता और समय का सदुपयोग। प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी दिनचर्या बना कर अपने कमरे या अलमारी पर चिपका देना चाहिए फिर उसी के अनुसार चलना चाहिए।

18. प्रश्न–नशों को क्यों नहीं करना चाहिए ?

उत्तर–क्योंकि नशों से धन और जीवन का नाश होता है तथा अपमान भी होता है। मानो जो व्यक्ति शराब पीता है वह अपने बच्चों का खून पीता है।

19. प्रश्न–बीड़ी, सिगरेट, पान खाने में क्या दोष है ?

उत्तर–खून खराब हो जाता है, बीड़ी आदि से श्वास की नाली में कालिख जम जाती है फिर यह कालिख खून में मिल जाती है, जिससे कैंसर रोग लग जाता है, फिर व्यक्ति और उसका घर दोनों बर्बाद हो जाते हैं।

20. प्रश्न–अण्डा और मांस क्यों नहीं खाना चाहिए ?

उत्तर–प्रत्येक प्राणी में कोई न कोई रोग होता है, जिससे हमारा शरीर रोगों को प्राप्त हो जाता है तथा मैं कहा करता हूं कि "जो अण्डा खाएगा, अगले जन्म में मुर्गी बन जायेगा। दूसरे मनुष्य बुद्धि जीवी प्राणी हैं, हमेशा ध्यान रखें, जिन पदार्थों में दुर्गन्ध (बदबू) होती है, उसमे बुद्धि तत्व नहीं होता, इसलिये सुगन्धित पदार्थ ही खाने चाहिए।"

21 प्रश्न–वर्ण कितने होते हैं?

उत्तर–वर्ण चार होते हैं, वर्ण का अर्थ होता है "चयन करना" जो विद्वान् होते हैं उसे ब्राह्मण जो बलवान होता है "क्षत्री" जो धनवान होता है, उसे वैश्य या बनिया और जो केवल सेवा ही कर सकता है, उसे शुद्र कहते हैं। जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र नहीं होता, यह गुण और कर्म के आधार पर चयन होता है। जैसे लोग बलवान को "पहलवान" कहते हैं।

22 प्रश्न–आश्रम कितने हैं ?

उत्तर–आश्रम चार होते हैं। आश्रम मानो जीवन की रेल है 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या और बल की प्राप्ति के बाद "गृहस्थाश्रम" का स्टेशन आता है यहां से ट्रेन बदली जाती है, फिर यह रेल धीरे-धीरे 25 वर्ष में "वानप्रस्थाश्रम" के स्टेशन पर पहुंचती है, फिर यहां से ट्रेन बदली जाती है, फिर यह ट्रेन 25 वर्ष में सन्यास "आश्रम" मे पहुंचती है। अर्थात् जीवन 100 वर्ष का है उसके चार "पड़ाव" हैं जिन्हें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम कहते हैं।

3. प्रश्न–आजकल घी खाने को भी नहीं मिलता फिर यज्ञ मे घी क्यो जलाया जाता है ?

उत्तर–यह प्रश्न पदार्थ ज्ञान के न जानने वालों का है, क्योंकि अग्नि में जो भी पदार्थ डाले जाते हैं, अग्नि में डलते ही फैल जाते हैं। जैसे अग्नि के पास पड़े हुए "दूध" की कोई सुगन्धि नहीं, परन्तु उबाल

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

आर्य समाज और हिन्दु समाज

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की थी और साथ ही यह घोषणा की कि भारत के रहने वाले लोग हिन्दू नहीं आर्य कहलाते थे। हमारे देश का पहला नाम आर्यावर्त्त था। प्राचीन सभी ग्रन्थों में इस देश का नाम आर्यावर्त्त है। इस देश के प्रतापी राजा भरत के पश्चात् इस देश का नाम भारत पड़ गया और मुसलमानों की गुलामी के समय इसका नाम हिन्दुस्तान पड़ गया। मुसलमानों के आने से पहले इसे सभी भारत वर्ष कहते थे। हिन्दु शब्द के अर्थों को लेकर कई बार चर्चा हुई है। यह फारसी का शब्द है और इसका अर्थ, डाकू चोर और लुटेरा है। कुछ भी हो आज हमने हिन्दु शब्द को अपना लिया है। कई हमारे नेता लोग भी कहते हैं कि गर्व से कहो कि हम हिन्दु हैं और हिन्दु शब्द को सिन्धु शब्द का बिगड़ा हुआ रूप बताया जाता है। अर्थात् कहा जाता है कि सिन्धु से हिन्दु बना। कुछ भी हो अब हिन्दु शब्द व्यापक रूप में फैला हुआ है। किसी समय प्रत्येक भारतीय को हिन्दु कहा जाने लगा था। चाहे वह किसी भी जाति का व्यक्ति हो या किसी भी सम्प्रदाय का व्यक्ति हो वह हिन्दु और हिन्दुस्तानी कहा जाता था।

मुसलमानों को छोड़कर शेष सभी जातियों के लोग अपने आप को हिन्दु कहते थे मुसलमानों के बारे में भी जब गम्भीरता से विचार किया जाता है तो पता चलता है कि उनके बाप-दादा-पड़दादा कभी हिन्दु थे। बाहर से हमलावर के रूप में थोड़े से मुसलमान भारत आए थे जब उन्होंने भारत पर अपना अधिकार जमा लिया तो तलव की जोर पर उन्होंने यहां रहने वाले हिन्दु लोगों को मुसलमान बना लिया। आज भी बहुत से मुसलमान अपने नाम के साथ हिन्दु सूचक शब्द लगाते हैं जिसे देख कर पता चलता है उनके बुजुर्ग कभी हिन्दु थे।

भारत में आज जितने भी सम्प्रदाय व मत-मतान्तर हैं व जितनी भी जातियां हैं वह सब पहले हिन्दु ही कहलाते थे। इसाई भी बाहर से बहुत कम आए हैं। केवल पादरी आदि ही बाहर से आए हैं उन्होंने अपने शाम-दाम-दण्ड-भेद से यहां के हिन्दुओं को इसाई बनाया। जो लोग हिन्दु धर्म को छोड़ कर मुसलमान और इसाई बने वह सब आज हिन्दुओं के सबसे ज्यादा शत्रु हैं।

हमें उस समय दुःख होता है जब हमारे भाई सिख भी आज अपने आप को हिन्दुओं से अलग मानते हैं जबकि सभी के पूर्वज किसी समय हिन्दु थे। सिख तो कहीं बाहर से भी नहीं आए। यह तो हमारे ही भाई हैं। हममें से जिन भाईयों ने केस रख लिए हैं वह सिख बन गए हैं चाहे वह किसी भी जाति के लोग हों। परन्तु आज सिख भी कहते हैं कि हम हिन्दु नहीं हैं। जो हिन्दु जैनी बन गए हैं वह भी अब अपने आप को हिन्दु नहीं समझते। आश्चर्य तो इस बात का है कि कई जातियों, छोटी जातियों के लोग भी अब अपने आपको हिन्दु नहीं मानते। अब विचार करें कि हिन्दु कौन रह गए हैं। अब केवल चन्देक ब्राह्मण आदि बड़ी जातियों के लोग ही हिन्दु समझे जाने लगे हैं।

भारत हिन्दुओं का देश समझता है परन्तु आज यहां हिन्दुओं की स्थिति क्या है? इस पर जरा विचार तो करें। सभी मतों, सम्प्रदायों, मुसलमानों, इसाईयों, सिखों, जैनियों आदि ने अपने आपको हिन्दु कहलाना छोड़ दिया है। परन्तु वह रहते हिन्दुस्तान में हो हैं। हमारे ही भाई आज हमारे ही दुश्मन बन बैठे हैं। जो कल तक हमारे थे आज वह बेगाने बने बैठे हैं। होना तो यह चाहिए था कि भारत का रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति भारतीय कहलाना चाहिए था अर्थात् हिन्दुस्तान का रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति हिन्दु कहलाना चाहिए था। परन्तु आज कई लोग भारत का ही अन्न आदि खाते हैं यहीं से अपनी जीविका चलाते हैं, पेट भरते हैं और गुण पाकिस्तान व अरब देशों के गाते हैं। वह अपने आपको भारतीय मानने को तैयार नहीं। जम्मू-कश्मीर में किसी समय अधिकतर ब्राह्मण ही रहते थे और सभी हिन्दु ही थे परन्तु मुसलमानी शासन में तलवार के जोर पर हिन्दुओं को मुसलमान बना दिया गया अब यह प्रदेश मुसलमान बाहूल हो गया है और इस उग्रवाद व आतंकवाद के काल में बहुत से हिन्दु वहां से अपने घर बार छोड़ कर पलायन कर गए हैं। कुछ आतंकवादियों ने मौत की नींद सुला दिए हैं। कहर हिन्दुओं पर ही टूट रहा है पहले पंजाब में, फिर जम्मू कश्मीर में, अब गुजरात में इन्हीं पर कहर टूट रहा है परन्तु इसकी किसी को भी कोई चिन्ता नहीं है क्योंकि जो हिन्दुओं की बात करेगा उसे राजनैतिक लोग सम्प्रदायिक कहने लग जाएंगे और धर्म निर्पेक्षता की दुहाई देनी आरम्भ कर देंगे।

यह विषय बड़ा गम्भीर बन गया है इस पर आज विचार करने की आवश्यकता है। आर्य समाज ने चाहा था कि हमारे देश को इस हिन्दु शब्द से छुटकारा मिल जाए और यहां रहने वाले सभी लोग अपने पुराने नाम आर्य शब्द को अपना लें और सभी आर्य कहलाएं लेकिन अपने 125 वर्ष के कार्यकाल में आर्य समाज स्वयं भी यह न कर पाया। हमारी स्थिति यहां तक बन गई है कि आर्य समाजी भी अपने आपको आर्य नहीं लिखते। जब किसी आर्य समाज का चुनाव होता है और समाचार पत्रों में अधिकारियों के नाम छपते हैं तो प्रत्येक आर्य समाज का अधिकारी अपना जाति सूचक शब्द अपने नाम के साथ लिखता है। जब आर्य समाजी ही अपने आपको आर्य नहीं लिखते तो आम जनता से हम कैसे आशा रख सकते हैं कि वह अपने आपको हिन्दु नहीं आर्य लिखें व आर्य कहलाएं।

आज हमारे देश की स्थिति सोचनीय है यह आर्यो का देश हिन्दुओं का देश अब विदेशियों का देश बनता जा रहा है। हम अपनी सस्कृति अपनी सभ्यता अपनी विचारधारा सभी कुछ छोड़ने जा रहे हैं। विदेशी सभ्यता व संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं। धीरे-धीरे भारत का फिर विदेशीकरण हो रहा है। यदि इसे रोका न गया तो आगे चल कर यह भारत के लिए खतरा पैदा कर सकता है। आज हमारे देशवासियों का अपने देश से प्रेम घटता जा रहा है। राजनीति ने तो और भी स्थिति खराब कर दी है। तुष्टीकरण की नीति को लेकर स्थिति खराब होती जा रही है कई राजनैतिक पार्टियों के नेता वोटों के लिए कई प्रकार के हथकण्डे अपना रहे हैं। गलत व अपराधी प्रवृत्ति के लोगों का सहारा ले रहे हैं उनका पक्ष ले रहे हैं। इससे हमारे देश में तनाव बढ़ता जा रहा है। साम्प्रदायिक विवाद बढ़ता जा रहा है। भ्रष्टाचार, अनाचार, व्यभिचार और अनैतिकता बढ़ती जा रही है।

आज देश को अन्दर से खोखला, करने का प्रयास किया जा रहा है, विघटन पैदा किया जा रहा है। देश को फिर जातियों में, मजहबों में सम्प्रदायों में बांटा जा रहा है। इससे हमें सावधान हो जाना चाहिए। हम सभी भारतवासी भारतीय हैं हिन्दु (आर्य) हैं। हम सब एक हैं। यह देश हमारा है इस देश की रक्षा करना हमारा धर्म है, कर्त्तव्य है. हमें इसका पालन करना चाहिए। देश को हानि पहुंचाने वाले तत्वों से हमें सावधान हो जाना चाहिए। हमारे बुजुर्गो व नेताओं ने जिस आजादी के लिए अपना खून बहाया था आज हमें उस आजादी को कायम रखने के लिए देश की रक्षा के लिए संकल्प लेना चाहिए। आपस के सब मतभेद भुला कर एक हो जाना चाहिए। ताकि देश को आतकी आग से बचाया जा सके। देश को हानि पहुंचाने वाले तत्वों से देश की रक्षा की जा सके। हमारे सामने देश पहले होना चाहिए, जाति, सम्प्रदाय, मजहब और राजनैतिक पार्टी बाद में रहे। देश की आजादी रहेगी तो यह सब रहेंगे यदि देश की आजादी को खतरा पैदा हो गया तो हमारा अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। देश को संगठित करने की आवश्यकता है आर्य समाज को संगठित करने की आवश्यकता है। आज हिन्दु समाज को संगठित करने की आवश्यकता है।

—धर्मदेव आर्य, सभा कार्यलयाध्यक्ष

इस्लाम का सच

□ ले० श्री ब्रज भूषण वार्ष्णेय

(गतांक से आगे)

१४. सूरा ८ आयात ३८, ६५-६७ : जब तुम उन्हें मिलो, उन्हें तीन बातों में से एक चुनने के लिए कहना (१) इस्लाम स्वीकार कर लें। (२) शरणागत हो दास बन जजियां दें। (३) प्रथम दो बातों को स्वीकार न करें तो उन्हें वध कर देना क्योंकि किसी पैगम्बर को कैदियो को रखें रखना उचित नहीं जब तक उनका कत्ल न कर दिया जाए।"

१५. सूरा ९ आयत ५ : "फिर जब हराम के दिन बीत जाएं, तो मुशरिकों (मुस्लिमेत्तरों) को जहां कहीं पाओ कत्ल कर दो। उन्हे पकड़ो, घेरो, हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो, फिर यदि वे तौबा करें और नमाज कायम करें और जकात दे तो उनका मार्ग छोड़ दो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील व दयालु है।"

१६. सूरा ६ आयत २९, ९, १४ व ९, ४१ : "उससे युद्ध करो जो अल्लाह और कयामत मे विश्वास नहीं रखते, जो उस किताब पर नहीं चलते यानी कि उस किताब (कुरान) को नहीं मानते और उस पन्थ को नहीं मानते जो सच का पंथ है जिन्हें किताब दी गई है। उनसे युद्ध करो जब तक वे उपहार न दे, दीन हीन न हो जाए, पूरी तरह झुका न दिए जाएं।"

१७. सूरा ६९ आयत ३०-३७ : "उन पर काब करो, बांध लो, उन्हे नर्क की आग में जला दो।"

१८. सूरा ४७ आयत ४-५ : "जब अविश्वासी (मुस्लिमेत्तर) लिमें उनके सिरों को काट दो। उनके सभी अंगों को एक-एक कर काट दो।"

१९. सूरा २ आयत १९३, सूरा ८ आयत ३९ : "उनके विरुद्ध युद्ध तब तक करो जब तक मूर्ति पूजा पूर्णतः समाप्त न हो जाए और अल्लाह का पन्थ इस्लाम पूरी तरह विजयी न हो जाए। अल्लाह के पन्थ की सर्वत्र सम्पूर्ण विजय सम्पन्न न हो जाए।"

२०. सूरा २ आयत २१६: तुम्हारे लिये युद्ध अनिवार्य है भले ही तुम्हे न पसन्द हो। तुम उसे न चाहो।

२१. सूरा ९ आयत ३९ : "यदि तुम युद्ध नहीं करोगे वह (अल्लाह) तुम्हें कठोर दण्ड देगा। तुम्हारे स्थान पर दूसरों को लगा देगा।"

२. सूरा ३ आयतें १६७, १६९, १७१ : अविश्वासियों का कातिल काजी हो जाता है यदि वह स्वयं मर जाता है तो शहीद हो जाता है।"

१ "जन्नत" तलवार के साये में हदीसें हैं (सहीह अल बुखारी ४.७३)

२. अल्लाह के सैनिक (जिहादी) के रूप में एक रात जिहाद करना (युद्ध करना) घर पर २००० वर्ष तक इबादत (पूजा) करते रहने से भी अधिक श्रेष्ठ है (इब्न-ई-माजाह खण्ड २ पृष्ठ १६६)

३. "यदि कोई जिहाद में इतनी ही देर भाग लेता है जितनी देर में एक ऊंटनी का दूध निकाला जाता है, वह जन्नत का अधिकारी हो जाता है।" (इब्न-ई-माजाह खण्ड २ पृष्ठ १६३)"

४ जो कोई जिहाद के लिए रास्ता चलने का प्रयास करता और मार्ग मे धूल उसके शरीर पर लग जाती है तो वह धूल कयामत के दिन महान् सुगन्ध बन जाती है। (वही पुस्तक पृष्ठ १६७)

५. "श्रेष्ठतर जिहाद वह है जिसमें जिहादी और उसका घोड़ा दोनों ही घायल हो जाते हैं।" (वही पुस्तक पृष्ठ १७३)

१. कुछ महत्वपूर्ण (संस्तुतियां स्मृतियां एवं निष्कर्षः अधिक आश्चर्य की बात यही है कि जिहाद इस्लाम की प्रमुख धारणा है जिसमें मुस्लिमेत्तर समाज का वध, बलात्कार, एवम् लूट एक उच्च गुण और जन्नत प्राप्ति के लिए असंदिग्ध व निश्चत गारण्टी समझा जाता है। इस्लाम में विश्वास को ही सर्वोपरि गुण माना जाता है यही कारण है कि एक मुसलमान कितना ही अत्याचारी, दुराचारी व व्याभिचारी हो उसके लिए जन्नत निश्चित है किन्तु एक मुस्लिमेत्तर कितना ही पवित्र सद्चरित्र हो उसकी पवित्रता सद्चरित्रता के रहते हुए भी वह नर्क की आग में ही झोंका जाएगा।" (अनवरशेख इस्लाम सैक्स एण्ड वाइलैन्स, पृ. १३३)

२. जिहाद सम्पूर्ण मुस्लिमेत्तर संसार को, जो अल्लाह और मुहम्मद में विश्वास नहीं रखता, विनष्ट करने के लिए आविष्कृत योजना ही थी...यह एक चमत्कार युक्त योजना थी जिसके द्वारा मुहम्मद को पवित्रों में भी पवित्रतम प्रस्थापित करना था। (अनवर शेख इस्लाम सैक्स वायलैंस पृ. १३७)

३. मानवता के लिए इस्लाम को प्रेम का पन्थ कहना बहुत बड़ी मन गढ़न्त कहानी है। गैर मुस्लिमों मुस्लिमेत्तर समाज से घृणा करना इस्लामी अस्तित्व की धुरी है। (अनवर शेख, इस्लाम द अरब नेशनल मूवमेंट पृ ६२)

४. मुसलमानों की परम्परा यही है कि वे इस्लाम को समूची मानवता पर लाद दें। (डिक्शनरी ऑफ इस्लाम, पृ २४३)

५ "कुरान कभी भी ऐसे राष्ट्र की अवधारणा को समर्थन नही देगा जिसमें मुसलमान, काफिर, पैगन और मूर्ति पूजक हों।" (मौलाना मौहदूदी नैशनल इण्डीग्रेशन एण्ड मुस्लिम माइनौरिटी"-पी.एस योग पृष्ठ ८-९

६. एक "धर्म, इस्लाम, जिसके अनुयायियों द्वारा लूट, वध या हत्या को धार्मिक कृत्य, कर्तव्य सिखाया व समझाया जाता हो, मानव विकास के साथ सहगामी नहीं हो सकता।" (जदुनाथ सरकार ए शौर्ट स्टोरी ऑफ औरंगजेब, तृतीय आवृत्ति खण्ड ३, पृ० १६८)

७. "मुसलमान सर्वाधिक असभ्य, बर्बर और घोर पन्थवादी हैं। उनका आदर्श वाक्य है 'अल्लाह एक है, मुहम्मद उसका पैगम्बर है. ....एक क्षण की सूचना दिये बिना उन सभी मनुष्यों, और स्त्रियों को जो एक दम वैसा ही विश्वास नहीं रखते हर हालत में मार देना चाहिए, प्रत्येक पुस्तक जो उससे भिन्न शिक्षा देती हो जला दी जानी चाहिए, पैसिफिक से लेकर अटलाण्टिक तक पूरे, पांच सौ वर्ष तक सारे विश्व में रक्तपात होता रहा। यह है मौहम्मदवाद।' (विवेकानन्द कम्पलीट वर्कस खण्ड 4, पृ. १२६)

८. "इतिहास में इस्लाम द्वारा भारत की विजय के इतिहास की कहानी सम्भवतः सर्वाधिक रक्त रञ्जित है।" (बिल डयूरैण्ट-दी स्टोरी ऑफ सिविलिजेशन)

९. "सारे विश्व भर में कहीं भी कभी भी, मानवता ने जो यातनाएं सही हैं उनमें सर्वाधिक यातनाएं भारत में हिन्दुओं ने सही हैं......बलात् मुस्लिम विजयें हिन्दुओं के लिए सोलहवीं शती तक जीवन मरण के संघर्ष का ही प्रश्न बनी रही। सम्पूर्ण शहर जला दिए गए थे, सम्पूर्ण जनसंख्या का वध कर दिया गया था।

........प्रत्येक आक्रान्ता द्वारा वध किए हुए हिन्दुओं के सिरों के वस्तुतः पहाड़ खड़े किए जाते थे।" (कोनार्ड ईल्स्ट-निगेशनिज्म इन इण्डिया, पृ. ३३-३४)

१०. मुसलमान कसाई पन नहीं छोड़ेगें जब तक हिन्दु कायरता नहीं त्यागेंगे महात्मा गांधी यंग इण्डिया ३०, १२, २७ (४)

११ "इस्लाम एक ऐसे वातावरण मे उत्पन्न हुआ था जब तलवार प्रमुख कानून था, जो अब भी है...मुसलमानों में हिंसा/तलवार की उपस्थिति के ज्वलन्त प्रमाण हैं। इस्लाम को शान्ति के पन्थ जो वह है, यदि रहना है तो हिंसा/ तलवार को म्यान में जाना, हिंसा व तलवार का शमन अत्यावश्यक है।" (महात्मा गांधी-यंग इण्डिया ३१ १२ २७ पृष्ठ ३५)

१२ "यह बडे दुःख की बात है कि राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इतिहास का विकृतीकरण मात्र राजनीतिज्ञों तक ही नहीं रह गया है, वरन् यह दोष पेशेवर इतिहासज्ञों में भी व्याप्त हो गया है।" (आर सी मजूमदार हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पीपुल, खण्ड 7-ए पृष्ठ १२ १३)

हिन्दुओं में भ्रम

एक हिन्दु, पन्थ का अर्थ एक आदर्श आचार संहिता मानने के लिए विवश है, किन्तु यह इस्लाम की पन्थ की अवधारणा से सर्वथा भिन्न है, जहां पन्थ का अर्थ है, मोहम्मद और उसके कथनों एवम् क्रियाकलाप में अटूट, असंदिग्ध एवम् अन्धविश्वास। कुरान इस्लाम का सम्पूर्ण धार्मिक ग्रन्थ है जो अल्लाह द्वारा मोहम्मद को बताया गया था जैसा कि कुरान की आयत (५.३) में स्पष्ट है, वह अपने आप में पूर्ण है। इसमें न कुछ जोड़ा जा सकता है, न घटाया जा सकता है। राष्ट्रवाद के सामान्य अर्थ के विपरीत, इस्लाम में राष्ट्रवाद का

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हरिद्वार में आर्यों का कुम्भ
गुरुकुल कांगड़ी में अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

❑धर्मवीर आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

(गतांक से आगे)

इस महासम्मेलन के लिए तीन वेद प्रचार यात्रायें निकालने का निश्चय किया गया था। एक पंजाब से स्वामी श्रद्धानन्द जी की जन्मस्थली तलवन जालन्धर से जहां उनका जन्म हुआ था। दूसरी स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान भवन दिल्ली से जहां उनका बलिदान हुआ था और तीसरी यात्रा बरेली उत्तर प्रदेश से जहां स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पहली बार महर्षि दयानन्द के दर्शन किए थे। तीन यात्राएं पूर्व निश्चयानुसार 24-4-2002 को सायंकाल तक हरिद्वार पहुंच गई थी और यह तीनों यात्राएं सफल रहीं। इन यात्राओं में आने वाले सभी महानुभावों, भाइयों, बहनों ने हरिद्वार पहुंच कर 26-4-2002 को शोभा यात्रा (वेद की अनन्त यात्रा) में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। जिलाधिकारी इस यात्रा को हरिद्वार में मोहन आश्रम तक आने देना नहीं चाहते थे। वह हरकी पौड़ी पर ही इसे रोकना चाहते थे परन्तु सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न और वरिष्ट उप प्रधान श्री विमल वधावन जो इस महासम्मेलन के संयोजक भी थे, ने जिलाधिकारियों को स्पष्ट कह दिया कि यह शोभा यात्रा मोहन आश्रम अवश्य जाएगी। यदि किसी ने भी इस यात्रा को रोकने का प्रयास किया तो यह अच्छा नहीं होगा। इससे शोभा यात्रा के संयोजकों ने [illegible] को मानने से इन्कार कर दिया। इस ऐतिहासिक स्थल पर पहुंच कर जहां महर्षि दयानन्द ने 25 अप्रैल 1867 में पाखण्ड-खण्डनी पताका फहराई थी। वहां श्री कैप्टन देवरत्न जी ने ध्वजारोहण किया 'ओइम् की पताका फहराई। इस अवसर पर जहां वहां और कार्यक्रम हुआ। वहां श्री विमल वधावन जी ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया। जिसका समर्थन जयघोष के द्वारा सभी आर्य जनता ने किया जो हजारों की संख्या में वहां पहुंची थी।

प्रस्ताव इस प्रकार है:-"आज दिनांक 26 अप्रैल 2002 को देश-विदेश से गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में पधारी आर्य जनता वेद की अनन्त यात्रा में भाग लेते हुए वैदिक मोहन आश्रम तक दर्शनार्थ पहुंची। यह वह पावन स्थल है जहां 25 अप्रैल 1867 को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई थी। आर्य जनता की भावनाएं इस स्थल से गहरे रूप में जुड़ी हैं। आर्य जनता इस स्थल पर आकर भाव विह्लय हो गई है।

वैदिक मोहन आश्रम का संचालन एक ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है। जिसके प्रधान पदम श्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा एवं मंत्री टी.आर. गुप्ता हैं इस पवित्र स्थल पर कुछ स्वार्थी तत्वों की स्वार्थपूर्ण निगाहें सम्पत्तियों की लूट मचाने के उद्देश्य से लगी हुई हैं। आज समूचा आर्य जगत यह संकल्प करता है कि यदि प्रशासन की किसी लापरवाही से या मिलीभगत के कारण इस पवित्र स्थल पर कोई भी आंच आई तो समूचा आर्य जगत एवं सार्वदेशिक सभा इस आश्रम के ट्रस्ट का हर सम्भव सहयोग देने के लिए कृत संकल्प है। इस प्रस्ताव के द्वारा हम कड़े शब्दों में प्रशासन को चेतावनी देना चाहते हैं कि आर्यों के शक्ति परीक्षण का दुःसाहस कभी न करें। अपनी गौरवपूर्ण वैदिक संस्कृति एवं पवित्र स्थलों की रक्षार्थ हम किसी भी बलिदान को बड़ा नहीं समझते।"

सर्वसम्मति से उपस्थित महानुभावों ने हाथ उठा कर जयघोष करते हुए यह प्रस्ताव स्वीकार किया। इस शोभा यात्रा में जहां अन्य लोगों ने भाग लिया वहां बहुत सन्यासियों व वानप्रस्थियों ने भी भाग लिया। बहुत से सन्यासी भिन्न-भिन्न स्थानों से इस समारोह में भाग लेने के लिए हरिद्वार पहुंचे थे।

26-4-2002 को शोभा यात्रा के बाद सायं 3 बजे से 6 बजे तक आधुनिक युग में वेद और विज्ञान विषय को लेकर एक सम्मेलन आचार्य वेद प्रकाश जी की अध्यक्षता में हुआ। गुरुकुल के परिद्रष्टा श्री सदानन्द जी जो पंजाब चण्डीगढ़ से गए थे इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे।

रात्रि में आर्य परिवार सम्मेलन हुआ। जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल जी बांसल ने की और संयोजन श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा व रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब ने किया। सभा वरिष्ट उप प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा सभा महामन्त्री श्री प्रिं. स्वतन्त्र कुमार और कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज भी उनके साथ उपस्थित थे। श्री रासा सिंह रावत सांसद अजमेर, श्री जय सिंह राव गायकवाड़ पाटील सांसद, श्री रामनाथ जी सहगल मुख्यातिथि थे। इस अवसर पर मोरिशस सभा से पधारे श्री मोहन लाल जी मोहित का सम्मान किया गया। आचार्य विशुद्धानन्द आचार्य भगवान देव चैतन्य, डा. योगेन्द्र कुमार शास्त्री, स्वामी दिव्यानन्द ने इस विषय पर अपने विचार रखे। अन्त में श्री देवेन्द्र नाथ जी ने अपने विचार रखते हुए आर्य परिवारों की महत्ता प्रकट की।

27 अप्रैल को प्रातः यज्ञ के पश्चात् आधुनिक युग में धर्म और आध्यात्मिकता सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी दीक्षानन्द जी ने की। केन्द्रीय जहाज रानी मन्त्री श्री वेद प्रकाश गोयल मुख्यातिथि थे। संयोजक डा महेश विद्यालंकार थे। कई विद्वानों ने इस विषय पर अपने विचार रखे।

दोपहर बाद "माता निर्मात्री भवति" महासम्मेलन हुआ। इसकी अध्यक्षता महान विदुषी बहन दमयन्ती कपूर जी ने की। आप आचार्य रामदेव जी की सुपुत्री हैं कन्या गुरुकुल देहरादून इन्हीं की देखरेख में चलता रहा। इस सम्मेलन की मुख्यातिथि सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज थीं। इस अवसर पर श्रीमती शशि प्रभा आर्य सुपुत्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्रीमती सुषमा शर्मा सुपुत्री स्वामी विशुद्धानन्द जी, बहन उज्जवला वर्मा सुपुत्री आचार्य भद्रसेन ने जनता को सम्बोधित किया और अपने विचार रखे। वास्तव में यह चारों महान पिता की महान् सन्तानें हैं। बहन दमयन्ती जी, बहन शशि प्रभा आर्या, बहन सुषमा शर्मा और बहन उज्जवला वर्मा यह चारों ही बड़ी विदुषी बहनें हैं।

इस अवसर पर सूचना प्रसारण मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने माता निर्मात्री भवति विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए परिवार में नारी की महत्ता और उसके गुणों का वर्णन किया और मां के कर्त्तव्यों पर प्रकाश डाला।

28 अप्रैल को प्रातः 25 कुण्डीय यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। गुरुकुल की प्राचीन यज्ञशाला में अलग-अलग हवन कुण्ड रख कर यज्ञ किया गया जिसमें प्रतिदिन नए-नए यज्ञमान यज्ञ पर बैठते रहे। 25-4-2002 को पंजाब धूरी से गए श्री वासदेव जी भी सपत्नीक यज्ञमान बनें। इसमें 100 यज्ञमान प्रतिदिन यज्ञ पर बैठते थे। मुख्य यज्ञमानों के अतिरिक्त भी कई महानुभाव बहन व भाई यज्ञ में अपनी आहुतियां देते थे। सभी लोग यज्ञ में आहुति नहीं दे पाते थे क्योंकि इसके लिए व्यवस्था नहीं थी परन्तु फिर भी यज्ञ का आयोजन ठीक रहा क्योंकि इसके ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश जी कुलपति गुरुकुल कांगड़ी स्वयं थे। आचार्य जी एक सुयोग्य विद्वान् हैं और एक अच्छे वक्ता हैं।

समापन समारोह के अवसर पर राष्ट्र सेवा सत्र राष्ट्र भक्ति सम्मेलन हुआ। इसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी ने की। इस अवसर पर सरदार भगत सिंह के छोटे भाई सरदार कुलतार सिंह, भतीजे श्री किरणजीत सिंह राम प्रसाद बिस्मिल के घनिष्ठ मित्र अशफाक उल्ला खां के पोते जिनकी आयु लगभग 35 वर्ष है और उनका नाम भी अश्फाक उल्लाखां है वह भी मच पर उपस्थित थे। सरदार कुलतार सिंह जी ने सरदार भगत सिह के कई संस्मरण सुनाए और कई विद्वानों ने अपने विचार देश भक्ति पर प्रकट किए।

शताब्दी समारोह का कार्यक्रम बहुत सफल रहा। इतनी उपस्थिति मे कुच्छ न कुच्छ कमियां तो रह ही जाती हैं । कुल मिला कर आर्यों का कुम्भ सफल रहा।

जहां सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने अपने दायित्व को निभाया वहां गुरुकुल के कुलाधिपति आर्य प्रतिनिध सभा पजाब के प्रधान श्री पं हरबस लाल जी शर्मा, वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, महामन्त्री श्री प्रिं स्वतन्त्र कुमार, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज तथा अन्य सभा अधिकारियों ने इसमें अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया।

गुरुकुल के का कुलपति आचार्य वेद प्रकाश जी, कुलसचिव श्री महावीर जी, सम्पदाधिकारी श्री करतार सिंह जी, श्री कश्मीरा सिंह जी तथा गुरुकुल के दूसरे अधिकारियों, प्राध्यापकों, अध्यापकों तथा दूसरे कर्मचारियों ने भी इस महा सम्मेलन को सफल बनाने में अपना पूरा-पूरा योगदान दिया।

इस शताब्दी समारोह की सफलता का श्रेय जहां सार्वदेशिक सभा को जाता है वहीं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को भी जाता है।

हमारा जीवन कैसा हो?

☐ ले० श्री सम्पादक आर्य समाज [illegible] (अमृतसर) पंजाब

बातें वही पुरानी चाहे कहानी रूप में हों या दृष्टान्त आदि बस कहने लिखने का ढंग शैली होती है अलग–भाव सार एक सा।

गुरुदेव के पुराने शिष्यों में एक ने आकर पूछा–गुरुदेव जी हमारा जीवन कैसा होना चाहिए। लोक व्यवहार में विशेष करके ?

बेटा इस का उत्तर शब्दों में न लेकर यदि प्रत्यक्ष व्यवहार में लेना चाहो तो कुछ दिन यहीं ठहरो तो ठीक रहेगा, शिष्य झट से मान गया।

दूसरे दिन एक श्रद्धालु भक्त फल लाया, तभी गुरु जी फल लेकर पीठ फेर कर खाने लगे, लाने वाले से बात भी न की न किसी को फल दिया, फल खाने के बाद भी बात न की तो थोड़ी देर बाद विवश हो भक्त चला गया, तभी शिष्य को पीछे भेजा कि भक्त जी के हावभाव पूछो फिर बताओ मुझे।

शिष्य ने आकर बताया कि भक्त बड़े रुष्ट मन से गया कि कैसा साधु है। फल खाया परन्तु मेरे से बात तक न की न साथ बैठे हुओं को प्रसाद के रूप में कुछ दिया। सब आप ही खा गया।

गुरु ने कहा बेटा यह तरीका भी ठीक नहीं है जग में रहने का, तीसरे दिन भी और भक्त फल आदि लाया तो तभी फल सब को बांट दिए जो बैठे थे, बातचीत बिल्कुल न की, काफी देर बैठने के बाद निराश हो कर भक्त चला गया तो शिष्य को संकेत से भेजा, भक्त के पास, पूर्ववत जाओ देखो क्या कहता है। यह भी दुखी मन से गया था। दो दिन बाद फिर एक सेठ फल लाया तो बड़े आदर मान से बिठाया। जल पान करवाया तो पहले फल सभी को देकर स्वयं भी खाये कुछ बचा भी लिये, पारिवारिक, व्यापारिक बातें भी की। सेठ जी को जाते समय रखे फल उसे बच्चों के वास्ते प्रसाद रुप में वापिस दिए । विदाई पर कहा अब के बड़ी देर में पधारे, दर्शन देते रहा करो, पीछे मैं आपके ग्राम मे जाकर भी कुछ कारणवश आप के घर न पहुंच पाया उसकी क्षमा चाहता हूं। शिष्य को सकेत से फिर उसके पीछे भेजा कि इसका मन कैसा रहा जाते हुए पता करके आओ।

गुरुदेव यह भक्त बड़ा खुश होके गया । आप की बड़ी प्रशंसा करते हुए, आश्रम का भी गुणगान करते हुए गया, पीछे दोनों रुष्ट गए थे।

बेटा स्वयं ही तीनों भक्तों संग जो व्यवहार मैंने किया, तुझे दिखाने, समझाने हेतु किया था क्योंकि तेरा प्रश्न था कि संसार में हमें कैसे रहना चाहिए? मुझे उनके रुष्ट जाने का दुख इतना नहीं क्योंकि जब भी फिर वह मुझे मिलेंगे, हुई त्रुटी को पुरा करने का प्रयास करूंगा, भले उनका मन सन्तुष्ट न हो पूरी तरह।

आशा है तेरी सन्तुष्टी हो गई होगी, क्योंकि मैं तुम्हें व्यवहार कुशल देखना सुनना चाहता हूं । लोक व्यवहार ही संग जाता है।

जीवन जीना एक कला है, जहां प्रत्येक व्यक्ति बाहर से बहुत कुछ सीखता है तो स्वंय भी बुद्धि विवेक का सर्वदा महत्व रहता है।

(क्रमशः)

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज खरड़ जिला रोपड़ में 14-5-2002 को जम्मू में मारे गए निर्दोष लोगों के प्रति शोक प्रकट करते हुए दो मिनट का मौन रखा गया तथा शोक प्रस्ताव पारित करते हुए मृतकों के परिवार वालों के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई। आर्य समाज खरड़ ने अपने एक प्रस्ताव में इस कत्लेआम की कड़ी निन्दा की। परमात्मा से दिवंगतात्माओं की सद्गति व शान्ति के लिए प्रार्थना की गई तथा उनके परिवारों के लिए इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की गई।

–मन्त्री, आर्य समाज खरड़

(पृष्ठ [illegible] का शेष)

खाकर [illegible] अग्नि में जलने से सुगन्धि फैलती है। कई लोग भोजन के साथ तीन मिर्च आचार की खा जाते हैं, परन्तु अग्नि में एक मिर्च के पड़ने से लोगों की आंखों में जलन, खांसी और छींकों का फव्वारा छूट सकता है। अमरीका अग्निहोत्र रिसर्च फार्म ने घोषणा की है कि 200 ग्राम गाय के घी से हवन करने से 23000 व्यक्ति सुगन्धि का आनन्द ले सकते हैं। अतः यज्ञ मे घी की आहुति का अधिक लाभ है, परन्तु 200 ग्राम घी को तो केवल 10 व्यक्ति ही खा जायेंगे।

24. प्रश्न–कर्म फल व्यवस्था क्या है ?

उत्तर–अच्छे कर्म का फल अच्छा मिलता है और बुरे कर्म का फल बुरा मिलता है, जैसे पढ़ने वाले विद्वान् बनते हैं और न पढ़ने वाले मूर्ख रह जाते हैं। यही है कर्मफल व्यवस्था। अतः अच्छे कर्म करके "यश" कमाना चाहिए।

25. प्रश्न–क्या मृतकों के नाम से श्राद्ध करना चाहिए ?

उत्तर–नहीं, क्योंकि मृतकों का जन्म पता नहीं किस योनि में हुआ हो, मानो बाबा जी शेर बन गये, फिर शेर तो खीर खाता नहीं, यदि कहो मनुष्य बन गये, तो फिर हमें भी कहीं से खीर आदि मिलनी चाहिए थी। वास्तव में जीते माता पिता आदि की भरपूर सेवा करनी चाहिए। यही सच्चा "श्राद्ध" है।

26. प्रश्न–आदि सृष्टि में मनुष्य को ज्ञान कहां से मिला ?

उत्तर–सृष्टि के आदि में ईश्वर ने अग्नि आदि चार ऋषियों के हृदय में दिया, जो महान पुण्य आत्मायें थीं।

27. प्रश्न–उस ज्ञान का क्या नाम है ? और उन ऋषियों के नाम क्या हैं ?

उत्तर–ऋग्वेद का ज्ञान, अग्नि ऋषि को, यजुर्वेद का ज्ञान, वायु ऋषि को, सामवेद का ज्ञान आदित्य ऋषि को और अथर्ववेद का ज्ञान अंगिरा ऋषि को दिया।

28. प्रश्न–वेदों में क्या-क्या विषय हैं ?

उत्तर–ऋग्वेद में ज्ञान काण्ड है, यजुर्वेद में कर्मकाण्ड है, सामवेद में उपासना काण्ड है और अथर्ववेद में, विज्ञान काण्ड है।

29 प्रश्न–पाच काम कौन से ऐसे हैं, जिसे मनुष्य ही कर सकता है?

उत्तर–वेद मन्त्रों का गान, भगवान का ध्यान, प्रसन्न रहना, परोपकार और पांचवा है राष्ट्र हित बलिदान।

30. प्रश्न–ससार में सबसे अच्छा कार्य क्या है ?

उत्तर–संसार में सबसे अच्छा कार्य है–अपने आपको अच्छा बना लेना इसके साथ गायत्री मन्त्र और शान्ति पाठ लिखना है, आर्य समाज के दस नियम लिखने हैं। इन सब को याद [illegible] लो। कालेज के लिए सरल सत्यार्थ प्रकाश भी लगाया जा सकता है।

बोध कथा

सफलता का राज

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियो अपने काम में बड़े ध्यान से तल्लीन होकर कार्य कर रहे थे कि उनके एक मित्र पधारे। उन्होंने बड़े सम्मान के साथ अपने मित्र की कुशलक्षेम पूछी, फिर उन्हें अपने कमरे में बिठा कर वह अपने काम में लगन के साथ जुट गए। कुछ देर बाद गैलीलियो की मां आई। उन्होंने गैलीलियो और उनके मित्र के लिए खाने की मेज पर खाना परोस दिया। अपना समय बचाने के लिए गैलीलियो के मित्र ने अकेले खाना खा लिया और गैलीलियो का खाना ढक कर रख दिया।

कुछ देर बाद जब गैलीलियो का कार्य समाप्त हुआ तब वह खाने की मेज पर आए और खाली थाली (जिसमें उनके मित्र ने खाना खाया था) देखकर बोले–"अरे, मुझे तो यह भी याद नहीं कि मैं पहले भोजन कर चुका हूं।"

मित्र हंसे बिना नहीं रहे, उन्होंने गैलीलियो की थाली उनके सामने रख दी, तब गैलीलियो ने खाना खाया।

गैलीलियो विश्व के एक सफल वैज्ञानिक बने, सम्भवतः यह उनकी लगन, मेहनत और तल्लीनता का ही राज था।

नरेन्द्र, विद्यावाचस्पति

इस्लाम का.............
(पृष्ठ 4 का शेष)

अर्थ एक इस्लामी, अनुशासन "दीन" है। इस्लाम विश्वव्यापी इस्लामिक राष्ट्रवाद को छोड़ अन्य किसी अवधारणा में विश्वास नहीं रखता है कि यही कारण एक मुस्लम देश में कुरान की आयतों (८. ५५, ८.३८, ३५-३१) के आधार पर मुस्लिमेत्तर समाज को किसी कैसे भी अधिकार की मान्यता नहीं रहती जैसा पाकिस्तान व बंगला देश में भी है। बहुसंख्या वाले कश्मीर से हिन्दुओं को बलात् निकाला जा चुका है शेष का धर्मान्तरण व वध हो रहा है। हिन्दुओं को सर्व धर्म समभाव या पन्थ निरपेक्षता की निरर्थक अवधारणा उन्हें सर्वथा अनुकूल पड़ती है। एक सच्चे मुसलमान की पूर्ण निष्ठा इस्लाम में ही रहती है, अन्यत्र कहीं नहीं। कुरान की आज्ञाओं का पूर्ण पालन करते हुए जैसा उसका आचरण विगत चौदह सौ वर्षों में ही रहा है, अब भी यथावत है और आगे भी अपरिवर्तित ही रहेगा। पाकिस्तान बन जाने से लक्ष्य की पूर्ति नहीं हुई है, सारे भारत क्या सारे विश्व को ही बलात् इस्लाममय बना लेना कुरान की आयतों (२११९३ और ८.३९) के अन्तर्गत एक सच्चे मुसलमान का लक्ष्य है। उसका जिहाद अन्तहीन है, चलता ही रहेगा।

मैकाले-मार्क्स-मदरसा की राजनीति प्रेरित धूरी, पूर्ववतभ्रामक नारे व व्याख्यायें देकर हिन्दुओं को दिग्भ्रमित कर देश का निरन्तर विघटन करती ही रहेगी। क्रूरतम, नर पशु मुस्लिम आक्रान्ताओं के शासन काल को सम्मिश्रण पान्थिक सौहार्द, के विकास के काल का नाम दिया जा चुका है। फीरोजशाह तैमूर लंग, औरंगजेब व टीपू जैसे नर पिशाचों को उदार, पन्थ निरपेक्ष, चित्रित किया जा चुका है। शाहजहाँ को कुशल प्रशासक, जहांगीर को न्यायप्रिय और अकबर को महान् बना दिया गया है। सभी के स्मारक उन्हें अमर बना चुके हैं। मन्दिरों के स्थानों पर बने मकबरे ऐतिहासिक स्मारक हो गए हैं। मोपलाओं के रक्त रंजित जिहाद को कृषकों व मजदूरों की क्रान्ति तथा नवाखाली व त्रिपुरा के नरमेध को एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया कह कर उचित ठहराया गया है फिर भी देश का विभाजन नहीं रोका जा सका। पाकिस्तान निर्माण को, पान्थिक अशान्ति के अन्त लिए आवश्यक कहा गया तो कश्मीरी पण्डितों के कश्मीर से बलात् निष्कासन को राजनीति प्रेरित स्थानान्तरण कहा गया है, फिर भी इस्लाम को शान्ति का पथ व सच्चे मुसलमान को जोर जबरदस्ती न करने वाला कहा जाता है।

हिन्दुओं के सामने विकल्प नहीं है कि इस्लाम को ठीक से समझने का प्रयास करें। कम से कम कुरान की कुछ आयतों (५८.२०, ७२ ४-५, २ १९३, ८.३९, २.२१६, ९.३९, ९.५, २९, १४, २३, ४१, ११३, १११, ४७६, ९५, ८.५५, ८.३८, ६५-६७, ४७.४-, ६६.९, ६९ ३३०-३७) का गम्भीर अध्ययन अवश्य करें। अनवर शेख द्वारा लिखित दो पुस्तकें-इस्लाम दी अरब नेशनल मूवमैण्ट तथा इस्लाम-सैक्स एण्ड वायलैंस सत्य स्थिति की परिचायक होने के कारण पठनीय हैं। इस्लाम और मुसलमानों के विषय में भ्रम निवारण के लिए दो संक्षिप्त पुस्तकें, भारत में जिहाद और इस्लाम का भ्रम और सच (प्रकाशक हिन्दू राइटर्स फोरम, दिल्ली) अति उपयोगी है। गान्धी जी, यद्यपि इस्लाम और मुसलमानों के अद्वितीय समर्थक व पोषणकर्ता थे, उन्हें भी इस्लाम व मुसलमानो की हिंसात्मकता स्वीकार करनी पड़ी थी। विवशतावश उन्हे भी कहना पड़ा था कि "हिन्दू यदि कायरता नहीं त्यागेगे तो असुरिक्षत रहेंगे।"

अत: हिन्दू संगठित हो, कायरता त्यागे, और सत्य को समझें, तथा विगत इतिहास का ध्यान कर, शान्ति युक्त, स्वाभिमान पूर्ण, निरापद उज्जवल भविष्य के निर्माण के लिए इस्लामिक पान्थिक राष्ट्रवाद के संकट का सामना करने, उसे परास्त करने, तथा मानव कल्याण एवम् विश्व शान्ति के लिए अग्रसर हों।

सत्य सनातन वैदिक धर्म

की परम्परा को घर-घर में पहुंचाने का संकल्प लिए हुए प्रत्येक रविवार को परिवारों में यज्ञों का सफल आयोजन करने वाली

आर्य समाज पार्क लेन, लुधियाना
का वार्षिक समारोह

दिनांक : 26 मई, 2002 दिन रविवार।

समय : सायं 5.00 बजे से 7.30 बजे तक।

स्थान : पार्क लेन, बिन्द्राबन रोड, लुधियाना।

अध्यक्षता : मान्यवर मोहन लाल जी झाझी, सीनियर एडवोकेट।

मुख्य अतिथि : मान्यवर सत्यानंद जी मुंजाल।

भक्ति संगीत कैसेट : डॉ. सुमन जी सारदा।

विमोचन

मुख्य वक्ता : आचार्य देवव्रत जी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र।

उपरोक्त कार्यक्रम में आप सभी परिवार सहित सादर आमन्त्रित हैं। —सुनील सूद —नेन्द्र भल्ला

यश चौधरी आर्य माडल स्कूल धूरी का शानदार परीक्षा परिणाम

अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि यश चौधरी आर्य माडल हाई स्कूल धूरी (शिक्षण संस्थान आर्य समाज धूरी) का वर्ष 2001-2002 में आठवीं कक्षा का परिणाम शत-प्रतिशत रहा। जिसमें 52 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। आठ विद्यार्थी 80प्रतिशत से अधिक अंक लेकर पास हुए। बाकी सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। उसका श्रेय हमारे स्कूल की प्रबन्धक कमेटी व स्टाफ को जाता है। जिनके सहयोग से विद्यार्थियों ने इतने अच्छे अंक प्राप्त किए। —कृष्णा आर्य, प्रिंसीपल

आर्य समाज हबीबगंज (अमरपुरा) लुधियाना में मुफ्त मैडीकल कैम्प

12 मई रविवार को आर्य समाज हबीबगंज (अमरपुरा) लुधियाना में चल रहें धर्मदेवी आर्य औषधालय के तत्वावधान में पहला मुफ्त मैडिकल कैम्प सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल 9 बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ जिसमें श्री वेद भूषण मदान श्रीमती सत्या मदान श्री मुनीश मदान श्रीमती शालू मदान, श्री पन्दीप भक्त श्रीमती अविनाश भक्त श्री सजय कुमार एवं श्रीमती प्रवीण बाला यज्ञमान बने। यज्ञ के पश्चात् ठीक 10 बजे लुधियाना के प्रसिद्ध उद्योगपति आर्य समाजी श्री मुनीश जी मदान ने फीता काटकर कैम्प का उद्घाटन किया। जन समूह ने उन्हें हार पहना कर सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने कैम्प के लिए 2100/- रुपए दिए।

डिस्पैन्सरी के चेयरमैन एवं आर्य समाज के प्रधान श्री आशानन्द जी आर्य ने कहा कि लुधियाना की तारीख में किसी आर्य समाज में इतने विशाल स्तर पर मुफ्त मैडीकल कैम्प लगा हो यह श्रेय आर्य समाज हबीबगंज को जाता है। इस समय तक आर्य समाज का विशाल आंगन चैकअप कराने वालों से भर चुका था तथा स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती विनोद गांधी समाज के मन्त्री जनकराज भक्त-कोषाध्यक्ष श्री कवलजीत-सन्दीप कुमार भक्त-आर बी स्कूल की मुख्याध्यापिका श्रीमती [illegible] देवी, प्रवीण बाला वन [illegible] जल आदि एवं सारी व्यवस्था का प्रबन्ध कर रहे थे।

डिस्पैन्सरी के इन्चार्ज डा. सुरेश जी राजपाल G.A.M.S. डा. मनीश जी गांधी BEMS-MDE डा. विजय कपूर ने सारी व्यवस्था ठीक रूप रखी हुई थी। ठीक 10.30 बजे डा. आई.पी.एस. छाबड़ा M.B.B.S. DTC, DPC M-S चीफ मैडिकल आफिसर पधारे और आते ही क्रमवार मरीजों का चैकअप आरम्भ कर दिया। लगभग 125 मरीजों का चैकअप किया गया मरीजों का मुफ्त चैकअप-मुफ्त एक्स-रे मुफ्त स्कैनिंग मुफ्त E C G मुफ्त ब्लून टैस्ट मुफ्त दवाई दी गई। आर्य समाज के इस शुभ कार्य के लिए जहां धर्म देवी आर्य औषधालय के अधिकारीयों की प्रशंसा की जा रही है वहा सब डाक्टरों का बहुत आभार प्रकट किया जा रहा है।

इस कैम्प को सफल बनाने में श्रीमती विनोद गांधी, श्री सन्त कुमार बान्दा श्री जनकराज भक्त, श्री कंवलजीत भक्त श्री सन्दीप भक्त एवं नवयुवक सभा श्रीमती बेअन्ती देवी श्रीमती प्रवीण बाला ने बहुत परिश्रम किया नगर की कई संस्थाओं के अधिकारियों ने कैम्प को देखकर भरपूर प्रशंसा की।

—[illegible]

[illegible] सत्संग

आर्य सद्भावना सत्संग समिति अमृतसर तथा आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर द्वारा सम्मिलित रूप से अमृतसर में एक पारिवारिक सत्संग 4 मई को सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता सुधा आर्य श्री अरविन्द जी घई (जालन्धर) ने की। मुख्यातिथि श्री श्रीमती कमलकान्ता जी (जालन्धर) भजन प्रस्तुत किये श्रीमती रश्मि जी घई (जालन्धर) ने, मंच संचालन किया आर्य सद्भावना सत्संग समिति अमृतसर की संचालिका नैः ब्र: (डॉ) माधुरी सोमवती ने तथा अन्यों ने सहयोग दिया श्रीमती प्रभा सेन, श्रीमती कमलेश जी चोपड़ा, श्रीमती प्रमिला सेन एवं श्रीमती नीलम आर्या ने (समिति के महिला मंच की ओर से तथा श्री प्रवीण जी आर्य, श्री इन्दुपाल जी 'भिसु' प्रिंसीपल विनोद पाल जी 'भिसु' (समिति के पुरुष मच की ओर से) सहयोग दिया। सारे कार्यक्रम का आयोजन किया माता सुधा जी खन्ना एव परिवार ने। कार्यक्रम मे 25-30 व्यक्ति जालन्धर से भी पधारे। कुल मिलाकर लगभग 200-250 सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर श्रीमती रश्मि जी घई से भजनों का आनन्द एक घण्टे से भी अधिक समय तक उठाया। सभी आर्य भक्त रश्मि जी के सुमधुर भजनो के आनन्द से ओ३म् रस में सराबोर थे। समय पूर्ण हो जाने पर भी लोग शान्ति पूर्वक बैठ कर भजनों का आनन्द लेते रहे। नीता जी के विवाह की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में विशेष भजनों व आशीष का कार्यक्रम किया यह दम्पति पुष्प वर्षा से पूर्णतः आच्छादित हो गए पद्मोपसन्ध बहन उमा जी (गोकुल नगर) ने मधुर वाणी द्वारा ओंकार स्तोत्र का पाठ सभी आर्य जनों को कराया तथा अन्त में ओ३म् संकीर्तन कराया प्रसाद वितरण के समय एक भजन माता जगदीश रानी (महर्षि दयानन्द धाम) ने भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अन्त में रश्मि जी की श्री अरविन्द जी घई, माता कमल कान्ता जी आनन्द को जहां सुन्दर ट्राफियां महर्षि दयानन्द के चित्र की समर्पित की गई वहीं समिति के आर्थिक व अन्य सहयोग हेतु श्रीमती कमलेश जी सेठी (जालन्धर) श्रीमती सुदर्शन जी गुप्ता (जालन्धर) श्री रवि जी शर्मा (मन्त्री, आर्य समाज मन्दिर, माडल टाऊन जालन्धर तथा श्रीमती प्रवीण जी अरोड़ा (अमृतसर) को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

यहा विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि रश्मि घई जी कार्यक्रम हेतु कभी भी एक भी पैसा नहीं लेती हैं। पूर्ण रूप से सच्चे अर्थों में आर्य समाज की सेवा कर रही हैं। यदि यह चाहे तो अपनी सुन्दर वाणी से लाखो रुपए कमा सकती हैं। ईश्वर इन्हें सदा अच्छा स्वास्थ्य दे, यही हमारी कामना है।

—माधुरी सोमवती

अमृतसर में चरित्र-निर्माण शिविर

महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर में आर्य युवक परिषद की ओर से चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन 5-4-2002 रविवार को किया गया। शिविर का शुभारम्भ बृहद् यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के यजमान पद को क्रमशः रोहित, गौरव, भरत, एवं मलिका ने सुशोभित किया। यज्ञ के पश्चात् सुन्दर भजनों का कार्यक्रम हुआ जिसमें शिवलता जी, विजय आर्या जी एवं ब्र. ओम प्रकाश आर्य इत्यादि ने मधुर भजनों से सबको आनन्दित किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ओम प्रकाश आर्य (प्रधान पंजाब प्रान्तीय आर्य युवक परिषद) ने की। प्रो. कुलदीप आर्य ने चरित्र की महत्ता बतलाते हुए कहा कि चरित्र का आधार शरीर है। क्योंकि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।" अन्त में यज्ञमानों को आशीर्वाद दिया गया।

—ब्र० ओम प्रकाश

आर्य समाज संगरूर का चुनाव

दिनांक 5 मई 2002 रविवार को आर्य समाज, संगरूर के, श्री रत्न लाल मांडला की अध्यक्षता में हुए वार्षिक चुनाव (वर्ष 2002-03) में सर्वसम्मति से निर्वाचित प्रधान एवं अन्तरंग सभा गठन अधिकृत श्री वीरेन्द्र कुमार जी द्वारा अन्तरंग सभा निम्न सूचि अनुसार घोषित की गई:

पदाधिकारी:—संरक्षक:—श्री वेदपाल टुटेजा, श्री मेहर चन्द, प्रधान:—श्री वीरेन्द्र कुमार, उपप्रधान:—श्री पुरुषोत्तम दास, मन्त्री-पुस्तकालयाध्यक्ष:—श्री राजेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष:—श्री शिवराम महाजन, उपमन्त्री:—श्री रत्न लाल मांडला, यज्ञमन्त्री:—मा देवराज, प्रचारमन्त्री:—श्री रामशरण आर्य एवं महाशय महेश कुमार जी, मैनेजर:—लाजपत राय आर्य कन्या विद्यालय, संगरूर, श्री जगनाथ गोयल, मैनेजर:—सूर्य नारायण अग्रवाल, मैमोरियल दयानन्द पब्लिक स्कूल, संगरूर, श्री सतपाल बांसल।

अन्तरंग सदस्य:—श्री रामपाल भल्ला, श्री खण्डु राम, श्री वेद प्रकाश सिंगला, श्री महाशय महेश कुमार, श्री विष्णु दत्त।

—राजेन्द्र आर्य

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा स्वस्ति प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ । दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

दूरभाष : 292926

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

(आर्य प्रतिनिधि) सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 8 सृष्टि संवत 1960853102, 9 जून, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

दिव्यता के सूत्र

□ आचार्य भगवान देव जी 'चैतन्य' 81/एफ-4 सुन्दर नगर (हि. प्र.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा है और वेद तथ्य को प्रमाणित करके दिखा दिया कि वेद हमें तृण से लेकर परमात्मा तक का सत्य और निर्भ्रान्त दिशाबोध देता है। इसी लिए उन्होंने कहा कि हम यदि जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें वेद का पठन–पाठन तथा श्रवण और प्रवचन करना चाहिए। वेद का प्रत्येक मन्त्र अपने आप में अद्भुत और अनुपम है क्योंकि वह उस अद्भुत और अनुपम परमात्मा द्वारा प्रदत है यहां पर हम ऋग्वेद का प्रसंग प्रस्तुत करके चार महत्वपूर्ण प्रश्नों और उनके उत्तरों का वर्णन करना चाहते है। महर्षि दयानन्द जी अपने भाष्य में लिखते हैं कि जिज्ञासुओं को विद्वानों से ऐसे ही प्रश्न पूछ कर अपने ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए।

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः
पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य
रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम॥
(ऋ. 1-164-34)

यहां पर चार प्रश्न उठाए गए हैं–1. मैं पूछता हूं कि इस पृथिवि का पहला सिरा क्या है? अर्थात अन्तिम उदेश्य क्या है? 2. मैं पूछता हूं कि ब्रह्माण्ड की नाभि केन्द्र, बन्धन–स्थल क्या है? क्या द्युलोक ही वह नाभि है, सारा कार्यकारण भाव क्या द्युलोक में ही विश्रान्त है? 3. मैं पूछता हूं कि तेजस्वी, निरन्तर मार्ग को व्याप्त करने वाले पुरुष की शक्ति किसमें है? 4. मैं पूछता हूं वाणी के परम आकाश को?

वेद में ही इन लोक परलोक का ज्ञान देने वाले प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा गया है कि–

इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या
अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो
ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम॥ (ऋ. 1-164-35)

इस मन्त्र में क्रमशः इन महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं कि (1) जिस वेदि पर हम बैठकर विचार कर रहे हैं यह वेदी ही पृथिवी पर अन्तिम सिरा है......(2) यह यज्ञ ही सारे ब्रह्माण्ड की नाभि है......(3) यह सोम अर्थात वीर्य ही तेजस्वी, अनथक पुरुष की शक्ति है.......(4) यह ब्रह्म ही वाणी का परम आकाश है......।

अब इन उत्तरों पर थोड़ा सा विस्तार से चिन्तन करते हैं ताकि परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त करके हम अपने जीवन को सफल बना सकें। प्रथम बात कही गई है कि–'इयं वेदिः पृथिव्याः परः अन्तः' अर्थात जिस वेदि पर हम बैठकर विचार कर रहे हैं यह वेदी ही पृथिवी का अन्तिम सिरा है। यहां पर एक तो इस वैज्ञानिक तथ्य को बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णित किया गया है कि यदि हम आज जिस स्थान पर हैं यहां से किसी भी दिशा को चलना आरंभ करें तो अन्ततः हम इसी स्थान पर पंहुच जाएँगे जहां से हमने चलना आरंभ किया था क्योंकि पृथिवी गोल है। इसके साथ–साथ यह बात बता दी गई कि अपने जीवन को यज्ञमय बना देना ही पृथिवी पर आने का हमारा अन्तिम उद्देश्य है। यहीं पर हम अपने आपको देवत्व के साथ जोड़कर देवता बना सकते हैं। देवता बनना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए इसीलिए इस धरती को 'देवयजनि' भी कहा गया है। देवों के यजन का स्थान है। हम स्वर्ग नरक की कल्पना लोक में न खो जाएं बल्कि यहीं जहां पर हम हैं यहीं पर पवित्रता के साथ जुड़कर अपने लिए स्वर्ग का निर्माण कर सकते हैं। स्वर्ग नरक कोई स्थान विशेष न होकर स्थिति विशेष है और स्वर्ग मरने के बाद ही नहीं मिलता है बल्कि देवत्व के साथ जुड़कर हमें जीते जी ही स्वर्गीय बनने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए अपने जीवन को यज्ञमय बनाने की जरूरत है क्योंकि परोपकारी व्यक्ति को ही परमात्मा सब प्रकार के सुखों से पुरस्कृत करता है। इस यज्ञ रूपी नाव पर आरूढ़ होकर ही इस लोक–परलोक को सुखी बना सकते हैं और कोई उपाय नहीं है। वेद में अन्यत्र कहा गया है–

पृथक् प्रायन्प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा। न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः॥ (ऋ. 10-44-6)

अर्थात प्रथम कोटि के विस्तृत ज्ञानी दिव्य गुणों का आवाहन करने वाले अलग मार्ग पर जाते हैं। बड़े दुस्तर श्रवणीय यशों को प्राप्त कर लेते हैं। किन्तु जो इस यज्ञ रूपी नाव पर चढ़ने में समर्थ नहीं होते वे कुत्सित, शास्त्र–विरुद्ध कर्म करने वाले यहीं इसी लोक में (एषणाओं के दलदल में) नीचे–नीचे ही धंसते जाते हैं। इस मन्त्र में यज्ञमय जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों के बारे में बताया गया है कि उनका परोपकार का अलग ही मार्ग होता है जिस पर चलते हुए वे अनेक प्रकार के कठिन कार्य भी सफलता पूर्वक करके यश के भागी बनते हैं। ऐसा वे तभी कर पाते हैं क्योंकि वे यज्ञरूपी नाव पर दृढ़ता पूर्वक आरूढ़ हो जाते हैं। दूसरे वे व्यक्ति होते हैं जिनका जीवन यज्ञमय नहीं होता है। इस यज्ञ रूपी नाव पर आरूढ़ न हो सकने वाले ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनका जीवन यज्ञमय नहीं होता है। इस यज्ञरूपी नाव पर आरूढ़ न हो सकने वाले ऐसे व्यक्ति सांसारिकता के ही दलदल में अधिक से और अधिक फंसते चले जाते हैं। इसीलिए हम देवयजन करके अपने जीवन को सफल बनाएं क्योंकि इस पृथिवी पर आने का यही लक्ष्य है कि अपने लिए देवत्व का सृजन करके लोक-परलोक को संवार सकें।

दूसरे प्रश्न का उत्तर है–'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात यह यज्ञ सारे संसार की नाभि है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस युग के महानतम् क्रान्तद्रष्टा हुए हैं क्योंकि उन्होंने धर्म और आध्यात्म की सही–सही व्याख्या करके उसे संकुचितता की कारा से बाहर निकालने का महान कार्य किया है। यज्ञ के बारे में उनके शब्द देखिए–'अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त जो जो शिल्प व्यवहार और पदार्थ विज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिए किया जाता है उसको यज्ञ कहते हैं।' मैं समझता हूं कि श्री कृष्ण महाराज जी ने गीता में जिस प्रकार से यज्ञ की विस्तृत व्याख्या करके सारे संसार को ही यज्ञमयी बताया है ठीक इसी प्रकार महर्षि जी के इस छोटे से वाक्य के अन्दर यज्ञ का इतना अधिक विस्तृत वर्णन समा गया है कि इसकी जितनी चाहे व्याख्या करते चले जाएं। अग्निहोत्र से प्रारंभ करके राजनिति और औद्यौगिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में होने वाले समस्त कार्यकलापों को उन्होंने यज्ञ के अन्तर्गत ही समाहित कर दिया है मगर शर्त यह है कि वे सब कृत्य जगत् के उपकार की भावना से होने चाहिएं।

अग्निहोत्र पर्यावरण को शुद्ध करने का एक बहुत ही उत्तम तथा वैज्ञानिक ढंग है। हवन में डाले गए समस्त पदार्थ नष्ट नहीं होते हैं बल्कि अग्नि का स्पर्श पाकर वातावरण में फैल जाते हैं। यही नहीं बल्कि अग्नि के स्पर्श से उस पदार्थ की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। इसीलिए महर्षि जी ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन अग्निहोत्र करने का विधान किया है। अग्निहोत्र से मात्र इतना ही लाभ नहीं होता है बल्कि इससे व्यक्ति के हाथों परोपकार का अद्भुत कार्य होता है तथा उसका लोक–परलोक संवर जाता है। यज्ञ का बहुत ही विस्तृत क्षेत्र है। पाणिनि जी ने इसका विस्तार करते हुए इसे संगतिकरण देवपूजा और दान के साथ जोड़ा है। मानव मात्र में आपसी प्रेम होना चाहिए, बड़ों का आदर किया जाना चाहिए और पुण्य कार्य के लिए अपना सर्वस्य समर्पित कर देने की भावना होनी चाहिए। यह समर्पण की भावना प्रत्येक क्षेत्र में लागु होती है। जहां व्यक्ति का अपना कोई स्वार्थ होता है वहां यह यज्ञ की भावना नहीं होती है और यही प्रत्येक प्रकार की अव्यवस्था का कारण बनता है। (क्रमशः)

ब्रह्माण्ड एवं जीवन के उद्भव विषयक कतिपय अनुत्तरित प्रश्न और दयानन्द साहित्य में उनके समाधान

□ ले० मनमोहन कुमार आर्य एवं सुरेश कुमार त्यागी

पुणे मे आयोजित विगत भारतीय विज्ञान कांग्रेस में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ० रघुनाथ मशेलकर ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे युवा वैज्ञानिको के समक्ष कई रोमाचक वैज्ञानिक सवाल रखते हुए कहा कि क्या अगली सहस्त्राब्दी मे भारतीय वैज्ञानिक इन प्रश्नों का उत्तर देंगे ? **प्रश्न हैं–'ब्रह्माण्ड का जन्म कैसे हुआ? क्या बाह्य अन्तरिक्ष में जीवन हैं? क्या जीवन के उद्गम के रहस्य को खोजा जा सकेगा? मस्तिष्क की कार्य प्रणाली के रहस्य कि वह कैसे सोचता है और कैसे फैसले करता है क्या खोजे जा सकेंगे?'** डा० मशेलकर द्वारा युवा भारतीय वैज्ञानिको को दी गई इस चुनौती के विषय में हम यह निवेदन करेंगे कि संसार की सर्वप्रथम पुस्तक 'वेद' एवं इतर वैदिक साहित्य में इन सभी रहस्यों की विस्तार से जानकारी उपलब्ध है। वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद) ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि की आदि में सृष्टि के रचयिता, तीन अनादि सत्ताओं में से एक एवं चेतन तत्व ईश्वर ने अर्थ सहित प्रथम चार पुरुषों अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा को दिया था। समस्या मुख्यत: यह है कि हमारे वैज्ञानिक केवल अंग्रेजी जानते हैं तथा सस्कृत, और वह भी वेद-भाषा, का उनका ज्ञान प्राय: शून्य है। इन रहस्यों को जानने के लिए निश्चय ही अध्येता को वेदों की शरण में जाना होगा।

महाभारत के पश्चात् वेदों का पठन-पाठन अवरूद्ध हो गया था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तर काल में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों का उद्धार किया एवं वेदों के पोषक अनेक ग्रन्थ लिखें। 'सत्यार्थ प्रकाश' उनका एक विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसका आठवां अध्याय सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय विषय की व्याख्या है। डा. मशेलकर के सृष्टि उत्पत्ति संबंधी सभी प्रश्नों को उपस्थित कर, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उनके समाधान इस अध्याय में व अपने ग्रन्थों में अन्यत्र भी प्रस्तुत किए हैं।

सबसे पहले 'ब्रह्माण्ड का जन्म कैसे हुआ', प्रश्न को लेते हैं। इस प्रश्न का उत्तर जानने से पूर्व हम स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार सृष्टि में विद्यमान अनादि व अनुत्पन्न पदार्थों व सृष्टि रचना से पूर्व की स्थिति का वर्णन करेंगे जिससे स्वामी जी के विचारों को समझने में सरलता हो। स्वामी दयानन्द सरस्वती 'ईश्वर', 'जीव' व 'प्रकृति' यह तीन सत्तायें स्वीकार करते हैं जो अनादि व नित्य हैं। ईश्वर व जीव अति सूक्ष्म एवं चेतन सत्तायें है और प्रकृति भी सूक्ष्म होने के साथ जगत का उपादान कारण, भौतिक एवं जड़ है। अनादि व नित्य का तात्पर्य है कि सृष्टि में यह तीन पदार्थ सदा से हैं। यह कभी न तो उत्पन्न हुए हैं और न कभी इनका अन्त होगा। ईश्वर को स्वामी जी सबसे सूक्ष्म, चेतन, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, निराकार एवं सर्वज्ञ मानते हैं। ईश्वर के विषय में अपने लघु ग्रन्थ 'स्वमन्तव्या-मन्तव्य प्रकाश' में वह लिखते हैं कि ईश्वर कि जिसको ब्रह्म परमात्मा आदि नामों से पुकारते हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त हैं, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य, न्याय से फलदाता आदि लक्षण युक्त परमेश्वर है, उसी को मानता हूं। ईश्वर अपने निराकार एवं सर्वव्यापक स्वरूप से ही मनुष्यों की तरह बिना शरीर अथवा जन्म धारण किए बिना ही अपनी अनन्त सामर्थ्य से सृष्टि की रचना आदि सभी कार्य करता है।

सृष्टि की दूसरी सत्ता 'जीव' अथवा जीवात्मा का उल्लेख करते हुए उक्त पुस्तक में ही स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि 'जो इच्छा, द्वेष, सुख, दु:ख और ज्ञानादि गुणयुक्त अल्पज्ञ व नित्य है, उसी को जीव मानता हूं।' एक अन्य स्थान पर जीवन के लक्षणों का वर्णन करते हुए स्वामी जी ने उसे एकदेशी, अनादि, नित्य, कर्म करने में स्वतन्त्र, फल भोगने में परतन्त्र, मृत्यु के पश्चात् कर्मानुसार जन्म (पुनर्जन्म) अथवा मोक्ष को प्राप्त करने वाला, संख्या में अनन्त व ससीम माना है। यह जीवात्मा जन्म के समय शरीर से संयुक्त होकर उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त, अपने ज्ञान व सामर्थ्य के अनुसार कर्म करने में सक्षम होता है। शरीर से पृथक अवस्था में इसमें सामर्थ्य का अभाव रहता है। मोक्ष की अवस्था में ही बिना मानव शरीर के यह इच्छित सुखोपभोग कर सकता है।

ब्रह्माण्ड में तीसरी स्वतन्त्र सत्ता है–'प्रकृति।' भौतिक व जड़ होने के कारण यह ज्ञानादि गुणों से सर्वथा रहित है। कार्य अवस्था में आने से पूर्व, कारण अवस्था में यह अत्यन्त सूक्ष्म होती है। इसे समझाने के लिए हम कह सकते हैं कि वैज्ञानिकों ने भौतिक जगत को ही नाना तत्वों (elements) में विभाजित कर रखा है और स्वामी जी के मतानुसार वही कार्य-प्रकृति है। इन तत्वों का सबसे सूक्ष्म कण परमाणु (Atom) कहलाता है। परमाणु में इलेक्ट्रान, प्रोट्रोन व न्यूट्रोन आदि कणों के अस्तित्व में आने से भी पूर्व की अवस्था, कारण-प्रकृति है। कारण-प्रकृति जड़ सत्ता की वह सूक्ष्म अवस्था है जो पूर्णतया विकार अथवा विकृतिरहित है एवं जिसमें निर्माण अथवा रचना का आरम्भ न हुआ हो।

'सत्यार्थ-प्रकाश' में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सांख्य दर्शन के आधार पर सत्व, रज: व तम गुणों से युक्त जड़ संघात को प्रकृति माना है। प्रकृति के सूक्ष्म 24 विकार क्रमश: महतत्व, बुद्धि, अहंकार, 5 तन्मात्रायें, 10 इन्द्रियां, मन, पृथिवी, अग्नि, वायु, जल व आकाश हैं। इनमें से प्रकृति अविकारणी, और महतत्व, अहंकार, पांच सूक्ष्म भूत, इन्द्रियां, मन तथा स्थूलभूत प्रकृति का कार्य है। यहां यह उल्लेखनीय है कि वर्तमान विज्ञान सृष्टि में विद्यमान जिन तत्वों को स्वीकार करता है वह केवल पृथिवी, वायु एवं जल के अन्तर्गत आ जाते हैं। अग्नि व आकाश को भी वह स्वीकार करता है। अन्य तत्व-महतत्व, बुद्धि, अहंकार, इन्द्रियों एवं मन आदि से वह अभी तक पूर्णत: परिचित नहीं हैं।

लेख के आरम्भ में वेद को सृष्टि उत्पत्ति के साथ ही आविर्भूत ईश्वर प्रदत्त ज्ञान बताया गया है। अत: सृष्टि रचना का कोई भी वर्णन केवल ईश्वरीय-अपौरूषेय ज्ञान से ही प्रमाणित हो सकता है क्योंकि ईश्वर सृष्टि रचना से पूर्व सक्रिय अवस्था में विद्यमान था जबकि मानव व वैज्ञानिकों की उत्पत्ति सृष्टि रचना के बाद होने से उनके कथन एवं प्रमाण केवल अनुमान श्रेणी के होंगे। मनुष्यों व वैज्ञानिकों द्वारा इस संबंध में अनुसंधानों से प्राप्त ज्ञान व तथ्य वेदानुकूल तथा बुद्धिसंगत होने पर ही वह स्वीकार्य हो सकते हैं। सृष्टि रचना के संबंध में ऋग्वेद के मण्डल 10 सूक्त 129 का मन्त्र संख्या 3 उद्धृत है:

तम आसीत्तमसा गूढ़मग्रे प्रकेतं सलिलं सर्वमइदम्।

तुच्छयेनम्विपिहितं यदासीत्तप-सस्तन्महिना जायतैकम्॥

इस मंत्र का अर्थ है–**'यह सब जगत सृष्टि के पहिले अंधकार से आवृत, रात्रि रूप में जानने के अयोग्य, आकाशरूप सब जगत तथा 'तुच्छ' अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सामने एकदेशी आच्छादित था,'** पश्चात् परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारणरूप प्रकृति से कार्यरूप प्रकृति (सृष्टि-ब्रह्माण्ड) बना दिया। यहां रेखांकित पंक्तियों में सृष्टि रचना के पूर्व की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

सृष्टि उत्पत्ति के संबंध मे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने तीन मंत्रों को अपनी 'पंचमहायज्ञविधि पुस्तक में 'अघमर्षण मन्त्र' नाम से उद्धृत कर व्याख्या की है।

(शेष पृष्ठ 5 पर

गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी समारोह

गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी समारोह एक ऐसा समारोह था जिस पर जितना भी लिखा जाए उतना ही कम है। हम ने प्रयास किया कि इस समारोह का पूरा विवरण आर्य मर्यादा में दिया जाए। परन्तु लिखते-लिखते भी कुछ न कुछ रह ही जाता है। वास्तव में यह समारोह अपनी तरह का एक अनूठा समारोह था। जिसकी उपस्थिति का भी ठीक से अनुमान लगाना कठिन है। इस समारोह में आने वाले आर्य बन्धुओं व बहनों का कोई विशेष रिकार्ड नहीं बनाया जा सका । पंजीकरण बड़ी कठिनाई से 20 या 25 प्रतिशत लोगों का हो सका होगा। केवल 24 अप्रैल सायं काल तक और 25 अप्रैल को 12 बजे तक पंजीकरण हुआ परन्तु जो लोग 25 अप्रैल को रात्रि 12 बजे तक आते रहे। 26 अप्रैल को बहुत से लोग आए और 27 अप्रैल को प्रातः भी बहुत से लोग इस समारोह में हरिद्वार पहुंचे थे। जो महानुभाव इस समारोह में पधारे और उन्हें जहां ठहरने के लिए स्थान दिया गया वह वहां से दिन में एक दो बार ही पुनः गुरुकुल आए। जितने लोग गुरुकुल में ठहरे हुए थे वह मुख्य पण्डाल में सभी नहीं बैठे, जितने लोग पण्डाल में बैठकर समारोह की कार्यवाही में भाग ले रहे थे उतने ही मेन सड़क व मुख्य द्वार से लेकर यज्ञशाला, पुस्तकों की दुकानों के दोनों पण्डालों में घूमते दिखाई देते थे।

बहुत से परिचित लोग हमें वहां मिले सभी का वर्णन करना कठिन है परन्तु हमने प्रयास किया है कि पंजाब से हरिद्वार पहुंचे महानुभावों का वर्णन तो अवश्य किया जाए। गत अंकों में आर्य समाज नवांकोट अमृतसर का नाम रह गया था हमने भूल सुधार के रूप में गत अंक में उसे दिया था। आज हमारी सभा के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी सभा कार्यालय में आए तो उन्होंने याद दिलाया कि हम भी तो हरिद्वार गये थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री पं. हरवंस लाल जी शर्मा कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी ने आदेश दिया था कि सभा के सभी उपदेशक, भजनोपदेशक व सभी सभा कर्मचारी 25 से 28 अप्रैल तक होने वाले शताब्दी समारोह में हरिद्वार अवश्य जाएं। हमने शताब्दी समारोह के प्रबन्धकों से इस सम्बन्ध में बातचीत की कि हमारी सभा के सभी उपदेशक हरिद्वार आ रहे हैं क्या आप उन्हें मंच से अपने विचार रखने का समय देंगे ? हमें उत्तर मिला कि समारोह का कार्यक्रम छप चुका है वक्ता महानुभावों की स्वीकृतियां आ चुकी हैं हम अपने कार्यक्रम में कोई परिवर्तन नहीं करेंगे। यह जानकर कि सभा के उपदेशकों को जब वहां समय ही नहीं मिलेगा तो उनका वहां जाना अनिवार्य करने की क्या आवश्यकता है ? हमने इस विषय में सभा उपदेशकों को सारी बात स्पष्ट कर दी थी परन्तु फिर भी सभा के सुयोग्य उपदेशक श्री विजय कुमार जी शास्त्री परिवार सहित अमृतसर से हरिद्वार गये। भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी अपने साजो सामान के साथ हरिद्वार गये। श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली भी हरिद्वार पहुंची। मुख्य पण्डाल में न सही विद्यालय में अन्य स्थानों पर और पूर्णानन्द आश्रम तथा प्रेम आश्रम में जहां बहुत बड़ी संख्या में लोग ठहरे हुए थे वहां वेद प्रचार करने में सभा के उपदेशक पीछे नहीं रहे। पूर्णानन्द आश्रम में एक दिन वेद प्रचार रात्रि 12 बजे तक चलता रहा। आर्य उपदेशक ने तो वेद प्रचार ही करना है। जहां भी उसे अवसर मिलेगा वह वेद प्रचार करेगा।

आर्य समाज के पुराने उपदेशक तो पहले किसी स्थान पर स्वयं ही मुनादी किया करते थे फिर रात्रि में स्वयं ही उपदेश किया करते थे। आर्य समाज उन्हीं लग्नशील उपदेशकों व भजनोपदेशकों के कारण ही जन-जन तक पहुंचा है। निस्वार्थ भाव से बहुत से लोग आर्य समाज के मन्तव्यों के प्रचार व प्रसार में लगे हुए थे। वह ऐसे उपदेशक थे जो न किसी सभा से जुड़े हुए थे न ही किसी से कोई वेतन लेते थे जो प्रचार करते समय लोग प्रसन्नता से उन्हें देते वही उनके लिए काफी था। आज कहां हैं वह उपदेशक व भजनोपदेशक जो गांव-गांव, नगर-नगर व मुहल्ला-मुहल्ला में पहुंच कर आर्य समाज का प्रचार किया करते थे?

आज फिर आवश्यकता है आर्य समाज को ऐसे उपदेशकों व भजनोपदेशकों की जो पूर्व की भांति आर्य समाज के सिद्धान्तों व मन्तव्यों का जन-जन में प्रचार व प्रसार कर सकें।

—धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

क्या युद्ध के बादल छंट गए ?

कहा जा रहा है कि जो युद्ध के बादल गर्ज-गर्ज कर झूम-झूम कर भारत और पाकिस्तान के आकाश में मण्डरा रहे थे वह छंट गए हैं ? बादल आपस में टकराए, गड़-गड़ाहट पैदा हुई चारों ओर बिजली कौन्धी, चमक पैदा हुई लगा कि जैसे बादल फटने वाला है परन्तु पश्चिम की तरफ से एक हवा का झोका आया, और धीरे-धीरे बादल छंटने आरम्भ हो गए। यह पूरी तरह छंट पाएंगे या नहीं यह तो समय ही बताएगा, क्योंकि कई बार जब बादल छंटने लगते हैं फिर कोई ऐसी हवा पूर्व या पश्चिम से आ जाती है कि वह बादलों को पुनः घेर कर ले आती है और वर्षा आरम्भ हो जाती है। कई बार यह वर्षा लाभकारी भी होती है परन्तु जब यह भयंकर रूप धारण कर ले तो बहुत बड़ा तूफान भी बन जाती है और उसमें सभी कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।

युद्ध हर अवस्था में दुःखदायी है परन्तु कई बार यह अनिवार्य हो जाता है। इस समय भी यह सही स्थिति बनी हुई है। पाकिस्तान किसी भी तरह से आतंकवादियों की घुसपैठ बन्द करने को तैयार नहीं, उनके ट्रेनिंग कैम्प जो उसके देश मे चल रहे हैं उन्हें पाकिस्तान सरकार पूरा-पूरा सहयोग दे रही है। यहां तक कहा जाता है कि उन्हें ट्रेनिंग भी पाकिस्तानी सेना के जवान ही देते हैं। पाकिस्तान द्वारा बहुत बड़ी संख्या में आतंकवादी तैयार किए जा रहे हैं। यह आतंकवादी किसी न किसी प्रकार सीमा पार कर जाते हैं पाकिस्तानी सैनिक उन्हें मौका देख कर भारत-पाक सीमा पार करवा देते हैं क्योंकि भारत और पाक की सीमा कई स्थानों पर ऐसी बनी हुई है जहां से घुसपैठ रोकना कठिन है। इस प्रकार यह आतंकवादी जब भारत की सीमा में प्रवेश कर जाते हैं तो कई बार उनका पकड़ना कठिन हो जाता है क्योंकि कहीं वह कश्मीरी मुसलमानों के वेश में होते हैं, कहीं वह मिलेट्री की वर्दी पहन लेते हैं। कई बार तो वह जम्मू-काश्मीर से निकल कर देश के दूसरे हिस्सों में भी चले जाते हैं। ऐसा निरन्तर कई वर्षों से हो रहा है परन्तु अब अति हो चुकी है भारत सरकार की सहनशीलता समाप्त हो रही है। हर रोज-रोज की इस खच खच से तो अच्छा है कि पाकिस्तान को इसका मुंह तोड़ उत्तर दिया जाए। भारत की सेना सीमा पर जुटी हुई है। भारत के नौजवान कुछ करने को मचल रहे हैं परन्तु उन्हें कुछ करने की इजाजत नहीं।

इसलिए युद्ध के बादल अभी पूरी तरह छंटे नहीं हैं कल को क्या होगा यह भविष्य ही बताएगा। —धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

आर्य महानुभावों से निवेदन

मुझे कई महानुभावों ने मौखिक रूप से अपने सुझाव दिये हैं कि अब आर्य मर्यादा पुनः सुचारू रूप से चल पड़ा है अब इसकी सभी विघ्न बाधाएं दूर हो गई हैं। अब जहां इसका प्रकाशन नियमित हो गया है वहां इसमें कुछ सुधार भी कर दिया जाए। कुछ महानुभाव अपने सुझाव देते हैं कि, इसमें बच्चों के लिए भी कुछ मैटर छपे, महिलाओं के लिए भी कुछ मैटर छपे इसका कागज भी बहुत बढ़िया हो, इसमें चित्र भी प्रकाशित किए जाएं। रंगीन अंक निकाले जाएं। हम सब कुछ करने का प्रयास करेंगे परन्तु यह करने के लिए हमें सभी आर्य महानुभावों का सहयोग चाहिए। जैसा मैटर आप आर्य मर्यादा में छपवाना चाहते हैं वह हमे तैयार करवा कर भिजवाएं। लेख भिजवाएं, कविताएं भिजवाएं ताकि हम उन्हें प्रकाशित कर सकें। मेरी सभी लेखक महानुभावों से भी प्रार्थना है वह अपने अमूल्य लेख हमें प्रकाशित करने के लिए भेजें। हम अपने सभी लेखकों को आर्य मर्यादा साप्ताहिक निःशुल्क भेजेंगे।

मेरी आर्य महानुभावों से प्रार्थना है कि वह इसके स्वयं भी ग्राहक बनें, अपने साथियों को भी ग्राहक बनवाएं तथा दूसरे लोगों को भी आर्य मर्यादा का ग्राहक बनने की प्रेरणा दें। धन के बिना भी कोई कार्य नहीं चल सकता। छपाई व कागज का खर्चा बढ़ा हुआ है। अच्छा कागज लगाने पर और बढ़ जाएगा। आप आर्य मर्यादा के लिए विज्ञापन भिजवाएं, स्वयं भी विज्ञापन भेजें। सबसे कम वार्षिक शुल्क व आजीवन शुल्क आर्य मर्यादा का है। सबसे कम विज्ञापन शुल्क भी इस समय आर्य मर्यादा का है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी इस पत्रिका से कोई मुनाफा कमाना नहीं चाहते केवल इतना चाहते हैं कि इसका खर्च जो इसकी छपाई आदि पर आता है वह आर्य महानुभावों से आता रहे। इस समय तो यह पत्रिका हजारों रूपये के घाटे पर चल रही है। गत दिनों में बहुत खर्च होता रहा। इस समय केवल पोस्ट का खर्चा घटा है शेष खर्च तो ज्यों का त्यों है।

इस लिए सभी आर्य बन्धु व बहनें हमें आर्य मर्यादा को उन्नत करने में अपना पूरा-पूरा सहयोग दें। इसके लिए हम सभी आर्य बन्धुओं के आभारी होंगे।

—धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

सरल-सुखी जीवन

□ ले० भजनेन, बी-2, 92/7 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर-146001

(गतांक से आगे)

4-धर्म की अपेक्षा और परिभाषा–जिस प्रकार किसी बड़ी नदी को पार करने में सुविधा तभी होती है, जब उस पर पुल या वहां नौका सुलभ हो। जैसे लम्बी यात्रा यान के माध्यम से ही सुकर और सुखकर होती है। उसी प्रकार जीवन यात्रा या संसार रूपी विशाल नदी को सरलता से पार करने के लिए धर्म पुल, नौका या यान की तरह सहायक होता है। प्रकाश जैसे अन्धकार को दूर करके स्थान और वस्तु को स्पष्ट दर्शा कर व्यवहार में सरलता ला देता है। वैसे ही धर्म भी व्यवहार तथा जीवन की उलझनों को सुलझा कर इनको सरल एवं सुखी बनाता है।

चिकित्सा द्वारा जैसे उस-उस रोग, दुख, कष्ट को जान कर उसके कारण को ढूंढते हैं और फिर उसको दूर करते हैं। तभी हम रोग आदि से छुटकारा प्राप्त कर के सुखी एवं स्वस्थ रहते हैं। ऐसे ही धर्म रूपी चिकित्सा द्वारा हम जीवन के सामाजिक, पारिवारिक, वैयक्तिक रोगो, दुखों, क्लेशो, पारस्परिक मनमुटावों, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष और परेशानियो को दूर करने मे समर्थ होते हैं। यह ठीक है कि रोगी, उसकी प्रकृति, स्वभाव, रोग और उसके कारण, प्रभाव, शक्ति परिणाम के भेद से और कई बार देश-काल के अन्तर से चिकित्सा में सामान्य भेद आ जाना स्वाभाविक ... वैसे ही कहीं धर्म के अंग रूपी ... संयम, स्नेह या सत्य ... है, तो कहीं ... धैर्यवृत्ति, ... तुलसीदास जी ने कहा है–'परहित सरस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अघाई'। यह गीत भी इसी बात का समर्थन करता है–'वैष्णव जन तो तेने कहिए, पर दुखे उपकार करे कोय'

इस सारे विवेचन का अभिप्राय यही है, कि जीवन और समाज को सुखी बनाने के लिए ही धर्म की अत्यन्त उपयोगिता है। इसी लिए अनेक शास्त्रकारों और सभी धर्म वालों ने धर्म का फल, परिणाम, कार्य-सुख, स्वर्ग ही बताया है और स्वर्ग की कल्पना तथा सत्ता स्वीकार करने वालो ने स्वर्ग का स्वरूप अपनी-अपनी दृष्टि से सुख युक्त ही माना है। अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है, कि संसार और जीवन को सुखी बनाने के लिए धर्म एक अनिवार्य तत्व है और उन्हीं बातों, व्यवहारों का नाम धर्म है, जिनसे समाज सुखी होता है। जैसे कि सभी आपस के प्यार, सद्भाव, सहयोग, ईमानदारी, सच्चाई में सुख समझते हैं। अतः धर्म-जीवन को सच्चा-सुच्चा या अच्छा बनाने का एक पाठ है। धर्म एक जीवन कला, साधना या पद्धति का नाम है, जिससे जीवन सुखी, प्रगतिशील बनता है।

5. धर्म के पर्याय और विविध अर्थ–हो सकता है इस विवेचन से सहमत होते हुए भी कुछ धर्म के स्थान पर नीति, नियम, मर्यादा, व्यवस्था, कानून शब्दों का प्रयोग करना अधिक पसन्द करें, पुनरपि धर्म की उपयोगिता एवं सत्ता का प्रतिषेध नहीं किया जा सकता। साहित्य में धर्म शब्द स्वभाव, नियम, कर्त्तव्य, कर्मकाण्ड, विश्वास और आचरण आदि अनेक अर्थों में आता ... सभी बातों का वर्णन करने ... स्मृति ग्रन्थों को धर्म ... या जाता है। ... –जैसे इनका व्यवहार एक सा ही होता है, किसी के प्रति कोई अन्तर नहीं होता। पर यह एक निश्चित बात है, कि प्राकृतिक व्यवस्थाओं को समझ कर जो जितना इनका पालन करता है, वह उतना ही अधिक उनका लाभ उठा कर सुखी होता है। आज भौतिक विज्ञान ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्राकृतिक पदार्थों के कार्य-कारण सम्बन्ध और स्वभाव को समझ कर उस आधार पर भौतिक आविष्कारों को उपस्थित कर दिया है। दूसरी तरफ हम प्रतिदिन पग-पग पर देखते हैं, जो इन प्राकृतिक पदार्थों (की व्यवस्था) का अन्यथा प्रयोग करता है, उसको दुख ही हाथ लगता है। मनुस्मृति का 8, 15 धर्म एवं हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः श्लोक इसी रहस्य को स्पष्ट करता हुआ प्रतीत होता है। अर्थात् प्राकृतिक धर्म के उल्लंघन करने से वह उल्लंघन करने वाले को मजा चखाता है। जैसे बिजली का करण्ट, पर उस धर्म का पालन करने वाले को वह प्रत्येक प्रकार से लाभ ही पहुंचाता है। अतः इस प्रकार के प्राकृतिक धर्म का कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिए, कि कहीं उस का उल्लंघन 'उल्टे बांस बरेली' वाली बात न कर दे। इन प्राकृतिक पदार्थों में प्रवहमान प्रकृति धर्म सुनिश्चित, अटल, नित्य और सबके प्रति समान ही होता है और इसी लिए कहा जाता है, कि स्वभाव बदलता नहीं।

6. धर्म-नियम, व्यवस्था–यह एक राजधर्म है, कि अपराधी को अपराध के अनुरूप दण्ड दिया जाए। यहां धर्म शब्द नियम, कानून, व्यवस्था के अर्थ में आया है। ये राजनियम नियामक और नियम्य पर निर्भर होते हैं। अपराधी जब पकड़ में आता है, तभी उस पर राजनियम लागू होता है और अनेक बार अपराध प्रमाणित हो जाने पर भी अपनेपन, रिश्वत, पहुंच आदि के कारण अपराधी सर्वथा मुक्त ... जाता है। इसके अनेक प्रसंग ... पर सामने आते रहते ... दैहिक उच्च ... स्थिति, राज्य व्यवस्था को जितना नियमित रूप से पालन किया जाता है, उतना ही सबों को सुख प्राप्त होता है। हर संस्था, विद्यालय और यन्त्र में यह प्रत्यक्ष सिद्ध बात है, कि जितने अंशों में यहां की व्यवस्था का पालन किया जाता है, उतने अंशों में सभी को सुख मिलता है। इस प्रकार के राज धर्म, राज नियम को संविधान, दण्ड तथा दण्डनीति भी कहा जाता है।

7. धर्म-कर्त्तव्य, आचरण–कई बार धर्म शब्द कर्त्तव्य, आचरण, आचार के अर्थ मे प्रयुक्त होता है। जैसे कि माता-पिता का धर्म है, कि बच्चों का पालन करें और बच्चों का यह धर्म है, कि वे माता-पिता, गुरुओं की सेवा करें, आज्ञा का पालन करें। तभी तो महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखा है–'यही माता, पिता का कर्त्तव्य कर्म परम धर्म और कीर्ति का काम है, जो अपनी सन्तानों को तन, मन, धन, विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करना' सत्यार्थ, 2, 27

'राजा का यह धर्म है, कि वह प्रजा का पालन करे' ऐसे वाक्यों में धर्म शब्द का अभिप्राय कर्त्तव्य ही है। पारिवारिक, सामाजिक सम्बन्धों में ये कर्त्तव्य, धर्म व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर होते हैं। जितने अंशों मे जब भी जैसे भी वे पालन करना चाहें कर सकते हैं। ये धर्म न तो प्रकृति धर्म की तरह अटल होते हैं और न ही राजधर्म के सामान पकड़, पहुंच पर आश्रित हैं। वे केवल व्यक्ति की इच्छा पर ही निर्भर है, अर्थात् इनके पालन में व्यक्ति अधिकतर स्वतन्त्र होता है। धर्म के कर्त्तव्य अर्थ को सामने रख कर ही मनुस्मृति (2, 225-237) कार ने माता-पिता और गुरु की सेवा को परम धर्म कहा है। इसी प्रकार पति-पत्नी के आपस के सच्चे-सुच्चेपन, विश्वास को धर्म बताया है।

8. धर्म और कर्मकाण्ड–साहित्य में धर्म शब्द का प्रयोग अन्य अनेक अर्थों में भी हुआ है। जैसे कि कर्मकाण्ड, विश्वास, सिद्धान्त-विचार। अच्छे आचरण की प्रेरणा देने के कारण ही कर्मकाण्ड धर्म कहाता है।

(क्रमशः)

ब्रह्माण्ड एवं जीवन........

(पृष्ठ 2 का शेष)

स्वामी जी लिखते हैं कि ब्रह्माण्ड का धारण, पोषण और वश में करने वाले परमेश्वर ने पूर्व कल्पों की भांति ब्रह्माण्ड की रचना की है और जीवों के पाप पुण्यों के अनुसार उनके मनुष्यादि शरीर-देह बनाये हैं। अव्यक्त नाम से प्रसिद्ध सत्व, रज व तमोगुणयुक्त त्रिगुणात्मक प्रकृति से सूक्ष्म व स्थूल जगत जिसमें सूर्य, चन्द्र व इनका प्रकाश, पृथिवी, आकाश, दिन, घटिका, पल, क्षण सम्मिलित हैं तथा **वेदों का ज्ञान व भाषा** को भी परमात्मा ने पूर्व कल्पों की भांति रचा है और आगे के कल्पों-सृष्टियों में भी इसी प्रकार रचेगा। परमात्मा का ज्ञान व सामर्थ्य, सदैव वृद्धि व ह्रास से सर्वथा रहित एवं एक समान रहते हैं, इसी कारण उसकी रचना एवं कार्यों में हर कल्प में समानता रहती है। दृश्यमान समस्त ब्रह्माण्ड की रचना करके ईश्वर सबमें व्यापक होकर अन्तर्यामीरूप से सबके पाप-पुण्यों को देखता हुआ सत्य व न्याय से सबको यथावत फल दे रहा है। वेद पर आधारित स्वामी जी के इन विचारों से स्पष्ट है कि संसार में मनुष्यों द्वारा की गई रचनाओं से अतिरिक्त अन्य समस्त रचनायें परमात्मा द्वारा की गई हैं। यह धारणा तो सर्वथा असत्य व असम्भव है कि संसार में बिना रचयिता के अपने आप ही कोई रचना अथवा सृष्टि हो सकती है।

उपर्युक्त विवरण में पहले प्रश्न का समाधान आ गया है। निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि ब्रह्माण्ड का जन्म अनादि सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान ईश्वर ने पूर्व कल्पों की भांति कारण-रूप अनादि प्रकृति को अपने सामर्थ्य से कार्यरूप प्रकृति में परिवर्तित करके किया। सृष्टि निर्माण में व्यतीत हुए काल के संबंध में वैदिक मान्यता है कि 6 चतुर्युगियों-2, 59, 20,000 वर्षों (दो करोड़ उनसठ लाख बीस हजार वर्षों) के लगभग समय सृष्टि की प्रक्रिया के आरम्भ होने से मानव की उत्पत्ति तक लगा। सृष्टि उत्पत्ति के पश्चात् परमेश्वर अमैथुनी सृष्टि में मनुष्यादि प्राणियों की रचना करता है। प्रथम मानव उत्पत्ति से अब वर्ष 2002 ई. तक 1,96,08,53,102 (एक अरब छियानवें करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ एक) वर्ष व्यतीत हो चुके हैं।

दूसरा प्रश्न बाह्य अंतरिक्ष में जीवन की सम्भावना का है। इसका उत्तर हमारे शास्त्र 'हां' में देते हैं। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में शतपथ ब्राह्मण काण्ड 14 का उल्लेख कर स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा हुआ है, तो क्या यह सब लोक शून्य होंगें? वह आगे लिखते हैं कि परमेश्वर का कोई भी कार्य निष्प्रयोजन नहीं होता, तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो, ऐसा कदापि नहीं हो सकता? इससे बाह्य अन्तरिक्ष में अनेक लोकों में जीवन की सम्भावना निर्विवाद है। हमारा निजी मत है कि जिस प्रकार हमारे सौर्य मण्डल में पृथिवी पर मनुष्यादि सृष्टि है उसी प्रकार अन्य सौर्य मण्डलों के प्रत्येक पृथिवी के समान एक ग्रह पर हमारी ही भांति सृष्टि है। वेद के 'धातायथा-पूर्वमकल्पयत्' वाक्यांश में बताया गया है कि ईश्वर का ज्ञान सदैव अपरिवर्तनशील है। वह कभी न्यूनाधिक नहीं होता है। संसार के कोटि-कोटि स्त्री-पुरुषों के शरीरों की रचना व इनके अंग प्रत्यंगों की रचना में समानता व एकरूपता है, इससे यह अनुमान होता है कि ब्रह्माण्ड के अन्य सौर मण्डलों के पृथिवी सदृश ग्रहों पर भी मनुष्यादि प्राणी अवश्य हैं एवं हमारी पृथिवी के समान ही है। वैदिक मान्यताओं के अनुसार अन्य सभी ग्रहों पर, जहां-जहां मनुष्य आदि प्राणि सृष्टि है, वेद ज्ञान व वेद-भाषा भी हमारी पृथिवी के समान ही होगी।

जीवन के उद्गम का रहस्य भी ईश्वर, जीव प्रकृति की सत्ताओं से संबंधित है। **ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का एकमात्र उद्देश्य अनिवार्यत: जीवन का उद्भव ही है।** शास्त्र इस विषय में कहते हैं कि प्रलय अवस्था से पूर्व जीवों के पुण्य व पाप कर्मों का फल देने के लिए ईश्वर पूर्व कल्पों की भांति अपने ज्ञान, सामर्थ्य व स्वभाव के अनुसार ब्रह्माण्ड की रचना करता है। तीन सत्तायें, 'एक रचनाकार', दूसरी जिसके लिए रचना की जाये और तीसरी वह पदार्थ जिससे रचना की जाये, उपस्थित होने पर रचना होती है। इस सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि की रचना के पश्चात् ईश्वर (रचनाकार) ने जीव-आत्मा (जिसके लिए जीवन की रचना की आवश्यकता थी) के लिए प्रकृति के द्वारा जीवन का उद्भव किया। यह तीनों सत्तायें सदा से हैं और सदा रहेंगी। अत: सृष्टि की रचना व प्रलय का क्रम भी प्रवाह से अनन्त काल तक चलता रहेगा।

सम्प्रति मनुष्य व अनेक प्राणियों की उत्पत्ति स्त्री-मादा शरीर के गर्भ से होती है। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने भूमि (पृथिवी) को मां के गर्भ व सूर्य को वीर्य संस्थापक पिता के रूप में प्रयुक्त कर मनुष्य आदि प्राणियों की रचना की। शास्त्रों में इसे अमैथुनी सृष्टि का नाम दिया गया है। इसके पश्चात् मैथुनी सृष्टि अर्थात् माता-पिता से बच्चों का जन्म होना आरम्भ हुआ। अमैथुनी सृष्टि की यह रचना उसी प्रकार से हुई जिस प्रकार भूमि में बीज, खाद, पानी व सूर्य के प्रकाश की व्यवस्था से वृक्ष पैदा होता है। सृष्टि के आरम्भ में जीवन के उद्भव का अन्य कोई विकल्प संभव था ही नहीं। इस विषय में चार्ल्स डारविन महोदय के विकासवाद के सिद्धान्त का उल्लेख कर हम यह कहेंगे कि यह मात्र कल्पना पर आधारित, अवैज्ञानिक एवं दोषपूर्ण सिद्धान्त है जिसकी त्रुटियों के लिए प्रबुद्ध पाठक स्वामी विद्यानन्द सरस्वती कृत **'सृष्टि विज्ञान व विकासवाद'** पुस्तक का अवलोकन कर सकते हैं जिसमें वैदिक मान्यताओं का समर्थन तथा डारविन के विकासवाद के सिद्धान्त की विस्तृत समीक्षा एवं आलोचना की गई है। महात्मा नारायण स्वामी लिखित पुस्तक **'आत्म दर्शन'** भी इस विषय में महत्वपूर्ण पठनीय ग्रन्थ है जिसमें इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

अन्तिम प्रश्न है, 'मस्तिष्क की कार्य प्रणाली के रहस्य,' कि वह कैसे सोचता है और फैसला करता है? इस प्रश्न के उत्तर में निवेदन है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती मनुष्य के तीन शरीर-प्रथम स्थूल शरीर, द्वितीय-सूक्ष्म शरीर व तृतीय कारण शरीर का उल्लेख करते हैं। स्थूल शरीर से बाह्य क्रियायें की जाती है। इसमें नेत्र, आदि 10 इन्द्रियों के गोलक व करण है। दूसरा सूक्ष्म शरीर है जो आंखों से अदृश्य है। यह शरीर कारण प्रकृति में सर्वप्रथम उत्पन्न विकारों, महतत्व, बुद्धि, अहंकार आदि से बना है। इस संबंध में महर्षि कपिल ने सूक्ष्म शरीर के 17 अवयव माने हैं। यह अवयव-5 ज्ञानेन्द्रियों की आंतरिक शक्ति +5 प्राण +5 तन्मात्रा सूक्ष्म भूत +1मन +1 बुद्धि हैं। इन 17 अवयवों से सभी प्राणियों का सूक्ष्म शरीर निर्मित है। यह सूक्ष्म शरीर मृत्यु के पश्चात् पुनर्जन्म में भी नहीं बदलता तथा सृष्टि के आरम्भ से प्रलय अवस्था तक के 4,29,40,80,000 (चार अरब उनतीस करोड़ चालीस लाख अस्सी हजार) वर्षों तक प्रत्येक जीव के साथ बना रहता है। इसके बदलने के दो ही अवसर हैं-सृष्टि का प्रलय अथवा जीवात्मा का मोक्ष। शरीर के भीतर विचार व विवेचन की आंतरिक क्रियायें एवं स्थूल शरीर में दृष्टिगोचर सभी क्रियायें इस सूक्ष्म शरीर के अवयवों में एवं इनके द्वारा प्रेरित व संचालित हैं। तीसरा कारण शरीर प्रकृति का वह अंश है जो विकृत नहीं होता। यह कारण शरीर ईश्वरोपासना का साधन है। इस कारण-शरीर के विकास ही से मनुष्य योगी होकर समाधिस्थ होने की योग्यता प्राप्त करता है।

मस्तिष्क के सोचने व फैसले करने के विषय मे वैदिक तत्वेत्ता विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि आत्मा की प्रेरणा बुद्धि के माध्यम से मन को होती है। मन समस्त ज्ञान ओर कर्मेन्द्रियों का अधिष्ठाता है। **मन की ही प्रेरणा से शरीर की सभी इन्द्रियां अपना-अपना कार्य करती है।** सूक्ष्म शरीर के 10 करण (5 ज्ञानेन्द्रियां +5 उनके सूक्ष्मभूत) मस्तिष्क में रहते हैं। यह पांच ज्ञानेन्द्रियां नासिका, जिह्वा, नेत्र, त्वचा व श्रोत्र है तथा 5 तन्मात्रायें गंध, रस, रूप, स्पर्श व शब्द हैं। 5 प्राण समस्त शरीर में फैले हुए हैं। श्वासोच्छवास, भोजन मेदे में पहुंचाना, रक्त प्रवाह आदि कार्य जो निरन्तर होते रहते हैं, इन 5 प्राणों के कार्य हैं। यह पांच प्राण हैं, 1. प्राण, 2. अपान, 3. व्यान, 4. समान व 5 उदान। सोचने एवं फैसले करने का कार्य करने वाली 'बुद्धि' मस्तिष्क में, मन-चित्त व आत्मा शरीर के केन्द्र हृदयाकाश (उदर व गले के मध्य) में रहते हैं। इस प्रसंग में यह भी महत्वपूर्ण है कि मनुष्य या अन्य प्राणियों की मृत्यु होने पर केवल स्थूल शरीर ही विकृत होकर नष्ट होते हैं जबकि आत्मा सूक्ष्म शरीर व कारण-शरीर के साथ पुनर्जन्म को प्राप्त होती है। इस संक्षिप्त उल्लेख में अन्तिम प्रश्न का उत्तर आ गया है कि मस्तिष्क में सोचने व फैसले करने का कार्य आत्मा, बुद्धि व मन के द्वारा करती है।

उक्त लेख से वैज्ञानिक पूर्णत: सहमत होंगे ऐसा हमारा दावा नहीं है परन्तु हम आशा करते हैं कि इस आधार पर अनुसंधान करने से वैज्ञानिकों को उत्साहवर्धक परिणाम मिलेंगे और वह पायेंगे कि वेदों पर आधारित स्वामी दयानन्द सरस्वती की मान्यतायें सत्य हैं।

आर्य समाज गोनियाना मण्डी का चुनाव

आर्य समाज गोनियाना मण्डी जिला बठिण्डा का वार्षिक चुनाव 12 मई दिन रविवार को श्री तरसेम कुमार आर्य महामन्त्री जिला आर्य सभा बठिण्डा की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान-महाशय चिरंजी लाल जी, उपप्रधान-बहन पुष्पा रानी तथा श्री अमृत लाल जी, मंत्री-श्री सर्वजीत सिंह, कोषाध्यक्ष-श्री प्यारे लाल, उपमंत्री-संदीप चौधरी, तथा संदीप जिंदल (मंत्री आर्य समाज)।

स्वास्थ्य चर्चा

आरोग्ययुक्त शतायु-प्राप्ति की कुंजी

□ ले० कृष्णदेव सिंह, आर्य

संसार में अनेक मत मतान्तर होते हुए भी प्रत्येक मनुष्य रोग रहित स्वस्थ शतायु की कामना करता है। यजुर्वेद में भगवान ने आदेश दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति को सौ वर्ष की आयु कर्म करते हुए प्राप्त करनी चाहिए। यथा–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ यजु. 40-2॥

अर्थात् (इह) इस संसार में (कर्माणि) कर्मों को (कुर्वन् एव) करता हुआ और करने के हेतु ही (शतं समाः जिजीविषेत्) मनुष्य सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करे तथा उसे जीवित रहना चाहिए (एवं त्वयि नरे) इस प्रकार तुझ मनुष्य के निमित्त (इतः अन्यथा न अस्ति) इससे भिन्न मार्ग नहीं है और (न लिप्यते) इस प्रकार जीवन बिताते हुए मनुष्य कर्म में लिप्त नहीं होता है। भारतीय मनीषियों और ऋषियों ने जीवन में पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के द्वारा मानव शरीर के लिए स्वस्थ और दीर्घायु तथा समस्त प्राणियों के हित में रत रहने की कामना–"सर्वभूत हिते रताः" की प्रार्थना की गई है।

भावार्थ-चिन्ता एवं स्वास्थ्य-"कहा गया है कि-चिन्ता अधिक चिन्ता अहै।" इसलिए तनाव से मुक्त होकर चिन्ताओं को त्याग कर ही मनुष्य पूर्णतः स्वस्थ रह सकता है। अतः क्रोध, द्वेष और तनाव आदि से दूर रहें व इसके लिए सदा प्रसन्न बने रहें। संसार में जन्मते ही मनुष्य के समक्ष समस्याएं उपस्थित होती रहती हैं। जो लोग समस्याओं से घबराते हैं हालात के सामने न केवल हार मान लेते हैं बल्कि अपना स्वास्थ्य भी नष्ट कर लेते हैं। अतः आपको चिन्ताओं को छोड़कर अपने प्रत्येक उत्तरदायित्व का पालन लगन से करना चाहिए। किसी कार्य में विफल होने पर भी हमें निराश नहीं होना चाहिए। जो व्यक्ति निराश हो जाते हैं उनके लिए जीवन एक भार हो जाता है। यह जीवन बोझ नहीं है वह तो प्रभु द्वारा दिया गया एक वरदान है। अधिकांश रोगों की उत्पत्ति मानसिक असंतोष, चिन्ता और उद्विग्नता के कारण ही होती है, इनसे सदैव बचना चाहिए।

स्वस्थ रहने के लिए प्रत्येक मनुष्य को निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए–

(1) सामर्थ्यानुसार व्यायाम करें। (2) भरपूर निद्रा और आराम करें। (3) शारीरिक अर्थात् शरीर की बाहरी और भीतरी स्वच्छता बनाए रखें। (4) यथोचित मात्रा में पौष्टिक भोजन ग्रहण करें। (5) शरीर की मालिश कर प्रतिदिन स्नान करें। (6) सप्ताह में एक समय उपवास रखना लाभप्रद है। (7) व्यायाम नियमपूर्वक करने वाले को साधारणतः दिल का दौरा (हार्ट अटैक) पड़ने की संभावना कम हो जाती है। (8) मोटापा भी एक रोग है, व्यायाम से मोटापा दूर भागता है। (9) शारीरिक चुस्ती और फुर्ती प्राप्त करने के लिए नित्य व्यायाम व प्राणायाम करना चाहिए। (10) व्यायाम करने वाले की पेट के रोगों से रक्षा होती है। (11) जो लोग सेवानिवृत हो गए हैं, उन्हें प्रातः सायं (प्रातः लगभग एक घण्टा) भ्रमण करने की आदत डालना चाहिए। (12) व्यायाम करने के स्थान में स्वच्छ वायु का आवागमन होना चाहिए।

स्वस्थ विचरण करने वाले लोगों के सम्बन्ध में वेद में कहा गया है कि–उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् धिया विप्रो अजायत॥ (ऋ. 8-6-28)

यहां वेद ने आज्ञा दी है कि प्रातः जल्दी उठकर वायु सेवनार्थ भ्रमण करने जाना चाहिए। वेद कहता है कि पर्वतों की उपत्यकाओं में तथा नदियों के संगम स्थलों पर प्रकृति की छटा देख कर प्रभु की महिमा का विचार मन में अपने आप आने लगता है और भ्रमणकारी को स्वास्थ्य और प्रसन्नता प्राप्त होती है।

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का चुनाव

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का चुनाव निम्न प्रकार हुआ। वर्ष 2002-03 के अन्तरंग सभा के अधिकारी तथा सदस्यगण।

प्रधानः–श्री हंसराज चोपड़ा, उपप्रधानः–श्री वेदव्रत शर्मा, डॉ० अमर जीवन जी, श्री वीरेश गुप्ता, श्री सुभाष चन्द्र गम्भीर, मंत्रीः–श्री अरुण प्रकाश वर्मा, उपमंत्रीः–श्री राजीव भाटिया, श्री सुशील कुमार महाजन, कोषाध्यक्षः–श्री एन.सत्य नारायण आर्य, अन्तःलेखा निरीक्षकः–श्री नरेन्द्र सिंह दुद्दा, पुस्तकालयाध्यक्षः–श्री विजय मनोचा, अन्तरंग सदस्यः–श्री राम मूर्ति कैला, श्री प्रहलाद राय गुप्ता, श्री अशोक सहदेव, कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा, श्री रिपुदमन सरीन, श्री धर्मेन्द्र दत्त।

विशेष आमन्त्रितः–श्री राम प्रकाश कपाही, श्रीमती प्रकाशवती गुप्ता, श्रीमती सत्यभामा खन्ना, श्री शिव प्रताप सिसौदी, श्रीमती कुन्ती रानी सूद, श्री चन्द्रवीर सिंह चौहान श्रीमती पूनम मनोचा।

–अरुण प्रकाश वर्मा, मन्त्री

आर्य समाज सैक्टर 9 पंचकूला का चुनाव

आर्य समाज सैक्टर-9 पंचकूला की साधारण सभा दिनांक 19-5-02 की बैठक में वर्ष 2002-03 के लिए नव पद अधिकारियों का चुनाव एवं अन्तरंग सभा का गठन सर्व सम्मति से निम्न प्रकार से किया गया।

संरक्षकः–श्री राम प्यारा कश्यप, प्रधानः–श्री धर्मवीर बतरा, मंत्रीः–श्री यशपाल आर्य, वरिष्ठ उप-प्रधानः–श्रीमती जगदम्बा गुप्ता, उप-प्रधानः–श्री अविनाश चन्द्र, श्री के.के. अग्रवाल, श्री मनोहर लाल मनचन्दा, श्रीमती वेद वर्मा, उपमंत्रीः–श्री सुनील बत्रा, श्री बलदेव विग, श्री ज्ञान प्रकाश सहेजा, श्रीमती पामेला काकड़िया, श्रीमती ऊषा गुप्ता। कोषाध्यक्षः–श्री मेहन्द्र नाथ चौहान, सह कोषाध्यक्षः–श्री ब्रह्मदत्त बाली, पुस्तकालयाध्यक्षः–श्रीमती कृष्णा चौधरी, सह-पुस्तकालयाध्यक्षः–श्रीमती सुदर्शन चौहान, निरीक्षकः–श्री इकबाल कृष्ण ग्रोवर।

अन्तरंग सदस्यः–श्रीमती सविता सेठ, श्री प्रेम चन्द अग्रवाल, श्री विजय कुमार पुन्न, श्री श्रवण कुमार मुंजाल, श्री टेक चन्द खंडूजा, श्री दास राम चान्दना, श्री मनोहर लाल दीवान, श्री रवि आहूजा, श्री श्याम सुन्दर महाजन, श्री महेन्द्र पाल, श्री अरुण बत्रा।

आर्य माडल हाई स्कूल भठिण्डा में समारोह

स्व० श्रीमती पुखराज गोयल सपत्नी श्री ओ.पी. गोयल जी की स्मृति में दिनांक 24-5-02 को आर्य माडल हाई स्कूल भठिण्डा में एक समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि माननीय डा. एस.एस. कालड़ा जो प्रातः 8.00 बजे जब पधारे तो उनका स्वागत आर्य माडल हाई स्कूल के द्वार पर प्रबन्धक कमेटी द्वारा किया गया एवं स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा फूलों की वर्षा की गई तुरन्त हवन यज्ञ पूज्य ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ की समाप्ति होते ही श्री प्रेम भाटिया जी (कोषाध्यक्ष) ने मंच संभाला एवं मुख्य अतिथि जी का माल्यार्पण करने के लिए श्री पी.डी. गोयल (प्रधान) श्री विनोद गर्ग (मंत्री) श्री एस.सी. गोयल (प्रधानाचार्य) चौ. बाबू राम जी (गुरुकुल प्रधान), श्री ओ.पी मंगला, श्री श्याम लाल गुप्ता व अन्य को आमंत्रित किया। इसके साथ ही स्कूल के विद्यार्थियों ने मुख्यअतिथि के पधारने पर स्वागत गीत गाया। शहर की जानी-मानी हस्ती, समाज सेवी आदरणीय श्री सुरिन्द्र चोपड़ा जी ने स्व० श्रीमती पुखराज गोयल जी के परिवार बारे उपस्थित जनों को जानकारी दी। मंच संचालक ने श्री पी.डी. गोयल जी से प्रार्थना की कि वह श्री ओम प्रकाश जी गोयल एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पुखराज गोयल के जीवन के बारे में कहें तथा मुख्य अतिथि का स्वागत करें। उन्होंने मुख्य अतिथि का स्वागत किया तथा पुखराज गोयल के जीवन पर रोशनी डालते हुए स्कूल में कमरा बनवाने के लिए 52000/- रु० दान देने के लिए श्री ओ.पी. गोयल का धन्यवाद किया। स्कूल के बच्चों द्वारा चार गीत प्रस्तुत किए गए जिनमें से एक के बोल थे 'श्री ओ.पी. गोयल ने स्कूल को जो दान दिया है।' स्कूल के बच्चों द्वारा गाये गये ये गीत इतने प्रभावशाली थे कि उपस्थित जनों ने तालियों की गूंज में हौसला बढ़ाते हुए पुरस्कार के रूप में राशि प्रदान की। इस समारोह में श्री अशोक अग्रवाल (उपप्रधान), श्री रविन्द्र कुमार, श्रीमती शांति सिंगल (प्रधानाचार्य), श्री चिमन लाल मेहता, श्री गौरी शंकर, लाला कबीर चन्द, श्री नवनीत कुमार की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। शांति पाठ के उपरांत श्रीमती पुखराज गोयल की स्मृति में बनाये गये कमरे का उद्घाटन डा. सुरजीत सिंह कालड़ा ने किया।

–विनोद कुमार, सैक्रेटरी

स्वास्थ्य व ईश्वर प्राप्ति का सोपान "योग"

□यशबाला गुप्ता, 41-3 लिंकिंग रोड, एक्स मुम्बई-500054

युगों-युगों से प्राणी शान्ति व आनन्द की टोह लगाने के लिए भटक रहा है। संसार में भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए वह होड़ लगाता रहता है और उस होड़ में निरन्तर भागता है और समझता है कि उसे सुख व शान्ति मिलेगी, पर क्या ऐसा सम्भव हो पाता है? उस भाग-दौड़ में कुछ ऐसी भयंकर बिमारियों को निमंत्रण दे बैठता है कि पछतावे के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता। रक्तचाप, तनाव, अनिद्रा, मधुमेह, पाचन प्रणाली का बिगड़ना और कब्ज जैसी अनेकों बीमारियां उसे घेर लेती हैं क्योंकि और, और, और की चाहत में उसे अपने बारे में सोचने का समय ही नहीं मिलता।

मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है स्वास्थ्य की रक्षा। योगासन से शरीर पर पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त होता है। आरोग्य की प्राप्ति व रोगों की निवृत्ति भी होती है । निरोग रहने के लिए योगासनों से बढ़कर कोई व्यायाम नहीं है। आजकल शारीरिक व्यायाम व परिश्रम का अत्यन्त अभाव सा होता जा रहा है। हम शरीर की उपेक्षा करके यान्त्रिक साधनों को अधिक महत्व देते हैं और परिणाम होता है शरीर की जड़ता और आलस्य। आसनों का थोड़ा सा भी अभ्यास शरीर में स्फूर्ति ला देता है। आसनों का विभिन्न अवयवों पर लाभदायक प्रभाव पड़ता है। हड्डियों, सन्धिस्थलों, हृदय, फेफड़ों, यकृत, गुर्दा, पक्वाशय, मस्तिष्क आदि अवयवों को प्रभावित करता है जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है, दूसरे, ऊर्जा पैदा होती है, रक्त संचालन तेज होता है, ऑक्सीजन (प्राणवायु) के कण पहुंचते हैं जिससे शरीर का दूषित, विषाक्त तत्त्व बाहर निकलता है और वे पुष्ट रहते हैं। मांस पेशियां व तन्तु लचीले व मजबूत बनते हैं।

प्राय: महिलाएं यही कहती हैं कि उनसे आसन नहीं होता वैसे भी वे समझती हैं कि घरेलू कार्यों में इतना व्यायाम हो जाता है कि अलग से आसन सा व्यायाम करने की आवश्यकता नहीं पर ऐसी धारणा रखना भयकर भूल है। योगासन से स्फूर्ति व शक्ति प्राप्त करने के साथ उनका मन भी स्वस्थ रहता है व अन्य कार्यों को करने की क्षमता बढ़ती है। वास्तविकता तो यह है कि आज के आराम दायक व निष्क्रिय जीवन में महिलाओं के लिए आसनो की उपयोगिता और बढ़ जाती है। अनेक साध्य व असाध्य रोगों में, जिनका विश्वसनीय इलाज ऐलोपेथी मे नहीं है, योग चिकित्सा द्वारा स्थायी लाभ होता है।

आसनों के अभ्यास द्वारा धीरे-धीरे शरीर को स्वावलम्बी (अर्थात् श्रम हटाने वाले मशीनी उपकरणो के बिना) बनाकर हम न केवल स्वास्थ्य लाभ करते हैं अपितु शरीर को नैसर्गिक अवस्था में लगाकर भौतिक प्रभावों (यथा, चिंता, तनाव आदि) से मुक्त करा लेते हैं।

योगासनों से मन शक्तिशाली बनता है। विशेष अंगों में दर्द या दबाव को सहने से मन की दृढ़ता एवम् संकल्पशक्ति का विकास होता है जो जीवन की सफलता का रहस्य है।

योगासनों द्वारा मन को एकाग्र करने का प्रशिक्षण मिलता है। साधन के लिए सन्ध्याकाल में जब साधक आसन जमाता है तो 2-4 मिनट के लिए भी मन रुक नहीं पाता है। विभिन्न विषयों से सम्बन्धित क्या-क्यों कब-कैसे, ऐसा-वैसा आदि की विचार तरंगें सतत चलती ही रहती हैं। प्राय: ऐसा लगता है कि दिन भर के सांसारिक आवश्यक कार्य को करते हुए वह विचार मन में नहीं आते पर जब ईश्वर का ध्यान करने बैठते हैं तब ये ढेर सारे विचार पता नहीं कहां से आ जाते हैं। विभिन्न प्रकार की योजनाओं की उधेड़बुन और पुरानी यादें चलचित्र की तरह घूमने लगती हैं और संध्या के मन्त्रों का पाठ खत्म भी कर लेते हैं पर ऐसा आभास होता है कि मन्त्रों का पाठ हुआ ही नहीं, परिणाम यह होता है कि किसी भी प्रकार की कोई उपलब्धि नहीं होती बस खानापूर्ति होती है। (इसका एक कारण यह भी है कि साधक मन्त्रों के अर्थों से अनभिज्ञ होता हैं और यम, नियमों का ठीक प्रकार से पालन नहीं करता है।)

ईश्वरोपासना में सफलता पाने के लिए योगाभ्यासी होना अति आवश्यक है और बिना कष्ट के, साधना के योग सिद्धि नहीं हो सकती। मन को बार-बार भटकने से रोकने के लिए निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए और पुन: पुन: ओ३म् का उच्चारण करते हुए ईश्वर के अनन्त गुणों का अनुभव करना चाहिए। बार-बार चिन्तन मनन करने पर सांसारिक वस्तुओं से मिलने वाले सुख क्षणिक व दु:ख मिश्रित लगते हैं, ऐसा सोचने से उसके मन में इन पदार्थों के प्रति तृष्णा नष्ट हो जाती है और ईश्वर के प्रति प्रेम व श्रद्धा और रुचि बढ़ने लगती है। योगाभ्यासी अपने व्यवहार को निष्काम भाव से करने लगता है और असफलता मिलने पर भी मन में शान्ति व सन्तुष्टि की स्थिति बनाए रखता है व अपने शरीर, बुद्धि, बल व धनादि समस्त साधनों का प्रयोग ईश्वर की प्राप्ति के लिए ही करता है। उसे ईश्वर से अधिक कुछ प्रिय नहीं लगता और वह ईश्वर की आज्ञा अनुकूल ही आचरण करने लगता है। इस प्रकार ईश्वर के साथ सम्बन्ध जुड़ कर ज्ञान, बल, आनन्द, निर्भयता, शान्ति और प्रसन्नता आदि गुणों को प्राप्त करता है।

फिर धारणा, ध्यान व समाधि की अवस्था तक पहुंच सकता है। समाधि में पहुंच कर ही उसे ईश्वर का साक्षात्कार होता है।

आर्य समाज सोहनगंज, सब्जी मंडी, दिल्ली का चुनाव

आर्य समाज सोहनगंज सब्जी मण्डी दिल्ली-7 का वार्षिक निर्वाचन दि० 12-5-02 रविवार को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

संरक्षक:-श्री प्रेम सागर जी गुप्त, श्री नरेन्द्र पति रे। प्रधान:-श्री सुभाष चन्द्र सर्राफ, उपप्रधान:-श्री हरीचन्द कालड़ा, श्री चान्द किशोर अरोड़ा, मन्त्री:-श्री ओम प्रकाश जी गर्ग, उपमन्त्री:-श्री आत्मा राम जी जाजौरिया, श्री वेदरत्न जी, कोषाध्यक्ष:-श्री विनय भाटिया जी, पुस्तकाध्यक्ष:-श्री नारायण दास जी मित्तल, लेखापरीक्षक:-श्री दुर्गा प्रसाद जी गौढ़। —सुभाष चन्द्र सर्राफ

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का 17वां वार्षिक उत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का 17वाँ वार्षिक उत्सव 29 अप्रैल से 5 मई 2002 तक बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। 29 अप्रैल को प्रातः 7.30 बजे से 10 बजे तक चतुर्वेद शतक यज्ञ होता रहा, जिसका वेदपाठ गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी करते रहे। यज्ञ के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा, श्री राजेश जी प्रेमी तथा सोनू भारती शर्मा के सुन्दर भजन होते रहे। प्रतिदिन रात्रि को 8 बजे से 10 बजे तक आर्य माडल स्कूल के बच्चो, श्री राजेश जी प्रेमी तथा श्री सोनू भारती शर्मा के सुन्दर भजन होते रहे। भजनों के पश्चात् श्री विजय जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सुन्दर व प्रभावशाली प्रवचन होते रहे। उपस्थिति काफी अच्छी रही।

शनिवार 4 मई, 2002 को प्रातः यज्ञ के पश्चात् श्री विजय कुमार जी शास्त्री का बहुत सुन्दर व प्रभावशाली प्रवचन हुआ। दोपहर बाद 2 बजे से 5 बजे तक आर्य समाज का महिला सम्मेलन श्रीमती श्यामा सहगल जी की अध्यक्षता में हुआ। मुख्यातिथि श्रीमती सुदेश चोपड़ा हिन्द समाचार पत्र समूह थी। इस कार्यक्रम में आर्य माडल स्कूल के बच्चों का कार्यक्रम बहुत सफल रहा। इसमें विचार रखने वाले डा. राम अवतार जी डी.ए.वी. कालेज जालन्धर, प्राचार्य नरेश जी दोआबा कालेज जालन्धर, चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। मुख्यातिथि श्रीमती सुदेश चोपड़ा जी ने भी अपने सुन्दर विचार रखे। इसके अतिरिक्त और भी कई बहनों ने अपने विचार रखे। इस सम्मेलन की प्रधाना श्रीमती श्यामा जी सहगल ने भी अपने विचार रखे। इस सम्मेलन की सारी कार्यवाही का संचालन बहन कमला जी शर्मा ने किया। जिन का संचालन का ढंग बहुत अच्छा रहा। सम्मेलन की समाप्ति पर यज्ञ शेष बांटा गया। रात्रि को 8 बजे से 10 बजे तक भजन श्री जगत जी वर्मा तथा उपदेश श्री विजय कुमार जी शास्त्री का हुआ।

रविवार, 5 मई को प्रातः यज्ञ आरम्भ हुआ। इस यज्ञ में जो प्रतिदिन यजमान बनते रहे थे, वह यजमान यज्ञ पर बैठे थे। इस यज्ञ के ब्रह्मा श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु अबोहर वाले थे। सब यजमानों को ब्रह्मा जी ने आशीर्वाद दिया। उसके पश्चात् श्री जगत वर्मा जी के भजन तथा आर्य माडल स्कूल के बच्चों का कार्यक्रम हुआ। श्री राजेश जी प्रेमी तथा सोनू भारती शर्मा के भी सुन्दर भजन हुए। दस बजे श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी का प्रवचन बहुत प्रभावशाली रहा। उसके पश्चात् श्री पंडित धर्मदेव जी आर्य व चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट ने अपने विचार रखे। आर्य समाज गांधी नगर जालन्धर के प्रधान श्री बूटा राम जी वहां पधारे हुए थे उनका भी एक सुन्दर भजन हुआ। जिसको लोगों ने बहुत सराहा। इसके पश्चात् श्रीमती रश्मि घई माडल टाऊन जालन्धर के भजन हुए जिनको लोगों ने बहुत पसन्द किया। इससे पूर्व 12 बजे ध्वजारोहण श्री सुदर्शन शर्मा वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने किया। ध्वजारोहण का गीत श्री जगत वर्मा जी ने बड़े ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया। इस अवसर पर बहुत से लोगों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर की बहनें भी आई हुई थी जिनका बहुत सुन्दर भजन हुआ। श्री सुदर्शन शर्मा वरिष्ठ उपप्रधान जी ने आर्य समाज को ग्यारह हजार रुपए दान दिए। श्री विनय मित्र महाजन मुख्यातिथि ने भी 11 हजार रुपए आर्य समाज को दान दिया।

—मुलखराज आर्य
कार्यकर्त्ता प्रधान आर्य समाज
शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर

गृहमाता की आवश्यकता

दयानन्द बाल सदन, निराश्रित बाल गृह अजमेर के लिए आर्य विचार युक्त सुशिक्षित सेवाभावी 45-50 वर्षीय एक गृह माता की आवश्यकता है। निःशुल्क आवास भोजन के अतिरिक्त योग्यतानुसार वेतन। इच्छुक महिला 15 दिन के अन्दर मंत्री दयानन्द बाल सदन, अजमेर के नाम से आवेदन करें। —देव रत्न

आर्य मर्यादा सम्बन्धी घोषणा फार्म-4

1. प्रकाशन स्थान :	गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा, जालन्धर
2. प्रकाशन की अवधि :	साप्ताहिक
3. मुद्रक स्थान :	रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड, जालन्धर
4. प्रकाशक का नाम :	श्री धर्मदेव आर्य
5. क्या भारतीय नागरिक हैं:	हाँ
6. सम्पादक का नाम :	धर्मदेव आर्य
7. क्या भारतीय नागरिक हैं :	हाँ
8. पता :	आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा, जालन्धर
9. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों :	आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा, जालन्धर

मैं धर्मदेव आर्य एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए हुए विवरण सत्य हैं।

—धर्मदेव आर्य, प्रकाशक

डी.एम. कालेज मोगा में पत्रिका अवलोकन समारोह

डी.एम. कालेज आफ ऐजुकेशन मोगा में गत दिवस विगत बीस वर्षों से बन्द पड़ी कालेज मैगजीन 'दि लाईट' का प्राचार्य श्री सिद्धेश्वर जी की अथक मेहनत द्वारा पुनः प्रकाशित करवाये जाने सम्बन्धी 'अवलोकन समारोह' कालिज सभागार कक्ष में करवाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा (रजिस्ट्रार, आर्य विद्या परिषद् जालन्धर) थे। उनके साथ मोगा के आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रशासकीय सलाहकार श्री एस.के. स्याल (रिटायर्ड प्रिंसीपल) भी विशेष तौर पर पहुंचे हुए थे। कार्यक्रम गायत्री मन्त्र व भजन गायन से आरम्भ किया गया जिसे कुमारी रजनी बाला ने प्रस्तुत किया। शब्द गायन तेजिन्द्र व साथियों ने किया। उसके उपरान्त प्राचार्य श्री सिद्धेश्वर जी ने मुख्य अतिथि का स्वागत व पत्रिका के विषय में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने पत्रिका के प्रकाशन सम्बन्धी तथ्यों को तो उजागर किया ही साथ में उन लोगों को चेतावनी भी दी कि 'मैं टूट सकता हूं, झुक नहीं सकता।' जो उनके पथ में अवसर कांटें उगाने की चेष्टा करते हैं। इसके उपरान्त अमनगीत, कमलजीत ने कविता व गीत प्रस्तुत किया। पत्रिका का अवलोकन मुख्यातिथि श्री देवेन्द्रनाथ, श्री एस के स्याल, प्राचार्य श्री सिद्धेश्वर जी, विजय साथी, स्वामी सच्चिदानन्द, श्री बोधराज मजीठिया, स० उपेन्द्रजीत लाम्बा आदि ने किया। विजय साथी व बोधराज जी मजीठिया ने प्राचार्य जी को पत्रिका प्रकाशन पर बधाई दी। पत्रिका का वितरण अतिथियों को किया गया। श्री देवेन्द्र नाथ जी ने प्राचार्य को उनके पूरे वर्ष किए गए कार्यक्रमों की सराहना की। उन्होंने ये आश्वासन भी दिया कि पूरा प्रबन्धक मण्डल उनके प्रत्येक कार्य में चट्टान की तरह इनके साथ है। अतिथियों का धन्यवाद प्रो. बख्तावर सिंह ने किया आये हुए शहरियों में श्री योगेश, बाबू ज्ञानमित्र सूद, अश्विनी शर्मा, प्रो उप्पल प्रो. आर.सी. शर्मा व अन्य संस्थाओं के प्राचार्य व अध्यापकगण थे। मंच संचालन प्रो. जसपाल सिंह ने सराहनीय ढंग से किया। अन्त में राष्ट्रीय गायन कुमारी निशा व सहयोगियों ने गाया। इस अवसर पर प्रो. रणजीत सिंह मांगट को Facility Improvement Award दिया गया।

—प्रो० जसपाल सिंह

आर्य बन्धुओं से निवेदन

समस्त आर्य महानुभावों से निवेदन है कि हम ऋषि का सपना कब साकार करेंगे ? महर्षि दयानन्द ने देश के लिए सब कुछ त्यागा और स्वाधीनता का आन्दोलन आरम्भ किया और कहा स्वाधीनता के उपरान्त इस देश का नाम आर्यावर्त्त होगा। हम आर्य बनेंगे, संसार को आर्य बनाकर शान्ति का समय लायेंगे। ये सब तभी हो सकेगा जब हम अपने परिवारों में पांच महायज्ञों को अपने जीवन का अंग बनायेंगे। आहार की पवित्रता, व्यवहार की पवित्रता और विचारों की पवित्रता होगी। पांचों महायज्ञ श्रद्धा पवित्रता और योग से होने चाहिएं।

सोचें और करें। यही मेरी विनती का मूल है।

—दौलत राम चड्ढा, प्रधान, आर्य समाज देवलाली, नासिक

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि-सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

(3 प्रतियां)
2277, श्री पुस्तकाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

दूरभाष : 292926

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष—56 अंक : 9 सृष्टि संवत 1960853103, 16 जून, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

वैदिक धर्म एक परिचय

लेखक श्री ज्ञानेश्वर आर्य, दर्शन योग महाविद्यालय आर्य वन रोजड़ द सांपुर

वैदिक धर्म का आधार चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) हैं। इनमें मानवोपयोगी समस्त ज्ञान विज्ञान मूलरूप में विद्यमान है। इनके अतिरिक्त वेदों की व्याख्या के ऋषिकृत ग्रंथ (4 ब्राह्मण, 4 उपवेद, 6 दर्शन, 10 उपनिषद् तथा 6 वेदांग) भी वैदिक धर्म का विस्तार से परिज्ञान कराते हैं।

1. वैदिक धर्म संसार के सब मतों और सम्प्रदायों से अधिक प्राचीन है। यह सृष्टि के प्रारम्भ से अर्थात् 1960853103 वर्ष से है।

2. संसार भर के अन्य मत पन्थ किसी पीर, पैगम्बर, मसीहा, गुरु महात्मा आदि के द्वारा चलाये हुए हैं, किन्तु वैदिक धर्म ईश्वरीय है, किसी मनुष्य द्वारा चलाया हुआ नहीं है।

3. वैदिक धर्म में एक निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी, ईश्वर को ही पूज्य-उपासक माना जाता है, उसी की उपासना की जाती है, अन्य देवी देवताओं की नहीं।

4. ईश्वर अवतार नहीं लेता अर्थात् कभी भी शरीर धारण नहीं करता।

5. जीव और ईश्वर (ब्रह्म) एक नहीं है बल्कि दोनों अलग-अलग हैं और प्रकृति इन दोनों से अलग तीसरी वस्तु है ये तीनों अनादि हैं।

6. वैदिक धर्म के सब सिद्धान्त सृष्टि क्रम के नियमों के अनुकूल हैं तथा वैज्ञानिक हैं। जबकि अन्य मतों के बहुत से सिद्धान्त विज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

7. हरिद्वार, काशी, मथुरा आदि तीर्थ नहीं है, तीर्थ तो विद्या का अध्ययन, यम-नियमों का पालन, योगाभ्यास, सत्संग आदि है जिससे मनुष्य दुख से तर जाता हैं।

8. भूत, प्रेत, डाकिन आदि के प्रचलित स्वरूप को वैदिक धर्म में स्वीकार नहीं किया जाता है, यह सब कल्पना मात्र है तथामिथ्या है।

9. स्वर्ग और नरक किसी स्थान विशेष में नहीं होते। जहां सुख है वहां स्वर्ग है और जहां दुख है वहीं नरक है।

10. स्वर्ग के कोई अलग से देवता नहीं होते। माता, पिता, गुरु, विद्वान् तथा पृथ्वी जल, अग्नि वायु आदि ही स्वर्ग के देवता होते हैं।

11. राम, कृष्ण, शिव, ब्रह्मा, विष्णु आदि महापुरुष थे। न ईश्वर थे और न ईश्वर के अवतार थे।

12. जो मनुष्य जैसा शुभ या अशुभ कर्म करता है, उसको वैसा ही सुख या दुःखरूप फल अवश्य मिलता है। ईश्वर किसी भी मनुष्य के पाप को किसी परिस्थिति में क्षमा नहीं करता है।

13. मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है चाहे वह स्त्री हो या शूद्र।

14. कर्म के आधार पर मानव समाज को चार भागों में बांटा जाता है। जिन्हें चार वर्ण भी कहते हैं।

(1) ब्राह्मण (2) क्षत्रिय (3) वैश्य (4) शूद्र।

15. व्यक्तिगत जीवन को भी चार भागों में बांटा गया है, इन्हें चार आश्रम भी कहते हैं। 25 वर्ष की अवस्था तक 'ब्रह्मचर्याश्रम', 50 वर्ष की अवस्था तक 'गृहस्थाश्रम', 75 वर्ष की अवस्था तक 'वानप्रस्थाश्रम' और इससे आगे 'सन्यासाश्रम' माना गया है।

16. जन्म से कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं होता। अपने-अपने गुण, कर्म, स्वभाव से ब्राह्मण आदि कहलाते हैं। चाहे वे किसी भी घर में उत्पन्न हुए हों।

17. भंगी, चमार, आदि कोई भी मनुष्य जाति या जन्म के कारण अछूत नहीं होता। जो गन्दा है वह अछूत है। चाहे वह जन्म से ब्राह्मण हो या भंगी या अन्य कोई।

18. वैदिक धर्म पुनर्जन्म को मानता है। अच्छे कर्म अधिक करने पर अगले जन्म में मनुष्य का शरीर और बुरे कर्म अधिक करने पर पशु, पक्षी, कीट पतंग आदि का शरीर मिलता है।

19. गंगा-यमुना आदि नदियों में स्नान करने से पाप नहीं छूटते। वेद के अनुसार उत्तम कर्म करने से व्यक्ति भविष्य में पाप करने से बच सकता है। किन्तु किए गए पापों से नहीं बच सकता।

20. पंच महायज्ञ करना प्रत्येक वैदिक धर्मी के लिए आवश्यक है—1. ब्रह्मयज्ञ (ईश्वर की उपासना करना) 2. देवयज्ञ (हवन करना) 3. पितृयज्ञ (माता-पिता सास-ससुर आदि की सेवा करना। 4 बलिवैश्वदेवयज्ञ (गाय, कुत्ता, चिड़ियां, चींटी, आदि तथा वृद्ध, अनाथ, विकलांग आदि को भी देना) 5. अतिथि यज्ञ (विद्वान् सन्यासी, उपदेशक आदि से उपदेश ग्रहण करना और उनकी सेवा सत्कार आदि करना।

21. जीवित माता-पिता, गुरु विद्वान् आदि की सेवा करना ही श्राद्ध कहलाता है। मृत पितरों के नाम पर ब्राह्मणो को दिया हुआ भोजन, वस्त्र, धनादि मृत पितरो को नहीं मिलता।

22. मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा को सुसंस्कारी (उत्तम) बनाने के लिए नामकरण, यज्ञोपवीत इत्यादि १६ संस्कारों का करना कर्त्तव्य है।

23. मूर्तिपूजा, छूआ-छूत, जाति-पाति, जादू-टोना, डोरा-धागा, ताबीज शकुन, जन्म पत्री, फलित ज्योतिष, हस्त रेखा, नवग्रह पूजा, अंधविश्वास, बलिप्रथा, सतीप्रथा, मांसाहार, मद्यपान बहुविवाह आदि बातों का वैदिक धर्म में निषेध है।

24. वेद के अनुसार जब मनुष्य सत्य ज्ञान को प्राप्त करके निष्काम भाव से शुभ कर्मों को करता है और शुभ उपासना से ईश्वर से साथ सम्बन्ध जोड़ लेता है, तब उसकी अविद्या (=राग-द्वेष आदि की वासनाएं) समाप्त हो जाती हैं तभी जीव की मुक्ति होती है। मुक्ति में जीव ३१ नील, १० खरब, ४० अरब वर्ष तक सब दुखों से छुटकर केवल आनन्द का ही भोग करके लौट कर मनुष्य जन्म लेता है।

25. वैदिक धर्मी मिलने पर परस्पर 'नमस्ते' शब्द बोलकर अभिवादन करते हैं।

26. वेद मे परमेश्वर के अनेक नामो का निर्देश किया गया है जिनमें मुख्य नाम 'ओ३म्' है।

विशेषः—उपर्युक्त सिद्धान्तों से सम्बन्धित विशेष जानकारी के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखित 'सत्यार्थ प्रकाश' ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि आदि ग्रंथो का स्वाध्याय करें।

दिव्यता के सूत्र

❑ आचार्य भगवान देव जी 'चैतन्य' 81/एच-4 सुन्दर नगर (हि. प्र.)

(गतांक से आगे)

यह समर्पण और त्याग की भावना जहां पर नहीं होगी वहां न तो कोई नेता राष्ट्र की सेवा कर सकता है, न परिवार में ही एक-दूसरे का सहयोग और सेवा कर सकता है और न ही सामाजिक उत्थान हो सकता है। इसलिए यज्ञ ही वास्तव में किसी भी अच्छे व्यक्ति का, परिवार का, समाज का, राष्ट्र का या समूचे विश्व का हित करने वाला केन्द्र बिन्दु है। इसीलिए यज्ञ को समूचे ब्रह्माण्ड की नाभि कहा गया है। हमें यज्ञ की भावना को आत्मसात् करने की जरूरत है।

तीसरे प्रश्न का उत्तर दिया गया है-'अयं सोमः वृष्णः अश्वस्य रेतः' अर्थात् यह सोम-वीर्य ही तेजस्वी, अनथक पुरुष की शक्ति है। आज के इस आत्मघाती युग में जहां सब ओर सैक्स का नंगा नृत्य हो रहा है, वेद की यह शिक्षा न केवल अनिवार्य है बल्कि अपरिहार्य भी है। आज व्यक्ति के चरित्र का पतन इसीलिए हो रहा है क्योंकि हम लोगों ने ऋषि-मुनियों की अनमोल शिक्षाओं को दर किनार कर दिया है। कभी किसी ने एडस जैसी बिमारी का नाम नहीं सुना था मगर आज इस भयंकर बिमारी का आन्तक सारे संसार में फैल गया है। यह सब मुक्त रूप से भोग भोगने का ही दुष्परिणाम है। इस उपचार रहित बीमारी से निजात पाने के लिए दीवारों पर नारे लिखे जा रहे हैं कि एक पत्नी या एक पतिव्रता बनो। हमारे ऋषि-मुनियों ने पहले ही इस प्रकार की व्यवस्था कर रखी है मगर उस शिक्षा को न मानने का ही यह कुफल भोगना पड़ रहा है और इससे बचने का ढंग वास्तव में ही संयमित जीवन जीने की दिशा पर चलना ही है। एडस की बीमारी मुख्य रूप से यही है कि इस रोगी के भीतर बीमारी से लड़ने की शक्ति क्षीण हो जाती है। दूसरे शब्दों में कहें तो व्यक्ति इतना निस्तेज हो जता है कि उसमें किसी बिमारी से लड़ने की शक्ति ही नहीं रहती है। इसलिए शक्ति का स्रोत वेद ने वीर्य को बताया है। अत्यधिक वीर्य के क्षरण से व्यक्ति का ओज और तेज नष्ट हो जाता है। इसलिए इस जीवन स्थली को भोग स्थली नहीं बल्कि यज्ञ स्थली बनाने की जरूरत है। गृहस्थ जीवन में भी जो व्यक्ति शस्त्रानुमोदित नियमों पर चलता है महर्षि जी उसे भी ब्रह्मचारी जैसा ही कहते हैं। यहां हम केवल एक लौकिक उदाहरण देकर इस प्रसंग को विराम देना चाहेंगे। आयुर्वैदिक शास्त्रों में बताया गया है कि भोजन पचने की प्रक्रिया में से गुजरता हुआ बहुत सार रूप में जब पहुंचता है तो वीर्य बनता है। इस कठिनता से बने वीर्य को जो व्यक्ति अज्ञानता के कारण यूं ही नष्ट करता रहे उसे कोई भी बुद्धिमान नहीं कह सकता है। जिस प्रकार एक माली कितने ही फूलों का रस लेकर उसे अनेक प्रकार की प्रक्रियाओं में से गुजारता हुआ इत्र की कुछ बूंदे बनाता है यदि वह बने हुए अनमोल इत्र को गन्दी नाली में यूं ही फैंक दे तो उसे कोई भी बुद्धिमान नहीं कहेगा बल्कि उसकी नादानी पर सबको तरस ही आएगा। ठीक ऐसे ही बड़ी कठिनता से बने इस अनमोल धातु को संभालकर रखने की आवश्यकता है क्योंकि इसी से व्यक्ति के भीतर अपार शक्ति का संचय हो पाता है। इसलिए वेद भी कह रहा है कि वीर्य ही व्यक्ति के तेज और कर्मठता का आधार है।

चौथे प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा गया है-'ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम' अर्थात् यह ब्रह्म ही वाणी का परम आकाश है। शब्द आकाश का गुण है मगर आकाशत्व का कारण भी परमात्मा ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी यजुर्वेद (5-10) के मन्त्र का भाष्य करते हुए वाणी के बारे में निर्देश देते हैं कि वाणी शिक्षा विद्या से संस्कृत होनी चाहिए तथा सत्य भाषणयुक्त और मधुर गुण सहित होनी चाहिए। मनु महाराज जी ने (12-6) कठोर वचन, मिथ्या भाषण, चुगली करना और असम्बन्ध प्रलाप करना वाणी के चार पाप बताए हैं। इसलिए हमें वाणी के प्रयोग में बहुत ही सावधानी बर्तने की जरूरत है। विवेचित मन्त्र में वाणी का परम व्योम परमात्मा बताया गया है इसलिए वाणी का महत्व प्रभु भजन में ही है। हमें परमात्मा की उपासना करने के मार्ग का कदापि त्याग नहीं करना चाहिए क्योंकि महर्षि जी के शब्दों में जो परमात्मा की उपासना नहीं करता है वह मूर्ख ही नहीं बल्कि कृतघ्न भी है। परमात्मा की कृपा से हमें संसार की समस्त न्यामतें मिली हुई हैं। और इससे बड़ी कृतघ्नता भला क्या होगी कि हम परमात्मा का धन्यवाद तक न करें। वेद ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य भी परमात्मा की प्राप्ति ही बताया गया है। अन्यथा वेद ऋचाओं का अध्ययन करने से भी क्या लाभ ?

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते॥ (ऋ. 1-164-39)

अर्थात् वेद की समस्त ऋचाएं प्रभु का वर्णन कर रही हैं, जो कि सर्वोत्कृष्ट है, सब ऋचाओं का ज्ञान देने वाला है, समस्त जड़-चेतन देवता जिसके अधीन है.....ऐसे परमात्मा को जो नहीं जानता है वह भला ऋचाओं से क्या लाभ प्राप्त करेगा ? जो लोग वास्तव में उस महान परमात्मा को जान लेते हैं वही धन्य हैं तथा वे ही संसार में प्रेम पूर्वक निर्वहन कर पाते हैं....

इसलिए परमात्मा पर श्रद्धा और भरोसा करके ही व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है तथा फलता-फूलता है जो परमात्मा के विमुख है या उसके प्रति शंकाशील है उसका नष्ट हो जाना निश्चित है-

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रद्धस्मै धत्त स जनास इन्द्रः॥ (ऋ. 2-12-5)

अर्थात् जिस अद्भुत परमात्मा के विषय में शंकालु लोग पूछा करते हैं कि वह कहां हैं और कुछ कहते हैं कि वह है ही नहीं। वह परमात्मा ऐसे प्रतिकूल विचारधारा रखने वाले के सब सांसारिक वैभव भूकम्प के समा नष्ट कर देता है। इसलिए संसार के लोगों उस परमात्मा पर भरोसा और श्रद्धा रखो क्योंकि वही परमैश्वर्यवान् और समस्त ऐश्वर्यों का देने वाला है।

इस प्रकार उपरोक्त पंक्तियो में जो चार प्रश्न उठाए गए और उनके अत्यधिक महत्वपूर्ण उत्तर दिए गए उनका अनुसरण करने से ही हमारा जीवन सार्थक हो सकता है क्योंकि ये ही दिव्य जीवन प्राप्त करने के सूत्र हैं। इनका अनुसरण करने वाला व्यक्ति ही देवता बनकर जीवन की समस्त उपलब्धियों को प्राप्त कर सकता है। ऐसे व्यक्ति का तो समूचा जीवन ही वेद के निम्न मन्त्र के समान एक यज्ञ ही बन जाएगा।

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः॥ (अथर्व-2-35-5)

ऐसा जीवन जीने वाला व्यक्ति कह सकेगा कि मैं मुख से वाणी से कान से और मन से हवन ही करता हूं। यह मेरा जीवन-यज्ञ जगत रचयिता परमात्मा ने विस्तृत किया है, इसमें सब देव, दिव्य भाव प्रसन्नतापूर्वक आवें.....समाविष्ट हों....।

उपरोक्त चारों उत्तरों में एक क्रमबद्धता है, जो व्यक्ति इस पृथिवी को या मानव जीवन को देवयजनि समझकर दिव्यता प्राप्त करने की दिशा में चलेगा वही यज्ञ और परोपकार के कार्यों को आत्मसात् करेगा और ऐसा करने से उसके भीतर अपार बल-वीर्य की वृद्धि होगी और वह परमात्मा की उपासना के मार्ग पर चलकर अपने अन्तिम लक्ष्य को भी प्राप्त कर लेगा।

सम्पादकीय.....

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब निरन्तर अग्रसर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पिछले कई महीनों से निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी शिक्षा संस्थाओं का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है हमें आशा है कि आने वाले दिनों में सभा और प्रगति करेगी। इस समय लगभग सभी आर्य समाजों व शिक्षा संस्थाओं के विवाद प्रायः समाप्त हो गए हैं। लुधियाना के आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल व आर्य सी.सै स्कूल तथा आर्य कालेज जो पिछले दिनों विवादों के घेरे में आए हुए थे अब इन तीनों संस्थाओं में सभा द्वारा बनाई गई प्रबन्ध समितियां कार्य कर रही हैं और अब वहां कोई विवाद नहीं है और इनका कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। आर्य समाज साबुन बाजार, लुधियाना की बिगड़ती हुई स्थिति को देख कर सभा प्रधान श्री हरबंस लाल जी शर्मा ने वहां तदर्थ समिति का गठन कर दिया था ताकि वहां का कार्य सुचारु रूप से चल सके। अब इस आर्य समाज का कार्य भी सुचारू रूप से चल रहा है। आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना ने 9-6-2002 को एक बृहद उत्सव करके आर्य समाज के कार्य को सक्रिय कर दिया है। जहां-जहां किसी प्रकार का कोई विवाद है उसे शीघ्र ही सभा अधिकारी दूर करने का प्रयास कर रहे हैं। आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब पंजाब में लगभग सभी आर्य समाजों ने वेद प्रचार का कार्य करना आरम्भ कर दिया है। गत दिनों जिला गुरदासपुर की सभी आर्य समाजों ने संगठित होकर पठानकोट में एक महा सम्मेलन व विशेष यज्ञ किया था तथा गत दिनों में कई आर्य समाजों ने अपने वार्षिक उत्सव किए। आर्य समाज हबीब गंज लुधियाना, आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना, आर्य समाज तलवाड़ा, धारीवाल, गुरदासपुर, आर्य समाज से. 22 चण्डीगढ़, नयां शहर, बंगा, फगवाड़ा, मोगा, कोटकपूरा, मेन बाजार पठानकोट, माडल टाऊन पठानकोट, बटाला, राजपुरा के उत्सव विशेष रूप से हुए। जालन्धर में आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर, माडल टाऊन, शहीद भगत सिंह नगर, अड्डा होशियारपुर गान्धी नगर-1 बस्ती दानिशमन्दा के उत्सव विशेष रूप से हुए।

हमें प्रसन्नता है कि आर्य समाजें अब सक्रिय हो रही हैं। इसी प्रकार से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी शिक्षा संस्थाओं का कार्य भी सुचारू रूप से चल रहा है। सारे पंजाब की सभी शिक्षा संस्थाएं सभा को अपना पूरा-पूरा सहयोग दे रही हैं। गत दिनों लुधियाना और जालन्धर की शिक्षा संस्थाओं की स्थिति ठीक नहीं थी परन्तु अब लुधियाना के आर्य कालेज, आर्य सी.सै. स्कूल, आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल, और जालन्धर के आर्य सी.सै. स्कूल एवं आर्य कन्या सी.सै. स्कूल अपना पूरा-पूरा सहयोग सभा को दे रहे हैं। अब इन सभी शिक्षा संस्थाओं में कार्य सुचारू रूप से चल रहा है।

गत दिनों गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार का शताब्दी समारोह मनाया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपना बहुत बड़ा सहयोग दिया है। सभा प्रधान श्री पं० हरबंस लाल जी शर्मा की प्रेरणा से हजारों की संख्या में पंजाब की आर्य समाजों से व शिक्षा संस्थाओं से बहुत सी बहनें व भाई गुरुकुल पहुंचे थे। पंजाब की सभी आर्य समाजों व शिक्षा संस्थाओं ने इस शताब्दी समारोह की सफलता के लिए अपना आर्थिक सहयोग भी दिया और अपने अधिकारियों व सदस्यों को लेकर हरिद्वार भी पहुंचे।

पंजाब में आर्य समाज का इस समय बहुत अच्छा कार्य हो रहा है परन्तु हमारी यह इच्छा है कि इससे भी अच्छा हो, हम पंजाब में एक बृहद समारोह भी करना चाहते हैं जिसमें पंजाब व पंजाब से बाहर के आर्य बन्धु व बहनें भी सम्मिलित हों। हमारी पंजाब की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह आगामी चार माह में अपने वेद सप्ताह रखें, सभा को इसके लिए अभी से लिखें ताकि उचित प्रबन्ध किया जा सके। इसके साथ ही अपने उत्सवों की भी तिथियां निश्चित करें। हम चाहते हैं कि इस वर्ष में पंजाब में ऐसी कोई आर्य समाज न रहे जिसका अपना उत्सव न हुआ है। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य वेद प्रचार है इस ओर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

—प्रिं० स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना का उत्सव

आर्य समाज साबुन बाजार (स्वामी श्रद्धानन्द बाजार) लुधियाना, पंजाब की एक प्रसिद्ध आर्य समाज है। इस आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने की थी ऐसी कहा जाता है। पिछले कुछ दिनो से इस आर्य समाज का कार्य ठप्प होकर रह गया था। गत कई वर्ष से इस आर्य समाज का न कोई उत्सव हुआ और न ही वेद सप्ताह हुआ। इस आर्य समाज द्वारा सभा के आदेशों की निरन्तर अवहेलना की जा रही थी। आर्य समाज की हालत भी बहुत खस्ता हो गई थी। गत दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री प हरबंस लाल जी शर्मा ने आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना की बिगडती हुई स्थिति को देखते हुए इसकी एक तदर्थ समिति बना दी थी। इस तदर्थ समिति के अधिकारियो ने तुरन्त अपना कार्य आरम्भ कर दिया और सबसे पहले आर्य समाज के भवन की मुरम्मत व सफेदी आदि करवाई और 9-6 2002 रविवार को एक बृहद उत्सव का आयोजन किया गया इसमे सभा अधिकारियो को भी आमन्त्रित किया गया। सभा वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदर्शन कुमार शर्मा, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, सभा कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री धर्मदेव जी इस उत्सव में पहुचे थे। मैं भी पठानकोट से चलकर लुधियाना पहुंचा। क्योंकि बहन राजेश शर्मा का आग्रह था कि मैं भी इस उत्सव मे अवश्य पहुंचूं। श्रीमती राजेश शर्मा जो जिला आर्य सभा लुधियाना व स्त्री आर्य समाज साबुन बाजार, लुधियाना की प्रधाना व आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की मन्त्री हैं ने विशेष रूप से इस उत्सव को सफल बनाने का प्रयास किया और स्वयं ही उन्होंने मंच संचालन भी किया और भजन भी सुनाए। आर्य समाज साबुन बाजार के प्रधान श्री रणवीर कुमार जी शर्मा, मन्त्री श्री सुशील कुमार मोदगिल, कोषाध्यक्ष श्री पूर्णचन्द, श्री ओम प्रकाश जी पाशी, श्री पूर्ण चन्द जी वधवा ने इस उत्सव को सफल बनाने के लिए बड़ा प्रयास किया।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस उत्सव मे लुधियाना की सभी आर्य समाजों के अधिकारी व सदस्यो ने भाग लिया। हमारे वयोवृद्ध नेता आय समाज हबीब गंज लुधियाना के प्रधान व आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपप्रधान श्री आशानन्द जी आर्य, आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना के प्रधान श्री ओम प्रकाश गुप्ता, मन्त्री श्री विजय सरीन, स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) की प्रसिद्ध कार्यकर्ता बहन जनक रानी आर्या, श्रीमती इन्दिरा शर्मा, आर्य समाज सिविल लाईन से बहन सरला जी, भाई रणधीर सिंह नगर से श्री वृजेन्द्र भण्डारी, चापापावल से श्री रामपाल सचदेवा, सोहने वाले से श्री कबीर चन्द, बैंक फील्डगंज से श्री रमेश सूद, बहन बाला गम्भीर, कोचाल प्वाइंट से श्री बलदेव राज, रायकोट से श्री राजेन्द्र कौड़ा, श्री अशोक कुमार, आर्य समाज किदवई नगर से श्री भरत सिंह जी, आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार, (दाल बाजार) से श्री रणवीर जी भाटिया, श्री नरेन्द्र जी भल्ला, श्री सन्त कुमार जी, श्री महेन्द्र पाल जी, श्री देवराज जी, श्री रणवीर पाहवा, श्री प्रदीप पाहवा, श्री अशोक भल्ला, स्त्री आर्य समाज साबुन बाजार की मन्त्री श्रीमती नीना बेरी कोषाध्यक्ष श्रीमती इन्दिरा होंडा तथा अन्य अधिकारी व सदस्यों ने भी इस उत्सव में भाग लिया। मेरे यहां लिखने का भाव यह है कि जिला लुधियाना की सभी आर्य समाजो के अधिकारी व सदस्य इस उत्सव में सम्मिलित हुए। लुधियाना की सभी शिक्षा संस्थाओ के अधिकारी व प्रिंसिपल भी वहां उपस्थित थे, आर्य कालेज के कई प्रोफेसर, आर्य स्कूल के प्रिं० श्री बलराज जी वर्मा, आर्य कालेज की प्रभारी श्रीमती सतीश शर्मा, गर्ल्ज स्कूल से श्रीमती कान्ता सूरी भी इसमें सम्मिलित हुई। पटियाला से भी कई सदस्य आए हुए थे।

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि लुधियाना की सभी आर्य समाजो के अधिकारी इस उत्सव में सम्मिलित हुए। सभी ने अपने संगठन का परिचय दिया। इस अवसर पर स्वामी पूर्णानन्द जिनको करनाल से विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था उनका बहुत ही प्रभावशाली प्रवचन हुआ और श्री योगराज शास्त्री के भजन हुए। श्री देवन्द्र नाथ जी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब ने अपने उद्बोधन में सभी को संगठित होकर चलने की प्रेरणा दी और कहा कि हमें अपने परिवारों को भी आर्य समाजी बनाना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने गत दिनो घोषणा की थी कि सभी आर्य समाजों के उत्सव व वेद सप्ताह होने चाहिए। कोई आर्य समाज ऐसी न रहे जिसका उत्सव न हो। प्रत्येक आर्य समाज के अधिकारियों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। मैं आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना के अधिकारियो को विशेष रूप से बहन राजेश शर्मा, प्रधान श्री रणवीर कुमार शर्मा व मन्त्री श्री सुशील मोदगिल को बधाई देता हू कि उन्होने थोड़े ही समय में आर्य समाज के उत्सव का सफल आयोजन किया। मेरी आय समाजों के अन्य अधिकारियों से भी प्रार्थना है कि वह भी शीघ्र अति शीघ्र अपने उत्सवों की तिथिया निश्चित करके इसकी सभा से स्वीकृति ले ले। सभा आपके उत्सवो के लिए उपदेशको का पूरा प्रबन्ध करेगी।

प्रिं० स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

आर्य भारत के मूल निवासी हैं

☐ ले० आचार्य डॉ० देवव्रत, गुरुकुल कुरुक्षेत्र पी.एच.डी. (प्राचार्य)

आर्य शब्द ऋ धातु से ण्यत् प्रत्यय होकर निष्पन्न होता है। इसका अर्थ होता है प्रगतिशील, श्रेष्ठ, ज्ञानसम्पन्न, सदा सन्मार्ग की ओर अग्रसर रहने वाला, परमानन्द को प्राप्त करने वाला इत्यादि। आर्य से विलोम अर्थ मे दस्यु शब्द है।

जब इस देश मे अंग्रेज आये तब उन्होंने सोचा कि इस देश पर शासन करना है तो इस देश की संस्कृति से यहां के मूल निवासियों को विमुख करना होगा। सामान्य लोगो को संभ्रमित करने के लिए आर्य, द्रविड़ जातियों के सिद्धान्तों की कल्पना लन्दन की रायल एशियाटिक सोसायटी के बन्द कमरे मे १ अप्रैल, १८६६ की सभा में की गई थी। इस सभा के अध्यक्ष एडवर्ड टॉमस ने चर्चा का प्रारम्भ करते हुए कहा-अक्सस नदी से आर्यों के आक्रमण की लहरे अस्त्यिनिया प्रान्त और हिन्दकुश मार्ग से नीचे उतरीं। प्रथम पंजाब तथा सरस्वती नदी के किनारे ब्राह्मण संस्थाओं ने तक्षशिला में संस्कृत व्याकरण रचा। जो वर्णमाला उन्होंने अरनियानि प्रान्त में पणि लोगों से प्राप्त की थी उसका विस्तार करने में उन्हें भोजपत्रों की प्राप्ति से बड़ी सहायता मिली। यह लिपि उत्तर भारत में चलती रही। बाद में इस लिपि को पाली लिपि ने अधिकृत कर लिया, जैसा कि अशोक के शिलालेखों से सिद्ध होता है। आर्य लोग अपनी भाषा के लिए कोई लिपि न खोज सके। वे जिस स्थान के सम्पर्क मे आए उसी की लिपि से काम चलाया। इस प्रकार पुरानी संस्कृत के स्थान पर नई संस्कृत आई और लिपि देवनागरी जो पुरानी भाषाओ की मूल लिपि थी अपनाई।

दक्षिण भारतीयो को अलग इकाई मानने की कल्पना एडवर्ड टॉमस ने १८६६ ई० मे की। एडवर्ड टॉमस ने तथा फाजल हेरास ने दक्षिण वालो के मस्तिष्क में यह अच्छी तरह बिठा दिया कि उत्तर वाले हिन्दी भाषायी तुम्हारे परम्परागत शत्रु हैं, जिन्होने तुम्हारे ऊपर आक्रमण करके क्रूर अत्याचारो द्वारा तुम्हे दक्षिण की ओर धकेल दिया।

वस्तुतः यह सिद्धान्त विशुद्ध काल्पनिक है। गत शताब्दी के साहित्य और पुरातात्त्विक सिद्धान्तों और उपलब्धियों में उसके लिए कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। नृवंश वैज्ञानिक सर जार्ज कैम्पवेल ने लिखा है कि नृवंश शास्त्र के आधार पर उत्तर और दक्षिण के समाज में कोई भेद नहीं है। द्रविड़ नाम की कोई जाति नहीं है। निःसन्देह दक्षिण भारत के लोग शारीरिक गठन, रीति-रिवाज और प्रचार, व्यवहार में केवल एक आर्यसमाज है।

विश्वविख्यात् इतिहासविद् श्री वाशम ने लिखा-इतिहास लेखकों ने मोहनजोदड़ों और हड़प्पा को द्रविड़ संस्कृति कहा है। मोहनजोदड़ो मे देखी गई कई धार्मिक बातें दक्षिण भारत की नहीं है। इन ही दोनों की खोपड़ियां एक-दूसरे से भिन्न हैं। इसलिए न कोई आर्य जाति है न द्रविड़ और हम भी ऐसा ही मानते हैं कि केवल एक मनुष्य जाति है।

आस्ट्रेलिया के आदिवासियों और दक्षिण भारत के तथाकथित द्रविड़ों के बहुत से रीति-रिवाजों में समानता है। यदि आस्ट्रेलिया के निवासी आर्य हैं तो द्रविड़ लोग आर्य क्यों नहीं?

कहा जाता है कि आर्यों के भारत प्रवेश से पूर्व भारत में जो द्रविड़ सभ्यता विद्यमान थी अब ईराक और भूमध्य सागर के तट पर विद्यमान प्राचीन सभ्यता या यूरोप की आइबिरीयन की सभ्यता के समकक्ष थी। इसे संसार की मूलभूत सभ्यता कहा जाता है। आर्य लोग इस सभ्यता के साथ आक्रान्ता के रूप में सम्पर्क में आए। जिस प्रकार यूरोप में जाकर आर्यों ने आइबिरीयन सभ्यता को ध्वस्त कर दिया। जैसे पश्चिमी एशिया की मूल सभ्यता का नाश किया। वैसे ही भारत में आर्यों ने द्रविड सभ्यता को परास्त किया। भारत में आर्यों का प्रवेश डॉ० हार्न अली के अनसुार दो धाराओं में हुआ। पहली धारा उत्तर-पश्चिम से प्रविष्ट होकर गंगा तक फैल गई और दूसरी धारा मध्य हिमालय के रास्ते भारत मे प्रवेश करके पहले से बसे हुए आर्यों को पूर्व, पश्चिम और दक्षिण की ओर धकेल कर बस गई।

(क) वास्तव में ये स्थापनाएं कल्पना प्रसूत होने से अटकल, अनुमान, सम्भावना आदि पर आधारित हैं। आर्यों के इतिहास में कहीं इस बात का संकेत नहीं है कि वे [illegible] के बाहर से आए। आर्यों के साहित्य से नहीं अपितु तथाकथित मूल निवासियों की किसी भी कथा से यह सिद्ध नहीं होता कि आर्य लोग कहीं बाहर से आए और उन्हें मारपीट कर अपने घर से खदेड़ दिया।

(ख) पाश्चात्य मतानुसार जिन आर्यों ने ऋग्वेद जैसा महान् ग्रन्थ लिखा। उन्होंने उसमें अपनी इतनी भारी विजय का कहीं उल्लेख तक न किया। इस धरती तल पर ऐसी कौन सी सभ्य जाति है जिसने अपनी विजय गाथा न लिखी हो। यदि लंका विजय का उल्लेख रामायण में और पाण्डवों की विजय का विवरण महाभारत में यहां के विद्वान् कर सकते थे तो आर्यों ने भारत के तथाकथित मूल निवासियों पर अपनी महान् विजय का उल्लेख अपने ग्रन्थों में क्यों नहीं किया? किसी भी सुसभ्य जाति के लिए सैंकड़ों, हजारों, लाखों वर्षों में भी स्वदेश को भूलना आसान नहीं।

(ग) यदि आर्य लोग किन्हीं विशेष परिस्थितियों में अपना देश छोड़कर भारत में आए होते तो यह कैसे सम्भव था कि वे उसका नाम भूल जाते। प्राचीन साहित्य में ही नहीं अनुश्रुतियों तक में कहीं उसकी चर्चा सुनने में नहीं आती। सत्य बात यह है कि आर्य बाहर से नहीं आए और न यहां के किसी मूल निवासी को खदेड़ा। यह पाश्चात्यों की एक कूटनीतिक चाल थी।

(घ) यदि आर्यों से पहले कोल, द्रविड आदि यहां के मूल निवासी होते तो उनकी भाषा में इस देश का नाम कुछ न कुछ अवश्य रहा होगा। परन्तु उनकी भाषा में भी आर्यावर्त, ब्रह्मावर्त या भारतवर्ष से पहले-इस देश का कोई नाम नहीं मिलता। इससे यह बात असत्य सिद्ध होती है कि यहां आर्यों से पूर्व अन्य लोग रहा करते थे क्योंकि जहां मनुष्य रहते हैं उस निवास-स्थल का नाम कुछ न कुछ अवश्य रखते हैं।

विक्रम विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष पद्मश्री विष्णु श्रीधर वाकणकर मोहनजोदड़ों में प्राप्त सिन्धु घाटी सभ्यता से सम्बन्धित मुद्राओं को पढ़कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि सिन्धु घाटी की लिपि [illegible] है और उसका मूल आर्य सभ्यता से है। सिन्धु घाटी की सभ्यता आर्येतर है। विद्वानों की इस मान्यता का उन्होंने बलपूर्वक खण्डन किया है।

सर्वप्रथम डॉ० फतेहसिंह ने सिन्धु लिपि को सफलतापूर्वक पढ़ा था। सन् १९६० तक उन्होंने २५०० मुद्राएं पढ़ ली थीं जिनके आधार पर राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान जोधपुर से प्रकाशित पत्रिका स्वाहा में कई लेख लिखे थे। डॉ० फतेहसिंह के शोध पर आधारित एक लेख डॉ० प्रभाकर पाठक ने हिन्दुस्तान टाइम्स में उनके समर्थन में लिखा था इसके बाद इसी पत्र में कैम्ब्रिज के डॉ० आल्चिन ने सम्पादक के नाम पत्र लिख कर उनको सावधान किया था कि डॉ० सिंह की खोज से तो एक दिन आर्य और द्रविड़ सभ्यता का भेद ही मिट जाएगा। इस समय पुरातत्व, भूगर्भ शास्त्र, इतिहास, लोकवार्ता आदि के विशेषज्ञ अनेक विद्वानो के सहयोग से चल रहा शोध कार्य जिस दिन पूरा हो जाएगा उस दिन आर्यों के विदेशी आक्रान्ता होने की मान्यता जड़ मूल से ही समाप्त हो जाएगी। युगद्रष्टा जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा था-किसी संस्कृत ग्रन्थ व इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आए और यहां के जंगलियों से लड़कर जय पा के उन्हे निकाल के इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का लेख कैसे मान्य हो सकता है।

विदेशी होते हुए भी म्यूर ने स्वामी जी की पुष्टि की थी। इसी मत का बलपूर्वक समर्थन विश्वविख्यात इतिहासवेत्ता एलिफिंग्सटन ने इन शब्दों में किया-यह निश्चित है कि न मनुस्मृति में, न वेदों मे और न मनुस्मृति से प्राचीन किसी अन्य संस्कृत ग्रन्थ मे बाहर मे आने से पूर्व आर्यों के भारत से बाहर अन्य किसी देश में रहने का उल्लेख है।

इतना ही नहीं मिस्र, बैबिलोनिया, सीरिया, चीन, यूनान और अरब के किसी भी पुराने

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मेरे 86 वर्ष पूरे हो गए और 87वां वर्ष आरम्भ हो रहा है

ले० श्री [illegible] आर्य, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर

मैं जून में 86 वर्ष का हो गया हूं और 87वां वर्ष आरम्भ हो गया है। मेरा जन्म आर्य समाजी परिवार में न होकर एक पौराणिक परिवार में 1916 में [illegible] (पाकिस्तान) शहर के जिला स्यालकोट के समीप एक बहुत बड़े कस्बे मीरावाल में हुआ। जैसा कि हर व्यापारी एक वर्ष बीत जाने के पश्चात् यह पड़ताल करता है कि उसने इस वर्ष में क्या खोया और क्या पाया है उसी प्रकार मैं भी देखता हूं कि मैंने इस वर्ष में क्या कमाया और क्या गंवाया है। परमात्मा ने मनुष्य की आयु कम से कम 100 वर्ष आधारित की है। यह वेद के अनुसार है। यदि हम 100 वर्ष आयु पूरी नहीं कर सके तो इसमें हमारी कमी है। वेद गलत नहीं कहता वेद ने तो ठीक कहा है कि मनुष्य की आयु एक सौ वर्ष होगी। वेद ने मनुष्य की आयु को चार भागों म विभाजित किया है। ब्रह्मचारी आश्रम 25 वर्ष तक, 25 वर्ष से 50 वर्ष तक गृहस्थाश्रम, 50 वर्ष से 75 वर्ष तक वानप्रस्थ आश्रम और 75 से 100 वर्ष तक सन्यासाश्रम। ईश्वर मनुष्य को कर्म के आधार पर जन्म देता है। यदि हमने कुछ बुरे कर्म किये हैं तो आयु कम भी हो सकती है। मेरे 86 वर्ष पूरे हो गए हैं और अभी मेरे 14 वर्ष बाकी हैं। यदि इससे पहले ही मेरा जीवन समाप्त हो जाता है तो यह मेरी किसी गलती के कारण होगा। हम प्रतिदिन दोनों समय संध्या द्वारा यह प्रार्थना करते हैं कि हम 100 वर्ष व्यतीत करें। मैं 100 वर्ष तक कानों से सुनता रहूं, मैं 100 वर्ष तक आंखों से देखता रहूं। और 100 वर्ष तक मेरे सारे अंग अच्छी तरह से काम करते रहें। मुझ पर अभी तक प्रभु की कृपा है क्योंकि अभी तक मेरी आंखें ठीक प्रकार से कार्य कर रहीं हैं, मेरे कान अच्छी तरह से सुन रहे हैं और मेरा हर अंग अच्छी प्रकार से अपना काम कर रहा है। हम यह भी कहते हैं कि मैं 100 वर्ष तक किसा के अधीन न रहूं। मैं 86 वर्ष तक ठीक ठाक हूं और किसी के अधीन नहीं हूं। आशा है आगे भी ठीक रहूंगा। कई लोग 40-50 वर्ष तक अपनी आयु को पूरी नहीं जी पाते और अपनी आयु समाप्त कर बैठते हैं। उनका भोजन शुद्ध नहीं होता, उनका खान पान सात्विक नहीं होता। उनका भोजन स्वास्थ्य को खराब करता है जैसा कि मांस, अंडा, शराब, सिगरेट यह सब नशीली वस्तुएं स्वास्थ्य को खराब करती हैं। यह सब बातें वेद के विरुद्ध हैं। मैं यदि आगे 14 वर्ष पूरे नहीं करता तो मैं किसी न किसी बात पर वेद के विरुद्ध अवश्य हो जाऊंगा। किसी को भी अपने जीवन के बारे में पता नहीं होता, उसी तरह मुझे भी पता नहीं है कि मेरा शेष जीवन कितना है। इसलिए मैं अभी से अपने परिवार वालों से यह कहना चाहता हूं कि मेरी मृत्यु के समय पर जो दीया-बत्ती किया जाता है वह न करें। यह प्रथा गलत है। जीव जब निकलता है उस समय किसी को कोई पता नहीं होता कि वह कहा गया और जीव निकल कर दूसरे किसी गर्भ में चला जाता है। उस समय गायत्री का जाप ही करना चाहिए। उसके बाद संस्कार भी वैदिक रूप से ही किया जाए। जैसा स्वामी जी ने लिखा है कि उस समय देसी घी डालें उस समय देसी घी होता था इसलिए इसकी कीमत बहुत कम होती थी। मनुष्य का जितना भार हो उसके वजन का घी व हवन सामग्री होनी चाहिए। इस समय देसी घी की कीमत 120 रुपए प्रति किलो है इसलिए कम से कम 15 किलो देसी घी और 20 किलो सामग्री अवश्य ही होनी चाहिए। आम तौर पर लोग क्या करते हैं कि जब संस्कार किया जाता है तो थोड़ा सा वनस्पति घी और 200 ग्राम हवन सामग्री डाल देते हैं और आग लगा दी जाती है। आज तो आर्य समाजी भाई भी जो वैदिक रीति से संस्कार करते हैं वह पांच किलो सामग्री तथा एक किलो देसी घी से संस्कार कर रहे हैं। यह भी गलत है। संस्कार के लिए जो मंत्र हैं वह लगभग 125 मंत्र हैं। यह ठीक है कि इस समय देसी घी मंहगा है परन्तु फिर भी कम से कम 15 किलो देसी घी और कम से कम 20 किलो हवन सामग्री अवश्य होनी चाहिए। जब मृतक को श्मशान घाट में ले आया जाता है तो पहले शव को बाहर रख दिया जाता है और जितनी भी बहुएं हों उनको बोल दिया जाता है कि शव का चक्कर लगा कर उसके पांवों को हाथ लगाया जाए। यह भी गलत प्रथा है उस समय केवल गायत्री महामंत्र का पाठ किया जाए। कई लोग मृतक के लड़के को घड़ा देकर उसके तीन चक्कर लगाते हैं और फिर सिर की तरफ घड़ा फोड़ दिया जाता है। यह प्रथा भी बिल्कुल गलन है। यह सारी बातें वेद के विरुद्ध हैं। उसके पश्चात् चार दिन के बाद अस्थि चुनी जाती है और अस्थि हरिद्वार जा कर बहा दी जाती है। हरिद्वार जाना जरूरी नहीं है। अस्थि कहीं भी पानी में बहाई जा सकती है। अन्तिम शोक दिवस पर घर में हवन यज्ञ अवश्य किया जाना चाहिए । नारायण स्वामी जी द्वारा लिखी एक पुस्तक मृत्यु और परलोक है उसकी कथा घर में रखी जा सकती है। आजकल आम लोग गरुड़ पुराण की कथा रखते हैं जोकि वेद के विरुद्ध है। अन्तिम शोक दिवस पर जो स्टेज बनाई जाती है उस पर मृतक की फोटो रख दी जाती है। उस चित्र पर लोग हार चढ़ाते हैं और अपना माथा टेकते हैं और वहां पैसे भी चढ़ाते हैं। यह प्रथा भी गलत है। ऐसे काम हमारे कई आर्य समाजी भाई भी करते हैं। इसलिए मेरी सभी आर्य समाजियों से प्रार्थना है कि ऐसी बातों को न किया जाए। इसलिए हम सभी को प्रति वर्ष अपने जीवन की पड़ताल करनी चाहिए कि हमने इस वर्ष में क्या अच्छा काम किया है। किसी को नुकसान तो नहीं पहुंचाया। और आगे भी जीवन मे अच्छे भलाई वाले काम करते रहेंगे।

धर्म क्या है कानून क्या है

☐ ले० श्री गोपाल भिक्षु जी, कच्ची छावनी, जम्मू

धर्म परमात्मा बनाता है। कानून इन्सान बनाता है। कानून बदलते रहते हैं, धर्म नहीं बदलता। कानून से हर बार गल्ती रह जाती है क्योंकि इसे इन्सान बनाता है और इन्सान तो गलतियों का पुतला है। परमात्मा के बनाये हुए धर्म में कोई गलती नहीं हो सकती। इन्सान धर्म को छोड़ नहीं सकता केवल भुला सकता है। जैसे वृक्ष अपनी जड़ों को भूल सकता है छोड़ नहीं सकता। जब राजा को अपना कानून बनाने की जरूरत पड़ती है तो राजा लोग अपना धर्म गुरु बनाते थे। धर्म गुरु राजा को चलाते थे और राजा हकूमत चलाता था। कानून इन्सान के लिए और देश के लिए मजबूरी है परन्तु धर्म जरूरी है। कानून जरूरत के अनुसार बनाया जाता है। कानून बार-बार बदलता रहता है। धर्म सदा से एक है एक ही रहेगा जैसे वैदिक धर्म सदा से है सदा रहेगा। धर्म चोर को नहीं पकड़ता चोरी के विचारो पर रोक लगाता है। धर्म चोरी के विचारों को समाप्त करता है ताकि चोरी हो ही न सके। परन्तु कानून चोरी के विचारों को नहीं पकड़ सकता केवल चोर को पकड़ सकता है। आप अदालत में जज के सामने ब्यान दे सकते हैं कि मैं हर रोज अपने विचारों से 10 चोरियां करता हूं। जज कहेगा जब तुम्हारे विचार करित बनेंगे तब कानून तुम्हे पकड़ेगा। कानून चोर को जेल में बंद करता है। चोर कैद पूरी करके फिर चोरी ही करता है। चोरी के विचार नहीं बदलते, वही चोर अगर किसी महात्मा के पास कुछ देर रहे तो उसके चोरी के विचार बदल जायेंगे। एक सम्राट के सभी जज जंग में मारे गए एक रिटायर्ड जज महात्मा बन कर जंगल में कुटिया बनाकर रहता था। सम्राट ने उस जज से कहा आप देश की सेवा करें। जज की कुर्सी पर बैठ कर फैसले करें जज मान गया। जज ने जो पहला फैसला दिया वह यह था कि चोर को एक साल की सजा और जिसकी चोरी हुई उसे दो साल की सजा। सम्राट बड़ा हैरान हुआ और बुला कर पूछा कि तुमने यह कैसा फैसला दिया है। जज ने कहा कि यह फैसला धर्म के अनुसार है कानून के अनुसार नहीं। क्योकि जिसके घर चोरी हुई है उसने गांव का सारा धन इक्ट्ठा कर लिया है लोग चोरी नहीं करेगे तो और क्या करेंगे। अब सम्राट को भी खतरा हो गया कि जज तो अब मेरे खिलाफ भी फैसला कर सकता है। सम्राट ने उसे निकाल दिया। इसलिए धर्म और कानून का कोई मेल नहीं फिर भी कानून की मजबूरी है और धर्म जरूरी है। याद रखो धर्म से प्यार का जन्म होता है और कानून से विरोध का जन्म होता है।

आर्य समाज फाजिल्का का चुनाव

वर्ष 2002-03 के लिए आर्य समाज फाजिल्का के अधिकारियों का चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

संरक्षक:–डॉ० सुभाष चन्द्र जसूजा, श्री मुरारी लाल भुसरी, प्रधान:–डॉ० अमर लाल बावला, उपप्रधान:–उमेश चन्द्र कुक्कड़, प्रफुल्ल चन्द्र नागपाल पत्रकार डॉ० नवदीप जसूजा, मन्त्री:–सुशील कुमार शर्मा, उपमन्त्री:–महेन्द्र कुमार शर्मा, वित्त मन्त्री:–श्याम लाल आर्य, प्रचार मन्त्री:–लीला राम सेठी, स्टोर इन्चार्ज:–चौ० शिव चरण आर्य, लेखा निरीक्षक:–श्री किशोर चन्द पुन्छी।

अन्तरंग सभा के सदस्य:–विद्या सागर भुसरी, ओम प्रकाश झींब, बनवारी लाल लूना, लक्ष्मी नारायण यादव, उमेश कुमार गावड़ी, हरबन्स लाल आर्य।

उत्कल प्रान्तीय वनवासी आर्य महासम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

उड़ीसा के कश्मीर कहे जाने वाले परन्तु गौ हत्या के लिए बदनाम ईसाइयों के षड्यन्त्र से आक्रान्त कोरापुट जिले में आदिम गुरुकुल आश्रम, कुन्दुली (बाजार) के विशाल मैदान में 25, 26, 27 मई को 108 वनवासी कुमारियों की कलशयात्रा के साथ पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी (पूर्व सांसद) के करकमलों से ओ३म् ध्वज उत्तोलन पूर्वक वनवासी आर्य महासम्मेलन एवं महायज्ञ पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। महायज्ञ के मुख्य यजमान स्थानीय विधायक श्रीयुत् जयराम पांगी बने। कार्यक्रम प्रारम्भ होते ही यज्ञ एवं समारोह में भाग लेने वालों की भीड़ उमड़ पड़ी। सायंकाल तक लगभग 10 हजार वनवासी जनता सम्मेलन में भाग लेने के लिए पहुंच गई थी, यद्यपि विशाल उपस्थिति को देखते हुए पहले ही पांच यज्ञकुण्ड बनाये गये थे परन्तु श्रद्धालु लोगों का यज्ञ में भाग लेने का उत्साह अपूर्व था।

महोत्सव का उद्घाटन उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी ने किया। उड़ीसा के प्रसिद्ध विद्वान् ई. प्रियव्रत दास, उत्तर प्रदेश से पधारे प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क एवं उड़ीसा के श्री वैरागी [illegible] साहु की भजन पार्टियों ने तो अपने कार्यक्रमों से जनता को मोहित कर लिया। यज्ञ का संचालन श्री पं. विशिकेसन जी शास्त्री ने अत्यन्त कुशलता से किया। शास्त्री जी, श्री विश्वबन्धु शास्त्री एवं गुरुकुल के स्नातक आचार्य आनन्द कुमार जी बीच-बीच में वेदोपदेश द्वारा लोगों को मन्त्रमुग्ध करते रहे।

यहां पुनर्मिलन का भी विशाल कार्यक्रम होना था, परन्तु कलेक्टर के ईसाई होने और एस.पी. के मुसलमान होने से उन्होंने षड्यन्त्र करके इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया। अतः इस क्षेत्र में अशान्ति न फैले यही सोचकर आयोजकों को यह कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा।

–सुदर्शनदेव आर्य

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (उ.प्र.)
प्रवेश आरम्भ

सन् 1909 में स्थापित भारत का सर्वप्रथम कन्या गुरुकुल शिशु (नर्सरी) से अलंकार (बी.ए.) तक की निःशुल्क शिक्षा एवं अनिवार्य आश्रमवास। ब्रह्मचर्य जीवन। प्रारम्भ से उच्च स्तर तक हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा। वेद, दर्शन, संस्कृत नैतिक शिक्षा के साथ-साथ गणित, विज्ञान, गृहविज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मनोविज्ञान. संगीत, गायन, वादन, कम्प्यूटर की भी शिक्षा नगर से दूर उत्तम स्वास्थ्यप्रद जलवायु। देशी घी दूधादि जलपान सहित भोजन व्यय सहायतार्थ शिशु से पंचम श्रेणी तक 280 रुपए तथा षष्ठ (6) से अलंकार (15) तक 300 रुपए मासिक। प्रवेश हेतु 60 रुपए भेजकर नियमावली मंगवायें।

–कमला स्नातिका, आचार्या

[illegible] योग शिविर

27 मई से [illegible] 2002 तक आर्य युवक परिषद [illegible] की ओर से आर्य समाज [illegible] गुरु में योगासन कैम्प का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ० ओम प्रकाश आर्य द्वारा योगासनों का [illegible] दिन तक लगातार अभ्यास करवाया गया। कैम्प के शुभारम्भ पर मुख्य रूप से आर्य युवक परिषद अमृतसर के अध्यक्ष डॉ० नवीन आर्य जी एवं डी.ए.वी. कालेज के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० कुलदीप आर्य अमृतसर से पधारे। योग के द्वारा अनेक प्रकार के रोगों से बचा जा सकता है क्योंकि योग ही रोगों के निदान की अति उत्तम औषधि है। ये विचार डा. नवीन ने [illegible] प्रकट किए। प्रो० कुलदीप आर्य ने [illegible] से शरीर में [illegible] की [illegible] तथा शारीरिक [illegible] और आत्मिक [illegible] की प्राप्ति होती है। तत्पश्चात् अष्टांग योग का संक्षिप्त परिचय देते हुए डॉ० ओम प्रकाश आर्य ने प्राणायाम [illegible] करवाये। सभी [illegible] गुरु के आर्य युवकों ने कैम्प में बड़े उत्साह से भाग लिया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में क्रमशः स्वतन्त्र कुमार, कमल पठानिया, राहुल पठानिया, वरिन्द्र, रमन तथा नवनीत इत्यादि कार्यकर्ताओं ने विशेष रूप में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

आर्य भारत के [illegible]

(पृष्ठ 4 का शेष)

इतिहासकार ने इस बात का संकेत नहीं किया कि भारत में आर्य लोग कहीं बाहर से आकर बसे थे।

सर्वप्रथम जिस देश में मानव का प्रादुर्भाव हुआ प्राचीन भारतीय साहित्य में उसका नाम देवलोक बताया है। शतपथ ब्राह्मण में–उत्तरो वै देवलोकः अर्थात् उत्तर ही देवलोक है। यह उत्तर कैलाश मानसरोवर के आसपास का क्षेत्र है। इसी क्षेत्र में ही मानव जाति का प्रादुर्भाव हुआ था। यही आर्यों का मूल अभिजन [illegible] था। कालान्तर में यहीं से आर्यजन [illegible] हिमालय की [illegible] उत्तर के पश्चिमी और दक्षिणी मैदान प्रदेश में आ गए तब उस स्थान का आर्यावर्त एवम् भारतवर्ष नाम प्रचलित हुआ।

वराहमिहिर ने अपनी बृहत् संहिता में लिखा है–

भारतवर्षे मध्याद्प्रागादि विभक्तिः देशाः [illegible] लङ्का कालाजिनसौरकीर्ण तालिकटाः। अर्थात् भारत वर्ष के मध्य से पूर्वादि देशों का विभाग है और दक्षिण में लंका, कालाजिन, सौरकीर्ण तथा तालीकट है।

महाभारत में लिखा है कि देविका पश्चिमे पार्श्वे मानसं सिद्धसेवितम्। अर्थात् देविका के [illegible]स के पश्चिमी किनारे पर मानस है। वहीं पर मनुष्यों की उत्पत्ति हुई थी। महर्षि दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा था–मनुष्यों की आदि सृष्टि त्रिविष्टप अर्थात् तिब्बत में हुई और आर्य लोग सृष्टि के आदि में कुछ काल पश्चात् तिब्बत से सीधे इसी भारत में आकर बसे। इसके पूर्व इस देश का कोई भी नाम न था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे।

[illegible] के महान् सन्त एवम् विचारक [illegible] ने [illegible] लिखा है [illegible] भारत ही है। [illegible] भी भारत स्तुति का कारण स्पष्ट करते हुए [illegible] लिखा है–भारत [illegible] संस्कृति [illegible] की जननी है। [illegible] हमारे गणित की जननी, बुद्ध के माध्यम से ईसाइयत में निहित आदर्शों की जननी, ग्राम पंचायत के माध्यम से स्वायत्त शासन और लोकतन्त्र की जननी है। वास्तव में भारत माता अनेक रूपों में हम सब की जननी है।

इस प्रकार जिस भारत को विश्वभर के आदि देश होने का गौरव प्राप्त है उसका आर्यों का आदि देश होना तो स्वतः सिद्ध है।

"सीको घड़ियां, सत्य साईं बाबा और डॉ० भगवन्थम् वैज्ञानिक"

(झूठ का पर्दा कैसे फाश हुआ)

□ ले० आचार्य आर्य नरेश वैदिक गवेषक उद्गीथ साधना स्थली हिमाचल-173101

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने आज से लगभग 125 वर्ष पूर्व वैदिक आर्य संस्कृति की रक्षा हेतु अपना कार्य प्रारम्भ करते हुए अपने सुयोग्य गुरु ब्रह्मऋषि स्वामी विरजानन्द जी दण्डी को यह वचन दिया था कि वे जीवन भर वैदिक, संस्कृति का प्रचार और उसके विरुद्ध पाखण्ड का सदा खण्डन करते रहेंगे। अतः उन्होंने वेदानुसार चेतन, निराकार भगवान, उसके वेद ज्ञान, उसकी प्राप्ति हेतु यज्ञ के विधान, तदनुसार संस्कारी सन्तान तथा राष्ट्र हित बलिदान में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। उन्हें इस बात की तनिक भी चिन्ता न की कि अनाड़ी व पाखण्डी, धनवान, पौराणिक विद्वान् तथा देश पर राज करने वाले शक्तिशाली अधिकारी जन क्या प्रतिक्रिया करते हैं। वे अपने कार्य में दिन रात लगे रहे और अपने गुरु को दिए गए वचन (व्रत) के अनुसार उसी का पालन करते हुए पाखण्डियों, गोरों के गुलाम पूंजीपतियों, पौराणिक-विद्वानों व अंग्रेजी राज नेताओं द्वारा दिए गए विष से बलिदान हो गए।

विश्वानि दुरितानि मन्त्र उन्हें इसलिए ही प्यारा था क्योंकि इसके प्रथम भाग में खण्डन तथा द्वितीय भाग में मण्डन का विधान है। यह कटु सत्य है कि गन्दगी को हटाए बिना सफाई हो ही नहीं सकती अर्थात् पाखण्डों को निकाले बिना कोई आर्य या वैदिक धर्मी नहीं कहला सकता। पर अत्यन्त दुःख का विषय है कि गत वर्षों से कुछ तथाकथित सभ्य विद्वान् व विशिष्ट समझे जाने वाले स्वार्थी तथा लोभी नेताओं और व्यापारियों ने एक ऐसा वातावरण बनाया है कि जिसमें झूठ को झूठ व पाखण्ड को पाखण्ड कहना असभ्य लोगों का कार्य है। अर्थात् यदि कोई सच्चा ऋषिभक्त धार्मिक व्यक्ति किसी गलत सिद्धान्त या पाखण्ड का खण्डन करता है तो उसे चुप रहने के लिए मजबूर किया जाता रहा है। अब समाज में एक ऐसा फैशन बना दिया गया है कि जो झूठ या पाखण्ड अथवा वेद विरुद्ध चमत्कार का खण्डन नहीं करता वही सबसे सभ्य व योग्य अथवा विद्वान् व्यक्ति है।

ऐसा वातावरण इसलिए बनाया गया है कि इससे प्रत्येक व्यक्ति को सन्तुष्ट करके उससे वोट तथा नोट बिना नाराजगी के लिए जा सकें। बड़े-बड़े स्वार्थी नेताओं और सेठों की यही नीति संसार में प्रचलित है। सो यहां भी पैर पसार गई। ऐसी सामाजिक नीति बन जाने से गलत नेताओं को वोट का लाभ हुआ और लोभी धनाढ्यों को नोट का लाभ हुआ पर पाखण्ड तथा पाखण्डियों का खण्डन रुक जाने से भारत की संस्कृति में निरन्तर खोट ही खोट का विकास हुआ। आज आप सम्पूर्ण भारत में भ्रमण कर देख लीजिए शायद ही कोई विरला युवक या युवती हो जो कि चेतन (जीवित) भगवान, सच्चे धर्म, वेद ज्ञान, सच्ची पूजा, यज्ञ के अनुष्ठान और सच्चे समय व्यक्ति की पहचान, संस्कारी सन्तान के रहस्य को जानता हो। आज देश का आम व्यक्ति जो भगवान तथा इन्सान में भी भेद नहीं जानता गीता, वेद तथा उपनिषद तथा रामायण में क्या अन्तर है उसे कुछ भी ज्ञान नहीं। श्री राम, श्री कृष्ण, ऋषि व्यास, ऋषि दयानन्द तथा आज के तथाकथित तीनों ऐषणाओं से युक्त बाबाओं या गुरुओं में क्या अन्तर है वे बिल्कुल नहीं जानते। सामान्य जनता तो आज इन मदारियों को अवतार मानती है। यही कारण है कि इतने सारे महात्माओं के रूप में इन मदारियों के होते हुए भी आज देश घोर पतन की ओर जा रहा है।

मदारी और मदकारी महात्मा:- मदारी तो बच्चे के शरीर को जमीन से ऊपर हवा में बिना सहारे के लटकाते हैं, बिना खम्भे के रस्सी को आकाश में खड़ा करके उस पर एक बच्चे को चढ़ाते हैं, हवा में से अनेक वस्तुओं को पैदा करते हैं तथा यही कहते हैं कि "माई-बाप मैं कोई चमत्कारी पुरुष नहीं अपितु यह सब कुछ मेरे हाथ की सफाई और आप लोगों की नजरबंदी का परिणाम है।" पर अत्यन्त दुःख तथा आश्चर्य का विषय है कि वैदिक ज्ञान व सच्चे ईश्वरीय वेद विज्ञान को लाने एवं राष्ट्रघाती विदेशी संस्कृति को हटाने के अभियान बिना ही कुछ लोग मदारियों के समान खेल दिखाकर उसे चमत्कारों की संज्ञा देते हैं। इन्हीं चमत्कारों से फिर वे महापूज्य महात्मा कहला कर देश की भोली-भाली जनता को ठग कर पाखण्ड के गर्त में फंसाते हैं फिर इस भीड़ को देखकर बड़े-बड़े नेता और पूंजीपति भी उनके चरण चुम्बन से अपनी कुर्सी तथा धन राशि की रक्षा हेतु उन्हें अपना गुरु बना लेते हैं। मैं भी साई-बाबा को अपना जादुई गुरु बना सकता हूं यदि वह हमारे आश्रम हेतु एक मजबूत बांस की तीन फुट लम्बी झाड़ू अपनी करामात से निकाले पर ऐसा वह कभी नहीं कर सकेगा। क्योंकि मदारी लोग वही चीज निकालते हैं जो उनके हाथ में छिप जाती है।

इस प्रकार प्रसिद्धि प्राप्त कर लेने से देश की भीड़ से प्राप्त होने वाले धन की उनके पास फिर कुछ कमी नहीं रहती। वे अपने करोड़पति भक्तों को प्रभावित करने हेतु उन्हें हीरे व सोने का लाकेट भेंट करते हैं। क्योंकि किसी कार्य की सिद्धि हेतु हर व्यक्ति पुरुषार्थ करता है सो जिसका कार्य हो जाता है उसका श्रेय 'बाबा' को बिना कारण ही चला जाता है पर जिन का काम नहीं होता वे ऐसा प्रचार नहीं करते अतः बाबा की इज्जत बची रहती है।

आज हमें अत्यन्त दुःख से लिखना पड़ रहा है कि भारत के माने हुए कुछ आर्य धर्मी भी बाबा के चमत्कारों से प्रभावित होकर उसके आश्रमों के चक्कर काट रहे हैं। महर्षि दयानन्द का नाम लेने वाले इन लोगों को फिर से विचारना चाहिए कि क्या ऐसा करना महर्षि दयानन्द या वेद की मर्यादा के अनुसार उचित है ? इसमें दो मत नहीं कि आज देश में अनेकों व्यापार करने वाले करोड़ों पति या अरबों पति लोग विशेष महात्मा या सिद्ध पुरुष न होते हुए भी अनेकों शिक्षण संस्थाएं चला रहे हैं। क्या उनके इस एक पक्षीय कार्य को ही देख कर शेष उनके सब पाप माफ करके अपना गुरु बना लेना चाहिए। क्या ऐसे लोगों की मात्र विद्यालय या महाविद्यालय चला देने से ही महिमा-मण्डित करके उन्हें पूजा के योग्य समझना चाहिए?

आज देश में बड़े-बड़े बूचड़खाने चलाने वाले स्मगलिंग करने वाले, मुर्गी खानों के मालिक, दिन रात गौवों को अपने ट्रकों में ढोने वाली रोड लाईन्स के मालिक, ब्लू फिल्मों को बनाने वाले, देश में सबसे बड़ी शराब बनाकर बेचने वाले, कर्नल मोहन जी को भी महात्मा कहकर गुरु बना लिया जाये? क्योंकि ये सब लोग भी अच्छी शिक्षण संस्थाएं चला रहे हैं। आज से कुछ वर्ष पहले कर्नल मोहन मालिक मोहन मीकिन (मोहन नगर) ने मुझे भेंट में एक अच्छी राशि दी। उसे लेने के लिए मेरी आत्मा ने इन्कार कर दिया। मैंने वह धन राशि वापिस करते हुए उन्हें कहा था मोहन जी इसमें दो मत नहीं कि स्कूल और अस्पताल चलाने का कुछ अच्छा कार्य भी करते हैं पर क्या आप अपने इस शराब बनाने वाले कार्य को अच्छा कहेंगे ? क्या दो सौ बिस्तरों का अस्पताल और विद्यालय चलाकर शराब का पाप छिप सकता है ? क्या आप नहीं जानते कि शराब को पीकर आज हजारों व लाखों लोग एक्सीडेंटों से, झगड़ों से तथा बीमारियों से मरते हैं। अनेकों पिताओं के शराब पीने के कारण न जाने कितने बच्चे अनाथ और कितनी बहनें विधवा हो जाती हैं। कितनी ही पत्नियां अपने पतियों के शराब न छोड़ने के दुःख में आत्म हत्या कर लेती है। कितने ही मां-बाप शराबी बेटों से दुःखी होकर दम तोड़ देते हैं। भारत-पाक सीमा पर हुसैनी वाला में जब देश के अनाड़ी सेना अधिकारी कॉक्टेल पार्टी में व्यस्त थे तब पाकिस्तान ने हमला करके काफी दूर तक के भू-भाग को तबाह कर दिया था। मेरी इस बात को जानकर कर्नल मोहन जी ने कहा यदि आप जैसे लोग ही सत्य नहीं कहेंगे तो फिर सत्य कहेगा कौन ? क्योंकि अधिकतर तथाकथित धार्मिक लोग तो धन मिल जाने पर पूंजीपतियों के दास बन जाते हैं। अतः मात्र धन से कुछ अच्छे कार्यों को देख कर किसी को भी पूज्य नहीं बनाया जा सकता। किसी को पूज्य बनाने से पूर्व यह भी देखना होगा कि आखिर उसका धन किस अच्छे या बुरे साधन से प्राप्त हुआ है। अधिक धन और धर्म एक ही स्थान पर बहुत कठिनाई से मिलता है। कुछ विरले ही ऐसे सौभाग्यशाली लोग हैं जो कि आज भी इसे संजोए हुए हैं ऐसे धर्मश्रद्धालु व विनम्र लोग निश्चित रूप से स्तुति के योग्य हैं। वस्तुतः संसार में अच्छे प्रमुख पूजा के योग्य व्यक्ति धनवान् की अपेक्षा शुभ कर्म तप व ज्ञान से युक्त जीवन का त्याग करने वाला है। इसीलिए तो वेद तथा शास्त्रों में पहले राष्ट्र संस्कृति रक्षक विद्वान् फिर देश रक्षक बलवान और अन्त में धार्मिक धनवान को स्थान दिया है। अतः जो लोग साईं बाबा द्वारा धन के आधार पर खोले गये कार्यों को गिना कर उसे महिमा मण्डित करना चाहते हैं वे लोग गलती पर हैं। देखना तो यह है कि इस व्यक्ति ने राष्ट्र की जनता को ज्ञान दिया या पाखण्ड निरीक्षण करने से यही मिलता है कि इसने देश की जनता को मदारी वाले खेल दिखाकर भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति, वैदिक ऋषि व खोज करने वाली ऊहा-पोह से हटाकर देश के एक बहुत बड़े समुदाय को वहमी व पाखण्डी ही बनाया है।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

गुरुकुल आर्य माडल स्कूल बठिण्डा में समारोह

गुरुकुल आर्य माडल स्कूल भठिण्डा के प्रांगण में दिनांक 31 मई 2002 को एक भव्य समारोह का आयोजन हुआ जिसमें श्री राम गोपाल जिंदल एवम् उनके परिवार द्वारा स्कूल के सभी निर्धन बच्चों को वर्दियां वितरित की गई।

कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ के साथ हुआ। पूज्य ब्रह्मचारी सूर्य देव जी "वैदिक मिशनरी" के ब्रह्मत्व में आयोजित इस यज्ञ में बठिण्डा शहर के जाने माने व्यापारी श्री केवल कृष्ण जिंदल (बिनानी सीमेन्ट) सपरिवार यजमान बने और पुण्य लाभ प्राप्त किया। तदोपरान्त श्री राम गोपाल जिंदल द्वारा वृक्षारोपण किया गया। गुरुकुल आर्य माडल स्कूल के बच्चों ने आज के मुख्य अतिथि श्री केवल कृष्ण जिंदल व उनके पिता श्री रामगोपाल जिंदल एवम् अन्य सदस्यों का गुरुकुल में पधारने पर गीत द्वारा स्वागत किया।

चौ० बाबू राम, श्री पी डी. गोयल, प्रो० ओ०पी० मंगला, श्री धर्मपाल रहलन, श्रीमती उषा गोयल, श्री प्रेम भाटिया, श्री एम पी. अरोड़ा, श्रीमती शान्ति जिन्दल (प्रिंसीपल आर्य गर्ल्ज सी०सै० स्कूल), श्री बलदेव राज छाबड़ा प्रधान (आर्य समाज सिरकी बाजार), श्री विजय कुमार एवं श्री गौरी शंकर द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया। श्री पी०डी० गोयल (एडवोकेट) प्रधान जिला आर्य सभा द्वारा श्री जिन्दल एवं उनके परिवार का हार्दिक स्वागत किया। प्रो० ओ०पी० मंगला प्रधान आर्य समाज भठिण्डा ने श्री केवल कृष्ण जी का उपस्थित आर्य जनों से परिचय करवाया। श्री धर्मपाल रहलन प्रधान आर्य समाज सिकन्दर पुरा ने भी अपने विचार प्रकट किए। जिंदल परिवार ने जिन बच्चों ने गीत गाये थे उन्हें प्रोत्साहन के रूप में नकद राशि प्रदान की। ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी ने उपस्थित जनो को आशीर्वाद दिया और दान की महिमा को बताया। उसके उपरान्त जिन्दल परिवार द्वारा सभी गरीब बच्चों को वर्दियां बांटी गई और भविष्य में इसी प्रकार आर्य समाज के अन्य कार्यक्रमों में सहयोग देने का विश्वास दिलाया।

चौ० बाबू राम जी गर्ग प्रधान गुरुकुल शिल्प विद्यालय बठिण्डा द्वारा सभी उपस्थित जनों का धन्यवाद किया गया एवं जिंदल परिवार का गुरुकुल में पधारने पर धन्यवाद किया विशेष रूप से सारी व्यवस्था के लिए श्री एम पी. अरोड़ा एवं आर्य वीर दल का उन्होंने धन्यवाद किया। श्री प्रेम भाटिया प्रबंधक गुरुकुल आर्य माडल स्कूल बठिण्डा द्वारा मंच संचालन सुचारू रूप से किया। इस कार्यक्रम में श्री कृष्ण लाल जटाना एवं श्री राजेन्द्र जिन्दल की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

अन्त में शान्ति पाठ एवं प्रसाद वितरण द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम सम्पन्न होने के उपरान्त ब्र० सूर्यदेव जी द्वारा गोमूत्र अर्क संयत्र सभी उपस्थित जनों को दिखाया गया सभी ने जम कर इसकी प्रशंसा की।

—प्रेम भाटिया, प्रबंधक

आर्य युवक चरित्र निर्माण के शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् पठानकोट के तत्वावधान में 'आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर' का आयोजन 19 मई 26 मई 2002 तक दयानन्द मठ चण्डरां (हि०प्र०) में किया गया। शिविर का शुभारम्भ स्वामी सन्तोषानंद जी ने ध्वजारोहण द्वारा किया। इस शिविर का संचालन आचार्य भगवान देव चैतन्य (कार्यकारी अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हि०प्र०) ने बड़े ही सुन्दर एवं व्यवस्थित ढंग से किया. बच्चों में अस्तिकता, राष्ट्रभक्ति के भावों का संचार करने हेतू पूरा सप्ताह सुबह शाम प्रवचन हुए तथा बच्चों ने विभिन्न विषयों पर परिचर्चा की। युवको की शारीरिक उन्नति हेतु दण्ड बैठक, जूडो-कराटे, लाठी एवं योग आसन इत्यादि का प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर में विभिन्न स्कूलों के 65 युवकों ने भाग लिया।

दीक्षांत समारोह में आर्य जगत की महान विभूति 103 वर्षीय स्वामी सर्वानंद जी सरस्वती ने अध्यक्षता की। ध्वजारोहण स्वामी सदानंद जी ने किया। आचार्य भगवान देव जी चैतन्य ने युवकों को आशीर्वाद दिया। श्री अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद) समारोह में मुख्य अतिथि थे। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं मे श्रेष्ठ प्रदर्शन हेतू युवकों को पुरस्कार वितरित किए। इस शिविर के प्रबन्ध में डॉ० सुधीर गुप्ता, सन्दीप नेब, पंकज तुली, संजीव महाजन एवं संजीवन तुली ने सराहनीय योगदान दिया।

—सन्दीप नैब

(पृष्ठ 7 का शेष)

बड़े दुःख व शर्म की बात है कि आज साईं बाबा जैसे व्यक्ति के पास पैसा होने के कारण बड़े-बड़े अज्ञानी नेता भी उसके पास पहुंच रहे हैं और मीडिया भी उसका प्रचार कर रहा है। इतना ही नहीं अपितु धन के लोभ में डॉ० भगवन्थम जैसे वैज्ञानिक कहलाने वाल लोग भी उसके साथ मिले हुए हैं। डॉ० भगवन्थम ने तथा गर्वनर के०के० शाह ने बिना शारीरिक जांच पड़ताल किए ही उस पर दृढ़ विश्वास प्रकट कर दिया क्या ऐसे व्यक्तियों को वैज्ञानिक व विद्वान् कहना चाहिए ? वस्तुत: कोई सच्चा वैज्ञानिक, इन्जीनियर, डॉक्टर या राज्य अधिकारी ऐसा नही कर सकता। जो आजकल के स्वार्थी व लोभी डॉक्टर, इन्जीनियर या वैज्ञानिक उस पर विश्वास करते हैं। ये लोग घोर अन्धविश्वास में जहां आप डूब रहे हैं वहां जनता को भी डुबा रहे हैं।

गत दिनों डॉ० भगवंथम ने यह छापा कि सत्य साईं बाबा जी एक पहुंचे हुए महात्मा व सिद्ध पुरुष हैं और उसने अपना हाथ हवा में हिलाकर अपने यहां पर आए जापानी सीको घड़ियों के मालिक को उनकी ही एक बिल्कुल नये लेबल ये युक्त घड़ी भेंट की और उन्हें आपने आश्रम में विशेष रूप से आशीर्वाद भी दिया। अब जापानी 'सीको' घड़ियों का मालिक उनका श्रद्धालु भक्त बन गया है। अत: जो बाबा के शरीर की तालाशी लेकर उसको पकड़ने की बात करते हैं वे ऐसी अज्ञान की बातें छोड़ दें और बाबा के प्रति श्रद्धा रखें। यह बात डॉ० भगवन्थम के नाम से अनेक पत्रों में छपी। जैसे ही लोगों ने यह बात पढ़ी तुरन्त डॉ० भगवन्थम को पत्र लिखकर उनसे उपरोक्त पत्रों में छपी घटना के प्रमाण (प्रूफ) मांगे पर डॉ० भगवन्थम ने अनेक दिनों तक कोई उत्तर न दिया।

सीको घड़ी को भेंट करने की घटना सच्ची है या झूठी इस बात को जानने हेतु जापान की एम्बैसी [illegible] कर उनके मालिक श्री शोजी हत्तौरी को जापान के पते जो पत्र लिखा गया उसका उत्तर नीचे हिन्दी में अनुवाद करके दिया जा रहा है।

प्रिय डॉ० कोवूर,

30 अक्तूबर के आपके पत्र हेतु धन्यवाद। आपके पत्र में बताए गए साईं बाबा के बारे में आपके ज्ञान में कोई वृद्धि नहीं कर सकता।

मैंने और स्टाफ के अन्य किसी व्यक्ति ने कभी साईं बाबा नाम के किसी आदमी के साथ कोई मुलाकात नहीं की है।

मुझे विश्वास है कि इस प्रकार के समाचारों का कोई आधार नहीं होता इसलिए मैं आपके किए हुए प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दे सका।

आपका शुभचिन्तक
शोजी हत्तौरी 'प्रधान'
के० हत्तौरी एण्ड कम्पनी लिमिटेड
(जापान)

इस पत्र के मिलने पर पुन: तथा तथाकथित वैज्ञानिक डॉ० भगवन्थम को पत्र लिखा गया कि वह कौन सा जापानी घड़ियों का मालिक था जो बाबा सत्य साईं के आश्रम में गया था तो इसका आज तक कोई उत्तर नहीं मिला।

इस प्रमाण से यह सिद्ध होता है कि बहुत से चालाक मदारी महात्मा बनने हेतु इस प्रकार की भी झूठी कहानियां गढ़ कर लोगों को बहकाते हैं। इस धोखा-धड़ी में कुछ चतुर लोभी नाम लेवा डॉ० आदि भी मिले रहते हैं। अत: विशेष करके पूंजीपति लोग और नेता तथा श्रद्धालु जनता ऐसे लोगो से बचे और चेतन ओम् का ध्यान, प्रभु वाणी वेद का ज्ञान, पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञ का अनुष्ठान, श्रेष्ठ समाज हेतु संस्कारी सन्तान तथा सच्चे राष्ट्रभक्त बनने हेतु देश के लिए बलिदान करने की भावना बनाये।

यदि किसी को मार्गदर्शक के रूप में गुरु ही बनाना हो तो उसे गुरु बनाये जो सत्य सनातन वैदिक धर्म का व अष्टांगयोग का ज्ञाता हो। जो कि अपना चित्र और मनमाना मन्त्र न देकर चेतन ओम् प्रभु की पूजा तथा वेद को ही मन्त्र का प्राचीन गुरुओं के समान उपदेश देता हो। विशेष जानकारी हेतु हमारी पुस्तक 'चमत्कार' पढ़ें।

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ । दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम्

2277. श्री पुस्तकाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालन्धर
दूरभाष

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 10 सृष्टि संवत 1960853103, 23 जून, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

बुरा सोचना, बुरा बोलना और बुरा ही करना मानवता के शत्रु हैं

□ले० श्री बेली क्याल शर्मा, "शर्मा निवास 120 माडल टाऊन, अमृतसर

मानव जन्म, परमात्मा ने मनुष्य को अच्छा सोचने, अच्छा बोलने और अच्छा ही करने के लिये दिया है। इसी का नाम वैदिकता है। जो इस नियम का पालन करते हैं, उन की प्रतिष्ठा समाज में बढ़ती जाती है। मनुष्य समाज का अंग है और धार्मिक मनुष्यों से मित्रता करने योग्य है। जिस तरह का समाज होगा, उसी तरह के मनुष्य विचार वाले होंगे। यदि किसी मनुष्य ने अपने मन पर काबू पा लिया है कि वह सदा सदाचारी और धर्मपरायण मनुष्यों का ही संग करेगा तो वह एक दिन धर्मात्मा बन सकता है। ऐसे ही भद्र पुरुषों से समाज को लाभ पहुंचता है और वह समाज उन्नति के शिखर तक पहुंचता हैं। दुर्भाग्यवश, यदि मानव बुरे आदमियों के जाल में फंस जाता है तो उस का अपना भी बुरी तरह से पतन होगा और जिस समाज से उस का वास्ता पड़ता है उसको भी मझधार में डुबो देगा। मनुष्य को पूरी स्वतंत्रता है कि वह चाहे अच्छी समाज का सदस्य बने चाहे बुरी समाज का। परमात्मा ने तो उसके कर्मों का फल देना ही देना है।

दुर्योधन जो महाराजा धृतराष्ट्र चक्षुहीन का बेटा था, वह अपने पिता जी की ओर से शासन का काम-काज चला रहा था, धृतराष्ट्र के मन में एक दिन यह बात सूझी कि शासन का सब काम युधिष्ठर पाण्डव पुत्र को सौंपा जाए दुर्योधन को भी इस बात का पता लग गया। उसने अपने पिता जी को साफ-साफ कह दिया कि बिना युद्ध किये वह पाण्डव पुत्रों को एक इन्च भी भूमि का टुकड़ा नहीं देगा। दुर्योधन के मन पर कुसंस्कारों ने अपना डेरा जमाया हुआ था। वह बुरा विचार उसके मन को जकड़े हुए था। ईर्ष्या और द्वेषता की अग्नि उसके दिलो दिमाग में भड़क रही थी। भगवान कृष्ण जी ने भी बड़ा समझाया, परन्तु उसने उसकी दैवी ध्वनि को न सुना। दुर्योधन ने भगवान कृष्ण जी को कहा जानामि धर्मा मे च न प्रवृति, जानामि अधर्म मे च न निवृत्ति। मैं धर्म को भी जानता हूं परन्तु उस में प्रवृत्त नहीं हो रहा हूं, अधर्म को भी जानता हूं, परन्तु उस से मेरी निवृति नहीं हो रही है। फिर क्या हुआ युद्ध की तैयारियां प्रारम्भ हो गई। यह है बुरे संस्कारों का परिणाम। महात्मा गांधी ने नीचे बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है–

नादान भुत करनी अपनी, ए पापी पाप में चैन कहां। जब पाप की गठड़ी सीस धरी, तो फिर सीस पकड़ कर क्यों रोवत है॥

मानव बुराईयों से बच नहीं सकता, जब तक कि वह अपनी आत्मा में परमात्मा के, जो सूर्य के समान भीतर चमक रहा है उसके दर्शन नहीं कर पाता। इसके लिये, उसको भक्ति मार्ग का आश्रय लेना पड़ेगा, तभी अन्दर के जन्म जन्मातरों के जमे हुए मैल दूर होंगे। अज्ञानी, अज्ञानता के कारण इन बुरे संस्कारों में फंस जाता है और फिर उनसे छुटकारा पाना असम्भव हो जाता है। शुभ विचारों को भीतर लाने के लिये हमें बड़ा यत्न करना पड़ता है, परन्तु बुरे विचार बिना बुलाएं ही (Without Invitation) मन को काबू कर लेते हैं। कितनी हैरतांगेज बात है याद रक्खो परमात्मा का सच्चे दिल से भजन करने से सब दुर्गुणों का सब व्यसनों का नाश हो जाता है और हृदय शुद्ध और पवित्र हो जाता है और परमात्मा अपने भक्तों को दैवी अमृत पिलाता है।

मानव शरीर कई स्थितियों में से गुजरता है। पहली स्थिति बचपन की, दूसरी स्थिति नौजवानी और तीसरी स्थिति है वृद्ध अवस्था। यदि परमात्मा का स्मरण हर अवस्था में न किया जाए तो समझ लो समय यूंहि बरबाद हुआ। कुछ आदमी सोचते हैं कि वृद्ध अवस्था ईश्वरीय स्मरण के लिये अनुकूल बैठती है। ऐसे मनुष्यों को यह भी चिन्तन करना चाहिये कि यदि मृत्यु का बिगुल वृद्ध अवस्था से पहले बज गया तो उनके अरमान दिल ही दिल में रह जाएंगे और अति शुभ कर्म को वह पूरा न कर सकेंगे। इसलिए हर अवस्था में ईश्वरीय स्मरण अवश्यमेव करना चाहिए। हर क्षण जीवन का परमात्मा की याद में गुजारना चाहिये। यह भी याद रहे कि जो आकांक्षा, ईश्वर के प्रति स्वार्थ युक्त है, हमारे हृदय को शुद्ध और पवित्र नही बना सकती। ईश्वर की जुस्तजू में उसी प्राणी का मन लगेगा जिसका हृदय स्वार्थ रहित है और परोपकारी कर्मों में हर समय लगा रहता है।

जो प्राणी परमात्मा का नाम नहीं जपते है उनका मन डर में ही उलझा रहता है। कभी उनको जीवन के दिन, प्रतिदिन घटने का डर, कभी उनको जीवन में जो रोग चिमटा हुआ हैं, उसका डर और फिर उनको मृत्यु का डर जो उनके चारों ओर घूम रही है, न जाने किस समय प्रहार कर दे। लिखने का अभिप्राय: यह कि उसको चौबीस घंटे आठों पहर, उनका मन मृत्यु के चक्कर में पड़ा हुआ निजात हासिल नहीं कर सकता। केवल ईश्वर स्मरण से वह मृत्यु के भय से ही भय रहित हो सकते हैं और कोई दूसरा उपाय नहीं है।

संसार में बहुत से लोग बुतप्रस्ती की ही पूजा करते हैं और कई प्रकार के काल्पनिक ईश्वर बना कर पूजते हैं, परन्तु ऐसी पूजा, उनको मृत्यु के फन्दे, से छुड़ा नहीं सकती। केवल एक परमात्मा की पूजा ही उनके कष्ट कलेशों को और मौत से भयभीत होने से बचा सकती है। यह सदा स्मरण रहे कि जो-जो अच्छी शिक्षाएं हमने बड़े-बड़े विद्वानों से उपाधि दार्शनिकों से प्राप्त हैं और जो-जो अच्छे-अच्छे काम करके, ईश्वर से शक्तियां मिली हैं इनका नाश नहीं होता यह सब संस्कार अगले जन्म में हमारा साथ देंगे। ऐसा डाक्टर राधाकृष्ण जी (भूतपूर्व राष्ट्रपति) गीता में लिखते हैं।

संसारी लोग बड़े होशियार होते है। जब वे देखते हैं कि कोई मनुष्य भौतिकता के कारण आगे ही आगे बढ़ता जा रहा है तो वह अपने स्वार्थ से मुक्त हो कर उसके बहुत नजदीक होने का यत्न करते हैं और जब वही मनुष्य निर्धन हो जाता है तो वह उसको छोड़ कर चले जाते हैं। ऐसे स्वार्थी पुरुषों की स्वार्थता से नाता तोड़ लेना चाहिए और परम पावन, प्रभु से जोड़ना चाहिये जो हर समय उनको सहायता करेगा और जिसका सब से बड़ा खजाना अपने भक्तों की सेवा करने में तैयार रहता है? परन्तु मतलबी आदमी अपने मतलब को ही सामने रखते हुए दूसरों से मित्रता गांठते हैं जिसके कारण वह आध्यात्मिक आनन्द से वंचित हो जाते हैं।

अभौतिक मार्ग तीखे कांटों से और बड़ी घोर कठिनाईयों से भरा पड़ा है। वीर पुरुष वही हैं जो इनका मुकाबला करते हैं और अन्त में विजय प्राप्त करते हैं। परमात्मा से मित्रता प्राप्त करने के लिए अपनी भीतरी शक्तियों को बहुत घोर परिश्रम करके जगाना पड़ेगा और उनका आश्रय लेना पड़ेगा। हमारे घोर दु:खों में परमात्मा के छिपे हुए खजाने भी हमारी बेहतरी के लिये होते हैं। यह तब पता लगता हैं जब हम जीवन की दौड में डट के सामना करते है। बाद में पता लगता हैं कि इस दु:ख के भीतर हमारी कितनी भलाई छुपी हुई थी।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के जीवन से हमें बहुत कुछ मिलता है यदि कोई लेने वाला हो! भ्रमात्मक विश्वास और मिथ्या ज्ञान जो लोगों के हृदयों को अन्धकार में डबो रहा था, अपने मनोबल से दूर किया और शुद्ध, पवित्र वेद ज्ञान से उनकी *आत्माओं को प्रकाशित किया।* इस कालिमा को मिटाने के लिये, उन्होंने सरधड़ की बाजी लगा दी और कोई कष्ट बाकी नहीं रह गया था जो उन्होंने अपने शरीर पर न झेला हो ईश्वर की अपार कृपा से वह अपने मन्तव्य में पूर्णरुप से सफल हुए। मैंने दो सतरें अपनी ओर से महर्षि के बारे मे लिखी हैं:-

चमकेंगे जब तल्क सूरज व चान्द तारे। रहेगा पवित्र नाम महर्षि का तब तक दिलों में हमारे।

वाचस्पतिर वाचम् नः स्वदतु

□ले. श्री प. बनारसीदास आर्य, आर्य समाज बस्तीकोट, अमृतसर

अर्थात् वाणियों के स्वामी परम पिता परमात्मिन आप हमारी वाणियो को मीठा बोलने वाली बनाये। हम सदा मृदु भाषी बने। अच्छा बोलें क्योकि वाणी का सम्बन्ध हमारे विचारो से होता हैं। जैसे विचार होगे वैसे ही हमारी वाणी बन जाती है। इस लिए उत्तम वाणी के लिये उत्तम विचारो का होना आवश्यक है। मीठी वाणी से हम दूसरो को अपना बना सकते हैं ओर कडवी वाणी से अपने भी दूर हो जाते हैं।

सन्ध्या करते समय हम कहते हैं ओ३म् वाक् वाक्। अर्थात् मीठी वाणी का प्रवाह बहता रहे॥ यज्ञ करते समय हम कहते हैं ओ३म् वाङ्मया स्यास्तु अर्थात् हमारी वाणी मे मीठा बोलने की शक्ति सदा बनी रहे। वाणी मे बडी शक्ति होती है। मीठी वाणी हो तो मरहम का काम करती है। यदि कटु वाणी हो तो तलवार की धार का काम करती है। तलवार का घाव तो समय पाकर भर जाता है परन्तु वाणी का दिया हुआ घाव जीवन भर नहीं भरता।

महाभारत के अन्दर आपने पढा और देखा होगा कि जब दुर्योधन पाण्डवो के कक्ष मे आता है और तालाब मे फिसल जाता है। सामने के कक्ष मे खडी द्रोपती ने व्यग करते हुए दुर्योधन से कहा कि अन्धे की सन्तान अन्धी होती है। द्रोपती के ये शब्द दुर्योधन के सीने मे कटार की तरह धस गये। दुर्योधन ने अपने अपमान का बदला लेने की ठान ली। दुर्योधन ने अपने मामा शकुनी की सहायता से ऐसा जाल रचा कि पाडव जुआ खेलने के लिए तैयार हो गये। पाडव पुत्र इस जुए म सब कुछ हार गये। यहा तक कि द्रोपती को भी दाव पर लगाया गया ओर हार गये। भरी सभा मे दुर्योधन व दुशासन ने चीर हरण करके पाडव पुत्रो का निरादर किया और पाडव चुपचाप सब कुछ सहते रहे। अन्त में कडवी वाणी ने युद्ध का रूप धारण कर लिया। फलस्वरूप महाभारत का युद्ध हुआ। अनगिनत लोग इस युद्ध मे मारे गये। भारतवर्ष की धरती वीरो से योद्धओ से वेद पाठियो से वचित हो गई और तत्पश्चात् भारत का पतन आरम्भ हो गया। इतनी महान क्षति कडवी वाणी के कारण हुई। इस लिए वेद भगवान् ने बार बार कहा है कि प्रभु हम मृदु भाषी बने। हमारी वाणी कल्याणकारी हो।

रामायण के अन्दर महारानी केकैयी के हठ ने सब तहस नहस कर दिया। केकैयी ने महाराजा दशरथ से दो वर मागे थे। एक यह कि भरत को राजतिलक करके अयोध्या का राजा बनाया जाए और दूसरा राम जी को 14 वर्ष का बनवास।

वन में रहते सीता जी ने राम जी से कहा कि यह अलौकिक हिरण मुझे अति सुन्दर लगता है। आप मेरे लिये इसे पकडिए। राम जी ने सीता जी को बहुत समझाया लेकिन सीता जी नहीं मानी। आखिर राम जी हिरण को पकडने के लिये निकल पडे और लक्ष्मण से कह गये कि पीछे सीता का ध्यान रखना। जब काफी समय बीत गया और राम जी नहीं आये। हाय लक्ष्मण हाय लक्ष्मण की आवाज सुनाई दी तो सीता माता को बडी चिन्ता होने लगी। उसने लक्ष्मण को कहा कि तुम्हारे भाईया किसी मुसीबत में फस गये हैं। आप जाईए और उनकी सहायता कीजिए। लक्ष्मण ने कहा-आप अधीर न हो। यह कोई माया जाल प्रतीत होता है। भईया मुसीबत मे हो नहीं सकते। तीनों लोकों मे ऐसा कोई शूरवीर नहीं जो उनको पराजित कर सके। सीता ने बहुत हठ किया कि लक्ष्मण जाओ और अपने भईया की सहायता करो। जब लक्ष्मण नहीं माने तो सीता ने लक्ष्मण को बडे कटु शब्द बोले और कहा कि तुम बडी वीरता की ढींगे मारते हो अपने आपको शूरवीर समझते हो। तुम्हारे मन मे खोट पैदा हो गया है। तुम्हारी नीयत साफ नहीं। जब लक्ष्मण और कठोर शब्द सहन नहीं कर सके तो उसने कहा माता ठीक है। मैं भईया की आज्ञा का आज पहली बार उल्लघन करता हू। लक्ष्मण रेखा अपने तीर से खींची और कहा कि किसी भी परिस्थिति मे आप इस रेखा को पार न करना। यह कह कर लक्ष्मण जगल मे श्री राम की खोज मे चला गया। पीछे से रावण छल कपट से सीता को उठा कर वायु मार्ग से लका ले गया। जब-जब भी कठोर वाणी बोली जाती है तब-तब भरपूर हानि उठानी पडती है।

एक पढी लिखी सुशील कन्या थी। उसका पति भी उसे अच्छा देवता समान मिल गया। लेकिन उसकी सास कुछ झगडालू, लालची स्वभाव की थी। सास ने कुछ दिन तो बहू को अच्छा प्यार दिया। वह भी सुबह उठ कर अपने पति देव के पाव छूती तथा सास के पाव भी छूती। टागे दबाती सिर दबाती। अच्छी सेवा करती। कुछ ही दिनो के बाद सास का स्वार्थ जाग उठा। उसने सोचा बहू तो पाव दबा कर ही घर की मालकिन बन जाना चाहती है। दहेज मे कुछ लाई नहीं। उसने बहू को तग करना शुरू कर दिया। इसी तरह कई दिन गुजर गये। सास बोलती रहती ताने देती रहती लेकिन बहू किसी भी [illegible] देती और मुस्कुराती रहती। सास [illegible] बहू तो [illegible] [illegible] देती हूं और आगे से मुस्कुराती रहती है। सास का गुस्सा और बढ गया। वो और जोर [illegible] बोलने लगी। फिर भी बहू आगे [illegible] कुछ नहीं बोलती। पास वाली पडोसिन भी [illegible] लडाकी थी। उसने देखा कि यह बुढिया बहू को प्रतिदिन गाली देती है, [illegible] झगडती है। लेकिन वह बडी शरीफ, पढी लिखी, अच्छे खानदान की नजर आती है। पडोसिन से बहू का दुख देखा नहीं गया। दूसरे दिन जब सास बहू को गालिया देने लगी तो पडोसिन से रहा नहीं गया। उसने कहा कि गऊ समान बहू से तू रोज झगडती रहती है उसे व उसके मायके वालो को गाली गलौच करती है। यदि तुमने लडना ही है तो आ मेरे साथ लडाई कर। मैं तुम्हे मजा चखाती हू। जब पडोसन ने सास पर सीधा हमला कर दिया तो बहू बोल पडी। मौसी जी देखो यह हमारे घर का मामला है। मेरी सास मेरी मा है। वह जो कुछ मर्जी मुझे कहे तुम कौन होती हो हमारी बात मे बोलने वाली। जब बहू ने यह शब्द मौसी को कहे तो पडोसन चुपचाप अपने घर चली गई। सास ने भी अच्छी तरह विचारा कि बहू तो मेरे सामने बोलती नहीं। कसूर मेरा है जो मैं हर समय उसे कोसती रहती हू। सास ने अपने मन का मैल दूर हटा दिया और सास बहू दोनो मा बेटी की तरह रहने लगी। घर का सारा वातावरण खुशियो से भर गया। किसी ने ठीक ही कहा हे-

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए

औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होए।

वेद के अनुसार सभी घर मे इस प्रकार मिल कर रहे-

अनुव्रत पितु पुत्रो माता भवतु सम्मन।

जाया पत्ये मधुमतीं वाच वदतु शान्तिवाम्॥

पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो माता के प्रति प्रेम और समान मन वाला हो। पत्नि पति से मिठास भरी ओर शान्त वाणी में वार्तालाप करने वाली हो।

जहा दो बर्तन होते है वे खडक भी जाते हैं। परन्तु यथा सम्भव मधुरवाणी का ही प्रयोग करना चाहिए। मधुर भाषण का बडा प्रभाव होता है। मधुर भाषण से मनुष्य ही नहीं पशु पक्षी भी प्रसन्न होते हैं। मधुर वाणी से ससार को वश मे किया जा सकता है। फिर एक छोटे से घर का तो कहना ही क्या? मीठा बोलना वशीकरण मन्त्र है

तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजे चहु ओर।

वशीकरण यह मन्त्र है, तजदे वचन कठोर॥

मीठा बोलने से शान्ति प्राप्त होती है और व्यय कुछ नहीं होता। अतः मीठा ही बोलो। प्रेम के ऊपर बल देते हुए Heury van Dyke नें बडा सुन्दर लिखा है-वह घर जिसमें प्रेम का निवास हे तथा जहा मित्रता ने बसेरा किया है। वही वास्तव में घर है। वही प्यारा घर है क्योंकि वहीं से मन को शान्ति प्राप्त हो सकती है। कबीर जी ने ठीक ही कहा है-

शब्द बराबर धन नहीं, जो कोई जाने बोल।

हीरा तो दामो मिले, शब्द का मोल न तोल॥

जहां ओम् ओम् होता है, मीठी जुबा से।

नहीं लगती कुछ इसमें, दौलत ज्यादा॥

एक वकील साहब कभी-कभा सत्सग म जाते थे। उनका सात-आठ साल का बच्चा भी साथ जाता था। वहा पर एक व्यक्ति ने एक भजन गाया "कदे बोल न कौडे बोलिए।" बच्चे को यह भजन अच्छा लगा उसने याद कर लिया। जब कभी भी समय मिलता इस भजन को गाया करता। एक दिन वकील साहब ओर उनकी पत्नि म कुछ अनबन हो गई। रूठ गये दोनो। कई दिन बीत गये एक दूसरे से बोले नही पति पत्नि कब तब रूठे रहे। पति के मन मे आये कि वह मान जाए पत्नि के मन मे भी बार-बार आये। लेकिन दोनो की यह इच्छा थी कि पहल दूसरा करे। पति दफ्तर से आता अपने कमरे मे बैठ जाता। पत्नि खाना बना कर नौकर के हाथ भेज देती। पहल होने मे न आती। एक दिन वकील साहब आय ओर अपन कमर मे चले गये। इनके नन्हे बच्चे न इनके कमरे में जाकर भजन गाना शुरू कर दिया-"कदे बोल न कौडे बोलिए"। वकील साहब के हृदय मे आशा की किरण जाग उठी। बच्च से बोले 'बेटा अपनी मा के कमर मे जा कर गाओ। बच्चा मा के कमरे मे गया और वहा जाकर गाने लगा "कदे बोल न कौडे बोलिए"। मा ने कहा-यहा क्या गाता है। जा अपने पिता जी के कमरे मे जाकर गा। बच्चा फिर पिता जी के कमरे में जा कर गाने लगा। पिता जी ने फिर मा के कमरे मे जाने को कहा बच्चे न दोनो कमरो के बीच मे जाकर गाना शुरू कर दिया। माता पिता दोनों ने बच्चे की भोली भाली आवाज को सुना और दोनों हस पढे। हसी की बौछारो से क्रोध की दीवार टूट गई। दोनों बच्चे के पास आ गये। एक दूसरे की आखो में देख कर हसते हुए बोले-कदे बोल न कौडे बोलिए।

सम्पादकीय.....

प्रिं० स्वतन्त्र कुमार जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति का पद ग्रहण किया

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की सबसे पुरानी व महान शिक्षा संस्था है। पंजाब के महान सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इसकी स्थापना आज से एक सौ वर्ष पूर्व की थी। अभी-अभी अप्रैल 2002 में इस का शताब्दी समारोह सम्पन्न हुआ। जिसमें सारे भारत वर्ष व देश-विदेश से भारी संख्या में आर्य महानुभाव वहां पहुंचे थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गत दिनों निश्चय किया था कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की उन्नति के लिए हर सम्भव कार्य किया जाएगा।

इस गुरुकुल के कुलाधिपति (चांसलर) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा हैं। जब से यह इस गुरुकुल के प्रधान बने हैं तब से ही वह इसकी उन्नति के लिए कार्य कर रहे हैं। आर्य जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री व आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता प्रिंसिपल स्वतन्त्र कुमार जी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति (वाईस चांसलर) बन गए हैं। पंजाब की सारी आर्य जनता जानती है कि प्रिंसिपल स्वतन्त्र कुमार जी का पंजाब में अपना एक विशेष स्थान है और वह बहुत ही लग्नशील व कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने [illegible] की थी। उच्च शिक्षा भी जालन्धर में प्राप्त की और इसके बाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द मैमोरियल कालेज दीनानगर में प्राध्यापक पद पर रहने के बाद वह आदर्श भारती कालेज पठानकोट में 1997 में प्रिंसिपल पद पर सुशोभित हुए और अब गुरुकुल के कुल पति बने। हम समझते हैं कि उनके गुरुकुल के कुलपति बनने पर गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय बहुत उन्नति करेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पहले से ही यत्नशील थी कि इस बार किसी सुयोग्य व्यक्ति को गुरुकुल का कुलपति (वाईस चांसलर) बनाया जाए सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा तथा दूसरे सभी अधिकारी इस के लिए प्रयास कर रहे थे। इसलिए इस पद के लिए श्री प्रिं. स्वतन्त्र कुमार जी को तैयार कर लिया गया और उन्हें कुलपति बना दिया गया।

18-6-2002 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार मे एक समारोह दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक किया गया जिसमें गुरुकुल का समस्त स्टाफ सभी कर्मचारी व अधिकारी तथा गणमान्य महानुभाव सम्मिलित हुए। सार्वदेशिक सभा के वरिष्ट उपप्रधान श्री विमल वधावन जी, सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, हरियाणा सभा के महामन्त्री आचार्य यशपाल जी मटिण्डू तथा उपमन्त्री श्री केदार सिंह जी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ट उप प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, अधिष्ठाता साहित्य विभाग श्री रामरत्न महाजन तथा अन्य गणमान्य महानुभाव वह उपस्थित थे।

समारोह की कार्यवाही यज्ञ से आरम्भ हुई यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश जी शास्त्री थे मंच का संचालन रजिस्ट्रार श्री महावीर जी ने किया। श्री विमल वधावन जी, श्री वेदव्रत जी शर्मा, श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा, श्री आचार्य यशपाल जी मटिण्डू ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि एक सुयोग्य हाथों में इस बार गुरुकुल के कुलपति का भार सौंपा गया है, हमें आशा है कि अब गुरुकुल का कार्य सुचारु रूप से चलेगा। उन्होंने गुरुकुल की महत्ता बताते हुए कहा कि तीनों सभाएं मिल कर गुरुकुल के उत्थान व विकास के लिए कार्य करेंगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने तो पहले ही इस दिशा में कार्य आरम्भ कर दिया है। अनेकों वर्षों के बाद पहली बार ऐसा हुआ है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान गुरुकुल के कुलाधिपति बने हैं और महामन्त्री कुलपति बने हैं। यह समाचार जब आर्य जनता को पता चला कि प्रिं. स्वतन्त्र कुमार जी गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति बन गए हैं तो पंजाब की आर्य जनता में प्रसन्नता की लहर दौड़ पड़ी।

समारोह के पश्चात् 18-6-2002 को दोपहर बाद कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी अन्य पदाधिकारियों के साथ कुलपति (वाईस चांसलर) कार्यालय में गए और उन्होंने कुलपति का कार्य भार विधिवत रूप से सम्भाल कर अपना कार्य आरम्भ कर दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सभी अधिकारियों सदस्यों व सभी कर्मचारियों ने गुरुकुल का कुलपति बनने पर श्री स्वतन्त्र कुमार जी को हार्दिक बधाई दी।

श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने अपने जीवन में बहुत उन्नति की है। अपनी मेहनत परिश्रम व योग्यता से वह पहले एक कालेज के प्राध्यापक (प्रोफेसर) बने और फिर परिश्रम करके प्राचार्य (प्रिंसिपल) बने और अब एक विश्व विद्यालय (यूनिवर्सिटी) के कुलपति (वाईस चांसलर) बन गए हैं। वह प्राध्यापक (प्रोफेसर) होते हुए भी आर्य समाज की सेवा करते रहे और इसी प्रकार प्राचार्य (प्रिंसिपल) रहते हुए भी आर्य समाज की सेवा करते रहे और अब कुलपति (वाईस चांसलर) बन कर भी वह निरन्तर आर्य समाज की सेवा करते रहेंगे ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है। हमें पूर्ण विश्वास है कि अब गुरुकुल में बहुत सुधार होगा और उसका सारा कार्य सुचारु रूप से चलेगा।

-धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

ग्राहक-महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा के सभी ग्राहक महानुभावो से मेरी प्रार्थना है कि वह आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क शीघ्र अति शीघ्र सभा कार्यालय में बैंक ड्राफ्ट या मनिआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें। अब आर्य मर्यादा का प्रकाशन नियमित हो गया है तथा सभी ग्राहकों को नियमित भेजा जा रहा है। मैं समझता हूं ऐसी अवस्था में इसका शुल्क न भेजना ग्राहक महानुभावों के लिए उचित नहीं है। हम सभी ग्राहकों को शुल्क के लिए पत्र लिख रहे हैं, जालन्धर, लुधियाना, अमृतसर, गुरदासपुर तथा दूसरे कई स्थानों के ग्राहकों को पत्र लिखे जा चुके हैं। कईयों को लिखे जा रहे हैं। जिन ग्राहक महानुभावों का गत तीन वर्ष से शुल्क नहीं आया यदि उन्होंने यह पत्र मिलने पर भी शुल्क नहीं भेजा तो उन्हें आर्य मर्यादा भेजना बन्द कर दिया जाएगा।

आर्य मर्यादा का आजीवन शुल्क 500 रुपए है जो इस समय सभी पत्र-पत्रिकाओं से कम है। वार्षिक शुल्क केवल 50 रुपए है यह भी सब पत्र पत्रिकाओं से कम है। इसलिए सभी ग्राहक महानुभावों को इसका शुल्क समय पर भेज देना चाहिए। पिछला शुल्क भेज कर फिर केवल 500 रुपए में आजीवन सदस्य बनें। आर्य समाजें व शिक्षा संस्थाएं भी आजीवन सदस्य बन सकती हैं। एक बार पांच सौ रुपए भेज कर बार-बार शुल्क भेजने की समस्या समाप्त हो जाती है। न बार-बार मनिआर्डर फीस देनी पड़ती है न बैंक ड्राफ्ट का खर्चा देना पड़ता है।

ध्यान रहे शुल्क आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (गुरुदत्त भवन) चौक किशनपुरा जालन्धर के नाम से भेजें और अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें। आपके नाम पते की जो चिट अखबार पर लगी हुई है उससे पूर्व जो संख्या लिखी है वही आपकी ग्राहक संख्या है। शुल्क भेजने से पूर्व अपनी ग्राहक संख्या देख लें और वह मनिआर्डर फार्म अथवा पत्र में अवश्य लिख दें। आशा है आप हमारे पत्र की इन्तजार नहीं करेंगे, नैतिकता के नाते अपना शुल्क समय पर अवश्य भेजेंगे।

-धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

सरल-सुखी जीवन

☐ ले० भद्रसेन, बी-2, 92/7 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर-146001

(गतांक से आगे)

प्रत्येक धर्म में आचरण, कर्मकाण्ड, मान्यता, सिद्धान्त या दर्शन ये चार पहलू अवश्य होते हैं, क्योंकि प्रत्येक धर्म कुछ बातों को व्यवहार में लाने के लिए कहता है। हर धर्म में किसी न किसी प्रकार की पूजा, संस्कार, जप, तप, स्मरण, ध्यान, ग्रन्थ, तीर्थ आदि कर्मो के करने का विधान होता है। इसको कुछ दीन, इबादत भी कहते हैं । प्रत्येक धर्म की अपनी कुछ मान्यतायें होती हैं, चाहे वे प्रत्यक्ष का विषय या प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध न हों। मानने के कारण ही इनको मान्यता कहते हैं। जैसे कि हर धर्म वाला किसी न किसी अपने इष्टदेव, व्यक्ति विशेष या उससे जुड़ी ऋद्धि-सिद्धि जैसी कुछ बातों पर विश्वास करता है, इसको उर्दू में ईमान शब्द से स्मरण किया जाता है। ऐसे ही प्रत्येक धर्म के कुछ सिद्धान्त होते हैं या उसका अपना दर्शन होता है, जिससे वह अपने धर्म की व्याख्या करता है या इसके द्वारा धर्म के कर्मकाण्ड विश्वास और सिद्धान्त की संगति लगाता है।

यह सत्य है कि सभी धर्मों में ये चारों पहलू मिलते हैं, पर इनमें से आजकल प्राय: कर्मकाण्ड को अधिक महत्व दिया जा रहा है। कई बार तो धर्म को कर्मकाण्ड में ही सीमित कर दिया जाता है। प्राय: किसी प्रकार के जप, तप, पूजा-पाठ, स्मरण, ध्यान, यज्ञ, संस्कार, देवदर्शन, तीर्थ यात्रा, स्नान आदि के बाद व्यक्ति वह समझता है, कि मैंने धर्म का यह कर्म (काण्ड) करके अपने जीवन को पार लगा लिया है, इससे मेरी धार्मिकता चरितार्थ हो गई है।

इस प्रकार कर्मकाण्ड को अधिक महत्व देने के कारण अधिकतर लोग उसी को ही धर्म का पूर्ण रूप समझ लेते हैं और तब अपने जीवन को सच्चा-सुच्चा बनाने के लिए अपेक्षित कर्त्तव्य, आचरण की इति श्री इसी में समझ लेते हैं। इसका जो परिणाम होता है, उस का स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन में एक अच्छा शिक्षाप्रद, हास्यपूर्ण उदाहरण प्राप्त होता है। स्वा० श्रद्धानन्द जी अपनी आत्मकथा-कल्याण मार्ग का पथिक (पृ.12) में लिखते हैं-जब मेरे पिता (श्री नानक चन्द) जी बरेली के थाने में कार्य करते थे, उन दिनों भोजन की व्यवस्था के लिए एक पाचक साथ रहता था। 'एक दिन हण्डिया पकाते समय पिता जी का नौकर चिमटे से चिलम में आग धर लाया। मिसिर जी आग बबूला हो गये और जब कारण पूछा गया तो बोले-अरे सरकार ! हम आपन धरम कबहूं ना हीं छोड़ा अं झूठ बुआला, जुआ खेला, गांजा का दम लगाया, दारू चढ़ावा, रिसवत लिहा, चोरी दगाबाजी किहा-कौन फन फरेब बाटै जौन हम नाहीं किहा मूल सरकार! आपन धर्म नहीं छाड़ा' मिसिर जी (पाचक) की दुहाई का मुख्य भाव था, कि ब्राह्मण पाचक के लिए-पुते चौके में एक अब्राह्मण आ गया। जिससे उसका धर्मभ्रष्ट हो गया, क्योंकि उस पाचक ने चौके को ही अपना असली धर्म रखा था, न कि सत्य, ईमानदारी, पवित्रता आदि के व्यवहार को इसी प्रकार की स्थिति को सामने रख कर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास में लिखा है-

'इसी मूढ़ता से इन लोगों ने चौका लगाते लगाते विरोध करते-करते सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, धन, राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगा कर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिले तो पका कर खावें परन्तु वैसा न होने पर जानो सब आर्यावर्त्त देश भर में चौका लगा के सर्वथा नष्ट कर दिया। हां, जहां भोजन करें उस स्थान को धोने, लेपन करने, झाड़ू लगाने, कूड़ा कर्कट दूर करने में प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।'

स्वा० श्रद्धानन्द जी के जीवन की यह घटना आज के हमारे धार्मिक जीवन का पचत्तर प्रतिशत रूप बन कर सामने आ रही है। तभी तो जितना अधिक भव्य मन्दिरों, धार्मिक सम्मेलनों, पर्वों, जुलूसों, जगरातों, पूजा-पाठों का फैलाव हो रहा है, उतना ही अधिक हमारे सामाजिक जीवन में बेईमानी भ्रष्टाचार, छल-कपट का व्यवहार बढ़ रहा है। जिससे सारा समाज दुखी है, जबकि धर्म के प्रसार से सुख का विस्तार होना चाहिए था। वस्तुत: यह सामाजिक सुख तो जीवन व्यवहार के सच्चा-सुच्चा होने से ही मिल सकता है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने सभी तरह की सफाईयों में से कमाई की पवित्रता को अधिक महत्व दिया है।

ये कर्मकाण्ड तो सड़क के बोर्डों की तरह प्रेरणा देने के लिए होते हैं, जिससे चलने वाले की यात्रा सरलता से पूर्ण हो सके। अन्यथा यदि हमारा आचरण सच्चा-सुच्चा नहीं होता, तो यह सारा कर्मकाण्ड का व्यवहार व्यर्थ ही कहलाना चाहिए। तभी तो राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है-सारे कर्मकाण्ड निष्फल हैं, न हो शुद्ध मन की यदि भक्ति। यदि सत्कर्म नहीं करते हो, भरते नहीं विचार पुनीत। तो जप-माला-तिलक व्यर्थ हैं, उल्टा बन्धन उपवीत॥

कर्मकाण्ड को आचरण से अधिक महत्व देने का ही यह परिणाम है, कि हम गौ को गोमाता मानते हुए भी उसकी सेवा, पालन और उसके दूध का व्यवहार कम करते हैं। अपितु अधिकतर उसकी पूजा और 'गोमाता की जय' के नारों में ही सीमित होते जा रहे हैं। ऐसा करते हुए गोदुग्धपान, गोघृत सेवन का स्मरण कम ही आता है। तभी तो भैंस के दूध का आधिक्य हो रहा है। ऐसे ही बहुत कम ही ऐसे भक्त होंगे, जो तुलसी का प्रयोग करते होंगे, पर ऐसे लाखों मिल जायेंगे, जो प्रतिदिन किसी न किसी प्रकार से तुलसी की पूजा में व्यस्त रहते हैं।

कर्मकाण्ड की महत्ता के कारण ही हर धर्म वाले अपने-अपने धर्मपन की परख के लिए अपने धर्म की निशानियां पूछते हैं, कि भाई! तू ने उपवीत, शिखा, ककार आदि धारण किए हुए हैं या नहीं। कई बार तो इन निशानियों से रहित को उस धर्म का अनुयायी मानने से भी इन्कार कर दिया जाता है और इन चिन्हों को धारण करके या कर्मकाण्ड को पूर्ण करके व्यक्ति आश्वस्त हो जाता है, कि अब मेरा यह कार्य अवश्य ही सिद्ध हो जाएगा। मुझे यह फल जरूर मिलेगा। इस प्रकार के आश्वासन की दृष्टि से कर्मकाण्ड और फलित ज्योतिष का गहरा गठजोड़ है।

9. धर्म और अदृष्ट-धर्म का अर्थ अदृष्ट, अपूर्व, दैव भी होता है। हम प्राय: देखते हैं, कि संसार में जब कोई कार्य पूरा हो जाता है तो उसका फल सामने आता है । जैसे कि खेती में जमीन की तैयारी से लेकर फसल पकने तक के कृषि कर्म के पूरा होने पर फसल रूपी फल प्राप्त होता है। ऐसे ही दूसरे संसारी कार्यों मे भी कर्म के पूर्ण होने पर उसका फल सामने आता है। पर दूसरी ओर धर्म के यज्ञ, दान, उपकार आदि शुभकर्मों का फल कर्म की समाप्ति के साथ प्रत्यक्ष नहीं होता है। इस पर स्वाभाविक रूप से प्रश्न उभरता है, कि क्या इन कर्मों का फल नहीं होता ? जबकि धार्मिक साहित्य में बड़े विश्वास से यज्ञ आदि धार्मिक कर्मों का फल बताया गया है, पर यह स्पष्ट मिलता हुआ दिखाई नहीं देता। इस समस्या का समाधान पूर्व मीमांसा दर्शन में अदृष्ट, अपूर्व शब्द की व्याख्या द्वारा किया गया है। वहां बताया है, कि जो भी व्यक्ति यज्ञ आदि शुभ कर्म करता है, करने पर वह बाह्य कर्म तो समाप्त हो जाता है, पर उस से एक अदृष्ट (जो दिखाई नहीं देता या अपूर्व) जो अब से पहले नहीं था) उत्पन्न हो जाता है और वह तब तक रहता है, जब तक कर्म कराने वाली आत्मा को उस कर्म का फल प्राप्त नहीं हो जाता। दार्शनिक दृष्टि से पूर्व मीमांसा की यही मुख्य देन है, कि उसने अदृष्ट, अपूर्व (=धर्म) के द्वारा कर्मफल व्यवस्था को समझाने का सुन्दर प्रयास किया है।

इसी भाव को सामने रख कर ही मनुस्मृति (4, 234-41) आदि में कहा है, कि आत्मा अकेला ही शरीर धारण करता है, पैदा होता है और अकेला शरीर का त्याग करता (मरता) है। केवल धर्म ही उसके साथ जाता है और कुछ नहीं। इसी लिए धर्म का एक अर्थ पुण्य भी होता है या पुण्यकारक कर्मों का परिणाम धर्म माना जाता है।

(क्रमश:)

महिला सशक्तिकरण वर्ष के लिए विशेष–

वैदिक काल में नारी की स्थिति

□ ले० डॉ० भवानीलाल भारतीय, 8-423 नन्दनवन, जोधपुर

नारी विधाता की अद्‌भुत सृष्टि है। भारतीय समाज ने अत्यन्त प्राचीन काल में वेद प्रतिपादित आदर्शों और जीवन प्रणाली को स्वीकार कर अपना बहुविध विकास किया था। वैदिक काल में नारी को अत्युच्च स्थान प्राप्त था। वेदों के सहस्रों मंत्रों में नारी की गरिमामयी छवि को अंकित किया गया है। उषा, आप अदिति, सरस्वती आदि देवताओं को सम्बोधित करने वाले जो वैदिक मंत्र मिलते हैं उनमें नारी महात्म्य का ही उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद में स्त्री को यज्ञ में ब्रह्मा का स्थान ग्रहण करने के योग्य बताया गया है। इसी वेद में सरस्वती रूपा विदुषी नारी का आह्वान करने वाला निम्न मंत्र द्रष्टव्य है–

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।

सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्॥

(10-17-7)

अर्थात् दिव्य गुणों की कामना करने वाली विदुषी देवी को हम आमंत्रित करते हैं। यज्ञों के अवसर पर सरस्वती रूपी सुपठित देवी को हम बुलाते हैं। उत्तम कर्म करने वाली सन्नारी को हम आहूत करते हैं। वह दानशील व्यक्तियों को उत्तम ज्ञान देती है। ऋग्वेद के दशम मण्डल का ८५वां सूक्त नारी की महिमा का बहुविध आख्यान करता है। इसके वे मंत्र जिनकी ऋषिका सूर्या सावित्री है, नारी गौरव को ही उपस्थित करते हैं। वैदिक काल से लेकर अब तक आर्य जाति विवाह के अवसर पर इसी सूक्त के मंत्रों का प्रयोग करती आई है। इन मंत्रों का यहां संकेत मात्र से ही उल्लेख किया जाता है। प्रेतो मुञ्चामि (10-85-25), पूषात्वेतो नयतु (10-85-26), सुमंगलीरियं वधू (10-85-33) गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं (10-85-36) तुभ्यमग्रे पर्यवहन् (10-85-38) इहै व स्तं मा वि यौष्टं (10-85-42) अघोरचक्षु रपतिघ्न्येधि (10-85-44) आदि मंत्र गृहस्थ में प्रविष्ट होने वाली नारी का गौरवमय रूप प्रस्तुत करते हैं। समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ (10-85-47) मंत्र में द्विवचन का प्रयोग द्रष्टव्य है। इसमें वर और वधू द्वारा समान रूप से गृहस्थ के दायित्व को पूरा करने का संकेत है।

पुनः श्वसुर गृह में जाकर वधू किस प्रकार गृहस्थ परिवार की साम्राज्ञी बन जाती है, इसका संकेत भी इसी मंत्र (10-85-46) में मिलता है। ऋषि दयानन्द ने स्वरचित संस्कारविधि के विवाह प्रकरण मे इस मंत्र को उद्धृत किया है–

सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव।

ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु॥

इसका अर्थ करते हुए दयानन्द सरस्वती लिखते हैं–'हे वरानने, तू मेरे पिता जो कि तेरा श्वसुर है, उसमें प्रीति करके सम्यक्, प्रकाशमान, चक्रवर्ती राजा की रानी के समान पक्षपात छोड़ के प्रवृत्त हो। मेरी माता जो कि तेरी सास है उसमें प्रेमयुक्त होके उसी की आज्ञा में सम्यक् प्रकाशमान रहा कर। जो मेरी बहन और तेरी ननद है उसमें भी प्रीतियुक्त और मेरे भाई तेरे देवर और ज्येष्ठ अथवा कनिष्ठ हैं, उनमें भी प्रीति से प्रकाश्मान् अधिकार युक्त हो अर्थात् सबसे अविरोधपूर्वक प्रीति से वर्ता कर।'

वेदों में नारी को गृहस्थ की गुरुतर धुरा का वहन करने की प्रेरणा तो दी ही है, समय आने पर उसे वीर भावनाओं से युक्त होकर प्रचण्ड कर्मों में लग जाने का भी आदेश दिया है। ऋग्वेद के दशम मण्डल का १५१वां सूक्त शची पौलामी को समर्पित है। इसकी द्रष्टा ऋषि (ऋषिका) भी एक नारी शची पौलोमी ही है। इसमें जिस वीर नारी का चित्रण किया गया है उसकी ओजस्वी वाणी को सुनें–

उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भगः।

अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहि॥

(10-159-1)

सूर्य के उदय के साथ सात मेरे सौभाग्य की भी वृद्धि हो रही है। मैं अपने पतिदेव को प्राप्त करके विरोधियों को पराजित करने वाली तथा सहनशील बनूं।

पुनः वह कहती है–

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।

ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत्॥ (10-159-2)

मैं केतु (ध्वजा) तुल्य हूं समाज की मूर्धास्थानीय हूं, तेजस्विनी बन कर सभाओं में प्रभावशाली भाषण देने वाली हूं। मेरा पति मेरी इच्छा, ज्ञान और कर्म के अनुकूल आचरण करता है। इस वीरप्रसू नारी की सन्तान भी वैसी ही तेजस्विनी है–

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्।

उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः॥

(10-159-3)

मेरे पुत्र शत्रुओं का नाश करने वाले हैं और मेरी पुत्री भी ज्ञानादि गुणों के कारण विशेष रूप से प्रकाशित होने वाली है। मैं स्वयं भी काम क्रोधादि विकारों को जीतने वाली तथा बाह्य शत्रुओं का निग्रह करने वाली हूं। मेरा आचरण और व्यवहार ऐसा है जिससे मेरे पति को उत्तम यश प्राप्त होता है।

यजुर्वेद में भी नारी का गौरवगान करने वाले अनेक मंत्र मिलते हैं। आठवें अध्याय का ४३ वां मंत्र इस प्रकार है–

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति।

एताताऽ अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्॥

इस मंत्र का देवता (विषय) पत्नी है। यहां पत्नी के लिए जो विशेषण प्रयुक्त हुए हैं, उनसे नारी की गरिमा और प्रतिष्ठा व्यक्त होती है। वह पत्नी अघ्न्या है, उसकी ताड़ना करना उचित नहीं, वह स्तुति करने के योग्य है (इडे), रमणीय है (रन्ते), कमनीय है, कामना करने के योग्य है–(काम्ये) स्वीकार करने योग है (द्रव्य) अपने शील और आचार से द्युतिमान है (ज्योति) अविनाशी आत्मा होने के कारण अदिति है (अदिते), विद्यायुक्त है–(सरस्वती), पूज्यतम है (महि), उत्तम कीर्ति तथा वेदवाणी युक्त है–(विश्रुति) ये सभी नाम या विशेषण पत्नी के लिए वेद ने प्रयुक्त किये। संसार के साहित्य में नारी की प्रशंसा के लिए इतने शब्दों का प्रयोग एक साथ शायद ही कहीं हुआ हो।

राष्ट्रगीत के तुल्य सम्मान प्राप्त यजुर्वेद के २२वें अध्याय के २२वे मंत्र में जहां राष्ट्र में ब्रह्मवर्चस्व को धारण करने वाले ब्राह्मण, शूरवीर क्षत्रिय तथा दुग्धवर्ती गौवों आदि की कामना की गई है वहां राष्ट्र की नारी को अनेक व्यवहारों में कुशल होने के कारण आदर्श कहा गया है।

अथर्ववेद में 'शुद्धा पूता योषितो यज्ञिया इमा' (11-1-17) कह कर नारी को शुद्ध, पवित्र तथा यज्ञ के तुल्य आदरास्पद कहा गया। इसी वेद के 14वें काण्ड का प्रथम सूक्त तो स्त्रियोचित कर्त्तव्य का उपदेश करने वाला विश्वकोश ही है। इस तथ्य के आगे के दूसरे सूक्त के अधिकांश मंत्र वैदिक विवाह विधि में विनियुक्त हुए हैं। पत्नी को गृहाश्रम की महारानी बताते हुए उसकी उपमा उस सागर से की गई है जो नदियो का स्वामी है–

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा।

एवात्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य॥ 14-1-43

जिस प्रकार समुद्र ने नदियो का सम्राट पद प्राप्त किया है उसी प्रकार हे वधू, तू पति के घर जाकर साम्राज्ञी बन।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वैदिक संहिताओ मे नारी के गौरव तथा महत्व को सर्वत्र प्रस्थापित किया गया है तथा उसको गृहस्थाश्रम की एक धुरी माना गया है। नारी की गरिमा का प्रत्याख्यान करने वाला एक भी मंत्र संहिताओ में नहीं हैं।

पुरुष ऋषियों की भांति स्त्री-ऋषिकाओं ने भी वेदों के विभिन्न मंत्रों तथा सूक्तों का रहस्य जाना था। वे इन मंत्रों का अर्थ चिन्तन कर ऋषिका पद को प्राप्त कर सकीं। ऋग्वेद के निम्न सूक्तों की द्रष्टी ऋषिकाओं की नामावली यहां दी जा रही है। मण्डल 10 सूक्त 31 तथा 40 को घोषा काक्षीवती ने देखा। इसी मण्डल के 65 वें सूक्त के 16वे तथा 17वें मंत्र को उर्वशी ने देखा (उसके रहस्य को जाना 10 वें मण्डल के 101 वें मंत्र की द्रष्टी जुहू ब्रह्मजाया थी। इसी मण्डल के 134वें सूक्त को देखने का श्रेय यमी को है। 151 वें सूक्त मे नारी गौरव का गान करने वाली ऋषिका शची पौलोमी है। 181 वें सूक्त का ज्ञान सार्पराज्ञी ने प्रसारित किया। यह तो 10वे मण्डल की बात हुई। ऋग्वेद के अन्य मण्डलो को देखें तो ज्ञात होता है कि 5वे मण्डल के 28वें सूक्त का दर्शन विश्ववारा आत्रेयी ने किया था। अष्टम मण्डल के 11वे सूक्त की द्रष्टी अपाला आत्रेयी है। अन्य उदाहरण भी दिए जा सकते हैं।)

मंत्र द्रष्टा नारी ऋषियो (ऋषिकाओं) की एक सूची बृहद्देवता के 24वे अध्याय (श्लोक-84, 85, 86) में निम्न प्रकार से उपलब्ध होती है–

(शेष पृष्ठ 8 पर)

वेदों की महानता

□आचार्य भगवान देव जी "चैतन्य" 81/एस-4 सुन्दर नगर 174402

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों की महानता को दर्शाते हुए कहा है-'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' इसी क्रम में वे आगे लिखते हैं-'वेद का पढ़ना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।' महर्षि दयानन्द जी मानवतावाद के पक्षधर थे। उन्होंने व्यक्ति की श्रेष्ठता का आकलन किसी जाति, मजहब, सम्प्रदाय या देश विशेष के आधार पर नहीं किया बल्कि उन्होंने उसका आधार गुणवता को माना है। यही कारण है कि वे संसार के समस्त महापुरूषों में अपना एक अलग और विशिष्ठ स्थान रखते हैं। सत्य के पक्षधर होना उन्हें अति प्रिय था। इसलिए सत्याचरण करने वाला व्यक्ति ही उनकी दृष्टि में महान है। सत्य क्या है इसका पता लगाने के लिए उन्होंने परमात्मा के ज्ञान वेद को सर्वोपरि घोषित किया और आदेश दिया कि यदि व्यक्ति आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनना चाहता है तो उसे वेद मार्ग का ही अनुकरण करना चाहिए। उन्होंने वेद की श्रेष्ठता को प्रमाणित करने के लिए अपने ग्रन्थों में विस्तार से विवेचन किया है। इस सम्बन्ध में उनके तर्क और प्रमाण अकाट्य और अनुकरणीय हैं। हमें उनकी मुख्य विशेषता यह लगती है कि वे लोकेषण से एकदम अछूते दिव्य महापुरूष थे क्योंकि उन्होंने किसी प्रकार से भी अपना अलग मत चलाने का प्रयास नहीं किया और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि तक के ऋषि-मुनियों की परम्परा में ही अपने आप को रखा। इसलिए वेद को परमात्मा का ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक घोषित करने में भी उनका किसी प्रकार का दुराग्रह नहीं था बल्कि यहां भी हम उन्हें प्राचीन ऋषिओं की ही परम्परा में खड़ा हुआ पाते हैं। वेद में कौन-कौन सी विद्याएं हैं तथा वेद को परमात्मा द्वारा प्रदत ज्ञान क्यों माना जाए आदि की जानकारी प्राप्त करने के लिए महर्षि जी के ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का अध्ययन करना चाहिए। यहां तो हम वेदों की महानता के बारे में कुछ भारतीय और पाश्चात्य मनीषियों के विचार मात्र प्रस्तुत कर रहे हैं।

मनु महाराज का कथन है-धर्मजिज्ञासमानानां परमं श्रुतिः। (मनु, 2-13) अर्थात धर्म ज्ञान की इच्छा करने वालों के लिए वेद ही परम प्रमाण हैं। मनुस्मृति के अतिरिक्त अन्य स्मृतियों में भी अपने-अपने ढंग से वेद की महता को प्रकट किया गया है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

चत्वारो वा त्रयो वापि यं ब्रूयुर्वेदपारगाः।

स धर्म इति विज्ञेयो नेतरैस्तु सहस्त्रशः॥ (पराशर स्मृति अ. 8)

चार व तीन वेद का पूर्ण वेता (ज्ञाता) व्यक्ति जो बात कहे वही धर्म जानना, अन्य हजारों लोग भी कहें तो भी वह धर्म नहीं होता।

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरूते श्रमम्।

स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ (मनुस्मृति)।

वेद को छोड़कर जो द्विज अन्य ग्रन्थों में परिश्रम करता है, वह जीवित ही कुटुम्ब सहित शूद्र हो जाता है। बृहस्पति स्मृति 79 में कहा गया है-अधीत्य सर्ववेदान् वै सद्यो दुःखान् प्रमुच्यते। अर्थात वेद का अध्ययन करने से व्यक्ति दुःखों से मुक्त हो जाता है। याज्ञवल्क्य स्मृति 1-40 के अनुसार-वेद एवं द्विजातीनाम् निःश्रेयस्करः परः। अर्थात यज्ञ-तप आदि की अपेक्षा वेद ही द्विजों का कल्याण करने वाला है। अत्रि महाराज (3-8) कहते हैं-नास्ति वेदात्परं शास्त्रम्। अर्थात वेद से बढ़कर और कोई शास्त्र नहीं है। अन्यत्र कहा गया है कि श्रुति और स्मृति द्विजों की आंखें हैं ये दोनों न होने से व्यक्ति अन्धा और अज्ञानी है। व्यास स्मृति में वेदों की प्रमाणिकता के बारे में कहा गया है-

श्रुति स्मृति पुराणानां विरोधपि त्वदृश्यते।

तत्र श्रुति प्रमाणन्तु तयो देधे स्मृतिर्वरा॥ (अ01)

अर्थात जहां वेद और स्मृति पुराणों में विरोध हो वहां वेद का प्रमाण ही मान्य होगा और स्मृति व पुराणों में विरोध होने पर स्मृति मान्य होगी। इसी प्रकार कौत्यायन, बोधायन और भृगु आदि ने भी वेदों की महानता को स्वीकार किया है।

पुराण साहित्य भी वेदों को ही महानतम ग्रन्थ के रुप में मान्यता देता है-

वेद प्रमाणहितो धर्मा ह्यधर्मस्ततोदमयेयः।

वेदो नारायणः साक्षात् स्वयंभूरिति शुश्रुम॥ (भागवत 6-1-40)

अर्थात जो वेद में कहा गया है वही धर्म है और वेद विहित धर्म के जो विपरीत है वह अधर्म है। वेद परमात्मा से पैदा हुआ है अतः वेद स्वयं परमात्मा है, ऐसा हमने सुना है।

सर्वथा वेद एवासौ धर्म मार्ग प्रमाणकः।

तेना विरूद्धं यत्किंच्च तत्प्रमाणं न चान्यथा॥

यो वेद धर्म मुंच्छित्य ये वर्तते अन्य प्रमाणतः।

कुण्डानि तस्य शिक्षा र्थयमलोके वसन्ति हि॥ (देवी भागवत 11-1-26-27)

अर्थात धर्म के विषय में वेद ही प्रमाण है। जो भी कुछ वेद के अविरूद्ध एवं वेदानुकूल है वही प्रमाणिक है अन्य नहीं। जो वेद को छोड़कर दूसरे ग्रन्थ को प्रमाणिक मानता है, उसके लिए यमलोक में कुण्ड तैयार है, वह उसमें गिरता है-निवास करता है।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं मद्धत्यभुजमुंच्चयते।

वेदाच्छास्त्र परं नास्ति न देवः केशवात् परम्॥ (गरूड़ पु. ब्रा. का. 10-2-55)

अर्थात मैं भुजा उठाकर और दुहाई देकर सत्य कहता हूं कि वेद से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं है और केशव से बढ़कर कोई देवता नहीं है। इसी पुराण में अन्यत्र लिखा है-वेद एव द्विजातीनाम् निःश्रेयष्करः परः॥ (94-25) अर्थात विद्वानों के वेद ही कल्याण करने वाला है। कूर्म पुराण (2-14-86-88) के अनुसार 'स सम्मूढो न....शूद्र कल्पः पात्रोतानं प्रयधते। अर्थात जो द्विज वेद न पढ़कर दूसरे कार्य में परिश्रम करता है वह मूर्ख है। जो अपने मंत्रसहित वेद पाठ करके वेद के अर्थ को मनन नहीं करता वह शुद्रवत् हो जाता है। अन्य पुराणों में भी वेद की महता को प्रकट किया गया है-वृथाजाप्या मवेदिकम् (भविष्य पुराण उ. प अ. 122) अर्थात वेद से भिन्न ग्रन्थ का जाप अवैदिक होने से निषिद्ध है। विष्णु पुराण (वि 321) में वेद का मनन न करने वाले को पापी कहा है। शिव पुराण धर्मसंहिता 41-42 मे वेदाध्ययन को महापुण्य कहा गया है। अग्नि पुराण (256-1-6) में कहा है-ऋग् यजु सामाथर्व विधानं पुस्करोदितांयुक्ति मुक्ति प्रदम् अर्थात जो वेद का धर्म है वही भोग-मोक्ष का देने वाला है। कल्कि पुराण (अ 4-10) में वेद को परमात्मा का ही रूप माना गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण (4-10) मे कहा है-नास्ति वेदात्परम् शास्त्रं अर्थात वेद के समान और कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है। मार्कण्डय पुराण (25-14) में कहा है कि सब वेदों को गुरूमुख से प्राप्त करके आशीर्वाद प्राप्त करें। स्कन्द पुराण (36-41) का कथन है-द्विजातिनाम् श्रुतिहृयेका हेतु निश्रयसकियः। अर्थात वेदों से ही सबका कल्याण होता है महाभारत कार का कथन इस प्रकार है-

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।

आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः॥ (शा. पर्व 23-2-24)

तपस्विनो धृतिमन्तः श्रुति विज्ञानचक्षुषः।

सर्वमार्ष हि मान्यते व्याहृतविदितात्मनः॥ (शा. पर्व 268-10)

अर्थात परमात्मा ने सृष्टि के अनादि काल में वेद रूप नित्य वाणी का प्रकाश किया जिससे मनुष्यों की सारी प्रवृतियां पैदा होती है। तपस्वी, धैर्यवान, वेद एवं ज्ञान सम्पन्न उस परमात्मा की निश्वास भूत वाणी मानते हैं।

शतपथ में कहा गया है-

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदों यजुर्वेदः

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिताएं

महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश विश्व प्रसिद्ध कान्तिकारी पुस्तक है। मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक प्रगति के लिए यह ग्रन्थ विश्व समुदाय के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रही है। इसके प्रचार प्रसार के लिए आर्यसमाज की सर्वोच्च अन्तर्राष्ट्रीय संस्था सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली ने तीन वर्गों में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया है। वर्ग क में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित एक प्रश्न पत्र भेजा जाएगा। प्रतियोगियों को इस प्रश्न पत्र में दिए प्रश्नों के उत्तर लिख कर भेजने होंगे। प्रथम आने वाले प्रतियोगी को 3000 रु., द्वितीय को 2000 रु. और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगी को 1000 रुपये पुरस्कार रुप मे दिए जाएंगे। इस वर्ग में आयु लिंग, मजहब योग्यता आदि का बन्धन नहीं। स्कूल, कालेज, गुरुकुल के विद्यार्थी एवं आम जनता इस वर्ग में भाग ले सकते हैं। वर्ग ख स्कूल, कालेज, गुरुकुलों के आचार्य एवं वैदिक विद्वानो के लिए है। इस वर्ग में प्रतियोगियों को सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक अध्याय पर अधिकतम सात पृष्ठों में एक सारगर्भित लेख लिखकर सभा कार्यालय में भेजना होगा। पुरस्कार क्रमशः 5000, 4000, 2000 रुपये हैं। इस वर्ग में विजेताओं को सत्यार्थ रत्न को उपाधि से भी सम्मानित किया जाएगा। वर्ग ग में 18 वर्ष से कम आयु के विद्यार्थियों के लिए है। इस वर्ग में प्रतियोगियों को सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित दृष्टान्तों, संवादों एवं कहानियों आदि का केवल सार एवं उनसे मिलने वाली शिक्षाओं को अपने शब्दों में लिखकर भेजना होगा। इस वर्ग के प्रतियोगियों की सहायतार्थ एक लघु पुस्तिका निःशुल्क भेजी जाएगी। इस वर्ग मे पुरस्कार क्रमशः 2000, 1000, 500 रुपये रहेंगे।

प्रत्येक वर्ग में उत्तर पुस्तिका भेजने की अन्तिम तिथि 30 नवम्बर, 2002 तक रखी गई है ताकि प्रतियोगी अच्छी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर सकें। प्रत्येक प्रतियोगिता का माध्यम हिन्दी अथवा अंग्रेजी रखा गया है ताकि प्रत्येक वर्ग में राष्ट्र के लोग इसमे भाग ले सके। प्रत्येक वर्ग मे प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारो के अतिरिक्त प्रशस्ति पत्र एवं कुछ सान्तवना पुरस्कार दिए जाने की योजना है। उत्तीर्ण होने वाले प्रत्येक प्रतियोगी को सार्वदेशिक सभा की ओर से एक प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा। प्रत्येक प्रतियोगिता का प्रवेश शुल्क मात्र 50/- रुपये ही रखा गया है। अति निर्धन व अनाथ बालक-बालिकाएं प्रार्थनापत्र लिखकर इसमें छूट प्राप्त कर सकते है। प्रार्थना पत्र सम्बन्धित संस्था के मुखिया से प्रमाणित होना चाहिए। प्रवेश शुल्क सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम धनादेश या ड्राफ्ट के द्वारा भेजना होगा। प्रवेश शुल्क प्राप्त होने पर प्रतियोगियों को एक मास के भीतर अनुक्रमाक, प्रश्न पत्र एवं अन्य निर्देश आदि भेजे जाएंगे। प्रवेश शुल्क व प्रार्थना पत्र डा मुमुक्षु आर्य, रजिस्ट्रार, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-2 के पते पर भेजना होगा। इच्छुक महानुभाव इस स्वर्णिम अवसर का अवश्य लाभ उठाएं और सत्यार्थ प्रकाश को अभी से पढ़ाना प्रारम्भ कर दें। सत्यार्थ प्रकाश का अच्छी प्रकार अध्ययन किए बिना प्रश्नों के उत्तर देना या निबन्ध लिखना सम्भव न होगा। अतः प्रतियोगियो को चाहिए कि समय का पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए इन प्रतियोगिताओं मे से किसी एक में भाग अवश्य लें। पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश यदि स्थानीय पुस्तकालयों, आर्यसमाज कार्यालयों अथवा पुस्तक विक्रेताओ आदि से उपलब्ध न हो तो पचास रुपये हिन्दी संस्करण के लिए और एक सौ पचास रुपये अंग्रेजी संस्करण के लिए भेजकर मंगवाई जा सकती है।

कै. देवरत्न आर्य	**विमल आर्य**	**वेदव्रत शर्मा**	**डॉ. मुमुक्षु आर्य**
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	सभा मन्त्री	रजिस्ट्रार

वार्षिक उत्सव समाचार

आप को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना का 28वां वार्षिक उत्सव (सम्मेलन) 8 अगस्त से 11 अगस्त 2002 तक आयोजित किया जा रहा है जिस में उच्च कोटि के विद्वान, सन्यासी एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। सभी बन्धुओं से पार्थना है कि वह उत्सव में बढ़ चढ़ कर पधारें और वैदिक ज्ञान गंगा से लाभान्वित हों। लुधियाना जिला की सब आर्य समाजों से प्रार्थना है कि वह इन तिथियों में अपनी आर्य समाज का कोई विशेष कार्यक्रम अथवा उत्सव निश्चित न करें।

-आशानन्द आर्य, प्रधान आर्य समाज हबीबगंज, लुधियाना

स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ़ द्वारा प्रतियोगिता सम्पन्न

केमलिन लिमिटड की तरफ से दिनांक 3-6-2002 से 9-6-2002 तक स्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में फैबरिक पेन्टिंग का कैम्प लगाया गया। दिनांक 9-6-2002 पेंटिग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 80 बच्चों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

जिसमें प्रथम पुरस्कार जानकी पुरी, द्वितीय पुरस्कार पूनम महत्ता, तृतीय अंजू ने प्राप्त किए और भी छोटे बच्चों ने पुरस्कार प्राप्त किए। साथ ही सभी प्रतियोगियों को कैमलिन लिमिटड की ओर से सर्टीफिकेट और स्त्री समाज की ओर से महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, सरफरोशी की तमन्ना, और आर्य समाज के बीस बलिदानी पुस्तकें भी बच्चों को दी गई।

इस अवसर पर निर्णायक के रूप में प्रतिनिधि संदीप भाटिया ए.पी.जे. स्कूल की आर्ट टीचर ज्योति मदान और मोना भाटिया थी। कम्पनी की टयूटर अंजना मल्होत्रा थे। इस शिविर को सफलता पूर्वक चलाने के लिए स्त्री आर्य समाज और स्कूल की मुख्याध्यापिका सन्तोष धवन, मन्त्री आनन्द पुरी, कोषाध्यक्ष सुषमा नागपाल, सिलाई की अध्यापिका पलविन्द्र, पेन्टिंग की अध्यापिका अनुराधा ने बहुत सहयोग दिया।

—सन्तोष धवन, मुख्याध्यापिका

वैदिक काल में नारी........
(पृष्ठ 5 का शेष)

घोषा गोधा विश्ववारा अपालोपनिषन्निसत्॥

ब्रह्मजाया जुहूर्नाम अगस्त्यस्य स्वसादितिः॥

इन्द्राणी चेन्द्रमाता च सरमा रोमशोर्वशी।

लोपामुद्रा च नद्यश्च यमी नारी च शश्वती॥

श्रीर्लक्ष्मी सार्पराज्ञी वाक् श्रद्धा मेधा च दक्षिणा।

रात्री सूर्या च सावित्री ब्रह्मवादिन्य ईरिता॥

ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रचार करने के कारण उपर्युक्त ऋषिकाओं को ब्रह्मवादिनी कहकर पुकारा जाता है। वैदिक काल के परवर्ती ब्राह्मण तथा उपनिषद् काल में भी नारी का गौरव तथा महत्व अक्षुण्ण रहा। शतपथ ब्राह्मण तथा तदनुवर्ती वृहदारण्य-कोपनिषद् में वाचकनवी गार्गी नामक ब्रह्मवादिनी नारी का आख्यान अनेकत्र आया है। राजा जनक की सभा में उपस्थित विद्वत् समुदाय को जब महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपने अपरिमित ब्रह्मज्ञान के द्वारा निर्वाक् कर दिया तो वचक्नु ऋषि की पुत्री गार्गी उठ खड़ी हुई और उसने महर्षि से पूछा-'अथ हैनं गार्गी वाचक्नवी पप्रच्छ याज्ञवृल्क्येति होवाच.....आदि' तदनन्तर गार्गी वाचक्नवी ने याज्ञवल्क्य से गूढ़ दार्शनिक प्रश्न पूछे। विस्तृत विवरण के लिए बृहदारण्यकोपनिषद् (3-6-1) द्रष्टव्य है। पर्याप्त प्रश्नोत्तर करने के पश्चात् महर्षि ने परमात्मा की महिमा को निम्न प्रभावशाली शब्दों में उद्बोधित किया-'एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठत एतस्य वा अक्षरस्य प्राशने गार्गि द्यावापृथिव्यौ विधते तिष्ठत एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि निमेषा मुहुर्त्ता अहोरात्राण्यर्द्धमासा ऋतवः संवत्सरा इति विधृतास्तिष्ठन्त्ये आदि' अर्थात् हे गार्गी, उस अक्षर परमात्मा के अनुशासन को मानकर सूर्य और चन्द्रमा नियमित होकर स्थित हैं, इसी परमेश्वर की आज्ञा को स्वीकार कर द्युलोक और पृथ्वीलोक नियमित स्थित हैं। इसी अविनाशी अक्षर के आदेश से निमेष (पल), मुहुर्त, अहोरात्र (दिन रात), अर्द्ध मास, मास, ऋतु, संवतसर (वर्ष) आदि काल के अवयव नियमित हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मनिष्ठ से शास्त्रार्थ में प्रवृत्त होकर गार्गी जैसी भारतीय विदुषी ने समस्त नारी जाति को गौरवान्वित किया था।

याज्ञवल्क्य की विदुषी पत्नी मैत्रेयी का आख्यान भी बृहदारण्यकोपनिषद् (2-4) में वर्णित हुआ है। मोक्षमार्ग में अपनी रुचि को दर्शाती हुई मैत्रेयी ने अपने पति को कहा था, 'सा होवाच मैत्रेयी येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्या-जिससे मैं अमृतत्व को प्राप्त नहीं कर सकूं उसे जानकर क्या करूंगी? पत्नी की इसी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए महर्षि ने आत्मा विषयक अपना वह प्रसिद्ध उपदेश दिया जो "न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियोभवति" आदि तथा आगे के वाक्यों में वर्णित हुआ है। मैत्रेयी को ही सम्बोधित कर महर्षि याज्ञवल्क्य ने उपनिषद् के इस अमर वाक्य का उच्चारण किया था-'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्व विदितम्' निश्चय ही यह आत्मा (परमात्मा के लिए प्रयुक्त) ही द्रष्टव्य है, श्रोतव्य है मनन के योग्य है, अतिशय ध्यान करने के योग्य है। इसके श्रवण, मनन, दर्शन से सब कुछ जान लिया जाता है। उपनिषद् कालीन नारियों का अध्यात्म ज्ञान भारत की प्रोज्जवल निधि थी।

धर्मशास्त्रों में वेदों के पश्चात् स्मृतियों की गणना होती है। स्मृति ग्रन्थ वे हैं जिनकी रचना परावरज्ञ ऋषियों ने वेदों की शिक्षा का आधार लेकर की है। इन ग्रन्थों में वर्णाश्रम धर्म, शासन पद्धति, राजनीति आदि विषयों के साथ-साथ अनेक दार्शनिक तथा आध्यात्मिक विषय भी विवेचित हुए हैं। यों देखा जाए तो स्मृतियों की संख्या बहुत अधिक है, किन्तु इनमें सर्वोपरि प्रमाणिक स्वायम्भुव मनु द्वारा रचित मनुस्मृति है। छान्दोग्य ब्राह्मण में कहा गया है कि जो कुछ मनु ने कहा वह औषधियों का भी औषध है। इसी प्रकार मनु के टीकाकार कुल्लूक भट्ट बृहस्पति नाम के एक आचार्य का मत निम्न प्रकार उद्धृत किया है-

वेदार्थोपनिषद्धत्वात् प्राधान्यं हि मनोः स्मृतम्।

मन्वर्थ विपरीता तु या स्मृतिः सा न शस्यते॥

अर्थात् वेदार्थ का निबंधन करने के कारण मनु रचित स्मृति की ही प्रधानता प्राप्त है। मनु के अर्थ के विपरीत जो स्मृतियां हैं, वे कदापि आदरणीय नहीं है। इसी आधार पर स्वामी दयानन्द ने भी अकेले मनुस्मृति को ही स्मृति साहित्य में एक मात्र प्रामाणिक ग्रन्थ स्वीकार किया तथा स्व ग्रन्थों में इसी शास्त्र के प्रचुर उदाहरण दिए हैं। मनु ने नारी की महिमा को अत्यन्त उदात्त शब्दों में व्यक्त किया है। वे कहते हैं-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः 3-56

जहां नारियों की पूजा (सम्मान) होती है वहां देवताओं का निवास होता है, अर्थात् विद्वान् लोग वहा आकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं, इसके विपरीत जहां वे अपमान पाती हैं, वहां के लोगों के समस्त कर्म निष्फल ही रहते हैं। इसके बाद वाले श्लोक में मनु ने स्पष्ट कहा-

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।

न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा॥ 3-57

जिस घर की स्त्रियां दुःखी रहती हैं, कष्ट पाती हैं, वह कुल तत्काल नष्ट हो जाता है। इसके विपरीत जहां उन्हें कोई कष्ट नहीं होता, वे कुल और परिवार सदा वृद्धि प्रास करते हैं। आगे के श्लोकों में स्मृतिकार ने नारियों का वस्त्राभूषणों से सदा सत्कार एवं सम्मान करने का आदेश दिया तथा यह भी कहा कि जो लोग अपने गृहस्थ में ऐश्वर्य की वृद्धि चाहते हैं उन्हें उत्सवों तथा समारोहों के अवसर पर विशेष रूप से नारी का सत्कार करना चाहिए। (3-59) गृहस्थ में पति और पत्नी के एक-दूसरे से सन्तुष्ट रहने की परम आवश्यकता है। इस तथ्य का प्रतिपादन करते हुए मनु कहते हैं-

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भार्या तथैव च।

यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥3-60

अर्थात् जहां पत्नी से पति एवं पति से पत्नी सन्तुष्ट रहते हैं, वहां नित्य कल्याण की वृष्टि होती है।

स्मृति ग्रन्थों में समय-समय पर अनेक नये श्लोक प्रक्षिप्त किये गये हैं अतः जिस काल में नारी की अधोगति हुई, उसके अधिकार छीने गए तथा उसे सर्वविध अपमान तथा निंदा का पात्र समझा गया, उस समय इन ग्रन्थों में नारी निंदा तथा नारी तिरस्कार के अनेक श्लोक मिलाये गये। आज के अनेक चिंतक और विचारक इन्हीं प्रक्षिप्त श्लोकों के आधार पर स्मृतिकार मनु को नारी के स्वत्वों का अपहरण करने तथा उसे सर्वविध तिरस्कार का पात्र घोषित करने का अपराधी मानते हैं। स्त्री [illegible] भी स्थिति में स्वतंत्रता न दी जाए, यह आरोप लगाते हुए आक्षेपकर्त्ता मनुस्मृति के 9वें अध्याय के तीसरे श्लोक को उद्धृत करते हैं जिसमें कहा गया है कि कुमार्यावस्था में स्त्री की रक्षा पिता करता है विवाहोपरान्त पति उसकी रक्षा करता है तथा वार्धक्य प्राप्त होने (अथवा पति के न रहने पर) पुत्र उसकी रक्षा करता है। अतः किसी भी अवस्था में स्त्री के लिए स्वतंत्रता का विधान नहीं है।

वस्तुतः एक निर्दोष स्मार्त कथन को पूर्वाग्रहवश अन्यथा प्रस्तुत करना उचित नहीं। 'पिता रक्षति कौमारे' इस श्लोक का सीधा साधा भाव यही है कि पुरुष की अपेक्षा नारी शारीरिक दृष्टि से दुर्बल होती है, उसका स्वभाव भी कोमल होता है इसलिए उसके रक्षण की सदा आवश्यकता रहती है। यह कार्य समय समय पर पिता, पति और पुत्र करता है। इस सार्वभौम सत्य को नकार कर 'न स्त्री स्वातन्त्र्यमहर्ति' इस वाक्यांश को नारी स्वतंत्रता का सर्वकाल में विघातक मानना कदापि उचित नहीं है। स्मृतिकार का यह कर्त्तव्य होता है कि जहां सर्व कालों में आचरणीय धर्मो और कर्त्तव्यों का विधान करे वहां आपद्धर्मों तथा प्रायश्चित विधियों की भी व्याख्या करे। अतः मनु ने भी नारी को दूषित करने वाले मद्यपान, दुर्जन संग, पति को त्यागने, अनावश्यक इतस्ततः भ्रमण, अधिक काल तक सोने तथा स्वगृह को छोड़कर इधर-उधर भटकने को स्त्रियों के लिए हानिकारक बताया है, किन्तु ऐसे श्लोकों से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि नारी में अनिवार्यतः उपर्युक्त दोष होते ही हैं। मनु के हृदय में नारी का कितना सम्मान था, यह उनके निम्न श्लोक से प्रकट होता है-

प्रजनार्थं महाभागा पूजार्हा गृहदीप्तयः।

स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन॥

(9-26)

यहां नारी को उत्तम सन्तान देने वाली, महाभाग्य वाली, पूजा के योग्य तथा गृहों की शोभा बताया है। उक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि मनु ने वेदों की सरणि का अनुसरण करते हुए नारियों के प्रति समुचित सम्मान दिखाया है किन्तु स्मृति नामधारी जिन ग्रन्थों की रचना पश्चात्वर्ती उस काल में हुई जब नारी को सर्वथा उपेक्षा, तिरस्कार तथा निंदा का पात्र समझ लिया गया था, उनमें निश्चय ही नारी के असम्मान तथा उसके अधिकारों के अपहरण के अनेक प्रसंग आए हैं।

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रेस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

दूरभाष : 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 10 सृष्टि संवत 1960853103, 23 जून, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

बुरा सोचना, बुरा बोलना और बुरा ही करना मानवता के शत्रु हैं

लेः श्री केवी दयाल शर्मा, "शर्मा निवास 120 माडल टाउन, अमृतसर

मानव जन्म, परमात्मा ने मनुष्य को अच्छा सोचने, अच्छा बोलने और अच्छा ही करने के लिये दिया है। इसी का नाम वैदिकता है। जो इस नियम का पालन करते हैं, उन की प्रतिष्ठा समाज में बढ़ती जाती है। मनुष्य समाज का अंग है और धार्मिक मनुष्यों से मित्रता करने योग्य है। जिस तरह का समाज होगा, उसी तरह के मनुष्य विचार वाले होंगे। यदि किसी मनुष्य ने अपने मन पर काबू पा लिया है कि वह सदा सदाचारी और धर्मपरायण मनुष्यों का ही संग करेगा तो वह एक दिन धर्मात्मा बन सकता है। ऐसे ही भद्र पुरुषों से समाज को लाभ पहुंचता है और वह समाज उन्नति के शिखर तक पहुंचता है। दुर्भाग्यवश, यदि मानव बुरे आदमियों के जाल में फंस जाता है तो उस का अपना भी बुरी तरह से पतन होगा और जिस समाज से उस का वास्ता पड़ता है उसको भी मझधार में डुबो देगा। मनुष्य को पूरी स्वतंत्रता है कि वह चाहे अच्छी समाज का सदस्य बने चाहे बुरी समाज का। परमात्मा ने तो उसके कर्मों का फल देना ही देना है।

दुर्योधन जो महाराजा धृतराष्ट्र चक्षुहीन का बेटा था, वह अपने पिता जी की ओर से शासन का सब काम धधा चला रहा था, धृतराष्ट्र के मन में एक दिन यह बात सूझी कि शासन का सब काम युधिष्ठर पाण्डव पुत्र को सौंपा जाए दुर्योधन को भी इस बात का पता लग गया। उसने अपने पिता जी को साफ-साफ कह दिया कि बिना युद्ध किये वह पाण्डव पुत्रों को एक इन्च भी भूमि का टुकड़ा नहीं देगा। दुर्योधन के मन पर कुसंस्कारों ने अपना डेरा जमाया हुआ था। वह बुरा विचार उसके मन को जकड़े हुए था। ईर्ष्या और द्वेषता की अग्नि उसके दिलो दिमाग में भड़क रही थी। भगवान कृष्ण जी ने भी बड़ा समझाया, परन्तु उसने उसकी दैवी ध्वनि को न सुना। दुर्योधन ने भगवान कृष्ण जी को कहा जानामि धर्मा मे च न प्रवृति, जानामि अधर्म मैं च न निवृत्ति। मैं धर्म को भी जानता हूं परन्तु उस में प्रवृत्त नहीं हो रहा हूं, अधर्म को भी जानता हूं, परन्तु उस से मेरी निवृत्ति नहीं हो रही है। फिर क्या हुआ युद्ध की तैयारियां प्रारम्भ हो गई। यह है बुरे संस्कारों का परिणाम। महात्मा गांधी ने नीचे बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है–

नादान भुत करनी अपनी, ए पापी पाप में चैन कहां। जब पाप की गठड़ी सीस धरी, तो फिर सीस पकड़ कर क्यों रोवत है॥

मानव बुराईयों से बच नहीं सकता, जब तक कि वह अपनी आत्मा में परमात्मा के, जो सूर्य के समान भीतर चमक रहा है उसके दर्शन नहीं कर पाता। इसके लिये, उसको भक्ति मार्ग का आश्रय लेना पड़ेगा, तभी अन्दर के जन्म जन्मातरों के जमे हुए मैल दूर होंगे। अज्ञानी, अज्ञानता के कारण इन बुरे संस्कारों में फंस जाता है और फिर उनसे छुटकारा पाना असम्भव हो जाता है। शुभ विचारों को भीतर लाने के लिये हमें बड़ा यत्न करना पड़ता है, परन्तु बुरे विचार बिना बुलाएं ही (Without Invitation) मन को काबू कर लेते हैं। कितनी हैरतांगेज बात है याद रक्खो परमात्मा का सच्चे दिल से भजन करने से सब दुर्गुणों का सब व्यसनों का नाश हो जाता है और हृदय शुद्ध और पवित्र हो जाता है और परमात्मा अपने भक्तों को दैवी अमृत पिलाता है।

मानव शरीर कई स्थितियो में से गुजरता है। पहली स्थिति बचपन की, दूसरी स्थिति नौजवानी और तीसरी स्थिति है वृद्ध अवस्था। यदि परमात्मा का स्मरण हर अवस्था में न किया जाए तो समझ लो समय यूंहि बरबाद हुआ। कुछ आदमी सोचते हैं कि वृद्ध अवस्था ईश्वरीय स्मरण के लिये अनुकूल बैठती है। ऐसे मनुष्यों को यह भी चिन्तन करना चाहिये कि यदि मृत्यु का बिगुल वृद्ध अवस्था से पहले बज गया तो उनके अरमान दिल ही दिल में रह जाएंगे और अति शुभ कर्म को वह पूरा न कर सकेंगे। इसलिए हर अवस्था में ईश्वरीय स्मरण अवश्यमेव करना चाहिए। हर क्षण जीवन का परमात्मा की याद में गुजारना चाहिये। यह भी याद रहे कि जो आकांक्षा, ईश्वर के प्रति स्वार्थ युक्त है, हमारे हृदय को शुद्ध और पवित्र नही बना सकती। ईश्वर की जुस्तजू में उसी प्राणी का मन लगेगा जिसका हृदय स्वार्थ रहित है और परोपकारी कर्मों में हर समय लगा रहता है।

जो प्राणी परमात्मा का नाम नहीं जपते है उनका मन डर में ही उलझा रहता है। कभी उनको जीवन के दिन, प्रतिदिन घटने का डर, कभी उनको जीवन में जो रोग चिमटा हुआ है, उसका डर और फिर उनको मृत्यु का डर जो उनके चारों ओर घूम रही है, न जाने किस समय प्रहार कर दे। लिखने का अभिप्राय: यह कि उसको चौबीस घंटे आठों पहर, उनका मन मृत्यु के चक्कर में पड़ा हुआ निजात हासिल नहीं कर सकता। केवल ईश्वर स्मरण से वह मृत्यु के भय से ही भय रहित हो सकते हैं और कोई दूसरा उपाय नहीं है।

संसार में बहुत से लोग बुतप्रस्ती की ही पूजा करते हैं और कई प्रकार के काल्पनिक ईश्वर बना कर पूजते हैं, परन्तु ऐसी पूजा, उनको मृत्यु के फन्दे, से छुड़ा नहीं सकती। केवल एक परमात्मा की पूजा ही उनके कष्ट कलेशों को और मौत से भयभीत होने से बचा सकती है। यह सदा स्मरण रहे कि जो-जो अच्छी शिक्षाएं हमने बड़े-बड़े विद्वानों से उपाधि दार्शनिकों से प्राप्त हैं और जो-जो अच्छे-अच्छे काम करके, ईश्वर से शक्तियां मिली हैं इनका नाश नहीं होता यह सब संस्कार अगले जन्म में हमारा साथ देंगे। ऐसा डाक्टर राधाकृष्ण जी (भूतपूर्व राष्ट्रपति) गीता में लिखते हैं।

संसारी लोग बड़े होशियार होते है। जब वे देखते हैं कि कोई मनुष्य भौतिकता के कारण आगे ही आगे बढ़ता जा रहा है तो वह अपने स्वार्थ से मुक्त हो कर उसके बहुत नजदीक होने का यत्न करते हैं और जब वही मनुष्य निर्धन हो जाता है तो वह उसको छोड़ कर चले जाते हैं। ऐसे स्वार्थी पुरुषों की स्वार्थता से नाता तोड़ लेना चाहिए और परम पावन, प्रभु से जोड़ना चाहिये जो हर समय उनको सहायता करेगा और जिसका सब से बड़ा खज़ाना अपने भक्तों की सेवा करने में तैयार रहता है? परन्तु मतलबी आदमी अपने मतलब को ही सामने रखते हुए दूसरों से मित्रता गांठते हैं जिसके कारण वह आध्यात्मिक आनन्द से वचित हो जाते हैं।

अभौतिक मार्ग तीखे कांटो से और बड़ी घोर कठिनाईयों से भरा पड़ा है। वीर पुरुष वही हैं जो इनका मुकाबला करते हैं और अन्त में विजय प्राप्त करते हैं। परमात्मा से मित्रता प्राप्त करने के लिए अपनी भीतरी शक्तियों को बहुत घोर परिश्रम करके जगाना पड़ेगा और उनका आश्रय लेना पड़ेगा। हमारे घोर दु:खों में परमात्मा के छिपे हुए खज़ाने भी हमारी बेहतरी के लिये होते हैं। यह तब पता लगता हैं जब हम जीवन की दौड़ में डट के सामना करते है। बाद मे पता लगता हैं कि इस दु:ख के भीतर हमारी कितनी भलाई छुपी हुई थी।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के जीवन से हमें बहुत कुछ मिलता है यदि कोई लेने वाला हो। भ्रमात्मक विश्वास और मिथ्या ज्ञान जो लोगो के हृदयों को अन्धकार में डबो रहा था, अपने मनोबल से दूर किया ओर शुद्ध, पवित्र वेद ज्ञान से उनकी आत्माओं को प्रकाशित किया। इस कालिमा को मिटाने के लिये, उन्होने सरधड़ की बाजी लगा दी और कोई कष्ट बाकि नही रह गया था जो उन्होने अपने शरीर पर न झेला हो ईश्वर की अपार कृपा से वह अपने मन्तव्य मे पूर्णरुप से सफल हुए। मैने दो स्तरे अपनी ओर से महर्षि के बारे मे लिखी हैं:-

चमकेगे जब तल्क सूरज व चान्द तारे। रहेगा पवित्र नाम महर्षि का तव तक दिलों में हमारे।

वाचस्पतिर वाचम् नः स्वदतु

□ले. श्री पं. बनारसीदास आर्य, आर्य समाज नवाकोट, अमृतसर

अर्थात् वाणियों के स्वामी परम पिता परमात्मन-आप हमारी वाणियों को मीठा बोलने वाली बनायें। हम सदा मृदु भाषी बनें। अच्छा बोलें क्योंकि वाणी का सम्बन्ध हमारे विचारों से होता हैं। जैसे विचार होंगे वैसे ही हमारी वाणी बन जाती है। इस लिए उत्तम वाणी के लिये उत्तम विचारों का होना आवश्यक है। मीठी वाणी से हम दूसरों को अपना बना सकते हैं और कडवी वाणी से अपने भी दूर हो जाते हैं।

सन्ध्या करते समय हम कहते हैं-ओ३म् वाक् वाक्। अर्थात् मीठी वाणी का प्रवाह बहता रहे॥ यज्ञ करते समय हम कहते हैं ओ३म् वाड्मया-स्यास्तु अर्थात् हमारी वाणी में मीठा बोलने की शक्ति सदा बनी रहे। वाणी में बड़ी शक्ति होती है। मीठी वाणी हो तो मरहम का काम करती है। यदि कटु वाणी हो तो तलवार की धार का काम करती है। तलवार का घाव तो समय पाकर भर जाता है परन्तु वाणी का दिया हुआ घाव जीवन भर नहीं भरता।

महाभारत के अन्दर आपने पढ़ा और देखा होगा कि जब दुर्योधन पाण्डवों के कक्ष में आता है और तालाब में फिसल जाता है। सामने के कक्ष में खड़ी द्रोपती ने व्यंग करते हुए दुर्योधन से कहा कि अन्धे की सन्तान अन्धी होती है। द्रोपती के ये शब्द दुर्योधन के सीने में कटार की तरह धस गये। दुर्योधन ने अपने अपमान का बदला लेने की ठान ली। दुर्योधन ने अपने मामा शकुनी की सहायता से ऐसा जाल रचा कि पांडव जुआ खेलने के लिए तैयार हो गये। पांडव पुत्र इस जुए में सब कुछ हार गये। यहां तक कि द्रोपती को भी दाव पर लगाया गया और हार गये। भरी सभा में दुर्योधन व दुशासन ने चीर हरण करके पांडव पुत्रों का निरादर किया और पांडव चुपचाप सब कुछ सहते रहे। अन्त में कडवी वाणी ने युद्ध का रूप धारण कर लिया। फलस्वरूप महाभारत का युद्ध हुआ। अनगिनत लोग इस युद्ध में मारे गये। भारतवर्ष की धरती, वीरों से, योद्धओं से, वेद पाठियों से वंचित हो गई और तत्पश्चात् भारत का पतन आरम्भ हो गया। इतनी महान क्षति कडवी वाणी के कारण हुई। इस लिए वेद भगवान् ने बार-बार कहा है कि प्रभु हम मृदु भाषी बने। हमारी वाणी कल्याणकारी हो।

रामायण के अन्दर महारानी कैकैयी के हठ ने सब तहस नहस कर दिया। कैकैयी ने महाराजा दशरथ से दो वर मांगे थे। एक यह कि भरत को राजतिलक करके अयोध्या का राजा बनाया जाए और दूसरा राम जी को 14 वर्ष का बनवास।

वन में रहते सीता जी ने राम जी से कहा कि यह अलौकिक हिरण मुझे अति सुन्दर लगता है। आप मेरे लिये इसे पकड़िए। राम जी ने सीता जी को बहुत समझाया लेकिन सीता जी नहीं मानी। आखिर राम जी हिरण को पकड़ने के लिये निकल पड़े और लक्ष्मण से कह गये कि पीछे सीता का ध्यान रखना। जब काफी समय बीत गया और राम जी नहीं आये। हाय लक्ष्मण हाय लक्ष्मण की आवाज़ सुनाई दी तो सीता माता को बड़ी चिन्ता होने लगी। उसने लक्ष्मण को कहा कि तुम्हारे भाईया किसी मुसीबत में फंस गये हैं। आप जाईए और उनकी सहायता कीजिए। लक्ष्मण ने कहा-आप अधीर न हो। यह कोई माया जाल प्रतीत होता है। भईया मुसीबत में हो नहीं सकते। तीनों लोकों में ऐसा कोई शूरवीर नहीं जो उनको पराजित कर सके। सीता ने बहुत हठ किया कि लक्ष्मण जाओ और अपने भईया की सहायता करो। जब लक्ष्मण नहीं माने तो सीता ने लक्ष्मण को बड़े कटु शब्द बोले और कहा कि तुम बड़ी वीरता की ढींगे मारते हो अपने आपको शूरवीर समझते हो। तुम्हारे मन में खोट पैदा हो गया है। तुम्हारी नीयत साफ़ नहीं। जब लक्ष्मण और कठोर शब्द सहन नहीं कर सके तो उसने कहा माता ठीक है। मैं भईया की आज्ञा का आज पहली बार उल्लंघन करता हूं। लक्ष्मण रेखा अपने तीर से खींची और कहा कि किसी भी परिस्थिति में आप इस रेखा को पार न करना। यह कह कर लक्ष्मण जंगल में श्री राम की खोज में चला गया। पीछे से रावण छल कपट से सीता को उठा कर वायु मार्ग से लंका ले गया। जब-जब भी कठोर वाणी बोली जाती है तब-तब भरपूर हानि उठानी पड़ती है।

एक पढ़ी लिखी सुशील कन्या थी। उसका पति भी उसे अच्छा देवता समान मिल गया। लेकिन उसकी सास कुछ झगड़ालू, लालची स्वभाव की थी। सास ने कुछ दिन तो बहू को अच्छा प्यार दिया। वह भी सुबह उठ कर अपने पति देव के पांव छूती तथा सास के पांव भी छूती। टांगे दबाती, सिर दबाती। अच्छी सेवा करती। कुछ ही दिनों के बाद सास का स्वार्थ जाग उठा। उसने सोचा बहू तो पांव दबा कर ही घर की मालकिन बन जाना चाहती है। दहेज में कुछ लाई नहीं। उसने बहू को तंग करना शुरू कर दिया। इसी तरह कई दिन गुजर गये। सास बोलती रहती, ताने देती रहती लेकिन बहू किसी भी बात का जवाब न देती और मुस्कुराती रहती। सास कहती बहू तो काफी बेशर्म है। मैं गाली देती हूं और आगे से मुस्कुराती रहती है। सास का गुस्सा और बढ़ गया। वो और ज़ोर से बोलने लगी। फिर भी बहू आगे से कुछ नहीं बोलती। पास वाली पड़ोसिन भी बड़ी लड़ाकी थी। उसने देखा कि यह बुढ़िया बहू को प्रतिदिन गाली देती है, उससे झगड़ती है। लेकिन यह बड़ी शरीफ़, पढ़ी लिखी, अच्छे खानदान की नज़र आती है। पड़ोसिन से बहू का दुख देखा नहीं गया। दूसरे दिन जब सास बहू को गालियां देने लगी तो पड़ोसिन से रहा नहीं गया। उसने कहा कि गऊ समान बहू से तू रोज झगड़ती रहती है उसे व उसके मायके वालों को गाली गलौच करती है। यदि तुमने लड़ना ही है तो आ मेरे साथ लड़ाई कर। मैं तुम्हें मज़ा चखाती हूं। जब पड़ोसन ने सास पर सीधा हमला कर दिया तो बहू बोल पड़ी। मौसी जी देखो यह हमारे घर का मामला है। मेरी सास मेरी मां है। वह जो कुछ मर्जी मुझे कहे, तुम कौन होती हो हमारी बात में बोलने वाली। जब बहू ने यह शब्द मौसी को कहे तो पड़ोसन चुपचाप अपने घर चली गई। सास ने भी अच्छी तरह विचारा कि बहू तो मेरे सामने बोलती नहीं। कसूर मेरा है जो मैं हर समय उसे कोसती रहती हूं। सास ने अपने मन का मैल दूर हटा दिया और सास बहू दोनों मां बेटी की तरह रहने लगी। घर का सारा वातावरण खुशियों से भर गया। किसी ने ठीक ही कहा है-

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए,
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होए।

वेद के अनुसार सभी घर में इस प्रकार मिल कर रहें-

अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्॥

पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो, माता के प्रति प्रेम और समान मन वाला हो। पत्नि पति से मिठास भरी और शान्त वाणी में वार्तालाप करने वाली हो।

जहां दो बर्तन होते हैं वे खड़क भी जाते हैं। परन्तु यथा सम्भव मधुरवाणी का ही प्रयोग करना चाहिए। मधुर भाषण का बड़ा प्रभाव होता है। मधुर भाषण से मनुष्य ही नहीं, पशु पक्षी भी प्रसन्न होते हैं। मधुर वाणी से संसार को वश में किया जा सकता है। फिर एक छोटे से घर का तो कहना ही क्या? मीठा बोलना वशीकरण मन्त्र है-

तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजे चहुं ओर।
वशीकरण यह मन्त्र है, तजदे वचन कठोर॥

मीठा बोलने से शान्ति प्राप्त होती है और व्यय कुछ नहीं होता। अतः मीठा ही बोलो। प्रेम के ऊपर बल देते हुए Heury van Dyke ने बड़ा सुन्दर लिखा है-वह घर जिसमें प्रेम का निवास है तथा जहां मित्रता ने बसेरा किया है। वही वास्तव में घर है। वहीं प्यारा घर है क्योंकि वहीं से मन को शान्ति प्राप्त हो सकती है। कबीर जी ने ठीक ही कहा है-

शब्द बराबर धन नहीं, जो कोई जाने बोल।
हीरा तो दामो मिले, शब्द का मोल न तोल॥
जहां ओम् ओम् होता है, मीठी जुबां से।
नहीं लगती कुछ इसमें, दौलत ज्यादा॥

एक वकील साहब कभी-कभी सत्संग में जाते थे। उनका सात-आठ साल का बच्चा भी साथ जाता था। वहां पर एक व्यक्ति ने एक भजन गाया "कदे बोल न कौड़े बोलिए।" बच्चे को यह भजन अच्छा लगा उसने याद कर लिया। जब कभी भी समय मिलता इस भजन को गाया करता। एक दिन वकील साहब और उनकी पत्नि में कुछ अनबन हो गई। रूठ गये दोनों। कई दिन बीत गये एक दूसरे से बोले नही, पति पत्नि कब तक रूठे रहें। पति के मन में आये कि वह मान जाए, पत्नि के मन में भी बार-बार आये। लेकिन दोनों की यह इच्छा थी कि पहल दूसरा करे। पति दफ्तर से आता अपने कमरे में बैठ जाता। पत्नि खाना बना कर नौकर के हाथ भेज देती। पहल होने में न आती। एक दिन वकील साहब आये और अपने कमरे में चले गये। इनके नन्हें बच्चे ने इनके कमरे में जाकर भजन गाना शुरू कर दिया-"कदे बोल न कौड़े बोलिए"। वकील साहब के हृदय में आशा की किरण जाग उठी। बच्चे से बोले, 'बेटा अपनी मां के कमरे में जा कर गाओ। बच्चा मां के कमरे में गया और वहां जाकर गाने लगा-"कदे बोल न कौडे बोलिए"। मां ने कहा-यहा क्या गाता है। जा अपने पिता जी के कमरे में जाकर गा। बच्चा फिर पिता जी के कमरे में जा कर गाने लगा। पिता जी ने फिर मां के कमरे में जाने को कहा बच्चे ने दोनों कमरों के बीच में जाकर गाना शुरू कर दिया। माता पिता दोनों ने बच्चे की भोली भाली आवाज को सुना और दोनों हंस पड़े। हंसी की बौछारों से क्रोध की दीवार टूट गई। दोनों बच्चे के पास आ गये। एक दूसरे की आंखों में देख कर हंसते हुए बोले-कदे बोल न कौड़े बोलिए।

सम्पादकीय.....

प्रिं० स्वतन्त्र कुमार जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति का पद ग्रहण किया

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की सबसे पुरानी व महान शिक्षा संस्था है। पंजाब के महान सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इसकी स्थापना आज से एक सौ वर्ष पूर्व की थी। अभी-अभी अप्रैल 2002 में इस का शताब्दी समारोह सम्पन्न हुआ। जिसमें सारे भारत वर्ष व देश-विदेश से भारी संख्या में आर्य महानुभाव वहां पहुंचे थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गत दिनों निश्चय किया था कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की उन्नति के लिए हर सम्भव कार्य किया जाएगा।

इस गुरुकुल के कुलाधिपति (चांसलर) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा हैं। जब से यह इस गुरुकुल के प्रधान बने हैं तब से ही वह इसकी उन्नति के लिए कार्य कर रहे हैं। आर्य जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री व आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता प्रिंसिपल स्वतन्त्र कुमार जी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति (वाईस चांसलर) बन गए हैं। पंजाब की सारी आर्य जनता जानती है कि प्रिंसिपल स्वतन्त्र कुमार जी का पंजाब में अपना एक विशेष स्थान है और वह बहुत ही लग्नशील व कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने प्रारम्भिक शिक्षा दोआबा स्कूल जालन्धर में प्राप्त की थी। उच्च शिक्षा भी जालन्धर में प्राप्त की और इसके बाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द मैमोरियल कालेज दीनानगर में प्राध्यापक पद पर रहने के बाद वह आदर्श भारती कालेज पठानकोट में 1997 में प्रिंसिपल पद पर सुशोभित हुए और अब गुरुकुल के कुल पति बने। हम समझते हैं कि उनके गुरुकुल के कुलपति बनने पर गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय बहुत उन्नति करेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पहले से ही यत्नशील थी कि इस बार किसी सुयोग्य व्यक्ति को गुरुकुल का कुलपति (वाईस चांसलर) बनाया जाए सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा तथा दूसरे सभी अधिकारी इस के लिए प्रयास कर रहे थे। इसलिए इस पद के लिए श्री प्रिं. स्वतन्त्र कुमार जी को तैयार कर लिया गया और उन्हें कुलपति बना दिया गया।

18-6-2002 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार मे एक समारोह दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक किया गया जिसमें गुरुकुल का समस्त स्टाफ सभी कर्मचारी व अधिकारी तथा गणमान्य महानुभाव सम्मिलित हुए। सार्वदेशिक सभा के वरिष्ट उपप्रधान श्री विमल वधावन जी, सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, हरियाणा सभा के महामन्त्री आचार्य यशपाल जी मटिण्डू तथा उपमन्त्री श्री केदार सिंह जी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ट उप प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, अधिष्ठाता साहित्य विभाग श्री रामरत्न महाजन तथा अन्य गणमान्य महानुभाव वह उपस्थित थे।

समारोह की कार्यवाही यज्ञ से आरम्भ हुई यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश जी शास्त्री थे मंच का संचालन रजिस्ट्रार श्री महावीर जी ने किया। श्री विमल वधावन जी, श्री वेदव्रत जी शर्मा, श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा, श्री आचार्य यशपाल जी मटिण्डू ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि एक सुयोग्य हाथों में इस बार गुरुकुल के कुलपति का भार सौंपा गया है, हमें आशा है कि अब गुरुकुल का कार्य सुचारु रूप से चलेगा। उन्होंने गुरुकुल की महत्ता बताते हुए कहा कि तीनों सभाएं मिल कर गुरुकुल के उत्थान व विकास के लिए कार्य करेंगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने तो पहले ही इस दिशा में कार्य आरम्भ कर दिया है। अनेकों वर्षों के बाद पहली बार ऐसा हुआ है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान गुरुकुल के कुलाधिपति बने हैं और महामन्त्री कुलपति बने हैं। यह समाचार जब आर्य जनता को पता चला कि प्रिं. स्वतन्त्र कुमार जी गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति बन गए हैं तो पंजाब की आर्य जनता में प्रसन्नता की लहर दौड़ पड़ी।

समारोह के पश्चात् 18-6-2002 को दोपहर बाद कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी अन्य पदाधिकारियों के साथ कुलपति (वाईस चांसलर) कार्यालय में गए और उन्होंने कुलपति का कार्य भार विधिवत रूप से सम्भाल कर अपना कार्य आरम्भ कर दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सभी अधिकारियों सदस्यों व सभी कर्मचारियों ने गुरुकुल का कुलपति बनने पर श्री स्वतन्त्र कुमार जी को हार्दिक बधाई दी।

श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने अपने जीवन में बहुत उन्नति की है। अपनी मेहनत परिश्रम व योग्यता से वह पहले एक कालेज के प्राध्यापक (प्रोफेसर) बने और फिर परिश्रम करके प्राचार्य (प्रिंसिपल) बने और अब एक विश्व विद्यालय (यूनिवर्सिटी) के कुलपति (वाईस चांसलर) बन गए हैं। वह प्राध्यापक (प्रोफेसर) होते हुए भी आर्य समाज की सेवा करते रहे और इसी प्रकार प्राचार्य (प्रिंसिपल) रहते हुए भी आर्य समाज की सेवा करते रहे और अब कुलपति (वाईस चांसलर) बन कर भी वह निरन्तर आर्य समाज की सेवा करते रहेंगे ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है। हमें पूर्ण विश्वास है कि अब गुरुकुल में बहुत सुधार होगा और उसका सारा कार्य सुचारु रूप से चलेगा।

-धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

ग्राहक-महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा के सभी ग्राहक महानुभावों से मेरी प्रार्थना है कि वह आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क शीघ्र अति शीघ्र सभा कार्यालय मे बैंक ड्राफ्ट या मनिआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें। अब आर्य मर्यादा का प्रकाशन नियमित हो गया है तथा सभी ग्राहकों को नियमित भेजा जा रहा है। मैं समझता हूं ऐसी अवस्था में इसका शुल्क न भेजना ग्राहक महानुभावों के लिए उचित नहीं है। हम सभी ग्राहकों को शुल्क के लिए पत्र लिख रहे हैं, जालन्धर, लुधियाना, अमृतसर, गुरदासपुर तथा दूसरे कई स्थानों के ग्राहकों को पत्र लिखे जा चुके हैं। कईयों को लिखे जा रहे हैं। जिन ग्राहक महानुभावों का गत तीन वर्ष से शुल्क नहीं आया यदि उन्होंने यह पत्र मिलने पर भी शुल्क नहीं भेजा तो उन्हें आर्य मर्यादा भेजना बन्द कर दिया जाएगा।

आर्य मर्यादा का आजीवन शुल्क 500 रुपए है जो इस समय सभी पत्र-पत्रिकाओं से कम है। वार्षिक शुल्क केवल 50 रुपए है यह भी सब पत्र पत्रिकाओं से कम है। इसलिए सभी ग्राहक महानुभावों को इसका शुल्क समय पर भेज देना चाहिए। पिछला शुल्क भेज कर फिर केवल 500 रुपए में आजीवन सदस्य बनें। आर्य समाजें व शिक्षा संस्थाएं भी आजीवन सदस्य बन सकती हैं। एक बार पांच सौ रुपए भेज कर बार-बार शुल्क भेजने की समस्या समाप्त हो जाती है। न बार-बार मनिआर्डर फीस देनी पड़ती है न बैंक ड्राफ्ट का खर्चा देना पड़ता है।

ध्यान रहे शुल्क आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के नाम से भेजें और अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें। आपके नाम पते की जो चिट अखबार पर लगी हुई है उससे पूर्व जो संख्या लिखी है वही आपकी ग्राहक संख्या है। शुल्क भेजने से पूर्व अपनी ग्राहक संख्या देख लें और वह मनिआर्डर फार्म अथवा पत्र में अवश्य लिख दें। आशा है आप हमारे पत्र की इन्तजार नहीं करेंगे. नैतिकता के नाते अपना शुल्क समय पर अवश्य भेजेंगे।

-धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

सरल-सुखी जीवन

□ ले० भक्तसेन, बी-2, 92/7 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर-146001

(गतांक से आगे)

प्रत्येक धर्म में आचरण, कर्मकाण्ड, मान्यता, सिद्धान्त या दर्शन ये चार पहलू अवश्य होते हैं, क्योंकि प्रत्येक धर्म कुछ बातों को व्यवहार में लाने के लिए कहता है। हर धर्म में किसी न किसी प्रकार की पूजा, संस्कार, जप, तप, स्मरण, ध्यान, ग्रन्थ, तीर्थ आदि कर्मों के करने का विधान होता है। इसको कुछ दीन, इबादत भी कहते हैं। प्रत्येक धर्म की अपनी कुछ मान्यतायें होती हैं, चाहे वे प्रत्यक्ष का विषय या प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध न हों। मानने के कारण ही इनको मान्यता कहते हैं। जैसे कि हर धर्म वाला किसी न किसी अपने इष्टदेव, व्यक्ति विशेष या उससे जुड़ी ऋद्धि-सिद्धि जैसी कुछ बातों पर विश्वास करता है, इसको उर्दू में ईमान शब्द से स्मरण किया जाता है। ऐसे ही प्रत्येक धर्म के कुछ सिद्धान्त होते हैं या उसका अपना दर्शन होता है, जिससे वह अपने धर्म की व्याख्या करता है या इसके द्वारा धर्म के कर्मकाण्ड विश्वास और सिद्धान्त की संगति लगाता है।

यह सत्य है कि सभी धर्मो में ये चारों पहलू मिलते हैं, पर इनमें से आजकल प्राय: कर्मकाण्ड को अधिक महत्व दिया जा रहा है। कई बार तो धर्म को कर्मकाण्ड में ही सीमित कर दिया जाता है। प्राय: किसी प्रकार के जप, तप, पूजा-पाठ, स्मरण, ध्यान, यज्ञ, संस्कार, देवदर्शन, तीर्थ यात्रा, स्नान आदि के बाद व्यक्ति वह समझता है, कि मैंने धर्म का यह कर्म (काण्ड) करके अपने जीवन को पार लगा लिया है, इससे मेरी धार्मिकता चरितार्थ हो गई है।

इस प्रकार कर्मकाण्ड को अधिक महत्व देने के कारण अधिकतर लोग उसी को ही धर्म का पूर्ण रूप समझ लेते हैं और तब अपने जीवन को सच्चा-सुच्चा बनाने के लिए अपेक्षित कर्त्तव्य, आचरण की इति श्री इसी में समझ लेते हैं। इसका जो परिणाम होता है, उस का स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन में एक अच्छा शिक्षाप्रद, हास्यपूर्ण उदाहरण प्राप्त होता है।

स्वा० श्रद्धानन्द जी अपनी आत्मकथा-कल्याण मार्ग का पथिक (पृ.12) में लिखते हैं-जब मेरे पिता (श्री नानक चन्द) जी बरेली के थाने में कार्य करते थे, उन दिनों भोजन की व्यवस्था के लिए एक पाचक साथ रहता था। 'एक दिन हण्डिया पकाते समय पिता जी का नौकर चिमटे से चिलम में आग धर लाया। मिसिर जी आग बबूला हो गये और जब कारण पूछा गया तो बोले-अरे सरकार ! हम आपन धरम कबहूं ना हीं छोड़ा अ' झूठ बुआला, जुआ खेला, गांजा का दम लगाया, दारू चढ़ावा, रिसवत लिहा, चोरी दगाबाजी किहा-कौन फन फरेब बाटै जौन हम नाहीं किहा मूल सरकार! आपन धर्म नहीं छाड़ा' मिसिर जी (पाचक) की दुहाई का मुख्य भाव था, कि ब्राह्मण पाचक के लिए-पुते चौके में एक अब्राह्मण आ गया। जिससे उसका धर्मभ्रष्ट हो गया, क्योंकि उस पाचक ने चौके को ही अपना असली धर्म रखा था, न कि सत्य, ईमानदारी, पवित्रता आदि के व्यवहार को इसी प्रकार की स्थिति को सामने रख कर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास में लिखा है-

'इसी मूढ़ता से इन लोगों ने चौका लगाते लगाते विरोध करते-करते सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, धन, राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगा कर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं' और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिले तो पका कर खावें परन्तु वैसा न होने पर जानो सब आर्यावर्त्त देश भर में चौका लगा के सर्वथा नष्ट कर दिया। हां, जहां भोजन करें उस स्थान को धोने, लेपन करने, झाड़ू लगाने, कूड़ा कर्कट दूर करने में प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।'

स्वा० श्रद्धानन्द जी के जीवन की यह घटना आज के हमारे धार्मिक जीवन का पचतर प्रतिशत रूप बन कर सामने आ रही है। तभी तो जितना अधिक भव्य मन्दिरों, धार्मिक सम्मेलनों, पर्वो, जुलूसों, जगरातों, पूजा-पाठों का फैलाव हो रहा है, उतना ही अधिक हमारे सामाजिक जीवन में बेईमानी भ्रष्टाचार, छल-कपट का व्यवहार बढ़ रहा है। जिससे सारा समाज दुखी है, जबकि धर्म के प्रसार से सुख का विस्तार होना चाहिए था। वस्तुत: यह सामाजिक सुख तो जीवन व्यवहार के सच्चा-सुच्चा होने से ही मिल सकता है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने सभी तरह की सफाईयों में से कमाई की पवित्रता को अधिक महत्व दिया है।

ये कर्मकाण्ड तो सड़क के बोर्डो की तरह प्रेरणा देने के लिए होते हैं, जिससे चलने वाले की यात्रा सरलता से पूर्ण हो सके। अन्यथा यदि हमारा आचरण सच्चा-सुच्चा नहीं होता, तो यह सारा कर्मकाण्ड का व्यवहार व्यर्थ ही कहलाना चाहिए। तभी तो राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है-सारे कर्मकाण्ड निष्फल हैं, न हो शुद्ध मन की यदि भक्ति। यदि सत्कर्म नहीं करते हो, भरते नहीं विचार पुनीत। तो जप-माला-तिलक व्यर्थ हैं, उल्टा बन्धन उपवीत॥

कर्मकाण्ड को आचरण से अधिक महत्व देने का ही यह परिणाम है, कि हम गौ को गोमाता मानते हुए भी उसकी सेवा, पालन और उसके दूध का व्यवहार कम करते हैं। अपितु अधिकतर उसकी पूजा और 'गोमाता की जय' के नारों में ही सीमित होते जा रहे हैं। ऐसा करते हुए गोदुग्धपान, गोघृत सेवन का स्मरण कम ही आता है। तभी तो भैंस के दूध का आधिक्य हो रहा है। ऐसे ही बहुत कम ही ऐसे भक्त होंगे, जो तुलसी का प्रयोग करते होंगे, पर ऐसे लाखों मिल जायेंगे, जो प्रतिदिन किसी न किसी प्रकार से तुलसी की पूजा में व्यस्त रहते हैं।

कर्मकाण्ड की महत्ता के कारण ही हर धर्म वाले अपने-अपने धर्मपन की परख के लिए अपने धर्म की निशानियां पूछते हैं, कि भाई! तू ने उपवीत, शिखा, ककार आदि धारण किए हुए हैं या नहीं। कई बार तो इन निशानियों से रहित को उस धर्म का अनुयायी मानने से भी इन्कार कर दिया जाता है और इन चिन्हों को धारण करके या कर्मकाण्ड को पूर्ण करके व्यक्ति आश्वस्त हो जाता है, कि अब मेरा यह कार्य अवश्य ही सिद्ध हो जाएगा। मुझे यह फल जरूर मिलेगा। इस प्रकार के आश्वासन की दृष्टि से कर्मकाण्ड और फलित ज्योतिष का गहरा गठजोड़ है।

9. धर्म और अदृष्ट-धर्म का अर्थ अदृष्ट, अपूर्व, दैव भी होता है। हम प्राय: देखते हैं, कि संसार में जब कोई कार्य पूरा हो जाता है, तो उसका फल सामने आता है। जैसे कि खेती में जमीन की तैयारी से लेकर फसल पकने तक के कृषि कर्म के पूरा होने पर फसल रूपी फल प्राप्त होता है। ऐसे ही दूसरे संसारी कार्यों में भी कर्म के पूर्ण होने पर उसका फल सामने आता है। पर दूसरी ओर धर्म के यज्ञ, दान, उपकार आदि शुभकर्मों का फल कर्म की समाप्ति के साथ प्रत्यक्ष नहीं होता है। इस पर स्वाभाविक रूप से प्रश्न उभरता है, कि क्या इन कर्मो का फल नहीं होता ? जबकि धार्मिक साहित्य में बड़े विश्वास से यज्ञ आदि धार्मिक कर्मों का फल बताया गया है, पर यह स्पष्ट मिलता हुआ दिखाई नहीं देता। इस समस्या का समाधान पूर्व मीमांसा दर्शन में अदृष्ट, अपूर्व शब्द की व्याख्या द्वारा किया गया है। वहां बताया है, कि जो भी व्यक्ति यज्ञ आदि शुभ कर्म करता है, करने पर वह बाह्य कर्म तो समाप्त हो जाता है, पर उस से एक अदृष्ट (जो दिखाई नहीं देता या अपूर्व) जो अब से पहले नहीं था) उत्पन्न हो जाता है और वह तब तक रहता है, जब तक कर्म कराने वाली आत्मा को उस कर्म का फल प्राप्त नहीं हो जाता। दार्शनिक दृष्टि से पूर्व मीमांसा की यही मुख्य देन है, कि उसने अदृष्ट, अपूर्व (=धर्म) के द्वारा कर्मफल व्यवस्था को समझाने का सुन्दर प्रयास किया है।

इसी भाव को सामने रख कर ही मनुस्मृति (4, 234-41) आदि में कहा है, कि आत्मा अकेला ही शरीर धारण करता है, पैदा होता है और अकेला शरीर का त्याग करता (मरता) है। केवल धर्म ही उसके साथ जाता है और कुछ नहीं। इसी लिए धर्म का एक अर्थ पुण्य भी होता है या पुण्यकारक कर्मों का परिणाम धर्म माना जाता है।

(क्रमशः)

महिला सशक्तिकरण वर्ष के लिए विशेष—

वैदिक काल में नारी की स्थिति

❑ ले० डॉ० भवानीलाल भारतीय, 8-423 नन्दनवन, जोधपुर

नारी विधाता की अद्‌भुत सृष्टि है। भारतीय समाज ने अत्यन्त प्राचीन काल में वेद प्रतिपादित आदर्शों और जीवन प्रणाली को स्वीकार कर अपना बहुविध विकास किया था। वैदिक काल में नारी को अत्युच्च स्थान प्राप्त था। वेदो के सहस्रों मंत्रों में नारी की गरिमामयी छवि को अंकित किया गया है। उषा, आप अदिति, सरस्वती आदि देवताओं को सम्बोधित करने वाले जो वैदिक मंत्र मिलते हैं उनमें नारी महात्म्य का ही उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद में स्त्री को यज्ञ में ब्रह्मा का स्थान ग्रहण करने के योग्य बताया गया है। इसी वेद में सरस्वती रूपा विदुषी नारी का आह्वान करने वाला निम्न मंत्र द्रष्टव्य है—

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।

सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्॥

(10-17-7)

अर्थात् दिव्य गुणों की कामना करने वाली विदुषी देवी को हम आमंत्रित करते हैं। यज्ञों के अवसर पर सरस्वती रूपी सुपठित देवी को हम बुलाते हैं। उत्तम कर्म करने वाली सन्नारी को हम आहूत करते हैं। वह दानशील व्यक्तियों को उत्तम ज्ञान देती है। ऋग्वेद के दशम मण्डल का ८५वां सूक्त नारी की महिमा का बहुविध आख्यान करता है। इसके वे मंत्र जिनकी ऋषिका सूर्या सावित्री है, नारी गौरव को ही उपस्थित करते हैं। वैदिक काल से लेकर अब तक आर्य जाति विवाह के अवसर पर इसी सूक्त के मंत्रों का प्रयोग करती आई है। इन मंत्रों का यहां संकेत मात्र से ही उल्लेख किया जाता है। प्रेतो मुञ्चामि (10-85-25), पूषात्वेतो नयतु (10-85-26), सुमंगलीरियं वधू (10-85-33) गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं (10-85-36) तुभ्यमग्रे पर्यवहन् (10-85-38) इहै व स्तं मा वि यौष्टं (10-85-42) अघोरचक्षु रपतिघ्न्येधि (10-85-44) आदि मंत्र गृहस्थ में प्रविष्ट होने वाली नारी का गौरवमय रूप प्रस्तुत करते हैं। समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ (10-85-47) मंत्र में द्विवचन का प्रयोग द्रष्टव्य है। इसमें वर और वधू द्वारा समान रूप से गृहस्थ के दायित्व को पूरा करने का संकेत है।

पुनः श्वसुर गृह में जाकर वधू किस प्रकार गृहस्थ परिवार की साम्राज्ञी बन जाती है, इसका संकेत भी इसी मंत्र (10-85-46) में मिलता है। ऋषि दयानन्द ने स्वरचित संस्कारविधि के विवाह प्रकरण में इस मंत्र को उद्धृत किया है—

सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव।

ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु॥

इसका अर्थ करते हुए दयानन्द सरस्वती लिखते हैं—'हे वरानने, तू मेरे पिता जो कि तेरा श्वसुर है, उसमें प्रीति करके सम्यक्, प्रकाशमान, चक्रवर्ती राजा की रानी के समान पक्षपात छोड़ के प्रवृत्त हो। मेरी माता जो कि तेरी सास है उसमें प्रेमयुक्त होके उसी की आज्ञा में सम्यक् प्रकाशमान रहा कर। जो मेरी बहन और तेरी ननद है उसमें भी प्रीतियुक्त और मेरे भाई तेरे देवर और ज्येष्ठ अथवा कनिष्ठ हैं, उनमें भी प्रीति से प्रकाशमान् अधिकार युक्त हो अर्थात् सबसे अविरोधपूर्वक प्रीति से वर्त्ता कर।'

वेदों में नारी को गृहस्थ की गुरुतर धुरा का वहन करने की प्रेरणा तो दी ही है, समय आने पर उसे वीर भावनाओं से युक्त होकर प्रचण्ड कर्मों में लग जाने का भी आदेश दिया है। ऋग्वेद के दशम मण्डल का १५१वां सूक्त शची पौलामी को समर्पित है। इसकी द्रष्टा ऋषि (ऋषिका) भी एक नारी शची पौलोमी ही है। इसमें जिस वीर नारी का चित्रण किया गया है उसकी ओजस्वी वाणी को सुनें—

उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भगः।

अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहि॥

(10-159-1)

सूर्य के उदय के साथ सात मेरे सौभाग्य की भी वृद्धि हो रही है। मैं अपने पतिदेव को प्राप्त करके विरोधियों को पराजित करने वाली तथा सहनशील बनूं।

पुनः वह कहती है—

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।

ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत्॥ (10-159-2)

मैं केतु (ध्वजा) तुल्य हूं समाज की मूर्धास्थानीय हूं, तेजस्विनी बन कर सभाओं में प्रभावशाली भाषण देने वाली हूं। मेरा पति मेरी इच्छा, ज्ञान और कर्म के अनुकूल आचरण करता है। इस वीरप्रसू नारी की सन्तान भी वैसी ही तेजस्विनी है—

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्।

उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः॥

(10-159-3)

मेरे पुत्र शत्रुओं का नाश करने वाले हैं और मेरी पुत्री भी ज्ञानादि गुणों के कारण विशेष रूप से प्रकाशित होने वाली है। मैं स्वयं भी काम क्रोधादि विकारों को जीतने वाली तथा बाह्य शत्रुओं का निग्रह करने वाली हूं। मेरा आचरण और व्यवहार ऐसा है जिससे मेरे पति को उत्तम यश प्राप्त होता है।

यजुर्वेद में भी नारी का गौरवगान करने वाले अनेक मंत्र मिलते हैं। आठवें अध्याय का ४३ वां मंत्र इस प्रकार है—

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति।

एताताऽ अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्॥

इस मंत्र का देवता (विषय) पत्नी है। यहां पत्नी के लिए जो विशेषण प्रयुक्त हुए हैं, उनसे नारी की गरिमा और प्रतिष्ठा व्यक्त होती है। वह पत्नी अघ्न्या है, उसकी ताड़ना करना उचित नहीं, वह स्तुति करने के योग्य है (इडे), रमणीय है (रन्ते), कमनीय है, कामना करने के योग्य है—(काम्ये) स्वीकार करने योग है (द्रव्य) अपने शील और आचार से द्युतिमान है (ज्योति) अविनाशी आत्मा होने के कारण अदिति है (अदिते), विद्यायुक्त है—(सरस्वती), पूज्यतम है (महि), उत्तम कीर्ति तथा वेदवाणी युक्त है—(विश्रुति) ये सभी नाम या विशेषण पत्नी के लिए वेद ने प्रयुक्त किये। संसार के साहित्य में नारी की प्रशंसा के लिए इतने शब्दों का प्रयोग एक साथ शायद ही कहीं हुआ हो।

राष्ट्रगीत के तुल्य सम्मान प्राप्त यजुर्वेद के २२वें अध्याय के २२वें मंत्र में जहां राष्ट्र में ब्रह्मवर्चस्व को धारण करने वाले ब्राह्मण, शूरवीर क्षत्रिय तथा दुग्धवर्ती गौवों आदि की कामना की गई है वहां राष्ट्र की नारी को अनेक व्यवहारों में कुशल होने के कारण आदर्श कहा गया है।

अथर्ववेद में 'शुद्धा पूता योषितो यज्ञिया इमा' (11-1-17) कह कर नारी को शुद्ध, पवित्र तथा यज्ञ के तुल्य आदरास्पद कहा गया। इसी वेद के 14वें काण्ड का प्रथम सूक्त तो स्त्रियोचित कर्त्तव्य का उपदेश करने वाला विश्वकोश ही है। इस तथ्य के आगे के दूसरे सूक्त के अधिकांश मंत्र वैदिक विवाह विधि मे विनियुक्त हुए है। पत्नी को गृहाश्रम की महारानी बताते हुए उसकी उपमा उस सागर से की गई है जो नदियों का स्वामी है—

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा।

एवात्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य॥ 14-1-43

जिस प्रकार समुद्र ने नदियो का सम्राट पद प्राप्त किया है उसी प्रकार हे वधू, तू पति के घर जाकर साम्राज्ञी बन।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वैदिक संहिताओं में नारी के गौरव तथा महत्व को सर्वत्र प्रस्थापित किया गया है तथा उसको गृहस्थाश्रम की एक धुरी माना गया है। नारी की गरिमा का प्रत्याख्यान करने वाला एक भी मंत्र संहिताओ में नहीं हैं।

पुरुष ऋषियो की भांति स्त्री—ऋषिकाओं ने भी वेदों के विभिन्न मंत्रों तथा सूक्तो का रहस्य जाना था। वे इन मंत्रों का अर्थ चिन्तन कर ऋषिका पद को प्राप्त कर सकीं। ऋग्वेद के निम्न सूक्तों की द्रष्टी ऋषिकाओं की नामावली यहां दी जा रही है। मण्डल 10 सूक्त 31 तथा 40 को घोषा काक्षीवती ने देखा। इसी मण्डल के 65 वें सूक्त के 16वें तथा 17वें मंत्र को उर्वशी ने देखा (उसके रहस्य को जाना 10 वें मण्डल के 101 वें मंत्र की द्रष्टी जुहू ब्रह्मजाया थी। इसी मण्डल के 134वें सूक्त को देखने का श्रेय यमी को है। 151 वें सूक्त मे नारी गौरव का गान करने वाली ऋषिका शची पौलोमी है। 181 वें सूक्त का ज्ञान सार्पराज्ञी ने प्रसारित किया। यह तो 10वे मण्डल की बात हुई। ऋग्वेद के अन्य मण्डलो को देखें तो ज्ञात होता है कि 5वें मण्डल के 28वें सूक्त का दर्शन विश्ववारा आत्रेयी ने किया था। अष्टम मण्डल के 11वें सूक्त की द्रष्टी अपाला आत्रेयी है। अन्य उदाहरण भी दिए जा सकते हैं।)

मंत्र द्रष्टा नारी ऋषियों (ऋषिकाओ) की एक सूची बृहद्देवता के 24वें अध्याय (श्लोक-84, 85, 86) में निम्न प्रकार से उपलब्ध होती है—

(शेष पृष्ठ 8 पर)

वेदों की महानता

□आचार्य भगवान देव जी "चैतन्य" 81/एस-4 सुन्दर नगर 174402

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों की महानता को दर्शाते हुए कहा है-'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' इसी क्रम में वे आगे लिखते हैं-'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।' महर्षि दयानन्द जी मानवतावाद के पक्षधर थे। उन्होंने व्यक्ति की श्रेष्ठता का आकलन किसी जाति, मजहब, सम्प्रदाय या देश विशेष के आधार पर नहीं किया बल्कि उन्होंने उसका आधार गुणवता को माना है। यही कारण है कि वे संसार के समस्त महापुरूषों में अपना एक अलग और विशिष्ठ स्थान रखते हैं। सत्य के पक्षधर होना उन्हें अति प्रिय था। इसलिए सत्याचरण करने वाला व्यक्ति ही उनकी दृष्टि में महान है। सत्य क्या है इसका पता लगाने के लिए उन्होंने परमात्मा के ज्ञान वेद को सर्वोपरि घोषित किया और आदेश दिया कि यदि व्यक्ति आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनना चाहता है तो उसे वेद मार्ग का ही अनुकरण करना चाहिए। उन्होंने वेद की श्रेष्ठता को प्रमाणित करने के लिए अपने ग्रन्थों में विस्तार से विवेचन किया है। इस सम्बन्ध में उनके तर्क और प्रमाण अकाट्य और अनुकरणीय हैं। हमे उनकी मुख्य विशेषता यह लगती है कि वे लोकेषण से एकदम अछूते दिव्य महापुरूष थें क्योंकि उन्होंने किसी प्रकार से भी अपना अलग मत चलाने का प्रयास नहीं किया और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि तक के ऋषि-मुनियों की परम्परा में ही अपने आप को रखा। इसलिए वेद को परमात्मा का ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओ का पुस्तक घोषित करने में भी उनका किसी प्रकार का दुराग्रह नहीं था बल्कि यहां भी हम उन्हें प्राचीन ऋषियों की ही परम्परा में खड़ा हुआ पाते हैं। वेद में कौन-कौन सी विद्याएं हैं तथा वेद को परमात्मा द्वारा प्रदत ज्ञान क्यो माना जाए आदि की जानकारी प्राप्त करने के लिए महर्षि जी के ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का अध्ययन करना चाहिए। यहां तो हम वेदों की महानता के बारे मे कुछ भारतीय और पाश्चात्य मनीषियों के विचार मात्र प्रस्तुत कर रहे हैं।

मनु महाराज का कथन है-धर्मजिज्ञासमानानां परमं श्रुतिः। (मनु, 2-13) अर्थात धर्म ज्ञान की इच्छा करने वालों के लिए वेद ही परम प्रमाण हैं। मनुस्मृति के अतिरिक्त अन्य स्मृतियों में भी अपने-अपने ढंग से वेद की महता को प्रकट किया गया है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

चत्वारो वा त्रयो वापि यं ब्रूयुर्वेदपारगाः।

स धर्म इति विज्ञेयो नेतरैस्तु सहस्त्रशः॥ (पराशर स्मृति अ. 8)

चार व तीन वेद का पूर्ण वेता (ज्ञाता) व्यक्ति जो बात कहे वही धर्म जानना, अन्य हजारों लोग भी कहें तो भी वह धर्म नहीं होता।

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।

स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ (मनुस्मृति)।

वेद को छोड़कर जो द्विज अन्य ग्रन्थों में परिश्रम करता है, वह जीवित ही कुटुम्ब सहित शूद्र हो जाता है। बृहस्पति स्मृति 79 में कहा गया है-अधीत्य सर्ववेदान् वै सद्यो दुःखान् प्रमुच्यते। अर्थात वेद का अध्ययन करने से व्यक्ति दुःखों से मुक्त हो जाता है। याज्ञवल्क्य स्मृति 1-40 के अनुसार-वेदं एवं द्विजातीनाम् निःश्रेयस्करः परः। अर्थात यज्ञ-तप आदि की अपेक्षा वेद ही द्विजों का कल्याण करने वाला है। अत्रि महाराज (3-8) कहते हैं नास्ति वेदात्परं शास्त्रम्। अर्थात वेद से बढ़कर और कोई शास्त्र नहीं है। अन्यत्र कहा गया है कि श्रुति और स्मृति द्विजों की आंखें हैं ये दोनों न होने से व्यक्ति अन्धा और अज्ञानी है। व्यास स्मृति में वेदो की प्रमाणिकता के बारे में कहा गया है-

श्रुति स्मृति पुराणानां विरोधयि त्रदृश्यते।

तत्र श्रुति प्रमाणन्तु तयो द्वेधे स्मृतिर्वरा॥ (अ01)

अर्थात जहां वेद और स्मृति पुराणों में विरोध हो वहां वेद का प्रमाण ही माने होंगे और स्मृति व पुराणों में विरोध होने पर स्मृति मान्य होगी। इसी प्रकार कात्यायन, बोधायन और भृगु आदि ने भी वेदों की महानता को स्वीकार किया है।

पुराण साहित्य भी वेदों को ही महानतम ग्रन्थ के रुप में मान्यता देता है-

वेद प्रमाणहितो धर्मा ह्यधर्मस्ततोदमयेयः।

वेदों नारायणः साक्षात् स्वयंभूरिति शुश्रुम्॥ (भागवत 6-1-40)

अर्थात जो वेद में कहा गया है वही धर्म है और वेद विहित धर्म के जो विपरीत है वह अधर्म है। वेद परमात्मा से पैदा हुआ है अतः वेद स्वयं परमात्मा है, ऐसा हमने सुना है।

सर्वथा वेद एवासौ धर्म मार्ग प्रमाणकः।

तेना विरूद्धं यत्किंच्च तत्प्रमाणं न चान्यथा॥

यो वेद धर्म मुंच्छित्य ये वर्तते अन्य प्रमाणतः।

कुण्डानि तस्य शिक्षार्थं यमलोके वसन्ति हि॥ (देवी भागवत 11-1-26-27)

अर्थात धर्म के विषय में वेद ही प्रमाण है। जो भी कुछ वेद के अविरूद्ध एवं वेदानुकूल है वही प्रमाणिक है अन्य नहीं। जो वेद को छोड़कर दूसरे ग्रन्थ को प्रमाणिक मानता है, उसके लिए यमलोक में कुण्ड तैयार है, वह उसमें गिरता है-निवास करता है।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं मद्धृत्यभुजमुंच्यते।

वेदाच्छास्त्र परं नास्ति न देवः केशवात् परम्॥ (गरूड़ पु. ब्रा. का. 10-2-55)

अर्थात मैं भुजा उठाकर और दुहाई देकर सत्य कहता हूं कि वेद से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं है और केशव से बढ़कर कोई देवता नहीं है। इसी पुराण में अन्यत्र लिखा है-वेद एव द्विजातीनाम् निःश्रेयष्करः परः॥ (94-25) अर्थात विद्वानों ? वेद ही कल्याण करने वाला है। कूर्म पुराण (2-14-86-88) के अनुसार 'स सम्मूढ़ो न....शूद्र कल्पः पात्रोतानं प्रपद्यते। अर्थात जो द्विज वेद न पढ़कर दूसरे कार्य में परिश्रम करता है वह मूर्ख है। जो अपने वंशसहित वेद पाठ करके वेद के अर्थ का मनन नहीं करता वह शुद्रवत् हो जाता है। अन्य पुराणों में भी वेद की महता को प्रकट किया गया है-वृथाजाप्या मवेदिकम् (भविष्य पुराण उ. प. अ. 122) अर्थात वेद से भिन्न ग्रन्थ का जाप अवैदिक होने से निषिद्ध है। विष्णु पुराण (वि 321) में वेद का मनन न करने वाले को पापी कहा है। शिव पुराण धर्मसंहिता 41-42 में वेदाध्ययन को महापुण्य कहा गया है। अग्नि पुराण (256-1-6) में कहा है-ऋग् यजु सामाथर्व विधानं पुस्करोदितांयुक्ति मुक्ति प्रदम् अर्थात जो वेद का धर्म है वही भोग-मोक्ष का देने वाला है। कल्कि पुराण (अ. 4-10) में वेद को परमात्मा का ही रूप माना गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण (4-10) मे कहा है-नास्ति वेदात्परम् शास्त्रं अर्थात वेद के समान और कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है। मार्कण्डय पुराण (25-14) में कहा है कि सब वेदों को गुरूमुख से प्राप्त करके आशीर्वाद प्राप्त करें। स्कन्द पुराण (36-41) का कथन है-द्विजातिनाम् श्रुतिहृयेका हेतु निश्रयसकियः। अर्थात वेदो से ही सबका कल्याण होता है महाभारत कार का कथन इस प्रकार है-

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।

आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः॥ (शा. पर्व 23-2-24)

तपस्विनो धृतिमन्तः श्रुति विज्ञानचक्षुषः।

सर्वमार्ष हि मान्यते व्याहृतविदितात्मनः॥ (शा. पर्व 268-10)

अर्थात परमात्मा ने सृष्टि के अनादि काल में वेद रूप नित्य वाणी का प्रकाश किया जिससे मनुष्यों की सारी प्रवृतियां पैदा होती है। तपस्वी, धैर्यवान, वेद एवं ज्ञान सम्पन्न उस परमात्मा की निश्वास भूत वाणी मानते हैं।

शतपथ में कहा गया है-

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिताएं

महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश विश्व प्रसिद्ध कान्तिकारी पुस्तक है। मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक प्रगति के लिए यह ग्रन्थ विश्व समुदाय के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रही है। इसके प्रचार प्रसार के लिए आर्यसमाज की सर्वोच्च अन्तर्राष्ट्रीय संस्था सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली ने तीन वर्गों में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया है। वर्ग क में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित एक प्रश्न पत्र भेजा जाएगा। प्रतियोगियों को इस प्रश्न पत्र में दिए प्रश्नों के उत्तर लिख कर भेजने होंगे। प्रथम आने वाले प्रतियोगी को 3000 रु., द्वितीय को 2000 रु. और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगी को 1000 रुपये पुरस्कार रुप में दिए जाएंगे। इस वर्ग में आयु लिंग, मजहब योग्यता आदि का बन्धन नहीं। स्कूल, कालेज, गुरुकुल के विद्यार्थी एवं आम जनता इस वर्ग में भाग ले सकते हैं। वर्ग ख स्कूल, कालेज, गुरुकुलों के आचार्य एवं वैदिक विद्वानों के लिए है। इस वर्ग में प्रतियोगियों को सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक अध्याय पर अधिकतम सात पृष्ठों में एक सारगर्भित लेख लिखकर सभा कार्यालय में भेजना होगा। पुरस्कार क्रमशः 5000, 4000, 2000 रुपये हैं। इस वर्ग में विजेताओं को सत्यार्थ रत्न को उपाधि से भी सम्मानित किया जाएगा। वर्ग ग में 18 वर्ष से कम आयु के विद्यार्थियों के लिए है। इस वर्ग में प्रतियोगियों को सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित दृष्टान्तों, संवादों एवं कहानियों आदि का केवल सार एवं उनसे मिलने वाली शिक्षाओं को अपने शब्दों में लिखकर भेजना होगा। इस वर्ग के प्रतियोगियों की सहायतार्थ एक लघु पुस्तिका निःशुल्क भेजी जाएगी। इस वर्ग में पुरस्कार क्रमशः 2000, 1000, 500 रुपये रहेंगे।

प्रत्येक वर्ग में उत्तर पुस्तिका भेजने की अन्तिम तिथि 30 नवम्बर, 2002 तक रखी गई है ताकि प्रतियोगी अच्छी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर सकें। प्रत्येक प्रतियोगिता का माध्यम हिन्दी अथवा अंग्रेजी रखा गया है ताकि प्रत्येक वर्ग में राष्ट्र के लोग इसमे भाग ले सके। प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारो के अतिरिक्त प्रशस्ति पत्र एवं कुछ सान्तवना पुरस्कार दिए जाने की योजना है। उत्तीर्ण होने वाले प्रत्येक प्रतियोगी को सार्वदेशिक सभा की ओर से एक प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा। प्रत्येक प्रतियोगिता का प्रवेश शुल्क मात्र 50/- रुपये ही रखा गया है। अति निर्धन व अनाथ बालक-बालिकाएं प्रार्थनापत्र लिखकर इसमें छूट प्राप्त कर सकते हैं। प्रार्थना पत्र सम्बन्धित सस्था के मुखिया से प्रमाणित होना चाहिए। प्रवेश शुल्क सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम धनादेश या ड्राफट के द्वारा भेजना होगा। प्रवेश शुल्क प्राप्त होने पर प्रतियोगियो को एक मास के भीतर अनुक्रमांक, प्रश्न पत्र एवं अन्य निर्देश आदि भेजे जाएंगे। प्रवेश शुल्क व प्रार्थना पत्र डा मुमुक्षु आर्य राजिस्ट्रार, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-2 के पते पर भेजना होगा। इच्छुक महानुभाव इस स्वर्णिम अवसर का अवश्य लाभ उठाएं और सत्यार्थ प्रकाश को अभी से पढ़ाना प्रारम्भ कर दे। सत्यार्थ प्रकाश का अच्छी प्रकार अध्ययन किए बिना प्रश्नों के उत्तर देना या निबन्ध लिखना सम्भव न होगा। अतः प्रतियोगियो को चाहिए कि समय का पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए इन प्रतियोगिताओं में से किसी एक में भाग अवश्य लें। पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश यदि स्थानीय पुस्तकालयों, आर्यसमाज कार्यालयों अथवा पुस्तक विक्रेताओं आदि से उपलब्ध न हो तो पचास रुपये हिन्दी संस्करण के लिए और एक सौ पचास रुपये अंग्रेजी सस्करण के लिए भेजकर मंगवाई जा सकती है।

कै. देवरत्न आर्य	विमल आर्य	वेदव्रत शर्मा	डॉ. मुमुक्षु आर्य
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	सभा मन्त्री	रजिस्ट्रार

वार्षिक उत्सव समाचार

आप को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना का 28वां वार्षिक उत्सव (सम्मेलन) 8 अगस्त से 11 अगस्त 2002 तक आयोजित किया जा रहा है जिस में उच्च कोटि के विद्वान, सन्यासी एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। सभी बन्धुओं से पार्थना है कि वह उत्सव में बढ़ चढ़ कर पधारें और वैदिक ज्ञान गंगा से लाभान्वित हों। लुधियाना जिला की सब आर्य समाजों से प्रार्थना है कि वह इन तिथियों में अपनी आर्य समाज का कोई विशेष कार्यक्रम अथवा उत्सव निश्चित न करें।

-आशानन्द आर्य, प्रधान आर्य समाज हबीबगंज, लुधियाना

स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ़ द्वारा प्रतियोगिता सम्पन्न

केमलिन लिमिटड की तरफ से दिनांक 3-6-2002 से 9-6-2002 तक स्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में फैबरिक पेन्टिंग का कैम्प लगाया गया। दिनांक 9-6-2002 पेंटिग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 80 बच्चों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

जिसमें प्रथम पुरस्कार जानकी पुरी, द्वितीय पुरस्कार पूनम महता, तृतीय अंजू ने प्राप्त किए और भी छोटे बच्चों ने पुरस्कार प्राप्त किए। साथ ही सभी प्रतियोगियों को कैमलिन लिमिटड की ओर से सर्टीफिकेट और स्त्री समाज की ओर से महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, सरफरोशी की तमन्ना, और आर्य समाज के बीस बलिदानी पुस्तकें भी बच्चों को दी गईं।

इस अवसर पर निर्णायक के रूप में प्रतिनिधि संदीप भाटिया ए.पी.जे स्कूल की आर्ट टीचर ज्योति मदान और मोना भाटिया थी। कम्पनी की टयूटर अंजना मल्होत्रा थे। इस शिविर को सफलता पूर्वक चलाने के लिए स्त्री आर्य समाज और स्कूल की मुख्याध्यापिका सन्तोष धवन, मन्त्री आनन्द पुरी, कोषाध्यक्ष सुषमा नागपाल, सिलाई की अध्यापिका पलविन्द्र, पेन्टिंग की अध्यापिका अनुराधा ने बहुत सहयोग दिया।

—सन्तोष धवन, मुख्याध्यापिका

वैदिक काल में नारी........

(पृष्ठ 5 का शेष)

घोषा गोधा विश्ववारा अपालोपनिषन्निसत्॥

ब्रह्मजाया जुहूर्नाम अगस्त्यस्य स्वसादितिः॥

इन्द्राणी चेन्द्रमाता च सरमा रोमशोर्वशी।

लोपामुद्रा च नद्यश्च यमी नारी च शश्वती॥

श्रीर्लक्ष्मी सार्पराज्ञी वाक् श्रद्धा मेधा च दक्षिणा।

रात्री सूर्या च सावित्री ब्रह्मवादिन्य ईरिता॥

ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रचार करने के कारण उपर्युक्त ऋषिकाओं को ब्रह्मवादिनी कहकर पुकारा जाता है। वैदिक काल के परवर्ती ब्राह्मण तथा उपनिषद् काल में भी नारी का गौरव तथा महत्व अक्षुण्ण रहा। शतपथ ब्राह्मण तथा तदनुवर्ती वृहदारण्य-कोपनिषद् में वाचक्नवी गार्गी नामक ब्रह्मवादिनी नारी का आख्यान अनेकत्र आया है। राजा जनक की सभा में उपस्थित विद्वत् समुदाय को जब महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपने अपरिमित ब्रह्मज्ञान के द्वारा निर्वाक् कर दिया तो वचक्नु ऋषि की पुत्री गार्गी उठ खड़ी हुई और उसने महर्षि से पूछा-'अथ हैनं गार्गी वाचक्नवी पप्रच्छ याज्ञवल्क्येति होवाच.....आदि' तदनन्तर गार्गी वाचक्नवी ने याज्ञवल्क्य से गूढ़ दार्शनिक प्रश्न पूछे। विस्तृत विवरण के लिए बृहदारण्यकोपनिषद् (3-6-1) द्रष्टव्य है। पर्याप्त प्रश्नोत्तर करने के पश्चात् महर्षि ने परमात्मा की महिमा को निम्न प्रभावशाली शब्दों में उद्बोधित किया-'एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठत एतस्य वा अक्षरस्य प्राशने गार्गि द्यावापृथिव्यौ विधते तिष्ठत एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि निमेषा मुहुर्त्ता अहोरात्राण्यर्द्धमासा ऋतवः संवत्सरा इति विधृतास्तिष्ठन्त्ये आदि' अर्थात् हे गार्गी, उस अक्षर परमात्मा के अनुशासन को मानकर सूर्य और चन्द्रमा नियमित होकर स्थित हैं, इसी परमेश्वर की आज्ञा को स्वीकार कर द्युलोक और पृथ्वीलोक नियमित स्थित हैं। इसी अविनाशी अक्षर के आदेश से निमेष (पल), मुहुर्त, अहोरात्र (दिन रात), अर्द्ध मास, मास, ऋतु, संवतसर (वर्ष) आदि काल के अवयव नियमित हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मनिष्ठ से शास्त्रार्थ में प्रवृत्त होकर गार्गी जैसी भारतीय विदुषी ने समस्त नारी जाति को गौरवान्वित किया था।

याज्ञवल्क्य की विदुषी पत्नी मैत्रेयी का आख्यान भी बृहदारण्यकोपनिषद् (2-4) में वर्णित हुआ है। मोक्षमार्ग में अपनी रुचि को दर्शाती हुई मैत्रेयी ने अपने पति को कहा था, 'सा होवाच मैत्रेयी येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्या-जिससे मैं अमृतत्व को प्राप्त नहीं कर सकूं उसे जानकर क्या करूंगी? पत्नी की इसी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए महर्षि ने आत्मा विषयक अपना वह प्रसिद्ध उपदेश दिया जो "न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियोभवति" आदि तथा आगे के वाक्यों में वर्णित हुआ है। मैत्रेयी को ही सम्बोधित कर महर्षि याज्ञवल्क्य ने उपनिषद् के इस अमर वाक्य का उच्चारण किया था-'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्' निश्चय ही यह आत्मा (परमात्मा के लिए प्रयुक्त) ही द्रष्टव्य है, श्रोतव्य है मनन के योग्य है, अतिशय ध्यान करने के योग्य है। इसके श्रवण, मनन, दर्शन से सब कुछ जान लिया जाता है। उपनिषद् कालीन नारियों का अध्यात्म ज्ञान भारत की प्रोज्जवल निधि थी।

धर्मशास्त्रों में वेदों के पश्चात् स्मृतियों की गणना होती है। स्मृति ग्रन्थ वे हैं जिनकी रचना परावरज्ञ ऋषियों ने वेदों की शिक्षा का आधार लेकर की है। इन ग्रन्थों में वर्णाश्रम धर्म, शासन पद्धति, राजनीति आदि विषयों के साथ-साथ अनेक दार्शनिक तथा आध्यात्मिक विषय भी विवेचित हुए हैं। यों देखा जाए तो स्मृतियों की संख्या बहुत अधिक है, किन्तु इनमें सर्वोपरि प्रमाणिक स्वायम्भुव मनु द्वारा रचित मनुस्मृति है। छान्दोग्य ब्राह्मण में कहा गया है कि जो कुछ मनु ने कहा वह औषधियों का भी औषध है। इसी प्रकार मनु के टीकाकार कुल्लूक भट्ट बृहस्पति नाम के एक आचार्य का मत निम्न प्रकार उद्धृत किया है-

वेदार्थोपनिबद्धत्वात् प्राधान्यं हि मनोः स्मृतम्।

मन्वर्थ विपरीता तु या स्मृतिः सा न शस्यते॥

अर्थात् वेदार्थ का निबंधन करने के कारण मनु रचित स्मृति की ही प्रधानता प्राप्त है। मनु के अर्थ के विपरीत जो स्मृतियां हैं, वे कदापि आदरणीय नहीं है। इसी आधार पर स्वामी दयानन्द ने भी अकेले मनुस्मृति को ही स्मृति साहित्य में एक मात्र प्रामाणिक ग्रन्थ स्वीकार किया तथा स्व ग्रन्थों में इसी शास्त्र के प्रचुर उदाहरण दिए हैं। मनु ने नारी की महिमा को अत्यन्त उदात्त शब्दों में व्यक्त किया है। वे कहते हैं-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः 3-56

जहां नारियों की पूजा (सम्मान) होती है वहां देवताओं का निवास होता है, अर्थात् विद्वान् लोग वहां आकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं, इसके विपरीत जहां वे अपमान पाती हैं, वहां के लोगों के समस्त कर्म निष्फल ही रहते हैं। इसके बाद वाले श्लोक में मनु ने स्पष्ट कहा-

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।

न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा॥ 3-57

जिस घर की स्त्रियां दुःखी रहती हैं, कष्ट पाती हैं, वह कुल तत्काल नष्ट हो जाता है। इसके विपरीत जहां उन्हें कोई कष्ट नहीं होता, वे कुल और परिवार सदा वृद्धि प्राप्त करते हैं। आगे के श्लोकों में स्मृतिकार ने नारियों का वस्त्राभूषणों से सदा सत्कार एवं सम्मान करने का आदेश दिया तथा यह भी कहा कि जो लोग अपने गृहस्थ में ऐश्वर्य की वृद्धि चाहते हैं उन्हें उत्सवों तथा समारोहों के अवसर पर विशेष रूप से नारी का सत्कार करना चाहिए। (3-59) गृहस्थ में पति और पत्नी के एक-दूसरे से सन्तुष्ट रहने की परम आवश्यकता है। इस तथ्य का प्रतिपादन करते हुए मनु कहते हैं-

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भार्या तथैव च।

यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥3-60

अर्थात् जहां पत्नी से पति एवं पति से पत्नी सन्तुष्ट रहते हैं, वहां नित्य कल्याण की वृष्टि होती है।

स्मृति ग्रन्थों में समय-समय पर अनेक नये श्लोक प्रक्षिप्त किये गये हैं अतः जिस काल में नारी की अधोगति हुई, उसके अधिकार छीने गए तथा उसे सर्वविध अपमान तथा निंदा का पात्र समझा गया, उस समय इन ग्रन्थों में नारी निंदा तथा नारी तिरस्कार के अनेक श्लोक मिलाये गये। आज के अनेक चिंतक और विचारक इन्हीं प्रक्षिप्त श्लोकों के आधार पर स्मृतिकार मनु को नारी के स्वत्वों का अपहरण करने तथा उसे सर्वविध तिरस्कार का पात्र घोषित करने का अपराधी मानते हैं। स्त्री ५ [illegible] भी स्थिति में स्वतंत्रता न दी जाए, यह आरोप लगाते हुए आक्षेपकर्ता मनुस्मृति के ९वें अध्याय के तीसरे श्लोक को उद्धृत करते हैं जिसमें कहा गया है कि कुमार्यावस्था में स्त्री की रक्षा पिता करता है विवाहोपरान्त पति उसकी रक्षा करता है तथा वार्धक्य प्राप्त होने (अथवा पति के न रहने पर) पुत्र उसकी रक्षा करता है। अतः किसी भी अवस्था में स्त्री के लिए स्वतंत्रता का विधान नहीं है।

वस्तुतः एक निर्दोष स्मार्त कथन को पूर्वाग्रहवश अन्यथा प्रस्तुत करना उचित नहीं। 'पिता रक्षति कौमारे' इस श्लोक का सीधा साधा भाव यही है कि पुरुष की अपेक्षा नारी शारीरिक दृष्टि से दुर्बल होती है, उसका स्वभाव भी कोमल होता है इसलिए उसके रक्षण की सदा आवश्यकता रहती है। यह कार्य समय समय पर पिता, पति और पुत्र करता है। इस सार्वभौम सत्य को नकार कर 'न स्त्री स्वातन्त्रमहर्ति' इस वाक्यांश को नारी स्वतंत्रता का सर्वकाल में विघातक मानना कदापि उचित नहीं है। स्मृतिकार का यह कर्त्तव्य होता है कि जहां सर्व कालों में आचरणीय धर्मो और कर्त्तव्यों का विधान करे वहां आपद्धर्मों तथा प्रायश्चित विधियों की भी व्याख्या करे। अतः मनु ने भी नारी को दूषित करने वाले मद्यपान, दुर्जन संग, पति को त्यागने, अनावश्यक इतस्ततः भ्रमण, अधिक काल तक सोने तथा स्वगृह को छोड़कर इधर-उधर भटकने को स्त्रियों के लिए हानिकारक बताया है, किन्तु ऐसे श्लोकों से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि नारी में अनिवार्यतः उपर्युक्त दोष होते ही हैं। मनु के हृदय में नारी का कितना सम्मान था, यह उनके निम्न श्लोक से प्रकट होता है-

प्रजनार्थं महाभागा पूजार्हा गृहदीप्तयः।

स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन॥

(9-26)

यहां नारी को उत्तम सन्तान देने वाली, महाभाग्य वाली, पूजा के योग्य तथा गृहों की शोभा बताया है। उक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि मनु ने वेदों की सरणि का अनुसरण करते हुए नारियों के प्रति समुचित सम्मान दिखाया है किन्तु स्मृति नामधारी जिन ग्रन्थों की रचना पश्चातवर्ती उस काल में हुई जब नारी को सर्वथा उपेक्षा, तिरस्कार तथा निंदा का पात्र समझ लिया गया था, उनमें निश्चय ही नारी के असम्मान तथा उसके अधिकारों के अपहरण के अनेक प्रसंग आए हैं।

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

दूरभाष ☎ 292926

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 11 सृष्टि संवत 1960853103, 30 जून, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

भ्रष्टाचार देश के रोम रोम में रम गया है

□ले० श्री जमना दास अख्तर

पंजाब सरकार के लोग सेवा आयोग के अध्यक्ष रवींद्र पाल सिंह सिद्धू को करोड़ों की रिश्वत के आरोप में गिरफ्तार किया गया, तो जनता को मालूम हुआ कि इस तरह के आयोगों और महकमों में सरकारी नौकरियां बिकती हैं। रिश्वत कहां नहीं चलती? कई नगरों में पुलिस थाने बिकते हैं। थानेदार अपने वरिष्ठ अधिकारियों को प्रत्येक वर्ष लाखों रुपए पेशगी अदा करते हैं। इसका नतीजा यह है कि बड़े पैमाने पर मादक वस्तुओं की तस्करी होती है। हत्याएं होती हैं, दिन-दहाड़े डकैतियां होती हैं। आमतौर पर अभियुक्त पकड़े नहीं जाते। पकड़े जाएं, तो पुलिस वाले कमजोर केस तैयार करते हैं और अभियुक्त रिहा हो जाते हैं। बड़े-बड़े व्यापारी रिश्वत देकर 'ड्यूटी' की रकमें बचा लेते हैं। आयकर विभाग में रिश्वत लेने वाले हर समय शिकार की तलाश में रहते हैं। सिद्धू ने तीन समाचार पत्रों में काम करते हुए ऐसी पोजीशन बना ली थी कि उसे करोड़ों रुपये हासिल करने में किसी मुश्किल ट.: सामना नहीं करना पड़ा।

कुछ अफसर ईमानदार भी हैं

दिलचस्प बात यह है कि 1978 में पंजाब सरकार ने मुझे सबोर्डिनेट सार्विस सिलैक्शन बोर्ड का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। मैं बुनियादी तौर पर पत्रकार था और अपने कुछ साथियों सहित भ्रष्टाचार के खिलाफ दिल्ली में अभियान चला रहा था। बोर्ड में जो दो और सदस्य नियुक्त किए गए थे, उनमें से भी एक पत्रकार था। दूसरा पत्रकार नहीं, परन्तु पढ़ा-लिखा कांग्रेसी था। पहले दिन ही मेरा एक साथी मेरे कमरे में आया। उसने पांच हजार के नोट दिखाते हुए कहा कि एक व्यक्ति उसके पास आया और उसने दो महिलाओं को नौकरी दिलाने के लिए यह रकम पेश की है। मैने इस सदस्य को कहा कि नुमने अच्छा किया कि मुझे बता दिया। अब यह बात लिखकर दो, ताकि मैं विजीलैंस वालों को सूचित कर के उन्हें गिरफ्तार करा दूं।

जवाब मिला कि ऐसा करने से बोर्ड बदनाम हो जाएगा। मैने कहा कि बोर्ड बदनाम नहीं होगा, बल्कि उसकी और विशेष तौर पर तुम्हारी नेकनामी होगी। उसने मेरी बात नहीं मानी और कमरे से निकल गया। मैने इस घटना पर सोचा, तो यही समझा कि यह सदस्य भ्रष्टाचार में निपुण लगता है और वह दरअसल इस तरह मुझे हिस्सेदार बनाना चाहता है। इस पर मैंने उस पर निगाह रखनी शुरू कर दी। मेरे सचिव ने मुझे बताया कि इससे पहले इस बोर्ड में बहुत कुछ हुआ करता था। अध्यक्ष ईमानदार था, परन्तु एक सदस्य ने रिश्वत का बाजार गर्म कर रखा था। यह सदस्य अध्यक्ष की अलमारी के ताले की एक और चाबी बनवा कर महत्वपूर्ण कागजात निकाल कर इनमें तब्दीलियां कर देता था। रिश्वत एक राजनीतिक दल के नाम से चंदे के बहाने लेकर इसकी रसीद दे दी जाती थी। एक बड़ नेता उसकी मदद करता था।

बड़े नेताओं की शह

कुछ दिन के बाद मुझे दूसरे सदस्य के बारे में मालूम हुआ कि वह रिश्वत ले रहा है। महत्वपूर्ण बात यह है कि अध्यक्ष का पद कबूत करने के बाद इस सदस्य को मैने कहा कि अपने बेटे की शपथ लेकर वायदा करो कि रिश्वत नहीं लोगे। उसने शपथ ली और मुझे उस पर विश्वास हो गया। परन्तु मुसीबत यह हुई कि कई मन्त्री, राजनेता और विधायक आदि तरह-तरह के हथकंड़ों का इस्तेमाल करना चाहते हैं कि हम उनकी सिफारिशों के अनुसार नौकरियां दे।

एक मंत्री, जिसने सरकारी गाड़ी को किराए की गाड़ी, करार देकर उसे माल ढोने के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था, नौकरी के लिए दौड़-धूप करने वालों से रिश्वत लेकर हम पर दबाव डालने का प्रयास करता था। एक मन्त्री महोदय मेरे पास आए और उन्होंने कुछ लड़कियों की सूची देकर कहा कि इन्हें नौकरी दी जाए। मैने कहा कि मुझे ऐसा कोई अधिकारी नहीं। यहां तो परीक्षा होती है। पत्र प्रोफैसरों आदि को भेजे जाते हैं। वे जो नम्बर लगाते हैं और इंटरव्यू में जो नम्बर मिलते हैं, उनके आधार पर ही उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला कर दिया जाता है। मन्त्री महोदय कहने लगे कि किसी को पास करने का अधिकार आपको हासिल है। मैंने कहा कि यदि परीक्षा पत्र देखने वाला किसी उम्मीदवार को फेल कर दे, तो मैं उसे क्योंकर पास कर सकता हूं? यह तो नहीं हो सकता कि जिसे केवल 2 नम्बर मिलें, उसे 52 नम्बर देने के लिए जालसाजी करूं।

जालसाजी नहीं, मदद

मन्त्री महोदय ने कहा कि यह जालसाजी नहीं, बल्कि मदद हे। मदद करनी चाहिए। मैने इन्कार कर दिया और हुआ यह कि वे तीन-चार लड़कियां फेल हो गई। उन्होंने शिकायत की और एक दिन मुख्यमन्त्री ने एक पत्र लिखकर मेरी जवाब-तलबी कर ली। मैं इन लड़कियों के परीक्षा पत्र लेकर मुख्यमंत्री के पास गया। कुर्सी पर बैठने के बजाय खड़ा हो गया। मुख्यमंत्री ने पूछा कि बैठते क्यों नहीं? मैंने जवाब दिया कि आप ने मेरी जवाब-तलबी की है, इसलिए मैं कुर्सी पर नहीं बैठता। वेंम आपको मेरी जवाब-तलबी का अधिकार नहीं। मुझे हाईकोर्ट ही तलब कर सकता है। यह कह कर मैंने मुख्यमंत्री के हस्ताक्षर वाला पत्र पेश कर दिया, तो वह हैरान रह गए। कहने लगे कि लगता है कि सचिव ने मुझे कुछ बताए बिना ही हस्ताक्षर कराए हैं। मैंने कहा कि इस तरह तो आपका सचिव किसी को भी मृत्यु दड देने के निर्देश पर हस्ताक्षर कर सकता है। मैंने उन्हें इन लड़कियों की उत्तर पुस्तिकाएं दिखाई और पूछा कि आप ही देख कर बताए कि क्या इन्हें पास किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि नहीं। मैंने कहा कि मैं इस्तीफा अपने साथ लाया हूं ताकि इस बोर्ड से अलग हो जाऊं।

यह एक ही घटना ऐसी नहीं, इस तरह की घटनाएं प्राय: हुआ करती थीं। मंत्री तो बढ़-चढ कर सिफारिशें करते। मैं किसी की बात नहीं मातना, तो वह नाराज हो जाते। एक दिन मुख्यमंत्री के बूढ़े पिता मोगा के एक आढ़ती को लेकर मेरे मकान पर आए। आढ़ती महोदय ने 13 लड़कियों की एक सूची पेश कर दी और कहा कि इन्हें नोकरी मिलनी चाहिए। मैंने कहा कि ये कौन हैं। बोले कि बेटियां, बहुए आदि हैं। मैंने कहा कि यदि आपके परिवार को ही नोकरिया दे दी जाएं, तो बाकी लडकिया कहा जाएंगी? लाला जी यह काम नही होगा। इस पर मुख्यमंत्री के पिता ने क्रोध में आकर कहा: 'लाला मैंने तुम्हे कहा था कि यह मेरी बात भी नहीं मानेगा। तुमने मेरी बेइज्जती करा दी।'

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हम निरङ्कोरपन्थी नहीं हैं

❑ ले० श्री इन्द्रजित् देव जी, चूना भट्टियां, पुरानी सब्जी मण्डी, यमुनानगर

"परोपकारी" के मई, 1990 के अंक में 'इतिहास के हस्ताक्षर' शीर्षक से महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक पत्र फोटो प्रति के रूप में प्रकाशित हुआ था। यह पत्र श्री पं० कालूराम, रामगढ़ जिला सीकर को महर्षि जी ने मिति चैत्रवदी, 14, गुरुवार, सम्वत् 1639 को लिखा था। इसके प्रकाशित होने पर आर्य जगत में हलचल मची थी व श्री डा भवानी लाल भारतीय, श्री उपेन्द्र राव व स्वयं इन पंक्तियों के लेखक ने "सार्वदेशिक", "वेदवाणी", "सर्वहितकारी" व "आर्य वन्दना" में लम्बे लेख लिख कर इस पत्र विषयक अनेक शकायें प्रकट की थीं। ये शकाएं तब समाधान पा गई थीं, जब स्व० श्री म.म. पं. युधिष्ठिर मीमासक जी ने "वेदवाणी" के नवम्बर 1960 के अंक में सविस्तार समाधान कर दिया था बाद में श्री मीमांसक जी का यह लेख उनकी पुस्तक "मेरी दृष्टि में स्वामी दयानन्द और उनका कार्य" शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक में भी संकिलत है। श्री मीमांसक जी के द्वारा प्रस्तुत समाधानों को पाकर आसमय की हलचल रुक गई थी परन्तु कुछ लोग इस पत्र के आधार पर अब भी कुछ भ्रम फैला रहे हैं। इनका फैलाया भ्रम दूर हो सके, इस उद्देश्य से यह निबन्ध लिखा जा रहा है।

महर्षि के उक्त पत्र में पं. कालूराम को दस उपदेश भेजे गए हैं और इन दस विषयों में पं. कालूराम ने महर्षि से समाधान मांगा था। इनमें प्रथम उत्तर या कहें कि समाधान इस प्रकार है-"सब मन्त्रों से पूर्व ओ३म्कार का प्रयोग करना" भ्रम फैलाने वाले अथवा हठ करने वाले महानुभाव केवल इसे ही पकड़ कर यह प्रचारित करते हैं कि देखो, यह प्रमाण है कि महर्षि सभी मन्त्रों के आरम्भ में ओंकार के बोलने का निर्देश कर गए हैं। शेष नौ उपदेशों के विषय में वे प्राय: मौन ही रहते हैं। न ही इस पत्र की प्राप्ति का इतिहास, "परोपकारी" में प्रकाशित होने का विवरण व पं० मीमांसक जी द्वारा दिए समाधानों को समझने का कष्ट करते हैं। तीन वर्ष पूर्व भी ऐसा ही प्रयास हुआ था। अभी आर्य जगत् के लब्ध प्रतिष्ठ आचार्य श्री सत्यानन्द ने व..ीश ने भी "दयानन्द सन्देश" व "परोपकारी" के दिसम्बर, 2001 के अंक में ऐसा प्रयास किया है। इन पत्रिकाओं में "एक नये निरोङ्कार पन्थ" की समीक्षा और प्रतिमन्त्र ओम् प्रयोग की पुष्टि शीर्षक से प्रकाशित उनके लम्बे लेख में महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपरोक्त पत्र के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि महर्षि जी ने भी प्रतिमन्त्र ओम् के उच्चारण की पुष्टि की है।

इस सम्बन्ध में मेरी उनसे व उनके विचारों से सहमत विद्वानों से प्रार्थना है कि महर्षि के जिस पत्र को आधार बनाकर वे प्रति मन्त्र ओम् का उच्चारण करने की महर्षि द्वारा पुष्टि सिद्ध करते हैं, उस पत्र के सम्बन्ध में उत्पन्न शंकाओं का समाधान करें या पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के द्वारा प्रस्तुत समाधानों को स्वीकार करते हुए घोषणा करें कि इस पत्र में लिखित प्रथम उपदेश 'सब मन्त्रों के पूर्व ओ३म्कार का प्रयोग करना' वाक्य में "सब" शब्द सापेक्ष है, आगे द्वितीय उपदेश में जितने मन्त्र उपदेशार्थ लिखे हैं, उन सबके पूर्व ओ३म् का प्रयोग करना, इतना ही यहां प्रकरणानुसार लेखक का तात्पर्य है। लेखक के तात्पर्य को न समझकर केवल 'सब' शब्द देखकर निरपेक्ष सर्वत्व की कल्पना करना सत्य के प्रति अन्याय है।

1. जिस मिति को यह पत्र लिखा गया था, उस दिन शुक्रवार था। इस पत्र में गुरुवार क्यों लिखा गया है ?

2. पत्र के आरम्भ में 'संख्या-2' लिखा गया है। इसका क्या तात्पर्य है ? क्या "संख्या 1" वाला भी कोई पत्र था ? यदि है तो उस पत्र का इस पत्र के साथ जोड़ कर निष्कर्ष क्यों नहीं निकालते ? जब तक वह पत्र न मिले, तब तक इस पत्र में लिखे उपदेशों का अन्तिम तात्पर्य कैसे निकाला जा सकता है?

वैदिक परम्परा यह है कि पत्र के प्रारम्भ में ही ओ३म् लिखा जाता है। इसके विपरीत इस पत्र में पहली चार पंक्तियों के बाद "ओ३म्" क्यों लिखा गया है?

4. इस पत्र के अन्य उपदेशों को भी क्या आप अक्षरश: स्वीकार करने-कराने को तैयार हैं ? इसके उपदेश 8वें में लिखा है-"भगवां वस्त्र सबका होना चाहिए।" इस आधार पर क्या आप अपने वर्तमान वस्त्र उतार भगवां वस्त्र पहनने का उद्योग करने को तत्पर हैं ? अन्य आर्यों पर भी यही नियम लागू कराने के लिए अपील जारी करेंगे ?

5. इस पत्र के उपदेश 10वें में लिखा है-"सब लोग आचरण सत्यभाषणादि धर्म युक्त ब्रह्मचारी रहें और विद्या की उन्नति करें।" इसका प्रकटया अर्थ यही है कि ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यासी, इन चारों को ही ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। क्या आप इसे स्वीकारते हैं ? यदि स्वीकार करते हैं तो क्यों करते हैं ? यदि स्वीकारते नहीं तो क्यों नहीं स्वीकारते ?

6. पत्र में लिखित उपदेश 2 में लिखा है-"त्रिवर्ण को तत्सवितु: गायत्री मन्त्र द्विजों की स्त्रियों को (विश्वानि देव) मन्त्रशूद्र और उनकी स्त्रियों को (विश्वानि देव) मन्त्र और ईसाई मुसलमान आदि को भी विश्वानि देव मन्त्र अंत्यजादि को परमात्मानमिति मन्त्र।" यह "परमात्मानमिति मन्त्र" कौन सा है ? वर्ण, सम्प्रदाय व लिंग के आधार पर मन्त्रों का बंटवारा करना व इसी आधार पर उच्चारण करना युक्ति युक्त है ?

7. उपदेश संख्या 4 में लिखा है-"जो कोई ब्राह्मण हो, उसको संन्यास देकर नाम के अन्त में सरस्वती शब्द होना चाहिए और क्षत्रिय वैश्य को आनन्द शब्दान्त जैसे अच्युतानन्द और शूद्र को दास जैसे अच्युतादास॥" यह उपदेश महर्षि के सिद्धान्त के विपरीत है क्योंकि अपने ग्रन्थों में महर्षि ने संन्यास-आश्रम ग्रहण करने का अधिकारी केवल ब्राह्मण को ही माना है। इस स्थिति में आचार्य जी किसे मान्यता देते हैं व किस आधार पर देते हैं ?

8. पत्र की उपदेश संख्या 4 व 5 के मध्य में ये पंक्तियां लिखी हैं-

1॥ ओ३म् सर्वात्मानमंत यमिनं कृपामृत-

सागरं परमात्मानमहं शरणं प्रपद्ये॥

ये पंक्तियां किसी वेद का मन्त्र हैं या अन्यथा ? आचार्य जी पूरा सन्दर्भ बताएं। वे यह भी बताएं कि दो उपदेशों के मध्य में उन्हें लिखने की आवश्यकता तथा उपयोगिता क्या है ?

9. पं. कालूराम जी का वह पत्र कहां है जिसके उत्तर में यह पत्र महर्षि ने भेजा था ?

10. महर्षि का यह पत्र कहां से लिखा गया था ?

इस पत्र के उपदेश क्रम 2 में यह स्पष्ट नहीं होता कि त्रिवर्णों, द्विजों की स्त्रियों, शूद्रों व उनकी स्त्रियों व ईसाई मुसलमान आदि को उपदेश (2) में वर्णित विभिन्न मन्त्रों से क्या करना चाहिए तथा क्या नहीं करना चाहिए। आचार्य जी। कृपया स्पष्ट कीजिएगा।

आचार्य जी ने कल्पना करते हुए लिखा है-"पण्डित जी (श्री कालू राम) का प्रश्न रहा होगा कि सब मन्त्रों से पूर्व ओंकार का प्रयोग करें कि नहीं ?" मनुष्य सदैव अपने विचारों के अनुरूप ही कल्पना करता है, यह स्वाभाविक ही है। जब आप के पास पं० कालूराम जी का मूल पत्र उपलब्ध नहीं है तो ऐसा लिखना कल्पना ही तो है कि "पं० जी का प्रश्न रहा होगा......।" आचार्य जी थोड़ी और कल्पना करके यह बताने की भी कृपा करते तो अच्छा होता कि महर्षि के इस पत्र में वर्णित उपदेश संख्या 8 जिस प्रश्न के उत्तर में दिया गया है, उस प्रश्न की भाषा क्या रही होगी ? इस उपदेश में लिखा है "भगवां वस्त्र सब का होना चाहिए"। इसका अर्थ यह कदापि नहीं लेना चाहिए कि इस उपदेश में योगेश्वर महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यासी, इ: सबको भगवा वस्त्र धारण करने का उपदेश दिया है। इस उपदेश में 'सब' शब्द सभी आश्रमियों पर लागू न होकर केवल उन सब संन्यासियों पर ही लागू होता है जो उपदेश संख्या 4 के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र हों व अभी-अभी संन्यासी बन रहे हों या संन्यासाश्रम में दीक्षित हुए हों। इसी प्रकार महर्षि के उपदेश संख्या 1 में प्रयुक्त "सब मन्त्रों के पूर्व ओ३म्कार का प्रयोग करना" का तात्पर्य यह नहीं हो सकता कि वेदों के सभी मन्त्रों से पूर्व ओ३म्कार का प्रयोग करना चाहिए अपितु केवल उन्हीं मन्त्रों से पूर्व ओ३म्कार का प्रयोग करना है, जिनका उल्लेख कालू राम जी ने महर्षि दयानन्द को लिखे पत्र में किया था ?

(क्रमश:)

सम्पादकीय.....

क्या देश में फिर छोटी-छोटी रियासतें बन जाएंगी?

आज जहां भारत पर आतंक के बादल छाये हुए हैं जिससे सभी प्रान्तों में कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में आतंक पनप रहा है वहां लगभग प्रत्येक राज्य से स्वायत्तता देने की आवाज़ उठ रही है। जम्मू कश्मीर के मुख्य मन्त्री फारूख अब्दुल्ला ने 23 जून को श्री नगर में एक सभा में कहा कि जम्मू कश्मीर राज्य को पूर्ण स्वायत्तता मिलनी चाहिए। उन्होंने इस मुद्दे को फिर उठाते हुए केन्द्र को इस विषय पर गम्भीरता से विचार करने को कहा और यह भी कहा कि "यही राज्य के विकास की कुंजी है। उन्होंने यह भी कहा कि हम स्वायत्तता हासिल करके ही रहेंगे। जब तक केन्द्र जम्मू कश्मीर और लद्दाख को स्वायत्तता नहीं देता तब तक राज्य में शांति कायम नहीं हो सकती।"

श्री अब्दुल्ला जी गत दो वर्ष से यह मांग कर रहे हैं इससे पहले पंजाब से भी ऐसी आवाज़ उठती रही, अन्य भी कई प्रदेशों से स्वायत्तता की मांग निरन्तर उठ रही है। स्वायत्तता का सीधा सा अर्थ है कि स्वतन्त्र राज्य जैसे पहले हमारे देश में रियासतें थीं। छोटे-छोटे राज्य थे। देश की स्वतन्त्रता से पहले हमारे भारत पर अंग्रेजों का एक छत्र राज्य था परन्तु सारे देश में रियासतें व छोटे स्वतन्त्र राज्य बने हुए थे। वह अंग्रेज सरकार को कर तो देते थे परन्तु अपने प्रदेश में राज्य स्वयं चलाते थे वह वहां राजे बने बैठे थे। वहां राजा के बाद उसका बेटा ही राजा बनता था। वहां वोट का कोई महत्व नहीं था। अंग्रेज सरकार की जेबें गर्म करके रजवाड़े (छोटे-छोटे राजे) अपने-अपने राज्य में मनमानी करते थे। आज फिर कई राज नेता वही कुछ करना चाहते हैं। जिन राज्यों को समाप्त करने के लिए आज़ादी के बाद अर्थात् 15 अगस्त 1947 के पश्चात् सरदार पटेल जी से बड़ी कठिनाई से उन छोटे-छौटे राज्यों को समाप्त करके भारत में मिलाया था और भारत में एक लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना की थी। जिस गर्त में से भारत देश सदियों के बाद निकला है आज कुछ राजनैतिक लोग अपने स्वार्थ में फिर से भारत को उसी गर्त में डालना चाहते हैं।

केन्द्रीय सरकार ने आज तक फारूख अब्दुल्ला तथा दूसरे ऐसे ही स्वायत्तता की मांग करने वाले लोगों की कोई बात नही सुनी परन्तु जिस दिन किसी दबाव में आकर केन्द्रीय सरकार ने यह बात सुन ली उस दिन देश के पता नहीं कितने टुकड़े होने आरम्भ हो जाएंगे। पहले ही हमारे देश से तिब्बत बाहर हो गया, पाकिस्तान अलग हो गया, बंगला देश अलग हो गया। यह सब मुस्लिम राजनेताओं की स्वायत्तता की मांग पर ही हुआ है। किसी भी राज्य को स्वायत्तता देना यह भारत के लिए घातक सिद्ध होगा। पाकिस्तान उस समय इस लिए बनाया गया था कि मुस्लिम नेता और कट्टरपंथी मुसलमान पाकिस्तान बन जाने के बाद शांति से बैठ जाएंगे और हिन्दुओं और मुसलमानों में जो विवाद होता रहता है वह सदा-सदा के लिए समाप्त हो जाएगा। परन्तु वह विवाद कितना समाप्त हुआ यह हम सब के सामने है। वह विवाद समाप्त नहीं हुआ बल्कि रात दिन बढ़ता ही जा रहा है और आज पाकिस्तान भारत के लिए सबसे बड़ी सिरदर्दी है। जबसे पाकिस्तान बना तब पाकिस्तान और भारत में संघर्ष चल रहा है एक दिन भी शान्ति से नहीं बीता । यदि किसी प्रदेश को स्वायत्तता मिल गई तो उससे वहां की कोई समस्या हल नहीं होगी परन्तु कई समस्याएं और पैदा हो जाएंगी, जिनका कोई समाधान नहीं मिलेगा। केन्द्र सरकार ने फारुख अब्दुल्ला की स्वायत्तता की मांग न मान कर एक अच्छा कार्य किया है। यदि आज किसी को कुछ थोड़े से अधिकार दे दिए जाएंगे तो कल को और मांग होगी और वह मांग कभी समाप्त नहीं होगी।

कुछ लोगों ने मांग की है कि जम्मू-काश्मीर को दो भागों में बांट दिया जाए। जम्मू क्षेत्र का अलग राज्य बना दिया जाए। जम्मू काश्मीर के टुकड़े करने से भी समस्या का कोई हल नहीं होगा हां धारा 370 को हटा देने से जरूर लाभ होगा। इससे देश के दूसरे प्रान्तों में रहने वाले लोग भी जम्मू कश्मीर में अपना स्थाई निवास बना सकेंगे और जम्मू कश्मीर सारे देश से जुड़ जाएगा क्योंकि इससे सभी प्रान्तों व जातियों के लोग जम्मू कश्मीर में होंगे।

स्वायत्तता एक ऐसी चीज है यदि यह एक परिवार के सदस्यों को भी दे दी जाए वहां भी सभी सदस्यों का संगठन छिन्न-भिन्न हो जाएगा और यह हानिकारक सिद्ध होगी। माता-पिता यदि बच्चों को स्वायत्तता दे दें तो परिवार बिखर जाएगा। बच्चे मन-मानी करने लग जाएंगे, यह तो एक प्रदेश है इसकी स्वायत्तता के बाद क्या स्थिति होगी यह तो समय ही बताएगा। देश को जोड़ने का कार्य करना चाहिए। संगठन का कार्य करना चाहिए। जिस से हमारा देश उन्नति करे प्रत्येक राजनैतिक संगठन को निजी स्वार्थों को एक तरफ रख देना चाहिए और देश की उन्नति व रक्षा सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए पड़ोसी देश भारत में विघटन पैदा कर देना चाहते हैं। वह भारत को टुकड़े-टुकड़े देखना चाहते हैं हमें इससे सावधान रहना चाहिए।

-धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

आर्य समाजें वेद प्रचार की ओर ध्यान दें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से हमारी प्रार्थना है कि वह वेद सप्ताह के लिए अपनी आर्य समाज की तिथियां निश्चित करें। जुलाई का महीना आरम्भ हो रहा हैं। जुलाई, अगस्त, सितम्बर और अक्तूबर यह चार माह ऐसे हैं जिसमें वेद सप्ताह प्रत्येक आर्य समाज में अवश्य मनाया जाना चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियम बनाते समय उनमें तीसरा नियम बनाया है कि "वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।" इसलिए वेद कथा सुनना भी आवश्यक है और सुनाना भी आवश्यक है। आर्य समाज के विद्वान् अपने प्रवचनों द्वारा वेद की बातें बताते हैं। वेद प्रवचनों द्वारा जीवन की सभी प्रकार की समस्याओं को दूर करने के साधन बताते हैं। जीवन निर्माण की प्रक्रिया बताते हैं।

आज का प्रत्येक मानव तनाव ग्रस्त है तथा कई प्रकार की समस्याओ से घिरा हुआ है, परेशान है, दुःखी है और शान्ति की तलाश मे जगह-जगह भटक रहा है। अब फिर देश में वही अन्धकार बढ़न लगा है। अन्धविश्वास फिर बढ़ने लगा है। आज पहले से भी अधिक कब्र पूजा होने लगी है। कस्बों में, नगरों में, ग्रामों में, देहातों में सड़कों के किनारों पर अब आते जाते कब्रें आपको नजर आ जाएंगी और वीरवार वाले दिन उन पर हर स्थान पर मत्था टेकने वालों की आप भीड़ देख सकते हैं। अब मत मतान्तर पहले से अधिक बढ़ रहे हैं। भारी संख्या में आप देखेंगे कि लोग महन्तों, सन्तों और बाबाओं के चेले बनते जा रहे हैं। कई मत तो कुछ ही दिनों से वजूद में आए हैं और अब वहां काफी भीड़ है।

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के प्रचार से अन्धविश्वास घटे थे पीर पैगम्बरों, महन्तों, सन्तों के पास जाने से लोग रुक गए थे और बहुत से लोग वैदिक धर्म के अनुयायी बन गए थे। अब वह पहली पीढ़ी समाप्त हो चुकी है। आर्य समाज में अब दूसरी पीढ़ी चल रही है। पहली पीढ़ी के आर्य समाजियों में और आज की पीढ़ी के आर्य समाजियों में काफी अन्तर आ गया है। आम जनता में तो परिवर्तन आना स्वाभाविक था। इसका कारण है कि वेद का प्रचार घट गया है। आर्य समाज भी अपनी चार दिवारी में बन्द होकर रह गया। जहां पहले प्रत्येक आर्य समाजी वेद का प्रचार करता था अब वहां केवल कुछ उपदेशक ही वेद का प्रचार कर रहे हैं और हम उनसे भी वेद प्रचार करवाना नहीं चाहते और न ही स्वयं वेद प्रचार करते हैं।

प्रत्येक आर्य समाजी का परम धर्म है कि वह वेद प्रचार के लिए कार्य करे। जहां आप और धर्म के कार्य करते हैं वहां इस परम धर्म को भी अवश्य करें।

आज हमारा देश संकट काल से गुजर रहा है। कई देशी-विदेशी ताकतें हमारे देश में विघटन पैदा करने का प्रयास कर रही हैं। ऐसे समय में वेद का प्रचार व प्रसार ही हमारे देश को इस संकट काल से बाहर कर सकता हैं। लोगों में देश भक्ति की भावना पैदा करके आर्य समाज ही केवल मात्र ऐसी संस्था है जो देश में संगठन पैदा कर सकती है। देश में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है आर्य समाज ही केवल मात्र उसके उन्मूलन का पाठ जनता को पढ़ा सकता है। देश की आबादी चरम सीमा तक पहुंच रही है केवल वेद ही इसका समाधान बता सकता है। मानव की प्रत्येक समस्या का समाधान वेद में है।

इसलिए वेद प्रचार की ओर आर्य समाज को विशेष ध्यान देना चाहिए। क्योंकि आर्य समाज को छोड़कर अन्य कोई भी संस्था ऐसी नहीं जो वेद को जानती व समझती हो, हमारे सनातन धर्मी भाई वेद को मानते तो हैं पर जानते नहीं। क्योंकि वह वेद पढ़ते ही नहीं हैं। प्रतिदिन अखबारों में वेदों के नाम पर तरह-तरह की बातें कई लेखक लिख रहे हैं। गत दिनों दैनिक जागरण में छपे दो लेख हमारे ध्यान में लाए गए हैं। एक में लिखा है कि वेदों में लिखा है कि हनुमान आज भी विद्यमान हैं। दूसरे में लिखा है कि वेदों में लिखा है कि शिवजी महाराज ने अपनी जटाएं पत्थर पर पटकी और उनसे एक शक्तिशाली देवी पैदा हो गई। पता नहीं यह कहां लिखा होगा और किसने लिखा होगा और क्यों लिखा होगा परन्तु उन्होंने यह वेदों पर थोप दिया है कि वेदों में ऐसा लिखा है। यह लोग वेदों के सम्बन्ध में भ्रम फैला रहे हैं। इस भ्रम को केवल आर्य समाज ही दूर कर सकता है क्योंकि आर्य समाज के विद्वान् ने वेद पढ़े हैं और वह उन्हें जानते हैं और मानते हैं।

इसलिए मेरी सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह वेद प्रचार के कार्य के लिए आगे आएं। वेद सप्ताहों-वेद कथाओं का आयोजन करें ताकि लोगों को वेदों के सम्बन्ध में जानकारी दी जाए।

इस जुलाई, अगस्त, सितम्बर व अक्तूबर में अपने वेद सप्ताह निश्चित करके सभा कार्यालय से उसकी स्वीकृति प्राप्त करें ताकि समुचित व्यवस्था की जा सके। कृप्या शीघ्र अति शीघ्र वेद सप्ताह के लिए सभा को पत्र लिखें।

-धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

सरल-सुखी जीवन

❑ ले० भक्तसेन, बी-2, 92/7 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर-146001

(गतांक से आगे)

धर्म के अन्य अर्थ–विधि, ढग पद्धति, रीति के अर्थ में भी धर्म शब्द आता है। जैसे कि विवाह क आठ प्रकारो की चर्चा करते हुए मनस्मृति (3, 27-31) मे अनेक बार विधि के स्थान पर धर्म शब्द का प्रयोग किया है। ऐसे ही न्याय, निर्णय की प्रक्रिया को दर्शाते हुए अनेक तरह के विवादों के प्रसग मे निर्णय के अर्थ मे मनु (8, 266, 9, 55) ने धर्म शब्द का उल्लेख किया ह।

अनेकधा रीति, परम्परा के अर्थ मे भी धर्म शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह ठीक है, कि धर्म एक शाश्वत तत्व है, और कई बार रीति, परम्परा तात्कालिक भी होती है। तभी तो कहा जाता है–'रूढ़ियां पूर्णत: धर्म नहीं होतीं, वे किसी समय की बनी हुई सामाजिक व्यवस्थायें होती हैं। जिनसे कभी समाज में सुथरापन आया था, पर उस समय के, स्थिति के बदल जाने पर वे अब जंजीर भी हो सकती हैं।

10. धर्म का मुख्य अर्थ– वस्तुत: धर्म शब्द का अर्थ या अभिप्राय यही है, कि जिसके करने, पालने से व्यवस्था हो। जिस से उस व्यवस्था से सम्बन्ध रखने वाला कार्य ठीक ढंग से पूर्ण हो। प्रकृति-नियम, राज्य-कानून और सामाजिक कर्त्तव्य पालन से उस-उस क्षेत्र की व्यवस्था या वहां का कार्य ठीक प्रकार से चलता है। अत: इन तीनों अर्थो मे धर्म शब्द का प्राय: प्रयोग हाता है, पर सामाजिक कर्त्तव्य, आचरण ही धर्म का मुख्य अर्थ है। इसीलिए मनुस्मृतिकार ने धर्म शब्द से अभिहित होने वाले अर्थों मे से (आचार: परमो धर्म: 1, 108) आचरण को मुख्य माना है।

प्रथम अध्याय के अन्तिम श्लोकों में आचरण को ही धर्म का सार, मूल (1, 110, 4, 115) कहा है और स्पष्ट रूप से संकेत किया है, कि आचरण के बिना धर्म के अन्य अग फलदायक नहीं होते हैं। अत: यदि हम सच्चे अर्थों में धार्मिक बनना चाहते हैं, तो हमें सर्वप्रथम अपने आचरण की ओर ध्यान देना होगा, तभी हम धर्म के पूरे फल को प्राप्त कर सकते हैं। महर्षि मनु ने 6, 92 में धृति, क्षमा आदि के रूप में सामाजिक व्यवहारों को ही धर्म कहा है तथा इनको सभी के लिए अनिवार्य बताया है, क्योंकि इनकी सभी को समान रूप से जीवन में पग-पग पर जरूरत होती है। धर्म का यही ऐसा रूप है, जिसके सम्बन्ध में सभी विचारों के लोग समान रूप से सहमत हैं और सभी धर्मों मे इन को समान रूप से स्वीकार किया गया है। योगदर्शनकार ने यम-नियम के रूप मे मनुस्मृति जैसे धर्म के तत्वों को सार्वभौम महाव्रत कहा है अर्थात् ये बातें ऐसी हैं, जिन को सारी धरती पर समान रूप से सभी स्वीकार करते हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास के अन्तिम भाग में इस बात का समर्थन करते हुए एक जिज्ञासु को क्रमश: सभी धर्म वालों के पास भेजा है और अन्त में इससे यही परिणाम दर्शाया है, कि जिन बातों मे सभी सहमत हैं, वे सच्चाई, संयम, स्नेह आदि ही धर्म हैं। इसी दृष्टि से यह सारा प्रकरण पठनीय है, पुनरपि ये पंक्तियां विशेष पठनीय हैं–'देख! जिस बात में ये सहस्र एकमत हों, यह ग्राह्य है और जिसमें परस्पर विरोध हो, वह कल्पित, झूठा, अधर्म, अग्राह्य है।'11, 351

अत: इस प्रकरण का सार यही है, कि धर्म का मुख्य अर्थ आचार ही है। तभी तो महर्षि ने गोकरुणानिधि में लिखा है–'रक्षक-हम तुम से पूछते हैं, कि धर्म और अधर्म व्यवहार ही से होते हैं या अन्यत्र ? तुम कभी सिद्ध न कर सकोगे कि व्यवहार से भिन्न धर्माधर्म होते हैं। जिस जिस व्यवहार से दूसरों की हानि हो वह-वह अधर्म और जिस-जिस व्यवहार से उपकार हो वह-वह धर्म कहाता है? पृ 11-12

हां, धर्म का सीधा सा अर्थ-धारण, पालन, अपनाना अर्थात् व्यवस्था। व्यवस्था सदा अपने-अपने क्षेत्र, प्रकरण के अनुसार होती है। अत: जहां की जो व्यवस्था, मर्यादा, सच्चाई, नियम है, वह वहां का धर्म है। जैसे कि राज्य-प्रशासन का जो धर्म-व्यवस्था, मर्यादा, नियम, नीति है, वही राजनीति ही राजधर्म है। भारत के स्मृति ग्रन्थों में इस क्षेत्र के लिए इसी लिए राजधर्म शब्द का प्रयोग किया है, जिसको आजकल राजनीति कहा जाता है। हां, क्षेत्र-क्षेत्र की व्यवस्था अलग-अलग होने से ही धर्म शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है।

अत: यह बोलने वाले की इच्छा और प्रकरण पर निर्भर करता है, कि कहां, किस दृष्टि से धर्म शब्द का प्रयोग कर रहा है। जैसे कि आपस के बोलचाल में जब मेरा धर्म का प्रयोग किया जाता है, तो वहां अधिकतर अभिप्राय हिन्दू धर्म आदि से होता है।

11. धर्म-अनिवार्य या निरपेक्ष–धर्म के साथ कहीं अनिवार्य शब्द जुड़ा हुआ देख कर कुछ प्रश्न कर सकते हैं, कि धर्म का यदि यह रूप अनिवार्य है, तो उसके बिना किसी के जीवन का निर्वाह सम्भव नहीं होना चाहिए। यदि किसी का भी कार्य चल सकता है, तो वह उसके लिए अनिवार्य नहीं कहा जा सकता है। सबके लिए धर्म के अनिवार्य होने पर भारतीय संविधान के अनुसार मान्य धर्म निरपेक्षता का भाव सिद्ध न हो सकेगा। भारतीय संविधान में धर्म निरपेक्षता के साथ सब को अपने-अपने धर्म को पालने की खुली छूट है और वह मौलिक अधिकार है। अत: एक धर्म दूसरे धर्म वाले के लिए अनिवार्य नहीं है, यह तो वहां व्यक्ति की इच्छा पर ही निर्भर है, कि वह जिस किसी धर्म को माने।

वस्तुत: गहराई से सोचा जाए, तो भारतीय सविधान में प्रयुक्त धर्मनिरपेक्षता, धर्म स्वतन्त्रता और अनिवार्य शब्द में कोई विरोध नहीं है। जब कहीं धर्म के साथ अनिवार्य शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो ऐसी स्थिति में धर्म के आचरणात्मक रूप को ध्यान में रखा जाता है। तभी तो स्नेह, दया, ईमानदारी आदि धर्म के ऐसे रूप हैं, जो सभी धर्मों में समान रूप से मान्य हैं। सभी समान रूप से धर्म के आचरणात्मक रूप के सम्बन्ध में सहमत हैं। अत: आचरणात्मक धर्म सभी के लिए अनिवार्य है। इसके बिना किसी व्यक्ति, परिवार, समाज का व्यवहार न तो चल सकता है और न ही वह सुखी हो सकता है।

पर जब धर्म निरपेक्षता और धर्म स्वतन्त्रता की बात होती है, तो वहां धर्म का अर्थ कर्मकाण्ड (पूजा-पाठ आदि) और हिन्दू, मुस्लिम धर्म आदि से होता है। अत: आजकल प्रचलित धर्म निरपेक्षता और स्वतन्त्रता शब्द कर्मकाण्ड और हिन्दूधर्म आदि की दृष्टि से ही है। जिसमें सबको अपने-अपने ढंग से पूजा आदि करने की स्वतन्त्रता है। जैसे कि कोई किसी विशेष स्थान (=तीर्थ) पर स्नान, यात्रा करना चाहता है, किसी विशेष धर्मस्थल पर अभीष्ट के दर्शनार्थ, पूजनार्थ जाना चाहता है। किसी विशेष धर्मग्रन्थ को पढ़ना पसन्द करता है। किसी सत्संग में सम्मिलित होने की इच्छा रखता है। ये ऐसी बाते हैं, जिनके सम्बन्ध में हर व्यक्ति या वर्ग में अपने-अपने दृष्टिकोण या विचार के भेद से स्वतन्त्रता है। इसी प्रकार के पूजा-पाठ, जप-तप, स्मरण-ध्यान, देवदर्शन, तीर्थयात्रा, विशेष चिन्ह धारण आदि कर्मकाण्ड को लेकर ही भारतीय संविधान में धर्म स्वतन्त्रता का सब को अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार समान अधिकार दिया गया है।

धर्मनिरपेक्षता का मूलभाव इतना ही है, कि भारतीय प्रशासन के व्यवहारों अर्थात् कार्यपालिका, विधान पालिका और न्यायपालिका के सभी कार्यो में किसी प्रचलित धर्म के आधार पर भेदभाव, किसी को विशेष अवसर, अधिकार न होगा। अपितु सभी भारतीय नागरिकों से सरकार के सुरक्षा, सन्देश-संचार, यातायात, उद्योग, कार्यालय आदि जितने भी कार्य हैं। उनमें किसी प्रचलित धर्म (हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि) के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव न किया जाएगा। केवल योग्यता, अनुभव, शिक्षा के कारण ही किसी कार्य पर किसी का निर्वाचन होगा। भारतीय संविधान की इस भावना के अनुसार दूसरों के जीवन व्यवहार में बाधा डाले बिना सभी को अपने-अपने धर्म को मानने, पालने, अपने धर्मस्थल, संगठन बनाने और धर्म प्रचार की पूरी स्वतन्त्रता है।

अधिकतर धर्मनिरपेक्षता को पसन्द न करने वाले प्राय: दूसरे धर्मों पर प्रतिबन्ध की बात मन में रखते हैं। अपितु चाहिए तो यह है कि हम अपने धर्म के लिए दूसरों से बढ़ कर प्रयास करें। जैसे कि अकबर के एक प्रश्न के उत्तर में बीरबल ने पहली लकीर को मिटाए बिना ही पास में बड़ी लकीर को खींच कर उसको छोटा सिद्ध कर दिया था। वैसे ही हम स्वयं अपने धर्म के प्रचार में अधिक सजग हों, पर स्वयं सुस्त रह कर दूसरों के प्रति अन्यथा विचारते हैं।

(क्रमश:)

व्यक्तित्व के धनी पं. हरवंस लाल जी शर्मा

ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो श्री पं. हरवंस लाल जी शर्मा को न जानता हो। श्री पण्डित जी जहां एक प्रसिद्ध उद्योगपति हैं और उनका करोड़ों का व्यापार है वहां वह आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति हैं और भी अनेकों छोटी बड़ी संस्थाओं के अधिकारी हैं। भारत का शायद ही कोई गुरुकुल ऐसा होगा जिसको श्री पं. हरवंस लाल शर्मा ने उनके बिना मांगे ही कुछ न कुछ दान राशि न भेजी हो। पंजाब में लड़कों का एक मात्र गुरुकुल है जिस को गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट करतारपुर चला रहा है। पण्डित जी चिरकाल से इसके प्रधान चले आ रहे हैं और वहां के व्यय में अपना पूरा आर्थिक सहयोग देते हैं। पण्डित जी जहां भी गए हैं जिस भी आर्य समाज या आर्य संस्था में गए हैं वहां अवश्य ही कुछ न कुछ राशि अपने पास से देकर आए हैं।

गत दिनों हमारे देश पर कारगिल का युद्ध पाकिस्तान ने थोंपा। देश में आर्थिक संकट आया। पण्डित जी ने लाखों रुपया अपने पास से प्रधान मन्त्री राहत कोष में दिया। गत दिनों महाराष्ट्र में भूचाल आया जिसमें हजारों लोग मारे गए और हजारों बेघर हो गए इसके लिए भी श्री हरवंस लाल जी शर्मा ने लाखों रुपये प्रधान मन्त्री राहत कोष में भेजें। गत दिनों दो ट्रक सामान जम्मू कश्मीर के आंतक पीड़ित परिवारों के लिए भिजवायें। श्री पण्डित जी के पास जो भी व्यक्ति आया चाहे उसने किसी भी रूप में पण्डित श्री से धन मांगा वह खाली नहीं गया। अनेकों व्यक्ति उनसे आर्य समाजों के भवन बनाने के लिए, मुरम्मत के लिए तथा कई व्यक्ति पुस्तक आदि छपवाने के लिए धन लेकर जाते रहे। पण्डित जी मुक्त हाथ से दान देते रहे हैं और दे रहे हैं।

गुरुकुल कांगड़ी में पण्डित जी गत कई वर्षों से जाते हैं। एक बार जब वह पुण्य भूमि हरिद्वार को देखने के लिए गंगा पार गए तो उन्होंने देखा कि गंगा गुरुकुल की भूमि को काटती जा रही है। श्री शर्मा जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों से प्रार्थना की कि इस ऐतिहासिक भूमि और भवन की रक्षा की जाए। इस पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने वहां ठोकरें बनवानी आरम्भ कर दीं। श्री पण्डित जी ने संकल्प किया कि विद्यालय के पुराने भवन की रक्षा के लिए मैं स्वयं कार्य करूंगा। सारे पुराने भवन के ऊपर से पुराना पलस्तर जो चूने का लगा हुआ था और वह टूट चुका था उसे उतारा गया और उसके स्थान पर नया पलस्तर दीवारों पर सीमेन्ट का किया गया लगभग दो वर्ष में यह कार्य पूर्ण हुआ। इस पर जो भी खर्च हुआ वह पण्डित जी ने व उनके परिवार तथा सम्बन्धियों ने खर्च किया। पण्डित जी ने सभा से या अन्य किसी व्यक्ति से एक पैसा भी इस भवन की मुरम्मत के लिए नहीं लिया। उनको सन्तुष्टि है कि उन्होंने जो निश्चय किया था वह पूरा हो गया।

पंजाब में पण्डित हरवंस लाल जी शर्मा का अपना एक विशेष स्थान है वह किसी की प्रशंसा के मोहताज नहीं हैं। सारा पंजाब जानता है कि श्री पण्डित हरवंस लाल जी क्या हैं? पण्डित हरवंस लाल जी 1994 से निरन्तर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान चले आ रहे हैं। पण्डित हरवंस लाल जी शर्मा सर्वसम्मति से प्रधान चुने गए हैं। उनकी प्रतिष्ठा को देखते हुए सभा के प्रत्येक व्यक्ति ने उनको मान दिया है और आज भी मान दे रहे हैं। गत दिनों स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी वह कई आर्य समाजों के उत्सवों पर जाते रहे और यथाशक्ति दान देते रहे हैं।

पण्डित जी बहुत ही मृदु स्वभाव के व्यक्ति हैं। उन्होंने कभी भी किसी को भी ऊंचा-नीचा नहीं बोला। वह प्यार से ही बोलते हैं। वह बहुत विनम्र हैं प्रत्येक छोटे-बड़े का मान करते हैं। उन्होंने कभी न अपने धन व सम्पत्ति का मान किया और न अपनी पदवी का मान किया। बड़े-बड़े पदों पर रहते हुए भी वह सदा विनम्र भाव से रहते रहे हैं और रह रहे हैं। घमण्ड उन्हें कभी छू भी न पाया।

श्री पण्डित जी ने अपने जीवन में अनेकों निर्धनों व विधवाओं की लड़कियों के विवाह में उन्हें आर्थिक सहायता दी है, कई विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता दी है। प्रति वर्ष सर्दियों में सैंकड़ो कम्बल वह निर्धनों में बांटते रहे हैं। अनेकों सिलाई मशीनें उन्होंने दी हैं। जहां वह गए और उनके पास स्थान हुआ तो उन्होंने वृक्षारोपण अवश्य किया। कई स्थानों पर उन्होंने वृक्षारोपण का कार्य करवाया है। गुरुकुल कांगड़ी में भी उन्होंने बहुत वृक्ष लगवाए।

पण्डित हरवंस लाल जी शर्मा को मारे भारत के आर्य लोग जानते हैं। भारत से बाहर के लोग भी उन्हें जानते हैं। उनकी अपनी प्रतिष्ठा है मान है, सम्मान है। उन पर कोई दोष लगाना चान्द पर थूकने वाली बात है। उनके सम्बन्ध में कुछ गलत लिखना मैं समझता हूं वह एक महापाप है, अपराध है। एक धार्मिक व्यक्ति जिसने जीवन में किसी का कभी कुछ भी न बिगाड़ा हो, जिसने जीवन भर कुछ न कुछ दिया ही हो और किसी से कुछ लिया न हो। जिसके घर में नित्यप्रति यज्ञ होता हो और दर्शनीय यज्ञशाला बनी हो, जिसकी अपनी गौशाला हो, परन्तु फिर भी वह अन्य गौशालाओं को आर्थिक सहायता करता हो। जो दान, पुण्य, परमात्मा की भक्ति उपासना आराधना करने वाला हो। जिसका सारा परिवार धार्मिक हो, जिसके घर में कई वेद पारायण यज्ञ हो चुके हों और सभी पुत्र व पुत्र वधुवें व पुत्रियां भी यज्ञ में भाग लेती हों जिसकी धर्म पत्नी एक धर्म परायणा स्त्री हो। जिसके तीनों पुत्र व पुत्र वधुवें आज्ञाकारी हों, सेवा भावी हों। जो दान-पुण्य आदि में उनका अनुकरण करने वाले हों। जिन्होंने माता-पिता की प्रतिष्ठा को बढ़ाया हो, जो ऐसा सौम्य परिवार है जहां सारा परिवार आर्य समाजी विचारधारा से ओत-प्रोत हो। ऐसे पुत्रों के सम्बन्ध में व ऐसे देवता स्वरूप व्यक्ति के सम्बन्ध में जितना लिखा जाए उतना ही कम है।

कई परिवारों में देखा गया है कि माता-पिता तो आर्य विचारधारा के व धार्मिक होते हैं परन्तु सन्तान आर्य विचारधारा की नहीं होती। परन्तु यह परिवार ऐसा है कि इस परिवार के बच्चे भी वैदिक विचारधारा से ओत-प्रोत हैं माता-पिता के केवल आज्ञाकारी ही नहीं आदर करने वाले व सेवा करने वाले हैं। दोनों समय चरण बन्दना करने वाले हैं। सैंकड़ों परिवारों में ऐसा एक आध परिवार ही मिलता है जहां वैदिक मर्यादा के अनुसार कार्य होता हो। पण्डित हरवंस लाल जी सौभाग्यशाली हैं कि उनके तीनों लड़के श्री सुदर्शन जी, श्री सुरेश जी, श्री नरेश जी बहुत ही सुयोग्य हैं। उन्होंने अपनी मेहनत और परिश्रम से कारोबार को भी चार चान्द लगा दिए हैं और सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों में भी बढ़ चढ़ कर भाग ले रहे हैं। वह अपने पिता के पद्चिन्हों पर चल रहे हैं और परिवार की मर्यादा को निभा रहे हैं।

श्री पं० हरवंस लाल जी शर्मा में वह सभी प्रकार की खूबियां हैं जो एक आर्य समाजी व्यक्ति में होनी चाहिएं। वह उच्च व्यक्तित्व के धनी हैं। उच्च चरित्र के मालिक हैं। परमात्मा की उन पर बड़ी कृपा है। उन्हें सभी प्रकार का सुख प्राप्त है। सभी प्रकार के सांसारिक सुख उनके पास हैं। सभी प्रकार के आने जाने का साधन हैं। उन्होंने कभी भी किसी आर्य समाज से व सभा से कोई किराया या अन्य व्यय नहीं लिया वह जहां भी सभा के कार्य हेतु व आर्य समाज के कार्य हेतु जाते हैं अपनी गाड़ी में जाते हैं। सभा की गाड़ी भी उन्होंने कभी सभा के कार्य के लिए प्रयोग में नहीं लाई। सभा ने एक बार उन्हें गाड़ी भेंट करने की पेशकश की थी परन्तु उन्होंने इसके लिए साफ इन्कार कर दिया था। उन्होंने कहा था कि मेरे पास अपनी कई गाड़ियां हैं मैं सभा की गाड़ी क्यों लूं यह उनकी एक महानता है। जैसा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को मिला है शायद ही किसी और प्रान्तीय सभा को मिला हो। इन्होंने सभा को व संस्थाओं को अपने पास से कुछ दिया ही है किसी से कुछ लिया नहीं। परमात्मा उनको दीर्घायु प्रदान करे और उनकी देखरेख में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और उन्नति करती रहे।

-धर्मदेव आर्य

वेदों की महानता

☐आचार्य भगवान देव जी "चैतन्य" 81/एस-4 सुन्दर नगर 174402

(गतांक से आगे)

सामवेदोऽथर्वांगिरस: ॥ (14-5-4-20) अर्थात जो आकाश आदि से भी बड़ा सर्वव्यापक परमात्मा है उससे ही ऋग्, यजु0, साम और अथर्व श्वास के समान नि:सृत हुए हैं। उपनिषदों में भी बहुत से स्थानों पर वेद की महिमा का गान किया गया है-यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्व, यो वै वेदाश्च प्रहिणोति तस्मै, तं ह दे ।मात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शारणमहं प्रपद्यै (श्वेता06-18) यहां पर उस परमात्मा को सृष्टि के आदि में वेदों को प्रकट करने वाला कहा गया है। इसके अतिरिक्त अन्य उपनिषदों में भी किसी रूप में वेदों की महता को दर्शाता गया है।

स्वामी शंकराचार्य जी अपने वेदान्तभाष्य में (11-3) में लिखते हैं-'वेद नित्य हैं, सर्वज्ञकल्प हैं और समस्त विद्याओं के भण्डार हैं तथा प्रदीप के समान सारे अर्थों के प्रकाशक हैं। सर्वज्ञ गुणों से युक्त हैं।' प्रसिद्ध विद्वान कुल्लूक भट्ट का कथन है-'प्रलय काल में भी वेद परमात्मा के ज्ञान में सूक्ष्म रूप में स्थित रहते हैं।' इस प्रकार समस्त ग्रन्थों और भारतीय विद्वानों ने वेद की महानता को स्वीकार किया है तथा उन्हें परमात्मा का ज्ञान और सार्वभौमिक माना है। अब हम कुछ पाश्चात्य विद्वानों के विचार वेदों के सम्बन्ध में देना चाहते हैं-

1. एडवर्ड कारपेंटर के विचार हैं कि......इतिहास का अवलोकन हमें इस परिणाम पर पहुंचाता है कि प्राचीन काल से लेकर शोपनहार और हिव्टमैन तक वेद में जो बीज रूप विचार दिए हैं वे ही विचार प्रत्येक धर्म दर्शन शास्त्र के प्रेरक सिद्ध हुए हैं और वर्तमान विज्ञान इन अनादि सिद्धान्तों के लिए दृष्टान्तों और शब्द-रचना का एक नवीन वस्त्र तैयार कर रहा है।

2. मोरिस मेटलिंग का कथन है-'हम तो समझ बैठे हैं कि वेदों के ऋषि अज्ञानी थे, किन्तु वेदों में हमे ऐसी अपूर्व विचार दीप्तियां दृष्टिगोचर होती हैं जो हमारी बुद्धि को चकित कर देती हैं। वे इतने साहस और विश्वास से बोलते हैं जो हमारे में आज भी नहीं हैं और यदि कोई ऐसे विषयों के सम्बन्ध में जिन पर वर्तमान विज्ञान, भटक-भटक कर अब वेद के मार्ग पर आया है, उनके विचार हमारे विचारों की अपेक्षा अधिक ठीक सिद्ध हुए हैं तो क्या यह उचित होगा कि उन सिद्धान्तों के सम्बन्ध में भी, जिनके विषय में वे निश्चयात्मक उपदेश करते हैं और जो हमारी समझ में भी नहीं आए, हम उनकी वाणी को अधिक प्रमाणित मानें, क्योंकि उन ऋषियों की अपार बुद्धि और अपरिमित ज्ञान का अन्दाजा लगाना भी हमारे लिए कठिन है। 'एक अन्य स्थान पर ये लिखते हैं-'भारतवर्ष में धार्मिक विचारों का क्रम निरन्तर नीचे की ओर हुआ है, न कि आगे को अर्थात अध:पतन हुआ है न कि विकास। इसलिए हम न्यायत: यह फल निकालते हैं कि सेवा के उच्च ओर पवित्र विचार आदिकाल ईश्वनीय ज्ञान के फूल हैं।.....वेदों में जो अतुलनीय ज्ञान भरा पड़ा है उसे केवल क्रान्तदर्शी लोगों की दृष्टि ही प्रकट कर सकती है।'

3.प्रो. एमर्सन के अनुसार-वेद ही हमारे जीवन को उच्च कर सकते है। यूरोप के तमाम दर्शन और विज्ञान इसके सामने तुच्छ हैं। इसीलिए वेदों की तरफ जाओ।

4. डायसन कहते हैं-वेद की कही सच्चाई को ग्रहण करने की जरूरत है.....जब मैं वेद पढ़ता हूं, तब मुझे ऐसा मालूम होता है कि पवित्र आत्मिक वायु फेफड़े में से गुजर रही है।

5. टालसटाय के अनुसार-वैदिक धर्म अत्यन्त प्राचीन और सम्पूर्ण धर्म है और संसार के धर्मों की श्रेणी में प्रथम भाग और स्थान उसी का है। मैं चाहता हूं कि उसके मनोहर और मनोरंजन उपदेशों और विचारों का संक्षेप तैयार करूं ताकि उसे सुगमता से पढ़ और समझ सकें।

6. ब्रान कहते हैं-वैदिक ईश्वर-वेद केवल एक ईश्वर को मानता है। वह पूर्ण रूप से वैज्ञानिक धर्म का प्रतिपादक है जिसमें धर्म और पदार्थ विज्ञान हाथ से हाथ मिलाते हैं। उसका धर्म पदार्थ-विज्ञान और दर्शनशास्त्र पर अवलम्बित है।

7. जैकॉलियट महोदय कहते हैं-कितनी आश्चर्य की बात है कि केवल वेद के ही विचार आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्ण रूप से मिलते हैं।

8. सर विलियम जोन्स के अनुसार-शल्य-चिकित्सा, औषधि शास्त्र, संगीत विद्या, नृत्य कला, धनुर्विद्या तथा गृह निर्माण विद्या की व्यवहारिक कलाएं जिनमें यान्त्रिक कला की पद्धति भी सम्मिलित है, वेदों से ली गई हैं।

9. डा. रेले का कथन हैं-हमारा आजकल की नाड़ी सिस्टम की रचना का ज्ञान ऋग्वेद के जगत् के शाब्दिक वर्णन से इतनी अच्छी तरह मिलता है कि मन में कई बार यह प्रश्न उठने लगता है कि क्या वेद वास्तव में धर्म ग्रन्थ हैं या वे शरीर विज्ञान और नाड़ी सिस्टम की रचना विषयक ग्रन्थ हैं।

10. पावगी के अनुसार-वेद समस्त ज्ञान का स्रोत है। वेदों में बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनका अभी तक किसी को ज्ञान नहीं। क्योंकि वे साहित्यक धन की खान हैं जिसका अभी थोड़ा भाग ही खुला है।

11. महान दार्शनिक वोलटेयर जी कहते हैं-इस सर्वाधिक मूल्यवान भेंट (यजुर्वेद) के लिए पश्चिम सदा के लिए पूर्व की ऋणी है।

12. मोनस लिओन डेलबोस लिखते हैं-यूनान अथवा रोम का कोई भी स्मारक ऋग्वेद से अधिक मूल्यवान नहीं है।

13. ओरिओ के अनुसार-मैंने वेदों के जो उदाहरण पढ़े वे मुझ पर एक उच्च और पवित्र ज्योति पुंज के प्रकाश की तरह पड़ते हैं जो एक उत्कृष्ट मार्ग का वर्णन करता है। वेदों के उपदेश सरल देश और जाति विशेष के इतिहास से रहित और सार्वभौम हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय और पाश्चात्य मनीषियों ने मुक्त कण्ठ से वेदों की प्रशंसा की है मगर क्या कारण है कि फिर भी वेदों के प्रति लोगों की न तो व्यवहारिक रूप में श्रद्धा ही देखने को मिलती है और न ही उसकी सार्वभौमिकता और ईश्वरीय ज्ञान होने पर लोगों की सही रूप में आस्था स्थापित हो सकी है। इसका उत्तर यही है कि जिस प्रकार परमात्मा के सही स्वरूप को लोगों के समक्ष न रख सकने के कारण आज लोग नास्तिक बनते चले जा रहे हैं ठीक इसी प्रकार वेदों के प्रति भी लोगों की शंकाएं निर्मूल नहीं हो सकी हैं। जिस प्रकार तथाकथित आस्तिकों की आधारहीन बातों को लेकर नास्तिकवाद फैल रहा है ठीक इसी प्रकार तथाकथित वेद भक्तों ने अपने अविश्वसनीय तथा मनमाने वेद भाष्यों के कारण लोगों को वेदों से दूर कर दिया। इसी भूल के कारण कालान्तर में ऐसा भी समय आया जब वेदों पर अनेक प्रकार के आक्षेप लगने लगे। ऐसा होना स्वाभाविक भी था क्योंकि भाष्यकारों ने जिस प्रकार के पूर्वाग्रहों के कारण वेदों पर अपनी कुत्सित भावनाओं को थोंपा तो उनके वास्तविक अर्थ ही लुप्त प्राय: हो गए। भारतीय भाष्यकारों ने यज्ञ और कर्मकाण्डों के आधार पर और पाश्चात्य भाष्यकारों ने कुछ तो भारतीय भाष्यकारों के आधार पर और कुछ आर्य संस्कृति को हीन दिखाने तथा विकासवादी विचारधारा का पिष्टपोषण करने के लिए ही वेदों पर अपनी कलम चलाई। इसी आधार पर मैक्समूलर जैसा व्यक्ति कहने लगा-'वेद मे पर्याप्त मात्रा में बालपन और मूर्खतापूर्ण भाव है, यद्यपि उसमें ऐसे तत्व बहुत कम हैं जो बुरे और आपत्तिजनक हों...कई मन्त्र तो सर्वथा अर्थरहित और नि:सार हैं।' मैक्समूलर जैसे व्यक्ति ने वेदों में निहित महान् दार्शनिकता को नहीं देखा था इसलिए वेद के प्रति इस प्रकार की भावना उसमें बनीं। प्रसिद्ध पं. ब्रह्मदत्त जी ने एक स्थान पर लिखा है-"यदि सायण भाष्य का ही हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू व अन्यत्र जिस किसी भाषा में अनुवाद करके किन्हीं शिक्षणालयों में रख दिया जाए तो निश्चय ही समझना चाहिए कि कुछ श्रद्धालुओं को छोड़कर सब की एक ही ध्वनि उठेगी कि ये वेद जंगलियों की यूं ही बड़बड़ाहट या अण्ट-सण्ट कृतियां हैं।"

वेद के प्रति इस प्रकार की गलत धारणाओं को निर्मूल करने का श्रेय निश्चित रूप से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को जाता है। उन्होंने ऋषि-मुनियों की परम्परा को ध्यान में रखते हुए निरूक्त के आधार पर वेद-भाष्य का मार्ग प्रशस्त किया। निरुक्त (अ. 7, खण्ड 1,2) के अनुसार ऋचाओं को तीन भागों में बांटा जा सकता है। परोक्ष देवता की स्तुति करना, प्रत्यक्ष देवता की स्तुति करना और अध्यात्म देवता की स्तुति करना। इसलिए उनके अर्थ-परोक्षपरक, प्रत्यक्षपरक, और आध्यात्मपरक हो सकते हैं।

(क्रमश:)

भ्रष्टाचार देश के......
(पृष्ठ 1 का शेष)

सिफारिश

एक दिन मुख्यमंत्री का एक क्लर्क आया और निर्देश देने लगा कि इसके अनुसार काम करके आठ लड़कियों को नौकरी दी जाए। मैंने इस सभी को डिस्क्वालीफाई कर दिया। एक दिन मेरे साथी का एक निकटवर्ती व्यक्ति आया। मैं उस समय लुधियाना जा रहा था। उसने कुछ उम्मीदवारों के नाम दिये और कहा कि उन्हें नौकरी देनी हैं। मैंने उससे झगडा नहीं किया परन्तु उनके उम्मीदवारों को डिस्क्वालीफाई कर दिया।

उधार वापस किया है

लुधियाना पहुंचा तो परीक्षाएं शुरू होने से पहले मेरे साथी की बूढ़ी माता लाठी के सहारे चलती हुई आई और कहने लगी कि बेटा, तुम से बात करनी है। मैंने कहा कि कहो। उन्होंने कहा कि एक ओर चलो, कुछ प्राइवेट बात करनी है। मैंने कहा कि यहीं कर लो। उसने 15 हजार के नोट सामने रख कर एक चिट दी, जिस पर कुछ नाम लिखे हुये थे। मुझे कहा गया कि उन्हें हर हालत में नौकरी देनी है। मैंने कहा कि यह रकम क्यों दे रही हो? बोली कि चण्डीगढ़ में आपसे उधार लिये थे। वह वापस कर रही हूं। मैंने कहा कि मैंने आपको रकम उधार नहीं दी। वह कहने लगी कि आप भूल गये होंगे। मुझे क्रोध आ गया और उसे बाहर उस जगह ले गया, जहां कई उम्मीदवार खड़े थे। मैंने उन्हें बताया कि यह मेरे साथी की माता है। इसने यह रिश्वत दी है और एक चिट भी दी है, जिस पर कुछ उम्मीदवारों के नाम दर्ज हैं। मैंने उन्हें डिस्क्वालीफाई कर दिया है। नोट उस वृद्ध महिला के मुंह पर मारे और उसी दिन चण्डीगढ़ जा कर मुख्यमंत्री से शिकायत की और कहा कि मैं यहां काम नहीं कर सकता। आप इन दोनों सदस्यों को किसी और महकमें में लगा दें। वहां रिश्वत लें तो मैं कुछ नहीं कहूंगा, परन्तु यहां यह हरकत करने नहीं दूंगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह पंजाब है, दिल्ली नहीं। यहां ऐसी बातें करने पर कोई हत्या भी कर सकता है। मेरे कुछ मंत्री भी रिश्वत लेते हैं परन्तु मैं कुछ नहीं कर सकता। मैंने कहा कि ये राजनेता हैं। इन के खिलाफ आवाज उठेगी तो अधिक से अधिक यह होगा कि कोई जांच कमीशन गठित कर दिया जायेगा और कोई नतीजा नहीं निकलेगा। मैं इस समय गजेटिड अफसर हूं। मुझे हथकड़ी लग जायेगी। मैं यह सब कुछ सहन नहीं कर सकता। इससे कुछ दिन पहले मुझे मालूम हुआ कि एक सदस्य जिस जगह इंटरव्यू लेने के लिये जाता, वहां कुछ दिन पहले बोर्ड के एक अधिकारी को भेज देता। वह उम्मीदवारों से मुलाकात करके सौदेबाजी कर लेता।

दृढ़ता चाहिये

इस अधिकारी ने जब बहानेबाजी करके छुट्टी ली और जाने लगा तो मैंने एक और अधिकारी को बस के अड्डे पर एक पत्र देकर भेजा और छुट्टी पर जाने वाले की छुट्टी कैंसिल कर दी। बहुत परेशान हुआ, तो मैंने बोर्ड की बैठक बुला ली और एक सदस्य से पूछा कि आप को क्या मेरे खिलाफ कोई शिकायत है? उसने कहा कि नहीं। मैंने कहा कि मेरे पास रिश्वत की शिकायतें आई हैं। अब आप क्या कहेंगे? उसने कहा कि उसने रिश्वत ली है। यह जान कर कि यह राजनीतिक नौकरी है, किसी दिन भी खत्म हो जायेगी तो मैं बेकार हो जाऊंगा। इसलिये अब आप माफ कर दें। मैंने कहा कि नौकरी तो मेरी भी नहीं रहेगी, परन्तु नौकरी के लिये मैं रिश्वत की गन्दगी में संलिप्त होने के लिये तैयार नहीं। मैं माफ नहीं कर सकता। उसने कहा कि क्या इस्तीफा दे दूं? मैंने कहा कि मैं मजबूर नहीं करता। इस्तीफा देना या न देना आपका काम है। उसने इस्तीफा दे दिया। मैंने राज्यपाल से मुलाकात की और सब कुछ बता दिया। यही नहीं, पत्रकार सम्मेलन बुला कर विधायकों और सांसदों तथा अन्य नेताओं के सिफारिशी पत्र पेश कर दिये। उसी शाम राज्यपाल ने बोर्ड को भंग कर दिया। मैंने इसके बाद बोरिया बिस्तार संभाला और दिल्ली लौट आया। मेरे बेटे ने मुम्बई से पत्र लिख कर मुझे बधाई दी कि आपने बहुत अच्छा कार्य किया। मेरी पत्नी ने भी मुझे बधाई दी।

पुलिस अफसर की धमकी

बात मे बात निकलती है। मैं अपने समाचार पत्र में कश्मीर के एक प्रधानमत्री को बेनकाब कर रहा था।

एक दिन एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मेरे मकान पर आया। वह मेरा रिश्तेदार था और उसने कहा कि आप कश्मीर के प्रधानमत्री के खिलाफ लिखना बद कर दे। मैने कहा कि क्यो? उसने कहा कि कश्मीर के डी आई जी ने मुझे आपके पास भेजा है। आप मेरी मदद करें। यह कह कर उसने नोटों की एक गड्डी मेरे हवाले कर दी और कहा कि आपने इन लेखों के लिए बहुत मेहनत की है, बहुत खर्च भी किया होगा। मैंने अपनी पत्नी को बुलाया और कहा कि यह साहिब मुझे रिश्वत दे रहे हैं। क्या ले लूं ? मेरी पत्नी ने कहा कि क्या आप भी रिश्वत लेने लग गए हैं ? यह तो बुरी बात है। मैंने उस अधिकारी को कहा कि मेरी पत्नी भी मुझे रिश्वत लेने की इजाजत नहीं देती, इसलिए आप यह रकम वापिस ले जाएं। मैं कबूल नहीं कर सकता और इसके बाद यहां आने का कष्ट न करें।

(पंजाब केसरी से साभार)

आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ़ की गतिविधियाँ

आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर की पुरानी समाजों में से एक है। इन दिनों आर्य समाज की गतिविधियों में अपूर्व परिवर्तन हुआ है। कुछ माह पूर्व आर्य समाज का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। वर्तमान में भी प्रतिदिन दैनिक यज्ञ व रविवार को साप्ताहिक सत्सग आर्य जन उत्साह से करते हैं।

आर्य समाज में युवा वर्ग की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए नवयुवको को आगे लाने के भरपूर प्रयास किए जा रहे हैं। कुछ नवयुवको का सहयोग समाज को निरन्तर प्राप्त हो रहा है। इसके लिए एक विस्तृत कार्य योजना भी तैयार की गई है।

वेद प्रचार आर्य समाज का एक अभिन्न हिस्सा है। अत: इसके लिए भी आर्य समाज के सदस्य कृत सकल्प हैं। जो आर्य जन अपने घरों में यज्ञ करवाने के इच्छुक हैं, उनके लिए समाज पूर्ण सहयोग देता है। इसी सन्दर्भ में श्री कमल कुमार शास्त्री को आर्य समाज में पुरोहित नियुक्त किया गया है जो कि जालन्धर की आर्य जनता के यज्ञ एवं सभी संस्कारों को करने हेतु उपलब्ध है।

आर्य समाज में 8वीं, 9वीं, 10वीं व महाविद्यालय के स्तर की संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था भी है। एतदर्थ समाज के अधिकारियों से सर्म्पक किया जा सकता है। -सुमीत महाजन, कोषाध्यक्ष

मोगा में राम प्रसाद विस्मिल का जन्म दिन मनाया गया

आर्य समाज मोगा में अमर शहीद पं. राम प्रसाद जी विस्मिल का जन्म दिवस बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। पण्डित रास प्रसाद जी का जन्म 11 जून 1897 को शाहजहां पुर (उ. प्र.) में हुआ। उनका बलिदान (फांसी) 19 दिसम्बर 1927 को गोरख पुर जेल में हुआ। वह कट्टर आर्य समाजी थे। -प्रियतम देव, मोगा

"आर्य समाज जीरा का चुनाव सम्पन्न"

"आर्य समाज मन्दिर जीरा" में साप्ताहिक हवन और सत्संग के उपरान्त आर्य समाज के सभी सदस्यों की एक विशेष मीटिंग हुई जिसमें चुनाव सम्बन्धी विचार विमर्श करने पर, सर्व सम्मति से फैसला किया गया कि सभी पदाधिकारी पूर्ववत बने रहेंगे जो निम्न प्रकार हैं।

1. श्री ओम प्रकाश ग्रोवर - प्रधान, 2. लाला मन्साराम अग्रवाल - उप-प्रधान, 3. श्री सुभाष चन्द्र आर्य - कोषाध्यक्ष, 4. श्री उत्तम कुमार (प्रिंसीपल) - मंत्री, 5. श्री देवेन्द्र कुमार आर्य - पुस्तकालय अध्यक्ष, 6. श्री दिलावर सिंह आर्य - सभा सदस्य।

अन्तरंग सदस्य-1. श्री परीक्षित कुमार ब्रह्मचारी, 2. नरेन्द्र कुमार आर्य, 3. अश्वनी कुमार आर्य, 4. सुनील कुमार आर्य, 5. बलवंत राय बग्गा, 6. कीमती लाल आर्य। -ओम प्रकाश ग्रोवर

जालन्धर में वेद प्रचार

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के प्रधान-श्री ओम प्रकाश जी अग्रवाल के निवास स्थान टाण्डा रोड़ जालन्धर पर 8 से 14 जुलाई 2002 तक एक सप्ताह के लिए वेद प्रचार का आयोजन किया गया है। ताकि आम जतना में आर्य समाज का प्रचार किया जा सके। इस अवसर पर श्री विजय कुमार जी शास्त्री के उपदेश तथा श्री जगत वर्मा भजनोपदेशक के भजन होंगे। -मुलखराज आर्य

खरड़ में वेद प्रचार

आर्य समाज खरड में 6, 7 जुलाई 2002 शनिवार, रविवार को वेद प्रचार होगा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक श्री सुन्दर लाल जी शास्त्री के उपदेश व श्री जगत वर्मा जी के भजन होंगे। धर्म प्रेमी समय पर पहुंच कर धर्म लाभ उठायें। -विश्वमित्र

चण्डीगढ़ में वेद प्रचार

आर्य समाज सैक्टर 22ए, चण्डीगढ़ में दिनांक 24. 6. 2002 (सोमवार) से 30. 6. 2002 (रविवार) तक वेद-कथा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आचार्य सोम वेदालंकार (कुरुक्षेत्र) वेद कथा करेंगे तथा श्री जगत वर्मा (आ. प्र. स. पंजाब के) मधुर संगीत से सब को आनन्दित करेंगे। अत: आप से अनुरोध है कि इस अवसर पर प्रेरक विचार सुन धर्म लाभ प्राप्त करें। 24 से 29 जून तक प्रात: 6.30 से 8.30 बजे तक सांए काल 6 से 8 बजे तक भजन उपदेश होंगें। रविवार 30 जून को प्रात: 7 बजे से 10 बजे तक कार्यक्रम चलेगा।

-रामरत्न महाजन, प्रधान

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

प्रति रविवार की भान्ति 30. 6. 2002 रविवार को आर्य समाज पार्क लेन सिविल लाईन लुधियाना की ओर से पारिवारिक सत्संग साएं 5.30 से 7 बजे तक श्री अजय कुमार जी सेठी के निवास स्थान गांधी लेन गर्वन मैन्ट कालेज रोड़ लुधियाना में होगा। प्रो. वेद व्रत विद्यालंकार का उपदेश होगा।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज सैक्टर 35 एवं 43 चण्डीगढ़ का चुनाव दिनांक 16-6-2002 को निम्न प्रकार हुआ।

1. श्रीमती सुदेश जी गुप्ता	-	प्रधान
2. श्रीमती लक्ष्मी देवी जी	-	उप-प्रधान
3. श्री सुरेश चन्द जी गुप्ता	-	मंत्री
4. श्रीमती पुष्प लता जी	-	उप मंत्राणी
5. श्री मदन मोहन जी छाबड़ा	-	कोषाध्यक्ष

-सुरेश गुप्ता मन्त्री

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज मन्दिर संगरूर के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। कृपया उम्मीदवार अपना पूरा विवरण लिखकर प्रमाण पत्रों की फोटो स्टेट प्रतियां नत्थी करके भेजें अथवा फोन न. 0167-3238676 या 3239387 पर सम्पर्क करें।

-राजेन्द्र आर्य, मन्त्री

धारीवाल में योग साधना शिविर सम्पन्न

आर्य समाज धारीवाल में दिनांक 5-6-2002 से 12-6-2002 तक योग साधना शिविर दयानन्द मठ दीनानगर से पधारे योगाचार्य श्री नरेन्द्र मित्तल जी कोटा (राजस्थान) एवं ब्र. रमेश जी की अध्यक्षता में लगाया गया। प्रतिदिन प्रात: 5.30 से 6.30 बजे तक प्रौढ़, युवा वर्ग एवं बच्चे बड़ी उत्सुकता से भाग लेते रहे और सायं को 5 बजे से 6 बजे तक स्त्री वर्ग हिस्सा लेती रही। इस प्रकार का योग माधना शिविर आर्य समाज धारीवाल में पहली बार लगाया गया। जिसका नगर निवासियों एवं इलाका निवासियों ने भरपूर लाभ उठाया।

12-6-2002 को शिविर के अन्तिम दिन ब्र. रमेश जी ने अपने योग आसनों का विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसको देखकर निवासियों ने काफी सराहा। अन्त में शिक्षार्थियों को यथा-योग्य दक्षिणा दे कर योग साधना शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

-योगेन्द्र पाल शास्त्री

श्री धर्मदेव आय सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | सामवेद | अथर्ववेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का मुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 12 सृष्टि संवत 1960853103, 7 जुलाई, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

सत्यार्थ प्रकाश की रचना का प्रयोजन

❑ ले० श्री भवानी लाल जी भारतीय

ऋषि दयानन्द ने अपने सिद्धान्तों और वेदाधारित मन्तव्यों के स्पष्टीकरण हेतु जो विशद साहित्य लिखा, उसमें सत्यार्थ प्रकाश अन्यतम है। इसके चौदह समुल्लासों में मानव द्वारा आचरणीय सार्वकालिक धर्म की विशुद्ध रूपरेखा प्रस्तुत करने के साथ-साथ संसार के विभिन्न मत-मतान्तरों में पाए जाने वाले अनेक अवैज्ञानिक विश्वासों तथा अन्धधारणाओं की समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण मुरादबाद निवासी राजा जय कृष्णदास के अनुरोध पर तैयार किया गया था। तब तक स्वामी जी का हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार नहीं था। उनकी मातृभाषा गुजराती थी और १८७३ तक वे संस्कृत के माध्यम से ही उत्तर भारत में अपने व्याख्यान आदि दिया करते थे। शीघ्रतावशं जब इस ग्रन्थ का पहला संस्करण १८७५ में छपा तो उसमें ईसाइयत तथा इस्लाम की समीक्षा में लिखे गए दो समुल्लासों का समावेश नहीं हो सका। कालान्तर में इसके दूसरे संस्करण के छपने की तैयारी हुई तो स्वामी दयानन्द ने इसका समग्र रूप से संशोधन, परिवर्धन और सम्पादन किया। यह संशोधित द्वितीय संस्करण भी उनके निधन के एक वर्ष पश्चात् १८८४ में प्रकाशित हो सका।

प्रथम संस्करण की भाषा भी अधिक परिमार्जित नहीं थी किन्तु इससे भी अधिक दोषावह रहा लेखक के मन्तव्य के प्रतिकूल अनेक बातों का प्रमादवश छप जाना। कारण तो यही था कि निरन्तर-निरन्तर प्रवास के कारण स्वामी जी अपने ग्रन्थ के प्रूफ नहीं देख सके और मुद्रण के समय सम्भवतः प्रकाशक राजा जय कृष्णदास ने भी कुछ मनमानी की। जब स्वामी जी के ध्यान में ये बातें लाई गई तो उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि जो सिद्धान्त विरुद्ध बातें छप गई हैं उन्हें अगले संस्करण में सुधारा जाएगा। प्रायः शंका की जाती है कि सत्यार्थ प्रकाश में खण्डन-मण्डन के प्रकरण की क्या आवश्यकता थी जबकि लेखक का प्रयोजन तो सत्य अर्थ का प्रकाश करते हुए वैदिक धर्म की रूपरेखा प्रस्तुत करना ही था। क्या लेखक के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं था कि वह मानव धर्म के वास्तविक रूप को व्याख्यात करके ही अपनी लेखनी को विराम देता। क्या इस देश के तथा मध्य ऐशिया में जन्में सैमेटिक मजहबों की आलोचना से विरत रहना उचित नहीं था? स्वामी जी को भी इस प्रकार की शंकाओं के उठने की पूर्ण आशंका थी। फलतः उन्होंने अपने ग्रन्थ की रचना का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए भूमिका में लिखा– 'मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान मे असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना सत्य कहाता है'।

मत-मतान्तरों की आलोचना में स्वामी जी पूर्णतया पूर्वाग्रहमुक्त दृष्टिकोण लेकर प्रवृत्त हुए थे। वे यह अनुभव करते थे कि वेदाधारित धर्म के दिव्य आलोक से जो मतमतान्तर जितने दूर चले गए हैं वे असत्य और पक्षपात के उतने ही निकट होते गए हैं। उन्होंने अनुभव किया कि भारत में प्रचलित शैव, वैष्णव, शाक्त आदि सम्प्रदाय किसी न किसी रूप में वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हुए भी वेदों में प्रतिपादित सार्वजनीन माननीय शिक्षाओं से दूर हट गए हैं। पैगम्बरवाद तथा किसी स्थान विशेष में निवास करने वाले ईश्वर की कल्पना को प्रश्रय देने वाले साक्षी मजहब स्वर्ग एवं नरक के मिथ्या विश्वासों में लोगों को उलझा रहें हैं। इसलिए उन्होंने अपनी समीक्षाओं में जहां मध्य एशिया में जन्मे पैगम्बरवादी मजहबों की आलोचना की, उससे पहले भारतवर्षीय सम्प्रदायों की तर्क एवं युक्तिहीन बातों का भी खण्डन किया। वेद विरुद्ध मतों के खण्डन की प्रवृत्ति अकेले दयानन्द में ही उजागर हुई हो, ऐसी बात नहीं है। शंकराचार्य से लेकर राजा राममोहन राय तक के धर्माचार्यों ने वेद विरुद्ध मतों के खण्डन मे ऐसी ही रुचि दिखाई है।

मतमतान्तरों की समीक्षा मे प्रयुक्त अपनी पूर्वाग्रहति दृष्टि को स्पष्ट करते हुए स्वामी दयानन्द ने लिखा–'यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ हूं और बसता हूं तथापि जैसे इस देश के मत मतान्तरों की झूठो बातों का पक्षपात न कर यथातथ प्रकाश करता हूं वैसे ही दूसरे देशस्थ व मत वालों के साथ भी बर्तता हूं। क्योंकि मैं भी जो किसी का एक पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बंद करने में तत्पर होते हैं वैसे ही मैं होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं।' स्वामी जी ने इस ग्रन्थ की भूमिका में यह भी स्पष्ट किया है कि किसी ग्रन्थ का अध्ययन करते समय वाक्यार्थ बोध के लिए आकांक्षा, योग्यता, आसक्ति और तात्पर्य का जानना आवश्यक है। लेखक जिस अभिप्राय को स्पष्ट करना चाहता है वही उसके वाक्यों से स्पष्ट होता है, यह आकांक्षा कहलाती है। जिस शब्द में जिस अर्थ का प्रकट करने की शक्ति होती है, वह योग्यता है। जिस पद का जिस अन्य पद से सम्बन्ध होता है उसे उसके समीप रखना आसक्ति कहलाता है। वक्ता या लेखक के अभिप्राय को ही उसके लेख या कथन से निकालना तात्पर्य कहलाता है।

सत्यार्थ प्रकाश के उत्तरार्द्ध को लिखने मे स्वामी जी को पर्याप्त श्रम करना पडा था। उपदेशक रूप मे सार्वजनिक जीवन में जाने से पहले उन्होने व्यापक देश-भ्रमण कर मतमतान्तरो के पूजा स्थलों सम्प्रदायचार्यो तथा उनकी रीति नीति का सूक्ष्म अध्ययन किया था सत्यार्थ प्रकाश का लेखन करते समय उन्होंने अनुभव किया था कि मतमतान्तरों की समीक्षा का कार्य कण्टकाकीर्ण है, साथ ही वे

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ऐसे हुआ कश्मीर का इस्लामीकरण

□वचनेश त्रिपाठी "साहित्येन्दु"

कपोल-कल्पित मान्यताओं ने धर्म को इतना संकुचित बना दिया कि ऊंच-नीच, छूत-छात, जात-पात के कारण अनेक राष्ट्रभ्राता बिछड़ गए, अलग हो गए, कहां तो गैरों को अपना बनाने की बात थी, कहां घर के दरवाजे अपनों के लिए ही बंद कर दिए गए। कश्मीर की इस मार्मिक इतिहास कथा में एक ही भयंकर मूर्खतापूर्ण गलती का मार्मिक चित्रण है।

जम्मू को छोड़ दें, तो शेष कश्मीर घाटी आज पाकिस्तानी दरिंदों के जबड़ों में फंसकर छटपटा रही है। श्रीनगर कभी भारत की प्राचीन उपासना-पद्धति 'श्रीविद्या' का प्रबल शक्तिपीठ था, जिसके कारण ही अभी तक इस शहर का नाम 'श्रीनगर' ही प्रचलित है। इस शत-प्रतिशत हिन्दू क्षेत्र कश्यपपुरी को 'कंशीर' (कश्मीर) का मुस्लिम बहुल रूप लेने के पीछे जो अनेक कारण हैं-उनको जानने के लिए हमें इतिहास के वे पृष्ठ पलटने होंगे जब वहां 'लहर जागीर' का हिन्दू राजा था-रामचन्द्र। आज तो यह अनेक लाल बुझक्कड़ों के लिए अकल्पित ही है कि कश्मीर में रामचन्द्र वाले नाम के भी कई शासक रहे होंगे। परन्तु यह ऐतिहासिक सत्य है। यह राजा रामचन्द्र कश्मीर के 'लहर' क्षेत्र में सन् १३२० में, अर्थात् आज से कोई ६७४ वर्ष पहले राज्य करता था। उसकी रानी थी-देवीकोटा। परन्तु इस प्रसंग में कैसी अघटित घटना छिपी है कि इन्हीं रामचन्द्र और देवीकोटा की संतान का नाम पड़ा-'हैदर'। कैसी विडम्बना!

रिंचन की चाल

यह कैसे हुआ-वह इतिहास कश्मोर के ही एक संस्कृत कवि जोनराज ने अपनी कृति 'राजतरंगिणी' (द्वितीय) में प्रस्तुत किया है। यह 'राजतरंगिणी' कश्मीरी कवि कल्हाण की 'राजतरंगिणी' नहीं समझ लेनी चाहिए-वरन उससे सर्वथा भिन्न ग्रंथ है। जोनराज भी कश्मीरी ही थे और वे 'लहरकोट' (कश्मीर) के राजा रामचन्द्र के समकालीन थे। इसलिए उन्होंने अपने ग्रंथ में लहर के उक्त हिन्दू शासक के विषय में जो कुछ साक्ष्य संजोए हैं, वे उनकी आंखों देखे हैं। कश्मीर के जोजीला परगना के निचले हिस्से में लहरकोट क्षेत्र आता था, रामचन्द्र उसी का ठिकानेदार था और उन दिनों कश्मीर का राजा सूहदेव था। इसका राज्यकाल सन १३०१ से १३२० तक माना जाता है।

इस राजा का लहरकोट के ठिकानेदार रामचन्द्र से कलह चल रहा था-उससे द्वेष बरतता था सूहदेव और किसी भी तरह उसकी स्वतंत्र सत्ता उसे सहन नहीं हो रही थी। उन्हीं दिनों एक भोट सरदार, जिसका नाम रिंचन था, ने राजा सूहदेव और लहरकोट के शासन रामचन्द्र की अनबन का पता लगा लिया और अपनी दुरभिसंधि क्रियान्वित करने लगा। उसने यह चाल चली कि अपने अनेक सैनिक जो भोट ही थे-व्यापार करने के बहाने कश्मीर में घुसा दिये। उन्होंने कश्मीर में आकर अपने को 'व्यापारी' प्रचारित करने में सफलता प्राप्त कर लीं। सर्वप्रथम उन तथाकथित भोट व्यापारियों का प्रवेश रामचन्द्र के इलाके लहरकोट (जोजीला परगना) में हुआ। उन्होंने वहां अपने जासूसी अड्डे कायम कर लिए और धीरे-धीरे हथियारों का भी जखीरा लहरकोट में जमा कर लिया। साथ ही वे व्यापारी बनकर वहां के बाजारों में कपड़ा भी बेचते रहे ताकि उनके सैनिक तथा जासूस होने पर पर्दा पड़ा रहे।

रिंचन का उद्देश्य सिर्फ लहरकोट को हथियाने तक ही सीमित नहीं था, वस्तुतः उसकी कुटिल दृष्टि कश्मीर पर थी, परन्तु लहरकोट उस साजिश में बाधक था, क्योंकि वह बीच में पहरे की चौकी की तरह स्थित था, अड़ा था।

अतः जब रिंचन ने लहरकोट में बैठे अपने जासूसों से वहां के सब भेद प्राप्त कर लिए और प्रचुर शस्त्र-भण्डार जमा कर लिया-तब एक रोज अनुकूल मौका पाकर उसने अपनी फौज लहरकोट पर चढ़ा दी। रामचन्द्र चुप न बैठे-वह भी सेना लेकर मैदान में आ गया और रिंचन का सामना किया। भयंकर युद्ध हुआ, लेकिन जो भी सैनिक छद्मवेश में व्यापारी बनकर लहरकोट की आस्तीनों में फनफना रहे थे, ऐन युद्ध के मौके पर उन्होंने भीतरघात द्वारा लहरकोट की सुरक्षा में पलीता लगा दिया जिससे लहरकोट पतन के कगार पर जा पहुंचा और रामचन्द्र की सेना को अपार क्षति उठानी पड़ी। स्वयं रामचन्द्र युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

लहरकोट पर यह पहला हमला हुआ। कश्मीर नरेश सूहदेव मूकदर्शक बने रहे और मन ही मन गद्गद् गए कि लहरकोट को छीन ले रिंचन, तो रामचन्द्र को सबक मिल जाए। सूहदेव चाहता तो रिंचन का रास्ता रोक सकता था, परन्तु उसने जान-बूझकर उसे आगे लहरकोट तक बढ़ने दिया-सोचा, इसमें मेरा क्या नुकसान?

राष्ट्र-रक्षा और ऐसे युद्ध के मौके पर यह 'मेरे-तेरे' स्वार्थ और परस्पर की फूट विनाश के बीज बोती है, वही हुआ। लहरकोट पहली बार किसी पराये के हाथों में जाकर परवश और पराधीन हुआ। सूहदेव ने भयंकर भूल की। यह न सोचा कि बाहरी हमलावर जब कश्मीर में घुस रहा था तो खुद उसका क्या होगा, पूरा कश्मीर कैसे बचेगा? यों तो पहले से ही धीरे-धीरे रिंचन के काफी सैनिक 'वस्त्र-व्यापारी' बनकर कश्मीर घाटी में डेरा जमा चुके थे और अब वह सैन्य आगे बढ़ रहा था। आखिर उसका निशाना सूहदेव भी बन गया। सूहदेव प्राण बचाने के लिए जंगल में भाग गया और एक पहाड़ी कंदरा में छिप गया। फिर भी रिंचन उसका पीछा कर रहा था। आखिर उसने गुफा से सूहदेव को खींचकर मार डाला। अब रिंचन पूरे कश्मीर का सुलतान था। रामचन्द्र की विधवा रानी देवी कोटा को रिंचन ने जबरदस्ती अपने महल में डाल लिया-वह विवश थी, कुछ न कर सको।

शाहमेर की कूटनीति!

खैर, यह तो कथा हुई भोट सरकार रिंचन के कश्मीर-प्रवेश और वहां अपना कब्जा जमाने की। इसी समय (सन् १३१३) एक मुसलमान नौकरी की तलाश में कश्मीर घाटी में आया। उसका नाम शाहमेर था। नए शासक रिंचन ने उसकी मिन्नत-आरजू से पिघलकर उसे दरबार में रख लिया। आया था शाहमेर रोजी-रोटी की खोज में लेकिन दरबार में नौकरी मिल जाने के बाद धीरे-धीरे उसने अपनी कूटनीति और छल-छद्म से कश्मीर में अपने समर्थक और शक्ति बढ़ानी शुरू कर दी। और एक दिन फिर वह आया, जब यही शाहमेर भोट शासक रिंचन पर यहां तक हावी हो गया कि उस पर दबाव डालकर सलाह देने लगा 'तुम अपना पुराना धर्म छोड़ो-उसमें क्या रखा है। नए मजहब इस्लाम से फायदा उठाओ। इसकी रोशनी में आओ और यह हुकूमत-यहां कि रियाया भी इस्लाम के साए में आकर राहत की सांस ले'। उसका मतलब था कि रिंचन मुसलमान हो जाए तो कश्मीर की तमाम रियाया भी इस्लाम कबूल कर लेगी और अब स्थिति यह थी कि कश्मीर का शासक होकर भी वह अपने ही दरबारी मुस्लिम षड्यंत्रकारी और मक्कर शाहमेर के मुकाबले कमजोर पड़ रहा था-परेशान था। शाहमेर के षड्यंत्र से बचने का जब उसे कोई दूसरा उपाय न सूझा तो वह कश्मीर के तत्कालीन प्रसिद्ध शैव आचार्य के पास पहुंचा और उनसे सविनय अनुरोध किया-कहा, 'आचार्यवर! कृपा करके आप मुझे अपने शैव मत की दीक्षा प्रदान करें जिससे मैं और मेरी संतानें हिन्दू धर्म में शामिल समझी जा सकें और मुसलमान होने से बच सकें।'

स्पष्ट था कि वह भोट शासक रिंचन अब स्वयं को 'हिन्दू' कहलाने का अभिलाषी-आकांक्षी था और चाहता था कि कश्मीर में हिन्दू राज्य की ही आगे प्रतिष्ठा कायम रहे। लेकिन हाय रे पाखण्ड! हाय री रूढ़िवादिता की जंजीर! शैव आचार्य देव भी उस निगोड़ी के शिकार बन गए। बोले-'राजन! आप यह क्या कर रहे हैं! आप मुसलमानों से क्यों डर रहे हैं? राजा तो यहां के आप हैं। भोटियां हैं, हिन्दू नहीं हैं, तब कैसे में आपको शैव दीक्षा दे सकता हूं। मैं विवश हूं।' कैसा दुर्भाग्य कि सबको आत्मसात करके पचा जाने वाला उदारविराट हिन्दू धर्म किन्तु उसी का एक संकीर्ण रूढ़िवादी पुरोधा उस क्षण कैसी आत्मघाती भूल कर बैठा। यदि वह रिंचन को हिन्दू धर्म में दीक्षित कर लेता तो आज का यह जल रहा नंदन-वन कश्मीर मुस्लिम बहुल न होता और न एक रोज कश्मीरी पंडित, गुरू तेग बहादुर के पास यह अरदास लेकर दौड जाते 'हमारे युवकों को कश्मीर मे औरंगजेब बलात् मुसलमान बना रहा है। आप हमारे धर्म की रक्षा करिए।' इसी धर्म की रक्षार्थ तो नौवें गुरू तेग बहादुर, भाई मतिदास, भाई दयाला आदि को दिल्ली में अपने प्राणों

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय.....

पंजाब में कुलपति स्वतन्त्र कुमार जी का भव्य स्वागत

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार जी गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति बनने के बाद और गुरुकुल का कार्य भार सम्भालने के बाद जब पंजाब में आए तो स्थान-स्थान पर उनका भव्य स्वागत किया गया। विशेष रूप से गुरदासपुर जिला की सभी आर्य समाजों ने उनका भव्य स्वागत किया। पठानकोट की शिक्षा संस्थाओ तथा उनके अधिकारियो और आर्य समाजों के अधिकारियों ने उनका सम्मान किया। श्री स्वतन्त्र कुमार जी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष यति मण्डल से मिलने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए दयानन्द मठ दीना नगर में भी गए। स्वामी जी का उनसे विशेष स्नेह है। इसके बाद वह अमृतसर में भी गए वहां भी उनका सम्मान किया गया। अमृतसर से जालन्धर आते हुए वह गुरुकुल करतारपुर में भी गए। वहां भी गुरुकुल के आचार्य, अधिष्ठाता तथा अध्यापकों प्राध्यापकों ने उनका स्वागत किया। इसके पश्चात् 2-7-2002 को वह दोपहर दो बजे सभा कार्यालय में पधारे यहां गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति के रूप में पहली बार पहुंचने पर सभा रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा तथा सभा के सभी कर्मचारियों ने उन्हें पुष्प मालाएं भेंट करके उनका भव्य स्वागत किया। इसके पश्चात् जालन्धर में ही, सभा वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य, सभा उप प्रधान श्री आशानन्द जी आर्य, मन्त्री श्रीमती राजेश शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज तथा नवांशहर, लुधियाना तथा जालन्धर से पधारे कई महानुभावों ने उनका स्वागत किया। इस अवसर पर इन सभी अधिकारियों की व सदस्यों की एक बैठक भी हुई जिसमें कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

श्री स्वतन्त्र कुमार जी का गुरुकुल कांगड़ी का कुलपति बन जाना सारे पंजाब की आर्य जनता के लिए एक प्रसन्नता की बात है। पिछले काफी समय से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुकुल की उन्नति के लिए कुछ कार्य करना चाहती है परन्तु वहां की बिगड़ी हुई स्थिति को देखते हुए सभी विवश थे। सभा कुछ भी कर पाने में असमर्थ रही परन्तु अब श्री स्वतन्त्र कुमार जी के कुलपति बनने पर गुरुकुल की स्थिति में सुधार करने में सभा सफल हो जाएगी। भारत में यह केवल मात्र एक ही विश्व विद्यालय है जो सीधा आर्य समाज के अधीन कार्य करता है। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की परम्पराओं को आगे बढ़ाने में यह गुरुकुल बहुत कुछ कर सकता है परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के बाद तथा आचार्य रामदेव जी तथा दूसरे आर्य विद्वानों के बाद वहां की स्थिति में कई परिवर्तन आए। पहले यह केवल एक गुरुकुल था परन्तु अब एक विश्व विद्यालय भी है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अब फिर इस गुरुकुल को उन्नत करने का बीड़ा उठाया है परन्तु यह कार्य सभी आर्य बन्धुओं के सहयोग से ही हो सकेगा। पंजाब सभा इसमें तभी सफल होगी जब सभी सभाओं व आर्य बन्धुओं व बहनों का इस सभा के अधिकारियों को सहयोग मिलेगा।

गुरुकुल कांगडी की स्थिति में सभा ने सुधार करना आरम्भ कर दिया है। गत दिनो में गुरुकुल में कई सुधार कार्य आरम्भ कर दिए गए हैं। 16 जुलाई से गुरुकुल में पढ़ाई का नया सत्र आरम्भ हो रहा है। दाखला आरम्भ हो रहा है। आशा की जा रही है कि इस वर्ष प्रति वर्ष से अधिक दाखला सभी कक्षाओं में होगा कुलपति जी इसके लिए अभी से प्रयत्नशील हैं।

आप सभी को पता है कि पठानकोट के आदर्श भारतीय कालेज के जब से श्री स्वतन्त्र कुमार जी प्रिंसिपल बने तब से लेकर आज तक उन्होने इस कालेज को उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया है। इसी प्रकार सभी को आशा है कि गुरुकुल कांगड़ी को भी वह कुछ ही समय में उन्नति के शिखर पर पहुंचा देंगे।

सभा कार्यालय में श्री स्वतन्त्र कुमार जी सभा महामन्त्री के नाम उनके कुलपति बनने पर कई बधाई पत्र आए हैं उन्होंने उन सभी आर्य बन्धुओं का धन्यवाद किया है जिन्होंने उन्हें यह पत्र लिखे हैं। वह सभी के आभारी हैं। उन्होंने सभी आर्य बन्धुओं को अपनी मंगल कामनाएं दी हैं। सभी को अलग से पत्र न लिख कर वह आर्य मर्यादा के द्वारा अपनी शुभ कामनाए भेज रहे हैं और सभी से सहयोग की कामना कर रहे हैं।

—धर्मदेव आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कुछ महत्वपूर्ण निर्णय

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों की औपचारिक रूप से एक बैठक 2-7-2002 को जालन्धर में हुई जिसमें कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं।

सभा कार्यालय को सुचारु रूप से चलाने के लिए सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य प्रतिदिन दोपहर दो बजे से चार बजे तक निरन्तर सभा कार्यालय में बैठा करेंगे और सभा कार्यालय के कार्य को देखा करेंगे। जिन आर्य बन्धुओं व आर्य समाजों आदि को कार्य करने मे कोई कठिनाई आ रही हो वह उनसे इस अवधि में सभा कार्यालय में मिल कर अपनी समस्याओ को उनके सामने रख सकते हैं हम तुरन्त ही यथा शीघ्र ही उन सभी समस्याओ का समाधान करने का प्रयास करेंगे। श्री आशानन्द जी आर्य सभा उप प्रधान सोमवार व मंगलवार को सारा दिन सभा कार्यालय में बैठेंगे। वह भी आर्य बन्धुओं की समस्याएं सुनेंगे और सभा की उन्नति के लिए जो भी उचित कार्य होगा किया करेंगे। सभा के अन्य अधिकारी भी सभा कार्यालय मे समय-2 पर आएंगे और सभा के सारे कार्य को तीव्रता से चलाएंगे। सब से अधिक जोर वेद प्रचार पर रहेगा। क्योंकि वेद प्रचार के कार्य में कुछ शिथिलता आ गई है।

शीघ्र ही पंजाब की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों की एक गोष्ठी जालन्धर में बुलाई जा रही है जिसमे वेद प्रचार के सम्बन्ध में तथा आर्य समाजों के सामने आने वाली कठिनाईयों के सम्बन्ध में विचार किया जाएगा ताकि पंजाब में वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाया जा सके। शीघ्र ही जिला बार आर्य सम्मेलन किए जाएंगे और फिर एक प्रान्तीय महा सम्मेलन किया जाएगा। सभा की आगामी होने वाली कार्यकारिणी व अन्तरग सभा मे कई और महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाएंगे ताकि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी शिक्षा संस्थाएं व आर्य समाजें उन्नति की ओर अग्रसर हो सकें।

मेरी पंजाब की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह सभी वेद सप्ताह का अपनी आर्य समाजों में आयोजन करें। यह कार्यक्रम यदि पारिवारिक सत्संगों के रूप में आयोजित किया जाए तो अति उत्तम रहेगा। प्रातः सायं दोनों समय यदि अलग-अलग परिवारों में व्यवस्था हो सके तो अच्छी है नहीं तो सायंकाल तो एक परिवार में कार्यक्रम हो ही सकता है। प्रातःकाल का सत्संग आर्य समाज में हो और सायंकाल का कार्यक्रम परिवारों में हो इससे वेद के प्रचार में वृद्धि होगी और कार्यक्रम भी बनाना आसान होगा व्यक्ति भी कथा में अधिक आएंगे। गैर आर्य समाजी परिवारों में भी यज्ञ सत्संग रखे जा सकेंगे। आम जनता में आर्य समाज का सन्देश पहुंचेगा। छोटी से छोटी आर्य समाज भी परिवारों में सत्संग व कथा रख सकती है। जो आर्य समाजें अपने उत्सव रखें वह आर्य समाजों में या खुले सार्वजनिक स्थानों पर किए जाएं। पार्कों व खुले मैदानों में किए जाएं। समर्थ आर्य समाजें इसके लिए मुनादी करवाएं, पोस्टर लगवाएं और बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन करें। घी, सामग्री आदि का सभी खर्च आर्य समाज करे। हम काफी समय से योजनाए बनाते आ रहे हैं परन्तु क्रियात्मक कार्य कुछ भी नहीं हो रहा। अब केवल योजनाएं न बनाएं, केवल सुझाव ही न दें अब उन योजनाओं और सुझावो को क्रियान्वित करें। अब दूसरों को कहें नहीं, स्वयं कुछ करके दिखाएं, हम यह समझते हैं कि सभा ही सब कुछ करे परन्तु सभा तो हम सब लोग ही हैं। इसलिए हम सब को कुछ करने की ठान लेनी चाहिए।

हम एक दूसरे पर दोष न लगाएं, वह यह नहीं कर रहा, ऐसे नही कर रहा, हम स्वयं कुछ करके दिखाएं।

आज फिर आर्य समाज की ओर संसार के लोग देख रहे हैं कि वह कुछ करेगी क्योंकि सारे संसार में अब त्राहि-त्राहि मची हुई है। सभी की नजर केवल आर्य समाज की तरफ है परन्तु आर्य समाज भी विवादों मे उलझता जा रहा है। आपस में कई प्रकार के मतभेद उभर कर सामने आ रहे हैं। हमने सभी विवादों को समाप्त करना है। हमें दूसरों की तरफ नहीं देखना कि वह कुछ कर रहे हैं या नहीं। हमने स्वयं कुछ करना है। मैं कहने से करने मे ज्यादा विश्वास करता हूं। कहने वाले बहुत हैं कि यह होना चाहिए, यह नही हुआ, वह नही हुआ, ऐसे करना चाहिए, वैसे करना चाहिए। ऐसी बाते लोग अक्सर करते हैं परन्तु यह नहीं देखते कि वह क्या कर रहे हैं ? उनका अपना क्या कर्तव्य है ? हमें अपनी ओर देखना चाहिए और सोचना चाहिए कि हम अपने कर्तव्य को कहां तक निभा रहे हैं। आर्य समाज का कार्य करना या सभा का कार्य करना केवल अधिकारियों का काम नहीं है यह हम सबका काम है।

अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सभी अधिकारी कुछ करना चाहते है परन्तु आर्य जनता के सहयोग के बिना हम पूर्ण रूप से आगे नहीं बढ़ सकेंगे। इस लिए सभी आर्य बन्धु अपने-अपने इलाके में कार्य आरम्भ कर दें। सभा को अपनी योजनाएं बताएं, सभा से जितना भी हो सकेगा और जहां तक हो सकेगा सभा आप को अपना सहयोग देगी। सभी अधिकारी इसके लिए तैयार हैं और आपके साथ हैं।

—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

सरल-सुखी जीवन

□ ले० भद्रसेन, बी-2, 92/7 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर-146001

(गतांक से आगे)

भारतीय संविधान की मांग है, कि अपने धर्म के प्रचार कार्य में सूर्य-वायु विवाद के दृष्टन्त के अनुसार सूर्य की तरह प्रेरणा प्रद ढंग से कार्य करें, न कि वायुवत धक्के शाही, जोर-जबरदस्ती दिखायें। तभी किसी धर्म का स्थायी प्रभाव सामने आ सकता है।

केवल आधुनिक संविधान में ही नहीं अपितु, प्राचीन काल के कर्म काण्ड से सम्बन्ध रखने वाले शास्त्रों में भी इस प्रकार की स्वतन्त्रता का स्पष्ट संकेत मिलता है। जैसे की योगदर्शन में ध्यान (एकाग्रता) की चर्चा करते हुए ध्यान के अभ्यास के लिए नासिका के अग्रभाग, भृकुटि, ब्रह्मरन्ध्र, ओम् शब्द आदि में से कियी भी एक को अपनी रुचि के अनुरुप केन्द्र बिन्दु बनाने के लिए खुली स्वतन्त्रता दी गई है। ऐसे ही कल्परूपी (श्रौत-गृहय सूत्र और पूर्वमीमांसा आदि) यज्ञ साहित्य में फल, अग्नि, देवता आदि की दृष्टि से अपनी अपनी इच्छा के अनुसार वैसा-वैसा यज्ञ करने की स्वतन्त्रता है।

इस सारे विवेचन का भाव यही हैं कि धर्म का आचरण पक्ष सभी के लिए अनिवार्य है, क्योंकि धर्म के धृति आदि ऐसे तत्त्व हैं, जिन की सब को सदा जरूरत रहती है और इन के सम्बन्ध में सभी सहमत हैं। धर्म का कर्मकाण्ड रूप स्वेच्छा पर निर्भर है और इसी को भारतीय संविधान में धर्मस्वतन्त्रता, निरपेक्षता के नाम से स्मरण किया गया है।

आइए! अब धर्म के आचरण रूपी उस पक्ष पर क्रमशः विचार करें, जो सभी के लिए समाज रुप से अपेक्षित हैं तथा जिस के सम्बन्ध मे सभी किसी न किसी स्तर पर सहमत हैं। इसी को मनुस्मृति में धृति, क्षमा, दम के रुप में दश अंगों में प्रस्तुत किया है, और सभी के लिए अनिवार्य कहा है।

12. धृति=धैर्य, धीरज

आचारण्यात्मक धर्म का पहला अनिवार्य तत्त्व है-धृति। क्योंकि-'सब दिन होत न एक समान' किसी के भी सारे दिन सदा एक से नहीं रहते। सुखों के साथ कभी न कभी दुख, कष्ट, विपत्ति, विपरीत परिस्थिति आ ही जाती है। यतोहि संसार में जहां फूल हैं, वहां कांटे भी हैं। कहीं हरियाली है तो कहीं बंजर भी है। दुनिया में जहां सुन्दरता के लुभावने दृश्य हैं, तो वहां कुरुपता की कम्प-कम्पी भी है। ऐसे ही जीवन में सुख-दुख, पसन्द-नापसन्द, अच्छा-बुरा, सुन्दर-कुरूप, अनुकूल-प्रतिकूल भी हैं। ऐसी स्थिति में बिना घबराए धीरज के साथ उस उस को सहना चाहिए। विकार के करणों और विपरीत परिस्थिति में भी जो डगमगाते नहीं, वस्तुतः वे ही नर धीर हैं, तभी तो कहा है-कभी सुख हैं कभी दुख हैं, इसी का नाम जीवन है। जो दुःख में न घबराए, उसे इन्सान कहते हैं। दुनिया एक उलझन है, उसे जो धैर्य से सुलझावे उसे इन्सान कहते हैं।

संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है, जिस पर कभी आपत्ति न आई हो। हर एक कभी न कभी बुरे दिनों में घिर जाता है, उस समय सफल या महान व्यक्ति वे ही होते हैं, जो उस स्थिति में प्रत्येक प्रकार के धैर्य का परिचय देते हैं। श्री राम को भी राज-पाट छोड़ कर एक दिन वन जाना पड़ा, वहां फिर सीता का अपहरण हो गया। पाण्डवों को वनवास में जाना पड़ा और शिवा जी को जब औरंगजेब ने धोखे से कैद कर लिया तो धैर्य से ही उन्होंने वहां से निकलने का रास्ता निकाला। इसी लिए खुशी राम शर्मा ने कहा है:- 'विपत कसौटी मानव की' अतः विपदाओं से भिड़ते चलो, श्री धर पाठक ने 'जगत सचाई सार' में इस सब का विश्लेषण इस प्रकार किया है 'जिस को तुम जानो यह दुख है, सहो उससे धीरज के साथ।' दुख में सुख का अनुभव करना, है मनुष्य के अपने हाथ॥ दुख तो मनुष्य के जीवन की एक कसौटी है मानो ? इस में जैसा रहे रंग वैसा ही भाव उस का जानो॥' तथा यह उक्ति पर्याप्त प्रसिद्ध है:-

'धीरज धर्म मित्र अरुनारी, आपत काल परखिये चारी।'

जहां विपरीत परिस्थिति को सब के साथ सहना चाहिये, वहां अपेक्षित होने पर यथा शक्ति संघर्ष भी करना चाहिए। जैसे कि कभी रोगी हो जाने पर रोग से संघर्ष करते हुए जहां उसका भरसक इलाज किया जाए, वहां रोग के कष्ट को धैर्य के साथ सहन करना चाहिए। एक दम हाय-तौबा नहीं मचाना चाहिए, यही कि ऐसा करने से रोग घटने के स्थान पर बढ़ता ही है। हां, धीरज रखने से रोग आदि का कष्ट अत्याधिक बेचैन नहीं करता, क्योंकि रोग में समय के साथ सुधार आता है, चोट धीरे-धीरे ठीक होती है। विपरीत परिस्थिति में धीरज रखने से कई बार बचाव का रास्ता भी हाथ लग जाता है। जैसे कि जब नौका डांवाडोल हो रही हो, तो साहस के साथ हाथ-पैर मारने से हो सकता है, इतने में कोई दूसरी नौका, जहाज आदि आ जाए या कोई व्यक्ति सहायक सिद्ध हो जाए। वैसे अधिकतर नौकाएं घबराहट की स्थिति में ही डूबती हैं।

- 2-धैर्य धारण के महत्व की दृष्टि से दूसरी बात यह भी है, कि हम जिस भी क्षेत्र में जिस भी कार्य को पूर्ण करना चाहते हैं। उस की पूर्णता, सफलता के लिए कुछ समय साधना, श्रम करने की जरूरत होती है, पलक झपकते ही कोई कार्य पूरा नहीं हो जाता, उसके लिए प्रतीक्षा की आवश्यकता होती है। जैसे कि बीज के बोने के बाद फल लगने, पकने और तैयार होने में समय लगता है। तभी फल में मिठास, स्वाद और परिपक्वता आती है, इसी लिए ही कहते हैं:-'सहज पके सो मीठा होय'। तवे पर डालते ही रोटी तैयार नहीं हो जाती, पकने तक प्रतीक्षा करना अनिवार्य होता है और प्रतीक्षा बिना धैर्य के नहीं होती, क्योंकि इन्तजार की घड़ियां लम्बी होती है। धीरज समझ से ही होता है, तभी तो धी बुद्धि, समझ-वाला ही धीर कहलाता है और समझ के अभाव में बच्चे एकदम किसी चीज को लेने के लिए मंचल उठते हैं। पर समझदार धैर्य से धीरे-धीरे सफलता प्राप्त करते है।

3-तीसरी बात यह भी है, कि प्रतिदिन के जीवन को सरलता से व्यतीत करने के लिए भी धैर्य की पग-पग पर जरूरत होती है। उतावली से कोई बात, काम सिरे नहीं चढ़ता, अपितु बेचैनी और घबराहट से बिगड़ ही जाता है। तब अशान्ति, दुख, पछतावा ही हाथ लगता है।

4-धैर्य की चौथी उपयोगिता यह है, कि आज हम प्रजातन्त्र के युग में रह रहे हैं। प्रजातन्त्र की सफलता या किसी कार्य की सिद्धि के लिए सब से पहले व्यवस्था की जरूरत होती है। व्यवस्था जन्य हर प्रजातन्त्र तभी सफल हो सकता है, जब प्रत्येक नागरिक हर क्षेत्र में अपने-अपने क्रम पर अपना अधिकार ले। जैसे कि रेलवे, बस, डीपू, कार्यालय आदि सभी स्थानों पर यदि सब अपनी-अपनी बारी से कार्य में सहयोग देते हैं, तो व्यवस्था ठीक रहती है। इससे सब का कार्य समय पर पूर्ण होता है और सब को सन्तोष, सुख, शान्ति प्राप्त होती है, अन्यथा आपाधापी से असन्तोष और नुकसान ही होता है। यह सारी स्थिति तभी सफल हो सकती है जब प्रत्येक में धैर्य हो। क्योंकि धैर्य के कारण ही हर एक अपनी पारी की प्रतीक्षा कर सकता है। इस प्रकार का धैर्य वे ही कर सकते हैं, जिन को विश्वास हो,कि देर-सबेर से हमारा भी क्रम आएगा। विश्वास-सन्तोष, सच्चाई, ईमानदारी के कारण हीं होता है और जमता, टिकता है। ये सारी बातें ही धर्म के मूलतत्त्व हैं। ऐसी स्थिति अर्थात विश्वास होने पर ही कोई व्यवस्था या कारोबार सफल होता है।

13. क्षमा (क्षमा धर्मो ह्युत्तमः)

क्षमा का अर्थ हैं:-गलती, अपराध करने वाले को दण्ड दिए बिना ही छोड़ देना, माफ कर देना, बदला न लेना। पर इसके लिए उस अपराध के परिणाम, प्रभाव, नुकसान, परिस्थिति और व्यक्ति पर विचार करना जरूरी हो जाता है। क्योंकि सामाजिक व्यवहार में अनेक बार ऐसे अवसर आते हैं, जब कोई व्यक्ति चाहते हुए भी कोई अपराध, गलती कर बैठता है। वह जानबूझ कर ऐसा नहीं करता, अपितु, अपने अधूरे ज्ञान के कारण या पूरी बात का पता न होने से या दूसरों के ऊपर विश्वास कर लेने से या कई बार अपनी अज्ञानता, अदूरदर्शिता, असावधानी, लापरवाही, आलस्य आदि के कारण गड़बड़ कर बैठता है। अन्त में जब परिणाम सामने आता है, तो वह व्यक्ति पश्चाताप करता है, कानों को हाथ लगाता है, आगे ऐसा न करने की बार-बार शपथ खाता है। इस प्रकार सच्चे दिल से पछतावा अनुभव करने वालों को माफ कर देना ही उचित होता है और तभी सामाजिक व्यवहार चल सकता है। इसी दृष्टि से ही स्मृति शास्त्रों में प्रायश्चित की चर्चा और विधान मिलता है। (क्रमशः)

हम निरङ्कोरपन्थी नहीं हैं

□ ले० श्री कृष्णचन्द्र वेद जी, भूषा भट्टियां, पुरानी सब्जी मण्डी, अमृतसर

(गतांक से आगे)

श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक जी ने उचित ही लिखा है कि "सब मानवों का धर्म मानवता है" में 'सब' शब्द निरपेक्ष रूप में मानवमात्र का बोधक है। "सब ब्रह्मचारियों को फल बांट दो", इस प्रकार किसी आचार्य व अधिष्ठाता के वाक्य मे 'सब' शब्द सापेक्ष है। उनसे सम्बद्ध जो गुरुकुल है, उसके सब ब्रह्मचारियों को ही फल बांट दो न कि संसार भर के सभी ब्रह्मचारियों को फल बांट दो, यही तात्पर्य है।

श्री आचार्य का यह लिखना कि उपदेश संख्या 2 में सब मन्त्रों के पूर्व इसके स्थान पर 'निम्नलिखित मन्त्रों के पूर्व' इस प्रकार का वाक्यांश होता, स्वीकार्य नहीं है। महर्षि की लेखन शैली का उदाहरण देकर हम अपनी बात की पुष्टि करते हैं। आर्य समाज के नियमों में छठे नियम की भाषा इस प्रकार है-"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात्......।" इस वाक्य में स्पष्ट नहीं है कि किस समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है। आचार्य जी की मानें तो यह वाक्य 'ऊपरलिखित समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है अर्थात्......ऐसा होना चाहिए था क्योंकि आर्य समाज का नाम इसके नियमों के आरम्भ में शीर्षक में ही लिखा है। महर्षि दयानन्द ने इस नियम को जिस प्रकार लिखा है, वही उनकी शैली है। भले ही इस नियम में आर्य समाज का नाम नहीं, परन्तु पढ़ने वाला स्वतः ही समझ लेता है कि आर्य समाज का ही मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है क्योंकि इन नियमों में प्रसंग चल ही आर्य समाज का रहा है, न कि किसी और समाज का। इसी प्रकार महर्षि के उपदेश संख्या 1 में 'सब मन्त्रों से पूर्व' का तात्पर्य यही लेना चाहिए कि जिन मंत्रों के विषय में पं. कालू राम ने पूछा था।

वे सब विद्वान् जो प्रति मन्त्र ओ३म् प्रयोग करने से सहमत नहीं हैं, निरोङ्कारपंथी नहीं हैं। इनमें से कुछ नाम प्रत्यक्ष व कुछ व्यंग्यात्मक शैली में अप्रत्यक्ष रूप में आचार्य जी ने अपने लेख के आरम्भ में लिखे हैं। ओङ्कार के महत्व व इसकी महिमा से कोई भी सच्चा वैदिक धर्मी इन्कार नहीं कर सकता। आचार्य सत्यानन्द जी की तरह हम सभी पूरे आस्तिक, ईश के निज व सर्वश्रेष्ठ नाम के प्रयोगी तथा महर्षि दयानन्द के अनुगामी-अनुयायी हैं। धर्मार्थ सभा के पुराने व नये सभी निर्णयों के अनुसार उन्हीं मन्त्रों से पूर्व ओंकार का प्रयोग रखा है। जिन मन्त्रों से पूर्व महर्षि ने ओं, ओम् या ओ३म् का प्रयोग किया। इस निर्णय को हम शतशः स्वीकार करते हैं। महर्षि दयानन्द का कोई प्रमाण इसके विपरीत हो तो उस पर विचार करना चाहिए। हम भी तैयार हैं परन्तु काल्पनिक व मन चाहे अर्थ महर्षि के इस पत्र के नहीं ग्रहण करने चाहिएं।

श्री आचार्य सत्यानन्द व कुछ अन्य विद्वान् यह भी कहते-लिखते हैं कि पहले शीशे की धातु के अक्षर होते थे। उन्हें जोड़-जोड़ शब्द बनते थे। यदि एक अक्षर फर्मे में बहुत अधिक बार प्रयुक्त होता था, तो उस अक्षर की शोर्टेज (कमी) हो जाती थी। 'ओं' (=अ+ों) अक्षरों की प्रचुरता न होने के कारण सर्वत्र ओं नहीं छपा।" आइए, इस कथन पर विचार करें।

हम यह तो स्वीकार करते हैं कि पहले मुद्रणालयों में छपाई का कार्य ऐसे ही होता था परन्तु जो अक्षर एक फर्मे में अधिक बार छपता था, उसकी कमी होने के कारण ही प्रति मन्त्र से पूर्व ओं, ओम् या ओङ्कार का प्रकाशन महर्षि के ग्रन्थों में नहीं हो पाया, उनके इस कथन से सहमत हो पाना असम्भव है क्योंकि:-

अ) पुस्तक का प्रकाशन तो बाद में होता है, पहले उसका लेखन कलम से होता है। कलमकार को लिखने के लिए किसी प्रैस में जाने व उस प्रैस में से अक्षर उठा-उठाकर पुस्तक लिखने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी (न ही आज आवश्यकता है। प्रथम पृष्ठ के आरम्भ से लेकर अन्तिम पृष्ठ के अन्तिम छोर तक एक पांडुलिपि में जितना भी स्थान होता है, उसमें एक अक्षर जितनी बार भी लिखा जा सकता है, आप वह अक्षर उतनी ही बार लिख सकते हैं, आपको उस अक्षर की कमी महसूस नहीं होगी अर्थात् अक्षरों की कमी प्रिंटिंग प्रैस में पड़ सकती थी परन्तु कागज़ पर कलम से लिखते समय अक्षरों की कमी होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। हमारा विनम्र निवेदन यह है कि महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों में कोई विद्वान् प्रत्येक मन्त्र से पूर्व ओं, ओम् या ओ३म् लिखा हुआ दिखाकर सिद्ध करे कि महर्षि स्वयं प्रत्येक मन्त्र से पूर्व ओंकार का प्रयोग करते थे। प्रैस में अक्षरों की कमी का तर्क पुस्तक लिखने में लागू नहीं होता।

आ) ओं के प्रकाशन के लिए तो प्रैस में अक्षरों की कमी पड़ गई थी जो एक फर्मे मे दस-पन्द्रह बार ही प्रयोग होना था परन्तु पूर्ण विराम (=।) चिन्ह का प्रयोग तो प्रत्येक फर्मे में सौ-सवा सौ बार होता है। उसकी कमी क्यों नहीं पड़ी ?

इ) प्रैस में ओं के अक्षरों की कमी से बचने का यह एक सरल उपाय ओं के अक्षरों की कमी के कारण प्रति मन्त्र से पूर्व ओ छपा नहीं। "मुद्रणालय में ओं के अक्षरों की कमी के कारण प्रति मन्त्र से पूर्व ओं छपा नहीं। कृप्या पाठक सभी मन्त्रों से पूर्व ओं प्रकाशित हुआ मानकर ही प्रयोग करें।" ऐसा तो किसी महर्षि-ग्रन्थ में संकेत-आदेश उपलब्ध नहीं है। किस आधार पर आचार्य जी की बात स्वीकार की जाए ?

आर्य समाज धूरी द्वारा निरन्तर जल सेवा कार्य

धूरी आर्य समाज की ओर से, प्रधान श्री प्रहलाद कुमार जी के नेतृत्व में लगातार तीन वर्षों से रेलवे स्टेशन धूरी पर, लम्बी दूरी की गाड़ियों के यात्रियों के लिए ठंडे, मीठे, साफ पानी की लगातार, नियंत्रित और सेवा भाव से सप्लाई की जा रही है। दिल्ली से लेकर धूरी तक रास्ते में कहीं भी यात्रियों की संतुष्टि नहीं हो पाती। उनकी प्यास बढ़ती-बढ़ती बेताब हो जाती है और धूरी जंक्शन आते ही एकदम माहौल बदल जाता है। जहां यात्रियों के चेहरे पर ठंडे पानी के साफ और सुन्दर पोलीथीन देखकर संतुष्टि के भाव उजागर होते हैं।

वहीं पर पानी पिलाते, इधर-उधर भागते कोई यात्री बिना पानी ना छूट जाए। इस बात की तसल्ली करते, आर्य वीरों के गुरु-मंडल की आभा देखते ही बनती है। श्री अशोक जी, श्री वरिन्द्र जी, नरेश जी, अरजिन्दरपाल जी, आर.पी. शर्मा जी, नसीब जी, रमेश जिन्दल, प्रिंसीपल कालिया, आर्य वीरों का पूर्णतया सहयोग युवा प्रधान श्री प्रहलाद जी को मिल रहा है। प्रो. धर्मदेव जी का विशेष योगदान याद रखने के काबिल है। —आ.स. धूरी

संगरूर में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज मन्दिर, संगरूर के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के सुपौत्र (सुपुत्र श्री अंकुर जिन्दल) का नामकरण संस्कार के उपलक्ष्य में संगरूर में दिनांक 23 जून 2002 रविवार को प्रातः 10 बजे से प राजेन्द्र आर्य के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। बालक का नाम 'चिं० उदय जिन्दल' घोषित किया गया। नामकरण संस्कार के बाद भव्य सत्सग कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें महाशय महेश कुमार श्री रामशरण आर्य, श्री रत्न लाल मांडला, मा देवराज आदि ने शुभ कामना एव बधाई गीत गाए। आर्य समाज धूरी से प्रधान श्री प्रहलाद कुमार, मन्त्री श्री रामपाल जी एवं श्री वासुदेव आर्य, महाशय सोम प्रकाश आदि एवं अन्य प्रतिष्ठित सज्जनों ने बालक को शुभ आशीर्वाद दिया। इस शुभ अवसर पर प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार जी ने आर्य समाज मन्दिर, संगरूर को 5100/- रुपए दान दिया। अन्त में सुन्दर भोजन की व्यवस्था थी। —राजेन्द्र आर्य, मन्त्री

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज सभा भुच्चो मन्दिर के लिए एक अनुभवी पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति पूर्ण विवरण के साथ आवेदन करें। —डा. भरत भूषण मित्तल

प्रधान आर्य समाज, सभा भूच्चो मण्डी, बठिण्डा फोन 0164-741230

वेदों की महानता

आचार्य भगवान देव जी "चैतन्य" 81/एस-4 सुन्दर नगर 174402

(गतांक से आगे)

महर्षि जी ने निरूक्त के इन तीनों भागों का थोड़ा और सरलीकरण करके इन्हें व्यवहारिक और पारमार्थिक में बांटा है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के प्रतिज्ञा विषय में वे स्पष्ट करते हैं-'इस भाष्य में पद-पद का अर्थ पृथक-पृथक क्रम से लिखा जाएगा कि जिससे नवीन टीकाकारों के लेख से जो वेदों में अनेक दोषों की कल्पना की गई है, उन सब की निवृति होकर उनके सत्य अर्थो का प्रकाश हो जाएगा तथा जो-जो सायण, माधव, महीधर और अंग्रेजी व अन्य भाषा में उलटे भाष्य किए जाते व किए गए हैं तथा जो-जो देशान्तर भाषाओं में टीका है, उन अनर्थ व्याख्यानों का निवारण होकर मनुष्यों को वेदों के सत्य अर्थों को देखने से अत्यन्त सुख लाभ पहुंचेगा।'

महर्षि की यह भावना कार्यरूप भी हुई। उनके भाष्य के बाद सभी लोगों का वेदों के प्रति दृष्टिकोण बदल गया। मैक्समूलर जैसा व्यक्ति भी बाद में यह कहने पर विवश हुआ कि-'हम तो वैदिक साहित्य की सामुद्रिक सतह पर ही फिरते हैं। अभी हमने उस समुद्र में गोता लगा कर रत्न नहीं निकाला। हमने तीन वर्ष के परिश्रम के बाद वेद का जो अनुवाद किया वह आज प्रमाणित नहीं है। शुद्ध और सम्पूर्ण अनुवाद के लिए एक शताब्दि और चाहिए। इस पर भी मुझे यह शंका है कि हम वेद का सत्य अनुवाद कर भी सकें गे?' यही नहीं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अध्ययन के बाद मैक्समूलर कहता है-'मेरा यह निश्चित मत है कि संसार मे मनुष्य मात्र के स्वाध्याय के लिए वेद के अतिरिक्त अन्य कोई आवश्यक ग्रन्थ नहीं है।' तथा मेरा विचार है कि आत्मज्ञान की प्राप्ति की इच्छा रखने वाले तथा अपने पूर्वजों, इतिहास और मस्तिष्क की उन्नति के लिए सचेत प्रत्येक व्यक्ति के लिए वेद का स्वाध्याय नितान्त आवश्यक है। महर्षि दयानन्द जी के भाष्य के बारे में यही मैक्समूलर लिखता है-'स्वामी दयानन्द के लिए वेद में लिखी प्रत्येक बात न केवल पूर्णतया सत्य है अपितु वह इससे भी एक पथ आगे गए तथा वह वेद की व्याख्या से दूसरों को यह निश्चय कराने में सफल हुए हैं कि प्रत्येक जानने योग्य बात वेद में पाई जाती है अत: आधुनिक विज्ञान के आविष्कार भी वेद में वर्णित हैं।'

महर्षि दयानन्द जी के भाष्य के बाद वेदों के प्रति सभी की दृष्टि साफ हो गई तथा अनेक भारतीय और पाश्चात्य लोगों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। पिट्ज ने कहा-'पाश्चात्य विद्वानों को संस्कृत और वेदों का ज्ञान नहीं के बराबर है, हमें उनके कथन पर बिल्कुल विश्वास नहीं। हम केवल दयानन्द के भाष्य को ही प्रमाणित समझते हैं।' महात्मा टी. एल. वासवानी के विचारानुसार-'स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदों के ज्ञान के प्रति भारतीयों का ज्ञान-चक्षु खोलने वाला पहला व्यक्ति था। मुझे आधुनिक भारत में स्वामी के समान कोई भी विद्वान ज्ञात नहीं। फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान लुई रेनू का कथन है-'सनातन हिन्दू धर्म का एक स्पष्ट मान्यता सूत्र वेदों के प्रति एकान्त विश्वास है इसलिए हमें दयानन्द को वेदों के प्रति परम्परागत आदर भाव दिखाते देखकर कोई आश्चर्य नही होता किन्तु सनातन हिन्दू धर्म में वेदों के प्रति इस प्रकार की आस्था दिखाना तो बहुत कुछ वैसा ही है जैसा कोई श्रद्धालु किसी रास्ते पर या चौराहे पर किसी मूर्ति के आगे सिर झुका देता है, भार्ट ज.न में चाहे इस मूर्ति से उसका कोई वास्ता पड़े या नहीं, किन्तु दयानन्द के लिए यह बात नहीं थी। उन्होंने तो वेदों से सचमुच अपने कार्य की प्रेरणा ली थी। दयानन्द ने वेदों के साथ बिना शर्त जुड़ने की बात कही और कहा कि विशुद्ध तथा सामाजिक एवं नैतिक सुधार के मूल सूत्र वेदों में ही उपलब्ध हैं।'

महर्षि जी के वेद भाष्य के बारे में योगी अरविन्द लिखते हैं-'वैदिक व्याख्या के बारे में मेरा यह विश्वास हो चुका है कि वेदों की अन्तिम पूर्ण व्याख्या चाहे कुछ भी हो, दयानन्द प्रथम सत्य मार्ग-दर्शक के रूप में सम्मानित किए जाएंगे। समय ने जिन द्वारों को बन्द कर दिया था, दयानन्द ने उनकी चाबियों को पा लिया और बन्द पड़े हुए स्रोत की मुहरों को तोड़कर परे फैंक दिया।'

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जीवन में-सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने का, सर्वदा मूलमन्त्र रहा है। उन्होंने वेदों के सत्य अर्थ करने का मार्ग प्रशस्त करके समूचे विश्व का कल्याण किया है। वेद वास्तव में ही ईश्वर कृत, निर्भ्रान्त, सार्वभौमिक, ज्ञान-विज्ञानयुक्त और समस्त सत्य विद्याओं का पुस्तक है मगर अपने आलस्य और प्रमाद के कारण आर्य लोग आज भी उस ओर पक्के मन से नहीं मुड़ पा रहे हैं। वे इस मूलमन्त्र को आज भी आत्मसात् नही कर पा रहे हैं कि अन्तत: व्यक्तिगत, सामाजिक और किसी भी राष्ट्र का वास्तविक उत्थान केवल वेदाज्ञा पर चलने से ही हो सकेगा। यह एक सुखद समाचार है कि जापान के विद्यालयों में वेद का विषय अनिवार्य कर दिया गया है तथा इसे कालेज स्तर पर भी लागू करने की बात कही जा रही है। आज नहीं तो कल समूचे विश्व को वेद की शरण में आकर ही चतुर्दिक उन्नति और आत्मिक शान्ति प्राप्त हो सकेगी। उस दिन महर्षि दयानन्द जी के उपकारों को मुक्त कण्ठ से स्वीकारा जाएगा। जिन्होंने अपना समूचा जीवन वेद को समर्पित करके उसे सब सत्य विद्याओं का पुस्तक सिद्ध किया है। आर्य समाज को इस दिशा मे रचनात्मक और सक्रिय भूमिका निभाने की आवश्यकता है।

आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर की गतिविधियां

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से महाराष्ट्र के विद्वान् स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती के सान्निध्य में 12 जून से 18 जून 2002 तक सात दिवसीय कन्या महिला वैदिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। अवासीय इस सात दिवसीय शिविर में स्वामी जी ने वेद-उपनिषद्, गायत्री, महामंत्र, ईश्वर, ईश्वर के अनेक नाम और मुख्य निज नाम ओ३म् की व्याख्या, जीवन निर्माण, ईश्वरीय ज्ञान वेद, वेद एवं शास्त्र, सोलह संस्कारों के महत्व तथा अंध श्रद्धा निर्मूलन, वैदिक यज्ञ, वैदिक धर्म एवं संस्कृति, वेद में नारी, आर्य समाज, वैदिक मर्यादा, व्यक्तित्व विकास, स्वाध्याय क्यों, दिनचर्या कैसी, संस्कार-संस्कृति एवं सभ्यता आदि गूढ़ विषयों को सरल ढंग से व्याख्यायीत किया।

स्वामी संकल्पानन्द जी के साथ ही अन्य सत्रों में दर्शन योग महाविद्यालय, रोझड़ (गुजरात) के आचार्य विवेक भूषण जी ने "अविद्या दुखों का मूल कारण" व्याख्यान दिए। श्री प्रमोद जी झव्वर ने उपभोक्ता संरक्षण पर, डा. अजीत ने परिवार को सुसंगठित रखने पर बल दिया वहीं श्रीमती कुमावत ने टूटते परिवार को रोकने की बात कही। श्री अशोक आर्य ने खाद्य पदार्थों में मिलावट से सावधान किया। राजकुमारी आसवानी ने प्राथमिक स्वास्थ्य की जानकारी दी। समापन समारोह के मुख्य अतिथि पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक श्री विश्वास मेहता ने भारतीय गरिमामय संस्कृति को उजागर किया। आरम्भ में आर्य समाज के प्रधान जितेन्द्र पाल शर्मा एवं मंत्री डॉ० अमृत लाल तापड़िया ने स्वागत किया। इस अवसर पर डा. प्रेमचन्द गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंच संचालन श्रीमती शारदा गुप्ता ने किया। अन्त में वरिष्ठ उप प्रधान डा. रविन्द्र वर्मा ने धन्यवाद किया।

मई माह में परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री धर्मवीर शास्त्री के उपदेश हुए। प्रथम जून को आचार्य विवेक भूषण का उपदेश हुआ। जिसका बहुत प्रभाव रहा।

23 जून को वार्षिक चुनाव हुआ जिसमें सर्व सम्मति मे श्री जमना लाल गौतम-प्रधान, श्री पन्ना लाल वरिष्ठ उप प्रधान, डा रविन्द्र वर्मा उपप्रधान, श्री गिरीश जोशी मन्त्री, श्री अरविन्द त्यागी स. मन्त्री, श्री श्रवण बधवा-उपमन्त्री, श्री जगदीश विग-कोषाध्यक्ष, श्री राम दयाल प्रचार मन्त्री, श्री इन्द्र प्रकाश पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

—मन्त्री

(ऐसी हुआ काश्मीर.............)
(पृष्ठ 2 का शेष)

को उत्सर्ग करना पड़ा था। भाई मतिदास को मुसलमान बनने से इनकार करने पर आरे से चीरा गया था, गुरू तेग बहादुर और भाई दयाला के शिरोच्छेद हुए थे। इन बलिदानों के पीछे कश्मीरी युवकों के धर्म की रक्षा का प्रश्न ही कारण रहा था।

स्वाभाविक था कि रिंचन ने आचार्य देव के इनकार से अपना अपमान समझा। यह बात जब शाहमेर को मालूम हुई तो वह आए दिन रिंचन को कुरेदने लगा। कहने लगा-'कहिए जनाब आला। देख लिया इन पंडितों को! बरहमनों ने आपको इस काबिल न समझा कि अपना हम-मजहब (समाजधर्मी) बना लें हुजूर को! कैसी बेइज्जती की और खुद उसने, जो आपकी रियाया है। अब तौबा करिए इन लोगों से और इनके कुफ्र से। क्यों आप बुत-परस्तों की खुशामद करने गए? छोड़िए उनको। हमारे दीने इस्लाम को देखिये। छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सबको इज्जत देता है। रोशनी देता है। सबको गले लगाता है। सबको बराबरी का दर्जा देता है। हमारे दस्तरख्वान पर हर बशर (आदमी) चाहे अदना हो या आला-एक साथ नोश (खाना) फरमाते हैं। हमारे मजहब में किसी से नफरत नहीं की जाती। बशर्ते वह मुसलमान हो। आइए, हमारे साथ आइए। इस्लाम आपको दावत देता है।'

इस्लाम का प्रादुर्भाव

रिंचन तो पंडितों पर चिढ़ा ही था, कुपित था उन्हें ही सबक सिखाने के लिए शाहमेर की दावत कबूल कर ली। शाहमेर की बाछें खिल गईं कि वह रिंचन को मुसलमान बनाने में कामयाब हो गया। सोचा, अब तो जाहिर है, वादी-ए-कश्मीर में इस्लाम की जड़ जम गई। उसकी बुनियाद यहां पुख्ता हो गई। नतीजा यह हुआ कि रिंचन के मुसलमान बन जाने पर रानी देवीकोटा के बेटे का नाम "हैदर" रखा गया। खुद शाहमेर के दो बच्चों के नाम थे-जमशेद और अल्लेशर। जमशेद को वह 'ज्यंशर' ही पुकारता था और यह साक्षी था कि कभी इस शाहमेर के पुरखे भी जरूर हिन्दू रहे होंगे। अरबी-फारसी का नया जोश चढ़ने पर शाहमेर ने उन बच्चों के घरेलू नाम रखे थे-'स्वाद' और दूसरे का 'नून'। ये दोनों अक्षर फारसी लिपि की वर्णमाला के हैं।

पाठक कहेंगे कि 'अल्लेशर' और 'ज्यंशर' जैसे नामों से हिन्दुत्व का क्या रिश्ता। वस्तुतः उस जमाने में कश्मीर में जो प्रसिद्ध स्थान थे, उनके नाम होते थे-ज्येष्ठेश्वर, त्रिपुरेश्वर, जयापीडपुर आदि। उसी के अनुसार शाहमेर के लड़कों के उक्त नाम थे। 'ज्येष्ठेश्वर' शिव ही हैं। ऐसे ही कश्मीर में एक स्थान 'द्वारेश्वर' था। परन्तु आगे सत्ता में आकर शाहमेर बन गया शम्सुद्दीन (शंसदीन), उसके बच्चे अल्लेश्वर और ज्यंशर हो गए-अलाउद्दीन (अलावेदन) आदि।

आगे यदि रानी देवीकोटा चाहती तो शाहमेर को मरवा डालती। वह समर्थ थी, साहसी थी। पर उसने इस तरफ उपेक्षा भाव रखा जिसका दुष्परिणाम यह हुआ कि एक रोज जब कश्मीर के प्रधान सेनापति, जो हिन्दू था तथा शाहमेर के बच्चे अल्लेशर (अल्लेश्वर) का श्वसुर था-ने रानी की अवज्ञा की तो देवकोटा ने उससे युद्ध किया, परन्तु हत भाग्य कि वह कैद कर ली गई। रानी के दो मंत्री हिन्दू थे। उनमें एक का नाम कुमार भट्ट था। उसने अपूर्व कौशल से रानी को कारागार से छुडा लिया। अनन्तर शाहमेर ने छल से रानी के दो आदमी-अवतार और भट्ट भिक्षण मरवा दिए।

जोनराज ने लिखा है कि शाहमेर ने उनके खून से स्नान किया। दोनों जहर बुझाये खंजरों से उस समय मारे गये थे जब शाहमेर ने रोगी होने का नाटक रचकर उन्हें अपने पास बुलाया था। ये दोनों रानी के मंत्री थे। रानी इस तरह अकेली और कमजोर पड़ती गई। शाहमेर अपने को शम्सुद्दीन (शंसदीन) कहलाने लगा। जोनराज लिखता है-

'शंसदीन इत्याख्यामत्यां स्वस्थ व्यधान्नृपः।'
(राजतरंगिणी (द्वितीय) ॥३५२॥)

जोनराज ने अपने ग्रंथ में अल्लशेर की हिन्दू पत्नी की बड़ी प्रशंसा की है, लिखा है-

---**'लक्ष्मी निवसुतांदधत-अल्लेशो लब्धवान---।'**
(राजतरंगिणी (द्वितीय) २१०)

उधर इसके विपरीत शाहमेर ने अपनी बेटी कोटराज नारिंग से ब्याही थी, जो हिन्दू था। यह इसलिए कि शाहमेर की समर्थक-शक्ति बढ़ सके। उसका नाम था, 'गौहर' (गुहर)। शाहमेर के दोनों बेटों की भी बेटिया ऐसे घरानो (भांगिल के सरदार तेंलाकशूर और शंकरपुर (बरामूला) के 'लुत्त' यां 'लुस्त') को ब्याही थीं जो जब नव मुस्लिमो मे गिन जाते थे। खुद शाहमेर को जोनराज ने 'राजतरंगिणी' (द्वितीय) में 'पार्थ' का वंशज बताया है। इसी वंश मे आगे कुरूशाह और ताहशाह जन्मे। इनमे कुरूशाह के पुत्र ताहशाह को जोनराज ने 'शाहमेर का पिता' लिखा है। इसी शाहमेर की अगली पीढी में कश्मीर का शासक, जो जैनुल आबदीन हुआ-उसे इतिहास में हिन्दू विरोधी न बताकर काफी उदारवादी लिखा गया है।

जो हो, शाहमेर मुसलमान के नाते; खासकर इस्लाम के नाम पर, न सिर्फ कश्मीर को छल-छद्म, हत्या षड्यंत्र द्वारा इस्लामी झण्डे के नीचे ले गया, वरन इसी प्रपंच-प्रक्रिया मे उसने रिंचन, रानी देवीकोटा आदि सभी को धोखा दिया। रिंचन के बाद रानी ही शासिका थी-उसे हटाकर शाहमेर सुलतान बन गया। उसके कठमुल्लेपन और जेहादी जुनून ने ही कश्मीर का जो हिन्दू नक्शा था, हिन्दू रंग था और जिसे भोट सरदार रिंचन भी बदल नहीं सका था, इस्लाम के नाम पर बदरंग विरूप और विद्रूप बना छोडा।

सत्यार्थ प्रकाश......
(पृष्ठ 1 का शेष)

यह भी मानते थे कि इस ग्रन्थ के समीक्षा भाग को देख कर अविद्वान् और पूर्वाग्रही व्यक्ति अन्यथा अर्थ लगे। परन्तु उन्हें मानव के विवेक पर भी पूरा भरोसा था। अतः वे यह भी लिखने के लिए बाध्य हुए-'बुद्धिमान लोग यथायोग्य (इस ग्रन्थ का) अभिप्राय समझेंगे'। इस प्रकार ग्रन्थ लेखन मे अपने अभिप्रेत को स्पष्ट करने के पश्चात् इसके पूर्वार्द्ध में उन्होंने विभिन्न आध्यात्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय दार्शनिक तथा आर्थिक प्रश्नों की मीमासा की है। प्रारम्भ के दस समुल्लासों में उन्होंने ईश्वर का स्वरूप, बालकों की शिक्षा, अध्ययन और पालन, गृहस्थ जीवन का आदर्श, वानप्रस्थ और सन्यास, राजा और प्रजा के अन्योन्याश्रित कर्त्तव्य, वेद और उसकी सार्वभौम शिक्षाएं सृष्टि उत्पत्ति तथा प्रलय, बंध और मोक्ष, आहार तथा आचार अनाचार से जुड़े प्रश्न जैसे विषयों का विवेचन किया है।

खण्डन-मण्डन प्रधान समुल्लासों के आरम्भ में स्वामी जी ने पृथक्-पृथक् अनुभूमिकाएं लिखी हैं। इनमें तत् तत् सम्प्रदाय की समीक्षा के विषय में अपने दृष्टिकोण को उन्होंने स्पष्ट किया है। एकादश समुल्लास की अनुभूमिका में उन्होंने लिखा है कि महाभारत युद्ध के पूर्व सर्वत्र वैदिक रीति नीति का ही प्रचलन था और संसार के सभी देश परस्पर मैत्री के भाव में बन्धे थे। महाभारत का युद्ध मानो आर्य संस्कृति के विनाश का अग्रदूत बना। कौरव-पाण्डवों के गृह युद्ध ने दोनों ओर के वीर पुरुषों का विनाश तो किया ही, आर्य धर्म के प्रवक्ता ऋषि मुनि भी धराधाम से विलुप्त हो गए। ऐसी स्थिति में अज्ञान और अविद्या के वशवर्ती होकर नाना भ्रान्त मतों का प्रचलित हो जाना स्वाभाविक ही था। लेखक ने वेद विरुद्ध मतों को चार वर्गों में विभाजित किया है और उन्हें पुराणी, जैनी कुरानी और किरानी (ईसाई) इन चार नामों से पुकारा। वे अत्यन्त विनम्रतापूर्वक लिखते हैं कि अपनी विद्या-बुद्धि और स्वाध्याय के बल पर उनको इन मतों का जैसा बोध हुआ, वैसा सब के आगे निवेदन कर दिया। ग्रन्थान्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकरण लिखने से पहले उन्होंने यह भी स्पष्ट करना आवश्यक समझा कि वे किसी नवीन मत का प्रतिपादन नहीं कर रहे हैं। वे तो उस सिद्धान्त को मानते हैं जो ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त प्राचीनय ऋषियों को स्वीकार्य रहा है। उसे वे सार्वजनिक धर्म कहते हैं जिसे अपना कर मनुष्य अपनी सर्वतोमुखी उन्नति करने में समर्थ होता है।

मण्डी हि.प्र. का चुनाव सम्पन्न

दिनांक 16-6-2002 को आर्य समाज मण्डी हि प्र. का चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

श्री हरिचन्द्र जी वैद्य, श्री रत्न लाल जी वैद्य-संरक्षक। श्री रोशन लाल-प्रधान, श्री डा हरगोपाल जी कपूर-वरिष्ठ उपप्रधान, श्री वेद प्रकाश जी कपूर-उप प्रधान, श्रीमती सरस्वती देवी जी-उप प्रधान, श्री जय लाल जी मल्होत्रा-मन्त्री, श्री यशपाल जी गोयल-उपमन्त्री, श्री अमृत लाल जी बहल-कोषाध्यक्ष, श्री बृज नन्दन जी बहल-पुस्तकाध्यक्ष, श्री ओम प्रकाश जी-लेखा परीक्षक। **-रोशन लाल**

पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्क लेन लुधियाना की ओर से 7-7-2002 रविवार को पारिवारिक सत्संग सायं 5 30 से 7.3. बजे तक श्री सुनील सूद म नं -99 प्रिंस होटल ग्रीन पार्क स्ट्रीट लुधियाना में होगा। इस अवसर पर श्री पं बाल कृष्ण जी शास्त्री का उपदेश होगा।

मोगा के श्री सुरेन्द्र नाथ जी भाटिया नहीं रहे

आर्य समाज मोगा के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री मदनमोहन आर्य के पिता और श्री ओम मुनि वानप्रस्थी फिरोजपुर के भाई श्री सुरेन्द्र नाथ जी भाटिया का 23-6-2002 को मोगा मे देहावसान हो गया। वह काफी समय से रुग्ण चल आ रहे थे। श्री भाटिया जी का सारा परिवार आर्य समाजी है श्री भाटिया जी ने भी आर्य समाज मोगा की यथाशक्ति सेवा की है उनका अन्तिम शान्ति दिवस 2 7 2002 को दशहरा ग्राउण्ड मोगा में मनाया गया। हम आर्य समाज मोगा की ओर से व अपनी ओर से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं। **-प्रियतम देव**

आर्य समाज मन्दिर संगरूर में वेद प्रचार उत्सव

दिनांक 11.11.2002 सोमवार से 17 11.2002 शनिवार तक वेद प्रचार उत्सव बड़ी निष्ठा, उत्साह, धूमधाम से मनाने की योजना निश्चित हो चुकी है जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य आर्य नरेश, पं सत्यपाल पथिक की स्वीकृति प्राप्त की जा चुकी है। अन्य आर्य समाज जिला संगरूर की धूरी, बरनाला, अहमदगढ, तपा, मलेरकोटला एवं राजपुरा, पटियाला, समाना, नाभा, लुधियाना आदि से निवेदन है कि वो इन दिनो में अपना उत्सव न रखें व संगरूर पधारने का कष्ट करें क्योंकि यह एक विशाल भव्य उत्सव होगा। **-राजेन्द्र आर्य, मन्त्री**

आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना में निशुल्क पेन्टिंग कैम्प

आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना में निःशुल्क पेन्टिंग कैम्प 28 6-2002 से आरम्भ हो गया है। स्त्री आर्य समाज ने इसकी भारी व्यवस्था की है। इसमें ग्लास पेन्टिंग, फेबरिक पेन्टिंग, पोर्ट पेन्टिंग, व मेहंदी की कक्षाएं लगाई जा रही हैं और पेन्टिंग सिखाई जा रही है। इसमें 50 से अधिक लड़कियां भाग ले रही हैं उनकी संख्या और अधिक बढ़ने की आशा है। स्त्री आर्य समाज की प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा ने बताया कि इस कैम्प में लड़कियो ने रुचि ली तो इसकी अवधि और अधिक बढ़ाई जा सकती है। उन्होंने बताया कि आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना समाज सेवा के कई कार्य शीघ्र ही आरम्भ कर रही है।

गुरुकुल करतारपुर में छात्रों का प्रवेश

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जि० जालन्धर) पंजाब में कक्षा-नौवी में प्रवेश के इच्छुक छात्रों की प्रवेश परीक्षा 20 जुलाई 2002 शनिवार को प्रातः 10 बजे ली जाएगी। इन प्रवेशार्थियों की केवल गणित, हिन्दी, अंग्रेजी विषयो में आठवीं के स्तर की परीक्षा ली जाएगी। अधिक अंक पाने वाले छात्र नियत संख्या में ही प्रवेश पा सकेंगे।

विद्याविनोद अर्थात् 10+1 तथा **अलंकार** अर्थात् **बी.ए.** में प्रवेश के इच्छुक नये छात्रों को 20 जुलाई तक प्रमाण पत्रों सहित उपस्थित होना होगा। शारीरिक और बुद्धि से कमजोर छात्रों को प्रवेश नहीं मिलेगा।

कक्षा 8 तक सी बी एस सी (एन सी आर टी) से तथा कक्षा-9 से अलंकार (बी ए.) तक का पाठ्यक्रम गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बन्धित है। छात्रों की आवास, शिक्षा एवं भोजन की सुविधा निःशुल्क है। पुस्तक-वस्त्रादि, फुटकर खर्च तथा विश्वविद्यालय का परीक्षा शुल्क अभिभावक को ही वहन करना होगा। कक्षा नौवी के प्रवेशार्थियों को 19 जुलाई 2002 शुक्रवार शाम तक गुरुकुल में पहुंच जाना चाहिए।

यह उचित होगा कि छात्रों के अभिभावक स्वेच्छा से कुछ न कुछ मासिक सहायता भेजते रहने का भी आश्वासन दें।

-यशपाल वर्मा, आचार्य

गुरु विरजानन्द दिवस "गुरु पूर्णिमा"

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर जि० जालन्धर 24 जुलाई 2002 बुधवार को गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर मे गुरु विरजानन्द दिवस (गुरु पूर्णिमा) का आयोजन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति **श्री स्वतन्त्र कुमार जी** की अध्यक्षता में कर रहा है। मुख्यवक्ता **श्री वेद प्रकाश श्रोत्रीय** (दिल्ली) होंगे तथा मुख्य अतिथि जालन्धर के प्रसिद्ध उद्योगपति **श्री रमेश चन्द्र** एवं **श्री बी.एम. टण्डन** होंगे। यज्ञ एव पूर्णाहुति प्रातः 8 बजे ध्वजारोहण 9 बजे प्रातःराश 9 30 से 10 बजे एवं गुरु दक्षिणा सम्मेलन प्रातः 10 बजे से 1 बजे तक होगा। एक बजे ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई है। श्रद्धालु आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधार कर सत्संग का लाभ उठाएं। **-यशपाल वर्मा**, आचार्य

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रेस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

पंजी. नं. पी. बी.-0331/2002

हरिद्वार

ऋग्वेद | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

दूरभाष : 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 13 सृष्टि संवत 1960853103, 14 जुलाई, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी

ले० डॉ० अमरनाथ आर्य, वरिष्ठ उप-प्रधान, आर्य समाज तलवाड़ा

आर्य समाज को गर्व है कि इसमें–'तहरीर और तकदीर' का कार्य कभी बन्द नहीं होता। यह परम्परा सरिता-प्रवाह की भांति अनवरत है और यही इसकी जीवन्तता का कारण है। महर्षि दयानन्द की अगली पीढ़ी के सभी आर्य-नेता न केवल मूर्धन्य विद्वान् थे बल्कि कुशल-लेखक और प्रभावशाली वक्ता भी थे। जिन्होंने न केवल 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के कार्य को आगे बढ़ाया बल्कि अपने पीछे कालजयी विपुल साहित्य भी छोड़ गए। इनमें से गुरुदत्त विद्यार्थी का नाम अपना विशेष महत्व रखता है। रत्नों के पारखी ऋषिवर ने उन्हें पहचान लिया था और अपने अंतिम क्षणों में उन्होंने इसी होनहार प्रतिभा-व्यक्तित्व को अपने पास रहने की अनुमति देते हुए उन्हें अपना उत्तराधिकारी मान कर मूक शब्दों में अपने अधूरे कार्य को पूर्ण करने का कार्यभार सौंपा था।

ऋषि के अन्तिम दर्शनों ने उनके लिए मार्ग निश्चित कर दिया था। मानो गुरुदत्त को अपना लक्ष्य मिल गया हो। किन्तु ऋषि कार्य को करने के लिए उन जैसा दार्शनिक बनना आवश्यक था। इसलिए उन्होंने योग-विद्या में विशेष योग्यता प्राप्त करने की ठानी। यही कारण था कि अजमेर से लौट कर उन्नीस वर्षीय गुरुदत्त प्रोफेसर जैसे प्रतिष्ठित पदों को ठुकरा कर जी-जान से ऋषि कार्य मे जुट गए एवं इस कार्य में इतने रम गए कि सब कुछ भूल कर कार्य करते-करते एक दिन मौत को भी गले लगाकर 'उन्नीसवीं सदी का सच्चा शहीद' की उपाधि अर्जित कर गए। एवं जो बीज ऋषिवर ने बोए थे उन्हें अपने श्रम-जल से अंकुरित करने हेतु उन्होंने अपने रक्त की एक-एक बूंद को तेल की भांति वेदोत्थान के दीप में जलाकर भावी पीढ़ियों के पथ को आलोकित करने का बीड़ा उठाया।

उस तपस्वी महामानव की एक जीवनी मैंने और भी पढ़ी है। किन्तु अपने कथ्य एवं चरित-नायक गुरुदत्त के साथ जो लगाव और आत्मीयता डा. राम प्रकाश जी द्वारा रचित जीवन-चरित में दिखाई देती है-वह अन्यत्र दुर्लभ है। जिसमें 'विद्यार्थी' जी के संघर्षशील जीवन की विलक्षण घटनाएं आघोपान्त बड़े मनोयोग और अपने पन के साथ वर्णित हैं। जिनसे पाठक का मन श्रद्धा-विनत हो जाता है। ऐसे प्रतीत होता है कि जीवनीकार ने इसे विश्वास की कलम और श्रद्धा की स्याही से रचा है। शैली उदात्त एवं आत्मीयता भरी, शब्द-योजना भावानुरूपिणी एवं निष्कर्ष आत्मा को छूने वाले। अत: एक प्रकाण्ड श्रद्धालु प्रोफैसर द्वारा दूसरे उद्भट विद्वान् प्रो. गुरुदत्त को यह शब्दिक अर्घ्य देखते ही बनता है।

यदि इसी प्रकार रसवन्ती जीवनियां इनकी कलम से अन्य महापुरुषों की भी निकलें तो आर्य-जगत् का बहुत उपकार हो। अत: जीवनीकार ने इस बहुआयामी व्यक्तित्व के अद्भुत कार्यो को इस जीवनी के छोटे से कलेवर में समेटने का जो स्तुत्य प्रयास किया है उसे साररूपेण इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है:-

आदर्श प्रचारक एवं कुशल-वक्ता:–विद्या का मुख्य साधन वाणी है और गुरुदत्त वाणी के धनी थे। वे अद्भुत वक्ता थे। उनकी स्वदतु: वाणी में ओज और लेखनी में शक्ति थी। अत: उनके भाषणों में अकथनीय प्रवाह था। ईश्वर-प्रदत्त अद्भुत स्मरण-शक्ति और वक्तृत्व कला के कारण वे स्वामी जी के मन्तव्यों का बोध करवाने में सफल रहे।

वह वेदों के उपासक थे। उन्होंने वेद-मन्त्रों से विज्ञान के तत्व इतने स्पष्ट शब्दों में प्रस्तुत किए कि दयानन्द के बाद वे सबसे बड़े वेद-व्याख्याता माने जाने लगे। वेदों के भावों को शब्दों में बांधने का सामर्थ्य उन जैसे पुनीत-साधकों के पास हो सकता है। उनके व्याख्यानों में सागर की गहराई और पर्वतों की ऊंचाई विद्यमान रहती थी। एवं मजबूत दलीलें उनके भाषणों में प्राण-फूंक देती थीं। उन्होंने विवादास्पद विषयों पर खोजपूर्ण लेख और आलोचनाएं, प्रकाशित कर वेदों की पवित्र और सरल सच्चाईयों को ताजा किया।

प्राचीन ऋषियों ने वेदों को सम्पूर्ण विज्ञान का स्रोत समझा था। उनकी सारी खोज का आधार सर्वज्ञानमयी वेदवाणी है। उसमें सम्पूर्ण ज्ञान भरा पड़ा है। जीवन के रहस्य प्रकाशित करने मे वेदो की क्षमता और आनन्द प्राप्ति की शक्ति बेजोड़ है। गुरुदत्त के अनुसार वे हमें उस प्रकार की ओर ले चलते हैं जिसमें प्राचीन ऋषि स्नान किया करते थे। मानव-मस्तिष्क को आन्दोलित करने वाले सबसे महान एवं कठिन प्रश्न-मनुष्य का आदि मूल और अन्तिम लक्ष्य के समाधान मे वेद ही हमारी सहायता करते हैं। वस्तुत: वेदों का उद्देश्य संसार से बुराई और सन्ताप को मिटा कर सबके हितों को बढ़ावा देना है।

इस प्रकार जब वे वेदो पर व्याख्यान देते, तो ऐसे लगता जैसे वक्ता की वाणी नहीं, उनका जीवन बोल रहा हो।' जीवनीकार के अनुसार 'गुरुदत्त अपनी विद्वता, परिश्रम और असीम ज्ञान, गहरे स्वाध्याय, गहन चिन्तन और पैनी दृष्टि के द्वारा अकाट्य तर्क का सशक्त दलीलों से गागर में सागर भरते एवं दार्शनिक गुत्थियां सुलझाते हुए दयानन्द के मानस पुत्र कहलाने के अधिकारी बन जाते हैं।'

प्रबल सुधारक एवं शास्त्रार्थ-महारथी : विद्वान् प्रशंसा के योग्य होते हैं। उनका वर्णन पुण्य का कार्य है। अस्तु, सत्य और हित की भावना मेधावी गुरुदत्त का स्वभाव था और उन्हें ईश्वरीय नियमों एवं सत्य की विजय मे अटल विश्वास था। वे प्रत्येक तर्क-संगत विचार और सत्यान्वेषण हेतु साहित्य-सागर का मन्थन कर रहे थे। भारतीय-इतिहास और वेदों के प्रति दुराग्रह के कारण पश्चिमी विद्वानों द्वारा अंग्रेजी में उठाए आक्षेपों का उन्हीं की भाषा मे सटीक उत्तर देते हुए पाठकों को वेद और वैदिक-धर्म के प्रति अनुरक्त करने का श्रेय-लेखनी और वाणी के धनी गुरुदत्त को ही जाता है। क्योंकि जिसने पूर्व और पश्चिम दोनों का अवलोकन किया हो वही उनका समन्वय कर सकता था। जीवनीकार के अनुसार 'गुरुदत्त ने विदेशियो द्वारा अंग्रेजी में किये जा रहे आक्रमणों का उन्हीं की भाषा में उत्तर देकर वैदिक-धर्म की रक्षा करते हुए पश्चिम के लिए खिडकी खोल दी थी। जिससे वे आर्यावर्त की वास्तविक झांकी पा सके।'

अपनी दूर-दृष्टि के कारण वैरागी गुरुदत्त ने अध्यकाल मे ही आर्य समाज को अनेक रत्न प्रदान किए। उन्होने मुक्तिधाम को जाने से पूर्व-दीप से दीप जलाते हुए जा महापुरुष आर्य समाज की झोली मे डाले उसमे स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानन्द उन्हे अपना मार्ग-दर्शक पण्डित लेखराम और महात्मा हंसराज, अपना सहयोगी और लाला लाजपतराय उन्हे अपना गुरु मानते थे। तथा बालक रामदेव को गोदी में उठाकर आशीर्वाद देने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती

□डॉ. (श्रीमती) वसुन्धरा त्रिपाठी

ऋषियों का देश हमारा आर्यवर्त्त सदियों से विश्व का पथ-प्रदर्शक, उपदेष्टा, अध्यात्मगुरु, व पुण्यात्माओं की जन्मस्थली रहा है। यहां पर अनेकों मनीषियों ने वेद सम्मत ज्ञान, विज्ञान, दर्शन व विभिन्न कलाओं से न केवल भारत अपितु समग्र संसार का सत्य से साक्षात्कार करवाया, जिसका समूचा जगत् सदैव ऋणी रहेगा।

ऐसे महान् देश का वेद-विमुखता, काल चक्र के थपेड़ों, अदूरदर्शिता व जड़-पूजादि से ऐसा पतन हुआ कि शक्तिशाली व्यक्ति भी अन्ध-विश्वासों, पाखण्डों, चरित्र-हीनता व दुष्कर्मों से नपुंसक बन गया। हमारा आर्यवर्त्त छुआ-छूत, ईर्ष्या-द्वेष, धर्म के नाम पर पाखण्ड, नारी जाति पर अत्याचार, बाल-विवाह, पशु-बलि जैसी अनेकानेक महाव्याधियों से पीड़ित हो गया। स्त्री-शिक्षा के अभाव से ज्ञानी तथा बलवान सन्तानों का होना दुर्लभ हो गया।

मुठ्ठी भर विदेशियों ने हमारी कमजोरियों का लाभ उठाया और बहुसंख्यक होते हुए भी हम अपने देश में पराधीन हो गए। इस्लाम और ईसाइयत ने 'राज्यसत्ता' और 'धर्म' की आड़ में अनेकों अत्याचार करके आर्य संस्कृति, सभ्यता, कला, इतिहास आदि को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, पुस्तकालय जलाए गए, अमूल्य वस्तुएं लूटकर ले जाई गई। उचित पथ-प्रदर्शक के अभाव में देश निरुद्देश्य भटक रहा था। ऐसी विषय तथा अन्धकारमय स्थिति में दिव्यात्मा दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने देश की डूबती नैया सम्भाली। दयामय दयानन्द का वज्र के समान कठोर शरीर सब कष्टों को सहन कर सकता था, परन्तु उनका कोमल हृदय पीड़ित भारतीयों की अवस्था को न देख सका। उन्होंने अपने आनन्द की अपेक्षा जन-जन के आनन्द को अधिक महत्त्व दिया।

दयानन्द के कार्य और जीवन दर्शन

1. धर्म का व्यापक रूप-न केवल भारत में अपितु विश्वभर में मानव धर्म के वास्तविक स्वरूप को भूलकर विभिन्न सम्प्रदायो को ही धर्म समझ बैठा था। धर्म के नाम पर अत्याचार, अनाचार, ढोंगे, भ्रम आदि फैले हुए थे। लोग ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को भूलकर पोप, पैगम्बरी तथा देवताओं को ही ईश्वर समझ बैठे थे। इहलोक पर ध्यान न देकर परलोक पर अधिक बल दिया जाता था और केवल अपनी धर्म पुस्तकों अथवा ईसा, खुदा आदि पर ईमान लाने से ही मनुष्य स्वर्ग का अधिकारी समझा जाता था भले ही ऐहिक जीवन कितना ही घृणित क्यों न हो।

महर्षि दयानन्द ने धर्म में आचरण पर अधिक बल दिया। उनके मतानुसार धर्म की सभी मान्यताएं आचरण पर आधारित हैं। महर्षि ने विश्व के धर्मों तथा धर्म पुस्तकों में विज्ञान विरुद्ध बातों का खण्डन कर कथित धर्मों में दोष दिखाकर वैदिक धर्म की श्रेष्ठता प्रतिपादित की। उन्होंने ओ३म् का झण्डा हाथ में लेकर सारे विश्व को आह्वान किया और कहा कि ईश्वर एक है तुमने उसे अनेक मान रखा है। वह तो अनेक हुआ नहीं अपितु तुम अनेक हो गए हो; अतः आओ इस झण्डे के नीचे आकर सब एक हो जाओ।

इस भावना से ऋषि ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा लगाया। धर्म की इस सही व्याख्या से उथल-पुथल होने लगी। पुराण, कुराण, बाईबल आदि ग्रन्थों में विज्ञान-विरूद्ध बातों को हटाया जाने लगा। उन्होंने बुद्धि और तर्क की ऐसी कुञ्जी संसार को दी जिससे धर्म के नाम पर प्रचलित गहन से गहन अन्धविश्वासों और रूढ़ियों का पर्दाफाश होता गया। उन्होंने अवतारवाद, अद्वैतवाद, मूर्ति-पूजा, पोप-पैगम्बर पर ईमान से मुक्ति आदि सिद्धान्तों का खण्डन कर विश्व में धार्मिक क्रान्ति उत्पन्न कर दी। महर्षि ने हिन्दू धर्म, समाज और संस्कृति का संशोधन कर उसे इस ढंग से विश्व के सम्मुख रखा कि लोग भारतीय संस्कृति से प्रभावित होने लगे। विश्व को ऋषि की यह एक महान् देन है।

2. वैदिक साहित्य के अध्ययन की नवीन पद्धति-तत्कालीन लोग वेदों के यथार्थ स्वरूप को भूल चुके थे। काशी जैसे संस्कृत विद्या केन्द्रों में भी वेदार्थ समझने वाले लोगों की संख्या नगण्य थी। सायण, उव्वट, महीधर आदि के जो भाष्य प्रचलित थे ऋषि दयानन्द ने देखा कि वे वेदार्थ को कलुषित करने वाले तथा तात्पर्य भावना के सर्वथा विरुद्ध केवल कर्मकाण्ड परक व एकदेशीय हैं। मैक्समूलर, विल्सन, ब्लूमफील्ड, ग्रिफिथ आदि पाश्चात्य विद्वानों ने इन्हीं मध्यकालीन भाष्यकारों का अनुसरण करने के कारण वेद को अनेकेश्वरवादी व गडरियों के गीत कहा।

महर्षि ने वेद-विषयक इन भ्रमों का पूर्णतया निराकरण किया। उन्होंने सम्वत् १९७६ में 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' की रचना की जिसमें युक्ति और प्रमाणों से वेद को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध किया तथा वेद और वेदभाष्य सम्बन्धी अपनी मान्यताओं का प्रतिपादन किया।

महर्षि ने अपने से पूर्ववर्ती अपुष्ट व असंगत मन्त्रव्याख्या व भाष्य को नई वेदार्थ शैली प्रदान कर वेद सम्बन्धी सभी भ्रान्तियां दूर कर दीं। वेद को किसी की बपौती न कहकर उसे संसार व मानव-मात्र के लिए उपयोगी व पठनीय बताया।

महर्षि ने देश व जाति से ऊपर उठकर संसार भर के कल्याणार्थ प्रयत्न किए। उनकी यह इच्छा थी कि सारा संसार 'यंत्र विश्वं भवत्येकनीड' की वैदिक भावना के अनुसार एक परिवार की भांति रहे। संसार में हर प्रकार का भेदभाव मिट जाए और मनुष्य केवल मनुष्य बनकर रहे।

इन विश्व बन्धुत्व की उदात्त भावना का मन्त्र संचार करने का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को ही जाता है।

3. नवीन शिक्षा पद्धति-आज समूचे विश्व में विद्यार्थी वर्ग द्वारा उत्पन्न आन्दोलन एक मुख्य समस्या है। इसमें मुख्य रूप से हमारी दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति ही दोषी है। आज अमीर और गरीब में शिक्षा प्राप्ति में पर्याप्त विषमता है। इन विषय परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास असम्भव है। असमानता के कारण अशान्ति व असन्तोष से राज्यव्यवस्था खराब होती है।

महर्षि ने वर्तमान शिक्षा पद्धति का विरोध किया। उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' में शिक्षा के सभी अंगों पर प्रकाश डालते हुए देश की शिक्षा-पद्धति में नया मोड़ देने का और राष्ट्र के योगदान को सार्थक प्रयत्न बतलाया।

यदि ऋषि प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का अनुसरण किया जाए तो सभी विषमताएं दूर हो सकती है। यह नई आदर्श व वेदानुकूल शिक्षा-पद्धति देश का नव निर्माण कर सकती है।

4. नारी जाति का समाज में स्थान-वैदिक धर्म में नारी जाति को अत्युच्च स्थान प्राप्त है। वैदिक युग में नारियों को समाज में पुरुष के तुल्य ही अधिकार प्राप्त थे। भारतीय संस्कृति में जब स्त्रियों का इतना गौरवपूर्ण स्थान था तब पाश्चात्य संस्कृति में उनकी स्थिति उतनी ही हेय और दयनीय थी। बाईबल में लिखा है कि स्त्री ही सब बुराइयों की जड़ है। सेंट ऑगस्टाइन का कथन है-'प्रत्येक स्त्री में हौवा का वास है' और इस्लाम में तो नारी को निर्जीव बताया गया है। न केवल विदेशी विचारकों अपितु अनेक भारतीय सन्तों व सम्प्रदायाचार्यों जैसे-रामानुज, माधव, निम्बार्क, कबीर, तुलसी, दादू आदि ने भी स्त्रियों के प्रति हेय शब्दों का प्रयोग किया है।

ऋषि दयानन्द नारी जागरण के अग्रदूत बन कर आए। जिन पौराणिक आचार्यों ने स्त्रियों के वेदाध्ययन को बन्द कर रखा था और जो 'स्त्री शूद्रौ' नाऽधीताम्' जैसे कपोल-कल्पित वाक्यों को प्रस्तुत कर नारी जाति की प्रगति और उन्नति में बाधा डाल रहे थे, उन्हें ऋषि ने मुंह तोड़ उत्तर दिया। स्त्रियों के प्रति होने वाले अत्याचारों यथा बाल-विवाह, वृद्ध विवाह को रोका और उन्होंने विधवा विवाह निषेध आदि सामाजिक अत्याचारों का बल-पूर्वक विरोध किया। स्त्रियों को उन्होंने पूर्ण सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकारी बताया. मुख्य रूप से ऋषि ने नारी को याचिका और दासी से उठाकर देवी और गृह-लक्ष्मी के सिंहासन पर प्रतिष्ठापित किया।

विश्व के धर्मों में नारी जाति

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

वेदों के बारे में आज भी भ्रान्तियां

महर्षि दयानन्द सरस्वती के आने से पहले वेदों के बारे में बहुत सी भ्रान्तियां थी। भारत का पौराणिक जगत यहां तक मानता था कि वेद पृथ्वी पर इस समय हैं ही नहीं, वह पाताल लोक में चले गए हैं। कोई वेदों को गडरियों के गीत समझता था। कोई जादू-टोनें की पुस्तकें। कोई वेदों में इतिहास मानता था, कोई इनमें हिंसा मानता था परन्तु न कोई वेद पढ़ता था और न कोई यह जानने का प्रयास करता था कि वेदों में क्या लिखा है। अनेकों विद्वान स्वयं श्लोक घड़ कर उन्हें वेद मन्त्रों का नाम दे दिया करते थे। कई विद्वान् यहां तक कहते थे कि वेदों में मूर्ति पूजा का भी विधान है। यज्ञ में गौ, घोड़ा आदि की बलि का भी विधान है।

धन्य हो महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्होंने वेदों के बारे में जो भी भ्रान्तियां, पौराणिक जगत व जनता में फैली हुई थी उन सब भ्रान्तियों को दूर किया। इसके लिए उन्होंने पौराणिक विद्वानों से शास्त्रार्थ किए, वाद-विवाद किया, सत्य-असत्य को उनके सामने रखा और बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद में किसी का इतिहास नहीं, हिंसा नहीं, मूर्ति पूजा का कोई विधान नहीं, बल्कि वेद तो कहता है ''न तस्य प्रतिमा अस्ति'' उस परमात्मा की कोई मूर्ति नहीं हो सकती, वह सर्वज्ञ है, अजर है, अमर है, अभय है, सच्चिदानन्द स्वरूप है, निराकार है, सर्वशक्तिमान है, न्यायकारी है, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है, मूर्ति की नहीं। महर्षि ने अपने तर्कों के द्वारा यह सिद्ध करके भी दिखाया और परमात्मा शुद्ध स्वरूप विद्वानों के सामने रखा।

महर्षि दयानन्द के बाद आर्य समाज ने भी वेद का बहुत प्रचार और प्रसार किया। इससे सारे देश में जाग्रति पैदा हुई। परन्तु आज फिर वेद प्रचार के कार्य में कुछ शिथिलता आ जाने से वेदों के बारे में फिर भ्रान्तियां पैदा की जाने लगी हैं। पहले तो हम बड़े-बड़े शास्त्रार्थ करते थे कई-कई हजार लोग उन शास्त्रार्थों को सुनने के लिए आते थे और वेद की मान्यताओं पर खुल कर बहस होती थी। आर्य समाज अपने सभी शास्त्रार्थों में सदा विजयी रहा। परन्तु आज वह शास्त्रार्थ बन्द हो गए हैं ? आज फिर लोगों में भ्रान्तियां फैलने लग गई हैं आज फिर जादू, टोने, गण्डे, तावीज, ग्रह चाल, ग्रहों का प्रभाव, ज्योतिष की करामातें, कबरें, पीर, पैगम्बर, गुरु, महन्त, ओझा, झाड़-फूंक करने वाले, छोटे-छोटे बच्चों की बलि चढ़ाने वाले, अन्ध विश्वास को फैलाने वाले लोग आगे आ गए हैं। वेद विरुद्ध फिर कई नए-नए मत आरम्भ हो गए हैं। इस सब का कारण यही है कि हमने वेद के प्रचार व प्रसार को ढीला कर दिया है।

कई दैनिक समाचार पत्रों तथा साप्ताहिक व मासिक पत्र-पत्रिकाओं में वेद के बारे में बहुत कुछ गल्त बातें छप रही हैं। आर्य समाज के कई बुद्धिजीवी लोग यह सब पढ़कर परेशान हो रहे हैं और उनका परेशान होना स्वाभाविक भी है क्योंकि आर्य समाज पिछले एक-सौ वर्षों से वेद प्रचार कर रहा है । वेद का स्वरूप लोगों के सामने रखता आ रहा है। वेद की जानकारी जन-जन को देने का प्रयास कर रहा है परन्तु फिर भी वेद के सम्बन्ध में लोगों में कई प्रकार की भ्रान्तियां फैलाई जा रही हैं।

दैनिक समाचार पत्रों को हम अक्सर कम ही ध्यान से पढ़ते हैं। हम केवल मुख्य समाचारों पर ही ध्यान देते हैं परन्तु उनमें मुख्य समाचारों के अतिरिक्त कई बार और भी बहुत कुछ लिखा होता है।

संगरूर आर्य समाज के सदस्य श्री आई.एस. तौमर ने दैनिक जागरण की दो कटिंगें हमें भेजी हैं। 16 अप्रैल 2002 को दैनिक जागरण में श्री हनुमान जी के एक चित्र के साथ छपा समाचार है। उसमें बताया गया है कि यह उनका असली चित्र है और लिखा है कि ''मानसरोवर की गुफाओं में दिल्ली के एक यात्री संजय चौहान ने एक गुफा से अद्भुत स्वर सुना, जय श्री राम, जय श्री राम इस स्वर से प्रभावित होकर वह गुफा में चले गए वहां अद्भुत प्रकाश उन्होंने देखा कि वानर स्वरूप में एक व्यक्ति रामायण पढ़ रहा है। संजय चौहान के पास कैमरा था उन्होंने तुरन्त उसका चित्र ले लिया। परन्तु श्री चौहान जी एका-एक पगला गए और दिल्ली आते ही उन्हें हार्ट अटक हो गया। वह चल बसे परन्तु उनके कैमरे में से यह चित्र निकला जिसमें हनुमान जी रामायण पढ़ रहे हैं।''

इस चित्र के साथ जो समाचार छपा है उसमें मोटे अक्षरों में लिखा है ''हमारे वेद बताते हैं कि श्री राम भक्त हनुमान जी भी अमरता का वरदान लिए इस धरती पर मौजूद हैं'',

कितनी बड़ी विड़म्बना है कि लेखिका को यह भी पता नहीं कि वेदों में ऐसी बात कहीं नहीं लिखी। उसको पता ही नहीं कि वेद में क्या लिखा है ? परन्तु किसी से सुनी-सुनाई बात पर उन्होने लिख दिया कि वेदों में ऐसा लिखा है जबकि वेद में किसी का भी कोई इतिहास नहीं है न मर्यादा पुरुषोत्तम राम जी का इतिहास है और न ही हनुमान जी का कोई इतिहास है। न ही इनके सम्बन्ध में कुछ लिखा है।

ऐसे ही 4 जून 2002 के दैनिक जागरण मे लिखा है ''वेदों के अनुसार माता भद्रकाली का उद्‌भव देवासुर संग्राम के दौरान हुआ भगवान शिव ने क्रोधस्वरूप अपनी जटा की लट को एक पत्थर की शिला पर दे मारा जिससे एक भयंकर गर्जन के साथ नारी शक्ति उत्पन्न हुई और नारी रूप शक्ति ने रक्त बीज का संहार किया।''

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद में कुछ भी असत्य नही है। न ही वेद में सृष्टि नियम के विरुद्ध कोई बात लिखी है। यह कौन से वेद में और कहां लिखा है कि भगवान शिव की जटाओं को पत्थर पर मारने से कोई नारी शक्ति पैदा हो गई। पुराणों में ऐसा लिखा है तब तो शायद हम इसे मान लेते कि पुराणों मे लिखा होगा परन्तु वेदों में ऐसा कहीं नहीं लिखा। ऐसी असत्य बात वेद में कैसे लिखी हो सकती ही। यह तो एक कपोल कल्पना है।

आज विज्ञान के युग में भी हमारे कई भाई ऐसी सृष्टि नियम के विरुद्ध बातें मान रहे हैं जिनका कोई अस्तित्व नही है। ऐसी बातों को सुनकर आज विदेशी हमारा मजाक उड़ा रहे हैं। सृष्टि मे कहीं ऐसा नियम नहीं है कि जटाओं से भी सृष्टि की उत्पत्ति होती हो। मानव सन्तान का जन्म होता हो। जन्म दातृ से अर्थात् जननी से ही सृष्टि की उत्पत्ति होती है जटाओं से नहीं।

कुछ समझ नहीं आता कि ऐसी बातों से इन लोगों द्वारा मानव समाज का क्या कल्याण किया जा रहा है ? लाखो वर्ष पूर्व रामायण काल मे श्री हनुमान जी हुए हैं आज भी किसी ने उन्हे उसी रूप में देखा और देखने वाला पागल हो गया और मर गया। इसमें श्री हनुमान जी की महानता हुई या उनका अपमान। लिखने का किसको क्या लाभ हुआ।

मैं तो यहां केवल यह बात कहना चाहता हूं कि हमे इन दोनो समाचारों को पढ़ने से यह पता चलता है कि आज के विज्ञान के युग मे भी ऐसे लोग विद्यमान हैं जो कपोल-कल्पनाओं को मानते है और यह सारा दोष वेदों के सिर मढ़ रहे हैं। हमारी अपने उन सब भाईयों से प्रार्थना है कि जो वेद को मानते हैं वह वेद विरुद्ध कोई बात न लिखे। जो वेदो में लिखा है वह कहां लिखा है, कौन से वेद में लिखा है, किस मन्त्र मे लिखा है, इस बात को स्पष्ट करें ताकि सच्चाई का पता चल सके। वेदो की गरिमा को कम न होने दें। वेद ईश्वरीय ज्ञान.है इसका गलत ब्यान करके अपमान न करें। हमारे लगभग सभी ग्रन्थों में मिलावट हुई है। रामायण में, महाभारत में, गीता में, मनुस्मृति में अर्थात् बहुत से धार्मिक ग्रन्थों में मुसलमान काल व अंग्रेजों के काल में मिलावट हुई है । केवल वेद ही मिलावट से बचे हैं। कृप्या उन्हें बचे रहने दें।

—धर्मदेव आर्य

सरल-सुखी जीवन

□ ले० श्री [illegible], बी-2, 92/7 बी, [illegible] ब्लाक, होशियारपुर-[illegible]

(गताक से आगे)

ऐसे ही सामाजिक व्यवहार के कई क्षेत्रो में बडे-छोटे का सम्बन्ध होता है। जैसे कि परिवार मे माता-पिता और बच्चे विद्यालय मे शिक्षक तथा शिष्य, कार्यालय या कारखाने आदि मे अधिकारी एव कर्मचारी आदि। ऐसे क्षेत्रो में यदि छोटा कोई अपराध करता है तो उस को सदा दण्ड देने की जरूरत नहीं होती। अधिकतर माफ करना ही अधिक उचित होता है और तभी वह व्यवहार चलता है। ऐसी स्थिति मे क्षमा कर देने से कई बार दण्ड की अपेक्षा क्षमा का उस से भी अधिक प्रभाव होता है। हा, उसको यथापेक्षित सावधान कर देना चाहिए। ऐसी दशा को ही सामने रख कर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने 'विनय' नामक कविता में कहा है:-

"माता-पिता गुरू स्वामी राजा, जो न क्षमा उर लावै।
तौ सिसु-सेवक प्रजा न को विधि, जग मे निबहन पावै ॥४॥"

परिवार और समाज मे रहते हुए अनेको के साथ हम अनेक विध व्यवहार करते हैं। परस्पर के बर्ताव में अनेक बार कोई दूसरे से बडा होने के कारण या धन, सामाजिक सम्बन्ध आदि के कारण एक दूसरे से इस प्रकार के शब्द कहता है या ऐसा व्यवहार करता है। जो सर्वथा अनुचित, असह्य होता है वह स्थिति या व्यवहार उस समय जैसे-कैसे बीत जाता है। दोनो के जीवनो मे या स्थितियो मे परिवर्तन आ जाता है। यदि पिछले व्यवहारो को स्मरण करके एक दूसरे से बदला लेने की सोचने लगें तो कम से कम पारिवारिक सम्बन्ध कभी भी स्थिर न हो सकेगे। यहा परस्पर क्षमा के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं रहता। इस ने तब मुझे यह कहा था, ऐसे वर्ता था, ऐसा सोच कर उस से बदला लेने की भावना से कभी गुजारा नहीं चल सकता। कई बार बडो से भी गलती हो जाती है, उन के प्रति दण्ड या बदले की भावना जचती नहीं।

क्षमा शब्द का मूल अर्थ है-सहना (क्षमुष सहने)। जैसे कि हर व्यक्ति से यदा-कदा अनेक प्रकार के नुकसान होते हैं, पर कोई भी अपने आप को हर समय दण्ड नहीं देता, वह सब सहा जाता है। ऐसे ही जिस के साथ जितना-जितना अपनापन होता है, हम उस की गलतियों को उतना-उतना सह लेते हैं। कई बार हानि के अनुपात से अपनी शक्ति के अनुरूप सहते हैं। हा विशेष सामाजिक परिस्थितियों में हानि की अधिकता में या दूसरों पर पडने वाले प्रभाव की दृष्टि से या उस अपराध का जब दूसरो पर उलटा प्रभाव होता है, तब उस अपराध को क्षमा करना अनुचित होता है। चाहे वह सच्चे दिल से अपनी गलती को अनुभव करता है। शत्रु या उस द्वारा किए जाने वाले कार्य अथवा युद्ध आदि की स्थिति मे माफ करना सर्वथा असम्भव होता है पर ये विशेष अपवाद होते हैं। प्रतिदिन के जीवन के व्यवहार में तो क्षमा करना अत्यन्त आवश्यक होता है। धरती का एक नाम क्षमा भी है, जैसे वह सब कुछ सहन करती है ऐसे ही जीवन मे व्यक्ति को बहुत कुछ सहने की अपेक्षा होती है। हा, जब कोई साधारण ढग से धूलि में पैर न रख कर अनादर से रखता है, तो धूलि एक दम उसके सिर पर सवार हो जाती है, तब वह क्षमा नहीं करती। अत: क्षमा का प्रयोग परस्पर के व्यवहार, स्वभाव परिणाम पर निर्भर करता है।

14 मनसो दमनं दमः

मानव जीवन का यह सामान्य नियम है कि व्यक्ति जैसा सोचता है, वह वैसा ही बोलता है और फिर वैसा ही करता है। जो व्यक्ति अधिकतर जैसा सोचता है, वह अन्त मे वैसा ही बन जाता है। निराशापूर्ण सोचने वाले निराश, हताश, उदास ही रहते हैं। वे भविष्य ही नहीं, अपना वर्तमान भी अन्धकारमय बना लेते हैं। पर आशावादी का जीवन सदा उत्साह, उमग, कर्मठता से भरा रहता है, जिस से उसके जीवन मे प्रत्येक प्रभात सुख का सन्देश लेकर आती है। अत: विचार हमारे आचार (व्यवहार) के आधार हैं। जैसी किसी की सोच होती है, वैसी ही उस की करनी हो जाती है। तभी तो पथक पर चलते-चलते जब कभी मन मे अनिश्चय, सन्देह उठ खड़ा होता है। तो व्यक्ति कभी बाईं ओर तो कभी दाहिनी और लडखड़ा जाता है या कभी दो कदम आगे रखता है तो कभी पीछे अर्थात सोचना-विचारना मन का कार्य है। सब संकल्प-विकल्प, शुभ-अशुभ, अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित सोच में दोनों प्रकार की सोच सोचता है। इस में कई बार स्वार्थ, लोभ, द्वेष के कारण अशुभ विचार हावी हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में मन को काबू करने की जरूरत होती है और यही दम का कार्य है। अत: किसी की करनी को सत्य-शिव-सुन्दर बनाने के लिए सबसे पहले उसकी सोच को सत्य-शिव-सुन्दर बनाना होगा। इसी लिए कहा जाता है-'मन के जीते जीत है-मन के हारे हार' और 'मन चंगा तो कोठारी अन्दर गगा' वस्तुत: मन ही बन्धन और मोक्ष का मूल है तथा मनोभाव बदलते ही व्यवहार और अनुभूति में भी अन्तर आ जाता है। जैसे कि पत्नी और पुत्री के स्पर्श के समय होने वाला अलग-अलग अनुभव सर्वानुभवगम्य है। इसी लिए वेद ने मन को शुभ संकल्प वाला बनाने का एक साथ (यजु ३४, ४६) छः बार निर्देश किया है।

फूल की सुगन्ध की तरह दम-सयम किसी के गुणो को और भी अधिक सुन्दर बना देता है। तभी तो कहा जाता है:-दम के समान लाभकारी कोई धर्म नहीं है। वस्तुत: धर्म के अन्य अग तभी पूर्ण रूप से चरितार्थ होते हैं, जब उन के साथ सयम का पालन होता है अन्यथा संयम के बिना अन्य सब किया-कराया अधूरा हो जाता है। जैसे कि एक ही छेद हो जाने पर पात्र खाली हो जाता है या नौका डूब जाती है। इस का स्पष्ट सा उदाहरण रावण है, जो कि विद्वान, राजा, शक्तिशाली होते हुए भी सयम के अभाव में निन्दित (हुआ) है और वश सहित नष्ट हो गया। विशेष रुप से जिन व्यक्तियों के पास जितने अधिक अधिकार, धन आदि होते हैं, उन के सामने उतने ही अधिक आकर्षण और पतन के अवसर आते हैं। यदि वे उस अवसर पर अपने मन को काबू नहीं रखते, तो उन का किया-कराया सब चौपट हो जाता है। इसी लिए मनुस्मृति (१, ८९) में क्षत्रिय (प्रशासन) का कार्य करने वालों के लिए सयम का विशेष रूप से सकेत है। जैसे कि आजकल के मन्त्रियों और उच्चाधिकारियों के सम्बन्ध में होने वाली चर्चाओं से भी स्पष्ट सिद्ध हो रहा है। वस्तुत: किसी व्यक्ति का [illegible] से [illegible] हानि ही अधिक करता है।

हिप्पीवाद की तरह कुछ का विचार है कि अपनी इच्छाओं को रोकना नहीं चाहिए अपितु इन को पूरा करना चाहिए अन्यथा इस से रोग हो जाते हैं। ऐसा सोचना सब जगह ठीक नहीं है। ऐसा व्यक्ति तो पागल ही कहलाता है, जो कि एकदम अपनी इच्छा को पूरा करता है अर्थात जो अपने आप पर नियन्त्रण नहीं करता। वस्तुत: किसी की भी सारी इच्छायें पूरी नहीं हो सकतीं। उन पर उचित-अनुचित का पहले विचार, अपेक्षित होता है। तब पूरा करने का प्रश्न आता है और यह सब दम की भावना से ही सम्भव है।

15-अस्तेय

अस्तेय का अर्थ है-चोरी न करना और किसी की कोई भी चीज उससे पूछे बिना न लेना ही अस्तेय का मूल अभिप्राय है। जैसे कि शख और लिखित की कहानी प्रसिद्ध है, कि एक भाई ने दूसरे की अनुपस्थिति में उसके बाग से फल लिए। किसी की स्वाभाविक इच्छा के बिना उस से कुछ लेना भी अस्तेय ही है। आज कल राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक चन्दे (दान) उगाहने वालों की दृष्टि से यह बात विशेष विचारणीय है, क्योंकि इन क्षेत्रो में विशेष दबाव से दान लिया जाता है। देने वाले मन से देना नहीं चाहते, पर पहचान, मजबूरी, कार्य में रुकावट का डर दिया जाता है। सामाजिक दृष्टि से अपने हक आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह भी अस्तेय का उल्लघन है, क्योंकि इससे समाज में दूसरों को उन का भाग प्राप्त नहीं होता या वे प्राप्त करने में पिछड़ जाते हैं। स्तेय-चोरी, परिग्रह-अधिक संग्रह से आपाधापी, [illegible] अशान्ति, अमर्यादा, [illegible] फैलती है, जिस से दुख ही बढ़ता है। जब कोई दूसरों की चीजों अधिकारों, अवसरो, श्रम से उपार्जित फल-कमाई की चोरी नहीं करता है, तो सभी की सम्पत्ति, वस्तुएं, अधिकार और अवसर सुरक्षित रहते हैं।

(क्रमश:)

सबसे बड़ी भूल

प्रो० श्री [illegible] आर्य [illegible], अजनाला (अमृतसर) पंजाब 143102

भूल किस से नहीं होती है। छोटा हो या बड़ा भूल (गलती) छोटी हो या बड़ी हो तो भी भूल ही है, फिर छोटी-छोटी भूल करने से तथा ध्यान रहते जानबूझ कर भी ध्यान न देने के कारणों से भूलों की भरमार एवं पहाड़ बनता है। सत्य क्या है ? स्वयं विचारें-

भूल ही न की हो कभी जीवन में अथवा किसी ने कभी झूठ न बोला हो या चोरी न की हो, कभी भी शायद ही विश्व में कोई ऐसा विरला व्यक्ति हो।

इन्सान गल्ती (भूल) का पुतला है वह नर हो या बालक, कन्या, नारी-स्त्री हो, युवक हो, बूढ़ा हो, बच्चा हो।

बशर गलती (भूल) का पुतला है यह अक्सर हो ही जाती है।

पशु, पक्षी कीट पतंग से भले भूल न हो यदि हो भी जाए जैसे घरेलू कुत्ता रुखी-सूखी, आधी रोटी खाकर या भूखा रह कर भी स्वकर्त्तव्य (धर्म) डियूटी देता है एवं अनजाने में भी भौंकना नहीं भूलता है ? आप ही बतायें पाठकवृन्द, भूल गया तो कुत्ता नहीं।

मैं, मैं, मैं अथवा मेरा अपना, मेरा घर, मेरा बेटा आदि शब्द जिसमें मैं झलकता हो, हम कितनी ??र कहते हैं दिन भर में।

जरा विचारो न आत्म बन्धुओ- बकरा भी मैं-मैं करता है परन्तु उसका महत्व कितना है विचारो।

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या, जिस पथ में बिखरे शूल न हों।

नाविक की धैर्य परीक्षा क्या जब धारा ही प्रतिकूल न हो॥

मैं, मेरा अपना ही हमसे क्या-क्या कराता है। भूले जीवन की यात्रा में फिर भी विडम्बना है कि हमें अपनी भूल प्रतीत न हो कर दूसरों की भूलों को भूलते नहीं भले स्वभूल को भी झूठ बोल कर उसे छिपाते रहते हैं यही है मानव की भूल भुलिया या----खैर।

आत्म. बन्धुओं ! बड़ी भूल सब से क्या है ? पढ़े ध्यान से एक सूफी सन्त की बातचीत जो पुराने मित्र के द्वार पर खड़े आधी रात के समय उनसे जो वार्तालाप हुआ दोनों में, फिर स्वयं पर जरा विवेकभरी दृष्टि से तथा मेधा (विवेक) बुद्धि [illegible] आप पाये तभी चिन्तन करने का लाभ होता है अन्यथा दैनिक समाचार पत्र की ही भांति भूल जाएं आप भी प्रिय पाठक जी।

सूफी सन्त बायजीद रात्रि में एक गांव के पास से जा रहे थे तो इसी गांव में रहते पुराने मित्र की याद आ गई जबकि न याद किया बस आ गई पर अचानक, यह प्राय: हमारे संग भी होता है ठीक है न।

घर का किवाड़ खट खटाया, तो आवाज आई कौन है ? ध्वनि को पहचान कर कहा, "मैं हूं" यह सोच कर कि मेरी आवाज भी मेरा दोस्त (मित्र) पहचान लेगा जैसे मैंने पहचान ली है।

सूफी ने किवाड़ खटखटाने से पूर्व प्लान बनाया मन में कि पैदल चलते-चलते थकावट भी बहुत है, भूख भी लगी है पेट पूजा संग विश्राम भी हो जाएगा तो प्रेम मिलन भी यार तो है मेरा।

मैं हूं कि आवाज देने पर भी जब दरवाजा न खुला तो कई बार खट, खट, खट करने पर भी द्वार न खुला तो सोचा कि कहीं कोई भी न हो अन्दर, तभी याद आया कि दोस्त ने पूछा है कि, कौन है ?

सोच-सोच कर कहा, ओ मित्र! तुम मेरे लिए किवाड़ क्यों नहीं खोलता ? सुन कर भी अनसुना क्यों किया, चुप्पी क्यों साध ली- कैसा है तू दोस्त पहले ऐसा न था... मैं तुम्हारा दोस्त हूं।

भीतर से कड़कसर आवाज आई-भला कौन है वह नासमझ जो स्वयं को मैं---मैं मैं ही कहता है, क्योंकि मैं कहने का एकमात्र अधिकार सिवाय खुदा के एवं परमपिता परमात्मा के और किसी को भी नहीं, फिर मेरे प्यारे दोस्त तूने कैसे कहा मैं हूं ? तू मैं मैं क्यों कर रहा है। तू कौन है जरा बता तो सही।

सूफी सन्त को स्वयं की भूल (गलती) का पता चला, तभी गहराई से चिन्तन, मनन कर अनुभव किया कि जीवन की यह भी सबसे बड़ी भूल है, मैं के सिवाय और कुछ भी नहीं है....क्या ? मैं नाहक ही मैं मैं कर रहा हूं।

प्रभु (अल्ला) के द्वार पर यह मैं का ही ताला है। मैं पने को मिटा, अहम को मिटा कर तथा मैं कौन हूं ? कहां से आया, क्यों आया ? अब तक क्या किया ? अब क्या करना चाहिए ?

मैं पने को जो तोड़ देते हैं एवं अन्दर झांकते हैं, कहते हैं न यही बाहर के पट बन्द कर (नेत्र मून्द) भीतर के पट खोल तभी पिया मिलेंगे एवं आत्म साक्षात्कार होगा यह मैं मिटाने से होता है।

मैं मिटा कि प्रभु (भगवान) कहे या ईश्वर खुदा, वाहेगुरु मिलेगा ही बस सोच चिन्तन बनना चाहिए यह सर्वप्रथम मैं की ममता विलीन हुई मिटी कि अन्त:करण की जगी ज्योति, भगवान की मूर्तियों को बना करके मानव ने की कितनी बड़ी भूल (गल्ती) जबकि बे-मूरत न रूप न रंग न कद बुत फिर भी वाह रे मानव तेरी बुद्धि संग पुरुषार्थ का चमत्कार का कि स्वयं बनाके या बनवा कर उसे ही प्रभु ईश्वर का नाम दे पूजने लगा। क्या यह सब से बड़ी भूल नहीं है? यदि है तो मिटाता क्यो नहीं इन्सान---।

भूल को जान पहचान करके भी भूल को न दूर करना फिर भूल करना इन्सान का काम या शैतान का ?

भूल करके जो पछताये, उसे इन्सान कहते हैं।

गल्ती पर करे गल्ती उसे हैवान कहते हैं।

भूलों पर करे भूले उसे ही तो शैतान कहते हैं।

पथिक जो एक भूल बाद न करे भूल, उसे ही देव कहते हैं।

देवता, महामानव, महापुरुष वही बनता है जो भूल को सुधार करके फिर भूल न करे जीवन मे। भूल कभी आगे से नहीं होती जब मिट जाता है मैं पना (क्रमश:)

आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल भठिण्डा का शानदार परिणाम

प्रतिवर्ष की तरह, इस वर्ष भी आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के तत्वावधान में चलने वाले हमारे आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल भठिण्डा की बोर्ड की परीक्षाओं के परिणाम बहुत अच्छे रहे।

+2 (आर्टस) की परीक्षा में कुल 72 परीक्षार्थी बैठे। 26 छात्राओं ने प्रथम श्रेणी लेकर स्कूल का गौरव बढ़ाया। कुल परिणाम 98.8 प्रतिशत रहा। एक छात्रा कु. अन्तिम सुपुत्री श्री प्रकाश चन्द व रेशमा रानी ने 75 प्रतिशत अंक प्राप्त करके विद्यालय का व परिवार का नाम रौशन किया।

इसी प्रकार, दसवीं कक्षा की परीक्षा में कुल 126 छात्राएं बैठीं। कुल परिणाम 93 प्रतिशत रहा।

आठवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में कुल 115 परीक्षार्थी बैठे जिनमें 61 छात्राओं ने प्रथम श्रेणी लेकर स्कूल का गौरव बढ़ाया। कुल परिणाम 93 प्रतिशत रहा।

पाचवी कक्षा का परिणाम शत-प्रतिशत दिखाकर विद्यालय ने अपना रिकार्ड कायम रखा।

विशेष बात यह भी है कि आठवीं कक्षा के संस्कृत विषय के कुल 37 बच्चों में से 5 छात्राओ ने 99 प्रतिशत अंक प्राप्त करके दिखा दिया कि यह भाषा आज भी लोकप्रिय है।

इस सब का श्रेय सुयोग्य प्रधानाचार्या जी, अनुभवी प्रबन्धक समिति, प्रशिक्षित अध्यापिका वर्ग अभिभावकगण तथा परिश्रमी छात्राओं को है और ये सब बधाई के पात्र हैं। प्रधानाचार्या स्वय व्यक्तिगत रूप से रुचि लेकर समय-समय पर बच्चों को प्रेरणा देती रहती हैं।

—मैनेजर

पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना की ओर से 14-7-2002 रविवार को श्री अनिल सोन्धी बसन्त रोड, डा वाई सी मनोचा स्ट्रीट लुधियाना में पारिवारिक सत्संग सायं 5.30 से 7.30 बजे तक होगा।

पुनर्मिलन का बृहत् कार्यक्रम सम्पन्न

उड़ीसा के अन्य वनवासी जिलो की तरह पहाड़ जंगलों से घिरा फुलबाणी जिला भी ईसाई पादरियों से आक्रान्त है इसलिए उस जिले मे सार्वदेशिक आर्य प्रति. सभा के निर्देश पर पू. स्वामी धर्मानन्द जी की देखरेख में उत्कल आर्य प्रति सभा एवं उत्कल वैदिक यति मण्डल द्वारा पुनर्मिलन का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसी श्रृंखला में ग्राम गेडिगिंआ में 10,11 एवं 30 जून को पुनर्मिलन के दो बृहत् कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इन दोनों कार्यक्रमों में 286 परिवारों के हजारो ईसाइयो ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। —सुदर्शनदेवार्य (उपमन्त्री) उत्कल आर्य प्रति सभा

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(पृष्ठ 2 का शेष)

के प्रति जो हीनभाव थे उनमें विचार परिवर्तन कर महर्षि ने विश्व का महान् उपकार किया। नारी जागरण के इतिहास मे महर्षि का नाम स्वणाक्षरो मे लिखा जाएगा।

5 ऊच नीच मे समत्व भाव- उस समय अछूत और निम्न श्रेणी क लागो का जीवन बडा ही त्रस्त व हाहाकार पूर्ण था। वे सर्वथा मानवता और नागरिकता के अधिकारो से पतित ओर तिरस्कारपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। जात पात छुआछूत ऊच-नीच के भेद भाव ने समाज की कमर तोड रखी थी। इन बुराईयो के कारण देश को अवनति के गर्त मे जाता देख ऋषि तिलमिला उठे। उन्होने समाज की इन बुराइयो के विरुद्ध विद्राह का झण्डा उठाया।

उन्होने सम्पूर्ण विश्व के मानवो का एक ही ईश्वर की सन्तान बतलाकर पारस्परिक सौहाद व प्रेम प्रसार मे विश्व मैत्री के लिए महान् सन्देश दिया। महर्षि न कमगत वग व्यवस्था का प्रतिपादन कर अछूता की समस्या को मिटान का एक सफल उपाय विश्व के सामने रखा।

6 राजनैतिक मूलमन्त्र के दाता- ऋषि दयानन्द अखण्ड भारत के मूल-द्रष्टा थे। वे ही सर्वप्रथम ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने अनुभव किया जब तक देश पराधीनता की बेडिया मे जकडा रहेगा तब तक वह प्रगति नहीं कर सकता। प्रगति के लिए किसी भी देश का पराधीन हाना अभिशाप है। इसनिए उन्हान **'सत्यार्थ प्रकाश'** मे भी लिखा कि 'अच्छ से अच्छे विदेशी राज्य स बुर से बुरा स्वदेशी राज्य कई गुणा अच्छा है।'

राजनेतिक क्षेत्र मे जा विचार ओर मागदर्शन महर्षि ने **'सत्यार्थ प्रकाश'** मे दिया है यदि उसे अपनाया जाए तो नि सन्देह विश्व का प्रत्यक **'स्वराज्य'** सुराज्य मे परिवर्तित हा सकता है। महर्षि ने न केवल भारत को ही अपितु विश्व का भी स्वदेश प्रेम का पाठ पढाया। अनक खण्डो मे विभक्त भारत को एकता के सूत्र मे पिरोन के श्रेय महर्षि को ही है।

राष्ट्रीय भावना का बीजारापण कग्ने के लिए ही उन्होने गुजराती होते हुए भी राष्ट्र के सगठन के लिए हिन्दी भाषा का प्रचार और प्रसार किया और स्व-साहित्य का प्रणयन भी हिन्दी भाषा मे किया।

7. धर्म मे श्रद्धा और तर्क का स्थान- आर्य समाज के आने से पूर्व धर्म की बातो मे **'अकल का दखल'** नहीं था और धर्म के विषय मे तर्क करने को नास्तिकता का चिन्ह समझा जाता था। केवल विश्वास या ईमान पर ही बल दिया जाता था। जिसका परिणाम कुमारी मरियम से ईसा की उत्पत्ति रोटी के चार टुकडो से हजारो का पेट भरना, ईसा द्वारा पानी को शराब बनाना, मुर्दो को जीवित कर देना आदि प्रकृति विरूद्ध व असम्भव बातो को 'तथास्तु' कहकर मान लिया जाता था किन्तु महर्षि ने सभी धर्मों की प्रकृति विरुद्ध ऐसी बाता का खण्डन कर प्रत्येक बात मे बुद्धि और तर्क के लाने का उपदेश दिया। वेद प्रतिपादित एकेश्वरवाद का समर्थन किया।

8 समन्वयात्मक दृष्टिकोण- महर्षि ने विश्व के सम्मुख एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण रखा। ससार मे प्राय देखा जाता है कि मनुष्य मध्य मार्ग का अवलम्बन न करके किसी पराकाष्ठा पर तुल जात हें। उदाहरणार्थ कई पुरुष हैं जो केवल वैयक्तिक उन्नति से ही सन्तुष्ट रहते है ओर सामाजिक उन्नति की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते। दूसरे कुछ इस प्रकार के हैं जो अपनी शारीरिक, आत्मिक मानसिक शक्तियो को विकसित न करके केवल अन्यो की उन्नति के विचार मे ही तत्पर रहते हैं। एक तरफ ऐसे भी लोग हें जो चार्वाको के समान भोग का ही जीवन का ध्येय समझते हें। नवीन वेदान्ती ईसाई बोद्ध आदि ऐसे भी सम्प्रदाय * जा त्याग ही त्याग का उपदेश करते हैं। कुछ इहलोक का सुधारने का प्रयत्न करत हैं उन्ह परलाक की चिन्ता नही। कुछ परलोक को सुधारने मे इहलोक पर बिल्कुल ध्यान हीं रते।

यह महर्षि की अपार देन है कि उन्होने विश्व को इहलोक-परलोक त्याग भोग व्यक्ति और समाज के समन्वयात्मक रूप का ही व्यावहारिक एव उपयोगी बताया।

इसी प्रकार पुञ्जीवाद और साम्यवाद आदि वादो का भी उचित समन्वय कर आर्थिक क्षेत्र मे एक अनुकरणीय मार्ग प्रदशित कर वैदिक अर्थ-व्यवस्था पर उचित प्रकाश डाला।

9. आर्य समाज की नींव- महर्षि ने १८७५ ई को मुम्बई के गिरगाव मुहल्ले की मणिकचन्द की वाटिका मे मानव मात्र के कल्याण तथा सामाजिक व धार्मिक उत्थान के लिए 'आर्य समाज' के नाम से एक महान् अभियान का श्री गणेश किया।

दयालु दयानन्द ने विश्व प्रेम और लोक हित की भावना से प्रेरित होकर लोगों को आर्य समाज मे प्रविष्ट होने के लिए प्रेरित किया और सावधान किया कि आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य किसी समाज मे उनका हित सम्पादन न होगा।

"आर्य समाज" का अर्थ है सभ्य लोगो का समाज। महर्षि का विश्वास था कि भविष्य मे इस समाज मे ऐसे कर्मठ व्यक्ति उत्पन्न होगे जो आदर्शों की रक्षा उसके निर्धारित उद्देश्यो की पूर्ति में प्राण और प्रण से जुट जायेगे।

महर्षि ने डके की चोट से कहा कि वैदिक धर्म ही विज्ञान सम्मत धर्म है जहा धर्म और विज्ञान मिलकर चलते हैं। वेद के सिद्धान्त विज्ञान और दर्शन पर अवलम्बित हैं। महर्षि ने वेद-भाष्य मे स्थान स्थान पर यह दिखलाया कि वेदो में न केवल धर्म का अपितु विज्ञान का भी मूल है।

'वेद सत्यविद्या की पुस्तक है' इस उद्घोष को आर्य समाज के नियमा मे सम्मिलित करके वेदो की ओर लौटने का आह्वान किया।

महर्षि दयानन्द का जीवन दर्शन- महर्षि दयानन्द ने जगत् और जीवन के प्रति मध्य-मार्ग का अवलम्ब किया। वे जगत् को दुःखमय मानकर इसके त्यागपन की शिक्षा नहीं देते और न ही आसक्ति पर बल देते हैं। ऋषि ने लोक-अभ्युदय और परलोक की भावना का समन्वय करके धर्मानुकूल जीवन यापन पर बल दिया है। सन्देह और भय से ग्रसित प्राणियो के लिए दयानन्द का सन्देश शान्ति और प्रेम का है। मोहमयी प्रमादमयी निद्रा तथा ममता के जाल से लोगा को निकालकर वे अखण्ड ब्रह्मचर्य की भित्ती पर मानव का पुनर्निर्माण करना चाहते थे।

महर्षि दयानन्द ने अन्ध-विश्वासो व जडमूर्ति-पूजा का विरोध कर मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा का नया सन्देश दिया। जहा करोडो की सख्या में दीन-हीन जन हो वहा उनकी सहायता करने के स्थान पर किसी पत्थर की पूजा करना उस पर धनादि चढाना स्वामी दयानन्द का अभिमत नहीं था। उनका विचार था कि पूजा ही करनी है तो किसी अनाथ ओर दलित की करो। माला पुष्प और धन ही चढाना है तो जडमूर्ति की अपेक्षा किसी सजाव प्रतिमा (मनुष्य) पर चढाओ। इसी भावना से प्रेरित हाकर उन्होने यज्ञ की प्राचीन परम्परा का भी पुन प्रचलन किया। महर्षि की दृष्टि मे यज्ञ केवल धार्मिक कृत्य ही नहीं, हैं अपितु परोपकार का एक प्रकार ह क्योकि अपने परोपकारमय कर्मो से ही मनुष्य श्रेष्ठ मनुष्य बनता ह।

सत्य मार्ग के शुद्ध-बुद्ध योगी और विश्व-जागरण के इस क्रान्तिवीर को मेरा शत-शत नमन।

स्वतन्त्रता सैनिक पूज्य त्यागमुनि जी का देहावसान

जाने-माने स्वतन्त्रता सैनिक एव आर्य समाज के पुराने कार्यकर्ता तथा बीड (महाराष्ट्र) शहर के वयोवृद्ध सामाजिक प्रेरणास्थान पूज्य श्री त्यागमुनि जी का गत शुक्रवार दिन 21 जून को हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। अपनी आयु के 90 वर्षों मे अन्त तक वे स्वस्थ थे। पूज्य मुनि जी के दु.खद निधन से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई ह। उनके दु.खद निधन का समाचार सुनते ही बीड शहर एव परिसर मे सर्वत्र शोकग्रस्त वातावरण हुआ।

बीड शहर मे आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द व्यायामशाला की स्थापना तथा अन्य सामाजिक कार्यों का प्रगति आदि उपक्रमो क क्रियान्वयन का सारा श्रेय स्व त्यागमुनि जी को जाता है।

पूज्य मुनि जी के पार्थिव शरीर का शनिवार दि 22 जून को पूर्ण वैदिक रीति स अन्तिम सस्कार उनकी जन्मस्थली नालवडी ग्राम म सम्पन्न हुआ। आचार्य शिवमुनि जी विज्ञान मुनि जी, प मनोहर शास्त्री गुरुकुल एडसी के ब्रह्मचारियो ने यह संस्कार किया।

इससे पूर्व बीड शहर के मुख्य मार्गों म उनके पार्थिव देह की अन्तिम यात्रा निकाली गई। अन्तिम सस्कार मे महाराष्ट्र के उद्योग राज्यमन्त्री मा श्री जयदत्त क्षिरसागर विधायक सय्यद सलीम तथा विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रमुख नेता, महिला-पुरुष तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे। अनेकों ने अपनी भावभीनी श्रद्धाजलियाँ अर्पित की।

मुनिजी के पश्चात् 3 पुत्र, 3 बहुए तथा पौत्र-पौत्रियाँ विद्यमान हैं।

महाराष्ट्र में कार्यकर्त्ता संगोष्ठी

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से गत बुधवार दिनांक 11 जून 2002 को प्रातः 10.30 बजे प्रान्तीय आर्य कार्यकर्त्ता संगोष्ठी का आयोजन आर्य समाज परली वैजनाथ, जि. बीड (महाराष्ट्र) में किया गया। प्रस्तुत संगोष्ठी में प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल जी वधावन थे। संगोष्ठी की अध्यक्षता महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती ने की।

प्रांतीय सभा के इतिहास में शायद पहली बार ही इस प्रकार की संगोष्ठी का आयोजन किया गया होगा। इसमें भाग लेने हेतु सभांतर्गत सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि उत्साह के साथ पधारे थे।

विश्व का मार्गदर्शक आर्य समाज एवं उसके कार्यकर्त्ताओं का समस्या-ग्रस्त होना, आर्य समाज के विषय में समाज में गलत धारणाओं का फैलना, आपसी मतभेद एवं संघर्ष, वैदिक सिद्धान्तों के संरक्षण में हमारी कमजोरियां, आर्य ग्रन्थों का प्रचार एवं प्रसार, हमारी बढ़ती निष्क्रियताएं, नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं का आर्य समाज से हटकर काम करना, अन्य मतसम्प्रदायों के साथ बढ़ते समझौते, वर्ण एवं आश्रमव्यवस्था के पालन में आर्यों की अकार्यक्षमता, वर्तमान बढ़ती सभी समस्याओं में हमारी कर्महीनता, अनुशासनहीनता, पाश्चात्य कुप्रवाह को रोकने में असमर्थता आदि विषयों पर रखे गए बिन्दुओं पर प्रतिनिधियों ने उपायात्मक विचार रखे। साथ ही आर्य समाज अधिक गतिशील एवं सक्रिय कैसे बनें, इस पर भी विचारमन्थन हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा प्रस्तुत मन्त्रपाठ एवं स्वागतगीतिका से संगोष्ठी की शुरूआत हुई। आर्य समाज परली के प्रधान श्री रामपाल जी लोहया तथा आर्य समाज औराद (उमरगा) के प्रधान श्री प्रा. शिवाजीराव गायकवाड़ ने प्रतिनिधि के रूप में प्रमुख मार्गदर्शक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल जी वधावन एवं अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती का स्वागत किया। तत्पश्चात् प्रान्तीय सभा मन्त्री डॉ. सुग्रीव काले ने प्रस्तावना शब्द रखते हुए संगोष्ठी के आयोजन का उद्देश्य स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि आज वातावरण में आचारों-विचारों का प्रदूषण बढ़ रहा है तथा मनुष्यता लुप्तप्राय दिखाई दे रही है। आर्य समाज के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगने का समय आया है, अतः हमें आत्मपरीक्षण करने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं मार्गदर्शक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल जी वधावन ने कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज दुनिया की सबसे बड़ी मांग आर्य समाज ही है, अतः हमें बार-बार एक साथ बैठकर आत्मचिन्तन करना होगा। ग्राम, तहसील, जिला एवं प्रान्तीय स्तरों पर विचार विमर्श हेतु संगोष्ठियों का आयोजन करना होगा। आर्य समाज भवनों के दुरुपयोग पर प्रतिबन्ध लगाकर उनका उपयोग संस्कार एवं मार्गदर्शक केन्द्र के रूप में करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि किसी भी शराबी व कबाबी व्यक्ति को आर्य समाजों में प्रवेश न दिया जाए तथा अन्य अवैदिक मान्यताओं पर रोक लगाई जाए।

प्रसार माध्यमों के विषय में श्री वधावन ने कहा कि आर्य समाजों के कार्यक्रमों के वृत्तान्त, सैद्धान्तिक लेख तथा अन्य महत्वपूर्ण बातों की जानकारी कार्यकर्त्ता सदैव समाचार पत्रों में देते रहें। अखबारों से जुड़े रहना, यह समय की पुकार है। प्रसिद्धी करने में ही समय गवाना ठीक नहीं किन्तु अपनी गतिविधियों की यथार्थ जानकारी जनसामान्य तक पहुंचाना, यह भी एक प्रचार का माध्यम है। आर्य समाज के उपक्रमो के बारे में श्री वधावन ने कहा कि सत्संगों के कार्यक्रमों की रूपरेखा सुधारात्मक रूप से बननी चाहिए। आर्य समाज का हर सदस्य वक्ता बनें, इसलिए व्यक्ति तैयारी कर व्याख्यानों की शृंखला बनाये रखे। हमारा आर्य संगठन रचनात्मक कार्यों पर बल देने वाला बनें। आश्रमव्यवस्था का पालन भी दृढ़ता के साथ होना चाहिए। आर्य समाज राजनीति का अड्डा न बनें। आर्य कार्यकर्त्ताओं के आचारणात्मक जीवन का समाज के सामान्य घटक वर्गों के साथ राजनेताओं पर भी प्रभाव पडे। आर्य समाज की सदस्यता व्यक्ति पर नहीं, बल्कि पारिवारिक स्तर पर आधारित होनी चाहिए। सारा परिवार आर्य समाज का सदस्य बनें। आर्य परिवार एक दूसरों के साथ जुडे रहेंगे तो आपसी प्रेम व स्नेह बढ़ता रहेगा और आत्मचिन्तन करने तथा कमियों को दूर करने का मौका मिलेगा।

अन्त में श्री विमल जी वधावन ने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों की प्रशंसा करते हुए प्रान्तीय स्तर पर आयोजित की गई प्रस्तुत संगोष्ठी हेतु पदाधिकारियों का अभिनन्दन किया। संगोष्ठी में सर्वश्री ओमप्रकाश पराशर (लातूर) साहेबराव मांगले, (घाट पिंपरी-वाशी), इन्द्रजीत गिरी आर्य (मोगरगा-औसा), गोपाल भुरेवाल (जालना) प्रा देवदत्त तुंगार (नांदेड), भगवन्त कपूर (नाशिक), विजय कुमार वाघमारे (निलंगा), वशिष्ट आर्य (अंबाजोगाई), माधव देशपांडे (नाशिक), शंकरराव बिहराजदार (सोलापुर), बेधडक आर्य (गुंजोटी-उमरगा), श्रीमती इन्दुमती साबन्न (लातूर), श्रीमती वीरश्री आर्या (परली), विजय कुमार शेटकार (निलंगा), प्रकाश कच्छेवार (औराद शहाजानी), चन्द्रकान्त वेदालंकार आदियों ने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी में सभा के अन्तर्गत आने वाली अनेकों आर्य समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी

पृष्ठ 1 का शेष

ऋषिवर के पश्चात् गुरुदत्त आर्य-समाज के पहले शास्त्रार्थ-महारथी बने। उनकी सूझ-बूझ मौलिक थी।

वह तरुण-दार्शनिक एवं ऋषि के स्वप्नों की प्रतिमूर्ति थे। यदि वे इस क्षेत्र में कार्य न करते तो वैदिक-शास्त्रों का स्वरूप ही बिगड जाता। अत: उन्होने जो पद-चिन्ह छोडे वे भविष्य मे आर्य-समाज के मार्गदर्शक बन गए।

योग-साधक एवं मेधावी लेखक : गुरुदत्त ऋषि-कार्य को पूरा करने के लिए उन जैसा विद्वान् तपस्वी और योगी बनने के लिए कृत-सकल्प थे । कम लोग जानते होंगे कि उनको प्राणायाम और योग-साधना में अद्भुत अधिकार प्राप्त था।

उनकी जीवन-शैली बडी सरल, सुन्दर और आकर्षक थी। उनका जीवन एक खुली किताब था। छल, कपट और दुराग्रह निनान्त नहीं थे। सत्य, सादगी और ईमानदारी उनके आभूषण थे। अत: तरुण अरमानों और यौवन की ओर उनका ध्यान नहीं था। इसलिए युवावस्था में ही उनका जीवन ऋषियों जैसा दिखाई देता था।

उनका मानना था कि धर्म के मार्ग में अर्थ-लिप्सा बाधक है। अत: धन उनके लिए जीवन यापन का एक साधन मात्र था। इसलिए उन्होंने लक्ष्मी के मन्दिर में पांव रखने की कभी नहीं सोची।' जीवनीकार के अनुसार-'उनकी सम्पत्ति चन्द कपडे, कुछ पुस्तकें और असंख्य मित्र एव प्रशंसक थे। लाहौर में अपने विद्यार्थी-जीवन से ही वे जिस किराए के मकान मे रहते थे, उसी में ज्ञान-विज्ञान के क्षितिजों को छुआ और पार किया।'

ज्ञानार्जन-वृत्ति के कारण 'पण्डित की उपाधि प्राप्त कर जातीय-बन्धन से मुक्ति-महायज्ञ के प्रथम यजमान-गुरुदत्त ही थे ? उनका मानना था कि आर्य ग्रन्थो का पढना अमूल्य मोतियों को पाना है। अत: उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश को 18 बार पढा और कहा कि प्रत्येक पुनरावृत्ति पर उन्हें सदा नई बातों का बोध हुआ है।

वे ऊंचे दर्जे के चिन्तक ओर लेखक थे। सुन्दर और उपर्युक्त शब्द उनके लेखो मे मोतियों की भाति जडे रहते थे। विश्व धर्म-सम्मेलन के अवसर पर, रुग्ण होने के कारण वे वहां स्वय तो नहीं जा पाए किन्तु उनकी दो पुस्तकें-'उपनिषदों का भाष्य' तथा 'जीवात्मा के प्रमाण' शिकागो में भेजी गई। जो वहां पढ़ी गई और फिर प्रकाशित की गई।

स्वामी श्रद्धानन्द के अनुसार "उस समय गुरुदत्त के लेखों के अतिरिक्त योरुप और अमेरिका में वेदों की उच्च-शिक्षा को फैलाने का अन्य कोई साधन न था।' योरुप उनके लेखन-कार्य से चमत्कृत था। अत: परिमार्जित एवं मुहावरेदार अंग्रेजी में लिखित चौबीस वर्षीय गुरुदत्त के लेखों ने पश्चिम में हलचल मचा दी थी। अत: उन द्वारा प्रणीत 'वैदिक संज्ञा-विज्ञान' नामक पुस्तक आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में डिग्री कक्षा के लिए सस्कृत की पाठ्य पुस्तक बनाई गई थी।

डी.ए.वी. आन्दोलन एवं उसकी स्थापना : 'विद्यार्थी' जी डी ए वी आन्दोलन के संस्थापक थे। वे आत्मा के पुजारी थे। अत: वे दयानन्द का सच्चा स्मारक वेदों का विश्व-प्रचार मानते थे। इसलिए उनके मन में डी.ए.वी. शिक्षा संस्था का ख्याल आया। यह आन्दोलन पूर्व और पश्चिम के मिलन का प्रयास था। जो उस समय की माग थी। अत: इसे सम्पन्न करने हुते उन्होंने अपनी समस्त आयु की सतत साधना के फल को न्यौछावर कर दिया। जिसमें उन्हें अनेक विरोधों का भी सामना करना पडा किन्तु राह के पत्थर सरिता-वेग को कब रोक पाए हैं।

वे शब्दों के शिल्पी थे और डी ए वी कालेज आन्दोलन को लोकप्रिय बनाने में उनके जादू भरे भाषण राम-बाण सिद्ध हुए। इसके लिए जब वे चन्दा एकत्र करने मैदान में उतरे, तो मारा आर्य-जगत् उनके पीछे चल पडा एवं अध्य काल मे ही कालेज बनकर शिक्षा फैलाने लग पड़ा। वस्तुत: गुरुदत्त एक व्यक्ति नहीं-एक आन्दोलन बन गए थे। जीवनीकार के अनुसार-'जगद् गुरु ने उन्हें आर्य-समाज को देकर उनका गुरुदत्त नाम सार्थक कर दिया था।'

उपदेशक-विद्यालय के विचार के जन्मदाता भी वही थे, जो आज भी वेदोध. 'के सन्देश-पुष्पों को घर-घर पहुचाने का कार्य कर रहे हैं।

संक्षेपत: विद्यावारिधि गुरुदत्त ने 1883-90 के इन 7-8 वर्षों में इतना कार्य किया जितना साधारण व्यक्ति अनेक दशकों में भी नहीं कर पाता है। वे जो भी कार्य करते, सच्चे मन से करते थे एवं उनका मूलमंत्र था-'योग: कर्मसु कौशलम्।' वे गौरवमय आर्य-इतिहास के नींव के पत्थर बने और आर्य-समाज के भव्य-भवन को आधार प्रदान कर गए। वस्तुत: वह अलौकिक ज्ञान-ज्योतिपुंज स्व प काल [illegible] कर एक दीर्घ कालीन प्रकाश देकर-- महाभारत की यह उक्ति चरितार्थ कर गए कि-'मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयो न तु धूमायितं चिरम्।'

किन्तु इस जीवनी में एक बात अवश्य खटकती है कि इसमें पं. लेखराम की जीवनी में वर्णित उनकी सहधर्मिणी के वर्णन की भांति, यहां गुरुदत्त की आर्धांगिनी का उल्लेख नहीं है। क्योंकि हर सफल व्यक्ति की सफलता के पीछे उसकी [illegible] है। आशा है, जीवनीकार आगामी प्रकाश में इस पर अवश्य विचार करेंगे।

वस्तुत: जीवनीकार की उच्चस्तरीय साहित्यिक भाषा 'विद्यार्थी' जी के अद्वितीय जीवन को साकार करती दिखाई देती है। एवं उनकी प्रांजल भाषा की फुहार गुरुदत्त की धवल कीर्ति-प्रतिमा को निखार रही है और वह ज्योत्स्ना-स्नात 'ताज' की भांति दूर से ही गौरवमण्डित दिखाई दे रही है।

सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु !

वेदों मे कामना की गई है-**सर्वा आशा मम 'मित्र भवन्तु'** अर्थात् "सारी दिशाएं हमारी मित्र हो।" 'मित्र' का अर्थ है; वह व्यक्ति (जो प्रतीकात्मक ढंग से राष्ट्रीय नागरिकता एवं सुरक्षा-व्यवस्था का भी प्रतीकार्थ देता है), जो संकट से बचाता है-मीयात्-संकटात् त्रायते-बचाता है। वस्तुत: सर्वतोभद्र राष्ट्र की सम्पूर्ण कल्याण कामना का मूल रहस्य इस मंत्रांश में छिपा हुआ है।

वास्तविक अर्थों में सारी दिशाएं हमारी मित्र कब होंगी ? जब हमारे राष्ट्र को बाह्य एवं आन्तरिक सुरक्षा प्राप्त होगी। **बाह्य सुरक्षा** तो तभी मिलेगी जब हमारी सीमाएं सुरक्षित हो। हमारे देश की उत्तर पूर्वी सीमा कितनी संवेदनशील एवं असुरक्षित है, इसका ज्ञान हमे 1962 ई. में हुए चीनी आक्रमण से हो चुका है। आज भी उत्तर-पूर्वी सीमान्त का एक बड़ा भू-भाग चीन के कब्जे में है, जिसको भारत को लौटाने के लिए पारस्परिक राजनीतिक वार्त्ताएं चल रही हैं। दक्षिण-पूर्व भारत को तमिल आतंकवादियों से बचाते हुए चलना है। तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता उन पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाने एवं सुरक्षात्मक कार्रवाई के मामले में चौकस रहने के लिए बराबर आगाह कर रही हैं। उत्तर-पश्चिम में अपने जन्म से ही पाकिस्तान केवल वैर-भाव रखता आया है, हमारे देश पर थोपे गये युद्धों मे मुंह की खाकर भी अपने अन्दर से, खासकर तथाकथित आजाद कश्मीर से जो आतंकवादी हरकतें चलाता रहा है और जम्मू-कश्मीर मे घुसपैठिये भाड़े के आतंकवादियों को शह देता रहा है, वह हमारे लिए सरदर्द बन गया है। इस सरदर्द के इलाज का काम बस, इसी बार हमारे देश ने थोड़ा बहुत किया है। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने जिस कूटनीतिक बुद्धि एवं सामरिक सन्नद्धता का परिचय दिया है, वह निश्चय ही प्रशंसनीय हैं। इस दिशा मे अपनी सुरक्षात्मक एवं बैरियो पर प्रहारात्मक तैयारियां और बेहतर होनी चाहिएं।

पर हमे नहीं भूलना चाहिए कि बाहरी सुरक्षा से कम महत्वपूर्ण **आन्तिरक सुरक्षा** का प्रश्न नहीं है। आन्तरिक सुरक्षा का सबसे सवेदनशील पहलू धर्मान्तरण है। सभी धर्मों के मानने वाले इस साम्प्रदायकिता विहीन (Secular) राष्ट्र मे फले-फूलें, भला इसमें किसको आपत्ति हो सकती है। बावजूद इसके इस बात के लिए चौकस होना जरूरी है कि धर्म-प्रचार के नाम पर जो साम्प्रदायिक ताकतें इस विशाल राष्ट्र के राजनीतिक स्वरूप को लगातार विभाजन की ओर प्रेरित कर रही है, उन पर पूरी तरह से अकुंश लगे, उनकी तथाकथित मिशनरी गतिविधियों पर कड़ी चौकसी रखी जाए और इस बात की पूरी-पूरी व्यवस्था की जाए कि अपने गलत उद्देश्यो के लिए उन्हे बाहरी राष्ट्रों से धन प्राप्त न हो। राष्ट्र के किसी भी भाग मे ऐसे असन्तोष को पनपने नहीं दिया जाए, जिससे वह इन राष्ट्रविरोधी ताकतों की शिकार बनें। साथ ही, हमारे राष्ट्र के कर्णधार अल्पसंख्यकों के गत तुष्टीकरण की नीति से मुक्त हों।

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ । दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

दूरभाष ☎ : 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 14 सृष्टि संवत 1960853103, 21 जुलाई, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी की दक्षिण अफ्रीका यात्रा

आर्य युवक संघ वैदिक प्रचार में अग्रणी-कैप्टन देवरत्न आर्य

22 मई 2002 से 16 जून 2002 तक दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर गए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न आर्य को एक बहुत ही सादे विदाई समारोह में दिल्ली हवाई अड्डे से भेजा गया। दक्षिण अफ्रीका पहुंचने से पूर्व उनका कार्यक्रम मॉरीशस जाने का भी था। जहां वे अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पहुंचे और वहां से दक्षिण अफ्रीका के लिए प्रस्थान किया। मन में उल्लास एवं आशाओं को बांधे वायुयान में सोचते जा रहे थे कि दक्षिण अफ्रीका की भूमि पर प्रथम बार जा रहा हूं वहां की आर्य जनता मेरे से परिचित नहीं है। जबकि आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के प्रधान श्री राम भरोसे जी कई बार मुम्बई पधारे थे और देवरत्न जी से बडा अच्छा सम्बन्ध था। लगभग 12 घंटे की हवाई यात्रा करने के उपरान्त आप साय पोने पांच बजे दक्षिण अफ्रीका की गजधानी पहुंचे और वायुयान से उतरत ही दूर ओ३म् ध्वजो का एक बहुत बडा झुंड दृष्टिगोचर हुआ। असंख्य आर्य नर नारी प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य को लेने पहुंचे हुए थे। आगमन हाल से लेकर बाहर गाड़ी तक बच्चे हाथो में छोटा-छोटी ओ३म् पताकाओं से कप्टन साहब का स्वागत कर रहे थे। पूरी आर्य जनता मे कैप्टन साहब के आगमन पर जो उत्साह और उल्लास था वह उनके चेहरों से दिखाई पड रहा था। आर्यन बैनवलेट हाल डरबन मे श्री प्रधान जी के रहने की व्यवस्था थी।

वहां पहुंचने के उपरान्त यह सूचित किया गया कि वह आर्य प्रतिनिधि सभा के निमंत्रण पर नहीं बल्कि आर्य युवक संघ के निमंत्रण पर दक्षिण अफ्रीका आये हैं और यह वर्ष आर्य युवक संघ की 10 वीं वर्षगांठ के रूप में आयोजित किया जाना है। इसी उपलक्ष्य में आपको वहां आमंत्रित किया गया था। कुछ विचित्र सा लग रहा था कि आर्य प्रतिनिधि सभा का निमंत्रण न होकर युवकों का आमंत्रण क्यों और प्रतिनिधि सभा इसमें कितना सहयोग दे रही है प्रधान जी के लिए यह जानना अति आवश्यक था। आपको सूचित किया गया कि स्वामी शंकरानन्द जो कि भारत से आये थे उन्होंने यहां की तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए सर्वप्रथम आर्य युवक संघ की ही स्थापना की थी और संघ की स्थापना के 10 वर्ष के उपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका को सगठित किया गया था। आर्य युवक संघ एक स्वतंत्र आर्य संस्था हे और विशेष रूप से दीन दुखियो की सेवा आर्य अनाथालय के माध्यम से, आर्य अस्पताल के माध्यम से, वृद्ध आश्रम एवं अन्य कई प्रकार की सेवाओ के माध्यम से आर्य समा का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। उन क कार्य कलापो को देख एवं र। प्रधान जी चकित थे। आपके श्चर्य का ठिकाना तब नहीं रहा जब अपनी इस यात्रा के बीच दक्षिण अफ्रीका स्थित भारतीय राजदूत से मुलाकात के अन्तर्गत उन्होंने विशेष रूप से आर्यन बैनवलेन्ट हाल की प्रशसा की और आपको वहां अवश्य जाने के लिए कहा। यहां आपको सूचित कर दूं कि आर्य युवक सघ में अधिक युवक न होकर आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के अधिकारी ही सक्रिय हैं। यहां आर्य युवक संघ की गतिविधियों को विस्तार से बता पाना संभव नहीं है इसलिए अलग से एक विज्ञप्ति प्रकाशनार्थ शीघ्र ही भेजी जायेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री राम भरोसे जी की छवि पूरे अफ्रीका मे आधुनिक महात्मा गांधी जैसी है। उनके द्वारा किये जा रहे आर्य समाज के माध्यम से सेवा कार्यो को दक्षिण अफ्रीका की सरकार भी मान्यता देती है। श्री राम भरोसे जी के विषय मे अधिक जानकारी प्राप्त होने पर ये सूचना मिली कि श्री राम भरोसे जी. जब 7 वर्ष के बालक थे तब असहाय हालत में इसी आर्य अनाथालय मे आये थे जिसे आज आर्य बैनवलेन्ट हाल के नाम से जाना जाता है। आप अपने कार्य क्षेत्र में रिटायर होने के उपरान्त इसी आर्य अनाथालय को संरक्षक के रूप मे अपनी सेवाएं दे रहे हैं। जबकि उनके बच्चे सरकार मे अच्छे पदों पर आसीन हैं और घर की हर प्रकार की सुख सुविधा को त्याग कर आप इस अनाथालय मे एक साधारण से फ्लैट मे अपना जीवन एक सन्यासी की तरह व्यतीत कर रहे हैं।

"नमस्ते जी" के प्रचलन

सबसे हर्ष का विषय था पूरी दक्षिण अफ्रीका की यात्रा मे जो प्रधानजी के लिए रहा वह था प्रत्येक आर्य दक्षिण अफ्रीकी व्यक्ति के मुख से 'नमस्ते जी' का उच्चारण। ऐसे कई व्यक्ति हैं जो हिन्दी अथवा सस्कृत नहीं जानते लेकिन आर्य समाज से किसी न किसी माध्यम से जुड़े हैं 'नमस्ते जी' का प्रयोग करते हैं और केवल मुख से उच्चारण ही नहीं दोनो हाथ जोडकर पूर्ण मुद्रा मे 'नमस्ते जी' का प्रयोग करते हैं। प्रधान जी कल्पना कर रहे थे भारत वर्ष में लुप्त होते नमस्ते के उच्चारण की।

वेद मंदिर

यात्रा के दौरान उत्सुकता उस समय बढ गयी जब वेद मंदिर के विषय मे बताया गया। प्रधान जी ने इसे देखने की इच्छा प्रकट की। तो स्थानीय आर्य बन्धुओ ने बताया कि यह वेद मंदिर आर्य समाज के अधीन नहीं है। यह दक्षिण अफ्रीका मे अन्य हिन्दू संस्थाओ द्वारा स्थापित और संचालित है। जिस पर प्रधान जी ने घोर आपत्ति एवं आश्चर्य जतलाया। विस्तृत खोज के उपरान्त एवं जैसा पुराने वृद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो ने सूचित किया कि एक समय था जब आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन एव दक्षिण भारतीय समुदाय के लोग इकट्ठे होकर कार्य किया करते थे लेकिन आर्यसमाज के प्रचारक अधिकतर अपने प्रचार माध्यमो मे खण्डन अधिक करते थे और अपनी वैदिक मान्यताओं का प्रचार कम करते थे इसी कारण एक बहुन बडा दक्षिण अफ्रीका का हिन्दू निवासी आर्य समाज से दूर होता गया पर आर्य मान्यताओ से प्रेरित था, ऐसे ही अलग हुए व्यक्तियो ने वेद मंदिर का निर्माण किया ओर यह वेद मंदिर अपनी वास्तुकला मे इतना भव्य और सुन्दर है कि इसे पर्यटन के हिसाब से भी आकर्षण का केन्द्र माना जाता हे।

सभी आर्य समाजों में एकरूपता

यात्रा के अन्तर्गत प्रधान जी लगभग दक्षिण अफ्रीका की सभी आर्य समाजो मे व्यक्तिगत रूप से पहुचा और सभी ने वहा विशेष कार्यक्रमो का भी आयोजन किया। लेकिन सभी आर्य समाजो मे यज्ञ से लेकर शान्ति पाठ तक मे पूर्ण पद्धति एक जैसी थी। लेकिन कुछ

(क्रमशः)

सब मतों का आदिमूल : वैदिक धर्म

डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष संस्कृत सेवा संस्थान, रोहतक

संसार में सबसे प्राचीन पुस्तक वेद है। जैसा कि प्रो. मैक्समूलर महोदय ने लिखा है-'The Rigveda is the oldest-book in the library of the world' अर्थात् संसार के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद है।

यूरोप के विद्वान वेदों को 6-7 हजार वर्ष पुराना मानते हैं। आर्यो का सिद्धान्त है, कि वेद सृष्टि रचना के समय ही अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों के पवित्र हृदयों में ईश्वर के द्वारा प्रकाशित किये गये। आर्यलोग सृष्टि संवत् मानते हैं और इसका संकल्प में पाठ भी करते हैं। **"द्वितीयप्रहार्धे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे चतुर्युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे"** अर्थात् यह सृष्टि का दूसरा पहर चल रहा है। जिसमें वैवस्वतमन्वन्तर अब है, और इसकी 27वीं चतुर्युगी बीत रही है, तथा उसका यह कलियुग है, जिसको आरम्भ हुये पांच हजार वर्ष से अधिक हो चुके हैं।

इससे यह सिद्ध होता है कि वैदिक धर्म सृष्टि रचना के साथ ही आरम्भ हुआ। अत: संसार का सबसे पुराना धर्म है। वैदिक धर्म का प्रचार भूखण्ड में महाभारत काल तक रहा और उस समय तक संसार में अन्य कोई मत (धर्म) पैदा नहीं हुआ था। अन्य सभी मत महाभारत काल के पश्चात् पांच हजार वर्ष के अन्दर ही प्रचलित हुये हैं। ये वैदिक धर्म के ही एक दो सिद्धान्तों को लेकर, और उनमें कुछ अपनी बातें मिलाकर आगे बढ़े हैं।

1. पारसी मत-वैदिक धर्म के पश्चात् सबसे पुराना धर्म पारसी धर्म है। जिसको लगभग 4500 वर्ष होते हैं। इसके प्रवर्तक श्री जरदुश्त महोदय थे। जो हजरत मूसा से 500 वर्ष पहले फ़ारस में उत्पन्न हुए थे। उनकी बनाई हुई पारसियों की पवित्र पुस्तक **'जिन्दावस्ता'** है जो कि वेदो को आधार मानकर लिखी गई है। सर विलियन जोंस ने लिखा है, जब मैंने जिन्दावस्ता की शब्दावली को देखा तो मैं महान् आश्चर्य में पड़ गया कि उसके प्रत्येक 10 शब्दों में से 8 शब्द शुद्ध संस्कृत भाषा के हैं।" विद्वानों का मत है कि जिन्दावस्ता के बहुत से वचनों को शुद्ध संस्कृत भाषा में बदला जा सकता है।

पारसी लोग स्वयं को 'आर्य' मानते थे और आर्यो का बड़ा मान करते थे जिनको मजद (मेध-यज्ञ) ने उत्पन्न किया। पारसी धर्म के निम्नलिखित सिद्धान्त वैदिक धर्म से लिये गये हैं।

1. जिन्दावस्ता में चार वर्ण माने हैं-पुरोहित, योद्धा, व्यापारी और मजदूर। ये आर्यों के ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र चार वर्ण नहीं तो और क्या हैं ?

2. पारसी लोग यज्ञोपवीत संस्कार बड़े धूमधाम से मनाते हैं।

3. पारसी लोग प्रतिदिन अग्नि में अपने मन्त्रों से होम करते हैं। वे वैदिक सोम को (होम बूटी) कहते हैं।

4. पारसी लोग एक ईश्वर को ही पूज्य मानते हैं।

5. पारसी लोग पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।

6. पारसी लोग सृष्टि को प्रवाह से अनादि मानते हैं। चार युगों की मान्यता वैदिक धर्म के अनुसार समझते हैं।

7. वे गोरक्षा करना अपना धर्म समझते हैं।

8. "शन्नो देवी" और गायत्री मन्त्र थोड़े से परिवर्तन के साथ जिन्दावस्ता में मिलता है। पारसी लोग इनका संध्या के रूप में पाठ करते हैं।

2. यहूदी मत-पारसी मत के प्रवर्त्तक श्री जरदुशत महोदय के समकालीन श्री हजरत इब्राहिम थे। श्री इब्राहिम सैमिटिक वंश के थे। श्री इब्राहिम के बाद ही सैमिटिक वंश के लोगों मे यहूदी मत प्रचलित हुआ। इस मत को चले हुए लगभग 4000 वर्ष होते हैं। सेमिटिक लोगों का जब पारसी लोगों से सम्पर्क हुआ तब उनकी बहुत सी बातें लेकर हजरत मूसा ने यहूदी मत का प्रचार किया। बाईबल की पुरानी किताब ही उनका धर्मग्रन्थ है। शैतान का मानना, देवताओं का विचार, जगत् की उत्पत्ति, स्वर्ग और नरक आदि के सिद्धान्त यहूदी मत में पारसी मत से लिये गये हैं।

3. बौद्धमत-महाभारत के युद्ध के पश्चात् वैदिक धर्म का ह्रास होने लगा। व्यक्ति को जन्म के आधार पर छोटा-बड़ा माना जाने लगा। शूद्र और स्त्री दोनों के लिए वेदों का पढ़ना-पढ़ाना बंद कर दिया गया। देवताओं के नाम पर पशुओं की बलि दी जाने लगी। वैदिक यज्ञों में रक्त की धाराएं बहने लगी। ऐसे समय में आज से लगभग 2400 वर्ष पूर्व भारत में भगवान् बुद्ध का जन्म हुआ। उन्होंने अपने समय में प्रचलित अवैदिक प्रथाओं का जोरदार खण्डन किया। यज्ञों में हिंसा का विरोध किया। अभिमानी तथा पाखण्डी ब्राह्मणों को मुंहतोड़ उत्तर दिये। महात्मा बुद्ध के शब्दों का लक्ष्य पढ़िये-

न जटाहि न गोत्रेन न जच्चा होति ब्राह्मणो।

यह सच्चं च धम्मो च सो सुखी सच ब्राह्मणो॥ (धम्मपद)

अर्थ-कोई मनुष्य जटा रखने, गोत्र अथवा जाति से ब्राह्मण नहीं हो सकता। सच्चा ब्राह्मण वह है जिसमें सत्य और धर्म है।

महात्मा बुद्ध का कथन है कि मैं कोई नया धर्म नहीं चला रहा हूं। मैं प्राचीन वैदिक धर्म का ही प्रचार कर रहा हूं। महात्मा बुद्ध ने सत्य पर बहुत बल दिया। उनके आठ सत्य हैं-सत्य-विश्वास, सत्य-कामना, सत्यवचन, सत्य व्यवहार, जीवन निर्वाह, सत्य उपाय, सत्य उद्योग, सत्य विचार और सत्य संकल्प।

"अहिंसा परमोधर्म:" महात्मा बुद्ध के उपदेशों का मूलमन्त्र है। पुनर्जन्म, पिता सेवा, दया, सदाचार आदि के सिद्धान्त वैदिक धर्म के समान बौद्धमत में भी माने जाते हैं।

4. ईसाई मत-ईसाई मत को लगभग 2000 वर्ष हुये हैं। इसके प्रवर्तक हजरत ईसा मसीह थे। ये फिलिस्तीन के जैरूसलम नगर में उत्पन्न हुये थे। उनके जन्म से पहले सम्राट अशोक के द्वारा भेजे गये बौद्ध भिक्षु और उपदेशक लोग फिलिस्तीन, सीरिया और मिस्र आदि देशों में प्रचारार्थ पहुंच चुके थे। इसलिए हजरत ईसा मसीह पर बौद्ध मत का प्रभाव था। हजरत ईसा मसीह ईसाई मत का आरम्भ करने से पूर्व भारत में आये थे। वे पंजाब और काशी में भ्रमण करके बौद्धों के प्रसिद्ध केन्द्र गया में बौद्ध भिक्षुओं से भी मिले थे। तत्पश्चात् वे तिब्बत भी गये। इसलिये ईसाई मत के अनेक सिद्धान्त बौद्धमत से मिलते हैं।

ईसाई मत को ग्रहण करते समय "बपतिस्मा" दिया जाता है। यह हजरत ईसा मसीह का चलाया हुआ नहीं है। यह तो बौद्ध धर्म की रीति है। बौद्ध धर्म प्रवेश संस्कार जल से किया जाता है। जिसका नाम 'अभिषेक' है। यह अभिषेक भी वैदिक धर्म से ही बौद्ध धर्म में गया है।

बौद्ध धर्म और ईसाई मत में बड़ी समानता दिखाई देती है। महात्मा बुद्ध का उपदेश है-"क्रोध को प्रेम से जीतना चाहिए। बुराई को भलाई से, लालच को उदारता से और झूठ को सत्य से (धम्मपद)। हजरत ईसा मसीह का उपदेश है-"अपने वैरियों को प्यार करो। जो तुम्हें शाप दे उनको आशीष दो। जो तुम से वैर करे उनकी भलाई करो। जो तुम्हारा अपमान करे और सतावे उनके लिए प्रार्थना करो। (बाईबल)।"

4. इस्लाम मत-हजरत मुहम्मद साहब के जन्म से पहले अरब देश में यहूदी और ईसाई मत का प्रचार था। हजरत मुहम्मद ने आज से लगभग 1400 वर्ष पहले अरब में जन्म लेकर वहां इस्लाम मत का प्रचार किया। उस समय में प्रचलित यहूदी और ईसाई मत का प्रभाव इस्लाम मत पर पड़ा। इस विषय में श्री सर सैय्यद अहमद खां ने लिखा है कि-'इस्लाम धर्म में किसी दूसरे को पूजनीय मानना, और मूर्तिपूजा निषेध, यहूदी मत के समान हैं। सबसे उत्तम शिक्षाये यहूदी मत और इस्लाम में एक ही हैं। जैसे चोरी न करना, व्यभिचार से बचना, माता-पिता का आदर करना, झूठी साक्षी न देना इत्यादि। नमाज का समय और संख्या भी यहूदी मत से मिलती है। नमाज के बुलाने के लिए यहूदियों में नरसिंह बजाया जाता है। ईसाइयों में घण्टा बजाया जाता है और मुसलमानों में अजां लगाई जाती है। इस्लामी मत में बलिदानों का विधान है, रोजे रखे जाते हैं। जुम्मा को पवित्र दिन मानते हैं, खतना कराते हैं, निकाह कराते हैं। शैतान का अस्तित्व पापों का दण्ड, स्वर्ग

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

कर्म फल

कई बन्धुओं की ऐसी धारणा है कि परमात्मा की भक्ति से कर्मो का फल बदल जाता है। परमात्मा भक्ति से खुश होकर पापों को क्षमा कर देता है। कई लोगों का ऐसा मत है कि यदि परमात्मा की भक्ति करने से पाप क्षमा नहीं होते तो उसकी भक्ति क्यों की जाए ? पाप करने वाले लोग, भ्रष्टाचार करने वाले लोग, परमात्मा को न मानने वाले लोग, सुख पा रहे हैं तो कैसे मान लें कि परमात्मा कर्मों का फल देता है ? कई लोग तो यहां तक कहते हैं परमात्मा नाम की कोई वस्तु है ही नहीं, यदि परमात्मा कहीं है या वह सर्व व्यापक है, सर्वान्तरयामी है तो वह पापियों को, आतंकवादियों को, दुराचारियों को, भ्रष्टाचारियों को दण्ड क्यों नहीं देता ?

ऐसे प्रश्न तो बहुत हैं और उनका उत्तर भी दिया जा सकता है। वास्तव में मानव की बुद्धि जहां तक सोचती है वहां तक ही वह कुछ समझ पाता है उससे आगे उसकी कुछ भी समझ में नहीं आता। जितना-जितना जिस-जिस की बुद्धि का विकास होता है उतना-उतना ही वह इन्सान विकास को उच्चता को प्राप्त कर लेता है। इसीलिए गायत्री मन्त्र में परमात्मा से न धन मांगा गया न सुख शान्ति मांगी गई न कोई और ऐश्वर्य मांगा गया यदि मांगी गई है तो केवल मेधा बुद्धि मांगी गई है, क्योंकि परमात्मा को पा लेने के लिए व उसे जानने के लिए तथा उसकी भक्ति करने के लिए भी बुद्धि की आवश्यकता है मूढ़ व्यक्ति उसे न पा सकता है, न जान सकता है और न समझ सकता है। उसे समझने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है।

कई मानव तो ऐसा समझते हैं कि परमात्मा जो चाहता है वह कर सकता है, वह सब कुछ कर सकता है, परन्तु ऐसी बात नहीं, परमात्मा सब कुछ नहीं कर सकता। वह वही करता है जो उसे करना चाहिए। वह अपने नियमों से बाहर नहीं जाता। जो भी करता है नियमानुसार करता है, जो ठीक है वही करता है, वह कभी गल्त नहीं करता। उसका न्याय अटल है वह किसी से अन्याय भी नहीं करता, क्योंकि वह न्यायकारी है। वह किसी को दुख नहीं दे सकता क्योंकि वह दयालु है। सुख स्वरूप है। कई लोगों का ऐसा मत है कि जो हमारे जीवन में दुख आया है वह परमात्मा ने हमें दिया है, यदि किसी का इकलौता बेटा चला गया है तो कहते हैं परमात्मा बड़ा क्रूर है उसने बूढ़े माता पिता पर जरा भी दया नहीं आई उनकी लाठी का सहारा उन से छीन लिया। मानव के जीवन में जितने भी दुख आते हैं उन सब को मानव परमात्मा के सिर मढ़ देता है, कहते हैं बस वही इन दुखों को देने वाला है।

सच्चाई क्या है आओ इस पर विचार करें। जो लोग परमात्मा को नहीं मानते मैं उन्हें मूढ़ समझता । परमात्मा है और सदा से है और सदा रहेगा। वह तीनों कालों का ज्ञाता है। वह सारी सृष्टि का स्रष्टा है निर्माता है। वह सर्वव्यापक है और सभी जीव-जन्तुओं व मानवों को जानने वाला है। वेद में स्पष्ट कहा है "स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा" वह तो हमारा नाम भी जानता है। रहने का स्थान भी जानता है। वह ब्रह्माण्ड के सारे प्राणियों को जानता है उससे किसी का कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। हम अपनी, पत्नी से, अपने भाई से, अपने बेटे से, अपने मित्र से तो कुछ छुपा सकते हैं परन्तु परमात्मा से हमारा कुछ छुपा हुआ नहीं रहता। वह हमारे प्रत्येक कर्म का द्रष्टा है। इसीलिए वह हमारे प्रत्येक कर्म के फल के देने वाला है। वह हमारी प्रार्थना से खुश होकर हमारे पापों को क्षमा नहीं करता बल्कि इसे यों कहना चाहिए कि इन्सान अपने कर्मों का फल स्वयं पाता है वह जो भी अच्छा बुरा करता है वही उसे उलट कर मिलता है परमात्मा उसमें कोई न्यूनाधिक नहीं करता। मानव स्वयं अपनी करनी का फल पाता है परमात्मा किसी पर भी कोई चीज थोपता नहीं है।

यह सच्चाई है कि कोई भी मानव अपने कर्मो के फल से बच नहीं सकता। चाहे वह इसके लिए लाख यत्न कर लें, कितना ही दान पुण्य कर ले, कितनी ही परमात्मा की भक्ति कर ले कितनी ही समाज सेवा कर ले। परन्तु किए हुए कर्मों का फल उसे भुगतना ही पड़ेगा। गलत तरीके से मानव धन प्राप्त करके कई बार बहुत सुखी हो जाता है, बड़ी-बड़ी कोठियां बनवा लेता है, बड़े-बड़े कारखाने बना लेता है, सुखों के सभी साधन ले लेता है परन्तु जब वह जाने लगते हं तो पता भी नहीं चलता कि कब और कैसे चले गए। अखबारों मे आजकल आम चर्चा है श्री रविन्द्र पाल सिंह सन्धु पंजाब सरकार के चयन आयोग के अध्यक्ष ने करोड़ों रुपया गलत तरीके से इकट्ठा किया और राजाओं की तरह जीवन व्यतीत किया परन्तु यह सब कुछ देर तक नहीं चला आज वह जेल में है, ऐसे ही और भी कई लोग ऐसे हं जो भ्रष्टाचार में लिप्त थे परन्तु अब सजा पा रहे हैं।

यह ठीक है कि बहुत से लोग ऐसे हैं जिनको अभी सजा नहीं मिल रही। कई लोग कहते हैं कि क्या अकेले सन्धु ने ही भ्रष्टाचार किया और लोगों ने नहीं किया, ऐसे तो बहुत से लोग हैं जिन्होंने अकाली सरकार के समय कई प्रकार के भ्रष्टाचार किए और केवल सरकार में ही नहीं धार्मिक संस्थाओं व सामाजिक संस्थाओं में भी अनेकों लोग ऐसे हैं जो भ्रष्टाचारी हैं क्या परमात्मा उनको सजा दे रहा है। उन्हें उनके कर्मो का फल दे रहा है ? इसी से लगता है कि परमात्मा किसी को कर्मों का फल देता है और किसी को नहीं देता। ? यह हमारे सोचने का ढंग है परमात्मा सभी को उनके कर्मो का फल देता है। उसमें देर हो सकती है अन्धेर नहीं हो सकता।

परमात्मा ने मानव को कर्म करने में स्वतन्त्र छोड़ दिया है यह चाहे तो धर्म के कार्य करके देवता बन सकता है और यह चाहे तो पाप कर्म करके राक्षस बन सकता है। जिस मानव की बुद्धि ठीक काम करती है और सात्विक बुद्धि बन जाती है, मेधा बुद्धि बन जाती है वह पाप कर्म से बच जाता है परन्तु जिसकी बुद्धि अच्छे बुरे का निर्णय नहीं कर सकती वह गलत मार्ग का अनुगामी बन जाता है। आध्यात्मिक जगत में भी प्रेय मार्ग और श्रेय मार्ग का वर्णन मिलता है।

इसलिए हमें कभी भी यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारे कर्मो का फल हमें नहीं मिलेगा। हमने जैसे भी कर्म किए हैं चाहे वह गलत हैं या अच्छे हैं फल दोनों का ही मिलना है। अवश्यमेव भोक्तव्यं कर्म, शुभाशुभम् किए हुए कर्मो का फल हर हालत में भुगतना पड़ेगा। इसलिए हमें अच्छे कर्म करने चाहिएं ताकि हमें उनका अच्छा ही फल मिले, सुख मिले, शान्ति मिले और दुःखों से हम सदा के लिए बचे रहें।

प्रत्येक मानव को अपनी बुद्धि द्वारा अपने कर्मो का निर्णय करना चाहिए। आप्त पुरुषों, ऋषियों के वचनो द्वारा अपने कर्मो का निर्णय करना चाहिए, धर्म शास्त्रों व वेदों के निर्देशों द्वारा निर्णय करना चाहिए और अपनी अन्तरात्मा की आवाज द्वारा अपने कर्मों का निर्णय करना चाहिए। जब कोई मानव बुरा कर्म या पाप कर्म करने लगता है तो उसे भय, लज्जा, शंका होती है उसे जब यह आवाज सुने तो उसे पाप कर्म से रुक जाना चाहिए। अच्छे कर्म ही मानव की सच्ची सम्पति हैं जो उसके साथ जाती है। इस सम्पति को उसे जीवन भर इकट्ठा करते रहना चाहिए। इसी में मानव का कल्याण है।

–धर्मदेव आर्य

सरल-सुखी जीवन

❑ ले० श्री भद्रसेन, बी-2, 92/7 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर-146001

(गतांक से आगे)

अस्तेय-चोरी न करना शब्द बहुत ही व्यापक अर्थ की ओर संकेत करता है। जेसे कि मैंने जो भी कार्य स्वीकार किया हुआ है, यदि मै उसको पूरी ईमानदारी से नही करता, उस मे जिस किसी प्रकार से टाल-मटोल, लापरवाही करता हू वह भी चोरी ही हे। जैसे कि काई कार्यालय में पूरा कार्य नहीं करता जाने वालो को बार-बार चक्कर कटाता है। अत: कहीं समय की, कहीं कार्य की, कही ज्ञान की ओर कही श्रम की चोरी की जाती हे। जब कोई किसी से कार्य करा कर उसको पूरा पारिश्रामिक नही दता तो यह भी एक नरह से चोरी ही है। ऐसे ही जब एक दुकानदार ग्राहक को शुद्ध वस्तु नहीं देता या कम तोलता है, अधिक मूल्य लेता है मिलावट करता है, नकली माल देता है, तो वह ग्राहक से उस-उस रुप मे चोरी ही करता है। क्योकि वह भी ग्राहक की आंख बचाकर, उस की अज्ञानता का लाभ उठा कर उसे धोखे में रख कर उस से ठीक व्यवहार नहीं करता है। जैसे एक चोर मालिक की नीद, असावधानी, अज्ञानता, अन्धेरे आदि का लाभ उठाकर उसका सामान ले लेता है। चोरी का एक क्रूर रूप डाका है, एक डाकू जबरदस्ती देखते देखते हथियार आदि के बल पर वस्तु धन आदि छीन लेता है। किसी व्यक्ति का अपहरण या उस के साथ बलात्कार करता है, तब वस्तु का स्वामी या वह व्यक्ति बिल्कुल नही चाहता, कि मेरे साथ ऐसा व्यवहार हो। ऐसे ही जो किसी विभाग के अधिकारी बन कर या होने से दुकानदारो, कारखाने वालों आदि मे डरा कर, छापे आदि के नाम पर पेसे लेते है महीना बांधते है इस प्रकार की बातें भी क्रूर चोरा के रुप मे ही आती है। हा, जो कारोबारी इन रास्तो का अपनाते है, वे तो स्पष्ट रुप से व्यवस्था की चोरी करते है।

औरों की अपेक्षा अपना मन अधिक अच्छी प्रकार से जानता हे, कि मैं किस-किस प्रकार की कहां चोरी करता हू। जैसे कि मै अपना स्वार्थ साधने के लिए दूसरों को धोखे में रखने के लिए दूसरो से सच्चाई छिपाता हूं, बात अधूरी या बदल कर बतलाता हूं। ये सब चोरी के ही रूप हैं, इस सब रुपों को छोड़ने का नाम ही अस्तेय है।

16. शौच पञ्चविधं स्मतम्

शौच शब्द का यहां अर्थ है- पवित्रता, सफाई, शुद्धि और इस का अभिप्राय है, अपनी तथा अपने से जुड़ी वर्ताव की वस्तुओं बातों, वर्तावों की शुद्धि। जैसे कि अपना आपा- आत्मा, मन, इन्द्रिय, शरीर का समूह ही है। अत: इन सब की पवित्रता अपने आपे की पवित्रता है। इस बात को इस प्रकार से भी कह सकते हैं। कि आत्मा अपने मन, नेत्र आदि इन्द्रियो और शरीर से अपने कार्य करता है। इन सब के शुद्ध होने से ही इन द्वारा किए जाने वाले कर्म, जीवन व्यवहार स्वच्छ हो सकते हैं।

इसी लिए महाभारत (अश्वमेधिक APR104, 3230) में कहा है, कि शुद्धि के पांच रूप हैं, जैसे कि मन, व्यवहार के कार्य, रिश्ते, शरीर और वाणी आदि इन्द्रियां। क्योंकि हमारे जीवन के कार्य, व्यवहार, बातें इन सब के सहयोग से होती हैं। जैसे कि हम बोलने का कार्य वाणी से करते है और यदा कदा वस्तु, बर्तन, फर्नीचर, भवन आदि वस्तुओं को बरत कर कभी अपना कोई कार्य पूरा करते हैं, तो कभी किसी वस्तु से किसी कार्य को सिरे चढ़ाते हैं। अत: जीवन की पवित्रता के लिए सभी की शुद्धि अपेक्षित हो जाती है, अन्यथा कोई भी अशुद्ध हिस्सा जीवन को गन्दा बना सकता है।

ऐसे ही हमारे जीवन में आपस के रिश्तों का बहुत बड़ा हाथ है। हमारा जन्म, पालन, विकास जहां माता-पिता आदि सम्बन्धियों के सहयोग से ही सम्पन्न होता है, वहां भाई-बहन, पति-पत्नी, सन्तान आदि का सम्बन्ध भी पूरी तरह से जीवन की प्रगति से जुड़ा हुआ है। इन सम्बन्धों की सच्चाई, मिठास और परम्परागत संस्कारों से ही जीवन हरा भरा, प्रसन्न, सुखी, विकसित होता है। तभी तो कहा है (मनुस्मृति 9, 11) कि पति-पत्नी का एक-दूसरे के प्रति सच्चा-सुच्चा होना ही इन का सब से बड़ा पहला धर्म है। जब कभी इन सम्बन्धों में से किसी रिश्ते में अपवित्रता आती है, तो जीवन में गड़बड़ सड़ान्ध आने लगती है। तब सभी दुखी होते हैं। अत: व्यवहार की अन्य वस्तुओं की तरह परस्पर के सम्बन्धों का सम्बन्ध के अनुरूप निभाना, सच्चा-सुच्चा होना भी शुद्धि का एक अंग है।

अपने शरीर, इन्द्रियों, मन और व्यवहार की (वस्त्र, बर्तन, भवन आदि) सभी वस्तुओं को उस-उस की शुद्धि के ढंग से शुद्ध करना। जैसे कि मनुस्मृति (5, 108) में कहा है-जल से शरीर शुद्ध होता है, मन सत्य से पवित्र होता है, विद्या=अध्यात्म ज्ञान तथा तप=योगाभ्यास से प्राणियों का आत्मा निखरता है तथा बुद्धि ज्ञान से विकसित होती है। मनुस्मृति के पांचवें अध्याय में भिन्न-भिन्न वस्तुओं की शुद्धि के अनेक साधन बताये हैं। हां, शरीर की शुद्धि ओर पुष्टि के लिए योग के आसान, प्राणायाम अत्यन्त उपयोगी हैं। क्योंकि जैसे अग्नि में तपाने से धातुओं का मल निकल जाता है, ऐसे ही प्राणायाम से इन्द्रियों के मल निकल जाते हैं (मनु, 7, 71)

सफाई न रखने से गन्दगी जहां बीमारी कष्ट, कुरूपता का कारण बनती हैं, वहां गन्दगी किसी को भी अच्छी नहीं लगती और सफाई सब को अच्छी लगती है। इसी लिए सभी उस को पसन्द करते हैं, सफाई स्वास्थय और प्रसन्नता का भी कारण बनती हैं। तभी तो (2, 4) योग दर्शन में कहा है:-कि चित्त शुद्धि, मन की प्रसन्नता और एकाग्रता भी शुद्धि से आती है।

इसी लिए भारतीय धर्म, संस्कृति में स्नान, जप, तप, संस्कार, यज्ञ, व्रत आदि का मुख्य भाव एवं अभिप्राय शुद्धि ही है। अत: एव प्रत्येक धार्मिक कर्म से पूर्व स्नान, शुद्ध वस्त्र धारण जहां अनिवार्य है, वहां वह कर्म आचमन से आरम्भ होता है।

17-इन्द्रियनिग्रह (धर्ममिन्द्रिय निग्रह:)

इन्द्रिय शब्द-आंख, कान आदि के लिए आता है, कार्य के भेद से ये दो प्रकार की हैं। जो ज्ञान के बोध, अनुभव में सहायक होती हैं, उन के ज्ञान-इन्द्रिय और जो भौतिक कर्म में साधन बनती हैं, उन को कर्म-इन्द्रिय कहते हैं। आंख, कान, त्वचा, रसना और नासिका ये पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं, इन से रूप, शब्द, स्पर्श, रस, गन्ध का बोध होता है। जैसे कि नेत्र किसी के आकार और रंग का ज्ञान कराते हैं, कर्ण से शब्द का, त्वचा से शीत-उष्ण, कठोर-नरम के स्पर्श का, रसना=जिह्वा से कटु, मधु आदि छ: रसों का और नासिका से सुगन्ध-दुर्गन्ध का ज्ञान होता है। हाथ, पैर, वाणी, वायु, उपस्थ कर्मेन्द्रियां कहलाती हैं, हाथ से हम किसी को पकड़ या छोड़ कर कोई कर्म करते हैं, पैरों से आने-जाने का, वाणी से बोलने का और वायु-उपस्थ से मल-मूत्र त्याग आदि का कर्म होता है।

इन्द्रिय शब्द दर्शाता है, कि इन्द्र=आत्मा का वाचक है। अत: इन्द्र=आत्मा की जो पहचान, शक्ति, सहायक साधन है, वह ही इन्द्रिय है अर्थात आंख आदि इन्द्रियां जीवात्मा के लिए देखने आदि में सहायक, औजार बनती हैं (पाणिनीय सूत्र 5, 293) इन इन्द्रियों को काबू करना, नियन्त्रण में रखना ही इन्द्रियनिग्रह है। जैसे एक तांगे के घोड़े या यान का नियन्त्रण (ब्रेक) जब तक काबू में रहता है, तब तक यात्रा तथा मंजिल पर पहुंचना सरल होता है, अन्यथा जो विनाश होता है, उस की अनेक घटनायें आए दिन सामने आती रहती है।

हां, इन इन्द्रियों को अपने रूप, शब्द आदि विषयों से रोकना ही इन्द्रिय निग्रह है। क्योंकि इन्द्रियों के विषय अपने आकर्षण से व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। जैसे हिरन, हाथी, पतंगा भौरा और मछली अपनी एक-एक इन्द्रिय के आकर्षण में आकर मारी जाती हैं। हां, उस का क्या हाल होगा, जो पांचों इन्द्रियों को बेकाबू किए हुए रहता है। मनुष्य की पांचों इन्द्रियों में से यदि एक भी बेकाबू हो जाए, तो ऐसे व्यक्ति का सारा ज्ञान, यश नष्ट हो जाता है। जैसे पात्र में एक ही छिद्र हो जाने पर उस का जल आदि उस में से निकल जाता है। इन्द्रियों के आकर्षण के अनुसार चलने से अर्थात इन्द्रियों को अपने काबू में न रखने से व्यक्ति अपने लक्ष्य मे भ्रष्ट हो जाता है। किसी व्यक्ति की सफलता में इन्द्रियनिग्रह एक विशेष सहायक बात है। अत: अपनी इन इन्द्रियों को बेलगाम की तरह इधर-उधर दौड़ने न दे, अपितु अपनी इच्छा के अनुसार अपने व्यवहार में लगाए अर्थात सोच-विचार पूर्वक अपनी इन्द्रियों से काम लें।

(क्रमश:)

राष्ट्रभाषा का महत्त्व और हमारे कर्त्तव्य

□श्री रामनिवास गुणग्राहक, पुरोहित आर्यसमाज, गंगानगर (राज.)

आर्यसमाज लाहौर ने सन् 1936 में आर्य-भाषा सम्मेलन किया। आर्यसमाज के संस्थाक, स्वराज्य की अवधारणा के प्रथम उद्घोषक, क्रान्तिकारियों के दोनों दलों के मूल प्रेरक महर्षि देव दयानन्द जी महाराज हिन्दी को आर्यभाषा कहते थे। लाहौर आर्यसमाज की स्वदेशीय भावना का पता इसी से चल जाता है कि कांग्रेस के जन्म से छः वर्ष पूर्व सन् 1879 में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का शुभारम्भ इसी संस्था ने किया था, जिसका विवरण 14 अगस्त 1879 के "स्टेट्समैन" अखबार में मिलता है। इसी देशभक्त संस्था के आर्य-भाषा सम्मेलन के अध्यक्ष पद से उपन्यास सम्राट् मुन्शी प्रेमचन्द जी ने कहा था-'भाषा के विकास में हमारी संस्कृति की छाप होती है और जहां संस्कृति में भेद होगा वहां भाषा में भेद होना अनिवार्य है।' हम मुन्शी प्रेमचन्द जी जैसे क्रान्तदर्शी, साहित्य-पुरुष के विचारों की गहराई को न जान सके, हमने अंग्रेजी की छत्रछाया में भारतीय संस्कृति को जीवित व सुरक्षित रखने का असफल प्रयास किया। डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन ने तो यहां तक कहा था-'हिन्दी हमारी मातृभाषा ही नहीं अपितु वह देश की आत्मा की आवाज है।' साहित्य से जुड़े भारतीय सभ्यता संस्कृति के प्रति निष्ठावान् हर बुद्धिजीवी के ऐसे ही विचार हमें पढ़ने व सुनने को मिलते हैं। साहित्यकार ही नहीं देश के उच्चकोटि के राजनेता देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने तो बार-बार आग्रह किया था कि देश का संविधान ही राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखा जाना चाहिए। 18 मई 1949 को सेठ गोविन्ददास के एक प्रश्न के उत्तर में कहा था-'मैं अपने इस मत पर स्थिर हूं कि राष्ट्र की गरिमा और आत्म-सम्मान के अनुरूप तो यही होगा कि संविधान राष्ट्रभाषा में ही हो।'

संविधान निर्माताओं में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। डॉ. अम्बेडकर ने भाषा के विषय में बड़े विस्तार के साथ कहा था-'एक राज्य एक भाषा लगभग प्रत्येक देश की सार्वभौमिक विशेषता है। जर्मनी का संविधान देखिये, फ्रांस संविधान पर दृष्टि डालिए इटली के संविधान पर दृष्टि दौड़ाइए, यू.एस.ए. का संविधान पढ़े सब जगह एक राज्य एक भाषा का नियम है। जहां-जहां इस नियम का पालन नहीं हुआ वहां-वहां राज्य को खतरा पैदा हो गया। आस्ट्रयाई साम्राज्य और तुर्की की सल्तनतें इसलिए नष्ट-भ्रष्ट हुई क्योंकि वे बहुभाषी थे। डॉ. अम्बेडकर आगे लिखते हैं-'भारतवासी संगठित होना चाहते हैं और एक सामाजिक संस्कृति विकसित करना चाहते हैं, इसलिए सभी हिन्दुस्तानियों का भारी कर्त्तव्य है कि वे हिन्दी को अपनी भाषा घोषित करें। उन्होंने अन्त में एक चेतावनी भी दी थी कि 'यदि मेरा यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जाता तो भारत भारत नहीं रहेगा। वह अलग-अलग राष्ट्रों का समूह होगा। जो परस्पर प्रतिस्पर्धा व लड़ाई में लगे रहेंगे। कितनी दूर दृष्टि थी इन संविधान निर्माताओं की कितना सटीक व सच्चा आकलन था उनका? विश्व इतिहास पर दृष्टि डाली जाए तो पता चलता है कि स्वतन्त्र होने वाले हर राष्ट्र ने अपनी मातृभाषा को ही देश के राजकाल की भाषा बनाया। पराधीनता की स्थिति में जन-जीवन से निकल कर आइरिश भाषा भी प्रायः छिन्न-भिन्न हो गई थी, उसे जंग लग गया था मगर उन देशभक्त आइरिशों ने हिम्मत नहीं हारी, अपनी बिखरी हुई भाषा के सूत्रों को पिरोकर उसे ही अपनाया। इज़्राइल ने सशक्त कही जाने वाली भाषाओं का मोह त्याग कर अपनी पुरानी हिब्रू भाषा को ही अपनाया। स्वयं इंग्लैण्ड ने गुलामी से मुक्त होते ही अपने ऊपर लदी हुई लैटिन और फ्रांसीसी भाषा के विरूद्ध संघर्ष शुरू कर दिया था और अन्ततः उसने इन भाषाओं को निकाल कर फेंक ही दिया।

आज भारत में स्थिति एकदम विपरीत है-पहली बात तो यह है कि स्वाधीनता प्राप्ति के समय कुछेक हठधर्मी राजनेताओं को छोड़कर समस्त भारत के बुद्धिजीवी व राजनेता हिन्दी के पूर्णतः पक्ष में थे। गोपालस्वामी अयंगर हों या उत्कलवासी श्री लक्ष्मीनारायण। सारा भारत भाषा के नाम पर एक हो सकता था। भाषा के प्रति सभी की सहमति को देखकर सेठ गोविन्ददास ने यहां तक कहा था-'मैं अपने दक्षिण तथा अन्य अहिन्दी भाषी प्रदेशों के मित्रों का आभारी हूं कि उन्होंने कम से कम इस बात को स्वीकार कर लिया है कि देवनागरी लिपि में केवल हिन्दी ही संघ की भाषा हो सकती है।' श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने भी कहा था-'यदि मैं हिन्दी भाषा भाषी प्रान्त का होता तो मुझे इस समझौते पर गर्व होता, जिसके अनुसार इस सदन के लगभग सभी सदस्यों ने स्वेच्छा से देवनागरी लिपि में हिन्दी को राजभाषा स्वीकार कर लिया है।' गोपालस्वामी अयंगर के शब्द-'एक बात के बारे में हम लगभग एक ही नतीजे पर पहुंच गए हैं कि हमें एक भारतीय भाषा का चुनाव करना चाहिये।' स्पष्ट रूप से प्रकट कर रहे हैं कि हम हिन्दी को राजभाषा स्वीकार करने के अत्यन्त निकट पहुंच गये थे। इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी कुछ हठवादी व प्रभावशाली राजनेताओं की दुर्भावनाओं का शिकार होकर हिन्दी इतनी दूर फेंक दी गई कि स्वाधीनता की स्वर्ण जयन्ती वर्ष के निकल जाने के बाद भी हिन्दी को निकट भविष्य में राजभाषा का उचित स्थान मिलता प्रतीत नहीं होता।

किसी देश की मातृभाषा का राष्ट्रभाषा होना क्यों जरूरी है इस का सबसे बड़ा प्रमाण तो यह है कि संसार में भारत के अतिरिक्त कोई देश ऐसा नहीं जिसकी मातृभाषा उसकी राष्ट्रभाषा न हो। इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध साहित्यकार फ्रेडरिक पिकॉट ने एक बार श्री कार्तिकप्रसाद खत्री को पत्र में लिखा था-'जब तक किसी देश में निजी भाषा और अक्षर सरकारी और व्यवहार सम्बन्धी कामों में प्रयुक्त नहीं होते हैं, तब तक उस देश का परम सौभाग्य हो ही नहीं सकता।' भाषा विज्ञानी थॉमिस डेविस ने बहुत गम्भीर बात कही है जिसे सुनकर हम भारतीयों की आंखें खुल जानी चाहिएं। वे कहते हैं-'कोई राष्ट्र अपनी भाषा को छोड़कर राष्ट्र कहला ही नहीं सकता। भाषा की रक्षा सीमाओं की रक्षा से भी अधिक जरूरी है।' सच यह है मित्रो कि हमें भाषा के नाम पर हमारे ही लोगों द्वारा ठगा गया है जिस समय नेहरू जी ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए 15 वर्ष का समय मांगा था तब राष्ट्रपति के रूप में डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा था कि यह निर्णय बहुत गम्भीर है इसके क्रियान्वयन की समीक्षा प्रतिदिन और प्रति पल होनी चाहिए। इतना सब कुछ होते हुए 15 वर्ष की अवधि से पूर्व ही हिन्दी को अज्ञातकाल के लिए देश निकाला दे दिया गया। इससे तो यही प्रकट होता है कि वे 15 वर्ष हिन्दी की स्थापना के लिए नहीं अंग्रेजी की स्थापना के लिए वातावरण तैयार करने हेतु मांगे गए थे।

प्रश्न किया जा सकता है कि क्या हिन्दी में वह शक्ति व सामर्थ्य भी है कि वह देश की राजभाषा एवम् हर प्रकार की उन्नति का माध्यम बन सके ? प्रथमतः देश के सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली व समझी जा सकने वाली भाषा हिन्दी ही है। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के अनुसार-'देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिन्दी राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।' हिन्दी की गुणवत्ता को मैथिलीशरण जी के शब्दों मे व्यक्त करना उचित रहेगा। वे लिखते हैं-'हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी मे समासीन हो सकती।' जहां तक वैज्ञानिक तकनीक का प्रश्न है तो सन् 1996 में ही एक विदेशी कम्पनी आई.बी.एम. जो कि हार्डवेयर के क्षेत्र में बहुत ऊंचा स्थान रखती हे उसने सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में पदार्पण हिन्दी के माध्यम से ही किया था। ओ एस/2 तथा पीसी डॉस नामक दो सॉफ्टवेयर हिन्दी में ही उसने खोले। आज भी विज्ञान व तकनीक का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जिसमें हिन्दी की उपस्थिति न हो। इस प्रकार हिन्दी की उपयोगिता पर अंगुली उठाने का अर्थ अपने भाषा ज्ञान की पोल खोलने जैसा ही है। हमें गर्व होना चाहिए अपनी पुरातन धरोहर पर कि आज संसार इस

(शेष पृष्ठ 6 पर)

वैदिक विवाह सम्पन्न

आर्य समाज बठिण्डा के वयोवृद्ध नेता, धर्म प्रेमी लाला वजीर चन्द मंगला जी की सुपौत्री एवम् डा. के.के. मंगला (हैड ऑफ कामर्स विभाग, पंजाब युनीवर्सिटी चंडीगढ़) की सुपुत्री सौ. शिवानी का शुभ विवाह चि. विपिन के साथ "वैदिक रीति" से सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम गुरुकुल बठिण्डा से चण्डीगढ़ पधारे, ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी "वैदिक मिश्नरी" द्वारा श्री के.के. मंगला जी के निवास (युनिवर्सिटी कैम्पस) में यज्ञ का कार्यक्रम आयोजित करवाया गया और उन्होंने बताया कि यह यज्ञ सुख और शान्ति के लिए किया गया और इस यज्ञ के दौरान प्रभु से प्रार्थना की जाती है कि हे ईश्वर! हम यह जो शुभ विवाह करने जा रहे हैं आपकी कृपा से सारा कार्यक्रम शान्ति पूर्वक सम्पन्न हो। तत्पश्चात रात्रि को हिमाचल भवन चण्डीगढ़ में आयोजित कार्यक्रम में रात्रि भोज के उपरान्त वैदिक रीति से विवाह संस्कार ब्रह्मचारी जी ने अपनी विशेष शैली में इस प्रकार की व्याख्या से सम्पन्न करवाया कि सभी उपस्थित व्यक्ति कह उठे कि विवाह तो हमने भी सैकड़ों देखे परन्तु इतनी विस्तृत व्याख्या और मधुर शैली में यही विवाह देखा। शान्ति पाठ और वैदिक जयघोष के साथ सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ।

–प्रो. ओ.पी. मंगला, प्रधान आर्य समाज, बठिण्डा

श्री सिद्धेश्वर जी शर्मा सम्मानित

"ग्लोबल इकोनामिक आर्गनाइजेशन" की ओर से नई दिल्ली स्थित इंडिया इन्टरनेशनल सैंटर में "भारत का आर्थिक उदारीकरण सफलता का द्वार" विषयक कान्फ्रैंस आयोजित की गई। इस अवसर पर संस्था की ओर से समाज की उन्नति में योगदान देने के लिये विरवेन्त क्षेत्रों से जुड़े लोगों को सम्मानित किया गया।

मोगा डी.एम. कालिज ऑफ ऐजुकेशन के कार्यकारी प्रिंसीपल सिद्धेश्वर जी शर्मा को शिक्षा-क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिये उनको 'राष्ट्रीय रत्न अवार्ड' से सम्मानित किया गया। केन्द्रीय रेलवे राज्यमंत्री दिग्विजय सिंह समारोह के मुख्य अतिथि थे, जब कि उद्घाटन केन्द्रीय शहरी विकास राज्यमंत्री बंडारु दत्तात्रेय और भू.पू. राज्यपाल (ता.ना., एन आसाम) डा. भीष्म नारायण सिंह ने किया। निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली के मुखी डा. जी नी जी कृष्णामूर्ति और कई विशेष गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अमृत लाल आर्य नहीं रहे

मण्डी डबवाली-आर्य समाज मण्डी डबवाली के आधार व कर्मठ कार्यकर्त्ता तथा यहां की आर्य समाज के संस्थापकों में से एक स्व. श्री राम अवतार आर्य के सुपुत्र श्री अमृत लाल जी आर्य का दिनांक 19 जून को आकस्मिक निधन हो गया। उनका दाह-संस्कार केरल वैदिक मिशन के महामंत्री डा. अशोक आर्य ने पूरी वैदिक रीति से करवाया। अन्तिम शोक दिवस पर भी डा. अशोक आर्य ने हवन-यज्ञ सम्पन्न किया तथा स्थानीय आर्य समाज के मन्त्री श्री भारत मित्र आर्य ने दोनों संस्कारों में सहयोग दिया।

सब मतों का आदिमूल : वैदिक धर्म

(पृष्ठ 2 का शेष)

और नरक आदि का वर्णन ये सब बातें यहूदी मत से मिलती हैं।

इस ऊपरलिखित विवेचन से पता चलता है कि इस्लामी मत का मूल यहूदी आदि मत है। ईसाईमत का मूल यहूदी मत और बौद्धमत है। बौद्धमत और यहूदी मत का मूल पारसी मत है। पारसी और बौद्धमत का मूल प्राचीन वैदिक धर्म है।

आज संसार में पारसी मत, यहूदीमत, ईस्लामी मत, बौद्धमत और ईसाईमत ये बड़े धर्म माने जाते हैं। शेष छोटे-छोटे मत तो भारत में ही उत्पन्न होते हैं। इन सब का आधार प्राचीन वैदिक धर्म है।

वैदिक धर्म का उद्धार-वैदिक धर्म महाभारत काल तक अपने शुद्ध अस्तित्व में रहा। तत्पश्चात् अन्य मतो के प्रचलन से वह धूमिल हो गया। आज से लगभग 178 वर्ष पूर्व सन् 1824 में गुजरात के टंकारा नामक ग्राम में महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ। उन्होंने अपने अतुलयोगबल से तथा अनुपम ब्रह्मचर्य की साधना से लुप्त वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया। अवैदिक मतों का बहिष्कार तथा वैदिक धर्म का सत्कार किया। यदि संसार के सब प्रचलित मत अपने मूल वैदिक धर्म को पहचान कर इसे स्वीकार कर लें, तो आज सारे विवाद समाप्त होकर संसार में सुख शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

राष्ट्रभाषा का महत्त्व और हमारे कर्त्तव्य

(पृष्ठ 5 का शेष)

बात को खुले तौर पर स्वीकार करने लगा है कि कम्प्यूटर के लिए सब से उपयुक्त भाषा संस्कृत ही है। आओ हम अपने इतिहास की भूलों को पीछे छोड़कर हिन्दी को राजभाषा के गौरवशाली आसन पर उसे विश्व साहित्य में भी उच्च स्थान दिलाने की दिशा में सार्थक अभियान छेड़ें।

यहां सब से पहले तो हमें एक बात अच्छी प्रकार समझ लेनी चाहिए कि संसार की समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत की विशेषताओं को सबसे अधिक मात्रा में और बड़ी ईमानदारी के साथ स्वीकार किया है। इस कारण यह संस्कृत माता की सब से बड़ी और प्रिय पुत्री है। अन्य भारतीय भाषाएं या तो इसकी बहिनें हैं या पुत्री। अंग्रेजी के आशिकों ने अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए भारतीय भाषाओं को एक-दूसरे की प्रतिस्पर्धा में खड़ी करके हमारे अन्दर भय पैदा कर दिया। महादेवी वर्मा लिखती हैं-'हिन्दी से किसी भाषा को भी भय नहीं है, यह सब की सहोदर है।' यह परस्पर का भय केवल मुट्ठी भर लोगों ने पैदा किया है अन्यथा भाषा से जुड़े साहित्यकार तो प्रान्तीय भाषाओं से ऊपर उठकर हिन्दी को अपनाने में गौरव का अनुभव करते हैं। श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी ने बड़े स्वाभिमान के साथ कहा था-'अपनी मातृभाषा बंगला में लिखकर मैं बंगबन्धु तो हो गया किन्तु भारतबन्धु मे तभी हो सकूंगा जब भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखूंगा।' इन उद्धरणों से इतना तो सिद्ध है कि अहिन्दी भाषी प्रान्तों ने तो हिन्दी का किञ्चित् भी विरोध नहीं किया, उन्हें तो हिन्दी को राजभाषा स्वीकारने में गर्व की अनुभूति होती थी। इसी तथ्य को आधार बनाकर हमें इस दिशा में काम करना चाहिए।

हिन्दी हमारे सविधान के अनुसार हमारी राष्ट्रभाषा है। जिस प्रकार हम राष्ट्रीय-ध्वज व राष्ट्रीय संविधान के प्रति निष्ठा व सम्मान रखते हैं वैसी ही निष्ठा और सम्मान के भाव राष्ट्र भाषा के प्रति होने चाहिएं। पता नहीं क्यो हिन्दी बोलते समय हमारे हृदय में हीनता व पिछड़े हुए होने का भय बैठा रहता है, यह हमें त्यागना होगा। हिन्दी को राष्ट्रीय कर्त्तव्य के साथ जोड़कर देखना चाहिए। हम संकल्प लें कि जब तक हिन्दी राष्ट्रभाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित नहीं होगी तब तक हम देश को स्वतन्त्र नहीं मानेंगे। मुन्शी प्रेमचन्द्र की दृष्टि में-'जब तक आपके पास अपनी राष्ट्रभाषा नहीं आपका राष्ट्र भी नहीं।' आगे वे कहते हैं-'राष्ट्र के रूप में संघटित हुए बिना दुनिया में जिन्दा रहना मुश्किल है।' इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रश्न हमारे राष्ट्र की गौरव गरिमा के साथ हमारे अस्तित्व से भी जुड़ जाता है। जैसे कोई राष्ट्र केवल रईसों व अमीरों से नहीं बन जाता उसी प्रकार उनकी भाषा भी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। भारत कृषि प्रधान देश है तो किसानों व मजदूरों की भाषा ही राष्ट्र-भाषा हो सकती है।

यद्यपि सरकार अपने स्तर पर देश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक संस्थाएं चला रही है, अकेली दिल्ली में 40-50 संस्थाएं हिन्दी के लिए कार्य कर रही हैं। 23 अगस्त 1988 को हमारा संविधान भी हिन्दी में तैयार होकर लागू हो चुका है मगर उसमें अंग्रेजी पाठ को प्रामाणिक मानने का पुछल्ला लगा हुआ है। 4 नवम्बर 1991 को तत्कालीन राष्ट्रपति ने सुझाव दिया था कि भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित अधिकारियों का प्रशिक्षण हिन्दी में दिया जाए लेकिन वह आज तक पूरी तरह लागू नहीं हो पा रहा। ये सारी कमियां केवल हमारी राष्ट्रीय चेतना के अभाव को प्रमाणित करती हैं। हमें यह भली-भांति समझ लेना चाहिए कि किसी विचार का प्रचार व उसकी स्थापना जनता के माध्यम से ही होती है और जनता जिसे प्रतिष्ठित करना चाहती है उसे कोई रोक नहीं सकता। बन्धुओं! हिन्दी को राजभाषा बनने से कोई रोक नहीं सकता हिन्दी अपनी गुणवत्ता के कारण संसार में लोकप्रिय होती जा रही है, विदेशियों के सामने हमें व हमारे अंग्रेजीपसन्द राजनेताओं को लज्जित व लाञ्छित होना पड़ता है। कहीं ऐसा न हो कि हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनवाने का पुण्य किसी दूसरे को प्राप्त हो और हमें पछताना पड़े। आओ! हम अपने इस राष्ट्रीय कर्त्तव्य कर्म एवम् मानवीय धर्म को पालन करने, हिन्दी को राष्ट्र-भाषा का सच्चा पद दिलाने के लिए अभी से अपने समस्त कार्य-व्यवहार को हिन्दी में करने का दृढ़ संकल्प लेकर इसमें आत्म-गौरव व राष्ट्रीय स्वाभिमान की अनुभूति करें। परमात्मा हमारे हृदयों में ऐसी पावन प्रेरणा व शक्ति का संचार करते हुए हमारे इस राष्ट्रीय संकल्प की पूर्ति में सहायता करे।

"भक्त की पुकार में अपनत्व की भावना हो"

□प. वेद प्रकाश टकरावाले 73/5 भार्गव नगर, जालन्धर

इमं मे वरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय।

त्वामवस्युराचके॥

(ऋग्वेद म सूक्त 25 म 19)

अर्थात हे प्रभु आप को मैं समर्पण की भावन से निहारता हू। आप सब की पुकार सुनते हो दुखो को दूर करते हो मेरी भी पुकार सुनिए ताकि मुझे सुख प्राप्त हो।

ऋग्वेद का यह मन्त्र बडा ही अनूठा भाव प्रदर्शित करता है अगर ऊपरी दृष्टि से देखे तो यू दिखाई देगा जैसे भक्त द्वारा प्रभु से शिकायत की गई है कि प्रभु आप सब की सुनते हो मेरी भी सुनो। शिकवा करना भक्त का स्वभाव नहीं होता और कभी ऐसा भी न हुआ होगा कि सच्चे भक्त की पुकार ईश्वर ने न सुनी हो। वह सुन ही लेना है जब आप अपन पवित्र अन्तर्भाव से पूरी तन्मयता से पुकार लगाते हो। हा बहुत बार ऐसा हुआ कि ईश्वर ने अपकी पुकार न सुनी हो ऐसा आभास आप को दुख दे सकता है कि मै प्रभु से कुछ कहना चाहता हू परन्तु परमात्मा मेरी बात नहीं सुनता। तनिक आप विचार करे तो आप को ज्ञात हो जाएगा कि आप की पुकार ससारिक परिस्थितियो क वशाभूत हो कर की गई है। आप थोडा और गहराई से सोचे तो आप को लगेगा कि आपके अन्दर तो कामनाआ का अम्बार लगा हुआ है तो आप इन कभी न खत्म होने वाली इच्छाओ के दास बन कर नश्वर वस्तुओ के मोहजाल में फस कर प्रभु से शिकवा करोगे तो वह आप की बात सुनने वाला नहीं आज का मानव प्रभु से दिन मे एक दो बार तो अपने मन की भडास निकाल ही लेता है आप के पास सब कुछ है तब भी और अगर आप के पास कुछ भी नहीं तब भी।

पहली बात तो यह है कि आप का प्रभु से कुछ मागने का तरीका सही होना चाहिए। आप भिखारी बन कर नहीं बल्कि ईश्वर का पुत्र बन कर मागिए। भिखारी बनने पर आप का अपनत्व का अधिकार समाप्त हो जाता है। भिखारी बन कर मागने से देने वाले पर निर्भर है कि वह आप को या आप पर दया करके कुछ देना चाहे तो दे दे अन्यथा न देना चाहे तो अपको दुत्कार भी सकता है। इसके ठीक विपरीत पुत्र का पिता से मागने का अधिकार सुरक्षित है। पिता पुत्र का दुत्कार नहीं सकता हा कुछ समय क लिए टाल जरूर सकता है परन्तु देगा अवश्य इस लिए इस मन्त्र म जो शिकायत का भाव दिखाई देता है वह वास्तव मे पुत्र द्वारा अपने पिता से की गई शिकायत ही है। क्योकि पुत्र का अधिकार है कि वह अपने पिता से शिकवा करे कि आप सब की सुनते हो मेरी भी सुनो। यहा मैं एक बात स्पष्ट कर दू कि इस मन्त्र मे सुख मागा है और सुख पाने का रास्ता भी साथ ही बतलाया गया है।

आयुर्वर्षशत नृणा परिमित रात्रौ तदर्धं गत

तस्यार्द्धस्य परस्य चार्द्धमपर बालत्ववृद्धत्वयो।

शेष व्याधिवियोग दुख सहित सेवादि भिर्नीयते

जीवे वारितरङ्गचञ्चलतरे सौख्य कुत प्राणिनाम्॥

(वैराग्यशतकम् श्लोक 94)

अथात मनुष्य की आयु सो वर्ष है इस का आधा भाग तो सोने मे ही चला जाता है। बाकि के आधे का आधा भाग बाल्य एव वृद्धावस्था मे व्यतीत हो जाता है। बाकि का बचा भाग रोग वियोग तथा जिविका के लिए धनाढ्य व्यक्तियो की सेवा करते दुख मे बीत जाता है। अत जल की तरगा के सामान चन्चल इस जीवन मे मनुष्य को सुख कहा?

एक उदाहरण देखिए कि आप अपने कुछ साथियो के साथ एक रेल गाडी से सफर करे और इस सफर के लिए आप अपने सारे साथियो की टिकट तो खरीद ले परन्तु अपनी टिकट न खरीद यह सोच कर कि जब सब के पास टिकट है तो मैं क्यो टिकट खरीदू? मैं बिना टिकट के ही सफर कर लूगा। मैं आप को स्पष्ट कर दू कि यह आप का सफर तभी तक करना जारी रहेगा जब तक कोई चेकर आप को आ कर न पूछ ले कि श्रीमान जी आप का टिकट कहा है? और यह भी आप को ज्ञात होना चाहिए कि इस गाडी का मालिक ईश्वर है और वह इस गाडी का ड्राइवर भी आप है और टिकट चैकर भी आप ही है और सब से बडी बात तो यह है कि ईश्वर से कुछ छुपा हुआ नही है इस लिए आप का पकडे जाना तय ही है इस लिए आप बिना टिकट सफर न कर अन्यथा आप कही भी पकडे जा सकते है

इस लिए आप का रास्ता ठीक होना चाहिए और इस मन्त्र मे रास्ता बतला दिया है आप अपनी पुकार तभी परमात्मा तक पहुचा सकते है जब आप अपने अन्दर समर्पण का भावना भर लेत हैं। सम् अपर्ण इन दो शब्दो को मिला कर समपण शब्द बनता है सम् का अर्थ होता है सामान अर्थात समपण की भावना मे एकत्व होना चाहिए मेरे कहने का भाव है कि एक तरफ से समर्पण नही किया जा सकता और एसा भी नहीं हो सकता कि आप का समर्पण किस काम का ससारिक समपण को समपण नही कहा जा सकता यह सिर्फ अपण

(शेष पृष्ठ 8 पर)

"भक्त की पुकार में अपनत्व की भावना हो"

(पृष्ठ 7 का शेष)

ही होता है जिस का मतलब होता है जब आप अर्पण करें तो आप को कुछ चाहिए, आप के स्वार्थ की सिद्धि होनी चाहिए। आप पत्नी के प्रति समर्पित हैं या पत्नी आप के प्रति समर्पित है तो यह समर्पण की भावना सिर्फ उतने समय तक ही है जब तक दोनों का एक दूसरे से स्वार्थ पूरा होता रहेगा और जिस दिन स्वार्थ की पूर्ति न हुई उसी दिन सन्धि-विच्छेद हो जाता है इसी प्रकार की भावना बच्चों और समाज के प्रति भी दिखाई पड़ती है। अध्यात्मिकता में समर्पण स्वार्थ से जुड़ा नही होता और सब से बड़ी बात तो यह होगी की इस में समर्पण समान रुप से होगा। जितना आप प्रभु की तरफ पग उठाएंगे उतना ही प्रभु भी आप के नजदीक आता चला जाएगा और एक दिन ऐसा होगा जैसे आप और प्रभु दो नहीं बल्कि एक ही हैं और जब आप का उस प्रीतम प्यारे से सामना होगा तो आप अवाक् खड़े रह जाओगे। प्रभु कहेगा कि मांगो क्या चाहते हो? और आप कुछ न कह सकोगे। आप की मांगने की शक्ति समाप्त हो जाएगी क्योंकि आप मांगो तो तब जब आपके अन्दर द्वैत की भावना पैदा हो जाए परन्तु ऐसा नहीं इस लिए जिस दिन आप को प्रभु के दर्शन हो गए उसी दिन समझना आप का समर्पण हो गया।

इस तमन्ना में जो सुख मांगा गया है इससे तो आपके मन में स्वत: ही सवाल पैदा होगा कि सुख-दु:ख तो इन्द्रियों के विषय हैं। मैं मानता हूं कि इन दोनों का सम्बन्ध हमारी स्थूल इन्द्रियों से है परन्तु मैं यह भी जानता हूं कि सुख आनन्द को प्राप्त करने का साधन है। सामाजिक जीवन के लिए सुख चाहिए परन्तु अध्यात्मिक जीवन को आनन्द की आवश्यकता है और सब से बड़ी बात तो यह है कि शरीर के रहते ही आनन्द को प्राप्त किया जा सकता है वरना कोई अन्य साधन नहीं है। सुख पर ही अटक जाने वाला व्यक्ति मंदबुद्धि कहलाता है। सुख आनन्द का सेतु है। इन्द्रियां सुखी हों तो आनन्द की प्राप्ति की जा सकती है अन्यथा रोगी व्यक्ति तो इन्द्रियों के उपचारों में ही सारा जीवन व्यतीत कर देता है।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज शान्ति नगर (चार मरला) सोनीपत की कार्य कारिणी का चुनाव निम्न प्रकार हुआ :

संरक्षक-श्री राजेन्द्र चांदना, संरक्षक-पं. भारत दीपक, संरक्षक-आसा नन्द वधवा, प्रधान-थांवर लाल पाहूजा, कार्यकर्ता प्रधान-वीर सैन श्रीधर, उप प्रधान-मोहन लाल आर्य, महासचिव-हरिचन्द्र स्नेही, सचिव-किशन चन्द भुटानी, कोषाध्यक्ष-ब्रह्मदत्त नारंग, विद्यालय प्रबन्धक-जीत कुमार डुडेजा, सम्पति इन्चार्ज-टाकन दास, लेखा निरीक्षक-किशन चन्द डुडेजा अन्तरङ्ग सदस्य-कंवल नयन हसीजा, राम स्वरूप वर्मा अमर नाथ आर्य।

डी ए वी माध्यमिक विद्यालय शान्ति नगर (चार मरला)

शिक्षा समिति-प्रधान-श्री थावर लाल पाहुजा, महामन्त्री-श्री हरिचन्द्र स्नेही, सचिव-श्री किशन चन्द्र भुटानी, कोषाध्यक्ष-श्री ब्रह्म दत्त नारंग, विद्यालय प्रबन्धक-श्री जीत कुमार डुडेजा, सदस्य-पदेन मु.अ., शिक्षा विद्-श्री रामस्वरुप वर्मा,

गन्नौर में आर्य वीराङ्गना प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज मन्दिर किशनपुरा गन्नौर मण्डी (सोनीपत) हरियाणा में दिनांक 23 6 2002 से 30 6 2002 तक आर्य वीराङ्गना ब्रह्मचर्य [illegible]

ब्रह्मचारिणी सरोजनी (आर्य कन्या गुरुकुल नरेला) के कुशल, प्रेरक एवम् गतिशील नेतृत्व मे सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में गन्नौर सोनीपत पानीपत, समालखा, मतलौडा, करनाल तथा विभिन्न स्थानो से आर्य कन्याओ ने पशिक्षण प्राप्त किया।

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन सिवेल लाईन लुधियाना का पारिवारिक सत्संग 21-7-2002 को श्री के.क भल्ला कोठी नं.-157-सी गुरुद्वारा रोड किचलू नगर लुधियाना मे साय 5.30 से 7.30 बजे तक हो रहा है।

एक ईश्वर ही सर्वश्रेष्ठ है-स्वामी तत्वबोध

सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी एक ही ईश्वर है तथा हमें उसकी ही उपासना करनी चाहिए। यह बात श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने कहीं। वे दिनांक 7 7-02 को न्यास के तत्वावधान में संचालित वेद प्रचार मण्डल द्वारा आयोजित मासिक पारिवारिक सत्संग के अवसर पर अध्यक्ष पद से बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि बहु देवता वाद के आधार पर ईश्वर की विविध प्रकार से उपासना की जाती है किन्तु लक्ष्य सबका एक ही है। इस सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी एक ईश्वर है तथा एकेश्वरवाद के आधार पर हमें उसकी ही उपासना करनी चाहिए। इस अवसर पर वैदिक यज्ञ सम्पन्न होने के उपरान्त न्यास के सभागार में पारिवारिक सत्संग प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने तथा संयोजन हुकमचन्द शास्त्री ने किया।

-मुनीन्द्र सिंह भाटी

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिक चुनाव 14 7-2002 रविवार को प्रात: साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् निम्न प्रकार से हुआ।

सर्व सम्मति से डा. इन्द्र कुमार शर्मा जी को प्रधान चुना गया। उन्होंने श्री नरेश कुमार को मन्त्री तथा श्री सुमीत महाजन को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया। अन्य अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों को बाद में मनोनीत किया जाएगा।

-नरेश कुमार मन्त्री

डी.एम.कालेज आफ एजुकेशन मोगा का शानदार परीक्षा परिणाम

डी.एम. कालेज ऑफ एजुकेशन, मोगा का बी.एड का रिजल्ट घोषित हुआ है। कालेज का रिजल्ट इस सत्र में शत्-प्रतिशत रहा। 198 विद्यार्थियों में से 196 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में आए हैं। यह एक अच्छी उपलब्धि है। 70 प्रतिशत से अधिक नम्बर लेने वाले कुल 32 छात्रों में ज्योति ने 752 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान अर्जित किया जबकि स्विपनदीप कौर 743 अंक ग्रहण कर द्वितीय स्थान पर रहीं। मैं अपनी ओर से प्रबन्ध समिति, कालिज स्टाफ, विद्यार्थियों और उनके माता-पिता को हार्दिक बधाई देता हूं।

-सिद्धेश्वर शर्मा, प्राचार्य

श्री दुलाल चन्द्र पी.एच.डी. की उपाधि से सम्मानित

केन्द्रीय सरकार से मान्यता प्राप्त महात्मा गांधी जी द्वारा संस्थापित "दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास" विश्वविद्यालय विभाग ने 66वें दीक्षान्त समारोह में भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री रंगनाथ मिश्र तथा श्री डा. हरिगौतम (अध्यक्ष, राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान) के अध्यक्ष तथा मुख्य आतिथ्य में "राष्ट्र को महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रदेयता" विषय पर प्रो डॉ. निर्मला एस. मौर्य के निर्देशन में विश्वविद्यालय विभाग की ओर से 26 6-2002 को श्री दुलाल चन्द्र विद्यावाचस्पति को पी एच.डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

पं. निर्मलचन्द्र शास्त्री (पत्रकार)
वेद प्रचारक "बंगलौर" कर्नाटक

आचार्य की आवश्यकता

वैदिक साधनाश्रम, तपोवन देहरादून में उपदेशक विद्यालय प्रारम्भ किया जा रहा है जिसके लिए सुयोग्य आचार्य की तत्काल आवश्यकता है। आचार्य पद हेतु आवेदन करने वालों की योग्यता शास्त्री-आचार्य परीक्षोत्तीर्ण तथा अध्यापन योग्यता हो। आयु 40 वर्ष से ऊपर होनी चाहिए। मासिक दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। भोजन, निवास व्यवस्था तपोवन की ओर से होगी। आवेदन 15 अगस्त तक आना चाहिए।

-स्वामी दिव्यानन्द, दूरभाष 0133-454038

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद — कृणवन्तो — ओ३म् — विश्वमार्यम् — यजुर्वेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

दूरभाष

जालन्धर

सामवेद — अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 14 सृष्टि संवत 1960853103, 28 जुलाई, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

हिन्दी गद्य के प्रथम उपासक : महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

❑ ले० डॉ. अशोक जी आर्य 116 मित्र विहार मण्डी डबवाली (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती को आज सर्वत्र सुधार कल्पतरू के रूप में जाना जाता है तथा उनके विभिन्न कार्यों के कारण उन्हे विभिन्न रूप या संज्ञा दी गई है। किन्तु जिस क्षेत्र को महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज की अत्याधिक देन है, आज भी न जाने क्यों वह पक्ष उपेक्षित पड़ा है। वह है-हिन्दी भाषा व साहित्य को उनका योगदान। उनकी हिन्दी सेवा का मूल्यांकन करते समय हम रोमांचित हो उठते हैं, क्योंकि स्वय अहिन्दी भाषी (गुजराती) होते हुए भी हिन्दी गद्य के सर्वप्रथम प्रणेता भी स्वामी दयानन्द सरस्वती ही सिद्ध होते हैं, जबकि हिन्दी गद्य में लिखी गई सर्वप्रथम जीवनी भी सम्भवतया स्वामी दयानन्द सरस्वती की ही थी। यह सभी साहित्यिक विधाएं आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य की सर्वाधिक आधुनिक विधाएं मानी जाती हैं।

संस्कृत में तो जीवनी साहित्य पहले ही प्रचलित था, किन्तु हिन्दी गद्य की आधुनिक विधा, जो कि जीवनी का ही एक रूप है, संस्कृत में भी नगण्य ही था, क्योंकि हमारे पूर्वज आत्म-श्लाघा को कतई पसन्द नहीं करते थे। इसी कारण हमारे पूर्वजों के जीवनों का आधार या तो मात्र अनुमान या फिर अन्त: व बाहय साक्ष्य ही है। इसी कारण सत्यान्वेषण सम्भव ही नहीं है।

हिन्दी साहित्य पर ऋषि दयानन्द व आर्य समाज की छापों को प्रकाशित करने के लिए कुछ एक शोध हुए भी हैं उनमें हिन्दी आत्मकथा पर डा. विश्वबन्धु, हिन्दी जीवनी पर डा. शांति खन्ना, गद्य साहित्य पर डा चन्द्रभाणु सीताराम सोनवणे तथा हिन्दी पत्र साहित्य पर डा. कमल पुंआणी ने सर्वोत्तम कार्य किया है। मेरा शोध भी इसी प्रवाह की ही एक कड़ी है।

हिन्दी जीवनी साहित्य की अधिकारिक विदुषी डा शांति खन्ना ने तो भारतेन्दु हरिशचन्द्र के जीवनी साहित्य में भी अनेक त्रुटियों की ओर इंगित किया है। उन्होंने स्वामी जी की दो जीवनियों का उल्लेख किया है, किन्तु न जाने क्यों वह हिन्दी की सर्वप्रथम जीवनी तक नहीं पहुंच पाई। मेरे विचार में सम्भवतया वह जीवनी श्री जगन्नाथ कृत ऋषि दयानन्द की ही जीवनी होगी। ऐसे ही हिन्दी जीवनी पर शोध करने वाली चन्द्रावती देवी भी यहां तक न पहुंच पाई। जिस प्रकार वह हिन्दी गद्य की सर्वप्रथम जीवनी न खोज पाई, उसी प्रकार ही स्वामी दयानन्द सरस्वती की आत्मकथा को भी वह छू नहीं सकी। इसका कारण सम्भवत: यह हो सकता है कि उन्होंने हिन्दी आत्मकथा विधा को हिन्दी जीवनी के अन्तर्गत स्वीकार ही न किया हो।

किन्तु हिन्दी गद्यात्मक आत्मकथा के क्षेत्र में ऋषि दयानन्द सरस्वती स्वरचित आत्मचरित्र का ऐतिहासिक व साहित्यिक महत्व आज सर्वविदित हो चुका है। यद्यपि स्वामी जी आत्म श्लाघा के विरूद्ध थे, किन्तु भक्तों के बार बार विगत जीवन के बारे में पूछने पर उन्होंने अपना अति संक्षिप्त गद्यात्मक आत्मचरित्र लिख डाला। यह आत्मचरित्र हिन्दी साहित्य में सर्व प्रथम होने के अतिरिक्त थोड़े से शब्दों में अत्याधिक कह जाने के कारण इसका साहित्यिक महत्व भी बढ़ गया है। फिर उन्होंने तथ्यों का निरूपण भी बहुत सरल ढंग से किया है। जैसें "मैंने पांचवें वर्ष में देवनागरी अक्षर पढ़ना आरम्भ किया।" मूर्ति पूजा से वैराग्य के बारे में लिखते हैं, "अत: चूहे की यह लीला देख मेरी बाल बुद्धि को ऐसा प्रतीत हुआ जो शिव अपने पशुपतास्त्र से बड़े-बड़े प्रचंड दैत्यों को मारता हे क्या उसमें एक निर्बल चूहे को भगा देने की शक्ति नहीं है।" इस प्रकार प्रत्येक पग पर उनकी भाषा लालित्य प्रवीणता, सरलता, उत्सुकता, कर्मठता, उत्साह, दृढ़ निश्चय व रोमांच लिए हुए है। उनके इन शैलीगत गुणों से तो कई बार उनकी मातृभाषा हिन्दी होने की भी शंका उठ खड़ी होती है।

यदि आत्म-कथा लेखक अपने दोषों को छुपाकर केवल गुणों का ही वर्णन करता है तो वह न केवल अन्धेरे में ही है अपितु वह तो आत्मश्लाघा मात्र ही रह जाती है अपनी उन्नति वास्तव में अपने अवगुणों को प्रकाशित करने मे निहित है। अत: ऐसे चित्रण में भी स्वामी जी पीछे नहीं हटे, उन्होने लिखा है कि "मैं यहां से हिलने के स्थान पर मर जाना ही उत्तम समझता हूं।" ऐसे अनेक गुणों से युक्त यह लघु रचना अलकार विहीन, छन्द विहीन होते हुए भी आकर्षक व गतिशील है। सामान्य व लघु होते हुए भी विशिष्ट व महाकाव्य है। यह मानवीयता, सरसता व मधुरता के गुण भी संजोए हुए है। इतनी विविध विशेषताओं के पश्चात भी हिन्दी गद्य साहित्य में यह आत्मकथा सर्वप्रथम आत्मकथा के रूप में स्वीकार हो चुकी है। डा सोनवर्णे ने अपने शोधग्रंथ हिन्दी गद्य साहित्य मे इस बात को स्वीकारा ह जबकि डा विश्वबन्धु ने अपने शोधग्रन्थ हिन्दी आत्मकथा साहित्य मे यह प्रतिपादित किया हे कि हिन्दी गद्य में सर्वप्रथम आत्मकथा होने का श्रेय भी इसी पुस्तक को ही दिया जाता है। मेरे शोध ग्रन्थ का निष्कर्ष भी यही है। इस प्रकार इन दोनो मनीषियों ने विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है।

जब हम हिन्दी पत्र साहित्य पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय मिलता ह। भारतीय नवजागरण क प्रणता होने के कारण उन्ह बहुत पत्र व्यवहार भी करना पडता था। यह पत्र-व्यवहार आरम्भिक काल मे तो सस्कृत में रहा किन्तु बाद म हिन्दी में किया। उनके अनेक पत्र आज भी उपलब्ध हैं इन पत्रो का सर्वप्रथम संकलन सन् 1910 ई मे महात्मा मुन्शी राम ने ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार के नाम से छ. भागों में प्रकाशित किया। इसके अनन्तर पं भगवदत्त जी प युधिष्ठिर जी मीमांसक आदि ने भी ऐसे संकलन प्रकाशित किये। इस प्रकार 1910 से 1935 के मध्य हिन्दी पत्र-साहित्य पर छ: ग्रन्थ प्रकाशित हुए। यह कहते हुए हमे गर्व होता है कि यह छ: के छ ग्रन्थ ही महर्षि दयानन्द के पत्रों म ही संबधित थे।

पं भगवदत्त जी की यह उत्कट इच्छा थी कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक एक शब्द सुरक्षित रखा जाए। इसी इच्छा को पूर्ण करने का कार्य ऋषि दयानन्द के पत्र व विज्ञापन सम्बन्धी साहित्य ने किया।

हिन्दी पत्र साहित्य सम्बन्धी टिप्पणियों से पता चलता है कि बहुत से इतिहास लेखको ने तो पत्र साहित्य विधा का उल्लेख ही नहीं किया। यदि किसी ने किया है तो वह ऋषि दयानन्द सरस्वती से अछूते रहे और किसी ने इसे छूने का प्रयास भी किया तो असगति की कोई कसर ही उठा न रखी।

डा हरवस लाल शर्मा व डा नगेन्द्र दोनों ने ही एक समान मत प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि आलोच्य युग म पत्र साहित्य विषयक दो महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशन ह महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द ने सन् 1904 मे स्वामी दयानन्द सम्बंधी पत्रों का सकलन कि[illegible] यह युग का नहीं समस्त हि[illegible] साहित्य मे पहला प्रकाशित ग्रन्थ है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में एक दिन

□श्री. मारकंडा

समाचार पढ़ा कि आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री प्रिंसीपल स्वतंत्र कुमार जी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के उप कुलपति नियुक्त हो गये हैं। मन प्रसन्न हुआ। उन्हें बधाई कैसे दी जाये। मेरे पास न ही उनका मोबाईल नम्बर था तथा न ही टैलीफोन नम्बर। महा काव्य "मेघदूत" के नायक की तरह मुबारक बाद का संदेश वायु के हाथ ही भेज दिया और समझ लिया कि विश्वविद्यालय के प्रांगण में सैर कर रहे श्री स्वतंत्र कुमार जी को घूमती हवा ने मेरे मन की मूक आवाज़ जरूर सुना दी होगी। मन को दोहरी प्रसन्नता थी। पहले हमारे वयोवृद्ध आर्य नेता महादानी पंडित हरवस लाल जी शर्मा जो आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष भी हैं इस संस्था के चांसलर मनोनीत हो चुके हैं और अब श्री स्वतंत्र कुमार जी वाईस चांसलर। अनुभव हो रहा था जैसे स्वयं ही इन दोनों पदों पर आसीन हुआ हूं। यह दोनों अपने ही तो है।

आर्य विद्या परिषद पंजाब के प्रस्तोता श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा से फोन पर बात हो रही थी तथा इस प्राप्ति का मुकट भी उन्हीं के सर पर शोभा देता है। बातों बातों में उन्हें भी बधाई दी तो वह झट बोले कि 16 जुलाई को गुरुकुल कांगड़ी पहुंचना। उस दिन हमारे माननीय कुलपति साहिब इस वर्ष के नये शिक्षा स्तर का प्रारंभ करेंगे। मैंने जताया कि मैं जरूर पहुंचूंगा।

जब से मैं आर्य विचार धारा से जुड़ा हूं। तब से गुरुकुल कांगड़ी तथा यहां पर स्थापित विश्व-विद्यालय का नाम सुनता रहा हूं। हरिद्वार अनेक बार गया हूं। गुवार की तरह इसके पास से गुजरा भी हूं कभी इसे भीतर से आंखों से देख नहीं पाया। श्री देवेन्द्र नाथ जी का निमंत्रण ऐसे लगा जैसे विदेश जाने के लिये वीज़ा लग गया हो।

मन बनाया कि 15 जुलाई को सुबह वाली गाड़ी जो हरिद्वार को जाती है से जाया जाए। चला तो इससे पहले भी जाया जा सकता था परन्तु 14 जुलाई को अपनी सास का मोगा में अन्तिम शोक दिवस भी था। अगर और कोई रिश्तेदार होता तो बहाना बनाया जा सकता था परन्तु यहां ऐसा नहीं हो पाया। अकेले का मन कैसे लगेगा-इस चिंता को मन से भगा कर, आर्य हाई स्कूल तपा के मैनेजर श्री तेजपाल पक्खों को साथ चलने को कहा वह रजामंद हो गये तथा मौके पर आकर जवाब दे गये क्योंकि इसी दिन उनकी धर्म पत्नी ने दिल्ली आंखों के आप्रेशन के लिये रवाना होना था। सुरेंद शर्मा मुख्य-अध्यापक से बोला तो जैसे पहले से ही तैयार बैठे थे ऐसा लगा यात्रा पर चलने का कार्यक्रम निश्चित हो गया।

बठिंडा से हरिद्वार जाने वाली गाड़ी समय पर ही 7-30 बजे प्रातः काल पहुंच रही है। मुख्याध्यापक सुरेंद्र शर्मा ने फोन द्वारा सूचित कर दिया था। नहाया, पाठ किया और नाश्ता करके तैयार पर तैयार बैठा था। सूट-केस में अपना रोजाना प्रयोग का सामान संभाल रखा था। लड़का समीर कुमार स्कूटर पर बिठा कर स्टेशन पर छोड़ आया। सुरेंद्र ने टिकटें ले रखी थी। गाड़ी पहुंच गई। भीड़ कम न थी। एक डिब्बे में चढ़ गये। इस में मलोट के डी.ए.वी. स्कूल के छात्र भी हरिद्वार शिविर पर जा रहे थे। मौज-मेला तथा अठखेलियां करते हुए छात्रों को देख कर अपने स्कूल में पढ़ने का समय भी याद आया कि अब का छात्र हमारे समय से कितना आगे बढ़ा हुआ है। नये युग का प्रभाव इन नन्हें मुन्हें बालकों की बोल चाल से नज़र आ रहा था। गाड़ी बरनाला, धूरी, पटियाला, अंबाला, जगाधरी तथा सहारनपुर आदि स्टेशनों को पीछे छोड़ती हुई 6 घन्टे में हरिद्वार पहुंच गई। सुरेंद्र घर से खाना बनवाकर ले गया था जो रास्ते में भूख लगने पर दो बार खाया।

हरिद्वार के रेलवे स्टेशन से बाहर आकर थ्री-व्हीलर लिया और इस पवित्र धाम पर बनी हमारे नगर की "तपा की धर्मशाला" में हम पहुंच गये। दोपहर के दो बज चुके थे। कैसी विडंबना कि यहां पर हमारा पड़ौसी जगन नाथ तथा मेरा पुराना मित्र श्री सोम नाथ महिता यहां परिवार समेत ठहरे हुये थे। हाल चाल पूछा। जल-पान करवाया। कुछ देर गप छप चलता रहा और साथ साथ संगी साथियों की निंदा चुगली भी। मैनेजर ने हमें आराम के लिये कमरा दे दिया तथा हम तय न कर पाए कि यहां रुकें अथवा वहां रुकें। जहां हमारी मंज़िल थी। कमरे में आराम करने के लिये लेटे तो नींद ने आ दबोचा। उठे तो पांच बज चुके थे। गंगा में जाकर नहाने की इच्छा हुई। वहां पहुंचे गंगा में स्नान किया। सुरेंद्र डुबकियं लगा रहा था और उसके मुख से बार बार गंगा मईया की जय हो निकलता। मैं कभी स्वामी दयानन्द जी के दर्शन की ओर ध्यान देता और कभी मुख्य-अध्यापक द्वारा गंगा में लगाये गये गोतों के उपरान्त उसके दर्शन करता मुझे सूफी शायर बुल्ले शाह का कलाम याद आया

"जेकर रब्ब गंगा नहातियां मिलदा

तां मिलदा जल विचर दियां मच्छीयां।"

अथवा गंगा नहातियां कुछ नहीं मिलदा भावे सौ सौ गोते लाईये।

स्वामी दयानन्द जी ने किस तरह पाखण्डों का खंडन किया जैसे आज के तर्कशील लगे हुए हैं। सुरेंद्र जी कहने लगे काहे चिंता में डूबे हो, यहां पर आर्य समाजी भी नहा कर स्वयं को भाग्यशाली मानते हैं। मैं बोला मैंने पढ़ा है स्वामी दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी गंगा में नहाने को इस तरह से नहीं लेते थे जैसे हम और अन्य लोग। मन में विचारों का युद्ध होता रहा और तन गंगा के ठण्डे पानी में आनंद विभोर होता रहा।

शाम गहरी हो चुकी थी। आरती का समय होने वाला था। हम गुरुकुल कांगड़ी में पहुंचना चाहते थे। सोचा देवेन्द्र नाथ जी पहुंच गये होंगे। हम भी सायं 6 बजे गुरुकुल कांगड़ी के प्रवेश द्वार द्वारा विश्व-विद्यालय के भीतर जा चुके थे। थ्री-व्हीलर वाला हमें कुलपति के निवास पर छोड़ गया। गेट पर खड़े गेटमैन ने बताया कि कुलपति अभी-अभी अपने किसी मित्र के साथ कहीं गये हैं वह जल्दी ही आ जाएंगे। हमारे साथ इन लोगों का व्यवहार बहुत अच्छा तथा स्नेह भरा था। कुलपति का निवास महाराजा के मिनी महल जैसा नज़र आता था। लग रहा था विश्वविद्यालय जैसे एक रियासत हो और श्री स्वतंत्र जी इसके राजा। हमारे पास श्री दीपक जी आनंद जी आ गये। और हमें कुलपति के अतिथि मान कर सीनेट हाल में ले गये। यहां उन्होंने हमें श्री क़रतार सिंह से मिलाया। श्री करतार सिंह पंजाब के ही हैं जो गत कई वर्ष से यहां नौकरी कर रहे हैं और सम्पदा अधिकारी हैं। चाय के साथ साथ मैं उनसे विश्व-विद्यालय की जानकारी लेता रहा। यहां के माहौल के बारे में पूछा तो बोले पहले तो यहां पर गुन्डों का राज्य था यहां की भूमि पर लोगों के अवैध कब्जे थे। सब लोग मनमानी कर रहे थे। श्री हरवंस लाल शर्मा जी जब से चांसलर बने हैं तब से बिगड़ा महौल सुधरा है। यह विश्व-विद्यालय तो राजनीति का अखाड़ा था। वेद प्रचार की जगह लोग अन्य कार्यों में मशरुफ थे। युनीवर्सिटी पर कुछ राजनैतिक लोगों ने अपना कब्जा जमाने के लिये हल्ला किया। गोलियां चलीं। पुलिस ने केस दर्ज किये। अभी भी चल रहे हैं तो कहीं जाकर अब यहां का वातावरण शांत हुआ है। उन्होंने यहां की भूमि, वेद, भाषा, इतिहास, योगा, विज्ञान तथा कम्प्यूटर विभागों की जानकारी दी।

संदेश मिला कि श्री स्वतंत्र कुमार जी आ गये हैं। हमने उनके निवास स्थान की ओर प्रस्थान किया। श्री स्वतंत्र जी बड़े तपाक से मिले। वही साधारण वेश-भूषा, वही प्यार भरी मुस्कान, लगा वी.सी. बनने के उपरान्त कोई गुमान नहीं और न ही कोई घमंड। खुल कर बातें हुई। विश्व विद्यालय को एक अलग तरह की संस्था बनाने का स्वप्न मैं उनकी आखों में तैरता देख रहा था। यह पल स्वादिष्ट भी लग रहे थे तथा ज्ञान वर्धक भी। मुझे लगा अब इस संस्था का कल्याण होगा। जिस तरह से इनका वी.सी. के तौर पर चयन किया गया है उससे लगता है कि श्री स्वतंत्र कुमार जी इस विश्वविद्यालय को कहीं से कहीं ले जाएंगे। वह सुशिक्षित शिक्षा शास्त्री हैं, पढ़ाने का अच्छा अनुभव है। छात्रों, प्राध्यापकों तथा कर्मचारियों की मानसिकता को अच्छी तरह से समझते हैं। दूर अंदेश अक्लमंद और वैज्ञानिक सोच के धारणी होने के नाते वह कामयाब कुलपति सिद्ध होंगे और बहुत सी बातें चली। देवेन्द्र नाथ जी अभी तक पहुंच नहीं पाये थे। खाने का वक्त हो गया था हमें श्री स्वतंत्र जी ने अतिथि गृह में ले जाकर बैठाया। मेज़ पर भोजन परोसा गया। भूख तो थी ही, आनन्द आया भोजन पा कर।

करतार सिंह ने हमें कमरा न: 2 में ठहराया। वातानुकूल कमरे में हमें गहरी नींद आई। अगली सुबह प्रातः काल का तब ही पता चला जब कर्मचारी चाय देकर गया।

(क्रमशः)

सम्पादकीय.....

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों की सेवा में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पिछले कुछ समय से अनुभव कर रही है कि गत वर्षों में आर्य समाज सभी क्षेत्रों में बहुत आगे बढ़ा है। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज सरकार के बाद दूसरे नम्बर पर है, समाज सुधार के क्षेत्र में भी आर्य समाज काफी आगे बढ़ा है। स्त्री शिक्षा और समाज सुधार, देश भक्ति के क्षेत्रों में भी आर्य समाज बहुत आगे बढ़ा है। कहने का भाव यह है कि जो कार्य आर्य समाज ने अपने हाथ में लिया उसे पूरा करके छोड़ा, परन्तु एक क्षेत्र ऐसा है जिसमें हम उतने आगे नहीं बढ़े जितना हमें बढ़ना चाहिए था वह है वेद प्रचार। इसलिए अब सबसे अधिक हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए।

सभा अधिकारियों ने निश्चय किया है कि 4 अगस्त 2002 रविवार को प्रातः 10 बजे सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के मन्त्री, प्रधान और कोषाध्यक्षों की एक बैठक बुलाई जाए। इसलिए सभी आर्य समाजों के मन्त्री महानुभावों को सभा कार्यालय से पत्र लिख दिए गए हैं कि वह अपने साथ अपनी आर्य समाज के प्रधान जी व कोषाध्यक्ष जी को साथ लेकर प्रातः 10 बजे सभा कार्यालय में अवश्य इस बैठक में पहुंचे। हमारी यह इच्छा है कि सभी आर्य समाजों के अधिकारी बैठ कर विचार करें कि हमने पंजाब में किस प्रकार से वेद प्रचार का कार्य बढ़ाना है

मैं यह जानता हूं कि पंजाब की कई आर्य समाजें ऐसी हैं जो वेद प्रचार का कार्य बहुत कर रही हैं। मैं उन सब आर्य समाजों के अधिकारियों का धन्यवाद करता हूं जो अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपनी आर्य समाज में दैनिक, साप्ताहिक व पारिवारिक सत्संग भी कर रहे हैं और वर्ष भर में दो-तीन बार वेद कथा व उत्सव भी करते हैं, परन्तु बहुत सी ऐसी आर्य समाजें भी हैं जिनमें न दैनिक सत्संग होता है न साप्ताहिक और न ही उनके उत्सव होते हैं। इसलिए हम एक ऐसी योजना सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से मिल कर बनाना चाहते हैं जिससे सभी आर्य समाजों में वेद प्रचार का कार्य हो। हम जिलावार तथा सिलसिलेवार वेद प्रचार का कार्यक्रम बनाना चाहते हैं। सभा के पास इस समय तीन उपदेशक व तीन भजनोपदेशक हैं परन्तु उन्हें भी हम पूरा काम नहीं दे पा रहे। हमारी यह इच्छा है कि एक जिले की जितनी भी आर्य समाजें हैं, उनके क्रमवार कार्यक्रम बना दिए जाएं, एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने के लिए उपदेशक को केवल दो या तीन घण्टे लगे जिससे किराये की बचत होगी और प्रचार भी अधिक होगा। लगातार उपदेशक एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रचारार्थ पहुंचते रहेंगे। हमने गत दिनों अपने सभी उपदेशकों की एक बैठक बुला कर उनसे इस विषय में बात-चीत कर ली है। वह इसके लिए तैयार हैं अब आर्य समाजों के तैयार होने की बात है। उपदेशक काम चाहता है परन्तु हम उसे काम नहीं दे पा रहे क्योंकि आर्य समाजों का इस दिशा में हमें कम सहयोग मिल रहा है। कई आर्य समाजें तो अपने कार्यक्रम ही नहीं रखती जो रखती हैं वह अक्सर पंजाब के बाहर के विद्वान बुला लेती हैं परन्तु सभा से उपदेशक नहीं बुलाती। जो आर्य समाजें समर्थ हैं धनाढ्य हैं वह जरूर बुलाएं। इसके दो लाभ हैं एक तो व्यय कम आएगा दूसरा सभा को आप की आर्य समाज की गतिविधियों का पता चलता रहेगा और तीसरा लाभ यह होगा कि प्रत्येक आर्य समाज को सभा को अपने प्रतिनिधि भेजने के लिए दशांश वेद प्रचार की राशि अनिवार्य रूप से देनी पड़ती है। इसलिए वेद प्रचार दशांश की राशि भी उपदेशकों के माध्यम से प्रतिनिधि भेजने से पूर्व ही सभा को मिल जाएगी और सभा के साथ आर्य समाज का सम्बन्ध बना रहेगा। अब कई-कई वर्ष सभा को वेद प्रचार व दशांश की राशियां आर्य समाज की ओर से नहीं भेजी जाती तो बाद में उनको इकट्ठी राशि देनी कठिन हो जाती है। इससे कई आर्य समाजें तो सभा में अपने प्रतिनिधि ही नहीं भेज पाती। प्रत्येक आर्य शक्ति है। इसलिए आर्य समाज का संगठन ही सभा के संगठन को मजबूत बनाता है।

हमने कई बार वेद प्रचार के लिए सुझाव दिए हैं अब सुझाव नहीं मांग रहे अब तो हम कार्य करने की बात कर रहे हैं। कार्य कैसे करना है यह विचार करना आवश्यक है।

इसलिए मेरी सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह 4 अगस्त को सभा कार्यालय में पधार कर अपने कार्यक्रमों से सभा को अवगत कराएं। हम प्रयास करेंगे कि अधिक से अधिक आर्य समाजों में एक साथ वेद प्रचार की व्यवस्था की जा सके।

—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

महर्षि दयानन्द प्रमुख साहित्यकारों की दृष्टि में!

महर्षि दयानन्द जी से बढ़कर मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता।

किसी दूसरे प्रतिभाशाली पुरुष से और जो कुछ उपकार देश तथा जाति का भले हुआ हो, सबसे पहले वेदों को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही हमारे सामने रखा.. यदि हमें ऋषियो की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए हम गर्व करते है तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढकर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नही किया, जिन्होने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदो से परिचित करा दिया। विभिन्न मतों का प्रचलत ही देश के पतन का कारण है, स्वामी जी की यह निर्भ्रान्त धारणा थी। उन्होने मत-मतान्तरों पर सप्रमाण आक्षेप भी किए . उनकी इच्छा थी कि इस मतवाद के अज्ञान-पंक से इस देश को निकाल कर वैदिक शुद्ध शिक्षा द्वारा निष्कलंक कर दें।.. आर्यावर्त के अधिकांश भागों मे स्त्री-शित्रा-विस्तार का अधिकांश श्रेय आर्य समाज को दिया जा सकता है।

—महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सन् 1883 में स्वामी दयानन्द की मृत्यु हुई और १८८५ ई. में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की। स्वामी दयानन्द ने २० वर्ष काम किया और भारतेन्दु ने २१ वर्ष। ये दोनो महानुभाव ऐसा सास्कृतिक प्रभाव छोड़ गए, जो दिन व दिन तेजी के साथ बढ़ता चला गया और जिसने शीघ्र ही सम्पूर्ण उत्तर भारत मे जागरण की नई लहर पैदा कर दी। स्वामी दयानन्द के प्रवचनो में अधिक आकर्षण यह था कि वे एकेश्वरवादी थे, रूढियों के विरोधी तथा प्रगति के समर्थक थे। एक ओर वे प्राचीनतम वैदिक संस्कृतिक को दृढता से थामे हुए थे, दूसरी ओर वे नये-नये सुधारों का स्वागत करते और सर्वसाधारण को उन पर अग्रसर होने को कहते थे। उनके विचार पाश्चात्य विकास से मिलते-जुलते थे, परन्तु वैदिक संस्कृतिमय थे।

—आचार्य चतुरसेन शास्त्री

मेरे ह्रदय में श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती पर अगाध श्रद्धा है। वे बहुत बडे समाज संस्कर्ता, वेदों के बहुत बड़े ज्ञाता तथा भाष्यकर्ता और धर्म-संस्कृति के बहुत बड़े पुरस्कर्ता थे। मैं स्वामी जी की विद्वता और उनके कार्य-कलाप को अभागे भारत के सौभाग्य का सूचक चिन्ह समझता हूं। अतएव-धन्यञ्च प्राज्ञमूर्धन्यदयानन्द दयाधनम्। स्वामिन तमह वन्दे वारं वारं च सादरम्॥

—आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

रणारूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई भी नहीं हुआ। दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक केवल सुधारक थे, किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आगे बढ़े। वे हिन्दू धर्म के रक्षक होने के साथ ही विश्वमानवता के नेता भी थे। रीतिकाल के ठीक बाद वाले काल मे हिन्दीभाषी क्षेत्रों में जो बड़ी सांस्कृतिक घटना घटी, वह स्वामी दयानन्द का पवित्रतावादी विचार था। इस युग के कवियो को शृंगाररस की कविता लिखते समय यह प्रतीत होता था जैसे स्वामी दयानन्द पास ही खडे सब कुछ देख रहे हैं।

—राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

सरल-सुखी जीवन

□ ले० श्री भद्रसेन, बी-2, 92/7 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर-146001

(गतांक से आगे)

हमारी जो इन्द्रियां काम, क्रोध, लोभ आदि के कारण अपने-अपने विषयों की ओर दौड़ती है। आचार्य चाणक्य ने अपने कौटिल्य-अर्थशास्त्र के विनयाधिकार (1, 6) मे इतिहास से रावण, दुर्योधन आदि के उदाहरण देकर बताया है, कि काम आदि की अमर्यादा के कारण ये-ये पतित हुए। हां, हर विद्या, सदाचार और सफलता प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले को सदा इन्द्रियों को अपने वश मे रखना चाहिए, क्योंकि विद्या, विनाय का मूलमन्त्र इन्द्रिय जय ही है। अत: विद्या, सदाचार और सफलता की प्राप्ति का मूलमन्त्र इन्द्रियों को जीतना ही है।

18-धी (=बुद्धि, ज्ञान)

जीवन को सुखी बनाने के लिए मनुस्मृति में धर्म का पालन आवश्यक माना गया है और वहां धर्म के पूरे रूप का परिचय देते हुए उस के दस अंग बताए हैं, जिनमे सातवां स्थान धी का है। हमारे शास्त्रों में धी शब्द अन्त: करण में परिगणित बुद्धि के लिए जहां आता है, वहां न्यायदर्शन में बुद्धि शब्द ज्ञान के लिए आया है। अन्त: करण का अर्थ है-अन्दर की इन्द्रियां, साधन अर्थात जैसे हम आंख जैसी बाहर की इन्द्रिय से देखने का कार्य करते हैं। ऐसे ही हमारे अन्दर भी सोचने, निर्णय लेने आदि के कार्य होते हैं। ये कार्य आत्मा जिन साधनों की सहायता से करता है, वे साधन ही अन्त: करण कहलाते हैं, इन में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की गिनती होती है। मन से जब हम सोचते हैं, तब हमारे सामने अनेक पहलू आते हैं। इस दुविधा की स्थिति मे बुद्धि निर्णय करती है, कि क्या सही है? क्या उचित या हितकारक है? या क्या ग्राह्य है? अन्त: आन्तरिक स्तर पर निर्णय में सहायक बनने वाले साधन का नाम ही बुद्धि है। हमारा प्रत्येक कार्य ज्ञान के द्वारा ही सिद्ध, सफल होता है, हमारा साधारण से साधारण कार्य भी ज्ञान के बिना नहीं हो सकता। यन्त्रों के प्रयोग की दृष्टि से तो उन का ज्ञान और भी जरूरी हो जाता है अर्थात हर मशीन को तभी बरता जा सकता है, जब उस के बरतने का ज्ञान होता है, अन्यथा लाभ के स्थान पर वह हानि का ही कारण बनती है। इसी लिए ज्ञान की नेत्र, प्रकाश, सोपान, कल्पना आदि से उपमा दी जाती है तथा ज्ञान की महिमा स्वीकार करते हुए ही सभी शास्त्रों ने एक स्वर से उस की बहुत प्रशंसा की है।

ऊपर के विवेचन से यह स्वत: स्पष्ट हो जाता है, कि जीवन को सफल बनाने के लिए बुद्धि और ज्ञान की महिमा को सदा स्मरण रखना चाहिए। क्योंकि जैसे हमारी आंखें प्रकाश की सहायता से ही अपना कार्य करने में समर्थ होती है। ऐसे ही हमारी बुद्धि भी ज्ञान के सहयोग से ही अपने कार्य (=विवेक, निर्णय) में समर्थ होती है। यहां विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है, कि हमारे पशु, पक्षी, कृमि आदि योनियों में यही सब से बड़ी विशेषता है कि हम सोच सकते हैं। इसीलिए हम मनुष्य, मानव कहलाते हैं, मननशीलता, सोचना, विचारना ही इस नाम की सार्थकता है। मानव की सारी प्रगति सफलता धी=बुद्धि पर निर्भर है। अत:एव 'धियो योन: प्रचोदयात' ये 22, 1 शब्दों से उसके सदुपयोग का ही सन्देश है।

19-विद्या (विघातपोभ्याम् भूतात्मा)

विद्या शब्द अधिकतम पढ़ाई-लिखाई के लिए प्रसिद्ध है, जैसे कि विद्यालय विद्यार्थी में इसी दृष्टि से प्रयुक्त हुआ है। पर यहां विद्या शब्द अध्यात्म ज्ञान का वाचक है, तभी तो मनुस्मृतिकार ने विद्या को आत्मशुद्धि का साधन माना है (5, 108) और वहां कई स्थलों पर विद्या शब्द अध्यात्म ज्ञान के अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है तथा उस का फल अमृत (12, 85) कहा है। वैसे भी यहां धर्म का प्रसंग है और पहले धी शब्द में ज्ञान का संकेत आ ही चुका है।

आत्म ज्ञान के होने पर व्यक्ति सामान्य दुखों में घबराता नहीं और किसी कार्य में अनुचित ढंग नहीं अपनाता, अपितु सच्चाई के लिए अपने आप का बलिदान करने के लिए उद्यत रहता है। आत्मज्ञान से व्यक्ति में आत्म विश्वास और आत्मसम्मान का भाव उभरता है। जिस से वह उत्साह के साथ शुभ कर्मो में जुटा रहता है। तभी तो अर्जुन के आत्म बल के उभारने के लिए श्री कृष्ण जी ने गीता के दूसरे अध्याय में आत्मा के स्वरूप की चर्चा की है और योग की प्रक्रिया को इस दृष्टि से उपयोगी बताया है। गीता में आत्म विश्वास पर विशेष बल देते हुए कहा है:-

'निज से निज का उद्धार करें, नहिं पतित करें अपने को भी।

हम आप ही अपने बन्धु हैं, हम आप ही अपने शत्रु भी 116, 5' -जगतावली सूद

मनुस्मृतिकार ने 5, 108 में विद्या को आत्मा के संशोधन का साधन बताया है। ऐसी स्थिति में पढ़ाई-लिखाई की अपेक्षा अध्यात्म ज्ञान ही सहायक है और इस प्रसंग में तप का भाव योगाभ्यास से ही है क्योंकि वह ही इस प्रकरण में आत्मज्ञान का क्रियात्मक रुप हो सकता है।

अत: धर्म की चर्चा में पढ़ाई-लिखाई की अपेक्षा विद्या शब्द को अध्यात्मज्ञान अर्थात अपने आप की पहचान कराने वाले ज्ञान के अर्थ में लेना अधिक उपयुक्त है। हां, आत्मज्ञान का विस्तृत विवेचन 'अमृतदर्शन' में है।

20-सत्य (सांच बराबर तप नहीं)

आज सत्य शब्द इतना अधिक प्रचलित और प्रसिद्ध है कि इस सम्बन्ध में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। सभी व्यक्ति और धर्म सत्य की उपयोगिता के सम्बन्ध में सहमत हैं। अत: प्रत्येक व्यक्ति अपने कथन को सत्य मानता और मनवाना चाहता है, पर वस्तुत: सत्य वही है, जिस में अन्दर-बाहर की स्थिति एक हो, उन में किसी प्रकार का असमञ्जस, विरोध, असंगति न हो, अर्थात जो तीनों कालों में एक सा रहे। जिस को दूसरे शब्दों में इस प्रकार से कह सकते हैं:-'मनवाणी तथा कर्म की एकरुपता हो, तभी तो कहते हैं-सत्य वही है, जिस में छल, धोखे की तरह बहुरुपियापन न हो, इसीलिए सभी एकमत होकर इसकी. प्रशंसा करते हैं और इस को चाहते हैं, क्योंकि सत्य से ही कार्य सिद्धि होती है, अर्थात सही ढंग अपनाने पर ही कार्य सिरे चढ़ता है, मनमर्जी से नहीं।'

सत्य से ही किसी वस्तु, व्यक्ति, संगठन पर किसी का विश्वास स्थिर होता है और विश्वास से ही पारस्परिक व्यवहार सम्पन्न होते हैं और तभी कार्य, व्यवहार या बात स्थायी होती है अथवा उस में स्थिरता आती है। जैसे-जैसे कोई सत्य का आचरण करता है, वैसे-वैसे वह उस क्षेत्र में उन्नत होता है तथा उस का यश, गौरव फैलता है। यह एक सर्वमान्य बात है कि सत्य ही सरल, सरस होता है, क्योंकि उसके लिए किसी बनावट की जरुरत नहीं होती। इसके विपरीत एक झूठ को छिपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं। सत्य सर्वहितकारी भी होता है और उसी को ही सत्य माना जाता है, इसी लिए ही सभी शास्त्रकारों ने एक स्वर से सत्य की श्लाघा की है। सत्य को ऋत (=Right) भी कहते हैं, तभी तो इसका विपरीत शब्द अनृत है, जो कि झूठ के अर्थ में प्रयुक्त होता है। हां, ऋत शब्द का अधिकतर प्रयोग प्राकृतिक सच्चाईयों के लिए होता है।

धर्म के सभी तत्त्वों में से सब से अधिक महत्व सत्य का ही है। धर्म के दूसरे अंग धृति क्षमा आदि सत्य की व्याख्या के रुप में आते हैं, क्योंकि यह एक सच्चाई है कि व्यक्ति को हर स्थिति में धैर्य रखना चाहिए। दूसरों पर दया करना एक सच्चाई ही है। इसीलिए धर्म और सत्य को पर्यायवाची माना जाता है और धर्म के वर्णन में सत्य को प्रमुखता दी जाती है। अतएव महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के पंचम नियम में निर्देश किया है-'सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए'। तथा यह उक्ति भी प्रसिद्ध है-'धर्म न दूसर सत्य समाना, आगम निगम पुरान बखाना।'

अत: धर्म को यदि एक शब्द में समझना हो तो वह एक शब्द सत्य ही है, क्योंकि धर्म को अन्य तत्त्व सत्य में ही समाए हुए है। सत्य की उपयोगिता को एक विशेष ढंग से समझाते हुए मनुस्मृतिकार (4, 256) ने कहा है कि हमारे अधिकतर पारस्परिक व्यवहार बोल-चाल द्वारा होते हैं। या बोलचाल से प्रारम्भ होते हैं। अत: व्यवहार साधन बोलचाल में झूठ नहीं बोलना चाहिए क्योंकि झूठ बोलने वाला सारे व्यवहारों की चोरी करने वाला होता है और उस मे परस्पर के सारे व्यवहार तथा कार्य बिगड़ जाते हैं। (क्रमश:)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी की दक्षिण अफ्रीका यात्रा

आर्य युवक संघ वैदिक प्रचार में अग्रणी-कैप्टन देवरत्न आर्य

(गतांक से आगे)

उदारपूर्ण विधि भी देखने को मिली। वह थी कुर्सी पर बैठकर भूमि तल से ऊंचे यजकुण्ड बनाकर उन पर यज्ञ करना। मुख्य यज्ञस्थल एक ऊंची स्टेज के ऊपर बना हुआ है जहां जूते ले जाना मना है लेकिन हाल में आप जूते ले जा सकते हो ऐसा देखने को मिला। पूरे हाल में टेबलें लगा रखी हैं और उसके चारों ओर व्यक्ति कुर्सियों पर बैठे हैं। लेकिन दूसरी ओर यज्ञ के प्रति उनकी श्रद्धा इस बात से ही देखने को मिलती है कि जब तक यज्ञ होता रहा सभी व्यक्ति हाल में अथवा स्टेज पर आंखें बन्द किये शान्ति से बैठे रहे और यज्ञ में अग्न्याधान के समय समिधाओं को यज्ञकुण्ड में दोनों हाथों में लेकर खड़े होकर समर्पित करते रहे। और यज्ञोपरान्त यज्ञ प्रार्थना के समय सभी व्यक्ति अपनी कुर्सियों से खड़े होकर, आंखें मूंद कर हाथ जोड़कर, यज्ञ प्रार्थना का उच्चारण कर रहे थे और इसी मुद्रा में शान्ति पाठ एवं आरती भी की। उनकी यज्ञ के प्रति इतनी आस्था और विश्वास देखकर प्रधान जी की आंखों में आंसू इसलिए आ गए जब उन्होंने कल्पना अपने भारतवर्ष की आर्यसमाजों से की। इसके उपरान्त एक अलग छोटी स्टेज पर पहले से ही बैठे व्यक्तियों ने दो भजनों का गायन किया उसके उपरान्त प्रधान जी द्वारा भाषण और उसके उपरान्त फिर एक भजन और कार्यक्रम की समाप्ति। यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर का भी प्रबन्ध किया जाता है। उन्हीं कुर्सियों पर बैठे बैठे जिन पर पहले से ही प्लेटें चम्मच इत्यादि पड़े होते हैं, में ऋषि लंगर परोस दिया जाता है और टेबल कुर्सी पर उसे ग्रहण कर लिया जाता है। भोजन ग्रहण करने से पूर्व ओ३म् अन्नपते अन्नस्य मंत्र का विधिवत उच्चारण किया जाता है। सच पूछिये तो ऐसी एकरूपता का सपना आंखों में संजोये हुए ही प्रधान जी भारत वर्ष लौटे।

आर्य युवक लीग

आर्य युवक संघ जोकि सेवा का कार्य पूरे दक्षिण अफ्रीका में कर रहा है, के अन्तर्गत आर्य युवक लीग भी कार्यरत है। जिसमें युवकों को आर्य समाज की ओर प्रेरित करने के कार्यक्रम बनाये जा रहे हैं। युवकों के लिए शिविर संगोष्ठियों आदि का आयोजन भी किया जाता है। ऐसे ही एक कार्यक्रम में जहां लगभग डेढ़ सौ युवक उपस्थित थे, प्रधान जी को आमंत्रित किया गया और वहां सभी वृद्ध आर्य अधिकारियों ने ये चिंता जताई कि युवकों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के लिए क्या प्रयत्न करने चाहिए ? प्रधान जी ने विशेष रूप से जिस बात की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया वह था कि युवकों में ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जायें जिनमें उनकी विशेष रुचि हो चाहे वह प्रथम स्तर पर आर्य आयोजन न भी लगें फिर भी उदार मन से उन कार्यक्रमों के माध्यम से युवकों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करना चहिये। चाहे वह फुटबाल का मैच, क्रिकेट का मैच अथवा इसी प्रकार के युवकों के रुचि के कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए लेकिन ये आयोजन करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रहे कि हमारा ध्येय इस कार्यक्रम से बच्चों का आर्य सिद्धान्तों की ओर आकर्षित करना है। आज का युवक बुद्धिजीवी है अगर आप उसे तर्कसंगत रूप में अपनी बात को कहेंगे तो अवश्य ही वह आपकी ओर आकर्षित होगा। ध्यान रहे केवल मूर्ति पूजा के खण्डन गणेश, राम, कृष्ण की बातों का खण्डन करने से युवक अपने मन मस्तिष्क में आर्यसमाज नकारात्मक एवं खण्डन जैसे विचारों को ही करता है की भावना बैठा लेंगे। इसलिए युवकों के लिए ऐसे विशेष प्रवचन संगोष्ठियां वाद विवाद प्रतियोगिताओं के विषय रखने चाहिए। जिनमें खण्डन न होकर सकारात्मक जीवन शैली जीने की कला, शाकाहार, शारीरिक उन्नति आदि बातों की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

और जब ये युवक आपके साकारात्मक दृष्टिकोण से प्रभावित होंगे तो आपकी एक आवाज़ पर किसी भी प्रकार की सहायता एवं सहयोग के लिए तैयार रहेंगे। अगर आप बच्चों के मन में ये भावना डालने में सफल हो गए कि आप ही आर्य समाज का भविष्य हैं और आप को ही आने वाले दिनों में अपने कंधों पर इस आर्य समाज की मशाल को हाथों में उठाना है तो युवक इससे आपकी ओर आकर्षित होंगे। दक्षिण अफ्रीका में कई आर्य समाजों में आर्य युवकों द्वारा आधुनिक नृत्य एवं अन्य अफ्रीकन नृत्यों के सम्मेलनों में सम्मिलित किया जाता रहा और प्रधान जी ने उनको प्रोत्साहित भी किया। कई पूज्य सन्यासीगण एवं विद्वान प्रधान जी की इस बात से प्रसन्न नहीं होंगे। लेकिन समय स्थान और स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुए प्रधान जी का उन्हें प्रोत्साहित करना ही ठीक था।

कार्यक्रमों की कमी

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका आर्य समाज और वैदिक मान्यताओं के प्रचार प्रसार के लिए बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। कई सेवा के कार्यों में तो हमे उनसे प्रेरणा ही लेनी चाहिए। लेकिन अगर दक्षिण अफ्रीका की अन्य हिन्दू संस्थाओं के साथ तुलना करें तो आर्य युवक संघ के सेवा कार्यो को छोड़कर आर्यसमाज उन संस्थाओं से पीछे ही है। प्रधान जी को जानकारी दी गई कि आर्थिक अभाव एवं सहयोग न होने के कारण एक चार एकड का प्लाट हरे राम हरे कृष्ण मिशन वालों को बेच दिया गया। इसी प्रकार कुछ अन्य प्लाट भी वहां कार्यक्रम की कमी के कारण खाली पड़े हैं। प्रधान जी ने ऐसा सुझाव दिया कि आप युवकों के प्रशिक्षणार्थ एक प्रशिक्षण केन्द्र यहा खोल सकते हैं। अथवा अफ्रीकी भाषाओं में वैदिक उपदेशक तैयार करने के लिए उपदेशक विद्यालय भी खोल सकते हो। इसमें हिन्दी और संस्कृत के विद्वान हम भारत से आपको भेज सकते हैं। आर्य समाज के लोगों में वहां उत्साह आस्था एवं विश्वास बहुत अधिक है लेकिन भौतिकता मे फंसे होने के कारण समय का अभाव बहुत है। वानप्रस्थी सेवा निष्ठ कार्यकर्ताओ की अति आवश्यकता है। सोने और हीरे जवाहरात के लिये मशहूर दक्षिण अफ्रीका में आर्यसमाज आर्थिक दृष्टि से पिछड गया है ऐसा प्रधान जी की समझ मे बाहर की बात है।

हिन्दू समाज में एकता

प्रधान जी को कई ऐसी आर्य समाजों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ जो आर्य समाजें गतिशील बहुत हैं लेकिन उनका अपना कोई भवन नहीं है। इसलिए स्थानीय लक्ष्मी नारायण मंदिर अथवा अन्य पौराणिक मंदिरों में आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग व कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इसे अगर नकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए तो ये असफलता ही लगेगी। लेकिन हमें ये सफलता ही लगी। क्योंकि जब हम वहा कार्यक्रमो मे गये तो आर्य परिवारो के अतिरिक्त पौराणिक परिवार भी उसमे सम्मिलित थे। ऐसी हिन्दू एकता का रूप देख मेरा मन पुलकित हो गया। और यह देखकर कि पौराणिकों में आर्यसमाज किस तरह से प्रचार कर रहा है उसका एक जीता जागता उदाहरण दक्षिण अफ्रीका में मिला। अपना भवन होने पर सभवत: सिर्फ आर्य परिवार ही उसमें सम्मिलित होते और आर्य समाज कोई अलग से संस्था है मान ली जाती।

यह पूछने पर कि पौराणिकों ने अपने मंदिर को आर्य समाज के प्रयोग के लिए कैसे दे दिया, का निष्कर्ष यही था कि अधिक खण्डन न करके शुद्ध अपनी ही बात को कहना लाभदायक सिद्ध हुआ। इस बात से हमने एक धारणा मन में बनाई कि हम भारत में भी अपने सभी प्रचारकों और पुरोहितों से सामूहिक शिविर लगाएं और उन्हें अधिक खण्डन न करके अपनी साकारात्मक विषयों पर अधिक प्रचार प्रसार करने के लिए प्रेरित करें और कार्यक्रम देवें। इससे अधिक प्रभावी रूप से हम अपनी बात को अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंचा सकेंगे।

पुरोहितों की वेशभूषा

यहां दक्षिण अफ्रीका में देखने को मिला कि यहां पुरोहित अथवा वेद प्रचार प्रवक्ता कुरता एवं धोती में न होकर वहीं कि वेशभूषा कमीज़ पैंट टाई अथवा कोट पैंट में होते हैं। और कुर्सियों के ऊपर बैठकर ही यज्ञ एवं अन्य संस्कारों को करवाते हैं। परन्तु साप्ताहिक सत्संगों में सम्मेलनों में अथवा विशेष आयोजनों पर वह अपने इन कपड़ों के ऊपर एक सरीका गाऊन अवश्य पहन लेते हैं जिससे वह दूर से ही पहचाने जायें। हमें इस बात में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं लगी क्योंकि जैसा देश वैसा भेस की धारणा को मानते हुए हमें समझौता कर लेना चाहिए। क्योंकि वेशभूषा कोई भी हो फर्क नहीं पड़ता क्योंकि व्यक्ति विशेष का

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जैसा अन्न वैसा मन

□ले. श्री पं. बनारसी दास आर्य आर्य समाज नवांकोट अमृतसर

उपनिषदों का यह अमर संदेश है कि जैसा अन्न खाओगे वैसा ही मन बनता चला जाता है। अन्न का हमारे मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि हमारा भोजन सात्विक है तो हमारे विचार भी सात्विक बन जायेंगे। यदि भोजन रजोगुणी या तमोगुणी है तो विचार भी तमोगुणी बन जायेंगे अर्थात् ऐसे विचार जो आत्मा को, मन को, गिरावट की तरफ ले जाते हैं जिसके कारण मनुष्य, योनि चक्र से निकल नही सकता सतोगुणी भोजन करने से बुद्धि पवित्र बनती है जिससे विचार शुद्ध बनत है। मन शुद्ध होता है। अन्त:करण शुद्ध होता है। प्रभु हृदय मे आकर विराजमान होते हैं। जो व्यक्ति शराब व मांस का सेवन करते हैं। वे मानो अपने पेट को कब्रिस्तान बना लेते हैं। मांस व शराब से मन गंदा, विचार गदे होते हैं। बुद्धि विनाश को ले जाने वाली बन जाती है। जहा मांस, शराब रहेगा, वहा प्रभु विराजमान कैसे रह सकते हैं। जिस मन मे ईर्ष्या द्वेष, काम क्रोध लोभ मोह अहकार रहेगा, वहा भी प्रभु विराजमान नहीं होते।

हिन्दी क एक कवि ने बडे सुन्दर शब्दा मे कहा है-प्रभु से

आये वह और झाककर ही लौट कर जाने लगे।

मैंने कहा दामन पकड, क्यो लौट कर जाने लगे ?

मैं तो कब से जोहती थी बाट शुभ आगमन की।

फिर क्यो चले हो छोड प्रिय, शोभा बढाओ सदन की।

दामन झटक कर चल दिये वो, और यू कहते हुए।

बैठू कहां ? तेरे सदन मे गैर हैं, बैठे हुए।

शुद्ध पवित्र अन्न से बुद्धि शुद्ध होती है। हृदय की सह ग्रंथिया खुल जाती हैं तथा प्रभु दर्शन का रास्ता साफ हो जाता है।

अन्न शुद्ध कमाई का होना चाहिए। मनुष्य जो भी धन कमाता है, वह मेहनत का, परिश्रम का होना चाहिए। धोखाधड़ी व भ्रष्टाचार से कमाया हुआ धन अन्ततय: मनुष्य को डुबो देता है। मेहनत की कमाई से खरीदा हुआ अन्न, बच्चो के लिए व परिवार के लिए पौष्टिक साबित होता है। परिवार इस अन्न से अच्छे स्वास्थ्य व अच्छे विचारों को प्राप्त होता है। परिवार फलता फूलता है। घर में खुशियां आती हैं। यदि अन्न नेक कमाई से नहीं खरीदा गया तो घर के लिए दु:ख, कष्ट पैदा कर देता है। जिससे परिवार घोर संकट में फंस जाता है। इस लिए परिवार को हमेशा नेक कमाई का ही भोजन देना चाहिए।

जब अन्न घर में आ जाता है तो अगला काम आटा गूंदना और रोटी पकाने का होता है। आटा गूंदते समय मन के विचार शुद्ध व उज्ज्वल होने चाहिएं। मुख से ओ३म्, ओ३म् का उच्चारण करते हुए आटा गूंदना चाहिए। यदि मन मे ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहकार है तो वो भी आटे मे गूद जायेगा और जो भी परिवार का सदस्य उस आटे की रोटी खाएगा उसके मन के अन्दर भी ये सभी विकार पैदा हो जायेंगे, जो कि परिवार को आपसी झगड़ों व फूट की तरफ ले जाएंगे। आटा गूंदते समय हाथों की लकीरें आटे पर अपनी छाप छोड़ देती हैं। इस प्रकार गूंदने व भोजन पकाने वाले के मन के विचार आटे मे अथवा भोजन मे चले जाते हैं। इस लिए आटा गूदते समय मन में बहुत अच्छे-अच्छे विचार होने चाहिए। मुख से ओ३म् शब्द का उच्चारण करते हुए ही आटा गूदना व भोजन पकाना चाहिए। पके हुए भोजन को खुशी स, प्रसन्नता पूर्वक परोस कर परिवार को देना चाहिए। भोजन से पहले ईश्वर का नाम ले कर शुरू करना चहिए और भोजन खा चुकने के बाद भी ईश्वर का धन्यवाद अवश्य ही करना चाहिए।

ओ३म् अन्नपते अन्नस्यनोदेहि, नमीवस्य शुष्मण।

प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जम नो देहि, द्विपदे चतुष्पदे॥

कभी-कभी घरो मे मनमुटाव हो जाता है और जो भोजन गुस्से मे आकर परोसा जाता है, उसका खाने वाले को कोई लाभ नहीं होता और जो भोजन गुस्से के साथ खाया जाये, वह शरीर में विष पैदा कर देता है।

अधर्म से कमाया हुआ धन मन को अशान्त कर ही देता है। एक महात्मा थे। ब्रह्ममहूर्त में उठ कर ध्यान में बैठते। थोड़ा प्राणायाम करने के बाद मन टिक जाता था। एक दिन महात्मा जी ने किसी भण्डारे से भोजन खा लिया। उस दिन से लाख यत्न करने पर भी उनका मन नहीं टिका। बड़े दु:खी, बड़े परेशान हो कर अपने गुरू के चरणों में उपस्थित हो कर प्रार्थना की कि गुरुदेव मैं बहुत दु:खी हूं। मुझ पर कृपा कीजिए। गुरू जी ने सारा वृत्तान्त सुना और कहा कि पता करो किस व्यक्ति ने भण्डारा किया, वह व्यक्ति कौन है ? उसने भण्डारा किस प्रयोजन से किया है? महात्मा नें अच्छी तरह से पूछताछ करके पता लगाया कि किसी व्यक्ति ने अपनी बेटी को पांच हजार रुपये में किसी बड़े व्यक्ति के पास बेच दिया है और उसमें से एक हजार का उसने भण्डारा लगा दिया है और उसकी बेटी उस बूढ़े के साथ जाने को तैयार नहीं है। रो रही है, चिल्ला रही है। यही बात बार-बार मेरे मन में आती है जिससे मैं परेशान हूं और मेरा ध्यान नहीं लगता। गुरू जी ने कहा-यह उसी अन्न का प्रभाव है। जब तक यह अन्न शरीर से निकलेगा नहीं तब तक तुम्हें शान्ति नहीं मिलेगी। यह है अधर्म पूर्वक उपर्जित अन्न खाने का परिणाम। ऐसा केवल पाप की कमाई से ही नहीं होता बल्कि बुरे व्यक्ति के हाथ का बनाया हुआ अन्न भी मन पर बुरा प्रभाव डालता है। भोजन पकाने वाले के विचार शुद्ध उज्ज्वल होने चाहिए।

कई बार घरों में छोटे मोटे झगड़े पति-पत्नी के बीच हो जाते हैं। आटा गूंदने वाली देवी आटा बनाते समय या रोटी पकाते समय आंसू बहा रही होती है। कभी-कभी उसके आंसू भी आटे में गिर जाते हैं। ऐसा भोजन खाने वाले के लिए लाभदायक सिद्ध नहीं होता। कभी-कभी माताएं कष्ट में होती हैं तथा आटा या रोटी बनाते समय हाय हाय पुकारती जाती हैं ऐसा भोजन भी कष्टों भरा होता है। हाय-हाय की बजाए ओ३म् शब्द का उच्चारण करना चाहिए जो कि दु:ख दूर करने वाला है और मन को शान्ति देने वाला है।

यह है अन्न का प्रभाव। जैसा अन्न होगा॥ वैसा ही मन बन जाता है। जैसा आहार वैसा विचार।

(हिन्दी गद्य के प्रथम उपासक......)

(पृष्ठ 1 का शेष)

इस प्रकार हिन्दी पत्र साहित्य के साथ-साथ हिन्दी पत्र लेखक हिन्दी आत्मकथा व हिन्दी गद्यात्मक जीवनी सरीखा अन्याय न कर पाये, अपितु उन्होंने इसका गुणगान करते हुए हिन्दी की इस विद्या के प्रवर्तक के रूप में भी आर्य समाज को ही स्वीकार किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी को आर्यभाषा कहते हुए इसे राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने का भरसक प्रयास किया है। इसी निमित्त विभिन्न स्थानों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी को आर्यभाषा कहते हुए इसे राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने के लिए भरसक प्रयास किया है। इसी निमित्त विभिन्न स्थानों से कमिशनर को पत्र भिजवाए। इतना ही नहीं डा कमलपुजाणी ने तो अपना मत दिया है कि सन् 1935 तक तो हिन्दी पत्र साहित्य पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्रो का पूर्ण आधिपत्य था।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि ऋषि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी साहित्य रूपी पौधे को अपने रक्त से सींचकर इसे बड़ा किया। इसमें हिन्दी आत्मकथा, हिन्दी गद्यात्मक जीवनी, हिन्दी पत्र साहित्य, संस्मरण, यात्रा वृत्तान्त आदि अनेक विधाएं देकर इसे पल्लवित व पुष्पित किया। इस प्रकार हिन्दी साहित्य ऋषि के जीवन दर्शन व आदर्शों से ओत-प्रोत है तथा हिन्दी प्रेमियों का प्रेरणा स्रोत बन गया है।

अत: आज यह सर्वत्र सिद्ध हो चुका है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जहां भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रथम जन्मदाता के रूप में सामने आए हैं, रुढ़ियों, कुरीतियों के विरूद्ध डटकर खड़े होने वाले प्रथम वीर पुरुष थे, वहां उन्होंने हिन्दी साहित्य को सत्यार्थ प्रकाश सरीखे महान दार्शनिक ग्रन्थ भी दिये। उन्होंने गद्य साहित्य को आत्म कथा रूपी एक नई विद्या प्रदान की। फिर भला उनके शिष्य उनसे पीछे क्यों रहते उन्होने भी हिन्दी गद्य साहित्य मे जीवनी व पत्र साहित्य के रूप में दो अन्य नवीन विधाएं जोड़कर हिन्दी जगत को अपना ऋणी बना दिया। इस प्रकार इन तीनों विधाओं के लिए ऋषि दयानन्द और आर्य समाज को प्रवर्तक के रूप में स्वीकार किया गया है। भावी शोधकर्ता संभवत: हिन्दी की अन्य साहित्यिक विधाओं में भी ऋषि दयानन्द व आर्य समाज का योगदान खोज पाएं। अत: समाज सुधारक, स्वाधीनता के प्रथम उद्घोषक के साथ ही साथ ऋषि दयानन्द सरस्वती के साहित्यिक रूप के आकलन की भी आवश्यकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी की दक्षिण अफ्रीका यात्रा

आर्य युवक संघ वैदिक प्रचार.......

(पृष्ठ 5 का शेष)

मन्तव्य तो वेद प्रचार से ही है। हमारे लिए प्रचार का महत्व अधिक है वेशभूषा का नहीं। हमारा ऐसा कहने का अभिप्राय यह नहीं कि भारत में भी प्रचलित हो। ये बात मैंने दक्षिण अफ्रीका के संदर्भ में कही है। यहां स्थानीय अफ्रीका भाषा एवं अंग्रेजी भाषा के विद्वान एवं पुरोहितों की कमी निरन्तर बनी हुई है और इस कार्य हेतु वे भारत की ओर दखते हैं और आश्रित है। पूरे दक्षिण अफ्रीका में इस बात को प्रधान जी के सम्मुख बार-बार लाया गया कि हमें हमारी स्थानीय भाषा के अथवा अंग्रेजी भाषा के उच्च कोटी के विद्वान भारत से भिजवायें हम उन्हें उचित वेतन रहने का स्थान एवं अन्य सुविधाएं देंगे। लेकिन अत्याधिक लोभ वाले व्यक्तियों को हम आमंत्रित नहीं करना चाहेंगे। क्योंकि अभी तक उनका अनुभव रहा है कि भारत से आमंत्रित व्यक्ति अपने साथ भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्थाओं की रसीद बुक लिये हुए दान राशि को एकत्रित करने के लोभ से यहां आते हैं और धन एकत्र कर भारत लौट जाते हैं। वेद प्रचार अथवा आध्यात्मिक ज्ञान के नाम पर हल्के एवं साधारण किस्से कहानियां ही सुनाते हैं जिससे आर्य जनता में गलत प्रभाव पड़ता है। प्रधान जी ने उन्हें आश्वासन दिया कि इस ओर भारत जाने के उपरान्त अवश्य कार्यवाही करेंगे।

सार्वदेशिक सभा से अपेक्षाएं

यात्रा के अन्तिम दिनों में आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के अधिकारियों के साथ कुछ महत्वपूर्ण बैठकें थी जिसमें उन्होने विशेष रूप से कुछ महत्वपूर्ण विषयों की ओर ध्यान आकर्षित किया। उनमें विशेष रूप से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय की कार्यप्रणाली से सम्बन्धित था। पत्रों का उत्तर न देना, पत्रों को सस्ती डाक से भेजना सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्रिका का निम्न स्तर से प्रकाशित होना एस. टी. डी, ई-मेल, फैक्स इत्यादि का प्रयोग न करना साहित्य एवं अन्य संबंधित सामग्री का सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में उपलब्ध न होना विदेशी पत्रों का भी हिन्दी में ही उत्तर देना आदि कई ऐसी छोटी लेकिन जटिल समस्याएं हैं इसके अतिरिक्त अफ्रीकी भाषा अथवा अंग्रेजी भाषा के विद्वानों का न उपलब्ध होना अंग्रेजी भाषा के साहित्य का उपलब्ध न होना इसके अतिरिक्त इससे संबंधित कई समस्याओं पर चर्चा हुई।

प्रधान जी ने उन्हें आश्वासन दिया कि निकट अतीत में ही सार्वदेशिक सभा के कार्यालय को एक अत्याधुनिक कर्यालय में परिवर्तित कर दिया गया है। ईमेल, फैक्स, टेलीफोन इत्यादि हर प्रकार की सुविधा से पूर्ण है ये कार्यालय। ओर इस कार्यालय का ध्येय है कि हर उस पत्र का उत्तर दिया जाए जो इस कार्यालय में प्राप्त हो इसके अतिरिक्त भारत के सभी आर्य साहित्य प्रकाशकों एवं वितरकों से पुस्तकों की सूची मगवाकर एक केन्द्रीय बिक्री केन्द्र सार्वदेशिक सभा मे प्रारम्भ कर दिया गया है। जिसमें एक ही छत के नीचे जहां तक संभव हो सके सभी प्रकार के आर्य साहित्य की सामग्री, प्रचार की सामग्री उपलब्ध होगी।

इस बात का विशेष प्रयास किया जा रहा है कि दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार, अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, वैदिक शोध संस्थान साहिबाबाद उत्तर प्रदेश, में विशेष रूप से ऐसे विद्वान तैयार किये जाएं जो विदेशों में जाकर विदेशी भाषा में वेद प्रचार कर सकें। ऋषि जन्म स्थान टंकारा में मौरिशस के तीनों ऐसे ब्रह्मचारी उपदेशक बनने हेतु पिछले एक वर्ष से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। मैं इस माध्यम से विश्व के ऐसे सभी विदेशी भाषाओं के विद्वानों को निमंत्रण देना चाहता हूं जोकि वैदिक मान्यताओं से प्रेरित हैं और सामान्य हिन्दी अथवा संस्कृत का ज्ञान रखते हैं। कृपया हमारे से सपर्क करें उन्हें हम प्रशिक्षण देगे। इस क्षेत्र में कार्य करने में निपुण बनायेंगे। मेरा भारतीय युवकों से भी आग्रह है कि जो वर्तमान में पुरोहित अथव वेद प्रवक्ता के रूप में अपनी सवाए भारत में दे रहे हैं वे किमी विशेष विदेशी भाषा को सीखे उसमें निपुण हों और हमसे मंपर्क करे ताकि उनकी सेवाओं को हम विदेशो मे प्रचार हेतु ले सकें।

अन्त में प्रधान जी ने आय युवक सघ दक्षिण अफ्रीका, आर्य युवक लीग दक्षिण अफ्रीका, आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के अधिकारियों का धन्यवाद किया। जिन्होंने जिस आत्मीयता से उनकी यात्रा को सुखद एवं उपयोगी बनाया है। और साथ ही कई ऐसी प्रेरणाएं हमें दी हैं। जिन्हें वह भारत में भी लागू करने का प्रयास करेंगे। प्रधान जी ने परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की कि वे हम सबको आशीर्वाद दें कि हम अपने **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** के मिशन को पूर्ण करने में सदैव तत्पर रहें।

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

पारिवारिक सत्संग श्री ओम् प्रकाश जी पाहवा म.नं.594 बुल चमन गली, गोकुल रोड समीप तुलसी दास धर्मशाला लुधियाना में सायं 5 30 से 7 30 बजे तक होगा। इस अवसर पर प्रो. वेदव्रत जी विद्यालंकार का उपदेश होगा।

आर्य विद्वानों से नम्र निवेदन

शास्त्रार्थ महारथी पंडित माधवाचार्य जी शास्त्री की लिखित पुस्तक "क्यो" मे पृष्ठ 558 पर पहले भाग में आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द पर व्यंग्यात्मक लिखा है। इस पुस्तक में आर्य समाज पर कई तरह के कटाक्ष किये गये हैं। इस पुस्तक में लिखा गया है, "समाजियों से पूछिये कि हवन क्यों करते हैं, फिर आगे लिखते हैं कि बस यह सुनते ही दयानन्दियों की दलीलों का दिवाला निकल जायेगा। मैं इस पुस्तक की सूचि पर आर्य समाज के लेखकों का ध्यान दिलाना चाहता हूं।"

1 5 आर्य समाज गये बीते। 2 नमस्ते कहनी गलत। 3 आर्य समाज में विचित्र विवाह मूहुर्त ? 4 क्या मरना भी मुहूर्त में ही ? 5 ओम् या रामनाम 6 अन्य मत और क्यो ?

इस प्रकार के शीर्षक दिये गये हैं और उस पर तीखी कडवी चोटें की गई हैं। आय लेखकों को इस पुस्तक का मुंह तोड जवाब देना चाहिए। इस पुस्तक के उत्तर मे शीघ्र ही आर्य लेखकों को पत्रिकाओं में लेख देने चाहिएं। यह पुस्तक माधव विद्या भवन श्रीधाम 150 पुरानी गुप्ता कालोनी दिल्ली-9 मे मंगवाई जा सकती है। यह पुस्तक यदि किसी लेखक ने पढ़नी हो तो मैं भी उसे भिजवा सकता हूं लेकिन यह पुस्तक पढ़ने के उपरान्त मुझे वापिस करनी होगी।

–श्रीराम पथिक वानप्रस्थी, आर्य समाज अजनाला (अमृतसर)

महान् देशभक्त वीर भक्तसिंह

□ ले० पं० नन्दलाल, निर्भय "पत्रकार"

देशभक्त धर्मात्मा, भक्तसिंह बलवान।
भारत मां की कर गए, जग में ऊंची शान॥
जग में ऊंची शान, भगतसिंह थे नर बंका।
वीर पुरुष थे अजब, मौत की न की शंका॥
अर्जुनसिंह के पौत्र, किशन सिंह के सुत प्यारे।
विद्यावती महान मात के, पुत्र दुलारे॥
अजीत सिंह के प्रिय भतीजे, युवक साहसी।
करते हैं सब गर्व, भगत पर भारतवासी॥
डी.ए.वी. में पढ़े, धर्म की शिक्षा पाई।
आजादी के लिए लड़े, योद्धा बलदायी॥
बिस्मिल, शेखर, राजगुरु के मित्र निराले।
वीर लाजपत के सेनानी, थे मतवाले॥
माता-पिता से सदाचार की, महिमा जानी।
ब्रह्मचारी थे वीर, गए कर अमर कहानी॥
भारत में अंग्रेज, जुल्म करते थे भारी।
भारत था परतंत्र, दुखी थी जनता सारी॥
अंग्रेजों से युद्ध किया, थे धन्य भगतसिंह।
वेदामृत पिया, थे धन्य भगतसिंह॥
दुष्ट सांडरस से, पापी गौरों को मारा।
भगतसिंह के गीत रहा है गा जग सारा॥
स्वतंत्रता की भेंट चढ़ायी भरी जवानी।
अमर रहेंगे सदा, भगतसिंह से बलिदानी॥
उनको कुछ मक्कार लोग, लगे हैं दोष लगाने।
गए धर्म को भूल कुचाली ना शर्माते॥
भारत की सरकार, भांग पीकर के सो',
कुर्सी जिन्दाबाद, मरे बेशक से कोई॥
कान खोलकर सुनो ध्यान से बात हमारी।
पछताओगे एक रोज, तुम अटलबिहारी॥
खुदगर्जों को पाप कर्म करने से रोको।
देशद्रोह के काम करें, उनको जेलों में ठोको॥
वीर साहसी बनो, वेद पथ को अपनाओ।
श्री राम, श्री कृष्ण बनो तुम धर्म को अपनाओ॥
नाम आपका अटल, अटल नेता बन जाओ।
वीरों के हो पुत्र, न दुष्टों से दहलाओ॥
करो देश का ध्यान, जाग जाओ हे नेता।
दुष्टों को दो मिटा, बनो तुम वीर विजेता॥

आर्य समाज सान्ताक्रुज का चुनाव

आर्य समाज सान्ताक्रुज (प.) की वार्षिक साधारण सभा की रविवार दिनांक 7 जुलाई 2002 की बैठक में सर्वसम्मति से निम्न लिखित पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ।

प्रधान–डा. सोमदेव शास्त्री, प्रथम उपप्रधान–श्री विश्वभूषण आर्य, द्वितीय उपप्रधान–श्री चन्द्रगुप्त आर्य, महामन्त्री–श्री संगीत आर्य, प्रथम मन्त्री–श्री मदन रहेजा, द्वितीय मन्त्री–श्री दीपक पटेल, कोषाध्यक्ष–श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल।

अन्तरंग सदस्य–श्री ओंकारनाथ आर्य, श्री आर.के. सहगल, श्रीमती कमलेश सूद, श्री संजय कोहली, श्री राकेश नांगिया, श्री रणवीर भण्डारी, श्रीमती रमा आर्य, श्री यशप्रिय आर्य।

सियालवामाजरी में यजुर्वेद परायण यज्ञ

ग्राम माजरी जिला रोपड़, कुराली से दस किलोमीटर पूर्व की ओर एक छोटा सा ग्राम है इस में प्रायः सभी वर्ग के लोग रहते हैं और अपने-अपने ढंग से अपनी पूजा उपासना करते हैं। इस ग्राम में एक राजपूत परिवार है जो बाबा परिवार के नाम से जाना जाता है। पता चला है कि यह परिवर पहले पौराणिक विचारधारा का था यहां तक कि इस परिवार के बच्चे बूढ़े औरतें सब कोई धागे तावीत और गंडे वगैरह पहना करते थे इस पर भी इन के यहां घर में तन्दरुस्ती या परिवार की बढ़ोतरी या उन्नित का नाम तक नहीं था हमेशा निराश ही रहते थे, सो परम पिता परमातमा की अपार कृपा द्वारा इस परिवार के बजुर्ग श्री लाभ सिंह जी का सम्पर्क आर्य समाज से हो गया और उन्होंने वैदिक धर्म अपना लिया और घर पर आकर सभी बड़े छोटों के धागे तावीत और गंडे वगैरह उतार कर तालाब में फैंक दिये और मन में पक्का निश्चय कर लिया कि अब जो भगवान् करेंगे। उसे हम अपने सिर माथे पर स्वीकार करेंगे। सो प्रभु की अपार कृपा हुई जिस दिन से उन्होंने यह काम किया उस दिन ही घर में सुख और शान्ति ने डेरा जमा लिया और उसी दिन से यह घर स्वर्ग समान बन गया। जितने भी कलेश थे सब भस्म हो गये। अब इसी महापुरुष श्री लाभ सिंह जी के परिवार का मुहल्ला आबाद है। इनकी सन्तान ने तालाब के किनारे अपने ही आम के बगीचे में एक बड़ी सुन्दर यज्ञशाला हाल कमरा और एक रसोई के लिए बड़ा कमरा बनाया हुआ है । इस यज्ञशाला में प्रतिदिन सायं कालीन यज्ञ होता है जिसे पूरे परिवार के लोग मिल बैठ कर करते हैं इस के बाद हर महीने के शुरू में एक बड़ा यज्ञ भंडारे के साथ किया जाता है। जिसको सभी रिश्तेदार भाई-बन्धु और ग्राम निवासी मिल कर बड़े उत्साह से सम्पन करते हैं और अटूट लंगर चलता है। इसी यज्ञशला में पिछले साल इन्हीं दिनों में सामवेद परायण यज्ञ सम्पन हआ था और अब 24 जून से 30 जून तक यजुर्वेद परायण यज्ञ सम्पन किया गया है। इस यज्ञ में मैं भी शामिल था इस यज्ञ के ब्रह्मा श्री धर्मदेव जी आर्य सपुत्र श्री जगदीप सिंह जोकि गुरुकुल करतारपुर से एक प्रकाश की किरण बनकर बी.ए पास करके माजरी नगर में प्रकाशमान हुए हैं वह ही खुद थे। इन्होंने जम्मू से संस्कृत की बी.ऐड. भी की है। अब एम.ए फाईनल कर रहे हैं। सो 30 जून को प्रात प्रभात फेरी निकाली गई जिस में अनेकों नर नारियों ने भाग लेकर ऋषि महिमा और प्रभु भक्ति के गीत गाये। वापिस यज्ञशाला में पहुंच कर गीता के तीसरे अध्याय का पाठ करके सन्ध्या की गई इसके बाद सभी ने अपने-अपने घरों को प्रस्थान किया। फिर साढ़े आठ बजे से भजनों के साथ यज्ञ की कारवाई शुरू होकर लगभग ग्यारह बजे पूर्णाहुति तक चलती रही। बाद में आशीर्वाद का समय आया बड़ी विचित्र बात थी कि यज्ञ के ब्रह्मा तो पुत्र धर्मदेव यज्ञमान इनकी ही माता कोमतिकान्ता देवी और इनके पिता श्री जगदीप सिंह जी साथ इन सगे ताई ताया आदि भी यजमान सभी बुजुर्ग लोग थे। पुत्र पिता आदि को कैसे आशीर्वाद दें। इसलिए श्री धर्मदेव जी ने मुझे उन्हें आशीर्वाद देने के लिए कहा। मैंने सभी से फूलों की वर्षा करवा कर उन्हें आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम बड़ा सफल रहा। **–गुरदेव सिंह आर्य, वानप्रस्थी**

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ । दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

दूरभाष 292926

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 15 सृष्टि संवत 1960853103, 4 अगस्त, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

देव यज्ञ का महत्व

❑ ले० श्री देवी दयाल जी शर्मा "शर्मा निवास", 120 माडल टाउन, स्ट्रीट नं.-4, अमृतसर

प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल, देव यज्ञ का अनुष्ठान करना मनुष्य मात्र के लिए अति आवश्यक है। परमात्मा ने वेद के माध्यम से इसके करने का आदेश किया है। सब ऋषियों, मुनियों और बड़े-बड़े उपाधिधारी विद्वानों ने इसका अनुष्ठान करने के लिए बहुत बल दिया है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती से किसी ने प्रश्न किया कि यदि इस देव यज्ञ को न किया जावे तो कौन सी हानि इसके न करने से होती है। महर्षि ने उत्तर दिया कि इसके न करने से मानव पाप को प्राप्त होता है। दूसरा प्रश्न उसी व्यक्ति ने फिर किया कि कितना पाप लगता है। महर्षि दयानन्द जी ने जवाब दिया कि मल-मूत्र द्वारा जितनी गन्दगी (Impitrities) एक स्त्री पुरुष के शरीर से 24 घंटों में जितना शरीर से गन्द निकल कर वायु और जल को दूषित (Pollute) करता है और नाना प्रकार के रोगों को उत्पन्न करता है और उससे जितना, दुःख, कष्ट लोगों को होता है, उतना ही यज्ञ के न करने वाला पाप का भागी बनता है। इसके निवारण अर्थ मनुष्य और स्त्री को उतना ही बल्कि थोड़ा ज्यादा, जल और वायु को शुद्ध करने के लिए, सामग्री, शुद्ध घी और बेरी की समिधा का प्रयोग करना चाहिए। यदि स्त्री-पुरुष को शुद्ध घी, पुष्टिकारक और सुगन्धित पदार्थ खाने को दिए जावें तो उसमे एक ही पुरुष/स्त्री को लाभ पहुंचेगा। लेकिन यदि इन्हीं पदार्थों का होम किया जाए तो लाखों मनुष्यों को लाभ पहुंचता है। परन्तु महर्षि का आदेश है कि स्त्री-पुरुषों को यह पदार्थ (दूध, शुद्ध घी, शुद्ध शाकाहारी भोजन, फल और शहद) का प्रयोग भी करना चाहिए ताकि शरीर हृष्ट पुष्ट रहे परन्तु नित्य प्रति देव यज्ञ पर बहुत बल दिया है। कभी नागा (absence) न करना चाहिए (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3) सामग्री चार पदार्थों से बननी चाहिए। (1) पुष्टिकारक (2) रोगनाशक (3) सुगन्धित (4) मधुर और शक्ति देने वाले पदार्थ 1. Nutritrons articles (2) Curative articles (3) Aromatic articles (4) Sweat and strength giving article.

प्रतिदिन यज्ञ करने के लिए केवल 32 आहुतियां पवित्र-अग्नि को भेंट करने के लिए आवश्यकता होती हैं। जब सब आहुतियां अग्नि देवता भस्म कर देता है तो वह वायु देवता को सूक्ष्म रूप में हवाले कर देता है। अग्नि देवता अपने पास कुछ नहीं रखता। परिणाम स्वरूप वायु सुगन्धि से भरपूर हो कर, सामग्री की सब वस्तुएं, जो सब सूक्ष्म हो जाती हैं, बादलों के हवाले करता है और फिर जब वर्षा होती है तो औषधी जगत और वनस्पति जगत और फल-फूल आदि वातावरण को रोग रहित करते हैं। कई किस्म की बीमारियों का नाश होता है। कुछ लोग जो वैदिक विद्या से विहीन हैं, कहते हैं कि बुद्धिमान मानव के लिए यह ठीक नहीं कि शुद्ध घी को अग्नि की भेंट दे कर नाश किया जाए। ऐसे लोग जो पदार्थ विद्या से बिल्कुल विहीन हैं, वही ऐसे शब्द बोलते हैं। रसायन शास्त्र के तत्वेत्ता डाक्टर ड्रेपर (अमेरिका के रहने वाले) फरमाते हैं कि प्राकृतिक पदार्थ का नियम के अनुसार कभी नाश नहीं होता केवल रूप बदलता है। Speaking of Chemistry, Dr Draper of U S.A. says that it has disposed of the idea of destruction and creation of matter The science accepts without any hesitation the doctrive of impershability of substance.

सब कारणों द्वारा इस बात को अच्छी तरह साबित किया गया है कि प्रकृति के किसी पदार्थ का नाश नहीं होता केवल रूप बदलता है। इसलिए हमारे ऋषियों, मुनियों ने इस बात पर बहुत बल दिया कि हर गृहस्थी को देव-यज्ञ किए बगैर अपना भोजन नहीं खाना चाहिए और प्रातः और सायं यज्ञ अवश्यमेव करना चाहिए। बहुत से रोगों का शिकार हम इस लिए बने रहते हैं कि हमने अपनी सुस्ती (Indolence) के कारण देव यज्ञ करना छोड़ दिया है।

भगवान कृष्ण जी ने हर गृहस्थी को यज्ञ करने के बारे में (गीता अध्याय 3) निस्संकोच होकर निर्देष किया है:-

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्टा, पुरा उवाच प्रजापतिः।

अनेन प्रसविष्यध्वम, एषः वः अस्तु इष्टकामधुक ॥3-10॥

प्रजापति (ब्रह्मा) ने कल्प के आदि में प्रजा को रच कर कहा कि इस यज्ञ द्वारा (तुम लोग) वृद्धि को प्राप्त हो और यज्ञ तुम लोगों को इच्छित कामनाओं के देने वाला होवे।

देवान् भावयत अनेन, ते देवाः भावयन्तु वः

परस्परम भावयन्तः श्रेयः परम वाप्स्यथ 3-11

इस यज्ञ द्वारा तुम लोग देवताओं की उन्नति करो और वे देवता लोग तुम लोगों की उन्नति करें। इस प्रकार आपस में कर्त्तव्य समझ कर उन्नति करते हुए परम कल्याण को प्राप्त होवोगे।

इष्टान् भोगान् हि वः देवाः दास्यन्ते यज्ञ भाविताः।

तै र्दत्तान अप्रदायै भ्यो, यः भुंक्ते स्तेन एव सः 3-12

यज्ञ द्वारा बढाये हुए देवता लोग तुम्हारे लिए बिना मांग ही प्रिय भोगों को देंगे। उनके द्वारा दिए हुए भोगों को जो पुरुष इनके लिए, बिना दिए ही भोगता है, वह निश्चय चोर है।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तः मुच्यन्ते सर्वकिल्बिशैः

भुञ्जयते ते त्वघं पापाः ये पचन्ति आत्मकारणात्॥

यज्ञ से शेष बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से छूटते हैं और जो पापी लोग अपने पालन पोषण के लिए ही पकाते हैं वे तो पाप को ही खाते हैं।

एवं प्रवर्तितम् चक्रम् ना अनुवर्तयति इह यः।

अघायु इन्द्रयारामा मोघं पार्थ सः जीवति॥ 3-16

हे पार्थ जो पुरुष इस लोक में इस प्रकार चलाए हुए सृष्टि चक्र के अनुसार नहीं बर्तता है अर्थात् शास्त्र अनुसार कर्मों को नहीं करता है, वह इन्द्रियों के सुख को भोगने वाला पापायु पुरुष व्यर्थ ही जीता है। भगवान कृष्ण जी ने फिर इस बात को बल पूर्वक कहा है कि जो लोग वैदिक धारणा अनुसार यज्ञों को नहीं करते हैं, वह लोग बड़े पापी हैं। मानव जन्म प्राप्त करके यज्ञों का करना अनिवार्य है।

ऊपर जो कुछ, वेद, शास्त्र और गीता द्वारा स्पष्ट किया गया है, देव महा यज्ञ की महिमा, गौरव अपना ही नज़ीर रखती है और किसी हालत मे भी इस यज्ञ को नहीं छोड़ना चाहिए। अर्थात् नित्य प्रति करना चाहिए इसी में स्त्री पुरुष की भलाई है।

बाकी जो चार यज्ञ हैं। (1) ब्रह्मयज्ञ (2) पितृ यज्ञ, (3) अतिथि यज्ञ (4) बलिवैश्वदेव यज्ञ, इसके बारे मे अगले मास में वर्णन किया जाएगा।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने अपना सारा जीवन लोगों को लोक और कल्याणकारी मार्ग पर चलाने के लिए न्यौछावर कर दिया और अन्त मे परमात्मा की दी हुई पूर्ण शान्ति को प्राप्त हुए और अपना अन्तिम स्वास एक, महायोगी की तरह छोडा और बडे मार्मिक शब्दों मे कहा कि हे ईश्वर तेरी इच्छा ऐसी ही थी पूर्ण हुइ। इस तरह अपना भौतिक चोला, भौतिक जगत मे छोड कर चल दिए।

चमकेंगे जब तलक सूरज व चान्द तारे।

पवित्र नाम रहेगा महर्षि का तब तक दिलों में हमारे॥

जड़ तथा चेतन सबका उपचार अग्निहोत्र द्वारा

❑ ले० श्री सत्येन्द्र शास्त्री, प्रेमनगर, मकान नं. 4, वार्ड नं. 4, पूर्व लश्कर ग्वालियर, मध्य प्रदेश

विश्व का अद्वितीय ग्रन्थ वेद है जिसमें यज्ञ (अग्निहोत्र) महिमा मन्त्रों द्वारा अवर्णनीय है। यज्ञमात्र श्रद्धा नहीं, अद्भुत विज्ञान भी है। यज्ञ बहुत व्यापक शब्द है। आचार्य पाणिनि वैयाकरणज्ञ ने यज् देवपूजा सगति करणदानेषु धातु का अर्थ देवताओं की पूजा, परस्पर संगीतकरण दान यह अग्निहोत्र अथवा हवन क्रिया है। यज्ञवेदी में विधि के अनुसार मन्त्र उच्चारण के साथ, समिधा, सामग्री आदि द्वारा हवन किया जाता है। इन्सान चाहे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्णाश्रमी सभी यज्ञ कर सकते हैं। यज्ञ की भावना सबसे पहले परमात्मा से मिली, क्योंकि ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में मन्त्र उल्लिखित है।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत:।

वसन्तो स्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म शरद हवि॥

अर्थात् जिस पुरुष के साथ देवताओं ने हवि के द्वारा यज्ञ का विस्तार किया वह वसन्त ऋतु है, घो आहुति है, ग्रीष्म ऋतु, समिधा की और शरद ऋतु सामग्री को हवि है।

शतपथ ब्राह्मण 1 1 8 8 **यज्ञो वै विष्णु** अर्थात् यज्ञ को विष्णु कह कर सबसे अच्छा काम घोषित किया है। यज्ञ के विशिष्ट प्रसाधन के रूप में अग्नि का प्रमुख महत्व है। अग्नि सर्वाधिक प्रसिद्ध देवों में से एक और देवताओं का मुख है यह शोधक, वर्षाकारक, वायुप्रद, : का उत्पादक तथा मन का प्रेरक है।

मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्निं होतारणरि भूतममतिय।

सामवेद 984

भौतिक संसार में ऋतुओं के परिवर्तन में व्याधियां बढ़ती हैं। अत: भैषज्य यज्ञ द्वारा उसकी चिकित्सा करें। रामायण एवं महाभारत काल में यज्ञों का प्रचलन सर्वविदित है। चीन और जापान में यज्ञ को धोम कहते हैं वहां मन्दिरों में आज भी धूप जलाने की प्रथा है। ईरान के यहूदियों में यज्ञों का बहुत प्रचलन था। वे यज्ञकुण्ड को **कैर** कहते हैं। आयरलैण्ड तथा दक्षिणी अमरीका में महामारी की रोकथाम के लिए अग्नि जलाई जाती थी। यह अग्नि आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक मय से रक्षा करती है। यज्ञ आन्तरिक प्रदूषण से मुक्ति का मजबूत माध्यम है। सोने, चांदी, ताम्बे या मिट्टी व हवन कुण्ड में अग्निहोत्र करना सबसे उत्तम है। घी को जलाने से वायु का जहर समाप्त होता है। अगरबत्ती एवं धूपबत्ती जलाने से वातावरण सुगन्धित होता है। नारियल के गोले के धूम्र से वायु के सर्व प्रकार के विषों की तुरन्त नष्टता होती है। गिलोय, नीम के पत्ते, घी, गुगुल, शक्कर को अंगारों पर जलाकर धूनी देने से मलेरिया, जुकाम आदि ठीक होते हैं। अपने घर में रोज नियमित अग्निहोत्र करना ही सबसे बड़ी दवाई है। जड़, चेतन एवं सबका इलाज अग्निहोत्र ही है। स्वामी दयानन्द आर्य समाज के प्रवर्तक ने लिखा दैनिक पंच महायज्ञों को आपत्ति और कष्ट आने पर भी नहीं छोड़ना चाहिए। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, बलिवैश्व-देवयज्ञ, प्रत्येक स्त्री, पुरुषों को विधि अनुसार करना चाहिए। भारतीय संस्कृति में अज्ञात हिंसा से बचाव के लिए 5 यज्ञों का विधान है।

प्रतिदिन अग्निहोत्र करने से लाभ–

- यज्ञ से वायुण्डल शुद्ध, पुष्ट एव सुगन्धित होता है।
- यज्ञ से रोग दूर होकर आरोग्यता प्राप्त होती है।
- यज्ञ से दु:ख एवं दरिद्रता का नाश होता है।
- यज्ञ से मानसिक शान्ति प्राप्त होकर आनन्द की वृद्धि होती है।
- यज्ञ से उत्तम विचारों का प्रादुर्भाव होकर बुद्धि का विकास होता है।
- यज्ञ से संसार में शान्ति एवं सद्भाव प्रसारित होकर पृथ्वी स्वर्ग बनती है।
- स्वर्ग की [illegible] की कामना [illegible] करना चाहिए। [illegible] मुख्य उद्देश्य वायु शुद्धि होता है। वस्तुत: प्रतिदिन अग्निहोत्र करने से अनेक लाभ हैं। पार्थिव लोक-लोकान्तरों तक सुगन्धि को अग्नि फैलाता है। अत: इसे अग्निदूत कहते हैं। **यज्ञो भुवनस्यनाभि:** यज्ञ भवन की नाभि है। प्रत्येक व्यक्ति को **यज्ञीय जीवन** बनाना चाहिए।

यज्ञीय प्रेरणाएं–जो कुछ हम बहुमूल्य पदार्थ हवन यज्ञ में अर्पित करते हैं उसे अग्नि अपने पास संग्रह करके नहीं रखती वरन् उसे सर्वसाधारण के उपयोग के लिए वायुमण्डल में बिखेर देती है, जो वस्तु अग्नि के सम्पर्क में आती है उसे वह दूर नहीं करती वरन् अपने में आत्मसात् करके अपने समान ही बना लेती है। अग्नि की लौ कितना ही दबाव पडने पर भी नीचे की ओर नहीं होती वरन् अपने उठने की दिशा ऊपर को ही रखती है। प्रलोभन, भय, कितना ही सामने क्यों न हो हम अपने विचारों और कार्यों की अधोगति न होने से विषम स्थितियों में अपना संकल्प और मनोबल अग्नि शिखा की तरह ऊंचा ही रखें। अग्नि जब तक जीवित है उष्णता एवं प्रकाश की अपनी विशेषताएं छोड़ती नहीं। उसी प्रकार हमें भी अपनी गतिशीलता की गर्मी और धर्म परायणता की रोशनी घटने नहीं देनी चाहिए। जीवनभर पुरुषार्थ और कर्त्तव्यनिष्ठ रहना चाहिए। यज्ञ सामूहिकता का प्रतीक है। अन्य उपासनाएं या धर्म प्रक्रियाएं ऐसी हैं जिन्हें कोई अकेला कर या करा सकते हैं पर यज्ञ ऐसा कार्य है जिसमें अधिक से सहयोग की जरूरत है। यज्ञ सहकारिता, एकता, सामूहिकता की भावना विकसित करता है।

यज्ञ की भी आश्रम-व्यवस्था के अनुसार पात्रता मान्य की गई है जो निम्नानुसार हैं–

ब्रह्मचारी के लिए–सन्ध्या एवं दैनिक अग्निहोत्र आवश्यक है।

गृहस्थ के लिए–पंच महायज्ञ, संस्कार आदि कराना आवश्यक है। गृहस्थ ही सब प्रकार के यज्ञों का अधिकारी है।

वानप्रस्थ के लिए–सन्ध्या हवनादि पंच महायज्ञ तथा पर्वादियज्ञ है।

संन्यासी के लिए–केवल ब्रह्मयज्ञ है अर्थात् सन्ध्योपासना योगाभ्यास, स्वाध्याय, प्रवचन आदि ही उसके यज्ञ हैं।

विप्रोयज्ञस्य साधन:।

सामवेद 1478

यज्ञ को सम्पन्न कराने के लिए विप्र ही प्रमुख रूप से साधन है। विद्वान् वेदवित्, धार्मिक, कुलीन, ब्रह्मवेता, जितेन्द्रिय व्यक्ति को ही विप्र कहा जाता है। सन्यासी यज्ञ कराने का अधिकारी नहीं होता है क्योंकि वह यज्ञोपवीत एवं शिखा रहित होता है। **यज्ञोपवीत एव याजयेत्** ऐतरेय ब्राह्मण यज्ञोपवीत पहनने वाला ही यज्ञ कराने का अधिकार प्राप्त करता है। (इस विषय में विद्वानों में संशय है)

अन्तत: विवेचनीय है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी स्त्री-पुरुष यज्ञ करने के योग्य हैं। शास्त्रविधि अनुसार यज्ञ करना उत्तम माना गया है। अत: जड़-चेतन सबके इलाज के लिए अग्निहोत्र करना चाहिए।

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना में आर्य युवक सभा की स्थापना

19-7-2002 शनिवार स्कूल के छात्रों की एक बैठक श्री आसानन्द आर्य प्रबन्धक की प्रधानता में हुई।

स्कूल के छात्रों में वैदिक धर्म के प्रसार-प्रचार एवं देश भक्ति के लिए प्यार पैदा करने के लिए आर्य युवक सभा की स्थापना की गई। इस सभा का पहला समारोह गायत्री महायज्ञ के साथ 24 अगस्त शनिवार प्रात: 8 बजे से 12 बजे तक होगा। यह भी निश्चय हुआ कि हर मास के आखरी शनिवार को हवन यज्ञ के पश्चात् किसी विद्वान से उपदेश कराया जावे। इससे छात्रों में अत्यन्त खुशी एवं उत्साह उत्पन्न हुआ।

–सुनिता मलिक, प्रिंसीपल

सम्पादकीय.....

जीना भी एक कला है

यूं तो चींटी भी अपना पेट भर लेती है, पक्षी भी अपना घोंसला बना कर उसमें जीवन व्यतीत कर लेता है, इसी प्रकार अनेकों प्रकार के जमीन पर रेंगने वाले जीव, आकाश में उड़ने वाले जीव, जमीन पर दो पैरों व चार पैरों से चलने वाले जीव सभी अपना जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु मानव ही एक ऐसा जीव है जिसको जीने की कला आती है, यह ठीक है कि सभी मनुष्यों को जीने की कला नहीं आती यह भी किसी-किसी को आती है। जीवन को सुखमय बनाने के लिए व्यवहार कुशलता की अत्यन्त आवश्यकता है। जीने की कला की अत्यन्त आवश्यकता है।

आज के युग में अशान्ति का मुख्य कारण व्यवहार को न जानना है। यह कार्य हमारा पहले अपने परिवार से आरम्भ होता है। परिवार में माता-पिता, दादा-दादी, सास-बहू, ताया-ताई, चाचा-चाची, पति-पत्नि छोटा भाई-बड़ा भाई, छोटी बहन-बड़ी बहन, बहन-बहन, पुत्र-पुत्री आदि मुख्य रूप से होते हैं। वैसे आज हमारा परिवार सिकुड़ चुका है। इतना बड़ा परिवार नहीं रहा। छोटे परिवार होते जा रहे हैं। परिवार में अब दो या तीन व्यक्ति ही होते हैं। दादा-दादी, नाना-नानी का युग बीत गया। चाचा-तायों का युग भी चला गया। क्योंकि स्थिति यह है कि विवाह के बाद लड़का अपना घर अलग बसा लेता है। वहां न दादा-दादी न माता-पिता होते हैं, केवल दो पति और पत्नि होते हैं फिर आगे चल कर एक या दो सन्ताने होती हैं। इसलिए उन्हें पता ही नहीं चलता कि और भी कोई रिश्ता होता है।

सबसे बड़ी बात परिवार में बड़ों के मान-सम्मान की है। अपने बड़ों के साथ हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए अर्थात् अपने बड़ों को हमें पूरा सम्मान देना चाहिए और उनका पूरा आदर मान करना चाहिए। बड़ों की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उन्हें कभी ऊंचा-नीचा नहीं बोलना चाहिए, बोलते समय वाणी में कटुता न हो व्यवहारिकता हो, जब भी बोलें कम बोलें और बड़ा सोच-समझ कर बोलें। जिससे किसी को आघात न पहुंचे। छोटा भाई-बड़े भाई से और बड़ा भाई छोटे भाई से बात करते समय कोई ऐसा शब्द न कहे जिससे तनाव पैदा हो। सास-बहू, पति-पत्नि, बहन-भाई सभी इस नियम का पालन करें।

हमारे ग्रन्थों में लिखा है कि जैसा हम अपने लिए चाहते हैं कि लोग हमारे से व्यवहार करें वैसा ही हम दूसरों के लिए भी चाहें। मैं चाहता हूं कि सभी लोग मेरा सम्मान करें, मुझे भी दूसरों का सम्मान करना चाहिए, मैं चाहता हूं कि मुझे कोई ऊंचा-नीचा न बोले तो मुझे भी किसी को ऊंचा-नीचा नहीं बोलना चाहिए। मैं चाहता हूं मुझ से सभी प्यार से बोलें तो मुझे भी सबसे प्यार से बोलना चाहिए। जो मैं अपने लिए चाहता हूं वही दूसरों के लिए भी चाहूं यह एक जीने की कला है।

प्रातःकाल समय पर उठना, बड़ों के चरण छूना, उनका आशीर्वाद लेना, अपने नित्यकर्म करना, अपने प्रत्येक कार्य को समय पर करना, समय का ध्यान रखना, अपना समय व्यर्थ मे न खोना, समय के मूल्य को पहचानना, कोई वस्तु खाते समय दूसरों का भी ध्यान रखना, अकेले-अकेले वस्तु न खाना, यदि कोई वस्तु किसी से लो तो उसे समय पर लौटाना, अपने वायदे को पूरा करना, दूसरों को सहयोग देना और उनसे सहयोग लेना, सदा हंसमुख रहना, तनाव को दूर भगाना, तनाव मुक्त रहना। अपनी सोच को साकारात्मक बनाना। जब भी कुछ सोचें अच्छा ही सोचें। कभी भी किसी के बारे में गलत या बुरा न सोचें। दूसरे का बुरा न चाहें, इसका भाव यह नहीं कि अपना भला न चाहें, अपना भी भला सोचें, अपने परिवार का बच्चों का भी भला सोचें परन्तु यदि मेरे भले में किसी दूसरे को हानि पहुंच रही हो तो ऐसा भला न सोचें। अपने स्वार्थ के लिए हम दूसरे को हानि न पहुंचाएं। दूसरे के सुख का भी ध्यान रखें। इससे हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा।

जीवन में सुख प्राप्ति मानव का मुख्य उद्देश्य है। सुख के लिए मानव बहुत कुछ करता है परन्तु यह सुख क्षणिक है। क्षणिक सुख के लिए पाप न करें। हम सदा सुख के लिए प्रयत्नशील रहें यदि फिर भी दुःख आ जाए तो उससे घबराएं नहीं। घबराने से दुख कम नहीं होगा, दूर नहीं होगा, वह सहन करने से ही दूर होगा। सुख और दुःख में एक समान रहें बल्कि दुःखों को हंसते हुए दूर भगाएं, रोते हुए नहीं।

सहनशीलता जीवन की एक प्रसिद्ध कला है जिस व्यक्ति में सहनशीलता आ जाती है वह जीवन के प्रत्येक मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। वह प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर लेता है। सहनशीलता का परिवार में बहुत बड़ा महत्व है। घर में आपस में कई छोटी-बड़ी बातें हो जाती हैं। सहनशील व्यक्ति उनकी चिन्ता नहीं करता वह अपना कार्य करता जाता है और समझता है जैसे कुछ भी न हुआ हो। जो व्यक्ति छोटी-छोटी बातों को लेकर घर परिवार के सदस्यों से उलझ जाता है वह जीवन भर उलझा ही रहता है। इससे परिवार का ताना-बाना बिगड़ जाता है। मेरे सामने कई ऐसे लोग हैं जो पति-पत्नि होते हुए वर्षो से इसी कारण अलग-अलग रह रहे हैं और दोनों ही दुःख भोग रहे हैं। अलग रह कर न पति सुखी है न पत्नि सुखी है । तीन-चार परिवार तो ऐसे हैं जिनके बच्चे भी हैं। कोई बच्चा पिता के पास रह रहा है तो कोई माता के साथ रह रहा है। बच्चे जवान हो रहे हैं फिर भी अहमवादी माता-पिता अपनी जिद छोड़ने के लिए तैयार नहीं। स्वर्गमय गृहस्थ नरक बन कर रह गया है। ऐसा क्यों ? केवल जीने का ढंग न अपनाने के कारण ऐसा हो रहा है । दोनों पढ़े-लिखे हैं दोनों कमा रहे हैं, सम्पदा की कमी नहीं यदि कमी है तो केवल जीने की कला न जानने की कमी है। पति-पत्नि में तो झगड़े होंगे ही, दोनों जो इकट्ठे रहते हैं दोनों ने जो जीवन भर साथ रहने की कसमें खाई हैं परन्तु वही सुख पा सकेंगे जो सहनशील होंगे जो पति पत्नि की कटु बात को सहन कर लेता है और जो पत्नि पति की कटु बात को सहन कर लेती है वह बहुत सुखी रहते हैं। गलती तो सभी से हो जाती है पति से भी हो जाती है पत्नि से भी हो जाती है वह एक दूसरे की गल्ती क्षमा कर सकते हैं। क्षमा न भी करें सहन तो कर ही सकते हैं यह भी जीने की एक कला है।

भाई-भाई में भी आपस में विवाद हो जाता है। पिता पुत्र मे भी आपस में विवाद हो जाता है, यह स्वभाविक है, क्योंकि मनःस्थिति सबकी एक जैसी नहीं है, विचार सबके एक जैसे नहीं हैं। घर मे रहते आपस में कई बातों में मत-भेद पैदा हो जाता है, अपनी-अपनी राय देने का सबको हक है। यहां कोई किसी का नौकर नहीं है सभी अपने-अपने मन के मालिक हैं। मन तो फिर मन ही है इसका क्या पता यह कब बदल जाए और किधर हमें भटकाये। इसलिए मन की सभी बातें मानने वाली नहीं होती, मन की हम वही बात माने जिसमे सब का कल्याण हो, मन ने जो गलत धारणा व गलत बात अपनो के प्रति मेरे सामने रखी है यह जरूरी नहीं कि मन की मै वह बात मान लूं। मन की मैं वही बात मानूं जिसमें मेरे परिवार का भी कल्याण हो और मेरा भी कल्याण हो। सबको साथ लेकर चलने की भावना और सबके कल्याण की भावना सदा मेरे जीवन मे बनी रहनी चाहिए।

जीवन को सुखमय बनाना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है इसलिए इस ओर हमें ध्यान देना चाहिए।

—धर्मदेव आर्य

सरल-सुखी जीवन

❑ ले० श्री भद्रसेन, बी-2, 92/7 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर-146001

(गतांक से आगे)

21-अक्रोध (सर्वं जयत्यक्रोधः)

गुस्सा न करना ही अक्रोध है ओर एक क्रोध न करने वाला सब को अपना बना लेता है तथा सभी क्रोध न करने वाले को पसन्द करते हैं। क्रोध जहां अपनी इच्छा की पूर्ति या मनपसन्द न होने पर या अपने नुकसान पर आता है, वहा वह स्वार्थ, लोभ में अड़चन, बाधा आने पर भी उभरता है। कई बार क्रोध मे व्यक्ति विवेकहीन हो कर कुछ का कुछ बोल जाता है या कर बैठता है। तभी तो कहा है-'क्रोध बडा चण्डाल है, क्रूर, अत्याचारी है या गुस्सा-'गूं सा' और क्रोध-कोढ़ होता है। क्रोध से अनेक दोष उभरते हैं, अतएव गीता में कहा है-अर्थात क्रोध से सोच में रुकावट होती है, इस से स्मृति लड़खड़ाने लगती है और स्मृति में गड़बड़ आने से व्यक्ति नष्ट होता है। मनुस्मृति में क्रोध से उभरने वाले दोषों को बताते हुए कहा है, कि क्रोध के कारण ही चुगली करना, किसी की स्त्री से बलात्कार करना, द्रोह रखना, दूसरे की उन्नति, प्रशंसा से जलना, दोषो को गुण और गुणों को दोष मानना, अधर्म में धन लगाना, कठोर वचन बोलना, बिना अपराध किसी को कड़ा वचन या विशेष दण्ड देना आदि बुराइयां व्यक्ति में आ जाती हैं।

क्रोध में व्यक्ति बिना सोचे गाली निकालता है, मार-पीट करता है और हर तरह की हिंसा पर भी उतर जाता है। क्रोधी बहुत ही अहंकारी होता है और वह दूसरों को कुछ भी नहीं समझता, अतः एकदम दूसरों का अपमान कर देता है। अत एव इसी स्थिति को सामने रखकर योग दर्शन में अक्रोध के स्थान पर यम के अन्तर्गत अहिंसा शब्द आया है, क्योकि क्रोध के कारण ही अधिकतर दूसरों की हिंसा, हानि की जाती है तथा दूसरो को कष्ट, दुख दिया जाता है या अपमान किया जाता है। इसी का दूसरा नाम नृशसता है नृशंस-कठोर, क्रूर हो दूसरो पर अत्याचार करते हैं और नृशसताहीन सहानुभूति युक्त होने से ही कोई किसी का सहयोगी बनता है। हिसा कभी मन से, तो कभी मन और वाणी से कई बार मन-वाणी तथा शरीर तीनों से की जाती है।

22-यम-नियम

जीवन को सुन्दर, विकसित, आनन्दित बनाने वाले धर्म के धृति आदि अगों को ही योग दर्शन में यम-नियम के नाम से स्मरण किया है। यमों अर्थात अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का सम्बन्ध सामाजिक व्यवहार हैं, क्योंकि हिंसा-अहिंसा, सत्य-असत्य आदि का व्यवहार दूसरों के साथ किया जाता है। जबकि नियमों अर्थात शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान का सम्बन्ध, व्यवहार विशेष रुप से व्यक्तिगत (अपने आपे के साथ) अधिक है, अतः ये वैयक्तिक व्यवहार हैं और निजी प्रगति से अधिकतर सम्बन्ध रखते हैं। नियमों के पालने या न पालने का दूसरों पर कम प्रभाव होता है, पर यमों के पालने और अभाव का समाज की व्यवस्था तथा अव्यवस्था पर सीधा प्रभाव होता है। अत एव मनुस्मृति (4, 204) में नियमों की अपेक्षा यमों को विशेष महत्व दिया है, हां, नियमों के पालन से यमों के आचरण में प्रवीणता, सरलता रहती है।

अहिंसा (अहिंसा लक्षणो धर्मः)

मन, वचन और कर्म से किसी को कष्ट, दुख न देना, तंग न करना ही अहिंसा है। जिस का भाव है, कि किसी ढग से स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी की हिंसा न करना। व्यवहारिक दृष्टि से अहिंसा का पूर्णतः पालन सर्वथा कठिन है। अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा समाज के लिए न्याय, कृषि, सफाई, सुरक्षा आदि में हिंसा अनिवार्य है। अतः सामान्य रुप से यही कहा जा सकता है, कि निरर्थक किसी को कष्ट देना ही हिंसा है।

हिंसा-अहिंसा की बात कहने में जितनी सरल है, पर व्यवहार में उतनी कठिन है। आज के जीवन में अनेक ऐसी स्थितियां हैं, जिन में हिंसा से पूर्णतः बचना कठिन होता है। केवल औषधियां ही नहीं, अन्य भी अनेक व्यवहार की वस्तुएं हैं, जो स्पष्ट रूप से पशु आदि की हिंसा से ही प्राप्त होती हैं। भोज्य पदार्थों में शाकाहार जैसे सर्व सुलभ विकल्प हैं, इस से हिंसा अन्य पदार्थों को व्यवहार में लाने से बचा जा सकता है। जिन के विकल्प के रुप में दूसरी अहिंसा जन्य चीजें मिलती हैं। जैसे कि चमड़े के स्थान पर प्लास्टिक, फोम आदि के जूते, बैग, अटैची, दस्ताने आदि मिल जाते हैं। हां, कृषि, न्याय, सुरक्षा, सफाई आदि की दृष्टि से कार्य करने पर भी हिंसा होती है और समाज के हित की दृष्टि से ऐसी हिंसा निन्दनीय, त्याज्य, हानिकारक नहीं है, क्योंकि इन के बिना मानव समाज का कार्य चल नहीं सकता। खेती के बिना भूख से भी फिर हजारों, लाखों मरेंगे। आज समाज के हित की दृष्टि से ऐसे कार्य हिंसा युक्त होने पर भी अनिवार्य हैं। अतः इस प्रकार की अनिवार्य हिंसा को शास्त्रों में अहिंसा माना है। क्योंकि वेदादि शास्त्रों में जहां अहिंसा का विस्तृत विधान मिलता है, वहां हिंसा का भी प्रतिपादन है। कृषि, न्याय, सुरक्षा, सफाई, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में होने वाली अनिवार्य हिंसा को ध्यान में रख कर ही सम्भवतः प्रारम्भ में यह वाक्य प्रचलित हुआ होगा, कि 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति।'

'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' वाक्य का यज्ञ की बलि के प्रसंग में अधिकतर प्रयोग किया जाता रहा है। पर इस का सही अर्थ यह भी हो सकता है, कि वेद आदि शास्त्रों में कृषि, न्याय, सुरक्षा, सफाई, चिकित्सा आदि की दृष्टि से जिस हिंसा का विधान किया गया है उस को हिंसा के रुप में नहीं समझना चाहिए। यह भाव मनुस्मृति (5, 43-44, 12, 7) में प्रकट किया गया है कि समाज के हित की दृष्टि से अपेक्षित हिंसा अपेक्षणीय हैं, क्योंकि उस के बिना यह आवश्यक कार्य नहीं हो सकता।

ऐलोपैथी की तो बात ही क्या? आयुर्वेद में भी अनेक औषधियों में मांस आदि के प्रयोग का स्पष्ट संकेत मिलता है। इस के साथ यह बात बिल्कुल स्पष्ट है, कि संसार में दोनों प्रकार की विचारधारा के लोग सदा से रहे हैं। औषधियों में ऐसी औषधियां भी हैं, जिन में मांस आदि का प्रयोग नहीं होता। अतः यह कोई ऐसी स्थिति नहीं है, जिसके बिना कार्य न चले।

शाकाहार और मांसाहार पर तुलनात्मक विचार करने से यह स्पष्ट होता है, कि मनुष्य के शरीर की रचना जहां शाकाहारियों के अनुकूल है, वहां मनुष्य शरीर, प्रकृति और उस की प्रवृतियां शाकाहारियों से अधिक मेल खाती हैं। बिना क्रूर हिंसा के मांस की प्राप्ति नहीं होती, तथा मांसभक्षण से मनुष्य की प्रकृति और प्रवृति भी हिंसक, क्रूर हो जाती है। जो कि विचारशील मानव और अध्यात्म की दृष्टि से सर्वथा प्रतिकूल है। गौ आदि पशु जीवित रहते हुए जितना अधिक लाभ देते हैं, उस का दशांश भी उन को मार कर प्राप्त नहीं किया जा सकता। महर्षि दयानन्द ने 'गोकरुणानिधि' में इस का बड़ा सुन्दर विवेचन दर्शाया है।

निःसंदेह फसलों, फलों में जीव मानने पर उन के खाने में भी मांस प्राप्ति की तरह वैसी ही जीव हत्या होती है और हिंसा कही जा सकती है। हां, यह ठीक है, कि पशु हिंसा जैसी क्रूरता-फल, फसलों की प्राप्ति में नहीं होती और न ही मांस भक्षण जैसी क्रूर वृत्ति और बीमारियां शाकाहार से होती है। यह सत्य है कि मांसाहार और शाकाहार के सम्बन्ध में युक्ति और बुद्धि से मन को पूर्ण सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता। केवल भक्षण का परिणाम ही विशेष निर्णायक हो सकता है। इस के साथ हमारे धर्मशास्त्र विशेष रूप से शाकाहार का ही समर्थन करते हैं। 'ओषधि अजीजन भोजनाय' ऋ. 5, 83, 10 अर्थात मनुष्यों के भोजन के लिए औषधि=अन्न पैदा किए गए हैं। मनुस्मृति (1, 46) चरक (1, 73) में कहा है, कि फल पकने के साथ जो सूख जाये, वह ही औषधी है। यह परिभाषा अन्नों पर ही लागू होती है। अन्नाहार ही मनुष्य की शरीर रचना, प्रकृति, प्रवृति के अनुकूल है तथा इन के खाने पर परिणाम प्रतिकूल रुप में सामने नहीं आता है।

अनेक पौराणिक धर्मशास्त्रों में यज्ञ और बलि की दृष्टि से पशु आदि की हिंसा की चर्चा मिलती है। वेद के मन्त्रों के अर्थ मे निःसंदेह मतभेद मिलता है, पर ब्राह्मण ग्रन्थों और यज्ञ साहित्य (=कल्प) में स्पष्ट रुप से पशु हिंसा की चर्चा मिलती है। तभी तो शास्त्रों की भावनाओं को सामने रख कर ही मनुस्मृति (5, 22, 31., 39., 40, 41) में वर्णन मिलता है। ऐसे ही बाइबल, कुरान, पुराण आदि में भी बलि की चर्चा मिलती है।

इन सम्बन्ध में सब से पहली विचरणीय बात यह है, कि जब धर्म का मूल अभिप्राय-**सब का भला है**, तब धर्म का हिंसा से सम्बन्ध जचता नहीं। **(क्रमशः)**

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में एक दिन

❑ ले० सी. मारकण्डा (तपा)

(गतांक से आगे)

नहा धो कर तैयार हुये। इस समय श्री सरदारी लाल जी उपाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा श्री अशोक भल्ला जी लुधियाना वाले भी तैयार होकर बैठे थे। श्री देवेन्द्र जी तथा नवां शहर वाले श्री प्रेम भारद्वाज जी भी कुलपति के साथ तैयार होकर यहा पहुंच गये। सभी ने मिलकर नाश्ता किया और 16 जुलाई को 10 30 बजे विश्वविद्यालय के बड़े हाल में पहुंच गये यहां आज नये वर्ष का शिक्षा स्तर शुरू होना था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल तथा पंजाब से आये आर्य समाजी हवन यज्ञ करने के लिये बैठ गये। श्री स्वतंत्र कुमार जी तथा श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा जी यजमान के रुप में सज गये। हवन यज्ञ करवाया गया, वेद मंत्रों का उच्चारण हुआ और छात्रों को आशीर्वाद देने के लिये भिन्न-भिन्न वक्ताओं ने अपने प्रवचन किये। कार्यक्रम का संचालन करने के लिये डा महावीर अग्रवाल कुल सचिव माईक पर आ गये। बाहर से आये अतिथियों का स्वागत करते हुए उन्होंने नये कुलपति श्री स्वतंत्र कुमार जी का परिचय करवाया तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का सक्षिप्त इतिहास दोहराया। उन्होंने कहा कि आज विश्व-विद्यालय पुन: सौहार्द पूर्ण वातावरण में प्रवेश कर रहा है। हमें इसकी उन्नति में हर सम्भव सहायता करनी होगी।

आचार्य एवं भूतपूर्व कार्यकारी कुलपति प्रो वेद प्रकाश शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा कि आज समर्पण की आवश्यकता है। गुरुकुल की परम्परा समर्पण की रही है वही इसकी उन्नति का आधार है। गुरुकुल शब्द चमत्कार पैदा करता है। गुरुकुल गुरु तथा शिष्यों के रिश्तों को उदय करने वाला है। यहां की संस्कृति महान है। जब तक हमारे में आपसी विश्वास नहीं तब तक आचार्य तथा शिष्य का लक्ष्य पूरा नहीं हो पायेगा। उन्होंने प्राध्यापकों को अपने मन को टटोलने की बात कहते हुए कहा कि गुरु का विश्वास उसी समय खत्म हो गया समझो अगर शिष्य क्लास रुम में बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो। गुरु को समर्पण की भावना से काम करना चाहिये तथा उसे इस भावना को जीविका का साधन नहीं बनाना चाहिये। यह स्थान तो त्याग और बलिदान की कर्म भूमि है। आचार्य प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री जी के विचार तो बहुत अच्छे थे परन्तु लगा आज के इस पदार्थवादी युग में इस तरह के सुन्दर विचारों पर अमल कौन करेगा। प्रवक्ता आचार्य श्री शिवा जी का भाषण भी छात्रों के लिये प्रेरक था। श्री यशपाल मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने भी अपना आशीर्वाद देते हुये कहा कि हमारे नये कुलपति अब छात्रों में भी नवीनता लाने में अग्रसर रहेंगे।

गुरुकुल के स्नातक वेद मूर्ति प. रामनाथ वेदालंकार ने इस अवसर पर अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि शिक्षणालय शिक्षक की योग्यता और छात्र की ग्राह्यता पर निर्भर करते हैं। उन्होंने अध्यापकों से अपेक्षा कि वे अपने ग्रन्थ प्रकाशित कराएं और शिक्षा को दिशा देने का कार्य करें। आचार्य हरिदेव भी छात्रों को संवेदनशील संदेश देने मे ठीक रहे।

आर्य विद्या परिषद पंजाब के प्रस्तोता श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा का भाषण भी श्रोताओं को द्रवित करने वाला रहा। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा कांगड़ी गांव में गुरुकुल की की गई स्थापना का उल्लेख करते हुए कहा कि यदि अध्यापकों का अध्यापन समर्पण भाव के साथ होगा तो वही भावना छात्रों में भी पैदा होगी। हम विदेशी सहयोग के साथ अपनी वैदिक परम्परा को साथ लेकर आधुनिकतम शिक्षा में आगे कदम बढ़ाएंगे। सभी को अपने अन्दर कार्य कुशलता लानी चाहिए। वह बोले कि हमारी गुरुकुल कांगड़ी को एक आदर्श विश्व-विद्यालय बनाने की इच्छा है। इस विश्व-विद्यालय की शोभा सुनकर सभी का मन आनंदित होता है। प्रत्येक क्षेत्र मे इसका भारी योगदान रहा है। हम अपनी परम्पराओं को कायम रखेंगे। स्वार्थ के लिये कभी किसी से समझौता नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि हमारे गुरुकुलों में तथा अन्य कालेजो की कार्य शैली में ढेर अंतर है और रहेगा।

श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा ने कहा कि अतीत को अब भूल जाना होगा। गत वर्षों में जो कुछ हुआ अब वह क्रम पुन: नहीं दोहराया जायेगा। अतीत को छोड़ दो अब वर्तमान नया पन लायेगा। इस विश्व-विद्यालय की स्थापना आर्य शिक्षा पद्धति को प्रफुल्लित करने के लिये की गई थी। वेदों का प्रचार तथा प्रसार हमारा लक्ष्य है। बहुत सी अन्य यूनीवर्सिटियों के छात्र खोज करने के लिये हमारे विश्व विद्यालय की ओर आ रहे हैं। हमारी शिक्षा नीति ही मानवता के रिश्तों को जोड़ती है जबकि विदेशी शिक्षा प्रणाली हमारे बने रिश्तो को तोड़ती है। तालियों की गूंज में श्री देवेन्द्र नाथ जी ने विश्व-विद्यालय के नये शिक्षा स्तर का प्रारम्भ होने पर बधाई दी और नये कुलपति प्रिंसिपल स्वतंत्र कुमार की प्रशसा करते हुए कहा कि वह सभी की आशाओ पर खरा उतरेगे तथा विश्व विद्यालय को तरक्की की ओर लेकर जायेंगे।

सभी वक्ताओं के शुद्ध हिन्दी मे भाषण सुन कर स्वय सोच रहा था कि अगर मेरा नाम बोलने के लिये कहा गया तो मैं इतनी अच्छी भाषा मे हिन्दी में अपना वक्तव्य नही कर पाऊगा तथा संकट में फस कर रह जाऊंगा। मुझे डर था कि मेरा नाम भी वक्ताओ में बोला जायेगा। मैं अपने मन में ही भाषण करने की तैयारी कर रहा था। मेरा खामोश भाषण मन ही मन में यूं चल रहा था।

आदरणीय कुलपति प्रिं स्वतत्र कुमार जी, प्रस्तोता श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा, सार्वदेशिक आर्य सभा के महामंत्री पं वेदव्रत जी शर्मा, श्री सरदारी लाल जी, प्रेम भारद्वाज जी तथा अन्य आचार्य गण। मुझे इस विश्वविद्यालय में पहुंच कर बहुत प्रसन्नता हुई और आज का कार्यक्रम देख कर मन हर्षोल्लास से भर गया। मुझे कविता की कुछ पंक्तियां याद आ रही है :

मैंने खत लिखके उनको बुलाया
आके कासिद ने दुखड़ा सुनाया
उनके पाओं पे मेंहिदी लगी है
वे आने जाने के काबिल नहीं हैं।

सच कह रहा हूं मेरी स्थिति भी इन काव्य पंक्तियों जैसी थी पर मुझे खत डालकर नहीं फोन पर श्री देवेन्द्र नाथ जी ने आने को कहा था और मैं यहां पर-

"सद्दी होई मित्रां दी
पैर जुत्ती न पावां।"

वाली स्थिति में था और अब यहां आकर अपने आप को बद-किस्मत मानता हू कि पहले इतने वर्ष इस सस्था से इतनी दूर क्यो रहा। मैं एक दम रुक गया। इस सम्मारोह में क्या हो रहा था मुझे कुछ भी मालूम नहीं था। मैं तो अपनी ही दुनिया मे खोया हुआ था। डा अग्रवाल महावीर ने आखरी वक्ता हमारे नये कुलपति प्रिं. स्वतंत्र कुमार जी का नाम ले दिया और वह माईक पर आकर छात्रों को आशीर्वाद देने लगे। नई भारतीय परंपरागत ड्रेस, कुर्ता-पजामा इन पर कहीं भी शिकन नजर नहीं आ रहे थे, को दोनो हाथों से सवारते हुए बोले "जब आचार्य शुद्ध हृदय मे आशीर्वाद देते हैं और छात्र आशीर्वाद ग्रहण कर शुद्ध हृदय से ही शिक्षा ग्रहण कर अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ करते है तो ईश्वर उनको हमेशा सफलता देते हैं।" गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की नई शताब्दी के प्रथम शिक्षा सत्र के प्रारम्भ होने के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रिं स्वतत्र कुमार ने कहा कि आज विश्व का कोना-कोना गुरुकुल कागडी विश्व-विद्यालय से अपेक्षा कर रहा है कि वह जीवन का नया प्रकाश दे ओर ससार भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति को भी प्राप्त करे और आज की जीवन पद्धति को बदले। कुलपति प्रिं स्वतत्र कुमार ने कहा कि पिछले वर्षो में हमें प्रतीत हुआ कि कहीं स्वामी श्रद्धानन्द के पथ से हम अलग तो नहीं हो रहे है-लेकिन "जब जागो तभी सवेरा" के सिद्धान्त के अनुसार हमें आज से पुन: यात्रा प्रारम्भ करनी है। उन्होंने विश्वविद्यालय को परिवार के सिद्धान्त पर चलाने की बात की। प्रो स्वतत्र कुमार ने कहा कि हमें स्वयं रास्ते मिलते जाएंगे। आज आवश्यकता है समर्पण की भावना की। हमे अपने व्यक्तिगत स्वार्थो का बलिदान कर संस्था की उन्नति की ओर ध्यान देना होगा। श्री स्वतंत्र कुमार ने कहा कि यदि हम विश्वविद्यालय की उन्नति में कुछ भी कर सके तो वही स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी और यह हमारे लिए नहीं अपितु विश्वविद्यालय के लिए होगा। उन्होंने मिलजुल कर कार्य करने का आह्वान करते हुए कहा कि यहां से हमें विद्यार्थी ही नहीं अपितु मानव बनाकर भेजने होंगे।

कुलपति का प्रवचन श्रोताओं पर अपना जादू जमाता नजर आता था। इसे निरतर कायम रखते हुए उन्होंने कहा कि अगर हम शुद्ध हृदय से भगवान् के आगे सफलता की प्रार्थना करे तो भगवान उसे स्वीकार करता है तथा शुद्ध हृदय से ही भगवान आशीर्वाद देता हैं। पंजाब, हरियाणा, यू.पी., उत्तरांचल, दिल्ली तथा पूरे भारत को इस विश्वविद्यालय से बहुत सी उम्मीदें हैं। हमें एक नहीं अनेक चुनौतियों का बार-बार सामना करना पड़ा। यहां अनेक घटनाएं घटीं। इसमें हमारा भी कोई कसूर जरूर होगा। हम एक परिवार की तरह हैं। **(क्रमश:)**

सब से बड़ी भूल

❑ लें० श्री रामपथिक आर्य समाज अजनाला (अमृतसर), पंजाब

(गताक से आगे)

मानव गलती (भूल) करता है या सहज हो जाती है। तनिक इस पर ठडे दिल से विचार करने पर स्पष्ट हो जाएगा कि सहजता मे हुई भूल का सुधार हो सकता है। मानव मे विवेकशालता है लेकिन जो जानबूझ कर गलती करता है उसे छली कपटी होशियार चालाक एव स्वार्थी कहा जाता है। पिछले लेख मे मैंने लिखा था कि एक सूफी सत जो मैं मैं के अज्ञान चक्कर मे फसा था उस को उसी क एक मित्र ने ज्ञान दिया। मैं ही आत्म साक्षात्कार मे और ईश्वर दर्शन मे बाधक है। इसे स्वय इसान को दूर करना चाहिए। कई लोग गुरु मत्र लेकर कहते हैं कि मेरी बाधाए सकट दुख मेरे गुरु देव दूर करेगे यह सब उनकी बहुत बडी भूल है। किसी के दु ख कष्ट कोई नहीं ले सकता। कर्ता को स्वय भुगतने पडते है। हजारो चेलो क दुखो के नीचे दब कर गुरु स्वय ही मर जाएगा। गुरु भी इन्सान है वह परमात्मा के कर्मफल में बाधक नहीं बन सकता। गुरु अपने कर्मों का फल पाएगा चेला अपने कर्मों का फल पाएगा। हमारी इस भूल का सुधार हमारे वेद शास्त्र कर सकते हैं। हम अपने शास्त्रों को पढे और सच्चाई को जाने तभी कल्याण है। आर्य समाज के दस नियमो पर विचार करते हुए स्वय पर भी विचार करे तो भूलो का सुधार होता रहेगा। जैसे तन, वस्त्र और मकान आदि न चाहते हुए भी गदे हो जाते हैं वैसे ही इसान का मन भी कभी कभी गदा हो जाता है। हमें अपने इस गदे मन को रोज हवन सध्या के मत्रो से शुद्ध करना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने एक अमर वाक्य मे कहा है कि "सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।" जबकि व्यवहारिक जीवन को चलाने के लिए उन्हाने कहा कि सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बरतना चाहिए, आर्य बन्धुओ ऋषिवर के उपरोक्त कहे गए वाक्यों के अनुसार अपने जीवन को चलाओगे तो आप से कभी भी भूल नहीं हो सकती। यदि फिर भी मानवता के नाते कहीं भूल हो जाए तो हर रोज सध्या करते हुए इन भूलों का सुधार। इससे आप का जीवन सवर जाएगा। इसान को अपनी आत्मा की आवाज को कभी भी अनसुना नहीं करना चाहिए और अपने मन की अन्तकरण की आवाज पर चलना चाहिए। जो इसान अपने मन की आवाज को सुन कर अनसुना करते है वह मानव नहीं है। आज इसान को जो भूलना चाहिए उसे वह नहीं भूलता और जिसे नहीं भूलना चाहिए उसे भूल जाता है। यह कैसी विडम्बना है। किसी मनीषी ने एक गीत मे कहा है–

मैं नहीं मेरा नहीं यह तन किसी का है दिया
जो भी अपने पास है सब कुछ किसी का है दिया॥
देने वाले ने दिया वह भी दिया बडी शान से
मेरा है यह मेरा है यह लेने वाला कह उठा अभिमान से॥
मैं मेरा यह कहने वाला तन मन आदि उसी का है दिया।
जो भी अपने पास है सब कुछ उसी का है दिया॥
जो भी मिला है कभी पास रह सकता नहीं, जी हा रहता नहीं,
कब बिछुड जाएगा, यह राज कोई जान सकता नहीं।

गीत लम्बा है लेकिन विस्तार से देने का कोई लाभ नहीं। हा जी व्यवहारिक रूप में मैं और मेरा कहे बिना जीवन चलता नहीं परन्तु मन मे यह दृढ निश्चय बना रहे, पक्का विश्वास बना रहे कि मैं कुछ भी नहीं सब कुछ प्रभु की देन है। जैसे कि 'मेरा मुझ में कुछ नहीं सब कुछ है प्रभु तेरा। यह शब्द कहने और लिखने मे सरल हैं परन्तु जीवन भर इन पर आचरण करना सरल नहीं है तो कठिन भी नहीं है। महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र को या आप जिस भी महापुरुष में आस्था श्रद्धा व विश्वास रखते हैं उसके जीवन चरित्र को पढे आप को बहुत बल मिलेगा मार्ग दर्शन भी मिलेगा।"

दृष्टान्त कहानी कविता गीत का सार है सुधार जैसे एक अलकारिक भाषा मे गाथा है। एक व्यक्ति जो भूल पर भूल करता था फिर भी उसके मन मैं भूल सुधार की जिज्ञासा थी। सुधार भी वही कर सकता है जो सुमन से सुधारना चाहे। एक आदमी को एक फरिश्ते ने स्वप्न में दो थैलिया दीं और कहा कि यह वाला भाग आगे और यह वाला भाग पीछे रहे और मध्य वाला भाग तुम्हारे कधे पर रहे। उस व्यक्ति ने पीछे वाला भाग आगे और आगे वाला भाग पीछे कर लिया। यह उस व्यक्ति की सबसे बडी भूल थी। उस फरिश्ते ने व्यक्ति से इसलिए कहा था कि भूलों, गलतियों और त्रुटियों को आगे रखने से इंसान उनमें सुधार का प्रयास करेगा जो पिछले भाग में उस की खूबियां, अच्छाईयां नेक काम आदि थे जिसे वह भूल जाए ताकि इसमें अहकार (अभिमान) न आवे। फरिश्ते ने इसान से इसलिए कहा था कि अगले वाले थैले मे जो है उसे दिन में दो चार बार ध्यान से पढें और उस पर विचारे तो पिछले वाले थैले में जो है उसे न खोले परन्तु वह मानव की बुद्धि का कमाल है कि पिछले वाले भाग को आगे और आगे वाले भाग को पीछे कर लिया। इससे भूल सुधार कैसे होगा। मैं झूठ कभी नहीं बोलता परन्तु सत्य भी कभी नहीं कहता। ऐसे इसान का सुधार कब होगा।

प्रिय पाठक पिछले प्रसग मे सकेत किया था कि मानव ने अपने जैसे ही भगवान स्वय बनाये या बनवाये और उस में प्राण प्रतिष्ठा भी की यदि कल्पना से ही प्राण-प्रतिष्ठा हो जाती यही मानव परमपिता परमात्मा को भी धत्ता बताता और उसे रिटायर कर स्वय भगवान बन जाता है। जैसा कि आज कल अपने आप को कई लोग अवतार सिद्ध कर के अपनी पूजा करवा रहे हैं। इनमें प्रमुख हैं शान्तिकुञ्ज के सस्थापक (हरिद्वार वाले) जोकि आर्य समाज मथुरा के पूर्व प्रधान श्री पडित श्री राम शर्मा जी हैं। स्वामी दयानन्द जी को भी बड़े-बड़े प्रलोभन दिए गए कि आप खडन करना बद कर दो और हम आपको भगवान का 25वा अवतार मान लेंगे लेकिन स्वामी जी ने उनकी बात को नकार दिया। स्वामी जी ने काशी के सारी विद्वत मडली और चारो शकराचार्यों को तपाक से कहा कि जिस अवतारवाद पाखड ढोग मूर्ति पूजा कबर पूजा चमत्कार वाद का मैं जी जान से खडन करता हू उसे बद नहीं कर सकता। यदि स्वामी जी उनकी बात को मान जाते ता क्या आर्य समाज होता। परन्तु स्वामी जी ने अवतार बनने से इन्कार कर दिया और कहा मैं साधारण व्यक्ति ही अच्छा हू।

विडम्बना है कि अब आर्य समाज मे भी पाखड पनपने लगा है। कैसे और क्यो इसको अगले अक में पढें।

(क्रमश)

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज शहीद भगत सिह नगर जालन्धर का चुनाव श्री मुलख राज जी आर्य मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न पदाधिकारी चुने गए।

1 सरक्षक –श्री शान्ति स्वरूप जी कपूर 2 प्रधान.–श्री ओम प्रकाश जी अग्रवाल। 3 कार्यकर्त्ता प्रधान –श्री मुलख राज आर्य। 4 उपप्रधान –श्री बाल किशन सहगल, 5 मन्त्री–श्री रणजीत आर्य 6 उप मत्री –श्री ओम प्रकाश जी, 7 प्रचार मत्री –श्री दलजीत महाजन 8 कोषाध्यक्ष –श्री राजेश प्रेमी 9 उप कोषाध्यक्ष –श्री अश्विनी चड्ढा जी।

अन्तरग सदस्य–श्री आचार्य नरेश जी शास्त्री, श्री सुदर्शन आर्य श्री किशन लाल सूद श्री राम प्यारा जी, श्री जगदीश बिल्ला, श्री किशन पाल आर्य श्री हरिचद जसवाल चौधरी हरी चद जी श्रीमती अनु आर्या जी श्रीमती सुनीता प्रेमी श्रीमती भारती शर्मा श्री ओम प्रकाश जी धीर।

इससे पूर्व आर्य समाज मदिर मे प्रात हवन यज्ञ किया गया। उल्लेखनीय है कि यह आर्य समाज सामाजिक कार्यों में बढ-चढ कर भाग लेती है।

–रणजीत आर्य, मन्त्री

हांसी में वेद प्रचार व नामकरण संस्कार

दिनाक 22 23 व 24 जुलाई को आर्य जगत् के युवा वैदिक विद्वान् आचार्य रामसुफल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता लाल सडक हासी के सुपुत्र के नामकरण सस्कार के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय वेद प्रचार का आयोजन किया गया। जिसमे यज्ञ के ब्रह्मा डा उमेश जी प्राचार्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार ने पूर्ण वैदिक रीति से नवजात शिशु का नामकरण सस्कार करवाया बच्चे का नाम शशिकान्त रखा गया। भजन श्री प रणधीर सूद जी भजनोपदेशक के हुए इसमें बहुत बडी सख्या मे लोगो ने भाग लिया बाद मे ऋषि लगर का आयोजन किया गया।

–राजेश शर्मा

गुरुकुल कांगड़ी की गतिविधियां

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का नया सत्र 16-7-2002 को यज्ञ से आरम्भ हो गया। गुरुकुल में विधिवत कार्य आरम्भ हो गया है कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने गुरुकुल की उन्नति के लिए अपना अभियान आरम्भ कर दिया है। गत दिनों वह इसी उपलक्ष्य में पंजाब में भी आए। यहां वह अमृतसर में भी गए और वहां गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी के अधिकारियों से विचार विमर्श किया। गढ़शंकर में आर्य गर्ल्ज कालेज के समारोह में भाग लिया और वहां कालेज की उन्नति के लिए उन्हें अपने सुझाव दिए तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय की उन्हें पूरी जानकारी दी। 24-7-2002 को गुरु पूर्णिमा के अवसर पर वह गुरुकुल करतारपुर में गए। गुरु पूर्णिमा समारोह की अध्यक्षता की और अपने अध्यक्षीय भाषण में गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय की पूरी जानकारी दी। गुरुकुल करतारपुर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है और यहां दसवीं से लेकर बी.ए. तक सारी परीक्षाएं गुरुकुल कांगड़ी की दिलवाई जाती हैं।

श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने गुरुकुल कांगड़ी में और भी कई नए-नए कोर्स खोलने की घोषणा की। विद्यार्थियों को गुरुकुल में प्रवेश की प्रेरणा दी उन्होंने सभी गुरुकुलों को गुरुकुल कांगड़ी से जोड़ने की प्रेरणा दी। इसके बाद उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की कार्यकारिणी की बैठक में भाग लिया और अपने सुझाव दिए।

25-7-2002 को वह आर्य कालेज लुधियाना में गए और वहां की गतिविधियां देखीं तथा कालेज की उन्नति के लिए अपने सुझाव दिए। 25-7-2002 को रात्रि में वह गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार में पहुंच गए इसके बाद वह गुरुकुल पौंदा (पो.टी.सी.) जि. सहारनपुर में गए वहां की गतिविधियां देखीं और अपने सुझाव दिए। इसके पश्चात् कन्या गुरुकुल देहरादून गए और वहां की स्थिति देखी। यह गुरुकुल बहुत पुराना है। बहन दमयन्ती जी प्राचार्या इसे सुचारू रूप से चला रही है परन्तु इसका भवन बहुत खस्ता हो गया है कई कमरों की छतें गिरने वाली हैं जिनकी मुरम्मत की तुरन्त आवश्यकता है। इसके पश्चात् वह तपोवन आश्रम में भी गए।

इस प्रकार श्री स्वतन्त्र कुमार जी गुरुकुल की उन्नति के लिए कई लोगों से व उच्चाधिकारियों से मिल रहे हैं ताकि गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार अपना खोया हुआ वर्चस्व प्राप्त कर सके।

उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त को श्रद्धांजलि

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार में 29-7-2002 सोमवार को भारत के उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त जी का 27-7-2002 को देहावसान हो जाने पर एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें गुरुकुल के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और इसके पश्चात् गुरुकुल में अवकाश घोषित कर दिया गया।

परम पिता परमात्मा से दिवंगतात्मा की सद्‌गति और शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त की राजकीय सम्मान के साथ वैदिक रीति अनुसार अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न

भारत के उपराष्ट्रपति श्री कृष्ण कान्त जी की अन्त्येष्टि संस्कार 28 जुलाई को सायं 5.30 बजे पूर्ण राष्ट्रीय सम्मान के साथ पूर्ण वैदिक रीति अनुसार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उनके सम्मान में सेना द्वारा तोपों की सलामी दी गई और अपने हथियार उलटे कर दिए। इस अवसर पर उनको श्रद्धाजलि देने के लिए राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम, प्रधान मन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री लाल कृष्ण जी आडवानी, सोनिया गान्धी, श्री वी पी सिंह, श्री एच डी देवगौड़ा श्री चन्द्रशेखर तथा अन्य बहुत से राजनेता उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त आर्य समाज के नेता सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन, महामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा गुरुकुल गौतम नगर के आचार्य श्री हरिदेव जी तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारी सम्मिलित हुए। आचार्य हरिदेव जी के निर्देशन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार करवाया और सभी नेताओं ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट की।

हांसी में वृष्टि यज्ञ

हांसी-स्थानीय आर्य वीर दल द्वारा डी ए वी पब्लिक स्कूल में मानसून वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता आर्य वीर दल, हांसी के क्षेत्रीय मंचालक आचार्य रामसुफल शास्त्री ने की तथा मुख्य यजमान डी.डी. एस. कम्प्यूटर प्राइवेट लि के निदेशक श्री संजय जैन व क्राइम न्यूज एवं तहकीकात डाट काम के जिला संवाददाता श्री मनन धमीजा थे। ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद के मन्त्रों से आहुतियां दी गई।

अखिल भारतीय राज भाषा चेतना शिविर

आर्य समाज 15 हनुमान रोड (हनुमान मन्दिर कनॉट प्लेस के पीछे वाली सड़क) नई दिल्ली में 16-17 अगस्त 2002 को अखिल भारतीय राजभाषा चेतना शिविर लगाया जा रहा है। शिविर का उद्घाटन श्री मुरली मनोहर जोशी जी करेंगे। आवास भोजन निशुल्क होगा। शिविर 16 अगस्त को प्रात: 9 बजे आरम्भ होगा 17 अगस्त को साय 6•बजे समाप्त होगा। सम्पर्क करे।

–डा० परमानन्द, शिविराध्यक्ष, दूरभाष: 011-2757649

भुच्चो मण्डी में हवन यज्ञ

दिनाक 19-7-2002 दिन शुक्रवार को यहां की अनाज मण्डी में ब्रह्मचारी सूर्यदेव गुरुकुल बठिण्डा वालों ने हवन यज्ञ करवाया जिसमे आर्य समाज के प्रधान डा. भारत भूषण मित्तल, कोषाध्यक्ष श्री लक्ष्मण दास गुप्ता, संरक्षक जगन्नाथ बांसल, महाशय रघुवीर चद, सुनील गर्ग एडवोकेट के अलावा बहुत से गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया बाद में मीठे चावलों का भण्डारा भी किया गया।

–राम नाथ शर्मा, मन्त्री

गुरुकुल बठिण्डा के समाचार

21-7-2002 रविवार को गुरुकुल प्रबन्ध समिति की एक विशेष बैठक प्रात: 10.30 बजे आर्य समाज चौक बठिण्डा में श्री बाबू राम जी गर्ग की प्रधानता में हुई। ईश प्रार्थना के पश्चात् प्रबन्ध समिति के महामन्त्री श्री आशानन्द आर्य ने बताया कि गुरुकुल की 21 बीघा भूमि बठिण्डा के आर्य भाईयों के अनथक परिश्रम से एक दर्शनीय स्थान बन गया है। चारों ओर पक्की दीवार दो सुन्दर बड़े गेट, सुन्दर बागीचा और आने-जाने के लिए पक्की सड़क बन गई है। टूटे हुए कमरों की मुरम्मत करा दी गई है इसमें एक माडल स्कूल भी चल रहा है।

जब से ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी यहां पधारे हैं यह स्थान आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का केन्द्र बन गया है अब यहां सन्यासी, वानप्रस्थी व सभा के उपदेशक भी ठहर सकते हैं।

एक प्रस्ताव में साथ लगने वाली गुरुकुल की भूमि जिसे इम्प्रूवमैन्ट ट्रस्ट ने एकवायर करने का हुक्म निकाला है कि घोर निन्दा की गई और इससे पंजाब में आर्य समाज के साथ धक्का किया है कहा गया है।

यह भी निश्चय हुआ कि इस गलत आदेश के विरुद्ध आर्य प्रनिनिधि सभा पंजाब से हाईकोर्ट में रिट करने के लिए प्रार्थना की जावे इस कार्य क लिए समिति के कोषाध्यक्ष श्री प्रेम जी भाटिया ने बहुत परिश्रम करके सारा रिकार्ड तैयार कर लिया है। यह भी निश्चय हुआ कि शीघ्र ही गुरुकुल की भूमि पर बड़ा सम्मेलन किया जाए।

यह भी निर्णय लिया गया कि दिसम्बर माह के अन्त में यहां आर्य वीर दल का शिविर लगाया जावे शान्ति पाठ के पश्चात् कार्रवाइ समाप्त हुई।

–आशानन्द आर्य, महामन्त्री

आर्य समाज गान्धी नगर दिल्ली का चुनाव

आर्य समाज मन्दिर गान्धी नगर दिल्ली-31 का वार्षिक निर्वाचन दिनाक 9 6 2002 को सोहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित अधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए-

प्रधान:-श्री पूर्णचन्द विद्यार्थी। मन्त्री:-श्री शिव शंकर गुप्ता। कोषाध्यक्ष:-श्री रूप किशोर अग्रवाल। –मन्त्री

बच्चों के लिए वैदिक धर्म परिचय

प्र०-परमात्मा कितने हैं ?

उ०-परमात्मा एक है कण-कण में रमा हुआ है।

प्र०-प्रभु का मुख्य नाम क्या है ?

उ०- परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् है बाकी नाम गौण हैं, ईश्वर के जितने गुण हैं उतने ही उसके गुण वाचक नाम हैं।

प्र०-वेद कितने हैं और कौन-कौन से हैं ?

उ०-वेद चार हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

प्र०-आपका धर्म क्या है ?

उ०-हमारा धर्म वैदिक धर्म है।

प्र०-धर्म किसे कहते हैं ?

उ०-जो धारण करने योग्य हो, पक्षपात रहित परमात्मा की आज्ञानुसार (वेद अनुसार) सत्य है वही धर्म है।

प्र०-सनातन धर्म किसे कहते हैं ?

उ०-सनातन जो सबसे पुराना हो वेद सबसे पहले हैं, जो कभी न बदले जैसे दिन-रात नहीं बदलते, अग्नि का धर्म जलाना है वह सब जगह ताप देगी उसका धर्म है जो सत्य है।

यह प्रश्न-उत्तर सब माता-पिता, दादा-दादी को अपने 5 वर्ष के बच्चों के दिमाग में दिल में यत्न से बिठा देने चाहिएं ताकि जीवन भर वह न भूलें। –जनकरानी आर्य मन्त्री,

स्त्री आर्य समाज दयानन्द बाजार, लुधियाना

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की गतिविधियां

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की ओर से लगभग 12 वर्ष से सिविल लाईन ग्रीन पार्क में प्रति रविवार घरों में प्रात:काल यज्ञ सत्संग होता है, 7 जुलाई को 43 ग्रीन पार्क में, 14 जुलाई को किरण कुमार कपिला जी के घर, 21 जुलाई को श्री धर्मपाल खन्ना के घर अब 97 ग्रीन पार्क में श्री पुरुषोत्तम लाल जी के घर पर यज्ञ व सत्संग हुए।

इस प्रकार यह यज्ञ सत्संग कार्यक्रम लगातार प्रभु की अपार कृपा से चल रहा है, इसे निश्चित करते हैं प्रधान रायो जी श्री धर्मपाल जी खन्ना और जनकरानी आर्य यज्ञ कराती हैं, प्रधाना इन्द्रा जी शर्मा सब सदस्य साथ होते हैं।

प्रति वर्ष शिवरात्रि पर एक बड़ा समारोह किया जाता है खुले पार्क में जिसमें 7 कुण्डीय यज्ञ, भजन, प्रवचन श्रद्धेय स्वामी सम्पूर्णानन्द जी करनाल वालों का पिछले तीन वर्षों से होता है सब भाई बहनें बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं यह पारिवारिक सत्संग की सफलता में सब भाई-बहनों का सहयोग है। बड़ा समारोह प्रतिवर्ष होने लगा है।

स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना बहुत समय से सेवा का पवित्र कार्य करती चली आ रही है। कोई बीमार, गरीब, विधवा, दु:खी लड़कियों की शादी पर यथा शक्ति सहयोग बड़ी नम्रता पूर्वक करती है, गुरुकुलों से आने वाले आचार्यों महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा तथा गुरुकुल करतारपुर को अपनी हैसियत के मुताबिक सहायता करती रहती है, अभी एक मरणासन्न व्यक्ति की सहायता की । प्रभु कृपा से उसे जीवन दान मिला सब को हार्दिक प्रसन्नता हुई। सभी बहनें बहुत ही आर्यत्व से ओत-प्रोत हैं सबके परामर्श से हम कार्य करते हैं। दो बच्चो की फीस देते हैं और भी समय-समय पर आने वालों की जरूरत पूरी करने की सदा इच्छा होती है करते भी हैं। अब 31 अगस्त 2002 को कृष्णजन्माष्टमी मनाने का निर्णय किया गया है, बड़ी श्रद्धा से उत्साह से मनाएंगे सब बहनो का सहयोग तो रहता है प्रधाना इन्द्रा जी, श्रीमती नीलम थापर श्रीमती सुषमा गुप्ता, बाला जी गंभीर आदि वहने कर्मठता से भाग लेती हैं। –जनक रानी, आर्या

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना का पारिवारिक सत्संग 4-8-2002 रविवार को सायं 5.30 से 7.30 बजे तक मास्टर राम चन्द जी के घर बिन्द्रावन रोड, सिविल लाईन, समीप रूपावली स्ट्रीट लुधियाना मे होगा।

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ । दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम्

दूरभाष : 292926

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रनिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 16 सृष्टि संवत 1960853103, 11 अगस्त, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

मानव जीवन एक वरदान

☐ ले० डॉ० दुर्गाप्रसाद आर्य, 153 रिकाबगंज, फैजाबाद (उ.प्र.)

भारत वर्ष मे प्रचलित मान्यताओं के अनुसार इस जगत में चौरासी लाख योनियां हैं, अर्थात् चौरासी लाख प्रकार के जीव संसार मे हैं। समस्त योनियों में मानव योनि को सर्व सम्मति से श्रेष्ठ बताया गया है। ऐसा क्यों ? इसलिए मानव योनि में रचनात्मक कर्म करने की शक्ति परमात्मा द्वारा प्राप्त है। मनुष्य शरीर कर्म शरीर एवं भोग शरीर दोनों गुणों से युक्त है, जब कि इतर तिरासी लाख निन्नावे हजार नौ सौ निन्नावे शरीर धारी योनियों को केवल भोग शरीर प्राप्त है। मनुष्य को परमात्मा ने बौद्धिक शक्ति का एक अलौकिक वरदान दिया हुआ है। मानव जाति ने अपने बौद्धिक बल पर अद्‌भुत चमत्कार जैसे वायुयान, टेलिविजन, टेलिफोन, वायरलैस, फैक्स, प्रकार-प्रकार के कम्प्यूटर, अन्तरिक्ष में चन्द्रमा आदि ग्रहों पर जाने वाले राकेट आदि का निर्माण कर दिया है। इतर शरीर धारी मात्र जीवन यापन हेतु खाने पीने, बच्चा पैदा करने आदि के सामान्य कार्य करने में ही सक्षम हैं। गीता में योगिराज भगवान कृष्ण ने पहले श्लोक में कहा है "धर्म कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सव:. " इसका साधारण अर्थ है पवित्र धार्मिक कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध के लिए इकट्ठे हुए मेरे (कौरव) एवं पाण्डु पुत्रों ने क्या किया। अध्यात्म दृष्टि से "धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे" का अर्थ है कि समस्त संसार कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध के लिए इकट्ठे हुए मेरे (कौरव) एव पाण्डु पुत्रों ने क्या किया। अध्यात्म दृष्टि से "धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे" का अर्थ है कि समस्त संसार कुरुक्षेत्र अर्थात् कर्म करने का स्थान अर्थात् "कर्मस्थली है" परन्तु कर्म कैसा किया जाए स्पष्ट किया गया "धर्मक्षेत्रे" तात्पर्य धर्मपूर्वक कर्म करने का स्थान है। धर्म क्या ? धर्म शब्द की व्याख्या असंख्य प्रकार से विद्वानों ने की है। ये बातें धर्म के सम्बन्ध में सर्वमान्य हैं कि धर्म जीवन में धारण करने की वस्तु है उदाहरण के लिए सत्य बोलना, तदनुसार आचरण करना, परोपकार करना, पवित्र कार्यों में दान देना, दीन एवं असहायों की सहायता करना, स्वयं अत्याचार, अनाचार से दूर रह कर समाज, राष्ट्र एवं विश्व से अत्याचार, अनाचार के दोषों को दूर करने में प्रयत्नशील होना, दर्प कार्य के कतिपय लक्षण हैं। हम संसार के मानवों को भिन्न-भिन्न स्थितियों में देखते हैं कोई बच्चा पैदा होने पर चांदी के झूले में झुलाया जाता है उत्तम उत्तम भोजन उसे प्राप्त कराये जाते हैं मूल्यवान वस्त्रों से सुशोभित किए जाते हैं, आदि आदि सुविधायें प्रदान की जाती हैं। कोई व्यक्ति वयस्क होने पर बड़ा धनवान, कोई श्रेष्ठ विद्यावान, कोई बड़े-बड़े पदों पर सुशोभित होता है कोई उत्तम शरीर वाला हृष्ट-पुष्ट निरोग, कोई संसार को श्रेष्ठ मार्गदर्शन देने वाले योगी होते हैं। दूसरी ओर इसके विपरीत कोई महा दुर्बल, जो अपने सन्तान के दूध के, चिकित्सा की व्यवस्था करने में भी अक्षम, कोई मूर्ख एवं पागल, कोई रात दिन काम करके भी अत्यन्त कम उपलब्धि कर पाने वाला, कोई महा कुरूप एवं रोग ग्रस्त दिखाई देता है। कोई स्वभाव से कपटी, छली जीवमात्र को पीडा पहुंचाने वाला होता है। परम पिता परमात्मा एक है समस्त मनुष्य एव जीव उसी की सन्तानें हैं, फिर परम न्यायिक ईश्वर की सृष्टि में यह भेद क्यो ? इसलिए कि ससार के मनुष्यो द्वारा विभिन्न प्रकार के कर्म किये जाते हैं, जैसे कोई अपनी अपने परिवार की भलाई के साथ दूसरों की भलाई के लिए भी कर्म करता है कितने ही महापुरुष जैसे ऋषि, मुनि, त्यागी, कर्मयोगी समस्त जीवो एव विश्व की भलाई करते रहते हैं। संक्षेप में कोई सात्विक गुणो वाला कोई राजसी गुणो वाला, तो कोई दोनो गुणो से पृथक् अधिक मात्रा में तामसी गुणों से युक्त, मदिरा के नशे में बीभत्स कर्म करने वाला, वेश्यागमन, अत्याचार, दुराचार, हिंसा प्रकृति आदि दुर्गुणतापूर्ण कर्म करने वाला दिखाई देता है। हम जिस प्रकार के कर्म करते हैं उसी प्रकार का कर्म फल भी प्राप्त करते हैं। परमात्मा एव परमात्मा द्वारा संचालित प्रकृति (Nature) का यह अटल नियम है कि नीम के बीज से नीम, बबूल के बीज से बबूल, आम, सेब आदि के बीज आम, सेब आदि के ही वृक्ष पैदा होते हैं, अन्य कुछ नहीं, यदि उपरोक्त नियम सृष्टि मे चल रहे हैं, तो कर्म फल मे यह नियम असम्भव कैसे ? महर्षि कपिल ने सांख्य दर्शन में लिखा है "कर्म वैचित्र्यात् प्रधान चेष्टा गर्भदासवत्" तात्पर्य यह कि संसार में मनुष्य विविध कर्म करते हैं हमारे द्वारा किए हुए कर्मों के आधार पर परमात्मा अपनी न्याय व्यवस्थानुसार प्रकृति (Nature) द्वारा विविध प्रकार के भोग जीवों को प्रदान करता है स्वर्गीय पूज्य आचार्य प्रभामित्र जी सांख्य दर्शन के उपरोक्त सूत्र के आधार पर कहा करते थे "कर्म की विचित्रता से यह ससार चित्र विचित्र" दिखाई देता है। महर्षि मनु ने कर्मफल की अनिवार्यता के सम्बन्ध मे लिखा है "ना पुत्रहि सदायार्थ पिता माता च तिष्ठत:। न पुत्र दारा ज्ञाति धर्म तिष्ठति केवल:॥" एक प्रजायते जन्तुरेक एवं प्रलीयते। एको न भुक्ते सुकृतमेक एवं च दुस्कृतम्। उपरोक्त रत्नों को महर्षि मनु ने बताया है परलोक में माता, पिता, पुत्र, स्त्री कोई भी सहायक नहीं हो सकता, यदि कोई सहायक होता है तो केवल किया हुआ धर्म कार्य। दूसरे श्लोक मे बताया है प्राणी अकेला उत्पन्न होता है अकेला ही मृत्यु को प्राप्त होता है, अकेले ही अपने सत्कर्मों, दुष्कर्मो का फल प्राप्त करता है। एक स्थान पर महर्षि मनु ने लिखा है, "अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतम् कर्म शुभाशुभम्" अर्थ है कि मनुष्य अपने द्वारा किए गए शुभ एव अशुभ कर्म का फल शुभ एवम् अशुभ (अच्छा या बुरा) अवश्य प्राप्त करता है। उपरोक्त श्रेष्ठ चिन्तन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मनुष्य को शुभ विचार, शुभ कर्म करने चाहिए, शुभ कर्मों को करते हुए भी यदि दु:ख कष्ट आये तो यह समझना चाहिए कि परमात्मा हमारे पूर्व किए गए अशुभ कर्म का फल प्रदान कर हमें पवित्र बना रहा है, वर्तमान में किए गए शुभ कर्मों का उत्तम फल भविष्य में प्राप्त होने वाला है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति ने अज्ञानवश पहले बबूल के ही वृक्ष लगाये हैं अब वह केला, सेब, आम आदि के वृक्ष लगा रहा है तो स्वाभाविक रीति से उसे पहले बबूल के उत्पादन प्राप्त होंगे, परन्तु भविष्य मे उसे केला, सेब आम के उत्तम फल प्राप्त होगे। व्यक्ति को धन, पद, शारीरिक बल, विद्वता आदि प्राप्त करके अहकार कभी नहीं करना चाहिए अर्थात् उपरोक्त शक्ति का सदैव सदुपयोग करते रहने का प्रयत्न करना चाहिए। मानव शरीर परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति है इसे सर्वोत्तम कर्मों में लगाकर मानव जीवन को सार्थक बनाने की चेष्टा करनी चाहिए।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

"मनुष्य का सम्पूर्ण ज्ञान काम से ढका हुआ है"

❑ ले० पं० देव प्रकाश टंकारा वाले 73/5 भार्गव नगर, जालन्धर

आदमी की मैं की उड़ान कभी खत्म नहीं होती और न ही इसके खत्म होने का कोई कारण है क्योंकि आदमी अपनी सम्पूर्ण आयु मे मैं के बिना नहीं जी सकता। बहुतेरे जनों ने इस मैं को खत्म करने का यत्न किया है उनकी मैं तो खत्म नहीं हुई हां वे कोशिश करने वाले जरूर समाप्त हो गए है। वास्तव में अगर देखा जाए तो आदमी की छोटी सी जिन्दगी मे सिवाय अपनी मैं के और कुछ है भी नहीं। आदमी लाख कोशिश करता है कि उसकी मैं समाप्त हो जाए परन्तु यह खत्म होने के बजाय और बढ़ जाती है। इसका कारण है आदमी के अन्दर पल प्रतिपल पैदा होने वाली काम की तरगे। इन इच्छाओं को आदमी समाप्त नहीं कर सकता क्योंकि इसका सीधा सम्बन्ध शारीरिक मनस्थिति के साथ है। एक गहन चिन्तन से यह बात साफ और स्पष्ट हो पाई है कि आदमी की इच्छाओं की समाप्ति जिस दिन होती है उसी दिन आदमी के शरीर का अन्त भी हो जाता है। उस आदमी की सांसारिक इहलीला समाप्त हो जाती है, शायद इसीलिए हमारे ऋषियों ने आदमी के मन के अन्दर पनपने वाली वासना की ध्वनि को समाप्त करने की बजाय उसे ठीक दिशा की ओर मोड़ देने का इशारा किया है।

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।

यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा ते नेदमावृतम्॥3-38॥

श्रीमद भागवतगीता अध्याय-३

"अर्थात् जिस प्रकार धुएं से अग्नि ढक जाती है, धूल से दर्पण ढक जाता है और झिल्ली से गर्भ ढका रहता है, उसी प्रकार मनुष्य का सम्पूर्ण ज्ञान काम और क्रोध से ढका रहता है।" इन्द्रिय, मन और बुद्धि काम के आधार हैं। इन तीनों के द्वारा आदमी के सम्पूर्ण ज्ञान पर से पर्दा हटाया भी जा सकता है तथा सारी जिन्दगी पर्दा पडा भी रह सकता है। मान लीजिए कि आदमी के अन्दर इन्द्रिया ही न हों। थोड़े समय भर के लिए सिर्फ कल्पना कीजिए तो आप को स्वतः ही ज्ञान हो जाएगा या आप अपने आप ही अनुभव करने लग पड़ेंगे कि बगैर इन्द्रियों के आदमी सिर्फ हाड़ और मांस का पुतला होगा। ऐसे में शायद उसके अन्दर इच्छाओं का जन्म न हो परन्तु तब इच्छाओं का कोई महत्व नहीं होगा। कोई भी व्यक्ति इन्द्रियों के बगैर शरीर नहीं चाहेगें क्योंकि इन्द्रियों का शरीर में विशिष्ट स्थान है। इन्द्रियां रहते ही हम ईश्वर को पा सकते हैं परन्तु याद रहे इन इन्द्रियों के साथ मन और बुद्धि का होना भी अति जरूरी है। पागलों जैसी स्थिति किसी काम की नहीं। उन्नति और अवनति में फर्क होता है। दोनों की दिशा ठीक एक-दूसरे के विपरीत है इसलिए कोई व्यक्ति अवनति नहीं चाहता बल्कि आप सभी भी तो उन्नति ही चाहते हैं।

इस श्लोक में एक बात बड़ी महत्वपूर्ण कही गई है कि आदमी का सम्पूर्ण ज्ञान काम और क्रोध से ढका रहता है। आदमी ज्ञानवान है इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती और न ही कोई इस राय को कोई मान सकता है कि आदमी काम की शक्ति को नहीं पहचानता। हां यह बात अलग है कि आदमी ने अपनी सुविधा के अनुसार इसे प्रयोग किया हो। इसमें गलती काम की नहीं बल्कि उन व्यक्तियों की है जिन्होंने इसे निजि स्वार्थ हेतु प्रयोग किया है। काम का सम्बन्ध हमारे शरीर और मन के साथ है। शास्त्रों ने आदमी के लिए एक समय सीमा निश्चित की है जब आदमी शारीरिक भूख को मिटा सकता है परन्तु याद रहे सिर्फ-सिर्फ शारीरिक भूख को मिटाना ही इसका ध्येय नहीं बल्कि समाज की बढ़ौत्तरी इसका अन्तिम लक्ष्य है। समय से पूर्व और बाद में इसे करने में क्या क्या हानियां हो सकती हैं तथा समय के भीतर काम का प्रयोग करने में क्या-क्या लाभ हो सकते हैं ? इन तमाम बातों पर शास्त्रों में खुल कर लिखा गया है। [illegible] मी माने या न माने यह [illegible] मर्जी है। दूसरी तरफ [illegible] के [illegible] को आदमी की इच्छाओं के साथ जोड़ा गया है। ये इच्छाएं जन्म से लेकर मरण तक आदमी के साथ रहती हैं। इन्हीं इच्छाओं के परिणाम स्वरूप आदमी का पुनर्जन्म निर्धारित होता है।

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।

आद्यन्तवन्तः कोन्तेय न तेषु रमते बुधः॥5-22

श्रीमदभागवदगीता अध्याय-5

अर्थात् "इन्द्रियों से प्राप्त होने वाले जितने भी सुख भोग हैं, वे दुःख के मूल हैं, वे आते हैं और जाते हैं। बुद्धिमान मनुष्य इसके असक्त नहीं होता।" भगवान बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं में कहा कि "धन की वर्षा होने से भी कामना की पूर्ति नहीं होती। बुद्धिमान आदमी जानता है कि कामनाओं की पूर्ति में अल्प स्वाद है और दुःख है।"

जब एक हुए तो दस होते
दस हुए तो सौ की इच्छा है
सौ पा कर भी सन्तोष नहीं
अब सहस्र होये तो अच्छा है
जब तक मन में तृष्णा है तब
तक प्रकास नहीं होता।
आयु क्षीण हो जाती है तृष्णा
का नाश नहीं होता॥

आनन्द दृष्टान्त सन्देश

बेशक दौलत धन बिना नहीं
हुन्दी गुजरान।
भक्त जन पर ऐस विच मूल
न बन्धे जान॥

भक्त कबीर

काम से दुःख और भय पैदा होता है। प्रत्येक कामना का परिणाम या तो अल्प सुख या दुःख है। आप की कामना पूर्ण हो तो कुछ समय के लिए आप सुख का अनुभव कर सकते और यदि कामना पूर्ण न हो तो आदमी दुःख के महासागर में चला जाता है। मान लीजिए आप ने बहुत पैसा कमा लिया अब उस पैसे के साथ आप के चारों तरफ भय का वातावरण छा जाएगा। आप उस धन को छुपाने के उपाय करेंगे ताकि उसे कोई चोरी कर के न ले जाए जबकि आप भली भांति जानते हैं कि इस धन को कोई आज तक अपने साथ नहीं ले जा सकता। धन मौत के भय का कारण बनता है जिससे जिन्दगी तनावपूर्ण हो जाती है। भय के कारण आदमी का शरीर पीला पड़ जाता है तथा प्रत्येक वस्तु में उसे मौत की गन्ध आने लगती है। इसी भय के कारण आदमी की जिन्दगी रसविहीन हो जाती है।

तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

प्रत्येक मत के अनुयायियों ने आदमी के मन को काबू करने की बात कही है। इस मन को काबू करने के लिए तरह-तरह के योगासनों के अंगों को करवाने के लिए अपने अपने ढंग इन मतवालों ने निकाल लिए हैं। अब तो इन मतों के गुरुओं के आश्रमों में हजारों की संख्या में लोग जा कर अपने जीवन को संवारने एवं मन पर काबू पाने के उपाय करते हैं। इसमें कितने सफल हो पाये हैं नहीं कहा जा सकता परन्तु यह सच है कि असफलता को छूने वालों की कतारें जरूर दिन प्रतिदिन लम्बी होती चली जा रही है। दूसरी तरफ वेद कहता है कि मन को काबू करना ही नहीं। आदमी को अपनी इच्छाओं को समाप्त नहीं करना चाहिए बल्कि इच्छाओं की गति को ठीक दिशा की ओर मोड़ देना है। इन तृष्णाओं को शिव संकल्प का रास्ता दिखाना है ताकि ये सारी इच्छायें आदमी के कल्याण के लिए हों। विनाश लाने वाली सारी कामनाओं को समाप्त करना है। यह तरीका सिर्फ वेद ही बतलाता है अन्य कोई मत वाला नहीं बतला सकता क्योंकि उनका पूरा ज्ञान उधार का ज्ञान है। बासी ज्ञान है। चुराया हुआ ज्ञान है। उन्होंने तो कुछ शब्दों का हेर फेर कर के इसको बनाया है जबकि वेद का ज्ञान तरोताजा है प्रत्येक युग में एक जैसा ज्ञान है रत्ति भर भी इधर-उधर नहीं क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान चुराया हुआ ज्ञान नहीं होता। भगवान को किसी मनुष्य के ज्ञान की आवश्यकता नहीं है वह तो हम सभी को ज्ञान देता है। इसलिए हम सभी को चाहिए कि हम अपनी-अपनी वासनाओं को इन्द्रियों तक ही सीमित न रहने दें बल्कि उसे जन कल्याण के कार्य में लगावें जिससे यह धरती स्वर्गमयी हो सके तथा ज्ञान पर पड़ा हुआ काम का पर्दा उठाया जा सके।

सम्पादकीय.....

पंजाब में वेद प्रचार के महत्वपूर्ण निर्णय

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के प्रधान, मन्त्री व कोषाध्यक्षों की एक बैठक 4-8-2002 को सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर में सभा प्रधान श्री हरबंस लाल जी शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें पंजाब की लगभग सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने भाग लिया और कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। प्रात: 9.30 बजे सभी आए हुए सभा अधिकारियों व आर्य समाजों के अधिकारियों ने यज्ञ किया। यज्ञ के पश्चात् बडे हाल में कार्यवाही आरम्भ हुई। इस अवसर पर सर्व प्रथम सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी ने बैठक बुलाने का उद्देश्य प्रकट करते हुए बताया कि हम पंजाब में वेद प्रचार के कार्य को बढ़ाना चाहते हैं। इसमें सभी आर्य समाजों के अधिकारियों का सहयोग आवश्यक है। इसके लिए प्रत्येक आर्य समाज में उत्सव व सम्मेलन हों, फिर जिला सम्मेलन हों और इसके बाद पंजाब स्तर का सम्मेलन हो इसके लिए रूप रेखा तैयार की जाए।

श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा रजिस्ट्रार ने स्कूल कालेजों में वेद प्रचार करने पर बल दिया और कहा प्रत्येक स्कूल, कालेज को स्थानीय आर्य समाज को वेद प्रचार के कार्य में पूरा सहयोग देना चाहिए। प्रत्येक स्कूल, कालेज में साप्ताहिक व मासिक यज्ञ किए जाएं। हम सभा के उपदेशक स्कूल, कालेजो में भेजेंगे उनसे बच्चों में उपदेश करवाया जाए। बच्चों को आर्य समाज की विचारधारा से ओत्-प्रोत किया जाए। युवकों को आगे लाया जाए उन्हे आर्य समाज से जोड़ा जाए। श्री सुदर्शन शर्मा सभा वरिष्ठ उपप्रधान, चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट सभा उप प्रधान, श्री आशानन्द जी आर्य सभा उप प्रधान, श्री प्रेम भारद्वाज सभा कोषाध्यक्ष, श्रीमती राजेश शर्मा सभा मन्त्री, श्री रामरत्न जी महाजन अधिष्ठाता वेद प्रचार, श्री प्रेम भाटिया जी सभा मन्त्री तथा अन्य अधिकारियों ने वेद प्रचार के लिए योजनाएं सभी आर्य समाजों के अधिकारियों के सामने रखी।

आर्य समाजों से पधारे हुए अधिकारियों श्री मनोहर लाल जी (तलवाड़ा) श्रीमती जनकरानी आर्या (लुधियाना) श्री कमल किशोर जी (जालन्धर) श्री प्रियतम देव (मोगा) श्री उत्तम कुमार आर्य (जीरा), श्री बनारसी दास आर्य (अमृतसर), श्री बुद्धराम आर्य (चण्डीगढ़), श्री रणजीत आर्य (जालन्धर), श्री वेद आर्य (जालन्धर), श्री सी. मारकण्डा (तपा), श्री ओम प्रकाश मगला (भठिण्डा), श्री कृष्णलाल जटाना (भठिण्डा), श्री गुरनाम दास (डेरा बाबा नानक), श्रीमती सन्तोष अम्बा (गुरदासपुर), श्री सोहन लाल सेठ (जालन्धर), श्रीमती राजरानी रत्ती (जालन्धर), श्री राम लुभाया नन्दा जालन्धर, श्री पं. मनोहर लाल जी आर्य (जालन्धर) तथा अन्य कई महानुभावों ने वेद प्रचार के लिए अपने-अपने सुझाव दिए। समयाभाव के कारण कई महानुभाव अपने विचार नहीं रख सके प्रात: 10.30 बजे से दोपहर 2.30 बजे तक बैठक चलती रही।

इस अवसर पर वेद प्रचार के कार्य को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित निश्चय किए गए।

1. प्रत्येक नगर की सभी आर्य समाजें अपने-अपने उत्सव बड़े समारोह मे करेंगी। इसके पश्चात् जिला स्तर पर एक सम्मेलन पंजाब के प्रत्येक जिले में किया जाएगा, उसमें सभा अधिकारी भी सम्मलित होंगे। उसके पश्चात् पंजाब स्तर पर किसी एक नगर में प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन किया जाएगा।

2. प्रत्येक आर्य समाज अपनी चार दिवारी से बाहर निकल कर पारिवारिक सत्संग करेगी । जन-सम्पर्क के लिए प्रयास किया जाएगा। समाज कल्याण के कार्यों की ओर विशेष ध्यान दिया जाएगा । आम जनता में व ग्रामों में भी वेद प्रचार किया जाएगा।

3. छोटे कस्बों की आर्य समाजे को बड़े शहरों की आर्य समाजों के साथ जोड़ा जाएगा, बन्द पड़ी आर्य समाजों को खोला जाएगा।

4. आर्य समाज का प्रचार मीडिया से भी किया जाएगा। आज कल मीडिया का युग है इसलिए टेलीविजन, इन्टरनैट व समाचार पत्रों के द्वारा भी आर्य समाज का सन्देश घर-घर तक पहुंचाया जाएगा।

5. सभा से सम्बन्धित स्कूल-कालेजों में वेद प्रचार के लिए सभा के उपदेशक भेजे जाएंगे और सप्ताह में एक बार या महीने में एक बार प्रत्येक स्कूल-कालेज में यज्ञ व उपदेश का कार्यक्रम रखा जाएगा। बच्चों में धार्मिक व देश भक्ति की भावनाएं पैदा की जाएंगी।

6. सभा से सम्बन्धित प्रत्येक स्कूल-कालेज के मुख्य द्वार पर ओ३म् का ध्वज लगाया जाएगा। प्रत्येक आर्य समाज पर ओ३म् का ध्वज लगाना आवश्यक है। प्रत्येक स्कूल-कालेज में आर्य समाज के नियम दीवारों पर लिखवाए जाएंगे।

7. गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार में आर्य समाजो के अधिकारियों का एक शिविर लगाया जाएगा जिसमे आर्य सिद्धान्तों के साथ-साथ यज्ञ का महत्व बताया जाएगा, आध्यात्मिक शिक्षा व जीवन निर्माण की शिक्षा तथा पर्यावरण व स्वास्थ्य सम्बन्धी पूरी जानकारी दी जाएगी। यह शिविर एक से अधिक भी हो सकते हैं।

8. आर्य समाजों में युवकों को आगे लाया जाएगा, आर्य वीर दल व युवक सभाओं की शाखाएं सभी जगह खोली जाएंगी। आर्य समाज मे नौजवान पीढ़ी को तैयार किया जाएगा।

9. सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ व उत्सव किए जाएं, स्थान-स्थान पर बड़े-बड़े यज्ञो का आयोजन किया जाएगा।

यह बैठक बहुत ही महत्वपूर्ण रही सभी कार्यकर्त्ताओ ने अपने-अपने क्षेत्र में आर्य समाज का कार्य करने का संकल्प लिया।

–धर्मदेव आर्य

15 अगस्त एक राष्ट्रीय पर्व

15 अगस्त 1947 को शताब्दियों से गुलाम हमारा देश स्वतन्त्र हुआ था। देश को आजाद करने के लिए देश भक्तों ने सिर-धड़ की बाजी लगा दी थी। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने भारत देश के लोगों ने हृदय में देश भक्ति की भावना जागृत की और उन्हें देश को आजाद कराने की प्रेरणा दी। उस समय का प्रत्येक क्रान्तिकारी आर्य समाज व महर्षि दयानन्द की देश भक्ति की विचारधारा से प्रभावित होकर आजादी के समर में कूद पड़ा था।

सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, असफाक उल्लाखां, राजेन्द्र लाहड़ी, चन्द्रशेखर आजाद, वीर सावरकर, लाला लाजपतराय और न जाने कितने देश भक्तों ने आर्य समाज से आजादी की प्रेरणा ली और देश की आजादी के लिए कार्य किया।

आज हमारे देश को आजाद हुए 55 वर्ष हो गए हैं। इन वर्षो में हमारे देश ने बहुत उन्नति की है जहां हमारे देश में सूई तक भी बाहर से बन कर आया करती थी वहां आज कोई ऐसी वस्तु नहीं रही जो हमारे देश में न बनती हो और यहां मे दूसरे देशों को निर्यात न होती हो। बड़े-बड़े कल कारखाने लगे हुए हैं, विज्ञान ने प्रत्येक क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है। हमारे देश के वैज्ञानिक आज दूसरे देशों के लोगों को ट्रेनिंग दे रहे हैं। हमारा देश हर दृष्टि से इन पिछले 55 वर्षो में बहुत आगे बढ़ा है। परन्तु इसके साथ ही देश में आतंकवाद में बढ़ा है। जो इस समय चरम सीमा पर है और जिससे देश की आजादी में खतरा पैदा होता जा रहा है। हमारा पड़ोसी देश पाकीस्तान हमारे देश के लिए नित नई-नई समस्याएं खड़ी करता जा रहा है। पिछले 10-15 वर्षो से लगातार आतंकवादियों को भारत भेज रहा है और वह भारत में आकर आतंक फैला रहे हैं। निर्दोष लोगों की हत्याएं कर रहे हैं। इन आतंकवादियों ने गत दिनों भारत के संसद भवन पर भी हमला कर दिया। जम्मू-काश्मीर में लगातार हत्याएं हो रही हैं शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता होगा जिस दिन आतंकवादी कोई न कोई हत्याकाण्ड नहीं करते। एक से एक बढ़ कर हत्याकाण्ड किए जा रहे हैं। सेना के नौजवान भी मारे जा रहे हैं, पुलिस के सिपाही भी मारे जा रहे हैं, आम जनता जो निर्दोष है प्रतिदिन मारी जा रही है। अभी-अभी अमरनाथ यात्रियों पर आतंकवादियों ने गोलियों की बौछार कर दी है जिससे 9 यात्रियों की मृत्यु हो गई और लगभग 30 व्यक्ति घायल हो गए हैं। देश के नेता भी ब्यान दे देते हैं कि आतंकवादियों को बख्शा नहीं जाएगा परन्तु फिर भी आतंकी निरन्तर वारदातें कर रहे हैं, अभी तक इस दिशा में सरकार की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। जम्मू-काश्मीर में आतंकवाद को रोकना आवश्यक है।

इसलिए 15 अगस्त को प्रत्येक भारतवासी को व्रत लेना चाहिए कि वह देश की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए तैयार रहेगा और देश द्रोहियों से हमें सावधान रहना चाहिए। आज आवश्यकता है देश भक्त [illegible] के लिए कार्य करें। [illegible] र्य

सरल-सुखी जीवन

☐ ले० श्री भद्रसेन, बी-2, 92/7 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर-146001

(गतांक से आगे)

जहां तक यज्ञ, बलि की बात है, वह कर्मकाण्ड का ऐसा रूप है, जिस के न करने से कोई कार्य सकता नहीं। अत: यह हिंसा किसी रुप में भी आवश्यक नहीं है। इस के साथ वेद आदि शास्त्रों में यज्ञ में की जाने वाली हिंसा का स्पष्ट निषेध मिलता है तथा इसी लिए यज्ञ को अध्वर=हिसा रहित कर्म कहा जाता है। संसार में दोनों प्रकार के व्यक्ति मिलते हैं। अत: यज्ञ की मूलभावना से बलि का कोई सम्बन्ध न होने पर भी कुछ व्यक्तियों ने अपनी जिह्वा के स्वाद के लिए ऐसे विधानों को प्रचलित कर दिया है। यह अधिकतर तान्त्रिक प्रक्रिया के कारण ही यज्ञ से आकर जुड़ गया है, अन्यथा यज्ञ हिंसा के बिना बड़े सुन्दर ढंग से हो सकता है। अत: यज्ञ आदि धार्मिक कर्म काण्ड के लिए हिंसा अनिवार्य नहीं है।

हा, अहिंसा का मूलभाव है-दूसरों से वैर न रखना, उनको हानि न पहुंचाना। महर्षि दयानन्द ने अनेकत्र (3, 49, 50) 'निर्वैर, वैरत्याग, वैर बुद्धि छोड़के' अर्थ अहिंसा का दर्शाया है।

23-ब्रह्मचर्य (संयम)

यमों में अहिंसा के पश्चात् सत्य और अस्तेय का क्रम है, जिनके सम्बन्ध मे पूर्व चर्चा हो चुकी है। ब्रह्मचर्य के प्रकरण के अनुसार अनेक अर्थ हैं, वहां इस प्रकरण में शरीर विज्ञान के अनुसार शाब्दिक अर्थ-वीर्य रक्षा से है। क्योंकि किसी द्वारा खाए गए भोजन मे रस, रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि, मेद और वीर्य के रुप में क्रमश: ये सात धातुए बनती हैं। अत: इस अन्तिम धातु की विशेष रुप से बैंक के कोष की तरह विशेष सावधानी से रक्षा अपेक्षित है। जिससे शक्ति स्थायी रह सके। अत: ब्रह्मचर्य का यहा अभिप्राय है-संयम, सदाचार, क्योंकि मानसिक तथा इन्द्रियों के संयम, सदाचार से ही वीर्य रक्षा सम्भव होती हैं।

गृहस्थ आश्रम मे इस के सयम अर्थ को सामने रख कर ही, तो कहा जाता है-'एक नारी सदा ब्रह्मचारी।' आज की बदलती परिस्थितियों में यह बात बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। दम्पति का परस्पर इस दृष्टि से सच्चा-सुच्चा रहना ही उनका ब्रह्मचर्य है और यह बात पति-पत्नी का परम धर्म है, कि आजीवन एक-दूसरे को हर कार्य में विश्वास में लेकर चलें अर्थात कभी न एक दूसरे से छिपा कर, धोखे में रखकर कोई कार्य न करें। इसी को परस्पर का अव्यभिचार कहा जा सकता है, व्यभिचार न करना ही अव्यभिचार है और व्यभिचार का अर्थ है-एक जगह न टिकना, प्रस्तुत प्रसंग में इस का भाव है-एक ठिकाना न रखना। दाम्पत्य जीवन की अन्य सब बातें गौण, छोटे धर्म हैं। भारतीय भावना के अनुसार दाम्पत्य जीवन की सफलता, शुचिता की यही विशेष कसौटी है। अतएव भारतीय शास्त्र इस ओर विशेष ध्यान आकर्षित करते हैं क्योंकि-जैसे यथारूचि भोजन खाने पर उससे अधिक रुचिकर भी बाद में और भोजन सामने आ सकता है। तब किसी सीमा पर स्वास्थ्य की दृष्टि से सन्तोष करना आवश्यक हो जाता है। ऐसे ही किसी से विवाह कर लेने पर परस्पर सन्तुष्टि, शुचिता का पालन, तृप्ति की अनुभूति सांझे वैवाहिक जीवन की सफलता के लिए बहुत जरूरी है ओर तभी सामाजिक मर्यादा, व्यवस्था चल सकती है। अत: परस्पर एक-दूसरे से सन्तोष ही अधिक सुखकर हो सकता है, 'स्व पत्नी से रति-62: और स्वपत्नी से ही जिन का हैं सब भान्ति पूर्ण सन्तोष' 106

श्री गोपाल दास गुप्तकृत नीतिशतक का भावनुवाद 'जो अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और ऋतुगामी होता है वह गृहस्थ भी ब्रह्मचारी के सदृश है'-सत्यार्थ-4, 88 वसे अतृप्ति, असन्तोष की कोई मीमा नहीं। अन्यत्र की भावना-अविश्वास, पतन का ही कारण बनती है। इसी दृष्टि से ही नीतिकार भर्तृहरि ने सजग करते हुए कहा है कि मन को संभालने के लिए पर नारियों की ऐसी चर्चा से बचें, ऐसी चर्चा का रसिक न बनें, अन्यथा विचारों में अस्थिरता आती है और वह फिर डांवां डोल होने का कारण बनती है। हां, ऐसी भावना से ही-'स्मरण कीर्तन केलि:-पद्य में आठ प्रकार के प्रसंगों से संभलने के लिए ब्रह्मचारी को सावधान किया गया है अर्थात काम वासना के चिन्तन से दूर रहे।'

24-अपरिग्रह

योग दर्शन के भाष्यों में अपरिग्रह का विवेचन करते हुए लिखा है, कि विषयों के दोषों के ध्यान में रखते हुए विषयों और भागों के साधनों को स्वीकार नहीं करना चाहिए। परिग्रह के अभाव को अपरिग्रह कहते हैं। आज की प्रचलित दृष्टि से इस का अभिप्राय है कि अपने हक, आवश्यकता से अधिक चीजों का संग्रह न करना। कुछ व्यक्ति अधिक बुद्धिमान, विशेषज्ञ, मेहनती, सूझ-बूझ वाले होने से या पूर्वजों की सम्पत्ति के बल पर या परिचय, चालाकी के कारण अधिक संग्रह कर लेते हैं। जिस से दूसरों को अर्जन का अवसर कम प्राप्त होता है। अत: सामाजिकता का ध्यान रखते हुए स्व अपेक्षित का ही संग्रह करना, उससे अधिक का संग्रह न करना ही अपरिग्रह है। ऐसी स्थिति को स्पष्ट करते हुए ही कहा जाता है-

'सांई इतना दीजिए, जा में कुटुम्ब समाए।
मैं भी भूखा न रहूं, साध न भूखा जाए॥'

अपरिग्रह के व्यापक अर्थ की दृष्टि से देखा जाए, तो उच्चाधिकारी, धनवान, रुपवान, युवा होने के कारण दूसरों के गृहस्थ जीवन में अड़चन डालना, दूसरों के धन, पारिश्रमिक, सुविधाओं को छीनना भी परिग्रह है। अत: इस प्रकार के लालच से बचना चाहिए। अपरिग्रह के पूर्ण पालन के लिए किसी भी ढंग से दूसरों के अधिकारों, अवसरों, पारस्परिक सम्बन्धों और वस्तुओं को छीनने का किसी प्रकार का प्रयास न करें। ॥इति॥

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना का उत्सव

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना की एक प्रसिद्ध आर्य समाज है जिसके प्रधान प्रसिद्ध व कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री आशानन्द जी आर्य हैं। इस आर्य समाज का उत्सव 8 से 11 अगस्त 2002 तक मनाया जा रहा है जिसमें स्वामी कर्त्तव्यानन्द जी के उपदेश होंगे। श्री सुदर्शन कुमार शर्मा सभा वरिष्ठ उप प्रधान मुख्यातिथि होंगे। श्री सरदारी लाल जी सभा उपप्रधान, प्रिं. स्वतंत्र कुमार जी सभा महामन्त्री, श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा सभा रजिस्ट्रार, श्री प्रेम भारद्वाज सभा कोषाध्यक्ष, श्री विजय कुमार शास्त्री, के प्रवचन होंगे। श्री वेद भूषण मदान ध्वजारोहण करेंगे। इन महानुभावों के अतिरिक्त और भी कई आर्य नेता पधार रहे हैं।

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना की तरफ से 11-8-2002 को पारिवारिक सत्संग श्री हरिओम अरोड़ा एडवोकेट इन्कम टैक्स के-91 सराभा नगर, ऊषा पैलेस के पीछे सायं 5.30 से 7.30 बजे तक होगा।

वार्षिक चुनाव

दिनांक 31-7-2002 को आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल के अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश जी की अध्यक्षता में समाज का वार्षिक निर्वाचन सन् 2002 03 निम्नवत्त सम्पन्न हुआ:-

संरक्षक:-श्री चन्द्रमणी जी सेरा भल्ला। प्रधान-श्री बच्ची राम जी, आर्य अरकण्डाई, उपप्रधान-श्री खुमहाल सिंह सेरा भल्ला, मंत्री-वासुदेव विमल, उपमंत्री-सोहनसिंह शाह, कोषाध्यक्ष मोती लाल आर्य स्यैंसी, निरीक्षक-बाजमसिंह आर्य मासौ, पुस्तकाध्यक्ष:-सुशीवचद अध्यापक, पुरोहित-चन्द्रप्रकाश गुणमोली।

-मंत्री

प्रवेश आरम्भ

निशुल्क राष्ट्रीय वैदिक भजनोपदेशक महर्षि विद्यालय निकट रेलवे स्टेशन उमरा रोड हांसी (हरियाणा) में प्रवेश आरम्भ है। इसी स्थान पर अनाथालय भी खोला गया है। सम्पर्क करें।

-रामसुफल शास्त्री, लाल सड़क हांसी

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में एक दिन

❑ ले० सी. मारकण्डा (तपा)

(गतांक से आगे)

सभी समस्याओं का मिल बैठ कर समाधान निकाला जा सकता है आपस में झगड़ कर नहीं। श्री स्वतंत्र जी ने कहा कि मैं सभी की भावनाओं को ठीक तरह से जान रहा हूं। मैं कोशिश करूंगा कि आपकी आशाओं के मुताबिक ठीक तरह से काम कर सकूं। जिन लोगों ने अपनी संतान तथा सम्पत्ति को भी इस संस्था पर लगा दिया था अब हम इस संस्था की रक्षा के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे। प्रभावशाली भाषण श्री स्वतंत्र जी के अच्छे शिक्षा शास्त्री होने का प्रमाण दे रहा था। मैं बार-बार सोच रहा था कि मुझ जैसे लोग अगर इन अदबी लोगों के बीच बोलते तो जरूर जलूस निकल जाता।

गर्मी का प्रकोप बना हुआ था। समारोह रोचक होने के कारण कोई ऊबा तक नहीं; न ही वहां से कोई उठ कर बाहर गया था। गर्मी में प्यास तो लगनी ही थी परन्तु ठंडा जल साथ-साथ ही पिलाया जा रहा था। शांति पाठ हुआ और बाद में डूनों में प्रसाद वितरित किया गया। नई भूमि पर नये स्वप्न आंखों में समाये जीवन में पूरी तरह खुश और मुस्कराता चेहरा लिए सफेद पायजामे तथा नसवारी रंग के कुर्ते में नये कुलपति प्रिं. स्वतंत्र कुमार गुलाब के फूल की तरह पूरे खिले हुए लग रहे थे। खुदा द्वारा यौवन देने की तरह उनमें नजाकत भी आई लगती थी। कुलपति पर जैसे पुनः जवानी आ गई हो। मैंने श्री स्वतंत्र कुमार जी से प्रार्थना की कि मैं आपके जन सम्पर्क अधिकारी से मिलना चाहता हूं। उन्होंने संकेत से श्री करतार सिंह को बुलाया जिसने कहीं से ढूंढ कर डा प्रदीप कुमार जोशी को मुझसे मिलाया। मैंने अपना परिचय दिया तो वह बहुत खुश हुए। वह मुझे और मेरे साथ आये मुख्य-अध्यापक सुरेन्द्र शर्मा को अपने संग अपने कार्यालय में ले गए। यहां पर हमारा भव्य स्वागत हुआ। मैं विश्व विद्यालय के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। उन्होंने मुझे बताया कि यह 4 मार्च 1902 में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गंगा के पावन तट पर कांगड़ी नामक ग्राम में राष्ट्र निर्माण की एक ऐसी सुदृढ़ आधारशिला रखी जो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के प्रचार एवं प्रसार के लिए तब से अब तक अपनी गौरवशाली भूमिका निभा रही है। उन्होंने इस विश्व-विद्यालय के विभागों, इससे सम्बन्धित महा विद्यालयों, विश्व विद्यालय के अधिकारियों तथा अन्य पाठ्य क्रमों की जानकारी दी। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के बारे में छपा लिट्रेचर भी भेंट किया। जो मेरी जानकारी में और इजाफा करेगा। डा. प्रदीप जोशी अच्छे मिलनसार व्यक्तित्व के मालिक हैं। हमने उन्हें बताया कि हम अतिथि गृह में ठहरे हुए हैं तो उन्होंने कहा कि मैं सायं आपसे जरूर मिलूंगा और बैठकर बातें करेंगे। हम उनसे विदा लेकर अपने कमरे में आ गए।

कुछ देर के लिए आराम किया। शरीर की थकावट दूर हुई। दोपहर का भोजन तैयार था। साथ ही समारोह में शामिल होने वाले सभी अतिथि भोजन के लिए निमन्त्रित थे। हम भी रवाना होने के लिए भोजन की मेज पर पहुंच गए और वह लोग जिन्हें हम पहले जानते भी नहीं थे से मिल कर प्रसन्न हुए। हमारी दोस्ती का दायरा बढ़ता जा रहा था। श्री वेदव्रत जी, कुलपति श्री स्वतंत्र जी, प्रेम भारद्वाज जी आदि खाना भी खाते रहे और बाहर से आए हुए महानुभावों के साथ विचार-विमर्श भी करते रहे।

दरअसल यहां पहुंच कर मेरे मन की अभिलाषा उत्तेजित हो रही थी कि इस यूनिवर्सिटी को घूम फिर कर अच्छी तरह से देखा जाए। फिर पता चला कि शिक्षा स्तर तो आज से शुरू हुआ है। छात्र अभी आने शुरू होने हैं और सभी विभाग बंद पड़े होंगे। केवल इमारतों को देखने का क्या लाभ। मैं चाहता था एक दो-दिन और रुका जाए तथा हर तरह की सूचना तथा विश्व विद्यालय का काम काज देखा और समझा जाए। परन्तु मुख्य-अध्यापक सुरेन्द्र शर्मा वापिस जाने का अनुरोध कर रहे थे। वह इतने दिन स्कूल से दूर नहीं रहना चाहते थे। हम पुनः अपने कमरे में आकर लेट गए। सायं डा. प्रदीप जोशी जी ने ही हमें आकर जगाया। उन्होंने आज के समारोह का हिन्दी भाषा में कम्प्यूटर द्वारा प्रिंट किया प्रैस नोट तथा फोटो दिये जो मैंने पंजाब के समाचार पत्रों में प्रकाशित करवाने हेतु रख लिए। डा. प्रदीप जोशी ने बताया कि जब आप कुलपति के साथ बैठे थे तो लोगों को ताज्जुब हुआ कि पंजाब से एक सिख हमारे बीच में कैसे आ गया और जब आप हवन में बैठे मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे तो वह और भी हैरान हुए। श्री सुरेन्द्र झटपट कहने लगे कि देखने में सिख लगते हैं वैसे वह ब्राह्मण परिवार में जन्मे हैं। विश्वविद्यालय, यहां की शिक्षा पद्धति, लड़ाई-झगड़े तथा अन्य अनेक विषयों पर बातें करने के उपरांत वह अपने साथ सम्पर्क बनाये रखने का विनय करते हुए चले गए।

शाम के पांच बज चुके थे। हम यह निर्णय न कर पाये कि आज शाम को हरिद्वार-जोधपुर जाने वाली गाड़ी जो 7-15 पर हरिद्वार से रवाना होती है के द्वारा चला जाए अथवा अगले रोज दिन के समय 2-20 पर दोपहर को चलने वाली हरिद्वार-बठिंडा एक्सप्रैस द्वारा जाया जाए। हम अभी यह भी तय नहीं कर पाये थे कि अतिथि गृह का कर्मचारी हमें दो कप गर्म-गर्म चाय मेज पर रख चलता बना। नहाने के उपरांत हमने अपना सारा फालतू सामान तथा उतारे गए कपड़े अपने अटैची केसों में संभाल लिए थे। अगर रात वाली गाड़ी से जाना पड़ा तो हम तुरन्त जा सकते थे।

बाहर बरामदे में जाकर कुर्सियों पर बैठ गए यहां पहले से ही श्री सरदारी लाल जी जालन्धर वाले तथा श्री अशोक भल्ला अन्य महानुभाव बैठे गप्प-शप्प लगा रहे थे। उन्होंने हमारे तथा अपने लिए चाय लाने को सीनेट हाल के कर्मचारियों से कह रखा था। वर्तमान आर्य समाजें तो पंजाब में सक्रिय थीं, के बारे में बातें होती रहीं। हमारा ध्यान इन बातों से उखड़ कर तपा जाने के लिए व्याकुल हो रहा था। मैंने मुख्य अध्यापक जी से कहा कि वी.सी. साहिब के घर चलते हैं। वहां देवेन्द्र नाथ जी तथा प्रेम भारद्वाज जी भी ठहरे हुए हैं। उनसे रुख्सत लेकर तथा श्री स्वतंत्र जी का धन्यवाद करके चलते हैं। वहां पहुंचे, घर में सेवादार था। उन्होंने बड़े आदर से हमें सोफे पर बिठाया। घर खूब सजा हुआ था। दीवार पर स्वामी दयानन्द जी का चित्र इस हाल नुमा कमरे की खूबसूरती में और बढ़ौतरी कर रहा था। कुछ देर में ही श्री देवेन्द्र नाथ जी तथा प्रेम भारद्वाज जी जो कमरे में आराम फरमा रहे थे, आ गए और हमारा हाल-चाल पूछा।

पंजाब जैसी ही उत्तरांचल राज्य की स्थिति बनी हुई थी। पंजाब की तरह इस प्रांत में भी सूखे का प्रकोप चल रहा था। इधर भी वर्षा नहीं हो पाई थी। सावन का मास शुरू हो चुका था वर्षा न होने तथा और गर्मी के कारण लोग ही नहीं पशु-पक्षी तथा वनस्पति भी प्रभावित थे। गर्मी कमरे में महसूस हो रही थी। अब तक कुलपति प्रिंसीपल स्वतंत्र कुमार जी भी हमारे बीच आ कर बैठ गए। अपने सेवादार को कोठी की पिछली तरफ बने लॉन में कुर्सियां लगाने तथा चाय लाने के आदेश दे दिए थे। हम पीछे जाकर बैठे। यहां कमरे से अधिक सुख था। हवा चल रही थी। चाय आ गई। हमने वापिस जाने की आज्ञा मांगी तो देवेन्द्र नाथ जी ने झट कहा कि आज की रात ठहरो हम सभी गंगा घाट जो वी.आई.पी यात्रियों के लिए बना हुआ है पर नहा कर आते हैं। उन्होंने श्री सरदारी लाल तथा श्री अशोक भल्ला जी को भी यहां बुला लिया था। हमने कहा कि हम आज ही शाम वाली गाड़ी से जाना चाहते हैं। हमने दलील दी कि दिन के समय गर्मी ज्यादा होगी और रात तो शीतल रहेगी और यात्रा सुखद बनेगी।

इस समय सायं के छः बज चुके थे। जब उन्होंने जाना कि हम रुकने वाले नहीं तो इन आर्य नेताओं ने भी हमारा जाना ठीक समझा। कुलपति ने अपनी गाड़ी के चालक को आदेश दिया कि वह हमें आराम से रेलवे स्टेशन पर छोड़ आये तथा सुचेत किया कि रास्ते में इन्हें कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए। हम सभी को नमस्ते कर गाड़ी में बैठ अतिथि गृह में पहुंचे। अपने सूटकेस उठाए और रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़े।

ड्राईवर हमें रेलवे स्टेशन के मुख्य प्रवेश द्वार पर छोड़ हमारी आज्ञा लेकर वापिस चल पड़ा। टिकट खरीदने तथा अन्य खर्च की सब जिम्मेदारी श्री सुरेन्द्र ने ही ले रखी थी। वह ही कल से स्वयं खर्च कर रहा था। तपा जाकर ही हिसाब किताब करना ठीक समझा। टिकट खिड़की पर भीड़ थी। खिड़की की ओर जाते देख कर हमें एक कुली ने कहा कि आपको सोने के लिए मैं स्लीपर दिला सकता हूं। सुरेन्द्र ने कहा कि हम तो पत्रकार हैं स्वयं ही स्लीपर में सीट हासिल कर लेंगे तो वह चलता बना। टिकट खिड़की से दो टिकटें लेकर प्लेट फार्म नं.3 की ओर चल पड़े। 7 बज चुके थे। गाड़ी खड़ी थी। लोग कब के डिब्बों में बैठ कर सीटें रोके बैठे हुए थे। एक जनरल कम्पार्टमैंट में हम भी घुस गए । इसमें ज्यादातर औरतें बच्चे तथा मर्द थे जो राजस्थान प्रांत के लगते थे। हमें खाली सीटों पर भी कोई बैठने नहीं दे रहा था। औरतें पूरी की पूरी सीटें लेकर अपने पांव पसार कर लेट रही थीं। राजस्थान रह रहे एक सिख सरदार ने जो हरिद्वार में फूल पाने आया था ने हमें बैठने के लिए आग्रह किया । यहां जगह थी हम दोनों एक तीन यात्रियों वाली सीट पर बैठ गए।

चलो अच्छा हुआ जगह मिल गई। हम आराम से यहां बैठ सकते थे। सीट पर तीन लोगों के बैठने की व्यवस्था थी। एक पहले ही जो सिख सरदार का साथी यहां पर बैठा हुआ था। गाड़ी चलने में अभी 15 मिंट बाकी थे। अभी भी यात्री बैठने के लिए जगह की तलाश कर रहे थे। ज्यादातर यात्री डिब्बे की खिड़की में ही खड़े थे। सामान तथा खाने-पीने की चीजें बेचने वालों ने अपना राम रौला मचा रखा था। गाड़ी चली तो जाकर कहीं मन को चैन आया।

उदगीथ साधना स्थली की आवाज़

गत वर्षो की तरह इस वर्ष भी आचार्य आर्य नरेश की देख रेख मे उदगीथ साधना स्थली, ओमवन, महर्षि दयानन्द मार्ग, राजगढ (हिमाचल) मे 15 मई से 15 जून तक साधना शिविर लगाये गये। ये शिविर अपने आप मे अनूठे थे ओर वहा पर गुजारा हुआ एक एक दिन और एक-एक पल भारतीय सस्कृति और वेद मार्ग का परिचायक था। सिरमौर जिला को डोहर ग्राम मे जैसे आर्य संस्कृति प्रखर रूप मे ऋषियों मुनियों के मुखारविन्द से निकलकर शिविरार्थियो के कानों में रसावसादन करती हुई और उनके हृदयों को पावन करती हुई उनके दिलो-दिमाग पर छा रही हो। भला ऐसे माहौल से लौटकर कौन नहीं इस अनन्य भेंट को दर्शकों के साथ बाटना चाहेगा। सचमुच ऐसे शिविर जीवन को सार्थक बनाने में सहायक होते हैं विशेपकर जबकि आज का जीवन संतप्त और नीरस बन कर रह गया है। जैसे हर कलाकृति के पीछे किसी कलाकार का हाथ होता है वैसे ही मन में सजोई गई इस आकृति के पीछे हाथ रहा है आचार्य आर्यनरेश जी का जोकि इस समय लगभग अकेले ही अपने ढंग से संसार भर में आर्य विचारों का विशेप प्रचार करने और आर्य जगत को झझोडने में लगे हुए हैं जबकि बहुधा आर्य कहलवाने वाले आर्य बन्धु या तो अपनी-अपनी ढफली बजाने में लगे हुए है या एक दूसरे का मुंह ताक रहे हैं। कहते हैं कि जब रोम जल रहा था तो वहां का नरेश नीरो अपनी बेसुरी तान बजा रहा था। वहीं आज हमारी हालत भी ऐसी तो नहीं हो गई है औ· क्या हम उल्टी गिनती शुरू होने से पहले इस कुम्भकरणी नींद को छोड़ सकेंगे या नहीं। इसका उत्तर समय की चादर में लिप्त है पर इस समय कम से कम हम तथ्यों पर दृष्टिपात तो कर सकते हैं।

दैनिक योगासन मन्ध्या, हवन यज्ञ के अतिरिक्त वेद पाठ, शंका समाधान, स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान और देश प्यार व बलिदान के भजन चारों ओर पहाड़ो से टकरा कर वापिस साधना स्थली मे गुंजान करते परन्तु देश के महानगरों व उपनगरों में यह मंगल ध्वनि वहां पहुंच पाती और यह तभी हो सकता है जब इन शिविरों में सैंकड़ों नहीं अपितु हजारों की संख्या में आर्य जन पहुंचें और आर्य विचारों के मसीहा बन देश के कोने-कोने और विश्व भर में वेद ज्ञान की ज्योति जला दें। यह विचारणीय बात है। राष्ट्र हित की भावना शिविर में जोर पकड़ गई थी। शहीद-ए-आज़म भगत सिंह जब छोटी आयु का था, उसने अपने चाचा सरदार अजीत सिंह से कहा था कि वे उसे एक बंदूक ला दें और वह उसे अपने खेतों में बो देगा। वास्तव में वह युग क्रान्तिकारियों का था और उस युग की फसल, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भाई परमानन्द, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, अशफाक अली खां, श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, लाला लाजपतराय, और अनेकों देश धर्म पर बलिदान होने वालों की थी और उसका बीज बोया था देव दयानन्द ने। आज कोई दयानन्दी नज़र नहीं आता और यदि कोई झलक दिखाई पड़ती भी है तो उसके साथ कोई सुर नहीं मिलाता। अधिकांश आर्य महानुभाव अपनी कुर्सी व पद को छोड़ नहीं सकते, फूल मालायें पहनते हैं और पहनाते हैं; उद्बोधनों से पहले फूल बरसाये जाते हैं, फिर प्रशंसा के पुल बांधे जाते हैं और आखिर में बात वहीं की वहीं रह जाती है। क्या यही था देव दयानन्द का सपना जिसे साकार करना तो एक ओर रहा, उस दिशा में अग्रसर होना भी दूर की बात है। खैर छोड़ो यह बात, आर्य समाजें चल रही हैं, पैसा इकट्ठा हो रहा है, पत्रिकाओं की होड़ सी लगी हुई है, क्या हुआ यदि आर्य जाति धरातल की ओर धसती जा रही है। इन्हीं विचारों को चर्चा का विषय बनता देख बहुत से शिविरार्थियों के मन में कसक पैदा हो जाती है। कौन जाने कोई सिरफिरा आर्य समाज में फिर से जान फूंक दे और देश व धर्म को नज़र आ रहे भयंकर खतरे से बचा ले।

प्रतिदिन, दोनों समय या कम से कम दिन में एक बार यज्ञ करना, व्यायाम व योगाभ्यास करना, वेद पाठ करना, स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चा करना और देश प्यार के गीत गाना शिविर की दिनचर्या होती है। प्राय: शिविर से लौटने के पश्चात् शिविर का भाव आता जाता है और फिर वही दिनचर्या, वही कोका, लिम्का, चाय, कॉफी, फास्ट फूट इत्यादि का दौर चल पड़ता है। पर जिसने अपने मन पर काबू पा लिया और अपने आप को बाहरी प्रलोभनों से बचा लिया, समझ लो, वह आम लोगों की भीड़ से अलग होकर वेद मार्ग पर चल पड़ा। शिविरों में यही विचार मन में घर कर जाते हैं और चिंतन का विषय बन जाते हैं। यही नहीं, शरीर त्यागने पर आत्मा के साथ मन भी दूसरे शरीर में प्रविष्ट होता है और इस प्रकार व्यक्ति अपनी मन रूपी निधि को सांसारिक बन्धनों से स्वतन्त्र रख सकता है। शिविर में परम पिता परमेश्वर में ध्यान लगाने पर बड़ा बल दिया गया। यम नियमों में ध्यान और धारणा को समाधि के लिए अथवा परमात्मा से तल्लीन हो जाने के लिए बहुत उपयोगी बताया। प्राय: देखा जाता है कि आर्य समाजों में हवन यज्ञ की समाप्ति पर और शान्ति पाठ से पूर्व ही यजमान, पुरोहितगण, और अन्य उपस्थित आर्य जन पात्रों, पुस्तकों व अन्य वस्तुओं को इकट्ठा करना शुरू कर देते हैं और इस प्रकार ध्यान में रुकावट आ जाती है। ध्यान धरने की प्रक्रिया है और हम जितना हो सके इन साप्ताहिक प्रक्रियाओं से आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

शिविर में वेद पाठ प्रतिदिन होता था और उच्चारण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। गलती हो जाने पर पाठ को बार-बार दोहराया जाता था। सुधार होता है प्रयत्न करने पर। मन्त्रों का अर्थ भी धीरे-धीरे सीखा जा सकता है। प्राय: देखा जाता है कि आर्य समाजों में वेद मन्त्रों के उच्चारण पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। पुरोहितगण भी देखी अनदेखी कर जाते हैं और इस प्रकार गलत उच्चारण होता रहता है। इसलिए इन शिविरों को लगाने का महत्व और भी बढ़ जाता है। अपने नगर या ग्राम से दूर इन शिविरों में समय रहता है कुछ सीखने का, अपनी बात वहां पर आये संयासी या महात्मा के सम्मुख रखने का और शंका समाधान का। अधिकांश पुरोहित अपनी रोटी रोज़ी में इतने व्यस्त रहते हैं कि उनके पास समय ही नहीं होता कि वे शिविर में दो-चार दिन रह कर कुछ सीख सकें। कुछ विद्वान पुरोहित तो इन शिविरों में शिविरार्थियों को सिखा भी सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि हम खोखला अहम त्याग कर लाभ प्राप्त करें और दूसरों को भी लाभ पहुचायें। यह एक अच्छा अवसर है कुछ सीखने का और सिखाने का। खेद इस बात का है अधिकांश आर्य समाजी बहुत बातें करते हैं पर करते-कराते कुछ नहीं। देश भर में सैंकड़ों आर्य समाजें बंद पड़ी हैं। गिने-चुने व्यक्ति हवन यज्ञ करने आते हैं और इस प्रकार कहने को कुछ समाजें चलती हैं। वेद प्रचार भी आर्य समाजों के परिसरों तक ही सीमित रह गया है। समय आ गया है कि आर्य विद्वान् लम्बे-लम्बे भाषणों व उद्बोधनों से थोड़ा परहेज करें और अपना एक कार्यक्षेत्र चुने ताकि वे अधिक से अधिक जनता के साथ सम्पर्क स्थापित कर सके और वेद मार्ग को दर्शा सकें। वेदों पर बड़ा कार्य हो चुका है, बड़ा कार्य हो रहा है परन्तु फिर भी वेद के विद्वानों पर जन साधारण को आकर्पित नहीं कर रहे। भिन्न-भिन्न भाषाओं में वेद उपलब्ध होने चाहिएं और विशेषकर अंग्रेजी में छप कर तैयार हो जाने चाहिएं। देव दयानन्द जैसी तड़प पैदा करनी होगी, स्वयं तपना होगा और फिर अन्य लोग जो प्रतीक्षा में हैं, साथ मिलेंगे और आर्य समाज आगे बढ़ेगा। आशा है, शिविरों में सीखी हुई ये बातें हमारे जीवन का अंग बन जाएंगी और जीवन के हर मोड़ पर, विकट परिस्थिति में हमारा मार्ग सुखद करेंगी।

इन शिविरों में आर्य जन एक दूसरे के निकट आते हैं और आपस में विचार विमर्श करते हैं। इस बार उद्गीथ साधना स्थली में आचार्य आर्य नरेश के अतिरिक्त परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती तथा डा. वेद प्रकाश प्राध्यापक हिन्दी विभाग, मेरठ कालेज, जो कि एक विशिष्ट भाष्यकार, सम्पादक एवं काव्य रूपान्तरकार हैं, विशेष रूप से शिविर को दिशा निर्देशित करते रहे। स्वामी जी ने अपने वेद युक्त उद्बोधनों के साथ-साथ रामायण और महाभारत में आ मिली या

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वृष्टि यज्ञ का आयोजन

यज्ञ वैदिक संस्कृति का आधार है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम और श्री कृष्ण जी भी यज्ञ करते थे। राम का तो जन्म ही पुत्रेष्टि यज्ञ से हुआ था।

हमारे देश में जब-जब वर्षा नहीं होती थी तो वृष्टि यज्ञ किए जाते थे। इस बार भी वर्षा नहीं हो रही है। पंजाब में पिछले कई वर्षों से वर्षा कम हो रही है। इस बार हमने विचार किया कि वृष्टि यज्ञ किए जाए। स्त्री आर्य समाज लारैंस रोड अमृतसर की ओर से 22-7-2002 से 28-7-2002 तक दोनों समय वृष्टि यज्ञ किया गया। 29-7-2002 को आर्य समाज अजनाला में दोनों समय यज्ञ हुआ। आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर में भी यज्ञ रखा गया। इसी प्रकार और स्थानो पर भी वृष्टि यज्ञ रखा जा रहा है। यदि पमुख आर्य समाजें मिल कर बड़े-बडे यज्ञ एक ही समय में करें तो इससे भरपूर वर्षा हो सकती है। जो यज्ञ हमने किए हैं इनके बाद वर्षा हुई है। कहीं कम तो कहीं अधिक परन्तु वर्षा अवश्य हुई। हम वृष्टि यज्ञ का प्रचार व प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक लोग यह यज्ञ करवाए। हमें सर्वहित के लिए यज्ञ करने चाहिएं। पंजाब के प्रत्येक नगर मे, ग्राम में यज्ञ होने चाहिएं।

–राम पथिक, वानप्रस्थी, आर्य समाज अजनाला (अमृतसर)

अमृतसर में चरित्र निर्माण शिविर

महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर में आर्य युवक परिषद अमृतसर की ओर से चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन 14-7-2002 रविवार को किया गया। जिसका शुभारम्भ बृहद् यज्ञ के साथ माता जगदीश आर्या (प्रधाना-आर्य महिला परिषद पंजाब) के ब्रह्मत्व में हुआ। यज्ञ के यजमान पदों को चार बालिकाओ कोमल, निधि, साक्षी एवं ऐश्वर्या ने सुशोभित किया। शिविर का शुभारम्भ श्री दर्शन कुमार जी (प्रधान-केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर) ने किया। आरती और सपना ने आकर्षक एव मधुर भजनों के माध्यम से वातावरण को श्रद्धामय बना दिया। इस अवसर पर ओम प्रकाश आर्य (अध्यक्ष-महर्षि दयानन्द धाम) ने सफल जीवन के लिए सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन अत्यंत आवश्यक बताया और आज 21वे चरित्र निर्माण शिविर में सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास पर विस्तार से चर्चा की गई। शिविर में भाग लेने वाले सभी आर्यो ने अपने-अपने प्रश्न रखे। जिसका कि समाधान श्री ओम प्रकाश आर्य ने किया।

राकेश पसाहन, रमेश शर्मा, विनोद मदान, गौरव, वन्दना पसाहन, कपिल, पंकज, कर्ण तथा कुनाल का विशेष सहयोग रहा।

–ब्र० ओम प्रकाश आर्य

उद्गीथ साधना.......

(पृष्ठ 6 का शेष)

मिलावट वाली प्रक्षिप्त बातों व घटनाओं का सुन्दर व रोचक ढंग से जिक्र किया। शिविरार्थियों में विशेष उत्सुकता व रुचि पाई गई। डा वेद प्रकाश वेद ने मन्त्रों पर आधारित अपने भजनों से शिविरार्थियों को खूब रीझाया। इसके अतिरिक्त उन्होने आयुर्वेद आचार्य के नाते तन, मन, बुद्धि और आत्मा की चार शक्तियों के ठीक संचालन के लिए आहार-विहार, विचार और व्यवहार को ठीक रखने हेतु अपने उद्बोधनों की झडी लगा दी और शिविरार्थियो ने आयुर्वेद के इस अमृतपान को अपनी-अपनी नोट बुकों में कैद कर लिया। आचार्य आर्य नरेश ने जो हर समय विराजमान रहते थे, शिविरार्थियों पर अपना विशेष प्रभाव छोड़ा और यही कारण है कि साधना स्थली में जो एक बार चला गया, बार-बार वहा जाने के लिए लालायित रहता है। इसलिए इन शिविरो का लगाना बहुत ही महत्वपूर्ण बन जाता है। आर्य प्रतिनिधि सभाओं का यह दायित्व बन जाता है कि वे अधिक से अधिक आर्य जनों को इन शिविरों में जाने के लिए प्रेरित करें। शिविरों में भजनों की वर्षा सुन्दर नगर से पधारी सुश्री हेमा आर्या ने की, जोकि खराब सेहत के बावजूद शिविरार्थियों को आध्यात्मिक खुराक देती रही।

आखिर में एक बात कहनी जरूरी हो जाती है कि आज के परिपेक्ष में यदि आर्य समाज को आगे बढ़ना है तो आर्य विद्वानों को सभासदों को और पदाधिकारियों को दूसरी पंक्ति मे चले जाना चाहिए और तब तक वही रह कर प्रतीक्षा करनी चाहिए जब तक सामान्य आर्य जन, आर्य विद्वानों के पद्चिन्हों पर चलते हुए प्रथम पंक्ति मे न आ जाये और फिर कदम से कदम मिला कर देश मे एक ऐसा सुर पैदा करें जिसे सुन कर लोग आर्य समाज को इसका खोया हुआ स्थान देने पर मजबूर हो जायें। यही थी उद्गीथ साधना स्थली ओम वन महर्षि दयानन्द मार्ग, राजगढ (हिमाचल) की आवाज, यही थी आचार्य आर्य नरेश की पुकार और यही थी वहा पर पहुचे शिविरार्थियो की ललकार॥

ऋषि दयानन्द का क्रान्तिकारी चिन्तन

❑ ले० डॉ० भवानी लाल भारतीय, 8/423 [illegible] जोधपुर

दीर्घकाल से मै ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं विचारों का अध्ययन कर रहा हू। इस अध्ययन का परिणाम मैंने यह निकाला है कि जिस युग में वे पैदा हुए थे, उनका चिन्तन और उनकी विचारधारा बहुत आगे की चीज थी। 19वीं शताब्दी में उन्होंने जो सोचा, विचारा तथा जिसका प्रतिपादन किया वैसा उनके समकालीन, समान धर्मी लोग भी नही कर पाये। यहां मैं उनके जीवन तथा लेखन मे कुछ ऐसे ही क्रान्तिकारी चिन्तन कण प्रस्तुत कर रहा हूं।

प्रह्लाद की हठधर्मी

सामान्यता यह माना जाता है कि हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद भगवान् विष्णु का परम भक्त था। जब उसका पिता बचपन मे उसे पढ़ने के लिए कहता ओर पाठशाला मे भेजता तो वह इसमे इन्कार कर देता। अपनी पट्टी पर अपना पाठ लिखने की अपेक्षा 'राम' नाम लिखता रहता। ऋषि की इस पर टिप्पणी देखें-'प्रह्लाद को उसका पिता पढ़ने के लिए भेजता था, क्या बुरा काम किया था ? और वह प्रह्लाद ऐसा मूर्ख, पढ़ना छोड़ वैरागी होना चाहता था।' स्वामी की दृष्टि में अध्ययन काल में मिथ्या गलदश्रु भक्ति का राग गाना अनुचित है।

महारानी कैकेयी के गुण को देखो

राम को वनवास दिलाने में कारण बनी कैकेयी की निन्दा तो सारा संसार करता है, किन्तु ऋषि ने कैकेयी देश की इस राज कन्या के एक गुण का उल्लेख किया। रानी कैकेयी को युद्ध विद्या के कुछ ऐसे गुर (Formula) मालूम थे जिनके कारण वे महाराजा दशरथ की युद्ध में सहायता कर सकीं। यह तभी सम्भव था जब नारी को पति के साथ युद्ध में जाने तक की आज्ञा समाज देता था। ऋषि लिखते हैं-"देखो, आर्यावर्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद अर्थात् युद्ध विद्या को भी अच्छी प्रकार जानती थीं क्योंकि जो न जानती होती तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यों कर जा सकतीं और युद्ध कर सकतीं।"

पति पत्नि को बराबर सम्मान दिया

मध्यकालीन धर्म ग्रन्थों ने पत्नि को पति परायणा होने का उपदेश तो सीमा मे बाहर जाकर भी दिया, तुलसीदास ने तो अंधे, बहरे और कोढ़ी पति की मनोयोग पूर्वक सेवा करने का आदेश दिया किन्तु पति एवं पत्नि को आचरण, सभ्यता, परस्पर सद् व्यवहार का समान भाव से उपदेश दिया अकेले दयानन्द ने पञ्चायतन पूजा के प्रचलित विधान में विष्णु, शिव-शक्ति, सूर्य और गणेश की पूजा को स्थान दिया गया है। ऋषि ने इस व्यावहारिक पूजा को पञ्चायतन, लौकिक धरातल पर स्थापित किया। उनके अनुचर पञ्च देव हैं-1. माता, 2. पिता, 3. आचार्य, 4 अतिथि, 5 स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए पत्नि पूजनीय है।

यदि कोई मध्यकाल का आचार्य या सन्त होता इतना ही लिखता पत्नि के लिए पति ही देवता है। यही बात संस्कृत वाक्य प्रबोध में पति-पत्नि का पारस्परिक शिष्टाचार बताते हुए महाराज ने लिखी।

मूर्तिपूजा कहां से चली?

स्वामी दयानन्द स्पष्टवादी थे। सत्य को सत्य और मिथ्या को मिथ्या कहने में उन्होंने कभी संकोच नहीं किया। वे लाग लपेट, मुंहदेखी बात करने के विरोधी थे। अज्ञानी लोगों ने उन्हें कठोर वक्ता, मुंह फट (Blunt) कहा, किन्तु उन्होने सत्य को कहने से कभी परहेज नहीं किया। उनका यह स्पष्ट, कथन सुनें-

"प्रश्न-मूर्तिपूजा कहां से चली?

उत्तर-जैनियों से।

प्रश्न-जेनियों ने कहा से चलाई?

उत्तर-अपनी मूर्खता से।"

हास्य रस के द्वारा पाखण्ड खण्डन

पौराणिक काल मे भस्म धारण करने तथा रुद्राक्ष मालाओं को पहनने का विधान शैव लोगों ने किया। यहां तक कि सारे शरीर पर भस्म धारण करने वाले एक उपनिषद् कालाग्निरुद्रोपनिषद् की रचना कर ली गई और रुद्राक्ष पहनने के लिए भी शास्त्रीय वचन उद्धृत किए गए। स्वामी जी की हास्य मय टिप्पणी देखें-

"प्रश्न-कालाग्निरुद्रोपनिषद् में भस्म लगाने का विधान लिखा है । क्या यह झूठा है ?

उत्तर-कालाग्निरुद्रोपनिषद् किसी रखोड़िया (राख लपेटने वाला) मनुष्य अर्थात राख धारण करने वाले ने बनाई है।"

(यह लेखमाला जारी रहेगी।)

[illegible]

किसी विद्वान् कवि ने कहा है "दो दिन की जिन्दगी में न इतना उछल के चल, दुनियां चल चलाव का रास्ता सम्भल के चल" किसी भक्त ह्दय शायर ने लिखा है कि ईश्वर रागी किस प्रकार के होते हैं "उल्टी ही चाल चलते हैं दीवान गोन इश्क" "आंखों को बंद करते हैं दीदार के लिए"

सांसारिक मानव जहां अपनी खुली आंखों से सांसारिक वस्तुओं को अवलोकन करता है, वहीं ईश्वर दर्शनाभिलाषी, सांसारिक भोगों की तरफ से नेत्र बन्द कर लेता है अर्थात् सांसारिक भोगों से परे रहने का प्रयत्न करता है, दूसरी बात यह है कि परमात्मा नेत्रों के द्वारा कभी नहीं देखा जा सकता, वह तो वेदों, शास्त्रों, गीता आदि उपनिषदों के अनुसार हमारे ह्दयों में निवास करता है जब हम आत्मा के क्षेत्र में प्रवेश करते तो महर्षि पतंजलि के योग दर्शनानुसार योग के आठ अंगों पर निरन्तर अभ्यास करके अपनी आत्मा में ही उसकी दिव्य ज्योति का दर्शन प्राप्त कर सकते हैं। "मानव जीवन एक वरदान" विषय बहुत विस्तृत विषय है इस सम्बन्ध में हम लोग बहुत कुछ लिख सकते हैं विचार दे सकते हैं, जो जितना ही स्वाध्यायशील, पवित्र, ज्ञानी होगा उतना ही अधिक ज्ञान इस सम्बन्ध में प्रस्तुत कर सकता है। प्रशान्त महासागर के विस्तृत तट पर फैले विशाल रेत (बालू) समूह में मात्र एक कण के बराबर विचार में लेख मैं प्रस्तुत कर रहा हूं, पाठक वृन्द को यदि यह लेख रुचिकर एवं उपयोगी लगा एवं लेख में प्रस्तुत भावनाओं को अपनाने के योग्य लगा, तो मैं अपने अत्यन्त क्षुद्र प्रयास को सफल समझूंगा। ओ३म् शान्ति: शान्ति: शान्ति:

वृष्टि यज्ञ एवं प्रवचन

आर्य समाज बठिण्डा के तत्वावधान में तथा धर्म प्रेमी लाला वजीर चन्द मंगला जी के संरक्षण में न्यु क्लाथ मार्किट बठिण्डा के प्रांगण में एक विशाल वृष्टि यज्ञ एवम् प्रवचन का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी "वैदिक मिश्नरी" (गुरुकुल बठिण्डा) द्वारा यह विशेष यज्ञ अपनी मधुर शैली द्वारा सम्पन्न करवाया गया। इस यज्ञ में क्लाथ मार्किट बठिण्डा के सभी अधिकारीगण एवम् अन्य व्यापारी लोग सम्मिलित हुए। यज्ञ के उपरान्त ब्रह्मचारी जी ने अपने प्रवचन के दौरान वृष्टि यज्ञ का महत्व और आजकल के वातावरण में यज्ञ की आवश्यकता को समझाया उन्होंने कहा कि आज ऋषि मुनियों के इस देश में जनसाधारण द्वारा यज्ञ कर्म के प्रति उदासीनता ही विभिन्न रोगों तथा कैंसर एवम् वातावरण की उथल-पुथल का मुख्य कारण है। आप सभी को ज्ञात हो कि लाला वजीर चन्द जी लगातार बीस वर्ष तक क्लाथ मार्किट बठिण्डा के प्रधान रहे और उन्हीं की प्रेरणा से इस मार्किट में वैदिक प्रवचन एवम् हवन यज्ञ के कार्यक्रम आज भी बड़ी धूमधाम और श्रद्धा से मनाए जाते हैं। प्रवचनोपरान्त प्रसाद वितरण एवम् शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-ओ.पी. मंगला, प्रधान आर्य समाज भठिण्डा

शोक समाचार

दिनांक 28-7-02 को गंगा प्रसाद 'सौम्य' मन्त्री आर्य समाज सांवली आदि पंचपुरी की माता जी ने प्रात: 8-15 बजे अपने निवास स्थान स्यूंसी नगर में अन्तिम सांस ली। वे 85 वर्ष की थीं। उनकी शव यात्रा में स्थानीय गणमान्य व्यक्ति, अध्यापक, कर्मचारी तथा आर्य समाज सांवली आदि पंचपुरी गढ़वाल के प्रधान श्री चन्द्र प्रकाश जी तथा सभी आर्य सभासद् सम्मिलित हुए। अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से पूर्वी नयार नदी के तट पर श्री बच्चीराम जी आर्य पुरोहित द्वारा करवाया गया। अन्त में दो मिनट का मौन रख कर स्वर्गीय आत्मा की सद्गति की प्रार्थना की गई।

श्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार में कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार [illegible] बाजार लुधियाना की ओर से श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व 31 अगस्त 2002 शनिवार को बड़े उत्साह से मनाया जा रहा है। श्रद्धेय सुमनायति जी, श्री पं. धर्मदेव जी, श्रीमती रश्मि घई के प्रवचन व भजन होंगे। कार्यक्रम सायं 3 बजे से 5.30 बजे तक चलेगा। लुधियाना के सभी आर्य बन्धुओं व बहनों से प्रार्थना है कि समय पर पधार कर इस कार्यक्रम को सफल बनावें।

धारीवाल में वेद प्रचार

[illegible] दिनों आर्य समाज धारीवाल (गुरदासपुर) में विश्वशान्ति गायत्री महायज्ञ व वेद सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसमें पूज्य स्वामी प्रकाशानन्द जी, स्वामी सदानन्द जी, श्री पं. विजय कुमार शास्त्री के प्रवचन तथा सतीश सुभाष भजन मण्डली के भजन हुए।

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

दूरभाष ☎ : 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 1[illegible] सृष्टि संवत 1960853103, 18 अगस्त, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

वेद प्रचार आर्य समाज का मुख्य कार्य है!

❑ ले० डॉ० महेश विद्यालंकार, दिल्ली

सृष्टि के आरम्भ में परमपिता ने प्राणी मात्र के कल्याण व उत्थान के लिए वेदों का ज्ञान प्रदान किया। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद ज्ञान परमेश्वर का जगत को आदेश, उपदेश और सन्देश है। इसलिए वेद सबके, सबके लिए तथा सबको पढ़ने एवं सुनने का अधिकार है। वेदों का चिन्तन मानवता का चिन्तन है। वेद सृष्टि की आचार संहिता है। वेद पुकार-पुकार कर कह रहे हैं–शृण्वन्तु सर्वे अमृत पुत्राः। वेदों की विचारधारा में क्षेत्र, जाति वर्ग, देश आदि का भेदभाव नहीं है। वेद ज्ञान सार्वकालिक, सार्वदेशिक तथा सार्वजनिक है। वेदों का जीवन दर्शन ही आज के जीवन तथा जगत को सत्य, धर्म, न्याय, सुख, शान्ति और सच्चा आनन्द दे सकता है।

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" ऐसी धारणा और मान्यता केवल आर्य समाज ही रखता है। आर्य समाज तथा उसकी विचारधारा की अनुयायी संस्थाओं में ही प्रातःकाल पवित्र वेद मन्त्रों से यज्ञ होता है। वेद सम्मेलन व वेद कथाएं यही संगठन आयोजित करता है। वेद मन्दिर तथा वेद की ज्योति जलती रहे, आर्य समाज नारा देता है। वेदों की रक्षा, परम्परा, स्वरूप, पठन-पाठन को जीवित रखने, और प्रचारित एवं प्रसारित करने की वसीयत एवं विरासत आर्य समाज को मिली है। दूसरे पंथ, सम्प्रदाय और विचारधारा वाले नाम तो वेदों का लेते हैं। मगर वेदों को महत्व नहीं देते हैं। वेदों के पुनरुद्धार तथा प्रचार-प्रसार में ऋषिवर देव दयानन्द का योगदान स्मरणीय एवं वन्दनीय है। उन्होंने वेदों का यथार्थ स्वरूप जनमानस को बताया। उन्होंने नारा दिया वेदों की ओर लौटो। वेदों को मानो। वेद ज्ञान ही विश्व शान्ति और विश्वबन्धु का सच्चा मार्ग दिखा सकता है। दुनिया में वेद ज्ञान से बढ़कर और कोई श्रेष्ठ ज्ञान नहीं है।

आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य रहा है, वैदिक धर्म का पुनरुद्धार, वेद प्रचार व मूर्ति पूजा, अवतारवाद, ढोंग-पाखण्ड, गुरुडम आदि से जनता को बचाना। अतीत का इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज वैचारिक क्रान्ति की जीवन्त चेतना थी। इसकी भूमिका रही है–जागते रहो ! वेद परम्परा को जीवित रखने और आगे बढ़ाने में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी का परिणाम है कि आज तक वेदों के मन्त्रों में एक अक्षर की भी मिलावट नहीं हो सकी है। वेद मन्त्रों के अर्थों में मिलावट के कारण ही अर्थ का अनर्थ हुआ है। इसीलिए लोग वेदों के भाष्यों को पढ़कर उल्टे सीधे अर्थ लगाकर, वेदों के बारे में अनर्गल, निराधार तथा घृणित आरोप लगा रहे हैं। जोकि निन्दनीय हैं । आर्य समाज ने वेदों के बारे में अनर्गल आरोपों के लिए सदा चैलेंज किया और आज भी चैलेंज करने की शक्ति व क्षमता रखता है।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार था। वेदों की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति का चरित्र निर्माण होता है। वेद ज्ञान जीवन तथा जगत को सच्चा मार्ग बताता है। आज वेद प्रचार की बहुत जरूरत है। वेद प्रचार की कमी के कारण ही रोज नये-नये पंथ, सम्प्रदाय, गुरु, महन्त, महाराज आदि बने और फैल रहे हैं। इसीलिए ढोंग-पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास, अन्ध श्रद्धा, जड़ पूजा आदि पहले से ज्यादा बढ़ रही है। यदि वेद प्रचार होता तो धर्म, भक्ति और परमात्मा के नाम पर गुरुओं व महाराजाओं के इतने लम्बे-चौड़े पाखण्ड भरे व्यापार न फैलते ? लोग मुर्दों से मुरादे न मांगते ? पढ़े-लिखे, जिम्मेदार लोग निर्दोष जीवों की बलियां न चढ़ाते? धर्म के नाम पर इतने झगड़े विवाद न होते ? वेद ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार होता तो इतना पाप, अधर्म, भ्रष्टाचार, पतन अनैतिकता आदि न होती ?

दुःखद पीड़ा है कि आज का आर्य समाज अपने मूल उद्देश्यों, आदर्शों, सिद्धान्तों आदि से हट रहा है जो मुख्य कार्य वेद प्रचार था। जिससे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को आर्य बनाना था। जिसके लिए ऋषिवर ने सम्पूर्ण जीवन आहुत कर दिया। जिस वेद प्रचार के लिए अनेक तपस्वी, त्यागी, महापुरुषों ने अपना तन-मन और धन लगा दिया। जो वेद ज्ञान आर्य समाज की पहचान और जान थी। वह वेद प्रचार घट रहा है। वेद प्रचार की जगह मूल, औषधालय, बारात घर, दुकानें, मैरिज ब्यूरो आदि ले रहे हैं। इन चीजों से आर्य समाज की साख, सात्विकता, धार्मिकता व पवित्रता नष्ट हो रही है? स्वार्थ, विवाद, पदलोलुपता व अहंकार बढ़ रहा है। मूल छूट रहा है। जहां समाज मन्दिरों में वेदाध्ययन शालाएं होनी चाहिएं थीं? वहां स्कूल और दुकानें हैं। इससे स्वार्थी और अधार्मिक लोगों ने अपनी आमदनी का साधन बना लिया। अब दान, चन्दा, धर्म प्रचार आदि के पैसे को खाते हुए पाप बोध, अपराध बोध तथा आत्मग्लानि नहीं हो रही है? यह हमारे नैतिक मूल्यों के पतन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन बातों से संगठन व समस्याओं में गिरावट आती है। विवाद बढ़ते हैं। प्रभाव घटता है। जनता दूर हटती जाती है। नये जुड़ते नहीं, पुराने चले जाते हैं। जितना आर्य समाज का प्रभाव, अनुयायी तथा प्रचार-प्रसार होना चाहिए था। उतना हो नहीं रहा है। रचनात्मक, सुधारात्मक, क्रियात्मक, योजनाबद्ध कार्यक्रम हम जनता को नहीं दे पा रहे हैं? हम जनता से जुड़ नहीं पा रहे हैं। केवल जलसा, जलूस, लंगर, फोटो और माला वेद प्रचार नहीं है। आज हम इन्हीं बातों को उपलब्धि मान रहे हैं ?

यदि हम सच्चाई और ईमानदारी से वेद प्रचार चाहते हैं तो इसके लिए मिल बैठकर गंभीरता और ईमानदारी से सोचना होगा। पहले वेद प्रचार अपने से आरम्भ करना होगा ? अपने कार्यकर्त्ताओं, संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों धर्माचार्यों आदि को संभालना होगा। उन्हें प्रोत्साहन, सहयोग, महत्व तथा वरीयता देनी होगी। अपनी पत्र-पत्रिकाओं को वेद प्रचार के रास्ते पर लाना होगा। जो आज मूल उद्देश्य से दूर हो रही हैं। स्थानीय समाज मन्दिरों व संस्थाओं को वेद प्रचार पर बल देने की जरूरत है। समाजों में उपस्थिति क्यों नहीं हो रही है? लोग हमसे क्यों नहीं जुड रहे हैं? क्यों का जवाब ईमानदारी से खोजना होगा ? दुनिया की सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्य समाज है। उसके सबसे बड़े हाल में सात आदमी बैठे हों । कहां है वेद प्रचार? जबकि वेद ज्ञान से बढ़कर और कोई चिन्तन नहीं है। अखबार, दूरदर्शन मीडिया आदि में हम कहां हैं ? राजनीति में हम पिछलग्गू बने घूम रहे हैं ।

वेद प्रचार सप्ताह आता है, परम्परा निर्वाह हो जाती है? अपनी पीड़ा छोड़ जाता है। वेद प्रचार की दिशा और दशा पर सम्पूर्ण आर्य जगत् को तत्काल गम्भीरता तथा पीड़ा से सोचने और करने की जरूरत है। वेद प्रचार ही आर्य समाज की आत्मा है। आत्मा के बिना शरीर का कोई महत्व नहीं होता है। समय की मांग है वेद प्रचार की सोचो ? इसे आगे बढ़ाओ। इसे जनता तक ले जाओ। जनता को जीवन और जगत को सही दिशा नहीं मिल पा रही है। भटक रही है। आपकी ओर देख रही है।

(क्रमशः)

अन्त समय की तैयारी

□ ले० श्री [illegible] प्रसाद [illegible], 53/112 [illegible] रोड, [illegible]

अन्त समय में परमेश्वर् का स्मरण करने वाला मनुष्य परमेश्वर भाव को प्राप्त होता है, इसमे सन्देह नहीं है, यह गीता के (8.5) श्लोक का अर्थ है। देह छोड़ने के समय जिसे परमेश्वर का ठीक-ठीक स्मरण रहेगा, वह ईश्वर भाव को प्राप्त होगा।

पाप करने में मनुष्य जितना सावधान रहता है, उतना पुण्य करने में नहीं रहता। पाप प्रकट हो गया तो जगत् मे अप्रतिष्ठा होगी, ऐसा सोचकर वह पाप को एकाग्र चित्त होकर करता है। इसी कारण अन्त काल में उसे पापों की याद आती है।

अपने किए हुए पाप जब उसे प्रत्यक्ष दीखते हैं तो वह समझता है कि मैंने मरने की कोई तैयारी नही की। मेरा अब क्या होगा ? मनुष्य और तो सभी कामो की तैयारियां करता है, परन्तु मरने की तैयारी नहीं करता। जिस प्रकार शादी की तैयारी करते है, उसी प्रकार खुशी से मरने की तैयारी धीरे-धीरे करनी चाहिए। मौत के लिए सदा सावधान रहना चाहिए। मृत्यु अर्थात् परमात्मा को बीते हुए जीवन का हिसाब देने का पवित्र दिन। भगवान् पूछेंगे-मैंने तुम्हें आखें दी, कान दिए। तुमने उसका क्या उपयोग किया ? तुम्हे तन और मन दिए थे, तो तुमने उसका क्या किया ? साधारण इन्कम टैक्स का हिसाब देने में घबराहट होती है, तो फिर पूरे जीवन का हिसाब देने मे क्या दशा होगी ? प्रभु ने हमें जो दिया हे उसका हिसाब तो देना ही होगा।

पूर्व जन्म का शरीर तो चला जाता है परन्तु मन नहीं जाता। लोग अपने तन के कपडो की तो खूब चिन्ता करते हे, परन्तु मरने के पश्चात् जो साथ जाता है उसकी चिन्ता नहीं करते। धन, शरीर आदि की चिन्ता करते हैं परन्तु मरने के पश्चात् जो अंगूठी उगली में होगी, उसको भी घर के लोग निकाल लेते हे।

जब तक मनुष्य मे बल रहता है जब तक वह मृत्यु के नग्न सत्य को भूले रहता है। इस प्रकार अज्ञानी मनुष्य जीवन की वास्तविक समस्याओ के प्रति कोई विवेकपूर्ण जिज्ञासा नहीं करता। सभी लोग सोचते हैं कि वे अभी नहीं मरेंगे, [illegible] मृत्यु का प्रमाण देखा करते हैं। वस्तुतः [illegible] और [illegible] में [illegible] अन्तर है। बकरी जैसे पशु के आगे डाली गई घास के पत्ते प्रेमपूर्वक खाती रहती है। उसको यह ज्ञान नहीं होता कि कुछ ही देर बाद उसके गले पर छुरी फिरने वाली है। यदि मनुष्य को यह ज्ञान नहीं कि कभी भी उसकी मौत आने वाली है, तो फिर उस मनुष्य में और पशु में अन्तर ही क्या रह जाता है। एक बुद्धिमान् व्यक्ति अगले जीवन के लिए अथवा जन्म-मृत्यु रूपी बारम्बार होने वाले रोग से मुक्त होने की तैयारी करता है।

परीक्षित महाराज को चेतावनी दी गई थी कि सात दिनों के अन्दर उनकी मृत्यु हो जाएगी। इतना सुनते ही उन्होंने अगली अवस्था की तैयारी के लिए तत्काल ही अपने राजमहल का त्याग कर दिया। उनके पास मृत्यु की तैयारी करने के लिए सात दिन तो थे। परन्तु जहां हम लोगों का प्रश्न है, हमको निश्चित मृत्यु की तिथि की जानकारी नहीं रहती। यहां तक कि महात्मा गांधी जैसे महापुरुष भी यह गणना नहीं कर सके कि अगले पांच मिनटों में उनकी मृत्यु होने जा रही है।

अन्त समय में परमेश्वर का स्मरण करने वाला मनुष्य परमेश्वर भाव को प्राप्त होता है, इसमे सन्देह नहीं है। परन्तु यह है बड़ा कठिन। अन्त समय में सम्पूर्ण शरीर शिथिल हो जाता है, मस्तिष्क कार्य नहीं करता। मन, बुद्धि, चित्त आदि सब ही क्षीण हो जाते हैं। सोच-विचार करना भी असम्भव हो जाता है और किसी-किसी समय तो शरीर की पीड़ा भी असह्य हो जाती है। कई तो मूर्छित हो जाते हैं, ऐसे समय में परमेश्वर का स्मरण करना कैसे सम्भव हो सकता है ?

इसके उत्तर में इतना ही कहना है कि मरने के समय मनुष्य कितना भी क्षीण हो, तो भी वह कुछ कहता ही है, अर्थात् संसार की बातों का स्मरण वह करता है। दिन रात सांसारिक बातों का ध्यान करने के कारण ही मानव को [illegible] कुछ [illegible] स्मरण [illegible] है। यदि यह [illegible] तो हमें एक विशेष महत्वपूर्ण निर्णय का पता लग गया [illegible] मनुष्य, [illegible] वस्तुतः [illegible] ध्यान करेगा, उसका स्मरण उसको मृत्यु के समय होगा ही।

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः॥ (गीता-8.6)

मनुष्य ईश्वर का नित्य स्मरण करता रहेगा, तो उसे अन्त समय में भी ईश्वर का स्मरण होगा। जिसको ईश्वर का स्मरण होगा, वह निःसन्देह ईश्वर भाव को प्राप्त होगा। जो मनुष्य जिस भावना का सदा स्मरण करता है, उसका मन सदा उसी भावना में संलग्न रहने के कारण देह छोड़ने के पश्चात् भी उसी भावना को प्राप्त होता है। अर्थात् जो शुभ भावना धारण करेगा, उसकी शुभ गति होगी और जो अशुभ भावना धारण करेगा, निःसन्देह उसकी अशुभ गति होगी। अतः मनुष्य सदा शुद्ध बुद्धमुक्त स्वरूप ईश्वर का स्मरण करे, उसी में मन बुद्धि को लगावे और उसी में तन्मय रहे। ऐसा करने से वह उसी के स्वरूप को पा सकेगा, इसमें सन्देह नहीं है। इस सतत् ईश्वर का ध्यान करने का नाम ही गीता का 'अभ्यास-योग' है।

जैसे लोहे को अग्नि में रखने से वह कुछ समय में अग्नि भाव [illegible] होकर अग्निरूप हो जाता है। लकड़ी भी इसी तरह अग्निरूप धारण कर लेती है। लकड़ी प्रारम्भ में जलती नहीं, परन्तु जिस समय वह अग्निरूप होती है उस समय अग्नि के समान ही जलती है, अर्थात् अग्नि के सब गुण धर्म लकड़ी और लोहे में आ जाते हैं। इसी तरह यह सिद्ध पुरुष भी परमात्मा के गुणों से युक्त हो जाता है अर्थात् वह विशेष गुणों को धारण कर लेता है। वह नर से नारायण बन जाता है, जीव से शिव हो जाता है, पुरु, का पुरुषोत्तम बन जाता है।

यदि कोई मनुष्य बीमार हो, और निद्रा के समय 'मैं निरोग हू' यह विचार उसके मन में स्थिर हो जाए तो निद्रापर्यन्त यही विचार उसके मन में स्थिर रहेगा और जागने पर उसको अनुभव होगा कि पूर्व की अपेक्षा उसको अधिक आरोग्य प्राप्त हुआ है। इसी तरह यदि निद्रा आने के समय उसके मन में परमात्मा का विचार होगा, तो निद्रा में भी यही विचार स्थिर रहेगा और उसको अपूर्व आनन्द प्राप्त होगा। उसको अन्त समय में, मृत्यु के समय में भी परमेश्वर का स्मरण अवश्य होगा। यह मार्ग मानवीय उन्नति का है इससे मनुष्य का एहिक तथा पारमार्थिक उन्नति हो सकती है।

आर्य समाज जोधपुर द्वारा वृष्टि यज्ञ

आर्य समाज और आर्य वीर दल जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान मे जोधपुर के विभिन्न क्षेत्रों में वृष्टि यज्ञ दिनांक 4.8.02 रविवार से प्रारम्भ किया गया।

वृष्टियज्ञ पखवाड़ा का प्रथम यज्ञ आर्य समाज जोधपुर के कोषाध्यक्ष श्री पूनम सिंह शेखावत के गृह स्थल नृसिंह कालोनी हाईकोर्ट कालोनी रातानाडा के क्षेत्र में 101 लोगों द्वारा यज्ञ मे आहुति देकर किया गया।

दूसरा यज्ञ महर्षि दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर में तथा आज तीसरा यज्ञ दिनांक 6.8.02 को क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल प्याऊ पावता 'सी' रोड महामन्दिर में सैंकड़ों लोगों की यज्ञ में आहुति देकर सम्पन्न कराया।

श्री राम सिंह आर्य ने यज्ञ की महिमा और वृष्टियज्ञ की उपयोगिता के बारे में बताया।

इसी पखवाड़ा के अन्तर्गत दिनांक 4.8.02 जाटा बास राधा कृष्ण मन्दिर महामन्दिर जोधपुर में कु. ममता परिहार ने विशाल यज्ञ वैदिक पद्धति से सम्पन्न कराया। स्थानीय मन्दिर में सैंकडो की सख्या मे महिलाओ ने भाग लिया।

इस अवसर पर आर्य वीर दल जोधपुर के अध्यक्ष श्री गणपत सिंह पवार तथा आर्य वीर दल के संचालक नारायण सिंह आर्य तथा स्थानीय क्षेत्र के उपसंचालक श्री हेमसिंह आर्य तथा जितेन्द्र सिह उपस्थित थे।

—प्रदीप आर्य

ादकीय.....

श्रावणी उपाकर्म पर्व

हमारे देश में मुख्य रूप से चार महीने सर्दी के, चार गर्मी के और चार वर्षा के माने जाते हैं। ऋतुएं तो हमारे देश में छः हैं जो दो-दो महीने की मानी जाती हैं परन्तु मुख्य रूप से सर्दी-गर्मी और वर्षा यह तीन ऋतुएं होती हैं। वर्षा ऋतु को चौमासा (चतुर्मास) भी कहा जाता है। प्राचीन काल में वर्षा ऋतु में व्यापार व कामकाज ठप्प होकर रह जाता था। सारा कार्य वर्षा से प्रभावित होता था परन्तु आज विज्ञान के युग में वर्षा ऋतु में भी सभी कार्य होते रहते हैं।

प्राचीन काल में इन दिनों स्वाध्याय उत्तम माना जाता था। ऋषि मुनि महात्मा भी वर्षा के कारण पर्वतों की कन्दराओं से उठकर नगर व ग्रामों के आसपास आ जाते थे और सभी गृहस्थी वहां जाकर उनके उपदेश सुना करते थे। श्रावण मास की पूर्णिमा को लोग अपने कार्यों से निवृत्त होकर वेद के स्वाध्याय में प्रवृत्त हो जाते थे। श्रद्धालु लोग ऋषि मुनियों के उपदेश सुनते थे और वेदाध्ययन करते थे और ऋषि जनों की सेवा किया करते थे।

यह वेदाध्ययन विशेष रूप से श्रावण मास की पूर्णिमा से आरम्भ किया जाता था और इसे उपकर्म कहते थे। पारस्कर गृह्य सूत्रों में लिखा है :-

अथा तोऽध्यायोपाकर्म। ओषधीनां
प्रादुर्भावे श्रावण्यां पौर्णमास्याम्। (2-10,2-2)

यह वेदाध्ययन का उपाकर्म श्रावण मास ही पूर्णिमा से आरम्भ होकर पौष मास की अमावस्या तक चलता था। स्वाध्याय के लिए यह मुख्य दिन माने जाते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी स्वाध्याय पर बहुत बल दिया। आर्य समाज के तृतीय नियम में उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" आर्यों को चाहिए कि वह श्रावणी उपाकर्म से वेद का पठन-पाठन आरम्भ करें। अपने घरों तथा आर्य समाजों पर ओ३म् की पताकाएं लहराएं। वेद का स्वाध्याय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र सभी कर सकते हैं। स्त्री-पुरुष, युवा-बूढ़े सभी कर सकते हैं। सभी को वेद का स्वाध्याय करना चाहिए। आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिए। वेद के स्वाध्याय से शूद्र भी ब्राह्मण कोटि को प्राप्त कर सकता है।

श्रावणी उपाकर्म पर ही एक नई प्रथा भी बहुत समय से भारत में चल पड़ो है जिसे रक्षा-बन्धन कहते हैं। इसका आरम्भ कब से हुआ यह ठीक से नहीं कहा जा सकता परन्तु राजपूत काल में हमें इसका वर्णन मिलता है। इस काल के अन्दर नारियों के द्वारा वीरों के हाथो में अपनी रक्षा के लिए राखी बान्धी जाती थी। कोई नारी राखी भेज कर किसी वीर पुरुष को अपना राखी-बन्द भाई बना लेती थी और वह उसकी आजीवन रक्षा करता था। उस काल में चित्तौड़ की महारानी कर्णवती ने मुगल बादशाह हुमायूं को गुजरात के बादशाह से अपनी रक्षा के लिए राखी भेजी थी और हुमायुं ने तत्काल चित्तौड़ पहुंच कर उसकी रक्षा की थी। इस पर्व पर आज भी बहनें अक्सर अपने भाईयों को राखियां बांधती हैं। इन राखी के तारों में भाई और बहन का प्यार हमें झलकता हुआ आज भी दिखाई देता है। भाई और बहन का आपस का अटूट रिश्ता है। यह बन्धन इस रिश्ते को और अधिक मजबूत बनाता है परन्तु आज कल इस राखी बन्धन में भी देखा जाता है तरह-तरह की राखियां बनने लगी हैं। बड़ी-बड़ी मूल्यवान राखियां बनने लगी हैं। रक्षा बन्धन से कई दिन पूर्व वह बाजारों में सजाई जाती हैं और बेची जाती हैं परन्तु गरीब बहन अपने भाई को मूल्यवान राखी नहीं भेज सकती। इस प्रकार इस प्रथा में भी एकरूपता नहीं रही। एक बात अवश्य है कि इस पर्व पर बहन को भाई और भाई को बहन की याद तो आ जाती है। इस पर्व से भाई-बहन में आपस में प्रेम बढ़ता है।

मुख्य रूप से यह पर्व स्वाध्याय का पर्व है। इसलिए सभी आर्य समाजों में यह पर्व मनाया जाना चाहिए। 22 अगस्त को यह पर्व आ रहा है। इसलिए इस दिन सभी आर्य बन्धु अपनी-अपनी आर्य समाजों में बृहद यज्ञ करें, यज्ञोपवीत धारण करें और दूसरों को कराएं। पुराने यज्ञोपवीत उतार कर नए धारण करें और यज्ञ वेदी पर बैठ कर वेद का स्वाध्याय करने का व्रत लें। हम वेदादि आर्ष ग्रन्थों का ही स्वाध्याय करें और अपने जीवन का भी साथ-साथ अध्ययन करते रहें, निरीक्षण करते रहें ताकि हमारे जीवन में कोई बुराई न आने पाए, बल्कि सभी प्रकार की अच्छाईयां व गुण हमारे जीवन में समा जावें । हममें देवत्व की भावना जागृत हो जाए और हमारा राक्षसत्व समाप्त हो जाए। हम सदा-सदाचार की ओर बढ़ते रहें और सभी प्रकार के दुराचार से बचे रहें। सभी प्रकार की बुराईयों को अपने जीवन से भगा दें और सभी प्रकार की अच्छाईयों को धारण कर लें। हमारी परमात्मा से प्रार्थना है "विश्वानी देव सवितुर्दुरितानिः परासुव यद् भद्रं तन्न आसुव॥"

जीवन का निर्माण स्वाध्याय पर बहुत कुछ निर्भर है। इसलिए स्वाध्याय की आदत डालें अपने बच्चों को भी स्वाध्याय के लिए प्रेरित करें। वह किस्से, कहानियों व नावलों को न पढ़ें बल्कि जीवन निर्माण की पुस्तकों का स्वाध्याय करें। सत्यार्थ प्रकाश और महर्षि दयानन्द के दूसरे ग्रन्थों का स्वाध्याय करें। देश भक्तों के जीवन चरित्रों का स्वाध्याय करें। देश भक्ति व नैतिकता की कहानियों का अध्ययन करें। इससे पढ़ाई के साथ-साथ उनके जीवन में सभी प्रकार की अच्छी भावनाएं आ जाएंगी।

—धर्मदेव आर्य

लुधियाना में समारोह

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना का वार्षिक उत्सव 8 से 11 अगस्त 2002 तक बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री व गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार के कुलपति प्रिं. स्वतन्त्र कुमार जी विशेष रूप से हरिद्वार से लुधियाना पहुंचे थे, उनके साथ सभा के उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य भी विशेष रूप से जालन्धर से लुधियाना पहुंचे थे। लुधियाना पहुंचने पर श्री आज्ञानन्द जी आर्य प्रधान आर्य समाज हबीबगंज व उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्रीमती राजेश शर्मा प्रधान जिला आर्य सभा लुधियाना व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा लुधियाना की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने पुष्प मालाएं पहना कर उनका भव्य स्वागत किया। जालन्धर से सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री धर्मदेव जी आर्य तथा आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर के प्रधान श्री कमल किशोर जी भी वहां पहुंचे। मोगा से श्री प्रियतम देव जी विशेष रूप से आए थे। सभा के महोपदेशक श्री विजय कुमार जी शास्त्री तथा ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी वहां पधारे थे और इनके प्रभावशाली प्रवचन हुए। इस चार दिवसीय कार्यक्रम में दोनों समय प्रातः व सायं उपदेश होते रहे। आर्य समाज हाल भरा रहा। इस अवसर पर लुधियाना के बहुत से प्रतिष्ठित महानुभावों को सम्मानित किया गया। इस सफलता का सारा श्रेय आर्य समाज के अधिकारियों व विशेष रूप से श्री आज्ञानन्द जी आर्य को जाता है।

(इस उत्सव का पूरा विवरण आगामी अंक में पढ़ें।)

—धर्मदेव आर्य

आर्य समाज की वर्तमान स्थिति

☐ ले० श्री [illegible], [illegible] सोसायटी, ४१०-ए, [illegible] मार्ग, [illegible] (प.) मुम्बई-[illegible]

ईश्वर सब जीवो के भोग तथा कल्याण के लिए सदा की भांति सृष्टि की रचना करता है। भोग की सम्पूर्ण सामग्री निर्माण के पश्चात् एवं अन्य सब योनियों के निर्माण के पश्चात् अन्त में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य जाति की उत्पत्ति होती है। मनुष्य जाति सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि उसमें भोग के साथ-साथ कर्म करने की स्वतंत्रता है। मानव जीवन के उत्थान तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए ईश्वर उसे वेद (ज्ञान) से अवगत कराता है। कालान्तर में मनुष्य अज्ञानता के कारण अपने परम लक्ष्य को भूल जाता है और प्रकृति के सुनहरे जाल में फंस जाता है। जीवन की सन्ध्या आने पर वह बहुत पछताता है और खून के आंसू बहाता है।

धर्म अधर्म का युद्ध

हर युग में अच्छे बुरे लोग आते जाते रहते हैं। साधु संत भी आते हैं और चोर डाकू भी। ऋषि महर्षि भी आते हैं और साधारण लोग भी। साधारण लोगों की ऐसी मान्यता है कि सत्ययुग सबसे अच्छा युग था और धीरे-धीरे त्रेता, द्वापर और अन्त में कलियुग में धर्म का नाश हो रहा है। वास्तविकता कुछ और ही है। धर्म और अधर्म का युद्ध हर युग में होता रहा है। इसका कारण है मनुष्य के अपने संस्कार और उस समय की वर्तमान स्थिति।

वर्तमान समय कलियुग का है। इसी युग में आज से लगभग १२५ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म, जिसे लोग भूलते जा रहे थे, उसी को पुनः जागृत करने के लिए 'आर्य समाज' की स्थापना की। महर्षि का बस एक ही स्वप्न था कि मनुष्य अपने जीवन को उन्नत, सुखमय बनायें और अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करे।

श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज

आर्य समाज आर्यो (श्रेष्ठ व्यक्तियो) का समाज है-वैदिक धर्म को मानना, जिसमे शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए सर्वाधिक ध्यान व बल दिया जाता है। सर्वहित और परोपकार की भावना से यज्ञ कर्म किया जाता है। वेद, शास्त्र, दर्शन इत्यादि आर्ष ग्रन्थों का पठन पाठन और श्रवण होता रहता है। मानव-निर्माण और कल्याण के लिए वैदिक संस्कृति और सभ्यता के अनुसार पर्व मनाए जाते हैं, जिनमें महापुरुषों के प्रवचनादि का आयोजन किया जाता है। अपने बड़ों का आदर (वैदिक विद्वान्, संन्यासियों, अतिथियों, माता-पितादि) समान श्रेणी वालों से मित्रता और अपने से छोटो (बच्चों-निर्धनों-अज्ञानी) से प्रेम करना, उनकी सहायता करना सिखाया जाता है।

मनुष्य की वर्तमान स्थिति

आज सूचना तकनीकी (Information Technology) का युग है। सब आगे जा रहे हैं, बात करने का समय नहीं है, न ही किसी को सुनने का समय है। आज का मनुष्य बहुत व्यस्त है, बहुत आगे जाना चाहता है-वह भी थोड़े समय में। वह अच्छे-बुरे की परवाह नहीं करता, परन्तु भौतिक लक्ष्य (धन-दौलत) को प्राप्त करना चाहता है और इसी में अपने जीवन के परम लक्ष्य को भूल जाता है। वह धर्म-कर्म की बात नहीं समझता या समझना भी नहीं चाहता।

चारदीवारी में घिरा

वर्तमान में आर्य समाज भवनों की चार दीवारी में बन्द है। आर्य समाज के भवनों में सीमित लोग (सदस्य) ही आते हैं। सीमित लोग (विद्वान्) ही बोलते हैं और सीमित लोग (आर्य समाज के दीवाने) ही सुनते हैं, विशेष कार्यक्रमों में भी सीमित लोग ही पधारते हैं; प्रीतिभोज के समय संख्या सबसे अधिक होती है ? राजनेता अधिक होते हैं और श्रोता कम। बड़े-बड़े आर्य समाज सम्मेलनों में भी वही चेहरे दिखाई पड़ते हैं। आज तक कोई राजनेता आर्य समाजी नहीं बना है और न ही कोई आर्य समाजी राजनेता बन पाया है। इससे क्या समझें ? हमारे पास वेद हैं, वैदिक विद्वान् हैं, वैदिक संस्कृति हैं और मानव उत्थान की समस्त सामग्री है-तो कौन सी कमी है, जो जन साधारण को हम अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाए हैं ? क्या हम (आर्य समाज के समस्त सदस्य) आज की परिस्थिति से संतुष्ट हैं ? अगर हैं, तो हम बहुत बड़ी भूल में हैं, क्योंकि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' नहीं हुआ है और यदि संतुष्ट नहीं हैं, तो फिर हम क्या कर रहे हैं ?

कोई उत्तर नहीं मिलता

हमने अनेक बार अनेक संन्यासियों, वैदिक विद्वानों से, प्रवक्ताओं से उपरोक्त प्रश्न पूछने का साहस किया है, परन्तु उनके मस्तिष्क में भी ऐसे ही प्रश्न उठते रहते हैं। सब निराश हैं, हताश हैं, परन्तु इसकी आशा की प्रतीक्षा में हैं कि "हमारे आर्य समाज का भविष्य कभी न कभी तो उज्ज्वल होगा। अभी तो आर्य समाज की स्थापना को हुए केवल १२५ वर्ष ही हुए हैं। कुछ और समय लग सकता है। देखो, ५००० वर्ष के पश्चात् ही गीता की प्रसिद्धि हुई है और उसका प्रभाव पड़ा है। नौ लाख वर्षों के बीतने के बाद ही अब लोग रामायण को समझने लगे हैं। आर्य समाज के सिद्धान्तों को समझने के लिए कुछ हजार वर्ष और भी लग सकते हैं।" यदि उनसे पूछें कि वैदिक धर्म तो मानव उत्पत्ति के समय का है, तो वे भी चुप हो जाते हैं।

बाजारों में जो वस्तुएं उपलब्ध होती हैं, ग्राहक वही तो खरीदता है। वस्तु सस्ती, सुन्दर और टिकाऊ है या नहीं, परन्तु क्योंकि उसकी आवश्यकता है इसलिए खरीदनी ही पड़ती है। इसी प्रकार आज सब लोग अपनी-अपनी जिन्दगी जी रहे हैं और इसलिए जी रहे हैं कि सब जी रहे हैं। आज सभी दुःखी हैं और मन की शान्ति चाहते हैं। जहां मन की शान्ति मिलती (बिकती) है-वहीं जाते हैं। स्थाई शान्ति की बातें वे साधारण लोग सोच ही नहीं सकते क्योंकि ऐसी बातें कोई करता ही नहीं है।

जनता तक पहुंचे

वर्तमान में आर्य समाज की यह स्थिति है वह जन साधारण की समस्याओं के समाधान की ओर ध्यान नहीं देता। होना तो ऐसा चाहिए कि आर्य समाज उनकी बाते सुने तथा उनकी समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करे; समाज के लोग सभी वर्गों से सम्पर्क बनाए रखें और चार दीवारी से बाहर निकल कर खुले मैदानों में अपनी योजनाओं को रखें, जन साधारण का मार्ग दर्शन करें, ऐसे प्रवचनों का आयोजन करें कि जिससे सबका हित हो, कल्याण हो; सबकी उन्नति हो क्योंकि सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

नियमों पर आचरण

जब तक हम सभी आर्य समाज के सार्वभौम नियमों को केवल रटते रहेंगे, कोई लाभ होने वाला नहीं है। इन नियमों को अपने से ही लागू करने की आवश्यकता है तो ही शत-प्रतिशत आर्य समाज का भविष्य उज्ज्वल होने से कोई रोक नहीं सकता क्योंकि ईश्वर उसी की प्रार्थनाओं को स्वीकार करते हैं जो स्वयं पुरुषार्थी होते हैं। जब तक वैदिक धर्म को जानने वाले लोग अपने व्यवहार में परिवर्तन नहीं लाते तब तक आर्य समाज की वर्तमान स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। प्रवचनों को अपने व्यवहार में लायें-यही वक्त का तकाज़ा है।

नेता बनने की होड़

आज हम एक दूसरे को आगे बढ़ने से रोक रहे हैं। प्रायः दूसरों की बुराइयों को सुधारने की ओर अधिक ध्यान देते हैं। अपने ज्ञान की प्रदर्शनी करते हैं। दूसरों की उन्नति में रोक लगाने का प्रयत्न करते हैं। अपनी फोटो को 'मुख पृष्ठ' पर देखना चाहते हैं। अभिमान और अहंकार में अन्धे हो चुके हैं। चापलूसी करने में अन्य प्राणियो से भी आगे निकल चुके हैं।

स्वार्थ और अहंकार

इतना सारा ज्ञान-विज्ञान होने पर भी हम इतने पीछे रह गए हैं कि अन्य मत-मतान्तर वाले कहीं आगे निकल चुके हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी हम औरों से पिछड़ चुके हैं। इन सबका एक ही मुख्य कारण है-स्वार्थ और अहंकार।

जो शिक्षा, प्रवचन हम दूसरों को देते हैं, उसकी एक भी झलक स्वयं में नहीं दिखती। कारण-अनेक प्रकार की एषणाएं।

हमारा गुरु एक है-"महर्षि दयानन्द सरस्वती" फिर भी हमारी पूजा-पाठ पद्धति भिन्न-भिन्न है। सन्ध्या और यज्ञ कर्म विधि अलग-अलग है। कारण-हठ और स्व-अभिमान।

हम अपने बच्चों को समझाते हैं पर स्वयं आर्य समाज के नियमों

(शेष पृष्ठ 7 पर)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में एक दिन

□ ले० सी. मारकण्डा (तपा)

(गतांक से आगे)

अब डिब्बे में कुछ टिकाव सा आ गया लगता था। सभी यात्री अपनी-अपनी जगहों पर ठीक से बैठ गये थे। कुछ युवा लड़के इधर-उधर घूम कर अपनी खरमस्तियों की झलक दिखा रहे थे। गाड़ी चलने से सुकून मिला। मैंने आंखें बन्द कर रखी थीं। हरिद्वार तथा विश्व विद्यालय का सपना अभी भी मुझे आता अनुभव हो रहा था। जो कुछ मैं कर नहीं पाया परन्तु करने के लिए मन चाहता था वह मैं अपने स्वप्न में कर रहा लगता था। गुज़रे दिवस की याद मुझे मुड़-मुड़ कर आ रही थी। अपनी छाती में अजीब तरह की मोहब्बत लेकर मैं वापिस लौट रहा था। विश्व विद्यालय का प्रत्येक व्यक्ति मुझे देवता लगता था। उनकी रफ्तार तथा गुफ्तार में कशिश थी। साधारण (सादी) वेश-भूषा में आर्य लोग मुझे तपस्वी लगते और छात्र भी अनुशासन में बन्धे हुए। आंखों में समाया सपना क्या था? विश्वविद्यालय में घूमते समय यहां पर बनी इमारतों पर जब नज़र गई तो अनुभव हुआ कि जैसे यह संत महात्माओं के मठ हों। धरती का हर ज़र्रा हसीन, हर वृक्ष हरियाली तथा खुशहाली से भरपूर बातें करता हुआ नज़र आने लगा। इन वृक्षों पर बैठा हर पक्षी गायक सा लगा। साथ ही दुःख भी हुआ कि इस ज्ञान की मोमबत्ती को बुझाने के लिए तथा इस पर अवैध कब्जा करने के लिए कुछ लोगों ने गोलियां भी चलाईं थी। कपड़े के एक बैनर पर उन लोगों के नाम लिखकर भी लटकाये हुए मुझे नज़र आये जैसे पंजाब के थानों में दस नम्बरियों के नाम लिखे हुए होते हैं। इन लोगों का विश्वविद्यालय में प्रवेश निषेध था। दुःख और सुख दोनों मन में हड़कम्प मचा रहे थे। गाड़ी अपनी चाल चल रही थी तथा मन जैसे किसी 'महाकाव्य' का पाठ कर रहा हो।

मैंने अपनी आत्मा की गर्जना सुनी। भला गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के मुकाबले कहीं और भी कोई विश्वविद्यालय हो सकता है। जरूर टैगोर के विद्यालय 'शांति निकेतन' जैसा जिसको मैंने कभी देखा भी नहीं जिसके बारे में केवल सुना ही है, से भी ज्यादा बेहतर। जब मैं इसके प्रांगण में घूम रहा था तो स्वयं से घबराता हुआ प्रत्येक व्यक्ति से शर्माता हुआ और बात करते समय संकोच करता हुआ। सामने वाले सभी लोग मुझे महामानव लगते जिनके समक्ष मैं लघु मानव एक तिनके की मानंद। इर्द-गिर्द पूरा निर्मल, अति मासूम, शुभ इच्छुक, मंगलमयी। आंखें बोझल सी होने लगीं। इस तरह के आलम में कभी आंख बंद हो जाती तो कभी एक झटके से आंख खुल जाती। आंखों का स्वप्न दूर कहीं जा गिरता। गुजरे पूरे दिन का सारा दृश्य गुम गया था और सामने सोये हुए और कुछ जाग रहे यात्री उदास तथा परेशान नज़र आने लगे।

गाड़ी अनेक स्टेशनों को पीछे छोड़ चुकी थी। उत्तरांचल तथा उत्तर प्रदेश को पार कर अब हरियाणा प्रांत में शामिल होने वाली थी। एक खाने वाला आया। डिब्बे में आलू-पूरी होगी। हमने एक डिब्बा लिया। एक बुरकी के समान आकार वाली पांच पूरीयां जो हमारी भूख तो मिटा न पाईं परन्तु कुछ राहत तो ज़रूर दिला गईं। सुरेन्द्र ने कहा कि अम्बाला पहुंच कर ही खाना खाएंगे। गाड़ी बहुत कम रफ्तार से चल रही थी। हर स्टेशन पर देर तक रुकी रहती। जाते समय तो हम तपा से चले 6 घण्टे में हरिद्वार पहुंच गए थे और वापिस आते समय 6 घण्टों में गाड़ी अभी अम्बाला कैंट भी नहीं पहुंच पाई थी।

देर तक यूं ही एक जगह पर बैठना कठिन लगता। टांगों में दर्द सा महसूस हो रहा था। आंखों में नींद तैरने लगी थी। होठों पर प्यास तिशनगी को और बढ़ावा दे रही थी। पांवों में खलबली उठ रही थी। शरीर में थकान थी तथा पीठ को आराम की ज़रूरत थी। यह मेरे जीवन की बेहद उदास रेल यात्रा साबित हुई। मन को सुकून मिले इस आस से सीट से उठ कर घूमने लगा। खुली खिड़की के पास जाकर बाहर आकाश तथा अन्धेरे में कुछ तलाशने को दिल चाहा, परन्तु खिड़की भी खाली न मिली। इसके पास ही गुज़रने वाले रास्ते में एक भिखारी नुमा साधु पैर पसार कर सोया हुआ था।

मन में अनेक तरह के विचार फड़फड़ा रहे थे। रात आधी से ज्यादा गुज़र चुकी थी। मुझे अपनी गज़ल का मतला याद आया।

"नैणां च अध्धी रात है अद्धी न लंघदी

इह अधी ही तां मैनू पर सूली ते टंगदी।"

फिर मन को दिलासा देना पड़ता कि 'फसगे तां फटकण की'। कुली को पैसे देकर सलीपर न लेने की मूर्खता को छुपाते हुए मैं अन्दर ही अन्दर शर्मसार हो रहा था। अपना दुःख किसी को सुनाने की हिम्मत न थी। गाड़ी के डिब्बे में इससे भी ज्यादा दुःख अनचाहे गाड़ी के सफर का था।

इतनी देर खड़े रहना भी मुझे मुश्किल था। पुनः अपनी सीट पर आया तो सुरेन्द्र खड़ा हो गया और मैं उसकी जगह बैठ गया। रात का एक बज चुका था। गाड़ी अम्बाला के पास आने वाली थी।

शरीर थकान महसूस कर रहा था। पीठ में दर्द हो रहा था। टांगों में जलन थी। आंखों की पलकों में शिकन थी। जब वह आंख के आनो से टकराते तो बोझल आंखे और चुभन महसूस करती। नाक की नोक पर टिके ऐनक का फ्रेम बोझ लगता। सोचा था छः घण्टे क्या होते हैं बातें करते-करते ही गुज़र जाएंगे। बातें करने को मन नहीं करता था। डिब्बे में पंजाबी लोग तो नज़र ही नहीं आते थे। सामने बैठे राजस्थानी सिख सरदार तो जब से लेटे थे तीन सवारियों वाली सीट पर अकेले ही चैन से सो रहे थे। जब कभी पुलिस वाले अथवा सुरक्षा बल वाले आते तो इसकी तलाशी जरूर लेते तब ही वह जागते और पुनः लेट जाते।

जम्मू-काश्मीर की हिंसक वारदातों को ध्यान में रखते हुए रेलवे मंत्रालय ने यात्रियों की सुरक्षा के लिए गाड़ियों में सुरक्षा दल तैनात कर रखे थे जो शक्की लोगों की तलाशी लेते तथा सामान को टटोलते। हमारे डिब्बे में भी दो बार तलाशी ली जा चुकी थी।

(क्रमशः)

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर की 14-7-2002 रविवार की साधारण सभा की बैठक में सर्वसम्मति से श्री इन्द्र कुमार शर्मा जी को वर्ष 2002-2003 के लिए आर्य समाज गोबिन्दगढ़ का प्रधान चुना गया तथा उन्हें अन्य अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य मनोनीत करने का अधिकार दिया गया। उन्होंने निम्न अधिकारी मनोनीत किए।

श्री चतुर्भुज मित्तल-संरक्षक, श्री पं. मुनी लाल शर्मा, श्री सुरेन्द्र बजाज एडवोकेट-प्रतिष्ठित। श्री डा. इन्द्र कुमार शर्मा-प्रधान, श्री पं. ब्रह्मदत्त शर्मा, श्री उमेश सहगल-उपप्रधान, श्री नरेश कुमार-मन्त्री, श्री विनोद शर्मा, श्री सन्दीप शर्मा-उपमन्त्री। श्री सुमीत ×।

अन्तरंग सदस्यः-श्री ओम प्रकाश पुरी, श्री सर्वप्रिय शर्मा, श्री राजेश आर्य, श्री ओम प्रकाश जौहर, श्री राज कुमार गुप्ता, श्रीमती राजरानी ठुकराल, श्री रवि वासुदेवा, श्री जवाहर लाल सूद।

लेखा निरीक्षकः-श्री विश्वामित्र दुग्गल जी। -नरेश कुमार, मन्त्री

भूल सुधार

आर्य मर्यादा के अंक 11-8-2002 के पृष्ठ 6 पर छपा "उद्गीथ साधना स्थली की आवाज" लेख के लेखक श्री यशपाल जी वालिया मन्त्री आर्य समाज कमालपुर, होशियारपुर हैं। वह उद्गीथ साधना स्थली पर लगे शिविरों में भाग लेकर आए हैं और जो कुछ इन्होंने वहां देखा, सुना व जाना उसकी जानकारी उन्होंने इस लेख में दी है। भूल से लेख के साथ उनका नाम नहीं लिखा गया। पाठक कृप्या इस लेख के साथ उनका नाम लिख लें। -धर्मदेव आर्य-सम्पादक

श्रावणी पर्व पर वेदाध्ययन का सन्देश

ले० डॉ० रामनाथ जी वेदालंकार

प्राचीन परम्परा में वेदाध्ययन द्विजमात्र का पवित्र कर्त्तव्य माना जाता था। मनु ने कहा है कि जो वेद नहीं पढ़ता वह इसी जन्म में शूद्रत्व को प्राप्त कर लेता है। पतंजलि कहते हैं कि ब्राह्मण को चाहिए कि वह निष्कारण ही अर्थात् बिना किसी लाभ की आशा के छहों अंगों से युक्त वेद का अध्ययन करे और उसका ज्ञान प्राप्त करे। तो आइये, 'वेद क्यों ?' इसका उत्तर खोजने का यत्न करें।

साहित्यिक दृष्टि

वेदों की गणना उच्चकोटि के साहित्यों में की जाती है। वेद के ही शब्दों में वेद एक ऐसा काव्य है जो न कभी मरता है, न कभी पुराना होता है-देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति (अथर्व 10-8-32)। जो काव्य में उत्कर्षाधायक तत्व अभिधा, लक्षणा, व्यजंना, शब्दालकार, अर्थालंकार आदि माने जाते हैं वे सब वेदकाव्य में उत्कृष्ट रूप में विद्यमान हैं। वेद के शब्दों में विविध अर्थों को देने की जैसी शक्ति उपस्थित है, वैसी ससार की अन्य किसी भी भाषा में नहीं है। वेद के अनेक मंत्र जिस प्रकार अध्यात्म, अधिदैवत, अधियज्ञ, अधिराष्ट्र आदि विविध अर्थों को देने की क्षमता रखते हैं वैसी क्षमता किसी अन्य भाषा के साहित्य में नहीं है। वेदों के मन्त्र कवीन्द्र रवीन्द्र की गीतांजलि के गीतों से अधिक भावपूर्ण हैं। यदि हम कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, श्री हर्ष, बाणभट्ट आदि संस्कृत कवियों के साहित्य को पढ़ने में गौरव अनुभव कर सकते हैं, तो वेद का साहित्य तो उससे भी अधिक प्रांजल है। यदि हम ग्रीक, लेटिन, अंग्रेजी, पारसी, फ्रेंच, रशियन, जर्मन, तमिल, मराठी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी आदि साहित्य को पढ़ते समय यह प्रश्न नहीं उठाते कि इस साहित्य को क्यों पढ़ें तो वैदिक साहित्य के लिए ही प्रश्नचिन्ह क्यों ? साहित्य का अध्ययन स्वान्तःसुखाय होता है, वह स्वान्तःसुख वैदिक साहित्य के मर्म में प्रवेश करने वाले साहित्याराधक को कहीं अधिक प्राप्त हो सकता है।

सांस्कृतिक दृष्टि

वैदिक सस्कृति संसार भर की सस्कृतियो मे एक विशिष्ट संस्कृति है। वर्णाश्रमव्यवस्था यज्ञ, दान, अतिथि-सत्कार, तपस्या, ब्रह्मचर्य, अनिवार्य शिक्षा, आतुरों की सेवा, ईश्वर पूजा, सौहार्द भावना, स्वराज्य, समृद्धि, अग्रगामिता, पाश्विक शक्तियों पर विजय आदि इस संस्कृति के प्रमुख अंग हैं। वैदिक संस्कृति का उपासक जिस स्तर पर खड़ा है उससे और ऊंचा उठना चाहता है। उसकी यह अभीप्सा होती है कि पृथिवी से उठकर मैं अंतरिक्ष में पहुंच जाऊं, अन्तरिक्ष से उठकर द्युलोक में पहुंच जाऊं, द्युलोक से उठकर सर्वलोक में पहुंच जाऊं। इस संस्कृति पर हम नहीं सारा विश्व मुग्द है। वैदिक संस्कृति का अध्ययन करने के लिए ही जर्मनी, इग्लैंड आदि देशों के विद्वानों ने भी वेदों का अध्ययन किया है और इतना परिश्रम किया है कि हमारा परिश्रम उसके आगे हार मानता है, यद्यपि यह दूसरी बात है कि वे कई ऐसे परिणामों पर पहुंचे हैं जिनसे वेदाध्ययन की भारतीय विचारधारा सहमत नहीं हो सकती। जो संस्कृति इतनी महत्वपूर्ण है उसका प्रामाणिक ज्ञान हम वेदों को पढ़कर ही कर सकते हैं। गंभीर और सही पद्धति से वेदों का अध्ययन न होने के कारण पाश्चात्यों ने वैदिक संस्कृति के संबंध में जो कई एक अनर्थमूलक कल्पनाएं कर डाली हैं, उनकी परीक्षा भी हम वेदों का गहन अध्ययन करके ही कर सकते हैं।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि

भाषाविज्ञान पाश्चात्य देशों में नवीन विज्ञान के नाम से उदित हुआ है, जिसे आरम्भ हुए लगभग सवा सौ वर्ष ही हो पाये हैं, यद्यपि भारतीय अलंकारशास्त्री और वैयाकरण पहले ही इसके अनेक अंगों पर पर्याप्त अनुसंधान कर चुके थे। यह भाषाविज्ञान ग्रीक, लेटिन, अंग्रेजी, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, भारत की प्रान्तीय भाषाओं आदि के तुलनात्मक अध्ययन से विकसित हुआ है और आज भी यह विकासोन्मुख ही है, क्योंकि इसके सिद्धान्त अभी अन्तिम रूप से मान्य नहीं कहे जा सकते। इस भाषा विज्ञान के विकास में वैदिक भाषा के अध्ययन ने विशेष योगदान दिया है और आगे भी दे सकता है। आज भाषा विज्ञान में भारोपीय भाषा-परिवार सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण परिवार माना जाता है, जिसका उद्गम किन्हीं अंशों में वैदिक भाषा-परिवार से भिन्न परिवारों को सर्वथा स्वतन्त्र मानता है, और उनका वैदिक भाषा से कोई संबंध नहीं स्वीकार करता। किन्तु वैदिक भाषा के अधिकाधिक तुलनात्मक अध्ययन से भविष्य में संभव है। हम इस परिणाम पर भी पहुंच सके कि सभी भाषा-परिवार किसी सीमा तक वैदिकभाषा से सम्बद्ध है। तब भाषा विज्ञान के क्षेत्र में वेद और भी अधिक महत्व की वस्तु बन जाएंगे एवं भाषावैज्ञानिक दृष्टि से भी वेदों का एवं वैदिकभाषा का अध्ययन स्वागत योग्य है।

धार्मिक दृष्टि

भारतीय धर्म शास्त्र में वेदों का सबसे अधिक महत्व माना गया है। यदि वेद और स्मृति आदि में कहीं परस्पर विरोध हो तो उस दशा में वेद की बात ही प्रामाणिक मानी जाएगी, यह सर्वमान्य सिद्धान्त रहा है। उदाहरणार्थ, यदि किसी स्मृति में स्त्रियों को वेदाध्ययन के अधिकार से वंचित किया गया है तो उस स्मृति की यह बात वेद विरुद्ध होने से मान्य नहीं है। इसी प्रकार यदि किसी धर्मग्रन्थ में यज्ञों में पशुबलि देने का विधान है, तो वह भी वेद विरुद्ध होने से त्याज्य ठहरेगा। मध्यकाल में वेदों के नाम पर अनेक वेद-विरुद्ध बातें बाल-विवाह, छूआछूत, मूर्तिपूजा, अनेकेश्वरवाद, जन्ममूलक वर्णव्यवस्था, मृतक-श्राद्ध आदि प्रचलित हो गई थीं, स्वामी दयानन्द के समय भी चल रही थीं, और पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे जाते हैं कि गोहत्या और गोमांसभक्षण वेदानुमोदित है, वेदों में नारी की घृणित स्थिति है, सतीप्रथा वेद से ही आई है, धार्मिक असहिष्णुता वेदों की देन है आदि। वेदों पर थोंपी जाने वाली इस प्रकार की वेद विरुद्ध बातों का खण्डन हम तभी कर सकेंगे, जब हमारा वेदों का गम्भीर अध्ययन होगा।

धार्मिक दृष्टि से कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध करने के लिए भी वेदाध्ययन की आवश्यकता है। क्या धर्म है और क्या अधर्म है, यह वेद ही बतलाता है। पर वेद उसे ही बतला सकता है, जो वेदज्ञ है। अल्पश्रुत व्यक्ति वेद से धर्माधर्म का बोध प्राप्त नहीं कर सकते। इसीलिए उक्ति प्रसिद्ध है कि अल्पश्रुत व्यक्ति से वेद भय खाता है कि यह तो उल्टा मुझ पर ही प्रहार कर देगा-बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति। यही सब ध्यान में रखकर आर्य समाज के नियमों में यह सम्मिलित किया गया है कि "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।"

आनुसन्धानिक दृष्टि

वैदिक भाषा और वैदिक साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है, यह हम अभी ऊपर कह चुके हैं। भारत के प्राचीन मनीषियों ने वेदों पर बहुत कुछ अनुसंधान किया था। प्रातिशाख्यकारों ने एवं आचार्य पाणिनि आदि वैयाकरणों ने वैदिक भाषा का सूक्ष्म अध्ययन करके तत्संबंधी नियमों का आविष्कार किया था। याज्ञवल्क्य आदि ब्राह्मणग्रन्थकारों एवं श्रौतसूत्रकारों ने वेदों के आधार पर याज्ञिक कर्मकाण्ड तैयार किया था। गृह्यसूत्रकारों ने वेदों के आधार पर जात कर्म, नामकरण आदि संस्कारों की सृष्टि की थी। अनुक्रमणीकारों ने वेदमन्त्रों के ऋषि, देवता, छन्दों का पर्यवेक्षण किया था। वेदों के ही आधार पर आरण्यकग्रन्थों एवं उपनिषदों की रचना हुई थी। ब्राह्मणग्रन्थकारों एवं नैरुक्तों ने वेदार्थ का अनुसंधान किया था। कतिपय वेदभाष्यकार भी इसमें सहायक हुए थे। महर्षि दयानन्द ने इस वेदानुसन्धान को और आगे बढ़ाया। वेद विरुद्ध प्रचलित मिथ्या धारणाओं को बलपूर्वक झकझोरा और सत्य वेदार्थ को प्रकाशित किया। वेदार्थ के सम्बन्ध में अनेक नवीन दिशाओं को प्रशस्त किया। आज भी वेद प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वैदिक भाषा पर, वेदार्थ पर और वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तो पर सही दिशा में अनुसंधान हो. वेदो के अनेक सूक्त रहस्यों से भरे हुए हैं, उन रहस्यों का उद्घाटन आज भी अपेक्षित है। वैदिक भाषा पर प्रातिशाख्यों, पणिनि के वैदिक व्याकरण और मैकडानल की 'वैदिकग्रामर' के होते हुए भी आज भी अनुसंधान की आवश्यकता है। हम वेदानुसंधान की दिशा को पाश्चात्य विचारधारा के चाकचक्य से मुक्त करके उनकी अच्छाइयों को ग्रहण करते हुए एक नया मोड़ दे सकते हैं, और वह नया मोड़ होगा दयानन्द-प्रदर्शित वैदिक मान्यताओं के प्रकाश में।

बालक, युवक, वृद्ध, नर-नारी सभी को चाहिए कि प्रतिदिन वैदिक स्वाध्याय करें, और वेद में जो कर्त्तव्य प्रेरणाएं आशावाद, आत्म-विश्वास एवं अग्रगामिता का संदेश दिया गया है उससे अनुप्राणित होकर जीवन में सदा अग्रगामी बने रहें। प्राचीनकाल में श्रावण पूर्णिमा को वेदाध्ययन का सत्र प्रारम्भ होता था और सम्मिलित वेदपाठ की ध्वनि से दिशाएं मुखरित हो जाती थीं। साथ ही वेदार्थ का अनुसंधान भी होता था। ऋग्वेद के मण्डूक सूक्त में वर्षा ऋतु में मेंढको के संगीत की उपमा व्रतचारी ब्राह्मण बटुओं के सस्वर वेदपाठ से दी गई है। इसी का अनुकरण करते हुए कवि तुलसी ने भी कहा है-'दादुर धुनि चहुं ओर सुहाई, वेद पढ़त जनु बटु समुदाई'। आइये, श्रावणी के पवित्र पर्व पर हम सब मिलकर वेदाध्ययन का व्रत धारण करें।

शोक समाचार

मुझे यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के मैनेजिंग ट्रस्टी, आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान, प्रतिष्ठित समाज सेवी एवं प्रसिद्ध ्योगपति श्री ओंकार नाथ जी, 279 ओ३म् सदन, 36वां रास्ता, बान्द्रा, मुम्बई-400050 जिनके नेतृत्व में पीछे आर्य महासम्मेलन मुम्बई में आर्य समाज के 125वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था, का दिनांक 7-8-2002 बुधवार को 5.30 बजे हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया है।

—राम नाथ सहगल, मन्त्री

आर्य समाज की वर्तमान......
(पृष्ठ 4 का शेष)

को भूल गए हैं। कहते हैं कि वर्तमान ही हमारे भविष्य का निर्माण करता है, यदि आज ऐसा है तो हमारा कल कैसा होगा ? अनेक कारण हैं: स्वाध्याय, प्रमाद, हठ, विचारों की अपवित्रता, ोकेषणा, स्वार्थ और सेवाभाव ी कमी।

ुभते प्रश्न

परन्तु वर्तमान में आर्य समाज ी स्थिति कुछ बदली-बदली सी खाई पड़ती है। हम-आप क्या न्नति के पथ पर चल रहे हैं या वनति की ओर जा रहे हैं ? क्या म प्रकाश की ओर जा रहे हैं या न्धकार के मार्ग पर चल रहे हैं? या हम सत्य मार्ग पर चल रहे हैं ा असत्य के राही बन रहे हैं? परोक्त प्रश्नों का उत्तर क्या हम ्यं नहीं जानते ? जानते तो हैं र भी आचरण में क्यों नहीं तारते ?

ाज की वर्तमान स्थिति क्या -समाधान ढूंढने का प्रयत्न करें-

आर्य समाजों के भवन निर्माण धिक से अधिक होते जा रहे हैं, रन्तु आर्य समाजों के सदस्य कम ा कम होते जा रहे हैं। क्यों ?

आर्य समाजों में बड़े-बूढ़े आते ; युवा पीढ़ी सामने नहीं आती और च्चे बिल्कुल ही नहीं आते। क्यों?

आर्य समाजों में प्रधान, मन्त्री इत्यादि की कुर्सियां पुराने सदस्यों से ही भरी रहती हैं, युवाओं को खड़ा होने भी नहीं देते। क्यों ?

आर्य समाज में सफाई की अधिक आवश्यकता की मांग आती रहती है क्यों ?

आर्य समाजियों की पहचान है-यज्ञोपवीत, संध्या, यज्ञ, ओ३म् और नमस्ते। क्या हममें इनकी पहचान है?

कार्यक्रमों में, महासम्मेलनों में प्रवचन कम और मालाओं से सम्मान अधिक होता है क्यों ?

आर्य समाज "भगवान राम चन्द्र और भगवान कृष्ण चन्द्र" को "भगवान" मानती है, (ईश्वर नहीं) फिर इन महापुरुषों के चित्र भवनों में क्यों नहीं लगाते ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती हम आर्य समाजियों के गुरुवर हैं, फिर भी हम उनके बताए संध्या, यज्ञ इत्यादि की विधियों से विपरीत करते हैं क्यों ?

आर्य समाज के संन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों, लेखकों, गीतकारों का यथायोग्य सम्मान नहीं होता क्यों ?

आर्य समाजों में 'आर्य सेवकों' की कमी है, नेताओं की नहीं क्यों ?

उत्सवों तथा महोत्सवों में जितना धन व्यय होता है, उतना प्रचार-प्रसार में नहीं होता। क्यों ?

हमारे पास धर्म ग्रन्थ हैं । चारों वेद हैं, वैदिक धर्म है, अच्छे वक्ता, संन्यासी और विद्वान् हैं तो भी हमारे उत्सवों में अन्य मत-मतान्तरों के लोग नहीं आते क्यों ?

इन उपरोक्त प्रश्नों पर आर्य समाजों के नेतागण कृपया गम्भीरता-पूर्ण चिन्तन करें और हमारे पाठक गण को उत्तर देने का साहस करें। हम आपके आभारी होंगे।

आर्य समाज के दस नियमो में वेदों-शास्त्रों-दर्शनों का निचोड़ है। इन नियमों का ध्यान पूर्वक पाठ करने के साथ-साथ आचरण करें। यदि अपने में ही परिवर्तन लाने का संकल्प लें, तभी हमारा और समाज का भविष्य उज्जवल हो सकता है, अन्यथा जो ईश्वर की इच्छा. ...

स्वदेशी

□रचयिता श्री गिरीश जोशी, मंत्री 484, आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर (राज.)

गौ रक्षा की बात करो और दूध मंगाओ भैंस का।
मेरा देश महान कहो और कपड़ा पहनो विदेश का॥
ऋषियों ने थी रची नीतियां, स्मृतियां वेद विधान हैं।
संविधान जिसमें 'भारत' की, 'इंडिया' से पहचान हैं।
संशोधित हो रहा सतत् जो नहीं हमारे देश का॥ मेरा देश. ...
विदेशी बैंकों के कर्जों में डूबा हिन्दुस्थान है।
हल्दी, नीम पेटेंट हो रहे, सोता हिन्दुस्थान है।
गौ माता का मांस बेच भंडार भर रहा देश का॥ मेरा ...
बच्चों को पढ़ने भेजेंगे, लंदन, पेरिस, अमरीका,
डेड़, मम्मी का नाम दिया, अपने जिन्दा मां बाप का,
हरी नाम बन गया है हैरी, रोमी बना श्री राम का॥ मेरा......

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना की ओर से 18-8-2002 को पारिवारिक सत्संग श्री अरुण कुमार, अजय कुमार सूद, सिम्पलेक्स हौजरी स्ट्रीट, कपूर टैन्ट हाऊस, जंज घर, सिविल लाईन, कैलाश चौक में सायं 5.30 से 7.30 बजे तक होगा। श्री प्रो. वेदव्रत जी वेदालंकार का उपदेश होगा।

आर्य समाज चौक बठिण्डा में हवन यज्ञ

आर्य समाज चौक बठिण्डा द्वारा दिनांक 3-8-2002 शनिवार को आर्य समाज के प्रांगण में सुख समृद्धि एवम् सद्भावना के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इस हवन यज्ञ में परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह हम पर कृपा कर वर्षा करें एवम् इस सूखे एवम् गर्मी से राहत दिलायें । वर्षा के लिए विशेष आहुतियां दी गईं। यह यज्ञ पूजनीय ब्र० सूर्यदेव जी के ब्रह्मत्व एवम् प ध्रुव कुमार शास्त्री जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

यज्ञ सम्पन्न होते ही श्री प्रेम भाटिया महामंत्री जी ने मंच संभाला एवम् इस हवन यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए उपस्थित सभी आर्य जनों, व आर्य माडल हाई स्कूल के प्रधानाचार्य हुक्म चन्द्र जी गोयल, अध्यापकगण, विद्यार्थियों, विशेष कर शहर की जानी मानी हस्तियों, पूर्व मंत्री पंजाब सरकार श्री सुरेन्द्र कपूर जी व श्री चिरंजी लाल जी गर्ग, पवन कुमार जी जिंदल, श्री वचन दास जी प्रधान लाइब्रेरी, श्री नवरंग लाल जी मित्तल प्रधान एस.एस.डी. गर्ल्ज कालेज बठिण्डा, लाला कुलवन्त राय जी अग्रवाल प्रधान, श्री चमन लाल मेहता प्रबंधक एवम् श्रीमती शान्ति जिन्दल प्रिंसिपल, आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, श्रीमती एस.एल. लाटिका प्रिंसिपल डी ए.वी. पब्लिक सीनियर सैकेंडरी स्कूल बठिण्डा, लाला वजीर चन्द जी संरक्षक जिला आर्य सभा, श्री पी.डी. गोयल प्रधान जिला आर्य सभा, चौ० बाबू राम जी गर्ग प्रधान, श्री एस.पी. अरोड़ा मंत्री गुरुकुल शिल्प विद्यालय बठिण्डा, श्री ओ३म् प्रकाश जी गर्ग प्रधान गोशाला बठिण्डा, श्री बलदेवराज छाबड़ा प्रधान आर्य समाज सिरकी बाजार बठिण्डा, श्री धर्मपाल रल्लन प्रधान आर्य समाज सिकन्दर पुरा, श्री सुरेन्द्र कपूर, आदि ने अपने वक्तव्यों में परमपिता परमात्मा से वर्षा करने की प्रार्थना की।

प्रधान आर्य समाज श्री ओ.पी. मंगला जी ने इस हवन यज्ञ में सम्मिलित होने पर सभी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद किया। उन्होंने विशेषकर उन महानुभावों का धन्यवाद किया जिन्होंने आर्य समाज को दान राशि प्रदान की एवम् सभी से प्रार्थना की कि कार्यक्रम की समाप्ति पर जलपान ग्रहण करके जायें।

जलपान का प्रबंध आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री नवनीत कुमार एवम् उपमंत्री श्री गौरी शंकर जी ने बहुत ही अच्छा किया। शान्ति पाठ उपरान्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—महामन्त्री, आर्य समाज बठिण्डा

वेद प्रचार का 10 दिवसीय कार्यक्रम

बिहार राज्य स्थित नवादा जिले में स्थानीय आर्य समाज की नवादा इकाई ने वेद प्रचार का कार्यक्रम 22 अगस्त से 31 अगस्त 2002 तक बड़े धूमधाम से मनाने का निश्चय किया है। नालन्दा के स्वामी अग्निव्रत जी महाराज की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी हैं। नवादा आर्य समाज के महामंत्री श्री राजेश कुमार तैयारी में संलग्न हैं।

—रविन्द्र कुमार आर्य, कोषाध्यक्ष

वार्षिकोत्सव की भव्य तैयारी

आर्य समाज बलखण्डी नाका, बांदा उत्तर प्रदेश का आगामी वार्षिकोत्सव दिनांक 5 नवम्बर से 12 नवम्बर 2002 तक बड़े समारोह के साथ मनाया जा रहा है। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों से सम्पर्क किया जा रहा है। स्वामी अग्निव्रत जी महाराज की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी हैं।

—वेद प्रकाश गुप्ता, कोषाध्यक्ष

आचार्य हरिप्रसाद आर्य का वेदोपदेश

आर्य समाज जनकपुरी नई दिल्ली के साप्ताहिक सत्संग में आचार्य हरि प्रसाद जी आर्य ने एक वेद मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि ईश्वर वर्चस्वी है, वही वर्चस्व का दाता है। अत: हम उसी से वर्चस्विता की प्राप्ति हेतु कामना करते हैं। हमें दीर्घायु चाहिए तो उसके लिए हमें वेदाज्ञाओं का पालन करना होगा। वर्चस्विता वही चाहता है जो जीवन को आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने का प्रयास करता है। हे अग्ने! आप हमें वर्चस्वी बना दीजिए दीप्ति हेतु। आचमन के जल को देखते हुए दृष्टि ध्यान से करें कि आत्मा जिस शक्ति के द्वारा प्रदीप्त बने। ईश्वर ही इसके आधार हैं। वह तो सदा ही रहता है। ब्रह्मानन्द को प्राप्त करने के लिए योग्यता होनी चाहिए। परमात्मा निर्लिप्त है। वह शरीरों का पालन व रक्षा करने वाला है। हमें अन्य समस्त वस्तुओं को छोड़ कर श रीर का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इसके अभाव में सभी का अभाव हो जाता है। सुख-दुःख तथा आनन्द का भोगता शरीर नहीं अपितु आत्मा है (शरीरी) कर्मफल जीवात्मा शरीर के माध्यम से ही भोगता है। अत: वह सुख दुख से भी रहित है। वही शरीर, आयु एवं वर्चस्विता देने वाला है। समस्त श्रोताओं ने मन्त्र-मुग्ध होकर सुना। श्रोताओं ने कुछ शंकाएं प्रस्तुत कीं, जिनका आचार्य प्रवर ने तुरन्त समाधान शास्त्रीय आधार पर युक्ति युक्त रीति से किया। मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी ने कुछ सूचनाएं दीं तथा इसी मास में 25 से 31 तक होने वाली श्रावणी पर्व. श्री कृष्ण जन्माष्टमी की कथा का विवरण दिया। प्रधान डाक्टर सुन्दर लाल कथूरिया जी ने धन्यवाद किया। —जे.सी. गुलाटी, मन्त्री, आर्य समाज जनकपुरी

चार जिलों का आर्य सम्मेलन

4-8-2002 रविवार को लाला रामशरण दास वेद प्रचार मण्डल हांसी द्वारा आर्य समाज मन्दिर हांसी में एक महत्वपूर्ण कार्यकर्त्ताओं की एक विशेष मीटिंग हुई जिसमें जिला हिसार, भिवानी, सिरसा, फतेहाबाद के आर्य कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। जिसकी अध्यक्षता डॉ० जयसिंह जी आर्य प्रोफेसर (गणित विभाग इन्जीनियरिंग कालेज) ने की। सभा के मुख्य अतिथि श्री हीरानन्द जी आर्य (पूर्व शिक्षा मन्त्री हरियाणा सरकार) रहें। जिसका संचालन आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जबर सिंह जी खारी ने किया। मीटिंग से पूर्व यज्ञ पुरोहित राम किशोर शास्त्री जी द्वारा सम्पन्न किया गया। तत्पश्चात् मीटिंग में मुख्य वक्ताओं में बहन सुमित्रा आर्या श्री डॉ० गौंड साहिब प्रधान आर्य समाज बहल, श्री जगदीश जी शिवर 'प्रधान' आर्य समाज सिरसा, चौ० बदलू राम जी आर्य प्रधान वेद प्रचार मण्डल हिसार, श्री शेर सिंह आर्य निम्पीवाली भिवानी, श्री सुरेन्द्र आर्य, आर्य समाज बोदीवाली, बहन सुदेश जी आर्या चिडौंद हिसार, श्री बलवन्त सिंह आर्य शीशर, श्री जवाहर सिंह आर्य ढाणी पाल, श्री [illegible] सिंह आर्य आर्य समाज डिफैन्स कालोनी हिसार व विभिन्न विद्वानों ने भाग लिया। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को किस तरह बढ़ाया जाए इस विषय पर निम्नलिखित विचारों द्वारा सुझाव प्रस्तुत किये।

आर्य सज्जनों के भवनों पर ओ३म् ध्वज एवं विद्यालयों में वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार तथा उपदेशकों के पास वेद प्रचार-प्रसार हेतु वाहन, साथ ही सुमधुर कैसटें तथा महर्षि दयानन्द द्वारा रचित साहित्य भी गाड़ी में मौजूद हो। गन्दे, अश्लील चुटकले बोलने वाले प्रचारकों पर पाबन्दी लगाई जाए तथा मन से, वचन से, कर्म से एक ही रास्ते पर चला जाये आदि। इस अवसर पर आर्य समाज के पदाधिकारी श्री चौ० देवदत्त जी प्रधान श्री सतीश कुमार आर्य मन्त्री तथा अन्य अधिकारी व सदस्य मौजूद थे। —मन्त्री, सतीश कुमार आर्य

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ । दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

दूरभाष 292926

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 18 सृष्टि संवत 1960853103, 25 अगस्त, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

आर्य समाज में श्री कृष्ण जन्माष्टमी

□ ले० श्री भवसेन जी बी-2, 92/17 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर 146001

इस समय हम आर्य समाज में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाने के लिए यहां एकत्रित हुए हैं। वैसे तो यहां ही नहीं, अपितु इस से भी बड़े स्तर पर अनेक मन्दिरों में आज प्रात: से ही कृष्ण भक्तों का तांता आरम्भ हो चुका है और आज ऐसे लाखों भक्त होंगे। जो अपना सारे दिन का निराहार व्रत आधी रात के पश्चात् ही खोलेंगे और तब तक नाम कीर्तन, नाम स्मरण का प्रवाह प्रवाहित रहेगा। इस स्थिति में स्वत: प्रश्न उभरता है, कि इस अवसर पर आर्य समाज अपनी डेढ़ ईंट अलग क्यों सजा रहा है?

इस प्रसंग में पहली विचारणीय बात यह सामने आती है, कि आर्य समाज क्या है? और यह क्या चाहता है तथा क्या मानता है ? इसके साथ दूसरी प्रश्नमाला यह उभरती है कि यह श्री कृष्ण के किस रूप, चरित को स्वीकार करता है ? क्योंकि हमारे चारों ओर श्री कृष्ण के सम्बन्ध में परस्पर विरोधी बहुत कुछ सुनने और शास्त्रों में पढ़ने को मिलता है। इस प्रसंग में दूसरा प्रश्न यह उठता है, कि आर्य समाज कृष्ण जन्माष्टमी पर्व को किस ढंग से आयोजित करता है ? और तभी यह स्पष्ट हो सकेगा, कि आर्य समाज का यह आयोजन इस रूप में ऐसे क्यों हो रहा है?

ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी की प्रेरणा पर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने सच्चे शिव के दर्शन और मृत्यु विजय के पथ को परोक्ष में कर के जनता में आर्ष ज्ञान का प्रचार करने के लिए प्रवृत्त हुए। विविध नगरों मे प्रचार करते हुए महर्षि ने यह अनुभव किया, कि इस प्रचार कार्य को स्थायी बनाने के लिए यह सामूहिक रूप में जनता के द्वारा ही स्वयं होना चाहिए। तब 1875 में स्वामी जी ने विधिवत आर्य समाज की स्थापना बम्बई (मुम्बई) में की। अत: आर्य समाज महर्षि दयानन्द का प्रतिनिधि होने से एक प्रचारक संगठन है। आर्यत्व का प्रचार करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है और वेद इसका धर्मग्रन्थ है।

आर्य समाज के नियम इसके सिद्धान्तों, मान्यताओं को स्पष्ट करते हैं। आर्य समाज जिस आर्यत्व का प्रसार चाहता है, उसके 'एक ईश्वर की मान्यता, धर्म-अच्छे आचरण का नाम है, सारी मानव जाति की एकता और सभी महापुरुषों का सम्मान' मुख्य मूल सिद्धान्त हैं। इससे स्वत: स्पष्ट हो जाता है, कि आर्य समाज जहां अन्य अनेक सिद्धान्तों को स्वीकार करता है, वहां पर महापुरुषों को भी महत्व देता है। क्योंकि आर्य समाज यह अनुभव करता है, कि आज हम जिन विचारों, व्यवहारों, कार्यों, वस्तुओं का लाभ उठा रहे हैं, उनमें से बहुत कुछ हमें दूसरों से प्राप्त हुआ है। अत: उन-उन की उस-उस देन के प्रति कृतज्ञता, श्रद्धा, आदर, विश्वास प्रकट करने और उनके महान कार्यों, विचारों से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए सभी महापुरुषों का स्मरण करना ही चाहिए और इसके लिए उन उन के पर्व आयोजित किये जाएं। तभी तो कहा है–

काल रूपी रेत पर चिन्ह जो तज जायेंगे।

आदर्श उनको मान कर आगन्तुक ख्याति पायेंगे॥

इसी दृष्टि से आर्य समाज समय-समय पर महापुरुषों के पर्व आयोजित करता है जैसे कि यह पर्व मनाया जा रहा है।

आर्य समाज का सामान्य परिचय और उसकी मान्यता सामने आने पर अब इस प्रश्न का क्रम आता है, कि आर्य समाज श्री कृष्ण के किस रूप को स्वीकार करता है, क्योंकि साहित्य और जनता में अनेक प्रकार के विचार मिलते हैं। जैसे कि महाभारत के धारावाहिक को देखने से एक अपरिचित की यही धारणा बनती है, कि श्री कृष्ण बहुत ही राजनीतिज्ञ थे। मानव एक विचारशील सामाजिक प्राणी है, मनुष्य की सामाजिकता को चरितार्थ करने के लिए धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि अनेक पहलू हैं। मानव समाज का विकास और संरक्षण अच्छाई, सच्चाई पर ही निर्भर है। अत: आर्य समाज श्री कृष्ण के उसी रूप को ही स्वीकार करता है, जो इस मूल भावना को साकार करता है। तभी तो एक स्नातक को दीक्षान्त समारोह पर यह कसौटी दी जाती है, कि '**यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि' तैत्तिरीय उपनिषद्** 1,1,11 अत: जो प्रगति, अच्छाई सहायक हो, वही मान्य, स्मरणीय और ग्राह्य है। वस्तुत: हम से सारे आयोजन उन-उन को सम्मान देने के लिए ही मनाते हैं, न कि उन के अपमान, निन्दा के लिए। तभी तो महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है– 'देखो ! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उस का गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिस में कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।' सत्यार्थ स्थूलक्षर संस्करण समु 11, पृ. 301

हां, आर्य समाज का पांचवां नियम है, कि 'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएं।' अत: जो कुछ धर्म-सत्य के अनुसार है, वही रूप स्वीकार्य है। इस सारे का सारांश यही है, कि आर्य समाज श्री कृष्ण चरित्र के उसी रूप को स्वीकार करता है, जो प्रकृति नियम के अनुकूल तथा असम्भव और परस्पर विरुद्ध, कल्पित नहीं है।

यह सारी रूपरेखा सामने आने पर अब इस बात का विचार करना अपेक्षित हो जाता है, कि आर्य समाज की दृष्टि से महापुरुषों के पर्व किस प्रकार मनाये जाये ? हा, अब उस-उस का भौतिक रूप नही है, अत: कोई भौतिक वस्तु देकर उनको सेवा नही हो सकती। यह तो सर्वमान्य बात है, कि यह महापुरुष अब अभौतिक रूप में ही है। अत: अभौतिक रूप से उनको श्रद्धाजलि दी जा सकती है।

महापुरुषों के पर्वो पर प्राय: धर्म ग्रन्थ का अखण्ड पाठ, नाम कीर्तन, नाम स्मरण, जप, जागरण और व्रत आदि आयोजित किए जाते हैं। क्योंकि ऐसा करने वालो की धारणा है, कि–

सांकेत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव वा।

मुरारि नामग्रहणं नि:शेषा घहरं विदु:॥

श्रीमद् भागवत का अजामिल उपाख्यान आदि अनेक कथन, कथानक प्रचलित हैं।

हां, इस प्रसंग में मनुस्मृतिकार का निर्देश बहुत ही विचारणीय है, कि 'स्वाध्यायेन अर्चमेत ऋषीन् ,, 81 अपने लिए राह [illegible] नों, मार्गदर्शकों ...। स्वाध्याय द्वारा कर। जिसका सीधा सा अर्थ यही निकलता है, कि यदि उस महापुरुष ने कोई ग्रन्थ लिखा है, सन्देश दिया है या उस महापुरुष के सम्बन्ध में कोई मौलिक ग्रन्थ प्राप्त होता है, तो उस-उस का अध्ययन-मनन करना चाहिए। अर्थात् सब से पहले उस-उस महापुरुष के जीवन चरित का स्मरण और उसके विचारों, कार्यों पर विमर्श हो। क्योंकि उसके विचारों, कार्यों के कारण ही किसी का महत्व होता है। जैसे कि श्री कृष्ण जी का उपदेशात्मक सन्देश गीता के रूप में आज भी प्राप्त है। तभी तो कहा है–

व्यास प्रसादाच्छ्रुतवानेतद् गुह्यमहं परम्।

योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयत: स्वयम्॥ गीता 18,75

इस सारे श्लोक का भाव यही है, कि श्री वेदव्यास जी की कृपा से रचित महाभारत में प्राप्त गीता योगेश्वर श्री कृष्ण जी का सन्देश है।

इस विवेचन का सारांश यह है, कि महापुरुषो के सन्देश को अपनाना उसके अधूरे कार्य को पूरा करना, उस द्वारा प्रस्थापित रूप को सतत प्रवाहित रखना ही उसके प्रति श्रद्धा, आदर, सम्मान कहा जा सकता है। ऐसा करके, उस महापुरुष से प्रेरणा प्राप्त करके ही हम आगे बढ सकते हैं। अत: किसी पर्व के आयोजन के ढंग की दृष्टि से मनुस्मृति का 'स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्' 3, 81 कथन प्रत्येक प्रकार से पर्याप्त सुसंगत, व्यावहारिक, लाभप्रद, सार्थक जचता है।

योगेश्वर कृष्ण और उनका कर्मयोग

ले० डॉ० देवव्रत आचार्य

श्रीकृष्ण जी अपने समय के सर्वश्रेष्ठ योद्धा, नीतिज्ञ और योगविद थे जिन्होंने गीता में योग की अनेक विधियों और भेद-प्रभेदों का विस्तार से वर्णन किया है तथापि ज्ञानयोग जिसे सांख्ययोग भी कहते हैं, और कर्मयोग की चर्चा प्रधानता से की है। इन दोनों में भी उनका मत कर्मयोग की ओर प्रतीत होता है। यद्यपि ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। बिना कर्म के ज्ञानयोग की प्राप्ति नहीं हो सकती और ज्ञान के बिना कर्मयोग भी सफल नहीं हो सकता। जैसे पक्षी को आकाश में उड़ान भरने के लिए दोनों पंखों की सहायता लेनी पड़ती है वैसे ही योग साधना में ज्ञान और कर्म इन दोनों का सामञ्जस्य जरूरी है। यदि कोई पूछे कि इनमें कौन-सा मुख्य है इस विषय में गीता कहती है कि ये दोनों पृथक् नहीं है। एक का अनुष्ठान करने पर दूसरे की सिद्धि भी स्वयं ही हो जाती है। परन्तु ज्ञान या संन्यास योग की साधना कठिन है जिसमें उच्चकोटि के संस्कारवान् साधक ही सफल हो पाते हैं। कर्मयोगी को ज्ञानयोग सहज ही में प्राप्त हो जाता है।

कोई भी प्राणी क्षण भर के लिए कर्म किए बिना नहीं रह सकता। ज्ञान और प्रयत्न, ये जीवात्मा के स्वाभाविक गुण हैं। यहां तक कि शरीर यात्रा भी कर्म किए बिना सम्भव नहीं है। जो मूढ़ बुद्धि इन्द्रियों को विषयों में जाने से जबरदस्ती रोकता है, और मन में उन विषयों के भोगने की वासना रखता है, वह मिथ्यावादी और ढोंगी है। प्रकृति के सत्त्व-रज, तम, ये तीन गुण व्यक्ति को न्यूनाधिक प्रमाण में कर्मों में प्रवृत्त कराते ही रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की जैसी प्रकृति या गुण-कर्म-स्वभाव है, वह जैसा कर्म करेगा ही।

अब यह प्रश्न उठता है कि जब कोई व्यक्ति क्षणमात्र भी कर्म करने के बिना नहीं रह सकता और कर्म अनिवार्य है तो अच्छा यही रहेगा कि इनसे छुटकारा पाने के लिए कर्म ही न किए जाएं। न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी। अथवा ऐसा कोई उपाय सोचा जाए कि कर्म बंधन के हेतु न बन सकें। साथ ही कर्मयोग के विषय में विचार करना उचित रहेगा।

सामान्य जन अच्छे, बुरे या दोनों प्रकार के कर्म करते हैं जिनका फल पुण्य-पाप रूप या मिला-जुला हुआ करता है। जैसे चने को भाड़ में भूंजने पर उसमें से अंकुर प्रस्फुटित नहीं होता वैसे ही फल की आकांक्षा से रहित, यज्ञार्थ किए गए और सभी कर्मो को जब परमात्मा को अर्पित कर दिया जाता है तब वे कर्मदग्ध बीज होकर फल देने में असमर्थ हो जाते है। इन पर क्रमशः विचार किया जाता है।

1. निष्काम कर्म

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्माते संगोऽस्त्वकर्मणि।
(गीता 2/47)

हे मानव ! कर्म करना ही तेरा अधिकार है। **'क्रतुमयः पुरुषः'** क्योंकि तू कर्मशील है। बिना कर्म किए नहीं रह सकता। यह तेरा स्वभाव है। जैसे प्रकाश करना सूर्य का धर्म है और वही उसका कर्म तथा अधिकार भी है। कर्म का जो फल मिलता है वह ईश्वराधीन है। इसलिए जब कर्मफल ईश्वराधीन है तो उसे ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। अमुक कर्म करने से मुझे यह फल मिलेगा, यह भावना ही सकाम कर्म का मूल है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि जब ईश्वर ही अपनी इच्छा से कर्मो का फल देगा तो इस अनिश्चय की स्थिति में कर्म ही न किए जाएं। ईश्वर भी कर्मानुसार ही फल देता है। आम बोने वाले को आम और बबूल बोने वाले को कांटे ही मिलते हैं। इसलिए कर्त्तव्य भावना से कर्मों का अनुष्ठान करना चाहिए। सिद्धि, असिद्धि के विषय में सम बुद्धि रखते हुए अर्थात् जो कर्त्तव्य कर्म हैं उसके करने से चाहे लाभ हो या हानि उठानी पड़े, इसकी चिन्ता न करके कर्म करना ही धर्म है। यह समत्व भाव ही योग कहलाता है। इस समत्व बुद्धि से युक्त मनुष्य सुकृत और दुष्कृत दोनों को दूर करता है अर्थात् उनमें आसक्ति भाव नहीं रखता इस स्थिति का नाम ही योग है। **'योगः कर्मसु कौशलम्'** यहां कुशल शब्द पर विचार करना आवश्यक है। यज्ञ कार्य के लिए कुशा (दर्भ) की आवश्यकता होती है। दर्भ को काटकर लाना बहुत सावधानी का कार्य है, अन्यथा हाथ जख्मी हो जाते हैं, उनसे रक्त निकलने लगता है। रक्त के स्पर्श से दर्भ यज्ञीय नहीं रहता इसलिए कुशा लाने के लिए ऐसे समझदार व्यक्ति को भेजा जाता था जो बहुत ही सावधानी के साथ कुशाओं का चयन करके लाएं। ऐसे व्यक्ति का नाम कुशल अर्थात् वो कुशाओं को सावधानी से लाए, प्रसिद्ध हो गया। आगे चलकर किसी भी कार्य को सम्यक् रीति से करने वाले को कुशल कहा जाने लगा। जैसे कमल का पत्ता जल में रहकर भी उससे अलिप्त रहता है वैसे ही जो कर्म करता हुआ उसके फल को ईश्वराधीन जान कर्त्तव्य भाव से करता है, उसके कर्म निष्काम बन जाते हैं। जो मनुष्य मन से इन्द्रियों को वश में रखकर आसक्ति रहित होकर कर्मयोग का अनुष्ठान करता है, वही श्रेष्ठ है। बिना कर्म किए चित्त की शुद्धि नहीं होगी, इसलिए लोग आत्मशुद्धि के लिए निष्काम कर्मो का सेवन करते हैं।

श्रीकृष्ण जी अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि अपने वर्ण और आश्रम के कर्त्तव्यों को करना धर्म है। महाराज जनक, अश्वपति आदि राज्य का संचालन करते हुए भी लोक सिद्धि को प्राप्त हुए हैं। लोक-सग्रह अर्थात् जनता की भलाई, राष्ट्रोन्नति के उपाय, परोपकार आदि कार्यो के लिए योगी लोगों को तत् सम्बन्धी कर्म करते रहने चाहिए। जैसा श्रेष्ठ पुरुष आचरण करते हैं, अन्य लोग भी उनका अनुकरण करते हुए वैसे ही कर्म करते हैं। श्रेष्ठ जन जिस बात को सही बतलाते हैं, साधारण जन वैसा ही मान लेते हैं। हे अर्जुन ! यद्यपि मुझे तीनों लोकों में कुछ भी कर्त्तव्य नहीं रहा है, मेरे लिए कोई वस्तु अप्राप्य नहीं रह गई है, फिर भी मैं कर्म करता ही रहता हूं। अज्ञानी जन जैसे कर्मो के फल में आसक्ति की भावना रखते हुए कर्म करते हैं वैसे ही लोक-संग्रह अर्थात् जन-कल्याण की इच्छा करने वाले विद्वान् पुरुषों को आसक्ति को छोड़कर कर्म करने चाहिएं।

2. यज्ञीय कर्म

कर्मों में पूर्ण निष्काम भाव आना तभी सम्भव है जब वे ईश्वरार्पित भावना से किए जाएं अर्थात् मैं इन कर्मो को ईश्वर को समर्पित करके कर रहा हूं, यह भाव रखा जाए। यह भावना बहुत देर में आती है। इससे पहले यज्ञीय भावना को सामने रखकर कर्म करने चाहिएं। गीता में कहा है-

यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धन।
(गीता 3/9)

अर्थात् यज्ञ के लिए किए गए कर्मों के अतिरिक्त अन्य सब कर्म इस लोक में बन्धन का कारण बनते हैं। इसलिए हे अर्जुन! तू आसक्ति छोड़कर यज्ञ के निमित्त कर्म कर। अभिप्राय यह है कि यज्ञकर्म से मनुष्य का अन्तःकरण शुद्ध होकर वह आसक्ति से छूट निष्काम भाव से कर्म करता है तो इस अवस्था में कर्म उसे बन्धन में नहीं बांधते। इसके विपरीत यज्ञीय भावना से रहित कर्म बन्धन के हेतु बनते हैं। यज्ञ से यहां केवल अग्निहोत्र का ही ग्रहण न होकर प्रत्येक परोपकार कर्म जानना चाहिए। अग्निहोत्र द्रव्ययज्ञ के अन्तर्गत आता है। इसके अतिरिक्त तपो यज्ञ, योग-यज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, ज्ञानयज्ञ, प्राणपान की गति को रोकना आदि सभी शर्तो में गिनाए गए हैं। स्वयं परमात्मा यज्ञ स्वरूप है। इसके द्वारा रचा गया यह संसार भी यज्ञ का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह मानव शरीर भी यज्ञीय है। संगठन भी यज्ञ का वाचक है। सृष्टि के प्रारम्भ में प्रजापति ब्रह्मा ने यज्ञ के साथ प्रजा को उत्पन्न करके कहा-इस यज्ञ द्वारा तुम्हारी वृद्धि होके यह यज्ञ तुम्हारी कामनाओं की पूर्ति करने वाला हो। इस यज्ञ में तुम देवों को सन्तुष्ट करते रहो और वे देव तुम्हें सन्तुष्ट करते रहें। इस प्रकार परस्पर एक-दूसरे को सन्तुष्ट करते हुए तुम सब परम् कल्याण को प्राप्त हो। यज्ञ के सन्तुष्ट हुए देव तुम्हें इच्छित भोग देंगे। इन देवों को न देकर जो अपने आप सुखामभोग करता है वह चोर है। यह करके शेष बचे हुए भाग को खाने वाले सज्जन सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। जो अपने लिए ही अन्न पकाते हैं, वे पापी लोग मानो पाप ही खाते हैं। यज्ञ से वृष्टि होती है। वृष्टि से अन्न उत्पन्न होता है। अन्न से प्राणियों की रक्षा होती है। यह यज्ञ कर्म से सम्पन्न होता है। कर्म (विधि) ज्ञान द्वारा होता है और ज्ञान परमात्मा ने वेद वाणी के रूप में दिया है इसलिए प्रत्येक यज्ञीय कार्य में परमात्मा सदा साथ रहता है और यज्ञकर्त्ता की सहायता भी करता है। यज्ञ करने वाले पहले दूसरों को खिला कर फिर आप खाते हैं तथा असुर पहले अपनी पेट पूजा करते हैं। द्रव्ययज्ञ, अग्निहोत्र, दर्श पूर्णमासेष्टि, भैषज्य यज्ञ करते हुए यज्ञकुण्ड की अग्नि के समान हम अपने हृदय में संकल्प की अग्नि और मस्तिष्क में ज्ञानाग्नि को प्रज्वलित करें। यज्ञ की अग्नि (शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय.....

श्री कृष्ण जन्म दिवस

जन्म दिवस का अपना एक विशेष महत्व होता है वह चाहे बच्चो का जन्म दिवस हो या अपना जन्म दिवस हो या किसी राजनेता व महापुरुष का जन्मदिन हो, वह सब महत्वपूर्ण होता है। हम लगभग अपने सभी महापुरुषों के जन्म दिवस मनाते हैं परन्तु दो महापुरुष ऐसे हैं जिनका जन्म दिवस भारत में ही नहीं भारत से बाहर भी जहां-जहां भारतीय बैठे हैं वहां-वहां तक बड़ी धूमधाम से बड़े समारोह पूर्वक मनाया जाता है। एक हैं मर्यादा पुरुषोत्तम राम, दूसरे हैं योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज। यह दोनों ऐसे महापुरुष हैं जिनके इर्द-गिर्द सारी भारतीय संस्कृति भी घूमती दृष्टि गोचर होती है। इन दोनों महापुरुषों के प्रति प्रत्येक भारतीय की बहुत बड़ी श्रद्धा है और दोनों का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगीराज श्री कृष्ण के जन्म दिन से उनकी जन्म तिथि भी प्रसिद्ध हो गई। श्री राम की जन्म तिथि राम नवमी के नाम से प्रसिद्ध है और श्री कृष्ण की जन्म तिथि कृष्ण जन्माष्टमी के नाम से प्रसिद्ध है। अक्सर भारत के सभी लोग इन दोनों तिथियों को पर्व मान कर मनाते हैं। जैसे हम होली, दीपावली, विजयदशमी आदि पर्वो को मनाते हैं उसी प्रकार बड़े उत्साह से कृष्ण जन्माष्टमी और राम नवमी को भी मनाते हैं।

31 मार्च को भाद्र पद की कृष्ण पक्ष की अष्टमी है। यही श्री कृष्ण जी की जन्मतिथि है। हम इस पर्व को मनाते हुए योगीराज श्री कृष्ण के जीवन के सम्बन्ध में विचार करते हैं और उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन का निर्माण करते हैं। श्री कृष्ण जी गुणों के भण्डारी थे हर प्रकार की कलाओं से पूर्ण थे। सभी प्रकार की योग्यताएं धारण किए हुए थे। वह महान योगी, महान् तपस्वी, महान् चरित्रवान, महान राजनीतिज्ञ और महान गुणों के भण्डारी थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उन्हें आप्त पुरुष कहा है। जिसका जीवन हर प्रकार के तप से परिपूर्ण हो और एक आदर्श जीवन हो उसे आप्त पुरुष कहा जाता है। ऋषियों-मुनियों तपस्वियों को आप्त पुरुष कहा जाता है। महर्षि दयानन्द जी ने स्पष्ट लिखा है कि "श्री कृष्ण ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा (महाभारत में) नहीं लिखा।"

इससे स्पष्ट होता है कि श्री कृष्ण जी का जीवन चरित्र यदि हमने देखना है तो वह हम महाभारत-महान् ग्रन्थ में देखें। महाभारत में श्री कृष्ण जी का बड़ा उज्जवल जीवन चरित्र हमें मिलता है। महर्षि दयानन्द ने इशारा किया है कि श्रीमद् भागवत पुराण वाले ने मन-माने दोष श्री कृष्ण पर लगाए हैं। पुराणों ने योगीराज श्री कृष्ण को भोगी श्री कृष्ण सिद्ध करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। कई प्रकार के दोष उनके जीवन पर लगाए हैं जबकि उनका जीवन धवल व उज्जवल है।

सबसे पूर्व हमारे सामने उनका बालपन आता है। उनका बालपन गोकुल में माता-यशोदा व महात्मा नन्द के घर पर व्यतीत होता है। यह दोनों ही बड़े धर्मात्मा थे, इनके साथ ही परमात्मा ने उन्हें सभी प्रकार के ऐश्वर्य दिए थे। उनका घर धन-धन्य से भरपूर था। हजारों गऊवें उनके घर में थीं दूध व दही की नदियां बहती थीं। पुराणकार ने फिर भी श्री कृष्ण जी को माखनचोर बना दिया जबकि यह सरासर मन घड़न्त दोष श्री कृष्ण पर चोर प्रवृत्ति के लोगों ने लगाया है। श्री कृष्ण महान् चरित्रवान् थे वह गोपियों को अपनी मां-बहनों की तरह समझते थे और इसी रूप में वह उनसे प्यार करते थे और इसी रूप में गोपियां भी उन्हें अपना भाई व बेटा मान कर प्यार करती थी परन्तु जार प्रवृत्ति के लोगों ने अपना दोष छुपाने के लिए श्री कृष्ण जी को भी गोपियों के साथ रास लीला रचाते हुए दिखाया और उन्हें जार बताने का प्रयास किया।

वह एक पत्निव्रती थे उनकी एक ही पत्नि रुकमणी थी। राधा उनकी न धर्मपत्नि थी और न ही कोई प्रेमिका थी। कोई भी योगी भोगी नहीं हो सकता। गीता श्री कृष्ण जी के आध्यात्मिक जीवन का दिग्दर्शन कराती है। जो आत्मा और परमात्मा को जानने वाला है। जो जीवन और मृत्यु को जानने वाला है, जो योग की सभी सिद्धियां जानने वाला है। कर्म और विकर्म व कर्म फल को जानने व मानने वाला है, जो संयमी जीवन का विस्तार से वर्णन करने वाला है, वह असंयमी कभी नहीं हो सकता। वह तो एक पहुंचे हुए योगी थे। जो योग की सभी क्रियाओं को जानने वाले हैं, वह कभी घटिया चरित्र वाले नहीं हो सकते।

महाभारत का अध्ययन करने वाले लोग जानते हैं कि सारे महाभारत में कहीं भी किसी भी रूप में राधा का वर्णन नहीं मिलता यदि राधा से श्री कृष्ण जी का किसी प्रकार का सम्बन्ध होता तो उसका कहीं न कहीं वर्णन महाभारत में भी अवश्य होता जबकि रुक्मणि का वर्णन महाभारत में श्री कृष्ण जी की धर्मपत्नि के रूप में हमें मिलता है। श्री मद् भागवत में भी और बहुत सी बिन सिर पैर की बातें लिखी हैं परन्तु राधा का उसमें भी वर्णन नहीं है। जिससे पता चलता है कि यह सब बातें किसी श्री कृष्ण विरोधी प्रवृत्ति के व्यक्ति ने लिखी हैं क्योंकि यह बातें उनकी शान बढ़ाने वाले नहीं बल्कि शान घटाने वाली हैं।

आर्य समाज श्री कृष्ण के जीवन के उज्जवल पक्ष को मानता है और उन पर झूठा दोष लगाने वाले को दोषी मानता है और उनके गुणों का गान गाता है। आर्य समाज की यह मान्यता है कि कुछ विदेशी लोगों ने भारतीय संस्कृति व भारतीय महापुरुषों को धूमिल करने का प्रयास किया और इसी के परिणाम स्वरूप हमारे प्राचीन ग्रन्थों मे मिलावटें की गई है। हमारे बहुत कम ऐसे ग्रन्थ हैं जिसमें मिलावट नहीं हुई अधिकतर ग्रन्थों में मिलावट हुई है। रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति जैसे ग्रन्थों में भी मिलावट करने वाले ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

आज हमारा देश आजाद है। आज हमें अपने उन सभी ग्रन्थों से मिलावट दूर कर देनी चाहिए जिनमें विदेशियों ने हमारे ही विद्वानों को खरीद कर उनसे ही उसी प्रकार के संस्कृत के श्लोक बनवा कर उन्हें पुनः प्रकाशित करवाया है। हमें अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए और हमारे ग्रन्थों में जो विज्ञान विरुद्ध बातें लिखी हैं या जो भारतीय महापुरुषों के जीवन को धूमिल करने वाली बातें लिखी हैं उन्हें हमें अपने ग्रन्थों से निकाल देना चाहिए ताकि हमारे महापुरुषों का उज्जवल स्वरूप सारे संसार के सामने रखा जा सके।

योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज के साथ तो बहुत अन्याय किया गया है उनका उज्जवल जीवन तो अवश्य ही लोगों के सामने रखना चाहिए। 31 अगस्त को उनका जन्म दिवस मनाते हुए व कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाते हुए आओ उनके चौमुखी उन्नति की ओर प्रेरित करने वाले जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन व अपने बच्चों के जीवन का निर्माण करें।

-धर्मदेव आर्य

ग्राम प्रचार का आदर्श-निनोरा का सामवेद पारायण यज्ञ

डॉ० भवानी लाल भारतीय, 8/423 नन्दन वन, जोधपुर

आर्य समाज का प्रचार अभी कस्बों और नगरों की सीमा से निकल कर गावो तक नही पहुंच पाया है। इस स्थिति मे मध्यप्रदेश के मन्दसौर जिले के एक छोटे से ग्राम निनोरा में मई में सम्पन्न सामवेद पारायण यज्ञ तथा चार दिवसीय वेद प्रचार का कार्यक्रम हमारा मार्ग दर्शन करता है। आर्य समाज के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् डॉ० सोमदेव शास्त्री अपने जन्म स्थान निनोरा मे विगत ग्यारह वर्षो से वेद पारायण यज्ञ तथा धर्म प्रचार का कार्यक्रम रखते हैं। इस वर्ष यह वेद प्रचार पर्व 9 मई से 12 मई तक गांव में निर्मित एक भव्य पण्डाल में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम की यह विशेषता थी कि ग्रामीण जनता-आबाल वृद्ध वनिता, ने सम्पूर्ण कार्यक्रम में रुचिपूर्वक, उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ डॉ० भवानी लाल भारतीय के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। गुरुकुल होशंगाबाद के ब्रह्मचारियो ने स्पष्ट तथा भावस्फूर्त शैली में सामवेद के 1875 मंत्रों का प्रभावशाली पाठ किया। पूर्णाहुति के दिन दर्शकों का उत्साह दर्शनीय था। ऐसा लगता था मानो सारा गांव इस भव्य कार्यक्रम में अपने श्रद्धापुष्प अर्पित करने के लिए एकत्र हो गया हो।

प्रथम दिन प्रातः ग्राम की महिलाओं तथा बालिकाओं ने कलश यात्रा निकाली। इसमें आगन्तुक विद्वान् तथा अन्य पुरुष भी शामिल हुए। वैदिक धर्म के जयघोषों से गांव की गली-गली को गुंजाती हुई यह शोभा-यात्रा यज्ञस्थल पर समाप्त हुई। कलश यात्रा में बैण्ड तथा ग्रामीण वाद्य (ढोल) ईश्वर भक्ति की स्वर लहरियां गुंजा रहे थे। साथ ही ग्राम के एक पण्डित अपने हाथ में पीत वस्त्र आवेष्टित सामवेद संहिता लिए आगे चल रहे थे। यह इस लक्ष्य का परिचायक था कि उपासना प्रधान सामवेद के मंत्रों से यज्ञ सम्पन्न होगा। सम्पूर्ण कार्यक्रम के विधाता तुल्य डॉ० अनिरुद्ध के साथ अग्रिम पंक्ति में थे। पं. नरेश दत्त भजनोपदेशक तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी नगर कीर्तन में अपनी उपस्थिति से आयोजन को भव्यता प्रदान कर रहे थे।

प्रातः सायं यज्ञ के पश्चात् भजनों, प्रवचनों तथा उपदेशों का सिलसिला चारों दिन चलता रहा। प्रसिद्ध भजनोपदेशक चौधरी वेगराज जी, मध्य भारत सभा के विगत भजनोपदेशक श्री विजय सिह जी विजय तथा अपने साथियों सहित पं. नरेशदत्त जी अपने प्रेरणाप्रद भजन गायन से श्रोताओं का ज्ञानवर्धन करते रहे। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० भवानी लाल भारतीय तथा गुरुकुल होशंगाबाद के आचार्य पं० जगदेव नैष्ठिक के प्रेरणादायक प्रवचनों ने श्रोता समुदाय को लाभान्वित किया। यज्ञ के मुख्य यजमान शास्त्री दम्पत्ति तो सामवेद के मन्त्रों की आहुतिया देते ही थे, ग्राम के अन्य लोग भी सपत्नीक सम्मिलित होते तथा गौण यजमान के रूप में भगवान् दूतरशन को हाथ प्रदान करते। गांवों में अभी पर्दा प्रथा का सर्वथा उन्मूलन नहीं हुआ है इसलिए बड़ी संख्या में उपस्थित रहने वाली महिलाओं को घूंघट से अभी मुक्ति नहीं मिल सकी है।

डॉ० सोमदेव जी ने इस कार्यक्रम को सम्पन्न करा कर निनोरा तथा समीपवर्ती गांवों में आर्य समाज के संदेश को प्रसारित करने में सफलता प्राप्त की है। अन्तिम कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए तो आर्य समाज सान्ताक्रुज के सर्वश्री विश्वभूषण, श्री मदन रहेजा, श्री संगीत शर्मा आदि नीमच, तिलाम, छोटी सादड़ी, पीपलिया, नारायणगढ़ आदि स्थानों से आर्य पुरुषों का आना इस बात का सूचक है कि निनोरा के इस कार्यक्रम (यज्ञ-प्रवचन) ने कितना महत्व एवं लोकप्रियता अर्जित कर ली है। इसी कार्यक्रम में निनोरा ग्राम के आर्य वीर दल ने अपना व्यायाम प्रदर्शन किया, साथ ही ग्राम के वृद्ध तथा सामान्य नागरिकों का प्रतिवर्ष अभिनन्दन एवं समाज का कार्यक्रम रख कर डॉ० सोमदेव जी 'अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेवनः' की आर्ष परम्परा को जारी रखा है।

आगन्तुक उपदेशकों तथा अन्य अतिथियों के निवास, जलपान, भोजन आदि की सुचारू व्यवस्था ग्राम्य जनों ने अपने-अपने घरों में सुचारू रीति से की। समस्त ग्राम में यत्र-तत्र ओम् ध्वजाएं लहरा रही थीं तथा घरों के बाहिर 'ओम् क्रतोस्मर' जैसी वैदिक सूक्तियां यह दर्शा रही थीं कि गांव के लोगों में वेदों के प्रति कितना अनुराग है। दिनांक 12 मई को प्रातः यज्ञोपरान्त ब्रह्मचारी अनिरुद्ध (डॉ० सोमदेव जी का कनिष्ठ पुत्र) का उपनयन संस्कार पं० जगदेव नैष्ठिक के द्वारा सम्पन्न हुआ। संस्कार के पूर्व दिन बटुक ने दुग्धाहार कर तपस्वी का आदर्श प्रस्तुत किया। पीत उत्तरीय तथा कौशेय अधोवस्त्र धारण किया। ब्रह्मचारी अनिरुद्ध जब गुरुजनों तथा अन्य ग्राम वासी नर-नारियों से भवान् भिक्षां देहि तथा भवती भिक्षां देहि। उच्चारणपूर्वक भिक्षा हेतु उपस्थित हुआ तो श्रद्धालु जनों की आंखों में प्रेमाश्रु छलक आए और वृद्ध जनों तथा महिलाओं ने बालक का सिर सूंघ कर, ब्लैया लेकर उसे आशीर्वाद सहित भिक्षा दी। भिक्षा में प्राप्त यह राशि गुरुकुल होशंगाबाद को समर्पित कर दी गई।

कार्यक्रम का समापन समस्त ग्राम वासियों एवं अतिथियों के लिए आयोजित बृहद् सहभोज के रूप में हुआ। रुचिकर मिश्रण तथा अन्य व्यंजनों से युक्त इस भोज का आनन्द ग्रामवासी जनों तथा आगुन्तकों ने लिया। 12 मई को प्रमुख समारोह की समाप्ति पर समीपवर्ती कस्बे पीपलिया मण्डी में आर्य वीर दल के सदस्यों ने पथ चलन तथा व्यायाम प्रदर्शन किया जो अत्यन्त प्रभावशाली था। इस कार्यक्रम की समाप्ति कस्बे के चौराहे पर आयोजित एक जनसभा में हुई जिसमें सर्वश्री डॉ० भारतीय, डॉ० सोमदेव शास्त्री तथा श्री प्रकाश एडवोकेट (महू) के प्रभावशाली भाषण हुए। इस प्रकार सुदूर ग्रामीण अंचल में सम्पन्न इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य श्रेय आयोजन के केन्द्र पुरुष डा० सोमदेव को है वहां उनके सहयोगी ग्रामवासी सर्व श्री सत्येन्दु जी व उनके अनुज श्री मिश्वर जी तथा अन्य कार्यकत्ताओं को भी है जिन्होंने रात-दिन एक कर इसे सफल बनाया। जिले के भीतरी भाग में स्थित तथा नागरिक सुख-सुविधाओं का पूर्ण उपभोग ना करने वाले इस ग्राम में भी ग्रामवासी श्रद्धालु लोगों ने अतिथियों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया। निनोरा का यह कार्यक्रम अन्यत्र इसी प्रकार के आयोजन करने की प्रेरणा देता है। जब तक हम अपना संदेश ग्रामीण जनों तक नहीं पहुंचा पायेंगे तब तक 'भारत माता ग्राम वासिनी' के जन-जन तक वेदों का लोकोपयोगी उपदेश नहीं पहुंच पाएगा।

राजनीतिज्ञ श्रीकृष्णं

□ ले० लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र'

जुल्मों की कारा में जन्मे, मुक्ति लिए जन-जन की,
दैत्यों का संहार बन गयी, क्रीड़ाएं बचपन की,
गोकुल में किलके कि ढह गया, क्रूर कंस का शासन,
नहीं फूल फल सकी, भावना किसी पूतना मन की।
भूतल पर आगमन तुम्हारा, लाया नूतन जीवन,
योग बांसुरी की मधु ध्वनि से गूंजा जग का मधुवन,
ऐसा जादू डाला तुमने, ब्रज के जन जीवन पर,
अब तक तुम्हें पुकार रहा है, फिर आओ मनमोहन।
मुस्कानो से काव्य बिखेरा-गिरा बन गयी गीता,
अधरो की माधुरी भर गयी, अमृत से घट रीता,
कर्म हो गया पावन तुम से, धर्म तुम्हीं से जीता,
क्रान्ति तुम्हारी सांसों के ही सग हुई परिणीता।
मृत्यु भीत मानव को तुमने यह सन्देश सुनाया,
आत्मा का अस्तित्व अमर है, नश्वर है यह काया।
हो उद्बुद्ध आत्मा प्रेरित नर, जगे नहीं कायरता,
मोह-ग्रस्त-अर्जुन मिष, तुमने यह रहस्य समझाया।
विस्मृत-सा हो गया हमें वह सत्य-स्वरूप तुम्हारा,
आज हमें विश्वास न होता, यह था रूप तुम्हारा,
योगिराज फिर आज तुम्हे अन्याय निमन्त्रण देते,
ओ ! अनन्य गोपाल, धेनुओं ने फिर तुम्हें पुकारा।

कृष्ण के प्रति—

सप्त शिशु वध कर चुकी थी, क्रूरता अहमन्य,
देवकी वसुदेव-सा, दुखिया नहीं था अन्य,
कंस पाश में पड़ी दृढ़ बेड़ियों के बीच,
मुक्ति को जिसने जना, वह देवकी है धन्य।

राजनीतिज्ञ श्रीकृष्ण

❑ ले० श्री सत्यप्रिय शास्त्री, एम ए

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने श्री कृष्ण जी के सम्बन्ध में जहा जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कोई पाप नहीं किया कहकर उनकी उच्चतम नैतिकता को प्रकट किया वहा यदि श्री कृष्ण के समान कोई होता तो इनके धुर्रे उडाकर रख देता इन शब्दो मे भगवान् कृष्ण के शौर्य युद्ध कौशल एव नीतिमत्ता का प्रतिपादन किया।

महाभारत के एक हजार वर्ष पूर्व भारत का पतन आरम्भ हो चुका था महाभारत तो हमारे पतन की चरम मीमा थी। सभी वैदिक मर्यादाए छिन्न भिन्न हो गई थी ब्राह्मणो को वेतन भोगा अध्यापक माना जाता था जैसे आचार्य द्रोण जन्म के आधार पर भेद भाव के अकुर उग आए थे जैसे कर्ण को वीर होने पर भी राजकुलोत्पन्न न होने से अर्जुन की प्रतिद्वन्दिता से वञ्चित किया गया एकलव्य क राजकुमार न होने मात्र से ही आचार्य द्रोण का शिक्षा देने से इन्कार कर देना। क्षत्रियादि उच्च घरानो मे नैतिकता की सीमाए टट गई थीं। इस दृष्टि से कोरव एव पाण्डवा मे अन्तर नहीं था। बल्कि पाण्डव हल्के ही थे। ऐसे समय मे केवल श्री कृष्ण ही एसा पुरुष था जिसने वैदिक मयादाओ का पालन किया। वैदिक आश्रम व्यवस्था को मूर्त रूप देने का प्रयास किया श्री कृष्ण जी ने राजनीतिक दृष्टि से उस समय राष्ट का जो कल्याण किया देश उसे कभी भुल न सकेगा। यदि यह महापुरुष न होता तो भारत आज से पाच हजार वर्ष पूर्व ही विदेशो का दास बन गया होता। इस दूरदर्शी राजनीतिज्ञ ने अपने अनुपम कौशल से उस गुलामी को चार हजार वर्ष पीछे धकेल दिया विदेशी लोग कौरवो के आश्रय से देश पर हावी होना चाहते थे लेकिन पाण्डव उसके विरोधी थे इसी कारण श्री कृष्ण ने पाण्डवो का पक्ष लकर देश की सीमाओ को सुरक्षित किया इसके अतिरिक्त देश उस समय अनेक खण्डो मे विभक्त था देश का कोई एक प्रबल केन्द्र न था अत श्री कृष्ण ने अपनी सूझ बूझ से देश को एक सशक्त तथा देश की परम्पराओ का रक्षक केन्द्रीय सगठन प्रदान किया जिस का प्रमुख युधिष्ठिर को बनाया गया श्रीकृष्ण की नीति उन्हीं के शब्दो मे सुनिये गीता मे कहते हैं –

ये यथा मा प्रपद्यन्ते तास्तथैव भजाम्यहम्

अर्थात्–मेरे साथ जो जैसा व्यवहार करते हैं मैं भी उनसे वैसा ही व्यवहार करता हू इसी का अन्य कवियो ने यू कहा –

शठे शाठ्य समाचरेत्।

मायाचार मायया वर्तितव्य साध्वाचार साधूना प्रत्युपेय (किरात) व्रजन्ति ते मूढधिया पराभव भवन्ति मार्यावषु ये न मापिन (किरात्)।

अर्थात् जैस के साथ जैसा व्यवहार करो वैसे पराज्य का मुख्य कारण उक्त राजनीति के मूलमन्त्र को भुलाना ही था जब कौरव दल के सभी प्रमुख महारथियो ने युद्ध नियमो के विपरीत अभिमन्यु का वध किया तब श्रीकृष्ण न भी उनके साथ वैसा व्यवहार करके अद्भुत राजनीतिज्ञता का परिचय दिया। काल यवन के आक्रमण करने पर अन्य के माध्यम से उसे मरवा देना यह श्री कृष्ण की अद्भुत राजनैतिक सूझ बूझ थी क्योकि राजनीतिज्ञ क्षेत्र मे हारना अधर्म तथा जीतना ही धर्म है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी सत्यार्थ प्रकाश मे इसे लिखा है। जब श्री कृष्ण दुर्योधन की सभा म सन्धि का सन्देश लेकर गए और वहा अपनी तेजस्वी वक्तृता दी तब सभी के मन श्री कृष्ण के पक्ष मे हो गए परन्तु दुर्योधन जिद पर कायम था अत अपने दोष को छिपाने के लिए उसने श्री कृष्ण को पकड कर जेल म बद करने की योजना बनाई परन्तु श्री कृष्ण ने उससे पूर्व मभी प्रबन्ध कर लिया था। कृष्ण की सेना ने दुर्योधन के राज दरबार को घेर लिया था उसके प्रमुख स्थानो पर श्री कृष्ण के सेनानिया का आधिपत्य था अत दुर्योधन के मन्सूबे मन मे ही रह गए यह उनके अद्भुत राजनीतिज्ञ हाने का प्रमाण है।

श्री कृष्ण के पश्चात् उनकी राजनीति को चाणक्य ने समझा था अत चन्द्रगुप्त के माध्यम से उसने भारत की सीमाओ को दीर्घ काल तक सुरक्षित कर दिया था तत्पश्चात् मुगल काल मे श्री कृष्ण की नीति को दक्षिण मे छत्रपति शिवाजी ने और उत्तर मे बन्दा वैरागी हरिसिह नलवा तथा राजा रणजीत सिह ने समझ कर चरितार्थ किया था इस कारण इनको कभी पराजय का मुख नहीं देखना पडा और स्वतन्त्र भारत मे यदि उस महापुरुष के मार्ग को किसी ने समझा तो अश मे समझा लौह पुरुष स० बल्लभ भाई पटेल की छ सौ रियासतो के विलीनीकरण की समस्या चुटकी बजाते हल हो गई और ससार को पता भी न लगा हा एक ने चू चपड की तो तीन दिन मे ही घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया जैसे कृष्ण ने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ से पूर्व जरासन्ध को सीधा किया था।

स्वतन्त्र भारत के शासको का कर्त्तव्य है कि श्री कृष्ण की राजनीति का गम्भीर अध्ययन करे तथा उनकी नीतियो पर चलते हुए देश को सुरक्षा एव अभ्युदय के मार्ग पर चलावे। स्वतन्त्र भारत को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का इससे उत्कृष्ट और क्या सन्देश हो सकेगा।

अग्ने नये सुपथा राये अस्मान्।

योगेश्वर कृष्ण.....

(पृष्ठ 2 का शेष)

हमारे भावो और अन्त करण को शुद्ध करके हमे अध्यात्म की ओर प्रेरित करे अर्थात् यह यज्ञ ही योग मे बदल जाए ऐसा प्रयास करना चाहिए। बिना इस रहस्य को जाने जो लोग द्रव्ययज्ञ करते हे उनकी आध्यात्मिक मार्ग मे प्रगति नही हाती आर न ही उनमे यज्ञीय भावना का विकास हाता है। कई बार तो यह भा देखा गया ह कि अहकार की ही वृद्धि होती ह। फिर भी न करने से कुछ करना अच्छा है और अग्निहोत्रादि स जलवायु की शुद्धि होती हे तथा देने और त्याग करने की भावना का माग प्रशस्त होता हे इसलिए तीना आश्रमो मे प्रतिदिन अग्निहात्र करने का विधान किया है। वस्तुत अग्निहोत्रादि अन्य यज्ञो के उपलक्षण या प्रतीक मात्र हैं। जैसे अग्नि मे आहुत किए घृत सामग्री समिधादि प्राणी मात्र के लिए हितकारक होते हैं वैसे ही सावजनिक हित के सभी कार्य यज्ञ के अन्तर्गत ही जानने वाला इनक बन्धन से मुक्त हा जाता है। अथवा यह समझना चाहिए कि यज्ञीय कर्मो से निष्काम भावना का उदय होता हे।

3 ईश्वरार्पित कर्म

मयि सर्वाणि कर्माणि सन्यस्याध्यात्म चेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वर ॥

(गीता3/10)

श्री कृष्ण जी कहते है–हे अर्जुन तू सब कर्मो को इश्वरार्पण करके आशारहित ममतारहित और सन्तापरहित होकर युद्ध कर। यहा मयि से अभिप्राय यह नहीं समझना चाहिए कि सभी कर्मों को श्री कृष्ण को अर्पिन कर दे। ऐसे स्थानो म जहा पर मेरा या मुझ मे शब्द का प्रयोग हुआ है वहा ईश्वर का ग्रहण करना चाहिए क्योकि गीता के अठारहवे अध्याय मे कहा हे–

ईश्वर सर्व भूतानाहृद् देशेऽर्जुन तिष्ठति । ईश्वर सब प्राणियो के हृदय मे विराजमान हो रहा है। यहा पर श्री कृष्ण जी अर्जुन को ईश्वर की शरण मे जाने का उपदेश देते हैं जोकि सर्व प्राणियो के हृदय मे विराजमान हा रहा है।

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि प्रत्येक यज्ञीय कार्य मे इश्वर सदेव विराजमान रहता है अर्थात् सहायता करता है। वह स्वय सबसे बडा याज्ञिय और यज्ञस्वरूप है। इसलिए यज्ञार्थ किए गए कम एक प्रकार से ईश्वरार्पित ही बन जाते हे। जो अपने सब कर्मो को ईश्वर की प्रसन्नता के लिए अर्थात् उसको अपण करके करत हैं वे जन्म मरण क बन्धन से छूट जात हे। क्याकि जब कर्मो स ममत्व का भाव छूट गया तो फिर व्यक्ति म पवित्र भाव आने लगते हैं। परमेश्वर सर्वज्ञ और सर्वत्र विद्यमान हे। उसको समर्पण करने के लिए मै यह कर्म कर रहा हू ऐसा निश्चय करते ही मन के हीन विचार दूर भागन लगते हैं। वह जानता है कि ईश्वर मेरे प्रत्येक कर्म का साक्षी है और मैं उसी की प्रीति सम्पादन करने के लिए कर्म कर रहा हू तो फिर हीन कम करेगा ही क्यो। ईश्वर सर्व प्राणिया के हृदय मे विराजमान हो रहा हे यह भाव आते ही व्यक्ति नर सेवा को नारायण सेवा मान जनता और प्राणीमात्र का सेवक बनेगा और पीडितो के कष्टो को दूर करने मे जी जान से लग जाएगा। अब उसकी स्थिति जल मे रहते हुए कमल पत्र के समान हो गइ है। उसका अह भाव दूर हो गया है। योगदर्शन मे इसे ईश्वर प्राणिधान कहा है। अपने समस्त क्रियाकलापो को ईश्वर को समर्पित कर देने का नाम ही ईश्वर प्राणिधान है। ऐसे साधक पर परमेश्वर कृपा कर उसे मोक्षपथ का पथिक बना देते हैं

उपसहार

गाता का कर्मयोग यजुर्वेद के अन्तिम अध्याय के पहले दो मत्र जिनमे सौ वर्ष तक कर्म करने और त्याग सहित उपभोग अर्थात् फल की इच्छा न करते हुए कर्त्तव्य भाव से कर्म करने का उपदेश दिया है उसी का विस्तृत रूप है। यह श्री कृष्ण की अनुपम बुद्धि की देन है जिसमे कर्मों को यज्ञीय भावना या निष्काम भाव से ईश्वगर्पण करते हुए करने पर बल दिया है। इससे इस लोक और परलोक दोनो की प्राप्ति होगी। यह आश्चर्य की बात है कि जहा गाता ने कर्मयोग पर सबसे अधिक ध्यान दिय है वहा गीत को मान्ने वाले ही अधिकाश मे पुरुषार्थ ही होकर भाग्य पर विश्वास रखते हैं। जबकि पुरुषार्थ से ही भाग्य बनता है। जिस दिन इस बात को स्वीकार कर लिया जाएगा उस दिन गीता का उपदेश देना सार्थक होगा।

स्वतन्त्रता-दिवस की हृदय-विदारक स्मृतियां

❑ ले० प्रिं० ओम प्रकाश—आदर्श कुटीर, 3/45 ए, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

15 अगस्त ! हमारा स्वतन्त्रता दिवस !!
हां, भारत मां के लिए 1947 में विदेशी गुलामी !!!
को समाप्त कर, आजादी लाया !!!
पर आजादी के साथ बर्बादी भी आई।
प्राकृतिक तौर पर अखंड इस पावन भूमि के
तीन टुकड़े हो गए !!
'पंजाब' 'दोआब' रह गया।
ब्रह्म पुत्र भी बंट गया
हमारा डी ए.वी कॉलेज लाहौर
हमारा गुरु नानक का जन्म-स्थान
हमारे लिए विदेश बन गए !!!
मुस्लिम लीग की 'टूनेशन थ्यूरी' के आगे झुक कर
ब्रिटिश साम्राज्यशाही की कूटनीति में फंस कर
तत्कालीन राष्ट्रनायक महात्मा गान्धी और
उस समय के सर्वोच्च देश-नेता पं नेहरू ने
भारत माता के टुकड़े करने की स्कीम मान ली।
हिन्दू-सिखों को पाकिस्तान से निकाला गया।
मां-बहनों से बलात्कार किया गया
उनकी छातियां चीरी गईं !!
तड़पती लाशें, बिलखती विधवाएं
रोते अनाथ बच्चे,
इन आंखों को देखने पड़े !!!
देश को स्वतन्त्र कराने का दम भरने वाली
उस समय की सब से बड़ी राजनीतिक पार्टी 'कांग्रेस' ने
भारत की जनता को कई आश्वासन दिए,
अब देश के भीतर साम्प्रदायिकता खत्म हो जाएगी,
पड़ोसी पाकिस्तान के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध होंगे,
व्यक्ति के निर्माण और समाज के उत्थान पर विशेष,
ध्यान दिया जाएगा।
भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग छेड़ी जाएगी।
पर 55 वर्ष की स्वतन्त्रता का इतिहास
तो बड़ी दुःखद दास्तान ही कहता है।
साम्प्रदायिक कट्टरपंथियों ने रेल में
बैठे शान्त लोगों को जिन्दा जलाया
पाकिस्तान ने हमारे जम्मू-कश्मीर को
हड़पने के लिए अक्तूबर 48 में ही हमला कर दिया
और 65 व 71 में युद्ध छेड़े
जम्मू-कश्मीर का तिहाई भाग 48 से ही
उसके कब्जे में है और वह वहां से आतंकवादियों
द्वारा घुसपैठ करवा रहा है तथा नित्य निर्दोष
लोगों की हत्याए करवा रहा है।
आजादी आई, नेताओं को कुर्सी मिल गई।
पहले प्रधानमंत्री जवाहर (47-48) डिक्टेटर टाईप थे
66 मे उनकी पुत्री प्रधानमंत्री बनी
इन्दिरा गाधी
जून 75 मे उसने 19 मास तक एमरजैंसी लगा दी।
राष्ट्रीय भावनाएं लुप्त होती गई, स्वार्थ बढ़ता गया।
अन्त में देश उस मकाम पर पहुंच गया कि
1989-91 व 96 में लोकसभा के चुनाव में
किसी राजनीतिक पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला।
तब जोड़-तोड, राजनीतिक रिश्वत व घोटालों का दौर पनपा।
गबन्धन सरकारों को बनना शुरू हुआ
पहले 13 पार्टियों को जनता दल सरकार 96, 97 में कांग्रेस
व कम्युनिस्टों की बैसाखियों का सहारा लेकर बनी
अतः बहुत देर न चल सकी।
1996 के चुनाव में 'भारतीय जनता पार्टी' सब से बड़ी पार्टी
के रूप में उभरी थी पर उसे दूसरों ने सहयोग न दिया
अतः प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी
ने 13 दिन के बाद ही गद्दी छोड़ दी।

भाजपा ने दूसरों के साथ गठजोड़ किया
और 13 मास तक अटल जी प्रधानमंत्री रहे
एक-दो सहयोगी पार्टियों की कलाबाजियों के कारण
वे केवल एक वोट से ही हारे थे।
1999 में फिर मध्यावधि चुनाव हुआ
गरीब देश का अरबों रुपया बर्बाद हुआ।
अपनी 23 सहयोगी पार्टियों के साथ
जम्मू-कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में
पाकिस्तान पर विजय पाने के कारण
'राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन' (राजग)
अच्छा बहुमत प्राप्त कर पाई और
13 अक्तूबर 99 से वाजपेयी सरकार बनी
बेखटके चल रही है।
उस का पावन कर्त्तव्य है कि अभी-अभी
26 जून को उपप्रधानमंत्री बने
लाल कृष्ण अडवानी के शब्दों में
'स्वराज्य को सुराज्य बनाना है'
को, जनता के साथ मिल कर
साकार करें !!

आर्य समाज बीकानेर का चुनाव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर का निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्नानुसार सम्पन्न हुआ-(सत्र 2002-03 के लिए) प्रधान-श्री शम्भू राम जी यादव, वरिष्ठ अधिवक्ता। उपप्रधान-श्री रामेश्वर लाल आर्य, श्रीमती गौरां देवी, श्री उदय शंकर व्यास तथा श्री जसकरण आर्य।

मंत्री-महेश चन्द्र सोनी, कोषाध्यक्ष-श्री भंवर लाल आर्य, सह-कोषाध्यक्ष-श्री पन्ना लाल कंसेरा, प्रचारमंत्री-श्री कृष्ण लाल आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री नृसिंह दास सोनी, सहपुस्तकालयाध्यक्ष-श्री अमृत देव मिगलानी, लेखा परीक्षक-श्री सोहन लाल आसेरी।

अन्तरंग सदस्य-श्री ठाकुर प्रसाद आर्य, श्रीमती वीणा देवी आर्य, श्री धर्म प्रकाश आर्य, श्रीमती उषा देवी।

—महेश सोनी, मंत्री

आर्य समाज सै. 22 चण्डीगढ़ में स्वतन्त्रता दिवस

आर्य समाज सै०-22 चण्डीगढ़ में 15 अगस्त 2002 को स्वतन्त्रता दिवस बड़े ममारोह पूर्वक मनाया गया। इस समारोह में एम डी ए.वी. स्कूल के बच्चों ने व स्टाफ ने बढ़-चढ़ भाग लिया। बच्चों ने राष्ट्रीय गान गाया और श्री प्रिंसिपल रमेशजीवन ने ध्वजारोहण किया। श्री रमेश जीवन जी ने बच्चों को देश भक्ति का सन्देश देते हुए उन्हें राष्ट्र के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने आई हुई सारी जनता को सम्बोधन किया। इस अवसर पर बच्चों ने देश भक्ति के गीत भी प्रस्तुत किए। कार्यक्रम बड़ा सफल रहा। श्री रामरत्न जी महाजन प्रधान आर्य समाज ने आए हुए सभी लोगों व बच्चों तथा स्टाफ का धन्यवाद किया।

आर्य समाज सैक्टर 22 ने 9 सितम्बर से 15 सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह मनाने का निश्चय किया है जिसमें कई उच्चकोटि के विद्वान् पधार रहे हैं। —मन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज हबीबगंज (अमरपुरा) लुधियाना का 26वां वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना का वार्षिकोत्सव 8-9-10 व 11 अगस्त 2002 को आर्य समाज के विशाल आंगन में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। 8 अगस्त वीरवार प्रातः 7.30 बजे यज्ञ की कारवाई यज्ञशाला के सुन्दर मण्डप में आरम्भ हुई उसमें श्री राजन वधवा, श्री मदन लाल बातश श्री राकेश जी गोल्डी सपरिवार यज्ञमान बने। यज्ञ बड़ी श्रद्धा से आर्य समाज के योग्य पुरोहित प योगराज जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया साथ में उन्होने वेद मन्त्रों की व्याख्या भी बड़े सुन्दर ढंग से की।

यज्ञमानो को आशीर्वाद के पश्चात् श्री भरत सिह मस्ताना के सुन्दर गीत हुए। प्रसिद्ध विद्वान् श्री बाल कृष्ण जी शास्त्री ने यज्ञ की महिमा विस्तारपूर्वक वर्णन की। रात्रि को उत्सव की कार्रवाई 8 30 बजे आरम्भ हुई श्री सत्यपाल जी एण्ड पार्टी एवं श्री योगराज शास्त्री के सुन्दर भजनो के बाद प्रसिद्ध विद्वान् पं विजय कुमार जी शास्त्री ने अपने ओजस्वी भाजण में कहा कि ऋषि दयानन्द के हम पर बहुत उपकार हैं इसलिए हम सबको मिलकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जुट जाना चाहिए। 9 अगस्त को प्रातः यज्ञ के यज्ञमान सुनील गम्भीर, राजेन्द्र गोयल तथा श्री यादव सभी सपरिवार यज्ञमान बने। यज्ञमानो को आशीर्वाद के पश्चात् श्री योगराज के सुन्दर भजन हुए। श्री विजय कुमार जी शास्त्री ने वेदमन्त्रो की व्याख्या करते हुए कहा कि यज्ञ करना सबसे उत्तम कर्म है हमें प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए। इससे यश कीर्ति और सुख प्राप्त होता है।

रात्रि को 8.30 बजे कार्रवाई आरम्भ हुई श्री भरत मस्ताना पार्टी, श्री योगराज शास्त्री के भजनों के बाद ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी बठिण्डे वालों ने भाषण देते हुए कहा कि आर्य समाज ने जहां स्त्री जाति का सम्मान बढ़ाया है वहां नवयुवकों में देश भक्ति एवं वैदिक संस्कृति के लिए प्यार उत्पन्न किया है हमें नवयुवकों और महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाना चाहिए। प विजय कुमार जी शास्त्री ने अपने उपदेश मे रामायण का वर्णन करते हुए कहा कि श्री राम चन्द्र जी सच्चे वैदिक धर्म के अनुयायी थे। उनके महलों में दैनिक यज्ञ होता था हमें उनके मार्ग पर चलते हुए वैदिक धर्म का अनुयायी बनना चाहिए।

10 अगस्त शनिवार प्रातः यज्ञ मे यज्ञमान कवलजीत सपरिवार, श्री मुनीश मदान सपरिवार, श्री सजय कुमार सपरिवार यज्ञमान बने। यज्ञ के पश्चात् श्री योगराज जी शास्त्री के सुन्दर भजनों के पश्चात् पं विजय कुमार ने वेद मंत्रो की सुन्दर व्याख्या की। जिससे जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। रात्री को भी सुन्दर भजन एवं उपदेश हुआ।

11 अगस्त को प्रातः सुरेश कुमार सपरिवार, सतीश कुमार सपरिवार प्रेम सागर भाटिया सपरिवार यज्ञमान बने यज्ञ के पश्चात् आज तक बने सब यज्ञमानों को आशीर्वाद एवं यज्ञ का प्रसाद विद्वानों द्वारा दिया गया। इसके पश्चात् 50 व्यक्तियों को सरोपा एव स्मृति चिन्ह देकर आर्य समाज के संरक्षक श्री वेद भूषण मदान एवं समाज के वरिष्ठ उप प्रधान डा जगदीश चन्द गान्धी जी द्वारा सम्मानित किया गया। इनमें अधिक नवयुवक पुराने आर्य समाजी एवं समाज सेवक थे। ब्रह्मचारी सूर्यदेव तथा श्री विजय कुमार शास्त्री के सुन्दर उपदेशों ने जनता पर अच्छा प्रभाव डाला। इस समय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति एवं सभा महामन्त्री श्री स्वतंत्र कुमार जी, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न सभा उप प्रधान, आर्य समाज में पधारे। उनके साथ पं धर्मदेव जी कार्यालयाध्यक्ष-श्री कमल किशोर प्रधान आर्य समाज भार्गव नगर श्री प्रीतम देव आर्य मोगा, श्री मनोहर लाल आर्य तलवाडा भी थे। उनके पहुचने पर आर्य समाज के प्रधान आशानन्द आर्य, मन्त्री जनकराज भक्त, कोषाध्यक्ष कंवलजीत आर्य, नौजवान सभा के सदस्य स्काऊटस, आर्य युवक सभा, दयानन्द पब्लिक स्कूल के सदस्य और सैंकड़ों लोगों ने उनका स्वागत किया। आर्य स्कूल के बैण्ड ने धुन बजाकर स्वागत किया स्टेज पर पहुंचने पर जनता ने हार पहना कर और जयघोष लगा कर उनका स्वागत करते हुए लुधियाना की जनता की ओर से आभार प्रगट किया कि इतने बड़े व्यक्ति का इस छोटी सी समाज में पधारना हम सब के लिए गौरव की बात है। कुलपति जी और आर्य रत्न जी ने अपना सारा जीवन ऋषि दयानन्द के मिशन को फैलाने के लिए अर्पण किया हुआ है। हम सबको उन्हें पूरा सहयोग देना चाहिए। कुलपति श्री स्वतंत्र कुमार जी ने अपने मधुर भाषण में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वैदिक संस्कृति का प्रचार करने के लिए गुरुकुल की स्थापना की जो आज एक विश्व विद्यालय का रूप धारण कर चुका है और उसकी मशहुरी सारे संसार में है। इस विद्यालय के स्नातकों ने संसार में नाम कमाया है। इस गुरुकुल की महिला शाखा भी देहरादून में है। कई प्रकार की क्लासें हैं योग्य छात्र जो उसमे प्रवेश लेना चाहें उनका स्वागत होगा।

श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने अपने भाषण में कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अब वेद प्रचार के लिए ज्यादा ध्यान देना आरम्भ किया है।

हर जिला में आर्य सम्मेलन करेंगे, प्रान्तीय सम्मेलन भी करेगे। बन्द आर्य समाजो मे भी प्रचार करेगे। नवयुवको को आर्य समाज मे लाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा । इस अवसर पर गुरुकुल बठिण्डा के महामन्त्री आशानन्द आर्य ने घोषणा की कि गुरुकुल बठिण्डा में दिसम्बर के अन्त मे आर्य वीर दल का शिविर ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी की अध्यक्षता में लगा रहे हैं जो नवयुवक लुधियाना से जाना चाहें उनका खर्चा आर्य समाज हबीबगंज देवेगा।

ऋषि लंगर 1 30 बजे से 5 बजे तक चलता रहा। इस उत्सव को सफल बनाने में लुधियाना के सभी बन्धुओं आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजों, आर्य स्कूल के प्रिं० बलराज वर्मा, दयानन्द पब्लिक स्कूल की प्रिंसीपल, आर्य युवक सभा, आर वी स्कूल व नौजवान सभा के सदस्यों ने भरपूर सहायता की। महिला विंग की प्रधाना विनोद गांधी जी का सहयोग सराहनीय था। जनकराज चेयरमैन, कंवलजीत उपप्रधान, सन्दीप कुमार प्रधान जी का काम बहुत सराहनीय रहा।

—जनक राज भक्त

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना की ओर से 25-8-2002 रविवार को पारिवारिक सत्संग श्री डा वाई.सी मनोचा बसन्त रोड (समीप नरकल वेदी श्रीराम शरणम् सत्संग घर) पर सायं 5.30 से 7.30 बजे तक होगा। समय पर पधार कर धर्म लाभ उठावें।

भठिण्डा स्कूल में वेद प्रचार

13 8 2002 को आर्य गर्ल्ज सी सै. स्कूल बठिंडा में आचार्य श्री हरिश्चन्द्र विद्यावाचस्पति जी चित्तौड़गढ़ से पधारे। जैसे कि विद्यालय पहले से ही वेद प्रचार में पूर्णतया लगा हुआ है, हर शनिवार लगातार हवन-यज्ञ तथा प्रतिदिन प्रार्थना-मन्त्रों का उच्चारण करवाया जाता है। इसी वेद-प्रचार की शृंखला में, आर्य समाज बठिण्डा के प्रधान श्री ओ.पी. मंगला जी के सुझाव पर आचार्य जी के प्रवचन प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में करवाये गए। आर्य विद्यालय के मैनेजर श्री चमन लाल जी महत्ता तथा प्रबन्धक समिति के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

सर्वप्रथम प्रधानाचार्या श्रीमती शान्ति जिन्दल जी ने आचार्य जी का बठिंडा पधारने पर हार्दिक स्वागत किया। पुनः श्री मंगला जी ने आचार्य जी के जीवन परिचय व कार्यक्षेत्र पर विस्तार से प्रकाश डाला। श्री वजीरचन्द जी मंगला एवम् स्वर्गीय श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी स्वयं जाकर आचार्य जी के कार्यों को देखकर आये हैं।

आचार्य जी ने छात्राओं को विद्या तथा वैदिक संस्कारों का महत्व बहुत ही सरल भाषा में समझाया कि विद्या एक अपूर्व खजाना है, जो छीना नहीं जा सकता, चुराया व बांटा नहीं जा सकता। मगर इसकी प्राप्ति के लिए मुख्य तीन सूत्र हैं:-श्रम, संयम व श्रद्धा। अपनी इन्द्रियों पर संयम, अत्यधिक मेहनत व गुरु के प्रति श्रद्धा। आपने गुरु-शिष्य सम्बन्ध समझाते हुए अध्यापक वर्ग को भी संकेत में उपदेश किया कि जैसे माता व गर्भस्थ शिशु का सम्बन्ध होता है, माता के खान-पान, आचार-विचार, चिन्तन-मनन हर बात का शिशु पर प्रभाव पड़ता है, ऐसे ही अध्यापक या गुरु की हर छोटी से छोटी बात का, व्यवहार का, आदतों का, भाषा का हर चीज का शिष्य पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए गुरु का व्यवहार अत्यन्त अनुकरणीय होना चाहिए। आचार्य जी ने बहुत कम समय में गागर में सागर भर दिया।

अन्त में मैनेजर श्री महत्ता जी ने बहुत ही अच्छे ढंग से आचार्य जी का व श्रोताओं का धन्यवाद किया। —शान्तिजिन्दल, प्रिंसीपल

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर में वेद सप्ताह

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार अड्डा होशियारपुर जालन्धर में 2 सितम्बर से 8 सितम्बर 2002 तक वेद सप्ताह बड़े समारोह से मनाया जा रहा है जिसमें श्री पं विजय कुमार जी शास्त्री के उपदेश व श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली के भजन होंगे।

आर्य समाज जालन्धर छावनी में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज जालन्धर छावनी में 16 से 22 सितम्बर 2002 तक वेद सप्ताह मनाया जा रहा है। श्री पं निरंजनदेव जी इतिहास केसरी उपदेशु व श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली के भजन होंगे।

आर्य समाज मोगा में वेद सप्ताह

आर्य समाज मोगा में 22 अगस्त रक्षा बन्धन से 31 अगस्त 2002 कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद सप्ताह मनाया जा रहा है। जिसमें सभा के महोपदेशक श्री प विजय कुमार जी शास्त्री तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के उपदेश व भजन होंगे। जिसमें मोगा के सभी आर्य बन्धु व बहनें बढ़ चढ़ कर भाग ले रहे हैं।

आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल भठिण्डा में पुरस्कार वितरण समारोह

श्री सतीश भटनागर व शशी भटनागर अपनी धर्मपत्नियों के साथ पिछले दो वर्षों से हर बार, अपनी स्वर्गीय माता भागवन्ती देवी की स्मृति मे (भागवन्ती मैमोरियल ट्रस्ट की ओर से) दसवीं कक्षा में प्रथम आने वाले एक छात्र को तथा स्कूल के एक सर्वश्रेष्ठ (Best) अध्यापक को सम्मानित करते हैं। माता भागवन्ती पहले छात्र जीवन मे, आर्य गर्ल्ज स्कूल में ही पढ़ा करती थीं, आर्य सिद्धान्तों से उनकी विशेष रुचि थी उनकी स्मृति में पुरस्कार दिए जाते हैं।

इस वर्ष भी 9 8 02 को आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल में दो छात्राओं ने दसवीं कक्षा में समान अंक लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया व उन दोनों को ही 1000/-, 1000/- की नकद-राशि पुरस्कार स्वरूप देकर उनको उत्साहित किया गया।

इसी प्रकार आर्य स्कूल की प्रबन्धक समिति ने इस बार बैस्ट टीचर के लिए प्रधानाचार्या श्रीमती शान्ति जिंदल जी का नाम चयन किया तथा उनको भी 1000/- की नकद राशि देकर विद्यालय के लिए की गई उनकी सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए अत्यधिक मान बढ़ाया।

विद्यालय के मैनेजर श्री चमन लाल महत्ता जी ने बताया कि आपने 25 वर्ष तक एक अध्यापिका के तौर पर भी श्रेष्ठ कार्य व अच्छे परिणाम दिए तथा अब भी पिछले 8 वर्षों से, प्रधानाचार्या के पद पर रहते हुए प्रबन्धक समिति को पूर्ण सहयोग देती हुई स्कूल को कुशल नेतृत्व प्रदान कर रही हैं व विद्यालय दिन दोगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। आपने, उनके व बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए शुभाशीर्वाद दिया।

अन्त में, प्रधानाचार्या जी ने भटनागर भाईयों का हार्दिक धन्यवाद किया। —चमन लाल मेहता, प्रबन्धक,

आर्य समाज तलवाड़ा में पूज्य स्वामी वेदानन्द जी की पुण्य तिथि मनाई गई

आर्य समाज तलवाड़ा द्वारा 18-8-2002 को प्रातः 8 बजे से 11.30 तक स्वामी वेदानन्द जी की पुण्य तिथि मनाई गई।

सुबह 8 बजे पहले यज्ञ किया गया। इस अवसर पर महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल के छात्र, छात्राओं और स्टाफ को यजमानों के आसनों पर बिठाया और सभी ने श्रद्धा से यज्ञ किया। सभी को यज्ञ करने के क्या लाभ है यह भी बताया।

इसके उपरान्त महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल के छात्रों ने बहुत सुन्दर ईश्वर भक्ति के भजन सुनाये और आर्य समाज पर प्रकाश डाला। इसमें 25 छात्रों ने भाग लिया। सभी छात्रों को स्कूल की तरफ से सम्मानित किया गया। नरेश शर्मा जी ने भी 100 रुपए स्कूल के बच्चों की भलाई के लिए दिये।

इसके उपरान्त पं० परमानन्द जी, श्री अमरनाथ जी आर्य श्री मनोहर लाल जी आर्य ने स्वामी जी द्वारा आर्य समाज में किए कार्यो पर, वेद प्रचार को घर-घर पहुंचाने वाले सन्त का ताप दिया और आर्य जगत में उन्होंने युवकों का मसीहा बने कार्य किये। उनकी ही प्रेरणा से बहुत से युवक आर्य समाज आये। आर्य युवक परिषद की स्थापना कर युवा पीढ़ी को आर्य समाज के वारिस के रूप में पेश किया। सभी ने इस पर प्रकाश डाला। स्वामी जी 8 अगस्त 1987 को इसी आर्द समाज में अपनी जीवन यात्रा पूर्ण करते हुए परमात्मा को प्यारे हो गए थे। बाद में प्रसाद वितरण किया गया।

—मनोहर लाल आर्य, मन्त्री

गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ । दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो ओ३म् ...नार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

दूरभाष 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 18 सृष्टि संवत 1960853103, 25 अगस्त, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

आर्य समाज में श्री कृष्ण जन्माष्टमी

❑ ले० श्री भद्रसेन जी बी-2, 92/17 बी, शालीमार नगर, होशियारपुर 146001

इस समय हम आर्य समाज में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाने के लिए यहा एकत्रित हुए हैं। वैसे तो यहां ही नहीं, अपितु इस से भी बड़े स्तर पर अनेक मन्दिरो मे आज प्रात: से ही कृष्ण भक्तों का ताता आरम्भ हो चुका है और आज ऐसे लाखों भक्त होंगे। जो अपना सारे दिन का निराहार व्रत आधी रात के पश्चात् ही खोलेंगे और तब तक नाम कीर्तन, नाम स्मरण का प्रवाह प्रवाहित रहेगा। इस स्थिति में स्वत: प्रश्न उभरता है, कि इस अवसर पर आर्य समाज अपनी डेढ़ ईट अलग क्यों सजा रहा है?

इस प्रसग मे पहली विचारणीय बात यह सामने आती है, कि आर्य समाज क्या है? और यह क्या चाहता है तथा क्या मानता है ? इसके साथ दूसरी प्रश्नमाला यह उभरती है कि यह श्री कृष्ण के किस रूप, चरित को स्वीकार करता है ? क्योंकि हमारे चारों ओर श्री कृष्ण के सम्बन्ध मे परस्पर विरोधी बहुत कुछ सुनने और शास्त्रो में पढने को मिलना है। इस प्रसग में दूसरा प्रश्न यह उठता है, कि आर्य समाज कृष्ण जन्माष्टमी पर्व को किस ढग से आयोजित करता है ? और तभी यह स्पष्ट हो सकेगा, कि आर्य समाज का यह आयोजन इस रूप में ऐसे क्यों हो रहा है?

ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी की प्रेरणा पर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने सच्चे शिव के दर्शन और मृत्यु विजय के पथ को परोक्ष मे कर के जनता मे आर्ष ज्ञान का प्रचार करने के लिए प्रवृत्त हुए। विविध नगरो मे प्रचार करत हुए महर्षि ने यह अनभव किया, कि इस प्रचार कार्य को स्थायी बनाने के लिए यह सामूहिक रूप में जनता के द्वारा ही स्वय होना चाहिए। तब 1875 मे स्वामी जी ने विधिवत आर्य समाज की स्थापना बम्बई (मुम्बई) मे की। अत: आर्य समाज महर्षि दयानन्द का प्रतिनिधि होने से एक प्रचारक संगठन है। आर्यत्व का प्रचार करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है और वेद इसका धर्मग्रन्थ है।

आर्य समाज के नियम इसके सिद्धान्तों, मान्यताओ को स्पष्ट करते हैं। आर्य समाज जिस आर्यत्व का प्रसार चाहता है, उसके 'एक ईश्वर की मान्यता, धर्म-अच्छे आचरण का नाम है, सारी मानव जाति की एकता और सभी महापुरुषों का सम्मान' मुख्य मूल सिद्धान्त हैं। इससे स्वत: स्पष्ट हो जाता है, कि आर्य समाज जहां अन्य अनेक सिद्धान्तों को स्वीकार करता है, वहा पर महापुरुषों को भी महत्व देता है। क्योंकि आर्य समाज यह अनुभव करता है, कि आज हम जिन विचारों, व्यवहारों, कार्यों, वस्तुओं का लाभ उठा रहे हैं, उनमें से बहुत कुछ हमें दूसरो से प्राप्त हुआ है। अत: उन-उन की उस-उस देन के प्रति कृतज्ञता, श्रद्धा, आदर, विश्वास प्रकट करने और उनके महान कार्यो, विचारों से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए सभी महापुरुषो का स्मरण करना ही चाहिए और इसके लिए उन उन के पर्व आयोजित किये जाएं। तभी तो कहा है–

काल रूपी रेत पर चिन्ह जो तज जायेंगे।
आदर्श उनको मान कर आगन्तुक ख्याति पायेंगे॥

इसी दृष्टि से आर्य समाज समय-समय पर महापुरुषो के पर्व आयोजित करता है जैसे कि यह पर्व मनाया जा रहा है।

आर्य समाज का सामान्य परिचय और उसकी मान्यता सामने आने पर अब इस प्रश्न का क्रम आता है, कि आर्य समाज श्री कृष्ण के किस रूप को स्वीकार करता हैं, क्योंकि साहित्य और जनता मे अनेक प्रकार के विचार मिलते है। जैसे कि महाभारत के धारावाहिक को देखने से एक अपरिचित की यही धारणा बनती है, कि श्री कृष्ण बहुत ही राजनीतिज्ञ थे। मानव एक विचारशील सामाजिक प्राणी है, मनुष्य की सामाजिकता को चरितार्थ करने के लिए धार्मिक, सामाजिक शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि अनेक पहलू हैं। मानव समाज का विकास और संरक्षण अच्छाई, सच्चाई पर ही निर्भर है। अत: आर्य समाज श्री कृष्ण के उसी रूप को ही स्वीकार करता है, जो इस मूल भावना को साकार करता है। तभी तो एक स्नातक को दीक्षान्त समारोह पर यह कसौटी दी जाती है, कि '**यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि' तैत्तिरीय उपनिषद्** 1,1,11 अत: जो प्रगति, अच्छाई सहायक हो, वही मान्य, स्मरणीय और ग्राह्य है। वस्तुत: हम से सारे आयोजन उन-उन को सम्मान देने के लिए ही मनाते हैं, न कि उन के अपमान, निन्दा के लिए। तभी तो महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है– 'देखो । श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उस का गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिस में कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।' सत्यार्थ स्थूलक्षर सस्करण समु 11, पृ 30।

हा, आर्य समाज का पाचवां नियम है, कि 'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।' अत: जो कुछ धर्म-सत्य के अनुसार है, वही रूप स्वीकार्य है। इस सारे का सारांश यही है, कि आर्य समाज श्री कृष्ण चरित्र के उसी रूप को स्वीकार करता है, जो प्रकृति नियम के अनुकूल तथा असम्भव और परस्पर विरुद्ध, कल्पित नहीं है।

यह सारी रूपरेखा सामने आने पर अब इस बात का विचार करना अपेक्षित हो जाता है, कि आर्य समाज की दृष्टि से महापुरुषो के पर्व किस प्रकार मनाये जाये ? हा, अब उस-उस का भौतिक रूप नही है, अत. कोई भौतिक वस्तु देकर उनकी सेवा नहीं हो सकती। यह तो सर्वमान्य बात है कि यह महापुरुष अब अभौतिक रूप मे ही हैं। अत: अभौतिक रूप से उनको श्रद्धाञ्जलि दी जा सकती है।

महापुरुषो के पर्वो पर प्राय: धर्म ग्रन्थ का अखण्ड पाठ, नाम कीर्तन, नाम स्मरण, जप, जागरण और व्रत आदि आयोजित किए जाते हैं। क्योंकि ऐसा करने वालो की धारणा है, कि–

सांकेत्य परिहास्यं वा स्तोभ जल्पनमेव वा।
मुरारि नामग्रहणं नि.शेषा घहरं विदु:॥

श्रीमद् भागवत का अजामिल उपाख्यान आदि अनेक कथन, कथानक प्रचलित हैं।

हा, इस प्रसग मे मनुस्मृतिकार का निर्देश बहुत ही विचारणीय हे, कि 'स्वाध्यायेन अर्चमेत ऋषीन् 3, 81 अपने लिए राह दिखाने वालो, मार्गदर्शको का आदर, सम्मान स्वाध्याय द्वारा करें। जिसका सीधा सा अर्थ यही निकलता है, कि यदि उस महापुरुष ने कोई ग्रन्थ लिखा है, सन्देश दिया है या उस महापुरुष के सम्बन्ध में कोई मौलिक ग्रन्थ प्राप्त होता है, तो उस-उस का अध्ययन-मनन करना चाहिए। अर्थात् सब से पहले उस-उस महापुरुष के जीवन चरित का स्मरण और उसके विचारों, कार्यो पर विमर्श हो। क्योंकि उसके विचारो, कार्यो के कारण ही किसी का महत्व होता है। जैसे कि श्री कृष्ण जी का उपदेशात्मक सन्देश गीता के रूप में आज भी प्राप्त है। तभी तो कहा है–

व्यास प्रसादाच्छ्रुतवानेतद् गुह्यमहं परम्।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयत: स्वयम्॥ गीता।18,75

इस सारे श्लोक का भाव यही है, कि श्री वेदव्यास जी की कृपा से रचित महाभारत मे प्राप्त गीता योगेश्वर श्री कृष्ण जी का सन्देश है।

इस विवेचन का साराश यह है कि महापुरुषों के सन्देश को अपनाना उसके अधूरे कार्य को पूरा करना, उस द्वारा प्रस्थापित रूप को सतत प्रवाहित रखना ही उसके प्रति श्रद्धा और सम्मान कहा जा सकता है। ऐसा करके उस महापुरुष से प्रेरणा प्राप्त करके ही हम आगे बढ सकते हे। अत: किसी पर्व के आयोजन के ढंग की दृष्टि से मनुस्मृति का 'स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्' 3 81 कथन प्रत्येक प्रकार से पर्याप्त सुसंगत, व्यावहारिक, लाभप्रद, सार्थक जचता है।

योगेश्वर कृष्ण और उनका कर्मयोग

ले० डॉ० देवव्रत आचार्य

श्रीकृष्ण जी अपने समय के सर्वश्रेष्ठ योद्धा, नीतिज्ञ ओर योगविद थे जिन्होंने गीता में योग की अनेक विधियों और भेद-प्रभेदों का विस्तार से वर्णन किया है तथापि ज्ञानयोग जिसे सांख्ययोग भी कहते हैं, और कर्मयोग की चर्चा प्रधानता से की है। इन दोनों में भी उनका मत कर्मयोग की ओर प्रतीत होता है। यद्यपि ये दोनों एक-दूसरे के पूरक है। बिना कर्म के ज्ञानयोग की प्राप्ति नही हो सकती और ज्ञान के बिना कर्मयोग भी सफल नहीं हो सकता। जैसे पक्षी को आकाश में उड़ान भरने के लिए दोनों पंखों की सहायता लेनी पडती है वैसे ही योग साधना में ज्ञान और कर्म इन दोनो का सामञ्जस्य जरूरी है। यदि कोई पूछे कि इनमें कौन-सा मुख्य है इस विषय में गीता कहती है कि ये दोनों पृथक् नहीं है। एक का अनुष्ठान करने पर दूसरे की सिद्धि भी स्वयं ही हो जाती है। परन्तु ज्ञान या संन्यास योग की साधना कठिन है जिसमें उच्चकोटि के संस्कारवान् साधक ही सफल हो पाते हैं। कर्मयोगी को ज्ञानयोग सहज ही में प्राप्त हो जाता है।

कोई भी प्राणी क्षण भर के लिए कर्म किए बिना नहीं रह सकता। ज्ञान और प्रयत्न, ये जीवात्मा के स्वाभाविक गुण हैं। यहां तक कि शरीर यात्रा भी कर्म किए बिना सम्भव नहीं है। जो मूढ़ बुद्धि इन्द्रियों को विषयों में जाने से जबरदस्ती रोकता है, और मन में उन विषयों के भोगने की वासना रखता है, वह मिथ्यावादी और ढोंगी है। प्रकृति के सत्त्व-रज, तम, ये तीन गुण व्यक्ति को न्यूनाधिक प्रमाण में कर्मो में प्रवृत्त कराते ही रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की जैसी प्रकृति या गुण-कर्म-स्वभाव है, वह जैसा कर्म करेगा ही।

अब यह प्रश्न उठता है कि जब कोई व्यक्ति क्षणमात्र भी कर्म करने के बिना नहीं रह सकता और कर्म अनिवार्य है तो अच्छा यही रहेगा कि इनसे छुटकारा पाने के लिए कर्म ही न किए जाएं। न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी। अथवा ऐसा कोई उपाय सोचा जाए कि कर्म बंधन के हेतु न बन सकें। साथ ही कर्मयोग के विषय मे विचार करना उचित रहेगा।

सामान्य जन अच्छे, बुरे या दोनों प्रकार के कर्म करते हैं जिनका फल पुण्य-पाप रूप या मिला-जुला हुआ करता है। जैसे चने को भाड़ में भूंजने पर उसमें से अंकुर प्रस्फुटित नहीं होता वैसे ही फल की आकांक्षा से रहित, यज्ञार्थ किए गए और सभी कर्मो को जब परमात्मा को अर्पित कर दिया जाता है तब वे कर्मदग्ध बीज होकर फल देने में असमर्थ हो जाते हैं। इन पर क्रमशः विचार किया जाता है।

1. निष्काम कर्म

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।
(गीता 2/47)

हे मानव ! कर्म करना ही तेरा अधिकार है। **'क्रतुमयः पुरुषः'** क्योंकि तू कर्मशील है। बिना कर्म किए नहीं रह सकता। यह तेरा स्वभाव है। जैसे प्रकाश करना सूर्य का धर्म है और वही उसका कर्म तथा अधिकार भी है। कर्म का जो फल मिलता है वह ईश्वराधीन है। इसलिए जब कर्मफल ईश्वराधीन है तो उसे ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। अमुक कर्म करने से मुझे यह फल मिलेगा, यह भावना ही सकाम कर्म का मूल है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि जब ईश्वर ही अपनी इच्छा से कर्मों का फल देगा तो इस अनिश्चय की स्थिति में कर्म ही न किए जाएं। ईश्वर भी कर्मानुसार ही फल देता है। आम बोने वाले को आम और बबूल बोने वाले को कांटे ही मिलते हैं। इसलिए कर्त्तव्य भावना से कर्मों का अनुष्ठान करना चाहिए। सिद्धि, असिद्धि के विषय में सम बुद्धि रखते हुए अर्थात् जो कर्त्तव्य कर्म हैं उसके करने से चाहे लाभ हो या हानि उठानी पड़े, इसकी चिन्ता न करके कर्म करना ही धर्म है। यह समत्व भाव ही योग कहलाता है। इस समत्व बुद्धि से युक्त मनुष्य सुकृत और दुष्कृत दोनों को दूर करता है अर्थात् उनमें आसक्ति भाव नहीं रखता इस स्थिति का नाम ही योग है। **'योगः कर्मसु कौशलम्'** यहां कुशल शब्द पर विचार करना आवश्यक है। यज्ञ कार्य के लिए कुशा (दर्भ) को आवश्यकता होती है। दर्भ को काटकर लाना बहुत सावधानी का कार्य है, अन्यथा हाथ जख्मी हो जाते हैं, उनसे रक्त निकलने लगता है। रक्त के स्पर्श से दर्भ यज्ञीय नहीं रहता इसलिए कुशा लाने के लिए ऐसे समझदार व्यक्ति को भेजा जाता था जो बहुत ही सावधानी के साथ कुशाओं का चयन करके लाएं। ऐसे व्यक्ति का नाम कुशल अर्थात् वो कुशाओं को सावधानी से लाए, प्रसिद्ध हो गया। आगे चलकर किसी भी कार्य को सम्यक् रीति से करने वाले को कुशल कहा जाने लगा। जैसे कमल का पत्ता जल में रहकर भी उससे अलिप्त रहता है वैसे ही जो कर्म करता हुआ उसके फल को ईश्वराधीन जान कर्त्तव्य भाव से करता है, उसके कर्म निष्काम बन जाते हैं। जो मनुष्य मन से इन्द्रियों को वश में रखकर आसक्ति रहित होकर कर्मयोग का अनुष्ठान करता है, वही श्रेष्ठ है। बिना कर्म किए चित्त की शुद्धि नहीं होगी, इसलिए लोग आत्मशुद्धि के लिए निष्काम कर्मो का सेवन करते हैं।

श्रीकृष्ण जी अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि अपने वर्ण और आश्रम के कर्त्तव्यों को करना धर्म है। महाराज जनक, अश्वपति आदि राज्य का संचालन करते हुए भी लोक सिद्धि को प्राप्त हुए हैं। लोक-संग्रह अर्थात् जनता की भलाई, राष्ट्रोन्नति के उपाय, परोपकार आदि कार्यो के लिए योगी लोगों को तत् सम्बन्धी कर्म करते रहने चाहिए। जैसा श्रेष्ठ पुरुष आचरण करते हैं, अन्य लोग भी उनका अनुकरण करते हुए वैसे ही कर्म करते हैं। श्रेष्ठ जन जिस बात को सही बतलाते हैं, साधारण जन वैसा ही मान लेते हैं। हे अर्जुन ! यद्यपि मुझे तीनों लोकों में कुछ भी कर्त्तव्य नहीं रहा है, मेरे लिए कोई वस्तु अप्राप्य नही रह गई है, फिर भी मैं कर्म करता ही रहता हूं। अज्ञानी जन जैसे कर्मो के फल में आसक्ति की भावना रखते हुए कर्म करते हैं वैसे ही लोक-संग्रह अर्थात् जन-कल्याण की इच्छा करने वाले विद्वान् पुरुषों को आसक्ति को छोड़कर कर्म करने चाहिएं।

2. यज्ञीय कर्म

कर्मो में पूर्ण निष्काम भाव आना तभी सम्भव है जब वे ईश्वरार्पित भावना से किए जाएं अर्थात् मैं इन कर्मो को ईश्वर को समर्पित करके कर रहा हूं, यह भाव रखा जाए। यह भावना बहुत देर में आती है। इससे पहले यज्ञीय भावना को सामने रखकर कर्म करने चाहिए। गीता में कहा है-

यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धन।
(गीता 3/9)

अर्थात् यज्ञ के लिए किए गए कर्मों के अतिरिक्त अन्य सब कर्म इस लोक में बन्धन का कारण बनते हैं। इसलिए हे अर्जुन! तू आसक्ति छोड़कर यज्ञ के निमित्त कर्म कर। अभिप्राय यह है कि यज्ञकर्म से मनुष्य का अन्तःकरण शुद्ध होकर वह आसक्ति से छूट निष्काम भाव से कर्म करता है तो इस अवस्था में कर्म उसे बन्धन में नहीं बांधते। इसके विपरीत यज्ञीय भावना से रहित कर्म बन्धन के हेतु बनते हैं। यज्ञ से यहा केवल अग्निहोत्र का ही ग्रहण न होकर प्रत्येक परोपकार कर्म जानना चाहिए। अग्निहोत्र द्रव्ययज्ञ के अन्तर्गत आता है। इसके अतिरिक्त तपो यज्ञ, योग-यज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, ज्ञानयज्ञ, प्राणपान की गति को रोकना आदि सभी शर्तो में गिनाए गए हैं। स्वयं परमात्मा यज्ञ स्वरूप है। इसके द्वारा रचा गया यह संसार भी यज्ञ का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह मानव शरीर भी यज्ञीय है। संगठन भी यज्ञ का वाचक है। सृष्टि के प्रारम्भ में प्रजापति ब्रह्मा ने यज्ञ के साथ प्रजा को उत्पन्न करके कहा-इस यज्ञ द्वारा तुम्हारी वृद्धि होके यह यज्ञ तुम्हारी कामनाओं की पूर्ति करने वाला हो। इस यज्ञ में तुम देवों को सन्तुष्ट करते रहो और वे देव तुम्हें सन्तुष्ट करते रहें। इस प्रकार परस्पर एक-दूसरे को सन्तुष्ट करते हुए तुम सब परम् कल्याण को प्राप्त हो। यज्ञ के सन्तुष्ट हुए देव तुम्हें इच्छित भोग देंगे। इन देवों को न देकर जो अपने आप सुखामभोग करता है वह चोर है। यह करके शेष बचे हुए भाग को खाने वाले सज्जन सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। जो अपने लिए ही अन्न पकाते हैं, वे पापी लोग मानो पाप ही खाते हैं। यज्ञ से वृष्टि होती है। वृष्टि से अन्न उत्पन्न होता है। अन्न से प्राणियों की रक्षा होती है। यह यज्ञ कर्म से सम्पन्न होता है। कर्म (विधि) ज्ञान द्वारा होता है और ज्ञान परमात्मा ने वेद वाणी के रूप में दिया है इसलिए प्रत्येक यज्ञीय कार्य में परमात्मा सदा साथ रहता है और यज्ञकर्त्ता की सहायता भी करता है। यज्ञ करने वाले पहले दूसरों को खिला कर फिर आप खाते हैं तथा असुर पहले अपनी पेट पूजा करते हैं। द्रव्ययज्ञ, अग्निहोत्र, दर्श पूर्णमासेष्टि, भैषज्य यज्ञ करते हुए यज्ञकुण्ड की अग्नि के समान हम अपने हृदय में संकल्प की अग्नि और मस्तिष्क में ज्ञानाग्नि को प्रज्वलित करें। यज्ञ की अग्नि (शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय.....

श्री कृष्ण जन्म दिवस

जन्म दिवस का अपना एक विशेष महत्व होता है वह चाहे बच्चों का जन्म दिवस हो या अपना जन्म दिवस हो या किसी राजनेता व महापुरुष का जन्मदिन हो, वह सब महत्वपूर्ण होता है। हम लगभग अपने सभी महापुरुषों के जन्म दिवस मनाते हैं परन्तु दो महापुरुष ऐसे हैं जिनका जन्म दिवस भारत में ही नहीं भारत से बाहर भी जहां-जहां भारतीय बैठे हैं वहां-वहां तक बड़ी धूमधाम से बड़े समारोह पूर्वक मनाया जाता है। एक हैं मर्यादा पुरुषोत्तम राम, दूसरे हैं योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज। यह दोनों ऐसे महापुरुष हैं जिनके इर्द-गिर्द सारी भारतीय संस्कृति भी घूमती दृष्टि गोचर होती है। इन दोनों महापुरुषों के प्रति प्रत्येक भारतीय की बहुत बड़ी श्रद्धा है और दोनों का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगीराज श्री कृष्ण के जन्म दिन से उनकी जन्म तिथि भी प्रसिद्ध हो गई। श्री राम की जन्म तिथि राम नवमी के नाम से प्रसिद्ध है और श्री कृष्ण की जन्म तिथि कृष्ण जन्माष्टमी के नाम से प्रसिद्ध है। अक्सर भारत के सभी लोग इन दोनों तिथियों को पर्व मान कर मनाते हैं। जैसे हम होली, दीपावली, विजयदशमी आदि पर्वों को मनाते हैं उसी प्रकार बड़े उत्साह से कृष्ण जन्माष्टमी और राम नवमी को भी मनाते हैं।

31 मार्च को भाद्र पद की कृष्ण पक्ष की अष्टमी है। यही श्री कृष्ण जी की जन्मतिथि है। हम इस पर्व को मनाते हुए योगीराज श्री कृष्ण के जीवन के सम्बन्ध में विचार करते हैं और उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन का निर्माण करते हैं। श्री कृष्ण जी गुणों के भण्डारी थे हर प्रकार की कलाओं से पूर्ण थे। सभी प्रकार की योग्यताएं धारण किए हुए थे। वह महान योगी, महान् तपस्वी, महान् चरित्रवान, महान राजनीतिज्ञ और महान गुणों के भण्डारी थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उन्हें आप्त पुरुष कहा है। जिसका जीवन हर प्रकार के तप से परिपूर्ण हो और एक आदर्श जीवन हो उसे आप्त पुरुष कहा जाता है। ऋषियों-मुनियों तपस्वियों को आप्त पुरुष कहा जाता है। महर्षि दयानन्द जी ने स्पष्ट लिखा है कि "श्री कृष्ण ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा (महाभारत में) नहीं लिखा।"

इससे स्पष्ट होता है कि श्री कृष्ण जी का जीवन चरित्र यदि हमने देखना है तो वह हम महाभारत-महान् ग्रन्थ में देखें। महाभारत में श्री कृष्ण जी का बड़ा उज्ज्वल जीवन चरित्र हमें मिलता है। महर्षि दयानन्द ने इशारा किया है कि श्रीमद् भागवत पुराण वाले ने मन-माने दोष श्री कृष्ण पर लगाए हैं। पुराणों ने योगीराज श्री कृष्ण को भोगी श्री कृष्ण सिद्ध करने में कोई कसर नहीं उट रखी। कई प्रकार के दोष उनके जीवन पर लगाए हैं जबकि उनका जीवन धवल व उज्जवल है।

सबसे पूर्व हमारे सामने उनका बालपन आता है। उनका बालपन गोकुल में माता-यशोदा व महात्मा नन्द के घर पर व्यतीत होता है। यह दोनों ही बड़े धर्मात्मा थे, इसके साथ ही परमात्मा ने उन्हें सभी प्रकार के ऐश्वर्य दिए थे। उनका घर धन-धन्य से भरपूर था। हजारों गऊवें उनके घर में थी दूध व दही की नदियां बहती थीं। पुराणकार ने फिर भी श्री कृष्ण जी को माखनचोर बना दिया जबकि यह सरासर मन घड़न्त दोष श्री कृष्ण पर चोर प्रवृत्ति के लोगों ने लगाया है। श्री कृष्ण महान् चरित्रवान् थे वह गोपियों को अपनी मां-बहनों की तरह समझते थे और इसी रूप में वह उनसे प्यार करते थे और इसी रूप में गोपियां भी उन्हें अपना भाई व बेटा मान कर प्यार करती थी परन्तु जार प्रवृत्ति के लोगों ने अपना दोष छुपाने के लिए श्री कृष्ण जी को भी गोपियों के साथ रास लीला रचाते हुए दिखाया और उन्हें जार बताने का प्रयास किया।

वह एक पत्निव्रती थे उनकी एक ही पत्नि रुकमणी थी। राधा उनकी न धर्मपत्नि थी और न ही कोई प्रेमिका थी। कोई भी योगी भोगी नहीं हो सकता। गीता श्री कृष्ण जी के आध्यात्मिक जीवन का दिग्दर्शन कराती है। जो आत्मा और परमात्मा को जानने वाला है। जो जीवन और मृत्यु को जानने वाला है, जो योग की सभी सिद्धियां जानने वाला है। कर्म और विकर्म व कर्म फल को जानने व मानने वाला है, जो संयमी जीवन का विस्तार से वर्णन करने वाला है, वह असंयमी कभी नहीं हो सकता। वह तो एक पहुंचे हुए योगी थे। जो योग की सभी क्रियाओं को जानने वाले हैं, वह कभी घटिया चरित्र वाले नहीं हो सकते।

महाभारत का अध्ययन करने वाले लोग जानते हैं कि सारे महाभारत में कहीं भी किसी भी रूप में राधा का वर्णन नहीं मिलता यदि राधा से श्री कृष्ण जी का किसी प्रकार का सम्बन्ध होता तो उसका कहीं न कहीं वर्णन महाभारत में भी अवश्य होता जबकि रुक्मणि का वर्णन महाभारत में श्री कृष्ण जी की धर्मपत्नि के रूप में हमें मिलता है। श्री मद् भागवत में भी और बहुत सी बिन सिर पैर की बातें लिखी हैं परन्तु राधा का उसमें भी वर्णन नहीं है। जिससे पता चलता है कि यह सब बातें किसी श्री कृष्ण विरोधी प्रवृत्ति के व्यक्ति ने लिखी हैं क्योंकि यह बातें उनकी शान बढ़ाने वाले नहीं बल्कि शान घटाने वाली हैं।

आर्य समाज श्री कृष्ण के जीवन के उज्जवल पक्ष को मानता है और उन पर झूठा दोष लगाने वाले को दोषी मानता है और उनके गुणों का गान गाता है। आर्य समाज की यह मान्यता है कि कुछ विदेशी लोगों ने भारतीय संस्कृति व भारतीय महापुरुषों को धूमिल करने का प्रयास किया और इसी के परिणाम स्वरूप हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मिलावटें की गई है। हमारे बहुत कम ऐसे ग्रन्थ हैं जिसमें मिलावट नहीं हुई अधिकतर ग्रन्थों में मिलावट हुई है। रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति जैसे ग्रन्थों में भी मिलावट करने वाले ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

आज हमारा देश आजाद है। आज हमें अपने उन सभी ग्रन्थों से मिलावट दूर कर देनी चाहिए जिनमें विदेशियों ने हमारे ही विद्वानों को खरीद कर उनसे ही उसी प्रकार के संस्कृत के श्लोक बनवा कर उन्हें पुन: प्रकाशित करवाया है। हमें अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए और हमारे ग्रन्थों में जो विज्ञान विरुद्ध बातें लिखी हैं या जो भारतीय महापुरुषों के जीवन को धूमिल करने वाली बातें लिखी हैं उन्हें हमें अपने ग्रन्थों से निकाल देना चाहिए ताकि हमारे महापुरुषों का उज्जवल स्वरूप सारे संसार के सामने रखा जा सके।

योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज के साथ तो बहुत अन्याय किया गया है उनका उज्जवल जीवन तो अवश्य ही लोगों के सामने रखना चाहिए। 31 अगस्त को उनका जन्म दिवस मनाते हुए व कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाते हुए आओ उनके चौमुखीं उन्नति की ओर प्रेरित करने वाले जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन व अपने बच्चों के जीवन का निर्माण करें।

-धर्मदेव आर्य

ग्राम प्रचार का आदर्श-निनोरा का सामवेद पारायण यज्ञ

डॉ० भवानी लाल भारतीय, 8/423 नन्दन वन, जोधपुर

आर्य समाज का प्रचार अभी कस्बों और नगरों की सीमा से निकल कर गांवों तक नहीं पहुच पाया है। इस स्थिति में मध्यप्रदेश के मन्दसौर जिले के एक छोटे से ग्राम निनोरा में मई में सम्पन्न सामवेद पारायण यज्ञ तथा चार दिवसीय वेद प्रचार का कार्यक्रम हमारा मार्ग दर्शन करता है। आर्य समाज के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् डॉ० सोमदेव शास्त्री अपने जन्म स्थान निनोरा में विगत ग्यारह वर्षो से वेद पारायण यज्ञ तथा धर्म प्रचार का कार्यक्रम रखते हैं। इस वर्ष यह वेद प्रचार पर्व 9 मई से 12 मई तक गाव में निर्मित एक भव्य पण्डाल में मम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम की यह विशेषता थी कि ग्रामीण जनता-आबाल वृद्ध वनिता, ने सम्पूर्ण कार्यक्रम में रुचिपूर्वक, उन्साह से भाग लिया। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ डॉ० भवानी लाल भारतीय के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। गुरुकुल होशंगाबाद के ब्रह्मचारियों न स्पष्ट तथा भावस्फूर्त शैली में सामवेद के 1875 मत्रों का प्रभावशाली पाठ किया। पूर्णाहुति के दिन दर्शकों का उत्साह दर्शनीय था। ऐसा लगता था मानो सारा गाव इस भव्य कार्यक्रम म अपने श्रद्धापुष्प अर्पित करने के लिए एकत्र हो गया हो।

प्रथम दिन प्रात: ग्राम की महिलाओ तथा बालिकाओं ने क्लश यात्रा निकाली। इसमें आगन्तुक विद्वान् तथा अन्य पुरुष भी शामिल हुए। वैदिक धर्म के जयघोषो से गाव की गली-गली को गुजाती हुई यह शोभा-यात्रा यज्ञस्थल पर समाप्त हुई। क्लश यात्रा में बैण्ड तथा ग्रामीण वाद्य (ढोल) ईश्वर भक्ति की स्वर लहरियां गुंजा रहे थे। साथ ही ग्राम के एक पण्डित अपने हाथ मे पीत वस्त्र आवेष्टित सामवेद सहिता लिए आगे चल रहे थे। यह इस लक्ष्य का परिचायक था कि उपासना प्रधान सामवेद के मत्रों से यज्ञ सम्पन्न होगा। सम्पूर्ण कार्यक्रम के विधाता तुल्य डॉ० अनिरुद्ध के साथ अग्रिम पंक्ति में थे। प नरेश दत्त भजनोपदेशक तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी नगर कीर्तन में अपनी उपस्थिति से आयोजन को भव्यता प्रदान कर रहे थे।

प्रात: सायं यज्ञ के पश्चात् भजनों, प्रवचनों तथा उपदेशों का सिलसिला चारों दिन चलता रहा। प्रसिद्ध भजनोपदेशक चौधरी वेगराज जी, मध्य भारत सभा के विगत भजनोपदेशक श्री विजय सिंह जी विजय तथा अपने साथियों सहित प नरेशदत्त जी अपने प्रेरणाप्रद भजन गायन से श्रोताओं का ज्ञानवर्धन करते रहे। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० भवानी लाल भारतीय तथा गुरुकुल होशंगाबाद के आचार्य पं० जगदेव नैष्ठिक के प्रेरणादायक प्रवचनों ने श्रोता समुदाय को लाभान्वित किया। यज्ञ के मुख्य यजमान शास्त्री दम्पत्ति तो सामवेद के मन्त्रों की आहुतियां देते ही थे, ग्राम के अन्य लोग भी सप्तनीक सम्मिलित होते तथा गौण यजमान के रूप में भगवान् दूतरशन को हाथ प्रदान करते। गांवों में अभी पर्दा प्रथा का सर्वथा उन्मूलन नहीं हुआ है इसलिए बड़ी संख्या में उपस्थित रहने वाली महिलाओं को घूंघट से अभी मुक्ति नहीं मिल सकी है।

डॉ० सोमदेव जी ने इस कार्यक्रम को सम्पन्न करा कर निनोरा तथा समीपवर्ती गांवों में आर्य समाज के संदेश को प्रसारित करने में सफलता प्राप्त की है। अन्तिम कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए तो आर्य समाज सान्ताक्रुज के सर्वश्री विश्वभूषण, श्री मदन रहेजा, श्री संगीत शर्मा आदि नीमच, तिलाम, छोटी सादड़ी, पीपलिया, नारायणगढ़ आदि स्थानो मे आर्य पुरुषो का आना इस बात का सूचक है कि निनोरा के इस कार्यक्रम (यज्ञ-प्रवचन) ने कितना महत्व एव लोकप्रियता अर्जित कर ली है। इसी कार्यक्रम मे निनोरा ग्राम के आर्य वीर दल ने अपना व्यायाम प्रदर्शन किया, साथ ही ग्राम के वृद्ध तथा सामान्य नागरिको का प्रतिवर्ष अभिनन्दन एवं समाज का कार्यक्रम रख कर डॉ० सोमदेव जी 'अभिवादनशीलस्य नित्य वृद्धोपसेवन:' की आर्ष परम्परा को जारी रखा है।

आगन्तुक उपदेशकों तथा अन्य अतिथियों के निवास, जलपान, भोजन आदि की सुचारू व्यवस्था ग्राम्य जनों ने अपने-अपने घरों में सुचारू रीति से की। समस्त ग्राम में यत्र-तत्र ओम् ध्वजाएं लहरा रही थीं तथा घरों के बाहिर 'ओम् क्रतोस्मर' जैसी वैदिक सूक्तियां यह दर्शा रही थीं कि गांव के लोगों में वेदों के प्रति कितना अनुराग है। दिनांक 12 मई को प्रात: यज्ञोपरान्त ब्रह्मचारी अनिरुद्ध (डॉ० सोमदेव जी का कनिष्ठ पुत्र) का उपनयन सस्कार पं० जगदेव नैष्ठिक के द्वारा सम्पन्न हुआ। संस्कार के पूर्व दिन बटुक ने दुग्धाहार कर तपस्वी का आदर्श प्रस्तुत किया। पीत उत्तरीय तथा कौशेय अधोवस्त्र धारण किया। ब्रह्मचारी अनिरुद्ध जब गुरुजनों तथा अन्य ग्राम वासी नर-नारियो से भवान् भिक्षां देहि तथा भवती भिक्षां देहि। उच्चारणपूर्वक भिक्षा हेतु उपस्थित हुआ तो श्रद्धालु जनों की आंखों में प्रेमाश्रु छलक आए और वृद्ध जनों तथा महिलाओं ने बालक का सिर सूघ कर, ब्लैया लेकर उसे आशीर्वाद सहित भिक्षा दी। भिक्षा में प्राप्त यह राशि गुरुकुल होशंगाबाद को ममर्पित कर दी गई।

कार्यक्रम का समापन समस्त ग्राम वासियों एवं अतिथियों के लिए आयोजित बृहद् सहभोज के रूप में हुआ। रुचिकर मिश्रण तथा अन्य व्यंजनों से युक्त इस भोज का आनन्द ग्रामवासी जनों तथा आगुन्तकों ने लिया। 12 मई को प्रमुख समारोह की समाप्ति पर समीपवर्ती कस्बे पीपलिया मण्डी में आर्य वीर दल के सदस्यों ने पथ चलन तथा व्यायाम प्रदर्शन किया जो अत्यन्त प्रभावशाली था। इस कार्यक्रम की समाप्ति कस्बे के चौराहे पर आयोजित एक जनसभा में हुई जिसमे सर्वश्री डॉ० भारतीय, डॉ० सोमदेव शास्त्री तथा श्री प्रकाश एडवोकेट (महू) के प्रभावशाली भाषण हुए। इस प्रकार सुदूर ग्रामीण अंचल में सम्पन्न इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे मुख्य श्रेय आयोजन के केन्द्र पुरुष डा० सोमदेव को है वहां उनके सहयोगी ग्रामवासी सर्व श्री सत्येन्दु जी व उनके अनुज श्री मिश्वर जी तथा अन्य कार्यकत्ताओं को भी है जिन्होंने रात-दिन एक कर इसे सफल बनाया। जिले के भीतरी भाग में स्थित तथा नागरिक सुख-सुविधाओं का पूर्ण उपभोग ना करने वाले इस ग्राम में भी ग्रामवासी श्रद्धालु लोगों ने अतिथियों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया। निनोरा का यह कार्यक्रम अन्यत्र इसी प्रकार के आयोजन करने की प्रेरणा देता है। जब तक हम अपना सदेश ग्रामीण जनों तक नहीं पहुंचा पायेंगे तब तक 'भारत माता ग्राम वासिनी' के जन-जन तक वेदों का लोकोपयोगी उपदेश नहीं पहुंच पाएगा।

राजनीतिज्ञ श्रीकृष्णं

❑ ले० लाखनसिंह भदोरिया 'सौमित्र'

जुल्मों की कारा में जन्मे, मुक्ति लिए जन-जन की,
दैत्यों का संहार बन गयी, क्रीड़ाएं बचपन की,
गोकुल में किलके कि ढह गया, क्रूर कंस का शासन,
नहीं फूल फल सकी, भावना किसी पूतना मन की।
भूतल पर आगमन तुम्हारा, लाया नूतन जीवन,
योग बांसुरी की मधु ध्वनि से गूंजा जग का मधुवन,
ऐसा जादू डाला तुमने, ब्रज के जन जीवन पर,
अब तक तुम्हें पुकार रहा है, फिर आओ मनमोहन।
मुस्कानों से काव्य बिखेरा-गिरा बन गयी गीता,
अधरों की माधुरी भर गयी, अमृत से घट रीता,
कर्म हो गया पावन तुम से, धर्म तुम्हीं से जीता,
क्रान्ति तुम्हारी सांसो के ही संग हुई परिणीता।
मृत्यु भीत मानव को तुमने यह सन्देश सुनाया,
आत्मा का अस्तित्व अमर है, नश्वर है यह काया।
हो उद्‌बुद्ध आत्मा प्रेरित नर, जगे नहीं कायरता,
मोह-ग्रस्त-अर्जुन मिष, तुमने यह रहस्य समझाया।
विस्मृत-सा हो गया हमें वह सत्य-स्वरूप तुम्हारा,
आज हमे विश्वास न होता, यह था रूप तुम्हारा,
योगिराज फिर आज तुम्हे अन्याय निमन्त्रण देते,
ओ ! अनन्य गोपाल, धेनुओं ने फिर तुम्हें पुकारा।

कृष्ण के प्रति—

सप्त शिशु वध कर चुकी थी, क्रूरता अहमन्य,
देवकी वसुदेव-सा, दुखिया नहीं था अन्य,
कंस पाश मे पड़ी दृढ बेड़ियों के बीच,
मुक्ति को जिसने जना, वह देवकी है धन्य।

राजनीतिज्ञ श्रीकृष्ण

□ लें० श्री सत्यप्रिय शास्त्री, एम.ए.

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने श्री कृष्ण जी के सम्बन्ध में जहां जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कोई पाप नहीं किया कहकर उनकी उच्चतम नैतिकता को प्रकट किया, वहां यदि श्री कृष्ण के समान कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ाकर रख देता, इन शब्दों में भगवान् कृष्ण के शौर्य युद्ध कौशल एवं नीतिमत्ता का प्रतिपादन किया।

महाभारत के एक हजार वर्ष पूर्व भारत का पतन आरम्भ हो चुका था, महाभारत तो हमारे पतन की चरम सीमा थी। सभी वैदिक मर्यादाएं छिन्न-भिन्न हो गई थी, ब्राह्मणों को वेतन-भोगी अध्यापक माना जाता था जैसे आचार्य द्रोण, जन्म के आधार पर भेद भाव के अंकुर उग आए थे जैसे कर्ण को वीर होने पर भी राजकुलोत्पन्न न होने से अर्जुन की प्रतिद्वन्दिता से वंञ्चित किया गया, एकलव्य के राजकुमार न होने मात्र से ही आचार्य द्रोण का शिक्षा देने से इन्कार कर देना। क्षत्रियादि उच्च घरानों में नैतिकता की सीमाएं टूट गई थीं। इस दृष्टि से कौरव एवं पाण्डवों में अन्तर नहीं था। बल्कि पाण्डव हल्के ही थे। ऐसे समय में केवल श्री कृष्ण ही ऐसा पुरुष था, जिसने वैदिक मर्यादाओं का पालन किया। वैदिक आश्रम व्यवस्था को मूर्त रूप देने का प्रयास किया, श्री कृष्ण जी ने राजनीतिक दृष्टि से उस समय राष्ट्र का जो कल्याण किया देश उसे कभी भुला न सकेगा। यदि यह महापुरुष न होता तो भारत आज से पांच हजार वर्ष पूर्व ही विदेशों का दास बन गया होता। इस दूरदर्शी राजनीतिज्ञ ने अपने अनुपम कौशल से उस गुलामी को चार हजार वर्ष पीछे धकेल दिया. विदेशी लोग कौरवों के आश्रय से देश पर हावी होना चाहते थे लेकिन पाण्डव उसके विरोधी थे. इसी कारण श्री कृष्ण ने पाण्डवों का पक्ष लेकर देश की सीमाओं को सुरक्षित किया, इसके अतिरिक्त देश उस समय अनेक खण्डों में विभक्त था, देश का कोई एक प्रबल केन्द्र न था, अतः श्री कृष्ण ने अपनी सूझ-बूझ से देश को एक सशक्त तथा देश की परम्पराओ का रक्षक केन्द्रीय संगठन प्रदान किया जिस का प्रमुख युधिष्ठिर को बनाया गया, श्रीकृष्ण की नीति उन्हीं के शब्दों में सुनिये गीता में कहते हैं:-

'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्'

अर्थात्-मेरे साथ जो जैसा व्यवहार करते हैं, मैं भी उनसे वैसा ही व्यवहार करता हूं, इसी को अन्य कवियों ने यूं कहा:-

शठे शाठ्यं समाचरेत्।

मायाचार, मायया वर्तित्वयः साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेय (किरात) व्रजन्ति ते मूढ़धिया पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः (किरात्)।

अर्थात्-जैसे के साथ जैसा व्यवहार करो, वैसे पराजय का मुख्य कारण उक्त राजनीति के मूलमन्त्र को भुलाना ही था, जब कौरव दल के सभी प्रमुख महारथियों ने युद्ध नियमों के विपरीत अभिमन्यु का वध किया तब श्रीकृष्ण ने भी उनके साथ वैसा व्यवहार करके अद्भुत राजनीतिज्ञता का परिचय दिया। काल यवन के आक्रमण करने पर अन्य के माध्यम से उसे मरवा देना यह श्री कृष्ण की अद्भुत राजनैतिक सूझ-बूझ थी. क्योंकि राजनीतिज्ञ क्षेत्र में 'हारना अधर्म तथा जीतना ही धर्म है', महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी सत्यार्थ प्रकाश में इसे लिखा है। जब श्री कृष्ण दुर्योधन की सभा में सन्धि का सन्देश लेकर गए और वहां अपनी तेजस्वी वक्तृता दी तब सभी के मन श्री कृष्ण के पक्ष में हो गए, परन्तु दुर्योधन जिद पर कायम था, अतः अपने दोष को छिपाने के लिए उसने श्री कृष्ण को पकड़ कर जेल में बंद करने की योजना बनाई, परन्तु श्री कृष्ण ने उससे पूर्व सभी प्रबन्ध कर लिया था। कृष्ण की सेना ने दुर्योधन के राज-दरबार को घेर लिया था, उसके प्रमुख स्थानों पर श्री कृष्ण के सेनानियों का आधिपत्य था, अतः दुर्योधन के मन्सूबे मन में ही रह गए, यह उनके अद्भुत राजनीतिज्ञ होने का प्रमाण है।

श्री कृष्ण के पश्चात् उनकी राजनीति को चाणक्य ने समझा था, अतः चन्द्रगुप्त के माध्यम से उसने भारत की सीमाओं को दीर्घ काल तक सुरक्षित कर दिया था, तत्पश्चात् मुगल काल में श्री कृष्ण की नीति को दक्षिण में छत्रपति शिवाजी ने और उत्तर में बन्दा वैरागी, हरिसिंह नलवा तथा राजा रणजीत सिंह ने समझ कर चरितार्थ किया था, इस कारण इनको कभी पराजय का मुख नहीं देखना पड़ा और स्वतन्त्र भारत में यदि उस महापुरुष के मार्ग को किसी ने समझा तो अंश मे समझा लौह पुरुष स० वल्लभ भाई पटेल को छः सौ रियासतों के विलीनीकरण की समस्या चुटकी बजाते हल हो गई और संसार को पता भी न लगा, हां एक ने चूं-चपड़ की तो तीन दिन में ही घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया, जैसे कृष्ण ने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ से पूर्व जरासन्ध को सीधा किया था।

स्वतन्त्र भारत के शासकों का कर्त्तव्य है कि श्री कृष्ण की राजनीति का गम्भीर अध्ययन करें तथा उनकी नीतियों पर चलते हुए देश को सुरक्षा एवं अभ्युदय के मार्ग पर चलावें। स्वतन्त्र भारत को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का इससे उत्कृष्ट और क्या सन्देश हो सकेगा।

अग्ने नये सुपथा राये अस्मान्।

योगेश्वर कृष्ण.....

(पृष्ठ 2 का शेष)

हमारे भावों और अन्तःकरण को शुद्ध करके हमें अध्यात्म की ओर प्रेरित करें अर्थात् यह यज्ञ ही योग में बदल जाए ऐसा प्रयास करना चाहिए। बिना इस रहस्य को जाने जो लोग द्रव्ययज्ञ करते हैं उनकी आध्यात्मिक मार्ग में प्रगति नहीं होती और न ही उनमें यज्ञीय भावना का विकास होता है। कई बार तो यह भी देखा गया है कि अहंकार की ही वृद्धि होती है। फिर भी न करने से कुछ करना अच्छा है और अग्निहोत्रादि से जलवायु की शुद्धि होती है, तथा देने और त्याग करने की भावना का मार्ग प्रशस्त होता है इसलिए तीनों आश्रमों में प्रतिदिन अग्निहोत्र करने का विधान किया है। वस्तुतः अग्निहोत्रादि अन्य यज्ञों के उपलक्षण या प्रतीक मात्र हैं। जैसे अग्नि में आहुत किए घृत, सामग्री, समिधादि प्राणी मात्र के लिए हितकारक होते हैं वैसे ही सार्वजनिक हित के सभी कार्य यज्ञ के अन्तर्गत ही जानने वाला इनके बन्धन से मुक्त हो जाता है। अथवा यह समझना चाहिए कि यज्ञीय कर्मो से निष्काम भावना का उदय होता है।

3. ईश्वरार्पित कर्म

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्म चेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः॥

(गीता3/10)

श्री कृष्ण जी कहते हैं-हे अर्जुन ! तू सब कर्मो को ईश्वरार्पण करके आशारहित, ममतारहित और सन्तापरहित होकर युद्ध कर। यहां मयि से अभिप्रायः यह नहीं समझना चाहिए कि सभी कर्मो को श्री कृष्ण को अर्पित कर दें। ऐसे स्थानो में जहां पर मेरा या मुझ मे शब्द का प्रयोग हुआ है वहां ईश्वर का ग्रहण करना चाहिए क्योंकि गीता के अठारहवें अध्याय में कहा है- **'ईश्वरः सर्व भूतानांहृद् देशेऽर्जुन तिष्ठति'**। ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में विराजमान हो रहा है। यहां पर श्री कृष्ण जी अर्जुन को ईश्वर की शरण में जाने का उपदेश देते हैं जोकि सर्व प्राणियों के हृदय में विराजमान हो रहा है।

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि प्रत्येक यज्ञीय कार्य में ईश्वर सदैव विराजमान रहता है अर्थात् सहायता करता है। वह स्वयं सबसे बड़ा याज्ञिय और यज्ञस्वरूप है। इसलिए यज्ञार्थ किए गए कर्म एक प्रकार से ईश्वरार्पित ही बन जाते हैं। जो अपने सब कर्मों को ईश्वर की प्रसन्नता के लिए अर्थात् उसको अर्पण करके करते हैं वे जन्म मरण के बन्धन से छूट जाते हैं। क्योंकि जब कर्मों से ममत्व का भाव छूट गया तो फिर व्यक्ति में पवित्र भाव आने लगते हैं। परमेश्वर सर्वज्ञ और सर्वत्र विद्यमान है। उसको समर्पण करने के लिए मैं यह कर्म कर रहा हूं, ऐसा निश्चय करते ही मन के हीन विचार दूर भागने लगते हैं। वह जानता है कि ईश्वर मेरे प्रत्येक कर्म का साक्षी है और मैं उसी की प्रीति सम्पादन करने के लिए कर्म कर रहा हूं तो फिर हीन कर्म करेगा ही क्यों। ईश्वर सर्व प्राणियों के हृदय में विराजमान हो रहा है, यह भाव आते ही व्यक्ति नर सेवा को नारायण सेवा मान जनता और प्राणीमात्र का सेवक बनेगा और पीड़ितों के कष्टों को दूर करने में जी जान से लग जाएगा। अब उसकी स्थिति जल में रहते हुए कमल पत्र के समान हो गई है। उसका अहं भाव दूर हो गया है। योगदर्शन में इसे ईश्वर प्राणिधान कहा है। अपने समस्त क्रियाकलापों को ईश्वर को समर्पित कर देने का नाम ही ईश्वर प्राणिधान है। ऐसे साधक पर परमेश्वर कृपा कर उसे मोक्षपथ का पथिक बना देते हैं।

उपसंहार

गीता का कर्मयोग यजुर्वेद के अन्तिम अध्याय के पहले दो मन्त्र जिनमें सौ वर्ष तक कर्म करने और त्याग सहित उपभोग अर्थात् फल की इच्छा न करते हुए कर्त्तव्य-भाव से कर्म करने का उपदेश दिया है, उसी का विस्तृत रूप है। यह श्री कृष्ण की अनुपम बुद्धि की देन है जिसमे कर्मो को यज्ञीय भावना या निष्काम भाव से ईश्वरार्पण करते हुए करने पर बल दिया है। इससे इस लोक और परलोक दोनों की प्राप्ति होगी। यह आश्चर्य की बात है कि जहां गीता ने कर्मयोग पर सबसे अधिक ध्यान दिया है, वहां गीता को मानने वाले ही अधिकांश में पुरुषार्थ ही-होकर भाग्य पर विश्वास रखते हैं। जबकि पुरुषार्थ से ही भाग्य बनता है। जिस दिन इस बात को स्वीकार कर लिया जाएगा उस दिन गीता का उपदेश देना सार्थक होगा।

स्वतन्त्रता-दिवस की हृदय-विदारक स्मृतियां

❑ ले० प्रिं० ओम प्रकाश—आर्य कुटीर, 3/45 ए, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

15 अगस्त ! हमारा स्वतन्त्रता-दिवस !!
हां, भारत मां के लिए 1947 में विदेशी गुलामी !!!
को समाप्त कर, आज़ादी लाया !!!
पर आज़ादी के साथ बर्बादी भी आई!
प्राकृतिक तौर पर अखंड इस पावन भूमि के
तीन टुकड़े हो गए !!
'पंजाब' 'दोआब' रह गया।
ब्रह्म पुत्र भी बंट गया
हमारा डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर
हमारा गुरु नानक का जन्म-स्थान
हमारे लिए विदेश बन गए !!।
मुस्लिम लीग की 'टूनेशन थ्यूरी' के आगे झुक कर
ब्रिटिश साम्राज्यशाही की कूटनीति में फंस कर
तत्कालीन राष्ट्रनायक महात्मा गान्धी और
उस समय के सर्वोच्च देश-नेता पं. नेहरू ने
भारत माता के टुकड़े करने की स्कीम मान ली!
हिन्दू-सिखों को पाकिस्तान से निकाला गया।
मां-बहनों से बलात्कार किया गया
उनकी छातियां चीरी गईं !!
तड़पती लाशें, बिलखती विधवाएं
रोते अनाथ बच्चे,
इन आंखों को देखने पड़े !!!
देश को स्वतन्त्र कराने का दम भरने वाली
उस समय की सब से बड़ी राजनीतिक पार्टी 'कांग्रेस' ने
भारत की जनता को कई आश्वासन दिए,
अब देश के भीतर साम्प्रदायिकता खत्म हो जाएगी,
पड़ोसी पाकिस्तान के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध होंगे,
व्यक्ति के निर्माण और समाज के उत्थान पर विशेष,
ध्यान दिया जाएगा।
भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग छेड़ी जाएगी !
पर 55 वर्ष की स्वतन्त्रता का इतिहास
तो बड़ी दुःखद दास्तान ही कहता है!
साम्प्रदायिक कट्टरपंथियों ने रेल में
बैठे शान्त लोगों को जिन्दा जलाया
पाकिस्तान ने हमारे जम्मू-कश्मीर को
हड़पने के लिए अक्तूबर 48 में ही हमला कर दिया
और 65 व 71 में युद्ध छेड़े
जम्मू-कश्मीर का तिहाई भाग 48 से ही
उसके कब्जे में है और वह वहां से आतंकवादियों
द्वारा घुसपैठ करवा रहा है तथा नित्य निर्दोष
लोगों की हत्याएं करवा रहा है।
आज़ादी आई, नेताओं को कुर्सी मिल गई!
पहले प्रधानमंत्री जवाहर (47-48) डिक्टेटर टाईप थे
66 में उनकी पुत्री प्रधानमंत्री बनी
इन्दिरा गांधी
जून 75 में उसने 19 मास तक एमरजैंसी लगा दी।
राष्ट्रीय भावनाएं लुप्त होती गईं, स्वार्थ बढ़ता गया।
अन्त में देश उस मकाम पर पहुंच गया कि
1989-91 व 96 में लोकसभा के चुनाव में
किसी राजनीतिक पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला!
तब जोड़-तोड़, राजनीतिक रिश्वत व घोटालों का दौर पनपा।
गठबन्धन सरकारों का बनना शुरू हुआ
पहले 13 पार्टियों को जनता दल सरकार 96, 97 में कांग्रेस
व कम्युनिस्टों की बैसाखियों का सहारा लेकर बनी
अतः बहुत देर न चल सकी।
1996 के चुनाव में 'भारतीय जनता पार्टी' सब से बड़ी पार्टी
के रूप में उभरी थी पर उसे दूसरों ने सहयोग न दिया
अतः प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी
ने 13 दिन के बाद ही गद्दी छोड़ दी।
1998 में मध्यावधि चुनाव हुआ
भाजपा ने दूसरों के साथ गठजोड़ किया
और 13 मास तक अटल जी प्रधानमंत्री रहे
एक-दो सहयोगी पार्टियों की कलाबाजियों के कारण
वे केवल एक वोट से ही हारे थे।
1999 में फिर मध्यावधि चुनाव हुआ
गरीब देश का अरबों रुपया बर्बाद हुआ।
अपनी 23 सहयोगी पार्टियों के साथ
जम्मू-कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में
पाकिस्तान पर विजय पाने के कारण
'राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन' (राजग)
अच्छा बहुमत प्राप्त कर पाई और
13 अक्तूबर 99 से वाजपेयी सरकार बनी
बेखटके चल रही है।
उस का पावन कर्त्तव्य है कि अभी-अभी
26 जून को उपप्रधानमंत्री बने
लाल कृष्ण अडवानी के शब्दों में
'स्वराज्य को सुराज्य बनाना है'
को, जनता के साथ मिल कर
साकार करें !!

आर्य समाज बीकानेर का चुनाव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर का निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्नानुसार सम्पन्न हुआ-(सत्र 2002-03 के लिए) प्रधान-श्री शम्भू राम जी यादव, वरिष्ठ अधिवक्ता। उपप्रधान-श्री रामेश्वर लाल आर्य, श्रीमती गौरां देवी, श्री उदय शंकर व्यास तथा श्री जसकरण आर्य।

मंत्री-महेश चन्द्र सोनी, कोषाध्यक्ष-श्री भंवर लाल आर्य, सह-कोषाध्यक्ष-श्री पन्ना लाल कंसेरा, प्रचारमंत्री-श्री कृष्ण लाल आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री नृसिंह दास सोनी, सहपुस्तकालयाध्यक्ष-श्री अमृत देव मिगलानी, लेखा परीक्षक-श्री सोहन लाल आसेरी।

अन्तरंग सदस्य-श्री ठाकुर प्रसाद आर्य, श्रीमती वीणा देवी आर्य, श्री धर्म प्रकाश आर्य, श्रीमती उषा देवी।

—महेश सोनी, मंत्री

आर्य समाज सै. 22 चण्डीगढ़ में स्वतन्त्रता दिवस

आर्य समाज सै०-22 चण्डीगढ़ में 15 अगस्त 2002 को स्वतन्त्रता दिवस बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। इस समारोह में एम.डी.ए.वी. स्कूल के बच्चों ने व स्टाफ ने बढ़-चढ़ भाग लिया। बच्चों ने राष्ट्रीय गान गाया और श्री प्रिंसिपल रमेशजीवन ने ध्वजारोहण किया। श्री रमेश जीवन जी ने बच्चों को देश भक्ति का सन्देश देते हुए उन्हें राष्ट्र के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने आई हुई सारी जनता को सम्बोधन किया। इस अवसर पर बच्चों ने देश भक्ति के गीत भी प्रस्तुत किए। कार्यक्रम बड़ा सफल रहा। श्री रामरत्न जी महाजन प्रधान आर्य समाज ने आए हुए सभी लोगों व बच्चों तथा स्टाफ का धन्यवाद किया।

आर्य समाज सैक्टर 22 ने 9 सितम्बर से 15 सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह मनाने का निश्चय किया है जिसमें कई उच्चकोटि के विद्वान् पधार रहे हैं।

—मन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज हबीबगंज (अमरपुरा) लुधियाना का 26वां वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना का वार्षिकोत्सव 8-9-10 व 11 अगस्त 2002 को आर्य समाज के विशाल आंगन में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। 8 अगस्त वीरवार प्रात: 7.30 बजे यज्ञ की कारवाई यज्ञशाला के सुन्दर मण्डप में आरम्भ हुई उसमें श्री राजन वधवा, श्री मदन लाल बातश, श्री राकेश जी गोल्डी सपरिवार यज्ञमान बने। यज्ञ बड़ी श्रद्धा से आर्य समाज के योग्य पुरोहित पं योगराज जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया साथ मे उन्होंने वेद मन्त्रों की व्याख्या भी बड़े सुन्दर ढंग से की।

यज्ञमानों को आशीर्वाद के पश्चात् श्री भरत सिंह मस्ताना के सुन्दर गीत हुए। प्रसिद्ध विद्वान् श्री बाल कृष्ण जी शास्त्री ने यज्ञ की महिमा विस्तारपूर्वक वर्णन की। रात्रि को उत्सव की कार्रवाई 8.30 बजे आरम्भ हुई श्री सत्यपाल जी एण्ड पार्टी एवं श्री योगराज शास्त्री के सुन्दर भजनों के बाद प्रसिद्ध विद्वान् पं. विजय कुमार जी शास्त्री ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि ऋषि दयानन्द के हम पर बहुत उपकार हैं इसलिए हम सबको मिलकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जुट जाना चाहिए। 9 अगस्त को प्रात: यज्ञ के यज्ञमान सुनील गम्भीर, राजेन्द्र गोयल तथा श्री यादव सभी सपरिवार यज्ञमान बने। यज्ञमानों को आशीर्वाद के पश्चात् श्री योगराज के सुन्दर भजन हुए। श्री विजय कुमार जी शास्त्री ने वेदमन्त्रों की व्याख्या करते हुए कहा कि यज्ञ करना सबसे उत्तम कर्म है हमें प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए। इससे यश कीर्ति और सुख प्राप्त होता है।

रात्रि को 8.30 बजे कार्रवाई आरम्भ हुई श्री भरत मस्ताना पार्टी, श्री योगराज शास्त्री के भजनों के बाद ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी बठिण्डे वालों ने भाषण देते हुए कहा कि आर्य समाज ने जहां स्त्री जाति का सम्मान बढ़ाया है वहां नवयुवकों में देश भक्ति एव वैदिक सस्कृति के लिए प्यार उत्पन्न किया है हमें नवयुवकों और महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाना चाहिए। पं विजय कुमार जी शास्त्री ने अपने उपदेश में रामायण का वर्णन करते हुए कहा कि श्री राम चन्द्र जी सच्चे वैदिक धर्म के अनुयायी थे। उनके महलों में दैनिक यज्ञ होता था हमें उनके मार्ग पर चलते हुए वैदिक धर्म का अनुयायी बनना चाहिए।

10 अगस्त शनिवार प्रात: यज्ञ में यज्ञमान कंवलजीत सपरिवार, श्री मुनीश मदान सपरिवार, श्री संजय कुमार सपरिवार यज्ञमान बने। यज्ञ के पश्चात् श्री योगराज जी शास्त्री के सुन्दर भजनों के पश्चात् पं विजय कुमार ने वेद मंत्रों की सुन्दर व्याख्या की। जिससे जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। रात्री को भी सुन्दर भजन एवं उपदेश हुआ।

11 अगस्त को प्रात: सुरेश कुमार सपरिवार, सतीश कुमार सपरिवार प्रेम सागर भाटिया सपरिवार यज्ञमान बने यज्ञ के पश्चात् आज तक बने सब यज्ञमानों को आशीर्वाद एवं यज्ञ का प्रसाद विद्वानों द्वारा दिया गया। इसके पश्चात् 50 व्यक्तियों को सरोपा एव स्मृति चिन्ह देकर आर्य समाज के संरक्षक श्री वेद भूषण मदान एवं समाज के वरिष्ठ उप प्रधान डा जगदीश चन्द गान्धी जी द्वारा सम्मानित किया गया। इनमें अधिक नवयुवक पुराने आर्य समाजी एवं समाज सेवक थे। ब्रह्मचारी सूर्यदेव तथा श्री विजय कुमार शास्त्री के सुन्दर उपदेशों ने जनता पर अच्छा प्रभाव डाला। इस समय गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति एवं सभा महामन्त्री श्री स्वतंत्र कुमार जी, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न सभा उप प्रधान, आर्य समाज में पधारे। उनके साथ पं धर्मदेव जी कार्यालयाध्यक्ष-श्री कमल किशोर प्रधान आर्य समाज भार्गव नगर श्री प्रीतम देव आर्य मोगा, श्री मनोहर लाल आर्य तलवाडा भी थे। उनके पहुंचने पर आर्य समाज के प्रधान आशानन्द आर्य, मन्त्री जनकराज भक्त, कोषाध्यक्ष कंवलजीत आर्य, नौजवान सभा के सदस्य स्काऊटस, आर्य युवक सभा, दयानन्द पब्लिक स्कूल के सदस्य और सैंकड़ों लोगों ने उनका स्वागत किया। आर्य स्कूल के बैण्ड ने धुन बजाकर स्वागत किया स्टेज पर पहुंचने पर जनता ने हार पहना कर और जयघोष लगा कर उनका स्वागत करते हुए लुधियाना की जनता की ओर से आभार प्रगट किया कि इतने बड़े व्यक्ति का इस छोटी सी समाज में पधारना हम सब के लिए गौरव की बात है। कुलपति जी और आर्य रत्न जी ने अपना सारा जीवन ऋषि दयानन्द के मिशन को फैलाने के लिए अर्पण किया हुआ है। हम सबको उन्हें पूरा सहयोग देना चाहिए। कुलपति श्री स्वतंत्र कुमार जी ने अपने मधुर भाषण में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वैदिक संस्कृति का प्रचार करने के लिए गुरुकुल की स्थापना की जो आज एक विश्व विद्यालय का रूप धारण कर चुका है और उसकी मशहुरी सारे संसार में है। इस विद्यालय के स्नातकों ने संसार में नाम कमाया है। इस गुरुकुल की महिला शाखा भी देहरादून में है। कई प्रकार की क्लासें हैं योग्य छात्र जो उसमें प्रवेश लेना चाहें उनका स्वागत होगा।

श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने अपने भाषण मे कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अब वेद प्रचार के लिए ज्यादा ध्यान देना आरम्भ किया है।

हर जिला में आर्य सम्मेलन करेंगे, प्रान्तीय सम्मेलन भी करेंगे। बन्द आर्य समाजों में भी प्रचार करेंगे। नवयुवको को आर्य समाज में लाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इस अवसर पर गुरुकुल बठिण्डा के महामन्त्री आशानन्द आर्य ने घोषणा की कि गुरुकुल बठिण्डा में दिसम्बर के अन्त में आर्य वीर दल का शिविर ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी की अध्यक्षता में लगा रहे हैं जो नवयुवक लुधियाना से जाना चाहें उनका खर्चा आर्य समाज हबीबगंज देवेगा।

ऋषि लंगर 1.30 बजे से 5 बजे तक चलता रहा। इस उत्सव को सफल बनाने में लुधियाना के सभी बन्धुओं आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजों, आर्य स्कूल के प्रिं० बलराज वर्मा, दयानन्द पब्लिक स्कूल की प्रिंसीपल, आर्य युवक सभा, आर वी स्कूल व नौजवान सभा के सदस्यों ने भरपूर सहायता की। महिला विंग की प्रधाना विनोद गांधी जी का सहयोग सराहनीय था। जनकराज चेयरमैन, कंवलजीत उपप्रधान, सन्दीप कुमार प्रधान जी का काम बहुत सराहनीय रहा।

–जनक राज भक्त

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना की ओर से 25-8-2002 रविवार को पारिवारिक सत्संग श्री डा. वाई.सी. मनोचा बसन्त रोड (समीप नरकल वेदी श्रीराम शरणम् सत्संग घर) पर सायं 5.30 से 7.30 बजे तक होगा। समय पर पधार कर धर्म लाभ उठावें।

भठिण्डा स्कूल में वेद प्रचार

13 8 2002 को आर्य गर्ल्ज सी सै. स्कूल बठिंडा में आचार्य श्री हरिश्चन्द्र विद्यावाचस्पति जी चित्तौड़गढ़ से पधारे। जैसे कि विद्यालय पहले से ही वेद प्रचार में पूर्णतया लगा हुआ है, हर शनिवार लगातार हवन-यज्ञ तथा प्रतिदिन प्रार्थना-मन्त्रों का उच्चारण करवाया जाता है। इसी वेद-प्रचार की श्रृंखला में, आर्य समाज बठिण्डा के प्रधान श्री ओ.पी मंगला जी के सुझाव पर आचार्य जी के प्रवचन प्रात:कालीन प्रार्थना सभा में करवाये गए। आर्य विद्यालय के मैनेजर श्री चमन लाल जी महत्ता तथा प्रबन्धक समिति के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

सर्वप्रथम प्रधानाचार्या श्रीमती शान्ति जिन्दल जी ने आचार्य जी का बठिंडा पधारने पर हार्दिक स्वागत किया। पुन: श्री मंगला जी ने आचार्य जी के जीवन परिचय व कार्यक्षेत्र पर विस्तार से प्रकाश डाला। श्री वजीरचन्द जी मंगला एवम् स्वर्गीय श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी स्वयं जाकर आचार्य जी के कार्यों को देखकर आये हैं।

आचार्य जी ने छात्राओं को विद्या तथा वैदिक संस्कारों का महत्व बहुत ही सरल भाषा में समझाया कि विद्या एक अपूर्व खजाना है, जो छीना नहीं जा सकता, चुराया व बांटा नहीं जा सकता। मगर इसकी प्राप्ति के लिए मुख्य तीन सूत्र हैं:-श्रम, संयम व श्रद्धा। अपनी इन्द्रियों पर संयम, अत्यधिक मेहनत व गुरु के प्रति श्रद्धा। आपने गुरु-शिष्य सम्बन्ध समझाते हुए अध्यापक वर्ग को भी संकेत में उपदेश किया कि जैसे माता व गर्भस्थ शिशु का सम्बन्ध होता है, माता के खान-पान, आचार-विचार, चिन्तन-मनन हर बात का शिशु पर प्रभाव पड़ता है, ऐसे ही अध्यापक या गुरु की हर छोटी से छोटी बात का, व्यवहार का, आदतों का, भाषा का हर चीज़ का शिष्य पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए गुरु का व्यवहार अत्यन्त अनुकरणीय होना चाहिए। आचार्य जी ने बहुत कम समय में गागर में सागर भर दिया।

अन्त में मैनेजर श्री महत्ता जी ने बहुत ही अच्छे ढंग से आचार्य जी का व श्रोताओं का धन्यवाद किया। —शान्तिजिन्दल, प्रिंसीपल

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर में वेद सप्ताह

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाज़ार अड्डा होशियारपुर जालन्धर में 2 सितम्बर से 8 सितम्बर 2002 तक वेद सप्ताह बड़े समारोह से मनाया जा रहा है जिसमें श्री पं. विजय कुमार जी शास्त्री के उपदेश व श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली के भजन होंगे।

आर्य समाज जालन्धर छावनी में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज जालन्धर छावनी में 16 से 22 सितम्बर 2002 तक वेद सप्ताह मनाया जा रहा है। श्रो पं निरंजनदेव जी इतिहास केसरी उपदेशु व श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली के भजन होंगे।

आर्य समाज मोगा में वेद सप्ताह

आर्य समाज मोगा मे 22 अगस्त रक्षा बन्धन से 31 अगस्त 2002 कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद सप्ताह मनाया जा रहा है। जिसमें सभा के महोपदेशक श्री पं. विजय कुमार जी शास्त्री तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के उपदेश व भजन होंगे। जिसमे मोगा के सभी आर्य बन्धु व बहने बढ़ चढ कर भाग ले रहे हैं।

आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल भठिण्डा में पुरस्कार वितरण समारोह

श्री सतीश भटनागर व शशी भटनागर अपनी धर्मपत्नियों के साथ पिछले दो वर्षो से हर बार, अपनी स्वर्गीय माता भागवन्ती देवी की स्मृति में (भागवन्ती मैमोरियल ट्रस्ट की ओर से) दसवीं कक्षा में प्रथम आने वाले एक छात्र को तथा स्कूल के एक सर्वश्रेष्ठ (Best) अध्यापक को सम्मानित करते हैं। माता भागवन्ती पहले छात्र जीवन में, आर्य गर्ल्ज स्कूल में ही पढ़ा करती थीं, आर्य सिद्धान्तों से उनकी विशेष रुचि थी उनकी स्मृति में पुरस्कार दिए जाते हैं।

इस वर्ष भी 9 8 02 को आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल में दो छात्राओं ने दसवीं कक्षा में समान अक लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया व उन दोनों को ही 1000/-, 1000/- की नकद-राशि पुरस्कार स्वरूप देकर उनको उत्साहित किया गया।

इसी प्रकार आर्य स्कूल की प्रबन्धक समिति ने इस बार बैस्ट टीचर के लिए प्रधानाचार्या श्रीमती शान्ति जिंदल जी का नाम चयन किया तथा उनको भी 1000/- की नकद राशि देकर विद्यालय के लिए की गई उनकी सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए अत्यधिक मान बढ़ाया।

विद्यालय के मैनेजर श्री चमन लाल महत्ता जी ने बताया कि आपने 25 वर्ष तक एक अध्यापिका के तौर पर भी श्रेष्ठ कार्य व अच्छे परिणाम दिए तथा अब भी पिछले 8 वर्षों से, प्रधानाचार्या के पद पर रहते हुए प्रबन्धक समिति को पूर्ण सहयोग देती हुई स्कूल को कुशल नेतृत्व प्रदान कर रही हैं व विद्यालय दिन दोगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। आपने, उनके व बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए शुभाशीर्वाद दिया।

अन्त में, प्रधानाचार्या जी ने भटनागर भाईयों का हार्दिक धन्यवाद किया। —चमन लाल मेहता, प्रबन्धक,

आर्य समाज तलवाड़ा में पूज्य स्वामी वेदानन्द जी की पुण्य तिथि मनाई गई

आर्य समाज तलवाड़ा द्वारा 18-8-2002 को प्रात: 8 बजे से 11.30 तक स्वामी वेदानन्द जी की पुण्य तिथि मनाई गई।

सुबह 8 बजे पहले यज्ञ किया गया। इस अवसर पर महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल के छात्र, छात्राओं और स्टाफ को यजमानों के आसनों पर बिठाया और सभी ने श्रद्धा से यज्ञ किया। सभी को यज्ञ करने के क्या लाभ है यह भी बताया।

इसके उपरान्त महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल के छात्रों ने बहुत सुन्दर ईश्वर भक्ति के भजन सुनाये और आर्य समाज पर प्रकाश डाला। इसमें 25 छात्रों ने भाग लिया। सभी छात्रों को स्कूल की तरफ से सम्मानित किया गया। नरेश शर्मा जी ने भी 100 रुपए स्कूल के बच्चों की भलाई के लिए दिये।

इसके उपरान्त पं० परमानन्द जी, श्री अमरनाथ जी आर्य श्री मनोहर लाल जी आर्य ने स्वामी जी द्वारा आर्य समाज में किए कार्यों पर, वेद प्रचार को घर-घर पहुँचाने वाले सन्त का ताप दिया और आर्य जगत में उन्होंने युवकों का मसीहा बन कार्य किये। उनकी ही प्रेरणा से बहुत से युवक आर्य समाज आये। आर्य युवक परिषद की स्थापना कर युवा पीढ़ी को आर्य समाज के वारिस के रूप में पेश किया। सभी ने इस पर प्रकाश डाला। स्वामी जी 8 अगस्त 1987 को इसी आर्य समाज में अपनी जीवन यात्रा पूर्ण करते हुए परमात्मा को प्यारे हो गए थे। बाद में प्रसाद वितरण किया गया।

—मनोहर लाल आर्य, मन्त्री

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

दूरभाष 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष-56 अंक : 19 सृष्टि संवत 1960853103, 1 सितम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

योगीराज श्री कृष्ण और आर्य समाज

ले० श्री डॉ० महेश विद्यालंकार, दिल्ली

भारत का सौभाग्य रहा है कि यहां अनेक ऋषि-मुनियों, सन्तों व महापुरुषो के जन्म हुए हैं। इसी परम्परा में भगवान् श्री कृष्ण जेसे धर्मात्मा, पुण्यात्मा, योगीराज, नीतिज्ञ, तपस्वी, त्यागी, लोकहितकारी महामानव का नाम संसार बडी श्रद्धा, भक्ति और पूजा भाव से लेता है। श्री कृष्ण अपने व्यक्तित्व एव कृतित्व से संसार के प्रेरक तथा मार्गदर्शक बने। इतिहास मे ऐसा विलक्षण अद्‌भुत् क्रान्तिकारी सपूर्ण कला युक्त व्यक्तित्व दुर्लभ है। हजारों वर्षों के घात-प्रतिघातों, विवादों और तूफानों को झेलते हुए वे आज भी पूजित, श्रद्धेय स्मरणीय, तथा अलौकिक महापुरुष के पद पर प्रतिष्ठित हैं। उनका जन्मदिवस भारत में नहीं, अपितु विदेशों में भी आदर, श्रद्धा एवं भक्ति भावना से मनाया जाता है। वे भारतीय धार्मिकता व आस्तिकता के प्रतीक हैं।

योगीराज श्रीकृष्ण का जन्म कारावास में हुआ। जन्म मे पूर्व ही मृत्यु के वारण्ट निकल गए। पराये घर मे विमाता की गोद में पले। मामा को मारना पड़ा। राज्य छोड़कर भागना पड़ा। धर्म युद्ध में नाना रूप धारण करने पड़े। अपमान और कष्टों का जहर पीया। उनका सम्पूर्ण जीवन विषम परिस्थितियों, कठिनाइयों, मुसीबतों और संघर्षों का अजायब घर रहा है। न जाने क्या-क्या करना पड़ा। ऐसी अवस्था में भी वे कभी निराश, हताश तथा उदास नही हुए। कभी चेहरे पर शिकन नहीं आने दी। कर्मयोगी बनकर सदा मानवता के कल्याण में लगे रहे। सदैव मुस्कराते रहे। आज के भूले-भटके, निराश, हताश और साधनहीन मानव समाज को भगवान श्रीकृष्ण के जीवन का यह प्रेरक पक्ष सदा सम्भलने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा। वर्तमान जगत श्रीकृष्ण के जीवन से सीखना चाहे तो बहुत कुछ सीख सकता है। दुर्भाग्य है कि हमने अपने महापुरुषों के जीवन चरित्रों को इतना विकृत, कलंकित और उल्टी सीधी बातों से भर दिया है कि आज उनके सत्य, यथार्थ एवं प्रेरक पक्ष का पता ही नहीं चलता है। पुराणों में वर्णित श्रीकृष्ण के चरित्र व लीलाओं को तो दुनिया मान और जान रही है। महाभारत में वर्णित असली श्रीकृष्ण के स्वरुप तथा कार्यों को लोग भूल रहे हैं। पुराणो और लोक साहित्य में श्री कृष्ण को चोर जार शिरोमणि, मक्खन चोर, लम्पट, भोगेश्वर आदि के विशेषण दिए हैं। वर्तमान टेलीविजन सीरियल, रास लीला, कृष्ण लीला और कथाओं आदि के माध्यम से भयंकर, अश्लीलता, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास का प्रचार व प्रसार किया जा रहा है। चित्र की पूजा हो रही है, चरित्र का आदर्श छूट रहा है।

महाभारत में व्यास जी के इस कथन से श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की उच्चता तथा महानता का पता चलता है-'कृष्णं वन्दे जगद् गुरुम्' महाभारत में यदि कोई सर्वमान्य व सर्वपूज्य थे, तो केवल भगवान श्री कृष्ण थे। उनके वास्तविक स्वरूप का पता महाभारत में चलता है। जहां उन्हें सर्वगुण सम्पन्न, राष्ट्रनायक, विश्ववन्द्य, योगीराज, उपदृष्टा, नीतिनिपुण, धर्मरक्षक, मार्गदर्शक आदि विशेपण दिए गए हैं। महाभारत से ही गीता निकली है। गीता ने जो संसार को उच्चकोटि का व्यावहारिक जीवन-दर्शन दिया है, उसके आगे सारा ससार नतमस्तक है। गीता ज्ञान को पढ़ और सुनकर कोई यह नहीं कह सकता है कि योगीराज श्रीकृष्ण भोगेश्वर थे। वे आदर्श महापुरुष थे। उनके जीवन में, धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, काव्यकला, संगीत आदि का अद्‌भुत समन्वय था। उनका जीवन 'योगः कर्मसु कौशल्' का प्रत्यक्ष उदाहरण था। उन्होंने जो कार्य किया, निपुणता, सुन्दरता तथा कुशलता से किया। गायें चराईं, मुरली बजाई, दोस्ती निभाई, सारथी बने, युद्ध कराया। सेवा के सभी कार्यों में अपनी पहचान तथा छाप छोड़ी। सभी कामों में वे प्रेरणा व आदर्श के उदाहरण बन गए।

योगीराज श्री कृष्ण के जीवन का उद्देश्य था-1 परित्राणाय साधुनाम्-सज्जनों की रक्षा करना, 2 विनाशाय दुस्कृताम् दुष्टों को सजा दिलाना और दलन करना, 3. धर्म संस्थापनार्थाय-धर्म को रक्षा करना। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। अपने लिए न कुछ चाहा, न मागा और न सग्रह किया। वे चाहते तो महाभारत की विजय के पश्चात् पाण्डवो के महामन्त्री बन सकते थे। मगर उस महापुरुष ने सब कुछ त्याग दिया। वर्तमान राजनीति और राजनीतिज्ञ भगवान श्री कृष्ण से सीखना चाहे तो बहुत प्रेरणा सन्देश और आदर्श ले सकते हैं।

इस देश ने अपने महापुरुषों के साथ जितना अन्याय और अपमान किया है उतना और कहीं नहीं हुआ है। कैसी विचित्र विडम्बना है कि जिन्हें हम भगवान कहते हैं, उन्हीं भगवान को हम नचाते हैं, गंवाते हैं और उन्हीं के नाम पर भीख मागते हैं? तालियां बजा बजाकर तमाशा देखते हैं। मनोरंजन करते हैं। उनकी नकल उतारते हैं। उन पर तरह तरह के लांछन लगाते हैं। ऐसा करना अपने महापुरुषों के साथ घोर अपमान तथा अन्याय है। जिन्होंने कभी भीख नहीं मांगी थी, उन्हें हमने भिखारी बना दिया। क्या यही उनके उपकारों का बदला है ? क्या यही उनके जन्म दिन मनाने की उपयोगिता, सार्थकता एवं व्यावहारिकता है ? आज महापुरुषों के जन्म दिन, पर्व, कथा, प्रवचन, तीर्थ, मन्दिर, राम लीलाएं, कृष्ण लीलाएं आदि धार्मिक मनोरंजन, खाने-पीने, घूमने व मौजमस्ती के अवसर बनते जा रहे हैं। मूल तेजी से छूटता जा रहा है। इन कार्यक्रमों के पीछे जो सन्देश, प्रेरणा, व्रत, संकल्प और सीखने का भाव था वह कहीं नजर नहीं आता है। इसी कारण आज समाज में नैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन मूल्यों मे तेजी से गिरावट आ रही है। जड़-पूजा, आडम्बर, ढोंग, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि तेजी से फैल रहे हैं। काल्पनिक चमत्कारिक और बेसिर-पैर की बातो को सतप्रवचन महाराज, बाबा वाक्यम् प्रमाणम् कह कर माने जा रहे हैं ?

आर्य समाज सदा से सत्य का शोधक और सत्य का प्रचारक रहा है। आर्य समाज ने अपने महापुरुषों, महाग्रन्थो और सस्कृति की रक्षा की है। महर्षि दयानन्द ने योगीराज श्रीकृष्ण के उज्जवल आदश एव प्रेरक चरित्र का प्रमाणपत्र दिया हे। ऐसा कोई दे नहीं सकता है-वे कहते हे "श्री कृष्ण का गुण-कर्म-स्वभाव और चरित्र महापुरुष के सदृश है" आर्य समाज योगीराज श्री कृष्ण को महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित करता है। आर्य समाज मूर्ति पूजा और अवतार नहीं मानता है। वह चित्र का सम्मान और चरित्र की पूजा का सन्देश देता है। यदि हम जीवन और जगत के लिए सीखना चाहें तो महापुरुषों से कदम-कदम पर प्रेरणा-सन्देश तथा आदर्श प्राप्त कर सकते हैं। अपने जीवन का सुधार कर सकते हैं।

आज आवश्यकता है-योगीराज श्रीकृष्ण के वास्तविक स्वरूप और चरित्र को जानने तथा समझने की। इस महापुरुष के जीवन और चरित्र के साथ अनेक भ्रान्तियां व विकृतियां जुड़ गई हैं। लोगों को सच्चाई व सत्य स्वरूप का बोध ही नहीं है। पूरे इतिहास में "योगीराज" की उपाधि केवल श्रीकृष्ण को ही मिली है। कैसी विचित्रता है कि हम उन्हें योगीराज के रूप में माने और पूजे जा रहे हैं ? वैज्ञानिक युग में भी तर्क-प्रमाण, युक्ति व व्यवहार से नहीं सोच पा रहे हैं ? उनके असली जीवन तक नहीं पहुंच पा रहे हैं।

योगीराज श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव हमें सन्देश व प्रेरणा दे रहा है कि आज संसार में अन्याय, अधर्म, पाप, अशान्ति भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि तेजी से बढी है। हमें धर्म पूर्वक आचरण करते हुए सत्य-न्याय, धर्म-मर्यादा आदि की रक्षा करनी चाहिए। मानवता के रास्ते पर चलना चाहिए। श्री कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन हमे जीने की कला सिखाता हे। महापुरुषों के जन्म दिन, पर्व, जयन्तिया आदि मनाने की तभी सार्थकता, सफलता और विशेपता है जब हम उनके जीवन चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठ, पवित्र, सार्थक व परोपकारी बना सकें।

लुधियाना में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार, दाल बाजार लुधियाना में 31-8-2002 को सायं 3 से 5 बजे तक श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जा रहा है। *-जनक आर्या*

आर्य भारत के मूल निवासी हैं

□ *आचार्य डॉ० देवव्रत, कुरुक्षेत्र पी.एच.डी. (दर्शन)*

आर्य शब्द ऋ धातु से ण्यत् प्रत्यय होकर निष्पन्न होता है। इसका अर्थ होता है प्रगतिशील, श्रेष्ठ, ज्ञान सम्पन्न, सदा सन्मार्ग की ओर अग्रसर रहने वाला, परमानन्द को प्राप्त करने वाला इत्यादि। आर्य से विलोम अर्थ में दस्यु शब्द होता है।

जब इस देश में अंग्रेज आये तब उन्होंने सोचा कि इस देश पर शासन करना है तो देश की संस्कृति से यहां के मूल निवासियों को विमुख करना होगा। सामान्य लोगों को संभ्रमित करने के लिए आर्य, द्रविड़ जातियों के सिद्धान्तों की कल्पना लन्दन की रायल एशियाटिक सोसायटी के बंद कमरे में 1 अप्रैल, 1866 की सभा में की गई थी। इस सभा के अध्यक्ष एडवर्ड टॉमस ने चर्चा का प्रारम्भ करते हुए कहा, अक्सस नदी से आर्यों के आक्रमण की लहरें अरयानिया प्रांत और हिंदकुश मार्ग से नीचे उतरी। प्रथम पंजाब तथा सरस्वती नदी के किनारे ब्राह्मण संस्थाएं बनाकर तक्षशिला में संस्कृत व्याकरण रची। जो वर्णमाला उन्होंने अरयानिया प्रान्त में पणि लोगों से प्राप्त की थी उसका विस्तार करने में उन्हें भोजपत्रों की प्राप्ति से बड़ी सहायता मिली। यह लिपि उत्तर भारत में चलती रही। बाद में इस लिपि को पाली लिपि ने अधिकृत कर लिया, जैसा कि अशोक के शिलालेखों से सिद्ध होता है। आर्य लोग अपनी भाषा के लिए कोई लिपि न खोज सके। वे जिस स्थान के सम्पर्क में आए उसी की लिपि से काम चलाया। इस प्रकार पुरानी सम्कृत के स्थान पर नई संस्कृत आई और लिपि देवनागरी जो पुरानी भाषाओं की मूल लिपि थी, अपनाई।

दक्षिण भारतीयों को अलग इकाई मानने की कल्पना एडवर्ड टॉमस ने 1866 ई. में की। एडवर्ड टॉमस ने तथा फाजल हेरास ने दक्षिण वालों के मस्तिष्क में यह अच्छी तरह बिठा दिया कि उत्तर वाले हिन्दी भाषायी तुम्हारे परम्परागत शत्रु हैं, जिन्होंने तुम्हारे ऊपर आक्रमण करके क्रूर अत्याचारों द्वारा तुम्हें दक्षिण की ओर ढकेल दिया।

वस्तुतः यह सिद्धान्त विशुद्ध काल्पनिक है। गत शताब्दी के साहित्य और पुरातात्विक सिद्धान्तों और उपलब्धियों में इसके लिए कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। नृवंश वैज्ञानिक सर जार्ज कैम्पबैल ने लिखा है कि नृवंश शास्त्र के आधार पर उत्तर और दक्षिण के समाज में कोई भेद नहीं है। द्रविड़ नाम की कोई जाति नहीं है। निस्संदेह दक्षिण भारत के लोग शारीरिक गठन, रीति रिवाज और प्रचार, व्यवहार में केवल एक आर्य समाज है। विश्व विख्यात इतिहासविद् श्री वाशव ने लिखा...इतिहास लेखकों ने मोहनजोदड़ो और हड़प्पा को द्रविड़ संस्कृति कहा है। मोहनजोदड़ो में देखी गई कई धार्मिक बातें दक्षिण भारत की नहीं हैं। न ही दोनों की खोपड़ियां एक दूसरे से भिन्न हैं। इसलिए न कोई आर्य जाति है न द्रविड़। और हम भी ऐसा ही मानते हैं कि केवल एक मनुष्य जाति है।

आस्ट्रेलिया के आदिवासियों और दक्षिण भारत के तथाकथित द्रविड़ों के बहुत से रीति रिवाजों में समानता है। यदि आस्ट्रेलिया के निवासी आर्य हैं तो द्रविड़ लोग आर्य क्यों नहीं ?

कहा जाता है कि आर्यों के भारत प्रवेश से पूर्व भारत में जो द्रविड़ सभ्यता विद्यमान थी अब ईराक और भूमध्य सागर के तट पर विद्यमान प्राचीन सभ्यता या यूरोप की आइबिरीयन की सभ्यता के समकक्ष थी। इसे संसार की मूलभूत सभ्यता कहा जाता है। आर्य लोग इस सभ्यता के साथ ही आक्रान्ता के रूप में सम्पर्क में आए। जिस प्रकार यूरोप में जाकर आर्यों ने आइबिरीयन सभ्यता को ध्वस्त कर दिया। जैसे पश्चिमी ऐशिया की मूल सभ्यता का नाश किया। वैसे ही भारत में आर्यों ने द्रविड़ सभ्यता को परास्त किया। भारत में आर्यों का प्रवेश डॉ० हार्न अली के अनुसार दो धाराओं में हुआ। पहली धारा उत्तर-पश्चिम से प्रविष्ट होकर गंगा तक फैल गई और दूसरी धारा मध्य हिमालय के रास्ते भारत में प्रवेश करके पहले से बसे हुए आर्यों को पूर्व, पश्चिम और दक्षिण की ओर ढकेल कर बस गई।

वास्तव में ये स्थापनाएं कल्पना प्रसूत होने से अटकल, अनुमान, सम्भावना आदि पर आधारित हैं। आर्यों के इतिहास में कहीं इस बात का संकेत नहीं है कि वे भारत में बाहर से आए। आर्यों के साहित्य से नहीं अपितु तथाकथित मूल निवासियों की किसी भी कथा से यह सिद्ध नहीं होता कि आर्य लोग कहीं बाहर से आए और उन्हें मारपीट कर अपने घर से खदेड़ दिया। पाश्चात्य मतानुसार जिन आर्यों ने ऋग्वेद जैसा महान ग्रन्थ लिखा। उन्होंने उसमें अपनी इतनी भारी विजय का कहीं उल्लेख तक न किया। इस धरती तल पर ऐसी कौन सी सभ्य जाति है। जिसने अपनी विजयी गाथा न लिखी हो। यदि लंका विजय का उल्लेख रामायण में और पाण्डवों की विजय विवरण महाभारत में यहां के विद्वान् कर सकते थे तो आर्यों ने भारत के तथाकथित मूल निवासियों पर अपनी महान विजय का उल्लेख अपने ग्रन्थों में क्यों नहीं किया? किसी भी सुसभ्य जाति के लिए सैकड़ों, हजारों, लाखों वर्षों में भी स्वदेश को भूलना आसान नहीं।

यदि आर्य लोग किन्हीं विशेष परिस्थितियों में अपना देश छोड़कर भारत में आए होते तो यह कैसे सम्भव था कि वे उसका नाम भूल जाते। प्राचीन साहित्य में ही नहीं अनुश्रुतियों तक में कहीं उसकी चर्चा सुनने में नहीं आती। सत्य बात यह है कि आर्य बाहर से नहीं आए और न यहां के किसी मूल निवासी को खदेड़ा। यह पाश्चात्यों की एक कूटनीतिक चाल थी। यदि आर्यों से पहले कोल, द्रविड़ आदि यहां के मूल निवासी होते तो उनकी भाषा में इस देश का नाम कुछ न कुछ अवश्य रहा होगा। परन्तु उनकी भाषा में भी आर्यावर्त, ब्रह्मावर्त या भारतवर्ष से पहले इस देश का कोई नाम नहीं मिलता। इससे यह बात असत्य सिद्ध होती है कि यहां आर्यों से पूर्व अन्य लोग रहा करते थे क्योंकि जहां मनुष्य रहते हैं उस निवास स्थल का नाम कुछ न कुछ अवश्य रखते हैं।

विक्रम विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष पद्मश्री विष्णु श्रीधर वाकणकर मोहनजोदड़ो में प्राप्त सिन्धु घाटी सभ्यता से सम्बन्धित मुद्राओं को पढ़कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि सिन्धु घाटी की लिपि भारतीय है और उसका मूल आर्य सभ्यता से है। सिन्धु घाटी की सभ्यता आर्येतर है। विद्वानों की इस मान्यता का उन्होंने बल पूर्वक खण्डन किया है।

सर्वप्रथम डॉ० फतेह सिंह ने सिन्धु लिपि को सफलता पूर्वक पढ़ा था। सन् 1960 तक उन्होंने 2500 मुद्राएं पढ़ ली थी जिनके आधार पर राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान जोधपुर से प्रकाशित पत्रिका स्वाहा में कई लेख लिखे थे। डॉ० फतेह सिंह के शोध पर आधारित एक लेख डॉ० पद्मधर पाठक ने हिन्दुस्तान टाइम्स में उनके समर्थन में लिखा था। उसके बाद इसी पत्र में कैम्ब्रिज के डॉ आल्विन ने सम्पादक के नाम पत्र लिख कर उनको सावधान किया था कि डॉ० सिंह की खोज से तो एक दिन आर्य और द्रविड़ सभ्यता का भेद ही मिट जाएगा। इस समय पुरातत्व, भूगर्भ शास्त्र, इतिहास, लोकवार्ता आदि के विशेषज्ञ अनेक विद्वानों के सहयोग से चल रहा शोध कार्य जिस दिन पूरा हो जाएगा उस दिन आर्यों के विदेशी आक्रान्ता होने की मान्यता जड़ मूल से ही समाप्त हो जाएगी। युगदृष्टा जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-किसी संस्कृत ग्रन्थ व इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आए और यहां के जंगलियों से लड़ कर जय पा के उन्हें निकाल कर इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का लेख कैसे मान्य हो सकता है ?

विदेशी होते हुए भी म्यूर ने स्वामी जी की पुष्टि की थी। इसी मत का बलपूर्वक समर्थन विश्व विख्यात इतिहासवेत्ता एलिफिंस्टन ने इन शब्दों में किया-यह निश्चित है कि न मनुस्मृति में, न वेदों और न मनुस्मृति से प्राचीन किसी अन्य संस्कृत ग्रन्थ में भारत में आने से पूर्व आर्यों के भारत से बाहर अन्य किसी देश में रहने का उल्लेख है।

इतना ही नहीं मिश्र, बैबिलोनिया, सीरिया, चीन, यूनान और अरब के किसी भी पुराने इतिहासकार ने इस बात का संकेत नहीं किया कि भारत में आर्य लोग कहीं बाहर से आकर बसे थे। सर्वप्रथम जिस देश में मानव का प्रादुर्भाव हुआ प्राचीन भारतीय साहित्य में उसका नाम देवलोक बताया है। शतपथ ब्राह्मण में......उत्तरो वै देवलोकाः' अर्थात् उत्तर ही देव लोक है। यह उत्तर कैलाश मानसरोवर के आसपास का क्षेत्र है। इसी क्षेत्र में ही मानव जाति का प्रादुर्भाव हुआ था। वही आर्यों का मूल अभिजन निवास था। कालान्तर में वहीं से आर्यजन बढ़ते-बढ़ते हिमालय की निम्न पर्वत श्रेणियों के पश्चिमी और दक्षिणी मैदान प्रदेश में आ गए। तब उस स्थान का आर्यावर्त एवं भारतवर्ष नाम प्रचलित हुआ।

वराहमिहिर ने अपनी बृहत् संहिता में लिखा है-

भारतवर्षमध्यात्प्रागादिवि-भाजिताः देशाः अवदक्षिणेनलंका कालजिनसैरिकीर्ण तालीकटाः।

अर्थात् भारतवर्ष में मध्य से पूर्वादि देशों का विभाग है और दक्षिण में लंका, कालाजिन, सौरकीर्ण तथा कालीकट हैं।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय.....

पंजाब में वेद प्रचार के कार्य आरम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने 4 8 2002 को सभा कार्यालय मे सभा से सम्बन्धित पजाब की सभी आर्य समाजो ने अधिकारियो की एक बैठक बुलाई थी जिसमे पजाब मे वेद प्रचार के कार्य को तीव्र करने पर विचार किया गया था और भिन्न-2 महानुभावो ने इस विषय पर अपने-अपने विचार व सुझाव दिए थे। जिसके फलस्वरूप पजाब मे वेद प्रचार का कार्य बडी तेजी से आरम्भ हो गया है। रक्षा-बन्धन का पर्व सारे पजाब की आर्य समाजो मे बडी धूमधाम से मनाया गया। इसके साथ ही आर्य समाज हबीबगज लुधियाना आर्य समाज गोबिन्दगढ जालन्धर, आर्य समाज सै 22 चण्डीगढ आर्य समाज होशियारपुर के कार्यक्रम हो चुके हैं। आर्य समाज मोगा, आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर, स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना आर्य समाज नवा शहर, आर्य समाज जवाहर नगर लुधियान के कार्यक्रम चल रहे हैं। आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार अड्डा होशियारपुर जालन्धर, आर्य समाज जालन्धर छावनी, आर्य समाज नाभा, आर्य समाज सै -7 चण्डीगढ आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट, स्त्री आर्य समाज गुरदासपुर, आर्य समाज खरड, आर्य समाज तलवाडा में वेद सप्ताह व उत्सव हो रहे हैं।

हमें प्रसन्नता है कि पजाब की आर्य समाजें वेद प्रचार की ओर विशेष ध्यान देने लगी हैं। इसलिए जिन आर्य समाजो ने अभी तक अपने उत्सवो की तिथिया निश्चित नहीं की वह शीघ्र अति शीघ्र सभा कार्यालय से सम्पर्क करके अपनी तिथिया निश्चित कर ले। हम चाहते हैं कि आर्य समाजो मे लडीवार वेद प्रचार के कार्यक्रम हो। कोई भी ऐसी आर्य समाज न रहे जिसका उत्सव इस बार न हो। प्रत्येक आर्य समाज मे वेद सप्ताह व वार्षिक उत्सव होना आवश्यक है। इसके साथ ही प्रत्येक आर्य समाज जन सम्पर्क के कार्य आरम्भ कर दे और पारिवारिक सत्सगो पर अधिक बल दे। मैं 25-8-2002 को लुधियाना में आर्य समाज पार्कलेन की तरफ से होने वाले पारिवारिक सत्सग मे सम्मिलित हुआ था मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि लगभग दो सौ स्त्री-पुरुष इस सत्सग में पहुचे हुए थे। प्रति रविवार को श्री नरेन्द्र जी भल्ला पारिवारिक सत्सग की व्यवस्था करते हैं। जो साय 5 से 7 बजे तक किसी न किसी परिवार मे होता हे। इस बार का सत्सग आर्य सी सै स्कूल लुधियाना के प्रिंसिपल श्री बा के वर्मा के निवास स्थान पर 1-9-2002 को हो रहा हे। उसम भा लगभग दो सौ महानुभावो के पहुचने की आसा हे। इन पारिवारिक सत्सगो मे केवल आर्य समाजी ही नहीं अन्य मतावलम्बी भी यहा तक कि हमारे सनातनी व सिख भाई भी आते हैं और बड श्रद्धा से बेठ कर आर्य समाज के विद्वानो की बात सुनते हैं। कुछ लोगा क मनो मे, कुछ सम्प्रदायिक लोगो ने आर्य समाज के बारे मे गल्त धारणाए बैठा रखी हैं, जिससे लोग ऐसा समझते हैं कि आर्य समाजी नो सभी का खण्डन करते हैं, विरोध करते हैं। परन्तु जब वह लाग एसे सत्संगो मे आर्य समाज के विद्वानों के विचार सुनते हैं तो उनकी धारणाए बदल जाती हैं। इन पारिवारिक सत्सगो से आय समाज क बारे मे फैली गल्त धारणाए दूर हो रही हैं। मैं श्री नरेन्द्र भल्ला जी को बधाई देता हू कि उन्होने लुधियाना में इस सत्संग को आरम्भ करके वेद प्रचार के कार्य में एक नई कडी जोडी है। उन्होने दिसम्बर 2002 तक के पारिवारिक सत्सग अभी से निश्चित कर दिए हैं। अपने घर पर सत्सग करवाने के लिए लोगों में उत्साह पाया जा रहा है। जो लोग सत्सग सुनने आते हैं वह प्रभावित होकर अपने घर मे भी सत्सग रखने की स्वय इच्छा प्रकट करते हैं। श्री भल्ला जी ने बताया कि मेरे पास कई-कई परिवारो से कई बार नाम आते हैं अभी हम एक से अधिक सत्सग एक सप्ताह मे नहीं रख सकते परन्तु यदि यही स्थिति रही तो हमे सोचना पडेगा कि हम कैसे अन्य परिवारो मे भी सत्सगो का प्रबन्ध कर सकते हैं। वेद प्रचार का कार्य बढ सकता है। इसे जन-जन तक पहुचाया जा सकता है वेद का सन्देश घर घर सुनाया जा सकता है यदि इसी प्रकार आर्य समाज के अधिकारी आर्य समाज से बाहर निकल कर परिवारो मे पारिवारिक सत्सगो का आयोजन करे।

पजाब की सभी आर्य समाजो को पारिवारिक सत्सग करने चाहिए, खुले मैदानो मे अपने वार्षिक उत्सव करने चाहिए। जैसे पहले खुले मैदानो मे बडे-बडे उत्सव व शास्त्रार्थ हुआ करते थे और उन्हें देखने व सुनने के लिए हजारो व्यक्तियों की भीड वहा इक्ट्ठी हुआ करती थी और चारो तरफ आर्य समाज का नाम गूज उठता था। इसी से आर्य समाज के कार्य का सारे देश मे विस्तार हुआ है। आज फिर इस बात की आवश्यकता है कि हम केवल आर्य समाजियो मे ही वेद का प्रचार न करे जो आर्य समाजी हैं वह तो पहले ही वेदानुयायी हैं। वेद को मानने व जानने वाले हैं वेदानुसार जीवन व्यतीत करने वाले हैं। वहा वेद के प्रचार की इतनी अधिक आवश्यकता नहीं है जितनी कि उन लोगो मे प्रचार करने की है जो वेद को न जानते और न ही मानते हैं।

आज आम लोग अपने घरो से निकल कर आर्य समाजो व आर्य समाज के उत्सवो मे आने वाले नहीं हैं। वही आएगे जिनको वेद की पहले जानकारी दी गई होगी। इसलिए हमे स्वय आम लोगो के घरो मे जाना होगा वहा उनकी सहमति लेकर उन्हे प्रेरित करके पारिवारिक सत्सग करने होगे उन्हे वेद का सन्देश सुनाना होगा तभी वह आर्य समाज से जुडेगे। यदि पहले लोग आर्य समाज से जुडे थे तो वह तभी जुडे थे जब आर्य समाजी जन-जन तक पहुचे थे।

आज आवश्यकता है हम अपने अहम को त्याग अपने घरो व आर्य समाजो से बाहर निकले, लोगो के काम आए, उनके दु ख-सुख के साथी बने, उनकी सहायता करे, उनके धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक कार्यो मे सम्मिलित हो।

अपने प्रारम्भिक काल मे आर्य समाज ने देश की आजादी के लिए आवाज उठाई, आजादी के दीवानो से कन्धे से कन्धा मिला कर चले अनाथो के पालन के लिए आवाज उठाई समाज से छूआ-छूत समाप्त करने के लिए आवाज उठाई और दलितो के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चले। आम लोगो से अपना सम्पर्क जोडा। शिक्षा के क्षेत्र मे क्रान्ति पैदा की तब जाकर सारे ससार मे आर्य समाज का नाम गुजाएमान हुआ। आज आर्य समाज के नाम को और अधिक आगे तक बढाने की आवश्कता है। आर्य समाज की गरिमा को बनाए रखने की आवश्यकता है। इसके लिए आर्य समाजो के सभी अधिकारी तथा कार्यकर्त्ता यह निश्चय करे व व्रत ले कि हमने आर्य समाज के कार्य को और वेद प्रचार के कार्य को आगे बढाना और जन-जन तक आर्य समाज का सन्देश पहुँचाना है।

—धर्मदेव आर्य

पं० लेखराम के उत्तराधिकारी : डॉ० भवानी लाल भारतीय.

❑ ले० डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, रणवीर रणञ्जय महाविद्यालय, अमेठी

आर्य जगत् में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो डॉ० भवानी लाल भारतीय के नाम से परिचित न हो। 9 मई 2003 ई को वे अपने जीवन के 75 बसन्त पूण कर लेंगे। इस उपलक्ष्य मे डॉ० भारतीय की 'अमृत जयन्ती' का सममारोह मनाने का निर्णय 'डॉ० भारतीय अमृत महोत्सव समिति' ने लिया है। (21) इक्कीस सदस्यों वाली इस समिति मे आर्य-जगत् के विशिष्ट विद्वान्, लेखक, नेता तथा उनके मित्र हैं। 6 सदस्य विशेष आमन्त्रितो मे हे, जो अधिकांश विदेशो के आर्य-महानुभाव हैं। 2003 मे जोधपुर में डॉ० भवानी लाल भारतीय का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाएगा, साथ में विभिन्न गोष्ठिया, सम्मेलन, सप्तम राष्ट्रीय आर्य लेखक-सम्मेलन तथा आर्य लेखक परिषद् की बैठक का आयोजन भी होगा।

मेरी दृष्टि मे आर्य समाज का कार्य 5 (पांच) प्रकार के व्यक्ति कर रहे हैं–1 कार्यकर्त्ता, 2 लेखक, 3 अध्यापक-उपदेशक, 4 पुरोहित ओर 5 नेता। इसमे सबसे कठिन कार्य कार्यकर्त्ता का है वह निर्विवाद हे। सारा झगड़ा नेतृवर्ग को लेकर ह इसलिए मैंने नेता का स्थान (5) पाचवा माना है। कार्यकर्त्ता के बाद महत्वपूर्ण स्थान लेखक का है। उसे चिन्तन करना पडता है। सहायक-सामग्री जुटानी पडती ह। पोस्टेज, टाइप आदि का व्यय भी अपने घर से करना पडता है। लेखन का कोई पारिश्रमिक मिलता नहीं। उपदेशक वीच की स्थिति मे है। अध्यापको तथा पुरोहितो को प्राय: अपनी योग्यता और परिश्रम का मानदेय प्राप्त हो जाता है। कुछ वर्षो से कुछ चुने हुए लेखको को कुछ सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हो रहा है। निस्सन्देह लेखको को सम्मानित और पुरस्कृत करने वाले व्यक्ति और संस्थायें समस्त आर्य जगत [illegible] धन्यवाद के पात्र हैं। पिछले एक दशक से आर्य लेखको [illegible] तेजी [illegible] हुआ, [illegible] युधिष्ठिर मीमांसक, आचार्य विश्वश्रवा:, डॉ० सत्यकेतु, डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार, पं० वैद्यनाथ शास्त्री, डॉ० शिवपूजन सिंह कुशवाह, डॉ० प्रशान्त वेदालङ्कार, डॉ० सुरेश चन्द्र वेदालंकार पं० क्षितीश वेदालङ्कार, डॉ० श्रीराम आर्य, महात्मा अमर स्वामी, स्वामी सत्यप्रकाश जी आर डॉ० प्रज्ञा देवी जी के निधन से स्तरीय लेखन न्यून हो चला है। अब तो आर्य विद्वानों तथा लेखकों के निधन की सूचना मात्र छप जाती है। पहले विद्वानों तथा लेखकों के दिवङ्गत होते ही उनके वैदुष्य और महत्वपूर्ण लेखन का आकलन अनेक लेखों द्वारा आर्य पत्र-पत्रिकाओं में छपता था। पं० अभिविनय भारती, प्रो० ओम प्रकाश ब्रह्मचारी और अभी जून मास में दिवङ्गत हुए पं संतोष कण्व के लेखकीय महत्व पर कोई लेख पढ़ने को नहीं मिला। पं० बिहारी लाल शास्त्री तथा आचार्य विश्वश्रवा: जी के निधन के बाद भी उनके व्यक्तित्व तथा लेखन की समुचित चर्चा नहीं हुई। वर्तमान में आर्य सामाजिक लेखन के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं–डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार, स्वामी मुनीश्वरानन्द, विवेकानन्द सरस्वती, आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र, पं० नरेन्द्र भूषण, डॉ० जयदत्त उप्रेती, पं० उमाकान्त उपाध्याय, पं० प्रियव्रत दास, स्वामी सत्यपति परिव्राजक, स्वामी वेदमुनि, डॉ० सुरेन्द्र कादियान, पं० राजवीर शास्त्री, पं० सुदर्शन देव, प० सत्यानन्द वेदवागीश्, डॉ० कृष्णलाल, डॉ भवानी लाल भारतीय और प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु। ये सभी लेखक 75 वर्ष से ऊपर के हैं या उसके आस-पास। अपेक्षाकृत नये लेखकों में–डॉ रामकृष्ण आर्य, डॉ० कुशल देव शास्त्री, महेश विद्यालङ्कार, प्रो० सुरेन्द्र कुमार, डॉ० देवव्रत आचार्य, प्रो० जयदेव आर्य, प्रो० धर्मवीर, प्रदीपार्य (अग्निव्रत) ज्ञानेश्वरार्य, डॉ० सोमदेव शास्त्री, पं० विवेक भूषण, डॉ० रघुवीर वेदालङ्कार, श्री आदित्यपाल सिंह, पं० मनुदेव अभय, पं० वेदप्रिय शास्त्री और पंडिता सूर्या देवी। इन सभी लेखकों में डॉ० भवानी लाल भारतीय तथा प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु का स्थान सबसे ऊंचा है। ये दोनों पं० लेखराम के सच्चे उत्तराधिकारी हैं।

अमरकृत आर्यों के दिल और दिमाग पर पं० लेखराम जी का विशेष स्थान है। वैदिक धर्म प्रचार की वह तड़प, उनकी माता-पुत्र-वनिता के प्रति अनासक्ति, अपने लहू से ऋषि दयानन्द का चरित लेखन और अन्त में उनका रक्त रञ्जित बलिदान का मूल्य कौन चुकायेगा? हम सब मिलकर उनका सम्यक् आकलन भी नहीं कर सकते। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने २६ वर्ष तथा पं० लेखराम ने ३६ वर्ष के अपने अल्पवय में जितना कार्य किया उतना कार्य हम लाखों आर्य समाजी मिलकर भी नहीं कर पा रहे हैं। पं० लेखराम का उपदेशक तथा लेखक का जीवन मात्र 15-16 वर्षों का रहा है। निरन्तर उपदेश का कार्य करते हुए मात्र साढ़े चार वर्षों में ही उन्होंने ऋषि जीवन चरित के एक हजार पृष्ठ लिखे। 'कुलियात आर्य मुसाफिर' के तीन खण्ड के अतिरिक्त उनकी छोटी-बड़ी पुस्तकों की संख्या भी बहुत है। अपनी मृत्यु-शैय्या से आर्यों के नाम सन्देश में पं० लेखराम ने कहा था, 'तकरीर और तहरीर का काम बन्द नहीं होना चाहिए'। पं० लेखराम के लेखन के उत्तराधिकारी डॉ० भवानी लाल भारतीय का लेखन सन् 1949 से आरम्भ होकर पांच दशकों की दीर्घ अवधि तक विस्तृत है। उनकी प्रथम रचना 'ऋषि दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य' 1949 में छपी थी। (५३ वर्षो बाद इसका पुनर्मुद्रण आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल की ओर से श्री चांद रतन दम्माणी (कोलकाता) ने 2002 में किया है।) डॉ० भारतीय की अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं में 1983 ई० में ऋषि निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित ऋषि दयानन्द का शोधपूर्ण जीवन चरित्र-1 नवजागरण के पुरोधा: दयानन्द सरस्वती (2) श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (11 खण्ड) (3) पं० लेखराम रचित स्वामी दयानन्द के बृहत् जीवन चरित का आलोचनात्मक सम्पादक (सहस्राधिक टिप्पणियां, अनेक उपयोगी परिशिष्ट तथा ऐतिहासिक भूमिका सहित) (4) महर्षि दयानन्द के भक्त प्रशंसक और सत्संगी (5) ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की संस्कृत साहित्य को देन (6) आर्य समाज के वेद सेवक विद्वान् (7) दयानन्द साहित्य सर्वस्व (8) आर्य समाज विषयक साहित्य परिचय (9) आर्य समाज का इतिहास (पांचवा भाग-साहित्य खण्ड) (10) दयानन्द और विवेकानन्द: तुलनात्मक अध्ययन (11) आर्य लेखक कोष (12) मैंने ऋषि दयानन्द को देखा (13) महर्षि दयानन्द-हिन्दी साहित्यकारों की दृष्टि में। (14) स्वामी दयानन्द सरस्वती: व्यक्तित्व, विचार एवं मूल्यांकन (15) 'स्वामी दयानन्द सरस्वती: पश्चिम की दृष्टि में' प्रमुख हैं। डॉ० भारतीय के रचना संसार में से मैंने 15 ग्रन्थों के नाम ही ऊपर लिखे हैं। जो मुझे व्यक्तिगत रूप से सर्वाधिक रूचिकर लगे। अब तक उनकी प्रकाशित पुस्तकों की संख्या 125 है। आर्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सहस्त्रों लेखों की बात दीगर है।

डॉ० भारतीय जब पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में 'दयानन्द वैदिक शोध पीठ के प्रोफेसर तथा निदेशक ' थे, तब 1988 ई. में उनका सृष्टिपूर्ति-समारोह (60 वर्ष की अवस्था में हो जाने पर) मनाया गया था। नवम्बर 1988 में 'परोपकारिणी सभा' के मुख्य पत्र 'परोपकारी' (जिसका अनेक वर्षों तक डॉ० भारतीय ने सफल सम्पादन किया था) ने 'डॉ० भवानी लाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ' प्रकाशित किया। उसमें 'आयु के 60 वर्ष और 63 ग्रन्थों का प्रणयन' शीर्षक से एक सूची प्रकाशित हुई, जिसमें भारतीय जी के 63 ग्रन्थों का नाम, प्रकाशक और प्रकाशन काल का पूर्ण विवरण दिया गया है। तब से 14 वर्षों के अन्तराल में 42 पुस्तकों की संख्या और बढ़ गई, इसमें से डॉ० भारतीय की तीव्र गति से अनवरत चलती लेखनी का प्रभाव जाना जा सकता है।

'परोपकारी' के 'भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ' का प्रो० धर्मवीर जी के साथ मैं भी सम्पादक था। मेरी इच्छा प्रो० भारतीय जी के सभी ग्रन्थों की समीक्षा लिखकर उसमें प्रकाशित करने की थी। एतदर्थ मैंने अमेठी से चण्डीगढ़

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्री कृष्ण का नारी जाति के प्रति दृष्टिकोण

❑ ले० डॉ० सुशीला आर्या एम.ए.पी.एच.डी.

भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ श्री कृष्ण के जीवन की अनेक घटनाओं के विषय में इतिहास इतना धूमिल एवं सन्दिग्ध है कि जन-सामान्य के समक्ष उनके चरित्र का निर्णय करने में कठिनाई आ खड़ी होती है। यह अत्यन्त खेद तथा दुर्भाग्य का विषय है कि चरित्र के उच्चतम शिखर का स्पर्श करने वाले इस महापुरुष को बदनाम करने में कोई कसर न छोड़ी। हिन्दी के तथाकथित भक्ति एवं रीति कालीन साहित्य में तद्विषयक अनेक कपोल-कल्पित विवरणों द्वारा उनके आचार-विचार पर जो कीचड़ उछाला गया है उससे उनके दुग्ध धवल यशस्वी स्वरूप तो क्या बिगड़ना था-परन्तु चांद पर थूका मुंह पर गिरता है। इस सत्योक्ति के अनुसार अभागी भारतीय जनता उनके जीवन के सत्प्रभावों को ग्रहण करने से अवश्य ही वंचित रह गई। महाभारत में प्रसिद्ध है कि श्री कृष्ण के कट्टर शत्रु शिशुपाल ने उन्हें सौ गालियां दीं किन्तु इन सब मे भी आचरणहीनता का दोषारोपण करने वाली एक न थी। खेद कि यह कुत्सित कलंक उनके उपासक एवं भक्त होने का दावा करते हुए लगाया जोकि एक भारी भूल थी फिर भी हमने इसे गौरवपूर्ण कृत्य समझा कैसी विडम्बना है।

सौभाग्य कहिए कि महर्षि दयानन्द द्वारा चेताये जाने पर हमने इतिहास तथा साहित्य की इस भयंकर भूल का संशोधन किया। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि ने इस सन्दर्भ में लिखा है-'श्री कृष्ण का चरित्र महाभारत में अत्युत्तम है। स्वामी जी ने योगिराज कृष्ण को आप्त पुरुषों की कोटि में गिनकर हमारी आंखें खोल दी तथा उनके पद-चिन्हों पर चलने की प्रेरणा दी, भारतीयों के लिए प्रगति का नवीन पथ प्रशस्त किया।'

पतन काल के साहित्य में श्री कृष्ण के चरित्र पर थोपे गए सभी दोषों के भूल में उनका नारी के प्रति दृष्टिकोण क्या था-यह न समझने की भूल है। कोई उन की सोलह हजार रानियां गिना [illegible] मार्गी सिद्धान्त का आश्रय कर उन्हें प्रत्येक गोपियों से रमण करने वाला प्रकट कर रहा है। यदि केवल उस विकृत साहित्य का ही अध्ययन किया जाए तो निःसन्देह कोई भी अध्येता श्री कृष्ण के प्रति एक घिनौनी धारणा बनाने पर बाधित हो सकता है। उन्हें इस युग के युवकों से-जो राह चलती युवतियों से छेड़-छाड़ या फिकराकशी करते हैं, जो उनकी चुन्नी खींच सकते हैं-किसी प्रकार भी कम नहीं दिखाया गया। चीर हरण लीला, जल क्रीड़ा आदि सन्दर्भ इसी धारणा की पुष्टि करते हैं किन्तु तथ्य इसके सर्वथा विपरीत है।

कोई व्यक्ति जितना विलासी एवं इन्द्रियों का दास होगा उसकी नारी जाति के प्रति भावना उतनी ही हीन होती है। इसके विपरीत ब्रह्मचर्य का साधक नारी को अधिकाधिक सम्मान दृष्टि में देखता है। ब्रह्मचर्य के प्रति योगीराज श्री कृष्ण की सुदृढ़ निष्ठा इसी से व्यक्त है कि वे गृहस्थ होते हुए भी बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने में समर्थ हो सके, कहां चरित्र की यह दुर्धर्ष ऊंचाई और चीर हरण लीला जैसा छिछोरापन? निश्चय ही इतिहास के वास्तविक अध्ययन के अभाव में ये घातक परिणाम हमें देखने को मिले।

यह कहना भी भ्रांति के अतिरिक्त कुछ न होगा कि श्री कृष्ण अपनी प्रौढ़ावस्था में संभल गए होंगे किन्तु किशोर एवं यौवन काल में उनके विषय में उल्लिखित गोपी संगम आदि प्रमाणिक हैं। वास्तव में किशोरावस्था में ऐसा जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति आगे चलकर कभी भी एक पत्नीव्रती, संयमी व ब्रह्मचारी नहीं रह सकता। उनका परवर्ती संयत, जीवन ही उनके पूर्ववर्ती जीवन की प्रणाली का प्रत्यक्ष प्रमाण है। तथ्यतः दुर्बल चरित्र का कोई व्यक्ति आज तक उन्नति के शिखर पर आरूढ़ नहीं हो सका, यह एक इतिहास सम्मत तथ्य है जिसके विकल्प श्री कृष्ण जी महाराज भी नहीं हैं जो कि अपने जीवन काल में इतने सम्मानित एवं पूज्य स्वीकार किये गए।

वस्तुतः श्री कृष्ण नारी-जाति के प्रति सम्मान जनक दृष्टिकोण रखते थे। वे एक अच्छे पुत्र थे, उन्होंने अपनी माता देवकी के अपमान का प्रतिशोध लिया। भाई के रूप में वे महान् थे। अपनी बहन सुभद्रा के विवाह के प्रसंग में थोथे मानापमान के भाव को तिलांजलि देकर उन्होंने वीरवर अर्जुन के साथ उनका पाणिग्रहण कराया। पति रूप में वे पूर्ण निष्ठावान थे। देवी रुक्मणी की भावनाओं का उन्होंने सच्चा सम्मान किया। पुनः नारी समागम का उच्चतम लक्ष्य सन्तानोत्पादन मानकर प्रद्युम्न जैसे वीर पुत्र को जन्म दिया। नारी का अपमान [illegible] द्रौपदी को दुःशासन द्वारा भरी सभा में अपमानित किये जाने पर उनके सम्मान का रक्षण इस प्रसंग में संवरण करना होगा। सर्व प्रकारेण श्री कृष्ण ने नारी जाति की मान मर्यादा को संरक्षण प्रदान करने के लिए प्रयत्न संघर्ष व युद्ध किए। किन्तु जिस प्रकार विपरीत भाव लेकर हमने उनके व अपने जीवन के रस में विष घोल लिया यह एक करुण कथा है। स्वयं नारी जाति ने कृष्ण चरित्र को पतन की ओर ले जाने में गर्हित भाग लिया है।

वर्तमान काल में श्री कृष्ण जैसे उपकारों के सही स्वरूप को समझकर उनके पद्-चिन्हों पर चलने की प्रतिज्ञा करना ही उनका जन्म दिवस मनाने का सबसे उत्तम ढंग है।

परमात्मा को कैसे जानें

❑ लेखिका श्रीमती जनकरानी आर्या, मन्त्री स्त्री आर्य समाज, दाल बाजार, लुधियाना

परमात्मा को कैसे जानें आओ इस विषय पर विचार करें। प्रभु को हम सब मानते हैं, किसी न किसी रूप में सारा जगत उसे मानता है, परन्तु जानता नहीं। सच जानिए, उसे जाने बिना महसूस किए बिना हम उस परम सत्ता तक नहीं पहुंच सकते। उसे जानने के लिए प्राप्त करने के लिए हमें अपनी आत्मा की शक्तियों को पहचानना होगा। इसके साथ ही परमात्मा को जानने के लिए हमें उसकी विचित्रता, उसकी महानता, उसकी सर्वशक्तिमत्ता, न्याय कारिता, उसकी बनाई सारी सृष्टि और सृष्टि के विराट स्वरूप को देखना होगा। उसके गुणों का गहराई से विश्लेषण करना होगा तभी हमें उसकी महानता का पता चलेगा। जिस परमात्मा ने सूर्य, चांद, सितारे बनाए। रात-दिन बना कर समय को बांटा। लोक-परलोक रच दिये और परिवर्तनशील सृष्टि बनाई परन्तु स्वयं सदा एक रस है, कोई परिवर्तन नहीं है। अति सूक्ष्म है और इतना विशाल है कि इतनी बड़ी सृष्टि रच कर भी वह पूर्ण है उससे कोई कमी नहीं आई और न कभी आएगी। उस प्रभु ने बहुत से जीवों की रचना करके अपनी सबसे उत्तम कृति मानव को बनाया। विचार करें मनुष्य को बना कर उस बनाने वाले ने इतने बड़े संसार में मानव भटकने के लिए छोड़ दिया है। ऐसी बात नहीं उसने जहां हमें मानव शरीर दिया वहीं वेद का ज्ञान भी दिया है। परमात्मा की कल्याणकारी वाणी के चार वेद हैं। जिनमें मनुष्य को कैसे जीना चाहिए? संसार में कैसे रहना चाहिए ? राजधर्म क्या है ? शरीर का भी सम्पूर्ण ज्ञान, वेद में परमात्मा ने हमें अच्छी प्रकार से दिया है। वह परमात्मा हमें कैसे प्राप्त हो सकता है इसका भी पूरा आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान वेद से भरा पड़ा है।

मनु जी महाराज कहते हैं-"वेदो अखिलोधर्म मूलं" वेद सब धर्मों का मूल है। योगेश्वर श्री कृष्ण जी कहते हैं, वेद को जानने वाले वेद को मानने वाले परमपद मुक्ति को प्राप्त होते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं "दीवा जले अंधेरा जाए वेद पढ़े मति पाप को खाए।"

वेद हमारे पास ऐसा खजाना है जिसे खोल कर हम बहुत प्रकार के दुःखों से छुटकारा पा सकते हैं, आज मानवता कराह रही है। संसार दुःख की भट्ठी में जल रहा है। सुख सभी चाहते हैं, हमें सुख प्राप्ति के लिए वेद की ओर लौटना होगा उस विश्वविधाता, अपने सच्चे पिता, आनन्दमयी मां की आज्ञा में चलना होगा। बच्चे वो ही सुख पाते हैं जो अपने पिता सिरजनहार की बात मानते हैं। आईए हम भी अपने आचार व्यवहार को वेद अनुसार बनाएं और शान्ति का अनुभव करें।

आर्य भारत के मूल निवासी हैं

(पृष्ठ 2 का शेष)

महाभारत में लिखा है देविका पश्चिमें पार्श्वे मानसं, सिद्धसेवितम्। अर्थात् देविका के निवास के पश्चिमी किनारे पर मानस है। वहीं पर मनुष्यों की उत्पत्ति हुई थी। महर्षि दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-मनुष्यों की आदि सृष्टि त्रिविष्टिप। अर्थात् तिब्बत में हुई और आर्य लोग सृष्टि के आदि में कुछ काल पश्चात् तिब्बत से सीधे इसी देश भारत में आकर बसे। इसके पूर्व इस देश का कोई भी नाम न था और न ही कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे।

फ्रान्स के महान् सन्त एवं विचारक कूजे ने बल पूर्वक लिखा है-यदि कोई देश वास्तव में मनुष्य जाति का पालक होने अथवा उस आदि सभ्यता का जिसने विकसित होकर संसार के कोने-कोने में ज्ञान का प्रसार किया, स्रोत होने का दावा कर सकता है, तो निश्चित ही वह देश भारत है। कूजे की भारत स्मृति का कारण स्पष्ट करते हुए विलियम दोरॉ ने लिखा है-भारत मनुष्य जाति की मातृभूमि और संस्कृत यूरोपियन भाषाओं की जननी है। वह हमारे दर्शन की जननी है। अरब के माध्यम से हमारे गणित की जननी, बुद्ध के माध्यम से ईसाइयत में निहित आदर्शों की जननी, ग्राम पंचायत के माध्यम से स्वायत शासन और लोकतन्त्र की जननी है। वास्तव में भारत माता अनेक रूपों में हम सबकी जननी है।

इस प्रकार जिस भारत को विश्व भर का आदि देश होने का गौरव प्राप्त है उसका आर्यों का आदि देश होना तो स्वतः सिद्ध है।

"आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार हेतु मेरे कुछ सुझाव"

☐ ले० पं० वेद प्रकाश टंकारावाले, 73/5 भार्गव नगर, जालन्धर

हम सभी आर्यजन इस बात से बहुत चिन्तित हैं कि आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार दिन-प्रतिदिन घटता ही चला जा रहा है, जिस से आर्य समाजियों की संख्या में बढ़ौत्तरी की जगह कमी आती चली जा रही है। वास्तव में यह विषय चिन्ता का है क्योंकि जिस रफ्तार से आर्य समाजियों की संख्या में कमी आ रही है, इससे तो एक दिन ऐसा आ जाएगा कि आर्य समाजियों को अपना वजूद ही बचा पाना मुश्किल हो जाएगा। नए आर्य समाजी बनाना यूं दिखाई देता है जैसे अत्यन्त दुर्लभ कार्य हो। सच्चाई यह है कि आर्य समाज के सिद्धान्तों को लोग अपनाना चाहते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि आर्य समाज के सिद्धान्त ही भारत की रूढ़िवादी परम्पराओं एवं कुरीतियों को तोड़ने में सक्षम हैं परन्तु आर्य समाजों के अधिकारीगण क्यों उन्हें आर्य समाज के सदस्य नहीं बनाना चाहते वह तो वो ही बता सकते हैं परन्तु मैं तो इस विषय पर गम्भीरता से विचार कर इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि इस समस्या का हल है।

अब तो सार्वजनिक तौर पर आर्य समाजों में होने वाली सभाओं तथा सम्मेलनों पर इस मुद्दे पर खुल कर विचार-विमर्श होने लगा है। यह एक अच्छी शुरुआत है वास्तव में यह बहुत पहले हो जाना चाहिए था किन कारणों से यह विचार-विमर्श शुरू नहीं हो पाया, इस बेकार की बहस में मैं पड़ना नहीं चाहता, परन्तु मैं इस बात से खुश हूं कि आर्य प्रतिनिधि पंजाब के तत्वावधान में इसकी शुरूआत की गई है। आशा की जानी चाहिए कि योग्य नेतृत्व अधीन निकलने वाले परिणाम आर्य समाज के सिद्धान्तों को नई दिशा देने में सहायक सिद्ध होंगे।

अच्छा यह होगा कि हम सर्वप्रथम पहले यह विचार करें कि आर्य समाज और आर्य समाजी दो अलग-अलग हस्तियां हैं। यह विचार हमें आर्य समाज को समझने में सहायक सिद्ध होगा क्योंकि आर्य समाज के सिद्धान्त स्थिर हैं। इन सिद्धान्तों को बदलना सम्भव नहीं है। हां आर्य समाजी को बदला जा सकता है। उसे सत्य का मार्ग बतलाया जा सकता है। आज नहीं तो कल हम इस तथ्य को मान ही लेंगे कि संसार में सत्य की डगर पर चलने वाले [illegible] का अन्त नहीं [illegible]। हां कुछ समय के लिए हम भ्रम की स्थिति में तो आ सकते हैं कि यह संस्था मृतप्राय हो गई है परन्तु समय की कसौटी पर यह विचार ठीक दिखाई नहीं देगा। यह उदाहरण देखिए कि कोई व्यक्ति सुबह उगते सूर्य को देखे और फिर शाम को ढलते सूर्य को देख कर अनुमान लगा ले कि अब कभी सूर्य नहीं उगेगा। संसार अन्धकार के आगोश में चला जाएगा तो उसे यह पता नहीं है कि कल को सुबह होते ही उगने वाला सूर्य तुम्हारी धारणा का अन्त कर देगा। सो आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार एवं प्रसार हेतु मेरे सुझाव इस प्रकार हैं:-

1. वेद ईश्वरीय ज्ञान है ऐसा आर्य समाज मानता है। इस ईश्वरीय ज्ञान को सिर्फ मान लेने से काम नहीं चलेगा बल्कि हमारे अन्दर वेद के प्रति कितनी श्रद्धा है इसका आभास होना चाहिए और यह तभी हो सकता है जब प्रत्येक आर्य समाज और आर्य समाजी के घर में चारों वेदों की स्थापना की जाए। अभी वर्तमान में तो चारों वेदों की प्रतियां अलमारियों में पड़ी हुई हैं। बहुत सारी आर्य समाजों के कार्यकर्त्ताओं एवं अधिकारियों ने वेदों का नाम सुन रखा है, वास्तव में यह होते कैसे हैं इसका कुछ ज्ञान नहीं। वेदों की स्थापना के पीछे मेरे दो उद्देश्य हैं। एक तो आर्य समाजियों के घरों में वेदों की स्थापना तथा परिवार के अन्य सदस्यों को वेद को समझने एवं जानने का सुअवसर प्राप्त होगा और दूसरा हमारे अन्दर श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। हां इसमें सबसे बड़ी बात समझने की यह है कि किसी भी परिवार या आर्य समाज में वेदों का अनादर न किया जाए।

2. लंगर की प्रथा को आर्य समाजों में चलाया जाए। अतीत में आर्य समाज के पास धनाभाव था परन्तु वर्तमान में बहुत सारी आर्य समाजों के पास काफी पैसा है। इस पैसे का सदुपयोग करना ही श्रेयस्कर है। हां यह बात अलग है कि प्रत्येक आर्य समाज अपनी सामर्थ्यनुसार लंगर की व्यवस्था करे परन्तु यह सुनिश्चित बनाया जाए कि लंगर प्रतिदिन चलना चाहिए।

3. भारतीय समाज के समक्ष आज बहुत बड़ी चुनौती आ खड़ी हुई है आदमी की 'वृद्धावस्था' इस अवस्था में आदमी निःसहाय हो जाता है दूसरे पर आश्रित हो जाता है। भारतीय सभ्यता में अब पाश्चात्य सभ्यता का मिश्रण हो गया है जिसकी बदौलत युवा पीढ़ी से वृद्धों की सेवा करने की उम्मीद [illegible] है। परन्तु इस वृद्धावस्था में आने वाली बाधाओं को आर्य समाज 'वृद्ध आश्रम' खोल कर दूर कर सकता है। इससे दो काम होंगे एक तो वृद्धों के प्रति आर्य जनों के कर्त्तव्य का पालन होगा। दूसरा युवा पीढ़ी को इस से कुछ सबक भी मिल सकेगा कि उसे भी इस वृद्धावस्था से गुजरना है। एक बात और बड़ी महत्वपूर्ण होगी कि आप वृद्धों को जीवन के अन्तिम दिनों को कैसे जिया जाता है तथा इस अवस्था में प्रभु भक्ति की कितनी आवश्यकता है सम्बन्धी ज्ञान देकर पुण्य के भागीदार बन सकते हैं।

4. प्रत्येक आर्यजन प्रण लें कि वह प्रतिदिन दो घण्टे निकाल कर हस्पतालों में पड़े मरीजों की सेवा करने में लग जाएगा। इस सेवा के कार्य में आप मरीजों को मुफ्त दवाओं का वितरण कर सकते हैं। नाश्ता या खाना मुहैया करवा सकते हैं। अत्यन्त गरीब वर्ग के लिए कपड़ों तक का प्रबन्ध कर सकते हैं। इस के साथ-साथ कुष्ट रोग के रोगियों या अन्य घातक बिमारियों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए अलग से आश्रम खोल कर सेवा का कार्य कर सकते हैं। सेवा ही मानव का धर्म है यह मेरा विचार नहीं बल्कि वैदिक संस्कृति का एक अंग है। इसलिए सेवा करने में शर्म महसूस न कीजिए।

5. गूंगे-बहरे या उन बच्चों के लिए जिन्हें मां-बाप का साया तक नसीब नहीं होता, आर्य समाज आश्रम खोलने का प्रबन्ध करे। ऐसे तमाम बच्चों को जीवन जीने का ढंग सिखाया जाए ताकि बिना किसी साये के भी बच्चे को साये की कमी महसूस न हो। ऐसा बच्चा किसी गलत सोसाइटी में न चला जाए जिससे समाज में अच्छाई की जगह बुराई फैले जैसा कि अभी वर्तमान में संसार इस त्रासदी से गुजर रहा है। आप की अच्छी शिक्षा की बदौलत कौन जाने कल को कोई एक भी बच्चा भारतीय समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करने का मसीहा बन जाए।

6. युवा शक्ति को आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रति आकर्षित करने के लिए अलग-अलग जिलों में ग्राम स्तर तक व्यायामशालाएं खोली जाएं ताकि वहां पर युवा पीढ़ी जाकर अपने शरीर को हष्ट-पुष्ट करने के तरीके सीख सके। उन व्यायामशालाओं में युवाओं को पाश्चात्य सभ्यता से दूर रखने के लिए और शरीर की संरचना के विषय में भी जानकारी देने का प्रबन्ध किया जाए। इसके साथ-साथ युवा पीढ़ी को वैदिक संस्कृति की जानकारी भी करवाई जाएं ताकि उन्हें ज्ञात हो कि वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता तथा पाश्चात्य संस्कृति की सभ्यता में कितना अन्तर है।

7. आर्य समाजों तथा सभाओं के अधीन चलने वाली प्रत्येक शिक्षण संस्था को एक सरकुलर जारी कर आदेश दिया जाए कि वहां पर पढ़ने वाले प्रत्येक बच्चे या युवकों को इस बात का पक्का ज्ञान करवाया जाए कि उनके जीवन में आने वाली दहेज जैसी समस्या से उन्हें कैसे निपटना है क्योंकि कालेज की पढ़ाई पूरी होने के पश्चात् अगले कदम के रूप में उसे इसी समस्या का सामना करना होता है। प्रत्येक वर्ष दहेज न लाने की वजह से जलाए जाने वाली लड़कियों के भी दुखों का अन्त इसी से हो जाएगा। जब कोई दहेज न लेगा और न देगा तब कोई वजह नहीं स्वार्थ पूर्ति हेतु ऐसे कार्य किए जाएं।

मैंने कुछ सुझाव आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार हेतु दिए हैं। आशा करता हूं कि प्रत्येक आर्य जन बिना किसी पूर्वाग्रह से इन विचारों को अपने जीवन में अपनाने का प्रयत्न करेंगे। इसके साथ ही आर्य समाजों के अधिकारीगण भी बिना समय गवाएं अभी से ओ३म् का ध्वज उठाए निकल पड़ेंगे।

आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग जी.टी. रोड, फिरोजपुर छावनी की तदर्थ समिति

आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग जी.टी. रोड, फिरोजपुर छावनी की पूर्व अन्तरंग सभा भंग हो जाने पर एक तदर्थ समिति का गठन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री हरबंस लाल शर्मा जी ने निम्न प्रकार किया है:-

1. श्री विजय आनन्द आर्य (भजनोपदेशक) प्रधान, 2. श्री किशोर चन्द [illegible]-वरिष्ठ उपप्रधान, 3. श्री [illegible]-उपप्रधान। 4. श्री [illegible]-उपप्रधान, 5. श्री [illegible]-मन्त्री। 6. श्री दीपक [illegible]-उपमन्त्री। 7. श्री [illegible]-कोषाध्यक्ष। 8. श्री [illegible]-निरीक्षक। 9. श्री [illegible]। 10. डॉ० [illegible]-पुस्तकाध्यक्ष। [illegible]

पं० लेखराम के.......

(पृष्ठ 4 का शेष)

की यात्रा की और एक सप्ताह चण्डीगढ़ में उनके निवास पर रहने का प्रोग्राम बनाया। चण्डीगढ़ प्रवास में मुझे उन्हें निकट से देखने का अवसर मिला। सबसे ज्यादा मैं प्रभावित हुआ उनकी लाइब्रेरी से। सभी प्रकार की पुस्तकें विषयक्रम से रखी थीं। पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्थित फाइलें तथा कतरनों को भी विषयवार फाइलों में मैंने देखा। वेदवाणी, परोपकारी आदि मासिक पत्रिकाओं के भी वर्ष के आधार पर 12 अङ्कों के साथ सजिल्द बंधवा कर करीने से सुसज्जित देखकर सम्पूर्ण शोध सन्दर्भी पुस्तकालय का स्वरूप दृष्टिगोचर हुआ। उनका अल्पाहार, तड़के 4 बजे उठ जाना, अपने हाथों से प्रात: काल की चाय बनाना, प्रतिदिन डाक में आए पत्रों का उसी दिन उत्तर लिखना, नियमित रूप से किसी ग्रन्थ का स्वाध्याय करना, डाक से उपलब्ध पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ना, प्रतिदिन लिखना, रात को सोने से पहले भी प्राचीन पत्रिकाओं को उलटना-पुलटना, यही उनकी दिनचर्या थी। मिलनसार स्वभाव, पर निन्दा से दूर रहना, संयत भाषण, यथावसर प्रफुल्लित हास्य और गम्भीर विचार विमर्श के लिए सर्वदा तैयार, संक्षेप में यही उनका व्यक्तित्व है। एक सप्ताह में उनकी पुस्तकों पर पहले की छपी सभी समीक्षाएं मैंने पढ़ीं किन्तु उनकी मात्र 38 पुस्तकों की ही समीक्षाएं मैं लिख सका जो अभिनन्दन ग्रन्थ के पृष्ठ 1 से 23 तक छपी हैं। बिहार के प्रखर आर्य मनीषी प्रो० ओमप्रकाश ब्रह्मचारी द्वारा सम्पादित 'स्वाध्याय निर्णय' (मुजफ्फरपुर) का मार्च-अप्रैल 1989 का विशेषांङ्क 'डॉ० भवानी लाल भारतीय सम्मान अङ्क' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ डॉ० भारतीय की लेखन माला का विशद विवरण प्रदान करता है। इस अङ्क में स्वयं डॉ० भारतीय द्वारा लिखित 'उनके आर्य सामाजिक जीवन और लेखन की विकास यात्रा' को 110 पृष्ठों में प्रस्तुत किया गया है।

डॉ० भारतीय ने 'विश्वभारती' पत्रिका में 'एक पुस्तक कीट के संस्मरण' शीर्षक से एक लम्बी लेखमाला प्रकाशित की थी। केवल ऋषि दयानन्द के जीवन तथा व्यक्तित्व से सम्बन्धित प्रो० भारतीय की साठ से अधिक पुस्तकें हैं। अन्य आर्य विद्वानों के लेखन को समग्र आकलन के साथ विवरण प्रस्तुत करना डॉ० भारतीय के लेखन की दूसरी विशेषता है। आर्य समाज की ऐतिहासिक गतिविधियों, विभिन्न आर्य संस्थाओं, क्रान्तिकारियों, उन्नीसवीं शती के अन्य धर्माचार्यों तथा महापुरुषों का मूल्यांकन करने में उनकी विशेष रूचि है। ऋषि दयानन्द के पत्र विज्ञापन के अनेक संस्करण प्रकाशित हुए हैं। पं० मामराज (खतौली), पं० भगवद्दत्त तथा पं० युधिष्ठर मीमांसक के अनन्य अध्यवसाय से ऋषि के पत्र आर्य जनता के समक्ष आ सके। प्रारम्भ में महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने भी स्वामी जी के कुछ पत्रों का संग्रह करके छापा था। 'परोपकारी' के वर्तमान सम्पादक मेरे मित्र प्रो० धर्मवीर जी ने ऋषि के अनेक पत्रों को ढूंढा और उन्हें प्रकाशित किया। इन सभी पत्रों को आधार बनाकर 'ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन' शीर्षक से एक ग्रन्थ की रचना में सम्प्रति डॉ० भारतीय संलग्न हैं। उन्होंने अपनी 'आत्मकथा' भी लिखी है। इन दोनों ग्रन्थों का प्रकाशन भी निकट भविष्य में होना है। शायद इनका विमोचन 'अमृत महोत्सव' के अवसर पर किया जाए। डॉ० भारतीय अहंकार शून्य किन्तु स्वाभिमानी लेखक हैं। विनम्रता उन्हीं के शब्दों में-"मैंने अपने क्षुद्र जीवन में केवल एक ही व्यसन पाला-पढ़ने और लिखने का। बहुत कुछ पढ़कर भी किसी शास्त्र का तलस्पर्शी विद्वान् नहीं बन सका। कभी गुरु या आचार्य के निकट बैठकर संस्कृत या शास्त्रों को पढ़ने का सुयोग आया ही नहीं। जो कुछ पढ़ा अपने ही बलबूते पर, अत: पल्लवग्राही पाण्डित्य के अतिरिक्त और मिलना ही क्या था ?"

मोगा में स्वतन्त्रता दिवस

एम.डी.ए.एस. माडल हाई स्कूल मोगा में स्वतंत्रता दिवस समारोह 15-8-2002 को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। समारोह के प्रारम्भ में आर्य समाज के पुरोहित श्री दिवाकर भारती जी ने हवन-यज्ञ कराया जिसमें राष्ट्र की समृद्धि की कामना करने वाले वेद मंत्रों के साथ भी आहुतियां दी गईं। मुख्य यजमान स्कूल के प्रधान श्री योगेश गोयल एवं उनकी धर्मपत्नि थे। हवन की समाप्ति पर मुख्यातिथि स्वामी सच्चिदानन्द जी ने ज्योति प्रज्वलित की। उसके बाद छोटे-छोटे बच्चों ने आगुन्तकों का गीत रूप में स्वागत किया। प्रिंसिपल संतोष महत्ता ने मंच संचालन करते हुए बच्चों के साथ स्वतंत्रता के महत्त्व और उसे प्राप्त करने के लिए देश भक्तों द्वारा की गई कुर्बानियों के विषय में बड़ी सरल भाषा में वार्तालाप किया। बच्चों ने स्वतंत्रता संबंधी गीत गाते हुए महात्मा गांधी, चाचा नेहरु और नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की सुन्दर झांकी पेश की जिसे दर्शकों ने बहुत पसन्द किया। इसके साथ ही धार्मिक एवं नैतिक संबंधी कार्यक्रम पेश किया गया। स्वामी सच्चिदानन्द, डा० विजय सिंगला, डॉ० गगन विजान ने अपने अमूल्य विचार रखे और बच्चों में अपनी 'पढ़ाई के साथ-साथ देश प्रेम की भावना पैदा करने पर बल दिया।' राष्ट्रीय गीत के बाद हल्वे का प्रशाद बांटा गया।

-प्रिंसीपल

अमृतसर में वृष्टि यज्ञ

वर्षा की कमी को अनुभव करते हुए आर्य सद्भावना सत्संग समिति अमृतसर की सभी बहनों ने वृष्टि यज्ञ का निर्णय किया, 11 अगस्त 2002, रविवार को नै. ब्र. (डॉ०) माधुरी योगमती के निर्देशन में गोकुल नगर (भवानी नगर) में मोहल्ला वासियों के सहयोग से छोटा शिव मन्दिर के सामने खुली सड़क पर वृष्टि यज्ञ का महान आयोजन हुआ। इसमें बाल, वृद्ध, नर-नारी सभी ने बडी ही श्रद्धा से आहुतियां प्रदान कीं तथा 3 घण्टे वृष्टि यज्ञ में तल्लीन रहे। इस यज्ञ के ब्रह्मा थे पं० सत्यपाल जी 'पथिक' जिनका सहयोग किया प० पवन कुमार (चम्बा वाले) ने। श्री हरीश जी सहगल सपत्नीक यजमान पद पर रहे। अन्त में खीर व पूड़ों का प्रसाद भी बांटा गया जो माता राजरानी (भरावां दा होटल) तथा डॉ० आशीष सचदेवा एवं डॉ० ऋचा सचदेवा की ओर से था। इसमें विशिष्ट सामग्री, समिधा एव घी का प्रयोग हुआ और ईश्वर से वृष्टि की प्रार्थना सच्चे मन से की। मध्यरात्रि से लेकर मंगलवार तक लोगों ने वर्षा का आनन्द पाया, सभी प्रसन्न थे पर अभी आवश्यकता है कि और बड़े-बड़े वृष्टि यज्ञ हों जिससे भरपूर वृष्टि का योग बने।

गोकुल नगर वासियों में से यों तो सभी का सहयोग तन, मन, धन से मिला, परन्तु मुख्य सहयोग रहा, नरिन्द्र जी कालिया, विशाल कालिया, प्रवीण जनरल स्टोर्स वालों का व अशोक जी का तथा मन्दिर से सम्बन्धित लोगों का काफी सहयोग रहा। —राजरानी, प्रचारमन्त्री

करतारपुर में आर्य बालवाड़ी अमृतसर का रोचक कार्यक्रम

इस वर्ष गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर अन्य कार्यक्रमों के साथ-साथ आर्य बालवाड़ी अमृतसर द्वारा रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। यह बालवाड़ी ''योगनिकुञ्ज'' अमृतसर में नै. ब्र. (डॉ) माधुरी योगमती द्वारा मोहल्ले के बच्चों को एकत्र कर गुरुकुल पद्धति पर चलाई जाती है, इसमें बच्चों को वेद प्रचार के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों की रक्षा के कार्यक्रम कराये जाते हैं।

करतारपुर में पहुंचे सभी बच्चे जो श्वेत कुर्त्ता पायजामा पहने थे तथा गांधी टोपी लगाये पूर्ण ब्रह्मचारी बने थे। बच्चियां श्वेत सलवार, कमीज व पीली चुन्नियों में थी। सर्वप्रथम छोटी-छोटी ब्रह्मचारिणी व ब्रह्मचारियों ने दैनिक यज्ञ कर मन्त्रोच्चारण से सबको मोह लिया। तत्पश्चात् प्रभु भक्ति एवं महर्षि पर गीत प्रस्तुत कर सभी को आकर्षित किया, अन्त में ध्यान योग, योगासन, वेद की सूक्तियां व आर्य समाज के नियम सुनाकर जहां सभी को आश्चर्य चकित किया, वहीं श्रवण कुमार की झलकी प्रस्तुत कर जिसमें वहंगी में अन्धे माता-पिता दिखाये, सभी को भाव विभोर कर दिया। सुन्दर व भावपूर्ण जयघोष से इसका अन्त हुआ तथा दर्शकों ने प्रसन्न होकर बच्चों को मुक्त हस्त द्वारा धन राशि प्रदान की।

आर्य समाज मोगा में वेद सप्ताह

आर्य समाज मोगा में 22 8.2002 से वेद सप्ताह आरम्भ है जो 31-8-2002 तक चलेगा। 22-8-2002 को विशेष यज्ञ आरम्भ किया गया जिसके यज्ञमान श्री प्रियत्तम देव, श्री अमृत लाल अग्रवाल, श्री दिनेश सूद, श्री मदन मोहन जी सपत्नीक बने। 23-8-2002 को श्री जगदीश पुरी, श्री राजेश गोयल, श्री सुभाष सूद, श्री अर्जुन देव यज्ञमान बने। 24-8-2002 को श्री डा जितेन्द्र खुल्लर, श्री विवेक, श्री कुश अरोड़ा, श्री अजय सूद बने। 25-8-2002 को श्री जगदीश चन्द्र महत्ता, श्री अरविन्द शर्मा, श्री नवल सूद, श्री साथी रूप लाल जी। 26-8-2002 को श्री नेरन्द्र सूद, डा विजय सिंगला, श्री जितेन्द्र गोयल, श्री अश्विनी कुमार (मिन्टू)। 27 8 2002 को योगेश गोयल, श्री सतनाम सिंह, श्री अमृत पाल, श्रीमती सुमन मल्होत्रा यज्ञमान बने। इसी प्रकार यज्ञ 31-8-2002 तक चलेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय जी शास्त्री व श्री पं० दिवाकर भारती, श्री जगत वर्मा के भजन व उपदेश हो रहे हैं। —प्रियतम देव

गुरुकुल आर्य माडल स्कूल बठिण्डा में आजादी दिवस

गुरुकुल आर्य माडल स्कूल बठिण्डा द्वारा 56वां आजादी दिवस बड़ी धूमधाम एवम् हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 8.30 बजे हवन यज्ञ पूज्य ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी वैदिक मिशनरी के ब्रह्मत्व एवम् पं. ध्रुवकुमार जी शास्त्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। हवन यज्ञ के मुख्य यजमान आदरणीय श्री नरेश कुमार जी मित्तल गवर्नमैंट कन्ट्रैक्टर सपत्नीक थे। इनके अतिरिक्त हवन यज्ञ मे चौ० बाबू राम जी प्रधान, श्री रणधीर सिंह कोषाध्यक्ष, श्री प्रेम भाटिया जी प्रबंधक, श्री गौरी शंकर जी, श्री ओ.पी. मंगला, श्री विजय कुमार गर्ग गुरुकुल आर्य माडल स्कूल एवम श्री धर्मपाल जी रल्लन प्रधान आर्य समाज सिकन्दर पुरा, श्री बलदेवराज जी छाबड़ा, श्री कृष्ण लाल जी जटाना आर्य समाज सिरकी बाजार, श्री चमन लाल जी मेहता प्रबंधक आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, श्री विनोद गर्ग मंत्री आर्य माडल हाई स्कूल, श्री साहिल गोयल भी यजमान बने। उल्लेखनीय है कि इस शुभ अवसर पर आर्य परिवारों को पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यावाचस्पति चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। शान्ति पाठ उपरान्त ध्वजारोहण इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री नरेश चन्द्र जी मित्तल के कर कमलों द्वारा तालियों की गूंज में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।

'ऊंचा रहे तिरंगा हमारा' गीत आर्य माडल हाई स्कूल के बच्चों ने प्रस्तुत किया। इस उपरान्त मुख्य अतिथि के आगमन पर स्वागत गीन आर्य मॉडल हाई स्कूल के बच्चों ने प्रस्तुत किया। वातावरण इतना आनन्दमय बना कि उपस्थित जन एक दूसरे को आजादी दिवस बधाई दे रहे नजर आये। स्कूल के प्रबंधक श्री प्रेम भाटिया जी ने मंच संभालते ही लाला कुलवन्त राय जी अग्रवाल को आमन्त्रित किया कि वह अपनी और अपनी संस्था की ओर से शुभ कामनायें उपस्थितजनों को दें। उन्होंने शुभकामनायें देते हुए देश के वीरों के प्रति श्रद्धा प्रकट की एवम् आह्वान किया कि हमें जिन वीरों ने आजादी प्राप्त कराई है उनके बलिदानों को भूलना नहीं चाहिए। प्रिं० ओ०पी० मंगला प्रधान आर्य समाज ने भी अपने विचार प्रकट किए।

पूज्य ब्रह्मचारी सूर्य देव जी वैदिक मिशनरी ने अपने वक्तव्य में कहा कि किसी व्यक्ति के बारे में न गलत सोचना चाहिए, न ही गलत कहना चाहिए एवम् विशेषकर मंच से किसी की बुराई नहीं करनी चाहिए। उन्होंने 'गो मूत्र अर्क' की विशेषतायें बताईं और बताया कि गुरुकुल शिल्प विद्यालय में गौ मूत्र अर्क की दूसरी इकाई शीघ्र लग जाएगी जिससे आवश्यक रोगियों को 'गौ मूत्र अर्क' हर समय प्राप्त हो सकेगा। उन्होंने कहा कि प्रेम भाटिया जी के प्रयास से नींबूओं का एक बाग लगाया गया है एवम् पौधों की रौनक उनके प्रयासों से ही है। प्रधान श्री बाबूराम जी गर्ग की उन्होंने बार-बार प्रशंसा की कि जब से वह प्रधान बने हैं गुरुकुल दिन दौगुनी रात चौगुनी उन्नित कर रहा है। प्रिंसिपल आर्य माडल हाई स्कूल हुक्मचन्द्र जी गोयल ने भी अपने विचार प्रकट किए। इस शुभ अवसर पर आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को ओर से आजादी दिवस पर गीत प्रस्तुत किए गए। इन बच्चों के गीतों से खुश होकर लगभग सभी अधिकारियों विशेषकर श्री रामकुमार व्यापारी ने बच्चों के प्रोत्साहन के तौर पर नकद राशि प्रदान की।

मुख्य अतिथि एवम् उनकी धर्मपत्नि श्रीमती मित्तल द्वारा स्कूल के विद्यार्थियों को (30) तीस यूनीफार्म एवम् अन्य ईनाम भी प्रदान किए। लड्डू आदि भी उनकी ओर से बांटे गए।

श्री प्रेम भाटिया जी ने अपने विचार रखते हुए आह्वान किया कि हम सब को प्रण करना चाहिए कि हम सब सभी प्रकार के बुरे कार्यों से बचकर रहते हुए अपने भारत की दिलोंजान से सेवा करेंगे। चौ० बाबू राम जी प्रधान ने इस शुभ अवसर पर पधारे हुए सभी आर्यजनो का, अड़ोसी-पड़ोसियों का शहर के जाने माने व्यक्तियों, विशेष कर श्री एम.पी अरोड़ा मंत्री एवम् श्री हरिद्वार माली/चौकीदार जिनके अनथक प्रयत्न से कार्य सम्पन्न हुआ उनका धन्यवाद किया। उन्होंने स्कूल के अध्यापकगणों विद्यार्थियों का हार्दिक धन्यवाद किया। राष्ट्रीय गीत श्री प्रेम भाटिया एवम् विद्यार्थियों ने मिलकर गाया एवम् जयघोषों के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। —प्रेम भाटिया

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना का पारिवारिक सत्संग प्रिं० श्री बी.के. वर्मा आर्य सी. सै. स्कूल सिविल लाईन सामने पुराना दयानन्द हस्पताल लुधियाना में 1-9-2002 रविवार को सायं 5 से 7 बजे तक होगा। इस अवसर पर श्री पं. लाल कृष्ण जी शास्त्री का उपदेश होगा।

गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

दूरभाष 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 20 सृष्टि संवत 1960853103, 8 सितम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

वृद्धावस्था में भी आप क्या नहीं कर सकते ?

❑ प्रो० श्री सुभाष चन्द्र गुप्ता, दिल्ली

मानव जीवन के उद्देश्य की एक मनोरम झांकी हमें निम्न वेद मंत्र में देखने को मिलती है–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ –यजुर्वेद-4-2

उद्देश्य क्या है ?–कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीना। कर्म से तात्पर्य है–शुभ, परोपकारमय कर्म–ऐसे कर्म जो रचनात्मक हों, जिनसे अपना और अन्यों का मंगल, स्वस्ति, कल्याण, उत्थान हो। सौ वर्ष तक का अर्थ है कि जब व्यक्ति वृद्धावस्था को प्राप्त हो, तब भी वह निठल्ला होकर, हार मानकर न बैठ जाए। वरन् अपनी सामर्थ्यानुसार कुछ न कुछ श्रेष्ठ कर्म करता रहे। नीचे ऐसे ही कुछ महान् दीर्घायु प्राप्त व्यक्तियों का वर्णन किया जा रहा है, जो वृद्धावस्था में भी सजग, सावधान, ध्येयनिष्ठ एवं कर्मशील बने रहे।

[illegible] 80 वर्ष के थे, तब उन्होंने '[illegible]' पूरी की। एक [illegible] किया। [illegible] हुआ।

गेटे 83 वर्ष के थे, तब उन्होंने अपना महान् ग्रन्थ 'फाउस्ट' पूर्ण किया।

डॉ० अलबर्ट श्वेत्जर 89 वर्ष की आयु में भी अफ्रीका के एक अस्पताल में मुखिया के पद पर कार्यरत थे।

90 वर्ष की आयु में भी पेब्लो पिकासो चित्रकारी के कार्य में निमग्न रहते थे।

एमन डी वलेरा 91 वर्ष की आयु में आयरलैंड के राष्ट्रपति बने।

जार्ज बरनार्ड शॉ ने अपना प्रसिद्ध नाटक 'फारफेच्ड फेबल्स' 93 वर्ष की आयु में लिखा।

बर्ट्रेंड रसल 94 वर्ष की आयु में भी विश्वशान्ति के कार्य में संलग्न थे।

अमेरिका के 'ओलिवर वेन्डल होम्स' ने 94 वर्ष की आयु में ग्रीक भाषा पढ़ना आरम्भ किया।

साहसी सेवानिवृत्त अध्यापिका 'मुनिया देवी' ने 70 वर्ष की आयु में एम.ए. की छठी डिग्री प्राप्त की।

श्रीमती मार्था गॉडर्न 75 वर्ष की आयु में भी लंकास्टर युनिवर्सिटी में अध्ययनरत थीं।

इसी प्रकार पूर्व लदन की सोफाई बेनेट 84 वर्ष की आयु में भी अपना अध्ययन जारी रखे हुए थीं।

सर फिरोज सेठना बम्बई के एक पारसी रईस थे और रोटरी इंटरनैशनल के प्रधान थे। 79 वर्ष की आयु में प्रतिदिन छः बजे से अपने दैनिक कार्य आरम्भ कर देते थे और सारा दिन विभिन्न व्यापारिक धंधों में व्यस्त रहते थे। उनमें अतुलनीय चुस्ती थी।

भारत रत्न सर एम विश्वेश्वरैया 77 वर्ष की आयु में भी देश में सिंचाई की समस्याओं को दूर करने के लिए कई ठोस कार्यों में सक्रिय थे।

इंग्लैंड के जार्ज मूलर ने सैकड़ों अनाथालय स्थापित किए। उनको चलाने के लिए वे किसी से धन की याचना नहीं करते थे। जब भी समस्या [illegible] उन्हें प्रभु के द्वार से कभी निराश नहीं होना पड़ा। जन्म से ही दुर्बल शरीर थे। फिर भी सामाजिक सेवा तथा धर्म प्रचार के कार्यों में लगे रहे। 70 वर्ष की आयु के बाद भी उन्होंने विश्व भ्रमण कर ईश्वरवाद का प्रचार किया। वे 94 वर्ष तक जीवित रहे।

एक मामूली क्लर्क के रूप में एक होटल में नौकरी आरम्भ करने वाला 22 वर्षीय युवक, आगे चलकर तीस होटलों का मालिक बना। उसकी सफलता का रहस्य था–अद्भुत प्रतिभा, अपूर्व बुद्धिमत्ता एवं घोर परिश्रम। वृद्धावस्था में भी उनकी कार्य क्षमता में कोई कमी नहीं आई। इन शतवर्षीय कर्मशील महापुरुष का नाम है–मोहन सिंह ओबराय।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई 99 वर्ष से भी ऊपर की आयु में भी सक्षम और सचेत थे। चेहरे पर कहीं झुर्री नहीं, आंखों में कोई मायूसी नहीं, बोलने में लड़खड़ाहट नहीं तथा लिखते समय हाथ में कंपन नहीं। इसका रहस्य था–उनका सादा जीवन, दृढ़ निश्चय, शाकाहारी खान-पान, भगवान् में पूर्ण आस्था इतनी लम्बी आयु में भी अनुशासित दिनचर्या का पालन।

कई भाषाओं (हिन्दी, उर्दू, तेलगु, कन्नड़, तमिल, संस्कृत और गुजराती) के ज्ञाता, वेदों के विद्वान्, प्रसिद्ध योगाचार्य एवं चिकित्सक श्री तिरुमलाई कृष्णमाचार्य 100 वर्ष की आयु में पहुंच कर चलने-फिरने से लाचार हो गए परन्तु इतनी लम्बी आयु में भी उन्होंने संस्कृत में कविताएं रचने तथा धार्मिक प्रवचन करने का सिलसिला जारी रखा।

अमेरिका के हैरोल्ड रॉबिन्स ने एक अनाथ बालक के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया। अपनी सूझ-बूझ एवं कठोर परिश्रम द्वारा वे 20 वर्ष की आयु में ही करोड़पति बने। बाद में एक [illegible] में वे सारी [illegible] लेखन-प्रतिभा का उदाहरण यही है कि उनके उपन्यासों में केवल 'कारपेट बेगर्स' की ही 60 लाख प्रतियां हाथों-हाथ बिक गईं। वे 81 वर्ष तक जीवित रहे। लेकिन उन्होंने भी बुढ़ापे को अपने लेखन-कार्य में बाधक नहीं बनने दिया।

82 वर्ष की आयु में भी लियो टॉलस्टाय ने लिखा ''मैं निठल्ला नहीं रह सकता।''

विंस्टन चर्चिल ने भी 82 वर्ष की आयु में अपना एक ग्रन्थ पूरा किया, जिसका नाम है–'ए हिस्ट्री ऑफ दी इंग्लिश स्पीकिंग प्यूपल्स।'

सोमरसेट माउघम ने 84 वर्ष में 'प्वाइंटस् ऑफ व्यू' नामक पुस्तक लिखी।

कौनराड एडेनार ने 88 वर्ष की आयु में पश्चिमी जर्मनी के चांसलर का पद सम्भाला।

30 वर्ष की आयु में ही जिस के रोग का निदान किया गया–थायरायड कैंसर और 50 वर्ष के होने पर जिसे उच्च रक्तचाप से ग्रसित पाया गया, उसी व्यक्ति ने अपने खान-पान, रहन-सहन और चिंतन शैली में परिवर्तन करके निरोगता एवं दीर्घायु प्राप्त कर सब को चकित कर दिया। प्रोफेसर बॉब काहन नामक इस व्यक्ति ने लगभग 81 वर्ष की आयु में अपनी 15वीं पुस्तक (सफल चिरजीवन विषय पर) लिखी और 16वीं रूप-रेखा की तैयारी आरम्भ कर दी।

विख्यात वैदिक विद्वान् श्री दामोदर सातवलेकर 100 वर्ष से भी अधिक आयु तक जीवित रहे। वे भी अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक दैनिक भगवद्-भजन, योगाभ्यास, स्वाध्याय, प्रवचन, लेखन आदि सभी कार्य नियम पूर्वक करते रहे।

प्रसिद्ध आर्य संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी जीवन के दसवें दशक में भी वैदिक प्रचार-प्रसार में लगे रहे। उन्होंने देश-विदेश में लम्बी-लम्बी यात्राएं कीं। ऊंचे-ऊंचे पर्वतों पर आरोहण किया। साधना के लिए घने जंगलों में आवास किया। उनका जीवन सबके लिए और विशेषतया वृद्ध सज्जनों के लिए तप, त्याग, वैराग्य, भक्ति एवं कर्मशीलता का प्रेरणा-स्रोत है।

आर्य जगत् के ही एक अन्य वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी भीष्म जी ने 108 वर्ष की लम्बी आयु प्राप्त की। उनके जीवन में हम संयम, तपश्चर्या, आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत पालन, वैदिक धर्म के प्रचार की तड़प, सरलता आदि अनेक गुणों का समावेश पाते हैं। वे भी वृद्धावस्था पर्यन्त एक युवा महारथी की तरह अपने ध्येय कार्यों में निरत रहे।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

अपने आप को मत छुपाओ

□ पं० बनारसी दास आर्य, आर्य समाज बर्मांकोट, अमृतसर

त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी ने कहा था–आर्य समाज की उन्नति के लिए सबसे पहली बात यह होनी चाहिए कि प्रत्येक आर्य समाजी अपने आपको सगर्व आर्य समाजी घोषित करे। कहीं भी अपने आप को छुपाने का प्रयत्न न करे। किसी भी प्रलोभन, भय अथवा डर के कारण अपने आर्यत्व को तिलाजलि देना आर्य समाज के लिए सही नहीं पाई जाती है। जैसे हजरत ईसा ने कहा है, "ईसा का चेला होकर, भय के कारण जो व्यक्ति यह प्रकट करेगा कि वह ईसाई नहीं है, प्रलय के दिन उसे नरक में जाना पड़ेगा।" मुसलमानों में कहा जाता है कि जो व्यक्ति खुदा तथा उसके रसूल से इन्कार करता है उसे नरक की ज्वाला मे जलना पड़ता है।

बौद्धों में भी यही रीति थी कि जो भी नया व्यक्ति मत को स्वीकार करता था उसे सब लोगो के सामने इन तीन बातो की घोषणा करनी पडती थी।

1 मैं बुद्ध की शरण मे जाता हूं।
2 मैं धर्म की शरण में जाता हू।
3 मैं संघ की शरण में जाता हू।

सिक्खों में भी गुरु गोबिन्द सिह जी ने सिखो के लिए बाहरी चिन्ह नियत किए थे। सिक्खों के लिए बडा विकट समय था। सिक्ख गाजर मूली की भाति प्रतिदिन मुगलों के हाथो काटे जाते थे। इतने कष्टो को सहते हुए भी गुरु जी ने सिक्खों के लिए अपने बाहरी धार्मिक चिन्ह नियत करने जरूरी समझे।

वैदिक धर्म में भी आर्यो के बाहरी चिन्ह नियत किए गए हैं–जैसे चोटी रखना। क्योंकि आजकल वाल शीघ्र झड़ जाते हैं इस लिए चोटी का महत्व रहा नहीं। दूसरा है–यज्ञोपवीत तथा नमस्ते।

इसलिए सभी मतों में यह शिक्षा दी जाती है कि अपने धर्म अथवा विश्वास को कभी मत छुपाओ। जिस प्रकार यह बात अन्य मतों के लिए जरूरी है जो व्यक्ति मन से तो आर्य समाजी है परन्तु किसी दबाव के कारण आर्य समाजी होने से इन्कारी है, वह आर्य समाज को घोर हानि पहुचाता है। ऐसे लोगो ने सचमुच आर्य समाज को बहुत हानि पहुचाई है।

महर्षि के जाने के पश्चात् जब शुद्धि आन्दोलन जोरों पर था उस समय आर्य समाजी को बिरादरी से निकाल दिया जाता था। उसके साथ सभी रिश्तेदार व सम्बन्धि नाता तोड लेते थे। आर्यो को गालियां, लाठियां खानी पड़ती थीं परन्तु आज समय बदल गया है। यदि आज आप अपने आप को आर्य समाजी कहेंगे तो कोई बिरादरी से नहीं निकालेगा, न ही गालियां खानी पड़ेंगी। इसलिए आज सभी आर्य पुरुषों को अपने नाम के साथ आर्य शब्द अवश्य ही लिखना चाहिए और स्त्रियों को भी आर्या शब्द नाम के साथ जरूर लिखना चाहिए।

अत: हम सब देखते हैं कि आर्य जगत के अन्दर बड़े-बड़े पदों पर विराजमान व्यक्ति भी अपने नामों के साथ पारिवारिक नाम जैसे भाटिया, मेहरा, गुप्ता, अग्रवाल आदि शब्द लिखना अपना गौरव समझते हैं लेकिन इससे पता नहीं चलता कि ये लोग आर्य हैं भी अथवा नहीं। "आर्य" लिखने से एक पहचान बनती है। जैसे सिक्ख पुरुष अपने नाम के साथ "सिंह" शब्द और सिक्ख स्त्री अपने नाम के साथ "कौर" शब्द का प्रयोग करते हैं। इससे झट पता चल जाता है कि यह सिक्ख परिवार है।

जिस प्रकार यज्ञोपवीत तथा नमस्ते आर्यों के बाहरी चिन्ह हैं, उसी प्रकार अपने नाम के साथ आर्य (पुरुष) तथा आर्या (स्त्री) शब्द का लिखना भी हमारे बाहरी चिन्ह के महत्व को उजागर करता है।

आप कहेंगे कि हम तो मन से आर्य समाजी हैं। अत: हमारे लिए आर्य शब्द का लिखना कोई जरूरी नहीं है। हो सकता है आप ठीक कह रहे हों परन्तु मन को कोई टटोल कर नहीं देखता। बाहरी चिन्ह से कौम की पहचान का पता चलता है। इसलिए आर्य भाई-बहनों अपने आप को कभी मत छुपाओ। जब भी मौका मिले अपने आप को प्रसिद्ध करो कि मैं आर्य समाजी हूं। अपने दोस्तो, मित्रों, सगे-सम्बन्धियो से कहो कि मैं आर्य समाजी हू। जो व्यक्ति तनिक भय से, दूसरों के प्रभाव से अपने आर्य समाजी होने से इन्कार कर देता है। वह आर्य समाज के लिए कलक है तथा वह आर्य समाज की कुछ सेवा नहीं कर सकता। यदि ऋषि ऋण उतारना है तो स्त्री/पुरुष अपने नाम के साथ आर्या/आर्य शब्द अवश्य लिखा करें तथा अपनी पहचान को न छुपाए।

फूलों का गुलदस्ता

ले० राम पथिक, अम्बाला

1. बुद्धिमान कहते नहीं, कर गुजरते हैं।
2. वैर से वैर शान्त नहीं होता, मित्र भाव से शान्त होता है, चाहे स्वयं आजमाये।
3. चरित्र ही वह सुगन्ध है जो सर्वत्र फैलती है।
4. निर्भय जीवन ही जीवन है भयभीत को सुख शान्ति कैसे?
5 एक दिन का ज्वर एक माह की कमजोरी करता है परन्तु क्रोध तो एक क्षण में ही पूर्व संचित तप, नम्रता को नष्ट करता है।
6 आप अच्छे हैं, सदा रहें भी परन्तु विश्व में तो सभी प्रकार के हैं, अच्छों से मित्रता और अन्यों से दूर रहना ही अच्छा है।
7. हम स्वयं के मित्र तो शत्रु भी पवित्र सोच ही सुमित्र तो कुविचार ही कुमित्र है।
8. सरलता, सादगी, संयमी, संतोषी जीवन है सच्चा-जीवन है।
9. विद्या, धन, बल आदि की प्राप्ति हेतु मेहनत करनी ही पड़ती है परन्तु चरित्र बल में कठिन मेहनत संग इसकी रक्षा में कठोर परिश्रम भी।
10. वीर्य रक्षा ही जीवन तो वीर्य नाश ही मृत्यु है।
11. वही काम करो जो स्वयं कर सकते हो, दूसरों के सहारे जीवन कार्यों की आदत न बनाये भले हम समाजिक प्राणी हैं, समाज कार्य मिल कर होते हैं।
12 बोलो कम, सुनो ज्यादा, इसी लिए वाणी एक दी तो कान दो दिए हैं।
13 कथनी करनी एक रहे सदा ध्यान रखें।
14. प्राकृतिक जीवन जीने वाला सुखी रहता है, जिसमें बनावट, दिखावट रहेगी दुखी रहेगा।
15. जो भी बोलो। सोच कर बोलो, कम खाओ, खम खाओ, चिन्ता छोड़ो, स्वस्थ सुखी रहोगे।

वृद्धावस्था में भी आप.....

(पृष्ठ 1 का शेष)

'योग द्रोण' की उपाधि से विभूषित किए जाने वाले योगाचार्य बी.के.एस आयंगर ने 81 वर्ष की आयु तक विश्व में योग के 1200 कार्यक्रम (तीन घंटे की अवधि के) प्रस्तुत किए।

शास्त्रीय संगीत की दुनिया में कालजयी पं मल्लिकार्जुन 82 वर्ष की आयु में भी उसी ठाठा आवाज में गायन प्रस्तुत करते रहे, जिससे वे सदा से करते आए।

उपरोक्त उदाहरण हमें इस शिक्षा को हृदयंगम करने की प्रबल प्रेरणा देते हैं, कि व्यक्ति को वृद्धावस्था में भी अपने और समाज के उत्थान के लिए गतिशील रहना चाहिए। अपनी रुचि श्रेष्ठ कर्मों, ज्ञान-वृद्धि, भक्ति, ध्यान आदि में बनाए रखनी चाहिए। वृद्धावस्था में भी नवीन ज्ञानार्जन के सम्बन्ध में मुझे आर्य समाज के उज्जवल रत्न पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जी का वह उत्तम स्मरण हो रहा है, जो उन्होंने कुछ वृद्ध लोगों को दिया था। पं० जी लाहौर में वृद्ध पुरुषों की एक क्लास लगाया करते थे। जिसमें उन्हें अष्टाध्यायी का ज्ञान कराते थे। एक दिन वृद्ध शिष्यों ने पूछा– "पं० जी! इस पाठ से हम बूढ़े तोतों को क्या लाभ, जिनकी एक टांग तो कब्र में पहुंच चुकी है" पं० जी मुस्कराए और बोले, "इस दीर्घायु में भी अष्टाध्यायी का जितना पाठ आप पढ़ लेंगे, वह व्यर्थ नहीं जाएगा। अगले जन्म में यह संस्कार पुनः जागृत होकर आपको इससे आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।" इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वृद्धावस्था मे भी ज्ञानवर्धन मनन, चिंतन क्यों जारी रखना चाहिए।

आइए उपरोक्त दीर्घजीव महान् व्यक्तियों के उत्कृष्ट जीवनों से प्रेरणा लेकर हम भी अपने जीवनकाल के अन्तिम समय तक श्रेष्ठ कर्मों के अनुशीलन, उत्तम व्रतों के पालन तथा धर्म पथ का अनुसरण करने में सदैव तत्पर रहें।

सम्पादकीय.....

क्या हमारे देश में कभी धर्मान्तरण बन्द होगा ?

हमारे देश में चिरकाल से धर्मान्तरण चला आ रहा है। मुसलमान काल में सबसे पहले धर्मान्तरण आरम्भ हुआ था। मुसलमान शासकों ने धीरे-धीरे सारे भारत पर अपना अधिकार जमा लिया। मुट्ठी भर मुसलमान बाहर से आए थे जो हमलावर के रूप में यहां आए थे और उन्होंने धोखे से या षड़यन्त्र रच कर एक के बाद एक राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया। हिन्दू राजाओं की आपस की फूट के कारण ही मुसलमान अपने मन्सूबो में सफल हुए। प्रारम्भ में वह लूट-पाट करने के लिए आते थे और लूट-पाट करके वापिस चले जाते थे परन्तु फिर धीरे-धीरे यहां ही उन्होने अपना निवास स्थान बना लिया और चिरकाल तक भारत पर मुसलमानों का शासन रहा। इस काल में सबसे अधिक धर्मान्तरण औरंगज़ेब के समय में हुआ। उसने तलवार के जोर पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया, जिससे भारत में मुसलमानों की संख्या निरन्तर बढ़ती गई। कुछ लोग लोभ और लालच में आकर मुसलमान बने। कुछ हिन्दुओं की संकुचित विचारधारा के कारण बिरादरी से छोटी-छोटी बातों पर निकाल देने के बाद मुसलमान बन गए। भारत की रहने वाली ऐसी कोई भी जाति नहीं है जिससे निकल कर लोग मुसलमान न बने हों। जम्मू-कश्मीर जो मुसलमान बाहुल क्षेत्र बना हुआ है इस क्षेत्र में लगभग सभी ब्राह्मण लोग थे जो किन्हीं राजनैतिक परिस्थितियों के कारण मुसलमान बन गए। बंगाल भी मुसलमान बाहुल क्षेत्र, काला पहाड़ के नाम से एक हिन्दू जो हमारे उस समय निर्बुद्धि पण्डितों के द्वारा ठुकराया गया था, के धर्मान्तरण के कारण बना। जिसके कारण बंगला देश का निर्माण हुआ। यदि मुसलमान परिवारों की पिछली कुछ पीढ़ियों की पड़ताल की जाए तो पता चलेगा कि वह परिवार पहले हिन्दू थे। इस प्रकार धर्मान्तरण के कारण ही आज भारत में कई क्षेत्र मुसलमान बाहुल बने हुए हैं। जो सब हमारी ही भूलों के परिणाम स्वरूप है।

मुसलमानों के बाद अग्रेज़ों ने भारत पर अपना आधिपत्य जमा लिया और जैसे मुसलमानो ने इस्लाम का प्रचार किया उसी [illegible] किया। अंग्रेजों के आने से पूर्व भारत में एक भी ईसाई नहीं था। न ही मुसलमानो के आने से पूर्व कोई मुसलमान यहां था परन्तु अब भारत में जहां मुसलमानों की भारी संख्या है वहां इसाईयो की भी बहुत बड़ी संख्या होती जा रही है। अंग्रेज़ों ने अपने दो सौ वर्ष के कार्यकाल में बहुत से भारतीयों को ईसाई बनाया और यह मुहिम निरन्तर चल रही है।

हमें आशा थी कि आज़ादी के बाद भारत का कोई हिन्दू न मुसलमान बनाया जा सकेगा और न ही ईसाई बनाया जा सकेगा क्योंकि अब भारत में अपना भारतीयों का राज है लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि हमारा देश धर्म निरपेक्ष देश घोषित कर दिया गया और आज किसी भी विदेशी धर्म के प्रचार पर कोई रोक नहीं है। आज भी बहुत से हिन्दुओं को ईसाई व मुसलमान बनाया जा रहा है। गत दिनों हरियाणा के गुड़गांव जिला में मेवात में एक बाल्मीकि परिवार के तीन दर्जन सदस्यों को लालच देकर इस्लाम धर्म कबूल करवाया गया जिनको वापिस लेने में बड़ी कठिनाई आई। सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन जी और हरियाणा सभा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी ने इस दिशा में बहुत प्रयास किया परन्तु विडम्बना यह है कि इस कार्य मे प्रशासन मूक दर्शक बन कर रह जाता है। मिजोरम, उड़ीसा आदि में निरन्तर बहुत से हिन्दुओं को ईसाई बनाया जा रहा है। अभी-अभी मदुरै मे 250 बच्चों को गुमराह करके ईसाई बनाया गया। धर्मान्तरण का यह सिलसिला निरन्तर चल रहा है। सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने इसके लिए आवाज उठाई और एक शिष्ट मण्डल इस सम्बन्ध में गृहमन्त्री श्री लाल कृष्ण जी आडवाणी की अनुपलब्धता के कारण गृह मत्रालय के उच्च अधिकारियों से मिला और बाद मे गृह राज्य मन्त्री श्री आई.डी स्वामी से भी भेंट की जिसमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कै० देवरत्न आर्य, वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन, मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा अन्य कई महानुभाव थे।

मदुरै में 250 स्कूली बच्चो का छल-कपट से धर्मान्तरण किया गया। इस घटना में 15-20 वर्ष की आयु के बच्चों को यह कह कर धर्मान्तरित किया गया कि ईसाई धर्म ग्रहण करने से उन्हे जीवन में कभी आर्थिक कठिनाईयों का सामना नहीं करना पडेगा। उनके जीवन में धन की कमी नहीं रहेगी। सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुबोधचन्द जी से सम्पर्क किया और मदुरै के कलैक्टर श्री रामचन्द्र जी से भी टेलीफोन पर बात की। उन्होंने आश्वासन दिया कि इसकी छानबीन करेगे।

आज यह भी एक विडम्बना है कि आर्य समाजियों को छोडकर अन्य किसी भी व्यक्ति की धर्मान्तरण के विरुद्ध आवाज नहीं उठती। जबकि धर्मान्तरण सारे देश के लिए आगे चल कर कई प्रकार की कठिनाईयां पैदा करने वाला है। आज प्रशासन की तरफ से इस विषय में काम करने वाले लोगों को कोई सहयोग नहीं मिलता बल्कि इसके स्थान पर उन्हें हतोत्साहित किया जाता है।

महर्षि दयानन्द ने शुद्धि का आन्दोलन चलाया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी और प. लेखराम जी ने इस कार्य को करते हुए अपना बलिदान दिया था। आर्य समाज निरन्तर इस दिशा मे कार्य कर रहा है। आर्य समाज ने अनेकों उन हिन्दुओं को शुद्ध करके पुन: हिन्दू बनाया जो बहुत पहले मुसलमान व ईसाई बन चुके थे। आज भी आर्य समाज बहुत से उन इसाईयों को शुद्ध कर चुका है जो किसी लालच के कारण ईसाई बन गए थे।

यदि इसी प्रकार धर्मान्तरण चलता रहा तो आगे चल कर हमारे देश की स्थिति क्या होगी इस पर देश हितैषी लोग विचार करें। इस कार्य में अन्य धर्मावलम्बियों को भी जो देश हितैषी है उन्हें आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं को सहयोग देना चाहिए। इस कार्य के लिए धन की अत्यन्त आवश्यकता होती है क्योंकि निर्धन लोगों को ही धन का लालच देकर अधिकतर उनका धर्मान्तरण किया जा रहा है। यदि उन लोगों की धन सम्बन्धी आवश्यकताएं पूरी कर दी जाए तो वह पुन: हिन्दू धर्म को स्वीकार कर लेते है इसलिए देश हितैषी सभी लोगों को हिन्दुओं का धर्मान्तरण रोकने के लिए कार्य करना चाहिए ताकि देश की रक्षा हो सके।

-धर्मदेव आर्य

"युवा लोग ध्यान दें"

क्या नशा सुख नहीं देता ? नशा चढ़ाओ, गम को भुलाओ।

❑ ले० आचार्य आर्य नरेश वैदिक गवेषक उद्गीथ स्थली, हिमाचल

प्रिय पाठक वृन्द! हमने इस प्रकार के शीर्षक को इसलिए देना उचित समझा क्योंकि अधिकतर लोग नशा इस भ्रान्ति में करते हैं कि उनको उससे सुख मिलता है। अधिकतर विद्यार्थी और युवा लोग नशों में इसलिए फंसते हैं कि उनके सिगरेट पीने या होटल में बैठकर (तथाकथित ऊंचे कहलाने वालों में) शराब पीने से उनका स्तर (दर्जा) समाज मे ऊंचा हो जाएगा। अत: वे इसी में सुख की अनुभूति करते हैं कि हमने धनाढ्य लोगों के साथ बैठ कर नशा किया।

मैंने एक इन्जीनियर होते हुए आज से लगभग 25 वर्ष पूर्व टकारा के महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से प्रेरणा लेकर आर्य समाज का 'सच्चा' सत्संग किया और अपने कालेज तथा सरकारी नौकरी के समय भी कभी बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, गुटका, बियर या शराब का ही सेवन नहीं अपितु 'चाय' का भी सेवन नहीं किया? मेरा कभी भी न तो कोई सामाजिक कार्य ही रुका है और न ही मैं कभी और लोगों की तरह बीमार ही पडा। अपितु ठीक इससे उलट 'चाय' जिसमे कैफीन व टैकनिन आदि विष होते हैं उसके छोड देने से और गाय का दूध पीने से मेरे स्वास्थ्य में अद्‌भुत सुधार हुआ। प्रात:काल शीघ्र उठने, व्यायाम करने, ब्रह्मचर्य पालन करने तथा सब प्रकार के व्यसनों से दूर रहने के कारण मुझसे कमजोर कहलाने वाले व्यक्ति में इतनी शक्ति आ गई है कि मैंने बिना मांस और अण्डा खाए व बिना किसी की सहायता के अकेले ही गाय को बांधने वाली लोहे की जंजीर को तोड़ दिया। हाथ पर बल्ब के काच को पीस डाला। चार सूत मोटी लोहे की छड़ों को गले जैसे नरम स्थान पर रख कर मोड दिया। इतना ही नहीं अपितु रोटी खाने वाली पीतल की थाली को बिना छेनी के मात्र अपनी अंगुलियों में दबाकर, बीच से फाड़कर उसके दो टुकड़े कर डाले। यह सब व्यसन रहित जीवन का ही चमत्कार था।

मैंने इन्जीनियरिंग कालेज में पढ़ते हुए भी वहां की कैंटीन में जाकर कभी चाय नहीं पी। एक दिन आठ विद्यार्थी मिलकर गोलाई में बैठ गए। सब के सब लोगों ने (मुझे छोड़ कर) सिगरेट पी। जो न पीता उसे दूसरे कहते फॉरमेलिटी के लिए पीकर हमारा साथ दो। 'सिगरेट' मेरे पास आई। पर उस समय तक मैंने अपने हाथों को अपना जूता खोलने में जान-बूझ कर व्यस्त कर रखा था। उन्होंने कहा 'फॉरमेलिटी' के लिए आप भी पीओ मैंने कहा 'मैं नहीं पीता'। सब के सब बोले 'आपको भी पीनी चाहिए।' मैंने जूते को हाथ में उठाकर कहा 'क्या आप सब मेरा जूता फॉरमेलिटी में अपने-अपने सिर पर खायेंगे?' वे नाराज होकर बोले यह भी कोई सभ्यता है। तब मैंने कहा सिगरेट पीने से आयु कम होती है, फेफड़े खराब होते हैं, दमा, खांसी व टीबी जैसे अनेक रोग लगते हैं। देखो, यदि आपको विश्वास न हो तो सिगरेट की डिब्बी पर पढ़कर देख लो। सिगरेट स्मोकिंग इज इज्ज्यूरिस फॉर हैल्थ अर्थात् सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। यही बात गुटके तथा शराब की बोतल पर भी लिखी रहती है। अत: यदि जूता सिर में मरवाना अच्छा नहीं, जो कि केवल बाहर से चोट मारता है, तो फिर अन्दर से रोग और मौत की चोट मारने वाले ये नशे क्यों अच्छे मानते हो ? उनके पास मेरी इस बात का कोई उत्तर न था पर मुझे उस दिन के पश्चात् कभी भी चाय पीने या सिगरेट पीने के लिए उन्होंने नहीं कहा।

प्रिय पाठको ! व प्यारे युवको अधिकतर लोग दूसरे के कहने पर मित्रता निभाने के लिए 'फॉरमेलिटी' की बात करने पर अथवा नशा करेंगे तो लोग बुरा कहेंगे ऐसा सोचने पर दूसरे भी लोगों को नशों में फंसा लेते हैं। मुझे अब तक जितने भी बीड़ी, सिगरेट, शराब या गुटका आदि तम्बाकू खाने वाले लोग मिले। तो उन्होंने मेरे यह पूछने पर कि आप इस नशे को क्यों करते हो ? अथवा क्यों पीना शुरू किया? एक ही उत्तर दिया कि 'हमें किसी दूसरे साथी या मित्र ने यूं ही एक-दो बार पिला दिया या खिला दिया और फिर आगे-चलकर यह हमारी गंदी आदत बन गई।'

प्रिय पाठको ! सच्चा मित्र या साथी ऐसा नहीं करते जो अपने साथी को रोगी, भोगी या बीमार बना दे। यदि आपके आस-पास कुछ ऐसे नशों या विषयों का गंदा काम करने वाले लोग हैं तो आप उन्हें अपना मित्र या साथी न समझकर उसे जान लेवा मीठे जहर की तरह अपना शत्रु ही समझें। यदि भारत के बच्चों युवाओं और धनाढ्य लोगों को यह बात समझ में आ जाए तो भारत के लगभग नब्बे करोड़ लोग नशों से बच जाएं क्योंकि कोई भी नशा 'फॉरमेलिटी' व्यवस्थित जीवन नहीं बनाता। अपितु जीवन को अव्यवस्थित unformality पैदा करता है। यह बात भी सब जानते हैं कि जो लोग 'ओलम्पिक' आदि खेलों में नशा करते पकड़े जाते हैं उन्हें खेलों से बाहर निकाल दिया जाता है। क्योंकि नशा करके उत्तेजित होना अपराध है। नशे से उत्पन्न हुई शक्ति विनाश ही करती है।

जैसे सिगरेट पीना बुरा है ठीक वैसे ही चिल्म, हुक्का या बीड़ी पीना भी बहुत बुरा है। जो मूर्ख 'शिवजी' महाराज का नाम लेकर भांग या धतूरा पीते हैं उन्हें यह बात कहकर लोगों को बहकाने में शर्म आनी चाहिए। क्योंकि 'शिवजी' जो कि कैलाशपति थे, महायोगी, संयमी, सत्य सनातन वैदिक धर्मी व परम देवता तुल्य पुरुष थे। उनका जीवन ईश्वर की वाणी वेद के अनुसार था। वेद में बिल्कुल स्पष्ट लिखा है कि-'सुरा मा पिब, मांस न अश्नियात' गर्भान खादन्ति.....' अर्थात् हे धरती पर रहने वाले मेरे पुत्र तुल्य प्यारे मनुष्यो ! तुम शराब कभी मत पीना, मांस व अण्डे कभी मत खाना, कोई भी नशा न करना। सदा यज्ञ की अग्न के समान ऊपर उठो तेजस्वी बनो, परिश्रमी बनो, जुआ मत खेलो और खूब खेती करो। अत: इस वैदिक शिक्षा से यही सिद्ध होता है कि 'शिवजी महाराज' नशा नहीं करते थे अपितु जीवन में सदा सुखी रहने के लिए व स्वस्थ रहने के लिए नित्य 'प्राणायाम' पूर्वक ओम् के जप का 'योग' किया करते थे।

कुछ नादान लोग इसलिए सिगरेट या शराब पीते हैं कि उससे सुख मिलता है। यह उनकी बहुत बड़ी भ्रान्ति है। तनिक बुद्धि लगाकर विचार करें कि क्या मुसीबत के समय उस समस्या का ठीक समाधान (हल) न करके कोई बेहोश कर देने वाली या बुद्धि को खराब कर देने वाली चीज भी कभी सुख देने वाली हो सकती है ? कदापि नहीं, क्योंकि ज्ञान के बिना समाधान कैसा ?

उदाहरण के लिए विचार कीजिए कि रात को आपके घर पर चोर आ गए और आपके साथी ने आपको शराब पिलाकर बेहोश कर दिया तो क्या इससे चोर आपका घर न लूटेंगे ? क्या उस चोरी से होने वाली लाखों रुपयों की हानि आप को कभी सुख दे सकेगी ? अत: नशा करके मुसीबत के आने पर उसे कैसे टाला जा सकता है ? अथवा उससे कैसे मुकाबला किया जा सकता है ? ऐसी कुशाग्र बुद्धि देने वाली वस्तु जैसे-ब्रह्मी, शंखावली व गाय का दूध और जड़ी-बूटियों से किया गया वैदिक हवन ही बुद्धि को बढ़ाकर सुख दे सकता है न कि बुद्धि खराब करके नशा देने वाला तामसिक पदार्थ तम्बाकू।

अत: इससे यही सिद्ध होता [illegible] अपितु दूध, घी, फल जैसा श्रेष्ठ कान-पान और वैदिक पुरुषों के सत्संग से बनी श्रेष्ठ बुद्धि तथा ओ३म् का जप करने वाला प्रभु का योग ही है। नशे तो प्रतिदिन करें या कभी-कभी, वे तो जीवन को नष्ट ही करते हैं ठीक उस चोरी की भांति चाहे वह कभी-कभी होती हो चाहे प्रतिदिन। कुछ लोगों को जब बस, रेल या किसी सार्वजनिक स्थान पर धूम्रपान करने से रोका जाता है तो वो झट उत्तर देते हैं-आप बुरा कहते हैं तो क्या? इसे तो आप सब पीते हैं, और यहां तक कि डाक्टर भी पीते हैं।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

युवा लोग ध्यान दें......

(पृष्ठ 4 का शेष)

इसका बुद्धि पूर्वक उत्तर यह है कि यदि चोरी एक व्यक्ति करे तो वह चोरी और यदि मूर्खता और घमण्ड के कारण सारे लोग करें भी और डाक्टर तथा मिनिस्टर भी करने लग जाएं तो भी वह चोरी ही है। प्रश्न यह है कि यदि चोरी दस लोग मिलकर करने लगें तो क्या वह पुण्य कर्म या सत्संग बन जाता है ? नहीं तो ठीक ऐसे ही किसी पाप को यदि मूर्खता और घमण्ड के कारण सारे लोग भी और डाक्टर तथा मिनिस्टर भी करने लग जाएं तो भी वह अच्छा कर्म नहीं कहला सकता। क्योंकि पाप तो पाप ही है। एक अकेला करे तो पाप अनेक करें तो पाप। अमीर करें तो पाप, गरीब करें तो पाप! मूर्ख करे तो पाप डाक्टर करें तो भी पाप एक बार करे तो पाप अनेक बार करें तो भी पाप अत: ग्राम के लोगों और विद्यार्थियों को दूसरे नेताओं व अमीरों एवं शहरियों या डाक्टरों, वकीलों अथवा बुद्धि भ्रष्ट नेताओं व इञ्जीनियरों द्वारा नशे करने पर उन्हें कभी भी अच्छा समझ कर उसका अनुसरण नहीं करना चाहिए। क्योंकि उसने अधिक पढ़ा-लिखा होते हुए भी एक अशिक्षित बनकर नशा करने की गलती की। उसे तो एक साधारण व्यक्ति की अपेक्षा भी अधिक मूर्ख व दुष्ट समझना चाहिए ओर अधिक दण्ड देना चाहिए। समझदार लोग कुछ तथाकथित वैज्ञानिकों की ताजी खोजों को भी एकदम स्वीकार न करें । क्योंकि इनकी भी कोई सदा स्थिर रहने [illegible] नहीं है (कभी कहते हैं सेहत के लिए अ[illegible] और रिफाइण्ड तेल खाएं या थोड़ी सी शराब रोज पीएं और कभी कहते हैं कि अण्डे, मांस , रिफाइण्ड तेल व शराब दिल की बिमारी का सबसे बड़ा कारण है। अत: गाय का घी व दहीं खायें, गाय का धूध पीयें और ओ३म् का जप करते सदा हवन करें व स्वस्थ सुन्दर तथा सुखी रहें।

सच्चा सुख का साधन वही है जो कि शरीर को स्वस्थ, बुद्धि को कुशाग्र, मन को प्रसन्न, जीवन को स्वतन्त्र तथा आत्मा को तनाव मुक्त करके सदा आनन्दित करता है। पर नशा अपने में ऐसा कोई गुण नहीं रखता। इसमें दो मत नहीं कि 'नशा' प्रारम्भ में कुछ सुख देता सा दिखाई देता है। पर यह क्षणिक सुख हैं जैसे कुत्ता जब उस मास रहित हड्डी को चबाता है तो उसके अपने ही मसूड़ों से खून निकलकर उसे कुछ स्वाद देने लगता है। यदि उस हड्डी के चबाते समय कोई सज्जन व्यक्ति अचानक उसके समीप से निकल जाए तो वह हड्डी को छिन जाने के भय से उसे काटने के लिए भौंकता व दौड़ता है पर वही कुत्ता कुछ काल के पश्चात् जब उस हड्डी को छोड़ता है तो तब अपने घायल हुए मसूड़ों के दर्द के कारण जोर-जोर से चिल्लाने लगता है और कई दिनों तक पीड़ित रहता है।

ठीक ऐसा ही क्षणिक सुख नशों के भोगने वाले व्यक्ति को भी उसके प्रारम्भ में मिलता है पर जब उसे रोग आ कर घेरते हैं, धन समाप्त हो जाता है, सर्वत्र लोग उसकी निन्दा करते हैं, तो तब वह नशों को छोड़ने का विचार करते हैं पर उनको पूर्ण लाभ नहीं होता क्योंकि नशे की आदत इतनी गहरी हो जाती है कि देर के पश्चात् छोड़ने के विचार का उन्हें पूर्ण लाभ नहीं होता क्योंकि नशे का आदत इतना पक्का हो जाता है कि वह छोड़ना चाहता है पर छोड़ नहीं पाता। कारण यह है कि सभी नशे मन को इतना कमजोर व बिमार कर देते हैं कि करने वाले के भीतर उसे छोड़ने की या 'निर्णय' करने की शक्ति ही समाप्त हो जाती है। अत: उसे उसी कुत्ते के समान क्षणिक सुख के पश्चात् फिर सम्पूर्ण [illegible] पीड़ाओं, तनावयुक्त जीवन, चंचलता भरा मन नशों की गुलामी, लोगों का अपना और आत्मा की फटकार का ही दुख झेलना पड़ता है।

सो अन्त में हम नशा करने वालों को यह बता देना चाहते हैं कि नशे धन का, चरित्र का, इज्जत का व सेहत का नाश करते हैं और व्यक्ति के शरीर को व वायुमण्डल को गन्दा करके उसे प्रभु के सच्चे सुख से दूर ले जाकर भयंकर दुखों व एडस जैसी बिमारियों में दुखी करते हैं जबकि कोलेस्ट्रोल व एसिडिटी युक्त अण्डा मांस, शराब, जुआ का सेवन न करने वाला व्याभिचार व यूं ही चाय काफी न पीने वाला तथा नशीले तत्व (एल्कोहल, इस्टरगम और पशुओं से प्राप्त गिलसीन जैसे जहरीले पदार्थो से बने) कोका, लिम्का, पेप्सी आदि न पीने वाला संयमी तथा बुद्धिमान व्यक्ति सदा लम्बी आयु पाकर सुखी एवम् स्वस्थ रहता है।

इन उपरोक्त गन्दे पदार्थो से रहित उसका नशा मुक्त पावन प्रभु-मन्दिर रूपी 'मानव शरीर' राष्ट्रीय सेवा के मान एवं प्रभु एवं प्रभु के आनन्द को प्राप्त करके अपना जीवन सफल कर लेता है।

आज सभी पढ़े-लिखे और समझदार लोग यह जानते हैं कि विश्व स्वास्थ संगठन तथा अमरीकन वैज्ञानिक डा. ब्राउन तथा डा. गोल्ड स्टीन तथा मेरिका के 'द अर्थ आईलैन्ड जनरल' के शोधकर्त्ता डा के अनुसार नशा-धूम्रपान-अण्डे-मांस और सभी कोका, पेप्सी, थम्जअप और लिम्का आदि सोफ्ट ड्रिंक अनेक रोगों को लगाकर, शरीर को बीतर से गलाकर और पर्यावरण को बिगाड़ कर पीने वालों को शीघ्र ही मृत्यु का ग्रास बना देते हैं क्योंकि कोई भी नशा स्थाई रूप से शक्ति स्फूर्ति नहीं देता। अत: सदा उपरोक्त नशों से बचें।

स्वामी आत्मबोध (आर्य भिक्षु) जी नहीं रहे

आर्य जगत् को यह जान कर दु:ख होगा कि आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान जो पहले आर्य भिक्षु के नाम से सारे भारत में प्रसिद्ध थे और सन्यास लेने के बाद स्वामी आत्मबोध के नाम से प्रसिद्ध थे, का देहावसान हो गया। उनका अंत्येष्ठि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से ज्वालापुर हरिद्वार में 5-9-2002 को किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री पं० हरबंस लाल जी शर्मा, वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदर्शन जी शर्मा, उप प्रधान श्री आशानन्द जी व चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार जी, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, मन्त्री श्रीमती राजेश शर्मा, श्री मुलखराज आर्य तथा अन्य सभी अधिकारियों ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट की और श्री स्वतन्त्र कुमार जी सभा महामन्त्री व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने उनके अंत्येष्ठि संस्कार में सभा की ओर से भाग लिया। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की कि वह दिवंगतात्मा को सद्गति प्रदान करें और हम सब को उनके वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

आदरणीय स्वामी आत्मबोध (आर्य भिक्षु) जी का आर्य समाज में अपना एक स्थान था। उनके चले जाने से जो स्थान खाली हुआ है उसकी पूर्ति होनी असम्भव है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय के सभी कर्मचारियों व उपदेशक वर्ग की ओर से भी उन्हें श्रद्धांजलि भेंट की गई।

—धर्मदेव आर्य

आर्य समाज जालन्धर छावनी में वेद प्रचार

आर्य समाज जालन्धर छावनी में रक्षा बन्धन पर्व प्रात: 6.30 से 7.30 बजे तक बड़े समारोह से मनाया गया । श्री तिलकराज शास्त्री का रक्षा बन्धन के [illegible]

31-8-2002 को कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व रात्रि 8 से 10 बजे तक बड़े समारोह से मनाया गया जिसमें श्री पं. धर्मदेव जी आर्य, श्री तिलकराज जी शास्त्री, श्री पं० अमर नाथ जी के उपदेश व भजन हुए। योगीराज श्री कृष्ण के चरित्र का वर्णन करते हुए विद्वानो ने बताया कि श्री कृष्ण जी एक आप्त पुरुष थे वह उच्चकोटि के विद्वान् तथा महान तपस्वी व बलशाली थे।

आर्य समाज जालन्धर छावनी में 16 से 22 सितम्बर तक वेद सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमें श्री पं. निरंजनदेव जी इतिहास केसरी तथा श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली के उपदेश व भजन होंगे।

—जनकराज महाजन, प्रधान

अमृतसर में. चरित्र निर्माण शिविर

महर्षि दयानन्द धाम में आर्य युवक परिषद अमृतसर की ओर से चरित्र निर्माण शिविर का आयोजित 11-8-2002 रविवार को किया गया। यज्ञ के यजमान मुकेश पसाहन, सपत्नी एवं मेयंक आर्य थे। यज्ञ के पश्चात् माता जगदीश आर्या तथा श्रीमती राकेश आर्या ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से सभी को आनन्द विभोर कर दिया। तत्पश्चात् आर्य वीरों में तथा वीरांगनाओं में नव चेतना जाग्रत करने हेतु सत्यार्थ-प्रकाश प्रश्नोत्तरी प्रारम्भ की गई जिसमें सत्यार्थ-प्रकाश के तीसरे समुल्लास पर आधारित अनेक प्रकार के प्रश्न एवं शंकाएं रखी गई जिनका समाधान क्रमशः श्री ओम प्रकाश आर्य, प्रो कुलदीप आर्य, ब्र. ओम प्रकाश शास्त्री, कर्ण, मेयंक तथा पंकज इत्यादि आर्य वीरों ने किया।

अजमेर में स्वाध्याय साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा सभा के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के मुख्य कार्यस्थल ऋषि उद्यान आनासागर घाटी, पुष्कर रोड, अजमेर में माधना स्वाध्याय एवं सेवा शिविर का आयोजन दिनांक 20 से 21 अक्तूबर तक किया जा रहा है।

शिविर में पंजीयन एव अन्य आवश्यक जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करें।

सम्पर्क स्थल:-1 परोपकारिणी सभा, केसर गंज, अजमेर समय प्रात: 10 वजे से सायं 5 बजे तक। दूरभाष : 460164, 2. आचार्य सत्यजीत्, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर। दूरभाष: 621719

—डॉ० कर्मवीर मन्त्री

हमारी ज्वलन्त समस्याओं का समाधान संस्कारित जीवन

आय समाज बी ब्लाक जनकपुरी के मञ्च से बोलते हुए प्रसिद्ध आर्य विदूपी डा रमा जी ने कहा कि आज जीवन में बहुत समस्याएं हे। प्रत्येक प्राणी दु:खी और तनावग्रस्त है। दैनिक जीवन अनेक उदाहरण देकर उन्होने यह सिद्ध किया कि आज की युवा व किशोर वर्ग अपने बुजुर्गो का सम्मान नहीं करते। बच्चों के पास अपने बडे-बूढों के पास बैठ कर उनके सुख-दुख बांटने का समय तो नहीं है, किन्तु रात के 12 बजे तक टी वी व कम्प्यूटर के सामने बैठे रहते हे। आज वृद्ध-पीढी एकाकीपन की पीड़ा से गुजर रही है और परिवार के सदस्यों मे त्याग-भावना एव सामञ्जस्य भावना का अभाव है। अपने जीवन में हमें आज जिन ज्वलन्त समस्याओं का सामना करना पड रहा है, उसका एक मात्र कारण यही है कि हमने अपने बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं दिए ... चाहिए कि हम अपने बच्चों को आर्य समाज ... आने की प्रेरणा दें, क्योंकि यहा की हवा बच्चो को सस्कारित कर सकती है और हमारी तमाम ज्वलंत समस्याओ का समाधान सस्कारित जीवन में निहित है। आर्य समाज के प्रधान डा. सुन्दर लाल कथूरिया ने डा रमा जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पहले हमें अपने जीवन को आदर्श तथा सस्कारित करना होगा; तभी हमारे बच्चों पर प्रभाव पड़ेगा। कार्यक्रम का सफल संयोजन, संचालन मन्त्री जगदीश चन्द्र गुलाटी ने किया। प्रवचन से पूर्व सन्ध्या, यज्ञ एवं भजनोपदेश भी हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री हरिप्रसाद जी आर्य थे। अपने सुमधुर भजन से तपोवन देहरादून के वानप्रस्थी श्री चैनमुनि जी ने सबका मन मोह लिया। शान्ति-पाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—प्रेम गुलाटी

पुरानी यादें

आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल के विद्यार्थियों का टूर जून 1980 में चण्डीगढ़, शिमला, कुल्लू-मनाली और रोहतांग गया था। बच्चों के साथ प्रिं० कमला भाटिया जी तथा अध्यापिका अनीता भी थी। प्रबन्धक कमेटी के सदस्य (वजीर चन्द मंगला) एवं श्री कृष्ण कुमार थे।

बठिण्डा से शिमला—बठिण्डा से गाड़ी द्वारा शिमला गए। कालका से शिमला तक गाड़ी का सफर बहुत रोमांचक था। हल्की-हल्की वर्षा, सांप की तरह बल खाती गाड़ी, अंधेरी गुफाएं, ऊंची-ऊंची पहाड़ियों के नज़ारे भुलाए नहीं भूलते। शिमला में ठाकुर राम लाल जी, तत्कालीन मुख्यमन्त्री से मिले। उन्होंने बच्चों के साथ तस्वीरें खिंचवाई तथा बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

कुल्लू-मनाली की यात्रा—विद्यार्थियों ने कुल्लू के दर्शनीय स्थल देखें। मनाली में हिडिअम्बा मन्दिर विशिष्टवाध तथा अन्य दर्शनीय स्थल देखे।

रोहतांग की यात्रा—रोहतांग मनाली से 56 किलोमीटर की ऊंचाई पर है और समुन्द्र सतह से 3915 मीटर की ऊंचाई पर है। रोहतांग में हर तरफ बर्फ ही बर्फ दिखाई पड़ रही थी। रोहतांग की सीमा तिब्बत से लगती है। स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि मनुष्य की उत्पत्ति तिब्बत में हुई। वहां से संसार के अन्य स्थानों पर गया।

मणिकरण की यात्रा—विद्यार्थियों ने मणिकरण के गर्म चश्मे के दर्शन किए। विद्यार्थियों ने चश्मे में स्नान किया तथा लंगर छका।

—वजीर चन्द मंगला, भठिण्डा

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज मो. गोबिन्दगढ़ जालन्धर में 19 अगस्त से 25 अगस्त 2002 तक वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सामवेद के मन्त्रों से यज्ञ सप्ताह पर्यन्त चलता रहा, जिसका पौरोहित्य कार्य श्री कमल कुमार शास्त्री (दयानन्द मठ, चम्बा वाले) ने किया। प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.30 तक यज्ञ तत्पश्चात् दयानन्द मठ चम्बा से पधारे ब्रह्मचारी भजनोपदेशक श्री हेम व श्री सुरेश जी के मधुर भजन 8 बजे तक होते रहे। 8 बजे से 8.30 बजे तक श्री कमल कुमार वेद प्रवचन करते रहे।

25 अगस्त रविवार को प्रात: 7 बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ व यज्ञ की पूर्णाहुति 8 15 पर हुई। सभी श्रद्धालुओं ने यज्ञ में बढ़-चढ़ कर भाग लिया, फिर सभी हाल में एकत्रित हुए जहां भजनोपदेशकों ने श्रोताओ को सुरीले भजनो से मन्त्रमुग्ध कर दिया। भजनोपरान्त आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा. आचार्य नरेश जी का गायत्री मन्त्र विषयक प्रवचन सभी को अन्तर्जागृत कर गया। श्रद्धालुओं को समाज के संरक्षक श्री चतुर्भुज मित्तल व श्री ऋषिपाल सिंह ... उपप्रधान आर्य ... ने भी सम्बोधित किया। 10.30 बजे शान्तिपाठ के पश्चात् सभी ने मिलकर प्रात:राश किया।

फिरोजपुर शहर में चतुर्वेद शतकम् परायण यज्ञ

आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपुर शहर में श्री मोहन लाल मल्होत्रा की अध्यक्षता में चुतर्वेद शतक पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रतिदिन एक वेद के सौ मंत्रों से यज्ञ किया जाता रहा जिसके ब्रह्मा इस आर्य समाज के सुयोग्य पुरोहित पण्डित सुनील दत्त जो थे। इस यज्ञ की पूर्ण आहुति दिनांक 25-8-2002 को हुई। इस दिन श्री मोहन लाल जी मल्होत्रा मुख्य यजमान थे। यज्ञ के बाद भजन पुरोहित जी ने सुनाए। भजन बहुत मीठे स्वर में थे। भजनों के उपरान्त पुरोहित जी और महात्मा ओम मुनि ने रक्षा बन्धन (श्रावणी) पर्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम अति सुन्दर रहा।

—सर्वहितैषी भाटिया, उपमन्त्री

क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

☐ ले० श्री [illegible] शास्त्री वेद विभाग गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

याद मीठी आर्यों को आपकी आती रहेगी
गीत आर्य जाति भगवन् सदा आपके गाती रहेगी।
दीन दुखियो के लिए सीना तुम्हारा ढाल था
पाकर आपको स्वामिन उच्च आर्यों का भाल था।

मैं आपको एक ऐसे महान् क्रान्तिकारी अज्ञात शत्रु वीर योद्धा वीतराग सन्यासी के विषय में बताने चला हू जिसको पाकर यह शस्य श्यामला भूमि धन्य हो गई। जिसका सीना देखकर गौरो की सगीने झुक गई थी। जिसका नाम सुनकर आज भी दुनिया का सिर श्रद्धा से झुक जाता है। ध्यान से सुनो आर्य बन्धुओ वह नाम है श्रद्धा की मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ।

स्वामी श्रद्धानन्द के बचपन का नाम मुशीराम था जो व्यवसाय से वकील थे। सेवामूर्ति पतिपरायण सौभाग्यवती धर्मपत्नि शिवदेवी की मृत्यु के पश्चात् आपने दूसरा विवाह नहीं किया और मात्र 35 वर्ष की आयु मे वानप्रस्थ लेकर महात्मा मुशीराम बने। क्योकि आपने बरेली मे स्वामी दयानन्द के दर्शन किए थे और इसके पश्चात् एक तडप सी पैदा हो गई।

कौन है जो आर्यों के बलबले दबा सके
कौन हमको छूरे तीर तोप से डरा सके।
बार बार जान वैदिक धर्म पर लुटायेगे
विश्व को सन्देश दयानन्द का सुनायेगे॥

ऋषि के सन्देश को विश्व में फैलाने की इस तडप को चरितार्थ करने के लिए सन् 1902 मे हरिद्वार के पास कागडी क्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल की स्थापना की। आज ईश्वर की कृपा से वहा हजारो विद्यार्थी विद्यामृत का पान करके अपने जीवन को उज्जवल बना रहे हैं परन्तु उस समय विदेशी शासन ओर धन तथा विद्यार्थियो का अभाव था तो उस महान् यति ने घर छोड कर यह प्रतीज्ञा की। जब तक गुरुकुल के लिए 40 000/ रुपए इकट्ठे नहीं कर लूगा तब तक घर मे प्रवेश नहीं करुगा। स्वामी जी के सप्रयत्न से धन तो इकट्ठा हो गया परन्तु जब विद्यार्थियो का प्रश्न सामने आया तो आपने ही दोनो पुत्रो हरिश्चन्द्र और इन्द्र को विद्यार्थी तथा स्वय को आचार्य बनाकर ऋषि दयानन्द के स्वप्न को साकार किया। आज वर्तमान समय में इस पवित्र सस्था गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे 18 जून को माननीय प्रि० स्वतन्त्र कुमार जी ने कुलपति का कार्यभार सम्भाला। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि इन्हे ईश्वर सद्बुद्धि देश भक्ति दें और स्वामी श्रद्धानन्द जी के समर्थ जो सपने थे वह उन्हे साकार कर सकें। इस सस्था को उन्नति के शिखर पर पहुचा सके।

आर्य बन्धुओ महान् क्रान्तिकारी यानि प्रखर स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली मे रोलेट एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन छोडा। अग्रेज सरकार ने जुलूस निकालने पर पाबन्दी लगाई। स्वामी जी ने घोषणा की कि मैं जुलूस निकालूगा वीर सन्यासी के नेतृत्व मे हजारो देशभक्तो का जुलूस दिल्ली के चादनी चौक मै आया। टाऊन हाल के मैदान मे गोरखो की सगीने अग्रेजा के आदेशानुसार जनता पर तनी तो वीर योद्धा भीड को चीर कर आगे बढा और सिह गर्जना करते हुए कहा निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती पर गोली चलाओ कहते हुए वीर सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने विशाल सीने से कपडा हटाया। गोरखो की हिम्मत न पडी और सगीने उस विराट यति के आगे झुक गईं। इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वतन्त्रता आन्दालन मे भी विशेष सहयोग दिया। स्वामी जी वास्तव मे महान् सन्यासी वीर योद्धा अनन्य ऋषि भक्त थे।

श्रद्धा और आनन्द की इक खान श्रद्धानन्द थे ।
धर्म पर जो हो गए बलिदान श्रद्धानन्द थे।
रक्त बिन्दुओ से सींची थी स्वामी जी ने वैदिक वाटिका
महर्षि जो राम थे तो हनुमान श्रद्धानन्द थे।
मनके जो बिखरे थे माला के पिरोया फिर से उन्हे
शुद्धि है जीवन तो उसमे प्राण श्रद्धानन्द थे।
चादनी चौक वो दिल्ली का अब भी है साक्षी
तान उसमे छाती खड़े निर्भीक श्रद्धानन्द थे।
जामा मस्जिद के चढे मिम्बर पे दिल्ली खास मे
पुतले सत्य श्रद्धा के श्रीमान् श्रद्धानन्द थे।
सकल्प दृढ लेकर निकले गुरुकुल का
जहा बनाये बम्ब विद्यार्थी वो
वैज्ञानिक महान् श्रद्धानन्द थे।
धर्म पर जा हो गए बलिदान श्रद्धानन्द थे।

लुधियाना में आर्य युवक सभा द्वारा गायत्री महायज्ञ

दयानन्द पब्लिक स्कूल, दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में 24 अगस्त 2002 शनिवार को प्रात: 8 बजे से 12.30 बजे तक स्कूल के हॉल में आर्य युवक सभा द्वारा गायत्री महायज्ञ का आयोजन स्कूल के प्रबन्धक आशानन्द आर्य तथा प्रधान श्री ओम प्रकाश गुप्ता जी की देखरेख में किया गया।

श्री योगराज जी शास्त्री ने यज्ञ बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न करवाया। ध्वजारोहण श्री रामेश्वर दास जी मलिक महाराजा पैलेस वालों ने किया तथा 3100 रुपए स्कूल को दान दिए। बच्चों ने राष्ट्रीय गान बड़े सुन्दर ढंग से सुर और लय में गाया। जिसे सबने बहुत सराहा।

इसके पश्चात् स्कूल के बच्चों ने स्वतन्त्रता दिवस, रक्षा बन्धन तथा कृष्ण जन्माष्टमी पर तैयार कार्यक्रम पेश किया। सबसे पहले छठी कक्षा की छात्रा राजदीप तथा लीना ने गायत्री मंत्र का जाप तथा उसका अर्थ बताया। आठवीं कक्षा की छात्राओं ने एक देश-भक्ति का गीत प्रस्तुत किया जो सबने बहुत पसन्द किया और खूब तालियां बजाई। इसके पश्चात् सातवीं कक्षा के आकाशदीप ने बहुत सुन्दर ढंग से गीता सार सुनाया। आठवीं कक्षा की मीनाक्षी ने रक्षा बन्धन पर एक कविता प्रस्तुत की। जिसमें भाई-बहन के प्यार पर प्रकाश डाला गया। इसके पश्चात् पांचवी कक्षा के सागर ने देश-भक्ति पर एक कविता सुनाई जिसमें स्वतन्त्रता दिवस पर प्रकाश डाला गया। इनके पश्चात् दसवीं कक्षा के छात्र और [illegible] सभा के मन्त्री विमल [illegible] पर [illegible] ए। दूसरी कक्षा की छात्राओं महिमा तथा अंजलि और ईशा ने एक कविता पेश की। इसके पश्चात् आठवीं कक्षा की छात्राओं ने एक गीत प्रस्तुत किया जिसके बोल थे 'जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती हो बसेरा' जिस पर सारा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस गीत पर खुश होकर श्री रामेश्वर दास जी और पूर्णचन्द वधवा जी ने दो-दो सौ रुपए बच्चों को दिए। स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने आज के मुख्य वक्ता ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी का परिचय कराते हुए कहा कि ब्रह्मचारी जी दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान पर आए थे परन्तु ऋषि दयानन्द जी के विचार पढ़कर उन्होंने अपना सारा जीवन जाति व देश का उपकार एवं वैदिक धर्म की विचारधारा फैलाने के लिए अर्पण कर दिया है। वह गुरुकुल भठिण्डा में रहकर सेवा का कार्य कर रहे हैं।

ब्रह्मचारी सूर्यदेव ने अपने ओजस्वी भाषण में छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षा-ग्रहण करते समय ही छात्र-छात्राओं को अभी से निश्चय कर लेना चाहिए कि हमें क्या बनना है। जो छात्र परिश्रम करता है उन्नति कर जाता है। आप खूब परिश्रम करो अपने नगर एवं विद्यालय का नाम रोशन करो। इस अवसर पर श्रीमती राकेश शर्मा प्रधान जिला आर्य सभा, श्री श्रवण कुमार आर्य, श्री पूर्णचन्द गुप्ता, श्री सत्यपाल नारंग, श्री बृजमोहन अरोड़ा, श्री ओमप्रकाश गुप्ता, श्री हर्ष आर्य, विजय सरीन, श्री अनिल निझावन श्री सवर्ण कालड़ा, श्रीमती सरला लूम्बा ने भी सम्बोधित किया। [illegible] श्रीमती [illegible] को आशीर्वाद दिया।

युवक सभा की ओर से जलपान का उत्तम प्रबन्ध था। स्कूल की प्रबन्ध समिति के प्रधान ने सबका धन्यवाद किया। —सुनिता मलिक

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन सिविल लाईन लुधियाना का पारिवारिक सत्संग 8-9-2002 रविवार को सायं 5 से 7 बजे तक श्री अशोक बेदी के निवास स्थान चौक शेरां का चौबारा गली गुरु नानक कर्मचार हाऊस ईसेवाल कलां लुधियाना में होगा। श्री डा. एस.डी. वशिष्ठ का प्रवचन होगा

भठिण्डा में नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

दिनांक 18-8-2002 को गुरुकुल शिल्प विद्यालय एवं आर्य समाज चौक भठिण्डा के संयुक्त प्रयासों से आर्य माडल हाई स्कूल एवं आर्य समाज के प्रांगण में नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। आर्य समाज के पुरोहित जी के ब्रह्मत्व में हवन यज्ञ द्वारा इस शुभ कार्य का शुभारम्भ हुआ। लगभग 9.30 बजे डा. एम.एल. बावला (एम.एस.) जैन धर्मार्थ चिकित्सालय रत्नपुरा (राजस्थान) वाले अपनी टीम के साथ पधारे। भठिण्डा के आर्यजनों द्वारा माल्यार्पण करके उनका हार्दिक स्वागत किया गया।

इस शिविर के मुख्य अतिथि आदरणीय श्री अनुराग वर्मा आई.ए.एस. डिप्टी कमिश्नर भठिण्डा को किसी आवश्यक कार्य से बाहर जाना पड़ा, उनके स्थान पर स. गुरतेज सिंह सहायक कमिश्नर भठिण्डा पधारे। उनका भी सभी ने हार्दिक स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने अपने कर कमलों द्वारा इस शिविर का उद्घाटन किया।

शिविर में 823 मरीजों की आंखों का निरीक्षण कम्प्यूटर द्वारा किया गया। जरूरतमन्द लोगों को ऐनकें मुफ्त दी गई एवं शिविर में दवाईयां सभी को मुफ्त वितरित की गई। आर्य समाज का प्रांगण मेले का दृश्य उपस्थित कर रहा था।

चौधरी बाबू राम जी गर्ग प्रधान गुरुकुल शिल्प विद्यालय, ई.एस.पी. अरोड़ा मन्त्री गुरुकुल शिल्प विद्यालय, प्रो. ओ.पी. मंगला प्रधान आर्य समाज भठिण्डा, श्री प्रेम भाटिया जी महामन्त्री आर्य समाज भठिण्डा का इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान रहा। श्री [illegible] गुरुकुल शिल्प विद्यालय व्यस्तता के कारण शिविर में नहीं आ सके। उन्होंने टैलीफोन पर ही कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभ कामनाएं भेजी।

आंखों का निरीक्षण करवाने हेतु पहुंचे सभी बन्धुओं के लिए चाय आदि का प्रबन्ध किया गया। श्री नवनीत कुमार (कोषाध्यक्ष) एवं श्री गौरी शंकर (उपमन्त्री) द्वारा किया गया। चाय एवं जलपान का प्रबन्ध सराहनीय रहा। शिविर के आयोजन में श्री राकेश नरूला प्रधान ब्राह्मण आई रिसर्च फाउंडेशन का विशेष योगदान रहा।

शिविर की समाप्ति पर एक समागम का आयोजन किया गया, विशेष अतिथि लाला कुलवन्त राय जी अग्रवाल प्रधान आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल भठिण्डा थे। प्रधान आर्य समाज प्रो. ओ.पी. मंगला ने मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि एवं सभी का शिविर में पहुंचने पर अभिनन्दन किया। इस कार्यक्रम से खुश होकर लाला कुलवन्त राय अग्रवाल जी ने 5100/- की राशि दान में दी। निम्न अधिकारियों द्वारा कैम्प के आयोजन के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

1. श्री बाबू राम गर्ग प्रधान-1000/-, 2. श्री पी.डी. गोयल-1000/-, 3. श्री वजीर चन्द मंगला-500/-, 4. श्री विजय कुमार जी-500/-, 5. श्री प्रेम भाटिया जी-200/-, 6. श्रीमती शान्ति जिन्दल-201/-, 7. श्री एस.पी. अरोड़ा-200/-, 8. श्री नवनीत कुमार जी-200/-, 9. श्री एच.सी. गोयल-200/-, 10. श्री गौरी शंकर-100/-, 11. श्री नरेन्द्र जी-100/-, 12. श्री राजेन्द्र जिन्दल-500/-।

मुख्य अतिथि स. गुरतेज सिंह सहायक कमिश्नर, लाला कुलवन्त राय, डा.एम.एल. बावला एवं उनकी टीम के सदस्यों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी ने सभी को आशीर्वाद देते हुए परमपिता से प्रार्थना की कि यह [illegible] कार्यों में लगे रहें और समाज 'व' राष्ट्र की सेवा करते रहे। प्रधान चौ० बाबू राम गर्ग जी ने मुख्य अतिथि विशेष अतिथि, डाक्टर साहिब एवं आए हुए सभी अतिथियों, मरीजों व सहायक तथा सहयोगी कार्यकर्ताओं का हार्दिक धन्यवाद किया। चौधरी साहिब ने साथियों का उत्साह बढ़ाते हुए उनके भरपूर सहयोग के लिए धन्यवाद किया है। मन्त्री ई.एस.पी. अरोड़ा ने मंच संचालन का कार्य कुशलता से निभाया।

ई.एस.पी. अरोड़ा, मन्त्री

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रेस, मण्डी रोड व
गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

दूरभाष 292926

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

वर्ष-56 अंक : 21 सृष्टि संवत 1960853103, 15 सितम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

प्रभु की महिमा

□ ले. स्व. आचार्य राम प्रसाद जी वेदालंकार

कदान्वन्तर्वरुणे भुवानि॥

ऋ० ७-८६-२॥

न जाने कब मैं प्रभु के हृदय में स्थान पाऊंगा ?

मनुष्य जब यह देखता है कि नित्य नई-नई उत्पत्तियां हो रही हैं, नित्य नए-नए प्राणी उत्पन्न हो रहे हैं नित्य नई-नई आकृतियां और नई-नई प्रकृतियां सम्मुख आ रही है-हर रोज़ नई-नई शक्लें और नई-नई अक्लें सामने आ रही हैं, प्रतिदिन नए-नए पौधे पैदा हो रहे हैं-नए-नए बीज अंकुरित हो रहे हैं, हर ऋतु में सुन्दर फूल खिल रहे हैं, सुन्दर-सुन्दर स्वादिष्ट-स्वादिष्ट फल पैदा हो रहे हैं, नान प्रकार के अन्न अनाज उत्पन्न हो रहे हैं। इस जग में नित्य प्रति कोई आ रहे हैं और नित्यप्रति ही इस जग से कोई जा रहे हैं, अर्थात् कोई जम (जन्म) रहे हैं और कोई मर रहे हैं। यहां कोई हंस रहे हैं और कोई रो रहे हैं, कोई नाच रहे हैं। और कोई गा रहे हैं, कोई उठ रहे हैं, और कोई बैठ रहे हैं, कोई चल रहे हैं, कोई रुक रहे हैं, कोई जाग रहे हैं, कोई सो रहे हैं, कोई खुशी के मारे फूले नहीं समा रहे हैं और कोई दुःखों के मारे कुम्हला रहे हैं। फिर यह देखने में, सुनने में आता है कि यह सब कुछ जो कुछ हो रहा है-जो कुछ सूर्य, चन्द्र, वायु, जल, फूल-फल, अन्न-अनाज, जीव-जन्तु आदि के रूप में सामने आ रहा है, यह सब कुछ बड़ी बुद्धिमानी से हो रहा है। प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति में, उसकी रचना में, उसकी बनावट में ऐस प्रतीत होता है कि जैसे कोई बहुत बड़ा बुद्धिमान् व्यक्तित्व उसके पीछे कार्य कर रहा हो। हम आंखों को देखते हैं, आंखों की रचना-बनावट को देखते हैं, आंखों के कार्य देखते हैं, आंखों का व्यापार देखते हैं तो ये आंखें ही इन आंखों को देखकर चकित रह जाती हैं। यह सोच कर कि न जाने किसने ये बनाई हैं? फिर कितने हित से बनाई हैं, और फिर इस प्राणी को इनसे देखने-भालने में कोई दिक्कत न हो, तो इसके लिये उसने सूर्य-चन्द्र, विद्युत अग्नि आदि का भी प्रबन्ध कर दिया है। फिर हर जीव की आंखों को भी अपने-अपने ढंग से बनाया है, फिर अपनी ओर से इन्हें ऐसा बनाया है कि यदि वह व्यक्ति सावधान रहे तो जीवन भर उसकी आंखें उसको राह दिखाती रहेंगी, फिर उसको ही नहीं वरन् अन्यों को भी वे राह दिखाती रहेंगी, स्वयं ये पढ़ती और औरों को भी पढ़ाती रहेंगी ...। ऐसे ही क्या यह निराले ये श्रोत्र हैं-कर्ण हैं-कान हैं, क्या ही निराली यह नासिका [illegible] है, क्या ही विचित्र यह जिह्वा है, जो अपने दोनों गुणों के कारण विशेष महत्व रखती है। एक तो बोलने का और दूसरा चखने का, स्वाद लेने का खाने-पीने का। न जाने कैसी-कैसी वस्तुएं, कैसे-कैसे पदार्थ, कैसे-कैसे व्यक्ति इस जगत् में देखने-सुनने को मिलते हैं, कैसे-कैसे जलचर-थलचर और नभचर संसार में दिखाई देते हैं, कैसी-कैसी प्यारी-प्यारी मछलियां, कैसे-कैसे रेगने वाले सर्प आदि प्राणी, कैसे-कैसे जंगली हिरण, चीता, शेर, हाथी और कैसे-कैसे ये ग्राम्य गौ, घोड़ा, भेड़, बकरी आदि-आदि पशु, कैसे-कैसे ये कोयल-कौआ, तोता-मैना, हंस आदि-आदि पक्षी हैं, इत्यादि। अपने-अपने ढंग से ये सभी प्राणी अपने-अपने कर्मों को करने और अपने-अपने कर्मों के फलों [illegible] प्रयोजनों को सिद्ध करने के लिये इस संसार में आए हुए हैं। यह सब कुछ किसी उद्देश्य से आ रहा है और किसी उद्देश्य से हो रहा है।

क्या ही सूर्य-चन्द्र और क्या-क्या निराले इनके कार्य, क्या ही मेघ, वृष्टि, ये जल के नानाविध स्रोत-प्रवाह, ये ताल-तलैयां, ये नदी-नद और ये समुद्र एवं क्या-क्या इनकी उपयोगिताएं हैं, क्या-क्या अद्भुत मूल्यवान् पदार्थ लोहा, ताम्बा, पीतल, चान्दी, सोना, हीरे-मोती-जवाहरात आदि-आदि, कैसे-कैसे उपयोगी मूल्यवान् द्रव्य-मिट्टी का तेल, डीजल, पेट्रोल आदि-आदि इस जगत् में हैं, और ये सब किसी विशेष प्रयोजन से हैं।

सुनते हैं किसी एक अद्वितीय दिव्य देव की यह सब करामात है, किसी एक हो परम देव की यह सब देन है, किसी एक ही अनुपम शक्ति की यह सब रचना है-यह सब कृति है, जो अपने [illegible] प्यारे पुत्रों के प्रति बड़े प्यार से प्रवाहित हो रही है। यह सतत् प्रकाश का प्रवाह, यह निरन्तर जल का प्रवाह, यह अनवरत जीवनप्रद प्राणवायु का प्रवाह, यह लगातार औषधि-वनस्पतियों का प्रवाह, यह प्रतिदिन फूल-फलो का प्रवाह, यह अहर्निश धन-धान्य का प्रवाह, यह दूध-दही-घी का प्रवाह, यह नानाविध मीठे-खट्टे तीखे-कड़वे रसों का प्रवाह आदि-आदि, यह सब सिद्ध करता है कि उस अद्वितीय परम देव का अपने इन प्रिय पुत्रों-जीवो पर कितना स्नेह है । कहीं ये अन्धेरे में ठोकर न खाएं, कहीं ये पानी बिन प्यासे न रह जाएं, कहीं ये अन्न बिन भूखे न रह जाएं, कहीं ये औषध के अभाव मे पीड़ा से कराहते न रह जाएं, कहीं दूध-दही-घी के बिना रूखे-सूखे न रह जाएं, कहीं प्राण वायु बिन [illegible] तरह के मीठे-खट्टे रस के लिये ये तरसते न रह जाएं, आदि-आदि सोचकर यह सब कुछ प्रभु ने अपने इन जीवों के लिये प्यार से प्रवाहित किया है।

यह सब कुछ उसने इतना बुद्धिपूर्वक बनाया है-इतना सोच-समझ कर बनाया है, कि बड़े-बड़े बुद्धिमान् भी इस सब को देख कर चकित रह जाते हैं।

हम सोचते हैं ,यह 'भूःभूमण्डल, यह 'भुवः-अन्तरिक्ष, यह 'स्वः द्युलोक आदि किसकी रचना हैं? तो वेद बताता है कि-यह सब एक ही वरणीय वरुणदेव की रचना है। उसी एक ही दिव्य देव ने इसको बनाया है और वह भी बड़ा सोच-समझ कर-बड़ा बुद्धिपूर्वक बनाया है, अपनी महिमा से बनाया है। और इसको बनाकर यों ही नहीं छोड़ दिया है। उसने इस सबकी रचना भी की है, इसको [illegible] है। उसने केवल इस द्यु-भू को बनाया और थामा ही नहीं है अपितु इस सकल ब्रह्माण्ड में रहने वाले सब प्राणियों को भी उत्पन्न किया है और उनको वह सम्भाल भी रहा है। इन सब प्राणियों को अपनी न्याय व्यवस्था से वह जैसे-जैसे उनके कर्म होते हैं, वैसे-वैसे फल भी प्रदान करता रहता है। इस सब प्राणियों को सदा सर्वज्ञ वह सन्मार्ग की ओर प्रेरित भी करता रहता है। फिर भी वे तदनुसार नहीं चलते हैं, तो वह उन्हें उन्हीं के सुधार के लिये यथोचित दण्ड भी देता है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

14 सितम्बर के हिन्दी दिवस पर

[illegible]

❑ ले० डॉ० अशोक आर्य, मण्डी आदमपुर (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुजराती होते हुए भी देश को एक सूत्र में बांधने के लिए अपनी प्रचार की भाषा संस्कृत के स्थान पर जन सामान्य की भाषा हिन्दी को अपनी लेखनी व प्रचार के लिए अपनाया यह एक क्रान्तिकारी कदम था। यह सत्य विशेष रूप से उस समय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जब कि इस हिन्दी साहित्य के आदिकाल के उन्नायक महर्षि दयानन्द सरस्वती हिन्दी के पूर्व साहित्यिक काल "रीति काल" या "शृंगार काल" के सन्धि समय में ही हुए थे तथा शृंगारिकता के दुष्परिणाम स्वरूप जो देश को पराधीनता का मूंह देखना पड़ा था, उससे जनमानस को बचाने के लिए न केवल जनभाषा हिन्दी की खड़ी बोली में प्रचार आरम्भ किया अपितु उन्होंने हिन्दी साहित्य का मुख, स्वाधीनता, स्वावलम्बन, देश भक्ति, पूर्व वैभव का स्मरण व अन्धविश्वासों के खण्डन की ओर मोड़ दिया। जिस कारण तात्कालीन युगाचार्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जो शृंगार काव्य द्वारा ही अपना लेखन कार्य आरम्भ कर चुके थे, को भी इस उल्टी गंगा के बहाव में बहने को बाध्य होना पड़ा। सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तथा उनकी उत्तराधिकारिणी आर्य समाज ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे कोई कसर न उठा रखी। यहा तक कह दिया कि यदि आप हमारे साहित्य को पढ़ना चाहते हो तो हिन्दी सीखो। विदेशियों को भी ऐसी ही शिक्षा दी। आओ हम हिन्दी के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज द्वारा किए गए कार्यों का मूल्यांकन करें-

सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना के साथ ही सर सय्यद अहमद, फ्रासीसी विद्वान् गार्सा-द-तासी, सयुक्त प्रान्त शिक्षा-विभाग के तात्कालीन अध्यक्ष मि हैवल, काशी के राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द आदि लोग हिन्दी को गंवारों की भाषा कहते हुए तथा इसका विरोध कर रहे थे तथा इसमें फारसी शब्द मिला रहे थे, उनके झूठ का भण्डा चौराहे मे फोड कर जन-सामान्य विरोधी होने से बचाते हुए उन्हें बताया कि हिन्दी एक [illegible] है। इसे देश के प्रतीक कोने में समझने वाले लोग हैं। इसमें हर प्रकार के विचारों की अभिव्यक्ति हो सकती है। उनकी इस बात को राजनारायण बोस, भुदेव मुकर्जी तथा कालीचरण काव्य विशारद जैसे उस युग के नेताओं की प्रेरणा कह सकते हैं, जो हिन्दी को स्वाधीनता का मार्ग मानते थे। अतः स्वामी जी द्वारा संस्थापित आर्य समाज इस प्रकार का प्रथम आन्दोलन था जिसमें हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का सर्वप्रथम प्रयास किया गया। मिश्र बन्धु विनोद तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने साहित्य ग्रन्थों में इस तथ्य को भली भांति स्वीकार किया है।

हिन्दी अपनाने के पश्चात् स्वामी दयानन्द सरस्वती केवल आठ वर्ष जीवित रहे, इन आठ वर्षों में वेद प्रचार के अतिरिक्त 15000 पृष्ठों के लेखन द्वारा साठ ग्रन्थ हमें धरोहर में दे गए, जिनमें उनकी वह आत्मकथा भी एक है जिसे हिन्दी समुदाय हिन्दी गद्य साहित्य की प्रथम प्रकाशित आत्मकथा स्वरूप स्वीकार कर चुका है। इन ग्रन्थों में सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा ग्रन्थ है जिसे विश्व की अनेक भाषाओं मे अनुवाद कर लाखों की संख्या में छपवाया व करोड़ों की संख्या में लोगों ने पढ़ा है।

हिन्दी साहित्य को महर्षि ने नई दिशा दी उन्होंने वीरोचित मार्ग अपनाते हुए जहां इसे शांत, वीर व उत्साह प्रदान करने की मांग की वहा साहित्य में उपसाहात्मक वृत्ति का भी उदय किया, यथा अन्धविश्वासी ब्राह्मण को पोप, अभिमानी का गर्वगण्ड सरीखे शब्द देकर हिन्दी के नए शब्दो का सृजन भी किया। पुनरपि, पुनश्चय, नैरोग्य आदि तथा सर्वतन्त्र, भुषुण्डी, विडालाक्ष आदि संस्कृत के शब्दों को प्रयोग किया, जो उनके सस्कृतज्ञ तथा उनके गाम्भीर्य को दर्शाता है। वह पुजारी शब्द को पूजा का अरि अर्थात् शत्रु मानते हुए उसे पुजारि लिखने हेतु प्रेरित करते थे। वह संस्कृत के अनुसार ही हिन्दी में [illegible] का प्रयोग करते थे। भारतेन्दु [illegible] नारायण मिश्र ने [illegible] की। [illegible] अपनी भाषा को सशक्त दर्शाने के लिए मुहावरों व लोकोक्तियों का [illegible] प्रयोग करते थे। "आंख का अन्धा गांठ का पूरा, उल्टा चोर कौतवाल को डांटे" आदि जैसे मुहावरों व लोकोक्तियों का भरपूर प्रयोग किया है।

स्वामी जी ने गद्य के गुणों तथा ओज, सरलता, प्रवाह व रोचकता को अपने साहित्य में विशेष स्थान दिया है। स्वदेश, स्वधर्म, स्वजाति व देशाभिमान की भावना भरने हेतु ओज युक्त शब्दों का प्रयोग करते थे। देवनागरी के महत्व को समझते हुए तो यहां तक कह जाते हैं कि विश्वभाषाओं की कोई भी लिपि इस की प्रतिस्पर्धी नहीं हो सकती। तभी तो रामधारी सिंह दिनकर ने उन्हें 'रणारूढ़ हिन्दुत्व का निर्भीक नेता' कहा है। प्रतिमा पूजा पर लिखते हैं "तोपों को मार मन्दिरों से मूर्तियां अंग्रेजों ने उठवा दी, तब मूर्ति कहां गई थी ?"

[illegible] व सप्टेल के भी [illegible] थे। यही कारण है कि उनकी भाषा में [illegible] गुण प्रधान है। स्वामी जी में श्रोताओं व पाठकों को अपने प्रवाह गुण में बहाने की क्षमता भी थी। अतः वह प्रवाह गुण का भी समीचीन प्रयोग करते थे। वह अपने उद्धरणों को शास्त्रोक्त प्रमाणों से पुष्ट भी करते थे। जिससे सुधि श्रोताओं का शास्त्रों से सम्बन्ध जुड़ता था। उनकी इस प्रवृति का हिन्दी साहित्य पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। यहीं से हिन्दी साहित्य में प्रमाण-ग्रन्थों के आधार पर विवेचना की प्रथा चल पड़ी है।

स्वामी जी की शैली गाम्भीर्य एवं तर्कपूर्ण रही है। जिसका पाठकों पर गहरा प्रभाव पड़ा। हजारों व्यक्ति इन्हें पढ़कर अन्धविश्वासों से मुक्त हुए।

स्वामी जी ने अपने लेखन व व्याख्यानों में कुरीतियों का खण्डन करते हुए रोषपूर्ण शब्दों में क्षोभ प्रकट किया। सोमनाथ मन्दिर प्रसंग में उनका यह आक्रोश अद्वितीय अवस्था में दिखाई देता है।

(क्रमशः)

आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर में वेद सप्ताह

श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व श्री इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर की अध्यक्षता में बड़ा श्रद्धापूर्वक मनाया गया. श्री सुन्दर लाल जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पूरा एक सप्ताह अमृत वर्षा की। कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में बोलते हुए उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्दर योगीराज श्री कृष्ण चन्द्र को आप्त पुरुष कहा है। श्री कृष्ण अकेले ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने जन्म से लेकर मृत्यु प्रयन्त कोई पाप नहीं किया। हमारा दुर्भाग्य है कि हम अपने महापुरुषों के जीवन चरित्र को अपने जीवन में नहीं उतारते।

कार्यक्रम में एक प्रस्ताव रखा गया कि जो भी सरकार आती है वह संस्कृत भाषा पर कुठाराघात करती है जो असहनीय है इसे कभी भी सहन नहीं किया जाएगा। यह प्रस्ताव सर्वसम्पति से पास किया गया. शनिवार को स्त्री सम्मेलन हुआ।

कार्यक्रम में श्री रमेश वोहरा, [illegible] कपूर, [illegible] चन्द, प्रवीण कुमार, कश्मीरी लाल, पं. मुकेश दिवाकर, जुगल किशोर आहूजा, विमला आर्य, चन्द रानी, सन्तोष आहूजा, शारदा वर्मा, सुमन कपूर, रमा, ममता अग्रवाल का विशेष योगदान रहा। श्री दर्शन लाल प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा, राकेश मेहरा, मेला राम, राम कुमार, वीरेन्द्र कुमार, सत नारायण, सुरजीत 'दुखी' भी विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर लगाया गया।

—रमेश वोहरा, मन्त्री

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी में वेद सप्ताह

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी पोस्ट-बैजरौ (पौड़ी गढ़वाल) में 22-8 से 31-8-2002 तक वेद सप्ताह मनाया। 22-8-2002 को रक्षाबन्धन पर्व 31-8-2002 को कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया। श्री बच्ची राम आर्य, श्री चन्द्र प्रकाश आर्य, श्री गंगा प्रशाद सौम्य, श्री वासुदेव बिमल, श्री मोती लाल आर्य, श्री गुणानन्द, श्री कुशहाल सिंह ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

—वासुदेव बिमल, मन्त्री

सम्पादकीय.....

14 सितम्बर को हिन्दी दिवस

प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस सारे देश में मनाया जाता है परन्तु फिर भी हिन्दी की उतनी उन्नति नहीं हो रही जितनी होनी चाहिए थी। 15 अगस्त 1947 से पूर्व हमारे देश में आजादी की मुहिम के साथ-साथ हिन्दी भाषा के लिए भी मुहिम चल रही थी। हिन्दी प्रचार, स्वदेशी का प्रचार भी आजादी की लड़ाई के साथ-साथ चलता रहा। उस काल में अंग्रेज़ी व उर्दू भाषा का प्रचार था। कोर्ट की भाषा भी उर्दू थी। सरकारी भाषा भी उर्दू व अंग्रेज़ी थी। सभी सरकारी दस्तावेज़ या तो उर्दू में लिखे जाते थे या अंग्रेजी में। आज भी 1947 से पूर्व की जो भूमियों की रजिस्ट्रियां मिलती हैं वह सब उर्दू भाषा में मिलती हैं और उस काल के अन्दर महर्षि दयानन्द सरस्वती का आगमन हुआ। महर्षि दयानन्द ने जहां अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी भाषा में लिखे वहां देवनागरी लिपी व हिन्दी भाषा की उन्नति के लिए निर्देश व उपदेश दिए।

इस समय सारे देश में एक जागृति पैदा हुई और सारा देश हिन्दी के प्रचार व प्रसार में जुट गया। उस समय हिन्दी का कोई भी विरोधी नहीं था। कई कवियों ने इसे अपनाया, कई साहित्यकारों ने इसे अपनाया, सिनेमा जगत ने इसे अपनाया, समाचार-पत्र भी हिन्दी में छपने लगे, परन्तु आज़ादी के बाद यह मुहिम ढीली पड़ गई। उस समय सत्ता में जो लोग आये वह अधिकतर या तो अंग्रेज़ी जानते थे या उर्दू। हिन्दी का उन्हें नाम मात्र भी ज्ञान नहीं था। पण्डित जवाहर लाल जी नेहरू तो अंग्रेज़ी व उर्दू के पक्षधर थे, परन्तु बहु-मत के आगे उन्हें झुकना पड़ा और 14 सितम्बर 1949 को भारत की संविधान सभा ने बहुमत से हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया।

जब 1949 के अन्दर हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित हुई तो बहुत कम लोगों ने इसका विरोध किया था, एक-दो को छोड़ कर शेष सभी ने हिन्दी की महत्ता को स्वीकार किया था और सारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने वाली यह भाषा एक समृद्ध भाषा बनने लगी, परन्तु फिर भी इसके बाद भी सारे देश में राजकाज की भाषा हिन्दी नहीं बन सकी। यहां तक कि आज भी हिन्दी को वह स्थान नहीं दिया जाता जो स्थान उसे मिलना चाहिए था।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे सभी भारतीय समझते हैं। यह सम्पर्क भाषा भी है । भारत के किसी भी प्रदेश में आप चले जाए वहां चाहे कोई भी भाषा बोली जा रही हो, वहां हिन्दी भाषा के माध्यम से हम अपनी बात उन्हें र मझा सकते हैं। आर्य समाज के सभी उपदेशक हिन्दी का प्रयो करते हैं, हिन्दी भाषा में आर्य समाज की विचारधारा लोगों ,ो समझाते हैं परन्तु वह भी जब बांच-बीच में अंग्रेज़ी भाषा में बोलते हैं तो लोग समझते हैं यह अच्छे विद्वान् हैं। यदि वह संस्कृत के श्लोक या वेद मन्त्र बोलते हैं तो समझा जाता है कि यह उच्चकोटि के विद्वान नहीं हैं।

आज फिर लोग अंग्रेज़ी की तरफ आकृष्ट हो रहे हैं। प्रत्येक पढ़ा-लिखा व्यक्ति अपने बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूल में पढ़ाता है। कान्वैन्ट स्कूलों में पढ़ाता है। आर्य समाज ने भी अब देखा-देखी अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की स्थापना दयानन्द पब्लिक स्कूल व माडल स्कूलों के नाम से कर दी है। अंग्रेज अपने शासनकाल में अंग्रेज़ी का उतना प्रचार नहीं कर सके जितना आज स्वयं भारत के लोग कर रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति विवाह आदि के कार्ड अंग्रेज़ी में छपवा कर यह सिद्ध करता है कि हम पढ़े लिखे हैं क्योंकि हिन्दी जानने वाले को आज भी पढ़ा लिखा नहीं समझा जाता। उनकी नजर में हिन्दी मे विवाह आदि के कार्ड छपवाना पिछड़ापन है।

1949 से लेकर आज तक हम 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस प्रतिवर्ष मनाते आ रहे हैं परन्तु केवल एक समारोह इस दिन करके समझ लेते हैं कि हमने हिन्दी दिवस मना लिया है इसके बाद वर्ष भर हमको हिन्दी की याद नहीं आती।

आज फिर आवश्यकता है कि आर्य समाज हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए आगे आए और 1947 से पूर्व की भान्ति एक मुहिम चला कर हिन्दी की उन्नति के लिए कार्य करे।

—धर्मदेव आर्य

गुरुकुल कांगड़ी उन्नति की ओर

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार में जब से श्री स्वतन्त्र कुमार जी कुलपति बने हैं तब से गुरुकुल की गतिविधियां निरन्तर बढ़ती जा रही हैं । गत कई वर्षों से गुरुकुल में वैदिक पर्व भी नहीं मनाए जा रहे थे। इस बार 22-8-2002 को श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन) के पर्व पर आचार्य वेद प्रकाश जी शास्त्री ने पुरानी यज्ञशाला अमृत वाटिका में यज्ञ करवाया। सभी ब्रह्मचारियों ने उसमें भाग लिया। बच्चों ने नए यज्ञोपवीत धारण किए। कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने व आचार्य वेद प्रकाश जी ने श्रावणी पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला।

31-8-2002 को योगीराज श्री कृष्ण का जन्मोत्सव गुरुकुल में मनाया गया। अमृत वाटिका में यज्ञ हुआ। गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियो व अध्यापकों-प्राध्यापकों ने उसमें भाग लिया। कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी, आचार्य वेद प्रकाश जी, डा. महावीर जी अग्रवाल, प्रो० त्रिवेदी जी ने श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री सतीश सुभाष जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की भजन मण्डली के भजन हुए।

यह दोनों पर्व पहली बार कई वर्षों के बाद मनाए गए हैं। इस कार्य की गुरुकुल के सभी लोगों ने बड़ी सराहना की, यह सब कुलपति जी की प्रेरणा से हुआ।

1-9-2002 को श्रमदान की एक नई योजना बनाई गई। इस दिन गुरुकुल के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी के नेतृत्व में गुरुकुल के सभी प्राध्यापक, अध्यापक, अधिकारी व कर्मचारी तथा विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर इस योजना में भाग लिया। बड़े से छोटे तक सभी लोग सफाई के लिए निकल पड़े। विश्व विद्यालय व गुरुकुल का सारा परिसर साफ किया गया। बहुत देर के बाद गुरुकुल में ऐसा हुआ है। जब सभी लोगों ने, छोटे बडों ने मिलकर कार्य किया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल में कई प्रकार की मर्यादाए बांधी थी और गत कई वर्षों से वह मर्यादाएं टूट गई थी परन्तु अब श्री स्वतन्त्र कुमार जी के गुरुकुल के कुलपति बनने पर उनकी प्रेरणा से इस ओर ध्यान दिया जाने लगा है।

श्री स्वतन्त्र कुमार जी कर्मठ कार्यकर्त्ता है। उन्होंने पठानकोट मे आदर्श भारतीय कालेज में प्रिंसिपल पद पर रहते हुए इस कालेज को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया और अब गुरुकुल के कुलपति बनने पर गुरुकुल को भी उन्नति के शिखर पर पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। श्री स्वतन्त्र कुमार जी प्रसिद्ध आर्य समाजी हैं। आर्य समाज की विचारधारा से ओत-प्रोत हैं । वैदिक सिद्धान्तों को जानने वाले हैं [illegible] करने के लिए एक आर्य समाजी कार्यकर्त्ता की आवश्यकता थी वह गुरुकुल को मिल गया। आर्य समाज की जिन शिक्षा संस्थाओ के प्रिंसिपल आर्य समाजी हैं वह शिक्षा सस्थाएं बहुत उन्नति कर रही हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय भी अब बहुत उन्नति करेगा इसमें कोई सन्देह नहीं।

—धर्मदेव आर्य

ऋषि दयानन्द के आठ नाम

दो परिवार प्रदत्त, दो विद्या गुरु प्रदत्त, दो जनता द्वारा दिए गए, एक स्वयं ने रखा, एक दीक्षा गुरु ने दिया-

□ ले० श्री डॉ० भवानीलाल जी भारतीय, 8/423 नन्दन वन, जोधपुर

आप लेख का शीर्षक देख कर आश्चर्य करेंगे क्या सचमुच ऋषि दयानन्द के आठ नाम थे। मेरा उत्तर है, हां। जब करसन जी तिवारी के यहां लड़का पैदा हुआ तो लाड प्यार में उसका नाम रखा गया दयाराम। तत्पश्चात् जन्म के मूल नक्षत्र के आधार पर उन्हें मूल जीं या **मूलशंकर** नाम दिया गया। यही मूलशंकर इक्कीस वर्ष की भरी जवानी में गृह त्याग कर वैराग्य धारण करता है। जब उसने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया तो खुद ने अपना नाम वेदान्त से प्रभावित होकर रख लिया-**शुद्ध चैतन्य**। निश्चय ही इस ब्रह्मचारी में' चैतन्य ही था, शुद्ध, सात्विक और निष्कलुष। वह तब नवीन वेदान्त से प्रभावित भी था इसलिए इससे अधिक सुन्दर नाम स्वयं को क्या दे सकता था ?

जब महाराष्ट्र निवासी स्वामी पूर्णानन्द ने इसे सन्यास की दीक्षा दी तो नाम दिया **दयानन्द सरस्वती**। प्राणीमात्र के प्रति दया दर्शाने वाले इस उदार चरित सन्यासी के लिए यह नाम सर्वथा उपयुक्त था। पारिवारिक नाम दयाराम का 'दया' शब्द इसमें सम्मिलित था ही। सन्यासी बनने पर नाम रखने की एक रीति यह भी है कि पूर्व नाम किसी न किसी रूप में चतुर्थ आश्रम के नाम में अन्तर्निहित रहता है। नारायण प्रसाद, नारायण स्वामी बने और खुशहाल चंद खुर्सन्द (आनन्द) ने अपना नाम आनन्द स्वामी रखा। अतः दयाराम का दयानन्द बन जाना आश्चर्यजनक नहीं था। वह सचमुच दया और आनन्द का आगार था।

1860 के खत्म होने से कुछ पहले दयानन्द ने विद्या गुरु विरजानन्द के विद्यालय में प्रवेश लिया। शीघ्र ही गुरु ने इस तेजस्वी शिष्य के गुणों को पहचान लिया। उसने इस प्रिय शिष्य को दो नाम दिये-कालजिह्व तथा कुलकर। कालजिह्व वह होता है जिसकी जिह्वा से पाखण्ड, अनाचार, अत्याचार, मतान्धता तथा अंध विश्वास पर सतत यम तुल्य प्रहार होता हो। दयानन्द तो अपनी वाणी से पाखण्डों, अनाचारों तथा धर्म ध्वजियों के विरोध में सतत अग्निवर्षा करते थे। अतः उन्हें **कालजिह्व** कहना सार्थक था। कुलकर का अर्थ होता है खूंटा या खूंटे से बंधा। शास्त्र मर्यादा तथा सत्सिद्धान्त रूपी मजबूत खूंटे से बंधा दयानन्द गुरुदेव द्वारा **कुलकर** नाम से पुकारा जाता था।

प्रचार काल के प्रारम्भ में स्वामी दयानन्द गंगा के प्रदेश में घूम कर वैदिक धर्म के मौलिक मन्तव्यों का प्रचार करते रहे। इस अवधि में उन्होंने आठ अवैदिक गप्पों का निरन्तर खण्डन किया तथा आठ वैदिक सत्यों का प्रतिपादन किया। अवैदिक पाखण्ड मत का खण्डन करते समय स्वामी जी की वाणी में एक निराली ओजस्विता तथा तेजस्विता आ जाती थी। उन्होंने जिन आठ गप्पों का खण्डन किया वे थीं-(1) पुराण (2) मूर्तिपूजा (3) शैव, शाक्त आदि सम्प्रदाय (4) वाम मार्ग (5) मादक द्रव्य सेवन (6) पर स्त्री गमन (7) चोरी (8) कपट, छल, अभिमान तथा मिथ्या भाषण। स्वामी जी द्वारा इन आठ गप्पों का तीव्र खण्डन इतना लोकप्रिय तथा चर्चित हुआ कि सामान्य लोग उन्हें **गप्पा बाबा** कह कर पुकारने लगे। गप्पों का खण्डन करने वाला गप्पा बाबा कहलाने लगा।

जब कोई व्यक्ति उनके सामने कोई मिथ्या बात कहता तो स्वामी जी तुरन्त उसका खण्डन करते और संस्कृत में कहते 'मनुष्याणां कोलाहलः' यह सत्य नहीं है केवल अज्ञानी लोगों का कोलाहल है। उनका यह कथन इतना लोकव्यापी हो गया कि सामान्य जनता उन्हें **कोलाहल स्वामी** कहने लगी। यह एक प्रचलित सत्य है कि किसी व्यक्ति द्वारा किसी शब्द का निरन्तर, अप्रतिहत प्रयोग होता जन समाज सुनता है तो वह उसे व्यञ्जना की शैली में उसी नाम से पुकारने लगता है। अन्यों के प्रति 'महाशय जी' का अनवरत प्रयोग करने वालों को साधारण जनता 'महाशय जी' पुकारने लगती है। उसी कारण 'कोलाहल' का अतिशय प्रयोग करने वाले दयानन्द को गंगा तटवर्ती सामान्य जन कोलाहल स्वामी कहने लगे तो इसमें आश्चर्य ही क्या ?

आर्य समाज बंगा द्वारा गांवों में वेद प्रचार

दिनांक 4-8-2002 दिन रविवार प्रातः 10 बजे गांव बड़ा पिंड तहसील फिल्लौर जिला जालन्धर में श्री सुरेन्द्र मोहन शर्मा [illegible] अग्निहोत्र यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री सुरेन्द्र मोहन शर्मा अपनी धर्मपत्नि श्रीमती पुष्पा शर्मा (प्रधान महिला समिति) यजमान बने। यज्ञ का पुरौहित्य, श्री श्याम लाल पुरोहित आर्य समाज बगा ने किया। यज्ञ मे गाव बडा पिड, गोरायां, घलेता, तलवंडी, लोहगढ एवं अन्य गावों के नर-नारियो ने बडे उत्साह एवं हर्षोल्लास से भाग लिया। श्री राजबली शास्त्री राहों, श्री हसराज आर्य नकोदर ने जनता के सामने वेद एवं वैदिक सस्कृति बारे अपने विचार रखे। जिसका लोगों पर अच्छा प्रभाव रहा। सायं 2 बजे ऋषि लंगर के पश्चात् प्रोग्राम समाप्त हुआ।

इस प्रोग्राम में श्री हंसराज आर्य नकोदर, श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रधान [illegible], श्री अशोक कुमार शर्मा, श्री सुदर्शन लाल गौतम रिटायर्ड प्रिंसिपल, श्री दर्शन लाल शर्मा, श्री जानकीदास रिटायर्ड अध्यापक का परिश्रम विशेष सराहनीय रहा। गांव की पंचायत के अनेक सज्जन इस प्रोग्राम में शामिल हुए। उन्होंने बहुत जल्दी ऐसा और प्रोग्राम करवाने का आश्वासन दिया।

लोगों में वैदिक साहित्य बांटा गया। प्रचार कार्य बहुत सफल रहा।

दिनांक 10-8-2002 दिन शनिवार को गांव सरहाल मंडी निकट मुकन्दपुर तहसील फिल्लौर जिला जालन्धर में वेद प्रचार का कार्यक्रम बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से हुआ। श्रीमती सुरजीत कौर सरपंच गांव सरहाल मंडी के घर पर अग्निहोत्र यज्ञ का आयोजन किया गया। श्रीमती सुरजीत कौर यज्ञ की यजमान बनीं। श्री हंसराज आर्य नकोदर ने यज्ञ का पुरौहित्य किया। गांव के अनेक नर-नारियों ने यज्ञ में बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। श्री सुरेन्द्र मोहन शर्मा बड़ा पिंड और प्रधान महिला मंडल भी यज्ञ में उपस्थित रहीं। प्रोग्राम ठीक 9 बजे शुरू होकर 11.30 बजे समाप्त हुआ। श्री हंसराज आर्य नकोदर ने लोगों को यज्ञ एवं प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं यज्ञ का पर्यावरण से क्या सम्बन्ध है, पर अपने विचार रखे। लोगों में आर्य समाज बंगा द्वारा वैदिक साहित्य बांटा गया। प्रोग्राम अत्यन्त सफल रहा।

-शादी लाल महेन्द्रु, प्रधान

60वां ध्यान योग शिविर एवं यौगिक यज्ञ

(सोमवार, 7 अक्तूबर 2002 से रविवार 13 अक्तूबर 2002 तक)

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी पातञ्जल योगधाम आर्य नगर ज्वालापुर (हरिद्वार) में श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में ध्यान योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान, समाधि का प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा यम, नियमादि का पालन भी कराया जाएगा। शिविरार्थी शारीरिक निर्बलता तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे शिविर में यथा समय विद्वानों के प्रवचन तथा भक्ति संगीत होंगे।

अमृतसर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रधान डॉ० प्रकाश चन्द्र जी ने ब्रह्मा के आसन पर विराजमान होकर सन्ध्या व हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया। महामन्त्री श्री लक्ष्मण कुमार तिवारी जी ने भजनों का गुलदस्ता पेश किया। बहन प्रीति निर्मल रत्न के साथ दयानन्द आर्य माडल स्कूल के बच्चों ने भी सुन्दर भजन प्रस्तुत किए।

आर्य समाज श्री कृष्ण के गुण, कर्म, स्वभाव व चरित्र की पूजा करता है। ये शब्द पं० बनारसी दास जी ने इस शुभ अवसर पर कहे। श्रीराम, श्री कृष्ण भारतीय संस्कृति के दो महान स्तम्भ हैं। उनकी शिक्षाओं को जीवन में धारण करना चाहिए।

महात्मा डॉ० माधुरी योगमती जी (संचालिका-आर्य सद्भावना सत्संग समिति अमृतसर) ने श्री कृष्ण जी के चरित्र पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण को चोर कहना, या यह कहना कि उनकी 16108 रानियां थी अथवा यह कहना कि गोपियों के साथ रास लीला रचाया करते थे। ऐसे लांछन व घटिया शब्दों का प्रयोग श्री कृष्ण के लिए करना सर्वदा गल्त व मनघड़न्त कहानियां हैं। वे तो सत्यवादी, परोपकारी, दयालु व निष्कलंक थे।

तत्पश्चात् पं० बनारसी दास जी ने साप्ताहिक व मासिक कार्यक्रम की रूप रेखा सब के सामने पेश की। सभी ने इस कार्यक्रम में सहयोग करने का वायदा किया। **"देश भक्ति व चरित्र निर्माण"** कार्यक्रम में महात्मा माधुरी योगमती जी ने भी अपना पूरा सहयोग देने पर खुशी प्रकट की। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री प्रेम अरोड़ा, विनोद आर्य, हरविन्द्र आर्य, बाल किशन आर्य, किशन लाल आर्य, डॉ० राजेश आर्य, राज कुमार आर्य तथा स्कूल के स्टाफ ने भरपूर सहयोग दिया।

बीकानेर में श्रावणी पर्व व श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर द्वारा दस दिवसीय वेद प्रचार का शुभारम्भ श्रावणी पर्व दिनांक 22-8-2002 की प्रात: से श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व तक वेद सप्ताह मनाया गया। इस दौरान इस अवसर पर आर्य परिवारों में चारों वेदों के विशेष मंत्रों से आहुतियां देकर श्री जसकरण सोनी, उपप्रधान तथा ब्रह्मचारी सोमदेव के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न कराया। इसमें पं० उदय शंकर व्यास, उपप्रधान का विशेष सहयोग रहा। महर्षि कपिल आर्य गुरुकुल, कोलायत के आचार्य श्री शिव कुमार शास्त्री के विद्वतापूर्ण वैदिक प्रवचन प्रतिदिन हुए। श्री आनन्दमुनि वानप्रस्थी के भी प्रवचन हुए एवं दिनांक 25-8-2002 से 31-8-2002 तक श्री श्रवण कुमार भजनोपदेशक (सिरसा-हरियाणा वालों) के ईश्वर भक्ति एवं समाजोत्थान पर भजनों ने उनकी विनोदपूर्ण शैली के कारण श्रोताओं को विशेष आकर्षित किया। समय-समय पर भजनोपदेशक श्री राम गोपाल, ठाकुर प्रसाद, बलवीर सिंह, जेठा राम, कृष्ण लाल, प्रचार मन्त्री, फूलचंद ब्रह्मचारी विक्रमार्य आदि के भजनों से श्रोतागण भाव-विभोर होते रहे। दिनांक 27-8-2002 को केन्द्रीय कारागार बीकानेर में वेद प्रचार का आयोजन विशेष महत्वपूर्ण रहा। आर्य समाज परमानन्द बस्ती, पवनपुरी व मुक्ताप्रसाद कालोनी का भी सराहनीय सहयोग रहा। उक्त कार्यक्रम का सफल आयोजन प्रधान-श्री शंभू राम यादव, वरिष्ठ अधिवक्ता की विशेष प्रेरणा तथा श्री भवंर लाल आदि सदस्यों के सक्रिय सहयोग से हो सका, जिससे सभासदों में नव चेतना एवं उत्साह का प्रादुर्भाव हो सका।

—महेश सोनी, मंत्री

अभी सूर्य नहीं अस्त हुआ

इस शीर्षक से श्री विजय आनन्द जी आर्य प्रधान आर्य समाज जी.टी. रोड फिरोजपुर छावनी की नई कैसेट "अभी सूर्य नहीं अस्त हुआ" नाम से निकाली जा रही है। स्वरबद्ध प्रेरणा दायक मधुर स्वर से सुसज्जित भजनों की आठ कैसेट शीघ्र निकाली जा रही हैं। श्री विजय जी ने पहले भी भजनों की कई कैसेटें निकाली हैं, जिनसे आर्य समाज का प्रचार हो रहा है। —मनोज आर्य, मन्त्री

प्रभु की महिमा

(पृष्ठ 1 का शेष)

वह पृथिवी और पृथिवी के, अर्थात् इस भू-भूमण्डल और इसके प्राणियों को ही नहीं वरन् इससे 13 लाख गुने बड़े गतिशील इस सूर्य को भी धारण किए हुए है, और न जाने वह किन-किन और ग्रहों-उपग्रहों को धारण किए हुए है ? समय आने पर वह इन सबका संहार भी करता है...।

इस अद्भुत प्यारे प्रभु देव के इस विशाल ब्रह्माण्ड को देखकर- इसमें नानाविध प्राणियों को देखकर- उनके लिए इस महान् विशाल खाने-पीने रहने-सहने, पहनने-ओढ़ने, आदि-आदि के प्रबन्ध को देखकर एक मनुष्य का सिर सम्मान से नत हो जाता है, हृदय श्रद्धा से भर जाता है, और एकदम वह सोचने-विचारने लगता है कि-"पता नहीं, वह अद्वितीय दिव्य देव कौन होगा ? कैसा होगा? कितना महान् होगा ? कितना सशक्त होगा ? कितना बुद्धिमान होगा ? कितनी सूझबूझ वाला होगा ? कितना विशाल उसका हृदय होगा ? कितनी बड़ी उसकी सामर्थ्य होगी ? कितना दिव्य उसका मस्तिष्क होगा ? कितना अद्वितीय उसका ज्ञान होगा ? कितना अलौकिक उसका विज्ञान होगा ? कितना हित भरा उसका हृदय होगा? कितना दिव्य उसका दिल होगा ? कितना अनोखा उसका प्यार होगा ? कितना दिव्य उसका दुलार होगा ? मेरा जन्म हुआ, भूख से मेरे मूंह से 'ऊँ' ही निकला था कि उस परम प्यारे प्रभु ने कवोष्ण-कोसे दूध से भरे दो (स्तन) थर्मस मेरे लिए उपस्थित कर दिये माता-पिता आदि तो तब मेरे लिए दो-चार कपड़े-लत्ते मात्र ही लाए थे, जब मेरा जन्म हुआ था, पर उसने तो मेरे जन्म से भी पूर्व मेरे खाने-पीने, रहने-सहने का प्रबन्ध भी कर दिया था। मेरे मां-बाप में उसने मेरे प्रति इतना स्नेह-मोह-लाड-प्यार भर दिया कि वे सहज ही मेरे लिए तब सब तरह से सचिन्त रहने लगे और मैं निश्चिन्त होकर खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने और रहने-सहने लगा।"

न जाने वह प्यारा प्रभु कितना महान् होगा ? कितना दिव्य होगा? कितना निराला होगा ? कितना अद्वितीय होगा ? यह सोच कर मेरे मन में एक इच्छा उत्पन्न हुई-एक जिज्ञासा जगी कि-"मैं उसको जानूं-मैं उसके दर्शन पाऊं-मैं उसको देखूं-मैं उसको निहारूं और धर दूं उसके पावन चरणों में अपना यह उत्तमांग-अपना यह सिर, और वह भी स्नेह और सम्मान के साथ, श्रद्धा और आभार के साथ....।" तब मैं जप-तप करने में लग गया, स्वाध्याय और सत्संग में भी जुट गया। मैं भजन और कीर्तन में भी झूमने लगा। मैं साधु और संतों के संग में भी बैठने लगा। मैं पद्मासन-सिद्धासनों में बैठ-बैठ कर प्राणायाम पूर्वक प्रत्याहार का अभ्यास भी करने लगा। मैं मिन्टों नहीं, घण्टों-घण्टों बैठ-बैठ कर धारणा-ध्यान और समाधि को सिद्ध करने का प्रयत्न भी करने लगा, पर मुझे तब भी उस वरणनीय वरुण देव का दर्शन नहीं हो सका। होता भी कैसे ? क्योंकि मैंने उस वरणीय वरुण देव के भीतर अर्थात् उसके हृदय में अपना स्थान ही नहीं बनाया। कदाचित् मैंने कुछ ऐसा विशेष अभी नहीं किया होगा जिससे वह मुझ पर अपनी अनुकम्पा करता। पर फिर भी मैं अभी निराश नहीं हूं, अभी हताश नहीं हूं। वेद के शब्दों में मेरे भीतर अब भी एक तड़प है, पर यह कि-(कदा न वरुणे अन्त: भुवानि) न जाने कब वह सौभाग्यशाली दिन आएगा कि जब मैं उस वरणीय वरुण देव के भीतर प्रवेश पाऊंगा-उसके हृदय में अपने लिए स्थान बना पाऊंगा? न जाने कब अपने को उसके प्यार का पात्र बना पाऊंगा? तथा उसका साक्षात्कार कर सकूंगा? न जाने कब-न जाने कब-न जाने कब

वेद सप्ताह व वृष्टि यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज पीपाड़ शहर राजस्थान की प्राचीनतम आर्य समाजों में से एक है। इस आर्य समाज के पदाधिकारी, दानदाता एवं समाज के भामाशाह दान-दाताओं के सहयोग से प्रतिवर्ष श्रावणी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता हो। इस वर्ष इस क्षेत्र में अकाल की स्थिति को देखते हुए यहां के कार्यकर्त्ताओं ने वेद प्रचार सप्ताह के साथ-साथ वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया।

वृष्टि यज्ञ के ब्रह्मा पं० रामनारायण शास्त्री थे। आगन्तुक अन्य संन्यासी एवं विद्वानों में पं० नरदेव जी भजनोपदेशक भरतपुर, पूज्य स्वामी रामानन्द जी सरस्वती अजमेर, आदित्य मुनि वानप्रस्थी जोधपुर एवं श्री देवी प्रसाद जी बाडमेर थे। —चम्पा लाल आर्य, मन्त्री

स्वामी आत्मबोध (आर्य भिक्षु) जी अब नहीं रहे

मेरे हिन्दी आन्दोलन के साथी का उस समय का नाम श्री रामजी प्रसाद गुप्त था। उसके पश्चात् वानप्रस्थी के रूप में आर्य भिक्षु के नाम से प्रसिद्ध हुए। उसके पश्चात् 75 वर्ष में संन्यास लेकर स्वामी आत्मबोध बन गए। श्री रामजी प्रसाद गुप्त। 17-8-1957 को हिन्दी आन्दोलन के लिए 150 व्यक्तियों का जत्था लेकर चण्डीगढ़ सत्याग्रह के लिए पधारे। मैं 16-8-1957 को सत्यग्रह करने के लिए आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर से हिन्दी सत्याग्रह के लिए एक जत्था लेकर चण्डीगढ़ में गया। 22 सैक्टर आर्य समाज से 51 व्यक्ति का जत्था प्रतिदिन गिरफ्तारी देता था। चण्डीगढ़ में ही मेरी भेंट श्री रामजी प्रसाद गुप्त से आर्य समाज में हो गई। मेरी गिरफ्तारी होने के पश्चात मुझे अम्बाला जेल में भेज दिया गया और तीसरे दिन श्री रामजी प्रसाद जी गुप्त को भी अम्बाला जेल में भेज दिया गया और हम एक ही कमरे में वहां पर प्रतिदिन यज्ञ करते थे। मैं भी प्रतिदिन यज्ञ करता था और श्री रामजी प्रसाद भी प्रतिदिन यज्ञ करते थे। हम साढ़े तीन महीने अम्बाला जेल में इकट्ठे ही रहे। हमारी रिहाई भी 18-12-1957 को इकट्ठे हुई और मैं जालन्धर में आकर दोबारा रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार हो गया और 8 दिन जालन्धर की जेल में रहा। जालन्धर आर्य समाज अड्डा होशियारपुर का चुनाव हुआ और मैं मंत्री बन गया और सेठ शिवचंद जी अग्रवाल प्रधान बन गए। 1959 में फिर दोबारा चुनाव हुए तो मैं फिर आर्य समाज का मन्त्री बन गया और दुर्गादत्त जी प्रधान बन गए और 1959 दिसम्बर को आर्य समाज का वार्षिक उत्सव आ गया। उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पर हरियाणा वालों का कब्जा था और एक सभा उस समय श्री वीरेन्द्र जी ने पृथक बनाई हुई थी जिसका कार्यालय आर्य समाज पक्का बाग जालन्धर में था। श्री डा ज्योति जी ने प्रस्ताव रखा कि यह दो सभाएं हैं इस लिए इनमें से किसी भी सभा का उपदेशक न लिया जाए। मैंने उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया कि सब उपदेशक बाहर से ही मंगवाए जाएंगे। जेल में रहने के कारण उपदेशकों के साथ मेल हो चुका था तो उसी समय मैंने श्री रामजी प्रसाद गुप्त को पत्र लिख कर उन्हें आर्य समाज में प्रचार के लिए बुलाया तो उस समय श्री राम जी प्रसाद गुप्त पहली बार ही पंजाब में आए थे। उसके बाद हर वर्ष यहां आते थे। दूसरी आर्य समाजों ने भी इनको बुलाना आरम्भ कर दिया था। उस समय श्री रामजी प्रसाद गुप्त से हुई एक बात मैं लिखनी भूल गया। जब हम अम्बाला में थे तो उस समय यूपी सरकार ने अम्बाला जेल के जेलर को पत्र लिखा कि आपकी जेल में श्री रामजी प्रसाद गुप्त जी पधारे हैं। उनको A क्लास दी जाए तो उस समय जेलर ने श्री रामजी प्रसाद को कहा कि हमें आपको A क्लास में रखने के लिए पत्र आया है इसलिए आपको A

क्लास मुझे अकेले को ही देंगे या सब को। जेलर ने कहा कि आपको अकेले को ही दी जाएगी तो उस समय श्री रामजी प्रसाद ने उत्तर दिया था कि अगर सभी सी क्लास में रहेंगे तो मैं भी सी क्लास में ही रहूंगा। यह था उनका त्याग। मैं जब बुलाता था तो मार्ग व्यय देने के लिए उन्हें कहा जाता तो वह यह कहते थे कि मित्र से कुछ भी नहीं लिया जाता है परन्तु मैं जबरदस्ती उनकी जेब मे डाल देता था। जब शहर से बाहर आकर शहीद भगत सिंह नगर में आर्य समाज स्थापना कर दी तो वह वहां भी आते थे। यहा भी जो हमारी मर्जी होती वह ही उनकी जेव में डालते थे। मेरा उनके साथ काफी अच्छा सम्बन्ध रहा है। वह 50 वर्ष होने के पश्चात् गृहस्थ छोड़ कर वानप्रस्थी बन गए और 50 वर्ष में अपना नाम राम प्रसाद से बदल कर आर्य भिक्षु रख लिया। आर्य भिक्षु के नाम से वह बहुत मशहूर थे और जब 74 वर्ष की उनकी आयु हुई तो वह करतारपुर आए तो मुझसे कहा कि अगले वर्ष 75 वर्ष का हो रहा हूं मैंने सन्यास ले लेना है तो 75 वर्ष में जाकर उन्होंने संन्यास ले लिया। फिर मुझे संन्यासी के रूप में आत्मबोध के रूप पर ही मिले थे। अब तीन वर्ष से वह हमारे पास नहीं आ सके। इस वर्ष हमारा जब उत्सव आया तो उनको फोन किया कि आप शुक्रवार से रविवार तक पहुंच जावे तो उन्होंने कहा कि मैं आपके उत्सव में सोमवार से ही आऊंगा परन्तु वह समय पर बीमार हो गए। उनके दर्शन इस बार नहीं कर सके मेरा सब से अधिक मेलजोल जेल में हुआ क्योंकि वह भी यज्ञ किए बिना कुछ भी नहीं खाते पीते थे। मैं भी दैनिक यज्ञ करने से पूर्व कुछ भी नहीं खाता था इसलिए मेरा और उनका गहरा सम्बन्ध हो गया। इसलिए राम जी प्रसाद गुप्त तथा आर्य भिक्षु या उसके पश्चात बने स्वामी आत्मबोध जी के साथ गहरा सम्बन्ध रहा। मैंने उनको गृहस्थ से लेकर वानप्रस्थ तथा सन्यासी इन तीनों रूपों में देखा है। यह सुन कर बहुत बड़ा दुख हुआ कि स्वामी आत्म बोध (आर्य भिक्षु) जी हमारे से सदा के लिए जुदा हो गए हैं, अब मुझे दो वर्ष हो गए उनको मिल भी नहीं सका। मैं जब भी गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार जाता था उनको मिल कर ही आता था। स्वामी जी जब भी करतारपुर आते थे मुझे सन्देश भेजते थे अब अधिक न लिखता हुआ उनके चरणों में श्रद्धांजलि भेंट करता हूं। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और जो उनके मरने का हमें दुख हुआ हमें शान्ति प्रदान करे यही हमारी परमात्मा से प्रार्थना है। स्वामी आत्मबोध जी के चले जाने से जो स्थान खाली हुआ है वह भर पाना मुश्किल है और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि जो उनको चले जाने से हमें वियोग हुआ है उसके सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

–मुलखराज आर्य

मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य समाज तलवाड़ा द्वारा वेद प्रचार

25-8-2002 को आर्य समाज तलवाड़ा द्वारा गांव भटेड़ जो कि तलवाड़ा से 10 कि.मी दूरी पर है। श्री नरेश शर्मा जी के निवास स्थान पर सुबह 9 बजे से 10 बजे तक यज्ञ किया गया। यज्ञ पं० परमानन्द जी ने बहुत श्रद्धा से करवाया। यज्ञ वेदी पर शर्मा जी का परिवार और गांव के परिवार, गाव भोज से श्री गिरधारी लाल जी शर्मा को बिठाया गया।

यज्ञ के उपरान्त स्त्री समाज के सदस्यों श्रीमती कृष्णा देवी, शान्ति देवी, मधु भाटिया, उर्मिला शर्मा ने मिल बहुत सुन्दर ईश्वर भक्ति के भजन सुनाये। श्री जगमोहन कंवर व पं० परमानन्द जी ने भजन सुनाए, जिनको श्रोताओं द्वारा बहुत सराहा गया।

इसके बाद श्री अमर नाथ वरिष्ठ उप प्रधान आर्य समाज तलवाड़ा ने यज्ञ का हमें क्या लाभ है, यज्ञ का वैदिक स्वरूप और यज्ञ द्वारा हमें क्या शिक्षा प्राप्त होती है। इस पर बहुत अच्छे विचार दिये। इसके उपरान्त श्री मनोहर लाल आर्य ने मानव जीवन का क्या उद्देश्य है और वैदिक धर्म में ईश्वर का क्या स्वरूप है, इस पर प्रवचन दिया।

इस अवसर पर जहां गांव भटेड़ के नर-नारी आये हुए थे वहां और भी गांवों से लोग पहुंचे हुए थे। गांवों में वेद प्रचार का कार्यक्रम बहुत सफल रहता है और गांवों के सदस्यों ने अपने घरों में वेद-प्रचार करवाने के लिए कहा। 22 सितम्बर को फिर एक गांव में वेद प्रचार और यज्ञ किया जाएगा। तलवाड़ा से आर्य समाज तलवाड़ा, स्त्री आर्य समाज तलवाड़ा के सदस्य और अधिकारीगण, महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल, तलवाड़ा के प्रिंसिपल और स्कूल स्टाफ बस द्वारा और स्कूटरों पर वहां पहुंचे।

कार्यक्रम बहुत सफल रहा गांवों के लोग बहुत श्रद्धा से बहुत संख्या में आते हैं। प्रशाद वितरण के बाद ऋषि लंगर का भी इन्तजाम था। सभी सदस्यों ने और गांव वालों ने मिल कर लंगर ग्रहण किया। शर्मा जी ने 100 रुपए आर्य समाज का 500 रुपए हसराज पब्लिक स्कूल को दान दिये।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

30-8-2002 को आर्य समाज मन्दिर में कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व भी आर्य समाज द्वारा श्रद्धा और उल्लास से मनाया गया। पहले यज्ञ किया गया। यज्ञ पर शहर के दूसरे महानुभावों को यज्ञमानों के आसनों पर बिठाया गया और सभी ने श्रद्धा से यज्ञ किया। इसके उपरान्त महात्मा हंसराज स्कूल के छात्रों द्वारा बहुत सुन्दर भजन पेश किए गए। स्त्री समाज के सदस्यों द्वारा व जगमोहन कंवर और किशोरी लाल द्वारा भी भजन पेश किए गए। बाद में श्री अमर नाथ जी ने श्री कृष्ण जी के जीवन पर बहुत सुन्दर विचार दिए।

–मनोहर लाल आर्य, मन्त्री

भठिण्डा में योगीराज कृष्ण का जन्म दिवस

योगीराज कृष्ण जी का जन्म दिवस आर्य समाज भठिण्डा के ांगण में 31-8-2002 को बड़ी ूमधाम से मनाया गया। आर्य समाज के भवन पर बिजली की लड़ियां लगाई गईं। प्रातः 7 बजे पं. ध्रुव कुमार जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में हवन ज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ाण्डित पदम जी ने श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

श्री प्रेम भाटिया महामन्त्री जी ने ी पदम जी का इस अवसर पर ार्य जनों के बीच में आने का न्यवाद किया। श्री एम.पी. अरोड़ा पमन्त्री आर्य समाज ने एक भजन स्तुत किया।

सौभाग्य की बात है कि इस वसर पर श्री लक्ष्मीचन्द्र जी आर्य ो कि कुछ दिन पहले स्थानान्तरण ोने पर भठिण्डा कैन्टोन्मेन्ट में नयुक्त हुए हैं एवम् लम्बे समय से ार्य जगत से जुड़े हुए हैं पधारे, न्होंने अपना परिचय देते हुए योगी ाज श्री कृष्ण जी के जीवन पर काश डाला।

इसके उपरान्त पं. ध्रुव कुमार ी शास्त्री ने योगीराज श्री कृष्ण जी े जन्म दिवस पर अपने सन्देश में हा कि आज साधारण लोग श्री ष्ण जी के असली जीवन चरित्र से रिचित नहीं हैं वह उन्हें भागवत् ादि में वर्णित माखन चोर, बंसी जाने, रास रचाने वाले, नग्न स्नान रने वाली महिलाओं के वस्त्र चुराने ाले व्याभिचारी ही जानते हैं उन्हें हाभारत मे वर्णित श्री कृष्ण जी के असली जीवन चरित्र की जानकारी नहीं है।

श्री कृष्ण जी ही ऐसे महापुरुष हुए हैं। जिन्होंने जीवन में कोई गलत कार्य नहीं किया अतः वह "आप्त पुरुष" थे। अब आवश्यकता है कि हम आर्य विद्वानों द्वारा लिखित योगीराज श्री कृष्ण का जीवन चरित्र स्वयं पढ़ें व अपने बालक बालिकाओं को पढ़ावें जिससे वह महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन पवित्र बना सकें।

महामन्त्री जी ने घोषणा की कि श्री विनोद कुमार जी गर्ग मन्त्री आर्य माडल हाई स्कूल के पुत्र अंकित का आज जन्म दिवस है उस उपलक्ष्य में चौ० बाबू राम जी गर्ग प्रधान गुरुकुल शिल्प विद्यालय ने जलपान की सभी के लिए व्यवस्था की।

इस शुभ अवसर पर लाला वजीरचन्द जी संरक्षक जिला आर्य सभा भठिण्डा, लाला कुलवन्त राय जी अग्रवाल प्रधान, श्री चमन लाल जी मेहता प्रबंधक, श्रीमती शान्ति जिन्दल प्रधानाचार्य, आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, श्री हुक्म चन्द्र जी गोयल प्रधानाचार्य, श्री श्याम लाल गुप्ता आर्य माडल हाई स्कूल भठिण्डा एवम् श्री नवनीत कुमार कोषाध्यक्ष, श्री गौरी शंकर उपमंत्री एवं श्रीमती इन्द्रा छाबड़ा आर्य समाज भठिण्डा की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

कार्यक्रम बड़ा सफल रहा।

—प्रेम भाटिया, महामन्त्री

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना की ओर से 15-9-2002 को पारिवारिक सत्संग श्री रणधीर शर्मा प्रिं० शान्ति निकेतन विद्यालय 9-ई सराभा नगर लुधियाना में सायं 5 से 7 बजे तक होगा। श्री प्रो० वेदव्रत जी वेदालंकार का उपदेश होगा और 22-9-2002 को कैलाश चौक स्ट्रीट, कपूर टैण्ड हाऊस, जंजघर लुधियाना में सायं 5 से 7 बजे तक होगा जिसमें लुधियाना की सभी आर्य समाजों के सदस्य सम्मिलित होंगे। इस अवसर पर केवल भक्ति संगीत ही होगा। —नरेन्द्र भल्ला

भठिण्डा में पारिवारिक यज्ञ एवम् सत्संग

दिनांक 30 अगस्त 2002 को प्रातः 8 बजे आर्य समाज भठिण्डा के वयोवृद्ध नेता लाला वजीर चन्द जी मंगला के गृह निवास पर पारिवारिक यज्ञ एवम् सत्संग का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मचारी सूर्यदेव "वैदिक मिशनरी" जी के ब्रह्मत्व एवम् आचार्य ध्रुव कुमार शास्त्री के सान्निध्य में हुआ। पूज्य ब्रह्मचारी जी ने वेदमन्त्रों की व्याख्या कर उनका महत्व उपस्थितजनों को बतलाया और आचार्य ध्रुव कुमार जी ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला और समस्तजनों ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का आनन्द उठाया। इस अवसर पर लाला वजीर चन्द जी मंगला के सुपुत्र श्री प्रोफेसर ओ पी मंगला (प्रधान आर्य समाज भठिण्डा) सपत्नीक एवम् परिवार के अन्य सभी सदस्यों के अतिरिक्त आमन्त्रित अतिथिगण एवम् अन्य इष्टमित्र सम्मलित हुए। अन्त में श्री पी डी. गोयल एडवोकेट प्रधान जिला आर्य सभा भठिण्डा ने सभी परिवार के सदस्यों को बधाई दी और सभी उपस्थित जनों नै पुष्प वर्षा के द्वारा यज्ञमान कुमारी मोनिका मंगला को उनके लैक्चरार बनने पर आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर परिवार की ओर से सभी को प्रसाद एवम् जलपान दिया गया। शान्तिपाठ के साथ सारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—ओ.पी. मंगला, प्रधान

फिरोजपुर में कृष्णजन्माष्टमी पर्व

31.8.2002 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व धूमधाम से आर्य समाज गवाल मण्डी फिरोजपुर छावनी में मनाया गया। वहां श्री पं० मनोहर कुमार जी व श्री मनमोहन शास्त्री जी ने श्री कृष्ण जी के जीवन से शिक्षा लेकर अपने चरित्र को ऊंचा करने को कहा, डॉ० रूपेश जी ने महाभारत में श्री कृष्ण जी के महत्व को सामने रखा। प्रधान श्री प्यारे लाल जी ने अन्त में सभी का धन्यवाद किया।

आर्य समाज नया नंगल में कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

30 अगस्त 2002 (शुक्रवार) को आर्य समाज नया नंगल में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव (श्री कृष्ण जी का जन्म दिवस) बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर आमन्त्रित विद्वानों में मुख्य प्रवक्ता आचार्य भद्रसेन दर्शनाचार्य होशियारपुर (पंजाब) से पधारे हुए थे। इस कार्यक्रम में प्रातः 8.00 से 9.00 बजे तक हवन यज्ञ और पूर्णाहुति तथा 9.00 से 10.30 बजे तक भजनों और विद्वानों के व्याख्यान का कार्यक्रम था।

हवन यज्ञ पुरोहित प सुशील कुमार आर्य जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। उसके पश्चात् भजनों का कार्यक्रम बहनों की ओर से और दयानन्द पब्लिक सी.सै. स्कूल के बच्चों की ओर से बहुत सराहनीय रहा।

प्रवचन श्री आसकरन दास सरदाना जी और आचार्य भद्रसेन दर्शनाचार्य जी ने श्री कृष्ण जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में बहुत प्रभावशाली और ज्ञान वर्धक प्रस्तुत किए।

—गुमानचन्द तालूजा, मन्त्री

भठिण्डा में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज भठिण्डा की ओर से श्री आर.के. बांसल व श्रीमती निधि बांसल के विवाह की 25वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 2-9-2002 को उनके निवास स्थान माडल टाऊन भठिण्डा में यज्ञ हवन व सत्संग किया गया। यज्ञ पं. ध्रुव कुमार शास्त्री ने करवाया तथा उनका उपदेश हुआ। श्रीमती निधि महात्मा प्रेम प्रकाश धूरी की भतीजी है जो आर्य समाज में रुचि रखती हैं। श्री वजीर चन्द जी, श्री प्रेम भाटिया जी, श्रीमती इन्दिरा छाबड़ा, श्रीमती वीर प्रभा मोंगा, श्रीमती स्वच्छ सचदेवा तथा अन्य बहुत से स्त्री-पुरुषों ने इस सत्संग में भाग लिया और दम्पत्ति को आशीर्वाद दिया।

—प्रेम भाटिया, महामन्त्री

मनुष्येण रूपेण मृगाश्चरन्ति

इसी उक्ति को स्पष्ट करते हुए आर्य समाज सिरकी बाजार भठिण्डा के सुयोग्य पुरोहित पं० राजेन्द्र कुमार आर्य जी ने एक भजन के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया कि हे इन्सान तू क्यों व्यर्थ में अपने स्वासों को गंवाए जा रहा है। वास्तव में अगर हम यह विचार करें तो हम प्रतिदिन 24 हजार स्वासों को व्यर्थ में ही नष्ट किए जा रहे हैं। जिनका हमने कभी हिसाब ही नहीं लगाया। उन्होंने कहा कि इन्सान से वह पशु अच्छे हैं जो प्रकृति के नियमानुसार अपने-अपने कर्त्तव्यों में व्यस्त हैं। क्योंकि वह निर्बुद्धि जीव होते हुए भी कभी अपने पथ से विचलित नहीं होते लेकिन आज का इन्सान [illegible] मरने के बाद भी काम आते हैं। इसलिए [illegible] को बार-बार कहा जाता है। सम्भल जा, कुछ सोच के, कुछ विचार कर अपने आप को पहचान ले। किसी कवि ने भी क्या खूब कहा है।

अब न सम्भला तो रोना पडेगा,
नरक में गरक होना पड़ेगा, तेरा ऐसा बुरा होगा,
जो बताने के काबिल नहीं है।
तेरा यह स्वास अनमोल हीरा,
यू गवाने के काबिल नहीं है।

इसी बात की पुष्टि करते हुए श्री कृष्ण लाल जटाना जी (जिला प्रचार मन्त्री) कोषाध्यक्ष आर्य समाज सिरकी बाजार भठिण्डा ने पण्डित जी के भजनो की सराहना की तथा कहा कि वास्तव में आज इन्सान पशु का अचरज धारण किए जा रहा हैं जोकि एक बुद्धि जीवी जीव के लिए अशोभनीय है। इति शम्॥

—प्रधान

लुधियाना में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज (दयानन्द बाजार) दाल बाजार लुधियाना में 31-8-2002 को दोपहर बाद 3 बजे कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया। प्रोग्राम के प्रारम्भ में जनकरानी आर्य ने सबको जन्माष्टमी की बधाई दी और यज्ञ प्रारम्भ किया। यजमान सपत्नीक चारों ओर विराजमान थे। आर्य समाज के महामन्त्री देवपाल तथा स्वर्ण साथी दूसरी ओर अशोक कुमार तथा इन्दु जी गोगिया, श्री वेदपाल जी भंडारी तथा श्री सुनील कुमार तथा रजनी गम्भीर थीं। यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से आहुतियां प्रदान कीं, पं धर्मदेव जी आर्य ने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् श्रीमती कान्ता जी सूरी प्रिं आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल पुराना बाजार की अध्यक्षता में कार्यक्रम आरम्भ हुआ। इसी स्कूल की 10वीं क्लास की छात्राओं पूजा एण्ड पार्टी ने श्री कृष्ण-सुदामा के जीवन पर सुन्दर भजन सुनाया। एक छोटी बच्ची ने श्री कृष्ण जी पर सुन्दर प्रवचन दिया। जिसका भाव था आज कृष्ण आकर भारत की सुध ले। जालन्धर से पधारी श्रीमति रश्मि वई ने प्रभु भक्ति का भजन सुनाया। श्री कृष्ण जी के जीवन पर भजन सुनाया और सबको बधाई दी । ओं रस बरसा कर सब को मंत्र मुग्ध कर दिया। उन्हें परमात्मा ने बहुत सुंदर सुमधुर स्वर दिया है। जिला प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी ने बहुत सुन्दर शिक्षाप्रद श्री कृष्ण जी का भजन सुनाया। कार्यालयाध्यक्ष पं० धर्मदेव शास्त्री जी ने अपने सारगर्भित प्रवचन में कहा कि श्री कृष्ण का जीवन आध्यात्मिक और कर्मयोग से सुशोभित है यूं ही लोगों ने भ्रांतियां फैला कर उन्हें बदनाम किया है। वह सुलझे हुए राजनीतिज्ञ थे, गरीबों के मसीहा थे, गौ पालते थे। आज भारत में गऊ वध हो रहा है। बहुत सुन्दर प्रवचन दिया।

श्रद्धेय सुमनावति जी ने अपना आशीर्वाद दिया सब ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। जनक रानी ने मान्या अध्यक्षा जी का परिचय देते हुए बताया कि शिक्षा के क्षेत्र में इनका बहुत योगदान है। यह बहुत दक्ष हैं, बहुत उल्ट स्थिति में भी इन्होंने डट कर कार्य किया। हमें भी उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा श्री कृष्ण जी का गीता ज्ञान बहुत ही अनुकरणीय है सारे विश्व के लिए, हमें केवल बातें नहीं करनी कार्य करना है।

श्रीमती राजेश शर्मा सभा मंत्री जिन्होंने बड़ी मुसीबतों में भी हंसना सीखा। केवल प्रभु के विश्वास पर अटल रही आज भी दिन रात आर्य समाज की सेवा में रत् रहती हैं। कई समाजें चालू करवा दी, तन, मन, धन लगा दिया। बच्चों को भी साथ रखती हैं। उन्हें माननीय प्रधाना इन्द्रा जी शर्मा, नीलम जी थापर, शांति जी ने सम्मान प्रतीक गायत्री मंत्र तथा उपहार दिया। श्रीमती रश्मि जी को भी गायत्री मंत्र उपहार इन्होंने भेंट किए। पं० धर्मदेव जी शास्त्री को भी तथा माननीय अध्यक्षा जी को भी सम्मान प्रतीक दिया। जनकरानी ने सबका धन्यवाद किया अपने भाईयों का भी सहयोग के लिए धन्यवाद किया आदरणीय इन्द्रा जी शर्मा ने सब आए हुए अतिथियों का बहनों-भाईयों का हार्दिक धन्यवाद किया।

—जनकरानी आर्य, महामन्त्री

जवाहर नगर लुधियाना में श्री कृष्ण जन्म दिवस

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में 31-8-2002 को प्रातः 7 से 9.30 बजे तक योगीराज श्री कृष्ण का जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री पं० बाल कृष्ण जी शास्त्री व श्री पं धर्मदेव जी आर्य सम्पादक "आर्य मर्यादा" साप्ताहिक का भी प्रवचन हुआ। योगीराज श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला गया। आर्य समाज के सभा सदस्यों ने इस अवसर पर पहुंच कर कार्यक्रम को सफल बनाया। अन्त में खीर तथा फलों का प्रसाद बांटा गया।

—विजय सरीन, मन्त्री

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ । दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

दूरभाष ☎ 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

न्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 22 सृष्टि संवत 1960853103, 22 सितम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

परमात्मा की महानता

❑ ले. स्व. आचार्य राम प्रसाद जी वेदालंकार

किं मे हव्यमहृणानो जुषेत॥
ऋ०–7–86–2॥

अर्थ:–(किं मे हव्यम् अहृणन: जुषेत) क्या मेरे हव्य को वह वरुण बिना क्रोध किए–बिना खीजे हुए–बिना झुञ्जलाए हुए स्वीकार करेगा?

साधक एक ओर वरुण को देखता है–उस प्यारे प्रभु को देखता है जो कि सब प्रकार से शुद्ध–पवित्र है, पाप–तापों से वह सर्वथा सर्वदा सर्वत्र परे रहता है। स्वार्थ उसे छू तक नहीं सकता। उदार वह इतना है कि उससे बढ़कर तो क्या उसके समान भी कोई नहीं हो सकता। दिल का वह दरिया है। प्यासे को प्यास लगती है और वह दिल से पानी पीना चाहता है तो फिर वह उसके सम्मुख गिलास, जग, सुराई, घड़ा, मटका, ताल–तलैय्या या कूप–तड़ाग ही नहीं रख देता, वरन् उसके सामने वह बड़ी–बड़ी नदियां और नद बहा देता है, गंगा–यमुना, रावी और चिन्नाव तक बहा देता है, और कहता है–"ले तू इसे पी भी, इससे नहा भी, इससे कपड़े–लत्ते–पात्र आदि धो भी, और अपने खेत तथा बाग–बगीचों को सींच कर हरा–भरा बना भी।' विचारा चातक तीन–चार बून्द जल मांग कर अपनी प्यास बुझाना चाहता है और उसके लिए वह हृदय से आनन्दघन प्रभु से प्रार्थना करता है, वह प्रभु इतना उदार है कि दिल खोल कर बरसता है और चातक के साथ–साथ सारी धरती और धरती पर निवास करने वाले सारे प्राणियों को भी वह तृप्त कर देता है। मनुष्य को जब भूख लगती है और वह उसके लिए पुरुषार्थ भी करता है और प्रार्थना भी, तो फिर वह प्रभु उसकी मुट्ठी, झोली, कनस्तर कुठले आदि ही नहीं वरन् उसके घर–खेत–खलियान तक भी अन्न आदि खाद्य पदार्थों से भर देता है। मनुष्य प्रकाश की आवश्यकता अनुभव करता है, तो फिर वह इस धरती से 13 लाख गुणा बड़े इस सूर्य के द्वारा इस सम्पूर्ण सौर भूमण्डल को ही अपनी दीप्ति से देदीप्यमान कर देता है। अपने प्रकाश से प्रकाशमान कर देता है। वह जब इस प्राणधारी जीव के उत्तम गुण, कर्म स्वभावों को देखता है तो वह उसको शाबाश देता हुआ आनन्द, उत्साह और निर्भयता देता है। इतना ही नहीं, वह उसको सर्वत्र लाड–प्यार, स्नेह–सम्मान, फूल–फूलों, दस्तों–गुलदस्तों, स्वागत–सत्कारों और खुशियों से विभोर कर देता है, धन–वैभवों से माला–माल कर देता है। फिर भी यदि वह उस मनुष्य को इस सब में डूबा हुआ नहीं देखता, वरन् इन सब स्नेह–सम्मानों से, धन–धान्यों से, जमीन–जायदादों से, कपड़े–लत्तों से, शाल–दुशालों से, रुपये–पैसों से, चान्दी–सोने से, नानाविध खाद्य–पेयों से, स्त्री–पुत्रों से, पुत्र–पौत्रों से, दुहितृ–दौहित्रों से, बन्धु–बांधवों आदि–आदि से ऊबा हुआ देखता है, इन सबसे ऊपर उठा हुआ–विरक्त हुआ–हुआ देखता है, तथा एक अद्वितीय दिव्य देव के लिए उसे तरसता हुआ देखता है, उसकी मधुर स्मृति में उसको तड़पता हुआ देखता है, उसकी खोज में उसे मारा–मारा फिरता हुआ देखता है, तो फिर वह उस साधक का वरण कर लेता है, फिर वह उसको अपने अद्वितीय स्नेह से–अनुपम लाड–प्यार से, दिव्य आनन्द से, अपने प्रिय दर्शन से, अपने पावन प्रकाश से कृतार्थ कर देता है।

पर वहां साधक को जब अपना हव्य नजर आता है, जब अपनी भेंट दिखाई देती है। यद्वा जब वह इधर अपने हव्य–द्रव्य को देखता है, अपनी आहुति को देखता है, अपनी पुकार को देखता है, अपनी स्तुति–प्रार्थना और उपासना को देखता है और उधर वह उस महान् अद्वितीय दिव्य देव वरुण को देखता है, तो तब उसे शक होने लगता है, उसे सन्देह होने लगता है, उसे भय होने लगता है, कि–इतना बड़ा व्यक्तित्व क्या मेरे इस तुच्छ हव्य को–मेरी इस तुच्छ भेंट को–मेरी इस सामान्य सी पुकार को व इस मुझ नादान की इस सामान्य सी स्तुति–प्रार्थना और उपासना को बिना खीजे हुए–बिना क्रोध में आए हुए क्या स्वीकार कर लेगा ?"

क्योंकि साधक सोचता है और देखता है कि एक ओर तो इतना बड़ा ब्रह्माण्ड है दूसरी ओर यह मेरी हव्य आहुति–मेरी सामग्री 6 माशे–12 माशे वा छटांक दो छटांक की है। फिर वह इतनी शुद्ध–पवित्र, इतनी साफ–सुथरी भी नहीं है, घी है–घी की आहुति है, तो उसमें केसर–कस्तूरी आदि भी नहीं है। फिर उस हव्य–द्रव्य में मूल्यवान् मिष्ट–पुष्ट–सुगंधित और रोगविनाशक पदार्थ भी कुछ विशेष नहीं है। फिर पता नहीं मेरा घृत भी उतना शुद्ध–पवित्र या गौ का है या नहीं है। क्योंकि वह बाजार का है, घर में स्वयं बनाया हुआ तो है नहीं। फिर यह मेरी सामग्री भी घर की तो है नहीं, बाजार की ही है, वह भी न जाने कैसी है? भेंट में लाए हुए ये वस्त्र या प्रभु के नाम पर प्रदान किए हुए ये कपड़े भी नए नहीं वरन् पुराने हैं। वे भी घिसे–पिटे हैं। पता नहीं वे दूसरे के तन–बदन को भली–भांति ढांप भी सकेंगे या नहीं, दूसरों की सर्दी–गर्मी को दूर भी कर सकेंगे या नहीं। कम्बल भी मेरे नाम के ही कम्बल हैं, क्योंकि जितने भी घटिया से घटिया मिल सकते थे, वे ही मैंने लेकर दिये हैं, प्रभु के नाम पर दिया हुआ यह मेरा भोजन भी घटिया से घटिया है, वह भी रहा–सहा ही है, वह भी बासी–बूसी, गला–सड़ा एवं बदबू मारने वाला ही है। अब जो भोजन मुझे ही नहीं भाता, मुझे ही प्रिय नहीं लगता, मुझे ही रुचिकर एवं स्वास्थ्यप्रद नहीं प्रतीत होता, तो वह मेरे उस प्राणप्रिय प्रभु को कैसे भायेगा किं जिसके नाम पर मैंने वह दिया है.....।

साधक–भक्त–उपासक यह सोचता है कि–"मैं वरुण का दर्शन करना चाहता हूं–उसको जानना चाहता हूं–उसको अपने हव्य द्रव्यों की भेंट चढ़ाना चाहता हूं, उसके लिए अपनी आहुति देना चाहता हूं या अपने आपको हव्य बनाकर उसके चरणों में भेंट स्वरूप चढ़ाना चाहता हूं, अपने आपको उस पावन प्रभु के प्रति समर्पित करना चाहता हूं....। पर फिर वह सोचता है कि 'मेरा जीवन वास्तव में हव्यं–होतुं योग्यं हव्यं। हव्य–प्यारे प्रभु में होमने योग्य है भी कि नहीं ? क्योंकि हव्य द्रव्य में तो मिष्ट, पुष्ट, सुगन्धित और रोग विनाशक पदार्थ होते हैं फिर वह हव्य द्रव्य घृत से संसिक्त होता है। तभी ही वह हव्य द्रव्य इस अग्नि में होमा जाता है। इसलिए यदि सचमुच मैं अपने आपको हव्य बना लूंगा, अपने जीवन को मिष्ट–पुष्ट, सुरभित–यशोमय तथा रोग विनाशक बना लूंगा और फिर उसको श्रद्धा रूपी घृत से स्निग्ध कर लूंगा, तो फिर वह वरणीय वरुणदेव–वह पावन प्रभुदेव मेरे इस हव्य को–मेरी इस भेंट को सहज ही स्वीकार कर लेगा, और मुझे सब प्रकार से निहाल कर देगा, मुझे सब तरह से कृतार्थ कर देगा।'

हिन्दी भाषा व साहित्य को आर्य समाज की देन

□ ले० डॉ० अशोक आर्य, मण्डी डबवाली (हरियाणा)

(गतांक से आगे)

स्वामी जी तथा आर्य समाज की जिस शैली को उस काल के तथा अनुगामी युगीन साहित्यकारों ने बड़े जोश के साथ अपनाया, वह है उनकी व्यंग्यात्मक शैली, यथा जन्म पत्र के लिए शोक-पत्र, मन्त्र शक्ति पर कहना "अगर तुम्हारे मन्त्र में शक्ति है तो कुबेर क्यों नहीं बन जाते?" तपोवन को भिक्षुक-वन पोपलीला के कपोड़े आदि का प्रयोग करते हुए अपनी विनोद-वृत्ति का अच्छा प्रदर्शन किया है। हर व्यंग्य में 'हर की पोडी को' 'हाड़ की पौड़ी' कहते थे।

स्वामी जी ने अपने गूढ़ विषयों को पाठको के लिए बड़े सरल ढंग से रखने के लिए दृष्टांत शैली का अवलम्बन किया। एतदर्श शेखचिल्ली कथा, लाल बुझक्कड़ कथा आदि अनेक कहानियों का भी उन्होंने प्रयोग किया है।

स्वामी जी ने एक नवीन साहित्यिक शैली आरम्भ की, जिसे अनुगामी साहित्यकारों ने भी अपनाया, वह शैली है "प्रश्न शैली" इस में स्वयं एक प्रश्न रखकर फिर उसका उत्तर विस्तार से समझाया जाता है। आप शास्त्रार्थों व व्याख्यानों मे भी इसका प्रयोग करते थे।

स्वामी जी के प्रभाव से हिन्दी गद्य को नई दिशा मिली तथा अब तक अछूते रहे विषयों पर भी साहित्यिक कलमें उठने लगीं। कथा-कहानियों में दार्शनिकता भी पेदा हुई। समाज सुधार, शास्त्रीय व वैज्ञानिक विषयों की विवेचना के साथ ही साथ राजनैतिक प्रश्नों को भी हिन्दी साहित्य ने अपनाना आरम्भ कर दिया। सत्यार्थ प्रकाश मे जो दार्शनिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक व राजनैतिक प्रश्नों की विवेचना की गई है, उनके बारे में आचार्य चतुर सैन जी कहते ह-"तुलसी कृत रामायण के बाद सत्यार्थ-प्रकाश ही इस युग का इतना लोकप्रिय ग्रन्थ हुआ है।" हजारों व्यक्तियों ने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से हिन्दी सीखी। बाबू श्यामसुन्दर दास के अनुसार "सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज के प्रभाव से पंजाब में हिन्दी का वह असर हुआ, जिसकी कदापि आशा नहीं थी।" इससे हिन्दी में गम्भीर विवेचना की पद्धति आई तथा रोचक एवं विनोदात्मक शैलियों का विकास हुआ।

रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार "स्वामी जी का ब्रह्मचर्य, नैतिक शुद्धता और पवित्रता पर बल देना हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक महान् उल्लेखनीय तथ्य है। रीतिकाल के ठीक बाद वाले काल में हिन्दी भाषी क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय घटना घटी, वह स्वामी दयानन्द का पवित्रतावादी प्रचार था।"

द्विवेदी युग पर स्वामी जी की विचारधारा का प्रभाव भारतेन्दु युग से भी अधिक पड़ा। परिणाम स्वरूप नायिका भेद सम्बन्धी साहित्य को हेय समझा जाने लगा। यही कारण है कि कवि नाथूराम शंकर ने अपना शृंगारिक काव्य ग्रन्थ 'कलित कलेवर' स्वयं ही नष्ट कर दिया। सुदर्शन को भी अपनी कहानियों का प्रवाह बदलना पड़ा। इस युग के कवि शृंगार रस की कविता लिखने से डरने लगे थे। यही कारण है कि मैथिलीशरण गुप्त, नाथूराम शंकर तथा इस युग के अन्य कवियों के काव्यों में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रोद्धार, समाज सुधार आदि की भावनाएं विपुलता से पाई जाती हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्य समाज ने सुधारवादी मार्ग अपनाते हुए बाल विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, छूआछूत आदि अनेक कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज़ उठाई। इन्हें अनुगामी साहित्यकारों ने भी अपनाया। मिश्र बन्धुओं ने लिखा है कि "अनेक भूलों और पाखण्डों में फंसे हुए लोगों को सीधा राह दिखाकर जो अपने समय में महात्मा बुद्ध, स्वामी शंकराचार्य, रामानन्द कबीर दास, बाबा नानक, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु और राममोहन राय ठौर-ठौर कर गए, हम आर्य समाजी नहीं हैं तो भी हमारी समझ में ऐसा आता है कि हम लोगों को जो वास्तविक हित इस दृष्टि के प्रयत्नों द्वारा हुआ और होना सम्भव है, उतना उपर्युक्त महात्माओं में से बहुतों ने नहीं कर पाया।" वैष्णव व रामभक्त मैथिलीशरण गुप्त की भारतभारती में स्वामी जी के प्राय: सभी सुधारों का वर्णन है तभी तो दिनकर ने कहा कि "साकेत के राम तो स्वामी दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा लगाते हैं।"

हिन्दी को आरम्भ से ही राष्ट्रभाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास उन्होंने किया। आप विदेशियों को भी हिन्दी में पत्र लिखने का अनुरोध करते थे। मदान ब्लैवेटस्की को लिखा था कि जिस पत्र का हमसे उत्तर चाहते हो वह हिन्दी में लिखा करें। कर्नल अल्काट को हिन्दी सीखने को प्रेरित किया था। श्याम जी कृष्ण वर्मा को भी लिखा था कि "अब भी वेदपाठी के लिफाफे के ऊपर देवनागरी में नहीं लिखा गया।"

आपने हिन्दी शैली का परिष्कार भी किया। पूर्व में दो शैलियां प्रचलित थीं। (1) राजा लक्ष्मण सिंह की शैली, जिसमें तत्सम् शब्दों पर बल था। (2) राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द की शैली, जिसमें उर्दू शब्दों पर बल था। स्वामी जी ने जनता तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए अपनी भाषा में स्पष्टता, ओज, विशदता तथा पाठकों को प्रभावित करने के गुणों का खूब प्रदर्शन किया। कुछ लोग कहते हैं कि विरोधियों को चुप कराने हेतु आप ने लकड़ तोड़ भाषा करने के साथ ही साथ साधारण क्षणों में सरल, सुबोध व प्रांजल भाषा का प्रयोग किया। तत्सम् और तद्भव दोनों प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया। तत्सम और तद्भव दोनों प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते हुए अनेक प्राचीन शब्दों को पुन: हिन्दी को लौटाया। उन्होंने हिन्दी को केवल बोझिल व विद्वत्गण की भाषा नहीं बनने दिया। उनकी भाषा में न तो 'गवाह' निर्वासित हुआ और न ही 'कलक्टर' शब्द को धक्का लगा।

डा. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के अनुसार "आर्य समाजी की भाषा से ही हिन्दी भाषा में एक नई शैली का प्रतिपादन हुआ......इससे भाषा में गहन से गहन विषयों पर भी वाद-विवाद करने की शक्ति आ गई। आर्य समाज के कारण व्याख्यानों की धूम मची, इससे हिन्दी भाषा का समस्त उत्तर भारत में प्रचार हुआ। इस प्रकार.....हिन्दी गद्य शैली का विकास हुआ, यह निर्विवाद है।"

संस्कृति के वैदिक तथा शास्त्रीय साहित्य को भी अनुवाद द्वारा हिन्दी में सुलभ किया गया।

आर्य समाज से सम्बन्धित साहित्यकारों का विवरण इस प्रकार है-

आर्य उपन्यासकार:-पण्डित गौरी दत्त, मुन्शी प्रेमचन्द, डॉ० अशोक आर्य, सुदर्शन, धनीराम, द्विजेन्द्रनाथ मिश्र, निर्गुण, सत्यदेव परिव्राजक, बलराज साहनी, भीष्म साहनी, यशपाल, श्रीमती सत्यवती मल्लिक, श्रीमती चन्द्रकिरण सोनरिक्सा।

आर्य समाज के निबन्ध लेखक : कालीचरण, पण्डित मोहन लाल विष्णु लाल पण्ड्या, पं० रूद्रदत्त शर्मा, पं० पद्मसिंह शर्मा, डॉ० हरिशंकर शर्मा, वेदक कृष्ण प्रसाद गौड बेढब, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० सत्येंद्र, डॉ० विजयेन्द्र स्नातक, डॉ० मुन्शीराम शर्मा सोम, डॉ० धर्मवीर भारती, श्री क्षेम चन्द्र सुमन।

आर्य समाज के नाटककार :-पं० रूद्रदत्त शर्मा, नारायण प्रसाद, बेताब, तुलसीदास शैदां, मुन्शी प्रेम चन्द, श्री सुदर्शन, हरिशंकर शर्मा, आ. चतुरसेन शास्त्री, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, इन पंक्तियों के लेखक डा० अशोक आर्य ने भी कुछ एकांकी लिखे।

आर्य गद्यकार :-आचार्य चतुरसेन, आचार्य अभयदेव विद्यालंकार, देवदूत विद्यार्थी।

आर्य समाज के समीक्षक : (सैद्धान्तिक)-पं० शालीग्राम शास्त्री, पं० उदयवीर शास्त्री, डॉ० हरिदत्त शास्त्री आ. विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री, पं० क्षेमचन्द्र सुमन, डॉ० नगेन्द्र, (व्यवहारिक समीक्षा) 'तुलनात्मक समीक्षा पद्धति के जन्मदाता पद्म सिंह शर्मा, डॉ० मुन्शीराम शर्मा, डॉ० विजयेन्द्र स्नातक, डॉ० सरयुप्रसाद अग्रवाल, डॉ० सुरेश कुमार विद्यालंकार, डॉ० हरदेव बाहरी।

आर्य समाजी टीकाकार : पं० पद्म सिंह शर्मा, डॉ० बाबू लाल सक्सेना, डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल।

इतिहासकार आर्य समाजी-डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री, आ. चतुरसेन शास्त्री, डॉ० विजयेन्द्र स्नातक, आ. क्षेमचन्द्र सुमन, डॉ० हरिवंश कोछड़, डॉ० धर्मवीर भारती, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० नागेन्द्र।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

बटाला में कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी का स्वागत

सम्मान समारोहः—8 सितम्बर 2002 को आर्य समाज ओहरी चौक बटाला का प्रांगण उस समय महक उठा जब गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय श्री स्वतन्त्र कुमार जी के सम्मान समारोह में आर्य विद्या परिषद के रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र शर्मा जी के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न और श्रीमति सन्तोष अम्बा जी भी उपस्थित हुए। इसके अतिरिक्त जिला की समस्त आर्य समाजों से जिनमें आर्य समाज माडल टाऊन पठानकोट से श्री सुभाष मित्तल, सुजानपुर से श्री वेद प्रकाश उप्पल, गुरदापुर से श्री त्रेहन कादियां से श्री रोशन लाल, डेरा बाबा नानक से श्री गुरनाम दास के इलावा बटाला नगर के कई प्रतिष्ठित महानुभाव जिनमें पंजाब के सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री महाशय गोकुल चन्द्र जी, नगर सुधार ट्रस्ट के पूर्व चेयरमैन व बुजुर्ग आर्य नेता पं. उमा शंकर जी, बटाला के प्रथम नागरिक श्री ज्ञानचन्द्र, नगर परिषद के पूर्व प्रधान सुभाष सेखड़ी, पार्षद हरजीत सिंह भल्ला, जुगल किशोर पुरी, हरबंस लाल महाजन, कुन्दन लाल कांसरा, जिला भाजपा के पूर्व प्रधान देवराज चाचोवालिया, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता नवल मल्होत्रा, इन्द्रमोहन सानन, अमृतलाल सानन और कई महानुभाव उपस्थित हुए, श्री स्वतन्त्र जी के बटाला पहुंचने पर सैंकड़ों संख्या में स्कूटर सवार एक काफिले के रूप में उन्हें आर्य समाज में लाए जहां आर्य गर्ल्ज़ हाई स्कूल के बैंड ने उनका भव्य स्वागत किया। तदुपरान्त स्कूल की छात्रा जो हाथों में ओ३म् ध्वज लेकर रास्ते में खड़ी थी अधिकारियों पर उन्होंने पुष्प वर्षा की और आर्य समाज में पहुंचने पर माननीय कुलपति जी को सैंकड़ों लोगों ने फूलों के हार से सुशोभित किया उसके बाद स्कूल की छात्राओं ने पूर्ण वैदिक परम्पराओं के अनुसार एक सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें पूर्णतया आर्य समाज की छवि झलकती थी, माननीय श्री देवेन्द्र शर्मा जी ने 500/- रुपए छात्राओं को पुरस्कार के रूप में प्रदान किए। इस अवसर पर उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए माननीय श्री देवेन्द्र शर्मा जी ने कहा आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द द्वारा आदर्श समाज निर्माण व शोषित वर्ग के उत्थान के लिए किए गए अद्वितीय कार्यों के प्रति सारी मानवता स्वामी जी की कृतज्ञ है और आर्य समाज स्वामी दयानन्द के विचारों व दर्शन को जन साधारण तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है। श्री शर्मा जी ने आगे कहा कि वर्तमान समय में स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं की अति आवश्यकता है। इसलिए आर्यजनों को उनका संदेश घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए। आर्य समाज ओहरी चौक बटाला द्वारा आयोजित किए गए समारोह में उपस्थिति को संबोधित करते हुए कहा स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आदर्शों व विचारों को जिस प्रकार सारे समाज में पहुंचाया जाना चाहिए था उसके उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज पूरी तरह से सफल नहीं हो पाया है। इसलिए सबको मिलकर प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को और प्रभावी व कारगर बनाने के लिए सभा में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए जा रहे हैं। सभा पर अधिकार जमाए बैठे कुछ भ्रष्टाचारी पदाधिकारियों जिनके कारनामों से सभा निर्जीव हो चली थी उन्हें सभा से किनारे पर कर दिया है। इससे पूर्व आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं में भ्रष्टाचार का बोलबाला था और अध्यापक भी रिश्वतें खाकर भर्ती किए जाते थे परन्तु अब वर्तमान नेतृत्व ने अध्यापकों की भर्ती पूर्ण मैरिट व पार दर्शिता से करने का अहम फैसला किया है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने स्थानीय आर्य गर्ल्ज़ हाई स्कूल की नवनिर्मित कम्प्यूटर लैब के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आज के आधुनिक युग में सारा देश पश्चिमी सभ्यता का गुलाम होता जा रहा है। ऐसे वातावरण में वैदिक संस्कृति को जीवित रखने के लिए आर्य समाज को विशेष भूमिका अदा करनी होगी और सक्रिय होकर स्वामी दयानन्द जी की शिक्षाओं और उनके आदर्शों का आम जनता में प्रचार प्रसार करना होगा। श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने कहा देश की गुलामी की जंजीरें काटने के लिए युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने देश की जनता में एक ऐसी विचारधारा पैदा की जिसने देश में लाला लाजपत राय स. भगत सिंह, राज गुरु, सुखदेव, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, महाशय खुशहाल चन्द आदि कई क्रान्तिकारी पैदा किए जिन्होंने उन गुलामी की जंजीरों को काट कर उखाड़ फैंका और आज देश को बचाने के लिए आर्य समाज को विशेष भूमिका अदा करनी होगी, उन्होंने कहा कि विश्व विद्यालय का कुलपति पद ग्रहण करने के बाद उन्होंने प्रण लिया है कि वह गुरुकुल कांगड़ी में फैले भ्रष्टाचार का पूरी तरह से नाश करके ही दम लेंगे। इसी प्रकार गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय को आधुनिक शिक्षा पद्धति सहित वैदिक शिक्षा से भी जोड़ कर रखा गया है। कई विदेशी यूनिवर्सिटियों ने गुरुकुल कांगड़ी में गहन रुचि प्रकट की है और आन लाइन शिक्षा के आदान-प्रदान के लिए अनुबंध किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं के अनुसार ढालने का हर सम्भव प्रयास करेंगे। जिसके लिए पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने इस विश्व विद्यालय की नींव रखी। इस अवसर पर आर्य समाज बटाला व उसकी सहयोगी शिक्षण संस्थायें आर्य गर्ल्ज़ हाई स्कूल, आर्य महिला क्राफ्ट स्कूल द्वारा श्री स्वतन्त्र कुमार जी, श्री देवेन्द्र शर्मा, श्री प्रेम भारद्वाज, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न को ओ३म् स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस सम्मान समारोह में स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमति सोनिया सच्चर ने स्कूल के विषय में प्रकाश डालते हुए कहा शिक्षा के क्षेत्र में इस स्कूल ने विशेष भूमिका अदा की है और बोर्ड की परीक्षा के परिणाम लगभग शत प्रतिशत आ रहे हैं। आज यहां कम्प्यूटर लैब बनने से यह स्कूल भी बटाला के आधुनिक स्कूलों की श्रेणी में आ गया है। उन्होंने आशा प्रकट की कि आर्य गर्ल्ज़ हाई स्कूल नगर का अग्रणीय स्कूल बन कर रहेगा। जिस व्रात का मिशन लेकर इस स्कूल के पूर्व प्रधान स्वर्गीय चौधरी नौनिधराय जी चले गए। स्कूल के प्रबन्धक श्री विजय कुमार अग्रवाल ने इस बात का विश्वास दिलाया कि स्कूल के शिक्षा स्तर को कभी भी गिरने नहीं दिया जाएगा और बच्चों को आर्य परम्परा के अनुसार अच्छी शिक्षा दी जाएगी इसके लिए धन की कमी को कभी भी रुकावट नहीं बनने दिया जाएगा।

—मन्त्री, आर्य समाज

आर्य समाज सिरकी बाजार, भठिण्डा की गतिविधियां

आर्य समाज सिरकी बाजार भठिण्डा में सभी पर्व बड़े समारोह से मनाए जाते हैं। गत दिनों राम नवमी, अब कृष्ण जन्माष्टमी, रक्षा-बन्धन तथा दूसरे सभी पर्व मनाए गए।

2. *पारिवारिक सत्संग शहर के प्रत्येक मोहल्ले में समय-समय पर किए जा रहे हैं। जहां सत्संग होता वहां गली को झण्डों से सजाया जाता है मुख्य सड़क तक ऐसा किया जाता है। घी, हवन सामग्री, यज्ञ का सारा सामान, दरियां, माईक आदि सब आर्य समाज से दिया जाता है जिसका कोई शुल्क नहीं लिया जाता। फूल तक फ्री दिए जाते हैं।*

3. *आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में अच्छी उपस्थिति होती है।*

4 *आर्य समाज में पुरोहित की व्यवस्था है सभी वैदिक संस्कारों को कराने के लिए वह हर समय उपलब्ध हैं। आर्य समाज के पास कोई किराए आदि की आमदनी नहीं है फिर भी सेवा का कार्य बढ़-चढ़ कर किया जाता है।*

—कृष्ण लाल जटाना

पठानकोट में वेद सप्ताह

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट में वेद प्रचार व गायत्री महायज्ञ 23 सितम्बर से 29 सितम्बर 2002 तक मनाया जा रहा है। जिसमें आचार्य भगवान देव चैतन्य के उपदेश व श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली के भजन होंगे।

—सत्यप्रकाश सिंह, महामन्त्री

14 सितम्बर को हर वर्ष हिन्दी दिवस मनाया जाता है इस वर्ष भी बड़ी धूमधाम से मनाया गया

14 सितम्बर 2002 शनिवार को सारे देश में हिन्दी दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। यह दिवस हर वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है। इस देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी 14 सितम्बर 1949 को बनाई गई थी जिसको 52 वर्ष हो चुके हैं। उस समय यह कहा गया था कि क्योंकि बहुत से प्रान्तों में हिन्दी लोग नहीं जानते इसलिए जिस प्रान्त में लोग हिन्दी नहीं जानते वह 15 वर्ष तक हिन्दी सीख लेंगे उसके पश्चात् फिर सारा कामकाज हिन्दी में किया जाएगा। परन्तु आज 15 वर्ष के स्थान पर 52 वर्ष हो गए हैं और आज तक देश में हिन्दी में कार्य आरम्भ नहीं किया गया। जो स्थान देश में हिन्दी को मिलना चाहिए था वह स्थान हिन्दी को आज तक नहीं प्राप्त हुआ। यह हिन्दी के साथ एक मजाक किया जा रहा है । अब प्रश्न यह है कि क्या हिन्दी को देश में उच्च स्थान प्राप्त होगा या फिर इसका अपमान ही होता रहेगा। यह एक गम्भीर प्रश्न है। जिस पर देश के कर्णधारों को गम्भीरता से गहन विचार करना चाहिए। सिर्फ वर्ष में एक बार 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मना लेने से हिन्दी को वह स्थान प्राप्त नहीं हो सकेगा। बड़े खेद से कहना पड़ रहा है कि देश में हिन्दी को उच्चस्थान देने के लिए आज एक भी गम्भीर प्रयास नहीं हो रहा है। अब भी सभी कार्य अंग्रेज़ी में ही किए जा रहे हैं।

आज से कुछ वर्ष पूर्व जालन्धर में साईं दास स्कूल में एक बहुत बड़ा सम्मेलन किया गया था जिसमें पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री स. बेअन्त सिंह पधारे थे। उस समय आर्य समाज के उच्चाधिकारियों का एक शिष्ट मंडल स. बेअन्त सिंह मुख्यमंत्री पंजाब से मिला था और उनसे मांग की थी कि पंजाब में पंजाबी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी के स्थान पर राज्य में हिन्दी को दूसरा स्थान दिया जाए। उसके पश्चात् स. बेअन्त सिंह की काफी समय बाद मृत्यु हो गई लेकिन उसके बाद किसी ने भी ऐसा कोई प्रयास नहीं किया जिससे राज्य में हिन्दी को दूसरा स्थान दिलाया जाए। उनकी मृत्यु के पश्चात् राज्य में कांग्रेस की सरकार बनी रही लेकिन उसने भी हिन्दी को उच्च स्थान दिलाने का कोई प्रयास नहीं किया। पंजाब में शुरू से ही अकाली हिन्दी के विरोधी रहे हैं इसलिए उसके पश्चात् पंजाब में अकाली भाजपा सरकार आई लेकिन सरकार में सहयोगी भाजपा ने भी हिन्दी के लिए कोई ऐसा प्रयास नहीं किया जिससे इसको राज्य की दूसरी भाषा का दर्जा प्राप्त हो। इसके पश्चात् अब फिर पंजाब में कांग्रेस की सरकार आई है इसलिए इस सरकार से प्रार्थना है कि वह अपने पूर्व नेता श्री बेअन्त सिंह की घोषणा का सम्मान करते हुए पंजाब में हिन्दी को राज्य की दूसरी भाषा का दर्जा दे।

उसके साथ ही इस समय भारत के प्रधानमंत्री पद पर श्री अटल बिहारी वाजपेयी विराजमान हैं जोकि एक हिन्दी के बहुत अच्छे कवि हैं। हमें उन पर पूरा विश्वास था कि एक हिन्दी प्रेमी हिन्दी को उच्च स्थान दिलाने में कामयाब होगा लेकिन बडे दुख से कहना पड़ रहा है कि उन्होंने भी इस ओर में कोई प्रयास नहीं किया। आज लोकसभा में भी अंग्रेजी को प्राथमिकता दी जा रही है। देश के नेता हिन्दी में बोलना अपना अपमान समझते हैं और अंग्रेजी में भाषण करते हैं। बड़े दुख से लिखना पड़ रहा है कि अंग्रेज तो इस देश से चले गए लेकिन अंग्रेजी के समर्थक अभी भी देश में विराजमान हैं। अंग्रेज़ी भाषा गुलामी का प्रतीक है इसलिए देश वासियों से प्रार्थना है कि वह इस गुलामी की प्रतीक अंग्रेजी भाषा को छोड़ कर हिन्दी को अपनाने का प्रयास करे और अपने स्वाभिमान को जिन्दा रखे।

आर्य समाज ने 1957 में हिन्दी को उच्च स्थान दिलाने के लिए एक आन्दोलन चलाया था। उस समय सारे देश में इस आन्दोलन से हलचल मच गई थी। पंजाब में उस समय कैरों की सरकार थी। उस समय पंजाब की जेलों में हिन्दी सत्याग्रहियों के लिए कोई स्थान खाली नहीं रहा था। पंजाब से बाहर की जेलों में उन सत्याग्रहियों को भेजा जाने लगा। उस समय मैं अम्बाला जेल में था। उस समय अम्बाला जेल में 1300 सत्याग्रही बंद थे। उस समय के भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू इस आन्दोलन से घबरा कर चण्डीगढ़ आए और उन्होंने 18 दिसम्बर 1957 को घोषणा की कि आर्य समाज की 90 प्रतिशत मांगों को मान लिया गया है शेष दस प्रतिशत मांगों को भी बातचीत द्वारा तय कर लिया जाएगा। अन्त में आर्य समाज की सारी शर्तें मान ली गईं और हिन्दी आन्दोलन को बंद कर दिया गया और सत्याग्रहियों को जेलों से रिहा कर दिया गया। हमारे आर्य समाज के नेता श्री घनश्याम सिंह गुप्त थे जोकि एक बहुत सज्जन और मिलनसार व्यक्ति थे। उन्होंने इस आन्दोलन को वापिस लेने की घोषणा कर दी। श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त आर्य समाज के एक बहुत बड़े नेता होने के साथ-साथ उस समय कांग्रेस के भी एक बहुत बड़े नेता थे। इसलिए उन्होंने प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरु की बात को मान कर आन्दोलन वापिस ले लिया। उस समय हमारे नेता से एक गलती हो गई कि उन्होंने प्रधानमंत्री से लिखित रूप में कुछ नहीं लिया सिर्फ मौखिक रूप से बात हुई। उस समय हमारे साथ विश्वासघात किया गया और लिखित रूप से हमें कुछ नहीं दिया गया इसलिए आर्य समाज उस समय जीती हुई बाजी को हार गया और आज तक हिन्दी को वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका जो होना चाहिए था। इस समय आर्य समाज अपनी चिर निद्रा में सोया पड़ा है। इसलिए मैं आर्य समाज के उच्चकोटि के नेता और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी आर्य, वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन और महामन्त्री श्री वेदव्रत जी शर्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह आर्य समाज की बागडोर सम्भाल कर हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए एक आन्दोलन चलायें। ताकि उनके नेतृत्व में आर्य समाज एक सत्याग्रह करे ताकि देश में हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाया जा सके। अब मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों से भी प्रार्थना करना चाहता हूं कि वह अपनी हिन्दी के प्रति चिर निन्द्रा को त्यागें, खासकर मैं श्री देवेन्द्र जी शर्मा से प्रार्थना करूंगा कि वह अब हिन्दी के लिए आवाज़ उठाएं और इस मामले को अपने हाथ में लें। पंजाब में इस समय कांग्रेस की सरकार है उनसे सीधी बातचीत करें। मैं आप के साथ हूं। क्योंकि पंजाब में हिन्दी के लिए उचित पग उठाना ही पड़ेगा ताकि पंजाब सरकार को आर्य समाज की शक्ति का अहसास हो सके।

—मुलखराज आर्य, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

मोगा में ध्यान योग शिविर

आर्य समाज मोगा व डी.एम. कालेज में ध्यान योग शिविर लगाया गया जिसमें श्री अरुण कुमार जी योगाचार्य ने विस्तार से योग सम्बन्धी विचार दिए और रोगों से मुक्ति के उपाय बताए। भारी संख्या में विद्यार्थियों व दूसरे लोगों ने इसमें भाग लिया। —प्रियतमदेव

लुधियाना आर्य समाज सिविल लाईन में समारोह

गत दिनों आर्य समाज सिविल लाईन लुधियाना की ओर से अत्यन्त श्रद्धा और उत्साह पूर्वक कृष्ण जन्मअष्टमी का पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम बहनों की मधुर भक्ति संगीत की स्वर लहरियों से वातावरण गुंजायमान हुआ। उसके बाद पवित्र वेद मंत्रों से हवन यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसके फलस्वरुप सामग्री की मधुर सुगन्ध चहुं दिशाओं को सुगन्धित और पवित्र करती हुई हर ओर फैली। हरे भरे लता वृक्ष और वनस्पतियों से भरा 41A धनवन्तरि गारडेन किसी ऋषि का आश्रम प्रतीत हो रहा था।

अन्त में प्रो. वेद व्रत जी का प्रवचन हुआ उन्होंने योगीराज कृष्ण चन्द्र जी के जीवन पर प्रकाश डाला और उनके जीवन को अपने जीवन पर प्रकाश डाला और प्रभु के जीवन को अपने जीवन के साथ ढालने के सरल उपाय बताए। भाषण अत्यन्त प्रभावी और सामयिक रहा। अन्यान्य श्रोताओं के साथ जिला आर्य सभा की प्रधान राजेश शर्मा, विमला भनोट, नीना बेरी, सुनीता शर्मा, अरुणा औपलिश, निर्मला बत्रा, सत्यावती कमल शाद, दयानन्द पब्लिक स्कूल की अध्यापिकाएं तथा प्राचार्या श्रीमती मलिक, श्रीमती विनोद गांधी, शुभा भण्डारी, शारदा शर्मा, श्री आशानन्द जी आर्य, श्री श्रवण कुमार जी बत्रा, पूर्णिमा बत्रा, निर्मला बजाज, प्रभा सूद, पुष्पा सूद, सुवर्षा कालड़ा, डॉ० कमलेश मनोचा, विशेष रूप से उपस्थित रहीं। सदा की तरह श्रीमती कृष्णादेवी जी ने यज्ञ शेष का वितरण किया। श्री आशानन्द जी आर्य ने उपस्थित जन समूह को शुभ आशीर्वाद दिया। अन्त में मन्त्री वैद्य वेणी प्रसाद ने सत्संग में आने वाले सभी लोगों का धन्यवाद किया। सभा की प्रधान सरला लूम्बा का उनकी कर्मठता के लिए धन्यवाद किया। समारोह का व्यय भार डा. विश्वविजय और सुनीता शर्मा ने वहन किया। वह दोनों धन्यवाद के पात्र हैं। —वैद्य वेणी प्रसाद

जीवन में धर्मसंग्रह ही कर्त्तव्य है

□ ले० कु० उपाचार्य रश्मि, कन्या गुरुकुल, नरेला

धर्म शब्द संस्कृत की धारण अर्थ वाली धृ धातु से निष्पन्न है। जिसका अर्थ है धारण करना। धर्म उसे कहते हैं जो गुण को धारण रखता है जिसके धारण करने से व्यक्ति का मान एवम् अस्तित्व बना रहता है जैसे अग्नि का धर्म गर्मी और प्रकाश है जब तक ये दोनों गुण उसमें विद्यमान रहते हैं तब तक अग्नि विद्यमान रहती है। जैसे जब तक अग्नि में उसका धर्म गर्मी होती है तब तक सिंह, हाथी आदि कोई भी भयानक से भयानक जीवधारी भी उसके समीप नहीं आ सकता परन्तु जैसे ही उष्णता समाप्त होती है तब चीटियां भी उसे राख समझकर निर्भयता पूर्वक गुजर कर जाती है। इसी प्रकार मनुष्य भी जब तक अपने धर्म का पालन करता है तो कोई क्लेश उसको अग्नि के समान दाहक समझ कर उसके समीप आने से डरते हैं। किन्तु ज्योंहि मनुष्य अपने धर्म से च्युत हुआ उसको इन्द्रियों मन और शरीर की गुलामी करनी पड़ती है। और यह सेवक इन्द्रियगामी होकर अपने सम्मान एवम् अस्तित्व को खो बैठता है। अतएव धर्मसंग्रह, धर्मपालन की प्रेरणा दी जाती है–

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः।

नित्यः सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्मसंग्रहः॥

हे जीव ! शरीर सदैव रहने वाला नहीं संसार में बड़े-बड़े राजे महाराजे आये और चले गए। न सिकन्दर रहा न अकबर, न बाबर किसी के शरीर नहीं रहे। मनुष्य इस शरीर की सजावट में रख-रखाव में ही सब कुछ भूल जाता है जो कि अनित्य है धन भी नित्य वस्तु नहीं जब इसका संग्रह करने वाले सिकन्दर. गजनवी गौरी जिन्होंने कितनी बार भारत को लूटा। वह एक कौड़ी भी अपने साथ न ले जा सके। जब इसके भोक्ता ही नित्य नहीं तो यह धन कैसे नित्य हो सकता है। मृत्यु नित्य समीप चली आती प्रतीत होती है अतः हे जीव धर्म का संग्रह कर क्योंकि धर्म के अतिरिक्त कोई वस्तु स्थिर नहीं। धर्म से तात्पर्य हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि प्रचलित मत-मतान्तर नहीं इनका स्वरूप स्थिर नहीं क्योंकि धर्म का स्वरूप अनादि है। मुस्लिम धर्म मोहम्मद से प्रारम्भ होता है ईसाई धर्म महात्मा यीशु से ही प्रारम्भ होता है किन्तु धर्म तो वास्तव में अनादि है जिसे अनादि काल से ही सेवित किया जा रहा है वही धर्म है। धर्म का तात्पर्य पाषाण मूर्तियों के सम्मुख धूप नैवेद्य चढ़ा घण्टियों को बजा कर एवम् अस्पष्ट गान करना नहीं, मस्तक पर चन्दन तिलक लगाना नहीं, राम-रहीम का नाम मात्र नहीं, गुरुओं की महिमा का गान करना नहीं अपितु **'यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः'** जिससे लौकिक उन्नति तथा मुक्ति प्राप्त होती है वह धर्म है। जिसके द्वारा इह लोक एवं परलोक में अभीष्ट सिद्धि होती हो वही धर्म है। इस धर्म के स्वरूप के विषय में महर्षि दयानन्द लिखते हैं जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन करना और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है उसे धर्म कहते हैं। ईश्वर की आज्ञा पालन करना ही धर्म है अन्यत्र भी **धारणाद् धर्म इत्याहुः**। जो धारण किया जा सके अथवा जो धारण कर सके अस्तित्व को रख सके उसे धर्म कहते हैं। धर्म शब्द की कोई निश्चित परिभाषा देना बड़ा कठिन है धर्म के स्वरूप का वर्णन करना भी उतना ही अधिक कठिन है। नीतिकार लिखते हैं– **'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'**। यह उक्ति भी समीचीन प्रतीत होती है पर मनु महाराज धर्म के लक्षण में लिखते हैं–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम॥

धृति–अर्थात् धैर्य विपत्ति के समय यही धैर्य धर्म मनुष्य की रक्षा करता है। वास्तव में मान-सम्मान, हानि-लाभ, जय-पराजय सभी में धैर्य समान रूप से होना चाहिए। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को पहले दिन राज्याभिषेक का समाचार सुनाया गया परन्तु वे सामान्य भाव में ही रहे, दूसरे दिन राम को 14 वर्ष के लिए वनवास का समाचार सुनाया तो भी राम उसी प्रकार सामान्य थे यही धैर्य है अतएव मनुष्यों को

सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता। उदये सविता रक्तो, रक्तश्चास्तमये तथा। सम्पत्ति विपत्ति में मान-अपमान में हानि-लाभ में एक रूप होना चाहिए।

क्षमा–क्षमा करना "क्षमा वीरस्य भूषणम्" क्षमा ही क्षत्रिय का भूषण है। शरीर में दण्ड देने का सामर्थ्य होने पर भी बुरे का प्रतीकार न करना ही क्षमा है।

दमः–इन्द्रियों को वश में करना। अर्थात् श्रोत्र आदि इन्द्रियों को बाह्य विषयों से रोकना।

अस्तेय–चोरी न करना स्वामी से बिना पूछे किसी भी पदार्थ को न लेना ही अस्तेय है।

शौचम्–अर्थात् शुद्धता पवित्रता, शुद्धि दो प्रकार की होती है–आन्तरिक शुद्धि, बाह्य शुद्धि। बाह्य शुद्धि में वस्त्र, आवास, शरीर की शुद्धि बाह्य शुद्धि ही है तथा आन्तरिक शुद्धि तो विद्या एवं तप के द्वारा ही होती है काम, क्रोध, लोभ मोह इत्यादि मलों से दूषित मन को विद्या, सत्य एवं तप के द्वारा शुद्ध किया जाता है।

इन्द्रिय निग्रह–सभी इन्द्रियों को वश में रखना अर्थात् बुद्धि, मन, इन्द्रियों को वश में रखना बड़ा कठिन कार्य है। अतः इन्द्रियों को प्रयत्नपूर्वक वश में रखना।

धीः–अर्थात् बुद्धि सब प्रकार से बुद्धि स्वच्छ पवित्र रहे। तदनुकूल आचरण करना चाहिए। बुद्धि का बल ही सबसे बड़ा बल है।

विद्या–मनुष्य के दुःख का कारण अविद्या ही है। पांच क्लेशों में प्रथम क्लेश अविद्या ही है, यही अविद्या मृत्यु का कारण है। अतः **ऋते ज्ञान्नानः मुक्ति**। इस विद्या के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती। वह इस असार संसार को अविद्या के कारणों को समझ इस प्रकृति की चकाचौंध में आत्मा का स्वरूप भूल जाता है।

सत्यम्–मनसा वाचा कर्मणा सत्याचरण करना चाहिए। **नहि सत्यात्परो धर्मः**। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं। **सत्येनोत्तभित्त भूमिः**। यह पृथ्वी सत्य पर टिकी है। अतः एवं सत्य को धारण करना चाहिए।

अक्रोध–'क्रोध न करना' क्रोध मनुष्य का शत्रु है। क्रोध में मनुष्य विवेक हीन हो जाता है। अतः गीता में कहा है–**क्रोधादि भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिसम्भ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रपश्यति॥** अतः क्रोध से यथाशक्ति बचना चाहिए। वास्तव में इन्हीं के पालन से धर्म की प्राप्ति होती है। मनुष्यों को इसी धर्म का पालन करना चाहिए जो भी धारण किया जा सके अथवा जो भी उसके अस्तित्व एवं मान की प्राप्ति कराने वाला हो जिसके द्वारा तत्वज्ञान एवं मुक्ति प्राप्त होती है। उसे ही धारण करना चाहिए। कोई भी कभी भी बिना कर्म किए नहीं रह सकता अतः आवश्यक है कर्मनिष्ठ होकर धर्म का पालन करें। यदि मौन किए हुए मनुष्य जीवन पर्यन्त बोले ही नहीं तो क्या वह सब से बड़ा सत्यवादी है। यूं तो कोई भी गूंगा पूरी आयु सत्य तथा असत्य भाषण कुछ भी न कर सकेगा तो क्या वह पृथ्वी पर सब से बड़ा सत्यवादी होगा। चींटी जैसे छोटे जीव तो किसी की हिंसा कर ही नहीं सकते अतः वे तो सब से बड़े अहिंसावादी हैं। कोई व्यक्ति लूला है वह कभी चोरी नहीं कर सकता अतः ये सभी पूर्णतः मनु महाराज के बताये धर्म का पालन कर रहे हैं परन्तु निष्कर्मण्यता ही धर्म नहीं है। कर्मण्यता ही धर्म है कर्म करते हुए विवेकपूर्ण जिन कर्मो से अभीष्ट की प्राप्ति हो वह धर्म है। मनु महाराज मनुस्मृति मे लिखते हैं। **आचारः परमो धर्मः**। आचार ही सब से बड़ा धर्म है। नष्ट धर्माचरण ही मनुष्य को मार देता है। यही धर्माचरण मनुष्य की रक्षा करता है। हे महानुभावों जब-जब इस धर्म का अपमान हुआ है तब ही मनुष्य का नाश हुआ। द्रौपदी का चीर हरण किया तो भीष्म, द्रोण, धृतराष्ट्र आदि के होते हुए भी दुःशासन ने अधर्माचरण किया। शकुनि ने अधर्माचरण से द्यूतक्रीड़ा की। दुर्योधन कर्ण ने क्षत्रिय धर्म का त्याग किया तो धर्म ने भी उनका नामो निशान ही मिटा दिया। यदि रावण ने सीताहरण किया। धर्म का परित्याग किया तो रावण का अन्त किस को अनुकरणीय लगता होगा।

धर्म ही अस्तित्व एवं मान का स्थिर रखने वाला है। अतएव **'धर्मान्न प्रमदिव्यम्'** यदि संसार में सुखी रहना हो तो धर्म का पालन ही सुख-प्राप्ति का मूल है। क्योंकि **सुखस्य मूलं धर्मः**। अतः धर्म के स्वरूप को पहचान कर धर्म को धारण करो क्योंकि–**आहारनिद्राभयमैथुनञ्च, सामान्यमेतत् पशुभिः नराणाम्। धर्मो हि तेषामधिको विशेषो, धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥** अन्य सब क्रियाएं आहार, निद्रा, भय, मैथुन तो पशु तथा मनुष्यों में समान रूप से पाई जाती हैं। स्वाभाविक भी हैं किन्तु धर्म ही विशेष है। जिसको धारण करने से मनुष्य पशुओं से पृथक् हो जाता है, अतएव जिन गुणों के धारण करने से इस लोक में उन्नति प्राप्त होती हो। उस सत्याचरण, श्रेष्ठाचरण, दानशीलता, क्षमा, धैर्य, वाक्संयम, इन्द्रिय-संयम आदि को धारण करना चाहिए।

मनुष्य को मनुष्य ही इस लिए कहा जाता है क्योंकि वह सोच विचार कर कार्यों को फैलाता है मनुष्य को ईश्वर प्रदत्त दी गई बुद्धि एवं प्रेरणा ही कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का ज्ञान करा देती है अतः मनुष्य स्वयं जानता है कि किन गुणों का धारण करना धर्म है और किन अवगुणों का धारण करना अधर्म। नवजात शिशु भी कटु वस्तु को एक बार चखकर दोबारा नहीं खा सकता, फिर मनुष्य तो मनुष्य है। इसके पश्चात् भी यदि सन्देह हो तो **महाजनो येन गतः स पन्थाः**। जो बड़े मनुष्य करते हैं वही करना चाहिए। (शेष पृष्ठ 7 पर)

गोमूत्र अर्क के लिए गुरुकुल भठिण्डा में लोगों की भीड़

ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी 3-9-2002 को सभा कार्यालय में पधारे और उन्होंने इण्डियन एक्सप्रैस समाचार पत्र में 10-8-2002 को (अंग्रेजी) में छपा एक समाचार गोमूत्र अर्क के सम्बन्ध में मुझे पढ़ाया। उन्होंने बताया कि इस समाचार पत्र के सम्पादक स्वयं गुरुकुल भठिण्डा में आए और यहां से जाने के बाद उन्होंने यह समाचार छापा। गोमूत्र की महिमा आयुर्वेद में भरी पड़ी है परन्तु उसे कैसे प्रयोग किया जाता है। यह सब को पता नहीं। ब्रह्मचारी जी ने बताया कि मैंने कई कैंसर के रोगियों पर इसका प्रयोग किया है जो बिल्कुल ठीक सिद्ध हुआ और उससे उनको आराम हुआ। यह एक अच्छी बात है कि गुरुकुल भठिण्डा का नाम फिर से लोगों की जुबान पर आ रहा है और आम लोग भी गुरुकुल में पहुंच रहे हैं इससे आगे चल कर इस संस्था को बहुत लाभ होगा।

—धर्मदेव आर्य

"आजकल गुरुकुल बठिण्डा में लोगों की भारी भीड़ होती है जो आर्य समाज की एक शैक्षणिक संस्था है। यहां पर जाने वाले सभी लोगों का एकमात्र उद्देश्य है कि वो "वैदिक मिशनरी" ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी को मिलना चाहते हैं और उनके द्वारा तैयार विशुद्ध "गोमूत्र अर्क" की एक बोतल लेना चाहते हैं।

ब्रह्मचारी सूर्यदेव यहां वैदिक प्रचार के साथ-साथ एक आसवन संयंत्र (Distillation Plant) चलाते हैं। इस परिशोधित अर्क की विशेष मांग है और यह भठिण्डा के अतिरिक्त अन्य स्थानों जैतों मण्डी, मानसा, रामां, बुढलाडा, मोगा, नई दिल्ली, अमृतसर, हरियाणा में, महाराष्ट्र में और विदेशों में भी जाता है।

यह अर्क असाध्य रोगों की सरल अचूक एवम् प्रभावशाली औषधि है। साथ ही यह शरीर को स्वस्थ बनाने की प्रक्रिया में लगे अणुओं को सक्रिय करता है और कर्कस्फोट अर्थात् कैंसर के लिए भी विशेष लाभकारी है, ऐसा ब्रह्मचारी जी बताते हैं। ब्रह्मचारी जी ने कहा-कि हम गोमूत्र गौशाला भठिण्डा की चुनी हुई देशी, राठी एवम् गरि आदि गौओं से प्राप्त करते हैं और अमेरिकन, जर्सी, होस्टन आदि का मूत्र इस कार्य में प्रयोग नहीं किया जाता। गोमूत्र को फिर गुरुकुल भठिण्डा में बनी प्रयोगशाला में लाया जाता है और इसकी गुणवत्ता की जांच करने के पश्चात् इसे विशेष आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों के माध्यम से पारिशोधित (Distilled) करके फिर बोतलों में भरा जाता है।

सूर्यदेव जी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से B.S.C. (Chemicals) करने के पश्चात् प्राकृतिक चिकित्सा में N.D.S.C. का डिप्लोमा लिया और लम्बे समय तक गोमूत्र के औषधीय गुणों पर शोध-कार्य किया। उनके कथनानुसार यह अर्क एक दिव्य औषधि है जो चमत्कार पूर्ण ढंग से मधुमेह, रक्तचाप, श्वास रोग, चर्म रोग, मधुमेह, मोटापा, मूत्ररोग एवम् कैंसर मुख्य है। गैस अम्लपित्त (Acidity) और कब्ज को तो यह शीघ्रातिशीघ्र लाभ पहुंचाता है।

भठिण्डा में अनेकों लोग इस दिव्य औषधि का प्रयोग करके लाभ उठा रहे हैं। जिनमें सबसे पहले जिक्र आता है श्री सुरेन्द्र कुमार सिंगला का जिन्हें ह्रदय रोग, गैस, ब्लड प्रैशर और अनिद्रा रोगों ने पागल सा बना रखा था, इनकी ब्रह्मचारी जी से भेंट हुई और गुरुकुल में तैयार मेदोहर अर्क (गोमूत्र से तैयार अर्क जो मोटापे पर विशेष कार्य करता है) ने इनके समस्त रोगों का हरण कर लिया अब ये ब्रह्मचारी जी के विशेष भक्त हैं और प्रतिदिन गुरुकुल में झाड़ू लगाने आते हैं और सेवा करते हैं।

एक अन्य रोगी श्री मेहर चन्द जी जो पिछले 15 साल से नियमित दवा का प्रयोग लकवे के लिए कर रहे थे। अर्क का प्रयोग शुरू करने के पश्चात् उनकी सारी दवा छूट गई और विशेष लाभ हुआ।

"मुझे इससे आश्चर्य जनक लाभ हुए हैं और इस अर्क के प्रयोग से और ब्रह्मचारी जी के आशीर्वाद से मुझे नया जीवन मिला" ऐसा कथन है श्री राजकुमार का जो एक करियाना के व्यापारी हैं और रोगों से दुखी होकर किसी के कहने पर 100MP मिट्टी का तेल (कैरोसीन) भी पीते रहे थे। श्री पी.डी. गोयल एडवोकेट प्रधान जिला आर्य सभा और आर्य समाज भठिण्डा, जो पहले एक बार बाई पास सर्जरी करवा चुके हैं और उच्च रक्तचापादि तथा शुगर से पीड़ित हैं। वो कहते हैं कि "मैंने गोमूत्र के विषय में पुस्तकों में पढ़ा था परन्तु गुरुकुल बठिण्डा में बने अर्क के लाभ इससे कहीं अधिक हैं। मुझे तो दोबारा हार्ट के आप्रेशन के लिए डाक्टरों ने भेज दिया था परन्तु ब्रह्मचारी जी ने बचा लिया। श्री पुष्प जी भठिण्डा में केसरी ड्राईक्लीनर्स के मालिक हैं यह अर्क कैनेडा में अपने सम्बन्धियों को भेजते हैं जो श्वास एवम् पाचन सम्बन्धी रोगों से पीड़ित हैं। हरभजन सिंह, एक जिमीदार जो अनेकों रोगों से पीड़ित था जिनमें (नजला विशेष रूप से है) इस दिव्य औषधि का प्रयोग करके आज अंग्रेजी दवाओं के चंगुल से मुक्त हैं।" "यह वृद्धावस्था को रोकता है और व्यक्ति को स्वस्थ बनाए रखता है" ऐसा कहना है श्रीमती शान्ति जिन्दल का जो एक प्रिंसिपल हैं। इस प्रकार से हजारों लोग इस प्राणदायी औषधि का प्रयोग करके लाभ उठा रहे हैं।

—इण्डियन एक्सप्रैस से साभार
10-8-2002

हिन्दी भाषा व साहित्य......
(पृष्ठ 2 का शेष)

आर्य समाज के तुलनात्मक साहित्य लेखक : डॉ० भर्ग सिंह, डॉ० विजयवीर विद्यालंकार, ओमप्रकाश विद्यालंकार, ओम प्रकाश वेदालंकार, चन्द्रभाणु, सोणवणे, डॉ० सुरेश कुमार विद्यालंकार, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, डॉ० भवानी लाल भारतीय।

हिन्दी के आर्य समाजी कवि : मुन्शी केवल कृष्ण चारण, उमरदान, कवि कुमार शेर सिंह वर्मा, पं बलभद्र मिश्रा, पं बाबूराम शर्मा, सेठ मांगी लाल गुप्त, कवि किंकर, नाथू राम शंकर, बद्रीदत्त शर्मा जोशी, नारायण प्रसाद बेताब, ठाकुर गदाधर सिंह, लोकनाथ तर्कवाचस्पति, स्वामी आत्मानन्द, श्री कर्णकवि, सं. जसवन्त सिंह टोहानवी, भूरा लाल व्यास, हरिशकर शर्मा, विद्याभूषण विभू, पं. चमूपति, पं. बुद्धदेव विद्यालंकार, पं. वागीश्वर विद्यालंकार, पं. दुलेराम काराणी, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, पं. विशम्भर सहाय प्रेमी, राजकुमार रणवीर सिंह, पं. अनूप शर्मा, पं. सिद्धगोपाल कविरत्न, पं. भद्रजित चन्द्र, श्री हरिशरण श्रीवास्तव मराल, पं धर्मदत्त विद्यावाचस्पति, राजा रणन्जय सिंह, डॉ० सूर्यदेव शर्मा, गायत्री प्रेमी, डॉ० मुन्शी लाल शर्मा 'सोम . पं प्रकाश चन्द्र 'कविरत्न', पं सत्यकाम विद्यालंकार, स्वामी सत्यप्रकाश, पं. अखिलेश शर्मा, पं. लक्ष्मी नारायण शास्त्री (नारायण मुनि चतुर्वेदी), पं विद्यानिधि शास्त्री, राम निवास विद्यार्थी, डा. सुशीला गुप्ता, कृष्णलाल कुसुमाकर, पं. रमेश चन्द्र शास्त्री, रामनारायण माथुर (स्वामी ओम प्रेमी), प्रो उत्तम चन्द शरर, पं.ओंकार मिश्र प्रणव, डा. मदन मोहन जावलिया, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, कुं. सुख लाल आर्य मुसाफिर, कु. जोरावर सिंह, प्रभा देवी, राधेश्याम आर्य।

आत्मकथा लेखक : महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वा. श्रद्धानन्द सरस्वती, भवानी दयाल सन्यासी, पं. नरेन्द्रजी, स्वा: विद्यानन्द सरस्वती, स्वामी वेदानन्द, भाई परमानन्द, सत्यव्रत परिव्राजक, देवेन्द्र सत्यार्थी, पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय, गंगाप्रसाद जज, आचार्य नरदेव, पं. राम प्रसाद 'बिस्मिल', म. नारायण स्वामी, पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति, सन्तराम बी.ए. पृथ्वी सिंह आजाद, आचार्य रामदेव, सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, पं. रूचिराम, डा. भवानी लाल भारतीय, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, लाला लाजपतराय।

हिन्दीगद्य में जीवनी लेखक आर्य समाजी : गोपालराव हरिदेशमुख, चिम्मन लाल वैश्य, सत्यव्रत शर्मा द्विवेदी, दयाराम मुन्शी, रामविलास शारदा, चौ. राय सिंह, स्वामी सत्यानन्द, दीवानचन्द, जगदीश [illegible]र्थी (स्वा. जगदीश्वरा नन्द), त्रिलोक चन्द आर्य, म. आनन्द स्वामी, पं. मुनीश्वर देव, भूदेव शास्त्री, वैद्य गुरुदत्त, डॉ० भवानी लाल भारतीय, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, डॉ० राम प्रकाश, आ. विष्णुमित्र, अलगूरायशास्त्री, राम विचार, भक्तराम, डॉ० देशराम, सत्यव्रत, अवनीन्द्र, कृष्णदत्त, स्वा. श्रद्धानन्द, पं. शंकर शर्मा, वीरेन्द्र सिंधु, ईश्वर प्रसाद वर्मा, धर्मवीर, उषा ज्योतिष्मति, स्वा. स्वतन्त्रानन्द, देवी लाल पालीवाल, डॉ० ब्रजमोहन जावलिया, फतहसिंह मानव, दीनानाथ शर्मा, परमेश शर्मा, रघुवीर सिंह शास्त्री, स्वामी इन्द्रवेश, पृथ्वी सिंह आजाद, ओम प्रकाश आर्य, महावीर अधिकारी, परमेश शर्मा, भाई परमानन्द, जगदीश्वर प्रसाद, पं० लेखराम।

हिन्दी में संस्मरण, यात्रा वृत्तान्त, शिकार कथा आदि के लेखक इनके अतिरिक्त है—वास्तव में हिन्दी साहित्य की सेवा के क्षेत्र में आर्य समाजियों के नामों की पूर्ण गणना कर पाना सम्भव नहीं है। इतना कहा जा सकता है कि हिन्दी लेखन क्षेत्र में आर्य समाजियों की असीमित संख्या के अतिरिक्त ऐसे भी सैंकड़ों नाम मिलेंगे, जो सीधे रूप में आर्य समाजी न होते हुए भी आर्य समाज से प्रभावित थे।

भारत-भारती हिन्दी के लिए हम क्या कर रहे हैं?

महर्षि दयानन्द ने जिसे आर्य भाषा कहा तथा देश की एकता के लिए महात्मा गांधी ने जिसका प्रचार-प्रसार दक्षिण-भारत तक किया।

- क्या हम बैंक सहित सब जगह अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करते हैं ?
- क्या हमारी टेलीफोन डायरी हिन्दी में है ? फोन नं. हिन्दी में बोलते हैं ?
- क्या हमारा परिचय-पत्र हिन्दी में है ?
- क्या हम चैक और बैंक की जमा-पर्ची हिन्दी में भरते हैं ?
- क्या हम समाचार पत्र और पत्रिकाएं हिन्दी में भी मांगते हैं ?
- क्या हम हिन्दी में भी पुस्तकें पढ़ते हैं ?
- क्या हम अपने पत्र और उन पर पते हिन्दी में लिखते हैं ?
- क्या हम सरकारी दफ्तरों के साथ पत्र-व्यवहार हिन्दी में करते हैं ?
- क्या हम अपना घरेलू या व्यापारिक हिसाब हिन्दी में तैयार करते हैं ?
- क्या हम अपना घरेलू या व्यापारिक हिसाब हिन्दी में तैयार करते हैं ?
- क्या हम बधाई, विवाह और अन्य निमन्त्रण-पत्र हिन्दी में छपवाते हैं ?
- बातचीत में अंग्रेजी के अनावश्यक शब्दों का प्रयोग तो नहीं करते ?
- यदि हम सरकारी कर्मचारी हैं तो क्या दफ्तर में अपना काम हिन्दी में करते हैं और औरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं ?

गम्भीरता से विचार करके अपने कर्त्तव्य का निश्चय करें। हिन्दी की जय हिन्दी में काम करने से होगी....केवल जयकारा लगाने से नहीं।

अंग्रेजों की गुलामी समाप्त हुई। परन्तु अंग्रेजी की गुलामी अभी बाकी है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा 1976 में लागू किए गए नियमों के अनुसार हिन्दी भाषी दिल्ली राज्य के सरकारी कार्यालयों और अदालतों में सारा काम हिन्दी में किया जाना अनिवार्य है।

परन्तु ! सरकार में ऊंचे पदों पर कुंडली मारकर बैठे हुए मुट्ठी भर काले अंग्रेजों, अधिकारियों, नेताओं-मंत्रियों, विधायकों-सांसदों, वकीलों-बैरिस्ट्रों, डाक्टरों-इंजीनियरों, प्रिंसिपलों-प्रोफेसरों, मैनेजरों-डायरैक्टरों, उद्योगपतियों-व्यापारियों तथा अन्य सफेदपोश अंग्रेजीदां लोगों ने अपने स्वार्थ और दबदबे को बनाए रखने के लिए संविधान और राजभाषा नियमों की धज्जियां उड़ाकर दिल्ली की भोली-भाली गरीब, कम पढ़ी-लिखी हिन्दी भाषी जनता पर अंग्रेजी को गैर-कानूनी रूप में जबरदस्ती लाद रखा है। इस अन्याय को दूर करने तथा सरकारी कामों में हिन्दी को लागू करने के लिए छेड़े गए इस जनहितकारी संघर्ष में सहयोग दें-

- सरकारी कार्यालयों के साथ पत्र-व्यवहार हिन्दी में करें।
- अधिकारियों पर अपने पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही देने का दबाव बनाएं।
- अधिकारी आनाकानी करें तो बात ऊपर तक पहुंचाएं।
- फिर भी किसी तरह बात न बने तो विधायक और विभाग के मंत्री के पास जाएं।
- राजभाषा संघर्ष समिति को भी प्रमाण सहित सूचित करें।

याद रखें-जनता को सच्ची आजादी तभी मिलेगी जब दिल्ली की सरकार, दिल्ली की जनता से दिल्ली की भाषा हिन्दी में ही बात करेगी-विदेशी भाषा अंग्रेजी में नहीं।

राजभाषा संघर्ष समिति, दिल्ली
ए-4/153, सै-4, रोहिणी, दिल्ली-85
दूरभाष : 7047545, फैक्स-7047545

(पृष्ठ 5 का शेष)

रामवद् पितृधर्म का, क्षत्रिय धर्म का पालन करना चाहिए। सीता के सदृश पति धर्म का पालन करना चाहिए। सूर्य-चन्द्र के सदृश अपने धर्म का पालन करना चाहिए। सन्देह-निवृत्ति के लिए गुरु इसकी व्यवस्था करते हैं-यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि। जिन कर्मों की कहीं भी वेद शास्त्रों और विद्वानों के समुदाय में निन्दा न होती हो वे ही करने चाहिएं। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि। जो वृद्ध हैं, महात्मा हैं, साधु पुरुष हैं, उनके उत्तम कर्मों का अनुकरण करना शेष कर्मों का अनुकरण न करना।

क्योंकि यही श्रेष्ठतम कर्म है इन्हीं गुणों का धारण करना मान एवम् अस्तित्व का कारण है अतः यही धर्म है।

गुरुकुल करतारपुर का उत्सव

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट, करतारपुर का 36वां एवं श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर का 32वां वार्षिकोत्सव, गुरु विरजानन्द भवन जी.टी. रोड, करतारपुर में बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस महोत्सव पर आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

यदि आप किसी आर्य समाज, शिक्षण संस्था अथवा संगठन विशेष से सम्बन्धित हैं तो आपसे साग्रह निवेदन है कि इस पुण्य अवसर पर समस्त सदस्यों को भी अवश्य साथ लावें तथा समारोह में उपस्थित हो रहे उच्चकोटि के विद्वानों संन्यासियों के प्रवचन सुनकर जीवन लाभान्वित करें।

कार्यक्रम 30 सितम्बर से 6 अक्तूबर 2002 तक चलेगा। प्रात: 7 से 9 बजे और सायं 4 से 6 बजे तक अथर्ववेद परायण यज्ञ होगा। 6 अक्तूबर को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् यज्ञ के ब्रह्मा श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रीय सभी यज्ञमानों को आशीर्वाद देंगे। रात्रि में प्रतिदिन 8 से 9.30 बजे तक भजन व उपदेश होंगे।

इस अवसर पर श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रीय दिल्ली, आचार्य अखिलेश्वर जी जम्मू, आचार्य भद्रसेन होशियारपुर, श्री गणेश प्रसाद जी विद्यालंकार, दिल्ली, श्री सत्यपाल जी पथिक अमृतसर के उपदेश होंगे।

4 अक्तूबर को रात्रि आठ बजे वैदिक परीक्षा सम्मेलन होगा जिसमें वेद, अष्टाध्यायी, संस्कारविधि कण्ठस्थीकरण परीक्षाएं होंगी।

5 अक्तूबर को ध्वजारोहण सेठ कुन्दन लाल जी अग्रवाल के कर-कमलों द्वारा होगा तथा प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक आर्य सम्मेलन होगा।

दोपहर बाद 1.30 से 4.30 बजे तक महिला सम्मेलन होगा, संयोजिका श्रीमती सुशीला भगत, अध्यक्षा श्रीमती पूर्ण प्रभा जी शर्मा प्राचार्या हंसराज महिला महाविद्यालय, मुख्यातिथि-श्रीमती नीरजा चन्द्र मोहन जालन्धर, मुख्यवक्ता श्रीमती सरला भारद्वाज फगवाड़ा, भजन श्रीमती रश्मि घई। रात्रि 8 से 10 बजे तक वैदिक संस्कृति सम्मेलन होगा।

6 अक्तूबर को प्रात: 9 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति 10 से 1.30 बजे तक श्री गुरु विरजानन्द सम्मेलन श्री आचार्य अखिलेश्वर जी की अध्यक्षता में होगा।

इस समय गुरुकुल में 125 विद्यार्थी पढ़ रहे हैं, भोजन आवास चिकित्सा नि:शुल्क है। 54 लाख रुपए की अनुमानित लागत से नए परिसर का निर्माण हो रहा है। इस गुरुकुल के लिए तथा भवन निर्माण के लिए धन चाहिए। आर्य बन्धु व बहनें गुरुकुल को धन अवश्य भेजें। गुरुकुल को दिया गया दान कर मुक्त है। **—चतुर्भुज मित्तल, महामन्त्री**

बलाचौर में चालीस दिन का शान्ति यज्ञ

बलाचौर आर्य समाज वेद मन्दिर में हर रोज सवेरे और शाम सन्ध्या और सप्ताह मे दो बार यानि रविवार सवेरे 6.45 से 7.45 बजे तक और मंगलवार को शाम 5 बजे से 6.30 बजे तक बड़ा हवन यज्ञ व सत्संग होता है। हवन के बाद वेद प्रवचन और भजन कीर्तन भी होता है। इसी प्रकार हर साल बरसात मे श्रावन महीने में और सर्दियो में माघ महीने में दोनो समय प्रात. और सायं पूरा महीना बड़ा हवन होता है। जैसे प्रात: 5.30 मे 7 बजे तक ओर साय 5 से 7 बजे तक दोनों समय सन्ध्या बड़ा हवन वेद प्रवचन और साथ ही भजन कीर्तन भी हुआ करते हैं। सो इसी शृंखला मे इस वर्ष भी 23-7-2002 से 31-8-2002 जन्म अष्टमी तक चालीस दिन का शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ इस यज्ञ की पूर्णाहुति श्री कृष्ण जन्म अष्टमी के शुभ अवसर पर सम्पन्न हुई। जिसमें प्रतिदिन प्रात: जागरण मन्त्रा के बाद सन्ध्या उपनिषद पाठ और बड़ा हवन शान्तिकरण और स्वस्ति वाचन के साथ होता रहा और सायंकाल को भी इसी तरह पहले सायंकालीन मन्त्र बड़ा हवन फिर गीता पाठ अर्थ सहित बाद में भाई-बहनों के भजन कीर्तन पूरे चालीस दिन पूर्णाहुति तक होते रहे। पूर्णाहुति पर श्री कृष्ण जन्म अष्टमी के शुभ अवसर पर अच्छी खासी उपस्थिति देखने को मिली। इस शुभ अवसर पर पधारे हुए सभी महानुभावों के लिए जलपान प्रसाद का प्रबन्ध बड़ा अच्छा किया था। इस यज्ञ की मोहल्ला तथा नगर निवासियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की

—गुरुदेव जी धीमान, आर्य वानप्रस्थ

नैतिक शिक्षा से ही भ्रष्टाचार का प्रतिकार सम्भव : डॉ० जोशी

नई दिल्ली, 1 सितम्बर। मानव संसाधन विकास मन्त्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी ने भ्रष्टाचार को आर्थिक और सामाजिक विकास में सबसे बड़ी बाधा बताते हुए कहा कि नैतिक मूल्यों से अनुप्राणित शिक्षा से ही इस समस्या का कारगर इलाज सम्भव है।

उन्होंने कहा कि नैतिक शिक्षा की आवश्यकता स्व० राजीव गांधी के प्रधानमन्त्रित्व काल में स्वीकार की गई थी। "सरकार केवल उस संकल्प को क्रियान्वित कर रही है।"

डॉ० जोशी यहां चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर और उससे सम्बद्ध संस्थाओं के वार्षिकोत्सव में गणमान्य नागरिकों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, आज देश की अधिकांश समस्याएं इसलिए हैं कि हमने नैतिक मूल्यों को तिलांजलि दे दी, राष्ट्रहित को तिलांजलि दी और महापुरुषों के जीवन से कोई पाठ नहीं पढ़ा।

सरकार पर भगवाकरण का आरोप लगाने वालों से डॉ० जोशी ने सीधा सवाल किया कि नैतिक मूल्य यदि अध्यात्म से नहीं तो कहां से आयेंगे। उन्होंने कहा कि पश्चिम-प्रेरित बाजार ताकतों ने आज बिजनस प्रमोशन के नाम पर हर तरह के भ्रष्टाचार को जायज करार दे दिया है। परन्तु हम पश्चिम से आने वाली अग्राह्य प्रवृत्तियों को स्वीकार नहीं कर सकते।

डॉ० जोशी ने कहा कि वैश्वीकरण के इस युग में भी स्वदेशी की महत्ता कम नहीं हुई। जरूरत स्वदेशी को युगानुकूल व्याख्या करने की है। "सौ करोड़ निवासियों का यह देश अगर डट कर खड़ा हो जाए तो दुनिया हमारी बात सुनेगी।"

मानव संसाधन विकास मन्त्री ने कहा कि किसी तरह का विद्वेष पैदा करना हमारा मकसद नहीं। लेकिन नयी पीढ़ी को सही तथ्य तो बताने ही होंगे। इतिहास पुस्तकों का लेखन ब्रिटिश राज के पुराने ढर्रे पर हुआ है, जिसमें राष्ट्रीय आन्दोलन के अनेक प्रसंगों को नजरंदाज कर दिया गया। यह त्रुटि हमें दूर करनी है।

डॉ० जोशी ने कहा, दयानन्द सरस्वती ऐसे पहले महापुरुष थे, जिन्होंने हिन्दी को राजभाषा बनाने का आग्रह किया। उनसे पहले इतने जोर से यह बात किसी ने नहीं कही। उन्होंने अस्पृश्यता के विरुद्ध पहल की, सती प्रथा का शास्त्रीय प्रतिकार किया, महिलाओं को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया और पराधीनता के विरुद्ध सारे देश को जगाया। परन्तु इतिहास पुस्तकों में उनके इस योगदान का कोई जिक्र नहीं।

केन्द्रीय मन्त्री ने कहा कि स्वतन्त्रता के बाद यदि देश को दयानन्द के रास्ते पर चलाने की कोशिश की जाती तो भारत अब तक विश्व महाशक्ति का दर्जा हासिल कर लेता। उपस्थित वृन्द ने हर्षनाद से उनके इस कथन से सहमति व्यक्त की।

प्रौद्योगिकी को प्रकृति अनुकूल बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए डॉ० जोशी ने देसराज परिसर में प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के सफल संचालन की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस चिकित्सा प्रणाली की जरूरत अब सारी दुनिया में महसूस की जा रही है।

चिन्तक-पत्रकार डॉ० वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि सार्वजनिक जीवन में दयानन्द और लोहिया जैसे दृढ़ लोगों की जरूरत है, जो बुराई से समझौता करने से इंकार कर दें।

डॉ० वैदिक ने कहा, मौजूदा स्थिति को देखकर लगता है कि राजनीति में विचारधारा का अवसान हो गया है। सारे राजनीतिक दल एक ढर्रे पर चल रहे हैं और एक ही प्रवाह में बह गए हैं। सदाचरण के लिए खड़ा होने की जुर्रत कोई जुटा नहीं पा रहा। स्थिति में सुधार लाने के लिए सामाजिक संगठनों को आगे आना होगा।

विद्या मन्दिर के प्रधान पद्मश्री वीरेश प्रताप चौधरी ने बताया कि आर्य अनाथालय और देसराज परिसर में ग्यारह सौ बेसहारा बालक-बालिकाओं को मध्यम वर्गीय जीवन स्तर मुहैय्या करने के अलावा पब्लिक स्कूल से बेहतर शिक्षा दी जाती है। इस संस्थान में पूर्ण मनुष्य तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है, जो देश के सुयोग्य नागरिक बनेंगे।

श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री ने अभ्यागतों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्हें संस्था से स्थायी रूप से जुड़ने की प्रेरणा की। चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट के प्रधान सुशील प्रकाश, प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र की संचालक डॉ० मधु गुप्ता शास्त्री चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर की कार्यवाहक प्राचार्य राजकुमारी और रानी दत्ता आर्य विद्यालय के प्रधान ज्ञानेश चौधरी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति समारोह में उपस्थित थे।

—सुरेन्द्र मोहन, प्रचार प्रमुख

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

दूरभाष 292926

सामवेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 23 सृष्टि संवत 1960853103, 29 सितम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

पंच महायज्ञों का महत्व

❑ ले. श्री देवी दयाल शर्मा "शर्मा निवास" 120, माडल टाउन, स्ट्रीट नं.-4, अमृतसर

ऋषि यज्ञं, देव यज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।

नृयज्ञं, पितृयज्ञं च यथा शक्ति न हापयेत। 4/21

व्याख्या:–कितने सुन्दर ढंग से मनु महाराज ने उपर्युक्त श्लोक का, जो पांच यज्ञों के बारे में है, वर्णन किया है। (1) ब्रह्मयज्ञ, (2) देव यज्ञ, (3) बलिवैश्वदेव यज्ञ (4) अतिथि यज्ञ ओर (5) पितृ यज्ञ। मैंने देव यज्ञ के बारे में और इसकी अनिवार्यता, आर्य मर्यादा के पिछले अंकों में वर्णित कर दी थी। अब ब्रह्म यज्ञ के बारे में लिख रहा हूं। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती, अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे लिखते हैं कि जैसे शीत से आतुर पुरुष अग्नि के समीप जाकर शीत से निवृत्त हो जाते हैं, उसी तरह, परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव को धारण करके आत्मा पवित्रता को प्राप्त कर लेता है। आत्म शुद्धि के लिए, यज्ञों का कारण अनिवार्य है। इसलिए नित्यप्रति इनका अनुष्ठान करना आवश्यक है। कभी भी नागा नही पडना चाहिए। इन पांचों यज्ञों के महत्व को नजरदाज नहीं करना चाहिए।

ब्रह्म यज्ञ को ऋषि यज्ञ भी कहते हैं। बह्म यज्ञ को प्रात: शौच आदि गे निवृत्त होकर 4 बजे प्रात:काल इस ग आरम्भ कर दना चाहिए। जो भाग्यश ल जन इसका ममय पर अनुष्ठान करते ह, शान्ति का निवास उनकी आत्मा मे हो जाता है। ब्रह्म यज्ञ में ही, ईश्वर की स्तुति, प्राथना उपासना और सन्ध्या आ जाती हे। इसके अतिरिक्त वेद शास्त्रों का स्वाध्याय करने के लिए ऋषियों मुनियों ने बलपूर्वक कहा है। जैसे ब्रह्म यज्ञ करने के लिए प्रात: समय जो ऊपर लिखा गया है ईश्वरीय निर्देश हैं, इसी तरह सायंकाल भी यह ब्रह्म यज्ञ अवश्यमेव करना चाहिए पूरा लाभ उसी को मिलेगा जो नित्यप्रति दोनों समय करेगा इस यज्ञ को।

योगीराज पतञ्जलि जी फरमाते है कि इस यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला, पक्के इरादे वाला, असीम उत्साह वाला, पूर्ण सहनशीलता को धारण कर लेता है और भयानक से भयानक दुर्घटनाओं का एक बहादुर सिपाही की तरह मुकाबला कर सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि देव यज्ञ वायु और जल को शुद्ध करता है परन्तु ब्रह्म यज्ञ आत्मा की शुद्धि करता है। आत्मा में दैवी गुण चमकने लगते हैं। मानव शरीर विनश्वर है। बचपन, जवानी और वृद्धावस्था विनश्वरता के अकाट्य प्रमाण हैं। केवल मानव देह में आत्मा ही अनश्वर है।

यह बात सर्वदा स्मरण रहे कि रोगयुक्त व्यक्ति ब्रह्म यज्ञ करने में असमर्थ है क्योंकि उसकी अस्वस्थता उसे दैवी मार्ग पर चलने के लिए निर्बाधित और विघ्न विहीन नहीं है। इसलिए भक्ति मार्ग पर चलना और स्वाध्यायशील होना और रोगरहित होना अवश्यम्भावी है। इससे सिद्ध हुआ कि केवल स्वास्थ्य से युक्त पुरुष ही ईश्वरीय दैवी चमत्कारों को प्राप्त कर सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मानव शरीर आत्मा के लिए ही है। आत्मा अपने अच्छे बुरे कर्मो के अनुसार, परमात्मा की व्यवस्था से जो संसार के प्राणियों का (Supreme Chief Justice) परम न्यायकारी है, फल पाता है। जैसे किसी ने किए कर्म वैसा ही तू देता फल। हे पिता तेरे न्याय में फर्क जरा नहीं आ रहा।

जैसे तन्दरुस्त जिस्म (रोग रहित शरीर) ब्रह्म यज्ञ करने के लिए बडा ही आवश्यक है। इसी तरह सात्विक भोजन (Vegetarian Diet) भी बड़ी जरूरी है शरीर को बिमारियों से दूर रखने के लिए। इसलिए बहुत सावधान रहना चाहिए कि हम अशाकाहारी भोजन से दूर रहें।

छा. उपनिषद में (30.3 7.35 2) में शाकाहारी भोजन का बड़ी सुन्दरता से वर्णन है:-

आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि स्तव शुद्धो ध्रुवा स्मृति। स्मृति प्रतिलम्भया सर्वग्रन्थीनाम विप्रमोचा॥

सात्विक आहार करने से, बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण हो जाती है और स्मरण शक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है। जब मन एकाग्र (Stableness) हो जाता है तो मानव की बड़ी समस्याए और मुश्किलें हल हो जाती हैं। जब तक स्मरण शक्ति दुर्बल है तो कई संशय मानव पर प्रहार करते हैं। संशय आत्मा विनश्यते (गीता) संशालू नश्यते। संशय से मानव का विनाश हो जाता है। जो आहार के नियमों को अपनाता है उसी का शरीर ही वीरता को प्राप्त होता है। यहां हम एक जिन्दा मिसाल एक सन्यासी को पेश करते हैं जिनका नाम स्वामी भीष्म है। उनकी आयु 121 साल की है। किसी ने उनको प्रश्न किया कि आप की लम्बी आयु का क्या कारण है तो उन्होंने हंसते हुए फरमाया। शुद्ध मन, शुद्ध हृदय, सात्विक आहार, जिस में शाकाहारी भोजन (Vegetarian Diet) दूध, शुद्ध घी, शहद (Honey) और व्यायाम भी शामिल हैं। मानव इनका का सेवन करता चले, यही दीर्घ आयु होने का भेद (Secret) है।

यदि हम ब्रह्म महायज्ञ को नजर अन्दाज कर देते हैं इसका मतलब यह हुआ कि हम सन्ध्या, ईश्वर स्तुति प्रार्थना और उपासना व वैदिक ग्रन्थो का स्वाध्याय करने से मुंह मोड़ लेते हैं। यह असावधानत हमारी आयु को बढ़ने नहीं देती। कुछ समय तक हम सोचते हैं कि यदि हम वेद मन्त्रो का प्रतिदिन स्वाध्याय करें परमात्मा की भक्ति के कुछ गीत गाए तो हमें लाभ क्या होगा? और यदि सन्ध्या उपासना न करें तो हमारा नुकसान क्या होगा? लेकिन ये दोनों बातें हमारी सत्य की कसोटी पर नहीं उतरती। परमात्मा बहुत महान है और उसकी महानता का बड़े से बडा वेदज्ञ और शास्त्रज्ञ अनुमान नहीं लगा सकता। परमात्मा सर्वव्यापक (Omni Present) सर्वशक्तिमान (Omni Patent)) और हर प्रकार से सर्वज्ञतापूर्ण (Omni Scient) है। उसकी सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमत्ता और सर्वज्ञता को, कोई भी माई का लाल चुनौती नहीं दे सकता। चाहे हमारी, प्रार्थना बहुत छोटी हो, उस परम पावन प्रभु को स्वीकार है और एक सैकिण्ड में मानव की आत्मा को शान्ति और आनन्द से भरपूर कर देता है। वेद ऊपर के कथन की पुष्टि करता है नीचे लिखे मन्त्र द्वारा–

ओ३म् कदु प्रेचतसे महे वचो देवाय शस्यते।

तत इतहि अस्य वर्धनम्॥

(सामवेद 3 1 42)

परमात्मा ऐसे उपासक पर अपनी चुनी हुई दैवी बरकतों की वर्षा करता है। एक जिज्ञासु श्री परमहंस रामकिशन जी के पास गया और कहा कि आपने तो सिद्धि प्राप्त कर ली है आप को अब ईश्वर की भजन बंदगी की क्या जरूरत है। परमहंस जी ने जवाब दिया कि उनके कमरे में जो सामने शीशे का गिलास है मेरे पास ले आओ। ऐसे ही उस जिज्ञासु ने किया। अब परमहंस जी ने कहा "अब तुम इसमें क्या देखते हो।" उसने उत्तर दिया "साफ शफाफ गिलास भीतर बाहर से है।" परमहंस जी ने कहा कि 15 दिन के पश्चात् मेरे पास आना। 15 दिन गुजरने के बाद, जिज्ञासु फिर परमहंस जी के पास गया। परम हंस जी ने कहा "उसी गिलास को मेरे पास ले आओ"। जिज्ञासु ने ऐसा ही किया। अब परमहंस ने जिज्ञासु से कहा कि अब तुम इसमें क्या देखते हो। जिज्ञासु ने कहा कि यह गिलास तो अब मिट्टी, कूडा-कर्कट से मैला हो गया है। परमहंस जो ने कहा "ठीक यही हाल हमारे आत्मा का है। अगर ईश्वर स्तुति, प्रार्थना और उपासना द्वारा आत्मा को नित्यप्रति साफ न किया जाए तो मैल-कुचैल से यह गंदा हो जाएगा और जो (Supreme Indwelling Soul) ईश्वरीय प्रकाश, शक्ति आत्मा के अन्दर बैठी हुई है, वह आत्मा से ओझल हो जाएगी जिज्ञासु समझ गया और परमहंस का धन्यवाद करता हुआ लौट गया।

इस बात का अच्छी तरह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी प्रार्थना सब की भलाई के लिए होनी चाहिए न कि शत्रुओं की तबाही के लिए। ऐसी प्रार्थना परमात्मा कभी नहीं सुना करता जो दूसरों के लिए हितकर न हो।

दण्डी स्वामी विरजानन्द द्वारा आर्ष-ग्रन्थों का शंखनाद

❑ ले० डॉ० अमरनाथ राणा वरिष्ठ उप प्रधान, आर्य समाज तलवाड़ा टाउनशिप

पंजाब रूपी अपनी उद्भव-स्थली से निकली नेत्रहीन वृज लाल रूपी वह क्षीण-धारा, मार्ग के असीम अवरोधों में अपना मार्ग टटोलती, ईश्वर-विश्वास के बल पर परिस्थितियों के ऊबड़-खाबड़ों को लांघती, परीक्षाओं के भयावह मोड़ों को आत्मसात करती, अनेक-विद्याओ, घोर तपस्या, गहन अनुभूतियों को और अदम्य साहस के प्रचण्ड वेग को समेटती हुई अब यह प्रौढ़ नद-धारा, युग के अज्ञान, अंधविश्वास, दास्ता और कुसंस्कारों के दलदल को भीषण टक्कर देने के लिए 1845 ई. में मथुरा में प्रविष्ठ हुई है।

ब्रह्म ऋषि दण्डी जी का मथुरा-आगमन दैव-प्रायोजित घटना कही जा सकती है। उनके यहां आगमन के समय यह क्षेत्र वैष्णव मत का गढ था। ये लोग पुराणों को वेद का स्थान देते थे। इस प्रसंग में दण्डी जी का उसके साथ शास्त्रार्थ एवं व्याकरण-विपयक द्वन्द्व चलता रहता था, जो एक युगान्तकारी घटना सिद्ध हुई। दैवयोग से 1859 ई. में दण्डी जी के शिष्यों और कुछ विद्वानों में सिद्धान्त कौमुदी की 'अजाद्युक्तिः' पद के समास पर विवाद हो गया। उनके शिष्यों ने इसमें षष्टी तत्पुरुष समास बताया। जिसे बाद में दण्डी जी ने भी शुद्ध माना किन्तु लक्ष्मण-शास्त्री आदि विद्वानों ने इसे सप्तमी-तत्पुरुष समास घोषित किया।

ये वे ब्राह्मण थे जिनके परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी शास्त्राध्ययन, चिन्तन एव रक्षण-कार्य होता रहता था। उन्होंने इस विवाद को दलबल और धनबल से भी सही सिद्ध करने का भरसक प्रयत्न किया। किन्तु इस घटना ने तुल पकड़ा और इससे एक भयंकर शास्त्रार्थ-समर का वातावरण बन गया। नगर वासी धुरन्धर व्याकरण आचार्य श्री कृष्ण-शास्त्री को दण्डी जी से भिड़ाना चाहते थे। किन्तु सभी उनकी अप्रतिम व्यकरण-दक्षता से सुविज्ञ थे और उन्हें अजेय मानते थे। अस्तु, कृष्ण शास्त्री नहीं आए।

समस्या अनिर्णीत रही। मर्मज्ञ पण्डित जानते थे कि दण्डी जी का पक्ष सही है। किन्तु कोई भी इस सत्य के पक्ष में साक्षी देने को उद्यत न था। तब वे साक्षी खोजने के लिए ऋषियों के प्राचीन-ग्रन्थों की खोजबीन करने लगे। उनका विश्वास था कि कोई ऋषि ही सत्य का पक्षपोषण करेगा। 'जिन ढूंढा तिन पाया' वाली बात सिद्ध हुई और उन्हें एक दिन अष्टाध्यायी के सूत्र (2/3/63) (कर्तृकर्मणोः) पर चिन्तन करते हुए निश्चय हुआ कि उनकी उपर्युक्त मान्यता इस सूत्र की व्याख्या पर आधारित है। इस निष्कर्ष ने उनकी चिन्ता को हर्ष में बदल दिया। अब उन्हें ऐसे ऋषि का समर्थन मिल गया था जिसने व्याकरण के लिए जीवन होम दिया था।

जीवनीकार के अनुसार 'इस प्रकार वैदिक-वाङ्मय के इतिहास में एक नवयुग का प्रारम्भ हुआ। उस प्रभुभक्त, आत्मविश्वासी, प्रज्ञाचक्षु सन्यासी ने एक नये युग का सूत्रपात किया। गीत भले ही लक्ष्मी के गाए जाते रहे, पर विजय सरस्वती की हुई।'

आर्ष-युग का उदयः—आर्ष-युग आगमन, मथुरा में एक व्याकरण-विवाद की पृष्ठ भूमि से अंकुरित हुआ। महाभारत के पश्चात् अनार्ष-ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार ने आर्य-जाति को पथ भ्रष्ट कर दिया था। इतने दीर्घकाल में मौलिकता दण्डी जी से पूर्व कोई भी मनीषी आर्ष अनार्ष का भेद न समझ पाए थे। इसलिए उनसे पूर्व किसी ने भी आर्ष-ग्रंथ-मिलावट अर्थात् प्रक्षिप्तांश का प्रश्न नहीं उठाया था। जीवनीकार के अनुसार 'धरती तल के किसी भी विद्वान् के मनो-मस्तिष्क में आर्ष-ग्रन्थों को अनार्ष-ग्रन्थों के अम्बार में से खोज निकाल अलग करने का विचार अंकुरित नहीं हुआ था।'

उनका यह मानना था कि जब से ब्राह्मणों की व्याकरण में गति नहीं रही तभी से ऋषि-पुस्तकों में प्रक्षेप हुआ एवं मनुष्य-कृत कौमुदी आदि व्याकरणों से संस्कृत व्याकरण की महती क्षति हुई और आर्ष ग्रन्थों का लोप हुआ है। उनके अनुसार भट्टोजि ने सिद्धान्त कौमुदी का प्रणयन कर प्राचीन आर्ष परम्परा को अलोप कर प्रक्रिया परिपाटी शुरू कर दी थी। जिसके प्रचार से अल्प-बुद्धि लोग आर्ष-ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करेंगे। इस कारण शास्त्रों के नाम पर जो विवाद खड़े हो रहे थे उनकी कल्पना से दण्डी जी सिहर उठते थे।

उनके अनुसार प्राचीन आचार्यों का चिन्तनामृत ऋषि-कृत ग्रंथों में सुरक्षित है। इन असंख्य अनार्ष पुस्तकों के कारण ही धार्मिक जगत् में अव्यवस्था पैदा हुई और अवैदिक मत फैले। ऐसे मतों का प्रबल खण्डन पहले विरजान्द दण्डी ने ही किया। उनके अनुसार मनुष्यों द्वारा मनमाने नियम कल्पित करने से धर्म-मार्ग में अराजकता उत्पन्न हुई। अतः इन मतान्तरों एवं पन्थों का फैलाव रोकने के लिए व्याकरण के केवल आर्ष-ग्रन्थों का चलन अनिवार्य है। इसलिए व्याकरण के पूर्ण-ज्ञाता को उन्होंने जगद्-गुरु घोषित किया है।

दण्डी जी विदेशी शासन और अनार्ष-रचना प्रसार को जगद् गुरु भारत की दुर्दशा का कारण मानते थे। अतः वे आर्ष ग्रन्थ अभियान के लिए किसी उपर्युक्त अवसर की प्रतीक्षा में थे। इसलिए उन्होंने विदेशी शासन को नष्ट करने की प्रचण्ड प्रतिज्ञा की और अवैदिक सम्प्रदायों का प्रबल खण्डन शुरू कर दिया।

आर्ष-युग प्रवृत्त होने पर उन्होंने शब्देन्दु शेखर के खण्डन में 1859 ई० में वाक्य मीमांसा की रचना की। इस प्रकार वैदिक-वांङ्मय के इतिहास में एक नवयुग का सूत्रपात हुआ। जीवनीकार के अनुसार-'यह तात्कालिक बौद्धिक जगत् के विरुद्ध यह एक व्यक्ति का विद्रोह था। उनकी अन्तः वेदना की अभिव्यक्ति थी।'

एक दम इतना परिवर्तन, यह क्रान्तिकारी पग एक युग की पदचाप थी। फलतः क्रान्ति का यह विस्फोट कांशी में भी सुनाई देने लगा था। एवं वहां के विद्वान् समाज के कान खड़े हो रहे थे।'

सार्वभौम-सभा-विवरण-पत्रः क्रांति का डिण्डिम घोषः—आर्ष-ग्रन्थ मर्यादा स्थापनार्थ दण्डी जी पण्डितों की एक सार्वभौमि सभा बुलाने के इच्छुक थे। ऋषियों के बिना धर्म की रक्षा कौन करेगा? इस कार्य के लिए उन्हें जयपुर नरेश समर्थ दिखाई दिए। जो अनेक कारणों से पूरा न हो सका।

किन्तु यह पत्र उनके मन में धधकती बड़वानल का पता अवश्य देता है। जयपुर नरेश से उनकी वार्ता उनके चूड़ान्त लोक हितकारी चिन्तन का प्रमाण है। उनकी निर्भ्रान्त धारणा थी कि अनार्ष-ग्रन्थों के पठन पाठन से बहुत अमंगल हो रहा है। वस्तुतः यही ग्रंथ भारत के पतन का कारण हैं। जिससे ब्राह्मण वेद हीन हो रहे हैं।

इस प्रकार यह पीड़ा इस पत्र में फलीभूत हो उठी है। इसलिए वे वेदादि सत्शास्त्रों की महिमा गाते और आर्ष-ग्रन्थों को ही प्रामाणिक मानते थे। उनकी यह ऊर्ध्व-भुज घोषणा थी कि वेदोक्त धर्म ही सत्य और सनातन धर्म है। इसीलिए भारत में परम्परा से एक ही धर्म की सत्ता का उल्लेख है। अस्तु, धर्म की मूल-पुस्तक वेद की मर्यादा पुनः स्थापित करने का उनका वह चिरप्रतीक्षित सुप्रयास था।

यह पत्र दण्डी जी के 80 वर्ष की आयु तक के सारस्वत अनुभव अध्ययन तथा चिन्तन-मनन का सार है, जो उनके आर्ष-अभियान के गाण्डीव की टंकार है। इसमें तेजस्वी दण्डी जी ने मूलभूत प्रश्न उठाते हुए सिंह गर्जना की कि "जिस ऋषि ने पुस्तक बनाई, वह ऋषि शब्द रूप में अपने बनाए पुस्तक में विद्यमान रहता है। ऋषि की पुस्तक धर्म मार्ग है। अतः आर्यावर्त का धर्म ऋषि पुस्तक में है। ऋषि-पुस्तक में आज्ञा ऋषि की है।"

"ऋषि-पुस्तक देव भाषा में है। शब्द शास्त्र (व्याकरण) के सूत्र लगाने से मनुष्य-भाषा भी देव-भाषा बन जाती है। देव-भाषा के नियम, देव और ऋषि ही जानते हैं। इसलिए सर्व-भूमि की एक देव-भाषा ईश्वर ने ऋषि को दी है। ऋषि की देव भाषा प्रमाणित होती है।"

"जो शब्द ऋषि ने लिखा, वह शब्द ऋषि है। अर्थात् ऋषि-पुस्तक ऋषि है। सामान्य-लेखक तत्वदर्शी ऋषि नहीं है। वे यथार्थ भाव का निश्चय करने में असमर्थ हैं। इसीलिए उन्होंने पुस्तकस्थ ऋषि को निजगुरु माना है। तपोबल से मनुष्य ऋषि हुए हैं। किन्तु ऋषि मनुष्य-लोक में सदा नहीं रहते हैं। ऋषि-रचित ग्रंथों की प्रतिष्ठा के बिना देश का कल्याण सम्भव नहीं। इनके पढ़ने से ही राजा-प्रजा का कल्याण होगा। उनकी महती कीर्ति होगी। क्योंकि इन्हीं नियमों को अपना कर ब्राह्मण वैदिक धर्म की प्रवृति करने में समर्थ हुए थे।"

अष्टाध्यायी पर अडिग आस्थाः—इस चिन्तन विकास के कारण अलवर-प्रवास के दौरान ही अष्टाध्यायी के प्रति उनकी रुचि उत्तरोत्तर बढ़ रही थी। तथा उनकी विचार सारणी में इसकी श्रेष्ठता तथा अनार्ष ग्रन्थों की भयकारिता झलकने लगी थी। (शेष पृष्ठ 8 पर)

कश्मीर समस्या की मौलिक भूल

❑ ले० वजीर चन्द मंगला भठिण्डा

आर्य विद्वानों के सुझाव राजनेताओं ने नहीं माने जिसका परिणाम आज कश्मीर समस्या सामने है।

कांग्रेस की मौलिक भूल:–कांग्रेस का कहना है कि उसने मुस्लिम लीग द्वारा प्रतिपादित दो राष्ट्रों के सिद्धान्तों को कभी स्वीकार नहीं किया। यदि यह ठीक है तो समझ में नहीं आता कि कांग्रेस ने देश के विभाजन को क्यों मान लिया। विभाजन के पक्ष में तो युक्ति ही एक थी कि देश में एक नहीं दो राष्ट्र हैं, जब उस युक्ति को कांग्रेस ने कभी स्वीकार नहीं किया था, तो उसने उस युक्ति पर आश्रित बंटवारे को क्यों स्वीकार कर लिया? यह युक्ति विरुद्ध और बुद्धि विरुद्ध कार्य करने का अधिकार कांग्रेस को किसने दिया था? भारत की जनता ने तो नहीं दिया, क्योंकि देश वासियों का बहुत भारी लोकमत विभाजन के विरुद्ध था और अब भी है।

कांग्रेस के हाई कमान ने लोकमत के विरुद्ध देश के बंटवारे को स्वीकार कर लिया है। यह बहुत बड़ी भूल हुई। कांग्रेस के नेताओं ने शायद यह समझा कि विभाजन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेने से मुस्लिम लीग संतुष्ट हो जाएगी और पाकिस्तान के अतिरिक्त सारे भारत को सुख की नींद सोने देगी।

प्रस्ताव के इसी भाग में कहा गया कि 'भारत का बंटवारा हो जाने के बावजूद भी' दोनों उपनिवेशों के विस्तृत इलाकों में लूटपाट जारी है। इसमें मुझे एक शब्द पर आपत्ति है, वह है बावजूद। जहां बावजूद शब्द है वहां 'के कारण' यह शब्द होना चाहिए। आज जो हत्याकाण्ड हो रहे हैं वे बंटवारे के बावजूद नहीं, अपितु उसके कारण हो रहे हैं। यह थी कांग्रेस के नेताओं की भूल कि उन्होंने क्षण भर के लिए भी विभाजन से किसी भले परिणाम की आशा रखी थी। बहुत से देश वासी बराबर चेतावनी देते रहे हैं कि बटवारा एक विष है, यह अमृत नहीं बन सकेगा परन्तु नेताओं ने उनकी चेतावनी की ओर ध्यान ही नहीं दिया, और अपनी लोकप्रियता के भरोसे पर देश के विभाजन रूपी पाप के भागीदार बन गए। आज देश की जो दशा है, वह विभाजन का फल है।'

(अर्जुन: 26 सितम्बर 1947)

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप में वेद सप्ताह

आर्य समाज नंगल में वेद सप्ताह का कार्यक्रम दिनांक 22-8-2002 से आरम्भ हुआ। वेद सप्ताह का शुभारम्भ श्रावणी उपाकर्म और सामवेद के मन्त्रों द्वारा देव यज्ञ से किया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा प कृष्णकान्त सिद्धान्ताचार्य जी थे। प्रथम दिवस से लेकर अन्य दिवसों मे अनेकों यजमानों ने बडे ही उत्साह के साथ बढ-चढ़ कर यज्ञ मे अपना-अपना योगदान तन, मन, धन के साथ दिया। यज्ञ की पूर्णाहुति वाले दिन जो कि दिनाक 1-9-2002 को हुई है उसका समापन समारोह उत्साह पूर्वक करते हुए दयानन्द बाल विद्यालय नंगल व अन्य विद्यालयों के बच्चों ने गायत्री मन्त्र व अन्य कविताओं से सभी को आकर्षित किया। बच्चों के कार्यक्रम के बाद मे उनको आर्य समाज की ओर से पुरस्कार भेट किए गए। अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्रीमान सुरेन्द्र रावल जी द्वारा बड़ा ही मनोहारी भजन प्रस्तुत किया गया और श्रीमान् आसरकरण दास सरदाना जी द्वारा भी यज्ञ से अनेकों प्रकार के लाभ प्राप्त होते है, इस सन्दर्भ में प्रवचन सुनने का सौभाग्य सभी श्रोताओ को प्राप्त हुआ।

आर्य समाज खरड़ का शताब्दी समारोह

आर्य समाज खरड़ का शताब्दी समारोह 16, 17 नवम्बर 2002 को हो रहा है। 9 नवम्बर को यजुर्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ हो रहा है जिसकी पूर्णाहुति 17 नवम्बर रविवार को होगी। इस अवसर पर कई उच्चकोटि के विद्वान् पधार रहे हैं। **–विश्वबन्धु, प्रधान**

सत्कर्म के बिना सद्गति असम्भव

आर्य समाज बी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली में प्रवचन करते हुए वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री गणेश प्रसाद विद्यालंकार ने बताया कि मनुष्य जन्म परमात्मा का दिया वरदान ही नहीं अपितु सर्वोत्तम पुरस्कार है। पुरस्कृत व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी है कि वह अपने पुरस्कार की गरिमा को अक्षुण्ण रखे। इसी क्रम में उन्होंने सुकर्म पर बल देते हुए सुकर्मा बनने का सन्देश दिया। आचार्य श्री ने यह भी समझाया कि अपराध और प्रज्ञापराध किसे कहते हैं। किसे अधिक दण्ड भोगना पड़ता है। अपराध हुआ, समझने के पश्चात् न किए जाने का संकल्प लेना उत्तम है, परन्तु प्रकृष्ट रूप से ज्ञानवान होने के पश्चात् भी किया गया अपराध प्रज्ञापराध की कोटि में आ जाता है। अतएव सावधान ! प्रज्ञापराधी न बने।

सत्य और असत्य के प्रसंग मे उन्होंने बताया कि सत्यवक्ता मानसिक रूप से स्वतन्त्र किन्तु असत्य-वक्ता मानसिक रूप से परतन्त्र रहता है। असत्य वक्ता को अपने द्वारा बोले गए असत्य को निरन्तर ध्यान में रखना पड़ता है कि उसने कब तथा किससे किस प्रकार का असत्य भाषण किया है जबकि सत्यवक्ता को ऐसा कुछ नहीं करना पड़ता। जीवन का निचोड़ (सत्य) बताए बिना कैसी परिसमाप्ति अतएव उन्होंने अत्यन्त मार्मिक एवम् हृदयग्राही पंक्तियां कुछ इस प्रकार कहीं:–'ओ३म् गुणगान करो, जीवन महान करो, प्रभु के भजन में ही लगन लगी रहे। सत्य ही आचार करो, सत्य ही विचार करो, सत्य ही व्यवहार करो, यही मानवधर्म है॥'

उनके प्रवचन पर कुछ जिज्ञासाएं, श्रीमती विमला मलिक और श्री कृष्णदेव जी ने रखीं, जिनका समुचित समाधान विद्वान् वक्ता ने किया।

कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी जी ने किया तथा वक्ता महोदय का धन्यवाद ज्ञापन प्रधान पदासीन श्री डॉ० सुन्दर लाल कथूरिया जी ने किया। शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

–योगेश्वर चन्द्रार्य, प्रचार मन्त्री

श्री प्रो० कुन्दन लाल जी शर्मा की धर्मपत्नि का देहावसान

आर्य समाज के सुयोग्य विद्वान् भू.पू. सभा मन्त्री स्व० श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा के छोटे भाई प्रो कुन्दन लाल जी शर्मा की धर्मपत्नि श्रीमती कौशल्या देवी का गत दिनों टौरन्टो-कैनेडा मे देहावसान हो गया। प्रो. कुन्दन लाल जी होशियारपुर कालेज से सेवा मुक्त होने पर आर्य समाज टोरन्टो (कैनेडा) में पुरोहित के रूप मे उनकी माग पर वहा चले गए थे। वहीं उनकी धर्मपत्नि का देहावसान हो गया। अब वह होशियारपुर अपने निवास स्थान म न -57, माडल टाऊन होशियारपुर मे आए हुए हैं। परमात्मा से प्रार्थना हे कि वह श्रीमती कौशल्या देवी को उनके पवित्र कर्मो के अनुसार सद्गति प्रदान करें और परिवार को वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान करें। **–धर्मदेव आर्य**

भठिण्डा में हिन्दी दिवस का आयोजन

आर्य समाज भठिण्डा के सत्संग के बाद हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। यज्ञ उपरान्त आर्य समाज के पुरोहित प ध्रुव कुमार शास्त्री ने हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में अपने प्रवचन मे कहा कि राष्ट्र की उन्नति व एकता के लिए राष्ट्रीय भाषा हिन्दी का राजकीय कार्यालयो एव व्यवहार में प्रयोग होना चाहिए। श्री ओ पी मगला प्रधान आर्य समाज ने कहा राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लिए हिन्दी भाषा अनिवार्य है तथा यह भी कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचने के लिए अंग्रेजी आवश्यक है लेकिन इसके साथ ही प्रातीय भाषा भी आवश्यक है। श्री हुक्म चन्द गोयल प्रिं आर्य माडल स्कूल भठिण्डा ने भी अपने विचार रखे। **–प्रेम भाटिया**

मानसा में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज मानसा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव बड़ी धूमधाम मे मनाया गया। इस कार्यक्रम में आर्य हाई स्कूल के बच्चे व टीचरों ने भाग लिया। यज्ञ के पश्चात् बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। आर्य स्कूल के प्रिंसीपल ने बच्चों को शुभाशीर्वाद दिया। श्री सुनील कुमार जी ने श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्री कृष्ण जी एक युगपुरुष थे जिन्होंने अन्याय को मिटाया। आज हमें भी एक न एक संकल्प अवश्य लेना चाहिए। अन्त में बच्चों को फल वितरित किए गए। **–कृष्ण कुमार, मन्त्री**

आर्य समाज वेद मन्दिर कोटकपूरा में हिन्दी दिवस

14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर आर्य समाज कोटकपूरा में सुबह 8 बजे से 8.45 तक हवन यज्ञ किया गया। उसके बाद आर्य स्कूल के ग्यारह बच्चों ने हिन्दी दिवस और अन्य विषयों पर अपने-अपने विचार रखे। इस अवसर पर आर्य समाज के कोषाध्यक्ष डॉ० देवराज मुख्याध्यापिका श्रीमती सत्या मक्कड़, श्रीमती अनिता अध्यापिका और श्री नानकचन्द मुख्य अध्यापक आर्य स्कूल, सुर्गापुरी ब्रांच ने निर्णायकगणों की भूमिका निभाई। मंच संचालन श्री ललित बजाज सचिव आर्य समाज ने बड़े सुन्दर ढंग से किया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आने वाले बच्चों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। हिस्सा लेने वाले सभी बच्चों को भारत विकास परिषद की ओर से सान्त्वना पुरस्कार के रूप में स्मृति चिन्ह दिए गए।

डॉ० देवराज कोषाध्यक्ष आर्य समाज ने भारत विकास परिषद के पदाधिकारियों श्री सुनील जी, श्री जयपाल जी, श्री नरेश पाल जी, श्री टी. आर. अरोड़ा, श्री मनूजा एवं अन्य सदस्यों का स्कूल में आने पर आभार व्यक्त किया व धन्यवाद किया। **–डॉ० देवराज, कोषाध्यक्ष**

जालन्धर में श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर माडल टाऊन जालन्धर में दिनांक 25-8-2002 से 1-9-2002 तक श्रावणी उपाकर्म (वेद सप्ताह) भिन्न-भिन्न परिवारों में पारिवारिक सत्संग के रूप में बहुत ही उत्साह तथा श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस पावन अवसर पर दिल्ली से पधारे हुए आचार्य श्री गणेश प्रसाद जी विद्यालंकार प्रातःकालीन दैनिक सत्संग एव सायंकालीन पारिवारिक सत्संगों में अमृत वर्षा करते रहे, स. श्री सुरेन्द्र सिंह गुलशन तथा श्रीमती रश्मि घई जी के मनमोहक भजनों का भी लोगों ने आनन्द उठाया। सभी परिवारों में यज्ञ के पश्चात् भजन तथा उपदेश हुए। श्रोताओं की भारी संख्या उपस्थिति प्रेरणादायक व उत्साहवर्धक थी। पं० श्री हरबंस लाल जी शर्मा (प्रधान पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा) श्री रजनीश मधोक, श्रीमती राजमोहनी सोंधी, श्रीमती स्वर्ण भसीन, श्री रामपाल गोस्वामी, श्रीमती राज दीवान, श्री रवि शर्मा एवं श्री अरविन्द जी घई (प्रधान आर्य समाज माडल टाऊन) ने अपने-अपने परिवारों में यह कार्यक्रम रख कर इसको सफल बनाया है। हम सभी का धन्यवाद करते हैं।

भटिण्डा में पुरस्कार वितरण समारोह

आर बी डी ए.वी. पब्लिक स्कूल का शिला न्यास वेदमन्त्रों उच्चारण के साथ श्री के आई मनूजा रीजनल डायरेक्टर डी ए.वी पब्लिक स्कूल बठिण्डा एवम् हिसार जौनल के कर कमलों द्वारा किया गया। इस शुभ अवसर पर यज्ञ आर्य समाज के पुरोहित श्री ध्रुवकुमार शास्त्री ने करवाया।

पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन रेलवे इन्डोर हाल में हुआ श्रीमती एम एल लाटिका प्रिंसिपल डी ए वी. पब्लिक स्कूल बठिण्डा ने आये मेहमानों का स्वागत किया। श्री के आई. मनूजा डायरैक्टर स्कूल्ज, श्री वर्जीर चन्द्र मंगला संरक्षक जिला आर्य सभा, प्रो. ओ.पी.मगला प्रधान आर्य समाज बठिण्डा एवम् श्रीमती लाटिका जी ने ज्योति जला कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मिसेज रितु सपरा इन्चार्ज ने सास्कृतिक कार्यक्रम एवं पुरस्कार वितरण समारोह का संचालन किया।

अमृतसर में हिन्दी दिवस

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर की ओर से दिनांक 15 सितम्बर 2002 रविवार को आर्य समाज के विशाल प्रांगण में "हिन्दी दिवस" बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः हवन-यज्ञ के साथ हुआ। तत्पश्चात् श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय एवम् वैदिक गर्ल्ज सी.सै. स्कूल की छात्राओं ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का तथा परमपिता परमात्मा के नाम "ओ३म्" का गुणगान भजनों के माध्यम से किया। महाविद्यालय की छात्राओं ने एवम् स्कूल की छात्राओं ने हिन्दी के प्रति अपने हृदय की उद्गार भाषणों एवं कविताओं के रूप में प्रस्तुत किए जो विशेष सराहनीय थे।

आर्य समाज के प्रधान श्री ओंकार नाथ जी बहल तथा महामन्त्री श्री इन्द्रजीत जी भाटिया ने कार्यक्रम के मुख्यातिथि श्री बनारसी दास जी (मंत्री, आर्य समाज नवांकोट) को सरोपा तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। हिन्दी के प्रति आर्य समाज के बहुमूल्य योगदान की जानकारी देते हुए श्री बनारसी दास जी ने कहा कि आज पुनः आवश्यकता है कि ऐसे राष्ट्र प्रेमियों की जिन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी के लिए कई बार जेल भी काटी उनमें श्री इन्द्रजीत जी भाटिया महामंत्री आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द भी हैं जिन्होंने 7 महीने का कारावास फिरोजपुर जेल में काटा। मंच संचालक श्री जोगिन्द्र लाल लखोत्रा जी ने किया जो प्रशंसनीय था। इस अवसर पर वैदिक गर्ल्ज सी.सै. स्कूल की प्रिंसिपल प्रेम जी खन्ना तथा स्कूल स्टाफ और श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की प्राचार्या सुश्री मनवीन जी और समस्त प्राध्यापिकाएं तथा छात्राएं उपस्थित थीं। अन्त में नगर के आए हुए गणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद श्री इन्द्रजीत जी भाटिया ने किया।

आर्य समाज अबोहर की गतिविधियां

आर्य समाज अबोहर में 1-9-2002 को कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़े समारोह से मनाया गया। यज्ञ के यजमान श्री संजीव कुमार बब्बर एवं श्रीमती भारती जी बने। यज्ञ के ब्रह्म श्री पं. अशोक कुमार जी थे। बी.एल. वैदिक कन्या हाई स्कूल तथा आर्य पुत्री पाठशाला की कन्याओं ने मधुर भजन गाए और प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रसिद्ध विद्वान् श्री वेद प्रकाश जी, श्री बी.एल. नागपाल, श्री परमानन्द जी डोडा, माता कौशल्या देवी को सम्मानित किया गया।

13-9-2002 को हिन्दी सेवी स्वामी केशवानन्द जी पूर्व राज्य सभा सदस्य की 30वीं पुण्य तिथि पर हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रायोजित साहित्यिक चेतना यात्रा सम्बन्धी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसके संदोजक डॉ० चन्द्र त्रिखा जी थे। 32 प्रमुख साहित्यकार तथा अकादमी के अध्यक्ष करनल शेर सिंह भी वहां पधारे। आर्य समाज अबोहर के प्रधान श्री सोहन लाल सेतिया, महामन्त्री श्री प्रेम प्रकाश आर्य ने उनको सम्मानित किया। श्री बी.एल. नागपाल, श्री बी डी. अग्रवाल, श्री सोहन लाल झांब, श्री परमानन्द जी डोडा, श्रीमती रेणू श्री शादी लाल और श्री अशोक कुमार शर्मा भी वहां उपस्थित थे।

14-9 2002 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता श्री प्रेम प्रकाश आर्य महामन्त्री आर्य समाज थे। बी एल. वैदिक कन्या स्कूल के स्टाफ तथा बच्चों ने इसमे भाग लिया। श्री प्रेम प्रकाश जी, श्री वेद प्रकाश जी, श्री बी.डी. अग्रवाल, श्री सोहन लाल जी झाव मुख्याध्यापिका, श्रीमती सरोज सचदेवा द्वारा बच्चों को सम्मानित किया। 15-9-2002 को साप्ताहिक सत्संग के बाद श्री रविकान्त एवं श्रीमती विद्यावन्ती जी को सम्मानित किया गया। उनका स्थानान्तरण अबोहर से फाजिल्का भारतीय स्टेट बैंक में होने के उपलक्ष्य पर यह समारोह किया गया।

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन सिविल लाईन लुधियाना की ओर से 6-10-2002 को पारिवारिक सत्संग सायं 4.30 से 6.30 बजे तक श्री डा. आर.एल. नारंग के निवास स्थान माया नगर में गवर्नमैंट कालेज के सामने लुधियाना में होगा। **–नरेन्द्र भल्ला**

एक आवश्यक निवेदन

"अगर इस कुतुबखाने की किताबें कुरान के माफिक हैं तो कुरान के रहते इनकी कोई जरूरत नहीं और अगर ये कुरान के खिलाफ हैं तो इन्हें दुनिया में रहने का हक नहीं है, इसलिए कुतुबखाने में आग लगा दी जाए।" धर्मान्ध यवन आक्रान्ताओं द्वारा इस तरह के आदेश देकर जब पुस्तकालयों को अग्निसात् किया जा रहा था और आर्ष ग्रन्थों का घरों में भी सुरक्षित रह पाना असम्भव सा बन गया था, तब ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण युवाओं ने उन में से अनेक ग्रन्थों को कण्ठस्थ करके उनकी विषय वस्तु को सुरक्षित रखने की साधना की थी।

भारतीय संस्कृति तथा उसकी संदेश वाहिका संस्कृत भाषा को निर्मूल करने की जो मैकाले योजना अंग्रेज़ी राज्य में सफल न हो पाई, उसे आज के शासक बने हुए काले अंग्रेज अपनी दुर्नीतियों द्वारा संस्कृत को अप्रांसगिक बनाकर सफल बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। वर्तमान में संस्कृत का अध्ययन करके उसे जीवित रखने का प्रयत्न करना वैसी ही कठिन साधना है जैसी कभी सुग्रन्थों की विषय वस्तु को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें कण्ठस्थ करने की थी।

इसी दुस्तर स्थिति से जूझने के लिए महर्षि दयानन्द के गुरु श्री दण्डी विरजानन्द सरस्वती की जन्मभूमि करतारपुर में उन्हीं के नाम पर सन् 1970 से एक गुरुकुल चल रहा है जिसमें विद्यार्थियों के भविष्य का ध्यान रखते हुए संस्कृत साहित्य, वेद, दर्शन आदि के अतिरिक्त आधुनिक विषयों की शिक्षा भी साथ-साथ चलती है जिससे ये विद्यार्थी स्नातक होकर एम०ए०, बी०एड० अथवा प्रतियोगिता परीक्षाओं के माध्यम से जीविका का साधन खोजकर संस्कृत तथा संस्कृति की संरक्षा निर्भीक भाव मे कर सकें। यह गुरुकुल न केवल इन्हें निःशुल्क शिक्षा ही प्रदान करता है, अपितु इन्हें आवास तथा भोजन की सुविधा भी निःशुल्क प्रदान करता है।

ऐसे प्रत्येक विद्यार्थी पर गुरुकुल का लगभग 600/- रुपए प्रतिमास व्यय होता है। इसमें अध्यापकों का वेतन, गौशाला आदि का व्यय जोड़कर लगभग 21 लाख रुपए वार्षिक व्यय होता है। यह सारा व्यय केवल आप जैसे दानी सज्जनों तथा संस्थाओं के सहयोग पर ही निर्भर है। सरकार से किसी प्रकार का अनुदान प्राप्त नहीं है। इन दिनों इन विद्यार्थियों के लिए नये विद्यालय भवन का निर्माण चलने से व्यय और भी बढ़ गया है। अत: आप स्वयं तथा अपनी संस्था द्वारा इस राष्ट्रीय सारस्वत यज्ञ में आहुति डाल कर हमारे प्रयत्न को सबल बनाने का प्रयत्न अवश्य कीजिए।

कृपया अपनी दान राशि का चैक या ड्राफ्ट 'श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट' के नाम से ही बनवाएँ, जो करतारपुर या जालन्धर में भुगतान योग्य हो। मनिआर्डर/चैक/ड्राफ्ट निम्न पते पर ही भेजें-ट्रस्ट को दिया गया दान धारा 80-जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

-: निवेदक :-

संचालक प्रधान आचार्य मन्त्री

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट, करतारपुर।

शोक समाचार

आप सबको यह जानकर बहुत दुख होगा कि अमर शहीद पं० लेखराम स्मारक मण्डल, कादियां जि. गुरदासपुर के कर्मशील प्रधान श्री बलदेव राज जी बजाज का 17-9-2002 को लम्बी बीमारी के बाद स्वर्गवास हो गया है। उनकी शव यात्रा में सभी वर्गो के गणमान्य महानुभाव भारी संख्या में शामिल हुए। उनका अन्तिम सस्कार आर्य समाज भठिण्डा के मान्य पुरोहित श्री ध्रुव कुमार शास्त्री जी ने दयानन्द मठ दीना नगर के ब्रह्मचारियों के सहयोग से पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया जिसे देख कर सभी उपस्थित लोग अत्यन्त प्रभावित हुए और उनकी वैदिक संस्कारों के प्रति श्रद्धा जागृत हुई। अंत में दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

-रोशन लाल, मन्त्री

फिरोजपुर में महर्षि दयानन्द चौक का उद्घाटन

गत दिनों फिरोजपुर में स्थानीय आर्य समाजों, आर्य अनाथालय, डी ए वी. संस्थाओं आर्य शिरोमणि सभा आदि के सहयोग से बने महर्षि दयानन्द चौक का उद्घाटन माननीय श्री प्रवीण चोपड़ा एस.एस पी. फिरोजपुर के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्य शिरोमणी सभा ने आर्य अनाथालय के सामने एक विशाल आर्य सम्मेलन किया जिसमें आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान युवक हृदय सम्राट आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। उन्होंने महर्षि दयानन्द के जीवन के सम्बन्ध में बताते हुए देश, धर्म पर बलिदान होने की प्रेरणा दी।

महर्षि दयानन्द चौक से फिरोजपुर की शोभा बढ़ी है। सम्मेलन के अन्त में आर्य शिरोमणि सभा के प्रधान श्री मोहन लाल जी व मन्त्री श्री विजयानन्द जी ने सभी का धन्यवाद किया। श्री हरीश गुप्ता द्वारा प्रसाद बांटा गया।

-मनोज आर्य, मन्त्री

दण्डी स्वामी विरजानन्द जी..........

(पृष्ठ 4 का शेष)

प० लेखराम लिखते हैं कि– "एक दिन एक दक्षिणी ब्राह्मण को दण्डी जी ने अष्टाध्यायी का पाठ करते सुना। उसकी ध्वनि उनकी धर्म-प्रिया अन्वेषण करने वाली आत्मा के निष्पक्ष कान मे पहुंची, तो आत्मा मानो समाधिस्थ होकर महर्षि पाणिनी के अनमोल सूत्रों को सुनने लगी। तत्पश्चात् सुने हुए पाठ को विचारा। अब वे प्रतिदिन अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य का पाठ सुना करते थे। इस प्रकार उन्होंने सम्पूर्ण अष्टाध्यायी और महाभाष्य कण्ठस्थ कर लिए थे।"

अब विलक्षण साधु दण्डी जी वेद और वेदानुकूल ग्रंथों में अत्याधिक आस्थावान थे। वे आर्ष-ग्रन्थों के विषय में कोई समझौता करने को तैयार न थे। उनका मानना था कि आर्ष-ग्रथों का प्रचलन सभी सुधारो का मूल है। जिससे सभी भ्रांत विचार स्वत: दूर हो जाते हैं। उनकी घोषणा थी कि निघण्टु, निरुक्त, अष्टाध्यायी और महाभाष्य ऋषि-प्रणीत ये चारों ग्रन्थ रत्न आर्य जाति की अपार विद्या के भण्डार की कुजी हैं तथा वेदों को समझने का एक सुनिश्चिय मर्ग। इसलिए उनकी पाठशाला में अब केवल अष्टाध्यायी पढ़ाई जाती थी। आर्ष-ग्रन्थों की कल्प-लता को पल्लवित रखने के लिए ऐसा आवश्यक था।

आर्ष-ग्रन्थो मे अत्यधिक श्रद्धा के कारण दण्डी जी अनार्ष-ग्रन्थों के खण्डन में सिह के समान गरजते थे। क्योंकि उनके अनुसार ये ग्रन्थ भ्रमोत्पादक तथा साम्प्रदायिक-सकीर्णता, द्वेष, घृणा एवं प्रमाद से भरे हुए है। जिनमे परस्पर गहन मतभेद हैं। इसलिए मनुष्यों द्वारा चलाए सम्प्रदायों के वे घोर विरोधी थे। भारत-भूमि में हो रहे अनर्थ का कारण वे इन ग्रन्थो के पठन-पाठन को ही मानते थे। इनमे शब्दाडम्बर अधिक ओर सार कम होता है। मनुष्य-कृत इन ग्रन्थो मे ईश्वर और ऋषियों की निन्दा भरी पडी है। जिससे धम की महती काफी हानि हुइ। ऐसे ग्रन्था के कारण धार्मिक सामाजिक ओर दार्शनिक चिन्तन में संकीर्णता पनपती है। परिणाम स्वरूप ईश्वराधना के नाम पर बाह्य आडम्बर एवं अगणित पंथ व सम्प्रदाय फैले और विकासवादी मनुष्य ऋषित्व की अपेक्षा पशुता की ओर अग्रसर हुआ ऐसे मे वेद और आर्ष साहित्य की वकालत कर दण्डी जी ने दार्शनिक दृष्टि से सामाजिक एकता का बीजवपन किया।

आर्ष-अनार्ष भेद का त्रिसूत्रीय फारमूला:–मौलिक-चेता प्रज्ञाचक्षु दण्डी जी सम्वेत वाङ्मय में केवल आर्ष-ग्रन्थों के ही पक्षधर थे। उनसे पूर्व किसी में साहस न हुआ कि पुरातन ऋषि-परम्परा को पुन: जीवित करे। यह श्रेय ब्रह्म-ऋषि दण्डी जी को ही जाता है जिन्होंने अवैदिक ग्रन्थों का पठन-पाठन छुड़वा कर ऋषि रचित ग्रन्थों के प्रचार की भीषण प्रतिज्ञा की एवं समस्त आर्ष-वाङ्मय के पुनरुद्धार का द्वार खोल दिया।

इसलिए तब उन्होंने अपौरुषेय वेदों के अतिरिक्त का शेष समस्त संस्कृत-वाङ्मय को दो भागों में विभक्त कर दिया–आर्ष एवं अनार्ष– वैदिक-कालीन ऋषि-रचित ग्रंथ– आर्ष एवम् महाभारत-कालोपरांत लिखित पुस्तकें अनार्ष घोषित कर दी गई और दोनों में भेद दर्शन का त्रिसूत्रीय नुस्खा प्रदान किया––(क) आर्ष ग्रन्थ के शुभारम्भ में 'अथ' अथवा ओ३म् शब्द का मिलना। (ख) आर्ष-ग्रन्थों का सार्वभौम सत्य के प्रतिपादक, संशय नाशक एवं लोकोपकारक होना। एवं (ग) आर्ष ग्रन्थों की टीकाएं सर्वमान्य मनीषियों द्वारा लिखी होना आदि।

शास्त्र की शुद्धता, प्रामाणिकता, व्याख्या एवं व्याख्या-शैली महत्वपूर्ण थी तथा शास्त्रों की शुद्धता परखने, विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए व्याकरण सहायक था। अत: व्याकरण ग्रंथ भी तो आर्ष ही होना चाहिए। इसलिए देश भर के पण्डितों को आर्ष-अनार्ष का भेद समझाना चाहते थे।

इस प्रकार उन्होंने तत्वदर्शी ऋषियों के आर्ष-ग्रन्थों को पहचानने की अचूक कसौटी प्रदान की और अनार्ष-ज्ञान के घनघोर घन में छिपे आर्ष-ज्ञान के सूर्य के पुन: दर्शन करवाए। वे वेदों को सूर्यवत्त स्वत: प्रमाण, आर्ष-ग्रन्थों को परत: प्रमाण एवं अनार्ष को अप्रमाणिक मानते थे। अत: वेदो को प्रमाण मानते हुए वे उन्हें के आधार पर उचित अनुचित का निर्णय करते थे।

उनके अनुसार अंग्रेजी राज्य से पूर्व समाज व्यवस्था इन्हीं ऋषि प्रणीत ग्रथो के आधार पर चलती थी। तब ये ग्रंथ ही विधान थे, यही संविधान। एव इन्ही से जनजीवन प्रभावित और व्यवस्थित होता था। क्योंकि भारतीय-संस्कृति के मूलाधार यही ग्रंथ हैं। इनके आधार पर जीवन यापन करने वाले भारतीयों से विश्व के लोग शिक्षा लेने आते थे। अत: जब भी वेदोक्त मान्यताओं के विपरीत कोई होगा, तो कोई ऋषि या वेदज्ञ ब्राह्मण राजा से विद्वानों की सभा बुलाकर निर्णय करते और तत्सम्बन्धी आदेश जारी करवाते थे।

उन्होंने इस कार्य आर्ष-आन्दोलन को परवाण चढ़ाने के लिए स्व रचित शब्दबोध, वाक्य-मीमांसा और पाणिनीय-सूत्रार्थ प्रकाश की भी आहुति दे डाली थी। इसी समस्या के समाधान में लगा समय ही उन्हें सार्थक लगता था। कोई पूछता तो वे अपनी आयु की गणना भी आर्ष युगारम्भ से करते थे।

आर्ष-अनार्ष ग्रन्थ निर्णय के लिए दण्डी जी ने पूरा एक दशक (1859-68) लगाया था। वे अपने शिष्यों को कहा करते थे कि "आज मैं जिस अग्नि को घूमाकर तुम्हारे भीतर प्रविष्ट करता हूं, कल वह महाशक्ति में परिवर्तित होकर भारत-भूमि को भ्रान्त मत और विश्वासों के जंजाल को भस्मी भूत कर डालेगी।" जीवनीकार के अनुसार "ज्ञान का यह एक ऐसा महायज्ञ था जो विश्व में सम्भवत: दण्डी जी ने ही रचा था। जिसमें उन्होंने अपना सर्वस्व होम दिया था।"

"महर्षि पाणिनी, कात्यायन, पंतजलि व यास्क की परम्परा में महान मनीषी विरजानन्द का सदा के लिए गौरवमय स्थान सुरक्षित हो गया। जब तक अष्टाध्यायी और महाभाष्य रहेंगे, विरजानन्द का 'विरज' नाम सूर्य की भांति चमकता रहेगा।"

आर्ष-ग्रन्थों के प्रामाण्यवाद का प्रतिपादन उनका एक क्रान्तिकारी आविष्कार एवं मौलिक देन है। देशोद्धार के लिए वे आर्ष-ग्रन्थों का प्रचार अनिवार्य मानते थे। उनका यह अभियान अवैदिक मतों का फैलाव रोकने और नैतिक व सामाजिक-व्यवस्था बनाए रखने की दिशा में आज भी उतना ही प्रासंगिक है। अर्थात् दार्शनिक विवादों के घटाटोप में दण्डी जी की विचार-बिजली ने ही हमें मार्ग दिखाया।

जीवनीकार के शब्दों में "उनके हृदय में जो आर्ष-ज्ञान ज्योति प्रज्ज्वलित हुई, उसने उन्हें ऋषित्व का अधिकारी बना दिया। ....जिस मनीषी ने सहस्त्रों वर्षों के पश्चात् वेद को स्वत: प्रमाण घोषित करते हुए, जिसने आगे बढ़ने के लिए वेद की ओर पीछे मुड़ने का निर्देश किया। जिसने संसार को वेदार्थ सम्मेलन की कुंजी प्रदान की उस महाप्राण ऋषि को शत-शत प्रणाम।"

श्री सिद्धेश्वर शर्मा सम्मानित

डी एम. कालेज आफ एजुकेशन मोगा के कार्यकारी प्रिंसिपल श्री सिद्धेश्वर जी शर्मा को इन्टरनैशनल पब्लिशिंग हाउस के द्वारा 'बैस्ट सिटीजन आफ इण्डिया अवार्ड-2002' देकर सम्मानित किया गया। श्री सिद्धेश्वर जी शर्मा को यह अवार्ड मिलना एक प्रसन्नता की बात है इसके लिए वह बधाई के पात्र हैं।

चण्डीगढ़ में आयुर्वैदिक मैडिकल कैम्प

आर्य समाज सैक्टर 22 चण्डीगढ़ में 22-9-2002 को प्रात: 10 बजे आयुर्वैदिक मैडिकल कैम्प लगाया गया जिसका उद्घाटन आर्य समाज के प्रधान श्री रामरत्न जी महाजन ने किया। इस कैम्प में विशेष रूप से रक्त चाप, अस्थमा, चरम रोग, हृदय रोग, मधुमेय व स्त्री रोगो का इलाज किया गया है इसमें लगभग 300 रोगियों का फ्री इलाज किया गया। दोपहर बाद दो बजे तक कैम्प चलता रहा। डाक्टरों के भोजन आदि की व्यवस्था आर्य समाज की ओर से की गई। इस कार्य की सभी लोगो ने सराहना की।

भठिण्डा में पारिवारिक सत्संग

रविवार तारीख 8.9 2002 को आर्य समाज सिरकी बाजार के द्वारा मोंगा परिवार के गृह निवास पर हवन यज्ञ व सत्सग का आयोजन किया गया। जिनका गृह निवास भठिण्डा के सबसे बड़े गुरुद्वारे सिंह सभा के पीछे है। गुरुद्वारे व मेन सड़क से घर तक ओ३म् के झण्डों से सारी समाजों के बेनरों से सजाया गया। सड़क से गृह निवास तक गली के निशान लगाए गए। लगभग तीन सौ महानुभावों ने इस सत्संग में भाग लिया। इस सत्संग मे ज्यादातर सिख परिवार थे? उन्होंने इस बात की सराहना की कि कितना मेल है, सारी समाजों के बैनर हैं। हमारे गुरुद्वारों के बैनर भी इस तरह नहीं लगते और एक अच्छा सुझाव भी दिया कि आप यजमान को सफेद धोती-कुर्ता व जनेऊ पहना कर यज्ञ में बिठाया करें। स्त्री आर्य समाज व जिला प्रचार मन्त्री ने अच्छे-अच्छे भजन सुनाए। समाज को भरपूर दान मिला। दरी, चादरें, माईक, सामग्री, समिधा, कपूर आदि की भी सेवा की सराहना की। तीन रविवारों के सत्संग भी आगे के लिए चुने गए हैं। पंडित गजेन्द्र कुमार, उर्मिला, कृष्णा, इन्दिरा जी का भरपूर सहयोग रहा।

–कृष्ण लाल जटाना

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक दूरभाष 292926

आर्य मर्यादा
जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 24 सृष्टि संवत 1960853103, 6 अक्तूबर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

आर्य समाज क्या है?—

आर्य समाज की मान्यताएं और उद्देश्य

□ *ले. श्री मुमुक्षु आर्य*

• **आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ और प्रगतिशील।** आर्य समाज का अर्थ है श्रेष्ठ व प्रगतिशील व्यक्तियो का समाज जो वेदानुकूल पथ पर चलने का प्रयास करते हैं और दूसरों को प्रेरित करते हैं। हमारे आदर्श और पूर्वज मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगीराज श्री कृष्ण सच्चे अर्थों मे आर्य थे। उनका सारा जीवन वेदानुकूल था। महर्षि दयानन्द ने उसी वेदानुकूल चले आ रहे वेद मत की पुन: स्थापना हेतु आर्य समाज की स्थापना की।

• आर्य समाज के सब सिद्धान्त व नियम वेदों पर आधारित हैं। फलित ज्योतिष, जादू-टोना, जन्मपत्री, श्राद्ध, तर्पण, व्रत, भूत-प्रेत, देवी जागरण, मूर्तिपूजा व तीर्थ यात्रा आदि सभी मनगढत व वेद विरुद्ध हैं। ऐसे अन्धविश्वासो व पाखण्डो आदि मे पड़कर जीवन के बहुमूल्य समय को नष्ट नहीं करना चाहिए। पूजा का वास्तविक अर्थ वेद व महापुरुषो की शिक्षाओ पर चलना और प्रात: सायं ध्यान करना है।

• आर्य समाज झूठ- ूठ की देवी-देवताओं की पूजा छ ड़वा कर सच्चे ईश्वर की (ज वायु व आकाश की तरह सब जगह है और कभी अवतार नहीं लेता, सब मनुष्यो को उनके कर्मानुसार फल व अगला जन्म देता है) पूजा करने के लिए कहता है। ईश्वर का ध्यान घर में कहीं एकान्त मे बैठकर किया जा सकता है।

• जैसे परमाणुओं को कोई नहीं बना सकता, न उनके टुकड़े किए जा सकते हैं अर्थात् वह अनादि काल से हैं इसी तरह एक परमात्मा और हम जीवात्माएं भी अनादिकाल से हैं। परमात्मा आत्माओं को कर्म करने के लिए परमाणुओं को गति प्रदान कर सृष्टि रचता है और फिर चार ऋषियों के मन मे लगभग 20378 वेदमन्त्रो का अर्थ सहित ज्ञान एवं अपना परिचय देता है आज से लाखों वर्ष पूर्व राजा इक्ष्वाकु के काल में वेद पुस्तक रूप में आए।

• आर्य समाज के वेद के अतिरिक्त अन्य माननीय ग्रन्थ उपनिषदें, छ: दर्शन गीता, वाल्मीकि रामायण आदि हैं। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द जी ने बिना किसी का पक्षपात किए 'सच-झूठ' क्या है?' का युक्तिपूर्वक एवं बड़े रोचक ढंग से वर्णन किया है। जो भी इसे ध्यानपूर्वक पढ़ता है स्वयं को धन्य समझता है। 18 घण्टे समाधि में लीन रहने वाले योगिराज दयानन्द ने परमेश्वर व मनुष्य कृत लगभग 8000 पुस्तकों का मन्थन कर के एक अद्भुत एवं क्रान्तिकारी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश की रचना की।

• आर्य समाज हवन, यज्ञ का घर-घर प्रचार करना चाहता है। दुनिया के बड़े-बड़े वैज्ञानिक जैसे डॉ० हेफकिन जिसने चेचक के टीके की खोज की थी, प्रो टिलवर्ड, प्रो. टाटलि आदि ने सिद्ध किया है कि यज्ञ की अग्नि मे जलने वाले घी, शक्कर जड़ी-बूटियों, सूखे फल आदि से चेचक, टी बी. टाईफाइड आदि बीमारियो के कीटाणु थोड़ी देर में मर जाते हैं। आज से तीन हजार वर्ष पूर्व प्रत्येक घर में हवन होता था और पर्यावरण प्रदूषण की कोई समस्या नही थी।

• ईश्वर का सर्वोत्तम व निज नाम **ओ३म्** है। ईश्वर में अनन्त गुण होने के कारण उसके ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, महादेव, शिव, शंकर, देवी, मंगल, बुद्ध, शुक्र, शनि, राहू, केतु, माता, पिता, आचार्य, वरुण, बृहस्पति, अग्नि, इन्द्र आदि अनन्त नाम हैं। इन नामों से पृथक्-पृथक् मूर्तियां बना कर पूजना मूर्खता है।

• आर्य समाज **वर्णव्यवस्था** अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र कर्मो से मानता है, न कि जन्म से।

• आर्य समाज मांस, अंडे, बीड़ी, सिगरेट, शराब, चाय, मिर्च-मसाले आदि तामसिक भोजन को वेद विरुद्ध मानता है।

• आर्य समाज स्वदेशी, स्वभाषा, स्वसंस्कृति और स्वधर्म का पोषक है।

• आर्य समाज सृष्टि उत्पत्ति का समय 4 अरब 32 करोड़ वर्ष और इतना ही समय प्रलय काल का मानता है। योगाभ्यास द्वारा प्राप्त मुक्ति का समय वेदानुसार 31 नील 10 खरब 40 अरब अर्थात् एक परान्त काल मानता है।

• आर्य समाज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा उत्पादित उत्पादनो का बहिष्कार एवं कुटीर उद्योगों से निर्मित वस्तुओ के इस्तेमाल पर ही जोर देता है।

• आर्य समाज **वसुधैव कुटुम्बकम्** का प्रचारक एव भूमण्डलीकरण को देश, समाज व संस्कृति के लिए घातक होने की वजह से इसका पुरजोर विरोध करता है।

• आर्य समाज स्वदेशी, सादगी, सदाचार व शाकाहार की जीवन-शैली को अपनाने और भोगवाद को बढ़ाने वाली पाश्चात्य जीवन-शैली से बचने-बचाने का आन्दोलन रहा है जिसे फिर से गति देने की जरूरत है।

• आर्यसमाज **वैदिक समाज रचना** के निर्माण व आर्य चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने के लिए प्रयासरत्त है इस महान कार्य को सफल बनाने के लिए स्वदेशी देशभक्तो, नवजवानो व महिलाओं को आगे आने की अपील करता है।

• आइए । आर्य समाज के द्वारा किए जा रहे कार्यो में सहयोग दें। संसार में बढ रहे भ्रष्टाचार, अमानव , हिंसा, भोगवाद, मूर्तिपूजा, बहुदेवतावाद, जातिप्रथा, वर्ग भेद, भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण व अपसंस्कृति के दश को नाकाम करने के लिए जुट जाए। यही ऐसा आन्दोलन है जिसके जरिए सम्पूर्ण जगत् मे सुख-शान्ति का साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है।

• लुधियाना में योग शिविर

आर्य समाज माडल टाऊन लुधियाना के तत्वावधान मे 6 से 10 अक्तूबर 2002 तक क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर योग सम्राट पूज्यपाद स्वामी सत्यपति जी महाराज रोजड, गुजरात की अध्यक्षता में हो रहा है। कार्यक्रम प्रात: 6.30 से 9 बजे तक रात्रि 8 से 10 बजे तक चलेगा।

—अनुरुध शास्त्री

परमात्मा की महानता

□ ले. स्व. आचार्य राम प्रसाद जी वेदालंकार

किं मे हव्यमहृणानो जुषेत॥ ऋ० 7-86-2॥

अर्थः-(किं मे हवयम् अहृणानः जुषेत) क्या मेरे हव्य को वह वरुण बिना क्रुद्ध हुए-बिना खीजे हुए प्रीतिपूर्वक स्वीकार कर लेगा ?

साधक-भक्त-उपासक यह सोचता है कि-"मैं वरुण का दर्शन करना चाहता हू, मै उसको जानना चाहता हू-मै उसको पाना चाहता हू-मै उसको अपने हव्य द्रव्यों की भेंट चढाना चाहता हू-मै उसको अपनी आहुति देना चाहता हू-मैं अपने आपको हव्य बनाकर उसमे अर्पित करना चाहता हूं, पर मै फिर सोचता हू-"क्या मेरा हव्य इस योग्य है भी कि वरणीय वरुण देव उसको विना झुञ्झलाए हुए सहज ही स्वीकार कर सके?" साधक को क्यो ऐसा सन्देह , क्या ऐसा शक है-क्यों ऐसी शंका है ? इसलिए न ! कि वह देखता है कि वह पुकार तो पभु को रहा है-"हे मेरे प्यारे प्रभुवर! किसी तरह मे मेरा खोया हुआ वैभव मुझ मिल जाए किसी तरह से मेरी खाई हुई गाय-भस मुझे मिल जाए, किसी तरह मेरी खोई हुई नारी मुझे मिल जाए, किसी तरह मेरी खोई हुई पुत्री मुझे उपलब्ध हो जाए, किसी तरह मेरा यह मृत मा पुत्र पुनः जी जाए जैसे पंजाव मे एक भक्त बाहर मे तो भगवान को पुकार रहा है, उससे प्रार्थना कर रहा है, पर उसको भगवान् की नहीं वरन् कई पुत्रियां क उपरान्त उत्पन्न हुए पुत्र के स्वस्थ होने की चाह ह। तभी तो सारी रात वह पागलो की तरह जागता हुआ यही वड बडाता रहा कि-"भगवान्, इसे वचा लेना भगवान् इसे वचा लेना, भगवान् इसे बचा लेना ।" सब घर के सदस्य बैठे हुए है। बच्चा पडा हुआ है, वह न हिलता है न डुलता ह, न ही वह सांस लेता ह और न ही वह सांस छोडता हुआ प्रतीत होता ह। 1-मृत जान कर सबने पिता की झोली मे उसको उठाकर भूमि पर लिटा दिया है। पर पिता है कि फिर भी सारी रात वह 'भगवान् इसे बचा लेना, भगवान् इसे बचा लेना ही की रट लगाए रहा।' प्रातः होते ही उस बच्चे ने कुछ हिलना-डुलना शुरू किया,-फिर धीरे-धीरे उसने आखें खोली, तो उनकी बेटियो ने कहा-"पिता जी, पिता जी, पिता जी, भैय्या ने आंखें खोल दी.. ।" पिता ने उसे देखा तो अश्रुधारा से उसने प्रभु का धन्यवाद किया।

पर वास्तव में उस व्यक्ति की यह पुकार (यह आह्वान) प्रभु के लिए नहीं थी वरन् यह तो वस्तुतः उस बच्चे ही के जीवन के लिए थी। इसलिए प्रभु नहीं आया, प्रभु ने उसको दर्शन नही दिया....। वही व्यक्ति वर्षो के उपरान्त किसी आश्रम में मुझ (लेखक) को मिलता है और कहता है-'आचार्य जी ! क्या बात है, मैं इतना सादा रहता हूं, इतना सात्विक खाता-पीता हू, इतना स्वाध्याय करता हू, इतना विरक्त रहता हू, इतने भक्ति भरे वैराग्य के गीतों को झूमते हुए गाता हूं, परन्तु फिर भी न जाने क्यों मुझे वह दर्शन नहीं देता ? न जाने क्यो मुझे वह कृतार्थ नही करता ?' तब मैंने उन्हें यही कहा कि वह राजा वरुण जानता है कि इसको मेरी आवश्यकता नहीं है। बाहर से तो यह मुझे पुकारता है, पर भीतर से यह सांसारिक वस्तु, व्यक्तियों एवं स्थानो की ही चाहना करता रहता है, आदि-आदि।

इसी तरह मै भगवान् की स्तुति करता हू तो इसलिए कि वह दयालु है, कृपालु है, न्यायकारी है, पक्षपात रहित है, सब तरह से सच्चा-सुच्चा है, इत्यादि-इत्यादि। पर मैं उसकी स्तुति इसलिए करता हूं कि वह मुझ पर दया करे, कृपा करे, कहीं मेरा पुत्र सर्विस के लिए जाए तो उसे सहज ही सर्विस मिल जाए, उसे लाईन में, पंक्ति में न खड़ा होना पड़े। कहीं उसके साथ अन्याय हो रहा हो तो वह न्यायकारी प्रभु उसको न्याय दिलाए; कहीं वह पिछड रहा हो तो वह उसको आगे ले आए, यह सब कुछ मैं अपने व अपने परिजनो के लिए चाहता हूं, तभी मै उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करता हूं पर अगर मैं सचमुच उसका सच्चा स्तोता होता, तो मैं भगवान् के इन गुणो के स्तवन से उसमे अपने स्वार्थों की पूर्ति नहीं करना चाहता होता बल्कि मैं तो फिर प्रभु की कृपा, दया,न्याय, पक्षपात रहित सब प्राणियों के प्रति किये जाने वाले प्रेमपूर्ण व्यवहारों से प्रभावित होकर मैं भी तब स्वयं दया, कृपा, न्याय, पक्षपात रहित होकर सब के प्रति व्यवहार करने लगता। तब वह प्रभु भी मुझ पर प्रसन्न होकर मुझे निहाल कर देता।

भक्त चाहता है, प्रार्थना भी करता है कि प्रभु उस को यह दे, वह दे। उसने उसे यह नहीं दिया, वह नहीं दिया; उसने उसका यह कार्य नहीं किया, वह कार्य नहीं किया, समय-समय पर मैं वह गिले शिकवे भी खूब करता है, प्रार्थना भी खूब करता है। प्रभु से मांगता भी खूब है, उसके द्वार पर हाथ भी खूब पसारता है, अञ्जलि भी फैलाता है, झोली भी फैलाता है, और यह भी कहता हुआ रोता है कि-'भगवन् ! देख मेरे घर का कुठला खाली है-घर की बोरी खाली है, घर का कनस्तर खाली है, घर का झोला खाली है, यह खेत भी खाली है। अतः तू कृपा कर, दया कर, और मुझको अन्न-धन आदि से माला-माल कर।' इस प्रकार वह प्रार्थना तो खूब करता है, गिड़गिड़ाता भी खूब है, पर प्रार्थना के पूर्व जो पुरुषार्थ करना चाहिए, वह तो वह कुछ थोड़ा-बहुत भी नहीं करना चाहता, तो फिर भला उस पर वह प्रभु कैसे कृपा करे और कैसे उसे पूर्णकाम करे ?

वह उपासना करता है, प्रभु के समीप बैठता है, आसन में बैठता है, रीढ़ की हड्डी, ग्रीवा-गर्दन और सिर भी सीधा रखता है, हाथ जोड़ता है, आंखें बन्द करता है ताकि बाहर का कोई रूप-रंग व दृश्य इसको आकर्षित न कर सके, अपने कानों में रुई व मोम भी वह धरता है, ताकि उसे बाहर की कोई आवाज न सुनाई दे। मुख को भी वह बन्द किए रहता है, और वह किसी से बात भी नहीं कर रहा होता है। पर कहने को तो वह उपासना में बैठा होता है और संसार की सभी वस्तुओं, सभी व्यक्तियों तथा सभी स्थानों में अपनी सभी इन्द्रियों को बन्द किए हुए होता है, अर्थात् अब वह बाहर से किसी को निहारता हुआ भी नहीं प्रतीत होता, श्रोत्रों से किसी को श्रवण करता हुआ भी नहीं दिखाई देता, कानों से किसी को सुनता हुआ भी नहीं दिखाई देता, हाथों से कोई कार्य करता हुआ भी नहीं दिखाई देता, त्वचा से किसी का स्पर्श करता हुआ भी नहीं दिखाई देता, चरणों से कहीं विचरता हुआ या दौड़ता-भागता हुआ भी नहीं लगता, और सचमुच प्रभु का यह प्यारा भक्त आसन लगाए उसी की ही उपासना में लीन, उसी के सन्निकट बैठा हुआ दिखाई देता है। इस प्रकार बाहर से तो यह एक बहुत ऊंचा साधक-उपासक लगता है, पर प्रभु कहता है कि "यह तो मैं जानता हूं कि यह कहने को तो मेरे पास बैठा हुआ है, पर भीतर से तो यह अपनी वस्तुओं, व्यक्तियों और स्थानों के समीप बैठा हुआ उन्हीं का ही उपासक बना हुआ होता है।

एक व्यक्ति रेल में संध्या कर रहा है। कहने को यह भक्त-यह उपासक प्रभु का भजन कर रहा है, उसकी उपासना करता हुआ उसी के ही पास बैठा हुआ प्रतीत हो रहा है, पर भीतर से यह अपने सामान के समीप बैठा हुआ उसी का ही उपासक बना हुआ है, तभी तो इसके मन में ये भाव आ रहे हैं कि-"कहीं कोई मेरी अटैची, बैग व पर्स आदि-आदि न उठा ले।" अतः बाहर से प्रभु भजन करता हुआ प्रभु के समीप बैठा हुआ प्रतीत होते हुए भी वह मन से उन्हीं अटैची, बिस्तर आदि वस्तुओं के समीप बैठा हुआ, उन्हीं की उपासना करता हुआ, उन्हीं का उपासक कहलाता है। ऐसे ही एक मां-बहन सन्ध्या उपासना करती हुई कहने को तो वह प्रभु की उपासना करती हुई उसके ही समीप बैठी हुई प्रतीत होती है, पर भीतर से वह अपनी रसवती-रसोई-किचन में बच्चों के समीप बैठी हुई सोचती है कि-"सन्ध्या आदि के उपरान्त मैं आज बच्चों के लिए खीर बनाऊं? या आलु व मूली व गोभी आदि के परांठे बनाऊं ? सन्ध्या करता हुआ एक व्यक्ति सन्ध्या में कहने को उपासक के रूप में अपने प्रभु के समीप बैठा हुआ है, पर भीतर से-'पता नहीं बच्चे ने होमवर्क किया कि नहीं, बेटी ने कुछ खाया कि नहीं ? उसने मां से स्कूल के लिए फीस ले ली कि नहीं ? या बेटा बाहर पढ़ता भी है कि नहीं ? उसका बहुत दिनों से पत्र नहीं आया, पता नहीं उसका स्वास्थ्य ठीक भी है कि नहीं, उसके पास खर्चे के लिए पैसों आदि की कमी तो नहीं है, आदि-आदि।' वह अपने बच्चों के समीप बैठा हुआ उन्हीं के विषय मे ही सोचता हुआ उन्हीं की ही उपासना कर रहा है। हां मौखिक शब्दों का उच्चारण मात्र भजन भी हो रहा है कबीर के शब्दों में-

माला तो कर में फिरे, जीब फिरे मुख माहीं।
मनुवा तो चहुंदिश फिरे, यह तो सिमरन नाहीं॥

इसी प्रकार पिछली छुट्टियों में हम दिल्ली गए थे वहां ऐतिहासिक स्थान देखे थे, अब की छुट्टियों में कश्मीर या बम्बई आदि जायेंगे। देखो बच्चे क्या कहते हैं-'इत्यादि।' तो इस तरह कहने को हम उपासक उस प्यारे प्रभु की उपासना कर रहे हैं, पर भीतर से हम बच्चों के साथ गर्मियों की छुट्टियों में घूमने का प्रोग्राम बना रहे हैं।

गेय.....

अमृतसर में समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों ने निश्चय किया है कि जो आर्य समाजें सभा अधिकारियों को आमन्त्रित करेंगी सभा अधिकारी वहां अवश्य पहुंचेंगे, उसी के अनुसार सभा अधिकारी 15-9-2002 को आर्य समाज सै०-22 चण्डीगढ़ में पहुंचे थे और अब 29-9-2002 को आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर के समारोह पर वहां पहुंचे।

आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार में इस समय सभा द्वारा बनाई गई तदर्थ समिति कार्य कर रही है। इस आर्य समाज का कार्य अब पहले से बहुत ठीक चल रहा है। पिछले दिनों वहां कुछ अनियमितताएं पाई गई थी और इसी कारण से तदर्थ समिति बनाई गई। इस आर्य समाज द्वारा वैदिक गर्ल्ज सी.सै. स्कूल व आर्य महिला कालेज चल रहा है। इस आर्य समाज की एक बहुत बड़ी बिल्डिंग है जो चार मंजिला बनी हुई है। यह आर्य समाज जहां अमृतसर में सबसे प्रसिद्ध आर्य समाज है वहां सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों में भी इस आर्य समाज का एक विशेष स्थान है। इस आर्य समाज के प्रधान श्री ओंकार नाथ जी बहल और मन्त्री श्री इन्द्रजीत जी भाटिया हैं।

वैदिक गर्ल्ज सी.सै. स्कूल की प्रिंसिपल प्रेम खन्ना जी हैं, लेखक श्री योगेन्द्र लाल जी हैं। आर्य महिला कालेज की प्रिंसिपल मनवीन कौर जी हैं। स्कूल व कालेज की प्रबन्ध समिति प्रिंसिपल तथा स्टाफ मिलकर इन्हें उन्नति की ओर ले जाने के लिए कार्य कर रहे हैं। दोनों संस्थाएं सभा की देख रेख में सुचारू रूप से चल रही हैं और उन्नति कर रही हैं। आर्य समाज के वर्तमान अधिकारियों ने 29-9-2002 रविवार को एक समारोह का आयोजन किया जिसमें अमृतसर की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों को आमन्त्रित किया गया। आर्य समाज नवांकोट, आर्य समाज लक्ष्मणसर, आर्य समाज माडल टाऊन, पुतलीघर आदि अमृतसर की सभी आर्य समाजों को आमन्त्रित किया था और सभी आर्य समाजों के अधिकारी वहां पहुंचे थे, केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर के भी सभी अधिकारी वहां आए थे। सभा वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदर्शन जी शर्मा, उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य, श्री आशानन्द जी आर्य, महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार जी, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, कार्यालयाध्यक्ष पं० धर्मदेव को आमन्त्रित किया था।

सभा महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार जी अभी-अभी मॉरिशस सम्मेलन से वापिस गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय में हरिद्वार पहुंचे हैं क्योंकि वह गुरुकुल के कुलपति भी हैं, कार्य अधिक होने के कारण वह गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार से अमृतसर नहीं पहुंच सके। श्री स्वतन्त्र कुमार जी की यह हार्दिक इच्छा थी कि वह अमृतसर अवश्य पहुंचे परन्तु कार्य अधिक होने के कारण वह वहां नहीं पहुंच सके फिर कभी समय मिला तो वह अवश्य पहुंचेंगे।

सभा वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदर्शन कुमार जी शर्मा, जालन्धर में विशेष कार्य होने से अमृतसर नहीं जा पाए। श्री आशानन्द जी आर्य, श्री सरदारी लाल जी आर्य सभा उपप्रधान, श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा रजिस्ट्रार, श्री धर्मदेव जी कार्यालयाध्यक्ष विशेष रूप से अमृतसर पहुंचे। श्री प्रियतम देव जी मोगा से तथा श्री कमल किशोर जी भार्गव नगर, जालन्धर से भी वहां पहुंचे थे।

इस समारोह का आरम्भ यज्ञ से किया गया। प्रातः 10 से 11 बजे तक बृहद् यज्ञ हुआ और इसके पश्चात् सभा अधिकारियों के वहां पहुंचने पर ज्योति प्रज्ज्वलित करके समारोह का शुभ आरम्भ किया गया और स्कूल व कालेज की छात्राओं ने ईश्वर भक्ति के गीतों से सभी को भाव-विभोर कर दिया। श्री दिनेश जी के भी बड़े प्रभावशाली भजन हुए। मंच का संचालन श्री योगेन्द्र लाल जी व अनु बहल ने किया।

श्री आशानन्द जी आर्य ने बोलते हुए कहा कि आर्य समाज का कार्य निरन्तर बढ़ता जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने वेद प्रचार के कार्य को पंजाब में बहुत तीव्र कर दिया है। हम सब को मिलकर वेद प्रचार का कार्य करना चाहिए। श्री सरदारी लाल जी आर्य ने कहा कि आर्य समाज को राजनीति में भाग लेना चाहिए था हमारे नेताओं ने यह भूल की है जब आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने राजनीति में भाग लेना आरम्भ किया तो आर्य समाज की बात आम जनता तक पहुंची लोक सभा में जब श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री जो आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता थे, बोलते थे तो सारा हाल गूंज उठता था और पता चलता था कि एक आर्य समाजी बोल रहा है। पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी, श्री शिव कुमार जी शास्त्री, श्री ओम प्रकाश त्यागी, पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी जब बोलते थे तो राजनीतिक लोगों पर और देश की जनता पर उनका प्रभाव पड़ता था। स्त्री शिक्षा पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि आर्य समाज ने ही स्त्री शिक्षा के लिए सर्वप्रथम बीड़ा उठाया। उन्होने आगे कहा कि हमें आर्य समाज की सदस्यता बढ़ानी चाहिए। अधिक से अधिक लोगों को आर्य समाज में लाना चाहिए।

श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा ने कहा कि सभा ने निश्चय किया है कि जिलावार सम्मेलन करके फिर प्रान्तीय स्तर पर पंजाब में कई स्थानों पर बड़े-बड़े सम्मेलन किए जाएंगे जिनमें आर्य समाज के सामने आने वाली ज्वलन्त समस्याओं के सम्बन्ध में विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि गुरुकुल कांगड़ी में 30 तीस आर्य समाजों के अधिकारियों का मन्त्री, प्रधान, कोषाध्यक्षों का एक सैमीनार लगाया जाएगा। उन्होंने आर्य शिक्षा संस्थाओं में धर्मशिक्षा अनिवार्य करने के सम्बन्ध में भी बताया कि अब सभा से सम्बन्धित शिक्षा संस्थाओं में धर्म शिक्षा आरम्भ कर दी है। उन्होंने कहा कि आर्य समाजों के अधिकारी अपने बच्चों को भी साथ लेकर आएं । उनको भी आर्य समाज का सदस्य बनाएं। आर्य समाज को आगे ले जाने के लिए नई पीढ़ी तैयार होनी आवश्यक है। नौजवानों को भी आर्य समाज में लाना चाहिए। श्री धर्मदेव जी ने भी आर्य जनता को सम्बोधित किया।

इस अवसर पर जालन्धर से पधारे सभी अधिकारियों को आर्य समाज की ओर से शाल आदि भेंट करके सम्मानित किया गया। आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री वैद्य बाबू राम जी शर्मा व माता कौशल्या जी को भी शाल आदि भेंट करके सम्मानित किया गया। माता कौशल्या जी ने इस अवसर पर घोषणा की कि वह कालेज व स्कूल में संस्कृत में प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाली छात्राओं को पुरस्कार राशि देगी।

अमृतसर के सभी प्रतिष्ठित महानुभाव वहां पहुचे हुए थे। श्री इन्द्रपाल जी लक्ष्मणसर, श्री ओम प्रकाश जी आर्य महर्षि धाम, श्री दर्शन कुमार प्रधान केन्द्रीय सभा, श्री राकेश मेहरा मन्त्री, श्री हरबंस लाल भगत, डॉ० प्रकाश चन्द जी नवां कोट, श्री बनारसी लाल जी नवांकोट, श्री ओम प्रकाश भाटिया, श्री रमेश वोहरा तथा अन्य बहुत से महानुभाव वहां पधारे थे। आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार के सभी सदस्य व अधिकारी वहां उपस्थित थे और सभी ने इस समारोह को सफल बनाने में अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया।

अन्त में श्री ओंकार नाथ जी बहल ने सभी सभा अधिकारियों, आए हुए सभी आर्य समाजों के अधिकारियों व स्कूल-कालेज के प्रिंसिपलों व स्टाफ का धन्यवाद किया। अन्त में ऋषि लंगर प्रीति भोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर के सभी अधिकारी इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

—धर्मदेव आर्य

जिला लुधियाना में आर्य समाजों की गतिविधियां

❑ प्रस्तुतकर्त्ता–आशानन्द आर्य सभा उपप्रधान लुधियाना

देश के विभाजन के समय लुधियाना नगर मे केवल तीन आर्य समाजे थीं। आर्य समाज साबुन बाजार दाल बाजार दोनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित थी। तीसरी आर्य समाज हिन्दी बाजार प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित थी, कुछ समय पश्चात् आर्य समाज हिन्दी बाजार बन्द हो गई। ऐसा सुना गया कि उस स्थान को बेच दिया गया वहा अब हौजरी का व्यापार होता है। जैसे-जैसे नगर की जनसंख्या बढती गई नई आर्य समाजे भी बढती गई। **आर्य समाज अग्र-नगर** फिरोजपुर रोड पर नहर से आगे सडक के दोनों ओर एक सुन्दर कालोनी अग्रनगर बनी हुई हे। इस नगर को बनाने का विचार तीन अग्रवाल भाईयों के मन में आया। सौभाग्य से तीनों व्यक्ति आर्य समाज दाल बाजार से सम्बन्धित थे। स्व पूर्णचन्द गुप्ता, स्व राम जी दास अग्रवाल दोनों आर्य समाज दाल बाजार के अधिकारी थे। तीसरे श्री ओम प्रकाश गुप्ता भी उसी समाज के सदस्य थे जो आजकल दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना के प्रधान के रूप में सेवा कर रहे है। उन्होंने बड़ी लग्न परिश्रम त्याग से यह सुन्दर कालोनी बना कर बगैर लाभ के नगर को सौगात के रूप में दे दी। इस कालोनी के बी सैक्टर में आर्य समाज मन्दिर एवं सनातन धर्म मन्दिर के लिए सड़क पर स्थान सुरक्षित रख दिया। सनातन धर्म सभा ने मन्दिर बना कर और एक फ्री औषधालय बना दिया जो वहां की जनता की सेवा कर रहा हे। आर्य समाज मन्दिर बनाने में स्व० श्री मदन मोहन एडवोकेट, स्व० श्री मत्यपाल अग्रवाल और श्री कपिल जी एडवोकेट का पूरा योगदान है। मन्दिर निर्माण में श्री सत्यपाल जी अग्रवाल ने अनथक परिश्रम किया है। वह समय-समय पर निर्माण के लिए मुझसे सलाह कर लिया करते थे। इस समाज के साथ कई दुकानें हैं, सुन्दर यज्ञशाला, बड़ा हाल, कमरे हैं योग्य पुरोहित भी है। सत्संग, पर्व एवं वार्षिकोत्सव नियम पूर्वक होते हैं। इस समाज के पहले वार्षिकोत्सव पर स्व० श्री वीरेन्द्र जी भी पधारे थे। उस समय के अधिकारियों ने इस आर्य समाज को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ सम्बन्धित करने का वचन दिया था परन्तु श्री मदनमोहन जी एडवोकेट की अकस्मात मृत्यु के कारण यह कार्य न हो सका। आर्य समाज के मन्त्री लग्नशील योग्य युवक श्री स्वदेश जी शर्मा हैं। जब भी मुझे मिलते हैं इस समाज को सभा से सम्बन्धित कराने के लिए कहते रहते हैं। अग्रनगर के साथ कई कालोनिया बन गई हैं, भाई रणधीर सिंह नगर, राजगुरु नगर इन में शहर के कई पुराने आर्यो ने अपने मकान बना लिये हैं यदि वह इस आर्य समाज के सदस्य बन कर इसे सहयोग देना आरम्भ करें तो यह आर्य समाज बहुत उन्नति कर सकती है। विशेष रूप से डा० सत्य भूषण बांगिया, श्री अरुण थापर, श्री अजय कुमार बत्रा, श्री रौशन लाल शर्मा, श्री रणधीर शर्मा, श्री नन्दलाल आहूजा बहुत सहयोग दे सकते हैं।

आर्य समाज माडल टाऊन– उत्तरी भारत की सबसे गतिशील समाज के रूप में उभरी है। माडल टाऊन का निर्माण करते समय आर्य समाज मन्दिर, सिंघ सभा, सनातन धर्म मन्दिर के लिए स्थान निश्चित करके छोड़ रखे थे। मन्दिर एवं सिंघ सभा ने अपने स्थान ले लिए थे, आर्य समाज का स्थान खाली पड़ा था। पुराने आर्य समाजी कहते हैं कि पाकिस्तान से आए प्रसिद्ध आर्य समाजी भ. सन्त राम जी स्याल ने अपने घर के जेवर बेच कर इस स्थान को खरीदा जो रुपए बाद में उन्हें समाज ने वापिस कर दिए। स्थान खरीदने के बाद कई परिवार उनसे जुड़ गए। म सन्तराम एवं उनका सारा परिवार हीरो परिवार के सदस्य स्व दयानन्द मुन्जाल, स्व बाल मुकन्द मुन्जाल, स्व. सदानन्द जी मुन्जाल और श्री ब्रजमोहन मुन्जाल, श्री सत्यानन्द मुन्जाल, श्री ओम प्रकाश मुन्जाल, श्री जगदीश चन्द्र रहेजा, स्व. ठेकेदार केशवचन्द, स्व. स्वरूप नारायण बजाज, स्व. ओम प्रकाश सूद एवं कई गणमान्य व्यक्तियों ने इस आर्य समाज तथा इसके अधीन कई संस्थाओं को बनाने में तन, मन धन से सहयोग दिया और जब से इस आर्य समाज की बागडोर महात्मा सत्यानन्द ने सम्भाली है तब से इस आर्य समाज को चार-चांद लग गए हैं। शायद ही भारत का कोई विद्वान्-सन्यासी ऐसा होगा जो इस आर्य समाज में न आया हो। अब इस आर्य समाज के अधीन बी.सी.एम. स्कूल आर.एस. माडल स्कूल बड़ी सफलता से चल रहे हैं। इसमें एक सुन्दर यज्ञशाला जोकि पंजाब में सबसे सुन्दर है और दयानन्द हाल भी है। अब इस आर्य समाज ने कन्या गुरुकुल खोलकर पंजाब को एक नई दिशा दी है। इस गुरुकुल में जितना स्थान है उससे कई गुणा ज्यादा प्रवेश के लिए प्रार्थना पत्र आते हैं। सबसे खुशी की बात है कि इस समाज के सब सदस्य सपरिवार आर्य समाज की सेवा में जुटे रहते हैं इनके उत्सवों पर स्कूलों का सारा स्टाफ एवं विद्यार्थी बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं–आर्य शिक्षण संस्थाओं को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। इस आर्य समाज में सुन्दर यज्ञशाला कई कमरे-हाल एवं कई दुकानें मार्किट इत्यादि हैं। इस आर्य समाज को पुरोहित श्री अनुरूध जी शास्त्री जी लगनशील विद्वान् एवं मधुर वक्ता मिले हुए हैं यह आर्य प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित है।

आर्य समाज जवाहर नगर– माडल टाऊन एवं भारत नगर के मध्य में स्यालकोट एवं जम्मू से आए मेघ-बटवाल भाईयों के पुनर्वास के लिए सरकार ने यह नगर बसाया था। इन जातियों के बुजुर्गों को मुसलमान-ईसाई बनाने से रोकने के लिए आर्य समाजियों ने कई प्रकार की कुर्बानियां दी, परन्तु पाकिस्तान बनने पर आर्य समाज ने इनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और वह भाई आर्य समाज से दूर चले गए। जवाहर नगर में सरकार ने गुरुद्वारा एवं सनातन धर्म मन्दिर एवं आर्य समाज मन्दिर के लिए एक जैसा स्थान रखा हुआ था। मन्दिर एवं गुरुद्वारा वालों ने अपने-अपने स्थान ले लिये-इस नगर में आर्य समाज की स्थापना हुई तो मेघ बिरादरी के चौ० बलवंत राय एम.सी. आर्य समाज के प्रधान बने। उनको अपनी जगह आर्य समाज के साथ लगती थी वह अपने प्रभाव से आर्य समाज की जगह पर शनः शनः कब्जा करता रहा। उस समय जवाहर नगर के प्रसिद्ध आर्य समाजी कार्यकर्त्ता श्री यशपाल विकल बलवंत राय के विरुद्ध आवाज उठाते रहे उन्होंने इस सम्बन्ध में आर्य समाज दाल बाजार से सहायता के लिए प्रार्थना की। समाज के प्रधान श्री प्रभु दयाल जी एडवोकेट एवं आर्य नेता दीवान राम शरणदास जी ने भी बहुत यत्न किया परन्तु परिणाम कुछ न निकला उसके पश्चात् इस आर्य समाज के प्रधान श्री सुभाष जी गुप्ता एवं मन्त्री श्री विजय कुमार जी सरीन बने उन्होंने इस सम्बन्ध में केन्द्रीय आर्य सभा लुधियाना के प्रधान श्री बाल मुकन्द मुन्जाल एवं मन्त्री आशानन्द आर्य से सहायता की प्रार्थना की परन्तु उस समय तक श्री बलवंत राय एवं बटवाल सभा वालों ने आर्य समाज की काफी जगह पर कब्जा कर लिया था बाकी स्थान पर आर्य समाज मन्दिर बनना आरम्भ हो गया। मन्दिर में यज्ञशाला एक हाल, अतिथियों के लिए दो मंजिला कमरे और काफी दुकानें भी बना दी जिससे इस आर्य समाज को काफी आय होने लगी। इस कार्य में श्री सुभाष गुप्ता डा विजय सरीने-ओम प्रकाश गुप्ता-गुलाटी परिवार-गुप्ता परिवार का बड़ा योगदान है। उसके पश्चात् श्री ओम प्रकाश महाजन इस समाज के प्रधान बने। अब श्री रामलाल गान्धी श्री विजय सरीन और उनके सहयोगी इस आर्य समाज को नियम पूर्वक चलाकर प्रगति की ओर ले जा रहे हैं।

दैनिक साप्ताहिक पारिवारिक सत्संग नियमपूर्वक होते हैं। आर्य पर्व वार्षिकोत्सव बड़े समारोह से होते हैं इस समाज को चलाने में जहां अधिकारी वर्ग बड़ी मेहनत करता है। वहां गुप्ता परिवार, गुलाटी परिवार, बृज मोहन अरोड़ा का बड़ा योगदान है स्त्री समाज का सत्संग भी नियमपूर्वक चलता है।

(क्रमशः)

चण्डीगढ़ में वैदिक संस्कृति सम्मेलन

आर्य समाज सैक्टर 22-ए चण्डीगढ़ के तत्वावधान में वैदिक संस्कृति सम्मेलन बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर डॉ० वेद प्रकाश जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि परमात्मा ने जिस संस्कृति को बनाया, निर्माण किया वह अभिछिन्न नहीं हो सकती। संस्कृति का प्रवाह निरन्तर सृष्टि के आदि से चल रहा है। स्वामी दयानन्द ने वैदिक संस्कृति की धारा को चलाया। समग्र मानव जीवन वैदिक संस्कृति है। संस्कृति तो चेतना का नाम है जहां से विचार उत्पन्न होते हैं। उसके संपादन का नाम संस्कृति है वह वैदिक संस्कृति है। उन्होंने कहा कि वह प्रकाश है। प्रकाश के सामने अंधकार ठहर नहीं सकता। वैदिक संस्कृति विश्व की सभ्यताओं का अंबार खड़ा कर सकती है।

इसी अवसर पर कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने वैदिक सस्कृति पर बोलते हुए कहा कि आर्य के द्वारा ही वैदिक संस्कृति और सभ्यता का विकास हो सकता है। आजकल के मानव में सन्तोष नहीं है। वह आत्म सन्तोष वैदिक संस्कृति से ही आ सकता है उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द और दयानन्द का बलिदान व्यर्थ नहीं जाने दिया जाएगा। मन, शरीर और आत्मा को वैदिक संस्कृति ही जोड सकती है।

डॉ० नरेन्द्र जी ने कर्म के ऊपर बोलते हुए कहा कि जाति, आयु और भोग हमें कर्म के अनुसार ही मिलते हैं। मनुष्य को अपने कर्म की जिम्मेदारी स्वय ही लेनी चाहिए। कर्म सस्कृति वेद की व्यापक सस्कृति है। जो कर्म आप कर रहे हैं उनका फल आपको ही मिलेगा। जितनी योनियां बनी है, कर्म की वजह से ही बनी हैं।

श्रीमती सरोज शर्मा ने कहा कि आज आर्य समाज की स्थिति दयनीय है। जिस आर्य संस्कृति से हमारा जीवन बन रहा है उससे हम पीछे हट रहे हैं। हमें आज अपने आत्म निरीक्षण की आवश्यकता है। हम महापुरुषों को तो मानते हैं लेकिन उनकी नहीं मानते। वेदों की गहराई को हमें समझना चाहिए। किसी भी समस्या का समाधान हमें वेदों से ही प्राप्त हो सकता है। उन्होंने कहा कि हमें वेदों की ओर लौटना चाहिए।

श्री देवेन्द्र शर्मा रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब ने कहा कि आर्य समाज एक क्रान्तिकारी संस्था है अगर आपने वैदिक संस्कृति को समझना है तो इस क्रान्तिकारी सस्था से जुड़ना होगा।

श्री सत्यपाल जी ने अपने मधुर भजनों से सभी को मन्त्रमुग्ध किया। अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री रामरत्न महाजन जी ने सभी का धन्यवाद किया तथा ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

बुधराम आर्य, मन्त्री

बठिण्डा में पारिवारिक सत्संग

दिनांक 23 सितम्बर 2002 को सायंकाल आर्य समाज बठिण्डा के वयोवृद्ध नेता श्री वजीर चन्द मंगला के गृह निवास पर पारिवारिक यज्ञ एवम् सत्संग का आयोजन किया गया। यह यज्ञ श्री वजीर चन्द मंगला के पिता श्री नत्थू राम जी की बरसी पर किया गया। यज्ञ पूज्य ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी वैदिक मिशनरी के ब्रह्मत्व एवम् पं० ध्रुव कुमार शास्त्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। श्री ओ पी मंगला सपत्नीक यज़मान बने। पूज्य ब्रह्मचारी जी ने वेद मन्त्रों की व्याख्या करके उनके महत्व को बताया। ब्रह्मचारी जी ने श्री नत्थू राम जी की जीवन चर्चा करते हुए बताया कि वे लड़कों की शादी में गऊ दान करते थे तथा उनकी याद में गौशाला मार्किट में परिवार के सदस्यों ने एक दुकान बनवाई हुई है जिसका किराया लगभग 12 हजार रुपए वार्षिक गौशाला को आता है।

इससे पूर्व 25-8-2002 को माता परमेश्वरी देवी धर्मपत्नी स्व० ओम प्रकाश वानप्रस्थी के पौत्र चिं० भारतेष सुपुत्र श्री अनिल कुमार के जन्म दिवस पर आर्य समाज में विशेष यज्ञ किया गया। सभी ने बच्चे को आशीर्वाद दिया। **-प्रो०ओ.पी. मंगला, प्रधान**

अध्यापकों की आवश्यकता

गुरुकुल करतारपुर (जिला जालन्धर) में स्नातक कक्षाओं को विद्वता पूर्वक संस्कृत साहित्य पढ़ाने में सक्षम युवा अथवा प्रौढ़ दो अध्यापकों की आवश्यकता है। वेद तथा दर्शन की अतिरिक्त योग्यता वालों को प्राथमिकता दी जाएगी। इण्टरव्यू 20 अक्तूबर को शाम चार बजे होगा। ग्रहीत विद्वानों को आवास एवं भोजन की सुविधा के साथ 3000/- रुपए मासिक दक्षिणा भी दी जाएगी। **-यशपाल वर्मा, प्राचार्य**

भूल सुधार

आर्य मर्यादा के अंक 22-9-2002 के पृष्ठ 4 पर हिन्दी दिवस के सम्बन्ध में छपे श्री मुलखराज जी आर्य सभा मन्त्री के लेख में पहरे 2 में मुख्यमन्त्री बेअन्त सिंह जी की घोषणा भूल से छपने से रह गई है। उन्होंने उस समय साईं दास स्कूल के महासम्मेलन में घोषणा कर दी थी कि पंजाब में दूसरी भाषा हिन्दी होगी, इन शब्दों को लेख के साथ जोड कर पढ़ा जाए। **-सम्पादक**

मंज़िल को हमें पाना है

❑ *ले० पंकज गोयल, मन्त्री, आर्य वीर दल , हांसी*

आंधी मिले या तूफान मिले, मंजिल को हमें पाना है,
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ते ही हमको जाना है।
हम फैलाएंगे नई चेतना, फैलाएंगे अंधियारे से उजियारा,
हम उस म्यान की तलवार हैं, जो हर ले जग का दुःख सारा,
कांटे मिले या अंगार मिले, हमको तो चलते जाना है,
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ते ही हमको जाना है॥
रुकने नहीं देना कदमों को, एक बार जो बढ चले,
बाधाएं जिन्हें डिगा न सकें, संघर्षो में भी अडे रहे,
सिर पर मंडराता काल रहे, आता चाहे भूचाल रहे,
पर दृढ निश्चय हमारा, हमे मंजिल को पाना है।
बढ़ना ही अपना काम है, बढते ही हमको जाना है॥
पास में खड़ी है मंजिल, मजिल हमें बुलाती है,
आगे बढ़ने वालों का, साहस वो बढ़ाती है,
परिश्रम न हमारा व्यर्थ जाना है, मंजिल को हमें पाना है।
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ते ही हमको जाना है॥

अबोहर में सम्मान समारोह

आर्य समाज अबोहर में दिनांक 22-9-2002 को रविवारीय साप्ताहिक सत्संग में जलालाबाद से स्थानान्तरण होकर अबोहर डी ए वी कालेज में नियुक्त हुए प्राचार्य श्री (डॉ०) बी.सी जोसन एवं उनकी धर्मपत्नि श्रीमती रानी जोसन, यजमान के रूप में सम्मिलित हुए, जिनका आर्य समाज मन्दिर अबोहर मे पहली बार आगमन होने पर हार्दिक अभिनन्दन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के पुरोहित श्री अशोक कुमार शर्मा थे। श्री सुशील कुमार मेहता द्वारा मधुर भजन गाए गए। संध्या प्रार्थना श्री वेद प्रकाश जुनेजा द्वारा करवाई गई। प्रधान सोहन लाल जी ने सबका धन्यवाद किया।

-प्रेम प्रकाश, मन्त्री

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का उत्सव

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव 2 से 6 अक्तूबर 2002 तक मनाया जा रहा है जिसमें कई उच्चकोटि के विद्वान पधार रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। धर्मप्रेमी सज्जन समय पर पधार कर धर्म लाभ उठावें।

-विजय सरीन, मन्त्री

आर्य समाज, हिरण मगरी, उदयपुर में वेद प्रचार

आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर की ओर से वेद प्रचार अभियान धूमधाम से मनाया गया। 22 अगस्त 02 श्रावणी उपाकर्म रक्षा बन्धन से प्रारम्भ इस अभियान का समापन कृष्ण जन्माष्टमी 31 अगस्त 2002 को हुआ। इस सम्पूर्ण वेद प्रचार अभियान के मुख्यवक्ता उपदेशक श्री कुवर आनन्द सुमन सिंह थे। हाथरस से पधारे आचार्य पूर्ण लाल शास्त्री "पंछी" के सुमधुर भजनोपदेश हुए। आर्य समाज सभा भवन के अलावा परिवारों में भी यज्ञ-उपदेश के आयोजन रखे गए। जिनमें सर्व श्री अरविन्द त्यागी, अनन्त देव शर्मा, श्याम सुन्दर मेहरा, श्री बलराम चौहान, प्रधान जमनालाल गौतम प्रमुख हैं। **-राम दयाल**

वधू की आवश्यकता

वर कुशवाहा। राजपूत, गौत्र कश्यप 31/5-10 शास्त्री एम.ए. बी.एड. यू.जी.सी. (नैट) शाकाहारी शिक्षक हेतु गुरुकुल या आर्य परिवार से सम्बन्धित सुयोग्य कन्या चाहिए। जाति एवं दहेज बन्धन नहीं। फोन नं -01823-63109

-शादी लाल महेन्दु, प्रधान आर्य समाज बंगा (नवां शहर)

सदा हंसते रहें और स्वस्थ बनें

□ ले० श्रीमती स्नेह, दिल्ली-110006

हास्य-चिकित्सा द्वारा वर्तमान जीवन शैली से उत्पन्न रोगों के निदान में अच्छी सफलताएं मिल रही हैं और इस पद्धति के चिकित्सा-विशेषज्ञ असाध्य रोगों के निदान के लिए निरन्तर अनुसन्धान भी कर रहे हैं। आज की इस सुविधा-भोगी जीवन-शैली ने अनेक असाध्य और नये रोगों को जन्म दिया है। हास्य चिकित्सा में अनुसन्धान के बहुत सार्थक परिणाम प्राप्त हुए हैं।

हास्य एक ईश्वर प्रदत्त प्राकृतिक देन है और इसका खुलकर उपयोग करना चाहिए। पहले जब जीवन में इतनी भागमभाग और व्यस्तता नहीं थी और जीवन प्रायः तनावमुक्त था, तो लोग बैठक, चौपाल पर मिल बैठकर गपशप कर लेते थे, ठहाके लगा देते थे, ऊंचे स्वर में गा लेते थे और रोगों पर अंकुश लगाकर तरोताजा रहते थे। आज भी अनेक रोगों से मुक्ति के लिए, उन पर अवरोध लगाने के लिए हम सही समय, सही ढंग से हंसे और स्वस्थ रहें। हंसी-खुशी स्वास्थ्य के लिए परमावश्यक है।

हास्य का यौगिक आधार– आप रूग्ण इसलिए अनुभव करते हैं कि आपके कहकहे खो गये हैं, उन्मुक्त हास्य आपके लिए स्वप्न बन गया है। रक्तचाप, हृदय-रोग, दमा, मानसिक उत्तेजना, अवसाद (डिप्रेशन), अनिद्रा आदि अनेक गम्भीर रोगों में खिलखिलाकर हंसने से काफी लाभ होता है। उन्मुक्त हास्य द्वारा इन रोगों पर काबू पाया जा सकता है। योग में प्राणायाम के अन्तर्गत श्वास-प्रश्वास की क्रिया को सन्तुलित किया जाता है, जो पेट के ऊपर 'डाय-फ्राम' द्वारा संचालित होती है। हास्य में यह क्रिया स्वतः ही हो जाती है।

यदि हम सही समय पर, सही ढंग से मुक्त भाव से हंसने की क्रिया करें तो यह स्वयं एक औषधि सिद्ध होगी। मानसिक उत्तेजना और रक्तचाप में उन्मुक्त हास्य लाभकारी होता है, यह अनुसन्धानों से प्रमाणित हो चुका है। हंसने से आप हल्के हो जाते हैं और हंसना, अवसाद (डिप्रेशन) और अनिद्रा जैसे रोगों का भी निदान कर सकता है।

क्रोध और तनाव-छोड़ो भी ये गुस्सा जरा हंस के दिखा दो यह बात स्वस्थ रहने के लिए भी ज़रूरी है। हंसने से क्रोध काफूर हो जाता है और तनाव मे मुक्ति मिलती है। शोक एवं विषाद की स्थिति में भी हंसी रामबाण है क्योंकि हंसने का अर्थ है शोक एवं विषाद से मुक्त हो जाना। कई नगरों में आजकल ऐसे क्लब खुल गये हैं। जहां लोग इक्ट्ठे बैठकर ठहाके लगाते हैं, खुलकर अट्टहास करते हैं और पाते हैं कि इससे तनाव शिथिल पड़ गया है और वे तरोताजा होकर नये दिन की तैयारी कर सकते हैं।

मुक्त हास्य से श्वास-प्रश्वास की गति बढ़ती है जिससे अधिक मात्रा में आक्सीजन ग्रहण होती है और फेफड़ों का व्यायाम हो जाता है, जिससे यह श्वसन सम्बन्धी रोगों में भी लाभकारी है। जो ऊर्जा, तनाव एवं क्रोध में अपव्यय होने वाली थी, हंस लेने से उसी ऊर्जा का स्राव भीतर होने लगता है।

मुख की कान्ति के लिए– जब हम खुलकर हंसते हैं तो उसका तत्काल प्रभाव हमारे चेहरे की मांसपेशियों पर पड़ता है, जिससे मुख-मण्डल की त्वचा को रक्त आपूर्ति बढ़ जाती है। हंसते रहने से त्वचा की कान्ति बढ़ती है और त्वचा को बल मिलता है। इसका प्रभाव आंखों पर भी पड़ता है क्योंकि हंसने से आंखों में नमी आ जाती है और आंखों की चमक और ज्योति बढ़ जाती है। मोनालिसा का चित्र अपनी उस विशिष्ट स्थिति के कारण ही सौन्दर्य का प्रतिमान बना है।

हंसने से चेहरे पर पड़ने वाला प्रभाव पूर्णतः प्राकृतिक और अकृत्रिम है, जो स्थायी रूप से बना रहता है और मुख की कान्ति, तेज और सौन्दर्य में वृद्धि करता है। हास्य एक प्राकृतिक सौन्दर्य प्रसाधन है। जिसका कोई भी बिना कुछ व्यय किए उपयोग कर सकते हैं।

कैन्सर जैसे रोग भी–हास्य जहां एक ओर मानसिक तनाव दूर करता है, वहीं दूसरी ओर यह पेट पर भी दबाव डालता है, और कफ, पित्त के विकारों को दूर करने में सहायक होता है। हंसने की क्रिया से कफ और पित्त की मात्रा घट जाती है। यह सहज, सुलभ क्रिया एसिडिटी जैसे रोगों में भी लाभकारी है।

कैन्सर का कारण यह माना गया है कि निर्धारित मात्रा से अधिक डब्लू.बी.सी. श्वेत रक्त कणिकाएं रक्त में आ जाती हैं। हास्य से इसकी प्रतिरोधी प्रणाली को ऊर्जा मिलती है, जो कैन्सर बनाने के लिए शारीरिक व्यायाम किए जाते हैं और ये बाहरी व्यायाम बाह्य शारीरिक सौष्ठव ही बढ़ा सकते हैं। इससे अंगों का आन्तरिक व्यायाम नहीं हो पाता। हास्य उन आन्तरिक तत्वों को भी संचालित कर बाह्य व्यायाम के अनुपात को संतुलित कर देता है।

हंसी से आपके सौन्दर्य में भी वृद्धि होगी और स्वास्थ्य में भी वृद्धि होगी।

माधुर्य

□ ले० श्रीमती डॉ० स्वराजगुप्ता, एम.ए. (द्वय) दिल्ली

माधुर्य संस्कृत का शब्द है, संस्कृत को भारत की सभी भाषाओं की जननी कह सकते हैं कि राष्ट्र की यह संस्कृति हम सब को एक सूत्र में बांधे रखती है। माधुर्य का अर्थ है कि मधुर होने का भाव। मधुरता, सुन्दरता, मिठास, काव्य में वह रचना जिससे चित्त द्रवीभूत होता है और अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त होती है। मधुर-भाषा प्रयोग करने वाला व्यक्ति दूसरों को अपना बना लेता है जबकि कटु शब्द से ही मनुष्य अपने को पराया बना लेता है। क्रोध मनुष्य को पागल बना देता है। ऐसी अवस्था में उसे अपना चेहरा शीशे में देखना चाहिए, वह अवस्था को समझ जाएगा, उसे पानी का एक गिलास पी लेना चाहिए अर्थात् उसे शान्त हो जाना चाहिए ताकि दूसरों पर प्रभाव पड़ सकें। उच्चाधिकारी के गुणों को परखने के लिए हमें देखना है कि वह समस्या का समाधान कैसे करता है, वह अपने साथियों से कैसे कार्य लेता है, काम की दक्षता, निपुणता एवं कुशलता उसके व्यवहार पर निर्भर करती है। उसे ऐसी कला का प्रयोग करना होगा ताकि दूसरों से कार्य भी ले सकें, अनुशासन भी बना रहे, उसको पूरी तैयारी के साथ रहना होगा, कभी-कभी प्रतिभाशाली व्यक्ति उसके साथ काम करने वाले ऐसे प्रश्न कर बैठते हैं जो उसे सोच में डाल देते हैं। अतः उनका सहयोग लेने हेतु उसको बड़ी सावधानी, सूझबूझ तथा चतुराई से काम लेना होगा। उसकी बात करने की शैली ऐसी सुन्दर हो ताकि वह उनके मनोविज्ञान को समझ कर ऐसा सम्भाले जिस से स्थिति बिगड़ने न पाये। एक परिवार अपनी झोंपड़ी में रहता है परन्तु उसे दुःख उस बात का है कि उसके पड़ोसी ने खूबसूरत बंगला कैसे बना लिया? ईर्ष्या, द्वेष रखने वाले लोगों से भी मनुष्य का वास्ता पड़ता है। परिवार भी शान्त बना रहे, यह घर के मुखिया तथा गृहिणी पर निर्भर करता है। बहुएं शिक्षित होकर नये परिवार में आती हैं। उनको अपनी बेटियों की तरह रखा जाए अन्यथा वे भी सास-ससुर के लिए झमेला पैदा कर सकती हैं, प्रायः कभी-कभी परिवार में दो बच्चे छोटी सी बात से रुठ गए, वो दोनों आपस में बोलचाल बन्द कर देते हैं, मधुर भाषी माता-पिता उन दोनों की वाणी सुनकर समाधान निकालने का प्रयास करें। परिवार में बूढ़े लोग भी रहते हैं, उनकी कठिनाईयां, समस्याएं अन्य सदस्यों से भिन्न होती हैं, आपसी समझौते से घर में शान्त वातावरण बनाया जा सकता है। नई पीढ़ी एवं पुराने लोगों के रहन-सहन तथा संस्कृति में भिन्नता स्वाभाविक है। यदि दिल में पाप नहीं, मन में पवित्रता एवं शुद्धता है तो गृहस्थी की गाड़ी स्वर्ग-धाम बनाई जा सकती है। हमारी संस्कृति महान् है उसको आधार बनाकर सुख-शान्ति प्राप्त करने का प्रयास होना चाहिए। कुछ व्यक्ति घमण्डी होते हैं वे दूसरों को नीचा दिखाने या व्यवहार से कम आदर-सम्मान देते हैं, परिवार हो या कार्यालय, फैक्ट्री, कारखाना आदि सब जगह मनुष्य रहते हैं, शान्त एवं सुन्दर वातावरण होगा तो सारा कार्य सुचारू रूप से चलता रहेगा अन्यथा फैक्ट्री में पूरा माल तैयार नहीं होगा, समय की पाबन्दी न होने से अनुशासन में कमजोरी आ जाएगी। कभी इस वसुन्धरा पर भी अशान्ति का नाम नहीं था, हालात ने मनुष्य को वासनाओं के अन्धेरे कुएं में धकेल दिया, व्याकुलता का आभास होगा, मनुष्य को अशान्ति मिल गई, यहां तक कि बालकों में अशान्ति की झलक दिखाई देती है, नेता, अभिनेता, धनवान, धनहीन, बलवान एवं निर्बल सभी शान्ति खो बैठे हैं। मनुष्य की दुर्बलता, विषयों में संलिप्तता एवं मनुष्य की बुरी भावनाएं उसे अशान्त करती हैं। भला मनुष्य मधुर भाषी या तनाव-रहित कैसे हो सकता है? हमारे उपनिषद् आदि ग्रन्थ यही तो उपदेश देते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार को त्यागें, तभी आप सुख, शान्ति तथा सुख की निद्रा सो सकेंगे। आओ, हम चिन्ता से चिन्तन की ओर चलें, सभी समस्याओं का समाधान है। यदि हमारा संकल्प दृढ़ है, पक्का विश्वास लेकर आगे बढ़ो, सफलता अवश्य मिलेगी।

ऋषि दयानन्द द्वारा राष्ट्रीय गौरव के जागरण हेतु स्वदेशी महापुरुषों का स्मरण

ले० डॉ० भवानी लाल जी भारतीय, 8/423 नन्दन वन जोधपुर

भारत के नागरिकों में राष्ट्रीय गौरव को जगाने में स्वदेश के इतिहास पुरातन परम्पराओं तथा स्मरणीय महापुरुषों की स्मृति को पुन: जगाना आवश्यक होता है। स्वामी दयानन्द इस तथ्य से भली भांति परिचित थे। अपने ग्रन्थों में जहां-जहां प्रसंग आया उन्होंने भारत के यशस्वी पूर्वजों तथा इतिहास पुरुषों का गौरवपूर्ण स्मरण किया है। कुछ उदाहरण देखें-

(1) आर्यावर्त्त के प्राचीन चक्रवर्ती सम्राटों का नामोल्लेख करते हुए स्वामी जी सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व , यौवनाश्व, वद्ध्र्यश्व अश्वपति, शशविन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननक्तु, सर्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत्त तथा भरत आदि राजाओं को सार्वभौम, महाधनुर्धारी कहा है। (सत्यार्थ प्रकाश 11 वां समुल्लास)

(2) राम, कृष्ण, नारायण तथा शिव को वे आर्यावर्त्त का महापुरुष कह कर उल्लिखित करते हैं तथा उनकी पत्नियों का सादर उल्लेख करते हैं-'देखो, सब कोई जानते हैं कि श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण, नारायण और शवादि बड़े महाराजधिराज और उनकी स्त्री (स्त्रियां) सीता तथा रुक्मणी (राधा नहीं) लक्ष्मी और पार्वती आदि महारानियां थीं।' (11 वां समुल्लास)

(3) निष्कलंक कृष्ण-देखो, श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युनम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश ह। कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त कुछ भी नहीं किया।'' (11वां समुल्लास)

(4) ''महाराजा युधिष्ठिर जी के राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्ध पर्यन्त यहां के राज्याधीन सब राज्य थे।'' (11वां समुल्लास)

(5) वेदव्यास की प्रशंसा-''जब व्यास जी ने वेद पढ़े और पढ़ा कर वेदार्थ फैलाया, इसलिए उनका नाम वेदव्यास हुआ क्योंकि 'व्यास' कहते हैं वारपार की मध्य रेखा को। (अर्थात् ऋग्वेद के आरम्भ से लेकर, अथर्ववेद के पार पर्यन्त चारों वेद पढे थे और शुकदेव तथा जैमिनि आदि शिष्यों को पढाये भी थे।''(11वां समुल्लास)

(6) शंकराचार्य की प्रशंसा-''बाईस सौ वर्ष हुए कि एक शंकराचार्य द्रविड़ देशोत्पन्न (केरल के कालड़ी गांव में जन्मे) ब्राह्मण ब्रह्मचर्य से व्याकरणादि सब शास्त्रो को पढ़ कर सोचने लगे कि अहह! सत्य आस्तिक वेदमत का छूटना और जैन नास्तिक मत का चलना बड़ी हानि की बात हुई है . शंकराचार्य शास्त्र तो पढ़े ही थे।'' (11वां समुल्लास)

(7) सम्राट विक्रमादित्य का आदरपूर्वक उल्लेख-स्वरचित ग्रन्थों की समाप्ति पर स्वामी जी के सर्वज्ञ विक्रम संवत् एवं देशी तिथि का उल्लेख किया है। आर्योद्देश्य रत्नमाला की समाप्ति की पुष्पिका को देखें-श्रीयुत महाराजा विक्रमादित्य जी के 1934 के सवत् में श्रावण महीने के शुक्ल पक्ष, सप्तमी बुधवार के दिन श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य भाषा में सब मनुष्यों के हितार्थ यह 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' पुस्तक प्रकाशित किया।''

(8) छत्रपति शिवाजी तथा दशमगुरु गोबिन्द सिंह का गुणानुवाद-''मुसलमानों की बादशाही के सामने शिवा जी, गोबिन्द सिह जी ने खडे होकर मुसलमानों के राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया।'' तथा ''इनमे (सिखों में) गोबिन्द सिह शूरवीर हुए।'' (11वां समुल्लास)

(9) सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका को समाप्त करते हुए इसके लिखने के स्थान का उल्लेख करते हुए महाराज ने लिखा-स्थान महाराणा जी का उदयपुर। अभिप्राय यह है कि उदयपुर वह नगर है जहा का इतिहास महाराणा प्रताप जैसे स्वाभिमानी शासकों का स्मरण कराता हे। इसी प्रकार किसी पत्र की समाप्ति पर लिखा नवाब का जखरा (मध्यप्रदेश)।

एक बात जो ध्यान देने की है वह यह कि स्वामी जी प्रत्येक महापुरुष के नाम के साथ आदर सूचक 'जी' का प्रयोग करना नहीं भूलते।

पुस्तकों में हीरे मोती

पुस्तक:-पुस्तकों के बिना एक कमरा ऐसा है जैसे बिना आत्मा के एक शरीर। ''लिवस''

पुस्तकों के संग निर्धनता अच्छी परन्तु बिना पुस्तकों के धनवान नहीं बनना चाहता। ''मैकाले''

पुस्तकें मन के लिए साबुन का काम करती हैं- महात्मा गाधी

पुस्तकें अकेले में सच्चा साथी बनती हैं, आप जब भी जिस से भी मिलना चाहते हैं जैसे श्री राम जी से मिलना चाहते हैं तो रामायण पढ़े, वैसे ही गीता पढ़ते हुए श्री कृष्ण से भेंट करें तथा महर्षि दयानन्द को मिलना चाहते हैं तो सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, व्यवहारभानू आदि पढ़िये। ''पथिक''

एक मनीषी ने ठीक कहा बिना पुस्तको के स्वर्ग में न रहकर नरक में पुस्तकों संग रहना अच्छा है। ''श्री राम पथिक''

स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना की गतिविधियां

स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की ओर से निरन्तर वेद प्रचार का कार्य किया जा रहा है। गत दिनों 21 सितम्बर 2002 को प्रातःकाल श्री धर्मपाल जी खन्ना के निवास स्थान-7 ग्रीन पार्क सिविल लाईन में उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य में पारिवारिक सत्संग किया गया। श्री धर्मपाल जी खन्ना अपनी धर्मपत्नि श्रीमती राजरानी सहित यज्ञ के यज्ञमान बने, यज्ञ में उनके पुत्र, पुत्र वधुओं, पौत्र, परपोत्रों ने अर्थात् सारे परिवार ने आहुतियां डाली। यज्ञ के पश्चात् भजन व उपदेश हुआ।

21 सितम्बर को ही श्री प्रवीण जी गुप्ता, श्रीमती सुषमा गुप्ता के घर पर यज्ञ हुआ। यह यज्ञ श्री योगराज जी शास्त्री व श्रीमती जनकरानी जी आर्या ने करवाए।

29-9-2002 को प्रातः 9 बजे श्री नन्द लाल जी परुथी के घर पर यज्ञ सत्संग हुआ। 6 अक्तूबर को श्री किरण कपिल जी के घर पर 35 ग्रीन पार्क में यज्ञ सत्संग होगा। 14 अक्तूबर को न्यू शिवाजी नगर में श्री शर्मा जी के घर पर सत्संग होगा। यह पारिवारिक सत्संगों की लड़ी निरन्तर चल रही है। —जनकरानी आर्या

आर्य समाज का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

आर्य समाज चौक बठिण्डा में साप्ताहिक सत्संग यज्ञ के उपरान्त श्री श्यामलाल जी गुप्ता जी ने आर्य समाज का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी द्वारा संस्थापित आर्य समाज का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान है। भारत की एकता और अखंडता के लिए हिन्दी भाषा का अमूल्य योगदान है। आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया है। श्रीमती निर्मला देवी ने मधुरगीत गाया। प्रो० ओ०पी० मंगला प्रधान आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा में लाला देवराज जी संस्थापक कन्या महाविद्यालय जालन्धर के योगदान का विशेष उल्लेख किया।

राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार

17-8-2002 से 16-9-2002 तक पं० रघुनाथ सिंह जी एवं पं० पूर्णचन्द जोशी के नेतृत्व में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर की ओर से न्यास की भजन मण्डिलयों की ओर से उदयपुर एवं चित्तौड़ जिलों के सिंहपुर, नारेला, पाण्डोली, सुरपुर, सोनियाना, हाथियाना, कपासन, मुंगाना, भूपालसागर, जासमी, घमाना, ताणा, ठूठियां अकोला, पटोलिया, कांकरवा, निलोद, चौखण्डी, उमण्ड, ववराणा, खेमपुर, चंरोडी, सनवाड, साकरोदा, ओसलियों की मादड़ी आदि गांवों में ग्राम सभाओं में, विशेषकर विद्यालयों में छात्र-छात्राओं व अध्यापकों के मध्य वेद, ईश्वर, भारतीय संस्कृति, नैतिकता, राष्ट्रभाषा पर आहार, आचरण एवं व्यवहार आदि विषयों पर प्रकाश डालते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगीराज श्री कृष्ण, महर्षि दयानन्द आदि महापुरुषों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व से परिचित कराया। इस यात्रा में वेद प्रचार वाहन ने 656 कि मी. का सफर तय किया तथा लगभग 10,000 ग्रामवासियों ने प्रवचनों का नाभ उठाया। फलस्वरूप वेद प्रचार मण्डल के 104 परिवार सदस्य बनें तथा 7000/- का साहित्य विक्रय हुआ। करीब 4000/- का साहित्य निःशुल्क वितरण किया। न्यास के वाहन में वेद प्रचार सम्बन्धी सभी वस्तुएं विद्यमान होती हैं, यहां तक कि भोजन सामग्री भी साथ होती है।

गत वर्षों में प्रचार की इस पद्धति की सफलता को अनुभव कर न्यास अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती का कहना है कि "मेरा निश्चित मत हे कि ग्राम्य क्षेत्रों में इम प्रकार के सघन वेद प्रचार अभियान से ही आर्य समाज में आई शिथिलता दूर होगी तथा हम विस्तार के नये आयामो को स्पर्श कर सकेंगे। अतः सभी सक्षम संस्थाओं को चाहिए कि इस प्रकार के वेद प्रचार वाहन तैयार कर ग्राम-ग्राम में वेद प्रचार की धूम मचा दें।" —अशोक आर्य

आर्य समाज तलवाड़ा द्वारा गांवों में वेद-प्रचार

आर्य समाज तलवाड़ा द्वारा पहले गांव भटेड़ में वेद प्रचार किया गया था अब 22-9-2002 रविवार को वहां से 8 किलोमीटर दूर गांव टूडु में श्री रामरक्खा जी के निवास स्थान पर वेद प्रचार पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। पहले पं० परमानन्द जी ने श्रद्धा से यज्ञ करवाया। तलवाड़ा से आर्य समाज के सदस्य, स्त्री आर्य समाज के सदस्य, महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल तलवाड़ा के छात्र-छात्रायें स्कूल स्टाफ बसों द्वारा और स्कूटरों द्वारा 30 के लगभग सदस्य वहां पर पहुंचे। यज्ञ के समय वहां कोई 200 के लगभग श्रद्धालु स्त्रीयां, पुरुष और बच्चे, गांव भोल, टूडु कराड़ी, भटेड़ से वहां पहुंचे हुए थे। श्री रामरक्खा जी ने भी अपने घर को आर्य समाज मन्दिर की तरह सजाया हुआ था। रास्ते को और घर के आंगन को ओ३म् की पताकाओं द्वारा और महर्षि दयानन्द के चित्रों द्वारा सजाया हुआ था। वहां लग रहा था जैसे आर्य समाज का उत्सव हो इतनी रौनक तो कई आर्य समाजों के उत्सवों पर भी नहीं होती। श्री रामरक्खा जी को आर्य समाज के सम्पर्क में आये अभी दो मास ही हुए हैं। लेकिन जितनी श्रद्धा और लग्न श्री रामरक्खा जी ने दिखाई है इतनी तो मुझे बड़े-बड़े आर्य समाजियों में भी देखने को नहीं मिली। उनके रिश्तेदार भी आये हुए थे। यज्ञ पर उनके परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों को बैठाया गया। यज्ञ के उपरान्त स्त्री आर्य समाज की ओर से कृष्णा देवी, शान्ति देवी, मधु भाटिया, उमा, उर्मिला शर्मा ने मिल कर ईश्वर भक्ति के बहुत सुन्दर भजन सुनाये। श्री जगमोहन कंवर जी ने भी बहुत सुन्दर भजन सुनाये। इसके उपरान्त श्री अमरनाथ जी आर्य वरिष्ठ उप प्रधान आर्य समाज ने वैदिक संस्कृति में यज्ञ की महानता पर बहुत अच्छे विचार दिए और सभी को यज्ञ करने की प्रेरणा दी। इसके बाद श्री मनोहर लाल जी आर्य ने यज्ञ एक जीवन पद्धति है और ईश्वर की प्राप्ति का साधन है। वेद में ईश्वर का स्वरूप क्या है इस विषय पर प्रवचन किया? दोनों के प्रवचनों को और आर्य समाज के सत्संग को सभी ने बहुत सराहा। इस समय तक और भी गांवों के सदस्य वहां पहुंचे थे। ऋषि लंगर तैयार था सभी ने मिल कर लंगर ग्रहण किया। गांवों में वेद-प्रचार का कार्यक्रम बहुत सफल हो रहा है और बल मिल रहा है पुराने आर्य समाजी सब इक्टठे हो रहे हैं। पांच-पांच छः-छः किलोमीटर दूर से भी सभी पहुंच रहे हैं और रविवार को भी आर्य समाज तलवाड़ा के सत्संग में गांवों से सदस्य आते हैं। हमारा प्रयास है कि जिस तरह राधा स्वामी गांवों में एक सैन्टर बना कर प्रचार करते हैं इसी तरह हम भी करें। सभी इर्द-गिर्द के आर्य समाजी वहीं आयें। मैं समझता हूं अगर सारी आर्य समाजें ऐसे ही प्रयास करें तो वेद का ज्ञान हर घर परिवार और गांव तक पहुंच सकता है। —मनोहर लाल आर्य, मन्त्री

हांसी में वेद कथा

आर्य समाज मन्दिर हांसी में 17 से 22 सितम्बर तक वेद कथा का आयोजन किया प्रसिद्ध त्यागी तपस्वी सन्त स्वामी माधवानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में यज्ञ व उपदेश हुए इस अवसर पर अनेकों यज्ञमान दम्पतियों ने यज्ञोपवीत धारण किए। पुरोहित पं० राम किशोर शास्त्री ने यज्ञ कार्य सम्पन्न कराया श्री जबर सिंह खारी के भजन हुए। —सतीश कुमार आर्य, मन्त्री

श्रीमद् वेदार्ष महाविद्यालय का 70वां वार्षिक समारोह

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय 119 गौतमनगर, नई दिल्ली का 70वां वार्षिक समारोह एवं 23वां चतुर्वेद पारायण महायज्ञ रविवार 20 सितम्बर से रविवार 20 अक्तूबर 2002 तक समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है, जिसके ब्रह्मा आर्य जगत् के कर्मकाण्डी विद्वान् श्रद्धेय श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती विद्यामार्तण्ड होंगे।

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ । दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

दूरभाष : 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 25 सृष्टि संवत 1960853103, 13 अक्तूबर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

धर्म क्या है ?

ले० पं० बनारसी दास आर्य, आर्य समाज मन्दिर, नवां कोट, अमृतसर

संक्षेप से शब्दों में हम यही कहेंगे कि जो सच्चाई है और जो जीवन में धारण करने योग्य है, जो वैज्ञानिक कसौटी पर पूरा उतरता है, उसे धर्म कहते हैं। धर्म का व्यक्ति के अन्तःकरण से सम्बन्ध होता है। हृदय के अन्दर से उमड़ता है तथा संसार का कल्याण करने के लिए रास्ता बनाता है। वैदिक धर्म इस कसौटी पर पूरा-पूरा उतरता है वेद में जिस धर्म का वर्णन है उसे वैदिक धर्म कहते हैं। इसीलिए वेद को ईश्वरीय ज्ञान भी कहते हैं। वेद वाणी ईश्वर की अमर कविता है।

ईश्वर ने जब इस ब्रह्माण्ड की रचना की तो इसमें रहने के लिए जीव-जन्तुओं व मनुष्यों को यह भी बताया कि इस संसार में रहना किस तरह है। जैसे देश को चलाने के लिए एक संविधान बनाया जाता है। उसी प्रकार परमात्मा ने इस संसार को चलाने के लिए मानव को वेद रूपी संविधान दिया और आज्ञा दी कि यदि मानव वेदानुसार चलेगा तो सुख भोगेगा अन्यथा दुःखी रहेगा।

ईश्वर ने वेद ज्ञान मानव तक पहुंचाने के लिए चार पवित्र आत्माओं को चुना। उनके नाम थे- अग्नि ऋषि, वायु ऋषि, आदित्य ऋषि, तथा अंगिरा ऋषि। प्रभु ने अपना ज्ञान ऋषियों के मस्तिष्क में दिया। ऋषियों ने इस अमर ज्ञान को कण्ठस्थ किया। समय के परिवर्तन के साथ यह वेद ज्ञान पत्तों पर लिखा जाने लगा। हजारों, लाखों वर्ष बीत जाने के बाद जब कपड़े का अविष्कार हुआ तो यह ज्ञान कपड़े पर लिखा जाने लगा। बदलते समय के साथ-साथ फिर कागज पर लिखा जाने लगा और आधुनिक युग में पुस्तक रूप में हमारे सामने है। अग्नि ऋषि ने ऋग्वेद की रचना की, वायु ऋषि ने यजुर्वेद की, आदित्य ऋषि ने सामवेद की तथा अंगिरा ऋषि ने अथर्ववेद की रचना की। इनमें से Rigveda is the Oldest book in the liberary of the world

महाभारत का युद्ध भयंकर विनाशकारी युद्ध था जिसमें अनगिनत योद्धा व वेद ज्ञाता मारे गये। वेद पढ़ने वाला कोई बचा नहीं था। देश में विघटन शुरू हो गया। मध्यकाल में यवन, हून व मुगलों ने देश की बागडोर सम्भाली। धीरे-धीरे वेद अलोप हो गए। मुस्लिम, ईसाई, जैन, बुद्ध, सिक्ख मत आदि अनेक मतों का उदय हुआ। कुरान का खूब बोलबाला रहा। महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व अंग्रेजों का राज्य स्थापित हो चुका था। तब ईसाई मत का खूब जोर था। चारों ओर पाखण्ड, धोखा, ठगी, अज्ञानता तथा जुल्म का साम्राज्य था। राम-कृष्ण की सन्तान भारतीयों ने ईश्वर की पूजा छोड़कर, राम-कृष्ण के मन्दिर बना लिए और उनकी मूर्तियों की पूजा शुरू कर दी। जड़ की पूजा करने से लोगों की बुद्धि भी जड़ हो गई। लोगों में विवेक का अभाव हो गया। अंग्रेजों ने अपनी फूट डालो और राज्य करो की नीति से सारे देश को गुलाम बना लिया और फिर गुलामी की लम्बी दास्तान शुरू हो गई।

महर्षि ने अनेकों ग्रन्थों को पढ़ा लेकिन मन की तृप्ति नहीं हुई। वेद पढ़ने की लालसा उनके मन में हमेशा रही। वेद भारत में कहीं से भी नहीं मिले तो उन्होंने वेद जर्मनी से मंगवा कर पढ़े। ज्यों-ज्यों उन्हें पढ़ते जाते त्यों-त्यों ज्ञान के गहरे सागर में उतरते जाते। वेद पढ़ कर मन गद्-गद् हो गया परन्तु मन को दुख भी हुआ। दुख इस बात का कि मेरे देश के पूर्वजों की धरोहर, यह वेद आज भारत में नहीं मिलते। उन्होंने देखा कि उस समय सब से ऊपर बाईबल, उसके नीचे अंजील कुरान आदि तथा सबसे नीचे वेद धूल व मिट्टी से लथपथ पड़े हैं। स्वामी दयानन्द जी ने पुस्तकों के ढेर को उल्टा दिया। जो वेद नीचे पड़े थे उन्हें ऊपर कर दिया। धूल-मिट्टी हटा कर भारतवासियों के हाथ में दिए और कहा-मेरे देश वासियो यदि सुख चाहते हो तो (Come back to Vedas) वेद की तरफ वापिस आ जाओ। दूसरा कोई रास्ता नहीं। इस घोषणा से सारे देश में हलचल मच गई। ईसाई, मुस्लिम, पुराणिक सभी स्वामी जी के दुश्मन बन गए और उनको जान से मारने के मनसूबे बनाने लगे। वैदिक धर्म की खातिर स्वामी जी को अपना बलिदान देना पड़ा।

आज का व्यक्ति धार्मिक तौर पर दिशाहीन, दुःखी तथा परेशान है। शान्ति की तलाश में है। इसलिए कभी एक द्वार पर जाता है तो कभी दूसरे द्वार पर लेकिन मन को शान्ति नहीं मिलती। कोई राधा स्वामी की तरफ भाग रहा है तो कोई निरंकारियों की ओर। कोई गुरुद्वारे जा रहा है तो कोई मस्जिद की ओर। कोई आर्य समाज की ओर जा रहा है तो कोई कबीर साहब की ओर। कोई कब्र से पुत्र मांग रहा है तो कोई मूर्ति से। कोई मन्दिर में घंटियां बजा रहा है तो कोई जगराते करवा कर दूसरों की नींद हराम कर रहा है। इतने मत पैदा हो चुके हैं कि अच्छे भले पढ़े-लिखे लोगों को भी पता नहीं चलता कि कौन सा रास्ता सही है और कौन सा गलत। सब ने अपनी-अपनी दुकानें खोल रखी हैं और उन पर अपने-अपने साईन बोर्ड लगा रखे हैं। साधारण व्यक्ति को तो बिल्कुल पता ही नहीं चलता कि किधर जाऊं, किधर न जाऊं। ज्ञान का अथाह सागर तो वेद, उपनिषद हैं। जितनी गहराई से कोई ज्ञान सागर में उतरता है उतने अधिक मोती प्राप्त करता है। अन्य मत वालों ने तो ज्ञान सागर से एक-एक कमण्डल ही लिया है और अपनी-अपनी दुकानदारी सजा कर बैठ गए हैं। दूसरे मतों में जो सच्चाई है वह वेद से ली गई है क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

आखिर मत कहते किस को हैं ? जो पंथ अपनी अक्ल (मत) से चलाया जाए उसे मत कहते हैं। जैसे जैन मत, बुद्ध मत, सिक्ख मत, कबीर मत मुस्लिम मत, राधा स्वामी मत तथा निरंकारी मत आदि-आदि। इन सब को बनाने वाले व्यक्ति विशेष होते हैं। इनको ईश्वर ने नहीं बनाया। जैसे जैन मत को स्वामी महावीर ने, बुद्ध मत को महात्मा बुद्ध ने, कबीर पंथ को कबीर ने, राधा स्वामी मत को बाबा सावन मल ने, मुस्लिम मत को मोहम्मद साहब ने बनाया आदि लेकिन वैदिक धर्म को किसी व्यक्ति विशेष ने नहीं बनाया। स्वामी दयानन्द जी ने तो केवल आर्य समाज बनाया है वैदिक धर्म नहीं। आर्य समाज किसी धर्म व मत का नाम नहीं। वैदिक धर्म तो भगवान् राम से भी पहले का है। जब से सृष्टि चली है तब से चला आ रहा है। इस धर्म को चलाने वाला स्वयं ईश्वर है। इसलिए वेद ज्ञान को ही वैदिक धर्म कहा जाता है।

यदि ओ३म् की (ईश्वर की), वेद की सवारी की शोभा यात्रा निकालें तो शहर के कुछ गिने चुने लोग ही उसमें सम्मिलित होंगे। यदि दूसरी तरफ राम-कृष्ण की शोभा यात्रा हो, गुरुओं की शोभा यात्रा हो तो हजारों लोग उस में नज़र आयेंगे। क्योंकि आज

(शेष पृष्ठ 2 पर)

धर्म क्या है

(पृष्ठ 1 का शेष)

का व्यक्ति गुरु की पूजा करता है ईश्वर की नहीं। गुरु को मान सम्मान तो अवश्य ही मिलना चाहिए परन्तु पूजा केवल सृष्टि के रचयिता पालनहार परमात्मा की ही होनी चाहिए। आज मनुष्य के शारीरिक आत्मिक व मानसिक दु खों का कारण ही यही है कि मानव ईश्वर का भूल कर व्यक्ति विशेष के पीछे भाग रहा ह और अपने दुखों का समाधान मूर्ति से पूछता है जो बोलती नहीं कब्र से पूछता है जो हिलती नहीं गुरु स पूछता है जा स्वय एक इन्सान ह। सभी दु खा का छुटकारा सिर्फ ईश्वर क पूजन स हाता ह। यही वेद आज्ञा ह।

आर्य समाज क सस्थापक महर्षि दयानन्द क गुरु दण्डी गुरु विरजानन्द थे। उन्हाने स्वामी [illegible] आज्ञा दी कि जाआ जा ज्ञान तुम्हे दिया है उससे ससार का कल्याण करा ससार से अज्ञानता क अन्धकार का मिटा दा परन्तु आज का गुरु क्या कहता ह ? आज का गुरु कहता ह कि जा नाम मने तुम्हे दिया ह वा भी किसी दूसरो को नहा बताना और बार बार मरी ही चाखट पर माथा रगडत रहना। यदि शिष्य को ज्ञान दिया हे ता उसे अब आजाद कर दो। उसे ससार मे जाकर प्रचार करने दो। इसके विपरीत गुरु कहता है कि बस मेर डेरे पर ही आना कहीं और नहीं जाना। यह कसा गुरु और केसा ज्ञान ज्ञान तो प्रकाश फेलाने क लिए हे उसे फलाआ। अकेले स्वामी दयानन्द जी ने दश विदेश मे घूम घूम करक वदिक धर्म को फलाया ओर आर्य समाजो की स्थापना की।

परमात्मा अपना धर्म निभा रहा है ओर उसकी बनाई हुई प्रत्येक वस्तु अपना धर्म निभा रही है। सूर्य करोडो वर्षो से प्रकाश व गरिमा द कर अपना धर्म निभा रहा ह चन्द्रमा भा करोडो वर्षो से मीठी मीठी चादनी ओर शीतलता देकर अपना धम निभा रहा है इसी प्रकार जल वायु अग्नि पृथ्वी तथा आकाश अपना अपना धम निभा रहे हे। ससार की उत्पत्ति से लेकर आज तक वद ज्ञान मानव का कल्याण करता आ रहा ह और आगे भी करता रहगा क्योकि इश्वर की बनाई हुई चीजे कभी नष्ट नहीं होती तथा व दूसरो का भला करती रहती हैं।

फिर सत्यधर्म हे क्या ? यह जानने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि एक मनुष्य जिसने अभी तक किसी धर्म को स्वीकार नहीं किया था, एक पण्डित जी के पास गया और कहा कि महाराज—मैं किसी एक धर्म को—जो सच्चा हो और जिससे मोक्ष मिल सके स्वीकार करना चाहता हू। कृपा करके बतला दीजिए कि कौन सा धर्म सच्चा है ? पडित जी ने कहा चलो तुम्हे सच्चा धर्म बतलाते हैं। पडित जी उस व्यक्ति को एक ऐसे स्थान पर ले गए जहा सौ मनुष्य विभिन्न मतो के बैठे हुए अपन अपने मत की बढाई तथा दूसरा के मत की बुराई कर रहे थे आर कहा कि तू प्रत्येक मनुष्य से प्रार्थना करता चल कि मैं एक सच्चे मत को स्वीकार करना चाहता हू ओर आप कृपा करके बतला दीजिए [illegible] व्यक्ति पहले एक मत वाले के पास गया और यह बात कही। वह मतवादी बोला कि आईए आईए मे अभी आपको सच्चा मत जिससे आप झटपट मुक्ति मार्ग को प्राप्त कर ले बतलाता हू। सुनो यह केवल एक मेरा मत ही सच्चा है और शेष देखो 99 मत जो तुमको दिखाई देते हैं सब झूठे हैं। इनकी एक न मानना। आओ शीघ्र मेरे मत मे शामिल हो जाओ। वह व्यक्ति बोला कि औरो के पास भी तो आऊ। देखू वे क्या कहते हैं ?

दूसरे मतवादी के पास गया तो वह चिल्ला कर दौडा आओ भाई बैठो। तुम यदि मुक्ति चाहते हो तो मेरा मत शीघ्र स्वीकार कर लो। मेरे मत मे होते ही जहा एक कलमा पढा तत्काल मुक्ति हुई और शेष जो य 99 मतो वाले बेठे हैं सब झूठे हे। इनकी बात कदापि न माननी चाहिए

तीसरे मतवादी के पास गया ता वह यह समझकर कि शिकार अपने आप जाल मे फस रहा है बच्चा जावेगा कहा। अपने मत की प्रशसा करने लगा देखो एक मेरा हा मत सच्चा हे और शेष 99 सब झूठे ह। केवल एक मेरे ही मत से मुक्ति हो सकती है। दूसरे के मत से कदापि नहीं। ऐसी बाते कह कह कर उसको फुसलाने लगा।

चौथे मतवादी के पास गया ता क्या दखता है कि हाथ मे रस्सी लिए हुए वह कहीं खटाखट कर रहा है। उसको देखते ही वह बोल उठा [illegible] बैठो। परमेश्वर [illegible] हुई जो तुमको [illegible] शीघ्र मेरे मत में आ जाओ नहीं तो ये 99 मतवादी कदापि तुम्हें नहीं छोडेंगे और यह सब झूठे हैं। [illegible] और बहुत देर मत लगाओ।

साराश यह कि इसी प्रकार 99 मतवादियो के पास गया। सब सराय की भटियारियों के समान लगे कोलाहल करने और अपने-अपने घरो मे बुलाने।

फिर अन्तत वह सौवें मत वाले के पास भी गया और अपना अभिप्राय प्रकट किया। वह बोला कि भाई सुनो मुक्ति को प्राप्त करना खाला जी का घर नहीं है। केवल एक अद्वितीय परमेश्वर का ध्यान करने और उसमे परम प्रीति करने से ही मुक्ति प्राप्त हो सकती है अन्यथा तो इन 99 पथ भ्रष्टो के समान धक्के खाते हुए फिरना है।

अन्तत जब वह व्यक्ति सब के पास हो आया तो अपने मन मे यह सोच कर कि विचित्र बात है जो कहता है अपनी ही बात कहता है। घबराया हुआ पडित जी के पास आया और विस्तार पूर्वक सब वृत्तान्त कहा। पडित जी ने कहा कि एक बार फिर जाकर प्रत्येक से पूछ कि आप का धर्म क्या है ?

आप का धर्म क्या है ?—वह व्यक्ति जब दोबारा गया तो कोई कहता है कि श्री राम चन्द्र साक्षात् परमेश्वर हैं। श्री राम की भक्ति करना परम धर्म है। कोई कहता है कि लाल लगोट वाले की लालसा मे सब दिन पडे रहना धर्म है। कोई कहता है कि माखन चोर गोपियो से कलोल करने वाले की शरण में आना धर्म है। कोई कहता है कि चरस पीकर भग का घोटा चढा कर भोले की याद में मग्न हो जाना यही ठीक धर्म है। कोई कहता है गगा मैय्या यमुना मैय्या सरस्वती आदि मे डुबकी लगाना धर्म है। कोई कहता है कि खूब कण्ठ तक मद्य पीना मास मछली खाना और फिर डट कर व्यभिचार करना धर्म है। इसी प्रकार कोई जल सिह कोई सूरज सिह कोई तुलसी सिह कोई पीपल सिह कोई मथुरा सिह कोई काशी सिह कोई राम सिह कोई गणेश सिह कोई भैरो सिह कोई गगा सिह कोई काली सिह कोई पीर सिह कोई कबर सिह कोई पत्थर सिह को पूजना धर्म बतलाता है। कोई कहता है कि Holly Ghost और ईश्वर के इकलौते बेटे पर ईमान लाना धर्म है। कोई कहता है कि रसूल पैगम्बरों की मानना और इबादत करना यही धर्म है।

साराश यह कि इसी प्रकार सब ने अपने-अपने धर्म बतलाए। प्रत्येक मनुष्य के मुख से नये-नये धर्म सुन कर यह व्यक्ति हैरान सा हो गया और सबसे पूछकर पडित जी के पास आया और सब वृत्तान्त वर्णन किया तो पंडित जी ने कहा कि अब देखो इन सब में से सच्चा धर्म तुमको बतलाता हूं। ध्यान से सुनो देखो जब एक बात के सच होने पर चार मनुष्यों की साक्षी एक समान भुगत जाती है तो शासक जान जाता है कि यह बात सच है और जब एक बात पर 99 लोगों की साक्षी हो तो उसके सच होने मे क्या सदेह है। तो बस जब एक मनुष्य अपने धर्म की बात बताए और उसको 99 मनुष्य मिथ्य कहे तो उसका किस प्रकार माना जाए ? कदापि नहीं।

उदाहरणार्थ—यहा एक व्यक्ति ने कहा है कि पत्थरो को पूजना धर्म है। इस पर 99 मनुष्यो की गवाही हुई कि नहीं यह झूठ है। इसी प्रकार दूसरे ने कहा कि ईसा पर विश्वास लाना धर्म है। इस पर भी 99 लोगो ने विरुद्ध गवाही दी तो उसको कदापि न मानना चाहिए। तीसरे ने कहा कि मोहम्मद साहिब को मानना धर्म है परन्तु शेष सब ने विरोध किया कि यह झूठ हे तो समझना चाहिए कि यह सब अपने मत के लोगो की सेना ही एकत्रित करने वाले हैं। अब जिन बातो को मानने में सब की साक्षी समान हो उसको मानो। इन सबके अतिरिक्त क्या कोई ऐसी बाते भी हे जो सब मे समान हैं। उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि हा महाराज बहुत सी बातें समान हैं। जैसे एक ईश्वर का मानना उसी का ध्यान करना सत्य बोलना और मानना असत्य को छोडना दीनो पर दया करना आदि बातें ऐसी हे जा सब के धर्म मे एक समान हैं तब पण्डित जी ने कहा कि यही धर्म की बाते हे। केवल इन्हीं को मानो। शेष सब झूठ और पथ भ्रष्ट करने वाली ह।

स्वामी दयानन्द महाराज जी ने कहा कि ससार की कोई वस्तु एक दम हानिकारक नहीं है। कुछ न कुछ लाभ प्रत्येक वस्तु रखती है। इसलिए ये जो हजारो मत हैं—एक दम झूठे नहीं हो सकते। कुछ न कुछ सच्चाई इनमे अवश्य ह और वो सच्चाई वेद की है क्योंकि वेद ने सब से पहले कही है।

सम्पादकीय.....

पंजाब में समारोह

गत दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने निश्चय किया था कि पंजाब में वेद प्रचार का कार्य तेज कर दिया जाए तद्नुसार पंजाब की आर्य समाजों ने वेद प्रचार का कार्य तेज कर दिया है। प्रति रविवार किसी न किसी आर्य समाज का उत्सव अवश्य सम्पन्न हो रहा है और सभा के अधिकारी भी प्रत्येक आर्य समाज में उनके निमन्त्रण पर पहुंच रहे हैं। पंजाब में 6-10-2002 को गुरुकुल करतारपुर का उत्सव बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ जिसमें सारे पंजाब से भारी संख्या में आर्य भाईयों व बहनों ने भाग लिया। इस उत्सव की अपनी एक विशेषता होती है। इसमें पंजाब से बाहर के आर्य बन्धु भी भाग लेते हैं। पंजाब में आर्य समाज का (लड़कों का) यह एक मात्र गुरुकुल है। 30 सितम्बर से 6 अक्तूबर 2002 तक इसका वार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें प्रसिद्ध विद्वान् श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रीय, आचार्य अखिलेश्वर जी, आचार्य भद्रसेन जी, श्री गणेशन प्रसाद जी वेदालंकार के उपदेश व श्री सत्यपाल जी पथिक के भजन होते रहे। पंजाब की बहुत सी आर्य समाजों के अधिकारी इसमें सम्मिलित हुए।

आर्य समाज गुरुकुल विभाग गुरदासपुर का वार्षिक उत्सव 30 सितम्बर से 6 अक्तूबर 2002 तक बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ। इस आर्य समाज का जिला गुरदासपुर में अपना एक विशेष स्थान है। यह बहुत पुरानी आर्य समाज है। इस आर्य समाज की बहनें भी बड़ी उत्साही हैं। बहन सन्तोष अम्बा जी का पंजाब में अपना एक विशेष स्थान है। इस उत्सव में जिला गुरदासपुर की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने भाग लिया। दयानन्द मठ दीनानगर के विद्वानों व ब्रह्मचारियों ने भी भाग लिया। सभा के उपदेशक श्री सुन्दर लाल जी शास्त्री व प्रसिद्ध गायक श्री जगत वर्मा जी ने सभा की ओर से भाग लिया । जिला गुरदासपुर के लोगों में वेद प्रचार के लिए बड़ा उत्साह पाया गया।

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव 2 से 6 अक्तूबर 2002 तक सम्पन्न हुआ। यह आर्य समाज लुधियाना में अपना विशेष स्थान रखती है इस आर्य समाज के सभी अधिकारी बहुत उत्साही हैं। इस आर्य समाज के प्रधान श्री रामलाल जी गान्धी तथा मन्त्री श्री विजय सरीन जी तथा पुरोहित श्री बाल कृष्ण जी शास्त्री, श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता कोषाध्यक्ष, श्री बृज मोहन अरोड़ा व आर्य समाज के दूसरे अधिकारी बहुत उत्साही हैं।

6 अक्तूबर को इस आर्य समाज का मुख्य समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें जिला लुधियाना की लगभग सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने भाग लिया। सभी स्त्री आर्य समाजों की बहनों ने भी भाग लिया। प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी माधवानन्द जी सरस्वती के निरन्तर उपदेश हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान श्री आशानन्द जी आर्य, मन्त्री श्रीमती राजेश शर्मा, कार्यालयाध्यक्ष पं. धर्मदेव आर्य ने विशेष रूप से भाग लिया। यज्ञ की पूर्णाहुति श्री पं. बाल कृष्ण शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुई, ध्वजारोहण प्रसिद्ध उद्योगपति श्री राम कृष्ण जी ने किया इसके साथ ही उन्होंने जो भजन सुनाया उसे सुन कर लगता था कि वह एक अच्छे गायक ही नहीं है बल्कि परमात्मा के अनन्य भक्त भी हैं। उद्योगपति होने पर भी उनमें बहुत नम्रता थी जो उद्योगपतियों में अक्सर देखने को नहीं मिलती।

लुधियाना के लगभग सभी पुराने कार्यकर्त्ता भी वहां उपस्थित थे। श्री आशानन्द जी आर्य जहां आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान हैं वहां आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना के भी प्रधान हैं और लुधियाना में आर्य समाज का लम्बे समय से नेतृत्व करते आ रहे हैं। सभी आर्य समाजों के अधिकारी उनका बड़ा मान करते हैं। 90 वर्ष से ऊपर उनकी आयु है परन्तु इस आयु में भी नौजवानों की तरह से दौड़-भाग करते हैं। मीलों पैदल चल लेते हैं और लुधियाना की सभी आर्य समाजों के कार्यक्रमों पर पहुंचते हैं और उनको अपना पूरा-पूरा सहयोग देते हैं । लुधियाना के सभी लोग उन्हें अक्सर पिता जी कह कर बुलाते हैं। श्रीमती राजेश शर्मा जहां सभा की मन्त्री हैं वहां वह जिला आर्य सभा लुधियाना की प्रधान भी हैं और लुधियाना में उनका अपना विशेष स्थान है।

आर्य समाज जवाहर नगर के इस समारोह में पुराने कार्यकर्त्ता श्री ओ.पी.पासी, श्री रणवीर जी भाटिया, श्री नरेन्द्र जी भल्ला भी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। श्री हरीश जी सूद, श्री रमेश जी सूद, श्री सुनील सूद, बहन नीलम थापर, बहन सतीशा शर्मा तथा और भी बहुत से महानुभाव पहुंचे हुए थे। मैं सभी के नाम तो नहीं जानता परन्तु लुधियाना आर्य समाजों के कार्यक्रमों पर अक्सर यह उत्साही आर्य समाजी भाई मिलते रहते हैं। समराला से श्री तांगड़ी जी तथा रायकोट से भी कई महानुभाव पधारे थे। सबसे बड़ी विशेषता यह थी ऋषि लंगर का सारा खर्च बहन सुषमा सूद (इंग्लैण्ड) ने अकेले ही दिया। उन्होंने कहा आज ऋषि लंगर मेरी तरफ से होगा। यह एक उच्च भावना है। आर्य समाज पर भोजन का कोई व्यय नहीं पड़ा। आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना ने 2100 रुपए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को वेद प्रचारार्थ दिए हैं। इसके लिए हम इस आर्य समाज के अधिकारियों का धन्यवाद करते हैं।

आर्य समाज में आज भी बहुत ही उत्साही लोग हैं परन्तु उन्हें साथ लेकर चलने की आवश्यकता, उन तक पहुंचने की आवश्यकता है। बहुत से पुराने आर्य समाजी किन्हीं कारणों से पीछे हटे बैठे हैं। उनके आर्य समाज में न आने के कोई भी कारण हो सकते हैं, हमें उन कारणों को ढूंढना चाहिए और उनका निवारण करके उन्हें आर्य समाज में लाना चाहिए। एक समय था प्रत्येक भारतवासी आर्य समाज से परिचित था क्योंकि आर्य समाज ने प्रत्येक व्यक्ति से सम्पर्क करने का प्रयास किया था और आर्य समाजी छोटे से बड़े तक प्रत्येक व्यक्ति के पास पहुंचे थे। आज फिर इस बात की आवश्यकता है कि हम आर्य समाज की चार दिवारी से बाहर निकल कर प्रत्येक व्यक्ति से सम्पर्क करें और उन्हें आर्य समाज में आने के लिए प्रेरित करें। उन्हें आर्य समाज में अपने साथ लेकर आएं। उन्हें आर्य समाज से जोड़ें।

मैं देख रहा हूं कि पंजाब में पिछले कई वर्षों से आर्य समाजों में जो शिथिलता आ गई थी अब वह सब दूर हो जाएगी। जहां सभा के अधिकारी अब बाहर निकले हैं वहां आर्य समाजों के अधिकारियों ने भी निश्चय कर लिया है कि वह बढ़-चढ़ कर आर्य समाज का काम करेंगे।

4-10-2002 को सभा अधिकारी श्री आशानन्द जी आर्य उपप्रधान, श्री सरदारी लाल जी आर्य उप प्रधान, श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा रजिस्ट्रार भठिण्डा और रामांमण्डी होकर आए हैं। वहां की आर्य समाजों का निरीक्षण किया। शिक्षा संस्थाओं का निरीक्षण किया, उनकी समस्याओं को सुलझाया व उनका समाधान किया तथा उन्हें और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित किया। पंजाब में इस समय लगभग सभी आर्य समाजें सक्रिय हो गई हैं। हमें प्रसन्नता है कि इस समय सभी आर्य समाजों का पूरा-पूरा सहयोग सभा को मिल रहा है और सभा भी सभी आर्य समाजों को अपना सहयोग दे रही है।

—धर्मदेव आर्य

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रसिद्ध पत्र है जो पिछले कई वर्षों से निरन्तर समाज सेवा करता आ रहा है। इसका शुल्क मात्र 50 रुपए वार्षिक और 500 रुपए आजीवन है। यह लागत से भी कम खर्च पर ग्राहकों को भेजा जाता है परन्तु फिर भी कई ग्राहक समय पर इसका शुल्क नहीं भेजते। मेरी उन सभी ग्राहकों से प्रार्थना है कि जिन्होंने अभी तक अपना शुल्क नहीं भेजा वह शीघ्र अति शीघ्र मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अपना पिछला शुल्क आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम भेजने का कष्ट करें।

—धर्मदेव आर्य

जिला लुधियाना में आर्य समाजों की गतिविधियां

□ प्रस्तुतकर्ता–श्री आशानन्द जी आर्य, सभा उपप्रधान लुधियाना

(गतांक से आगे)

इस आर्य समाज का सौभाग्य है कि इसे एक विद्वान् मधुर भाषी अनथक कार्यकर्त्ता के रूप में प० बाल कृष्ण शास्त्री जैसा पुरोहित मिला हुआ है। इस आर्य समाज की उन्नति मे उनका बहुत बड़ा हाथ है। अब इन्होंने एक मुफ्त डिस्पैन्सरी भी खोल दी है।

योग्य डाक्टर प्रतिदिन आकर जनता की सेवा कर रहा है जिससे आर्य समाज का प्रचार हो रहा है आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित इस समाज में एक बड़ी कमी है कि भारत नगर, सीता नगर, अशोक नगर माडल ग्राम की जनता इस समाज के सदस्य हैं–परन्तु जवाहर नगर के लोग जिनके लिए आर्य समाज ने बहुत बलिदान दिया, इस समाज के सदस्य नहीं हैं। मैंने इस ओर आर्य समाज के अधिकारियो का कई बार ध्यान दिलाया है ओर जवाहर नगर की मेघ बिरादरी व श्री कृष्ण लाल जी को जो आर्य समाज से स्नेह रखते हैं, मिलाया है और अधिकारियों से प्रार्थना की है कि इसको सदस्य बनाकर इसके माध्यम से अपने पुराने भाईयों को फिर से आर्य समाज में सक्रिय करें परन्तु इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। यदि इस ओर अधिकारी ध्यान देवें तो आर्य समाज काफी उन्नति कर सकता है।

आर्य समाज अशोक नगर–चलती फिरती आर्य समाज है हर सप्ताह किसी परिवार मे सत्संग होता हे जिसमें कई परिवार आर्य समाज के साथ जुड गए हैं–इस आर्य समाज को चलाने मे डा० सतीश जी -श्री राजेन्द्र बेरी-श्री श्रवण कुमार बत्रा तथा उनके कई साथी लग्न से कार्य कर रहे हैं।

आर्य समाज फील्डगंज–इस संस्था के आर्य भाई प्राय: आर्य समाज दाल बाजार में जाया करते थे परन्तु आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री सत्यपाल सूद इस इलाका मे आर्य समाज स्थापित करना चाहते थे सौभाग्य से कूचा न 5 मे एक धर्मशाला श्री दलीपचन्द के नाम थी उन्होने कुछ शर्तो के साथ यह स्थान आर्य समाज को दे दिया–श्री सत्यपाल जी सूद अपने साथियों ला भगवान दास जी, श्री रामचन्द जी बत्रा के साथ मिलकर आर्य समाज मन्दिर को बनाना आरम्भ कर दिया। साथ में एक कोयले, का डिपु था वह भी स्थान बेचना चाहता था। हमने सत्यपाल जी को सलाह दी कि यह स्थान ले लो मन्दिर काफी खुला हो जाएगा परन्तु वह न माने बाद में काफी पछताते रहे। सूद ने बड़ी मेहनत लग्न के साथ अपने साथियों से मिलकर एक सुन्दर यज्ञशाला-आफिस-हाल-ऊपर अतिथियों के लिए कमरे और आगे दुकानें बना दीं जिससे समाज को काफी आमदनी आने लगी। और समाज का कार्य तेजी से चलने लगा–इनकी मृत्यु के पश्चात् इस समाज का कार्य भार मा. विक्रम प्रशाद जो मोगा से रिटायर होकर आए थे, ने सम्भाला। वह सख्त अवश्य थे पर आर्य समाज के सिद्धान्तों के साथ कभी कोई समझौता नहीं करते थे उनके समय में आर्य समाज ने बहुत उन्नति की। उनके पश्चात् श्री चानन राम जी गम्भीर प्रधान बने उनका काफी बड़ा परिवार एवं बिरादरी लुधियाना में है। बहुत सुन्दर ढंग से वह इसे अपने साथियों के साथ चलाते रहे। विशेष रूप से हर्ष आर्य, नन्द लाल आहुजा, हरीश सूद, रमेश सूद, विनोद कुमार सूद उनको काफी सहयोग देने रहे–स्त्री आर्य समाज में माता सावित्री जी, सत्या जी, बाला जी, शान्ता जी, लीलावती कपूर, जानकी जी भी सुन्दर कार्य करती रहीं। श्री चानन राम जी की अकस्मात् मृत्यु के बाद श्री हरीश जी सूद इसके प्रधान हैं–उनका काफी प्रभाव है परन्तु आर्य समाज को समय न देने के कारण आर्य समाज का कार्य ढीला पड गया है। साप्ताहिक एवं दैनिक सत्संग में बहुत कम उपस्थिति होती है। आर्य समाज में एक फ्री डिस्पैन्सरी भी खोली गई थी जोकि अब बन्द पड़ी है। मैंने कई बार इस आर्य समाज के प्रधान-मन्त्री-कोषाध्यक्ष को आर्य समाज का कार्य बढ़ाने के लिए प्रार्थना की। दो बार उनकी बैठकें भी बुलाई हैं। मुझे कार्य तेज करने का विश्वास भी दिलाया गया परन्तु परिणाम कुछ नहीं निकला। इसका कारण यह है कि इस आर्य समाज के मन्त्री श्री हर्ष जी आर्य यहां से काफी दूर चले गए हैं–प्रधान कोषाध्यक्ष की आपस में बनती नहीं–श्री चानन राम का परिवार भी इस आर्य समाज से दूर हो गया है। जिला आर्य सभा को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

आर्य समाज फोकल प्वाइन्ट :–इस कालोनी में श्री बलदेव राज जी आर्य जो कि रिटायर्ड होने के पश्चात् यहां रहने लगे वह हर सप्ताह अपनी पत्नि के साथ आर्य समाज माडल टाऊन के साप्ताहिक सत्संग में जाते थे जो कि फोकल प्वाईंट से 5 किलोमीटर दूर है वहा श्री सत्यानन्द जी मुन्जाल की प्रेरणा से उन्होंने फोकल प्वाईन्ट में आर्य समाज की स्थापना की और दोनों पति-पत्नि इसकी सेवा में जुट गए और अत्यन्त परिश्रम करके एक सुन्दर आर्य समाज खड़ी कर दी। हर वर्ष वार्षिक उत्सव एवं प्रचार का कार्य करते हैं अब तो उनके साथ कई साथी जुट गए हैं एक स्कूल भी इस समाज में चल रहा है सुन्दर यज्ञशाला, हाल और कमरे बन गए हैं। श्री बलदेव राज तथा उनकी धर्मपत्नि हर समय आर्य समाज की उन्नति के लिए सोचते रहते हैं। इस समाज में योग्य पुरोहित भी हैं। श्री बलदेवराज बड़े सिद्धान्तवादी आर्य समाजी हैं। मेरे से प्राय: आर्य समाज के सम्बन्ध में बात करते रहते हैं। यदि आर्य जो थोड़े और उदार हो जावें सबको लेकर चले तो आर्य समाज काफी उन्नति कर सकती है।

आर्य समाज दाल बाजार:–नगर के मध्य हौजरी के सेन्टर में यह आर्य समाज एक विशाल मन्दिर के रूप में है इसकी स्थापना 1932 में हुई थी। आरम्भ से ही यह आर्य समाज गतिशील रही। इस आर्य समाज का एक बड़ा इतिहास है जिसका विस्तार से वर्णन अपने एक और लेख में करूंगा। देश के बंटवारे के पश्चात् जितने भी कार्यकर्त्ता आर्य समाजी लुधियाना में बसे वह आर्य समाज के सदस्य बने और नेता लोग आर्य समाज साबुन बाजार से जुड़ गए। हम लोग 1947-48 में जब इस आर्य समाज के सदस्य बने तो इसके सत्संग में डयूटी लगती थी। एक ओर छोटी सी यज्ञशाला थी जिस पर श्री वेद प्रकाश जी आर्य एवं उनके परिवार का पत्थर लगा हुआ था। पाकिस्तान से आए हुए हम लोगों को रिफ्यूजी के नाम से पुकारा जाता था और उन्हें किसी पद के निकट नहीं आने दिया जाता था परन्तु इन भाईयों ने अपनी लग्न परिश्रम एवं आर्य समाज मैं अटूट श्रद्धा के कारण इस आर्य समाज में अपना स्थान बना लिया और इस समाज के पाकिस्तान से आए हुए डॉ० जगन्नाथ जी, स्वामी रामलाल जी एडवोकेट, श्री मंगलसेन जी वधवा, लाला जोधा राम जी प्रधान और मैं मन्त्री बना परन्तु बहुत समय तक लाला कोटू राम जी थापर-दीवान रामसरन दास जी ला. प्रभदयाल जी एडवोकेट ही प्रधान बने। इस आर्य समाज को प्रगतिशील बनाने में महाशय किशोरी को ही श्रेय जाता है। अब इस आर्य समाज में शानदार यज्ञशाला, बड़ा हाल कई कमरे एवं किराया पर दिए हुए स्थान हैं। इस भव्य मन्दिर को बनाने में जहां आर्य समाज के मान्य प्रधान दीवान राम सरनदास, ला. प्रभदयाल गर्ग, लाला कोटू राम थापर का हाथ है वहां आर्य समाज के मन्त्रियों श्री राम रक्षक राम, श्री देवराज खुल्लर, आशानन्द आर्य, वैद्य प्रेमनाथ का बहुत बड़ा योगदान है। इसके साथ ही मा किशोरी लाल, लाला पूर्णचन्द गुप्ता, ला. लछमन दास, ला राम जी दास अग्रवाल, ला. राम लाल सूद, सोम प्रकाश सूद, श्री मंगल सैन वधवा, डॉ० संसार चन्द, श्री अमरनाथ महाजन महाशय, खुशहाल चन्द, श्री गिरधारी लाल पासी, श्री वेद प्रकाश आर्य, ज्ञानी गुरदयाल सिंह, श्री महेन्द्र पाल वर्मा, लाला जोधाराम कामरेड, बिशम्भर नाथ, श्री खुशबख्त राय सूद, हरं भगवान पाहवा, ज्ञानचन्द बत्रा हन्सराज गान्धी, मदन मोहन चड्ढा, श्री मतवाल चन्द, का. फतहचन्द अयोध्या प्रसाद, सरदारी लाल मदान मुन्ना एडवोकेट एवं कई अन्य भाईयों की लग्न एवं परिश्रम का नतीजा है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

परमात्मा की महानता

□ ले. स्व. आचार्य राम प्रसाद जी वेदालंकार

(गतांक से आगे)

ऐसे ही कहने को मैं सन्ध्या कर रहा हूं, एंकान्त में भी मैं बैठा हुआ हूं, आंखें भी मेरी बन्द हैं, मुख भी मेरा बन्द है, सिद्ध आसन व पद्मासन में भी बैठा हुआ हूं, मन ही मन मन्त्रोच्चारण भी कर रहा हूं, या ध्यान भजन करता हुआ कहने को प्रभु के समीप बैठा हुआ भी मैं प्रतीत होता हूं, परन्तु ज्यों ही मुझे पुत्री की व पुत्र की आवाज सुनाई दी जो कि बाहर पढ़ते हैं, सम्भवत: छुट्टी में आए होंगे या मेरी मातृ तुल्या भगिनी विदेश से आई है, उनकी मधुर प्रिय ध्वनि मुझे सुनाई दी। सब उनसे मिल रहे हैं, बातचीत करते हुए फूले नहीं समा रहे हैं, और मैं सन्ध्या कर रहा हूं, प्रभु के समीप बैठ कर उसकी उपासना कर रहा हूं ? पर यह सब कहने को ही अब मैं कर रहा हूं, बाहर से ही सब करता हुआ लगता हूं, पर भीतर से तो मैं अब कहां प्रभु के पास बैठा हूं मन से तो अपनी मातृ तुल्य भगिनी व प्यारे पुत्र व पुत्री के पास बैठा हुआ अब मैं जल्दी-जल्दी सन्ध्या को समाप्त करने में लगा हुआ हूं, ताकि इससे निवृत्त होकर शीघ्र ही मैं भी उनके समीप केवल मन से ही नहीं वरन् तन से भी जा बैठूं और खूब बातचीत करता हुआ आनन्द मनाऊं।

ऐसी स्थिति में जब कभी भक्त-उपासक आत्मनिरीक्षण करता है और अपने को बाहर से उपासक और भीतर से घर परिवार आदि के मोह में पर्याप्त बन्धा हुआ देखता है तो फिर उसे सन्देह होने लगता है और इसी कारण वह सहज ही कह उठता है कि-"किं मे हव्यमहृणानो जुषेत? क्या वह मेरे हव्य को-भेंट को-आहुति को-आह्वान को-पुकार को सहज स्वीकार करेगा-सहज सुनेगा-मेरी इस उपासना को सहज अङ्गीकार करेगा ?"

परन्तु एक बात है यदि हमारे हव्य द्रव्य घृत भात सामग्री आदि में केसर कस्तूरी मिष्ट-पुष्ट-दाख बादाम, गरी, छुवारा, मखाने, किशमिश आदि एवं सुगन्धित रोग निवारक आदि पदार्थ अधिक न भी हों, या वह घृत भात सामग्री आदि हव्य द्रव्य अत्याल्प-बहुत थोड़े और सामान्य से भी क्यों न हों, भगवान् के इस विशाल संसार के लिए भले ही वे अत्यल्प-बहुत न्यून भी क्यों न हों, तो भी स्वीकार करेगा, यदि उसके पीछे हृदयगत भावना दिव्य होगी तो। श्री रामचन्द जी को ही देखो भीलनी के बेर जब उनके सम्मुख आए तो पहले तो वे कुछ संकुचाए, पर फिर जब उन्होंने उसकी हृदयगत भावना को देखा, उसके स्नेह को देखा, उसके उत्साह को देखा, तो झट उन्होंने उनको स्वीकार कर बड़े प्यार से उनका सेवन किया। श्री कृष्ण जी ने दुर्योधन के राजकीय भोज को यह कह कर ठुकरा दिया कि-"दुर्योधन भोजन दो ही स्थितियों में किया जा सकता है, एक तो तब जब प्राणों पर आ जाए अर्थात् जब भूख के मारे प्राण निकले जा रहे हों, तो फिर उस समय जहां कहीं से भी जीवन रक्षा के लिए जो कुछ भी मिले तो उससे अपनी भूख को शांत कर लेना चाहिए, या फिर खिलाने वाले में बहुत स्नेह हो, श्रद्धा हो। सो हे दुर्योधन ! भूख हमें नहीं है, स्नेह श्रद्धा तुझ में नहीं है, तो भला फिर मैं तेरे भोजन को कैसे स्वीकार करूं ? पर वे ही श्रीकृष्ण महाराज थे जिन्होंने कितने प्यार से विदुर जी के यहां भोजन किया जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा बन गई, एक मिसाल बन गई। आज भी बड़ी श्रद्धा से इस उक्ति के साथ लोग भगवान श्री कृष्ण चन्द्र जी को याद करते हैं। "दुर्योधन के मेवा त्यागे, साग विदुर घर खायो।" सुदामा जी अपनी पत्नि के कहने पर अपने विद्यार्थी काल के सखा श्रीकृष्ण चन्द्र जी के पास आए और मित्र के लिए और कुछ विशेष नहीं मिला तो पत्नि ने मुट्ठी भर तण्डुल ही पोटली में बांध दिए। पर सुदामा जी जब श्रीकृष्ण जी के यहां पहुंचा और उसने उसके विशाल सुन्दर भवन को देखा तथा वहां के धन-वैभव, सुख-सौभाग्य को देखा तो उसे बड़ी लज्जा आई-बड़ी शर्म महसूस हुई और वह सोचने लगा कि-"इस महान प्रसाद में इतने धन-वैभव में मेरे इन थोड़े से तण्डुलों का क्या महत्व है ? सो इनको मैं कैसे दूं....." यह सोचकर उसने उस पोटली को बगल में दबा लिया। श्रीकृष्ण जी यह सब कुछ भांप गए और बोले कि मेरे प्यारे मित्र ! हमारी भाभी ने हमारे लिए क्या भेजा है ? सुदामा जी संकुचाए और कुछ नहीं बोले। पर श्री कृष्ण जी ने उन मुट्ठी भर तण्डुलों की पोटली को प्यार से छीन लिया और उनमें उनके हृदय के दिव्य स्नेह को देखकर ऐसे प्यार से उन्हें सेवन किया कि उसे देखकर जहां सुदामा अवाक् रह गए, वहा श्रीकृष्ण-सुदामा की यह अद्भुत मित्रता इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखने लायक एक घटना बन गई......।

सो वह वरुण हमारे इस स्वल्प से हव्य को देखेगा, और सचमुच यदि उसके पीछे हमारे दिव्य दिल को देखेगा-हृदय गत उच्च भावना को देखेगा-श्रद्धा से ओत-प्रोत हमारे दिल में झांक कर देखेगा तो फिर प्रभु ने भी उसको ऐसे स्वीकार किया था व राजा दुर्योधन के राजकीय भोजन को ठुकरा कर विदुर के साग को स्वीकार किया था या भगवान् श्री राघवेन्द्र ने भिलनी के बेरों को प्रेम से स्वीकार किया था। फिर वह सचमुच 'अहृणान:' ही नहीं, क्रोध रहित ही नहीं, बिना खिझे ही नहीं, वरन् बड़े प्रेमपूर्वक हमारे हव्य को प्रभु स्वीकार करेगा। तभी तो किसी ने कहा है कि तुम 10 बोरी आटा न दो, एक बोरी न दो, एक मन न दो, एक किलो न दो, भले ही तुम एक मुट्ठी भर आटा दो, पर वह जो पवित्रता पूर्वक अर्जित किया हुआ, वह हो दिल से दिया हुआ, वह भी बड़ी श्रद्धा और प्रेम से दिया हुआ।

ऐसे ही तुम जब प्रभु को पुकारो, तो फिर तुम उसी को ही पुकारो, फिर उस समय किसी और को नहीं पुकारो, और न ही स्मरण करो। कहने को तो तुम पुकार रहे हो उस प्यारे प्रभु को कि-"हे प्रभो ! तू मेरी इस झोली में पड़े हुए बच्चों को (जिसके लिए सब डाक्टरों ने जवाब दे दिया है) बचा लेना. ..।" सारी रात तुम प्रभु को इस तरह से पुकारते रहे...। प्रात: बच्चे ने आंख खोल दी, तो फिर तुमने भगवान् को पुकारना छोड़ दिया और फिर पग-पग पर उसी बच्चे को पुकारने लगे। भगवान् सोचता है...। कहने को तो यह मुझे पुकार रहा है पर वास्तव में तो यह इस बच्चे को पुकार रहा है या फिर केवल इसी के उद्देश्य से मुझे पुकार रहा है। काम पूरा हो गया तो अब हमें भूल कर बच्चे को ही पुकारने लग गया।

यह साधक जो मेरी स्तुति कर रहा है, पर यह मेरी इस लिए स्तुति नहीं कर रहा कि मैं स्तुत्य हूं, मुझ में दया, कृपा न्याय आदि गुण हैं और इनको हृदय से इन गुणों में आस्था है और यह भी जी-जान से इन गुणों को अपनाना चाहता है। वरन् यह तो मुझे दयालु कृपालु आदि कह कर मेरी चाटुकारी करके मुझसे धन-धान्य, स्त्री-पुत्र-पौत्र आदि-आदि चाहता है। सो स्तोता की इस स्तुति को देख कर वह भला कैसे उसकी स्तुति से रीझेगा......? वह तो तब प्रसन्न होगा जबकि वह साधक यह सब कुछ करता हुआ भी वह इन सांसारिक वस्तुओं की चाहना नहीं करता वरन् इन स्तुत्य गुणों के आधार पर वह अपने को भी स्तुत्य बनाना चाहता है। भगवान् उसकी इस भावना पर बहुत प्रसन्न होता है, और उसकी स्तुति के आधार पर उन गुणों से उसको भी स्तुत्य बना देता है।

ऐसे ही जब एक उपासक उसकी उपासना करता है तो बाहर से आसन में बैठकर सभी इन्द्रियों को अन्तर्मुखी कर बाहर की वस्तु व्यक्ति एवं स्थानों से अपने को पृथक् कर स्त्री-पुत्र-बन्धु-बान्धवों एवं घर-परिवार-मित्र आदि से विमुख हो कर केवल उस वरणीय वरुणदेव के समीप बैठ जाता है, तो फिर सचमुच वह वरुण इस उपासक की उपासना को सहज स्वीकार करता है-सहज सेवन करता है।

प्रभुवर! तू हम साधकों को ऐसी शक्ति-भक्ति दे कि हम भी सच्चे भक्त बन कर तुझ प्रभु में ही अपने हव्य होते रहें, तुझ प्रभु के नाम पर ही इन दीन अनाथों में अपने हव्य द्रव्य होमते रहें (तुझ प्रभु में होमते हुए हमने उन्हें गाए, न जताएं और न ही किसी को बताएं) और तुझ प्रभु को ही हम पुकारते रहें, तुझ से ही प्रार्थना करते रहें, तेरी ही सच्चे दिल से उपासना करते रहे, ताकि हमारे हव्यों को तू सहज स्वीकार कर हमें कृतार्थ करे। (क्रमश:)

दण्डी-शिष्य : दिव्य दयानन्द

❑ *ले० श्री डॉ० अमरनाथ राणा एम.ए.पी.एच.डी तलवाड़ा*

सत्य शिव को पाने तथा मृत्यु का रहस्य जानने के अभिलाषी दयानन्द की ज्ञान-पिपासा इतने परिश्रम के पश्चात् भी अभी शान्त नहीं हुई थी। अत: अपने ध्येय को पाने के लिए वे अनवरत यात्राएं कर रहे थे। अपने दीर्घ भ्रमण काल में उन्होंने देखा कि धर्म के नाम पर अनेक अन्धविश्वास, कुरीतिया एव पाखण्ड जारी हैं क्योकि तब भारत धार्मिक, सामाजिक एव राजनैतिक रूप से पूर्णतया विघटित था। परस्पर घोर विरोधी मत-मतान्तरो का जाल बिछा हुआ था। 'न चिन्तन समान था, न विचार। न आचार समान था, न व्यवहार, न आराध्य देव एक था, न पूजापाठ-विधि, न एक आचार्य था, न एक धर्म-ग्रन्थी' ऐसे में वह सोचता कि क्या यह कुछ शास्त्र सम्मत हैं?'

इसका प्रतिकार ईश्वर-प्राप्ति के बिना सम्भव नहीं था। ईश्वर-प्राप्ति के लिए योगाभ्यास आवश्यक है। योग-सिद्धि के लिए शास्त्र ज्ञान अनिवार्य है तथा शास्त्र-ज्ञान के लिए व्याकरण पर अधिकार अपरिहार्य एवं व्याकरण का अधिकारी पण्डित प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी मथुरा में रहता है। इसलिए ज्ञानाभिलाषी साधु उनके श्री चरणों में उपस्थित होने के लिए मथुरा आया है। यह है भारत-भाग्याकाश पर कालान्तर में उदय होने वाला सूर्य बाल-ब्रह्मचारी तपस्वी-साधक देव दयानन्द। दयानन्द रवि अभी अनुदित है।

दयानन्द: अवतरण-इधर गुरु भी अपनी सतत् साधना, तपस्या एवं चिन्तन की पूजी देने के लिए उद्धत हे। उनकी रिक्त आखे जिस शिष्य रत्न को पाकर ज्योतिष्मान होने के लिए तरस रही थीं जो उनके भीतर की अग्नि का उत्तराधिकारी बन सके। वह अब तक न मिला था। एक वे चाहते थे कि ऐसा योग्य शिष्य मिल जाए जो उनकी चिन्तन परम्परा को भविष्य में जीवित रखे और उसे यथासम्भव विस्तार दे, पर लेने वाले मे भी तो सुपात्रता एवं क्षमता हो। क्योकि विस्मयोत्पादक आर्ष-ज्ञान-ज्योति की तीव्रता को धारण करने की शक्ति सामान्य शिष्यों में नहीं थी। उस महाज्योति को धारण करने वाला कोई उन्हीं के समान अखण्ड-ब्रह्मचारी, प्रभु भक्त, तपस्वी अलौकिक पुरुष होना चाहिए।

अत: दण्डी जी की स्पष्टवादिता, निर्मल-चरित्र एव गहन पाण्डित्य के विषय मे दयानन्द ने सुन रखा था। उनके समान वेदों का ज्ञाता और प्रचलित धार्मिक-विश्वासों को परखने की तार्किक-क्षमता रखने वाला कोई न था। इसलिए वह चल कर मथुरा आया है। कुछ दिन यहां ठहर कर ज्ञानाभिलाषी साधु ने आज दण्डी जी की कुटिया का द्वार खटखटाया। यथापूर्व द्वार अन्दर से बन्द है।

दण्डी जी ने पूछा कौन है ? उत्तर मिला-दयानन्द सरस्वती। कुछ व्याकरण भी पढ़े हो ? हां महाराज। सारस्वत आदि व्याकरण ग्रंथ पढ़े हैं। दण्डी जी बोले-जो मनुष्य-कृत ग्रंथ आज तक पढ़े हैं, वे अनार्ष हैं। जब तक इनका प्रभाव रहेगा, ऋषि-प्रणीत आर्ष ग्रन्थों का हृदय में प्रकाश न हो सकेगा। अत: तुम्हारे पास जो भी आधुनिक पुस्तकें हैं उन्हें यमुना में बहा दो, ताकि यथार्थ ज्ञान प्रकाश हो सके। दयानन्द तथास्तु कह कर आज्ञा पालन करने और अपनी प्रिय पुस्तकों को यमुना में त्रिसाजत करने हेतु जब चलने लगे तो नारियल की भांति अन्दर से कोमल और बाहर से कठोर अनुशासन प्रिय दण्डी जी ने फिर कहा:-

'भोजन-व्यवस्था के कारण मैं संन्यासी को नहीं पढ़ाता। तुम पहले अपने भोजनादि की व्यवस्था करके आओ। सुनिश्चित-व्यवस्था और साधु का क्या मेल ! किन्तु यह दयानन्द के व्याकरण पढ़ने के दृढ़ संकल्प की परीक्षा थी। उसे तो ज्ञानामृत चाहिए। अत: उसने कहा-महाराज आप पढ़ाना आरम्भ कीजिए। भोजनादि के विषय में मैं शीघ्र ही निश्चितता प्राप्त कर लूंगा।'

दयानन्द को लगा कि यही वह व्यक्ति है जिसकी उसे खोज थी। अब तक न विरजानन्द को ऐसा शिष्य मिला था और न ही दयानन्द को ऐसा गुरु। जौहरी को हीरा मिल गया और हीरा भी सही हाथों में पहुंच गया।

तब अकाल पीड़ित मथुरा में भोजन प्रबन्ध सुगम न था। किन्तु भगवान तो पत्थर के कीड़े को भी भोजन देते हैं।

आरम्भ में दुर्गा प्रसाद खत्री ने भुने हुए चनों की व्यवस्था कर दी फिर गुजराती ब्राह्मण जोशी बाबा अमर लाल ने उनके भोजन और पुस्तकों का दायित्व लिया जो उनके शिक्षा-समापन तक उत्तमता से निभाया गया। खेतामल-नन्नूमल सर्राफ ने उन्हें तेल के लिए चार आने मासिक देना आरम्भ कर दिया। हरदेव पत्थर वाले, दूध के लिए प्रतिमास दो रुपए देने लगे। पुन: दण्डी जी की प्रेरणा से इकतीस रुपए चन्दा करके उनके लिए महाभाष्य की प्रति मंगवाई गई।

इस अन्नादि दान के लिए इन दानी महानुभावों का दयानन्द ही नहीं अपितु सारा आर्य-जगत् ऋणी है।

इस प्रकार भोजन एवं आवास की व्यवस्थोपरान्त गुरु-गुण-गरिमा से मोहित, अद्भुत प्रतिभा के धनी दयानन्द मनोयोग से विद्यार्जन करने लगे। वर्णोच्चारण से प्रारम्भ कर दयानन्द को वे पढ़े-पढ़े वेदों तक ले गए।

जैसे तुलसी ने कहा-"गुरु गृहं गए पढ़न रघुराई। अलप काल विद्या सब आई॥ राम की भांति वे भी सकल-विद्या निष्णात हो गए।

देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय लिखते हैं कि-'दयानन्द ने अनुभव किया कि जैसे सूर्य-मण्डल से तेजो राश विनि:सृत होती है, जैसे झरने से जलधारा बहती है, वैसे ही विरजानन्द की वागिन्द्रिय से भी नाना-शास्त्रों की नाना व्याख्याएं अवरिल रूप से निकल कर शिष्य मण्डली को विस्मित करती थीं। वे प्रज्ञा के चक्षु के प्रभाव से सब शास्त्रों के दर्शन करके जिज्ञासित विषय की सुचारू मीमांसा कर देते थे।'

गुरु एक प्रकाण्ड वैदिक-विद्वान्, वैयाकरण एवं महान लाग्मी थे। दयानन्द ने उन्हें अपने ग्रंथों में परम-विद्वान् एवं महापण्डित घोषित किया है। गुरु-शिष्य दोनों सत्यान्वेषी, रूढ़ियों और पाखण्डों के विरोधी एवं वेदोक्त मार्ग के साधक थे। यह अद्भुत मिलन था। दोनों के मिलन का काल भी महत्वपूर्ण है। धरती के लाल दण्डी जी ने अपने सतत् साधना से महापण्डित दयानन्द रूपी रत्न इस धरती को दिया। उनके चिन्तन को दण्डी जी से एक सुनिश्चित दिशा प्राप्त हुई। दयानन्द उनका मानस-पुत्र है। वह महामानव है। वस्तुत: शिष्य-वत्सल, क्रान्तदर्शी दण्डी जी का शिष्यत्व ग्रहण करना दयानन्द रूपी महानन्द की धारा को बदलने का एक युगान्तर चरम-क्षण है।

गुरु-कुटिया से विदाई

अप्रैल 1863 ई. में आर्ष-व्याकरण का अध्ययन सम्पन्न हुआ। विरक्त साधु ज्ञानामृत पीकर तृप्त हो गया है। उसका रोम-रोम गुरु का ऋणी है। शकुन्तला को विदा करते ऋषि-कण्व की भांति आज वीतराग गुरुवर के नेत्र भी सजल हो उठे हैं। उनका प्रिय मानस-पुत्र जो विदा होने लगा है। शिष्य विदाई पर गुरु दक्षिणा के लिए गुरु के प्रिय पदार्थ लौंगों की अंकिंचन भेंट ले आया है।' गुरु-शिष्य में मार्मिक सम्वाद होता है-

गुरुवर दण्डी जी-गुरु दक्षिणा में लौंग नहीं कुछ और चाहिए।

-मैं अकिंचन क्या भेट करूं?

-मैं वही चाहता हूं जो तुम दे सकते हो।

-आज्ञा-पालन तो मेरा सौभाग्य होगा।

गुरुवर-आज अनार्ष-ग्रन्थों की बाढ़ आ गई है। अनेक मत-मतान्तर और कुरीतियां प्रचलित हैं। वैदिक-धर्म लोप हो चुका है। आर्यावर्त्त की दशा बिगड़ गई है। अत: आर्ष ग्रन्थों के प्रसार के लिए मुझे तुम्हारा जीवन चाहिए। यही गुरु दक्षिणा है।

-आपकी आज्ञा शिरोधार्य है गुरुवर ।

प्रज्ञाचक्षु दण्डी जी दयानन्द के युवा सबल कन्धों पर आर्य-संस्कृति के पुनरुद्धार का भार डाल कर दायित्व से मुक्त हो गए। जो मतमतान्तरों के चक्र-व्यूह को ध्वस्त करेगा।

अश्रुपूर्ण नेत्रों से गुरुवर ने शिष्य को वेद रक्षा की आशीष दी एवं वेद-ज्ञान के दिव्य अस्त्रों से सज्जित होकर दयानन्द ने आर्ष ग्रन्थों का प्रसार करने तथा मतमतान्तरों के चक्र-व्यूह को तोड़ने का संकल्प धारण कर उनसे विदा ली।

(क्रमश:)

आर्यवन में योग शिविर

दर्शनयोग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़ पो० सागपुर जि. साबर काण्ठा गुजरात में 8 नवम्बर 2002 तदनुसार कार्तिक शु 4 से 13 वैक्रमाब्द 2059 तक 10 दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन पू० स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में किया जा रहा है, जिसमें माताएं भी भाग ले सकेंगी। शिविरार्थी 7 नवम्बर को सायंकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जावें।

शिविर में योगदर्शन के सूत्रों का अध्यापन तथा क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक-वैराग्य-अभ्यास, जप-विधि, ईश्वरसमर्पण, स्वस्वामी सम्बन्ध (ममत्व) को हटाने जैसे अनेकों सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला जाएगा।

शिविर शुल्क (भोजन व्यय) रु. 400/- निर्धारित किया गया है। कृपया अपना नाम, आयु, योग्यता, व्यवसाय का विवरण देते हुए प्रथम स्वीकृति लेवें। स्वीकृति के पश्चात् शिविर शुल्क की राशि मनीऑर्डर द्वारा ही व्यवस्थापक योग शिविर, आर्यवन के नाम से भेजें। चैक, ड्राफ्ट न भेजें जो शिविरार्थी आर्थिक रूप से शुल्क देने में असमर्थ होंगे तो योग्य समझे जाने पर उन्हें शिविर-शुल्क में छूट दी जा सकेगी। अपना लौटने का आरक्षण पूर्व ही करवा लेवें। -ज्ञानेश्वरार्य

जिला लुधियाना में आर्य समाजों..........

(पृष्ठ 4 का शेष)

अब भी इस आर्य समाज में कई [illegible] हुए हैं। इस समाज का दैनिक साप्ताहिक पारिवारिक सत्संग नियम पूर्वक चलता है। समाज में योग्य पुरोहित श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री एवं सेवक भी हैं। अतिथि सत्कार का यहां विशेष प्रबन्ध है। गरीबों की सहायता का कार्य कई वर्षों से सफलतापूर्वक चल रहा है। पहले यहां भक्त चेतन देव फ्री डिस्पैन्सरी बड़ी शान से चलती थी। पर अब वह बन्द है उसके स्थान पर सिलाई स्कूल, कम्प्यूटर कोर्स चल रहे हैं। इस समाज के अधिकारी और परिश्रम करें तो यह समाज पुरानी शान को प्राप्त कर सकती है फिर भी गतिशील आर्य समाज है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित है।

स्त्री आर्य समाज दाल बाजार:—कई वर्षो से यह आर्य समाज देवियों में वैदिक धर्म का प्रचार कर रही है। लुधियाना की कई बहनो ने इस आर्य समाज को गतिशील बनाने में बड़ा योगदान दिया और पुरुष समाज के साथ मिलकर काम किया। विशेषकर माधोपुरी की बहने थापर बहन, भगवती बहन, सरला बहन और बहन शान्ता गौड़ जिन्होंने अब सन्यास ले लिया है और स्वामी सुमनायति के नाम से सेवा कर रही है और भी कई बहनों ने पूरा योगदान [illegible] रूप से स्वामी सुमनायति जी, श्रीमती जनकरानी, आर्य-पुष्पा और कई बहनें इस समाज की सेवा कर रही हैं। जनकरानी आर्या ने तो अपना सारा जीवन आर्य समाज को अर्पण किया हुआ है। वह न केवल इस समाज की मन्त्राणि हैं किन्तु ग्रीन पार्क में भी हर रविवार को उनकी देखरेख में सत्संग चलता है। इस समाज में वार्षिक गायत्री यज्ञ होता है जो काफी सफल रहता है इस बार यहां कृष्ण जन्म अष्टमी भी सुन्दर ढंग से मनाई गई है।

आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना में सबसे पुरानी आर्य समाज है जिसे स्थापित हुए एक सौ वर्ष से भी अधिक हो गए हैं। लुधियाना में जब महर्षि दयानन्द जी पधारे थे और राय साहिब शिव प्रसाद के दादा जयमल प्रशाद खजान्वी प्रिस होस्टल के समीप की कोठी खजान्वियों में ठहरे थे तो इस आर्य समाज में पधारे थे। काफी देर हो गई मुझे एक आर्य समाजी ने बताया था कि श्री शिव प्रसाद जी वह ऐतिहासिक स्थान है जहा स्वामी जी ठहरे थे। आर्य समाज को देना चाहते थे परन्तु उस समय किसी आर्य समाजी ने ध्यान नहीं दिया। काश वह स्थान आर्य समाज के पास होता तो एक ऐतिहासिक स्थान बन सकता था हम लोग जब पाकिस्तान में थे तो आर्य पत्रिकाओं में लुधियाना के तीन आर्य समाजियों के नाम अक्सर पढ़ते थे। प्रिंसिपल [illegible] मा. किशन सिंह जी। विभाजन के पश्चात् आकर मा. किशन सिंह एवं श्री बाबू राम जी गुप्ता से कई बार भेंट हुई। सचमुच उनके मन में आर्य समाज के लिए श्रद्धा थी जो आज के भाईयों में कम मिलती है। इस समाज के सहयोग से आर्य गर्ल्ज स्कूल, आर्य स्कूल पुराना दयानन्द हास्पीटल का निर्माण हुआ। अब इन सब संस्थाओ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब चला रही हैं। इस आर्य समाज में कई योग्य कार्यकर्त्ता हुए परन्तु सब का ध्यान संस्थाओं की और रहा। वेद प्रचार की ओर कम रहा।

श्री हंसराज ढन्डा, डॉ० गुज्जरमल थापर, श्री राम लाल जी, मास्टर किशन सिंह जी, श्री बाबू राम जी, डॉ० कान्ति नन्दन जी, वैद्य कुन्दन लाल जी, वैद्य लोकनाथ जी बागिया, ला० राजा राम सरीन साहिब, डॉ० राम स्वरूप जी, ओम प्रकाश पासी एव कई ओर सज्जन महारथी रहे हैं। डॉ० राम स्वरूप एवं ओम प्रकाश पासी जी नियम पूर्वक आर्य समाज में आते हैं। डॉ० रामस्वरूप जी अस्वस्थ हैं [illegible] मिलने जाता हूं तो सारा समय आर्य समाज की चर्चा होती है। आर्य समाज के इन नेताओं ने जिनका रूलिंग पार्टी में अच्छा पद था इन संस्थाओं के लिए कुछ नहीं किया। इसका परिणाम आर्य गर्ल्ज स्कूल की पुरानी बिल्डिंग है दूसरी सस्थाआ न अपनी शिक्षण सस्थाओ के लिए सरकार से काफी स्थान प्राप्त कर लिया है।

इसके पश्चात् इस आर्य समाज को डॉ० राम स्वरूप, डॉ० सत्य भूषण बागिया, श्री ओम प्रकाश पासी, श्री यशपाल बागिया ने सफलता पूर्वक चलाया परन्तु उसके पश्चात् इस आर्य समाज में गुटबन्दी होने से आर्य समाज का काम ठप्प हो गया। अब आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने इस समाज की तदर्थ समिति बना दी है जिसने पिछले दिनो एक सफल समारोह करके इस समाज का कार्य बढाने का यत्न किया ह। प्रभु इन्हे सफलता दे। (क्रमशः)

शोक

आर्य समाज बस्ती हरफुल सिह, दिल्ली के प्रधान श्री मुन्ना लाल शर्मा का देहावसान 20 सितम्बर की रात्रि को हृदयगति रुक जाने मे हो गया, जिनका अन्त्येष्टि सस्कार दिनाक 21-9-2002 को निगम बोध घाट पर वेदिक रीति से सम्पन्न हुआ। उन्होने आर्य समाज की जो सेवा की हे, वह स्वर्णिम अक्षरो मे अकित होगी। उनके निधन मे आर्य समाज को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना निकट भविष्य मे सम्भव नहीं है। दिनाक 22-9-2002 को सत्सग के पश्चात् उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की गई। —तिलक राज आर्य, मन्त्री

भठिण्डा में शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि

भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में 24 सितम्बर 2002 का वह अभागा दिन है जब कुछ दरिन्दों द्वारा पूजा स्थल में अन्धाधुन्ध गोलियां चलाई गई। इस समाचार ने सारे देश को हिला कर रख दिया। हमारे आर्य गर्ल्ज़ सी सै. स्कूल बठिंडा में भी 25-9-2002 को प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में प्रधानाचार्या, अध्यापकगण, प्रबन्धक समिति एवम् छात्राओं की ओर से, अक्षरधाम मन्दिर अहमदाबाद (गुजरात) में आतंकवादियों द्वारा अन्धाधुन्ध गोलियां चलाकर मारे गए अनेकों श्रद्धालुओं को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

गुजरात में जो हिंसा का ताण्डव हुआ। प्रिंसिपल शान्ति जिन्दल जी ने इस घिनौनी हरकत की बहुत कड़े शब्दों में निन्दा की और कहा "लानत है ऐसे दरिन्दों पर, जो खुदा से खौफ नहीं खाते। पशुओं से भी गए गुजरे, मानव होकर भी, मानव से प्यार नहीं करते।" अन्त में उन्होंने शहीदों की आत्मिक शान्ति के लिए दो मिनट का मौन करवा कर पार्थना की और कहा हमारे घायल भाई-बन्धु ईश्वर कृपा से शीघ्र से शीघ्रतर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें। मृतकों की आत्मा को ईश्वर शान्ति दे। उनके परिवार ने इष्ट-मित्रों व प्रियजनों को यह सदमा सहने का बल दे इसके अतिरिक्त परमात्मा गुमराह व सन्मार्ग से भटके हुए इन आतंकवादियों को सद्बुद्धि दे जिससे वे भी अपना जीवन संवार कर अपना बल व बुद्धि देश के विनाश में नहीं, देश की सेवा में लगा सके। —चमन लाल मेहता, मैनेजर

निर्दोष लोगों की हत्या एक घिनौना कार्य

आज दिनांक 29 सितम्बर 2002 को आर्य समाज बठिण्डा के प्रांगण मे आर्य समाज के "वैदिक मिश्नरी" ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी के ब्रह्मत्व में रविवारीय हवन यज्ञ एवं सत्संग सम्पन्न हुआ। श्री प्रेम भाटिया महामन्त्री जी ने काफी भावुक होकर ब्रह्मचारी जी से निवेदन किया कि वे गुजरात के एक धार्मिक स्थल में निर्मम हत्याकाण्ड जो पाकिस्तान द्वारा संचालित आतंकवाद का एक घिनौना परिणाम है, इसकी निन्दा की जाए और मृतको की आत्मिक शान्ति के लिए विशेष प्रार्थना की जाए।

उपस्थित आर्य जनों ने इस घृणित कार्य की निन्दा की और परमपिता परमात्मा से मृतकों की आत्मिक शान्ति के लिए प्रार्थना की, उपस्थित सभी आर्य जनों जिनमें प्रो० ओ पी. मंगला जी प्रधान आर्य समाज, लाला [illegible] चन्द्र, लाला कुलवन्त राय, श्री एम.पी अरोड़ा, श्री नवनीत कुमार जी, श्री गौरी शंकर जी, श्री चमन लाल मेहता एवम् अन्य आर्यजनो के विचार थे कि पाकिस्तान हमारा पड़ोसी देश जो कि हमारा विशेष अग रहा है भारत वासियों के साथ दुश्मनी का रुख अपनाये हुए हे जिसकी जीती जागती मिसाल है जम्मू काश्मीर में आतंकवाद। इससे घिनौनी एक और घटना जिसमें पाकिस्तानियों ने आतंकवादियों को भेज हमारे सर्वोच्च भारत की शान ससद भवन पर हमला किया तथा भारत में लगातार आतंकवाद को प्रोत्साहन दे रहा है। पिछले दिनों गुजरात के एक धार्मिक स्थान पर आतकवादियों ने निर्मम हत्याएं की हैं। अन्त में सभी ने दो मिनट का मौन धारण कर मृतकों की आत्मिक शान्ति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। —प्रेम भाटिया, महामन्त्री

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना की ओर से पारिवारिक सत्संग श्री रमेश जी सरीन 134-ई, किचलु नगर, लुधियाना में 13-10-2002 रविवार को साय 4 से 6 बजे तक होगा। प्रो० वेदव्रत जी का उपदेश होगा।

फाजिल्का में वेद प्रचार

आर्य समाज मन्दिर फाजिल्का मे साप्ताहिक हवन यज्ञ का संचालन स्वामी दयानन्द माडल स्कूल के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने अध्यक्ष डॉ० अमर लाल बाघला की अध्यक्षता में किया।

श्री निवेदन कुमार शास्त्री ने वेद मन्त्रो द्वारा विद्यार्थियों के द्वारा हवन यज्ञ करवाया। सचिव सुशील कुमार वर्मा और लक्ष्मी नारायण जी ने भजन सुनाए। सुबोध नागपाल पत्रकार, उमेश कुक्कड एडवोकेट, किशोरचन्द पुन्छी रिटायर्ड मुख्याध्यापक विरोहा अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। शाम लाल आर्य, लीलाकर खरे ने स्वामी दयानन्द के बारे में बताया। —डॉ० अमर लाल बाघला, अध्यक्ष

श्राद्ध का अर्थ है जीवित माता-पिता एवं वृद्धों की सेवा करना

श्राद्धपक्ष के अवसर पर बी-ब्लाक नई दिल्ली के आर्य समाज (जनकपुरी) में बोलते हुए वैदिक विद्वान् एवं आर्य नेता डॉ० श्री शिव कुमार जी शास्त्री ने कहा कि श्राद्ध का वास्तविक अर्थ है जीवित माता-पिता, दादा-दादी एवं परिवार के अन्य वृद्धों की सेवा करना तथा तर्पण का अर्थ है उन्हें भोजन, वस्त्र आदि से तृप्त करना। आज भ्रम और अविद्या के कारण हम मृत माता-पिता का श्राद्ध करते हैं और पण्डितों को जिमाते हैं, पर जीवित माता-पिता की प्रायः सेवा नहीं करते। माता-पिता की सेवा और तृप्ति का कार्य तो निरन्तर चलना चाहिए तथा हमें उनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए। श्राद्ध और तर्पण के इस कार्य का केवल पितृपक्ष से कोई सम्बन्ध नहीं है। श्राद्धपक्ष के बाद आने वाले नवरात्र एवं नवरात्र पक्ष के जागरण की चर्चा करते हुए शास्त्री जी ने कहा कि आंख, कान, नाक, जिह्वा आदि इन्द्रियों के प्रति जागरुक रह कर उनसे कोई दुष्कर्म न करना ही वास्तविक जागरण है। हमें अपनी नौ इन्द्रियों को हमेशा शुभ कार्यों में लगाना चाहिए। 'जय मां शेरां वाली' की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि यह भारत माता सिंह के समान वीर पुत्रों को पैदा करने वाली है, यहां उसी का जय जयकार किया गया है, अन्यथा शेर पर चढ़े हुए तो किसी ने किसी को देखा नहीं है। इस अवसर पर आर्य प्रवक्ता एवं आर्य समाज के प्रधान प्रो० (डॉ०) सुन्दर लाल कथूरिया एवं श्री सोहन लाल ओहरी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। प्रारम्भ में श्री वेदपाल निझावन ने अपने सुमधुर भजन से सबका मन मोह लिया। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी ने किया। —योगेश्वरचन्द्रार्य

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज खिचड़ीपुर, कालोनी, दिल्ली के तत्वावधान में 19 सितम्बर से 22 सितम्बर 2002 तदनुसार विक्रम संवत् 2059 की भाद्रपद की त्रियोदसी, चतुदर्शी, पूर्णिमा एवं आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की प्रथमा तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन वैदिक विद्वान आर्य गुरुकुल नोएडा के युवा प्राचार्य डॉ० जयेन्द्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस महायज्ञ में वेदों की मार्मिक व्यवहारिक व्याख्या की गई एवं पं. ज्योति प्रसाद श[illegible]ि के मधुर संगीत द्वारा आर्य जनों को लाभान्वित किया गया।

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में मासिक यज्ञ का आयोजन

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में 26-9-2002 दिन शनिवार को प्रातः 8.30 बजे से 9.30 बजे तक हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें बहुत से छात्र-छात्राएं यजमान बने यज्ञ श्रीमान श्रवण कुमार बत्तरा जी ने सम्पन्न कराया। बच्चों को मन्त्रों का अर्थ विस्तार से समझाते हुए हवन करवाया। बच्चों ने भी हवन में भरपूर रूचि ली।

स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने भी बताया कि जिस घर में यज्ञ होता है वह घर भाग्यशाली होता है और हमारे स्कूल के बच्चों में धार्मिक शिक्षा इतनी कूट-कूट कर भर दी जाती है कि कोई भी बच्चा बड़ा होकर नास्तिक नहीं बनता। स्कूल के प्रधान जी स्कूल की प्रिंसीपल साहिबा ने वैद्य वैष्णो प्रसाद जी की बहु सुनिता शर्मा का धन्यवाद किया कि उन्होंने हवन में भाग लिया और यज्ञ शेष का भी प्रबन्ध किया। स्कूल की प्रबन्ध समिति के अन्य सदस्य श्री सतपाल नारंग, हर्ष आर्य, विजय सरोन जी ने मिलकर बच्चों को आशीर्वाद दिया इसके पश्चात् स्कूल में अभिभावको-अध्यापकों की मीटिंग का आयोजन था। जिसमें बच्चों के अभिभावकों को सितम्बर टैस्ट के [illegible] दिखाए गए और बच्चों को खूब मेहनत और लग्न से पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। शान्ति पाठ के पश्चात् कारवाई समाप्त हुई। —सुनीता मलिक, प्रिंसीपल

श्री [illegible] आर्य सभा [illegible] अध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

ऋग्वेद कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम् यजुर्वेद

साप्ताहिक

दूरभाष : 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 26 सृष्टि संवत 1960853103, 20 अक्तूबर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

कर्नाटक के नवनियुक्त

स्वाध्यायशील राज्यपाल श्री टी.एन. चतुर्वेदी

□ ले० डॉ० भवानी लाल भारतीय, 8/423 नन्दनवन, जोधपुर

आर्य जगत् को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आर्य सामाजिक परिवेश में पले बढ़े श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी (सदस्य राज्य सभा) को भारत के राष्ट्रपति ने कर्नाटक का राज्यपाल नियुक्त किया है। श्री चतुर्वेदी अवकाश प्राप्त आई.ए.एस. तो हैं हीं, उन्होंने चण्डीगढ़ के आयुक्त लोक प्रशासक संस्थान (Institute of Public Administration) के निदेशक भारन सरकार में शिक्षा सचिव तथा गृह सचिव और नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक जैसे उच्च एवं दायित्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। 1990 में सरकारी सेवा से अवकाश लेने के पश्चात् वे राजनीति में आये तथा दो बार राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। गम्भीर एवं अध्ययनशील प्रवृत्ति के श्री चतुर्वेदी का सम्बन्ध फर्रुखाबाद जिले के एक आर्य परिवार से रहा है। उनके चाचा श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी की आर्य समाज में अनन्य आस्था थी तथा उनके निजी पुस्तक संग्रह में आर्य समाज विषयक ग्रन्थों की प्रचुर संख्या थी। इस बहुमूल्य पुस्तक संग्रह का प्रत्यक्ष लाभ भी चतुर्वेदी को मिला। फलतः स्वामी दयानन्द एवं नवजागरण के अन्य महापुरुषों के जीवन चरितों का अध्ययन करने में उनकी अनन्य रुचि रही।

1929 में जन्में श्री चतुर्वेदं का उच्च अध्ययन इलाहाबाद विश्व-विद्यालय में हुआ जहां से उन्होंने अर्थ शास्त्र में एम ए किया। भारतीय प्रशासनिक सेवा में निर्वाचित होने के पश्चात् उनकी प्रथम नियुक्ति राजस्थान में हुई। वे तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व० मोहन लाल सुखाड़िया के सचिव रहे तथा अजमेर के जिलाधीश के पद का निर्वहन किया। जिन दिनों वे अजमेर में थे (साठ के दशक में) दीपावली के पश्चात् आयोजित ऋषि मेले में उनकी नियमित उपस्थिति रहती थी। चण्डीगढ़ के चीफ कमिश्नर के पद पर रहते समय उन्होंने इस नगर की भव्यता और सौन्दर्य को बढ़ाने में सराहनीय योगदान दिया। प्रसिद्ध उद्यान रॉक गार्डन की आधारशिला उन्हीं के कर कमलों से रखी गई जो आगे चल कर प्रसिद्ध कलाविद् नेकचंद की प्रतिभा का चमत्कार बना। आर्य समाज सैक्टर 16 के भव्य सभागार की नींव भी उन्होंने ही रखी। वे यहां आर्य समाज की गतिविधियों में रुचि लेते रहे।

प्रशासन एवं राजनीति के दायित्वों को निभाते हुए भी उन्होंने अध्ययन एवं अनुशीलन को सदा वरीयता दी। यह देख कर आश्चर्य होता था कि भारत के गृह सचिव तथा महालेखाकार जैसे दायित्वपूर्ण पदों पर रह कर भी वे अपने अध्ययन के लिए पर्याप्त समय निकाल लेते थे। चण्डीगढ़ की द्वारका दास लाइब्रेरी से उनका पर्याप्त सम्पर्क रहा। यह वह ऐतिहासिक पुस्तकालय है जिसकी स्थापना लाहौर में लाला लाजपतराय ने अपने आर्य समाजी मित्र लाला द्वारका दास की स्मृति में की थी और देश विभाजन के पश्चात् जिसे चण्डीगढ़ में लाया गया था। लाला जी के स्वयं के ग्रन्थों तथा उनके द्वारा सम्पादित पत्रों का यहां मूल्यवान संग्रह है। मैं स्वयं यहां का सदस्य रह चुका हूं।

मैं इसे अपना व्यक्तिगत सौभाग्य मानता हूं कि चतुर्वेदी जी ने मेरे लेखन में निरन्तर रुचि ली है। अजमेर में सत्तर के दशक में जब एक बार उनका आगमन हुआ उस समय वे राजस्थान उद्योग निगम के अध्यक्ष थे। सर्किट हाउस में उनसे विस्तृत वार्तालाप हुआ और स्वामी दयानन्द के साहित्य पर व्यापक चर्चा हुई। वे मेरे निवास पर मेरी निजी पुस्तक संग्रह देखने आये और वहां संगृहीत अनेक दुर्लभ ग्रन्थो को रूचिपूर्वक देखा। 1980 में जब पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोधपीठ के अध्यक्ष पद पर मेरी नियुक्ति हुई तो उन्होंने विशेष प्रसन्नता व्यक्त की तथा आशा जताई कि यहां रह कर शोध एवं अनुसंधान के मुझे प्रचुर अवसर मिलेंगे। 1981 मे जब वे शिक्षा सचिव थे, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर उन्हें आमन्त्रित किया गया। मैंने देखा कि वे समारोह की समाप्ति पर वहां लगी पुस्तकों की दुकानों पर खडे हैं तथा स्वरुचि के ग्रन्थ क्रम कर रहे हैं। भारत के गृह सचिव का पद तो अधिक चुनौतियों भरा तथा दायित्व का था। वे दिन पंजाब में आतंकवाद जन्म अशान्ति के थे। उन्हें यदा कदा स्थिति का जायजा लेने के लिए प्रधानमंत्री के विशेष आदेश से चण्डीगढ़ आना पडता था। उस समय वे मुझे स्मरण करते तथा घण्टों तक दयानन्द एवं आर्य समाज विषयक नये पुराने साहित्य पर व्यापक चचा करते। उस समय वे मेरे विभाग में भी आये और मेरे निजी पुस्तकालय में विशेष रूचि ली। आश्चर्य होता था कि उनका 6 अशोक रोड़ स्थित सरकारी निवास का अध्ययन कक्ष नव प्रकाशित ग्रन्थों से परिपूर्ण है तथा प्रत्येक ग्रन्थ पर वे अधिकार पूर्वक वार्तालाप करने की क्षमता सकते हैं। मैंने उनसे पं. सत्यदेव विद्यालंकार लिखित स्वामी श्रद्धानन्द की बृहद् जीवनी भेंट रूप में प्राप्त की। उनकी एक अन्य विशेषता मेरे लिए निजी वरदान रूप में रही। अनेक अधिक मूल्य की पुस्तको को स्वयं क्रय करके उन्होंने मुझे भेंट किया ताकि मैं उनका अध्ययन कर सकूं। इनमें डॉ० जॉडिन्स के स्वामी दयानन्द विषयक शोध निबंध तथा उमा चक्रवर्ती लिखित पं. रमा बाई विषयक ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं।

1986 में श्री चतुर्वेद जी को कुछ निजी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उनके पांव की हड्डी टूट जाने के कारण कई महीनों तक उन्हें शैय्यासीन होना पड़ा। उधर श्रीमती चतुर्वेदी की रुग्णता तथा मार्च 1990 ई मे उनके निधन मे एक अपूरणीय क्षति थी। तथापि कर्त्तव्यनिष्ठ चतुर्वेदी जी इनसे विचलित नहीं हुए। चतुर्वेदी जहां अध्ययनशील वृत्ति के हैं वे एक प्रगल्भ वक्ता भी हैं। हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनो भाषाओं पर उनका समान अधिकार है। चण्डीगढ के रामकृष्ण मिशन मे जब उनका भाषण हुआ तो उन्होंने प्रसगोपात्र दयानन्द सरस्वती के अवदान का उल्लेख किया तथा मेरे ग्रन्थ 'नवजागरण के पुरोधा' की चर्चा की। पुस्तको के प्रति उनके अनन्य प्रेम का एक उदाहरण देना आवश्यक है। यह घटना 1990 की है। वे उस समय भारत के नियत्रक तथा महा लेखा परीक्षक क पद पर आसीन थे। साहित्य अकादमी ने वृन्दावन लाल वर्मा पर एक सगोष्ठी आयोजित की जिसमें ऐतिहासिक उपन्यासो पर अनेक शोध पत्र पढे जाने थे। वृन्दावन लाल वर्मा ने बुन्देलखण्ड पर आधारित उपन्यासो पर मेरा शोधपत्र भी पढा जाना था। चतुर्वेदी जी ने सगोष्ठी मे एक साधारण श्रोता के रूप मे भाग लिया तथा शोध विद्वानों के वक्तव्यो को तल्लीनता से सुना।

इसी अवसर पर उन्होंने अपनी इच्छा जाहिर करते हुए कहा कि क्यों नहीं राजधानी के प्रमुख आय साहित्य प्रकाशकों के यहा हम जाये तथा नवीनतम आर्य साहित्य का परिचय प्राप्त करें। मैंने इस साहित्य यात्रा में उनका सत्कार किया फलत: मैं और मेरी पत्नी श्रीमती शान्ति भारतीय आर्य साहित्य प्रकाशकों के यहां की इस सारस्वत यात्रा में श्री चतुर्वेदी जी के साथी बने। सर्वप्रथम हम प्रसिद्ध आर्य साहित्य प्रकाशक गोबिन्दराम हासानन्द के अंसारी रोड स्थित कार्यालय गये और इस संस्थान के संचालक स्व. श्री विजय कुमार से मुलाकात की। यहां से दो वर्ष पूर्व ही मेरे द्वारा ग्यारह खण्डों में स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का संस्पादित संस्करण छप चुका था।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्य नेता श्री मोहन लाल जी मोहित दीर्घायुष्काम उत्सव सम्पन्न

मॉरीशस में आर्य सभा के तत्वावधान में वयोवृद्ध आर्य नेता श्री मोहन लाल जी मोहित के 100 वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। साथ ही गॉव सेन्ट लावेनियर, मॉरीशस में विशाल महायज्ञ का आयोजन भी ''श्री मोहन लाल मोहित फाउन्डेशन'' की ओर से आयोजित किया गया।

आर्य नेता श्री मोहन लाल जी मोहित का जन्म 22 सितम्बर 1901 को मॉरीशस में हुआ और उन्होंने अपने जीवन के 100 वर्ष 22 सितम्बर 2002 को पूरे कर लिए। 100 वर्ष पूर्ण करने पर एक सप्ताह तक सम्पूर्ण मॉरीशस के अलग-अलग स्थानो पर मॉरीशस सरकार, आर्य सभा आर्य समाजो एव महात्मा गाधी इन्स्टीट्यूट आदि संस्थानों द्वारा उनके 100वी वर्षगांठ पर अनेक कार्यक्रम रखे गए।

इस अवसर पर भारत की विभिन्न आर्य समाजो से लगभग 90 व्यक्ति 18 सितम्बर 2002 को मॉरीशस के लिए रवाना हुए। इस सद्भावना प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न आर्य कर रहे थे। इसमे सम्मिलित प्रमुख व्यक्तियो में कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो स्वतन्त्र कुमार, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के डॉ० तुलसीराम जी, श्री यशपाल आचार्य जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एव पडित रामकृष्ण जी, उप कुलपति गुरुकुल अयोध्या सम्मिलित थ।

मॉरीशस पहुचने पर आर्य सभा के अधिकारी हमारे सम्मान के लिए उपस्थित थे। उनमे विशेष रूप से आर्य सभा के प्रधान डॉ० रूद्रसेन निडर, मत्री डॉ० उदय नारायण गगू, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार मोहित, उपमत्री श्री सत्यदेव प्रीतम, उप प्रधान श्री भरत मंगर जी आदि उपस्थित थे।

17 सितम्बर 2002 से आर्य समाज सेट लावेनियर के विशाल प्रागण मे विशाल स्तर पर मोहित जी के शतायु होने के उपलक्ष्य में मोहन लाल मोहित फाउन्डेशन की ओर से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का प्रारम्भ हुआ। इसके ब्रह्म प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री जयदेव जी शास्त्री थे। श्रीमती उषा शास्त्री यज्ञ का संचालन कर रही थी एवं उनके द्वारा शिक्षित वेद पाठी महिलाओं के साथ वेद पाठ कर रही थी। पूज्यनीय स्वामी सत्यम् जी के तत्वावधान में यह यज्ञ चल रहा था। श्रीमती उषा शास्त्री ने बड़ी कड़ी मेहनत के साथ जहां सम्पूर्ण यजुर्वेद के मंत्रों का पाठ किया वहां अन्त में भजन, गीत, आरती गाकर उपस्थित जन समुदाय को बहुत प्रभावित भी किया। प्रात: सायं यज्ञ के पश्चात् विद्वानों के भाषण होते रहे। भारत से गए श्री धर्मपाल जी, आचार्य यशपाल जी, आचार्य रामकृष्ण जी, डॉ० तुलसीदास बॉगिया आदि ने भी अपने विचार यज्ञ के पश्चात् उपस्थित जनता के सामने रखे। 18 सितम्बर को आदरणीय श्री मोहन लाल जी मोहित ने बड़े सारगर्भित शब्दों में सदाचार पर भाषण दिया। 100 वर्ष की आयु मे उनकी बुलंद आवाज़ और विचारों को सुनकर लोग दंग रह गये। इस अवसर पर कैप्टन देवरत्न जी ने भी अपने विचार रखें।

सितम्बर 21 से 24 तक श्री मोहित जी के शतायु होने पर अनेक कार्यक्रम हुए। पूज्यनीय स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने लगभग 100 वेदमन्त्रों का एक चुनाव कर श्री जयदेव जी शास्त्री को भेजा था जिसमे श्री मोहित जी की दीर्घायु एव स्वस्थ आयु की कामना की गई थी। सायं पूजनीय स्वामी सत्यम् जी के वेदोपदेश होते रहे।

21 सितम्बर को आर्य सभा मॉरीशस ने एक सार्वजनिक सभा श्री मोहित जी के शतायु वर्ष मनाने के उपलक्ष्य में आयोजित की। हाल खचाखच भरा हुआ था। मॉरीशस गणतंत्र के प्रधानमंत्री माननीय श्री जगन्नाथ जी अनिरूद्ध मुख्य अतिथि थे। वे तीन घंटे के इस समारोह में प्रारम्भ से अंत तक उपस्थित रहे। इस अवसर पर मॉरीशस सरकार के अनेक मत्री भी उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी ने की। आर्य सभा के प्रधान डॉ० रूद्रसेन निडर ने स्वागत भाषण दिया। भारत के उच्चायुक्त श्री विजय कुमार ने अपने विचार रखे। श्री विजय कुमार जी, श्री पृथ्वी सिंह आजाद जो कभी सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री रहे, उनके सुपुत्र हैं।

इस अवसर पर श्री अनिल कुमार मंत्री लैण्ड ट्रांसपोर्ट एवं शिपिंग मंत्रालय, श्री मुखेश्वर मंत्री हाउसिंग एवं लेण्ड मंत्रालय, श्री शिशुपाल जी, राम भरोसे आजीवन प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका, पण्डित रामलाल जी संरक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, पूजनीय स्वामी सत्यम जी ने अपने विचार श्री मोहन लाल जी मोहित के जीवन पर रखे।

प्रधानमंत्री श्री जगन्नाथ अनिरूद्ध ने श्री मोहित जी द्वारा आर्य समाज और मॉरीशस राष्ट्र के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का वर्णन किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में कैप्टन साहब जी ने श्री मोहित जी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं पर अपने विचार रखे तो उपस्थित जनसमूह ने अनेक बार तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि मैंने श्री मोहित जी से एक बार पूछा कि आप रविवार को प्रात: भोजन क्यों नहीं करते। तब उन्होंने कहा कि मैं हर रविवार को अपनी युवा अवस्था में, जब यहां कार और बस आदि नहीं होती थी, 10 से 15 मील पैदल चलकर विभिन्न गांवों में जाया करता था और वहां आर्य समाज की स्थापना करता था। मैं युवकों को वैदिक धर्म का सच्चा ज्ञान देने जाता था पर लोग मुझसे भोजन तक के लिए नहीं पूछते थे तो मुझे वहां दुख होता था। मैंने तब निश्चय किया कि मैं रविवार को भोजन नहीं करूंगा। उसके पश्चात् जब गांव के लोग भोजन के लिए नहीं पूछते थे तो मुझे दुख नहीं होता था क्योंकि मैं रविवार को भोजन करता ही नहीं था। उनका जीवन प्रेरणा स्रोत रहा सबके लिए। उनकी कठोर मेहनत का ही परिणाम रहा कि मॉरीशस जैसे छोटे देश में आज 450 आर्य समाजें हैं और अनेक डी.ए.वी. कालेज व अनाथालय हैं। आपने आगे कहा एक सम्मेलन में किसी व्यक्ति ने अपने भाषण में कहा हम प्रार्थना करते हैं प्रभ्रवाम शरद: शाम् जीवेन शरदा शतम्........और श्री मोहित जी गुस्से में आ गए यह प्रार्थना मेरे लिए नहीं हो सकती मेरे लिए कहो भूयश्च: शरद: शतात्।

इस अवसर पर आर्योदय पत्रिका ने श्री मोहित जी पर प्रकाशित विशेष अंक का विमोचन मॉरीशस के प्रधानमंत्री जी ने किया। जिसके सम्पादक थे श्री सत्यदेव जी प्रीतम। सभा का संयोजन श्री उदयनारायण गंगू जी ने किया। श्री मोहित जी की दीर्घायु की कामना का भजन श्रीमती उषा शास्त्री ने गाया। श्री मोहित जी ने अन्त में सबका धन्यवाद किया।

22 सितम्बर 2002 वह शुभ दिन था जब श्री मोहित जी पूरे 100 साल के हो गए। स्वयं चलकर यज्ञ में आए। लावेनियर के कार्यक्रम में उपस्थित हुए। इस पण्डाल में लगभग 1000 व्यक्ति उपस्थित थे। यज्ञ की पूर्णाहुति हुई और उसके पश्चात् कई सरकारी मंत्री, एवं आर्य नेताओं ने उनको बधाई दी। आचार्य यशपाल, श्री धर्मपाल, डॉ० तुलसीदास बांगिया, आचार्य रामकृष्ण आदि ने अपने बधाई सन्देश देकर मोतियों की माला से उनका सम्मान किया। कैप्टन देवरत्न आर्य ने विश्व की समस्त आर्य समाजों की ओर से बधाई सन्देश के साथ मोती की माला, शाल और श्रीफल से उनका स्वागत किया। श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से उनका शाल व माला से स्वागत किया व उनके स्वस्थ रहने के लिए गुरुकुल फार्मेसी की दवाओं का उपहार भेंट किया। डॉ० श्रीधर जो बैंगलोर से पधारे थे उन्होंने भी स्वागत किया।

मॉरीशस गणतंत्र की एक परम्परा है कि जो व्यक्ति 100 वर्ष का जीवन जीता है उसका सरकार की ओर से भी सम्मान होता है। यह सम्मान 11.30 बजे प्रात: प्रारम्भ हुआ। अनेक राज्यमंत्री इस सभा में उपस्थित थे। सरकार की ओर से श्री मोहित जी को 11000 मॉरीशस रुपए, एक मोबाइल टेलीफोन, शत् वर्षीय केक, गुलदस्ते आदि उन्हें भेंट किए गए। लोगों का जोश और उत्साह देखने योग्य था।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

आर्य समाज फिर जनता का नेतृत्व करे

आर्य समाज ने जनता का सदा नेतृत्व किया है परन्तु पिछले कुछ समय से आर्य समाज आगे नहीं आ रहा। देश के सामने जब भी कोई समस्या आई है या जनता के सामने कोई समस्या आई है या कोई चुनौतियां आई हैं तो आर्य समाजियों ने उनका सामना किया है, सभी समस्याओं व चुनौतियों के समाधान के लिए कार्य किया है। जब देश के नौजवान आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे तो आर्य समाज ने आगे आकर उनका नेतृत्व किया था, कितने ही आर्य समाजी आजादी के लिए जेलों में गए थे और कितने ही शहीद हो गए। आखिर आजादी लेकर ही दम लिया।

आर्य समाज ने समाज सेवा के सभी कार्य आरम्भ किए, निर्धनों को अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया, पिछड़ी जाति के लोगों को छाती से लगाया और उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। कई पिछड़ी जातियों के लोग आर्य समाज से जुड़े। समाज के विरोध के बावजूद भी आर्य समाजियों ने पिछड़ी जातियों के लोगों के घरों में जाकर उनसे अपना मेल-मिलाप बढ़ाया और खान-पान कायम किया। इस कारण से कई आर्य लोगों को बिरादरी से निकाल दिया गया परन्तु किसी आर्य समाजी ने इसकी कोई चिन्ता नहीं की। एक आर्य समाजी का जब कदम आगे बढ़ जाता था तो फिर वह पीछे हटने का नाम नहीं लेता था।

समाज में जहां भी आर्य समाज ने कोई कुरीति देखी उसी समय उसके विरुद्ध आवाज उठाई। समाज में फैली प्रत्येक बुराई के विरुद्ध आर्य समाज खम्ब ठोक कर खड़ा हो गया। दहेज-प्रथा, बाल विवाह, विधवा प्रताड़न, सती प्रथा के विरुद्ध आर्य समाज ने अपनी आवाज बुलन्द की। समाज में फैले गण्डे-तावीज, भूत-प्रेत, पाखण्ड एवं रूढ़िवाद, जादू-टोने सभी अन्धविश्वासों के विरुद्ध आर्य समाज ने अपनी आवाज उठाई और संघर्ष किया। इससे आर्य समाज का रूप निखरा है और आर्य समाज का नाम चारों दिशाओं में गूंजा है।

आज फिर इस बात की आवश्यकता है कि आर्य समाज अपने प्रारम्भिक काल की तरह आगे बढ़ कर कार्य करे। देश के सामने तथा समाज के सामने आज भी अनेकों समस्याएं हैं, आर्य समाज ने उनका सामना करना है। आज आर्य समाज को सेवा के कार्यों में आगे आना चाहिए। निर्धन बीमार लोगों का इलाज करवाने के लिए आर्य समाज को कार्य करना चाहिए। कई ला-इलाज बीमारियां हैं जिन पर लाखों रुपया खर्च होता है और गरीब व्यक्ति वह इलाज नहीं करवा सकता जिसकी उसे आवश्यकता होती है। आर्य समाजी बन्धु ऐसे रोगियों को ओर ध्यान दें। आज के इस महंगाई के युग में जो गरीब व्यक्ति अपने होनहार बच्चों को नहीं पढ़ा सकता यदि वह बच्चे पढ़ने में रुचि लिखते हों तो उनकी पढ़ाई पर व्यय करें। उन्हें छात्र-वृत्तियां देवें या उनमें से जिनको ठीक समझें उनको गो . ले लेवें। जिन पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावक उनके लिए वस्त्र व जूते आदि नहीं खरीद सकते उनको वस्त्र आदि देवें। किसी परिवार में जहां आर्थिक तंगी सीमा पार गई हो उनकी सहायता करें। जो बच्चे अनाथ हों उन्हें गोद लेवें केवल पढ़ाई-लिखाई के लिए ही।

आर्य समाज को फिर जनता के साथ जुड़ना पड़ेगा तभी आर्य समाज अपने गौरव को कायम रख सकेगा। एक समय था प्रत्येक व्यक्ति आर्य समाज को जानता था। क्योंकि आर्य समाज बड़े-बड़े शास्त्रार्थ करता था, सार्वजनिक स्थानों पर वेद प्रचार व शास्त्रार्थ होते थे। आम जनता उनमें आती थी आर्य समाज की विचार धारा को सुनती थी। इससे आर्य समाज की ख्याति चारों ओर बढ़ती थी। आर्य समाज ने जन सेवा के सभी कार्य लिए हैं परन्तु अब उनमें कमी सी आ गई है।

आज समाज के सामने भी अनेकों चुनौतियां हैं और राष्ट्र के सामने भी अनेकों चुनौतियां हैं। सभी चुनौतियों का हमने सामना करना है। शिक्षा के क्षेत्र में हमने बहुत कार्य किया। आज इस कार्य को भी और बढ़ाने की आवश्यकता है। हमारे स्कूलों-कालेजों में व सभी शिक्षा संस्थाओं में राष्ट्रीय प्रेम पर विशेष बल दिया जाना चाहिए, देश भक्ति का पाठ पहले की तरह पढ़ाना चाहिए। समाज सेवा की भावना प्रत्येक बच्चे के मन में बैठानी चाहिए ताकि वह बड़ा होकर राष्ट्र रक्षा व समाज सेवा के कार्य कर सके।

पहले जहां एक भी आर्य समाजी रहता था उसकी अलग से पहचान थी। सबको पता चल जाता था कि अमूक व्यक्ति आर्य समाजी है, क्योंकि उसका रहन-सहन, खान-पान, आहार-व्यवहार दूसरे लोगों से कुछ अलग सा होता था। वह जहां भी ज़रा भी कमी देखता था वहीं पहुंच कर उसे दूर करने का प्रयास करता था परन्तु आज ऐसा नहीं हो रहा, न ही हमने अपनी कोई पहचान रखी है। यदि यह कहा जाए कि आर्य समाजी तथा दूसरे लोगों में अब कोई अन्तर नहीं रहा तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आर्य समाज का सदस्य बनने से कोई भी तब तक समाजी नहीं कहला सकता जब तक उसके जीवन में आर्यपन दिखाई न पड़े। कई आर्य समाज के ऐसे सदस्य भी आज देखने को मिलते हैं जिन्हें यह भी पता नहीं कि आर्य समाज के संस्थापक कौन हैं ? उनको न सन्ध्या का पता है न हवन यज्ञ का पता है, न ही वह आर्य समाज के सिद्धान्तों को जानते हैं जबकि पहले आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य आर्य समाज का उपदेशक होता था। सत्यार्थ प्रकाश उसके झोले में पड़ा होता था वह उसका प्रचार करता था। चौराहों पर, गलियों में, स्टेशनों पर, सार्वजनिक स्थानों पर, खड़ा होकर आर्य समाज का कार्यकर्त्ता वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करता था। उसे वैदिक सिद्धान्तों की पूरी-पूरी जानकारी होती थी क्योंकि वह स्वाध्यायशील होता था उसने महर्षि के सभी ग्रन्थों का व वैदिक साहित्य का पूर्ण अध्ययन किया होता था। आर्य समाज का साधारण सदस्य भी कई बार इसाईयों आदि दूसरे मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ कर लेता था। आर्य समाजी के सामने किसी की बोलने की हिम्मत नहीं होती थी उसमें एक तेज होता था। आज इसका अभाव दिखाई पड़ रहा है।

आर्य समाज ने जातिवाद की जड़ें हिला कर रख दी थी क्योंकि आर्य समाज सभी इन्सानों की एक इन्सान जाति ही मानता है। इसलिए आर्य समाज जातिवाद को न मानकर मनु जी महाराज द्वारा निर्देशित वर्ण व्यवस्था को ही मानता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र यह चार श्रेणियां इन्सानों की मनु जी महाराज ने मानी हैं परन्तु आर्य समाज वर्ण व्यवस्था को समाज में कायम नहीं कर सका।

इसलिए आर्य समाजी बन्धु भी अपने नाम के साथ जाति सूचक शब्द लगाते हैं। आर्य समाज के प्रारम्भिक काल में ऐसा नहीं था उस काल में कई आर्य समाजियों ने जाति तोड़ कर अपने बच्चों के विवाह दूसरी जातियों में किए थे। आज फिर इस विचार धारा को आर्य समाज में पैदा करने की आवश्यकता है। सारे संसार के लोग एक ही जाति के हैं इन्सानों को जाति के नाम से नहीं बाटंना चाहिए, ऐसा एकता का पाठ आर्य समाज ही लोगों को पढ़ा सकता है।

इसलिए आर्य समाज अपने कर्त्तव्य का पालन करे और जनता का नेतृत्व करे आज समाज व देश को आर्य समाज की अति आवश्यकता है। समाज सुधार का कार्य व देश रक्षा का कार्य केवल आर्य समाज ही कर सकता है क्योंकि आर्य समाज एक देश भक्त संस्था है व समाज सुधारक संस्था है।

–धर्मदेव आर्य

संगठनात्मक सुदृढ़ता एवं वेद प्रचार को व्यापक बनाने के लिए समस्त प्रान्तों, जिला और इकाई स्तर पर

आत्ममंथन कार्यशालाएं आयोजित हों

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा एवं निर्देश पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी दिल्ली की आर्य समाजों के पदाधिकारियों को कार्यकर्ता सम्मेलन में आमंत्रित किया। 2 अक्तूबर 2002 (बुधवार) को आर्य समाज मन्दिर रमेश नगर में आयोजित इस कार्यकर्ता सम्मेलन की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने की और संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने कार्यकर्ता सम्मेलन के विषयों को निर्धारित करने से लेकर मंच संचालन की देखरेख में सहयोग दिया।

देश भर मे कार्यकर्ता सम्मेलनों के आयोजन का लक्ष्य प्रस्तुत करते हुए उन्होने कहा कि सार्वदेशिक सभा ने यह निश्चय किया है कि श्रद्धा, प्रेम और अनुशासन की स्थापना के लिए प्रत्येक प्रान्त में इस प्रकार के कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किए जाएं। इस प्रकार के सम्मेलनो मे अधिक से अधिक संख्या में सम्बन्धित प्रान्त की आर्य समाजो के प्रतिनिधि अपने अनुभव प्रेरणा के रूप मे प्रस्तुत करते हैं और अपनी समस्याओं पर सभाओं से मार्ग दर्शन प्राप्त कर पाते हैं। विभिन्न आर्य समाजो का एक दूसरे की गतिविधियो से अवगत होने का साक्षात् अवसर प्राप्त होता है।

उन्होंने बताया कि संगठनात्मक मजबूती और वेद प्रचार गतिविधियों मे व्यापकता लाने के उद्देश्य से इस प्रकार के कार्यक्रम सहायक होते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि प्रान्तीय स्तर के कार्यक्रमो के साथ-साथ इसी प्रकार के कार्यकर्ता सम्मेलन क्षेत्रीय जिला स्तरो पर भी आयोजित होने चाहिए। यही नहीं बल्कि विभिन्न आर्य समाजो को भी अपने सभासदो और पदाधिकारियो की आत्मावलोकन बैठकें नियमित रूप से रखनी चाहिएं। जिससे प्रेमपूर्वक आन्तरिक विषयो पर चर्चा सम्भव हो सके और व्यवहार में किसी प्रकार का भेद न उत्पन्न हों। परस्पर मेलजाल से एक दूसरे की छोटी मोटी गल्तियो को क्षमा करने की भावना भी उत्पन्न हो।

कार्यकर्ता सम्मेलन के संयोजक श्री नरेन्द्र आर्य ने बताया कि इस कार्यक्रम में दिल्ली की 80 से भी अधिक आर्य समाजों ने भाग लिया है। हालांकि कार्यक्रम में केवल 30 आर्य समाजों के प्रतिनिधि ही अपने विचार व्यक्त कर पाए, जिनकी एक विस्तृत रिपोर्ट दिल्ली सभा के मुख पत्र 'आर्य संदेश' में प्रकाशित की जाएगी।

इसके साथ जितने भी लिखित विचार और सुझाव हमें प्राप्त हुए हैं उन्हें भी बारी-बारी से प्रकाशित किया जाएगा।

कार्यकर्ता सम्मेलन का अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि संगठनात्मक एकता की भावना के साथ जो भी कार्य सम्पन्न किया जाता है, उसमें सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता सम्मेलन के संयोजक और सभामन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य को यह निर्देश दिया गया है कि वह बारी बारी से समस्त क्षेत्रों में भी इस प्रकार के अलग-अलग सम्मेलन आयोजित करें जिससे धर्म-प्रचार कार्यक्रम में व्यापकता आए।

श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व 14 अप्रैल 2001 के दिन आर्य समाज मन्दिर मिण्टो रोड ध्वस्त किए जाने के बाद दिल्ली वासियों की एकजुटता का यह प्रयास है कि आज सरकार को आर्य समाज की शक्ति के सामने घुटने टेकने पड़े और मन्दिर के मूल स्थान पर पुनरुद्धार की स्वीकृति देनी पड़ी।

श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि इस समूचे कार्य में मैंने और मेरे समस्त सहयोगी साथियों ने आर्य समाज के प्रति पूरी निष्ठा के साथ कार्य किया। इस सारे प्रकरण में कुछ लोगों ने हम पर यह दोषारोपण करने का प्रयास किया कि वेदव्रत शर्मा लाखों रुपए सरकार से लेकर मन्दिर निर्माण के मुद्दे पर समझौता कर बैठा है। आज सबको अहसास हो गया है कि कोई भी व्यक्ति उस संस्था के साथ धोखा नहीं कर सकता जिसे वह अपनी मां समझता हो।

इस कार्यकर्ता सम्मेलन में सर्वश्री जगदीश वर्मा (सुन्दर विहार), पूर्ण सिंह डबास (साकेत), सुभाष गम्भीर (पश्चिम पुरी), ओ३म् प्रकाश अरोड़ा (अशोक विहार-3), श्रीमती कृष्णा रसवन्त (मानसरोवर गार्डन), कीर्ति शर्मा (करोल बाग), वेद प्रकाश वानप्रस्थी (शक्कर पुर), श्रीमती प्रभु शरणिता (ग्रीन पार्क), आदित्य मुसद्दी लाल ([illegible]), [illegible] (सुल्तान नगर), सोमदेव मल्होत्रा (गोविन्दपुरी), डॉ० महेश विद्यालंकार (शालीमार), रमेश चन्द्र गुप्ता (टैगोर गार्डन), चन्द्रमोहन खन्ना (मैत्री एन्क्लेव), बलदेवराज (तिलक नगर), वीरेन्द्र सरदाना (ए ब्लाक जनकपुरी), यशपाल मिमलानी (ग्रेटर कैलाश-2), रामभज मदान (काली नगर), शशि प्रभा आर्या (राजौरी गार्डन), सत्यदेव वर्मा (इन्द्रपुरी), हीरालाल चावला (पश्चिम विहार), मानवीर सिंह राणा (केशव पुरम) केवल कृष्ण कम्पानिया (बी-ब्लाक जनकपुरी), कान्ति प्रकाश (प्रशान्त विहार), [illegible] शास्त्री (जम्मू कश्मीर), इरवन्त लाल चोपड़ी (आर.के. पुरम), विश्वम्भर नाथ अरोड़ा (कृष्णा नगर), पतराम त्यागी (शक्कर पुर), श्रीमती रामप्यारी (लड्डूघाटी), श्री राजसिंह भल्ला (दीवान हाल), श्री वैद्य इन्द्रदेव (सदर बाजार) श्री वेदव्रत शर्मा (हनुमान रोड) आदि ने अपने विचार प्रकट किए। दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने समस्त आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आगे भी सभा के कार्यक्रमों में आपका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा।

तमिलनाडु ने अवैध धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाया

सार्वदेशिक सभा शेष प्रान्तों को भी इस कार्य के लिए प्रेरित करेगी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैo देवरत्न आर्य एवं वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने तमिलनाडु में धर्मान्तरण विरोधी अध्यादेश जारी करने के लिए तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री की सराहना की है।

आर्य नेताओं ने इसे सही दिशा में उठाया गया एक आवश्यक कदम बताया है। तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री श्रीमती जयललिता तथा राज्यपाल श्री रंगाराजन को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा लिखे गए एक पत्र में धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाने से सम्बन्धित अध्यादेश जारी करने के लिए धन्यवाद किया गया। पत्र में कहा गया है कि लोभ, लालच और दबाव से किया गया धर्मान्तरण असंवैधानिक है। इस आशय के कई निर्णय सर्वोच्च न्यायालय पहले भी दे चुके है। हालांकि मध्यप्रदेश, उड़ीसा और अरुणाचल प्रदेश की सरकारों ने भी धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाते हुए विधेयक बना रखे हैं परन्तु वे या तो प्रभावशाली नहीं है या उन्हें ठीक प्रकार से लागू नहीं किया जा रहा।

उल्लेखनीय है कि गत माह मदुरै में लगभग 250 स्कूली छात्रों का छल कपट से धर्मान्तरण की सूचना प्राप्त होते ही श्री विमल वधावन ने मदुरै के कलेक्टर श्री रामचन्द से टेलीफोन पर सम्पर्क करके इस प्रकार की गतिविधियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने के लिए प्रेरित किया था। इसी घटना के बाद सम्भवतः उच्चाधिकारियों ने सरकार को कमजोर कानून की स्थिति से अवगत कराते हुए सख्त कानून बनाने की अपनी संस्तुति भेजी। तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुबोध कुमार ने भी मुख्यमंत्री से इस प्रकार का अध्यादेश तत्काल जारी करने के लिए आग्रह किया था।

दैनिक समाचार पत्रों में भी इस अध्यादेश को विगत माह की उपरोक्त सामूहिक धर्मान्तरण की प्रतिक्रिया बताया जा रहा है।

इस अध्यादेश के अनुसार लोभ, लालच या दबाव से किए गए धर्मान्तरण का दोषी पाए जाने पर तीन वर्ष की सजा और 50 हजार रुपए जुर्माने का प्रावधान है। यदि धर्मान्तरित व्यक्ति 18 वर्ष से कम आयु का हो या महिला हो, या दलित वर्ग का व्यक्ति हो तो यह सजा और अधिक होगी।

इस अध्यादेश में यह भी प्रावधान है कि धर्मान्तरण करने की पूर्व सूचना धर्मान्तरण करने वाले तथा जिनको धर्मान्तरण किया जा रहा है दोनों के द्वारा जिला प्रशासन को देनी आवश्यक है। ऐसा न किए जाने पर एक वर्ष की सजा भी सम्बन्धित पादरी को हो सकती है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भेजे इस पत्र में श्री वधावन ने कहा कि यह अध्यादेश भारत की अन्य सरकारों के लिए भी एक प्रेरणा का कार्य करेगा। अध्यादेश की प्रमाणित प्रति मिलने पर सार्वदेशिक सभा अन्य प्रान्तों की सरकारों को सीधे तथा प्रान्तीय सभाओं के माध्यम से एक विशेष ज्ञापन तैयार करके भेजेगी।

परमात्मा की महानता

□ले. स्व. आचार्य राम प्रसाद जी वेदालंकार

(गतांक से आगे)

तृतीय रश्मि

कब भजूंगा शुद्ध मन से मैं तुझे।

कदा मृडीकं सुमना अभिख्यम्॥ ऋ. 7-86.2॥

(सुमनाः कदा मृडीकम् अभिख्यम्) सुन्दर मन वाला हो कर कब सुख देने वाले वरणीय प्रभु का मैं दर्शन करूंगा? यद्वा सुन्दर-स्वच्छ-पवित्र-निर्मल मन वाला बन कब मैं वरणीय वरुण देव को भजूंगा।

कब वे सौभाग्यशाली दिन आयेगा? कब वे सौभाग्यशालिनी घड़ियां आयेंगी जबकि मैं शुद्ध मन वाला होकर तुझ वरणीय वरुण देव का बखान करूंगा-गुणगान करूंगा-भजन करूंगा-और यह सब बड़ी श्रद्धा-भक्ति से करता हुआ मैं कब तेरा साक्षात्कार करूंगा?

कदा शब्द का यहां अपना ही महत्व है। भक्त प्रवर भर्तृहरि जी ने लिखा है कि-'न जाने कब वे सौभाग्यशालिनी घड़ियां आएगी जबकि मैं गंगा के तीर पर पद्मासन लगाकर तेरी अराधना में ऐसा डूबा रहूंगा कि जठर हिरण-बूढ़े हिरण अपने शरीर की खुजलाहट दूर करने के लिए अपनी पीठ हमारे शरीर से रगड़ रहे होंगे, तो उसका भी हमें पता नहीं लग रहा होगा ? यहां भी भक्त यह कह रहा है कि-'न जाने कब-न जाने कौन से दिन-न जाने कौन सी सौभाग्यशालिनी घड़ियां होंगी जबकि मैं शुद्ध मन होकर तेरा स्तवन करुंगा-तेरा गुणगान करूंगा ? तेरा भजन करता हुआ तेरा साक्षात् दर्शन करूंगा ?'

उस वरणीय वरुण देव के भजन करने के लिए, उसका दर्शन पाने के लिए इस मन को सु-मन बनाना आवश्यक है-इस मन को अच्छा मन बनाना जरूरी है। क्योंकि जब तक यह 'दुर्मन-कुमन' अर्थात् बुरा व कुत्सित बना रहेगा, तब तक इससे उस वरणीय वरुण देव का न तो यह स्तवन-भजन ही कर सकेगा, और न ही उसका साक्षात्कार को-इस बुरे मन को-इस कु मन को-इस कुत्सित मन को सुमन-अच्छा मन बनाना आवश्यक है।

मनुष्य का यह दुर्मन-यह दुःमन जब बुरा बना रहता है तो फिर यह इन चक्षु श्रोत्र घ्राण आदि ज्ञानेन्द्रियां से बुरा ही बुरा देखता, बुरा ही बुरा सुनता, बुरा ही बुरा सूंघता, बुरा ही बुरा चखता-स्वाद लेता, बुरा ही बुरा स्पर्श करता एवं बुरा ही बुरा सोचता रहेगा। इन नेत्र श्रोत्र घ्राण आदि ज्ञानेन्द्रियों से बुरा ही बुरा देखने-सुनने-सूंघने आदि से फिर यह अपनी कर्मेन्द्रियों से भी बुरा ही बुरा बोलता और बुरा ही बुरा करता रहता है। इस तरह यह दुर्मन-यह दुष्टमन इस जीव को इस मनुष्य को बुराई के-पतन के उस गर्त में ला पटकता है जहां से फिर इसके लिए उभरना, फिर उठ कर सम्भल पाना सरल नहीं होता। इस प्रकार यही दुर्मन-दुष्टमन कुत्सित मन वाला व्यक्ति ही फिर धीरे-धीरे दुर्जन-कुत्सित जन-निन्दित जन बुरा आदमी कहलाने लगता है। ऐसे दुर्जन के सम्बन्ध में शास्त्र में कहा गया है-

दुर्जन परिहर्तव्यो विद्यालंकृतोऽपि सन्।

मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः॥

दुर्जन से सदा दूर रहना चाहिए, भले ही वह विद्या-ज्ञान विज्ञान से अलंकृत ही क्यों न हो । मणि से भूषित-अलंकृत सर्प क्या भयंकर नहीं होता। इस प्रकार दुर्जन से सर्वदा अपने को दूर ही रखना चाहिए।

यह दुर्मन-यह दुर्जन-यह नीच पुरुष तो ऐसा होता है कि दूसरों के सरसों के दाने के समान छिद्र-दूसरों की ज़रा सी भी त्रुटि-न्यूनता-कमी इसको अच्छी तरह दिखाई देती है पर अपने जीवन का बिल्व-बेल के समान छिद्र, अर्थात् बड़ी से बड़ी त्रुटि-न्यूनता-कमी भी इसको नहीं दिखाई पड़ती।

मनुष्य को चाहिए कि ऐसे दुर्मन-दुर्जन से न तो कभी मित्रता करे, न ही कभी प्रीति-प्रेम करे, क्योंकि वह तो काले कोयले के सामान होता है जो चलने पर अंगारे के रूप में हो, तो वह जलाता है और ठण्डे रूप में हो तो हस्त-वस्त्र आदि काले करता है।

ऐसे दुर्मन-दुर्जन भले ही कितना भी प्रिय-कितना भी मधुर क्यों न बोलें, तो भी वह विश्वास का पात्र नहीं होता। क्योंकि उसकी जिह्वा पर तो मधु-शहद के समान मिठास होता है, पर हृदय में उसके विष-जहर भरा रहता है।

पिछले दिनों एक सज्जन ने अपना माल बेचकर 42 सहस्र रुपए प्राप्त किए। उनमें से 12 हजार एक जेब में और 30 हजार दूसरी जेब में या अन्टी में रख लिए। किराए आदि के लिए थोड़े बहुत रुपए बाहरी जेब में थे ही। रेलवे स्टेशन पर एक नौजवान आया और उसने उस सज्जन से पूछा-"लाला जी ! आपने कहां जाना है ? वह बोला-"बेटा ! मैंने अमुक जगह जाना है।" लाला जी बोले-"बेटा ! आप क्या करते हो ?" वह बोला-लाला जी ! वैसे तो मैं पढ़ता हूं। पर छुट्टियां थीं दो-चार तो मैंने सोचा, चलो मामा जी के यहां हो आऊं।" लाला जी बोले-"चलो बेटा, दोनों का साथ हो गया। एक से दो भले।"

यात्रा में मधुर-मधुर बातें होती रहीं। शाम हो गई। ऊपर की सीट खाली हो गई। लाला जी अधेड़ तो थे ही। अतः उसने उन्हें ऊपर लिटा दिया। स्वयं वह भी उन्हीं के पैरों की ओर बैठ गया। थोड़ी देर बाद स्टेशन आ गया। उसने लाला जी से पूछा-'आप कुछ चाय आदि लेंगे?' वे बोले-'बेटा, दो चाय ले लो, एक तुम पी लो और एक मुझे दे दो।' "बड़े प्यार से वह दो चाय ले आया। एक लाला जी को दे दी और दूसरी स्वयं पी ली। थोड़ी ही देर में लाला जी कुछ अचेत से हो गए और उस अन्धेरे में उसने उसके वे 30+12=42 हजार रुपए निकाल लिए और अगले स्टेशन पर वह उतरकर गायब हो गया। फिर वह पर्याप्त अचेत सा हो गया। आगे चलकर कोई ऊपर चढ़ कर बैठा तो उसे कुछ विचित्र सा लगा। तब उसने नीचे वालों को कहा। फिर पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस उसे गाड़ी से उतार कर चिकित्सालय ले गई। वहां ले जाकर औषधि आदि देने पर जब उसे होश आया तो वह बोला कि-'मैं कहां हूं? किसी ने कहा-'आप हस्पताल में हैं।' तब वह बोला-'मैं तो रेल में था और घर जा रहा था, यहां कैसे पहुच गया?' इसका उत्तर अभी अगले व्यक्तियों ने दिया ही नहीं था कि उसने देखा तो उसके वे सहस्त्रों रुपए नहीं थे। दोनों जेब खाली थे। तब वह अवाक् रह गया। इस प्रकार दुर्मन-दुष्टमन-दुर्जन व्यक्ति कितना भी प्रियवादी क्यों न हो, कितना भी मीठा बोलने वाला क्यों न हो, उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए, और न ही उसके हाथ का लाया हुआ कुछ द्रव्य खाना चाहिए। फिर यात्रा में तो इस विषय में पर्याप्त सतर्क-सजग-सावधान रहना ही चाहिए। क्योंकि जरा भूल-चूक में कुछ का कुछ हो जाता है।

सो यह दुर्मन मनुष्य-यह दुष्ट मन वाला मानव-यह कुत्सित-निकृष्ट-अति लोभ लालच आदि से परिपूर्ण मन वाला दुर्जन तो इस संसार के सामान्य मनुष्य को भी नहीं भाता, जब उसकी वास्तविकता का उसको पता लग जाता है, तो फिर भला उस सर्वान्तर्यामी वरणीय वरुण देव को श्रद्धा भक्ति और उपासना के योग्य उस प्रणप्रिय प्यारे प्रभु को तो वह कैसे भायेगा ? यह सामान्य मनुष्य तो भले ही उसको भीतर-बाहर से अर्थात् सब तरह से जान पाए या न जान पाए, पर वह तो सबके सब तरह से जानता ही है, सब के सब अच्छे-बुरे भावों और कर्मों पर अपनी दृष्टि रखता ही है, सब के सब भले-बुरे विचारों और आचारों पर अपनी प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करता ही है, हर एक को सजग-सावधान करता ही है, सन्मार्ग पर चलने के लिए सत्प्रेरणा सबको देता ही है. फिर भी वह समझे या न समझे, सुने या न सुने, माने या न माने, तो प्रभु क्या करे ? 'पर' वह प्रभु फिर क्या करे' वालों में से नहीं है। वह पहले तो समय पर सबको खबर देता है-खबर देकर सबको यह खबरदार करता है, फिर भी यदि अगला व्यक्ति उसको ध्यान से सुनता नहीं, उसकी अवहेलना करता है, तो फिर वह केवल उसको खबर देता ही नहीं है बल्कि उसकी फिर वह अच्छी तरह खबर लेता भी है। और खबर भी ऐसी लेता है कि अगले को फिर कहीं जान बचाने की राह ही नहीं मिलती।

सो भक्त यह समझता है कि उस प्रभु के दर्शन पाने व उसको अपने अनुभव में लाने के लिए केवल अपने पदार्थों को ही शुद्ध साफ-सुथरा रखना पर्याप्त नहीं है, केवल अपने वस्त्रों को एवं अपने तन-बदन को नहला-धुला कर साफ़ स्वच्छ रखना ही पर्याप्त नहीं है, वरन् उसके लिए तो अपने तन-बदन आदि के साथ-साथ अपने मन-बुद्धि आदि को भी शुद्ध-निर्मल-पवित्र बनाना आवश्यक है। प्रभु का प्यार पाने के लिए केवल वर्णों, शब्दों व बाह्य हाव-भावों को ही मधुर प्रिय बनाना काफी नहीं है अपितु उसके साथ-साथ मन को भी पावन करना-दिव्य भावों से भरना अनिवार्य है।

(क्रमशः)

(आर्य नेता श्री मोहन.......)
(पृष्ठ 2 का शेष)

शानदार प्रीतिभोज के साथ सभा समाप्त हुई। यहां यह लिखना अप्रासंगिक नहीं होगा कि सौ वर्ष की आयु प्राप्त करने पर भी श्री मोहित जी ने आज तक चश्मा नहीं लगाया। उनकी याददाश्त, दृष्टि आज भी गजब की शक्ति रखती है। वे ऊंचा जरूर सुनने लगे हैं पर अनेक आग्रह करने पर भी उन्होंने श्रवण यत्र अपने कान में नहीं लगाया है। वे कृत्रिम जीवन नहीं जीना चाहते।

उनके शतायु सम्मेलन के पश्चात् उसी पण्डाल में बाल सम्मेलन हुआ। छोटे-छोटे बच्चों ने बड़े प्रभावशाली ढंग से भजन, कहानिया और मंत्र पाठ प्रस्तुत किए। दिन में 1.30 बजे आर्य युवा एवं गुरुकुल सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। अध्यक्षता की श्री स्वतंत्र कुमार जी कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने व संयोजक थे डॉ० उदय नारायण गंगू। पूजनीय स्वामी सत्यम जी ने उद्घाटन भाषण दिया। गुरुकुल शिक्षा पद्धति व युवाओं पर वक्ता के रूप में डॉ० श्रीधर बैंगलोर, श्री यशपाल आचार्य सोनीपत, श्री रामकृष्ण जी शास्त्री लखनऊ, श्रीमती प्रेमलता भटनागर दिल्ली ने बड़े सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए।

सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न जी ने श्री मोहित जी से पूछा आपको कैसा लग रहा है जब आप 101 वर्ष मे प्रवेश कर रहे हैं। कहने लगे मैं रात्रि को उठा और परमपिता परमात्मा को धन्यवाद दिया कि उसने मुझे मेरे जीवन में यह देखने को दिया। वह प्रसन्न थे। श्री मोहित जी आज भी नियम से प्रात: 3 बजे उठते हैं- ध्यान योग, सन्ध्या व एक घंटे स्वाध्याय करते हैं इस दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं है।

23 सितम्बर को मध्याह्न 2 से 3 बजे तक महात्मा गांधी इन्स्टीट्यूट में उनके सम्मान में समारोह आयोजित किया गया। श्री मोहित जी इस सस्थान के निदेशक मण्डल के सदस्य रह चुके हैं। इस अवसर पर भी मॉरीशस सरकार के सांस्कृतिक मंत्री श्री मोती राम दास, भारतीय उच्चायुक्त श्री विजय कुमार, एम जी आई की डायरैक्टर श्रीमती सूर्याकान्ती गायन, पूर्व डायरेक्टर श्री उत्तम विष्णु दयाल उपस्थित थे भारतीय प्रतिनिधि भी उपस्थित था। डॉ० उदय नारायण गंगू जो इस सस्थान के सीनियर लेक्चरार है, ने श्री मोहित जी के जीवन पर प्रकाश डाला। संस्थान की ओर से प्रकाशित दो पत्रिकाए बसत और रिमझिम के विशेष अंक जो श्री मोहित जी के जीवन और कार्यकलापों पर समर्पित थे, का लोकार्पण हुआ। अल्पाहार के साथ समाप्त हुई सभा का संचालन डॉ० जगा सिंह ने किया।

इसके पश्चात् सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री देवरत्न आर्य का मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग सेन्टर से रेडियो पर आधा घंटे का सीधा प्रसारण श्री मोहित जी के जीवन पर हुआ। सायंकाल 4 से 6 बजे विश्व के प्रसिद्ध सागर किनारा के पं. बल्यु बे. के पास स्थित आर्य समाज माहेवर्ग ने श्री मोहित जी का जन्म दिन बड़ी धूमधाम से मनाया। यज्ञ के पश्चात् यज्ञ व योग पर श्री श्रीधर, स्वामी सत्यम् जी, डॉ० उषा शास्त्री, श्री स्वतंत्र कुमार जी के भाषण हुए। पंडित रामकृष्ण ने समारोह की अध्यक्षता की। समाज के प्रधान श्री भरत मंगरू ने स्वागत भाषण दिया और श्री हरिदेव रामधनी ने संयोजन किया।

रात्रि को 8 बजे आर्य समाज क्लेयरफोंड में सम्मेलन हुआ। श्री सत्यदेव प्रीतम ने स्वागत भाषण दिया और विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

24 सितम्बर को जितने प्रतिनिधि विदेश से आये थे उनके सम्मान में सामूहिक भोजन आर्य सभा मॉरीशस के भवन में रखा गया। हर देश के एक-एक प्रतिनिधि ने अपने विचार रखें। मध्याह्न 2 बजे हिन्दू हाऊस ने समस्त प्रतिनिधियों के सम्मान में चाय पार्टी रखी व कैप्टन देवरत्न आर्य ने सबकी ओर से हिन्दू एकता पर अपने विचार रखे।

सायं 4 बजे से आर्य समाज चिमोनी ने श्री मोहित जी के सम्मान में समारोह एवं भोजन का आयोजन किया। रात्रि को साढे सात बजे आर्य समाज कैम्प रोबेट ने सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया। सार्वदेशिक के प्रधान श्री देवरत्न जी जब मोहित जी के निवास पर विदाई लेने पहुंचे तो उनसे एक प्रश्न किया ईश्वर ने आपको धन, ऐश्वर्य, सम्मान, पारिवारिक सुख आदि खूब दिया। आपने अपना जीवन एक श्रमिक के रूप में प्रारम्भ किया। 100 वर्ष की स्वस्थ आयु आपको प्रदान की। इतना सब मिलने के पश्चात् आपको जीवन में कोई अभाव का अनुभव होता है? मोहित जी कहने लगे हां। वेदों का पवित्र ज्ञान हमें महर्षि दयानन्द ने दिया पर हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् तो कहते रहे पर उसे सारे विश्व में नहीं फैला सके। यह कमी मेरे जीवन में सदा बनी रहेगी।

श्री मोहित जी की शिक्षा किसी स्कूल में नहीं हुई। वे श्रमिक की तरह काम करते रहे। सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ उन्होंने आर्य समाज के समीप आकर पढ़े। वहीं हिन्दी लिखना सीखा। 1916 में पंडित काशी नाथ जी मॉरीशस गये। उनके भाषणों ने उनका जीवन बदल डाला। सन् 1930 में वे आर्य सभा के मंत्री व 1967 में प्रधान बने। उन्होंने सैंकड़ों लेख आर्य समाज के सिद्धान्तों पर लिखें। आज उनके पुत्र डॉ० जगदीश व द्वितीय पुत्र राजेन्द्र मोहित उनके पदचिन्हों पर चलकर आर्य समाज के कार्यों में लगे हुए हैं। परिवार आर्य विचारधारा में पल रहा है और हम सब इस प्रेरणा स्रोत के लिए सिर्फ एक ही प्रार्थना करते हैं-भूयश्च: शरद: शतात्।

इस अवसर पर श्री मोहित जी ने अपने फाउंडेशन की ओर से सार्वदेशिक सभा में विशाल, वातानुकूलित सभागृह के निर्माण हेतु सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न जी को 10 लाख रुपए का योगदान दिया। सार्वदेशिक सभा उनकी शतायु स्मृति में श्री मोहन लाल मोहित सभागृह दिल्ली में बनवायेगी ऐसा सभा प्रधान जी ने घोषणा की।

आर्य समाज रामपुरा, कोटा का उत्सव

आर्य समाज रामपुरा कोटा के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया, इस कार्यक्रम में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के विद्वान् भजनोपदेशक श्री जगत जी वर्मा को निमंत्रित किया गया। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। अब तक वेद प्रचार सप्ताह आर्य समाज भवन में ही आयोजित होता था किन्तु इस बार समाज की अन्तरंग ने इसे व्यापक रूप देने के लिए अलग-अलग स्थानों पर उपदेश एवं भजन का कार्यक्रम रखा।

इस आयोजन के तहत नगर के निकट स्थित ग्राम अर्जुनपुरा एवं खेड़ा रसूलपुर भी कार्यक्रम रखा गया, इससे ग्रामीण लोगों को आर्य समाज तथा वैदिक संस्कृति को निकट से समझने का अवसर प्राप्त हुआ, साथ ही साथ नगर में भी यह कार्यक्रम श्री बनवारी लाल जी सिंघल, श्री शिव नारायण जी उपाध्याय, श्रीमती पुष्पा भूलियान, प्रभु सिंह कुशवाहा के निवास एवं जवाहर सागर डेम पर आयोजित कार्यक्रमों में अच्छी संख्या में श्रोतागण उपस्थित हुए तथा लोगों ने इसके प्रति अपनी सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की, जन सामान्य का कहना था कि आर्य समाज को ऐसे कार्यक्रम बहुत पहले शुरू करने चाहिए थे ताकि लोग भ्रान्तियों के शिकार न होते।

प्रात:काल सत्सग व भजन आर्य समाज रामपुरा के भवन में ही सम्पन्न हुए। उन सभी कार्यक्रमों को श्री जगत जी वर्मा एवं स्वामी शारदानन्द सरस्वती जी ने भरपूर भजन एवं वैदिक ऋचाओं की व्याख्या से श्रोताओं को लाभान्वित किया। श्री जगत जी वर्मा वेद प्रचार सप्ताह के मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहे, उनके भजनों की लय पर लोग मन्त्र मुग्ध हो जाते थे, श्रोताओं की इच्छा होती थी कि अधिक से अधिक भजन सुनाए जावें।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन नगर की सभी आर्य समाजों के सदस्य श्री शिवनारायण जी उपाध्याय प्रधान एवं मंत्री प्रभु सिंह कुशवाहा के नेतृत्व में जवाहर सागर डेम पर वन भ्रमण पर गये। इस कार्यक्रम से सभी नवआगन्तुक सदस्यों का तथा परिवारों का एक दूसरे से परिचय हुआ, ऐसा लगता था मानों वहां एक विशाल परिवार एकत्रित हुआ हो। वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम का संचालन एवं नेतृत्व प्रभु सिंह कुशवाहा का रहा एवं सामवेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा श्री बिरधी चन्द जी गोस्वामी ने मंच का सफलता पूर्वक संचालन किया।

-प्रभु सिंह कुशवाहा, मन्त्री

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन लुधियाना की ओर से 20 अक्तूबर 2002 सायं चार बजे से छ: बजे तक श्री मुलखराज अरोड़ा अध्यापक आर्य सी.सै. स्कूल लुधियाना के निवास स्थान मकान नं,-बी-1/339 गुरु नानक पुरा सिविल लाईन लुधियाना में होगा। जिसमें प्रो. वेदव्रत विद्यालंकार जी का प्रवचन होगा।

दिनांक 27-10-2002 रविवार को श्री आर.सी. तिवारी मकान नं. 479 पार्कलेन सिविल लाईन लुधियाना पर सायं चार से छ: बजे तक वैदिक सत्संग आयोजित होगा जिसमें पंडित बाल कृष्ण शास्त्री जी का प्रवचन होगा।

-नरेन्द्र भल्ला

अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन, होशियारपुर द्वारा वेद ज्ञान यज्ञ सम्पन्न

अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन की स्थापना पूज्य महात्मा देवीचन्द जी एम.ए. ने 1933 में की थी। इस संस्था का प्रमुख काम शुद्धिकरण था। महात्मा जी ने शुद्धि एवं शिक्षा प्रसार तथा सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध संघर्ष किया।

इस संस्था की ओर से इस वर्ष दिनांक 27-9-2002 से 29-9-2002 तक "वेद ज्ञान यज्ञ" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से श्री विजय कुमार जी महोपदेशक के प्रवचन तथा श्री विजय आनन्द जी की ओर से संगीत द्वारा प्रचार किया गया।

दिनांक 28-9-2002 तथा 29-9-2002 को प्रातः विशाल हवन यज्ञ भी सम्पन्न किया गया है। इसमें अरविन्द कुमार जी हांडा, श्री के.के. शारदा जी, श्री ठाकुर धर्मजीत सिंह जी, श्री प्रेम कुमार ऐरी, श्री कैप्टन विजय कुमार जी, श्री चन्द्रमोहन जी (मोहन इलैक्ट्रिकल), श्री आचार्य भद्रसेन जी वेद दर्शनाचार्य जी ने सफलता पूर्वक मंच का संचालन किया।

इस सफल आयोजन से विद्वानों की भोजन व्यवस्था श्री प्रेम कुमार जी शर्मा, श्री कृष्ण लाल जी अरोड़ा तथा श्री जगदीश मित्र जी ने पूरी श्रद्धा एवं भक्ति से की।

मैं अपनी तथा मिशन के सभी अधिकारियों की ओर से आपका तथा पंजाब सभा का धन्यवाद करता हूं। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी हमें वैदिक धर्म का प्रचार तथा प्रसार करने में सभा के समस्त अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। —हरदयाल सिंह, मन्त्री

(पृष्ठ 1 का शेष)

इसी क्रम में हम सार्वदेशिक सभा कार्यालय तथा अजमेरी गेट स्थित आर्य प्रकाशन की दुकान पर गए तथा नवप्रकाशित साहित्य की जानकारी प्राप्त की। किसी उच्च सरकारी, अधिकारी की अध्ययन में रुचि का यह एक प्रमाण था। उस समय भी चतुर्वेदी जी पांव के कष्ट से पीड़ित थे।

कुख्यात बोफोर्स तोप सौदे में उनके द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट ने सारे देश को हिला दिया। संकीर्ण मनोवृत्ति के अनेक सांसदों ने संसद में उन पर व्यक्तिगत आक्षेप किए जिसके लिए बाद में उन्हें माफी मांगनी पड़ी किन्तु चतुर्वेदी जी इससे विचलित नहीं हुए। उन्होंने जयपुर में पत्रकारों के समक्ष स्पष्ट किया कि उनकी रिपोर्ट तथ्याधारित है और किसी व्यक्ति या दल के दबाव में आकर नहीं लिखी गई है। उन्होंने यह भी साफ किया कि उनका सम्पूर्ण प्रशासनिक सेवा काल एक खुली पुस्तक है, जिस पर कहीं कोई दाग नहीं है। सेवा से अवकाश लेने के बाद उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को अपनी गतिविधियों के लिए चुना। वे राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित होने के साथ-साथ इस दल की कार्यकारिणी के भी सदस्य हैं। राज्य सभा में अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर वे प्रभावशाली ढंग से अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई तथा उससे पहले स्वामी दयानन्द के शेखावटी निवासी भक्त-शिष्य महात्मा कालू राम जी की निर्माण शताब्दी में उनका रामगढ़ में आगमन वैदिक धर्म के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा का द्योतक हैं। गत जनवरी में जब चतुर्वेदी जी का जोधपुर आगमन हुआ तो पर्याप्त समय तक उन्होंने मेरे पुस्तक संग्रह को अवधान पूर्वक देखा। यहां सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न संस्करणों, विभिन्न भाषाओं में इसके अनुवादों तथा ऋषि दयानन्द के लगभग डेढ़ सौ जीवन चरितों का अदभुत संग्रह देख कर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की। ऐसे मनस्वी पुरुष का कर्नाटक के राज्यपाल पद पर प्रतिष्ठित होना इस पद को ही गौरव प्रदान करता है।

पंजाबी काव्य रूपान्तरण

आर्य समाज के दस नियम

❑ ले० श्री. मारकण्डा, कविता मार्ग, तपा मण्डी (संगरूर)

कुल्ल सच्चाई सकल, पदार्थ जो विद्या सिखलावे,
एना सारीयां चीजां अन्दर, सच्चा रब्ब समावे।

ईश्वर जाणो रूप सच्च दा, दोष रहित न्यांकारी,
सब शक्ति दा मालक दयालु बेअंत उपकारी।

जन्म मरण तो रहित प्रभु है, अजर अमर नू ध्याओ,
अंतरजामी सृष्टि करता, जपो अमर हो जाओ।

सच्चिदानन्द सरूप स्वामी, निरअंकार न्यायशाली
सर्वव्यापक, शक्तिवाला, कुल जगत दा वाली।

असल पढ़ाई दी पुस्तक तां, सिरफ वेद ने सच्चे
पढ़ो, पढ़ावो, सुणो, सुणावो जे बणना है अच्छे।

सदा ही सच्च प्राप्त कर तू कूड़ त्याग प्राणी,
सब कम्म धर्म च रहिके करने, सच्च ते झूठ पछाणी।

मात लोक दा भला कमाऊणा, आर्य समाज दा धन्धा
समाजिक, आत्मक अते सरीरों, करे तरक्की बन्दा।

सभ नाल प्रीती पूर्वक वरतो, धर्म दा होये वरतारा,
अनपढ़ता नूं दूर कर दियो, ज्ञान दा होये खिलारा।

अपने आप दी वेख तरक्की खुद न खुश हो जाणा,
अपनी उन्नति सभा दी उन्नती, इह मन विच समाणा।

हर जीव दा भला संभस दा, इह नियां नूं पालो,
लोक हितैषी कंमा खातिर, डाहडे जफ्फर जालो।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा निर्धारित अन्य विषयों पर भाषण प्रतियोगिता एवम् व्याख्यान

आर्य समाज भठिण्डा में हवन यज्ञ एवम् पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी (राजस्थान) के प्रवचन उपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेशानुसार एवम् उनके द्वारा निर्धारित किये गए विषयों पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन आर्य समाज चौक बठिण्डा महर्षि दयानन्द सत्संग भवन में किया गया। इस भाषण प्रतियोगिता में आर्य गर्ल्ज़ सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, आर्य माडल स्कूल, महात्मा हंसराज सीनियर सैं स्कूल एमएसडी सीनियर सैंकेण्ड्री स्कूल, गुरुकुल आर्य माडल स्कूल तथा आर्य परिवारो के बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री केवल कृष्ण जिन्दल जी थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए इसके अतिरिक्त इस कार्य से प्रसन्न होकर 5100/- रुपए आर्य समाज को दान में दिए। आर्यजनों की सर्वोच्च संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के दिशा निर्देश की पालना करते हुए आर्य समाज भठिण्डा द्वारा निम्नलिखित विषयों पर रविवारीय यज्ञ उपरान्त व्याख्यान हुए।

1 युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द-(पं ध्रुव कुमार शास्त्री)। 2. महर्षि दयानन्द और नारी उत्थान-(डॉ० सत्यदेव)। 3. शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान-(श्री श्याम लाल गुप्ता जी)। 4. वसुधैव कुटुम्बकम्-(प्रिंसिपल गुरवचन गुप्ता जी)। 5. मेरी प्रिय पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश-(श्री विनोद गुप्ता)। 6. वीर भोग्या वसुन्धरा-(श्रीमती अरुणा अरोड़ा जी)। 7 पाकिस्तान तेरे साथ क्या सलूक किया जाए-(श्री श्याम लाल गुप्ता जी)। 8 आर्य समाज और आधुनिक शिक्षा पद्धति-(श्री श्याम लाल गुप्ता जी)। 9 भारतीय संस्कृति की पहचान सस्कृत भाषा-(श्रीमती अरुणा अरोड़ा जी)। 10. भारत की वर्तमान स्थिति और आर्य समाज-(श्री पवन कुमार जी)।

इन विषयों पर इन महानुभावों ने अपने विचार रखे।

आर्यजन इन प्रवक्ताओं के विचारों को शान्त चित्त होकर सुनते रहे और मुग्ध होते रहे। उन सब कार्यक्रमों के आयोजन में प्रो. ओ.पी. मंगला प्रधान आर्य समाज का विशेष योगदान रहा। श्री प्रेम भाटिया महामन्त्री, इंजीनियर एम.पी. अरोड़ा मंत्री आर्य समाज एवम् श्रीमती अरुणा अरोड़ा जी का भी योगदान स्मरणीय रहा।

मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जो विषय निर्धारित किए गए हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा दर्शाये मार्ग के अनुकूल एवम् समय के अनुकूल हैं। हम सबकी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि सभा प्रधान पं. हरबंस लाल शर्मा जी का नेतृत्व बना रहे। वह दीर्घ आयु हो एवम् स्वस्थ जीवन हो।

आर्य समाज भठिण्डा के सभी आर्यजन सदैव ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेशों का पालन करते रहे हैं, कर रहे हैं और करते रहेंगे।

—प्रेम भाटिया, महामन्त्री

शोक समाचार

प्रसिद्ध एवं कट्टर आर्य समाजी श्रीमती सावित्री देवी आर्या मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज फील्डगंज लुधियाना की पुत्रवधु श्रीमती सुनीता रानी धर्मपत्नि श्री सहर्ष आर्य मन्त्री आर्य समाज फील्डगंज लुधियाना का 10-10-2002 को अचानक निधन हो गया है। आर्य समाज फील्डगंज लुधियाना के सदस्य व अधिकारीगण ने इस असामयिक निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा शान्ति के लिए प्रार्थना की। श्रीमती सुनीता रानी का अन्तिम शोक दिवस रविवार दिनांक 20-10-2002 को बाद दोपहर 1 से 2 बजे तक गीताञ्जली लेडीज़ कल्ब, छोटी हैबोवाल रोड निकट किचलू नगर पैट्रोल पम्प लुधियाना में सम्पन्न होगा।

—रमेश सूद, कोषाध्यक्ष, आर्य समाज फील्डगंज, लुधियाना

वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

7 नवम्बर, 2002 से 16 नवम्बर, 2002 तक

आश्रम स्थापना के 51वें वर्ष में 51 कुण्डीय महायज्ञ के साथ यह समारोह आश्रम प्रांगण में सोल्लास सम्पन्न होगा। जिसमें सर्वश्री स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी सत्यम् जी(अमरीका), आचार्य हरिदेव जी, स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी, स्वामी जीवनानन्द जी, आचार्य सत्यव्रत जी, आचार्य जैमिनि शास्त्री, आचार्य अखिलेश्वर, आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय, आचार्य रामदत्त शर्मा, डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी, डॉ० महेश विद्यालंकार, डॉ० देव शर्मा, आर्य तपस्वी सुखदेव जी, पं० खुशीराम जी आदि के आध्यात्मिक प्रवचन तथा रेडियो एवं दूरदर्शन कलाकार लोकप्रिय गायक श्री राजेन्द्र काचरू एवं श्री सुचित नारंग के मनोहर भजन होंगे।

निवेदक :

महात्मा व्यास देव (अधिष्ठाता) दर्शन कुमार अग्निहोत्री (प्रधान)

वेद प्रकाश आर्य (मन्त्री)

राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता में आर्य गर्ल्ज़ सी.सै. स्कूल भठिण्डा प्रथम

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हमारे आर्य गर्ल्ज़ सी.सै. स्कूल भठिण्डा की टीम ने दिनांक 2-10-2002 को राष्ट्रीय स्तर की सामाजिक संस्था 'भारत विकास परिषद भठिण्डा' द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय समूह-गान प्रतियोगिता' में भाग लेकर वरिष्ठ टीमों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है और राज्य-स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए 6 अक्तूबर 02 रविवार को कोटकपूरा में पहुंची।

यह हमारे विद्यालय की प्रथम प्राप्ति नहीं है बल्कि पहले भी कई बार इस प्रतियोगता में प्रथम स्थान पा चुकी है और छात्राओं ने विद्यालय का नाम रोशन किया है। इसके लिए संगीतज्ञ श्री विनोद कुमार गर्ग भी प्रशंसा के पात्र हैं जिनकी अनथक लगन व निष्ठा लगभग हर बार रंग लाती है। अध्यापिकाओं की कर्तव्यनिष्ठा, प्रधानाचार्या जी की व्यक्तिगत रुचि व आर्थिक बजट की मुश्किल होते हुए भी उनके ईमानदार प्रयास व प्रबन्धक समिति का पूर्ण सहयोग सभी प्रशंसनीय है व बधाई के पात्र हैं।

दूसरी बहुत ही गौरव की बात है कि हमारे विद्यालय की प्रिंसीपल श्रीमती शान्ति जिन्दल जी को, इस कार्यक्रम में भारत विकास परिषद द्वारा "गैस्ट ऑफ आनर" का स्थान देकर सम्मानित किया गया। परिषद ने 'स्मृति चिन्ह' देकर उनका सम्मान किया। श्रोताओं को अपने सम्बोधन में श्रीमती शान्ति जिन्दल जी ने बहुत ही सरल व सुबोध भाषा में 2 अक्तूबर का विशेष महत्व बताते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी व हमारे स्वतन्त्र भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को उनके मुख्य शब्द 'सादा जीवन उच्च विचार' तथा 'जय जवान! जय किसान!' आदि दोहराते हुए, उनके प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

साथ ही भारत-विकास परिषद ने अपनी संस्कृति की रक्षा के ध्वजवाहक होते हुए इन देशभक्ति पूर्ण कार्यक्रमों के लिए बहुत हार्दिक बधाई दी तथा परिषद के उत्साह-वर्धन हेतु 1100/- रुपए की धनराशि देकर अपना सहयोग दिया। सभी परिषद सदस्यों व श्रोताओं ने प्रधानाचार्या जी के देश व संस्कृति के प्रति प्रेम, बच्चों को उच्च नैतिक मूल्यों की रक्षा तथा पश्चिमी संस्कृति के प्रदूषित वातावरण से ऊपर उठकर आत्म गौरव व अपनी भारतीय संस्कृति का मान ऊंचा रखने की विचारों की बारम्बार प्रशंसा की।

—चमन लाल मेहता, मैनेजर

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

यजुर्वेद

दूरभाष 292926

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद

अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 27 सृष्टि संवत 1960853103, 27 अक्तूबर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

पूजनीय स्वामी आत्मबोध जी सरस्वती

□ लै० श्री कैप्टन देवरत्न जी आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

पूजनीय स्वामी आत्मबोध जी [illegible] का देहावसान हो गया। दोनों विभूतियां [illegible] टंकारा में [illegible]। इस आकस्मिक क्षति को टंकारा ट्रस्ट पूरा नहीं कर पाएगा।

पूजनीय स्वामी आत्मबोध जी का सम्बन्ध सम्पूर्ण भारतवर्ष से था। वे अपने ढंग के अनूठे विद्वान् थे। भाषण देते बैठते थे तो सिर्फ आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के अतिरिक्त कुछ नहीं बोलते थे। उनका भाषण दयानन्द के वाक्यों से प्रारम्भ होता था, जिसे वे श्रोताओ को बुलवाते थे और उन्हीं शब्दो की व्याख्या करते थे।

मेरा सम्बन्ध उनसे पिछले लगभग 20 वर्षों से था। उनके प्रति मेरी अगाध श्रद्धा थी। आर्य समाज सांताक्रुज में मैंने उन्हें अनेक बार वार्षिकोत्सव व अन्य कार्यक्रमो में आमन्त्रित किया था। वैसे मुम्बई शहर में आर्य समाज चैम्बूर व आर्य समाज काकडवाडी भी उन्हें प्राय प्रवचन के लिए आमन्त्रित करती रहती थी।

उनका देहावसान जब हुआ मैं मॉरीशस जाने की तैयारी में था। श्री महाशय लाल जी भोलिता ने अपने जीवन के 100 वर्ष पूर्ण कर लिए थे। भारत से लगभग 60 व्यक्ति उस समारोह में [illegible] पूजनीय स्वामी जी के साथ था, [illegible] क साथ उभरती रही।

पिछले ऋषि बोधोत्सव पर मैं आदरणीय श्री रामनाथ जी सहगल व श्री ओंकारनाथ जी के विशेष आमन्त्रण पर टंकारा गया। राजकोट स्टेशन पर मुझे लेने के लिए कार आई हुई थी। काफी समय रुकने के बाद कार नहीं चली तो पता चला स्वामी जी की प्रतीक्षा कर रही है। वे उसी ट्रेन से उतरे जिससे मैं वहां पहुंचा था। वृद्धावस्था के कारण वे धीरे-धीरे चल रहे थे। मैंने उनसे बड़े स्नेह और सम्मान से पूछा "क्या आपका स्वास्थ्य ठीक [illegible] में एक बार आकर अपनी बैटरी चार्ज कर लेता हूं। ऋषि के बड़े उपकार मेरे जीवन में हैं। इसलिए मैं हर वर्ष आता हू जिस दिन नहीं आऊंगा मेरी मृत्यु का तार आएगा। ऋषि के प्रति कैसी अनोखी कृतज्ञता प्रकट की।

ऋषि बोधोत्सव के दौरान एक दिन साथ आर्य समाज टंकारा के प्रागण में यज्ञ और उनका भाषण होता है। मैं स्वामी जी के पास बैठा था। आर्य समाज गाधीधाम के युवा मन्त्री श्री वाचोनिधि जी यज्ञ कर रहे थे। यज्ञ के पश्चात् उन्होंने स्वामी जी से पूर्णाहुति करने की आज्ञा मागी तो बुलन्द आवाज में बोले नहीं अभी यज्ञ की पूर्णाहुति नहीं होगी फिर मेरी ओर मुखारबिन्द होकर बोले देवरत्न तुम्हारी आयु कितनी है। मैंने उत्तर दिया 63 वर्ष। स्वामी जी श्री वाचोनिधि से बोले हम 63 गायत्री मन्त्रों की आहुति देकर इस बेटे के लिए ईश्वर से प्रार्थना करेगे कि यह सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद पर सफलता पूर्वक कार्य करें। कैसा अनूठा आशीर्वाद उन्होंने मुझे दिया और पश्चात् एक प्रवचन मेरी कर्तव्य निष्ठा को जगाने के लिए दिया। टंकारा समारोह में हर स्थल पर हर कार्यक्रम में मुझे उनका श्री ओंकारनाथ जी का व श्री रामनाथ जी सहगल का प्यार [illegible] में [illegible] समारोह मनाया गया। मुझे सौभाग्य मिला उन्हें सम्मान के साथ मंच पर लाने का। उनका उपदेश हुआ। उन्हें शाल व श्रीफल से सम्मानित किया गया। जाते जाते कह गए बेटा मुझसे मिलकर जाना। मैं व मेरी धर्मपत्नी सुशीला वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में उनसे मिलने गए। अपने कमरे में से एक एक सामान निकालने लगे– साडी शॉल ब्लाउज कुछ सी डी और सुशीला को दे दिए साथ मिठाई खिलाई और मुझे दिया सार्वदशिक सभा के नाम से 1 लाख रुपए का चैक। कहने [illegible] सार्वदेशिक सभा में आए। अब तसल्ली हो गई है। मेरे नाम से इसका स्थाई कोष बना देना। मैंने पूछा इसके ब्याज को कैसे व्यय करना है। तो बोले जैसी तेरी मर्जी आए। और बाद मे बडे प्यार से बोले मैंने 4 लाख रुपयों के सेविंग सर्टिफिकेट ले रखे हैं सार्वदेशिक सभा के लिए। अगले वर्ष मेच्योर होगे। आकर मुझ से ले जाना। मैं सोचता रहा कितना स्नेह और विश्वास मुझ पर ह और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता रहा–मैं इस महापुरुष के विश्वास स कभी भी नहीं डगमगाऊ ऐसी शक्ति देना।

मैंने लगभग 15 वर्ष पूर्व उन्हें आर्य समाज सान्ताक्रुज में वार्षिकोत्सव पर उपदेश क लिए आमन्त्रित किया था। हर समय हसते रहना और मजाक करते रहना। मैंने उन्हें घर पर भोजन के लिए आमन्त्रित किया। पूर्व सन्ध्या को उनकी तबीयत खराब हो गई। मैं अगले दिन बड़ा गम्भीर होकर उनके पास गया और बोला महात्मा जी आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है पर आप मेरे निवास पर अवश्य आना। मेरी पत्नी आपके लिए हल्का खाना जैसे चावल दाल या खिचडी बना देगी। हसते हुए बोले मेरे घर मे क्या खिचडी की कमी थी जो मैं आर्य समाज में आता। तुम बहू [illegible] लाऊंगा। कैसा निश्छल प्रेम था उनका मेरे और मेरे परिवार के प्रति। स्वास्थ्य की चिन्ता नहीं।

सायकाल उनका भाषण हुआ– सभी श्रोताओं को गायत्री मन्त्र बुलवाया और फिर बोले मेरे साथ बोलो–

मनुष्य की आत्मा सत्य और असत्य को जानने वाली है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ दुराग्रह तथा अविद्या आदि दोषो के कारण सत्य को छोडकर असत्य में झुक जाती है।"

और फिर उपदेश दिया महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज श्रेष्ठ पुरुषा का सगठन हे। यह किसी वर्ग विशेष, स्थान विशेष तथा मत विशेष तक सीमित नहीं है। उन्होने कहा आर्य समाज कारखाना है दुकान नहीं। इस कारखाने मे श्रेष्ठ पुरुषों का निर्माण हाता है। स्वामी श्रद्धानन्द भाई परमानन्द महात्मा हसराज लाला लाजपत राय अमीचन्द आदि इसी कारखाने क निर्मित व्यक्ति हे।

उन्होन आगे कहा मन्दिर मे हिन्दू जा सकता है। मस्जिद मे मुसलमान जा सकता है। गिरजाघर म ईसाई जा सकता है किन्तु आर्य समाज मन्दिर म सभी जा सकते हे क्याकि इस सस्था म मानव के शारीरिक आत्मिक तथा सामाजिक सुधार के निखार का सम्पूर्ण व्यवस्था हे। मनुष्य श्रेष्ठ बनो यही आर्य समाज का आन्दोलन हे। इसलिए आर्य समाज का द्वार मनुष्य मात्र के लिए खोल दो।

ऐसे थे महर्षि दयानन्द क प्रति समर्पित पूजनाय स्वामी आत्मबोध जा सरस्वती। दयानन्द स सम्बन्धित कोई सस्था हो वे उसके प्रति सदा सजग रहते थे। अजमर म स्थित भिनाई कोठी जहा महर्षि ने अन्तिम सास ली थी वहा निर्मित ' महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक टस्ट क वे अध्यक्ष थे। जितना सम्भव हुआ उन्होने उसक निर्माण में अपना व्यक्तिगत सहयोग दिया। लगभग दो वर्ष पूर्व इस न्यास की बैठक जिसम मैं उपस्थित भी नहीं था, मुझे [illegible] कर दिया।

ईश्वर हम शक्ति द हम उनक आदेशो का पालन करत हुए उनक पद्चिन्हो पर चलने का प्रयास कर ताकि ऋषि के मिशन का पूरा कर सके।

किसी शायर न महर्षि के निधन पर एक शेर लिखा था परन्तु मैं उसे स्वामी आत्मबोध जी के लिए श्रद्धाजलि के रूप मे लिखता हू–

तू नहीं पैगाम तेरा हर किसी के दिल मे है।

जल रही अब तक शमा रोशनी महफिल में है॥

आर्य समाज मन्दिर [illegible]

[illegible] श्री [illegible] आर्य [illegible]

पिछले वर्ष आर्य मर्यादा साप्ताहिक के अक नम्बर 55 दिनाक 15 जुलाई 2001 का मैंन एक लेख लिखा था कि श्री जगमोहन शहरी विकास मत्री का आय समाज मिन्टो राड दिल्ली का गिराने मे हाथ है। आय ममाज को गिरा दिया गया था। मन लिखा था कि शहरी विकास मत्री का आर्य समाज मन्दिर नहीं गिराना चाहिए था परन्तु आय समाज का परवाह न कर क उसे गिरा दिया गया। मैंने लिखा था कि आर्य समाज रूपा शेर को मत छेडो। आर्य समाज कभी अपमान सहन नहीं करता। इसलिए आर्य समाज क भवन को जिस तरह से गिराया गया है उस का उसी तरह से बनवा दिया जाए। आज तक जब जब भा किसी सरकार न आर्य समाज को दबाने की कोशिश का ह उसको मुह की खानी पडी ह। आय ममाज आज तक किसी भा सरकार क आग नहा झुकी ह। सबमे पहल 1938 म हैदराबाद की निजाम सरकार क खिलाफ आर्य ममाज का सघर्ष करना पडा। सत्याग्रह आरम्भ हा गया। निजाम न आय समाजिया पर बहुत जुल्म किए परन्तु आय समाज निजाम क आगे नहीं झुका। हैदराबाद की जेले आन्दालनकारिया से भर गईं। अन्त म निजाम का आय समाज के आग झुकना पडा आर आर्य समाज का विजय हुइ। यह घटना दश के आजाद हान से पहले की हैं और 1947 मे दश आजाद हो गया। दश को आजाद करवान म आय समाज का बहुत बडा योगदान ह। उसक पश्चात् 1957 म पजाब की करा सरकार ने आर्य समाज का ललकारा और आर्य समाज न तत्कालान करा सरकार का चुनौती को स्वीकार किया। कैरो सरकार क विरुद्ध आर्य समाज न आन्दोलन चलाया और कैरा सरकार आय समाज का दबाने की कोशिश करने लगी। इस आन्दोलन मे पजाब का आय समाज क साथ साथ भारत का बाका प्रदेशा का आर्य समाजे भी कूद पडी। अगस्त 1957 से दिसम्बर 1957 तक आन्दालन चलता रहा। पजाब का जितनी भा जल था सब का सब आन्दालनकारियो स भर गइ आर काइ स्थान खाली नहा रहा इसक पश्चात् पजाब स बाहर का जला म आन्दोलनकारियो का भजना आरम्भ कर दिया गया। पजाब का करा सरकार घबरा गई। इसक अतिरिक्त भारत की नेहरू सरकार भा [illegible] इस आन्दालन में मैं भी था। मैं आर्य समाज अड्डा होशियारपुर की ओर से एक जत्था [illegible] चण्डीगढ [illegible] वहा गिरफ्तार कर लिया [illegible] गिरफ्तार कर के मुझे अम्बाला की जेल मे भेज दिया गया। वहा अम्बाला जेल में 1300 सत्याग्रही थे। अन्त में श्री पडित जवाहर लाल जी नेहरु 17 12 1957 को चण्डीगढ मे भागे भागे आए और उन्होने वहा घोषणा की कि आर्य समाज की 90 प्रतिशत मागों को मान लिया गया है। जो शेष 10 प्रतिशत हैं उनको भी बातचीत द्वारा तय कर के मान लिया जाएगा। अन्त मे आर्य समाज की बात को मान लिया गया और दिसम्बर के अन्त तक जितने भी सत्याग्रही थे सब को छोड दिया गया।

उस समय हिन्दी आन्दोलन के नता श्री घनश्याम जी गुप्त थे। जहा वह आर्य समाज के बहुत बडे नेता थे। वहा वह काग्रेस के भी बहुत बडे नेता थे इसलिए वह पडित जवाहर लाल नेहरू के झासे मे आ गए और हमारे नेता से यह गल्ती हो गई कि उन्होने पडित जवाहर लाल नहरु से लिख कर कुछ नहीं लिया और यह आन्दोलन बद कर दिया। एक वर्ष बीत जाने पर जब हमारी माग पूरी नहीं की गई तो हमारे नेता को यह अहसास हुआ कि हमारे साथ विश्वासघात किया गया है। उसक पश्चात् फिर 1961 फरवरी में जनगणना आ गई तो उस समय आर्य समाज ने जनगणना मे हिन्दी लिखवाने के लिए पग उठाया और सारे पजाब की एक बैठक आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर मे रखी। सरकार को जब यह पता चला तो वह घबरा गई और सरकार ने आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर मे किसी भी बैठक को करने के लिए एक महीने का प्रतिबध लगा दिया। इस तरह हम 5 फरवरी से लेकर एक महीना तक आर्य समाज में किसी भी तरह की बैठक नहीं कर सकते थे। उस समय मैं आय ममाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का मत्री था। 4 फरवरी साय का हमे पता लग गया कि आर्य समाज म बैठक करने पर पाबन्दी लग गई ता इस पर हम 4 फरवरी साय को श्री लाला इन्द्रसेन जी मल्होत्रा को साथ लेकर लाला जगत नारायण जी क कार्यालय मे पहुच गए और वहा पर श्री वीरेन्द्र जी को फान करक बुलाया गया। हम चारो [illegible] विचार किया यह बैठक अवश्य करनी चाहिए। 5 फरवरी [illegible] प्रात [illegible] को घेर लिया। [illegible] पुलिस [illegible] लोगों [illegible] घेरे को तोड दिया और आर्य समाज के हाल में प्रवेश कर गये। आर्य समाज का सारा हाल भर गया। हमने बैठक आरम्भ कर दीं। हजारों की सख्या मे लोग आर्य समाज के बाहर खडे थे। हमने बैठक की और बाहर आ गये लेकिन हमें पुलिस ने कुछ नहीं कहा। लेकिन अगले दिन 6 फरवरी को प्रात ही पुलिस लोगों को गिरफ्तार करने के लिए पहुच गई। श्री वीरेन्द्र जी श्री लाला जगत नारायण जी आचार्य रामदेव जी लाला इन्द्रसेन जी, डॉ० दुर्गादत्त जी एव श्रीमती बिमला जी कोहली इन 6 व्यक्तियो को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। सी आई डी के अनुसार जो बोलने वाले थे उनको गिरफ्तार कर लिया गया। मैं बाहर रह गया। 10 फरवरी को काग्रेस के तत्कालीन प्रधान श्री सजीवा रेड्डी जी जालन्धर आ रहे थे। मैंने समाचार पत्रों में घोषणा कर दी कि जहा-जहा से भी काग्रेस प्रधान आये उनका काली झडियों से स्वागत किया जाए। उनका काली झडियो से स्वागत करने के लिए सोनीपत पानीपत अम्बाला छावनी और लुधियाना के पश्चात् जालन्धर मे बहुत बडी सख्या मे लोग स्टेशन पर पधारे। जब काग्रेस के प्रधान जालन्धर स्टेशन पर पधारे तो मैंने उस समय गायत्री मन्त्र के साथ काले झडे दिखा कर उनका स्वागत किया। जब उनकी गाडी काफी आगे बढ गई तो पुलिस व काग्रस के कुछ गुडा ने हम पर लाठिया चलाना आरम्भ कर दीं। जब वहा लाठिया बरस रही थीं तो मैं नीचे गिर गया। जिस गाड़ी में काग्रेस प्रधान बैठे हुए थे उस गाडी में कैरों भी बैठे हुए थे। काग्रेस प्रधान ने कैरा को कहा कि यह क्या तमाशा है आर्य समाज शान्तिपूर्वक आन्दोलन कर रहा है और आपकी पुलिस उन पर लाठिया बरसा रही है। आप ने जो आर्य समाज पर प्रतिबध लगाया है उसे वापिस ले लो। दूसरे दिन आर्य समाज पर लगा प्रतिबध वापिस ले लिया गया और जो 6 व्यक्ति गिरफ्तार किए गए थे उनको रिहा कर दिया गया। 13 फरवरी 1961 का प्रताप सिह कैरो ने एक ब्यान दिया था उस समय उर्दू का समाचार पत्र हिन्द समाचार ही था [illegible] आर्य [illegible] दिया था वह [illegible] हमने आर्य समाज [illegible] कर गल्ती की है। ऐसी गल्ती नहीं होनी चाहिए।

[illegible] मैंने [illegible] लिखा था कि आर्य समाज के भवन को शीघ्र बनवा दिया जाए। मैं आर्य जनता को बताना चाहता हू कि आर्य समाज मिन्टो रोड दिल्ली की भी विजय हुई है। आर्य समाज को दोबारा बनाने के लिए मान लिया गया है। मैं इसके लिए दिल्ली के पूर्व मुख्यमत्री श्री मदन लाल खुराना भूतपूर्व मुख्यमत्री साहिब सिंह वर्मा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न एव उपप्रधान श्री विमल वधावन जी श्री वेदव्रत जी शर्मा मन्त्री तथा दूसरे अधिकारियों को बधाई देता हू कि यह सब उनकी मेहनत का फल है। यह एक बहुत ही सराहनीय कार्य है।

मैं इसके साथ ही सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों से यह प्रार्थना करना चाहता हू कि वह इसी प्रकार हिन्दी के मामले को भी सुलझाने की कोशिश करें। हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा है और इसे सारे देश में लागू करवायें। 1949 में यह फैसला हुआ था कि कई प्रान्तो मे लोग हिन्दी को नहीं जानते। इसलिए 15 वर्ष का समय लोगों को दे दिया जाए ताकि जिन लोगो को हिन्दी नहीं आती वह 15 वर्ष मे सीख ले परन्तु 15 वर्ष के बजाये अब 53 वर्ष हो गए हैं परन्तु अभी तक हिन्दी को जा स्थान मिलना चाहिए था वह अभी तक नहीं मिला। देश मे लोकसभा मे सभी अग्रेजी में बोलते हैं हिन्दी में बोलना अपना अपमान समझा जाता है। प्रधानमत्री श्री अटल बिहारी वाजपयी हिन्दी के बहुत बड पक्षपाती हैं उनको भी अग्रेजी से ही प्यार है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह लोकसभा भारत की नहीं बल्कि अग्रेजो की लोकसभा है। जैस 1957 में हिन्दी आन्दोलन चलाया गया था और उस समय पजाब सरकार और भारत सरकार दोनों झुक गई थीं। इसलिए मैं आशा करता हू कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अधिकारी हिन्दी के मामले को लेकर इसे उच्च स्थान दिलायें।

जिला लुधियाना में आर्य समाजों की गतिविधियां

प्रस्तुतकर्ता श्री [illegible] जी आर्य सभा उपप्रधान (लुधियाना)

(गतांक से आगे)

स्त्री आर्य समाज [illegible] बाजार:—यह स्त्री समाज भी काफी पुरानी है पहले इसे बहन सत्या शर्मा-[illegible] भल्ला-कमला वैद्य और कई बहनें सफलता पूर्वक चलाती रही है उसके पश्चात् श्रीमती कमला जी आर्या ने कई वर्षों तक इस स्त्री आर्य समाज को सफलता पूर्वक चलाया कई उत्सव सम्मेलन किए बहुत योग्य विद्वानों को बुलाकर प्रचार कराया। अब कुछ वर्षों से इसकी बागडोर को श्रीमती राजेश जी शर्मा-नीना बेरी और उनकी योग्य बहनों ने सम्भाला हुआ है। अब इन्होंने आर्य समाज के साथ मिल कर पिछले दिनो एक सफल उत्सव किया। श्रीमती राजेश शर्मा जहा इस स्त्री समाज की प्रधाना हैं वहा जिला सभा की प्रधाना, सभा की मन्त्री आर्य गर्ल्स स्कूल की प्रबन्धक हैं। यदि वह इस समाज की ओर अधिक ध्यान दें तो यह स्त्री समाज पजाब की अग्रणी समाज बन सकती है।

आर्य समाज सिविल लाइन—लुधियाना क इस विशाल क्षेत्र मे कोई आर्य समाज नहीं है जिस कारण हमारे कई भाई हमसे दूर होते गए यहा की जनता ने कई बार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से प्रार्थना की कि आपकी सस्थाओ के पास काफी जमीन फालतू पडी है। आर्य समाज के लिए द दो तो यहा आर्य समाज का विशाल भवन हम बना लेंगे। मैंने भी कई बार सभा प्रधान एव महामन्त्री के सामने प्रस्ताव रखा परन्तु जबानी वचनों के सिवा कुछ न मिला। एक बार तो लुधियाना में जब लुधियाना के आर्य भाईयों बहनों की बैठक हुई तो उस समय के महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार शर्मा ने स्थान देने की घोषणा कर दी। स्थान की निशान देही भी हो गई। जनता में प्रसन्नता की लहर दौड गई। लोगों ने लाखों रुपए के चन्दा के वचन लिखा दिए। एक भाई ने तो मेरे कान में आकर कह दिया कि इस समाज में जो यज्ञशाला बने उसके लिए 50 हजार रुपए मेरे से [illegible] लेना परन्तु दूसरे दिन सभा महामन्त्री ने यह दुकान कैंसल कर दिया परन्तु इस समाज की स्थापना हो चुकी थी और अब यह लगातार कई वर्षों से टैगोर नगर में वैद्य वैणी प्रसाद जी की प्रयोगशाला में चलती है। वैद्य जी, बहन सरला जी लूम्बा सुवर्षा जी कालडा। यशपति जी भल्ला और कई बहनें इसे चला रही हैं। पिछले वर्ष इन्होंने अपनी आर्य समाज में एक सप्ताह का कार्यक्रम भी रखा था जो सफल रहा था यदि सभा इस आर्य समाज के लिए कुछ जमीन दे तो यहा आर्य समाज का एक विशाल मन्दिर एव प्रचार का केन्द्र बन सकता है।

आर्य समाज पश्चिम·—यह आर्य समाज माडल ग्राम माडल टाऊन एकस्टैंशन तथा इसके साथ लगते इलाके में पारिवारिक सत्सग के माध्यम से कार्य करती है। इसे प्रसिद्ध साहित्यकार श्री सुरेश जी वात्स्यायन श्रीमती सतीश जी शर्मा, श्री यज्ञदेव जी तागडी चलाते हैं इस आर्य समाज को जिला आर्य सभा एव आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से मान्यता प्राप्त है। इन्हे अपने कार्यक्रम को और बढाना चाहिए।

आर्य समाज पार्क लैन·—पिछले 16 मास से यह आर्य समाज पारिवारिक सत्सग के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार कर रही है इसके प्रचार से सिविल लाईन के कई परिवार जो आर्य समाज से दूर चले गए थे फिर आर्य समाज से जुड चुके हैं इसको आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री नरेन्द्र सिह जी भल्ला चलाते हैं। जो भाई अपने घर मे सत्सग कराना चाहता है केवल श्री भल्ला जी को फोन कर दे सारा प्रबन्ध एव खर्चा वह स्वय करके दूर-दूर से विद्वान् बुलाते हैं। सत्सगों में काफी जनता आती है और वेद की गगा में नहाती है। कोई रविवार ऐसा नहीं जिस रविवार को सत्सग न हो। भल्ला जी मेरे पुराने साथी हैं जब लुधियाना में होता हूं उनके चलाए हुए सत्सग में जाता हू और देखता हू कि एक ही व्यक्ति आर्य समाज का कितना काम कर रहा है। अब तो कई सहयोगी इस पुण्य कार्य में हाथ बंटाने लगे हैं। बहुत सी जनता इस सत्सग से लाभ उठा रही है।

आर्य समाज [illegible]:—बहुत पुरानी आर्य समाज है इसमें मन्दिर भी व स्कूल भी चल रहा है कई बार यहा के अधिकारियों को मिलने का अवसर मिला, न वह जिला सभा और न ही आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की गतिविधियों में अधिक भाग लेते हैं। इस बार सभा के चुनाव में उनके प्रतिनिधि पहुचे और उन्हें सभा की अन्तरग सभा में सदस्य नियुक्त किया गया। इस आर्य समाज को और गतिशील होना चाहिए।

आर्य समाज साहनेवाल —मेन बाजार में इस समाज का मन्दिर है अन्दर से काफी खुला है किसी समय स्व० प ताराचन्द जी इस आर्य समाज का बहुत जोश से कार्य करते थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके बेटे श्री वजीर चन्द जी शर्मा श्री रणवीर चन्द जी शर्मा इस आर्य समाज की मुरम्मत वगैरा करा देते हैं। मैंने उन्ह कई बार कहा है कि आप इस आर्य समाज मे यज्ञ करो लोग स्वय आपके साथ जुड जायेंगे- परन्तु अभी उनका मन नहीं बना उनके सारे परिवारो मे आर्य समाज के लिए अटूट श्रद्धा है यहा एक आर्य प्राईमरी स्कूल (मान्यता प्राप्त) है। जिसके प्रबन्धक श्री साधूराम जी कैला हैं ओर भी कई प्राईवेट स्कूल उन्होने बना रखे हैं। उनको एक लोकल प्रबन्ध समिति चलाती है मैंने कई बार इन स्कूलो मे जाकर यज्ञ एव प्रचार का कार्य करवाया हे। एक बार तो बहन कमला आर्या जी भी वहा प्रचार कार्य मे गई थीं स्कूलों के छात्र एव स्टाफ बडी श्रद्धा से प्रचार के कार्यक्रम में भाग लेते हैं, कई धार्मिक पुस्तके भी उनमे वितरण की गई हैं।

मैंने श्री साधूराम कैला को इस स्कूल का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा से करने के लिए कई बार कहा परन्तु उनका और उनकी प्रबन्ध समिति का मन नहीं बना। इस आर्य समाज को गतिशील बनाने के लिए लुधियाना जिला आर्य सभा को विशेष ध्यान देना चाहिए।

आर्य समाज दोराहा.—नगर के मध्य में आर्य समाज के विशाल भवन में आर्य हाई स्कूल लगता है। काफी पहले यहा आर्य समाज सक्रिय था और स्कूल आर्य समाज के नियत्रण में ही चलता था फिर इस स्कूल के प्रबन्धक श्री अरुण जी थापर जो कि आदरणीय सत्यानन्द जी मुन्जाल के दामाद हैं बने उन्होंने स्कूल को सुन्दर ढग से चलाया और आर्य समाज का कार्य भी होता रहा। उनके साथ श्री सूद जी टिम्बर मर्चेन्ट पूरा साथ देते रहे। अब श्री अरुण जी थापर लुधियाना आ गए हैं और सूद जी का कार्य भी लुधियाना में है। इसलिए इस आर्य समाज (स्कूल) में आर्य समाज का कार्य बिल्कुल ठप्प है।?

लगभग डेढ वर्ष पहले मैं और जिला सभा की प्रधाना श्रीमती राजेश जी शर्मा दोराहा गए थे प्रबन्धक जी और मुख्याध्यापिका जी को मिले थे और उन्हे आर्य समाज से जुडने की प्रार्थना की थी उन्होने वचन भी दिया था परन्तु कुछ लाभ नहीं। अब आय प्रतिनिधि सभा पजाब ने इस स्कूल की नई प्रबन्ध समिति बना दी हे जिसने इस स्कूल का चार्ज ल लिया है। इस ग्मिति में सभा के कुछ अधिकारी भी हैं। स्कूल ठीक ढग से चलने लगा है और 1 11 2002 को आर्य समाज मे ऋषि निर्वाण दिवस पर उत्सव रख दिया है। अब यहा आर्य समाज का कार्य तीव्र गति से चल पडगा।

आर्य समाज समराला —खन्ना रोड पर सडक के किनारे आर्य समाज का मन्दिर है साथ कुछ दुकाने भी हैं। इस समाज को प्रसिद्ध समाज सेवक श्री अमरनाथ जी तागडा एम सी खुल्लर परिवार तथा उनके साथी चला रहे हं। सडक ऊची होने के कारण वर्षा का पानी आर्य समाज मन्दिर म आ जाता था। कुछ सभा ने ओर कुछ श्री नरेन्द्र भल्ला जी ने आथिक सहायता की बाकी सारा धन श्री अमरनाथ जी तागडा ने एकत्रित करके इस आय समाज मन्दिर का सुन्दर बनाया 11 अगस्त को आर्य समाज हबीबगज लुधियाना क 28व वार्षिक उत्सव पर श्री अमरनाथ जी पधारे थे। उनकी धारणा हे कि मुझे सभा और आर्थिक सहयोग दे तो भवन और सुन्दर बन सकता है। मैंने उन्हे प्रार्थना की है कि आप अपनी आर्य समाज मे कोई समारोह करे सबको निमन्त्रण देवे धन स्वय आ जाएगा। जब भी आप कोई समारोह करे मेरी सेवा आप ले सकते हैं।

(क्रमश)

"मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है" [illegible]

☐ ले० श्री खुशहाल चन्द आर्य, 180 महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता

ईश्वर ने मनुष्य की योनि सब से उत्तम योनि बनाई है। इससे ज्यादा अच्छी, बढ़िया व उत्तम अन्य कोई योनि नहीं। मनुष्य यदि इस योनि में प्राप्त सभी भौतिक व आध्यात्मिक उपलब्धियों का सदुपयोग करें तो वह अपने जीवन को पूर्ण सुखी बना सकता है और मृत्यु के बाद परम् आनन्द (मोक्ष) को प्राप्त कर सकता है। इस योनि को ईश्वर ने अनेकों विशेषताएं प्रदान की हैं जिनका विवरण इस भाति है।

1) मनुष्य योनि को छोड़ कर बाकी सब पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि योनियां सिर्फ भोग योनि हैं, कर्म योनि नहीं। इसमें इनको सिर्फ अपने व्यक्तिगत कर्म करने की स्वतंत्रता है, अन्य धार्मिक व सामाजिक कार्यों के करने की न उनमे क्षमता है और न वे कर ही सकते हैं, इसलिए इनको कर्मो का फल भी नहीं मिलता। ये योनियां क्रमशः ऊपर की योनियों की तरफ बढ़ते-बढ़ते अनेकों योनियों में होते हुए अन्त में मनुष्य योनि को प्राप्त करती हैं। मनुष्य योनि भोग योनि के साथ-साथ कर्मयोनि भी है। इसमें मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है। जैसा मनुष्य कर्म करेगा वैसा ही ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार उसको फल देगा। कुछ कर्मों का फल मनुष्य को इसी जीवन में मिल जाते हैं और कुछ कर्मो का फल उसको अगले मिलने वाले अनेकों जन्मों में मिलते रहते हे। किये हुए अच्छे या बुरे कर्मों का फल अच्छा या बुरा मनुष्य को निश्चित रूप में मिलता है जो अन्य योनियों को नहीं मिलता कारण वे सिर्फ भोग योनि हैं।

2) ईश्वर ने मनुष्य के ऊपर सब से बडा उपकार यह किया है कि मनुष्य योनि से ही जीवन को मोक्ष की प्राप्ति होती है, अन्य योनियों से तो जीव को सिर्फ गुजरना ही पड़ता है। मनुष्य यदि अपने जीवन मे सद्ज्ञान, सद्आचरण व सद्व्यवहार और ईश्वर की सही उपासना करे तो कोई कारण नहीं कि मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति न हो। सद्ज्ञान का अर्थ है ईश्वर प्रदत्त वेदों का ज्ञान प्राप्त करना जो मनुष्य को सुखी जीवन जीने की कला सिखाता है और मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग बताता है। सद्आचरण से तात्पर्य है काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा व अहंकार आदि दुर्गुणों का त्याग और सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, सहायता, दया, न्याय व परोपकार आदि गुणों को जीवन में धारण करना। सद्व्यवहार का अर्थ हुआ सबसे प्रीतिपूर्वक, विनम्रता से व्यवहार करना तथा सही उपासना का तात्पर्य है कि यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा व समाधि अवस्था तक पहुंच कर ईश्वर के परम आनन्द की अनुभूति करना और फिर मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त करके लम्बी अवधि तक ईश्वर के सान्निध्य में परम् आनन्द को प्राप्त करते रहना है।

3) एक और उपकार ईश्वर ने मनुष्य के ऊपर किया है, वह है जीवों में दो किस्म के गुण पाये जाते हैं। एक है स्वाभाविक दूसरा नैमित्तिक। नैमित्तिक गुण मनुष्य में ज्यादा और अन्य योनियों में कम होता है, कारण यह गुण बुद्धि पर आधारित है। बुद्धि ईश्वर ने मनुष्य को ज्यादा दी है अन्य योनियों को सिर्फ काम चलाने मात्र ही बुद्धि दी है। स्वाभाविक गुण अन्य योनियों में ज्यादा होता है कारण यह कि गुण ईश्वर प्रदत्त है। अन्य योनियों को यह गुण ज्यादा दिया है। मनुष्य को यह गुण कम दिया है कारण मनुष्य में बुद्धि ज्यादा होने से इस गुण की आवश्यकता कम होती है। नैमित्तिक गुण मनुष्य अपने बुद्धि बल से जितना चाहे उतना बढ़ा सकता है लेकिन स्वाभाविक गुण जितना ईश्वर ने दे दिया है उतना ही रहता है। घटाया-बढ़ाया नहीं जा सकता। उदाहरण के तौर पर कुत्ते का बच्चा पैदा होते ही पानी में तैरने लगता है, मनुष्य का बच्चा पैदा होते ही नहीं तैर सकता परन्तु सीखने से तैर सकता है। कुत्ते का तैरना स्वाभाविक गुण है और मनुष्य का नैमित्तिक गुण है। वैसे ही मनुष्य के बच्चे के पास बुद्धि अधिक होने से वह पढ़कर डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर, प्रोफेसर, लेखक, कवि व वक्ता बन सकता है कारण यह मनुष्य का नैमित्तिक गुण है। अन्य योनियों के पास बुद्धि सिर्फ काम चलाने योग्य सीमित होती है इसलिए वे डाक्टर, वकील, इन्जीनियर तो नहीं बन सकते लेकिन उनमें भी नैमित्तिक गुण होता जरूर है। जैसे कुत्ते को हम अपनी इच्छा से बुला कर रोटी देते हैं तो वह पूंछ दबाकर कृतज्ञ भाव से रोटी लेने आता है और स्वाभिमान से रोटी लेकर जाता है और वही कुत्ता जब चोरी करके रोटी ले जाता है तो वह चुपके से आता है और मालिक की आंख बचा कर दुबक कर निकल जाता है कारण वह जानता है कि मैंने यह रोटी चोरी करके ली है और पहले वाली रोटी मालिक की इच्छा से ली थी। यह उसका नैमित्तिक गुण हुआ। पुरुष का बच्चा जब पैदा होता है तब वह रोता या हंसता है तथा मनुष्य अपनी आंखों की पलकें नीचे ऊपर करता है, यह [illegible] गुण या क्रियाएं ईश्वर प्रदत्त हैं।

4) बुद्धि के अलावा ईश्वर ने मनुष्य को दो चीजें या अंग और विशेष दिए हैं जो अन्य योनियों को सिर्फ काम चलाने योग्य ही दिए हैं। वे हैं वाणी और पाणि। मनुष्य के यह दोनों ही अंग उसके जीवन में अति उपयोगी और बड़े महत्त्व रखने वाले हैं। वाणी से तो वह अपनी मन की बात दूसरे को कह सकता है यानि अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है। अच्छा वक्ता बन कर लोगों को आकर्षित कर सकता है और मधुर संगीत, भजन व कविता सुना कर लोगों को आकर्षित व मन्त्र मुग्ध कर सकता है। वाणी मनुष्य के जीवन को उन्नत व समृद्धिशील बनाने में बड़ी सहायक है। इसी प्रकार दूसरा अंग जिसको हम पाणि (हाथ) कहते हैं, यह भी मनुष्य के जीवन को उन्नत व महान् बनाने में बड़ा सहायक है। विवाह को "पाणि-ग्रहण" संस्कार भी कहते हैं। इसका अर्थ भी हाथ को ग्रहण करना ही है। विवाह में पति, अपनी पत्नि का हाथ पकड़ कर यह प्रतिज्ञा करता है कि कितनी भी बड़ी से बड़ी विपत्ति आ जावे, मैं तेरा हाथ नहीं छोडूंगा और तेरा पालन-पोषण करुंगा तथा जीवन को सुखी बनाने की आज से पूरी जिम्मेदारी मैं लेता हूं जिसे पति जीवन भर निभाता है। मनुष्य हाथों के बल पर ही अपने जीवन को सुचारू रूप से चला पाता है और व्यक्तिगत, धार्मिक व सामाजिक सभी कार्य हाथों द्वारा ही करता है, इसलिए ईश्वर ने बुद्धि के साथ-साथ वाणी और पाणि देकर मनुष्य पर बड़ा उपकार किया है जिसे मनुष्य को कभी नहीं भूलना चाहिए।

5) ईश्वर जीव को उसके कर्मों के अनुसार मनुष्य योनि में जरूर भेज देता है लेकिन वह पशु योनि से आया हुआ है इसलिए उसमें पशु प्रवृत्तियां विद्यमान रहती हैं। उसे मानव बनने के लिए मानवीय गुणों जैसे सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, त्याग, न्यायप्रियता, सहृदयता दया व परोपकारिता आदि को अपनाने से और अमानवीय दुर्गुणों जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार आदि को छोड़ देने पर ही वह मानव कहलाने का अधिकारी बनेगा। इसीलिए वेद ने भी आदेश दिया है "मनुर्भव"। हे! मनुष्य तू मानव बन। सुनने में यह आदेश बड़ा अटपटा सा लगता है कि वेद मनुष्य को ही मनुष्य बनने को क्यों कहता है? क्या वह अभी और कुछ है? हां! वेद ने ठीक ही आदेश दिया है। वह [illegible] परन्तु जब तक मानवीय गुण तेरे में नहीं आएंगे तब तक तू पशुवत् ही है। भर्तृहरि ने ठीक ही कहा है "मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति" यानि इस संसार में मनुष्य देह में मृगचर हैं। यह श्लोक उन्हीं लोगों के लिए है जिनमें मानवीय गुण नहीं हैं। मनुष्य वही होता है जो मानवीय गुणों को जीवन में धारण करे और अमानवीय अवगुणों का परित्याग करे उसी को मानव की संज्ञा वेदों ने दी है। राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त ने भी इसी भाव की पुष्टि करते हुए अपनी कविता में लिखा है। "मनुष्य वही है कि जो मनुष्य के लिए मरे, वह तो पशुवृत्ति है जो आप ही आप चरे।"

इस विषय से सम्बन्धित पाठकों का ध्यान इस ओर भी खींचना चाहूंगा कि ईश्वर की जितनी भी कृतियां हैं वे सभी पूर्ण हैं। उनमें कम या अधिक नहीं हो सकता कारण ईश्वर सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान है। भला! उसकी कृति में अपूर्णता कैसे रह सकती है? मनुष्य अल्पज्ञ व सीमित शक्ति वाला है इसलिए उसकी कृति हमेशा अपूर्ण ही होगी। ईश्वर ने जीवों के उपयोग के लिए सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, हवा, पानी, अग्नि, वृक्ष ये सब पूर्ण ही बनाये हैं। इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्यों के ज्ञान के लिए जिससे वह चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम को करता हुआ मोक्ष को प्राप्त कर सके इसलिए ईश्वर ने चार वेदों को भी बनाया है और वे भी पूर्ण हैं। वेदों में भी हम एक भी अक्षर या छोटी बड़ी मात्रा को भी घटा बढ़ा नहीं सकते और न ही बदल सकते हैं, इसीलिए वेदों में मिलावट नहीं हो सकी जैसे मनुस्मृति, रामायण, महाभारत में हुई है। इसलिए वेद ज्ञान पूर्ण होने से ईश्वर कृत है, मनुष्य कृत नहीं।

जिस प्रकार ईश्वर की सब कृतियां पूर्ण हैं उसी प्रकार इसका आनन्द भी पूर्ण है, इसीलिए ईश्वर की प्राप्ति को परम आनन्द की प्राप्ति यानि पूर्ण आनन्द की प्राप्ति कहते हैं। मुक्ति अवस्था में मनुष्य ईश्वर के सान्निध्य में रह कर इसी परम आनन्द की प्राप्ति करता है। मनुष्य का यह परम कर्त्तव्य है कि ईश्वर प्रदत्त उपकारों व उपलब्धियों का सदुपयोग करते हुए, ईश्वर द्वारा वेदों में बताये मार्ग पर चलते हुए अपने विचार, आचार, व्यवहार को शुद्ध व पवित्र रखें और परोपकार की भावना के साथ उत्तम कर्मों को करते हुए अष्टांग योग द्वारा मोक्ष को प्राप्त करें जो मनुष्य जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

परमात्मा की महानता

प्रो. डॉ. आचार्य राम प्रसाद जी वेदालंकार

(पिछले अंक से आगे)

सचमुच तन की शुद्धि के साथ-साथ व बाह्य हव्य पदार्थों एवं वाणी आदि की शुद्धि के साथ-साथ यदि मन भी सु-मन स्वच्छ मन-पवित्र मन बन जाए तो फिर बहुत जल्दी ही वह व्यक्ति सुमन के समान खिल जाएगा और अपने चहुं ओर जहां अपनी सुरभि से सब वातावरण को सुरभित कर देगा, वहां उसे फिर जहां अपना भान हो जाएगा, वहां आत्मा में विद्यमान परमपिता परमात्मा का भी उसे साक्षात्कार हो जाएगा। ऋषिवर दयानन्द के शब्दों में-'परमेश्वर तो सर्वदा सर्वत्र सब को प्राप्त है, किन्तु सतोष अन्त:करण में उसकी प्रतीति नहीं होती। अत: मनुष्य को चाहिए कि जहां वह अपने को बाहर से साफ सुथरा रखे वहां वह अपने को भीतर से भी पवित्र बनाए रखे-अन्दर से भी अपने को निर्मल मन वाला-निर्दोष अन्त:करण वाला बनाकर उस सुखस्वरूप-आनन्दस्वरूप प्रभु का साक्षात्कार करे।

इस सूक्त के अनुरूप यदि भक्त में सचमुच ऐसी तड़प है-"कदा मृडीकं सुमना अभिख्यम्"-न जाने कब वह सौभाग्यशाली समय आएगा, जब सुन्दर मन वाला-दिव्य पावन मन वाला-निर्दोष अन्त:करण वाला होकर सुखस्वरूप-आनन्दस्वरूप प्रभु को मैं भजूंगा और उसका दर्शन करूगा ? तो फिर यह तडपन ही-यह टीस ही उसको उठायेगी, उसको दुर्गुण दुर्व्यसनो से ओर उनके आधार पर होने वाले दु:खो से, कष्ट-क्लेशो वा दुर्गुण दुर्व्यसनों के कीचड मे धसे पडे हुए लोगों और उनके कुसंग से होने वाले पाप-तापों को दूर कर देगी। और यही तड़पन-यह दिदृक्षा प्रभु दर्शन की पिपासा उसको सुमन-सुन्दर मन वाला-उत्तम मनन चिन्तन वाला-अद्वितीय संकल्पों वाला दिव्य आहार-व्यवहारों वाला बना देगी, उस दिव्य देव के दर्शन का अधिकारी बना देगी, उस वरणीय वरुण देव का कृपा पात्र बना देगी। सो वह दिदृक्षा-प्रभु दर्शन की प्यास-तड़पन-यह परम जिज्ञासा-उस प्रभु को पाने की दिव्य भूख ही उसको उसका साक्षात्कार करा कर उसको निहाल करेगी।

"पृच्छे तदेनो वरुणो दिदृक्षुरुपो
एमि चिकितुषे विपृच्छम॥
ऋ० ७.८६.३॥

अन्वया: वरुण! दिदृक्ष (अह) तद् एन: पृच्छे, उ चिकितुषे विपृच्छम् उपएमि।

हे वरणीय वरुण देव! दर्शन का इच्छुक मैं आपसे उस पाप को पूछता हूं जिसके कारण मैं तुम्हारे दर्शन नहीं कर पा रहा हूं। और यही बात मैं ज्ञानी-विवेकी-अनुभवी विद्वान् से पूछने के लिए उसके पास भी जाता हूं।

पिछली रश्मि में जब उपासक को यह ज्ञान हुआ कि हव्य सुन्दर होने पर यदि हव्य के दाता का मन अच्छा नहीं होता, उसकी भावना पवित्र नहीं होती, उसकी वृत्ति पवित्र नहीं होती, उसके संकल्प दिव्य नहीं होते, तो कितने भी सुन्दर, उत्तम अच्छे हव्य द्रव्य क्यों न हों, तब भी उसको अगला स्वीकार नहीं करता, उसकी ओर अगला मुख नहीं करता,और यह सब समझ कर उपासक ने उस आनन्दस्वरूप प्रभु का दर्शन पाने के लिये अपने मन को सु-मन बनाने का प्रयास किया। मन यदि उसका सु-मन बन भी जाये, उसका यदि सोचना-विचारना ठीक भी हो जाए, उसके संकल्प सब अच्छे बन भी जाए, तब भी उसको प्रभु के दर्शन नहीं होंगे। क्योंकि जैसे एक व्यक्ति ने व्याकरण-निरुक्त आदि पढ़ भी लिया हो और अच्छी तरह उसकी बारीकियों को भी उसने समझ लिया हो एवं वह अब वेद के पढ़ने-पढ़ाने तथा उसको समझने-समझाने में भी वह योग्य भी हो गया हो, तो इस प्रकार भले ही उसके हाथों में अब वेद रूपी अलमारी को खोलने की तालियां आ गई हों, पर फिर भी वेद रूपी अलमारी का ताला तो तभी खुलेगा न, जब कि वह उन तालियों से उसका ताला खोलना चाहेगा। यह ठीक है कि लोग उसको व्याकरण और निरुक्तादि का-पण्डित विद्वान्-आचार्य आदि कह कर उसको मान सम्मान देंगे। उसकी आव-भगत भी करेंगे, पर जिस लाभ के लिए उन्होंने यह सब किया था वह तो नहीं हो पायेगा।

स्वामी दर्शनानन्द जी एक बार एक खेत की डोल पर बैठकर गाजर-मूली खा रहे थे तो एक बहुत बड़ा रईस घोड़े पर सवार हुआ जा रहा था। यों तो वह अत्याश कुकर्मों के कीचड़ में धंसा हुआ था, फिर भी न जाने कैसे उसके मन में यह भाव जगा कि मैं इस साधु को भोजनार्थ कहूं। यह सोचा और कहा-"ओ बाबा जी ! ओ स्वामी जी ! क्या गाजर-मूली खा रहे हो, चलो मेरे घर, मैं आपको खूब बढ़िया भोजन कराऊंगा।" स्वामी जी ने कहा कि "इस मूली-गाजर में जो मजा है, वह तेरे मूल्यवान भोजन में कहां ? नहीं महाराज ! मेरा भोजन बहुत ही बढ़िया होगा, स्वादिष्ट होगा, उस व्यक्ति ने कहा। इस पर वह साधु बोला-अरे भोले। भोजन भले ही सुन्दर हो, पर तुम्हारा मन बुद्धि जीवन तो सुन्दर नहीं है, तुम्हारे भाव-भावना तो आदिव्य है। हम उस भोजन के मुकाबले में इस गाजर-मूली को खाना बहुत अच्छा समझते हैं इन शब्दों ने उस व्यक्ति को हिला कर रख दिया। न जाने कितने व्यक्ति मेरे साथ व मेरे पास खाने-पीने में अपना अहोभाग्य समझते हैं, और एक तरफ यह है जो मुझे और मेरे भोजन को देखने लायक भी नहीं समझता। यह तो मेरे दिव्य आस्वाद्य भोजन को भी अदिव्य और अस्वादिष्ट तथा हेय मानता है। क्योकि मेरी भावना अच्छी नहीं, मेरा मन अच्छा नहीं, मेरा दिल दिव्य नहीं। अदिव्य दिल भोजन को भी अदिव्य और हेय बना देता है। उसने सोचा-"मेरा मन अच्छा नहीं, मेरी भावना भद्र नहीं, मेरा जीवन अच्छा नहीं, मेरा चरित्र अच्छा नहीं, सो उस दिन न जाने क्यो उसके दिल में यह भावना स्थिर हो गई कि "मैंने ऐसे पवित्र महापुरुष को भोजन अवश्य खिलाना है।" यह सोचकर उसने घोड़े से उतर कर कहा-स्वामी जी ऐ महाराज जी ! कौन सी ऐसी भावना है, कौन सा ऐसा पाप है जिसके कारण अनुनय विनय करने पर भी आप मेरे यहां भोजन नहीं करना चाहते, और उस भोजन की अपेक्षा इस गाजर-मूली को बहुत अच्छा समझते हैं।

स्वामी जी महाराज ने कहा-"मुझे भोजन कराना है तो मांस-शराब छोड़ दे, इन वारांगनाओं-इन वेश्याओं को छोड़ दे और उस देवी को अपना, जिसका हाथ तूने विवाह की वेदी पर पकड़ा था और प्रतिज्ञा की थी कि-"आज से तू मेरी धर्मपत्नी और मैं तेरा पति रहूंगा। तुझको छोड़कर मैं अन्य सब को अपनी मां-बहन-बेटी के समान समझकर व्यवहार करूंगा, इत्यादि....। जा पहले अपने घर को साफ-सुथरा कर, और स्नेह सम्मान से उस देवी को अपना, और फिर श्रद्धा प्रेम से भोजन बनवा। हम तब भोजन करेंगे। उसने ऐसा ही किया और तब बड़े स्नेह-सम्मान से पूज्य स्वामी जी को वह वहां ले गया। देवी ने भोजन बनाया और उसने बडी श्रद्धा से परोसा। स्वामी जी ने बडे प्रेम से भोजन कर उनको आशीर्वाद दिया और भविष्य में उस परिवार का बडा कल्याण हुआ और वह जगह उन्होंने गुरुकुल के लिए पूज्य स्वामी दर्शनानन्द जी को दान द दी

सो यह साधक भी प्रभु से पूछता है कि मैं आपसे वह पाप पूछता हूं जिसके कारण दिदृक्षु-दर्शन की तडप रखता हुआ भी मैं आपके दर्शन नहीं कर पा रहा हू। इतना होने पर भी जब मुझे भीतर से कुछ स्पष्ट उत्तर सा नहीं सुनाई देता, तो मैं ज्ञानी महापुरुषो के पास भी यह पूछने के लिए चला जाता हूं और पूछता हू कि-"क्या कारण है कि मेरे हृदय से चाहने पर भी वह प्रभु मुझे दर्शन नहीं देता ?" तो वे कवि ज्ञानी योगी जन सब के सब यही कहते हैं कि-"अय ह तुभ्यं वरुणो हृणीते" यह वरणीय वरुण देव तुम पर कष्ट है तुम पर क्रुद्ध है। क्यों ह ? यह हम नही बता सकते। तुम जानो और वह प्रभु जाने ?

साधक को इतना तो बोध हो ही गया कि-"वह वरणीय वरुण देव उस पर रुष्ट है-क्रुद्ध है, वह उस पर नाराज है। अत: उसने सोचा कि-"मेरा कर्त्तव्य है कि मैं फिर उसी के द्वार पर जाऊ और यह जानने का हार्दिक प्रयास करू कि क्यों प्रभुवर मुझ पर रुष्ट हैं। यह सोचकर मैं गया और मैंने हृदय की टीस के साथ निवेदन किया, दिल से उस वरणीय वरुण देव से दरयाफ्त किया, मालूम किया कि आखिर कौन सा ऐसा महान् पाप-अपराध मुझ से हो गया है जो आप मुझे दर्शन नहीं देते, आप मुझ पर कृपा नहीं करते, आप मुझको अपनी दिव्य झांकी देकर कृतार्थ नहीं करते-निहाल नहीं करते ?" यह जिज्ञासा भक्त अगली पंचम रश्मि में भगवान् से करता है।

(क्रमश:)

डॉ० महावीर मीमांसक का प्रो० डी.एन. झा को उत्तर

वेदों के उद्भट् मूर्धन्य विद्वान् डॉ० महावीर जी मीमांसक दिल्ली ने दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार (उत्तरांचल) में आयोजित अखिल भारतीय त्रिदिवसीय सम्मेलन (अक्तूबर 6-8, 2002) में अपना शोध लेख "वैदिक वाङ्मय में अन्तरिक्ष विज्ञान" विषय पर संस्कृत में प्रस्तुत किया। 20 पृष्ठ का यह लेख अत्यन्त उच्चकोटि का था। जिसकी भूरि-भूरि प्रशसा सभी विद्वान् श्रोताओं ने की जो देश के सभी स्थानों से पधारे थे।

अपने शोध लेख में डॉ० साहब ने अन्तरिक्ष की परिभाषा वैदिक वाङ्मय से प्रमाण दे कर स्पष्ट किया। फिर अन्तरिक्ष विज्ञान के मूलभूत बिन्दु अन्तरिक्ष स्थानीय देवताओं की सूची सप्रमाण वैदिक निघन्टु और यास्क के निरुक्त के आधार पर प्रस्तुत की जो कि वास्तविक और सप्रमाणिक व्याख्या के लिए कई हजार वर्ष पूर्व लिखे गए थे। इसमें प्रमुख पांच देवता वायु, वरुण, रुद्र, इन्द्र और पर्जन्य का विवरण दिया।

डॉ० साहब ने सर्वप्रथम 'देवता' शब्द की परिभाषा में बतलाया कि देवता वैदिक मंत्रों के वर्णनीय विषय को कहते हैं न कि किसी महान अकारवान् व्यक्ति विशेष को, जैसा कि सायण, महिधर आदि मध्यकालीन वेद भाष्यकार उन्हीं पर आधारित पाश्चात्य विद्वान् और पाश्चात्यों की दास्तां करने वाले आधुनिक भारतीय विद्वानों की सर्वथा गलत धारणा है।

इसके पश्चात् डॉ० साहब ने वायु, वरुण, रुद्र, इन्द्र और पर्जन्य इन पाच देवताओं की व्याख्या की कि पांच देवता जो वैदिक मंत्रों के वर्णनीय विषय हैं, अन्तरिक्ष में अपना कार्य व्यवहार और विश्वमण्डल में अपने कार्यों का प्रभाव फैलाने वाली भौतिक शक्तियां हैं जो वृष्टि आदि करवाने में कार्य करती हैं। यह कोई दैत्याकार वाले पुरुष व्यक्ति विशेष नहीं है, जैसा कि मिथ्या धारणा इसके सम्बन्ध में है।

इस प्रसंग में डॉ० साहब ने दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास के प्रो० डी०एन० झा के उन लेखों का सप्रमाण जमकर खण्डन किया जो उन्होंने 17-18 दिसम्बर 2001 के अंग्रेजी के हिन्दुस्तान टाइम्स में "Paradox of Indian Cow" और Mincing no words और शीर्षक से लिखे थे। डॉ० मीमांसक ने प्रो० झा के उन्हीं मन्त्रों के उद्धरणों को लिया जिसमें प्रो० झा ने लिखा था कि इन्द्र देवता को तीन सौ गायों और भैसों आदि पशुओं का मांस खाने वाला वेदों में कहा गया है। डॉ० मीमांसक के निरुक्त के हजारों वर्ष पुराने प्रमाण के आधार पर वैदिक मन्त्रों की व्याख्या के आधार पर स्पष्ट किया कि इन्द्र वह भौतिक शक्ति है जो अन्तरिक्ष में मेघ को फाड़कर पानी के रूप में बदल कर भूमि पर वृष्टि के रूप में गिराती है। 'वृष' का अर्थ मेघ है न कि राक्षस, वैदिक 'वृषभ' शब्द का अर्थ बादल है न कि बैल या भैस, 'महिष' शब्द का अर्थ महान् है जो मेघ का विशेषण है न कि भैसा और 'उक्षा' शब्द भी महान् आकार वाले बादल का विशेषण है न कि बैल अर्थ है। सौ और तीन सौ शब्द भी आकाश में इन भौतिक शक्तियों द्वारा मेघ रचना में लगने वाले समय के लिए हैं न कि पशुओं की संख्या के लिए। डॉ० मीमांसक जी ने डॉ० संध्या जैन के भी लेख का खण्ड न उन्हें वेदार्थ के ज्ञान से शून्य कहते हुए किया जिसमें उन्होंने वृषभ, महिष और उक्षा शब्दों की व्याख्या पशु विशेष देकर की थी। आकाश में होने वाली इन्हीं प्राकृत घटनाओं को वेद में इन्द्र देवता द्वारा विशालकाय मेघ को खाने, पकाने या मारने के रूप में वर्णित किया गया है, जिसका वास्तविक अर्थ बादलों को बरसाना है।

इस सम्बन्ध में डॉ० मीमांसक जी के हिन्दी और अंग्रेजी के दैनिक समाचार पत्रों में लेख शीघ्र ही पढ़ने को मिलेगें।

—अरुण प्रकाश शर्मा, मन्त्री

लुधियाना के आर्य बन्धुओं की सेवा में

दीपावली के पर्व पर कई बार बाजार से महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र नहीं मिलता इसलिए दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना से फ्रेम किया हुआ महर्षि दयानन्द का चित्र मात्र 60 रुपए देकर आप ले सकते हैं।

—ओमानन्द आर्य, प्रबन्धक

[illegible]

हर युग में अच्छे बुरे लोग आते रहे हैं। साधु संत भी आते हैं और घोर डाकू भी। ऋषि-महर्षि भी आते हैं और साधारण लोग भी। साधारण लोगों की ऐसी मान्यता है कि सतयुग सबसे अच्छा युग था और धीरे धीरे त्रेता, द्वापर और अब में कलियुग में धर्म का नाश हो रहा है। वास्तविकता कुछ और ही है। धर्म और अधर्म का युद्ध हर युग में होता रहा है। इसका कारण है कि मनुष्य के अपने संस्कार और उस समय की वर्तमान स्थिति।

वर्तमान समय कलयुग का है। इसी युग में आज से लगभग 125 वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म, जिसे लोग भूलते जा रहे थे, उसी को पुनः जागृत करने के लिए 'आर्य समाज' की स्थापना की। महर्षि का बस एक ही स्वप्न था कि मनुष्य अपने जीवन को उन्नत, सुखमय बनाये और अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करे।

—मदन खेजा, मुम्बई

आर्य समाज जालन्धर छावनी में वेद प्रचार

आर्य समाज जालन्धर छावनी में गत दिनों में वेद प्रचार का आयोजन किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री पं निरंजन देव जी इतिहास केसरी के उपदेश व श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली के भजन उत्साह भर होते रहे। के. एल.शर्मा स्कूल की छात्राओं व स्टाफ ने भी इसमें भाग लिया। स्त्री आर्य समाज की सभी बहनों ने भी इसमें भाग लिया। आर्य समाज के प्रधान श्री जनकराज जी महाजन ने सभी विद्वानों व आये हुए सज्जनों का धन्यवाद किया।

—जवाहर महाजन, मन्त्री

आठवां निःशुल्क ध्यानयोग व विद्यार्थी संस्कार शिविर सम्पन्न

उद्गीथ साधना स्थली डोहर (रायगढ़) के तत्त्वावधान में आचार्य आर्य नरेश जी की अध्यक्षता में दिनांक 9 से 15 अक्तूबर तक साधना शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का संयोजन व विद्यार्थियों का प्रशिक्षण श्री पं. रामफल अग्निहोत्री जी द्वारा हुआ।

इस शिविर में दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उत्तरांचल व हिमाचल के लगभग साठ लोगों ने भाग लिया। दयानन्द एंग्लो वैदिक (डी.ए.वी.) स्कूल बरमाणा के विद्यार्थियों व अध्यापिका ने भाग लिया।

शिविर में आतंकवाद हटाओ, विदेशी सामान हटाओ तथा वैदिक धर्म को जन-जन तक पहुंचाओ जैसा गोष्ठियों का आयोजन किया गया। अनेक लोगों ने एक दिन का व्रत करके यज्ञोपवीत धारण किए। बच्चों ने जूडो-कराटे, योगासन व वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त किया व प्रतिदिन संध्या, नमस्ते व सेवा करने का संकल्प लिया।

इस शिविर में श्री दिनेशाचार्य जी व बहन हेमा आर्या जी की विशेष सहायता रही।

चार जिलों की सम्पत्ति की देखरेख के लिए समिति गठित

जिला भटिण्डा तथा उसके आसपास की आर्य समाजों की सम्पत्ति की देखरेख के लिए तथा बन्द पड़ी आर्य समाजों को सक्रिय करने के लिए भटिण्डा, मानसा, मुक्तसर और फरीदकोट इन चारों जिलों की आर्य समाजों की सम्पत्ति की देखरेख के लिए निम्न उप समिति का गठन किया गया है।

1. श्री प्रेम भाटिया जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब। 2. श्री तरसेम आर्य महामन्त्री जिला आर्य सभा भटिण्डा 3. ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी गुरुकुल भटिण्डा। 4. श्री भजन लाल जी महता प्रबन्धक आर्य गर्ल्स स्कूल भटिण्डा। 5. श्री कृष्ण लाल [illegible] प्रधान आर्य समाज सिरकी बाजार भटिण्डा।

इस समिति के संयोजक श्री तरसेम आर्य होंगे। यह समिति चारों जिलों की आर्य समाजों की उन्नति के लिए कार्य करेगी।

—[illegible] प्रधान

[illegible]

"[illegible] के बच्चों का प्रथम कार्यक्रम जो [illegible] की छुट्टियों में सन् 1979 में किया गया [illegible] निम्न प्रकार रहा।

"[illegible] से चलकर लुधियाना होते हुए जम्मू पहुंचे। जम्मू आर्य समाज में ठहरे वहां आर्य समाज के अधिकारियों ने ठहरने का उचित प्रबन्ध किया। बच्चों को जम्मू की ऐतिहासिक जगहें दिखाई। अगले दिन जम्मू से प्रातःकाल चलकर कश्मीर बस से जा रहे थे मार्ग में सुरंगों से बस जा रही थी। सुरंगों और पहाड़ियों के नजारे देख बच्चे बहुत प्रसन्न हुए। कश्मीर पहुंच कर आर्य समाज में ठहरे। वहां के प्रबन्धक जी ने हमारे लिए दो बड़े हालों में ठहरने का प्रबन्ध किया। उनका प्रबन्ध प्रशंसनीय था। वहां प्रतिदिन हवन होता था। हम भी तकरीबन सभी हवन में शामिल होते थे। उसी समाज में ब्रह्मचारी नरेन्द्र देव जी वहां प्रचार के लिए आये थे। मेरा उनसे पुराना परिचय था क्योंकि इससे पूर्व वह मेरे घर पर ठहर चुके थे। यहां पर उन्होंने मुझे पुरानी याद दिलाई कि जब मैंने आपके घर यज्ञ की दक्षिणा मांगी थी वह नियमित गायत्री जाप के रूप में चल रही है, तब मैंने कहा तकरीबन चल रही है।

इसके बाद बच्चों को गुलमर्ग भी ले गये वहां पहाड़ियों के मनोहर सीन बहुत अच्छे लगे एक रात्रि विश्राम पहलगांव में किया। प्रातःकाल घोड़ों पर सवार होकर पहलगांव से लगभग 12 कि.मी. चन्दन वाड़ी जा रहे थे रास्ते में एक तरफ पहाड़ दूसरी तरफ दरिया तथा तंग रास्ते को देख कर दिल धड़कने लगा और हमने घोड़े वाले से कहा घोड़ा मक्कारी करके कहीं दरिया में न जा गिरादे इस पर घोड़े वाले ने कहा बाबू जी घोड़े को भी अपनी जान प्यारी है। यह सुन कर हमें धीरज बंधा और हम सकुशल चंदनवाड़ी पहुंच गए। वहा पहुंच कर जब बर्फ का पुल देखा तो बहुत प्रसन्नता के साथ आश्चर्यचकित रह गए।

श्रीनगर से वापिस आकर मुख्यमंत्री शेख अब्दुल्ला जी से बच्चों के साथ मिले और उनसे वार्तालाप के साथ फोटो भी खिंचवाए उन्होंने बच्चों से बहुत प्यार प्रदर्शित किया और अब्दुल्ला जी ने कश्मीर रेडियो पर श्री वजीर चन्द जी मंगला का नाम अलाऊस करवाया कि हमें कश्मीर यात्रा में किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ।

मेरे साथ श्रीमती कमला भाटिया प्रिंसीपल, श्री कृष्ण जी मैनेजर, श्री रोशन लाल जी मंत्री आर्य समाज भी थे। हम सुनते थे कि कश्मीर संसार का स्वर्ग कहलाता है देखने से उसको वास्तविक स्वर्ग महसूस किया। यह कार्यक्रम सबके सहयोग से सफल रहा।

सुख प्राप्ति का साधन है 'शिव-संकल्प'

यदि हम जीवन में सुखी होना चाहते हैं और आनंद पाना चाहते हैं तो हमें अपने मन को शिव संकल्पमय बनाना होगा। वेद में अनेक बार यह कहा गया है कि हमारा मन शिव संकल्पों अर्थात् कल्याणकारी विचारों से युक्त हो। मन में शुभ विचारों को लाने के लिए यह आवश्यक है कि हम बुरे विचारों को मन में न आने दें। आर्य समाज, बी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली में प्रवचन करते हुए ये विचार वैदिक प्रवक्ता डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया ने प्रबुद्ध श्रोताओं के सामने रखे। उन्होंने कहा कि यो मन बड़ा चंचल और वेगवान है। वह जागते समय ही नहीं, सोते समय भी कहीं का कहीं चला जाता है, किन्तु उसे अभ्यास से ही वश में किया जा सकता है। मन में तो संकल्प-विकल्पात्मक होता है, किन्तु हमें विकल्प को छाड कर संकल्पशील बनना है। सकल्पशीलता में दृढ़ता का भी समावेश है अर्थात् हमें अच्छे कामो में दृढ़ता के साथ लगना है–दुलमुल होकर हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। शिव और अशिव की पहचान विवेक बुद्धि से सम्भव है। परोपकार के सभी कार्यो का समावेश शिव संकल्प में हो जाता है–परोपकार से बड़ा और कोई धर्म नहीं है और परपीड़ा से बड़ा कोई पाप नहीं है। धर्म के सभी लक्षणों का समावेश भी शिव संकल्प में हो जाता है तथा अन्य सभी श्रेष्ठ गुण भी इसी में समाविष्ट हैं। –जगदीश चन्द्र, मन्त्री

मोगा में वेद प्रचार

गत दिनों एम.डी.ए.एस सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल मोगा में आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् पंडित विजय कुमार जी शास्त्री जी ने बच्चो को शिक्षाप्रद भाषण दिया। प्रख्यात भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी ने देश प्रेम के भजन बच्चों को सुनाए। श्री दिवाकर भारती जी ने मच संचालन के साथ-साथ बच्चों को शिक्षाप्रद बातें बताईं। इस प्रोग्राम में प्रबन्धक कमेटी के प्रधान योगेश गोयल जी, सदस्य श्री जगदीश अग्रवाल, श्री जतिन्द्र खुल्लर, प्रबन्धक श्री सत्यदेव सूद और आर्य समाज के सदस्य श्री पुरुषोत्तम गोयल जी भी उपस्थित थे। अन्त में स्कूल के प्रिंसिपल सुभाष धीर ने आए हुए विद्वानों और आए हुए महानुभावों का धन्यवाद किया।

गृह प्रवेश-पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज मोगा के कोषाध्यक्ष श्री बलराज कुमार सचदेवा के बेटे श्री दिनेश कुमार सचदेवा के गृह प्रवेश के अवसर पर राज मार्ग कपूरथला रोड जालन्धर में पारिवारिक सत्संग किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कार्यालयाध्यक्ष व आर्य मर्यादा साप्ताहिक के सम्पादक श्री धर्मदेव जी आर्य ने यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा उनका प्रभावशाली उपदेश हुआ।

छात्रवृत्तियां दी गई

स्वामी ओमानन्द सरस्वती गुरुकुल छात्रवृत्ति टस्ट की बैठक गुरुवार 3 अक्तूबर 2002 को साय 6 बजे डा सोमदेव शास्त्री की अध्यक्षता मे आर्य समाज मुम्बई गिरगाव मे सम्पन्न हुई। उसमें सर्वसम्मति से निम्न गुरुकुलो को छात्रवृत्ति देने का निर्णय हुआ। छात्रवृत्ति प्रति छात्र 1200 00 वार्षिक की दर से दी गई।

1 गुरुकुल आश्रम आम सेना (उडीसा) 15 छात्र–रु० 18000 00
2 कन्या गुरुकुल पाचगाव (हरियाणा) 5 छात्राए–रु० 6000 00
3 कन्या गुरुकुल दाधिया (राज) 10 छात्र रु 12000 00
4 कन्या गुरुकुल रगारेड्डी (आ प्र) 5 छात्राए रु 6000 00
5 कन्या गुरुकुल नजीबाबाद (उ प्र) 10 छात्राए रु 12000 00
6 कन्या गुरुकुल शिवगज (राज) 5 छात्राए रु 6000 00
7 कन्या गुरुकुल नरेला (राज) 10 छात्राए रु 12000.00
8 आर्ष गुरुकुल यडसी (महा) 10 छात्र रु 12000 00
9 रामलाल कपूर ट्रस्ट (हरि) 5 छात्र रु 6000 00

जिन गुरुकुलो को छात्रवृत्ति सहायता अगले वर्ष चाहिए वे अपने प्रार्थना पत्र वार्षिक विवरण एव निरीक्षित लेखा जोखा भेजने की कृपा करे। सिर्फ प्राप्त प्रार्थना पत्रो पर ही विचार किया जाएगा।

प्राथना पत्र स्वामी ओमानन्द सरस्वती गुरुकुल स्कालरशिप ट्रस्ट द्वारा आर्य समाज मुम्बई गिरगाव मुम्बई 400004 के पते पर भेजें।

—देवरत्नआर्य, मन्त्री

अमृतसर में चरित्र निर्माण दिवस

आर्य समाज नवाकोट अमृतसर मे देश भक्ति व चरित्र निर्माण दिवस मनाया गया जिसमें दयानन्द आर्य माडल स्कूल के बच्चों के अलावा आर्य स्त्री सभा की मन्त्राणी श्रीमती निर्मल जी ने भजनो से लोगों को आनन्दित किया। महामन्त्री श्री लक्ष्मण जी तिवारी ने प्रभु भक्ति के भजनों से खूब समय बाधा। तत्पश्चात् प० बनारसी दास आर्य जी ने अपने भाषण मे कहा कि स्वतन्त्रता की पहली लडाई सन् 1857 में लडी गई जिसमें स्वामी ओमानन्द जी स्वामी पूर्णानन्द जी स्वामी विरजानन्द जी तथा स्वामी दयानन्द जी महाराज गाव गाव में जाकर लोगों को देश की आजादी के लिए तैयार करते रहे तथा उस समय के राजाओ को अग्रेजों के विरुद्ध एक जुट होकर लडने के लिए तेयार करते रहे लेकिन आपसी फूट के कारण यह युद्ध जीता न जा सका। दूसरे स्वतन्त्रता सग्राम मे आर्य समाज ने कई बलिदानी पैदा किए जैसे स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपतराय भगत सिह तथा राम प्रसाद बिस्मिल आदि जिन्होने अपना सर्वस्व देश के लिए बलिदान कर दिया। आर्य समाज ही एक ऐसी सस्था है जिसमें देश भक्ति व चरित्र निर्माण की शिक्षा दी जाती है।

बच्चा का अपने अध्यापकों व माता पिता का अन्दर सत्कार करना चाहिए तथा उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। आज केबल टी वी के माध्यम से बहुत सा गद बच्चा के दिल दिमाग मे भरा जा रहा है। अपने घरो मे केबल टा वी बन्द करवा कर अपने बच्चो के भविष्य को बचाइए और उन्हें केबल टी वा की बजाए खेलों की आर प्ररित करे।

कार्यक्रम को सफल बनाने मे सर्व श्री चरणजीत लाल तुकराल विनोद मदान किशन लाल भगत हरबन्स लाल धनी राम जगराम वीरदास दयानन्द आर्य माडल स्कूल क बच्चा व स्टाफ का पूरा पूरा सहयोग रहा।

—प्रकाश चन्द्र, प्रधान

आर्य समाज खरड़ का शताब्दी समारोह

आर्य समाज खरड (रोपड) को स्थापित हुए एक सौ वर्ष हो गए हे। इस अवसर पर 7 से 17 नवम्बर 2002 तक शताब्दी समारोह मनाया जा रहा हे जिसमे कई उच्चकोटि के धार्मिक व राजनैतिक नेता पधार रहे हैं। 17 नवम्बर को विशेष समारोह होगा। —विश्वबन्धु, प्रधान

[illegible]

आर्य समाज मॉडल टाउन फेस-6 की 25वीं वर्षगांठ [illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में 27 10-2002 को मनाई जा रही है। कार्यक्रम प्रातः 8 बजे यज्ञ से आरम्भ होगा। श्री सुदर्शन शर्मा वरिष्ट उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ध्वजारोहण करेंगे। शिलान्यास डॉ० केवल कृष्ण स्पीकर विधान सभा पंजाब करेंगे वाचनालय उद्घाटन स जगमोहन सिंह जी कंग पशु पालन एव डेयरी विकास मन्त्री पंजाब करेंगे। प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक आर्य महासम्मेलन रजत जयन्ती समारोह होगा।

समारोह में श्री सरदारी लाल जी आर्य उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज कार्यालयाध्यक्ष श्री धर्मदेव आर्य श्री प विजय कुमार जी शास्त्री श्री जगत वर्मा जी भजनोपदेशक, श्री प मनोहर लाल जी आर्य श्री कमल किशोर जी आर्य श्री राम कुमार जी आर्य जालन्धर डॉ० वेदव्रत जी शर्मा पंचकूला श्री हरनाम दास जौहर एडवोकेट, श्री वी की बैहल चण्डीगढ श्री पवन बांसल सदस्य लोक सभा श्री सदानन्द जी परिद्रष्टा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, श्री गोपाल कृष्ण चावला एडवोकेट चण्डीगढ श्रीमती अनुपसरन, श्रीमती गीता चौधरी आदि महानुभाव पधार रहें हैं। इस समारोह में पहुच कर इसे सफल बनाए।

—[illegible], प्रधान

आर्य समाज (आर्य समाज चौक) बठिण्डा की गतिविधियां

आर्य समाज बठिण्डा वेद प्रचार में सदैव से अग्रसर रहा है इसी शृंखला में आर्य समाज बठिण्डा द्वारा दैनिक हवन यज्ञ के अतिरिक्त दिनांक 3-10 2002 से 10 10 2002 तक आर्य परिवारों में हवन यज्ञ किए गए। यह हवन यज्ञ श्री सुभाष जी गोयल श्री घनश्याम जी, श्रीमती लक्ष्मी देवी, प्रो आई के सुखेजा श्री एम पी अरोडा जी के परिवारों में प सुख कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुए।

दिनाक 10 10 2002 को हवन यज्ञ आर्य समाज के उपमंत्री इंजीनियर एम पी अरोडा जी के सुपुत्र आर्य नवभारती के नये स्थान पर कारोबार प्रारम्भ करने हेतु हवन यज्ञ करवाया जिसमें श्री एम पी अरोडा सपत्नीक यजमान बने एवम् उनके दोनों बेटे यजमान बने।

इस शुभ अवसर पर आर्य समाज के महामन्त्री प्रेम भाटिया जी सपत्नीक, आर्य गर्ल्ज सी सै स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती शान्ति जिन्दल अपनी अध्यापिकाओं सहित सम्मिलित हुई।

आर्यों का सब काम होता है यज्ञ से—भठिण्डा

श्री राजेन्द्र कुमार जो कर्मठ आर्य हैं ने सकल्प लिया है व्यापारिक सस्थानों का वेद मत्रों द्वारा शुभ मुहूर्त करवाने का। बडे प्रेम से भठिण्डा में राजेन्द्र जी से दुकान के मुहूर्त के लिए लोग सम्पर्क करते हैं।

श्री मूलचन्द्र, सुरेश कुमार हरीचन्द्र जी की दूसरी नई दुकान सिरकी बाजार के मुहूर्त पर श्री राजेन्द्र कुमार शास्त्री ने वेद मन्त्रों द्वारा हवन यज्ञ करवाया सारे बाजार ने इसकी सराहना की। आर्य समाज सिरकी बाजार द्वारा यज्ञ के सामान की सेवा की गई। श्री मूलचन्द सुरेश कुमार की दुकान से सास प्रशाद फ्री आता है। एक सिलाई मशीन आदर्श सिलाई सेंटर को दान दी है। 10 तारीख दिन सोमवार को सारे सिरकी बाजार ने यज्ञ में आहुति डाली। मूलचन्द जी का सारा परिवार वहा मौजूद था। कल्प जी बलदेव आर्य उर्मिला जी कृष्ण लाल जटाना सिरकी बाजार समाज के सारे सदस्य मौजूद थे। भरपूर दान आर्य समाज का मिला।

—कृष्ण लाल जटाना

गुरुकुल भठिण्डा में आर्य महासम्मेलन

5 अक्तूबर 2002 को जिला आर्य सभा भठिण्डा के अधिकारियो की एक बैठक श्री पी डी गोयल की प्रधानता में सम्पन्न हुइ, जिसमें विशेष रूप से सभा के उप प्रधान श्री आज्ञानन्द जी आर्य विशेष आमन्त्रित रूप मे सम्मिलित हुए। इस बैठक मे सर्व सम्मति से निश्चय किया गया कि 30 नवम्बर व एक दिसम्बर 2002 शनिवार रविवार को गुरुकुल भठिण्डा की पुण्य भूमि के विशाल प्रागण में आर्य महासम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के तत्वावधान में किया जाए।

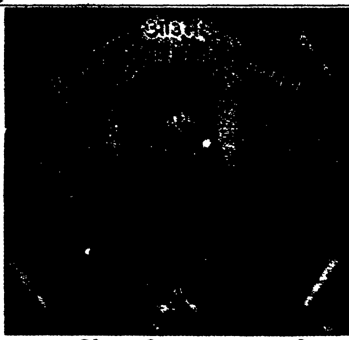
प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इसकी स्वीकृति प्रदान कर दी है। वि० को आमन्त्रित किया जा रहा है और इसकी तैयारियाँ आरम्भ कर दी गई हैं मेरी आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह इन तिथियों में अपने कोई कार्यक्रम न रखें और 30 नवम्बर को गुरुकुल भठिण्डा में अवश्य पहुँचें। —सरसेम आर्य, महामन्त्री

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष सम्पादक प्रकाशक मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन चाक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष - 292926

ऋग्वेद कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम् यजुर्वेद
साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालन्धर
दूरभाष 292926
सामवेद अथर्ववेद
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र
वर्ष–56 अक 28 सृष्टि सवत 1960853103, 3 नवम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

आस्तिकता व अहिंसा के प्रेरक महर्षि दयानन्द

□ [illegible] (उ.प्र.)



महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

नवसस्येष्टि नामक यज्ञो व सुगन्धित दीपमालाओ द्वारा आमोद प्रमोद की वर्षा करते हुए दीपावली का उत्सव प्राचीन काल से कार्तिक की अमावस्या के दिन मनाया जाता ह। इस महत्वपूर्ण पर्व का महषि दयानन्द के निर्वाण की असाधारण घटना ने पूर्वापेक्षा अधिक गौरवान्वित किया है। महापुरुषों का देहावसान साधारण व्यक्तियो की भाति शोकोत्पादक न होकर प्रेरणादायक हाता है। वे परोपकार के लिए अपने शरीर के उत्सर्ग द्वारा उत्तम आदर्शों की स्थापना करके सुखो का सयाजन करते हैं। कृतज्ञ जन उनके चरित्र क गुणानुवाद से प्रेरणा लेकर आनन्दानुभव करते हैं। तनिक इस अभूतपूव ऋषि निर्वाण पर दृष्टिपात कीजिए–महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान की गाथा आस्तिकता व अहिसा का पावन सन्देश है। स्वामी जी महाराज जोधपुर नरेश महाराजा यशवन्त सिह क निमन्त्रण पर जोधपुर पदार्पण करते हैं। वहा नीर क्षीर का विवेक कराने वाले उनके व्याख्यानों म सदा की भाति न्याय होता था नीति होती थी युक्तिया थी प्रमाणा से सुसज्जित सर्वोपरि मत्य का प्रकाश हाता था। उनके उपदेश वारिवर्षण मे स्नान करके सार भ्रम दूर होकर श्रद्धालुआ के अन्त करण निर्मल हो जाते थे।

वेदामृत का आनन्द लेने के लिए जाधपुराधीश महाराजा यशवन्त सिह भा स्वामी जी के दशनार्थ तीन बार उनके आसन पर आये तथा तीन बार ही श्रीचरणा को अपन आवास पर निमन्त्रित किया। एक दिवस जब वे जो[illegible]धीश के निवास पर दर्शन देने [illegible] तब उन्होने नन्हीं जान नामक वाराङ्गना को पालकी द्वारा वहा से विदा होते देख लिया। वाराङ्गना तो वहा से चली गई परन्तु इस दृश्य को दखकर राष्ट्र हितैषी देव दयानन्द का हृदय द्रवित हा उठा। वे महाराजा को इस पापपङ्क स मुक्त करान के लिए देशहितेषिता की भावना से कहने लगे–हे राजन्! राजा लोग तो सिह समान समझ जाते हैं उनका कुक्करी सदृश वेश्या मे आसक्त हो जाना सर्वथा अनुचित है। इस दुर्व्यसन के कारण धर्म कर्म भ्रष्ट होकर पुरुष का अध पतन स्वत हा जाता है। आप पर देश का भार है अत इस दुर्व्यसन का तिलाञ्जलि देनी चाहिए।

वेश्या व्यसन के विरुद्ध महाराजा को किए उपदेश से खिन्न मना नन्हीं जान विकट वैर की विषम ज्वाला से अहर्निश सन्तप्त रहने लगी। वह स्वामी जी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचन मे लग गई। उसके साथ वे सब भी क्रियात्मक सहानुभूति म उद्यत हो गए जो अपने अपने स्वार्थ वश स्वामी जी के सत्य वचना का स्पर्श न कर पाने के कारण मतभेद रखने लगे थे। स्वामी दयानन्द क उपदेशामृत से जहा सत्यप्रिय शुद्ध भाव भावित जन अमर पथ के पथिक बन कर शान्ति का अनुभव कर रहे थ वहीं सस्कारविहीन दुराग्रही व्यक्ति द्वेषाग्नि मे जल रहे थे। उस देवता के मानसमहत्व को विषयानन्द के रसिक मर्त्यलाक के साधारण जीव क्यो समझते ? परन्तु जब तक अपने ही भेदी न हा तब तक कोई कुछ भी अनिष्ट नही कर सकता। अपन ही दीपक से भवन भस्म होते हैं। ऐसे ही नराधम ऋषि के समीप भी रहते थ। आश्विन कृष्ण चतुर्दशी सम्वत् 1940 को ऋषिवर दुग्धपान करके सा गये। नहीं नहीं आज दुग्धपान कहा किया था वस्तुत आज ता षड्यन्त्रकारिया ने पतित जगन्नाथ के द्वारा अनीति अन्याय और नीचता से दुग्ध के साथ हलाहल विषम विष का प्रयोग कराकर सबके लिए दु खद घृणित अनर्थ करा दिया। आ !!! आश्चर्य है कि विश्वासपात्र जगन्नाथ हा ब्रह्मघाती बन गया।

ऋषिवर न अपराधी के अपराध को जान लिया, वह अपने अधमतम अपराध को स्वीकार करते हुए प्रायश्चित का ज्वाला मे जलने लगा। अपराधी का प्रायश्चित करते देखकर कर्मगति व फल भाग के विश्वासी देव दयानन्द अपने प्राणघातक की प्राण रक्षा का उपाय साचन लगे और बोल हे जगन्नाथ ! मेरे इस समय शरीर छाडने से कार्य अपूर्ण रह गया है तुम नही जानत कि इससे लोकहित को कितनी बाधा पहुची है। इतना कहकर क्षमाशील दयालु दयानन्द अपने घातक को पाथय दकर प्राणरक्षा के उपाय मे प्रवृत्त करते हुए बोले–जगन्नाथ! ला ये कुछ रुपये हैं इन्हे लेकर इस राज्य की सीमा से पृथक नेपाल जाकर अपने प्राणो का रक्षा करो किसी को भी अपने इस जघन्य कर्म का पता न होने देना। इस प्रकार इस अहिसाव्रती ने अपने घातक को भी जीवन देकर ससार के इतिहास मे अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

भयङ्कर विष के प्रभाव से स्वामी जी महाराज का स्वास्थ्य उत्तरोत्तर बिगडने लगा। परन्तु दु ख व आश्चर्य तो डा० अलीमर्दान खा पर होता ह जिनकी चिकित्सा निरन्तर विष का कार्य कर रही थी। रोगाग्नि पर ओषध तैल बनकर क्यो प्रकट होती थी? इस रहस्य को परमपिता परमात्मा ही भली भाति जानते हैं। स्वामी जी जोधपुर से आबू पहुचे। वहा भी चिकित्सा अनुकूल न देख

(शेष पृष्ठ 6 पर)

व्याकरण मार्तण्ड : दण्डी जी एवं उनकी रचनाएं

❑ ले० श्री डॉ० अमरस्वामी आर्य, वरिष्ठ [illegible] आर्य समाज [illegible]

जीवनी के अनुसार—तरुण तपस्वी प्रज्ञाचक्षु बृजलाल ने परम वैरागी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से सन् 1797 मे सन्यास की दीक्षा ली और स्वामी विरजानन्द सरस्वती नाम पाया, जो उनके सर्वाधिक विख्यात शिष्य हुए।

ज्ञान-पिपासु दण्डी जी जानते थे कि शास्त्र ज्ञान के लिए व्याकरण पर अधिकार अनिवार्य है। अत: उन्होंने अपने विद्यागुरु स्वामी पूर्णानन्द से सिद्धान्त कौमुदी आदि व्याकरण की शिक्षा पाई। गुरु जी ने मेधावी दण्डी जी को कौमुदी पढा कर काशी मे महाभाष्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया। गुरु-आज्ञा शिरोधार्य कर के अगले दिन ही काशी के लिए चल पड़े एवं सन् 1900 मे इक्कीस वर्ष की आयु मे विद्या-नगरी काशी मे विद्या लाभ हेतु पहुंचे। कौमुदी तो उन्हें काशी आगमन से पूर्व ही कण्ठस्थ थी। यात्रा में भी वे वार्तालाप संस्कृत मे ही करते थे। संस्कृत उन्हें सहज प्राप्त थी। काशी मे उन्हें महाभाष्य का हस्तलेख प्राप्त हुआ, एवं अध्ययन प्रारम्भ हुआ एवं अध्ययनकाल मे ही उन्होंने व्याकरण-विद्या को धारण कर लिया।

उनकी विद्वत्ता, व्याकरण ज्ञान और शास्त्र विषयक अपूर्व सूझ की खूब प्रसिद्धि हुई। उस समय उन जैसा अष्टाध्यायी और महाभाष्य का विद्वान् भूतल पर नही था एव न उन जैसा व्याकरण का पण्डित भरत भू पर अन्य कोई था।

व्याकरण क्षेत्र मे मानव मस्तिष्क का अपूर्व आविष्कार महर्षि-पाणिनि की अष्टाध्यायी है जो दण्डी जी के अनुसार श्रेष्ठतम व्याकरण है। उनकी मान्यता थी कि अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य ही व्याकरण के मुख्य-ग्रंथ है। महाभाष्य मे अधिकार पा के ब्राह्मण जगद्गुरु होते है। वे मानते थे कि आर्ष ग्रन्थों का कोई विकल्प नही। इसलिए उन्हे अष्टाध्यायी के प्रचार की धुन थी। वे ऐसे ग्रथो के इतने श्रद्धालु थे कि उन्होंने इनमे प्रक्षेप करने वालों तथा उन्हें पढने-पढाने वालों को '**कत्रि**' अर्थात् कुत्सित स्त्री की संज्ञा दे डाली। वे मानते थे कि व्याकरण संस्कृत-भाषा की सडक है। संस्कृत-भाषा का संस्कार व्याकरण से है। शब्द-संस्कार और अर्थ-संस्कार संस्कृत-भाषा का व्याकरण से होता है। व्याकरण देव-भाषा की रक्षा हेतु उदय होता है। इसलिए व्याकरण पुस्तक सर्वभूमि की एक है। संस्कृत में प्रमाण व्याकरण होता है। जब व्याकरण-सूर्य उदय नहीं होता, आर्ष-अनार्ष ग्रंथ एक जैसे प्रतीत होते हैं। वैदिक-ज्ञान एवं व्याकरण-ज्ञान के बिना, वेद-ज्ञान को धारण करना दुष्कर है। अत: व्याकरण हीन स्मृति वैदिक-शब्दों को धारण नही कर पाती। किन्तु लोक-व्यवहार के लिए देश-भाषा सीखना भी आवश्यक है।

अतएव वे पण्डितों से व्याकरण विषयक विचार-विमर्श करते रहते थे। एवं अपने प्रश्नों से वे उन्हें निरुत्तर कर देते थे। अत: धरतीतल का उपकार करने वाले महाशय दण्डी जी का मानना था कि तर्क, श्रवण तथा मनन से बढ कर शब्द-शास्त्र अर्थात् व्याकरण है। इसलिए वैयाकरण संस्कृत-भाषा में जगद्गुरु माना गया है।

इस प्रकार दण्डी जी ने व्याकरण, संस्कृत और वेदों की अनुपम सेवा की। "यूं तो केवल दयानन्द को शिष्य बनाने से ही उनकी कीर्ति अमर है, तो भी जब तक अष्टाध्यायी और महाभाष्य रहेंगे-विरजानन्द का 'विरज' नाम सूर्य की भांति चमकता रहेगा।"

रचनाएं—व्याकरण ज्ञान को सर्व सुलभ और सुगम बनाने के लिए दण्डी जी ने उत्तम कोटि का व्याकरण-साहित्य भी रचा। अलवर रहते हुए उन्होंने अलवर नरेश को संस्कृत पढाने और अल्प समय में व्याकरण के अधिक लाभ हेतु 'शब्द बोध' की रचना की, जो उनकी प्रथम रचना थी।

वाक्य-मीमांसा की रचना उन्होंने आर्ष-युग प्रवृत्त होने पर सन् 1854 मे नागेश भट्ट के शब्देन्दु शेखर का खण्डन करने हेतु लिखी। पाणिनीय सूत्रार्थ प्रकाश का प्रारम्भिक भाग भी उन्ही द्वारा रचित है। अत: शब्द बोध से लेकर 'सार्वभौम सभा विवरण पत्र' तक की लेखन-यात्रा उनके चिन्तन के क्रमिक विकास की साक्षी है। वस्तुत: दण्डी जी के [illegible] आयु तक के सारस्वत अनुभव, आध्यात्मिक चिन्तन और मनन का सार यह सार्वभौम-सभा विवरण पत्र है।

आदर्श-अध्यापक : दण्डी जी

श्रेष्ठ अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है। युग-पुरुष दण्डी जी भी ऐसे ही परम अध्यापक थे जिन्होंने इतिहास को बदलने वाले दयानन्द जैसे रत्न राष्ट्र को प्रदान किए।

अपनी अनवरत यात्राओं को विराम देने के लिए अन्तत: दण्डी जी ने मथुरा आकर एक पाठशाला खोली। यह पाठशाला आय के लिए नहीं थी। अपितु भारतीय-परम्परा के अनुसार यहां विद्या-दान पूर्णतया नि:शुल्क था। वे निर्धन विद्यार्थियों के लिए पुस्तकों की व्यवस्था भी करवा देते थे। वे स्वयं स्वावलम्बी थे और सर्व-सहायक प्रभु के सिवाय किसी पर भी आश्रित रहना उनके स्वभाव में नहीं था। अत: स्वाभिमानी दण्डी जी न स्वयं भिक्षार्थ जाते, न छात्रों को ही भिक्षुक मानते थे।

दण्डी जी अध्यापक के रूप मे अद्वितीय थे। उनकी अध्यापन शैली चिन्तन एवं दर्शन मौलिक थे। व्याकरण के अद्भुत-शिक्षक थे। यह उनका मनभावन विषय था। उनके लिए पठन-पाठन सदा परम्पर जुडे रहे। हरिद्वार काशी और गया आदि विद्या केन्द्रों मे रहने के कारण उनका उच्चारण अति शुद्ध था। उनकी उच्चारण-शुद्धता एवं अभिव्यंजना शैली के कारण सुना हुआ पाठ सहज ही समझ मे आ जाता था। अध्ययन किया गया विषय अध्यापक तथा मनन से अधिक स्पष्ट हो जाता तथा चित्त में दृढ भी। अत: किसी-किसी योग्य शिष्य को वे अष्टाध्यायी अनुलोम और प्रतिलोम दोनों क्रमों से भी पढ़ा देते थे।

उनका मानना था कि जो पारदृष्टा है, वही गुरु हो सकता है। इसलिए उनकी अध्यापन-विधि काशीस्थ पण्डितों की शैली से कुछ भिन्न थी। जीवनीकार के अनुसार—"एक अल्पव्यस्क नेत्रहीन सन्यासी पढ़ाता है और वह भी काशी में इससे सभी विस्मित थे।"

शिष्यों से पितृवत्त स्नेह करने वाले दण्डी जी अनुशासन के विषय में बहुत कठोर थे। किन्तु उनका क्रोध क्षणिक था। अत: जहां वे कठोर अनुशासक थे वहीं वे अपने शिष्यों से स्नेह भी बहुत करते थे और उन्हें अपने समान आसनों पर बैठाते थे।

वे शिष्यों के आचरण पर भी विशेष ध्यान देते थे। उनमें लौकिक वार्तालाप पूर्णतया निषिद्ध था। क्योंकि वार्तालाप में वे शिष्ट किन्तु सत्यवादी थे। मथुरा में यह प्रसिद्ध था कि दण्डी जी एवं दयानन्द ने कभी झूठ नहीं बोला। अध्यापन के साथ-साथ वे शास्त्र-चिन्तन एवं ईश-भजन में भी लीन रहते थे। इस प्रकार उनका समय ध्यान तथा शास्त्र-मन्थन में व्यतीत होता था।

उनका प्रभाव-क्षेत्र पर्याप्त विस्तृत था।अत: मथुरा में लगभग सभी सम्प्रदायो के अनुयायी उन्हें गुरु धारण कर गौरवान्वित हुए और कितने ही प्राणियों ने उनके कारण आत्मोन्नति-लाभ प्राप्त किया।

रूढ़ियों का परम-शत्रु—संस्कृत पाठशालाओं में तब प्रतिपदा अर्थात् पक्ष की प्रथम तिथि को नहीं पढाते थे। किन्तु दण्डी जी उस दिन भी पढ़ाया करते थे। एक दिन प्रतिपदा को पढाते देख एक पण्डित बोले कि दण्डी जी आप प्रतिपदा को क्यो पढ़ाते हो ? इस दिन की पढ़ाई विद्या तो नष्ट हो जाती है। क्योंकि वाल्मीकि रामायण (15-19, 38) मे हनुमान जी का वचन है कि माता सीता ऐसी शिथिल दिखाई देती थी जैसे प्रतिपदा के दिन पढ़ाई हुई विद्या। दण्डी जी बोले कि ऋषि वाल्मीकि ऐसी अनर्गल बात नहीं लिख सकते। तभी रामायण मंगवाई गई। उन श्लोकों का अर्थ है कि-उपवास आदि के कारण निर्बल एवं बार-बार श्वास छोड़ती सीता शुक्ल-पक्ष की प्रथमा के क्षीण चन्द्रमा के समान दिखाई दी। जिससे हनुमान जी की बुद्धि सन्देह युक्त हो गई जैसे वेदों से हीन विद्या शिथिल मानी जाती है। इससे दण्डी जी प्रसन्न हुए कि वह ठीक है कि रामायण में ऐसा निषेध नहीं है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय.....

दीपावली का पर्व

हमारे जीवन में पर्वो का बहुत बड़ा महत्व होता है। हम पर्वो को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटते हैं। कुछ पर्व हमें समाज के साथ जोडने वाले होते हैं उन्हें सामाजिक पर्व कहते हैं। कुछ पर्व हमें राष्ट्र के साथ जोडने वाले होते हैं उन्हें हम राष्ट्रीय पर्व कहते हैं। कुछ पर्व हमें धर्म के साथ जोड़ने वाले हैं उन्हें हम धार्मिक पर्व कहते हैं। हमारे देश में छः ऋृतुएं हैं इसलिए हमारे देश में ऋृतु का बहुत बड़ा महत्व है। हमारे देश में कुछ पर्व ऋृतु के साथ भी हमें जोड़ने वाले हैं। उन्हें हम ऋृतु प्रधान पर्व कहते हैं।

दीपावली का पर्व एक सामाजिक पर्व भी है, धार्मिक पर्व भी है और हमें ऋृतु के साथ जोड़ने वाला पर्व भी है। यह पर्व कब से हमारे देश में मनाया जाना आरम्भ हुआ इसका अनुमान लगाना कठिन कार्य है। इस पर्व का सम्बन्ध कृषि से भी है और हमारा देश कृषि प्रधान देश है, इसलिए भी इस पर्व का हमारे देश में सबसे अधिक महत्व है। कार्तिकवदी अमावस्या को यह पर्व मनाया जाता है। कार्तिक का महीना जब आता है तो जलवायु की दृष्टि से इस महीने में न अधिक गर्मी होती है न अधिक सर्दी होती है। गर्मी के अर्थात् वर्षा ऋृतु के अन्त और सर्दी के आगमन का यह महीना है। इसके साथ ही इस पर्व पर हमारे देश में धान, मकई, गन्ना, उड़द (माह) आदि कई दालें व तिल-तोलिया-तिलहन आदि की फसलें इस महीने के अन्दर पक कर तैयार होती हैं।

कार्तिक की अमावस्या की रात्रि अन्धकार से परिपूर्ण होती है। इसलिए इस पर्व को मनाते हुए हम चारो ओर प्रकाश फैलाना चाहते हैं, हमारे देश के लोगों को अन्धकार स्वीकार नहीं है, सभी प्रकाश चाहते हैं इस लिए हम इस पर्व पर दीपों की मालाएं बना देते हैं, कतारें बना देते हैं। चारो ओर प्रकाश फैला देते हैं। हम सफाई पसन्द हैं। कूड़ा-कर्कट हमें पसन्द नहीं है। इसलिए इस पर्व से पूर्व हम अपने घरों आदि की सफाई करके, गली मोहल्लों की सफाई करके पर्यावरण को शुद्ध बनाना चाहते हैं और जलवायु को शुद्ध बनाते हैं। हमें कड़वाहट पसन्द नहीं है इसलिए हम इस पर्व को मनाते.हुए चारों तरफ मिठास पहुंचाते हैं। मिठाई बांटते हैं खुद भी खाते हैं औरों को भी खिलाते हैं।

दीपावली का पर्व खुशियों भरा पर्व है। सभी में हर्षोल्लास और उत्साह भरने वाला है। मादकता लाने वाला है, एकता पैदा करने वाला है क्योंकि यह पर्व सारे भारत देश में मनाया जाता है। कुछ पर्व प्रान्तीय स्तर पर मनाए जाते हैं परन्तु दीपावली का पर्व राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है। यहां तक कि विदेशों में भी जहां-जहां भारत के लोग बैठे हैं वहा भी यह पर्व बड़े उत्साह से मनाया जाता है। लोग बधाई के सन्देश अपने रिश्तेदारों व मित्रों को देश-विदेश में भेजते हैं और विदेशों से भारतीय लोग अपने मित्रों, रिश्तेदारों को भारत में भेजते हैं। इस पर्व पर एक मित्रता का वातावरण बन जाता है। मन खुशियों से झूम उठता है।

इस पर्व के साथ एक घटना जोड़ी जाती है कि इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम राम 14 वर्ष का वनवास पूरा करके लंका पर विजय प्राप्त करके, दुष्ट रावण का संहार करके अयोध्या में आए थे और उनके वन से वापिस आने की प्रसन्नता में अयोध्या वासियों ने दीपमालाएं की थीं, खुशियां मनाई थीं, मिठाईयां बांटी थी परन्तु यह पर्व केवल अयोध्या में ही नहीं मनाया जाता सारे भारत देश में मनाया जाता है और रामायण काल से भी पहले से मनाया जा रहा है। वैसे भी यह तिथि राम के वन से वापिस आने के समय के साथ मेल नहीं खाती। वर्षा ऋृतु बीत जाने पर सुग्रीव द्वारा सीता की खोज आरम्भ हुई थी और उसे खोजने में कई महीने लग गए थे जबकि यह पर्व वर्षा ऋृतु की समाप्ति पर तुरन्त आ जाता है। कुछ भी हो यदि यह भी मान लिया जाए कि इस पर्व का सम्बन्ध मर्यादा पुरुषोत्तम राम से भी है तो इससे पर्व का महत्व और बढ़ जाता है।

सभी आर्य बन्धुओं को पता है कि इसी पर्व के अवसर पर आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सन् 1883 में अजमेर में अपना शरीर त्यागा था। वह ईश्वर भक्त थे। ईश्वर विश्वासी थे। विरोधियों ने उन्हें हलाहल विष दूध में मिला कर धोखे से पिलाया था। इसी कारण से उनका सारा शरीर जख्मों से भर गया था उनका दस्त आदि लग कर शरीर कमजोर हो गया था। दीपावली के दिन सन् 1883 में उन्होंने लगभग सायं छः बजे इस नश्वर शरीर का त्याग किया था। इसलिए आर्य समाज में यह पर्व ऋृषि निर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन प्रत्येक आर्य समाज में विशेष यज्ञ किया जाता है। यज्ञ के पश्चात् महर्षि दयानन्द के जीवन के सम्बन्ध में प्रकाश डाला जाता है।

यह पर्व हमें मुख्य रूप से मर्यादा पुरुषोत्तम राम और महर्षि दयानन्द की याद दिलाता है। इस पर्व को मनाते हुए हम मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन के आदर्शों को मार्यादाओ को उनके गुणों को अपने जीवन में धारण करें और महर्षि दयानन्द के जीवन आदर्शों पर चलने का व्रत लें। उनके अधूरे कार्य पूर्ण करने का व्रत लें। वेद का सन्देश घर-घर पहुंचाने का व्रत लें। महर्षि दयानन्द एक ऐसा दीपक था जो 1883 की साय को बुझते-बुझते हजारों दीपकों को जला गया, रोशन कर गया। गुरुदत्त जैसे अनेकों लोगों को वह ज्ञान की रोशनी दे गया।

यह पर्व लक्ष्मी पूजा का पर्व माना जाता है। लक्ष्मी धन को कहा गया है। लक्ष्मी पूजा का अर्थ धन का सत्कार है। वास्तविक धन ईश्वर की भक्ति का धन है। इस पर्व को मनाते हुए हम जीवन में इस धन को संग्रह करने का व्रत लें।

इस प्रकार दीपावली का पर्व सब पर्वो में श्रेष्ठ और महान है। इस पर्व को मनाते हुए हम आगे बढ़ने का व्रत लें। जीवन निर्माण का व्रत लें। सारे ससांर का कल्याण करने का व्रत लें। देश सेवा व रक्षा का व्रत लें।

–धर्मदेव आर्य

हिन्दी साहित्य के मनीषियों की दृष्टि में महर्षि दयानन्द सरस्वती

संकलनकर्त्ता : यशबाला गुप्ता

"......महर्षि दयानन्दजी से भी बढ़कर मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता। ... किसी दूसरे प्रतिभाशाली पुरुष मे और जो कुछ उपकार देश तथा जाति का कुछ हुआ हो, सबसे पहले वेदों को स्वामी दयानन्द ने सरस्वती ने ही हमारे सामने रखा .यदि हमें ऋषियों की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए हम गर्व करते हैं तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हम अपार ज्ञान-राशि वेदों मे परिचित करा दिया।"

"विभिन्न मतों का प्रचलन देश के पतन का कारण है स्वामी जी की यह निर्भ्रान्त धारणा थी। उन्होंने मत-मतान्तरों पर सप्रमाण आक्षेप भी किए उनकी इच्छा थी कि इस मतवाद के अज्ञान-पंक मे इस देश को निकालकर वैदिक शुद्ध शिक्षा द्वारा निष्कलंक कर दें।"

" आर्यावर्त्त के अधिकाश भागों में स्त्री-शिक्षा-विस्तार का अधिकांश श्रेय आर्य समाज को दिया जा सकता है। "

पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

"सन् 1883 मे स्वामी दयानन्द की मृत्यु हुई आर 1885 मे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की। स्वामी दयानन्द ने 20 वर्ष काम किया ओर भारतेन्दु ने 21 वर्ष। ये दोनों महानुभाव ऐसा सांस्कृतिक प्रभाव छोड़ गये जो दिन दिन तेजी के साथ बढ़ता ही चला गया ओर जिसने शीघ्र ही सम्पूर्ण उत्तर भारत में जागरण की एक नई लहर पेदा कर दी। "

" स्वामी दयानन्द के प्रवचनो मे अधिक आकर्पण यह था कि वे एकेश्वरवादी थे, रूढ़ियों के विरोधी तथा प्रगति के समर्थक थे। एक ओर वे प्राचीनतम वैदिक सस्कृति को दृढ़ता से थामे थे दूसरी ओर वे नए-नए सुधारो का स्वागत करते और सर्वसाधारण को उन पर अग्रसर होने को कहते थे। उनके विचार पाश्चात्य विकास से मिलते-जुलते थे, परन्तु वैदिक संस्कृतिमय थे। "

–आचार्य चतुरसेन शास्त्री

"मेरे हृदय में श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती पर अगाध श्रद्धा है। वे बहुत बड़े समाज संस्कर्त्ता, वेदों के बहुत बड़े ज्ञाता तथा भाष्यकर्त्ता और धर्म संस्कृति के बहुत बड़े पुरस्कर्ता थे. ..मैं स्वामी जी की विद्वत्ता और उनके कार्य-कलाप को अभागे भारत के सौभाग्य का सूचक चिन्ह समझता हूं। अतएव

–धन्यश्च प्राज्ञ मूर्धन्यं दयानन्दं दयाधनम्।

स्वामिनं तमहं वन्दे वारं वारं च सादरम्॥"

–आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

"......रणारूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई भी नहीं हुआ। दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक केवल सुधारक थे किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आगे बढ़े। वे हिन्दू धर्म के रक्षक होने के साथ ही विश्व मानवता के नेता भी थे।" "रीतिकाल के ठीक बाद वाले काल में हिन्दी भापी क्षेत्रों में जो सबसे बड़ी सांस्कृतिक घटना घटी, वह स्वामी दयानन्द का पवित्रतावादी विचार था। इस युग के कवियों को शृंगार रस की कविता लिखते समय यह प्रतीत होता था जैसे स्वामी दयानन्द पास ही खड़े सब कुछ देख रहे हैं।"

–डॉ० रामधारी सिंह 'दिनकर'

मैं किसी समय आर्य कुमार सभा तथा आर्य समाज का सदस्य था। मेरे स्वतंत्र चिन्तन पर दयानन्द का प्रभाव है। मैं ऋषि दयानन्द को एक महामानव तथा वेदों का उद्धारक मानता हूं।

–डॉ० हरिवंश राय बच्चन

".. स्वामी दयानन्द ने युग निर्माता की भांति देश के सुप्तमस्तिष्क को प्रबुद्ध करने का प्रयत्न किया .. .सत्यार्थ प्रकाश इस दिशा मे अपना निजी महत्व रखता है। सामाजिक जीवन को उत्प्रेरित करने और अतीत संस्कृति के पुनरुद्धार के निमित्त.. ..आर्य समाज का कार्य प्रशंसनीय रहा है। उसमें प्रतिक्रिया भावना के स्थान पर नवनिर्माण की वास्तविकता प्रमुख रही है।"

–जयशंकर प्रसाद

"पैगम्बरी एकेश्वरवाद की ओर नवशिक्षित लोगों को खिंचते देख स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक एकेश्वरवाद लेकर खड़े हुए और सं. 1920 से उन्होंने अनेक नगरों में घूम-घूम कर व्याख्यान देना आरम्भ किया. .. "

–आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल

मैं. . . .आर्य समाज को जितनी धार्मिक संस्था समझता हूं उतनी ही तहजीबी (सांस्कृतिक) संस्था भी....। मैं कहूंगा कि उसके तहजीबी कारनामे उसके धार्मिक कारनामों से ज्यादा प्रसिद्ध और रोशन हैं। आर्य समाज ने साबित कर दिया है कि समाज की सेवा ही धर्म के सजीव होने का लक्षण है। सेवा का कौन सा क्षेत्र है जिसमें उसकी कीर्ति की ध्वजा न उड़ रही हो।.. **–मुन्शी प्रेमचन्द**

वैष्णव कुल का होने पर भी मैं स्वामी दयानन्द को अपने देश का महापुरुष मानता हूं। उनके लिए मेरे मन में श्रद्धा है। कौन उनके महान् कार्य को स्वीकार न करेगा ? **"जो यह वेद ध्वनि गूंजती है, कृपा उन्हीं की यह कूंजती है।"**

–मैथिली शरण गुप्त.

स्वामी दयानन्द युग द्रष्टा, युग निर्माता थे। मेरे संस्कारों पर ऋषि दयानन्द का पर्याप्त प्रभाव है। स्त्रियों को वेदाधिकार दिलाकर उन्होंने महिलाओं में नवीन क्रान्ति का बीजारोपण किया। नारी की वेदना देखकर वे कहा करते थे, भाई, इससे अधिक हृदयविदारक दु:ख क्या हो सकता है? विधवाओं की दु:खभरी आहों से इस देश का सर्वनाश हो रहा है। दयानन्द ने वेदों की वैज्ञानिक व्याख्यायें प्रस्तुत कर, वैदिक अध्ययन प्रणाली में एक नूतन युग का सूत्रपात किया। इन्हीं सब कार्यों के लिए हम उनके ऋणी हैं। **–महादेवी शर्मा**

"स्वामी दयानन्द के वाक्य मुझे वेदवाक्यवत् मान्य हैं और उनकी बात मेरे लिए उदाहरण स्वरूप हैं।"

"हिन्दुओं में स्वामी दयानन्द भगवान की विभूति हैं।"

"लोग स्वामी दयानन्द को मूर्तिपूजा न मानने के कारण बुरा कहते हैं पर काशी के पण्डितों पर अरबों औरंगजेब वार डालिये। दण्डी विरजानन्द ने सच कहा था- कथं काशी विदुष्मती?"

–वृन्दावन के वैष्णव आचार्य
पं. राधाचरण गोस्वामी

व्याकरण मार्तण्ड : दण्डी जी.....

(पृष्ठ 2 का शेष)

अब तक दण्डी जी के चिन्तन में आर्ष-ग्रन्थों ने ऊंचा स्थान प्राप्त कर लिया था। अत: अष्टाध्यायी और महाभाष्य के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा के कारण उनकी कुटिया अब पाणिनि युग में परिवर्तित हो चुकी थी। उसमें जब सन् 1860 ई. में दयानन्द श्रीचरणों में उपस्थित हुए तो दण्डी जी की आयु 81 वर्ष की थी। इस घटना ने उस कुटिया को इतिहास मे अमर कर दिया। अन्धविश्वासो व रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्षरत्त यह महामानव कालान्तर में युग निर्माता सिद्ध हुआ।

दण्डी जी की ज्ञानवर्द्धक यात्राएं–जीवनीकार के अनुसार दण्डी जी ने अपनी जो पद यात्राएं की एवं जीवन काल मे जो पड़ाव चुने वो निषप्रयोजन नहीं थे क्योकि भ्रमण ज्ञानोपार्जन में सहायक था। उनकी मेधा तीव्र तथा स्मरण-शक्ति अनुपम थी। अत: वाक्-पटु, शास्त्रज्ञ एवं विद्याबल से युक्त तीक्ष्ण स्मरण-शक्ति के कारण वे पाठ शीघ्र कण्ठस्थ कर लेते थे। वस्तुत: वे श्रुतिधर थे।

अलवर मे अलवर-नरेश के आग्रह पर वे उन्हें केवल सस्कृत पढ़ाने के लिए गए थे। इसके अतिरिक्त वे ऋषिकेश, हरिद्वार, कनखल, काशी तथा सोरों आदि स्थानों में पधारे, जो तीर्थ-स्थान और संस्कृति केन्द्र हैं। जहां कर्म-काण्ड के अतिरिक्त शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन मे निरत ब्राह्मण रहते है। अत: विद्यार्पित दण्डी के लिए पठन-पाठन, शास्त्र-चर्चा तथा व्याकरण-विषयक शास्त्रार्थ के लिए ऐसे उपर्युक्त संस्कृतज्ञ स्थान आवश्यक थे।

काशी, भारत का प्राचीनतम विद्या-केन्द्र तथा सांस्कृतिक नगर था तथा कृष्ण जन्म-स्थली मथुरा छोटी काशी मानी जाती थी, जहां नित्य नए उत्सवादि लगे रहते थे। ऐसे स्थानो पर उन्हे जरजरित भारत की नब्ज पर हाथ रखने के संयोग मिलते रहते थे।

फिर इसी उद्देश्य से उन्होंने काशी से गया के लिए प्रस्थान किया, जहां उन्होंने अष्टाध्यायी के अध्ययन के साथ-साथ वेदान्त-ग्रन्थों का अभ्यास भी किया एवं महा-विद्वान् मन्यासी की उपाधि पाई। काशी में भी मूर्धन्य विद्वानों में गणित दण्डी जी यहां अपने अपार वैदुष्य के लिए बहुत सम्मानित हुए।

पुन: काशी से कोलकाता के लिए चल पड़े जो विद्वानों के लिए प्रसिद्ध था। यहां उन्होंने व्याकरण के साथ-साथ, दर्शन, आयुर्वेद, संगीत, वीणा-वादन तथा योग-विद्या में कुशलता प्राप्त की। तथा फारसी में भी अच्छी योग्यता अर्जित की एवं शतरंज के भी कुशल खिलाड़ी बने। फिर निज प्रयोजन सिद्ध होते ही वहां से सोरो के लिए चल पडे। सोरों में वे अनेक पण्डितों को व्याकरण पढ़ाते रहे, जो उनकी प्राणपण से सेवा करते थे।

सन् 1832 में सोरों में गढ़ियाघाट पर एक दिन संयोगवश अलवर-नरेश वहां उपस्थित थे। वहां निर्मल जल में खड़े ब्रह्मचर्य के तेज से देदीप्यमान मुख-मण्डलीय साधु के सुरीले कण्ठ से उत्कृष्ट विशुद्ध संस्कृतोच्चारण श्रवण कर अलवर नरेश इतने अविभूत हुए कि उन्हें अलवर चलने का आमंत्रण दे डाला। दण्डी जी ने कहा–"यदि आप प्रतिदिन हमसे ससकृत पढ़ने के लिए उद्यत हो तो मैं अवश्य चल पड़ूंगा।" राजा ने हां कर दी।

अलवर-नरेश विद्या-प्रेमी और विद्वत्-सेवी शासक थे। वे अलवर को विदुष्मती काशी की भांति विदुष्मान बनाने के लिए यत्नशील थे। अत: तप त्याग की मूर्ति एवं विमल-बुद्धि सम्पन्न असाधारण विद्वान्, प्रज्ञाचक्षु दण्डी जी को अलवर पधारने के मनोरथ में वे सफल रहे। प्रारम्भ मे दण्डी जी का अध्ययन प्रमुख लक्ष्य था और अध्यापन गौण। किन्तु लगता है अब अध्यापन को वरीयता मिल गई थी। अत: राजा शीघ्र ही सहज संस्कृत बोलने के योग्य हो गए।

एक दिन राजा के वचन भंग हो जाने पर दण्डी जी वापिस आने को उद्यत हुए। राजा ने रुकने की प्रार्थना की। दण्डी जी बोले राजन! आप तो अपनी प्रतिज्ञा भंग कर सकते हैं पर मै नहीं कर सकता। इस प्रकार दण्डी रूपी राजहंस महलों के पिंजरे से निकल कर पुन: चिन्तन मनन के मान सरोवर मे विचरने के लिए उन्मुक्त हो गए।

दण्डी जी अब तक पर्याप्त शास्त्राध्ययन तथा मनन कर चुके थे। वे अपना समय कभी नष्ट नहीं करते थे। तथा ईश्वराधन, चिन्तन और अध्यापन के अतिरिक्त अन्य किसी भी वार्तालाप से बचते थे। उनके विद्याबल, विमल-चरित एवं वैराग्य से सभी प्रभावित थे।

मथुरा आगमन एवं उपर्युक्त उत्तराधिकारी की खोज–अब जीवन की दीर्घ अवधि के अनुभव और विचार-मन्थन ने उनके गम्भीर चिन्तन को क्रांतिकारी पुट दे दिया था। अत: वे देश-दशा, निर्धनता एवं सर्वत्र फैली अराजकता से सुपरिचित एवं निराश थे। वे तथाकथित धर्म के ठेकेदारो, प्रपंच, दम्भ, पाखण्ड और अविद्या से बहुत क्षुब्ध थे। उनका संवेदनशील हृदय न जाने किस-किस द:ख-दर्द, व्यथा और पीडा से भरा हुआ था किन्तु इस स्थिति को सुधारने हेतु नेत्रहीनता एवं आयु बाधक थीं। अत: वे किन्हीं युवा सबल कन्धों की खोज में थे।

जिन्होंने गंगोत्तरी से असीम प्रचण्ड–गंगधाग को आक्रोश के साथ निकलते देखा है, वे जानते हैं कि-वह फुफकारती हुई बेचैन धारा कितने वेग के साथ चलती धरती से टकराती हुई उसे प्रकम्पित करती है।

किन्तु क्या कभी किसी ने गंगोत्तरी के अन्तराल में व्याप्त अकल्पनीय आक्रोशाग्नि की धधकती हलचल और बेचैनी का अनुमान लगाया होगा?

देश-दुर्दशा, वेद-विलोप, एवं दारुण-दास्ता के घोर अन्धकार मे छटपटाती भारत-माता के दु:ख में दुखी दयानन्द के आंसू और उनके अन्तर्मन की बेचैनी और आकुशाहट तो सभी ने देखी है। किन्तु महाप्राण गुरु विरजानन्द रूपी गंगोत्तरी के भीतर छाई विद्रोह की महाज्वाला और विराट् आक्रोश के दबाव को-दयानन्द के सिवाय और किस ने देखा होगा? ऐसे दयानन्द की खोज मे उन्हे बहुत प्रतीक्षा करनी पडी थी।

जीवनीकार के अनुसार–जिस प्रभु के सहारे बालपन मे पैतृक ग्राम छोड ऋषिकेश की राह पकड़ ली, आज उसी के सहारे सोरो त्याग, दण्डी जी मथुरा के लिए चल पड़े और अगले शेष वर्ष उन्होंने मथुरा को सुशोभित किया जो विद्या-नगरी ही नहीं, धन-वैभव से भी सम्पन्न थी।

केवल निजी सुख सुविधा के लिए कहीं डेरा डालने वाले साधु वे नहीं थे, न वे परावलम्बी थे। अत: स्वावलम्बी दण्डी जी ने मथुरा मे एक मकान किराए पर लेकर स्थायी रूप से वहां पाठशाला खोल दी फिर जीवन-पर्यन्त पाठशाला नही रही। अपनी इस युगान्तकारी पाठशाला को खोल कर दण्डी जी ने न केवल इस भवन, अपितु मथुरा को भी गौरवान्वित किया। आज भी मथुरा का नाम सुनते ही इस पाठशाला को स्मरण कर असंख्य नेत्र अनायास आभार एवं श्रद्धा से सजल हो उठते हैं। देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय के अनुसार वैदिक धर्म के परभुत्थान के प्रसंग में, धर्म के संशोधन के इतिहास में यह मकान विस्मरणीय रहेगा। कालान्तर में इसी सौभाग्यशाली घर में उन्हें अपना मानस-पुत्र दयानन्द प्राप्त हुआ।"

दण्डी जी का महाप्रयाण–जीवनीकार के अनुसार दण्डी जी 89 वर्ष तक इस धराधाम को सुशोभित करते रहे। उन्होंने अपने विचारों के अनुसार प्रभु के सहारे जीवन जीया। प्रतिकूल परिस्थितियां, जिसका मार्ग अवरुद्ध न कर सकी, उस जीवन भर संघर्षरत्त, नरपुंगव परमात्मा के इस लोक से जाने की तैयारी अब पूर्ण हो गई थी। अब दण्डी जी प्रतीक्षा-शैय्या पर थे एवं मृत्यु को भी उनके निमन्त्रण की प्रतीक्षा थी। अत: 14 सितम्बर सोमवार 1868 को वे इह लोक लीला सम्पन्न कर इस संसार से चल दिए।

ज्ञान की गंगा बहा कर धार्मिक-जगत् एवं विद्वान-समाज को आन्दोलित करने वाला क्लिष्ट विषयों का अद्वितीय पण्डित, एक युग का अन्त करके चला गया। जिसकी जिह्वा पर सरस्ती नाचती थी, जिसका मस्तिष्क अद्भुत पुस्तक थी। परम-वैदुष्य, विद्यावारिधि, शास्त्र-तत्व मर्मज्ञ एवं शास्त्र-समर का अजेय यौद्धा, अखण्ड-ब्रह्मचारी, सत्य के पुजारी और धुन के धनी, दण्डी जी अपने दिव्य-लोक को चले गए।

जीवनीकार के अनुसार–"आजीवन अध्यापक रहे दण्डी जी ने अध्यापक की ही स्थिति में प्राण त्याग दिए। आलोक और उष्मा देने वाला वह सूर्य डूब गया। एक गरिमा चली गई।" नेत्रहीनता न उनके शास्त्र-ज्ञान प्राप्ति में बाधक हुई, न अध्यापन में। वे ज्योतिष्मान थे। आलोक-पुरुष थे।

"उनके कार्य उनकी यशोगाथा का अहर्निश गान कर रहे हैं। जो चरित-नायक दण्डी जी के विचारों और चेतना की प्रगति की गाथा है। समय में इसे नष्ट करने का सामर्थ्य नहीं। जिस परिव्राट ने उस अन्धकारमय युग मे अष्टाध्यायी का पुन: प्रचलन किया, उस व्याकरण-सूर्य, शब्द-शास्त्र के साक्षात्कृत धर्मा ऋषि-दण्डी को शत-शत नमस्कार।"

डॉ० राम प्रकाश द्वारा लिखित दण्डी जी एवं विद्यार्थी जी की रसवन्ती जीवनीयां वैदिक ज्ञान एवं आर्य समाज के मन्तव्यों के रहस्यों को खोलने की कुंजियां हैं। जिनके आधार पर मैंने लेख श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत करने का साहस किया है। ये हर समाज और हर घर में पहुंचनी चाहिएं। दण्डी जी के चरणों में यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

ऋषि दयानन्द के अनुयायी बनने में कोई घाटा नहीं। व्यावहारिक लाभ हैं।

□ ले० डॉ० भवानी लाल भारतीय, 8/423 नन्दनवन, जोधपुर

थोड़ी देर के लिए हम मान लेते हैं कि ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेदों के नित्यत्व, अपौरुपेयत्व एवं ईश्वर कर्त्तृत्व विषयक मन्तव्यों को आप ठीक-ठीक समझने की योग्यता नहीं रखते। यह भी सम्भव है कि आपको वैदिक त्रैतवाद, सृष्टि रचना प्रक्रिया, मोक्ष का स्वरूप एवं उससे पुनरावृत्ति जैसे दार्शनिक विचारों को समझने में कठिनाई होती है। यह भी सम्भव है कि आप दर्शन एवं अध्यात्म के गूढ रहस्यों को जानने की क्षमता नहीं रखते तथापि यदि आप महर्षि दयानन्द के अनुयायी बन जाते हैं तो व्यावहारिक धरातल पर आपको अनेक लाभ स्वत: ही प्राप्त हो जायेंगे। उदाहरण के लिए–

(1) दयानन्द का सच्चा अनुयायी भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि कथित पदार्थों से कभी भयभीत नहीं होता। सच है–

भूत पिशाच निकट नहिं आवे।
दयानन्द जब नाम सुनावे॥

(2) आप फलित ज्योतिष, जन्म पत्र, मुहूर्त, दिशाशूल, शुभाशुभ ग्रहों के फल, झूठे वास्तु शास्त्र आदि धनापहरण के अनेक मिथ्या जाल से स्वयं को बचा लेंगे।

(3) कोई पाखण्डी साधु, पण्डा, पुजारी, गंगा पुत्र आपको बहका कर आपसे दान पुण्य के बहाने अपनी जेब गर्म नहीं कर सकेगा।

(4) शीतला, भैरव, काली, कराली, शनैश्चर आदि अप देवता, जिनका वस्तुत: कोई अस्तित्व ही नहीं है, आपका कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकेंगे। जब वे हैं ही नहीं तो बेचारे करेंगे क्या ?

(5) आप मदिरापान, धूम्रपान, विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्यों से बचे रह कर अपने स्वास्थ्य और धन की हानि से बच जायेंगे।

(6) बाल विवाह, वृद्ध विवाह, नारी प्रताड़ना, पर्दा प्रथा, अस्पृश्यता आदि सामाजिक बुराईयो से दूर रह कर सामाजिक प्रचार का उदाहरण रखेंगे।

(7) जीवन का लक्ष्य सादगी को बनायेंगे और मितव्ययता के आदर्श को स्वीकार करने के कारण दहेज, मिलनी, विवाहों मे अपव्यय आदि पर अकुश लगा कर आदर्श उपस्थित करेंगे।

(8) दयानन्द का अनुयायी होने के कारण अपने देश की भाषा, सस्कृति, स्वधर्म तथा स्वदेश के प्रति आपके हृदय में अनन्य आसक्ति रहेगी।

(9) आप पश्चिम के अंधानुकरण से स्वयं को तथा स्वयं की सन्तान को बचायेंगे तथा फैशन परस्ती, फिजूलखर्ची, व्यर्थ के आडम्बर तथा तड़क-भड़क से दूर रहेंगे।

(10) आप अपने बच्चों में अच्छे संस्कार डालेंगे ताकि आगे चलकर वे शिष्ट, अनुशासन प्रिय, आज्ञाकारी बनें तथा बड़ों का सम्मान करें।

(11) आप अपने कार्य, व्यवसाय, नौकरी आदि में समय का पालन ईमानदारी, कर्त्तव्य परायणता को महत्व देंगे ताकि लोग आपको मिसाल के तौर पर पेश करें।

(12) सद् ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रुचि बढ़ेगी, फलत: आपका बौद्धिक क्षितिज विस्तृत होगा।

(13) जीवन और जगत के प्रति आपका सोच अधिकाधिक वैज्ञानिक होता चला जाएगा। इसे ही स्वामी दयानन्द ने सृष्टिक्रम के विरुद्ध होना कहा है। आप इसी बात के साथ मानेंगे जो मुक्ति, तर्क और विवेक की कसौटी पर खरी उतरती है। मिथ्या चमत्कारों और ऐसे चमत्कार दिखाने वाले ढोंगी बाबाओं के चक्कर में दयानन्द का अनुयायी कभी नहीं आता।

(14) दयानन्द की शिक्षा आपको एक परिपूर्ण मानव बना देगी। आप जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति के भेदों से ऊपर उठ कर मनुष्य मात्र की एकता के हामी बन जायेंगे।

(15) निंदा स्तुति, मानापमान, हानि लाभ, सुख-दु:ख आदि द्वन्द्वों को सहन करने की क्षमता आप में अनायाम आ जाएगी।

(16) शैव, शाक्त, वैसाल, कापालिक आदि सम्प्रदायों के मिथ्याजाल से हट कर आप एक, अद्वितीय, सच्चिदानन्द परमात्मा के उपासक बन जायेंगे।

(17) आपकी गृहस्थी में पन्च महायज्ञों का प्रवर्तन होगा जिससे आप परमात्मा, सूर्यादि देवगण, माता पिता आदि पतृ गण, अतिथि एवं सामान्य जीवो की सेवा का आदर्श प्रस्तुत करेगे।

क्या दयानन्द के अनुयायी बनने से मिलने वाले उपर्युक्त लाभ कोई कम महत्व के हैं तो फिर देर क्यों? आज ही दयानन्द के सैनिकों में अपना नाम लिखायें।

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर का चुनाव

प्रधान–डॉ० प्रकाश चन्द्र आर्य, महामन्त्री–पं० बनारसी दास आर्य, कोषाध्यक्ष–लक्ष्मण कुमार तिवारी, उप-प्रधान–डॉ० राजेश शर्मा, प्रेम प्रकाश अरोड़ा, उप मन्त्री–राज कुमार आर्य, हरिविन्द्र कुमार आर्य, वेद प्रचार मन्त्री–विनोद कुमार मदान, पुस्तकालय अध्यक्ष–बाल किशन आर्य।

स्त्री आर्य समाज का चुनाव

प्रधाना–बहन प्रकाशवती आर्या, मन्त्राणी–निर्मल आर्या, उप-प्रधाना–बहन कौशल्या आर्या, बहन लाजवन्ती आर्या, उप-मन्त्राणी–बहन शकुन्तला आर्या, माता हरनाम देवी। वेद प्रचार मन्त्राणी–प्रीति आर्या।

आस्तिकता व अहिंसा

पृष्ठ 1 का शेष

फिर पूछा आज कौन सा पक्ष, तिथि व वार है? भक्त मोहनलाल ने कहा कि भगवन्! कार्तिक मास की अमावस्या व मङ्गलवार है। यह सुनकर अपनी दिव्यदृष्टि से भवन के चहुं ओर दृष्टिपात किया और गम्भीर ध्वनि से वेदपाठ प्रारम्भ हो गया, मानो दयानन्द के आत्मा व परमात्मा की अन्तरङ्ग परिषद् प्रारम्भ हो गई। ऋषिभक्त गुरुदत्त उस कमरे के एक कोने में भित्ति के साथ लगे हुए निर्निमेष नेत्रों से दो सखाओं (ऋषि दयानन्द व परमात्मा) के अनिर्वचनीय मिलन का अवलोकन कर रहे थे। प्रभुमग्न दयानन्द ने वेदगान के अनन्तर परमप्रीति से पुलकित होकर संस्कृत शब्दों में परमात्मदेव का गुणगान किया। तत्पश्चात् हिन्दी में स्तुति करते आनन्दमग्न होकर गायत्री मन्त्र का पाठ करते करते शान्त समाधिस्थ हो गये। कुछ काल पश्चात् समाधि की उच्चतम भूमि से उतर कर परम प्रिय पिता से आह्लादक वार्तालाप में निमग्न होकर अतीव मैत्री भाव से कहते हैं हे दयामय सर्वशक्तिमान् ईश्वर ! तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो! अहा!!! तूने अच्छी लीला की। इतना कहकर करवट ली और एक बार श्वास को रोककर पुन: सदा के लिए बाहर निकाल मोक्षानन्द को प्राप्त हो गए।

कार्तिक की अमावस्या सम्वत् 1940 को वह सायं छह बजे का समय भी कैसा निर्मम था कि जिसने विश्व की महान् विभूति आर्यजनों के प्राणभूत महर्षि को सर्वदा के लिए छीन लिया। आ:!!! इधर सरस्वती का अक्षीण कोष विलुप्त हो गया, सुधारक समाज का अवलम्ब निरवलम्ब हो गया, श्रुतिपथ का उद्धारक अस्त हो गया, वैदिक सुधार का रूढ़ियों का निवारक सद्वैद्य लुप्त हो गया तो उधर ऋषिवर अपने अनिर्वचनीय ईशमिलन से नास्तिक गु... को आस्तिकता का पवित्र जीवन दे गये। गुरुदत्त ने एक ईश्वर भक्त योगी को मृत्यु पर विजय करते देखा और परमेश्वर की व्यवस्था में उस योगी द्वारा स्वेच्छया अपनी सहमति को सांझा करते देखा तो वे चिन्तन करने लगे कि इतनी असह्य वेदना व अन्तर्दाह के होते हुए आनन्द में अतिशय निमग्न होकर दयानन्द की आत्मा जिससे प्रेमालाप करते हुए उसकी इच्छा व लीला को प्रत्यक्ष कर रही थी और जो दिव्य शक्ति दयानन्द का आह्वान कर रही थी उस ईश्वर का अस्तित्व अवश्य है।

इस दयानन्द निर्वाण रूप सुन्दरतम दैवी दृश्य से नास्तिकता के समस्त तर्क विलुप्त हो गये। गुरुदत्त आस्तिक शिरोमणि बनकर सच्चा जीवन पा गये और समस्त जग को अहिंसा व आस्तिकता आदि पावन गुणों का प्रेरक अध्याय मिल गया। भक्तों के आग्रह पर अजमेर प्रस्थान करते हैं, परन्तु विष का प्रभाव सारे शरीर में व्याप्त हो गया था फलत: रोग ने उग्ररूप धारण कर लिया। अन्तर्दाह व शरीर पर छाले बढ़ते ही गये। इस विकट विपत् में श्री स्वामी जी धैर्यपूर्वक भक्तों की खिन्नता दूर कर रहे थे। दीपावली से दो दिन पूर्व लाहौर से पं० गुरुदत्त विद्यार्थी व जीवनदास जी भी स्वामी जी के दर्शनार्थ अजमेर पहुंच गए।

अन्तिम दृश्य का आश्चर्यजनक समय दीपावली का दिवस भी आ पहुंचा। स्वामी जी के तन को यद्यपि विषजन्य भयङ्कर व्याधि ने सत्वहीन कर दिया था तथापि वे प्रसन्नचित थे और अपने पवित्र प्रेम के सुपात्र भक्तों को कर्त्तव्य कर्म का पालन करने व आनन्दपूर्वक रहने के लिए उपदेश करते रहे। ऐसी दशा में ही शाम के साढ़े पांच बज गए। स्वामी जी दैवेच्छा को भलीभांति समझ चुके थे। इसलिए परमात्मा की व्यवस्था का सानन्द स्वीकार करके उसमें अपनी सहमति को भी सांझा करते हुए महाप्रयाण के लिए सन्नद्ध होकर भवन के सभी द्वार व वातायन खुलवा दिये और समागत भक्तों को अपनी पीठ के पीछे खड़ा कर दिया।

लाला गंगा राम जी का जन्मोत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में त्यागमूर्ति लाला गंगा राम जी का जन्मोत्सव 5-11-2002 से 9-11-2002 तक मनाया जा रहा है, जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् व नेतागण भाग ले रहे हैं। **–कमल किशोर, प्रधान**

दीपावली आई स्वामी जी की याद लाई

लेo डॉo स्वच्छ सचदेवा, प्रधाना स्त्री आर्य समाज, भठिण्डा

यूं तो दीपावली प्रत्येक वर्ष खुशियों का संदेश लेकर आती है, दीप से दीप जलता है, अंधेरे से प्रकाश की ओर चलो ऐसा सदेश लाती है। लेकिन खेद है कि इसी दिन आजादी के दिवाने समाज सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन रूपी दीपक को बुझा कर चली गई। स्वामी जी को अगर जहर न दिया होता तो वह 50 वर्ष और जिन्दा रहते और वेद प्रचार करते।

स्वामी जी मथुरा से आकर 7 वर्ष तक अज्ञात वास मे रहकर कुछ ईश्वर भक्ति मे मग्न रहे अथवा झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के सिपाहियो को आजादी का सदेश देते रहे। लक्ष्मी बाइ स्वामी जी को अपना गुरु मानती थी, स्वामी जी ने 1857 मे स्वतन्त्रता सेनानियो को आजादी का सन्देश दिया था। झांसी की रानी अन्तिम समय तक अंग्रेजो के साथ लडती रही और अन्त मे एक सन्यासी ने अपना कुटिया जलाकर उनका अन्तिम सस्कार किया था। इस तरह उसकी लाश का भी अंग्रेज छू नही सके।

कलकत्ता मे अग्रेजों का अधिवेशन चल रहा था। स्वामी जी भी वहा उपस्थित थे। अग्रेज अधिकारी ने कहा स्वामी जी 'आपको कई बार जहर दिया जा चुका है, कहो तो आपको अंग रक्षक दे दिया जाए।" स्वामी जी ने कहा "आपके राज्य में मुझे कोई भय नहीं"। तब अग्रेज बोला अगर ऐसा है तो अपने भगवान से प्रार्थना करो कि "हमारा राज्य हिन्दोस्तान पर सदैव बना रहे"। स्वामी जी उसकी बात सुनकर क्रोध से बोले, "मैं तो भगवान से सदैव प्रार्थना करता हूं कि भारत देश आजाद हो अग्रेज जल्दी से जल्दी इग्लेंड चले जावे"। भारत में आर्यो का राज्य हो यह उनकी हार्दिक इच्छा थी।

स्वामी जी के आने से पूर्व आर्य जाति बहमों-भ्रमो मे फसी हुई थी। कब्रों की पूजा होती थी। भूत प्रेतो को लोग मानते थे। आज बिल्ली का रास्ता काटना, किसी शुभ कार्य मे छींक का आना लोग अशुभ मानते ह। शिक्षा का प्रचार नही था। जुआ, शराब पर स्त्री गमन आम रिवाज था। पुरुष अनेको शादिया करते थे जबकि लडकी को बाल विधवा होने पर भी दूसरा विवाह वर्जित था। नारी की स्थिति पैर की जूती के समान थी। विधवा होने पर सति प्रथा का रिवाज था। किसी शुभ कार्य करने मे विधवा की सूरत देखना पाप समझा जाता था। सारा दिन घर का काम करना, बचा-खुचा खाना व सफेद कपडा पहनना यह रिवाज था। किसी पुरुष की शक्ल देखना भी उसके लिए वर्जित था। ऐसे समय स्वामी दयानन्द ने देश सुधार, समाज सुधार का बीड़ा उठाया और तीन सभाओं का निर्माण किया।

1 धार्मिक सभा (जिसमें हवन यज्ञ और वेद प्रचार)।

2 शिक्षा सभा (जिसमें शिक्षा का प्रचार स्त्री शिक्षा)

3 राज्य सभा (खेद है कि यह सभा आजादी के 55 वर्ष बाद भी शुरु नहीं हुई।)

स्वामी जी ने कोई पृथक मत नही चलाया। भगवान राम व श्री कृष्ण भी वेदों के विद्वान थे। गीता उपनिषदों व वेदों का सार है, राम कृष्ण आर्य पुत्र कहलाते थे। वे प्रतिदिन हवन करते थे।

स्वामी जी का चरित्र इतना ऊचा था कि वह राजा यशवन्त सिह के पास नन्ही जान वेश्या को सहन नही कर पाये और राजा को तुरन्त फटकार दिया वेश्या सहन न कर सकी उसने काच पीस कर पैसे का लालच देकर उनके रसोईये को दे दिया। जगन्नाथ ने दूध मे डालकर रात्री के समय स्वामी जी को पिला दिया। स्वामी जी की दयालुता का उदाहरण और कहीं नहीं मिल सकता कि कातिल को धन देकर भगा दिया कि राजा तुम्हें दंड देगा। वह कांच स्वामी जी के रोम-रोम में समा गया और शरीर में फूट-फूट कर निकलने लगा। ऊपर से एक मुसलमान हकीम ने भी गलत इलाज किया, लेकिन स्वामी जी कहते यह कष्ट मुझे इस लिए मिला है कि मैंने अपने माता-पिता की सेवा नहीं की।

उनका एक सेवक जो कि अजमेर में डाक्टर था। वह सरकारी अस्पताल आबू मे था। वह स्वामी जी को आबू ले गया। कुछ दिनो के बाद सरकार ने उसकी ट्रासफर अजमेर कर दी तब वह अपने साथ उनको अजमेर ले आया। सारे देश में स्वामीजी की बीमारी की खबर फैल गई। गुरुदत्त नाम का विद्यार्थी भी स्वामी जी के पास लाहौर से अजमेर सेवा के लिए गया। स्वामी जी ने दिपावली के दिन सध्या समय जब प्राण त्यागे तो अन्तिम शब्द थे।

"प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो"

उनकी मृत्यु का दृश्य देखकर गुरुदत्त आस्तिक बन गया। छोटी आयु मे उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में वह काम किया जो कोई और न कर सका आज डी ए वी कालेज स्कूलों के रूप में सारे भारतवर्ष मे उनकी ज्योति जगमगा रही है।

जिला लुधियाना में आर्य समाजों की गतिविधियां

❑ प्रस्तुतकर्ता श्री आशानन्द जी आर्य सभा उप-प्रधान (लुधियाना)

(गतांक से आगे)

आर्य समाज रायकोट:-नगर में बाजार के पास आर्य समाज मन्दिर है उसमें एक माडल स्कूल भी है दो वर्ष पहले उन्होंने जिला आर्य सभा के सहयोग से एक समारोह किया था अब अपने भवन की छत्त पर लैंटर डाल कर सुन्दर बनाना चाहते हैं। इस आर्य समाज के प्रधान श्री भीमसेन जी हैं उनके साथ श्री अशोक जी, राजेन्द्र जी और दूसरे आर्य समाजी मिलकर चलें तो यह आर्य समाज काफी गतिशील हो सकती है। विभाजन से पहले यहां एक गुरुकुल होता था जिसको आर्य समाज के वीतराग सन्यासी स्वामी गंगागिरी जी महाराज चलाते थे। स्वामी जी महाराज न केवल वेदों के विद्वान् थे वह एक योग्य वैद्य भी थे। भारत के हर कोने से लोग उनसे दवाई लेने आते थे उनके कई शिष्य पंजाब में योग्य वैद्य हैं। जब वह रुग्ण अवस्था में थे तो लुधियाना के मा सन्तराम स्याल, स्व श्री बालमुकन्द मुन्जाल प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा, श्री आशानन्द आर्य मन्त्री केन्द्रीय आर्य सभा, स्व: श्री दयानन्द मुन्जाल हीरो साईकल वाले, मा किशोरी लाल उपप्रधान आर्य समाज दाल बाजार उनको मिलने के लिए गए थे। उस समय जो उन्होंने प्यार-आशीर्वाद हमको दिया वह आज भी याद है और मुझे आर्य समाज की सेवा करने की प्रेरणा देता है। देश के विभाजन के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा गुरुकुल को चलाने की स्थिति में नहीं थी। इसलिए वहां के लोकल भाइयों ने वह स्थान स्व गंगागिरी महिला कालेज एवं माडल स्कूल खोलने के लिए दे दिया जो अब सफलतापूर्वक चल रहे हैं। परन्तु इनमें रायकोट के आर्य समाजियों को उचित प्रतिनिधित्व नही दिया गया जिससे वह काफी रुष्ट हैं। सभा को इस ओर ध्यान देना चाहिए इसके अतिरिक्त लुधियाना में आर्य कालेज, आर्य महिला कालेज-आर्य सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, आर्य गर्ल्ज सो सै स्कूल दयानन्द पब्लिक स्कूल हैं जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित हैं।

आर्य समाज पायल:-यह स्थान आर्य जगत के लिए एक ऐतिहासिक स्थान है आर्य समाज के महान बलिदानी पं. लेखराम जी आर्य मुसाफिर चलती गाडी से छलांग लगाकर लहुलुहान होकर पायल की उस मस्जिद में पहुंचे थे जहां कई हिन्दू सिक्ख मुसलमान होने वाले थे। आर्य मुसाफिर की गर्ज ने उन्हें पतित होने से बचा लिया (बचाया) वहां के लोगों ने आर्य समाज मन्दिर के लिए स्थान दिया। मैं बहुत वर्ष पहले सभा की ओर से जब वहां गया था तो पुराने लोगो ने बताया कि कई भाइयों ने मिलकर यह स्थान आर्य समाज को दिया और इस स्थान पर कुछ वर्ष आर्य समाज का सत्संग चलता रहा उनमें से कई व्यक्ति पायल से अपने व्यवसाय, के लिए बड़े शहरों मे बस गए और उस स्थान को संभालने वाला कोई न रहा। इस स्थान की रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम थी लोग उस जगह पर कब्जा करना चाहते थे। यह स्थान मेन बाजार के सैन्टर में आ गया था। चूंकि इसकी देखभाल करने वाला वहा कोई न था। सभा ने यह जमीन बेचने का मन बना लिया और सौदा करके कुछ पेशगी रुपए भी ले लिए परन्तु जब जनता को पता लगा तो आर्यो में नाराजगी उत्पन्न हो गई और सभा को इस सौदे को कैंसिल करने के लिए कहा विशेष रूप से भाई सत्यानन्द जी मुन्जाल ने इस सौदे को कैंसिल करवाने में जनता को पूरा सहयोग दिया।

सौदा कैंसल करने के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने अपनी ओर से एक भव्य आर्य समाज मन्दिर बनवा दिया। कुछ दुकानें भी बन गई जिससे आर्य समाज को आमदनी होने लगी वहां एक पुरोहित भी रखा हुआ है जो सत्संग एवं प्रचार करता है। अब वहां कई लोग आर्य समाज से जुड़ गए हैं और आर्य समाज के अधिवेशनो में आने लगे हैं।

आर्य समाज डुगरी रोड:-आर्य समाज डुगरी रोड चलती फिरती आर्य समाज है। हर सप्ताह पारिवारिक सत्संग द्वारा वेद प्रचार प्रधान श्री पुरुषोत्तम अरोड़ा अपने साथियों विनोद ढल्ल, पदम् ओल, कर्मवीर गुलाटी के सहयोग से लगन से कार्य कर रहे हैं। आर्य समाज मन्दिर के लिए स्थान ले रहे हैं स्वामी स्वतन्त्रानन्द धर्मार्थ औषधालय मोही मुलपुरा से 4 मील दूर रायकोट सडक पर मोही ग्राम है जोकि आर्य समाज के महान नेता स्वामी स्वतन्त्रानन्द जो महाराज का जन्म स्थान है उनके नाम पर एक फ्री डिस्पैन्सरी खोली हुई है-स्वामी जी महाराज के छोटे भाई स्व. बलवंत सिंह जी ने इस डिस्पैन्सरी को बढ़िया बनाने तथा सेवा करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सहयोग से बहुत कार्य किया है। अब उनके सुपुत्र इस कार्य को चला रहे हैं सभा की ओर से एक वैद्य जो वहां सेवा करते थे। वैद्य जी की मृत्यु के पश्चात् वैद्य जी के बेटे ने वह भार सम्भाला और उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी धर्मपत्नि वहां सभा की ओर से सेवा कर रही है जिसका वेतन सभा देती है। बाकी सारा खर्चा वहां की लोकल कमेटी करती है। श्री बलवंत सिंह जी के मन में इस औषधालय को बहुत उत्तम बनाने की चाह थी। वह स्वयं भी दान देते थे और दान एकत्रित भी करते थे। आज से लगभग दस वर्ष पहले उन्होंने सभा को लिखा यदि सभा एक लाख रुपए इस औषधालय को दे दे तो यह औषधालय अति गतिशील बन सकता है बाकी धन मैं एकत्रित कर लूंगा। उस समय के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने मुझे उस औषधालय का निरीक्षण करने के लिए भेजा और मैंने उन्हें एक लाख रुपए देने की सिफारिश की जो कि सभा ने इस औषधालय को दे दिया अब यह औषधालय बहुत सुन्दर बन गया है और जनता की खूब सेवा कर रहा है।

महर्षि दयानन्द जी के दिव्य वचन

❑ ले० राम पथिक वानप्रस्थी, वैदिक आश्रम, ग्राम पंजोड़ पो.ओ. अजनोहा (होशियारपुर)

1 अमर वही है जो स्वदेश, जाति और धर्म पर मरते हैं।
2 परमात्मा पूजा का भूखा नहीं है वरन् प्रेम का भूखा है।
3 अपने घातक को क्षमा करना वैदिक धर्म की महानता है।
4 तप ही मनुष्य को कुन्दन बनाता है।
5. मनुष्य उसी को कहना चाहिए जो मननशील होकर स्वात्मवत दूसरों के सुख दुख और लाभ हानि को समझता है।
6 यदि कोई घमण्डी, आतताई, लोभी, क्रोधी हो तो दण्ड देने में कोई अपराध नहीं है। स्वयं न दे सके तो दिलवाये।
7 नशा कोई भी हो तन, मन, आत्मा को खराब करता है।
8 प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
9 सब मनुष्यो को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

टिप्पणी-

जरा विचारें सभी आर्य बन्धु बहन भाई संग युवा पीढ़ी जो महर्षि के मिशन एवं आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना चाहते हैं वही गहराई से विवेक शीलता से विचारें कि आर्य समाज के नौवें, दसवें नियम पर स्वयं कितना चलते हैं ? अब भी चलना शुरू करें तो जन-जन तक पहुंच सकते हैं।

दिवाली रंग लायेगी

हृदय की दूरियों को ये मिटा करके ही जायेगी,
दिवाली रंग लायेगी, दिवाली रंग लायेगी।
उदय हो ज्ञान का सूरज उजाला जग में फैलेगा,
अविद्या नाश तब होगा, अंधेरा दूर जायेगा॥
जो जलते हैं परस्पर देख सुख समृद्धि को हर दम।
ये उनके मन में अविरल प्यार की गंगा बहायेगी।
न होगा कोई भी लम्पट लुटेरा, चोर कर्मचारी।
जगद् गुरु देश भारत को ये फिर से चम-चमायेगी॥
वैभव सम्पदाओ के ये बादल खूब बरसेंगे।
सभी निश्चिन्त होवेंगे, खुशी घर-घर समायेगी॥
अटल विश्वास जागेगा, सुकर्मों की लग्न होगी।
किं कर्त्तव्य विमूढ़ों को ये कुछ करके दिखायेगी॥

दीपावली की शुभ कामनाओं के साथ
पं० विजयपाल प्रभाकर, लाल सड़क, हांसी

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन सिविल लाईन लुधियाना के तत्वावधान में पारिवारिक सत्संग 3-11-2002 को सायं 3 से 4 बजे तक श्री अयोध्या प्रसाद जी मल्होत्रा के निवास स्थान प्रेम नगर सिविल लाईन लुधियाना में होगा।

10-11-2002 रविवार को श्री उमेश जी अरोड़ा मं.न -3009 गुरदेव नगर मल्हार सिनेमा के पीछे लुधियाना में सायं 3.30 से 5.30 बजे तक होगा। श्री प. रामदेव जी का प्रवचन होगा। पारिवारिक सत्संगों का कार्यक्रम प्रति रविवार को निरन्तर सायं काल चल रहा है। भारी संख्या में सत्संगी महानुभाव भाग ले रहे हैं। -नरेन्द्र भल्ला

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0031/2002

2277 श्री पुस्तकालय श्री गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दूरभाष : 292926

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

अथर्ववेद

[illegible]) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 29 सृष्टि संवत् 1960853103, 10 नवम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

आत्मा का हनन करने वाले घोर अन्धकार में डूबते हैं

ले० श्री केवी दयाल शर्मा "शर्मा निवास", 120 माडल टाउन स्ट्रीट न. 4, अमृतसर

[illegible]
अन्धेन तमसावृता:

तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के च आत्महनो जना: ॥

यजुर्वेद 40/3

अर्थ –जो कोई भी आत्मा का हनन करने वाले लोग होते हैं, वह मरने के पश्चात्, उन योनियों को प्राप्त होते हैं जो अन्धकार से आच्छादित हैं।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपनी धर्मपत्नी मैत्रेयी को आत्मतत्व का उपदेश देते हुए कहा था कि ऐ मैत्रेयी आत्मा अमर है और अच्छेद्य है। शरीर के नष्ट होने पर इसका नाश नहीं होता–

भगवान कृष्ण जी ने भी, आत्मा की अमृता को, गीता में अनश्वर सिद्ध किया है:–

(1) न जायते म्रियते वा कदाचित्, नाय भूत्वा भविता न भूय:। अजो नित्य शाश्वतोऽय पुराणो, नाय हन्यते न हन्यते।

यह आत्मा न उत्पन्न होता है और न ही यह मरता है। इसकी उत्पत्ति और नाश दोनो नहीं है। यह आत्मा तो अजन्मा है, नित्य है, अविनाशी और अनादि है। न यह मरता है और न ही मारा जाता है।

(2) नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावक:।

न चैन क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत: ॥

इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि इस को जला नहीं सकती, जल इसे गीला नहीं कर सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती।

(3) [illegible]
विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णा,न्यन्यानि सयाति नवानि देही।

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रो को त्याग कर नए वस्त्र धारण कर लेता है, इसी तरह यह आत्मा पुराने शरीरो को त्याग कर नया शरीर धारण कर लेता है।

(4) जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवम जन्म, मृतस्य च तस्मात अपरिहार्ये न त्व शोचितुम अर्हषि ॥

जो जन्मा है उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है और जो मृत्यु को प्राप्त हो गया है उसका जन्म होना भी सिद्ध है। यह जो सिलसिला जन्म-मरण का चलता ही जाना है कोई इसको रोक नहीं सकता। इसलिए इस पर शोक करना या हर्षित होना, बुद्धिमानो का काम नहीं है।

(Unavoidables should not be grieved)

उपर्युक्त, महर्षि याज्ञवल्क्य के कथन से और गीता के श्लोको से सिद्ध हो गया आत्मा की अमरता और अविनाशता और अनलता करें। अब प्रश्न पैदा होता है कि जब आत्मा अमर है और मृत्यु का ग्रास नहीं बन सकता तो फिर इसका हनन कैसे हो सकता है। इस का उत्तर नीचे दिया गया है–

जो लोग दिन रात धन सम्पत्ति कमाने में ही लगे रहते हैं और इस धन से केवल इस शरीर को दिन रात ही सवारने और सजाने में ही अपना सारा धन खर्च कर देते हैं वेद के शब्दों में वह पुरुष और स्त्री आत्महन है। जो चोरी करते हैं, बेईमानी करते हैं, वह भी आत्मा का हनन करने वाले होते हैं। जो लोग कम से कम काम करते हैं और अधिक से अधिक वेतन मागते हैं वह भी आत्म हन है जो अपने सुख के लिए दूसरो को दुखी करते हैं वह आत्म हन है। जो जगत को झूठा मानते हैं और अपने आप को ब्रह्म कहते हैं वह भी आत्महन है। जो आत्मसमर्पण का जीवन न व्यतीत कर ससारी भोगों मे ही फसे रहते ह व भी आत्मा का हनन करने वाले होते हैं।

जो अपनी आत्मा के विरुद्ध चलते है और अपनी आत्मा की आवाज को अनसुनी करते हैं वेद के शब्दो में वह भी आत्म हन हैं। नीतिकार ने कैसा सुन्दर वर्णन किया है।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि व स्तुवन्तु, लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अद्येव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्याय्यात्पथ: प्रविचलन्ति पद न धीरा ॥

नीति निपुण लोग चाहे निन्दा करे, चाहे प्रशसा करे, लक्ष्मी आए तथा चली जाए। आज ही मृत्यु हो जाए अथवा युगो के पश्चात् हो धीर पुरुष किसी भी अवस्था मे न्याय पथ से विचलित नहीं होते अर्थात् वह अपनी आत्मा की आवाज को हमेशा सुनते हैं।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानव सादयेत।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन.

गीता 6/5

मनुष्य को चाहिए कि अपनी आत्मा द्वारा ही अपनी आत्मा का उद्धार करे। अपनी आत्मा को अधोगति मे न पहुचावे। यह आत्मा ही अपना मित्र है ओर अपनी आत्मा ही शत्रु हे।

Saints Percieve the suprewe self in the self by the self

योगी लाग अपनी आत्मा की प्रकाशयुक्त ध्वनि को सुनने वाल परमात्मा के दर्शन करते हैं अपना आत्मा मे अपनी आत्मा द्वारा जो लोग वेदानुकूल अपना जीवन व्यतीत करते हैं वह अच्छी योनिया को प्राप्त करते हैं ओर जो वद प्रतिकूल कर्म करते हैं वह नीच योनियो को जाते हैं। जैसे पशु पक्षी चण्डाल और वृक्ष आदि जहा जीवन को सुधारने का नितान्त अभाव है। यह हैं वह लोग जो आत्मघ्नता को जीवन भर अपनाते हैं।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने अपने अमर ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश में मानव को चार गुण धारण करने के लिए निर्देश किया है। वह हैं–(1) आहार (2) आचार (3) विचार (4) व्यवहार। इन चारो गुणो मे एक की भी कमी रह जाए तो मानव जीवन नष्ट हो जाता है। यदि इन चारो गुणो को मन, वचन और कर्म से अपनाया जाए तो आत्मा दिन प्रतिदिन उन्नत होती जाती है। आत्मघ्नता के विचार उससे दूर भाग जाते हैं।

मेरी आर्य भाइयो और बहनो से यही प्रार्थना है कि महर्षि के आदेश को मन, वचन और कर्म से अपनाना चाहिए। इसी मे सब की भलाई है।

परमात्मा की महानता

❑ ले. स्व. आचार्य राम प्रसाद जी वेदालंकार

किमाग आस वरुण ज्येष्ठ
यत्स्तोतार जिघांससि सखायम्॥
ऋ० 7 86-4॥

हे वरुण । वरणीय वरुण देव। (कि ज्येष्ठम् आगः आस) कौन सा बड़ा भारी [illegible]—अपराध मुझ से हो गया है (यत् स्तोतार सखाय जिघांससि) जो कि तुम मुझ अपने सच्चे स्तोता और सखा की अवहेलना कर रहे हो। अर्थात् मेरे हृदय से चाहने पर भी मुझे दर्शन नहीं दे रहे हो।

इस मन्त्रांश मे जहा उपासक ने अपने को प्रभु का सच्चा स्तोता और सच्चा सखा बताया इसी से ही माना वरुण ने उसको भीतर से पूछ लिया कि क्या सचमुच तू मेरा स्तोता है ? यदि तू मेरा सचमुच स्तोता है मेरे गुणों का स्तवन कीर्तन करने वाला है तो फिर स्तोता मे वे सब गुण किसी न किसी रूप मे शनै शनै आने चाहिए जिन गुणो का कि वह स्तवन शसन करता है।

स्तोता के भी दो रूप होते है एक भाट का और दूसरा स्तोता का। भाट वह (स्तोता) होता है जो राजा के गुणो का स्तवन गुणगान तो करता है पर इसलिए नहीं कि उसको वे गुण प्यारे लगते हैं या उन गुणो से वह प्रभावित होकर वह उन गुणो के अनुरूप आचरण करना चाहता है वरन् वह तो इसलिए राजा के उन गुणो का गान करता है कि किसी तरह उस भाट के गुणगान से राजा प्रसन्न होकर उसको बड़ा भारी इनाम दे दे बड़ी भारी जमीन जायदाद दे दे व कुछ विशेष पद प्रतिष्ठा दे दे। वस उसका उसके उन गुणो से कोई सरोकार नहीं। पर जो सच्चा स्तोता होता है सच्चा भक्त होता है सच्चा साधक होता है तो वह जब उसे प्राणप्रिय प्रभु का गुणगान करता है कीर्तन करता है तो उसके दिल मे न तो उस राजा के धन वैभव की लालसा होती है न ही उसकी जमीन जायदाद की कामना होती है और न ही किसी पद प्रतिष्ठा की भावना होती है वरन् वह तो राजा के जिन न्याय सत्य तेज व उत्तम गुण कर्म स्वभावों का प्रशसा करता है उन गुणों का जो दिल से गुणानुवाद करता है वह इसलिए करता है कि वह उन गुणो को दिल से पसन्द करता है। वह हृदय से चाहता है कि वे सब उत्तम गुण उसके जीवन में भी आ जाए। अर्थात् न्याय सत्य दया स्नेह कृपा आदि उन सब उत्तम गुणो से उसका जीवन भी अभिव्याप्त हो जाए। सच्चा स्तोता तो वह होता है जो अपने जीवन में उन स्तुत्य गुणों को लाकर अपने आराध्य देव सम बनना चाहता है। जिस दिन उपासक मे भक्त मे वे गुण आ जाएगे तो प्रभु उस पर सहज ही प्रसन्न हो जाएगा और उसको सब तरह से कृतार्थ कर देगा।

इसी तरह प्रभु उसे [illegible] कि तू मुझे सखा कहता है पर सखा केवल वह नहीं होता जो उम्र आयु में उसके समान हो वरन् सच्चा सखा तो वही होता है जिसके अपने सखा मित्र के साथ गुण कर्म स्वभाव मिलते हों। अब तुम को झूठ प्रिय है मुझे सच प्रिय है तुमको अन्धकार अविद्या अज्ञान प्रिय है मुझे निस्वार्थता न्याय प्रिय है तो फिर तुम ही बताओ कि हम दोनो का सखापन कैसे बन सकता है ? तू कहने को तो मुझे चाहता है पर मेरी रुचियों को नहीं चाहता। जिस दिन तू अपने गुण कर्म स्वभावों को मेरे जैसा बना लेगा उस दिन से हमम तब सहज ही मित्रता हो जाएगी। उस दिन से फिर तू मेरे सामने होगा और मैं तेरे सामने होऊगा। अब यदि तू मुझे चाहता है तो तू मेरे जैसा बन मेरे जैसा अपने को सच्चा सुच्चा सरल निश्छल पवित्र सौम्य न्यायकारी और सर्व हितकारी परोपकारी बना।

प्रतन्मे वोचो दूडभ
स्वधावोऽव त्वानेना नमसा तुर
इयाम्॥
ऋ 7-86-4

(दूडभ !) हे दुर्लभ दर्शनीय या किसी से न दबने वाले ! (स्वधाव !) हे स्वय सारे जगत् को धारण करने वाले प्रभुवर ! (मे तत् प्रवोच) तू मुझे वह पाप-अपराध बता दिल खोल कर बता और फिर तू मुझे वह प्रकार भी बता कि जिससे मैं अनेना त्वा तुर इयाम्) सर्वथा निष्पाप होकर तुम्हें शीघ्र ही प्राप्त कर सकू।

इस प्रकार साधक को चाहिए कि वह स्वय ही अपने भीतर प्रवेश करता हुआ उस वरणीय वरुण देव से पूछे-जाने समझे कि वह कौन सा पाप है अपराध है दोष है कि जिसके कारण वह उसके अत्यन्त समीप होता हुआ भी उससे दूर है। यो पूछता पूछता साधना से जानता हुआ वह शनै शनै अपने स्वार्थों से लोभ-लालचों से काम क्रोध मोह-अहंकारों से ऊपर उठता जाएगा धीरे-धीरे धुलता जाएगा और अपने प्रियतम प्रभु के सन्निकट होता जाएगा।

[illegible] तो वह [illegible] रहेगा और [illegible] भी करता [illegible] वही बन [illegible] बनाना चाहता है। जैसे एक परिवार [illegible] "अब सब [illegible] सीधे बैठ जाओ। गर्दन सीधी रीढ़ की हड्डी सीधी रखो। सन्ध्या से पूर्व पहले प्रायश्चित करोगे' यह कैसे करें ?" सबने पूछा तब वे बोले-

तुम सब बैठकर पूछो उस वरणीय वरुण देव से पूछो उस प्रियतम प्रभु से कि-'प्रभुवर ! तू बता कि आज प्रात से हमने कौन सी त्रुटि की है? कौन सा पाप अपराध किया है ? भीतर से जो भी ध्वनि आए बिना ननु नच किए हुए तुम उसको मानते चले जाओ और उस एक एक त्रुटि पर एक-एक बार गुरु मत्र (गायत्री मत्र बोल) बोल कर प्रायश्चित करते हुए उस प्यारे प्रभु से प्रार्थना करते जाओ कि-'हे प्रभुवर ! तुम हमें ऐसी शक्ति दो कि पुन हमसे यह त्रुटि कभी न हो पाए। इस तरह प्रत्यह प्रत्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मन '-प्रतिदिन अपने आपको भली भान्ति देखते रहो प्रभु की साक्षी में अपने दोषो को निहारते रहो उन दोषो त्रुटियों एवं भूलो पर पश्चाताप करते रहो तथा भविष्य में जी जान से उनसे बचते रहो तो फिर एक दिन तुम धुल-धुल कर साफ सुथरे हो जाओगे और निश्चय ही उस प्रभु के प्यार और आशीर्वाद के पात्र बन कर उसका दर्शन पा जाओगे।

इस प्रकार परिवार में यह सब होता रहा । एक दिन मा अपने बच्चो के साथ अपने अड़ोस-पड़ोस में एक वृद्ध मा के समीप गई तो उनको दस [illegible] के बारे कि-"आज [illegible] गया। हमने सन्ध्या की, हमने भजन गाए, हमने प्रायश्चित [illegible] किया...।" [illegible] पूछने पर वह दूसरे [illegible] बालक भी बोला-"[illegible] हमने भी सन्ध्या की, भजन गाए, प्रायश्चित किया ध्यान किया।" [illegible] किया [illegible] नहीं बताऊंगा।"

दादी मा बोलीं-"बेटा बता दे मैं तुमको बहुत बढ़िया चीज दूगी।" बच्चा बोला-"नहीं दादी मां मैं नहीं बताऊगा।' वह वृद्धा फिर बोली-"बेटा ! तू बता दे, मैं तुमको यह दूंगी, वह दूगी ।" बच्चा बोला-' अच्छा दादी मा फिर मैं तुमको एक बात बताऊगा।" दादी मा-'अच्छा बेटा तू एक ही बता दे।' बच्चा बोला-'दादी मा-मैंने भगवान् से पूछा-'भगवान् तू बता आज मैंने क्या गलती की ?" दादी मा ! मैंने आज स्कूल में मैडम से कहा-मैंने लघु शका जाना है तो वह बोली-'नहीं बैठो पढ़ो अभी नहीं जाना। फिर पूछा तो भी नहीं जाने दिया। घण्टी बज गई। दूसरी मैडम आई तो मैंने सोचा कि बहुत जोर का पेशाब आया है अत उधर से वह अन्दर आई तो मैं लघुशका होकर पीछे से आकर चुपचाप सीट पर बैठ गया। सो सर्वप्रथम साधना मे सुना कि-"तू बिना पूछे लघु शका गया था तुम्हें मैडम से पूछ के ही जाना चाहिए था और अगर वह भी न जाने देती तो तुम बताते कि लघुशका जोर की आ रही है तो वह अवश्य तुम्हे जाने देती।" सो झट मैंने प्रायश्चित किया एक गायत्री मत्र से और प्रभु से प्रार्थना की कि कल ऐसी शक्ति दे कि फिर मैं ऐसा न करू।" (क्रमश)

आर्य हाई स्कूल मानसा में पुरस्कार वितरण समारोह

5 अक्तूबर 2002 को आर्य हाई स्कूल मानसा में पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें स्कूल के मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया। इस समारोह में आमन्त्रित मुख्य अतिथि स शेर सिंह जी [illegible] एम.एल.ए. हल्का मानसा ने शिक्षा के क्षेत्र मे स्कूल के योगदान की भूरि-भूरि प्रशसा की एवं 3100/- रुपए [illegible] भेंट किए। समारोह की अध्यक्षता, [illegible] श्री [illegible] लाल जी मेहता, प्रधान गऊशाला भवन मानसा ने की।

समारोह का आरम्भ वैदिक मन्त्रों के उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात् विद्यार्थियों ने शिक्षा देश प्रेम एवं [illegible] से सम्बन्धित [illegible] एक प्रभावशाली [illegible] कार्यक्रम प्रस्तुत किया। समारोह को श्री सुरेन्द्र कुमार जी [illegible] श्री प्रमोद [illegible] श्री अमरनाथ शर्मा आदि ने सम्बोधित किया। स्कूल की सालाना रिपोर्ट श्री सुनील कुमार ने पढ़ी। अन्त में श्री सुरेन्द्र [illegible] जी ने [illegible] धन्यवाद किया।

—कृष्ण कुमार, मन्त्री

सम्पादकीय.....

सभा कार्यालय में प्रिंसिपलों की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित स्कूलों का कार्य सुचारू रूप से चले इसके लिए आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा ने गत दिनों सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर में सभा से सम्बन्धित सभी स्कूलों के प्रिंसिपलों की एक बैठक बुलाई थी जिसमें सभी प्रिंसिपलों ने भाग लिया इस अवसर पर सभा व आर्य विद्या परिषद के उप प्रधान श्री डी.पी. सहगल एडवोकेट ने इस सैमीनार का उद्घाटन करते हुए और सभी प्रिंसिपलों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पंजाब के शिक्षा मन्त्री बहुत ही सुयोग्य व्यक्ति हैं आर्य शिक्षा संस्थाओं की उन्नति में हम उनका सहयोग लेंगे। आर्य शिक्षा संस्थाओं में आर्य समाज की जानकारी दी जानी आवश्यक है। इसलिए महीने में एक बार प्रत्येक संस्था में यज्ञ होना चाहिए। पहले भी ऐसा होता था और उस समय बच्चों को आर्य समाज की जानकारी भी दी जाए।

श्री देवेन्द्र नाथ जी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद ने सभी प्रिंसिपलों को सम्बोधित करते हुए कहा कि सभी स्कूल कालेजों का कार्य अब सुचारू रूप से चलना चाहिए यदि किसी प्रिंसिपल के सामने स्कूल को चलाते समय कोई समस्या आती है तो वह जिस समय चाहे मुझे मिल सकता है। आर्य विद्या परिषद हर समय आपके साथ खड़ी है परन्तु कार्य होना चाहिए। मैं अब जब भी नया स्टाफ स्कूलों मे रखता हूं तो प्रिंसिपलों को पूछ कर रखता हूं जैसे अध्यापकों की उन्हें जरूरत है वैसे ही अध्यापक रखे जाते हैं। इसलिए अब आप सभी अध्यापक नैतिक शिक्षा की ओर ध्यान दें। महीने के अन्तिम शनिवार सारा स्टाफ व विद्यार्थी बैठ कर हवन-यज्ञ करें। प्रत्येक पर्व के अवसर पर स्कूलों में हवन यज्ञ अनिवार्य रूप से होना चाहिए। स्कूल का नया सत्र यज्ञ से आरम्भ होना चाहिए। यज्ञ के लिए पहले हम अध्यापकों को तैयार करें और फिर वह अध्यापक बच्चों को तैयार करें। मैं कई स्कूलो मे गया हू परन्तु वहां मुझे अभी वह कुछ देखने के लिए नहीं मिला जो मैं देखना चाहता हूं। हमारे पूर्वजों ने बहुत कुछ किया है इतनी बड़ी-बड़ी शिक्षा संस्थाए खड़ी की हैं परन्तु हम इन्हे ठीक ढंग से चला नहीं पा रहे। हम शीघ्र ही धर्म शिक्षा के लिए पुस्तकें तैयार कर रहे हैं। इसलिए सभी स्कूलों में अनिवार्य रूप से धर्म शिक्षा पढाई जाए। हमने इस बार स्लेबस भी तैयार करवाया हैं। चलते समय सभी प्रिंसिपल अपने-अपने स्कूल के लिए स्लेबस भी साथ ले जाएं।

श्री देवेन्द्र नाथ जी ने बताया कि सभा प्रधान श्री प हरबस लाल जी ने एक "हरबंस लाल राजरानी धर्मार्थ ट्रस्ट" बनाया हुआ है। वह उससे हमें पूरा-पूरा आर्थिक सहयोग देंगे। हम स्कूलों में भाषण प्रतियोगिताएं रखें और प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले बच्चों को पारितोषिक दिए जाएं। हम प्रान्तीय स्तर पर आयोजित समाराहों मे भी बच्चों को पारितोषिक देगे।

सभी प्रिसिपल स्कूल फण्ड का विशेष ध्यान रखे किसी भी फण्ड का रुपया गल्त खर्च नहीं होना चाहिए यह प्रिंसिपल की जिम्मेवारी है। आर्य शिक्षा संस्थाओ के सभी अध्यापक आर्य समाज के सदस्य बनें और आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए आर्य समाज के अधिकारियों को सहयोग देवे। प्रत्येक स्कूल में आर्य समाज के महापुरुषो व बलिदानियों के चित्र लगे होने चाहिएं। स्कूल में मुख्य द्वार के सामने महर्षि दयानन्द का बड़ा चित्र लगाया जाए और गायत्री मन्त्र लिखा होना चाहिए। प्रिंसिपल के आफिस में भी महर्षि का चित्र होना चाहिए। बच्चो की एक जैसी यूनिफार्म हो, टीचरों व प्रिंसिपलो की भी एक सी यूनिफार्म होनी चाहिए। जो शिक्षा संस्था जिस आर्य समाज से सम्बन्धित है उस आर्य समाज के कार्यक्रमो में अध्यापकों व प्रिसिपल व उस स्कूल के बच्चों को जाना चाहिए। प्रिसिपल व मैनेजमैंट मिल कर स्कूलों की उन्नति के लिए कार्य करे। एक दूसरे को सहयोग दें। स्कूलों में संस्कृत की पढाई के लिए बच्चों को प्रेरित करें। जिन स्कूलों के पास संस्कृत के टीचर नहीं है और संस्कृत की पोस्ट भी नहीं है वह स्कूल की तरफ से स्कूल फण्ड से टीचर रखें। खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन स्कूल मे करें, फिर प्रान्तीय स्तर पर करें। वर्ष भर की स्कूल की गतिविधियों को लोगों तक पहुचाने के लिए एक मैगजीन अवश्य छपवाएं और उसमें हिन्दी अंग्रेजी, पंजाबी सैक्शन तैयार करें। उसमें बच्चों के लेख, कविताएं व स्कूल की पूरी गतिविधिया देवें। वर्ष में एक दो बार सांस्कृत कार्यक्रम भी रखें ताकि बच्चों को अपने देश की संस्कृति का पता रहे। हम चाहते हैं कि प्रत्येक स्कूल में आर्य वीर दल या आर्य युवक परिषद की स्थापना की जाए। उनकी एक सी वर्दी हो, उन्हें विशेष रूप से तैयार किया जाए और जब किमी आर्य समाज का कोई सम्मेलन हो उसके प्रबन्ध में उनसे सहयोग लिया जाए। कम से कम 50 बच्चे प्रत्येक स्कूल ऐसे तैयार करे।

इस अवसर पर श्री राधेश्याम जी मोहिल ने भी अपने सुझाव दिए। प्रिं. शान्ति जिन्दल भठिण्डा प्रि बी.के वर्मा लुधियाना, प्रिंसिपल आर्य हाई स्कूल रामां तथा अन्य महानुभावों ने भी अपने-अपने विचार रखे और विश्वास दिलाया कि वह अपने स्कूलों का कार्य सुचारू रूप से चलाने में सभा को व स्कूल की मैनेजमैंट को अपना पूरा सहयोग देंगे। आशा की जा रही है कि अब सभी आर्य शिक्षा संस्थाएं बहुत उन्नति करेंगी।

आर्य समाज ने शिक्षा संस्थाएं आर्य समाज की विचारधारा व वेद के प्रचार के लिए आरम्भ की थी। आर्य शिक्षा संस्थाओं ने अपने प्रारम्भिक काल में बहुत कार्य किया है। दूर-दूर से विद्यार्थी इन शिक्षा संस्थाओं में पढ़ने के लिए आते थे परन्तु इस समय इस दिशा में कार्य नहीं हो रहा। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने निश्चय किया है कि सभा से सम्बन्धित सभी शिक्षा संस्थाओं का आर्य समाजीकरण किया जाएगा ताकि शिक्षा संस्था में प्रवेश करते ही पता चल जाए कि यह आर्य समाज की शिक्षा संस्था है।

—धर्मदेव आर्य

आर्य समाज मोहाली का समारोह

आर्य समाज मोहाली को स्थापित हुए 25 वर्ष हो गए हैं। यह आर्य समाज आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित है। इसमें एक यज्ञशाला, वाचनालय तथा कुछ कमरे बने हुए हैं। यज्ञशाला व वाचनालय के सामने खाली स्थान है। इसी स्थान पर 27-10-2002 को इस आर्य समाज का रजत जयन्ती समारोह मनाया गया।

इस अवसर पर प्रातः 9 बजे से 10.30 बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ किया गया जिसके मुख्य यज्ञमान श्री वेदव्रत जी शर्मा सपत्नीक थे। उनके साथ श्री दिनेश कुमार, डॉ० ईश्वर चन्द्र स्याल, श्री चरणदास जी आर्य सपत्नीक यज्ञमान थे। श्रीमती देव कुमारी भी यज्ञमान थी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं विजय कुमार जी शास्त्री थे। श्री सुन्दर लाल जी शास्त्री, श्री पं. राकेश जी व श्री पं. धर्मदेव जी आर्य कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने यज्ञमानों को आशीर्वाद दिया।

यज्ञ के पश्चात् ध्वजारोहण श्री हरनाम दास जी जौहर एडवोकेट ने किया। सम्मेलन की कार्यवाही श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न की अध्यक्षता में आरम्भ हुई। इसके संयोजक श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पजाब तथा श्री प्रेम भारद्वाज सभा कोषाध्यक्ष थे। मंच संचालन श्री पं. धर्मदेव जी आर्य ने किया। वाचनालय उद्घाटन नगर निगम मोहाली के प्रधान श्री स कुलवन्त सिंह ने किया। मुख्य द्वार का शिलान्यास डा. श्री ईश्वर चन्द्र जी स्याल ने किया।

इस अवसर पर आर्य समाज सैक्टर 22 चण्डीगढ़ के सभी अधिकारी वहा पधारे थे। श्री रामरत्न जी महाजन जो सभा के साहित्य विभाग के अधिष्ठाता व आर्य समाज सै 22 चण्डीगढ़ के प्रधान हैं। श्री बुद्धराम जी आर्य मन्त्री, श्री साधु राम जी शर्मा, श्री देसराज जी थापर तथा दूसरे कई सदस्य उपस्थित थे। आर्य समाज सै 7 चण्डीगढ के पुरोहित श्री राकेश जी तथा अन्य सदस्य, आर्य समाज पंचकूला के अधिकारी, आर्य समाज सै 40 चण्डीगढ़, आर्य समाज सै. 12 चण्डीगढ़ के सदस्य, केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ़ के अधिकारी, श्री रघुनाथ राय, नगर के प्रतिष्ठित महानुभाव श्री ऋषभ जैन, श्री निर्मल कौशल, श्री सुनील शर्मा, श्री राकेश जी, श्री घनश्याम बांसल कौंसलर, श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा कौंसलर तथा अन्य कई महानुभाव वहां उपस्थित थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियो ने निश्चय किया है कि जो भी आर्य समाज उन्हें आमन्त्रित करेगी वह वहां अवश्य जाएंगे। श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा ने बोलते हुए कहा कि सभी आर्य समाजों के वार्षिक उत्सव होने चाहिए और उन उत्सवों में जिले की सभी आर्य समाजों के सदस्यों व अधिकारियों को आमन्त्रित किया जाना चाहिए। सभी स्कूल कालेजों में धर्म शिक्षा को विशेष रूप से आरम्भ किया जाए।

श्री प्रेम भारद्वाज जी सभा कोषाध्यक्ष ने वेद की महत्ता बताते हुए आज आर्य समाज द्वारा किए जा रहे कार्यो का वर्णन किया। श्री सरदारी लाल जी आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि हमने आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करना है। हमें सगठित होकर कार्य करना चाहिए। जिला स्तर पर बडे-बड़े सम्मेलन करने चाहिए वेद के प्रचार व प्रसार के लिए कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर श्री प० विजय कुमार जी शास्त्री व श्री प० सुन्दर लाल जी शास्त्री के भी प्रभावशाली उपदेश हुए। श्री प. राकेश जी तथा प्रसिद्ध गायक श्री जगत वर्मा जी के शिक्षाप्रद भजन हुए।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आर्य समाज के प्रधान डा विधिचन्द मिन्हास, मन्त्री श्री डा. श्रुतिकान्त आर्य, कोषाध्यक्ष श्री राज कुमार ने विशेष प्रयास किया और इसे सफल बनाया। जालन्धर से आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर के प्रधान श्री कमल किशोर जी, कोषाध्यक्ष श्री सुदेश जी आर्य, श्री राकेश जी चौधरी विशेष रूप से मोहाली पहुंचे थे।

हमे प्रसन्नता है कि अब पंजाब मे आर्य समाजें अपने उत्सव भी कर रही हे और विशेष समारोह भी कर रही हैं जिस से पता चलता है अब पजाब में वेद पचार का कार्य पहले से अधिक हो रहा है। हमारा उन सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि जिनके अभो तक वार्षिक उत्सव नहीं हुए वह अपने उत्सव आयोजित करें सभा उनके प्रबन्ध में उन्हें पूरा-पूरा सहयोग देगी। सभा के वर्तमान अधिकारी सभा प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा के निर्देशानुसार उनकी देख रेख में कार्य कर रहे हैं। उन्होने कहा कि वेद प्रचार के कार्य को पंजाब में तीव्र कर दिया जाए इसलिए सभी अधिकारी वेद प्रचार के कार्य में जुट गए हैं।

आर्य समाज मोहाली की ओर से सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, सभा कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज जी, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, श्री राम रत्न जी महाजन अधिष्ठाता साहित्य विभाग, कार्यालयाध्यक्ष श्री धर्म देव आर्य, श्री पं विजय कुमार शास्त्री, श्री पं. सुन्दर लाल जी शास्त्री, श्री जगत वर्मा जी भजनोपदेशक, श्री कमल किशोर जी, डा. वेदव्रत जी शर्मा, श्री डा ईश्वर चन्द्र जी स्याल, श्री विधिचन्द जी मिन्हास, श्री साधुराम जी शर्मा तथा अन्य बहुत से महानुभावों को सम्मानित किया।

हम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से आर्य समाज मोहाली के अधिकारियो का धन्यवाद करते हैं आशा करते है कि अन्य आर्य समाजें भी इसी प्रकार अपने वार्षिकोत्सव करके वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाएं।

—धर्मदेव आर्य

यज्ञोवै श्रेष्ठतमं कर्म

❑ ले० पं० बनारसी दास आर्य, आर्य समाज नवांकोट, अमृतसर

वेद भगवान् के अनुसार यज्ञ सब कर्मों से उत्तम माना जाता है। ऐसे कर्म जो करने योग्य हैं। अत: यज्ञ जैसे उत्तम कर्मों को अपने घरों के अन्दर नित्यप्रति करना चाहिए। ऐसा करने से प्रभु की आज्ञा का पालन भी होता है तथा अपना व संसार का भला भी होता है। परमपिता परमात्मा का महान यज्ञ तो चौबीस घण्टे चलता रहता है। यह सारी पृथ्वी उसका हवन कुण्ड है। ये भिन्न-भिन्न प्रकार की वनस्पतियां उसकी सामग्री है। सूर्य की उष्णता उसकी अग्नि है और यह वर्षा उसका घी है। इस महान यज्ञ के अन्दर व्यक्ति अपने-अपने कर्मो की आहुति डालता है।

मनुष्य इस संसार में क्यों आता है ? वेद भगवान् ने बड़े सुन्दर शब्दों से इस प्रश्न का उत्तर दिया है। फिर कहा कि उसके आने का प्रयोजन क्या है? वास्तव में मनुष्य ज्ञान, कर्म व उपासना के लिए इस संसार में आता है। ज्ञान किस का प्राप्त करना है ? अर्थात् यह जानना है कि आत्मा, परमात्मा तथा प्रकृति क्या है। कौन से कर्म करने हैं ? अर्थात् अपनी आत्मा के उत्थान के लिए शुभ कर्म करने हैं। इसीलिए तो वेद कहता है-उद्यानं ते पुरुष: नावयानम् अर्थात् हे मानव, मैंने तुम्हें नीचे गिरने के लिए नहीं बनाया बल्कि ऊपर उठने के लिए बनाया है। ऐसे कर्म कर जिनसे तेरा उत्थान हो। तुझे नजरें नीचे करके न चलना पड़े। फिर कहा उपासना किस की करनी चाहिए अर्थात् प्रभु की भक्ति करना, उसकी आज्ञा मानना, उसका ध्यान करना। प्रभु ने मनुष्य को बुद्धि विशेष प्रदान की है ताकि व्यक्ति सोच समझ सके कि करने योग्य कर्म कौन सा है और त्यागने योग्य कर्म कौन सा है। मनुष्य का सारा जीवन गुजर जाता है लेकिन उसे यह ही पता नहीं चलता कि करने योग्य कर्म कौन सा है तथा त्यागने योग्य कर्म कौन सा है। आज का मानव त्यागने योग्य कर्मो को मजबूती से पकड़ता है तथा करने योग्य कर्मो को आसानी से छोड़ता जा रहा है। इसीलिए दुख बढ़ रहे हैं।

वैसे तो मनुष्य जो भी कर्म करता है उसका फल उसे अवश्य ही भोगना पड़ता है। कोई भी व्यक्ति कर्मफल से छूट नहीं सकता। मनुष्य के पाप कर्म पहाड़ की भांति उसके सामने आकर खड़े हो जाते हैं। "अवश्यमेव भोगत्वं कृतं कर्म शुभाशुभम्" अर्थात् जो भी शुभ, अशुभ कर्म मनुष्य करता है, उसका फल उसे अवश्य ही भोगना पड़ता है। कर्म फल के बिना पीछा नहीं छूटता। चाहे मनुष्य एक योनि से दूसरी योनि में चला जाए, दूसरी से तीसरी में जितनी योनियों में क्यों न चला जाए, फिर भी कर्मफल भोगे बिना छुटकारा नहीं मिलता परन्तु आज भिन्न-भिन्न मतों वाले जनता को गुमराह करते हैं कि जैसे मर्जी पाप करो, गुरु की शरण में आ जाने से सारे पाप छूट जाते हैं। मुसलमान कहते हैं कि आप जैसा मर्जी पाप कर्म करते रहो परन्तु एक बार अपना इमान मोहम्मद पर ले आओ सारे पाप कर्म धुल जायेंगे। ईसाई भी लोगों को ऐसे ही गुमराह करते हैं। कहते हैं कि जैसे मर्जी पाप कर्म करते रहो परन्तु एक बार अपना ईमान ईसा मसीह पर ले आओ, आप के सारे पाप क्षमा हो जायेंगे। इसी प्रकार पौराणिक हिन्दू भी यह कहते हैं कि जैसे मर्जी पाप कर्म करते रहो, एक बार गंगा में स्नान करने से सारे पाप कर्म धुल जाते हैं। परन्तु वेद भगवान् जो ईश्वरीय ज्ञान है, वो कहता है कि कर्म भोगे बिना पीछा नहीं छोडते। कर्मफल अवश्य ही भोगना पड़ता है। यदि गुरु की शरण में जाने से पाप धुलते हों या मोहम्मद की शरण में जाने से या ईसा मसीह की शरण में जाने से अथवा गंगा में स्नान करने से पाप धुलते हों तो संसार में पापाचार चरम सीमा तक बढ़ जायेगा। पापी को पाप करने का लाईसैंस मिल जाएगा। जितना पाप साल भर करेंगे, गंगा में स्नान करके पाप धो लेंगे। फिर नये सिरे से पाप करने के लिए चल पड़ेंगे। इस प्रकार संसार में पाप कम नहीं होगा बल्कि निरन्तर बढ़ता रहेगा।

एक बार देवर्षि नारद मुनि जी संसार भ्रमण करते हुए हरिद्वार की ओर जा रहे हैं। क्या देखते हैं कि बड़ी संख्या में जनता गंगा स्नान के लिए जा रही है। नारद मुनि जी ने प्रजा से पूछा कि ये सभी लोग किधर जा रहे हैं। प्रजा ने उत्तर दिया कि गंगा स्नान करने से पाप धुल जाते हैं। इसीलिए गंगा स्नान के लिए जा रहे हैं। नारद मुनि जी सोचते-सोचते एक प्रश्न लेकर श्री कृष्ण जी के पास आ गये। नमस्कार शिष्टाचार आदि के बाद नारद जी ने श्री कृष्ण से प्रश्न किया, क्या गंगा में डुबकी लगाने से पाप धुल जाते हैं। श्री कृष्ण जी ने उत्तर दिया-नारद जी ऐसा बिल्कुल असम्भव है। "अवश्यमेव भोगत्वं कृतं कर्म शुभाशुभम्"। नारद जी से कहा-देवर्षि आप गंगा मईया से प्रश्न कीजिए कि गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं। देवर्षि नारद जी गंगा घाट पर आकर गंगा मैय्या से प्रश्न करते हैं कि हे गंगा मैय्या ये जो प्रजा है, कहती है कि गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं, क्या यह सत्य बात है ? यदि सत्य है तो आप सारी प्रजा के पाप अपने अन्दर समा लेती हैं इसलिए आप पापिनी कहलाएंगी। गंगा मैय्या उत्तर देती हैं। हे नारद, मैं पापिन नहीं हूं क्योंकि मैं इस जल को अपने पास नहीं रखती हूं। मैं यह जल समुद्र को दे देती हूं तथा सारे पाप जल में बह कर समुद्र में चले जाते हैं। इसलिए समुद्र पापी है। नारद मुनि समुद्र देवता के पास चले गए और कहने लगे कि जनता ने अपने पाप गंगा मैय्या को दिये। गंगा मैय्या पाप अपने पास न रख कर समुद्र को दे दिए हैं इसलिए समुद्र देवता आप पापी हैं। समुद्र देवता कहने लगा कि नारद जी मैं भी पापी नहीं हूं। क्योंकि पाप भरा जल वाष्प बन कर ऊपर उड़ जाता है और बादल बन जाते हैं। इसलिए मेघ देवता पापी हैं, मैं नहीं। नारद मुनि जी मेघ देवता के पास जा कर सारी बात सुनाते हैं और कहते हैं कि आप पापी हैं। मेघ देवता कहते हैं कि मैं भी पापी नहीं हूं क्योंकि मैं जल को अपने पास नहीं रखता। पाप भरा जल वर्षा के रूप में पृथ्वी देवता को दे देता हूं। इसलिए पृथ्वी देवता पापी है। नारद जी पृथ्वी देवता के पास आकर सारी बातें कहते हैं कि जनता ने अपने पाप गंगा को दिये, गंगा ने समुद्र देवता को दे दिए, समुद्र देवता ने पाप मेघ देवता को दिए, मेघ देवता ने सारे पाप आपको दे दिए हैं, इसलिए आप पापी हैं। पृथ्वी देवता कहने लगा मैं भी पापी नहीं हूं। क्योंकि मैं पाप भरे जल को अपने पास नहीं रखता। इसी जल से मैं कई प्रकार का अनाज व चारा पैदा करके, दोबारा मनुष्यों व पशु पक्षियों को उनका पाप भरा अन्न इन्हें वापिस कर देता हूं। धर्मी लोग उसी अन्न को ग्रहण करके फलते फूलते हैं। जबकि पापी पाप भरे अन्न को खाकर, दु:खों में, कष्टों, क्लेशों में फंसे रहते हैं। जनता पापों को गंगा में छोड़ कर आती है लेकिन वही पाप उन्हें अन्न के रूप में फिर प्राप्त हो जाते हैं। क्योंकि एक कर्म का फल भोगे बिना पीछा नहीं छूटता। जो मनुष्य यह समझते हैं कि कर्मफल भोगे बिना ही छुटकारा मिल जाएगा, यह उनकी बहुत बड़ी भूल है। मानव का पाप ही मानव के सामने आता है। ऊंचे से ऊंचा कर्म करो जिस से प्रकृति आपके अधीन होकर आपकी इच्छानुसार फल देने वाली बने परन्तु ऐसा कर्म न करो जिससे प्रकृति आपके ऊपर सवार हो जाये। श्रेष्ठ कर्मो से परमात्मा की गोद में जाने का यत्न करो और यज्ञ से बढ़ कर श्रेष्ठ कर्म कोई है नहीं।

महर्षि दयानन्द जी ने पांच महायज्ञ प्रतिदिन करने के लिए विशेष बल दिया है परन्तु इनमें बलिवैश्वदेव यज्ञ का अपना महत्व है। विशेषकर इसका सम्बन्ध माताओं बहनों से होता है क्योंकि माताएं रसोई बनाती है। पुराने जमाने में माताएं भोजन बनाने से पहले एक पेड़ा आटे का अलग रख लेती थी या पहली रोटी पका कर गाय, भैंस, कुत्ते, कौए आदि को देती थी। आज भी यह प्रथा बहुत से घरों में देखने को मिलती है। इससे क्या होता है ? इससे प्रभु की आज्ञा का पालन होता है। प्रभु प्रसन्न होते हैं। घर में सुख शान्ति आती है। इसलिए वेद के अन्दर आज्ञा दी गई है कि ब्रह्माण्ड में जितनी भी योनियां हैं उनके कल्याण के लिए दस आहुतियां यज्ञ में छोड़े। कभी-कभी देखने को मिलता है कि घरों के अन्दर धन दौलत खूब आता है। पति भी खूब धन कमाता है परन्तु घर के अन्दर सुख शान्ति नहीं। घर में कलह क्लेश रहता है। बीमारी रहती है। घर वाले निराश हो जाते हैं कि ईश्वर ने इतना धन दौलत दिया है फिर भी सुख नाम की वस्तु जीवन में नहीं। पतिदेव प्रतिदिन की तरह काम पर जाते हैं। पत्नी अपनी पड़ोसन से दुख बांटती हुई कहती है कि बहन जी हमारे घर में धन दौलत की कोई कमी नहीं परन्तु बीमारी व अशान्ति ने हमारी कमर तोड़ दी है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

यज्ञोवै श्रेष्ठतम्................

(पृष्ठ 4 का शेष)

पता नहीं हमारे घर को किसी की नजर लग गई है। पड़ोसन मशविरा देती है कि एक ज्योतिषी बहुत सयाने हैं। उनसे मिल कर इसका समाधान पूछना चाहिए। घर की पत्नी अपनी पड़ोसन को साथ लेकर ज्योतिषी जी के पास जाती है। ज्योतिषी जी को अपनी समस्या बताती है तथा इसका उपाय पूछती है। ज्योतिषी जी कहते हैं कि इसका उपाय है लेकिन पहले आप मेरी दक्षिणा निकालिए। माता, बहन दक्षिणा निकाल कर ज्योतिषी जी के हाथ पर रख देती है। ज्योतिषी जी कहते हैं कि राहु, केतु व शनि आपके घर में बैठे हुए हैं। इसीलिए घर में बीमारी, कलह क्लेश रहता है। इनको घर से निकालने के लिए आटे का पेड़ा या पहली रोटी गाय, भैंस व कुत्ते को दिया करो। बिल्ली को दूध व चिड़ियों को दाना डाला करो। कीड़ों का भौंण बना होता है। वहां चावल डाला करो। ब्राह्मणो को भोजन करवाया करो। पिंगलवाडे में दान आदि दिया करो। भूखे को रोटी व रोगी को दवा आदि दिया करो। माता घर आकर ऐसा ही करना आरम्भ कर देती है। धीरे-धीरे चार छः महीने के बाद दिन फिर जाते हैं। घर से बीमारी गायब तथा सुख शान्ति घर में लौट आती है। अब विचारने वाली बात है कि राहु, केतु, शनि आखिर है क्या ? इनका नाम सुनते ही व्यक्ति घबरा जाता है। ये कोई भूत प्रेत नहीं। ये तो ईश्वर के ही नाम हैं। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्दर ईश्वर के 100 नामों से अधिक का वर्णन किया है। उनमें से राहू, केतु व शनि भी ईश्वर के ही तीन नाम हैं। वास्तव में वह परिवार प्रभु की दया से वंचित है। प्रभु उस परिवार से अप्रसन्न हैं। प्रभु से खुशियां प्राप्त करने के लिए उसे प्रसन्न करना आवश्यक है। घर में यज्ञ आदि श्रेष्ठ कर्म करते रहना चाहिए। अपनी नेक कमाई से कुछ भाग निकाल करके दान आदि के रूप में देते रहना चाहिए। प्रभु को प्रसन्न करने का एक बढ़िया तरीका जो वेद ने बताया है, वह है यज्ञ करो तथा गाय भैंस आदि पशु-पक्षी, चाहे जल में रहने वाले हों, चाहे थल में या नभ में विचरने वाले हों उनको नेक कमाई से कुछ न कुछ निकाल कर जरूर दो। क्योंकि मनुष्य के अतिरिक्त जितनी भी योनियां हैं। उनकी रोटी रोजी का कोई साधन नहीं। न तो उनके कारखाने हैं, न दफ्तर, न दुकानदारी तथा उनका पालन-पोषण पूर्णतया गृहस्थियों पर निर्भर करता है। इसलिए वेद ने आज्ञा दी है कि अपनी रोटी में मे थोड़ा भाग निकाल कर गाय भैंस, कुत्ते, बिल्ली, कौए आदि जानवरों को भी दो। क्योंकि इससे प्रभु प्रसन्न होते हैं। प्रभु की आज्ञा का पालन होता है। घर में सुखों की वर्षा होती है।

मानव समझता है कि यह जो कमाई है, यह मेरी अकेले की है। यदि व्यक्ति ऐसा सोचता है तो वह गलत है। क्योंकि हर व्यक्ति की कमाई में दूसरों का हिस्सा मौजूद होता है। हम जो रोटी खाने हैं, उसके अन्दर भी दूसरों का हिस्सा मौजूद होता है। हमने कभी विचारा है कि एक रोटी कैसे बनती है? सब से पहले एक लकड़ी की हल बनाई जाती है। कोई कारीगर उसको बनाता है फिर लोहे का फाला भट्ठी में बनाया जाता है। लोहे को कोई खोद कर जमीन से निकालता है। हल तैयार होने के बाद उसके आगे दो बैल जोते जाते हैं। किसान खेत मे हल चलाता है फिर खेत में बीज डाला जाता है फिर लकड़ी का सुहागा कोई कारीगर बनाता है। उसके आगे दो बैल जोते जाते हैं। किसान सुहागा चला कर खेत को समतल कर देता है। फिर किसान छोटी-छोटी कियारियां बनाता है। कुएं पर दो बैल जोते जाते हैं। कुएं से पानी निकाल कर खेतों को जाता है। कुछ दिनों के बाद पौधे के अंकुर फूट पड़ते हैं। किसान कुएं से पानी निकाल कर खेतों को देता हैं। धीरे-धीरे पौधा बढ़ने लगता है। देखते ही देखते कुछ दिनों में पौधा बड़ा हो जाता है। अब उसे भूर लगने लगता है। चिड़ियां आकर उस भूर को खराब करने की कोशिश करती हैं। किसान फसल को बचाने के लिए चिड़ियों को उड़ाता है। दाना लग जाता है। किसान अपने बच्चों की भांति गेहूं की फसल की देखभाल करता है। कीड़ा लगने का डर रहता है। फसल को कीड़े से बचाने के लिए किसान कीडे मार दवाई का छिड़काव करता है। हजारों लाखों कीड़े मारे जाते हैं। किसान उनको क्यों मारता है? इसलिए ताकि फसल खराब न हो तथा सही सलामत पक कर तैयार हो गये। मनुष्य का पेट भरने की खातिर किसान फसल को बचाता है। एक दिन फसल पक कर तैयार हो जाती है। कई लोग लग कर फसल की कटाई करते हैं। फिर पशु जोत कर गहाई की जाती है। गेहूं को बोरियों में बन्द करके मन्डियों में लाया जाता है। वहां से गेहूं दुकानों में तथा फिर चक्की पर पिसाई करके आटा तैयार किया जाता है। वहां से व्यक्ति आटा खरीद कर लाता है और तब जाकर एक रोटी तैयार होती है। एक बोरी के लिए कितने इन्सानों ने, कितने पशुओं ने काम किया। कितने कीड़े मकौड़ों ने मानव जाति के लिए अपने बलिदान दे दिए। इन सबका हिस्सा मनुष्य की कमाई में मौजूद होता है। व्यक्ति क्या करता है? प्लेट में रोटी डाली। अलग से बैठ कर खा ली। मुंह हाथ साफ किए, अपना साईकल, स्कूटर लिया, दफ्तर, कारखाने को चल दिए। व्यक्ति सोचता ही नहीं कि जो भोजन उसने अभी किया है उसमें दूसरों का हिस्सा भी मौजूद था जो उसने खा लिया। अब दूसरों का हिस्सा खाने से पाप की गठड़ी भारी होती जाती है। इसलिए रोटी बनाने से पहले आरे का एक पेड था पहली रोटी पशु पक्षियों के लिए निकालकर अलग रख लो। खाना खाने से पहले एक चप्पा रोटी तोड कर अलग रख लो। उस हिस्से को पशुओ को दो अथवा छोटा-छोटा करके चिडियों को डालो। बिल्ली को थोड़ा दूध डालो तथा कीड़ो के भौण पर चावल आदि डालो। ऐसा करने से सुख शान्ति मिलेगी। ज्योतिषी ने यह रहस्य की बात वेद से ही तथा अपनी दुकान चला कर बैठ गया। यदि आप घरों के अन्दर हवन यज्ञ करते रहेंगे तथा पशु, पक्षी, कीट, पंगु, कंगाल आदि को नेक कमाई से अन्न दान करते रहोगे तो फिर आप को ज्योतिषियों के पास जाने की जरूरत नहीं पडेगी। गुरु देव दयानन्द महाराज भी अपने भोजन में से रोटी निकाल कर पशु-पक्षियों को दिया करते थे।

गीता में अर्जुन श्री कृष्ण के पास जाकर कहते हैं कि मैंने गुरु से कई प्रकार की विद्याएं भी सीखी हैं। धर्म को भी जानता हूं, समझता हूं, फिर भी मुझे सुख नहीं मिलता। मन को शान्ति नहीं मिलती। श्री कृष्ण कहते हैं कि निष्काम कर्म करो, सुख की प्राप्ति होगी। अर्जुन कहते हैं कि मैं निष्काम कर्म नहीं कर पाता। जब भी कोई कर्म करने लगता हूं तो मन में पहले ही योजना बन जाती है कि यह काम करने से मुझे क्या लाभ होगा। मेरा स्वार्थ जाग पड़ता है। सारा लाभ ले कर मैं दूसरों से आगे निकल जाना चाहता हूं। कई प्रकार के विचार मन में पैदा हो जाते हैं जो मुझे निःस्वार्थ कर्म करने से रोक लेते हैं।

श्री कृष्ण कहने लगे कि यदि निःस्वार्थ कर्म नहीं होता तो ईश्वर की शरण में चले जाओ। इससे भी सुख की प्राप्ति हो जाएगी। अर्जुन कहने लगे कि यह भी मुझ से नहीं हो पाता क्योंकि जब कोई अच्छा कर्म हो जाता है तो मैं कहता हूं कि मैंने किया है और यदि कोई बुरा कर्म हो जाये अथवा काम बिगड़ जाए तो मैं कह देता हूं कि ईश्वर ने किया है। अच्छे कर्मो का यश मैं लेता हूं और बुरे कर्मो का अपयश ईश्वर के सिर मढ़ देता हूं।

श्री कृष्ण कहने लगे कि ठीक है, निष्काम कर्म नहीं कर सकते, ईश्वर की शरण में भी नहीं जा सकते तो एक काम और करो। इससे भी सुख की प्राप्ति होगी। अर्जुन कहते हैं, भगवान मुझे बताईये, वह कौन सा रास्ता है। श्री कृष्ण कहते हैं, त्याग करना सीखो। तुम्हें सुख की प्राप्ति हो जाएगी। अर्थात् अपने मन में इदं न ममं की भावना उत्पन्न करो। ज्यों-ज्यो ''न मम'' की भावना मन में प्रबल होती जाएगी, त्यों-त्यों सुख का अनुभव होना शुरू हो जाएगा।

अपने अहम् को छोड कर जीना सीखो। त्याग मे सुख है। त्याग का यह तात्पर्य नहीं कि सारी पूंजी लुटा दो बल्कि अपनी कमाई में से कुछ भाग दूसरों के साथ बांटिए। अपने हाथ से कुछ छोड़िए, त्यागिए, दान कीजिए। यही बात यज्ञ सिखाता है और इसी में सुख है।

(1) मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर। तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागत हे मोर॥

(2) अब सौंप दीया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में। है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में॥

(3) मिटा अपनी हस्ती को, अगर तूं मरतबा चाहें। कि दाना खाक में मिल कर गुले गुलजार होता है॥

इस प्रकार ''इदं न ममं'' की भावना जब मन में जागृत हो जाती है तो श्री कृष्ण जी कहते हैं कि सुख की प्राप्ति होती है। श्री कृष्ण जी वेदों, उपनिषदों के ज्ञाता थे। यज्ञ को उन्होंने जीवन में धारण किया हुआ था। वे जानते थे कि यज्ञ से सुख की प्राप्ति हो सकती है। निष्काम कर्म करना ही गीता का सार है। श्री कृष्ण कहते हैं ''नायंलोकोऽस्तयज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम'' अर्थात्-जो मनुष्य यज्ञ रूपी श्रेष्ठ कर्म नहीं करता, उसका यह जीवन तो क्या परलोक भी सुखी नहीं होगा। गीता में फिर कहा ''कर्म ब्रह्मोदभवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्'' अर्थात् वेद ज्ञान द्वारा मनुष्य को कर्म करने का अधिकार सृष्टि के आदि में ईश्वर ने दिया था। वह स्वयं यज्ञ रूपी शुभ कर्म कर रहा है। अतः मनुष्य को भी अपने पिता की आज्ञा का पालन करना है। इसीलिए वेद ने यज्ञ को सब कर्मों से श्रेष्ठ कहा है।

महर्षि दयानन्द द्वारा वैदिक पाठशाला की स्थापना

ले० श्री राधेश्याम जी, आर्य समाज धूरी (संगरूर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने गुरु के आदेशानुसार स्थान-2 पर जाकर वैदिक मान्यताओं का प्रचार करना शुरू किया जिसमें सबसे बड़ी कठिनाई तो अपनों को ही सीधे रास्ते पर लाना था। लोगों को अति सरल व तार्किक शब्दों और भावो से समझाना पड़ता था। लोग अधिकतर अनपढ़ थे और जो पढ़े-लिखे थे वे अक्सर अधिकतर पूर्वाग्रहग्रस्त थे। स्वामी जी को अन्धविश्वास और अन्याय के प्रति जूझना पड़ता था वहां अनपढ़ता भी प्रचार कार्य में बाधक थी।

स्वामी दयानन्द जी ने फरुखाबाद मे अपने भक्त पन्ना लाल तथा उनके साथ अन्य सहयोगियों की सहायता से एक पाठशाला की स्थापना की जिसका नाम रखा 'वैदिक पाठशाला'। इसके बाद स्वामी जी ने रामगढ़ में भी पाठशाला का प्रयास किया लेकिन यहां पर अन्ध विश्वासी और मूढ़ व्यक्तियों ने स्वामी को बहुत परेशान किया। यहां तक कि उनकी हत्या करने के कई षड्यंत्र भी रचे इसीलिए स्वामी जी ने यह स्थान छोड़ दिया।

स्वामी दयानन्द जी ने काशी में प्रवेश किया यहां बहुत मेहनत करनी पड़ी। पण्डितों से शास्त्रार्थ, बार-बार हुए जहां कांशी नरेश भी पण्डितों के शास्त्रार्थ में रुचि ले रहे थे अन्ततः स्वामी दयानन्द जी विजयी हुए तब उन्होने 'काशी' को केन्द्रीय संचालन के लिए उपयुक्त मानते हुए इसके इर्द-गिर्द 'वैदिक पाठशालाओं' का जाल बिछाने की योजना बनाई। स्वामी जी का मत था कि लोगों को शिक्षित करके प्रचार कार्य सरल हो जाएगा। कलकत्ता में भी स्वामी जी ने 'वैदिक पाठशाला' का प्रस्ताव लोगों के सामने रखा लेकिन सफलता न मिली।

सम्वत् 1929 में कांशी मे "वैदिक सार्वभौम पाठशाला" की स्वामी जी ने स्थापना की जिसके लिए स्वामी ने स्वयं दान, चंदा इकट्ठा करना पड़ा। बड़ी मुश्किल से पाठशाला के संचालन के लिए उपयुक्त व्यक्ति मिल पाये। इसके बाद से स्वामी दयानन्द जी जहां भी उनके भक्त संख्या बढ़ती तभी उनसे "वैदिक पाठशाला" खोलने का आग्रह जरूर करते। मार्च 1875 में बम्बई में भी स्वामी दयानन्द जी आर्य समाज की स्थापना की तब भी उन्होंने शिक्षा की प्रेरणा दी। दो वर्ष बाद स्वामी दयानन्द जी पुनः बम्बई आये फिर उन्होंने आर्य समाज मन्दिर भवन का निर्माण करवाया तब वहां भी इस के अर्न्तगत पाठशाला भी खुलवाई। स्वामी दयानन्द जी अज्ञानता का कारण अशिक्षित होना समझते थे वहां अंग्रेजों द्वारा अंग्रेजी और उर्दू का प्रचलन काफी था परन्तु स्वामी दयानन्द जी ने देवनागरी भाषा को अपनाया क्योंकि स्वामी दयानन्द जी हिन्दी को ही अपनी दिव्य दृष्टि से राष्ट्रभाषा पद पर आसीन देख रहे थे। उन्होंने राजाओं, महाराजाओं, अंग्रेज अफसरों से पत्र व्यवहार हिन्दी में किया था। स्वामी दयानन्द जी ने वैदिक पाठशालाओं के लिए अनुदान प्राप्ति के लिए यत्न भी किया लेकिन अंग्रेज ऐसा नहीं चाहते थे। महर्षि दयानन्द का स्वप्न उनके अनन्य भक्तों ने विशेषकर स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज ने पूरा करने के लिए कमर कसी। इस प्रकार अब सारे भारत ही नहीं विदेशों में भी हिन्दी और ऋषि साहित्य का बोलबाला है।

जालन्धर छावनी में दीपावली पर्व

आर्य समाज जालन्धर छावनी में दीपावली का पर्व व ऋषि निर्वाण दिवस 4-11-2002 को प्रातः 9 से 12 बजे तक मनाया गया। यज्ञ के यज्ञमान श्री रवीन्द्र ऐरी, प्रिं. एन डी. विक्टर स्कूल, श्री मुनीश महाजन, श्री दीपक दीवान सपत्नीक बने। यज्ञ श्री जवाहर महाजन ने सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर बी.डी आर्य गर्ल्ज कालेज तथा के.एल. गर्ल्ज स्कूल की छात्राओं ने भजनों द्वारा सभी को प्रभावित किया। श्रीमती शुक्ला वशिष्ट ने वैदिक प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम रखा जिसमें छात्राओं ने भारी संख्या में भाग लिया। प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले बच्चों को पारितोषिक दिए गए। श्री रमेश जी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलेश को उनकी आर्य समाज के प्रति सेवाओं के कारण शाल आदि भेंट करके सम्मानित किया गया। श्री पं. धर्मदेव जी आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष तथा श्री मास्टर तिलक राज शास्त्री के प्रभावशाली उपदेश हुए। —जनकराज महाजन, प्रधान

आर्य समाज मोगा में ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

आर्य समाज मोगा में महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस श्री ब्रह्मदेव जी सहगल की अध्यक्षता में प्रातः 7 15 बजे से 10.00 बजे तक बड़ी श्रद्धापूर्वक हुआ। इसमें मोगा स्थित आर्य शिक्षण संस्थाओं ने पूर्ण सहयोग देकर ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए योगदान दिया। प्रो० जगदीश चन्द्र जी मेहता, श्री अर्जुन देव जी पुरुषोत्तम दास राय पुस्तकाध्यक्ष आर्य समाज मोगा ने सपरिवार यजमान बने। प्रो. जगदीश चन्द्र जी का बड़ा ओजस्वी भाषण हुआ। साथी विजय कुमार जी ने पूरा-पूरा सहयोग दिया। सभी बच्चों को पारितोषिक दिए गए। स्वामी सच्चिदानन्द जी प्रधान ने आशीर्वाद दिया। जसवन्त राय जी मन्त्री, श्री दीवाकर भारती, पुरुषोत्तम आर्य के कड़े परिश्रम से यह आयोजन सफल रहा। -प्रियतम देव

आर्य समाज नया नंगल का 42वां वार्षिक महोत्सव

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज नया नंगल का 42वां वार्षिक उत्सव 3 अक्तूबर से 6 अक्तूबर तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया इस शुभ अवसर पर आर्य शिरोमणि डॉ० उमेश चन्द्र यादव जी (प्राचार्य) दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार एवं आर्य भंजनोपदेशक पं. नरेश निर्मल जी मुजफ्फर नगर (उ.प्र.) तथा अन्य विद्वानों के उपदेश व प्रवचन हुए।

3 अक्तूबर से 6 अक्तूबर 2002 तक प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक विद्यार्थी महायज्ञ एवं मानव कल्याणार्थ 11 कुण्डीय महायज्ञ का परथम बार आयोजन किया गया जिसमें दयानन्द पब्लिक स्कूल के बच्चों ने, अध्यापिकाओं ने और शहर के सभी माने हुए सदस्यों ने इस महायज्ञ में भाग लेकर ज्ञान प्राप्त किया। 3 अक्तूबर प्रातः 10.15 से 11.45 बजे तक श्री आसकरन दास सरदाना जी की ओर से अन्तर विद्यालय "श्रीमती सुशीला सरदाना पञ्चम स्मृति भाषण प्रतियोगिता" डॉ० उमेश चन्द्र यादव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई तथा प्रत्येक ग्रुप के प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वालों को पुरस्कारों और सत्यार्थ प्रकाश द्वारा सम्मानित किया गया।

4 अक्तूबर प्रातः 10.15 से 11.45 बजे तक श्रीमती प्रबोध चौधरी जी (होशियारपुर) की ओर से अन्तर विद्यालय "चौधरी सदाराम जी छठी स्मृति श्लोक मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता" पं० नरेश निर्मल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई तथा प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले बच्चों को पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया गया।

5 अक्तूबर अपराह्न 2.30 बजे से 4.30 बजे तक नया नंगल में भव्य नगर शोभा यात्रा का आयोजन किया गया था जो कि आर्य समाज सैक्टर-1 से आरम्भ हुई और सैक्टर 2,5,4 और 1 से होती हुई आर्य समाज प्रांगण में समाप्त हुई और सभी नया नंगल निवासियों ने बहुत प्रशंसा की।

इसी दिन सायं 5.15 बजे से श्री आर.के. दीक्षित जी महा प्रबन्धक एन.एफ.एल् नया नंगल ने अपने कर कमलों द्वारा ओ३म् ध्वजारोहण की रस्म अदा की उसके पश्चात् ध्वजगीत, ध्वज पर प्रवचन और महा प्रबन्धक द्वारा बाहर से आए हुए विद्वानों को सम्मानित किया गया और 11 कुण्डीय महायज्ञ के कार्यक्रम की सराहना की। पूर्णाहुति और आशीर्वाद का कार्यक्रम रहा। 9.30 से 12.40 बजे तक भजनों और प्रवचनों का कार्यक्रम चलता रहा उसके पश्चात् निम्नलिखित सदस्यों को आर्य समाज की ओर से सम्मानित किया गया।

1. डा रमेश चन्द्र यादव जी, 2. पं. नरेश निर्मल जी एवं उनके सहयोगी, 3. पं० सुशील कुमार आर्य एवं उनकी धर्मपत्नि श्रीमती सुचित्रा कुमारी जी, 4 श्री यशपाल डोगरा जी, 5. श्री रविकांत त्रिखा जी, 6. श्री संजय ग्रोवर जी, 7. श्री सुदर्शन कुमार जी, 8. श्री शांत जी, 9. मुख्याध्यापिका एवं अध्यापकगण दयानन्द पब्लिक स्कूल, 10. श्री पवन कुमार जी, 11. श्रीमती अनजना कुमारी जी, 12. श्रीमती निर्मल देवी जी। अन्त में धन्यवाद के बाद प्रीतिभोज का आयोजन किया गया जिसमें सैंकड़ों व्यक्तियों ने भाग लिया। —गुमान चन्द तालूजा (मन्त्री)

आर्य समाज संगरूर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज संगरूर का वार्षिकोत्सव 11 से 17 नवम्बर 2002 तक बड़े समारोह से मनाया जा रहा है जिसमें प्रसिद्ध विद्वान् श्री आचार्य आर्य नरेश जी, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल जी पथिक और कई उच्चकोटि के नेता व विद्वान् पधार रहे हैं। 11 नवम्बर को शोभा यात्रा होगी। 17 नवम्बर 2002 को यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

गुरदासपुर में समारोह

वैदिक साधना आश्रम गुरदासपुर का 45वां वार्षिक समारोह 6 से 13 अक्तूबर 2002 तक स्वामी प्रकाशानन्द जी की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर जिला गुरदासपुर के ग्रामों में जा-जा कर वेद प्रचार किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं० राम निवास जी शास्त्री जो अमरीका में भी वेद प्रचार करके आए हैं व श्री पं० विजय कुमार जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। श्री पं० ओम प्रकाश जी की भजन मण्डली, श्री उदयवीर जी शास्त्री, श्री पं० जय गोपाल जी के बहुत सुन्दर भजन होते रहे। पूज्य स्वामी अग्निदेव जी भीष्म, आचार्य वेदव्रत जी शास्त्री, श्री जीतेन्द्र जी शास्त्री, श्री जोगिन्द्र पाल जी शास्त्री व स्वामी सदानन्द जी महाराज के उपदेश होते रहे।

महिला सम्मेलन श्रीमती सन्तोष अम्बा की अध्यक्षता में हुआ। श्रीमती विमला वोहरा, श्री मन्जुला आर्या, माता राजरानी जी ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर श्री तरसेम जी आर्य, श्री कुन्दन् लाल जी प्रेहन, श्री जगमोहन, श्री कृष्ण गोपाल, श्री रघुनाथ शास्त्री, श्री जगदीश राज, बाबू किशन चन्द, श्री करतार सिंह, श्री कश्मीरा सिंह, श्री ओम प्रकाश, श्री खजान चन्द, डॉ० अनिल शर्मा, श्री मुलखराज, श्री बाऊ राम, ब्र० नितीश, श्री जे.डी. नन्दा इत्यादि जिला गुरदासपुर की सभी आर्य समाजों के महानुभाव वहां पहुंचे थे।

आत्मिक शान्ति प्रार्थना

[illegible]

1. ओ३म् ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥

2 कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

3 विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः।
सवितारं नृचक्षसम्॥

यजु 40/1,2,30/4

हे परमपिता परमेश्वर ! हे अजर अमर अभय, नित्य पवित्र परमात्मन्! हे जगन्नियन्ता प्रभो! आप सर्वत्र व्याप्त हो रहे हैं। आप से कोई भी स्थान रिक्त नहीं है। जिधर भी हम दृष्टिपात करते हैं उधर आपकी ही सत्ता दृष्टिगोचर होती है। क्या पर्वत की ऊची से ऊची चोटिया, क्या समुद्र की गहरी से गहरी सतह? प्रभो! सर्वत्र आपकी ही सत्ता विद्यमान है। आपकी इस महान् सत्ता एव शक्ति के सम्मुख हम सब नतमस्तक हैं। आपको बारम्बार नमस्कार करते हैं।

हे जगदीश्वर! हे अनन्त ऐश्वर्ययुक्त करुणानिधान! हम सब आपके द्वारा प्रदत्त वस्तुओ का उपभोग करते हैं और अज्ञान एव अहकारवश उन्हीं में लिप्त हो जाते हैं। इस माया मोह मे फस कर हे परमात्मन् देव! आपको भूल जाते हैं। हे दयानिधान! ऐसी कृपा करो कि हम इन सासारिक पदार्थों का उपभोग करते हुए भी इनमें लिप्त न हों अपितु अपना कर्तव्य समझ कर इनका उपभोग करे।

हे दयालु कृपालु, भगवन्! ऐसी प्रेरणा करो ऐसी सद्बुद्धि दो ऐसी कृपा करो कि इस ससार में सदैव शुभ और निष्काम कर्म करते हुए हम अपना जीवन व्यतीत करें। क्योंकि इसके अतिरिक्त कर्म के बन्धन से मुक्त होने का अन्य कोई मार्ग नहीं है।

हे जगदीश्वर! आप ही कर्मानुसार जीवात्माओं की आयु जाति और भोगो का विभाग करने वाले हैं। अच्छे बुरे कर्मों के द्रष्टा हैं। शुभ अशुभ कर्मफल प्रदाता हैं। इस ससार के सभी पदार्थ नाशवान् हैं। एक न एक दिन उनका अन्त हो जाता है। जैसे वृक्ष से टूटा हुआ पत्ता फिर उसी डाल में नहीं लगता उसी प्रकार शरीर से निकला हुआ जीवात्मा पुन उसी शरीर मे नहीं आता। जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है। आपके इस अटूट नियम का कोई भी उल्लघन नहीं कर सकता। आया है सो जाएगा राजा रक फकीर।

हे ज्ञानस्वरूप परमात्मन् देव! ससार की इस यथार्थता को जानते और मानते हुए भी मोहपाश मे बधे होने के कारण हम सभी उस दिवगत आत्मा के प्रति कल्याण की कामना करते हैं। अत हम सब मिल कर आपके करबद्ध प्रार्थी हैं कि उस दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और दु ख सन्तप्त परिवार एव सम्बन्धी जनों को दु ख सहन करने की शक्ति सामर्थ्य तथा धीरता प्रदान करे। हम सबकी आपसे यही प्रार्थना हैं यही याचना है। भगवन्! आप इसे स्वीकार करे स्वीकार करे स्वीकार करें।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति

भीलवाड़ा में वैदिक ज्ञान प्रतियोगिता

महर्षि दयानन्द स्वामी के विचारो एव वैदिक साहित्य प्रचार हेतु आर्य समाज भीलवाडा द्वारा "वैदिक ज्ञान प्रतियोगिता" का आयोजन दो चरणों मे 29 सितम्बर व 6 अक्तूबर को किया गया जिसमें भीलवाडा शहर के 16 विद्यालयो के 800 छात्रो ने स्वामी जी की जीवनी एव वैदिक साहित्य को पढकर लिखित एव मौखिक परीक्षा मे भाग लिया। प्रत्येक विद्यालय के प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को सत्यार्थ प्रकाश एव प्रमाण पत्र सह 701/501/301 रुपए देकर सम्मानित किया गया। ये विद्यार्थी 14 से 20 वर्ष की आयु के थे। इसके साथ ही भीलवाडा शहर के सभी माध्यमिक एव उच्च मा विद्यालयो हेतु पुस्तकालयो में सत्यार्थ प्रकाश की एक-एक प्रति नि शुल्क भेंट दी गई।

इसी प्रचार भावना से प्रेरित हो आर्य समाज भीलवाडा द्वारा आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सत्यार्थ प्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता हेतु पञ्जीयन मे 50 प्रतिशत छूट दी गई है साथ ही 40 प्रतिशत छूट सत्यार्थ प्रकाश पर दी जा रही है। —प्रधान

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का चुनाव

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की साधारण सभा की बैठक (वार्षिक अधिवेशन) दिनाक 28 9 2002 शनिवार को साय 4.30 बजे आर्य समाज, बिरला लाईन्स कमला नगर दिल्ली 110007 के सभागार में श्री प्रेमपाल जी शास्त्री की अध्यक्षता मे आयोजित हुई।

जिसमें-निम्नलिखित अधिकारी सर्वसम्मति से दो वर्ष के लिए चुने गए- 1 श्री रामनाथ जी सहगल-प्रधान 2 श्री हरवश लाल जी कोहली-कार्यकर्त्ता प्रधान 3 श्री राजीव भाटिया-महामन्त्री, 4 श्री सुरेन्द्र गुप्ता-मत्री। 5 श्री जी पी मालविया जी-कोषाध्यक्ष।

—राजीव भाटिया, महामत्री

25 अक्तूबर 2002 शुक्रवार को करवाचौथ का व्रत सारे देश में मनाया गया

ले० गुलशनराज आर्य, सभा मन्त्री आर्य [illegible]

25 अक्तूबर 2002 को सारे देश मे करवा चौथ का व्रत मनाया गया है। हर नारी अपने पति की आयु की वृद्धि की कामना करती है कि मेरे पति की आयु लम्बी हो। इस व्रत पर लाखो रुपए की मिठाई तथा फल आदि की बिक्री हो जाती है। जिस लडकी का विवाह होता है उसके विवाह के पहले व्रत पर लडकी के माता-पिता को हजारो रुपयो का व्यय करना पडता है। यदि माता-पिता कुछ भी न दे सकते हो तो भी उनको देना पडता है जिस लडकी के माता-पिता कुछ भी नहीं दे सकते उस लडकी की आप सब जानते हैं कि क्या दशा होगी। सारे देश मे जब भी करवाचौथ का व्रत आता है तो लडकी व्रत रखेगी और ससुराल वाले उस लडकी को जब तग करेगे उस समय वह घबराई हुई लडकी अपने पति की आयु वृद्धि की क्या कामना करेगी। यह जो इस व्रत पर इतना व्यय किया जाता है इसका पति की लम्बी आयु के साथ क्या सम्बन्ध है और वर्ष में सिर्फ एक दिन व्रत रखने से आयु कैसे लम्बी हो सकती है। कई लडकिया ऐसी भी होती हैं जो वर्ष भर तो पति के साथ अच्छा व्यवहार ही नहीं करती और साल मे एक दिन करवाचौथ का व्रत रख कर अपने पति की लम्बी आयु की कामना करती हैं। एक लडकी अपने पति को प्रतिदिन कुत्ता हरामजादा आदि की गालिया देती थी परन्तु उसका पति बडा नर्म स्वभाव का था। जब करवाचौथ का व्रत आया तो उसने भी करवाचौथ का व्रत रख लिया। व्रत रखने के लिए प्रात जल्दी उठ कर अपने खाने के लिए खाना बनाना आरम्भ करने लग गई तो उसके पति ने आवाज लगाई भाग्यवान क्या कर रही हो तो उसने अपने स्वभाव के अनुसार उत्तर दिया कि मैं आप का ही स्यापा कर रही हू क्योंकि उसने यह व्रत अपने पति की लम्बी आयु के लिए ही रखना था। अब आप ही बताये कि जो लडकी व्रत के लिए खाना अपने लिए बना रही थी और अपने पति को उत्तर दिया कि आप का ही स्यापा कर रही हू ता यह बताया जाए कि क्या यह पति की लम्बी आयु की कामना है। यह सब बाते गलत हैं। प्रातःकाल बहुत कुछ खा कर अपना पेट भर लेती हैं और सारा दिन भूखे रह कर और रात को चन्द्रमा के दर्शन कर के रोटी खाई जाती है। आयु लम्बी तो पति के लिए करती हैं परन्तु रात्रि को दर्शन चन्द्रमा के किए जाते हैं इसलिए पति की आयु की वृद्धि का व्रत रखना गलत है। महर्षि पराशर जी ने इसका घोर विरोध किया है। वह लिखते हैं –

पत्यौ जीवति या नारी उपासक चरित
आयुर्ष्य बाधते भर्तु, नरकं चैव गच्छति॥

जो स्त्री पति के जीवित रहते हुए भूखा रहने वाला व्रत रखती है वह पति की आयु को बाधा पहुचाती है और दुख को प्राप्त करती है। करवा चौथ व्रत का खण्डन करते हुए कबीर जी महाराज लिखते हैं–

राम नाम को छोड के जो राखे करवा चौथि

वह तो हवगी सूकरी जिन्हीं राम सौ कौपि

गृहस्थ सम्बन्धी अन्य उपदेश देते हुए मनु महाराज जी ने कहा है स्त्री को सदा पुष्प की भान्ति प्रसन्न रहना चाहिए तथा घर के कामो में दक्ष होना चाहिए। घर की सभी वस्तुए यथा स्थान रखनी चाहिए। साफ-सुथरी होनी चाहिए और व्यय करने मे हाथ बहुत खुला नहीं होना चाहिए।

यस्य मार्या शुर्चिदक्षा मती रमजुना गायनी
नित्य मधुमक्खी य सा रमा न रमा रमा

धन सम्पत्ति लक्ष्मी नहीं है। पवित्र कुशल पति के अनुकूल चलने वाली और मीठा बरतने वाली स्त्री ही लक्ष्मी है। इन चारो गुणो को धारण करके प्रत्येक स्त्री को गृह लक्ष्मी बनना चाहिए। महर्षि कण्व ने विवाह के समय शकुन्तला को जो उपदेश दिया था उसको प्रत्येक स्त्री को अपने हृदय में स्थान देना चाहिए। उन्होने कहा था कि हे शकुन्तले सास और ससुर आदि बड़ों की सेवा करना तथा भाईयों की पत्नियो को अपनी सहेली समझना। यदि पति अपमान भी करे तो भी क्रोध वश गलत व्यवहार न करना। परिवार के लोगों और सेवकों के प्रति उदारता से [illegible] तथा सम्पत्ति पर कभी गर्व न करना। ऐसा आचरण करने वाली स्त्री घर की रानी बनती है और इसके विपरीत आचरण करने वाली स्त्री के हृदय में दुख पैदा होता है। वेद मे पति और पत्नी दीनो का समान कर्त्तव्य बताया है। वेद का यह आदेश है कि;–

इहेमाविन्द्र सनुदव चक्रवाकेव दम्पत्ति –अथर्ववेद

अर्थ –पति पत्नि चकवा चकवी की भान्ति एक दूसरे से प्रेम करें। दम्पति में आकर्षण तो होना ही चाहिए।

उर्दू के कवि ने लिखा है,–

एक हो जा इस तरह ज्यों प्राण तन का तौर है।

फिर न कोई क्यों कहे मैं और हू तू और है।

परस्पर प्रेम के लिए वाणी का ठीक प्रकार से व्यवहार करें। मधुर और शांति देने वाली वाणी ही बोलें। यह वेद का आदेश है। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर के मनुष्य बड़ा बनता है। परन्तु बड़प्पन कर्त्तव्य पालन से सुरक्षित रहता है। इसलिए यहां दम्पत्ति को कुछ कर्त्तव्य का निर्देश दिया जाता है।

पति के कर्त्तव्य –पत्नी के लिए पति के हृदय में अगाध श्रद्धा और प्रेम होना चाहिए। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए उसे एक मित्र की आवश्यकता होती है जिससे वह हृदय खोल कर बातें कर सके। पत्नी एक इसी प्रकार की साथी है। ससार मे पत्नी से बढ कर कोई और दूसरा मित्र नहीं। स्त्री को सभी का सम्मान करना चाहिए और नारी का पूरा सम्मान होना चाहिए। मनु जी महाराज ने कितना सुन्दर लिखा है कि –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तुन पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा फला क्रिया ॥ मनु

अर्थ –जिस घर में स्त्री का पूजन होता है वहां पर दिव्य गुणों का वास होता है और जहां इनका सत्कार नहीं होता वहां यज्ञादि सम्पूर्ण कर्म निष्फल है। इसी प्रकार पत्नी का क्या कर्तव्य है।

पत्नी का कर्तव्य:–स्त्रियों के लिए पति से बढ कर कोई भी देवता नहीं है। मनु जी महाराज लिखते हैं कि– "सतत देवत पति"। साध्वी स्त्रियों के लिए पति ही देवता के समान पूज्य होता है अतः प्रतिदिन प्रात काल उठ कर पति के चरण छू कर उसको नमस्ते करनी चाहिए। स्त्री को तीर्थों में भटकने की आवश्यकता नहीं उसके लिए पति ही सबसे बड़ा तीर्थ है। स्त्रियो के लिए सब से बड़ा तीर्थ पति ही है इसलिए स्त्री का सब कुछ पति ही है। पति की सेवा से ही सब कुछ मिल जाता है। मनु जी महाराज स्त्रियों के लिए लिखते हैं कि स्त्री पति से अलग न कोई यज्ञ कर सकती है, न व्रत, न उपवास कर सकती है। केवल पति की सेवा से ही उसकी लम्बी आयु की कामना कर सकती है। करवाचौथ के व्रत रख कर पति की लम्बी आयु नहीं हो सकती। स्त्री को पति की सेवा करने का ही व्रत लेना चाहिए तभी पति की लम्बी आयु की कामना हो सकती है।

चित्तौड़ जिले के ग्रामों में हुआ प्रथम बार वेद प्रचार

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर द्वारा चित्तौड जिले के ग्रामो मे वेद प्रचार वाहन के माध्यम से श्री रघुनाथ देव वैदिक भूषण के नेतृत्व में प्रथम बार वेदो का सदेश पहुचाया गया। न्यास के ही श्री गगाधर आर्य एव श्री नारायण कुमार ने श्री भूषण का सहयोग किया। 18 सितम्बर से 17 अक्तूबर तक एक माह की अवधि में चित्तौड जिले के डिण्डोली हस्नाथपुरा, राशमी, आरणी पहुना बेंवरिया मरमी, मुरोली चटावरी, भीमगढ़, सद, बाबूलाल, बूढ़, गम्भर, सोनियाना, कुरालिया, वामनिया, लौंगच, डिंगोरिया बेडा और मस्टो के वामनिया गांवों में ऋषि दयानन्द का संदेश पहुचाया गया। इन गावो के राजकीय विद्यालयो के छात्र छात्राओ व अध्यापक-अध्यापिकाओं तथा सार्वजनिक स्थानो पर ग्रामीणवासियों को ईश भजन व वेद प्रवचन द्वारा वैदिक ससकृति का पावन प्रसाद वितरित किया। कुछ स्थानों पर प्रात यज्ञ भी आयोजित हुए तथा रात्रि में महर्षि दयानन्द की जीवनी पर चलचित्र प्रदर्शित किया गया। [illegible] में वेद प्रचार वाहन से 111000/– का वैदिक साहित्य का वितरण हुआ। 111 व्यक्तियों ने वेद प्रचार मण्डल की सदस्यता ग्रहण की। इन सदस्यों को नि शुल्क वैदिक साहित्य प्रदान किया गया।

–स्वामी [illegible] सरस्वती

भठिण्डा का सम्मेलन स्थगित

गुरुकुल भठिण्डा में 30 नवम्बर व 1 दिसम्बर 2002 को होने वाले आर्य महासम्मेलन को स्थगित कर दिया गया। इस सम्बन्ध में जिला आर्य सभा भठिण्डा की 19-10-2002 की बैठक में निर्णय किया गया, क्योंकि इस समय जिला आर्य सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री बाबू राम और प्रधान श्री पी डी गोयल बीमार चल रहे हैं। इसलिए फिलहाल यह सम्मेलन स्थगित कर दिया गया। आगामी तिथियों की बाद में घोषणा की जाएगी।

इसलिए आर्य बन्धु अंकित कर लें 30 नवम्बर व 1 दिसम्बर 2002 को होने वाला आर्य महा सम्मेलन स्थगित है। –[illegible] कुमार, महामन्त्री

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष सम्पादक प्रकाशक मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रेस मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष · 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

दूरभाष ☎ : 292926

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–56 अंक : 30 सृष्टि संवत 1960853103, 17 नवम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली सारे देश में मनाई गई

□ले० श्री मूलखराज आर्य, सभामन्त्री

दीपावली का पर्व सारे देश में धूमधाम से मनाया गया। दीपावली के पर्व के सम्बन्ध में कहा जाता है कि श्री रामचन्द्र जी महाराज को 14 वर्ष का वनवास मिला था तो वह अपने 14 वर्ष पूरे करके वापिस अयोध्या में आए थे तो उस समय सारे अयोध्या शहर में दीपमाला की गई थी। तब से कहा जाता है कि हर वर्ष इस दिन दीपावली का पर्व सारे देश में मनाया जाता है। इसी दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने नश्वर शरीर का त्याग किया था इसलिए आर्य समाजों में यह दिवस ऋषि निर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है और आर्य समाज मंदिरों में दीपमाला की जाती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद गुरु विरजानन्द जी महाराज को अपना जीवन गुरु दक्षिणा में देकर वेद का प्रचार करने के लिए, भारत देश को वेद का सूर्य दिखाने के लिए निकल पड़े। देश में जो आडम्बर व पाखंड चल रहा था उन सब को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ललकारा और स्थान-स्थान पर जाकर सबको शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। स्वामी जी के सामने अपने आप को बड़े-बड़े विद्वान् कहलवाने वाले टिक नहीं पाये और सारे देश में खलबली मच गई । स्वामी जी के विरोधी उन्हें समाप्त करने की सोचने लगे। स्थान-स्थान पर जा कर यह लोग स्वामी जी का विरोध करने लगे। उन्हें शास्त्रार्थ पर जाने से रोकने लगे। एक जगह पर स्वामी जी को शास्त्रार्थ के लिए किसी ने भी स्थान नहीं दिया। इस पर एक मुसलमान ने उन्हें अपनी जगह शास्त्रार्थ के लिए दी। तो दूसरे दिन स्वामी जी ने मुसलमानों का ही खंडन कर दिया। इस पर दूसरे दिन मुसलमान ने स्वामी जी से कहा स्वामी जी आपको शास्त्रार्थ के लिए मैंने स्थान दिया और आप ने हमारा ही खंडन कर दिया। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि आप ने हमारा उपकार किया है और हमें स्थान दिया है इसलिए मेरा भी कर्त्तव्य बनता था कि मैं भी आप का उपकार करूं। जो भी सत्य है वह मैंने आप को बताया। मैंने तो सत्य बात करनी है। मेरी सत्य बातों को कोई मानता है या नहीं यह उस पर निर्भर करता है परन्तु मैंने तो सत्य बात अवश्य ही करनी है। इस प्रकार स्वामी जी स्थान-स्थान पर जा कर वेद प्रचार करते रहे। इसी क्रम में जा कर उन्होंने हरिद्वार में पाखंड खंडिनी पताका फहराई और हरिद्वार के पाण्डों को उन्होंने ललकारा जिन्होंने हर प्रकार से वहां लूट मचा रखी थी। इसी प्रकार स्वामी जी वेद के प्रचार में लगे रहे। स्वामी जी बड़े-बड़े महाराजाओं से भी मिलते रहे और उन्हें भी सत्य पर चलने की सलाह देते रहे। इसी प्रकार स्वामी जी ने वेद प्रचार जारी रखने के लिए 1875 मे आर्य समाज की स्थापना कर दी और सब से पहले स्वामी जी ने बम्बई मे आर्य समाज की स्थापना की। उसके पश्चात् पंजाब (लाहौर) में स्वामी जी ने आर्य समाज की स्थापना कर दी और उसके पश्चात् सारे देश में आर्य समाज का जाल सा बिछा दिया। इसी प्रकार वेद प्रचार करते हुए स्वामी जी जालन्धर में पधारे। यहां पर भी स्वामी जी ने आर्य समाज की स्थापना की। जब स्वामी जी जालन्धर आये हुए थे तो यहां क्या देखते हैं कि एक किसान की बैलगाड़ी कीचड़ में फंसी हुई थी और किसान अपने बैलों को पीट रहा था और गाड़ी कीचड़ से बाहर नहीं निकल रही थी। इस पर स्वामी जी महाराज ने किसान को कहा कि भाई इनको क्यों पीट रहे हो। आप इन बैलों को खोल दो। मैं तुम्हारी गाड़ी को कीचड़ से निकाल दूंगा। किसान ने बैलों को बैलगाड़ी से खोल दिया और स्वामी जी ने बैलगाड़ी के झूलों को अपने कंधों पर रख कर गाड़ी को कीचड़ से बाहर निकला दिया। इसी प्रकार एक बार जालन्धर में ही महाराज विक्रम सिंह अपनी चार घोड़ों की बग्गी को लेकर जा रहे थे। उधर से स्वामी जी टहलते हुए आ गए तो स्वामी जी ने पीछे से गाड़ी को पकड़ लिया और महाराजा की बग्गी वहीं पर खड़ी हो गई। महाराजा हैरान हो गए उन्होंने घोड़ों को पीटा और घोड़े पूरा जोर लगा रहे थे गाड़ी फिर भी आगे नहीं बढ़ पाई। महाराजा ने पीछे मुड़ कर देखा तो बग्गी को स्वामी जी ने पीछे से पकड़ रखा था। इस घटना को देख कर महाराजा को पता चल गया कि स्वामी जी महाराज में कितना बल है। स्वामी जी महाराज का बड़े-बड़े महाराजाओं पर बहुत प्रभाव था। वह महाराजाओं के पास जाते रहते थे। एक बार स्वामी जी महाराज एक राजा के घर में गए तो उस समय महाराज के पास एक नन्ही जान नामक वेश्या बैठी हुई थी। यह देख कर स्वामी जी महाराज ने उस महाराजा को फटकारा और कहा कि एक महाराजा होकर एक कुतिया पर मरते हो। इस पर महाराजा ने उसी वक्त उस वेश्या को अपने महल से निकाल दिया परन्तु इस घटना से क्षुब्ध होकर वह वेश्या स्वामी जी की जान की दुश्मन बन गई। उस वेश्या ने स्वामी जी के रसोईये को धन का लालच देकर अपने साथ मिला लिया और स्वामी जी को कांच पीस कर दूध में देकर पिला दिया। पहले भी स्वामी जी को कई बार जहर दिया गया था। हर बार स्वामी जी उस जहर के प्रभाव से बच जाते थे परन्तु यह जहर स्वामी जी के शरीर में फैल गया। एक मुसलमान तहसीलदार ने स्वामी जी को जहर देने वाले रसोईये को पकड़ लिया और स्वामी जी के सामने पेश किया और स्वामी जी को उसे दंड देने को कहा। इस पर स्वामी जी ने कहा कि इसको छोड़ दिया जाए क्योंकि मैं किसी को कैद कराने के लिए नहीं आया हूं मै तो जहां आजाद करने के लिए आया हूं। इसलिए स्वामी जी ने अपने रसोईये जगन्नाथ को अपने पास से पैसे देकर उसे वहां से भाग जाने के लिए कह दिया क्योंकि वहां उसे लोग पकड़ कर मार देते। धीरे-धीरे सारा जहर उनके शरीर मे फैल गया जिसके कारण स्वामी जी की मृत्यु निकट आ गई और स्वामी जी ने अपने पास बैठे सभी लोगों को आदेश दिया कि आर्यो मेरे मरने के पश्चात् मेरी समाधि न बनाई जाए क्योंकि जिस गड्ढे से मैं लोगों को निकालने आया हू उस गड्ढे मे फिर मैं लोगो नहीं डालना चाहता क्योंकि स्वामी जी को डर था कि मेरी मृत्यु के पश्चात् लोग मुझे पूजने लग जाएंगे। यह आदेश देकर स्वामी जी ने कहा कि हे प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो और फिर अपने प्राण त्याग दिए। इसलिए हम स्वामी जी को अपनी श्रद्धांजलि भेट करते हैं।

लज्जा तथा अपमान का विषय

एक बलवान, पहलवान, विद्वान्, धनवान व सुरक्षा के सब समान से युक्त व्यक्ति यदि प्रतिदिन किसी छोटे से कमजोर शत्रु का नाम लेकर यह दुहाई दे कि "हाय! मुझे वह रोज पीट जाता है" तो विश्व में सम्मान प्राप्त उस बलवान व्यक्ति के लिए यह लज्जा तथा अपमान का ही विषय है।

–आचार्य आर्य नरेश

स्वस्ति पथ

❑ ले० पण्डित वेद प्रकाश शास्त्री, 4-ई, कैलाश नगर, फाजिल्का (पंजाब)

श्मशान भूमि में जन्म-मरण सम्बन्धी प्राय: अनेक प्रकार के उपदेश एवं महापुरुषों के वचन लिखे रहते हैं परन्तु वेद वचन शायद ही कहीं दृष्टिगोचर होते हों। अत: श्मशानभूमि में लिखे जाने योग्य वेदमन्त्रों का सकलन भावार्थ सहित प्रस्तुत है। प्रत्येक नगर की आर्य समाजों, सनातन धर्म सभाओं को चाहिए कि वे इन्हें श्मशान भूमि में अवश्य लिखवाए–

स्वस्ति पथ (कल्याण मार्ग)

॥ओ३म्॥

अन्तकाय मृत्यवे नम:

1. ओ३म् वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्त छं शरीरम्।

ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतँ स्मर॥ यजु 40/15

प्राण वायु शरीर से निकल जाने पर अमर हो जाता है ओर यह पार्थिव शरीर भस्म होने योग्य है। अत: हे कर्मशील जीव! तू 'ओ३म्' का स्मरण कर। अपने सामर्थ्य एव स्वरूप का स्मरण कर। संसार की यथार्थता को पहचान।

2 ओ३म् परेयिवासं प्रवतो महीरनु बहुभ्य: पन्था मनुपस्पशानम्।

वैवस्वत संगमन जनाना यम राजानं हविपा दुवस्य॥

ऋ 10/14/1

हे मानव! ससार को नियमो मे धारण करने वाले तथा जीवों को शुभाशुभ कर्मो के अनुसार फल देने वाले विश्वव्यापक तेज स्वरूप परमात्मदेव की भक्तिपूर्वक उपासना कर। वह परमात्मा निश्चय ही मरणोपरान्त धर्मात्माओ को स्वर्ग अर्थात् सुख का धाम प्राप्त कराने वाला तथा दिव्य लोको का मार्गदर्शक है। अत: हे प्रभो! हम सब आपके सम्मुख बारम्बार प्रार्थना करते ह कि उस दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

3 ओ३म् सूर्य चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्या च गच्छ पृथिवीं च कर्मणा।

अपो व गच्छ यदि तत्र ते हितमोपधीपु प्रति तिष्ठा शरीरै:॥

ऋ 10/16/3

हे जीव! प्राकृतिक नियमों तथा स्वकृत कर्मो के अनुकूल तेरा नेत्र अर्थात् दर्शन शक्ति अपने कारणभूत सूर्य को प्राप्त हो, प्राणशक्ति अन्तरिक्ष वायु को प्राप्त हो और तू स्वयं द्युलोक अथवा पृथिवी लोक को कर्मानुसार प्राप्त हो और यदि ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार तुझे वनस्पति जगत् में जाना है तो तू सूक्ष्म शरीर द्वारा जलों को प्राप्त हो।

4 ओ३म् अजो भागस्तपसा त तपस्व तं ते शोचिस्तपतु तं ते अर्चि:।

यास्ते शिवास्तन्वो जातवद स्तामिर्वहैन सुकृतामु लोकम॥

ऋ 10/16/4

हे अविनाशी जीव! तेरी जीवन यात्रा का साधन भूत जो यह शरीर है उसको यह क्रव्यादग्नि (शरीर को मास को खाने वाला अर्थात् भस्म करने वाला अग्नि) अपने तेज से भली प्रकार भस्म कर दे तथा प्रचण्ड ज्वालाओं से उसे भस्मीभूत करें। ज्ञान स्वरूप विश्वनियन्ता प्रभु अपनी दिव्य कल्याणकारिणी शक्ति द्वारा तुझे पुण्यलोक अर्थात् मोक्षधाम अथवा दिव्यात्मा का शरीर प्राप्त करावे।

5 ओ३म् यमो नो गातु प्रथमो विवेद नेपा गव्यूतिरप भर्तवा उ।

यत्रा न: पूर्वे पितर: परेयु: एना जज्ञाना: पथ्या अनु स्वा:॥

ऋ–10/14/2

विश्वव्यापक जगन्नियन्ता प्रभु हमारे सकल अच्छे और बुरे कर्मो को भली प्रकार जानता है। कभी कोइ भी मनुष्य उससे कुछ छिपा कर नही रख सकता। उसका बनाया हुआ नियम किसी प्रकार तोड़ा नहीं जा सकता। जिस पुण्यमार्ग पर हमारे पूर्वज विद्वान् पुरुप चलते रहे हे, उसी को अपना मार्ग बना कर हे जीवो! जगत् में चलो और अच्छे व्यवहार करो।

6 ओ३म् स गच्छस्व पितृभि: स यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन्।

हित्वायावद्य पुनरस्तमेहि स गच्छ स्व तन्वा सुवर्चा:॥

ऋ 10/14/8

जीव शरीर से निकल कर किरणों के द्वारा महान् आकाश में जाता है, वायु के साथ रहता है, अपने अच्छे कर्मो के अनुसार अनुत्तम शरीर को छोड़ कर नयें घर में आता है और नये तेजस्वी शरीर के साथ संसार में पुन: आता है।

7. ओ३म् अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।

गोभाज इत् किलासथ यत्सनवथ पुरुषम्॥ यजु. 35/4

हे मनुष्यो ! जो कल तक रहे न रहे, ऐसे क्षणभंगुर शरीर में तुम्हारा निवास है। पत्ते के समान चंचल संसार में तुम स्थित हो। निश्चय ही इन्द्रियों की सेवा में तुम अनुरक्त हो। आओ, अब तो उस पूर्ण पुरुष परमात्मा की अराधना कर लो। हे मोह मदिरा मे उन्मत्त जीवो! चेतो, क्योंकि पता नहीं कल क्या होने वाला है ?

8 ओ३म मृत्यो: पद योपयन्तो यदैत द्राघीय आयु: प्रतरं दधाना:।

आप्यायमाना: प्रजया धनेन शुद्धा: पूता भवत यज्ञियास:॥

ऋ 10/18/2

हे सांसारिक लोगों ! इस मृत्यु से मत घबराओ। मृत्यु के वढ़ते चरण को अपने जीवन से परे धकेल दो। आओ अपने सुचरित से दीर्घ जीवन प्राप्त करो और श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करो। शुद्ध पवित्र यज्ञीय जीवन बिताते हुए प्रजा, धन तथा सब प्रकार के सुखदायी ऐश्वर्य से सदा तृप्त बने रहो।

9 ओ३म् मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम्।

तस्मात् त्वा मृत्योर्गोपतेरुद्भरामि स मा बिभे:॥ अथर्व 8/2/23

वह मृत्यु दोपायों पर शासन करता है और यह मृत्यु ही चौपायों पर शासन करता है। उस गोपति अर्थात् पृथ्वी के स्वामी मृत्यु से तुझको ऊपर उठाता हूं, बचाता हूं। ऐसा वह है तू मत डर।

10. ओ३म् इमौ युनज्मि ते वही असुनीयताय वोढवे।

ताभ्यां यमस्य सादनं समितीश्चाव गच्छतात्॥

अथर्व 18/2/56

हे जीव! तेरे मृत देह को वहन करने के लिए, सद्गति प्राप्त करने के लिए तुझे इस अग्नि से युक्त करता हूं। इस अग्नि के द्वारा तू उस सर्वनियन्ता प्रभु के समीप परलोक को जा और श्रेष्ठ गति को प्राप्त हो। तेरी सद्गति हो।

11 ओ३म् ये चित्पूर्व ऋतसाप ऋतावान् ऋतावृध:।

पितृन् तपस्वतो यम तांश्चिदेवापि गच्छतात्॥

ऋ 10/154/4

जो पितर सत्य के रक्षक, यज्ञादि का अनुष्ठान नित्य नियमपूर्वक करने वाले हैं, ज्ञानी और तपस्वी हैं, ऐसे लोकों को ईश्वर की असीम अनुकम्पा से हे जीव ! तू प्राप्त हो और तेरी सद्गति हो अथवा ज्ञानी विद्वान् ब्राह्मण, शूरवीर न्यायकारी क्षत्रिय धन की वृद्धि करने वाले व्यापारी महानुभाव एवं परिश्रमी जन के साथ भी धर्म ही जाता है।

श्री देवराज को आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराचल के मंत्री देवराज को आर्य समाज, मुम्बई मे आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। काकड़बाड़ी में आयोजित सम्मान समारोह में यह पुरस्कार उन्हें आर्य समाज मे समर्पित भावना से की गई सर्वश्रेष्ठ सेवाओं के लिए प्रदान किया गया।

स्वामी आत्मबोध सरस्वती तथा आर्य समाज, मुम्बई द्वारा संस्थापित निधि से राष्ट्रीय स्तर पर दिए जाने वाले इस पुरस्कार को समाज के मैनेजिंग ट्रस्टी अश्विनी भाई पटेल ने प्रदान किया। उन्होंने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच देवराज को शॉल ओढ़ाकर तथा प्रशस्ति-पत्र, ग्यारह हजार रुपए एवं रजत कलश प्रदान कर सम्मानित किया।

समाज सेवा का पावन संकल्प धारण कर अपने व्यक्तिगत तथा पारिवारिक सुखों की इच्छा का परित्याग करने वाले 51 वर्षीय देवराज आर्य अनेक धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक संस्थाओं तथा पत्रकारिता मे जुड़े हुए है। वह जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा आर्य समाज ज्वालापुर के प्रधान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सीनेटर, माता लीलावती आर्य भिक्षु परोपकारिणी ट्रस्ट के मंत्री, भारत विकास परिषद तथा अनेक विद्यालयों की प्रबन्ध समितियों के पदाधिकारी एवं सदस्य हैं। इससे पूर्व वह पत्रकारिता एवं सामाजिक जीवन में सहभागिता तथा स्थानीय समुदाय में प्राप्त प्रतिष्ठा के आधार पर अनेकों बार सम्मानित किए जा चुके हैं।

उनकी इस उपलब्धि पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रिं० स्वतन्त्र कुमार, उपकुलपति प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री, कुलसचिव प्रो महावीर ने उन्हें बधाई दी।

हमारी चार माताएं

ले० श्री [illegible] आर्य, 180 महात्मा गांधी रोड, ([illegible]) कलकत्ता)

जिस प्रकार एक माता अपने बच्चे को स्कूल भेजती है तो वह उस बच्चे के लिए समय से पहले ही सेवक के हाथ भोजन व पानी भेज देती है ताकि बच्चे को भूख व प्यास से पहले ही उसको भोजन व पानी मिल जावे। ठीक वैसे ही हम सब भी उस परम पिता परमात्मा के पुत्र व पुत्रियां हैं। वह हमारा ध्यान भी उसी माता की भांति रखता है। ईश्वर जब जीव को मनुष्य देह में भेजता है तो उसके खाने पीने का प्रबन्ध व व्यवस्था पहले ही बनाकर रखता है, ताकि जीव को किसी प्रकार की तकलीफ न उठानी पड़े। जीव यदि उन सुविधाओं का प्रयोग ठीक न करे तो यह दोष जीव का है, परमात्मा की व्यवस्था का नहीं। जीव जब बच्चे के रूप में माता के गर्भ में आता है तब माता जो खाती-पीती है उसका रस बनकर एक नाभि से सम्बन्धित नली द्वारा ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार बच्चे को स्वमेव ही मिलता रहता है। इस प्रारम्भिक अवस्था में बच्चा कोई ज्ञान पूर्वक कर्म नहीं कर सकता लेकिन इस प्रक्रिया से बच्चे को बिना कोई कर्म किये अपने आप ही माता की खुराक से उसे खुराक मिलती रहती है। यह ईश्वर की एक विचित्र व्यवस्था है जिसके द्वारा बालक उस अन्धेरी कोठरी में बिना कर्म किए भोजन प्राप्त कर लेता है और उसी खुराक से नौ महीने तक बढता व विकसित होता रहता है। जब बच्चा पूर्ण होकर माता के गर्भ से बाहर आता है तो ईश्वर उसके बाहर आने से पहले ही माता के स्तनों में दूध भर देता है ताकि बच्चा बाहर आते ही दूध पीना आरम्भ कर देवे जिससे भूखा नहीं रहे। यहां यह बात समझने की है नवजात शिशु को कोई क्रिया करने का ज्ञान नहीं लेकिन जीव का जो स्वाभाविक लक्षण चेष्टा व प्रयत्न करने का है, उसी के बल पर मां जब अपने स्तनों को बच्चे के मुंह में देती है तो बच्चा अपनी चेष्टा से दूध पीना आरम्भ कर देता है। यह बच्चे की जन्म देने वाली पहली माता हुई जिसको परिवार व समाज में शतपथ ब्राह्मण के वचनानुसार "मातृमान पितृवानाचार्यवान पुरुषो वेद" कह कर पिता व आचार्य से ऊंचा व प्रथम स्थान दिया है।

यह माता बच्चे को 3 साल तक अपना दूध पिला कर बड़ा करती है। इसके बाद बच्चे को भूख भी ज्यादा लगने लगती है और माता के स्तनों में दूध भी कम होने लगता है तब घर वाले बच्चे को गाय का दूध पिलाना आरम्भ कर देते हैं और बच्चा गाय का दूध पीकर बढ़ने लगता है। गाय सभी धर्म, जाति, सम्प्रदाय व प्रदेश के मनुष्यों को यानी मानव-मात्र को बिना किसी भेदभाव के सिर्फ घासफूस खाकर अमृत के तुल्य अपना दूध पिलाती है, इसीलिए गाय को माता की संज्ञा दी गई है। वेद भी गाय को 'गावो विश्वस्य मातर:' कह कर गाय को विश्व की माता का स्थान दिया है। इस प्रकार गाय बच्चे की दूसरी माता हुई।

अब बच्चा और कुछ बडा होता है, उसको भूख भी पहले से ज्यादा लगने लगती है। खाने का साधन दांत भी आ जाते हैं तब घर वाले उसको भूमि से उत्पन्न हुए अन्न, फल, सब्जी व वनस्पतियां आदि खिलाने लग जाते हैं और उन्हीं को खाकर बच्चा बड़ा होने लगता है। इसलिए पृथ्वी बच्चे की तीसरी माता हुई। वेद भी "माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या:" कहकर पृथ्वी को माता ही बताया है। यहां यह बात समझने की है कि मानव ईश्वर की सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ प्राणी (योनि) है, बाकी सब पशु-पक्षी व जड़ पदार्थ मनुष्य के उपयोग के लिए ईश्वर ने बनाये हैं लेकिन कुछ स्वार्थी व दयाहीन इन्सान यह समझ बैठे हैं कि ईश्वर ने सारी सृष्टि मानव के उपयोग की बजाय उपभोग के लिए यानी खाने के लिए बनाई है। यह इन्सान की भूल है। ईश्वर ने कुछ चीजें उपभोग के लिए बनाई हैं, जैसे अन्न, फल, वनस्पति, जल व मेवा आदि कुछ मानव की रक्षा के लिए बनाये हैं, जैसे सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, हवा तथा वृक्ष आदि। कुछ प्राणी मनुष्य के उपयोग के लिए बनाये हैं, जैसे गाय, भैंस, बकरी दूध के लिए, घोड़ा, ऊंट, गधा सवारी तथा बोझा ढोने के लिए, बैल हल जोतने के लिए आदि। यदि ईश्वर की बनाई सभी चीजें मनुष्य के लिए खाने की हैं तो मिट्टी, पत्थर, कोयला, लोहा, सोना, चांदी मनुष्य क्यों नहीं खाता ? इसलिए मनुष्य को उचित है कि जो वस्तु ईश्वर ने खाने के लिए बनाई है उसे ही खावे और जो प्रयोग या सहयोग के लिए बनाई है उनका प्रयोग करे या सहयोग लेवे। इसी में मानव की मानवता है और ईश्वर ने मानव को बुद्धि विशेष इसीलिए दी है कि वह प्राणी मात्र के हित व कल्याण के लिए हर काम सोच समझ कर करे यानी मनन चिन्तन करके करे।

जब बच्चा युवा हो जाता है, विवाह भी कर लेता है तब उसकी जिम्मेवारियां भी बढ़ जाती हैं। अभी तक तो वह अपने माता, पिता व वृद्धजनों के कहने से काम करता था अब उसके ऊपर सिर्फ उसका गृहस्थ ही नहीं बल्कि समाज, राष्ट्र व विश्व का दायित्व भी आ गया है। अब वह अपने जीवन को सुखी व समृद्धिशाली बनाने के लिए क्या काम करे और क्या काम न करे जिससे उसका चारों ओर सम्मान बढ़े और जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति करता रहे तथा जीवन शुद्ध व पवित्र भी बनता जाये। इन बातों का ज्ञान होना उसको जरूरी है। इसी ज्ञान प्राप्ति के लिए ही ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में प्राणी मात्र के हित व कल्याण के लिए जैसे सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल वायु आदि बनाये हैं। वैसे ही ज्ञान प्राप्ति के लिए सृष्टि के आरम्भ में ही ईश्वर ने वेदों को ज्ञान चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा थे, उनके मुखों से चार वेद क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद व सामवेद प्रकाशित करवाये थे। इसीलिए वेदों को ईश्वरीय ज्ञान कहते हैं। इस वेद-ज्ञान के अनुसार चलने से यानी वेदों की शिक्षाओं व आदर्शों के अनुरूप अपना जीवन बनाने से मनुष्य इस ससार रूपी सागर में अपनी जीवन रूपी नैया को बड़े उत्तम, सरल, सुगम व सुव्यवस्थित ढंग से चला सकता है। और मानव-मात्र के लिए चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम को प्राप्त करते हुए मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है जो मानव मात्र का अन्तिम लक्ष्य है। इसलिए वेद ज्ञान मनुष्य की चौथी माता हुई। अथर्ववेद के इस मन्त्र द्वारा "स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयु: प्राणं, प्रजां, पशुं, कीर्ति, द्रविणं, ब्रह्म वर्चसम्। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्"॥ वेद ज्ञान को माता ही बतलाया है।

माता वही होती है जो अपनी सन्तान का नि:स्वार्थ भाव से पालन पोषण करती हुई अपने पूर्ण प्रयास से बच्चे का शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक व चारित्रिक निर्माण करे। इसीलिए कहा गया है माता निर्माता भवति "माता वही है जो बच्चे का निर्माण करे। वैसे तो परम्पिता परमात्मा सब माताओं की माता, सब पिताओं का पिता व सब आचार्यों का आचार्य है जो हमारी सम्पूर्ण जीवन के सुख व शान्ति की सुव्यवस्था करता रहता है। इसी की व्यवस्था के अनुसार उपरोक्त चारों माताएं हमारे निर्माण में विशेष सहयोगी होती हैं, इसीलिए इनको माता की संज्ञा दी गई है। हमारा भी पुनीत कर्त्तव्य बन जाता है कि हम भी इन चारों माताओं की सेवा व रक्षा करें। पहली जन्म देने वाली माता के प्रति हमारा कर्त्तव्य है कि उसकी सेवा व आज्ञा पालन करके उसको सुखी व प्रसन्न रखें और उसका आशीर्वाद सदा प्राप्त करते रहें। दूसरी गाय माता के प्रति हमारा कर्त्तव्य है कि उसको अच्छी प्रकार खिलाये-पिलाये, उसके पंचगव्यों (दूध, दही, घी, गोबर गोमूत्र) से खाद व भांति-भांति की दवाईयां बना कर उसकी राष्ट्र में आर्थिक दृष्टि से उपयोगिता बढ़ावें तथा उसके बच्छड़ों को हल जोतने के काम में लेवें ताकि गौवंश को सब धर्म व सम्प्रदाय वाले अधिक से अधिक संख्या में पालें और उससे लाभ कमायें। कसाईयों को देकर गोवंश को कटवाने की कल्पना कभी न करें। तीसरी भूमि माता के प्रति हमारा कर्त्तव्य है कि गाय के गोबर व गोमूत्र से बनी खाद देकर भूमि को खूब उर्वरा बनावें और फिर जोत कर शुद्ध व स्वास्थ्यवर्द्धक अनाज अधिक से अधिक मात्रा में पैदा करके प्राणी मात्र की ज्यादा से ज्यादा सेवा करें तथा विश्व में किसी को भी भूखा न सोने देवें। साथ ही यज्ञों द्वारा समय पर वर्षा करवा कर जमीन से ज्यादा से ज्यादा ऊपज लेने का प्रयत्न करें। चौथी वेदमाता के प्रति सर्वोत्तम कर्त्तव्य है कि हम वेदों के ज्ञान का अधिक से अधिक प्रचार व प्रसार करने का प्रबन्ध करें और उनके उपदेशों व शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करके उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव बनाकर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना से सारे विश्व को एक परिवार के समान बनाने का प्रयत्न करते रहें। जिससे सारा विश्व सुख व शान्ति का धाम बन कर स्वर्ग तुल्य बन जावे।

बठिण्डा में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

आर्य समाज (आर्य समाज चौक) बठिण्डा में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आचार्य विजय कुमार जी शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। इस यज्ञ में पूज्य ब्र० सूर्यदेव जी "वैदिक मिशनरी" का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। यज्ञ के यजमान श्री पवन मित्तल जी सपत्नीक एवं रंजीत मित्तल जी सपत्नीक (सुपुत्र श्री कृष्णकुमार मित्तल भूतपूर्व सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) को प्रो० ओ.पी. मंगला जी (प्रधान आर्य समाज, आर्य समाज चौक) ने ओ३म् एवं गायत्री मन्त्र के केसरी रंग कें पटके गले में डाल कर स्वागत किया। इस यज्ञ में बठिण्डा के बहुत से गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

रामायण प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता:–यज्ञ के पश्चात् रामायण प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का विशेष आयोजन प्रो० ओ.पी मंगला जी प्रधान आर्य समाज बठिण्डा की देखरेख में बडे सुन्दर ढंग से किया गया। इस प्रतियोगिता में आर्य गर्ल्ज सी.सै स्कूल, आर्य माडल हाई स्कूल, आर बी डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एव एम.एच.आर.सी.सै स्कूल तथा आर्य परिवार की टीमों ने भाग लिया। प्रत्येक प्रतियोगी टीमों से रामायण से सम्बन्धित दस-दस प्रश्न पूछे गए। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आर्य गर्ल्ज सी.सै स्कूल ने प्राप्त किया। प्रत्येक प्रतियोगी स्कूल की टीमो को सम्मान चिन्ह एवम् प्रमाण पत्र श्री पवन मित्तल जी के कर कमलों द्वारा प्रदान किए गए एवं आर्य परिवार की टीम को ईनाम एवं प्रमाण पत्र श्रीमती रेणु मित्तल जी के द्वारा भेंट किए गए। इन सभी इनामों की व्यवस्था श्री पवन मित्तल जी ने की थी। प्रतियोगिता का संचालन श्री एम पी अरोडा एवं श्रीमती अरुणा अरोड़ा जी ने बहुत ही रोचक ढंग से किया।

संस्कृत के मेधावी छात्राओं को पुरस्कार:–संस्कृत विषय में 98 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों को श्री वजीर चन्द मंगला जी (संरक्षक जिला आर्य सभा बठिण्डा) आठवीं कक्षा मे 98 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रो० ओ.पी. मंगला जी (प्रधान आर्य समाज बठिण्डा) एवम् छठी कक्षा में 100 अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को श्री पी डी. गोयल (प्रधान आर्य माडल हाई स्कूल बठिण्डा) ने पुरस्कृत एवं सम्मानित किया। तथा संस्कृत के अन्य मेधावी छात्रों को श्रीमती शान्ति जिन्दल जी प्राचार्या ने पुरस्कृत किया। इसके अतिरिक्त श्री एम.पी. अरोडा जी, श्री गौरी शंकर जी खनगवाल एवं श्री हुक्म चन्द जी गोयल ने सभी मेधावी छात्रों को पुरस्कार प्रदान किए।

ब्र० सूर्यदेव जी ने आर्य समाज को विशेष सेवायें प्रदान करने के लिए प्रा० ओ पी मंगला जी 'प्रधान' को महर्षि दयानन्द जी का विशेष चित्र भेंट कर सम्मानित किया। तत्पश्चात् श्रीमती शान्ति जिन्दल जी 'प्राचार्या' एवं श्रीमती अरुणा अरोडा जी 'मुख्याध्यापिका' (आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल बठिण्डा) को भी संस्कृत के प्रति विशेष योगदान के लिए सम्मान चिन्ह भेट किया गया एवम् प्रतियोगिता के कठिन प्रश्नों का उत्तर देने वाले दर्शकों को भी ब्रह्मचारी जी ने पुरस्कार प्रदान किया।

अन्त में ब्रह्मचारी जी ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए निम्न पंक्तियां जो ऋषि गाथा की हैं कही:-

ऋषि बोले हे प्रभु तूने मेरे संग खूब खेल खेला।
तेरी इच्छा से मैं समेटता हूं जीवन मेला।
बस एक यही विनती है अन्तर्यामी।
मेरे बच्चों को सम्भालना जग पालक स्वामी।
जब अन्त समय आया तो ऋषि ने ओ३म् शब्द बोला।
फिर चुपके से धर दिया धरा पर नाशवान चोला।

जब ईन पंक्तियों को गाया तो सभी श्रोता भाव-विभोर हो गए।

आर्य समाज मगरापूंजला (जोधपुर) का उत्सव

आर्य समाज मगरा पूंजला नयापुरा (जोधपुर) राजस्थान का दो दिवसीय वार्षिक महोत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामसुफल शास्त्री "वैदिक प्रवक्ता" हांसी, विदुषी बहन पुष्पा शास्त्री उपदेशिका रेवाड़ी, श्री देवी प्रसाद जी आर्य भजोनेपदेशक (जोधपुर) तथा ब्रह्मचारी अमित कुमार आर्य (हांसी) आदि विद्वानों ने अपने-अपने विचारों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। पूर्णाहुति एवं उत्सव समापन पर अन्तिम दिन उक्त विद्वानों को राजस्थानी पगड़ी पहना कर तथा फूल मालाओं से स्वागत करके अभिषेक किया गया। **–महेन्द्र सिंह मन्त्री**

दयानन्द पब्लिक स्कूल में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

दयानन्द पब्लिक स्कूल, दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में 2 नवम्बर 2002 दिन शनिवार प्रात: 8.30 बजे से 12.30 बजे तक स्कूल के हाल में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस दिवस का आयोजन स्कूल के प्रबन्धक आशानन्द आर्य तथा प्रधान श्री ओम प्रकाश गुप्ता जी की देखरेख में किया गया।

यज्ञ प्रात: 8.30 बजे श्री अजय कुमार जी बत्तरा ने बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न करवाया। बच्चों ने हवन में खूब रुचि ली। हवन के पश्चात् ध्वजारोहण श्री अजय कुमार जी बत्तरा ने किया एवं स्कूल को 1100 रुपए दान दिए। झण्डे की रस्म के पश्चात् बच्चों ने झण्डा ऊंचा रहे हमारा गीत प्रस्तुत किया। दूसरी कक्षा की दो छात्राओं ने 'ओ३म्' का झण्डा प्यारा झण्डा की सुन्दर कविता प्रस्तुत की। छठी कक्षा की राजदीप और लीना ने गायत्री मन्त्र का जाप किया। सातवीं कक्षा के छात्र आकाशदीप ने भी ऋषि दयानन्द जी पर स्वयं सुन्दर कविता बोली। आठवीं कक्षा की छात्र मीनाक्षी ने भी ऋषि दयानन्द जी के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए विचार प्रकट किए। आठवीं कक्षा की छात्रा पूजा ने भी ऋषि दयानन्द जी की नजरमें स्त्री जाति की कितनी इज्जत थी, इस विषय पर अपने विचार प्रकट किए। इस पावन दिवस पर स्कूल के अध्यापक वर्ग एवम् आर्य युवा सभा के सदस्यों को सत्यार्थ प्रकाश एवम् सरोपे भेंट करके सम्मानित किया गया। इस समारोह में स्कूल की प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता और उपप्रधान श्री वेद भूषण मदान एवम् सदस्य श्री सतपाल नारग, हर्ष आर्य, बृज मोहन अरोड़ा, ओम प्रकाश गुप्ता हरपाल नगर वाले, श्रीमती नीना बेरी, श्रीमती सरला लूम्बा, श्रीमती लीला कपूर, जिला आर्य सभा की प्रधाना श्रीमती राजेश जी शर्मा तथा आर्य सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल की प्रबन्धक श्रीमती नीलम थापर जी विशेष रूप से सम्मिलित हुई।

स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने बच्चों को आशीर्वाद दिया एवं बच्चों के कार्यक्रम की सराहना की एवं स्कूल में आये अतिथियों का धन्यवाद किया। समारोह के अन्त में वैद्य वैणी प्रसाद जी की बहू श्रीमती सुनीता जी द्वारा लाया गया प्रसाद वितरित किया गया। इसके पश्चात् जलपान का उत्तम प्रबन्ध था। **–प्रिंसिपल**

ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति के लिए आवश्यक है सात्त्विक तप

आर्य समाज, बी-ब्लाक, जनकपुरी में प्रवचन करते हुए वैदिक विद्वान् आचार्य हरिप्रसाद जी आर्य ने कहा कि वह ईश्वर वर्चस्वी हैं और हम उससे प्रार्थना करते हैं कि वह हमें भी वर्चस्वी बनाएं। यदि हम ब्रह्मवर्चस् को प्राप्त करना चाहते हैं, ब्रह्म का साक्षात्कार करना चाहते हैं तो हमें उसकी कीमतें चुकानी पड़ेंगी, क्योंकि किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के लिए उसकी कीमत चुकाना आवश्यक है और जो वस्तु जितनी बड़ी अथवा महत्वपूर्ण होगी, उसका मूल्य भी उतना ही अधिक होगा। हम परमात्मा को पाना चाहते हैं, जो श्रेष्ठतम, परम पवित्र और सर्वोत्तम है पर उसकी प्राप्ति के लिए कोई तैयारी नहीं करते। हम देखते हैं कि आज ईश्वर को सस्ते दामों में बेचा जा रहा है, पर वह इतनी आसानी से मिलने वाला नहीं। उसे पाने के लिए यज्ञ, अध्ययन और दान दिखावे के लिए भी किए जा सकते हैं, किन्तु सात्त्विक तप, जो अत्यधिक श्रद्धा के साथ किया जाता है, आडम्बर रहित होता है। ब्रह्मवर्चस् एवं परमात्मा की प्राप्ति हेतु सात्त्विक तप की परम आवश्यकता है। द्वन्द्वों को सहन करना ही तप है। मन, वाणी और शरीर से परम श्रद्धा के साथ किया जाने वाला तप सात्त्विक है एवं अध्यात्म मार्ग के पथिक के लिए यह नितान्त आवश्यक है। प्रधान-पद से बोलते हुए प्रो. (डॉ) सुन्दर लाल कथूरिया ने कहा कि शास्त्रकारों ने सत्य को सबसे बड़ा तप कहा है तथा ब्रह्मचर्य एवं तप से मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की बात भी कही है। विद्वान् वक्ता का धन्यवाद करते हुए उन्होंने यह कामना की कि हम सब तपस्वी बनें। कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्रीमती उज्जवला वर्मा के सुमधुर भजन ने श्रोताओं का मन मोह लिया। कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज के मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी ने किया। **–योगेश्वर चन्द्रार्य**

परमात्मा की महानता

□ ले. स्व. आचार्य राम प्रसाद जी वेदालंकार

दादी माँ, फिर जब दूसरी मैडम पढ़ा कर जाने लगी तो उसने विद्यार्थियों से कहा कि "मुझे अपनी-अपनी होमवर्क की कापियां दे दो।" वह जल्दी में जा रही थी। मेरी कापी रह न जाए यह सोचकर मैं अपने डेस्क के नीचे से निकल कर पहली पंक्ति में आ गया और मैंने उन्हें अपनी कापी दे दी। वह तो लेकर चली गई पर ध्यान से पूर्व भीतर से मुझे यह सुनने को मिला कि तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। भले ही कापी अगले दिन के लिए रह जाती।' सो उसका प्रायश्चित किया। दादी मां। यह तो मैं देना बता गया, और नहीं बताऊंगा।" उसने उसको खूब प्यार किया और पुरस्कार भी दिया। पर जब वह घर वापिस आता है तो रास्ते में अपनी मां को बच्चा कहता है-"मां जी ! तीसरी बात तो मुझे और भगवान् ने बताई-बेटा ! तू बहुत दिनों में आया है, अत: जरूरी थोड़ी है जो आज की ही गल्ती बतानी है, तुम्हें याद है तुमने अपनी मां के पर्स में से एक 20 का नोट निकाला था। मां जी, वह ऐसी बात थी कि मैं इन्कार न कर सका। "मां जी ! जब आप देहलो में सर्विस करती थीं, मैं तब बहुत छोटा था मुझे तब नोटों की जानकारी भी नहीं थी। तब इतना ही पता था कि इन हरे, पीले, नीले कागजों से खाने-पीने की चीजें मिलती हैं। सो मैंने तुम्हारे पर्स में से यह लम्बा-लम्बा बीस का नोट निकाला था....। झट मैंने स्वीकार कर प्रायश्चित किया गायत्री मन्त्र से, जैसा कि पिता जी ने बताया था, और प्रभु से प्रार्थना भी की कि-"प्रभुवर! आगे ऐसी सद्बुद्धि दो कि मुझसे पुन: कभी ऐसा न ही हो।" सो इस प्रकार जिस चोरी को घर में न मोसा जी, न मोसी जी, न भाभियां और न भाई पकड़ सके और न ही आज तक उसकी मां को उसका पता लग सका, उस चोरी को प्रभु ने कैसे पकड़ा और उस बच्चे से कैसे मनवाया, एवं सात्विक बालक ने भी कैसे सहज उसे स्वीकार कर उस पर प्रायश्चित किया और भविष्य में ऐसा न हो, उसके लिए प्रभु से प्रार्थना भी की।

सो इस प्रकार यदि सच्चे सरल हृदय से स्तोता-भक्त-साधक प्रभु शरण में प्रतिदिन बैठ-बैठकर उस सर्व व्यापक सर्वज्ञ अन्तर्यामी प्रभु से अपने दोषों, पापों, अपराधों की पूछता रहेगा और पूछ-पूछ कर जानता रहेगा और जान-जान कर उन पर पश्चात्ताप करता रहेगा तथा पश्चात्ताप कर कर के भविष्य में उन पापों से उनके आधार पर होने वाले तापों से बचने के लिए प्रार्थना और संकल्प करता रहेगा, तो यों एक दिन वह सर्वथा 'अनेना:- निष्पाप, निष्कलंक, स्वच्छ-निर्मल होकर कृतज्ञतावश दिव्य भावों से भरा हुआ आगे बढ़ता रहेगा, तो नि:सन्देह एक दिन उसे सब प्रकार से सफलता मिल जाएगी । वह फिर एक दिन सर्वथा निष्पाप बन कर मन वचन कर्म से उन पापों से सर्वथा निष्पाप बनाने वाले, और निष्पाप बनने पर सब प्रकार से स्नेह-सम्मान-यश प्रदान करने वाले तथा इन सब स्नेह सम्मान और यशों से ऊपर उठे हुए सच्चे-सुच्चे साधक को सब प्रकार से वर लेता है, अपने अद्वितीय प्यार का-अपने अनुपम दिव्य आनन्द का पात्र बनाकर इस जग के बन्धन से मुक्त कर देता है और सब प्रकार से उसको निहाल कर देता है।

कदा न्वन्तर्वरुणे भुवनि॥ ऋ. 7-86-2॥

(कदा नु वरुणे अन्त: भुवानि) कब (निश्चय से) मैं वरुण में प्रविष्ट हूंगा? कब मैं वरणीय वरुण देव में भीतर घुस पाऊंगा? न जाने कब मैं उस वरणीय वरुण देव को समझ पाऊंगा ? न जाने कब मैं उसको जान पाऊंगा?

कदा शब्द का यहां अपना ही महत्व है। इसमे एक तड़प है, एक अधीरता है, एक तीव्र अनुराग है। इतना अधिक कि भक्त अब और देरी सह नहीं सकता।

एक छोटे बच्चे को हम देखते हैं जो खीर खाना चाहता है। मां कहती है-"बेटा ! मैं अभी बना देती हूं।" मां ने खीर बनानी प्रारम्भ की। बच्चा अधीर होकर पूछता है-"मां खीर कब बनेगी ?" मां बोली-"बेटा! अभी थोड़ी देर में बन जाती है। जल्दी ही बच्चा फिर कहता है-"मां ! अब तो बहुत देर हो गई है। अभी भी खीर नहीं बनी ? मां बोली-'बेटा, बस अभी 5 मिनट में उतारती हूं। फिर आपको डालकर देती हूं।' बच्चा बोला तो मा, फिर मैं अपनी कटोरी-चम्मच ले आता हूं।' अपने लिए (थल्ला) बैठने का आसन लाकर बिछा देता है और उस पर वह बैठ कर कटोरी चम्मच अपने सामने रख लेता है।" किस तड़प से, किस लगन से, किस प्यार से वह बैठा है, और चम्मच से खीर के अभाव में भी खीर उठाने और उसको खाने का वह रिहर्सल कर रहा है और अब वह कह रहा है-"मा जी ! अब तो 5 मिनट भी कब के हो गए होंगे। अब भी खीर नहीं बनी, तो फिर कब बनेगी ?" बच्चे का यह सारा क्रिया-कलाप देखने योग्य था और उसके वे शब्द और लहजा सुनने लायक था। खीर बनने पर मा ने जब वह खीर परोसी और बच्चे ने जिस प्यार से, वह खाई, मा ने देखा कि खीर खाते हुए वह मूंह हाथ-वस्त्र आदि सब लत-पथ कर रहा है। यह देखकर मा ने उससे चम्मच लेकर उसको वह स्वय खिलानी चाही। इससे वह बच्चा बड़ा दु:खी हुआ और यह प्रदर्शित करने लगा कि-"मां! तू इस रस लेने में विघ्न न डाल' जैसे भी मैं खा रहा हू, तू मुझे खाने दे ।"

ऐसे ही एक घर में विद्वानों, संन्यासियों का भोजन था। घर में खीर-पूरी आदि सब कुछ बना था। बच्चों ने खीर मांगी तो माता पिता, दादी आदि बोले-"बेटा ! पहले ये साधु-विद्वान् खा लें तो फिर तुमको खिलायेंगे।" बच्चों ने सोचा-"न जाने कब ये साधु खायेंगे और न जाने कब ये उठेंगे और न जाने कब हमको खीर खाने को मिलेगी ?" साधु आए, उन्होंने हाथ-पाव धोए और आसनों पर विराजमान हो गए। वे खीर-पूरी आदि सब खाने लगे। बच्चों ने सोचा-"न जाने कब ये खा के उठेंगे और फिर हमको खीर खाने को मिलेगा?" वे अधीर होकर प्रतीक्षा करते रहे और सोचते रहे कि कब ये सब उठें और कब हमारे माता-पिता हमें बैठाएं और हमें खीर परोसें और हम खायें।

साधु खा के निपट गए और हाथ धोने लगे। यह देखकर बच्चों की अधीरता और तड़प अपने ढंग से अभिव्यक्ति होती है। उन्हें हाथ धोते हुए जब बच्चों ने देखा तो वे दादी से बोले-"दादी ! वे तो फिर हाथ धो रहे हैं" अर्थात् बच्चे यह कहना चाहते थे कि "दादी मां ! जब वे खीरादि खाने बैठे थे तो तब इन्होंने हाथ-पांव धोए थे, सो ये तो फिर हाथ धो रहे हैं। इसका अर्थ है कि ये तो पुन: खाने बैठेंगे, तो मां फिर हमारा नम्बर कब आयेगा ? हमें खीर खाने को कब मिलेगी । "माताएं-बहनें यह सब सुनकर हंसी और बोली-"बेटा! अब ये खीर खाने के लिए हाथ नहीं धो रहे हैं बल्कि ये खीर खा के हाथ धो रहे हैं।"

न जाने कब खीर खाने को मिलेगी, यह जो अधीरता बच्चों के मन में खीर के लिए है, व जो अधीरता एक कन्या में-एक वधू में अपने पति के प्रति होती है व जो अधीरता एक पति में अपनी पत्नि के लिए होती है व जो तड़प एक मां में अपने पुत्र व पुत्री के लिए होती है व जो अधीरता एक बच्चे में अपनी मां व अपने पिता के प्रति होती है व जो अधीरता एक आज़ादी के दीवाने में अपने देश की स्वतन्त्रता के प्रति होती है, उससे भी कहीं अधिक बढ़कर यह तड़प यहां एक साधक में अपने वरणीय वरुण देव के प्रति होती है। अत: वह साधक कहता है कि-"कदा नु वरुणे अन्त: भुवानि"-न जाने कब मैं उस वरणीय वरुण देव के न जाने कब मैं अपने प्राण प्रिय प्रभु के अन्दर प्रवेश पाऊंगा? न जाने कब मैं उससे ओत-प्रोत होऊंगा ? ऐसे जैसे पेठा चाशनी मे पड़कर रस मे पड़ कर रस से ओत-प्रोत होकर सरस हो जाता है व प्रभु की व्यवस्था में मन्त्रा रस से सरस बन जाता है.. ।

(क्रमश:)

बरनाला में ऋषि निर्वाण उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बरनाला द्वारा ऋषि निर्वाण उत्सव दिनांक 3 नवम्बर रविवार को आर्य समाज मन्दिर में मनाया गया। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् आर्य समाज के प्रधान श्री अमृत लाल जी गुप्ता की अध्यक्षता में कार्यक्रम चलाया गया जिसमें बरनाला की शिक्षण संस्थाओं गांधी आर्य, हाई स्कूल, दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर एव आर्य माडल स्कूल के शिक्षक वर्ग एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया जिन्होंने ईश्वर स्तुति एवं स्वामी दयानन्द जी के जीवन सम्बन्धी भजन गाए। जिसमें गोपाल कृष्ण महामंत्री, भागमल गर्ग उपप्रधान, भारत मोदी उपप्रधान, बसन्त शोरी प्रचार मन्त्री, रामचन्द्र आर्य, केवल कृष्ण आर्य महिला कालेज, पवन सिंगला मैनेजर दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर, श्री सुखविन्द्र लाल प्रिंसीपल गांधी आर्य हाई स्कूल, हरमेल सिंह जोशी, सूर्यकान्त शोरी, हुकम चन्द आर्य, तीर्थदास सिंधवानी, रामसरण दास विशेष रूप से पधारे। श्री हरमेल सिंह जोशी, बसन्त शोरी, पवन सिंगला, सुखविन्द्र लाल, भारत मोदी, तीर्थदास सिंधवानी ने स्वामी जी के जीवन बारे चर्चा करते हुए श्रद्धाजलि अर्पित की एवं उन द्वारा बताए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा दी। दीपावली के दिन विशाल शोभा यात्रा प्रभात फेरी प्रात: 5 बजे निकाली गई जो शहर के मुख्य बाजारों से गुजरी। प्रधान गुप्ता जी द्वारा सम्मिलित व्यक्तियों का धन्यवाद किया गया।

—राम कुमार सोबती, मन्त्री

आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर का उत्सव

आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव 16 से 22 दिसम्बर 2002 तक मनाया जा रहा जिसमें साध्वी विशोकायति जी, श्री पं विजय कुमार शास्त्री जी व श्री जगत वर्मा जी के उपदेश होंगे। इस अवसर पर और भी कई उच्चकोटि के विद्वान् व नेतागण पधार रहे हैं। 22 दिसम्बर रविवार को विशेष कार्यक्रम होगा। जालन्धर की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों व सदस्यों से प्रार्थना है कि वह इस उत्सव में प धार कर धर्म लाभ उठावें व हमें अपना सहयोग दें।

—वेद आर्य, मन्त्री

अमृतसर में ऋषि निर्वाण दिवस

आर्य समाज. शक्ति नगर अमृतसर में 3-11-2002 को ऋषि निर्वाण दिवस पर्व के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम रखा गया। जिसमे विद्वानों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर व्याख्यान दिए और यह भी बताया कि महर्षि ने राष्ट्र-निर्माण में बहुत योगदान किया ह। कार्यक्रम के पश्चात् दीपावली पर सबको शुभकामनाए दी गई और राष्ट्र ओर समाज की सुख समृद्धि के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

—राकेश मेहरा, मन्त्री

बुडलाडा में ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

डी.ए.वी मॉडल सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल बुढलाडा जो पिछले 18 वर्ष से आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के आदर्शो पर चलता हुआ शिक्षा के मैदान मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है तथा इलाके के अग्रणीय तथा शिरोमणि शिक्षा सस्थाओ में एक है। इस स्कूल के नए हाल मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस बहुत श्रद्धा तथा धूमधाम से मनाया गया। स्कूल के बच्चो ने बहुत ही सुन्दर ढग तथा श्रद्धा से हवन यज्ञ किया। जिसमें स्कूल के प्राय: सभी विद्यार्थी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर स्कूल की प्रबन्ध कमेटी के चेयरमन श्री मेघराज गोयल ने भी ऋषि जीवन पर प्रभावशाली भाषण देते हुए छात्र-छात्राओं को आह्वान किया कि वो मिथ्यावाद तथा पाखण्डवाद को समाप्त करने के लिए अपने आप को तैयार करें।

—प्रिंसिपल

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल टंकारा ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी मनोनीत

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी को महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) का मैनेजिंग ट्रस्टी मनोनीत करने की सूचना देते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है। मुंजाल जी को मैनेजिंग ट्रस्टी मनोनीत करने के उपलक्ष्य में सभी ट्रस्टियों ने सभा मंत्री को अपनी स्वीकृति दी और उनके नाम को प्रस्तावित करने के लिए ट्रस्ट मंत्री का धन्यवाद भी किया।

श्री सत्यानन्द मुंजाल लगभग 20 वर्षो से टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं और ट्रस्ट को उनका पिछले कई वर्षों से अभूतपूर्व योगदान मिल रहा है। आर्य जनों को यह विदित ही है कि टंकारा ट्रस्ट के ऐतिहासिक ऋषि जन्म भूमि को ट्रस्ट के अधीन करवाने में श्री सत्यानन्द मुंजाल जी का योगदान ट्रस्ट इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा।

श्री मुंजाल जी का जन्म 24 मई 1917 को लायलपुर के कमालिया गांव में हुआ, उनकी प्रारम्भिक शिक्षा आर्य गुरुकुल पद्धति से हुई। आप अपनी आयु के 16वें वर्ष से ही आर्य समाज क्वेटा से जुड़ गए और उसके बाद निरन्तर भारत विभाजन के उपरान्त भी आर्य समाज की मुख्यधारा से जुड़े रहे।

उत्तर भारत के प्रमुख उद्योग संस्थान हीरो ग्रुप के समस्त भाईयों में आप सबसे बड़े हैं और संस्थापक भी हैं। व्यापार के अतिरिक्त आप लुधियाना के असख्य शिक्षण संस्थाओ के प्राणदाता हैं और वर्तमान मे कन्याओं का एक आधुनिक गुरुकुल आपके ही कर कमलो एवं प्रेरणा से स्थापित हुआ है। दयानन्द मेडिकल कालेज लुधियाना के आप अन्तरंग सदस्य हैं। लुधियाना एव उसके निकटवर्ती क्षेत्रो में आप द्वारा असख्य आर्य समाजों की स्थापना हुई और विशेषकर गढ़वाल के पिछडे क्षेत्रों में आप द्वारा किए गए कार्य लोगों के लिए प्रेरणादायक हैं। आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के उपप्रधान हैं।

यदि आपसे कभी यह पूछा जाए कि आपके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि क्या है तो आप कहते हैं ऋषि जन्म भूमि को श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा को दिलवाना, जिसे पिछले कई वर्षों से प्राप्त नहीं किया जा सका।

टंकारा ट्रस्ट का यह सौभाग्य है कि ऐसे महान आत्मा श्री सत्यानन्द मुंजाल जी हमारे सहयोगी मैनेजिंग ट्रस्टी के रूप में होंगे और आपका मार्गदर्शन असंख्य वर्षो तक प्राप्त होता रहेगा।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

दीपावली व महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव

आर्य समाज लक्ष्मणसर में दीपावली व महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण उत्सव बडी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभ आरम्भ यज्ञ से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर ने कहा कि दीपावली एक राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन अन्धकार को दूर कर प्रकाश की कामना की जाती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती संस्थापक आर्य समाज का इसी दिन निर्वाण हुआ था। अन्धकार को दूर कर, अज्ञानता को दूर कर, ज्ञान का दीप प्रज्वलित कर महर्षि ने समाज में आई सभी कुरीतियों को दूर कर वेद का ज्ञान दिया। श्री सोमेश कपूर, संजीव आर्य, रमेश वोहरा, युगल किशोर आहूजा, मा वजीरचन्द, प्रवीण कुमार पं. मुकेश कुमार, बहन विमला अग्रवाल, लता, सन्तोष शारदा, राम सन्तोष, ममता भी विशेष रूप से उपस्थित हुईं।

—सोमेश कपूर, मन्त्री

दुःख-सुख

ले० श्री चमन लाल मैहता मन्त्री जिला आर्य सभा, भटिण्डा (पं.)

संसार में दुःख-सुख, जन्म-मृत्यु, हानि-लाभ, यश-अपयश, साथ-साथ चलते हैं। कितनी आश्चर्यजनक बात है कि हम सुख को चाहते हैं, दुःख नहीं, लाभ तो चाहते हैं हानि नहीं, जीवन तो चाहते हैं पर मृत्यु नही, हम भूल जाते हैं कि ससार में जीव सुख-दुःख भोगने के लिए जन्म लेता है। जो मनुष्य यह समझ लेता है वह दुःख-सुख से पार हो जाता है। इतिहास में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता जिसे दुःख से, परेशानियो से, मुसीबतों से न जूझना पडा हो, और तो और श्री रामचन्द्र जी जिन्हें हम मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं, वह भी 14 वर्ष तक वन में कदमूल खा कर गुजारा करते रहे। सीता जी ने भी कौन सा सुख देखा जो 14 वर्ष वनवास के बाद भी आश्रम में रही जहा उन्होंने लव-कुश को जन्म दिया।

"कौन है जिस पर कभी काली घटा छाई नहीं

राम और घनश्याम पर भी क्या विपदा आई नही"

जब श्री राम और श्री कृष्ण कष्टों से नहीं बच सके तो हम साधारण व्यक्ति किस खेत की मूली हैं? इसलिए-

"चमन उजड जाएगा अगर तुम तमाम कांटे अलग करोगे,

गुलिस्तां की खैर चाहो तो चन्द कांटे कबूल कर लो।"

जीवन में सदा दुख नहीं रहता और न ही सुख रहता है। दुःख-सुख तो चलती फिरती छांव है, यह दृढ़ विश्वास रखो कि ईश्वर न्यायकारी है और दयालु भी है। वह बिना कारण कष्ट नहीं देता।

"हैं अज्ञानतावश हम उसे दोष देते।

जो बोया था उसकी कटाई होई है।"

ईश्वर हमारा माता-पिता है कभी माता-पिता अपने बच्चो को कष्ट देना चाहता है। परन्तु सही रास्ते पर लाने के लिए कभी-कभी अपने बच्चे को थप्पड लगाना पडता है। जब हम पथ भ्रष्ट होने लगते है, हमें अपने हृदय से आवाज आती है। प्रभु हमें चेतावनी देता है। हमारा मेल धोने के लिए पानी में डुबकी लगाता है। हमे डुबने के लिए नही, जिस प्रकार कुम्हार घडा बनाते समय बाहर से हत्थे के साथ कच्चे घड़े को मारता है परन्तु अन्दर घडे के हाथ रखता है कहीं ज्यादा न लग जाए। जरा सोचिए कितना होगा नीरस जीवन, यदि उसमे चुनौतियां न हों परेशानिया न हों, दिक्कते न हों कभी भी भगवान से प्रार्थना मत करो कि मेरी जिम्मेदारिया घटा दो मुझे सदा सुख ही सुख मिले, उससे प्रार्थना करो, हे प्रभो मेरी जिम्मेदारिया बढ़ा, बेशक मेरी परेशानियां बढ़ा, पर उन परेशानियों को सहन करने की उन्हें दूर करने की बुद्धि और शक्ति प्रदान कर क्योंकि यह कठिनाईयां हमे कुछ न कुछ सबक सिखा कर जाती हैं सोना तपने पर ही शुद्ध होता है। बडी-बडी डिग्रियां और उपलब्धियां कठिन परिश्रम के बाद दुख सहने के बाद ही प्राप्त होती है।

"सुख होता है इन्सान ठोकरें खाने के बाद।

रग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद॥"

इसलिए दुख की आंधियां कितनी भी चलती रहें आप की मुस्कराहट के दीये को कभी न बुझने दे, भगवान ने जो भी दिया उसी मे सतोष कर अपने पुरुपार्थ मे कमी न आने दे, जिस अवस्था मे भगवान रखे, उसी में खुश रहो, यदि भगवान हमें कष्ट देता है तो वह हमारे पूर्व कर्मो का फल हो सकता है। इसलिए दुख आये तो समझ ले पाप कर्मो का बोझ उतर रहा है और सुख आये तो प्रभु का धन्यवाद करके भोगें।

एक बार समुद्र मे भयंकर तूफान आ गया। कप्तान ने सबको रक्षा पेटिया बाधने का आदेश दिया। सब लोग खाना-पीना भूल गए। नाच-गाना, मौज-मस्ती सब बन्द हो गया। सब अपने-अपने तरीके से प्रभु को याद करने लगे। तूफान थम गया। सब प्रभु को भूलाकर फिर खाने पीने लगे और मौज-मस्ती में व्यस्त हो गए। हम प्रभु को तभी याद करते हैं जब दुःख आता है। दुःख एक प्रकार का अप्रत्यक्ष आशीर्वाद है। (Blessing Disguise) किसी शायर ने क्या खूब कहा है।

"खुदाया ! मुझ को दुनिया भर की मुश्किलें दे दे।

कि अपने आप आ जाती है तेरी याद मुश्किल मे॥"

सच्चा सुख तो केवल प्रभु के चरणों मे मिलता है। जो व्यक्ति अपने मन को वहां लगा लेता है वह दुःखो से बचा रहता है। इसलिए कहा है-

भरोसा कर तू ईश्वर पर तुझे धोखा नहीं होगा।

यह जीवन बीत जाएगा, तुझे रोना नहीं होगा।

कभी दुःख है कभी सुख है यह जीवन धूप छाया है।

हंस कर बिता डालो, बितानी ही यह काया है॥

जो सुख आये तो हंस देना जो दुख आये तो सह लेना।

न कहना कुछ कभी जग से प्रभु से ही तू कह लेना॥

ओ३म् शान्तिः

आर्य समाज गोबिन्दनगर कानपुर द्वारा शुद्धि कार्य

पिछले कई वर्षों से आय समाज गोबिन्द नगर कानपुर निरन्तर शुद्धि का कार्य कर रही है। गत दिनो सभा परवान सुपुत्री श्री नसार अहमद म न 84 112 भगवान दास का हाता अफाम कोठा कानपुर को शुद्ध कर उसका नाम माधुरा रखा एव उसका विवाह श्री मनोकिग सुपुत्र श्रा देवी प्रसाद म न 84 168 चन्द्रिका पाल का हाता अफीम कोठी कानपुर से सम्पन्न करवाया गया।

शायरा बानो सुपुत्री श्रा गफ्फार अजगेन जिला उन्नास को शुद्ध करके उसका नाम सावित्री रखा गया एव उसका विवाह छोटे लाल पासवान सुपुत्र श्री मगली प्रसाद अजगन जिला उन्नाव के साथ सम्पन्न कराया गया

कु० अजुम वाशा पुत्रा श्रा अकबर म न 14444 17 सी बगलौर को शुद्ध करके उसका नाम अजु रखा गया एव उसका विवाह श्री नवीन कुमार श्रीवास्तव सुपुत्र श्री प्रेम शकर म न 102 फ्लेट आर आई सैन्टल एक्साईज कालानी बान्द्रा मुम्बई के साथ किया गया।

कु शबाना आजमा पुत्री श्री कासिम हुसैन 111 12 बैना फावर पुरानी कालाना कानपुर को शुद्ध करक उसका नाम अजली रखा गया ओर उसका विवाह श्रा विजय कुमार गौतम से सम्पन्न कराया गया।

श्री मोहम्मद इरफान सिद्दिकी सुपुत्र श्री उमर सिद्दिकी म न 188 वी सिविल लाईन बरेला को शुद्ध करके उसका नाम हर्ष कुमार रखा गया

ऊपर लिख शुद्धि सस्कारा को पुरोहित श्री प सत्यकेतु शास्त्री ने सम्पन्न करवाया। आय समाज क प्रधान श्री शुभ कुमार वोहरा मन्त्री श्री बाल गाविन्द राय प्रधाना श्रामती दर्शना न प्रमाणपत्र जारी किए तथा आशावाद दिया।

लुधियाना मे पारिवारिक सत्सग

आर्य समाज पार्कलेन सिविल लाईन लुधियाना की ओर से पारिवारिक सत्सग 7 2002 को श्री जितेन्द्र वर्मा सुण्डान मन्दिर स्ट्रीट वृन्दावन रोड लुधियाना मे साय 3 30 से 5 30 बजे तक होगा। यह सत्सगो का सिलसिला निरन्तर चलता रहेगा। बहुत से भाईयों ने अपनी तिथिया पहले अकित करवा रखी है मुझे प्रसन्नता है कि आम लोगो मे यज्ञ व सत्सग प्रति श्रद्धा बढती जा रही है **–नरेन्द्र भल्ला**

चम्बा में वेद प्रचार

आय समाज चम्बा मे वद सप्ता दिनाक 29 10 2002 स 4 11 2002 तक मनाया गया आय जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री विद्याभानु शास्त्री जा क वदा पर सरल एव सुबाध प्रवचन हुए श्री शक्ति कुमार एवम साथिया क भजना का लागा ने बहुत प्रशसा का

दिनाक 4 1 00 का दाणवला का पव ऋषि निवाण उत्सव के रूप म मनाया गया जिसका अध्यक्षता स्वामा समधनन्द सरस्वता अध्यक्ष दयानन्द मठ चम्बा न की आर्य पब्लिक स्कूल का विमला प्राढ शिक्षा कन्द्र एवम अनाथालय के बच्चा न महर्षि दयानन्द का अपन सुन्दर भजना द्वारा श्रद्धाजाल दा **शाम लाल सल्हात्रा**

आर्य समाज फाकल प्वाइट लुधियाना का उत्सव

आय समाज फाकल प्वाइट लुधियाना का वार्षिक उत्सव म 4 नवम्बर 2002 तक मनाया जा रहा है श्रा प कुन्दन लाल जा शमा तथा अन्य विद्वाना के वेदापदश हाग आय बन्धुओ व बहना म प्राथना है कि समय पर पधार कर उत्सव का शाभा बढाए व धम लाभ उठाव

–बलदेव राज मन्त्री

दयानन्द मठ जालन्धर का उत्सव

मठाष दयानन्द मठ ढन माहल्ला जालन्धर का वार्षिक उत्सव 11 12 2002 का 17 12 2002 तक बडे समारोह से मनाया जा रहा है जिसमे श्री आम प्रकाश जी करनाल श्री हरिश्चन्द्र जी सुन्दर नगर डा महावीर जी गुरुकुल का वि वि हरिद्वार तथा अन्य विद्वाना के उपदश हागे।

–कुन्दन लाल

आर्य समाज सान्ताक्रुज का 58वां स्थापना दिवस एव पुरस्कार समारोह

रविवार दिनाक 20 सितम्बर 2002 को आर्य समाज सैन्ताक्रुज का 58वा स्थापना दिवस एव पुरस्कार समारोह आर्य समाज के विशाल सभागृह मे मनाया गया। सर्वप्रथम 8 00 बजे से 9 00 बजे तक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। तदनन्तर आर्य विद्या मन्दिर सान्ताक्रुज की छात्राओ ने बाल सत्सग मे सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। प्रात 10 बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य जी की अध्यक्षता में स्थापना दिवस एव पुरस्कार समारोह आरम्भ हुआ। श्रीमती सरोजनी गोयल ने स्वामी दयानन्द जी के गुणो से सम्बन्धित एक गीत गाया। तत्पश्चात् मन्त्रोच्चारण एव पुष्पवृष्टी के साथ अतिथि एव पुरस्कार प्राप्तकर्ताओ का मच पर आगमन हुआ। आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रधान डा सोमदेव शास्त्री ने अपने स्वागत भाषण मे सभी का अभिनन्दन करते हुए हार्दिक प्रसन्नता अभिव्यक्त की। आर्य समाज सान्ताक्रुज के उपप्रधान श्री चन्द्रगुप्त जी आर्य ने आर्य समाज सान्ताक्रुज का परिचय दते हुए गत् 58 वर्षो की विशेष उपलब्धियो पर प्रकाश डाला। श्री सगीत आर्य (महामन्त्री आर्य समाज सान्तक्रुज) ने पुरस्कारो का परिचय प्रस्तुत किया।

डी एम कालेज आफ एजुकेशन मोगा का सराहनीय कार्य

पजाब यूनिवसिटी चडीगढ द्वारा 30 व 31 अक्तूबर को देव समाज कालेज आफ ऐजुकेशन (फिरोजपुर) की ओर से जोनल युवक मला कराया गया। जिसमे डी एम कालज आफ एजुकेशन मागा की आर स क्लासिकल डास (कथक) म जतिदर कोर प्रथम मनोज कुमार (गीत) मे प्रथम नवदीप कार कहानी म प्रथम भूपेदर सिह व्यक्तिगत रूप म (मलवइ गिद्दा) मे प्रथम मलवइ गिद्दा (जनरल डास) दूसरा स्थान पूजा नरूला (मोना एक्टिग) दूसरा स्थान नद लाल (सटिल लाइफ) दूसरा स्थान नवजात कोर (लेड स्कप) दूसरा स्थान सुषमा गायल (माडलिग) दूसरा स्थान भागडा टीम तासरा स्थान शिवजीत तीसरा स्थान प्रभशील कोर (लोकगीत) तीसरा स्थान जतिदर कोर (गजल) तीसरा स्थान गिद्दा तीसरा स्थान ड्रामा तीसरा स्थान सचिन गुप्ता व्यक्तिगत रूप मे तासरा स्थान प्राप्त किया

कालज क पिछल 49 वप क इतिहास म यह एक प्रथम अवसर ह कि कालज न 17 इनाम ग्रहण किए। इसक लिए कालेज का प्रबन्ध समिति बधाइ का पात्र ह इस सब का श्रय विद्याथिया व प्राध्यापका का जाता ह **–सिद्धेश्वर शर्मा**

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का चुनाव

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का साधारण सभा की बैठक (वार्षिक अधिवेशन दिनाक 28 7 2002 शनिवार का साय 4 30 बज आर्य समाज बिरला लाइन्स कमला नगर दिल्ली 110007 क सभागार म श्रा प्रमपाल जा शास्त्रा की अध्यक्षता मे आयोजित हुई जिसमे निम्नलिखित आधकारा सवसम्मति स दा वप के लिए चुने गए

1 श्री रामनाथ जी सहगल प्रधान 2 श्री हरवश लाल जी कोहली कार्यकत्ता प्रधान 3 श्रा गुजाव भाटिया जी महामत्री 4 श्री सुरेन्द्र गुप्ता जा मत्रा 5 श्रा जा पी मालवाय जा कोषाध्यक्ष। **–राजीव भाटिया**

बरनाला (गुरदासपुर) में समारोह

आर्य समाज बरनाला जिला गुरदासपुर मे 11 से 17 नवम्बर 2002 वार्षिक उत्सव विश्व शान्ति महायज्ञ व विशेष समारोह हो रहा है। इस अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश जा स्वामी सदानन्द जी श्री विजय कुमार जी शास्त्री श्री भरत लाल जी शास्त्री साध्वी विशोका यति जी के प्रवचन होगे 17 12 2002 को आर्य महासम्मेलन प्रात 10 बजे से 1.30 बज तक होगा। **–वेद प्रकाश आर्य सयोजक**

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष सम्पादक प्रकाशक मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रस मण्डी राड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चाक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आय प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक

दूरभाष : 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–57 अंक : 30 सृष्टि संवत 1960853103, 24 नवम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

आर्य समाज और हमारा समाज

❑ ले० श्री मदन लाल रहेजा, मन्त्री आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई

ईश्वर की कृति में कभी कोई त्रुटि नहीं होती क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है और दूसरी ओर मनुष्य हर कदम पर अनेक भूलें करता है परन्तु उसे उस समय अपनी भूलों का अहसास नहीं होता और फिर जब कालान्तर में उसे अपनी की हुई गलतियों का फल प्राप्त होता है तो उसका मस्तिष्क उसे (अपने स्वाभाविक अज्ञानता के कारण) मानने से इन्कार करता है कि उसने कभी कोई भूल की होगी। यहां हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि वैदिक सिद्धान्तानुसार (वैज्ञानिक नियमानुसार) बिना कारण के कोई भी कार्य नहीं होता और मनुष्य जब अपनी स्वतन्त्रता से जो कर्म करता है उसका फल उसे कालान्तर में मिलता है और कर्त्ता को अवश्यमेव भुगतना पड़ता है।

सुलगते चुभते प्रश्न:–आज सब की जुबान पर एक ही बात सुनने को मिलती है कि–"आर्य समाज के पास वेदों तथा शास्त्रो का अथाह ज्ञान होने के पश्चात् भी आखिर क्या कारण है कि लोग उसकी ओर आकर्षित नहीं होते या आर्य समाज लोगों को अपनी ओर क्यों आकर्षित नहीं कर पाता? लोग दूसरी संस्थाओं में अधिक जाते हैं और हमारी समाजों में बहुत कम उपस्थिति होती है–क्यों? आजकल के (तथाकथित) गुरुओं के पास अधिक मात्रा में लोगों की भीड़ देखी जाती है और हमारे संन्यासियों को मिलने कोई नहीं जाता–क्यों? क्या "मन की शान्ति" का ठेका केवल आर्य समाज के ही पास है–क्या दूसरी संस्थाओं के लोग अशान्त हैं? आखिर क्या कारण है कि अन्य सम्प्रदायों के मन्दिर इतने विशाल और समृद्ध हैं और हमारी समाजों में हमेशा धन की कमी रहती है? प्रश्न अनेक हैं परन्तु उत्तर कोई नहीं देता–क्यों?

प्रिय सज्जनों! प्रश्न पूछना अच्छी बात है–इससे ज्ञान वृद्धि होती है और सुधरने-सुधारने का सुअवसर मिलता है परन्तु अपने मस्तिष्क से इस गलत फहमी को निकाल दें कि आर्य समाज उन्नति के पथ पर नहीं चल रहा।

भ्रम-भ्रान्तियां-अन्धविश्वास

बाबाओं के आशीर्वाद से बांझ को भी बच्चे होते हैं–महात्माओं के द्वारा प्राप्त प्रसाद खाने से जिस महिला को संतान नहीं होती, उसको हो जाती है–साधु बाबा के छू मन्तर करने से या झाड़फूंक करने से भूत प्रेत भाग जाते हैं–जन्मपत्री के मेल करने से ही विवाह सफल होते हैं–ग्रह उपग्रहादि के कारण मनुष्य दु:खी अथवा सुखी होता है–पूजा पाठ करने से क्रोधित ग्रह शान्त होते हैं–कीमती पत्थर पहनने से घर में सुख शान्ति आती है–मुहूर्त देख कर ही घर से बाहर निकलना चाहिए–गुरुजनों की जूठन खाने से जीवन सफल होता है–गुरु की हरेक बात को बिना सोचे समझे या प्रश्न किए बिना मानना चाहिए–मृतकों का श्राद्ध अर्थात् ब्राह्मणो को खिलाना-पिलाना चाहिए–जागरण करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं–सत्यनारायण का प्रसाद न खाने से सर्वनाश होता है–जादू टोने से किसी को भी अपने वश में किया जा सकता है या व्यक्ति विशेष की मृत्यु करवाई जा सकती है–मूर्तियों से बभूति निकलती है–बाबाओं के हाथ घुमाने या फिराने से सोने के मंगलसूत्रादि आभूषण, कीमती विदेशी घड़ियां, बभूति अथवा फल निकलते हैं..........इस प्रकार की अनेक घटनाएं हैं जिनको मूर्ख लोग सत्य समझते हैं।

–वास्तव में ऐसा कुछ नहीं होता क्योंकि ये सब प्रकृति नियम के विरुद्ध जाते हैं। इन अन्धविश्वासों को फैलाने में कौन है–क्या आप जानते हैं?

इनके पीछे स्वार्थी, ढोंगी, फरेबी, बहुरुपिये, पाखण्डी, निकम्मे, अघोरी, नकली साधु-संत-बाबा-बापू-महात्मादि तथा मानव जाति के शत्रु होते हैं जिनको और कोई कामकाज नहीं होता और फोकट में (बिना परिश्रम के फ्री में) बैठे बिठाए हराम की मिलती है और तीनों ऐषणाएं पूरी होती हैं।

श्रेष्ठ, सुशिक्षित और सभी समझदार लोगों का यह कर्त्तव्य है कि यदि वे मानव जाति का हित चाहते हैं तो वे साधारण ज्ञान रखने वाले लोगों का मार्गदर्शन करें तथा उन्हें सावधानी बरतने को कहें। अपने बच्चों को समझाएं। ये सब तब हो सकता है जब कि हम स्वयं सुधरें-समाज स्वयं सुधर जाएगा क्योंकि समाज हमीं से बनता है–समाज से ही देश बनता है वरना देश पिछड़ जाएगा और सर्वनाश हो रहा है और आगे भी होगा फिर इसे ईश्वर भी नहीं रोक सकता।

समाधान एवं उत्तर:

आर्य समाज "सार्वभौम मानव निर्माण संस्था" है जिसमें ईश्वरीय ज्ञान "वेद" तथा आर्ष ग्रन्थों के माध्यम से मनुष्य को मनुष्य बनाया जाता है क्योंकि जब तक मनुष्य मनुष्य नहीं बनता वह इस संसार में अच्छी प्रकार से सुख नहीं भोग सकता और अपने परम लक्ष्य अर्थात् "मोक्ष" को प्राप्त नहीं कर सकता। आर्य समाज में सामने मूर्तियां रखकर गाने-बजाने नहीं होते जैसे कि अन्य संस्थाओं में होते हैं। हमारे यहां रास लीलाएं नहीं होती अपितु योगाभ्यास होता है। यहां किसी प्रकार का टाईम-पास नहीं होता साधना होती है। जिन लोगों की ऐसी शिकायत है कि हमारे यहां लोग कम आते हैं उन्हें सच्चाई को ग्रहण करने का अनुभव नहीं है क्योंकि सत्य को ग्रहण करना न तो आसान है न ही कठिन–सत्य स्वाभाविक होता है। जिनके यहां अधिक भीड़ होती है वहां जाकर देखें तो सही कि वहां सत्य का पाठ कितना पढ़ाया जाता है और क्या-क्या होता है। किसी उर्दू के शायर ने ठीक ही कहा है कि "सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से, और खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से। अत: दूर के ढोल सुहावने लगते हैं। इसलिए सत्य क्या है और असत्य क्या है ? यही तो आर्य समाज सिखाता है।"

वक्त का तकाज़ा :

हमें दूसरों को नही स्वयं को देखना है। हमारे यहां (आर्य समाजों में) सत्य के सुगन्धित फूल बंटते हैं और वहां (अन्य संस्थाओं, मन्दिरो तथा तथाकथित गुरुओं के पास) अन्धविश्वास के कांटे बिकते हैं। अज्ञानता के कारण लोग कांटे खरीदते हैं और हमारे यहा कोई भी आकर नि:शुल्क अमृत का पान कर सकता है। अनेक लोगों को इस बात से आपत्ति है कि आर्य समाज दूसरों का खण्डन करता है इसलिए तो आर्य समाज की उन्नति नही होती। यह धारणा शत प्रतिशत असत्य है क्योंकि आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है–"संसार का उपकार करना" इसी को मद्देनजर रखते हुए यदि मानव समाज में कहीं भी कुरीतियां पनपती हैं, अन्धविश्वास फैलता है, पाखण्ड से लोग पीड़ित होते हैं, छूआ-छूत, सतिप्रथा, बलात्कार, अन्याय इत्यादि बढ़ते हैं तो क्या श्रेष्ठ पुरुष हाथ धरे अपने घर में बैठ सकते हैं?

(शेष पृष्ठ 4 पर)

आर्य समाज और हमारा समाज

(पृष्ठ 2 का शेष)

कदाचित् नहीं। ऐसी स्थिति में आर्य समाज (अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्यों की समाज) ही ऐसी संस्था है जो अपना उत्तरदायित्व समझकर खुलकर सबके सामने आती है और सत्य बात को कहने में नहीं झिझकती। इसका अर्थ अन्य सम्प्रदाय वाले कुछ भी निकाल सकते हैं परन्तु सत्य का मुंह कोई बन्द नहीं कर सकता।

हम अपने सभी मित्रों से पूछना चाहते हैं कि-ईश्वर साकार है कि निराकार? यदि कहो कि वह साकार है तो वह निराकार नहीं हो सकता और कहो कि वह परमात्मा निराकार है तो फिर मूर्ति पूजा करना पाप हुआ-है न? यदि परमात्मा साकार है तो उसकी सीमा निश्चित हो जाएगी अत: वह इतने बड़े ब्रह्माण्ड का निर्माण नहीं कर सकता और यदि कहो कि वह सर्वशक्तिमान है-वह सब कुछ कर सकता है तो हम आप से पूछते है कि-"*क्या परमात्मा स्वयं* मृत्यु को प्राप्त हो सकता है?" क्या वह अपने जैसा दूसरा ईश्वर उत्पन्न कर सकता है? क्या वह सो सकता है, खाना खा सकता है, पानी पी सकता है, चोरी कर सकता है? इसका उत्तर होगा-कभी नहीं। जी हां। सर्वशक्तिमान का अर्थ यह नहीं है कि वह सब कुछ कर सकता है अपितु सर्वशक्तिमान् का सही अर्थ है-वह परमात्मा अपने सभी कार्य स्वयं करता है और उसे उसमे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती।

आज ससार में अनेक अन्धविश्वासो और अन्धश्रद्धाओ का बोलबाला है जिसकी आड में अनेक पाखण्डी, कुकर्मी लोग साधारण लोगो को मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। तथाकथित बाबाओं तथा बापूओ की भीड़ में भोले भाले ही नहीं पढ़े-लिखे लोग भी फंस जाते है। याद रहे। आंखें प्राय: धोखा खाती हैं परन्तु बुद्धिमान मनुष्य वही है जो तर्क और ज्ञान की सहायता ले तो ही सत्य और असत्य को परखा जा सकता है। जीवन मे धन दौलत से ही जीवन की सफलता को मापा नहीं जा सकता। हमने अनेक धनाढ्यों को देखा है-बाहर से सभी सुखी लगते हैं परन्तु उनके समीप जाकर देखें तो वे बहुत दुखी होते हैं। सर्वविदित है कि अधिक धन आने के बाद नींद उड़ जाया करती है, भूख लगती है पर खाना नसीब नहीं होता क्योंकि शान मान वाली बीमारियां सामने खड़ी हो जाती हैं। अत: संसार में धन-दौलत ही सब कुछ नहीं है।

हमारे मित्रों ने बताया है कि जब से उन्होंने गुरु किया है और मूर्तिपूजा करनी प्रारम्भ की है तब से उनके व्यवसाय में बढ़ौत्तरी हुई है और उन्हें मन की शान्ति भी प्राप्त हुई है। क्या यह सच है? हमारा उत्तर है: नहीं ! क्योंकि धन, दौलत, ऐश्वर्य और समृद्धि-ये सब मनुष्य के अपने प्रारब्ध, पुरुषार्थ, ज्ञान और कई कारण से प्राप्त होते है और ईश्वर की कृपा से ही मिलते हैं। जिन सज्जनों को जड अर्थात् मूर्ति आदि साकार वस्तुओं की पूजा करने में मन की शान्ति या सुख प्रतीत होता है वास्तव में वह होता नहीं है -यह उनका भ्रम है। स्थाई सुख या शान्ति के लिए प्रभु भक्ति जिसको दार्शनिक भाषा में "योगाभ्यास" कहते हैं-परमावश्यक है।

"योग" आसन करने का नाम नहीं है अपितु "आत्मा का परमात्मा से मिलन" को योग कहते हैं। जब जीव ज्ञानपूर्वक परमात्मा के सम्पर्क में मग्न रहता है-वह योग की पराकाष्ठा होती है जिसे योग की भाषा में "समाधि" कहते हैं। आज योग के नाम पर भी अनेक भ्रान्तियां फैली हुई हैं-उठने-बैठने-लेटने या हाथ-पांव हिलाने डुलाने का नाम योग नहीं है। महर्षि पतंजलि के योगदर्शन को ध्यान से पढ़ें या किसी योगाभ्यासी संन्यासी से शिक्षा प्राप्त करें। योग कक्षाओं में केवल आसन सिखाए जाते हैं जो अष्टांग योग का तीसरा अंग है जिससे शरीर को स्वस्थ और लचकीला बनाया जाता है ताकि ईश्वर के ध्यान में लम्बे समय तक बैठने में कठिनाई न हो। स्मरण रहे कि मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार तथा आत्मिक उन्नति और शुद्धि के लिए योग के आठों अंगों का अभ्यास करना आवश्यक है।

मन की शान्ति:

"मन की शान्ति" के पीछे अनेक कारण होते हैं। "मन की शान्ति"-मन के एकाग्र होने पर ही मिलती है। चंचल मन को कार्य में लगाए रखने से मन स्थिर होता है और शान्त होता है, परमात्मा के नाम का ध्यान करने से मन स्थिर होता है, तत्वज्ञान होने पर मन प्रसन्न और शान्त होता है, परोपकार करने से मन को शान्ति मिलती है, ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना से मन एकाग्र और शान्त होता है.....ऐसे अनेक कारण होते हैं। जब तक मनुष्य को अपने अस्तित्व का ज्ञान, ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान तथा नश्वर सृष्टि का सही ज्ञान नहीं हो जाता तब तक उसे स्थायी "मन की शान्ति" नहीं मिल सकती। क्षणिक सांसारिक सुख को पाकर मनुष्य समझता है कि उसे मन की शान्ति प्राप्त हो गई है-तो यह उसका भ्रम मात्र है। "मन की शान्ति" हासिल करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है-सांसारिक विषय भोगादि की इच्छाओं से दूर रहना अर्थात् सभी ऐषणाओं का त्याग करना और यह तब सम्भव हो सकता है जब मनुष्य अपने अन्दर के काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, चुगली, मान, अपमान इत्यादि शत्रुओं को मार भगा नहीं देता और यह भी तभी सम्भव है जब मनुष्य को तत्वज्ञान (ईश्वर, जीव और प्रकृति का यथार्थ ज्ञान) हो जाता है। विषय विकारों के होते "मन की शान्ति" तो बहुत दूर की बात है-मनुष्य यदि इस पृथ्वी का सम्पूर्ण साम्राज्य भी प्राप्त क्यों न कर ले उसका मन अशान्त ही रहेगा-वह चैन की नींद भी नहीं सो सकता।

मनुष्य मात्र का समाज :

आर्य समाज न हिन्दुओं का मन्दिर है न ही मुसलमानों की मस्जिद, यह न तो ईसाइयों का गिरजाघर है और न ही सिक्खों का गुरुद्वारा है-सच मानो "आर्य समाज-मनुष्य मात्र का अद्भुत् सगठन है" जहा कोई भी आ सकता है। किसी की जाति-पाति का तो प्रश्न ही नहीं उठता। हम मनुष्य को मनुष्य ही जानते और मानते हैं। हम एक ईश्वर को अपना गुरु, आचार्य, न्यायाधीश और राजा जानते और मानते हैं। हम परम पिता परमात्मा को ही माता-पिता-बन्धु-सखा जानते और मानते हैं। हम वेदों की वाणी को ही ईश्वरीय वाणी जानते और मानते हैं। इस संसार में जितने भी ग्रन्थ और धर्म शास्त्र उपलब्ध हैं उन सभी ग्रन्थों का किसी न किसी रूप में वेदों से ही सम्बन्ध है परन्तु खेद की बात है कि कुछ स्वार्थी लोगों ने इन ग्रन्थों में भी मिलावट की है तथा अपनी अनेक बुराइयों को इन ग्रन्थों में जोड़ दिया है और इतने अच्छे ढंग से जोड़ा है कि पढ़े लिखे लोग भी भ्रमित हो जाते हैं कि क्या सत्य और क्या असत्य है।

रही बात भीड़ की तो हमारे पाठक वृन्द जान ही सकते हैं कि भीड़ कहां इकट्ठी हुआ करती है? रास्ते पर मदारी खेल दिखाता है वहां भी भीड़ जमा होती है, जहां स्वार्थी लोग होते हैं भीड़ वहां भी होती है, जहां सस्ता सामान बिकता है, जहां प्रसाद बंटता है, जहां हंसी-मजाक होता है, जहां कहानियां सुनाई जाती हैं, जहां प्रदर्शन होता है, जहां अफरा-तफरी का माहौल होता है, जहां टाईम पास होता है.........ऐसे अनेक स्थान हैं जहां हमेशा भीड़ होती है-इसका अर्थ यह नहीं कि वहां धर्म कर्म की बातें होती हैं।

सस्ती बर्तनों की दुकानों में अधिक भीड़ होती है और जहां चान्दी बिकती है वहां भीड़ कम होती है वैसे ही जहां सोने और हीरे के आभूषण बिकते हैं वहां वे ही लोग जाते हैं जिनके पास ऐसी वस्तुएं खरीदने की शक्ति होती है। अत: भीड़ भड़क्के की बात करने वालों को समझ लेना चाहिए कि सत्य महंगा होता है जिसे ज्ञानी लोग ही अपना सकते हैं अत: संसार में उसे जानने-मानने वाले लोग बहुत कम मात्रा में होते हैं और असत्य नि:शुल्क होता है वहां अज्ञानी लोग ही भीड़ जमाकर लेते हैं अत: इस संसार में अज्ञानियों की कोई कमी नहीं है।

माथे पर तिलक, गले में माला, हाथ से माला फेरने से या नाम में परिवर्तन करने से कोई भी व्यक्ति ज्ञानी या धार्मिक नहीं हो जाता और धर्म या ज्ञान किसी एक की धरोहर नहीं है क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान सबके लिए होता है। तथाकथित धर्म के ठेकेदारों के किस्से प्राय: सभी ने समाचार पत्रों में पढ़े होंगे। जितने कुकर्म, पाखण्ड, अन्धविश्वास इन तथाकथित धर्म स्थानों में होते हैं वैसे कहीं नहीं होते।

इस पृथ्वी पर यदि कोई ऐसी संस्था है जहां वैदिक धर्म अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार-प्रसार होता है तो वह केवल और केवल "आर्य समाज" है। जिनको तनिक भी शंका हो हम उन्हें निमन्त्रण देते हैं (वैसे तो आर्य समाज सब का है) कि वे कभी भी आर्य समाज में पधारें और अपनी शंकाओं का समाधान कर सकते हैं। यह एक ऐसी समाज है जहां वेदों का पठन-पाठन होता है और वैसे ही आचरण होता है। हम केवल निराकार परमात्मा, जिसने ब्रह्माण्ड की रचना की है जो इसकी स्थिति करता है और अन्त में प्रलय करता है, उसी एक परम पिता परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना उपासना करते हैं। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" वैदिक उद्घोष है, ईश्वर का आदेश है और यही हमारा कर्त्तव्य है। ईश्वर प्राप्ति करना ही सब मनुष्य मात्र का परमपुरुषार्थ और लक्ष्य है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है अब यह उसकी मर्जी है, उसके अपने कर्म हैं कि वह ईश्वर की वाणी-वेद को माने, न माने या उल्टा माने। इत्योम्॥

सम्पादकीय...

आर्य मर्यादा का स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक

स्वामी श्रद्धानन्द जी का आर्य जगत मे अपना एक विशेष स्थान है। महर्षि दयानन्द के पश्चात् आर्य जगत मे स्वामी श्रद्धानन्द का दूसरा स्थान है। महर्षि दयानन्द के बताए रास्ते पर चलते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना सारा जीवन धन सम्पत्ति व परिवार आर्य समाज का अर्पण कर दिया था। वह जीवन भर आर्य समाज व देश की सेवा करते रहे। उन्होने महर्षि दयानन्द के स्वप्नो को साकार करने के लिए गुरुकुल कागडी हरिद्वार की स्थापना करके सर्व प्रथम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रारम्भ किया था।

स्वामी श्रद्धानन्द जी पजाब के रहने वाले थे। जालन्धर मे आर्य समाज अड्डा होशियारपुर व आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब (लाहौर) के वह कई वर्ष तक अधिकारी व सदस्य रहे। गुरुकुल कागडी की स्थापना मे स्वामी जी को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने पूरा पूरा सहयोग दिया। पजाब सभा निरन्तर गुरुकुल कागडी हरिद्वार की उन्नति के लिए कार्य करती आ रही है।

गुरुकुल कागडी आज एक विश्वविद्यालय है। यह अब कोई साधारण गुरुकुल नही है। इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री प हरबस लाल जी शर्मा इसके कुलाधिपति है और सभा के महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार जी इसके कुलपति है। दोनो ही गुरुकुल की उन्नति के लिए निरन्तर कार्य कर रहे है। कन्या गुरुकुल देहरादून की तरफ और गुरुकुल कागडी की तरफ गत कई वर्ष से कोई ध्यान नही दिया जा रहा था। इसलिए वहा कई प्रकार की समस्याए उत्पन्न हो गई थी जिनकी तरफ किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। अब धीरे धीरे करके सभा समस्याओ का हल किया जा रहा है। कन्या गुरुकुल देहरादून की पजाब सभा ने गत दिनो बहुत सी आर्थिक सहायता की है परन्तु वहा आर्थिक समस्या निरन्तर बनी हुई है जिसे सुधारने का प्रयास किया जा रहा है। गुरुकुल की प्राचार्या बहन दमयन्ती जी भी इसके लिए निरन्तर प्रयत्नशील है।

सभा महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार जी जो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के भी कुलपति है कि यह हार्दिक इच्छा है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर जो 23 दिसम्बर 2002 को है के अवसर पर आर्य मर्यादा साप्ताहिक को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस व गुरुकुल विशेषाक निकाला जाए। इसलिए निश्चय किया गया है कि दिसम्बर मे यह विशेषाक प्रकाशित किया जाए। आर्य समाजो व शिक्षा सस्थाओ के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह इस विशेषाक के लिए अपने विज्ञापन इसमे प्रकाशनार्थ सभा कार्यालय मे शीघ्र अति शीघ्र भेज दे। मेगजीन साइज के पूर्ण पृष्ठ का विज्ञापन शुल्क केवल एक हजार रुपए मात्र रखा गया है कृपया आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम का ड्राफ्ट बनवाकर शीघ्र सभा कार्यालय मे विज्ञापन मेटर सहित भेजे। लेखको से प्रार्थना है कि वह अपने लेख व कविताए आदि भेजने का कष्ट करे ताकि इसे समय पर प्रकाशित किया जा सके। धर्मदेव आर्य

आर्य मर्यादा का शुल्क भेजें

हमने कई बार आर्य मर्यादा के उन ग्राहको को पत्र लिखे है जिन्होने अभी तक अपना पिछला आर्य मर्यादा का शुल्क नही भेजा। अब निश्चय किया गया है कि एक महीने तक जिन ग्राहको का पिछला शुल्क प्राप्त नहीं होगा उन्हे आर्य मर्यादा भेजना बन्द कर दिया जाए। इसलिए उन सब ग्राहको से प्रार्थना है जिन्होने पिछले दो तीन वर्ष से अपना शुल्क नही भेजा वह शीघ्र अति शीघ्र अपना शुल्क भेज दे। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 50 रुपए है जो लागत से भी कम है। अब हम आर्य मर्यादा के कागज व छपाई मे भी कुछ सुधार करने लगे है। वर्ष मे चार विशेषाक पाठको को देने का निश्चय किया गया है। अब इसका खर्चा और बढ जाएगा ऐसी अवस्था मे भविष्य मे शुल्क मे भी वृद्धि हो सकती है।

इसलिए सभी ग्राहक महानुभाव अपना पिछला शुल्क व वर्ष 2002 का शुल्क शीघ्र अति शीघ्र आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम बैंक ड्राफ्ट या मनि आर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करे। पिछला शुल्क जमा करा कर आगे 500 रुपए जमा करवाने पर यह ग्राहको को आजीवन भेजा जाता रहेगा। जो पुराने ग्राहक है वह पिछला शुल्क भेज कर ही आजीवन सदस्य बन सकते है। जो नए आजीवन ग्राहक बनना चाहते है वह 500 रुपए भेज कर आजीवन सदस्य बन सकते है। –धर्मदेव आर्य

जीवन तो जीना ही है

ससार मे प्रत्येक व्यक्ति को जीवन तो जीना ही पडता है। चाहे हस कर जी ले या रो कर जी ले। चाहे सुख मे जी ले या दुखी होकर जी ले। परन्तु आज कल अक्सर अधिकतर लोग दुखी होकर जीवन जी रहे है क्योकि उनकी ऐषणाए इच्छाए अभिलाषाए पूर्ण नही हो पा रही है।

आज के मानव मे आगे बढने की होड है वह निरन्तर आगे बढना चाहता है। लेकिन आगे बढने के लिए उसके पास दो रास्ते है एक प्रेय मार्ग है एक श्रेय मार्ग है अर्थात् एक भौतिक मार्ग है एक आध्यात्मिक मार्ग है। इन्सान इन दोनो मे से अक्सर भौतिक मार्ग चुनता है और आज का मानव यही कर रहा है। आज चारो तरफ भौतिकवाद का बोलबाला है। आज का मानव भौतिकता मे बहुत उन्नति कर रहा है। मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए वह रात दिन परिश्रम कर रहा है। तरह तरह के साधनो का निर्माण कर रहा है। रेडियो टेलीविजन दूरदर्शन के साथ साथ कम्प्यूटर टेलीफोन के साथ मोबाइल टेलीफोन वातानुकूल साधन तरह तरह की गाडिया वायुयान और मिसाइले तैयार कर रहा है। कई तरह की नई नई खोज हो रही है। मानव आज एक मशीन बन कर रह गया है। मशीन की तरह रात दिन काम मे लगा हुआ है। चलता जा रहा है पूरी दौड से दौड रहा है कोई विश्राम नही है। प्रात काल उठ कर दौडना शुरू कर देता है सायकाल तक दौडता रहता है। जैसे पक्षी प्रात काल होते ही भोजन की तलाश मे अपने घोसले से उड पडते हैं और सायंकाल रात्रि से पूर्व फिर अपने घौंसले मे वापिस आ जाते हैं। इसी प्रकार मानव की उडान चल रही है। अब तो इन्सान उडकर मगलतारा चान्द तथा दूसरे ग्रहो पर जाना चाहता है इसके लिए वह रात दिन प्रयत्नशील है।

मानव जीवन का उद्देश्य केवल खाना पीना ओढना बिछौना ही बना हुआ है और इसी के लिए इन्सान जा रहा है। आज इन्सान की इससे भी तृप्ति नहीं हो रही है। खाने पीने और जीवन यापन के तरह तरह के साधन इन्सान के पास मौजूद है। परन्तु फिर भी वह बेचेन है। दुखी है इससे अधिक प्राप्ति की होड मे वह लगा हुआ है। रात की नीद हराम हो रही है। रात्रि करवटे बदल बदल कर बीत जाती है। नीद की गोली खा कर ही थोडा बहुत नीद आता है। हर समय बेचैनी रहती है। चिन्ताए घेरे रहती है। तरह तरह के रोग शरीर को लगे हुए है जिसके पास जितना धन है सुखो के साधन है उतने ही बडे बडे रोग उसे लगे हुए है। तनाव रक्तचाप तो सदा बना ही रहता है। इसमे दिमागी तथा हृदय के रोग बढते जा रहे है। इन्सान इन रोगो को लिए आगे और भौतिक पथ पर बढता जा रहा है और यही कह रहा है जीवन तो जीना ही है परन्तु यह भी क्या जीना है जिसमे हर समय इन्सान परेशान है दुखी है।

भौतिकवाद से तग आकर कुछ लोग आध्यात्मिक मार्ग की तरफ बढ रहे है। परन्तु उनका मार्ग दर्शन करने वाला कोई नही है। यहा भी वह रास्ता भटक कर दर दर की ठोकरे खा रहे है। कभी वह किसी गुरु के पास पहुचते है कभी वह किसी बापू के पास पहुचते है कभी वह मन्दिरो मे जाते है अन्य सभी धर्म स्थानो मे जाते है हमने देखा है इन्सान यहा से वहा दर दर भटक रहा है। सभी धर्म स्थानो पर भीड लगी है कब्रो पर मढियो पर भी लोग पहुच रहे है। कहते है कहीं तो शान्ति मिलेगी परन्तु उन्हे कहीं शान्ति नहीं मिल रही क्योकि इसे ही इन्सान जीवन समझता है और ऐसा तरह से जीना चाहता है। हर व्यक्ति जीना चाहता है मरना कोई नही चाहता परमात्मा को पाना कोई नहीं चाहता उसकी भक्ति करना कोई नही चाहता। जीवन को परमात्मा की राह पर लगाना कोई नही चाहता। क्योकि इसके लिए समय चाहिए और आज के इन्सान के पास समय है ही नही वह तो यह चाहता है कि चलते चलते दो मिनट के अन्दर मन्दिर आदि धर्म स्थान पर मत्था टेके और कुछ पैसे चढावे और फिर आगे चलता बने। वह यही कहता है जीवन तो जीना ही है परन्तु क्यो जीना है? किस लिए जीना है कैसे जीना है? यह उसको पता नही –धर्मदेव आर्य

जिला लुधियाना की आर्य समाजों की गतिविधियां

❑ *प्रस्तुतकर्ता आशानन्द आर्य, सभा उपप्रधान*

आर्य समाज हबीबगंज:—यह आर्य समाज उस स्थान पर स्थापित है, जहा पर जम्मू और स्यालकोट से आए हुए भक्त बिरादरी के लोग रहते हैं जिनके बुजुर्ग पक्के आर्य समाजी थे–देश के विभाजन के बाद आर्य समाज ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया जिस कारण वह हमसे दूर हो गए।

हबीबगज में एक प्लाट था जिसमें श्री बेलीराम एव भक्त ज्ञानचन्द जी आर्य समाज की स्थापना करना चाहते थे। इसमें श्री बेलीराम के नाम का बिजली का मीटर लगा हुआ है। दोनों महानुभाव धन एकत्रित करके थोडी दीवार बनाते थे जो गिर जाती थी उनकी हार्दिक इच्छा थी कि यहां आर्य समाज बने। मास्टर वेद प्रकाश महाजन जो आर्य समाजी थे, मा ज्ञानचन्द जी के साथ टीचर थे, ने मेरा परिचय भक्त ज्ञानचन्द से कराया। स्व ज्ञान चन्द जी ने यहा आर्य समाज मन्दिर स्थापित करने की योजना रखी और 1975 में आर्य समाज की स्थापना हो गई। मुझे प्रधान, भक्त ज्ञान चन्द जी को उपप्रधान, मा वेद प्रकाश जी को मन्त्री चुना गया और उस वर्ष से लगातार, इस आर्य समाज में वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार हो रहा है। धन एकत्रित करने में मा सरदारी लाल मदान एव श्री मुन्ना लाल डाइल ने भरपूर सहायता की। इस आर्य समाज में आर्य समाज के बडे-बडे नेता, सन्यासी एवं विद्वान् पधार चुके हैं। इसमें 1976 से एक मान्यता प्राप्त प्राईमरी स्कूल भी चल रहा है जिसमें इस एरिया के सैंकडों बच्चे शिक्षा पा चुके हैं। कई कमरे, सुन्दर यज्ञशाला, हाल बन चुके हैं। इस समाज को एक योग्य पुरोहित श्री योगराज शास्त्री के रूप में मिला हुआ है। मई 2000 से यहां एक फ्री डिस्पैन्सरी भी खोल दी गई है। डॉ० सुरेश जी राजपाल जी ए एम एस दोनों समय आकर मरीजों को फ्री दवाई देते हैं । इस एरिया की जनता काफी लाभ उठा रही है। पिछले दिनों हमने यहां एक मुफ्त मैडिकल कैम्प लगाया ।.चोटी के डाक्टरों ने 125 मरीजों को देखा। डिस्पैन्सरी की ओर से स्कैनिंग, मुफ्त ई.सी.जी. का प्रबन्ध था। इस से यहां की जनता में आर्य समाज के लिए काफी श्रद्धा बढ़ी है और जो लोग कहते थे आर्य समाज को यहां कौन जानेगा। अब यहां की जनता आर्य समाज के निकट आने लग गई है। साप्ताहिक सत्सग, स्कूल का सत्सग नियमपूर्वक लगता है। इस आर्य समाज के मन्त्री जनकराज भक्त, कोषाध्यक्ष कंवल-जीत भक्त नवयुवक हैं। खूब सेवा करते हैं। इस आर्य समाज को सुन्दर बनाने इसके संरक्षक श्री वेदभूषण जी मदान तथा उनका परिवार, श्री जगदीश चन्द गान्धी उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विनोद गांधी तथा उनका परिवार आर ओ स्कूल का स्टाफ जुटा हुआ है। पिछले दिनों आर्य समाज का 28वां वार्षिक उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। यह आर्य समाज आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित है।

आर्य समाज किदवई नगर:—यहां भी स्यालकोट से आए हुए मेरे महाशय बिरादरी के अधिक लोग रहते हैं। इस नगर मे सरकार ने गुरुद्वारा, मन्दिर एवं आर्य समाज के लिए 1000 गज के प्लाट रिजर्व कीमत पर देने के लिए रखे हुए थे। आर्य समाज का प्लाट सडक के किनारे थे। जहा कई दुकानें बन सकती थी। गुरुद्वारा एवं मन्दिर का निर्माण हो रहा था परन्तु आर्य समाज का प्लाट खाली पडा था। महाशय बिरादरी के स्व करतार चन्द आर्य मेरे पास आर्य समाज दाल बाजार में आए। मैं उस समय आर्य समाज दाल बाजार का मन्त्री था। इस प्लाट को खरीदने के लिए सहायता की प्रार्थना की। उस समय आर्य समाज दाल बाजार के प्रधान वी रामशरण दास जी थे। उन्होंने कुछ अपनी ओर कुछ जनता से धन एकत्रित कर बाकी आर्य समाज के फण्ड से धन देकर प्लाट के लिए पहली किश्त जमा करा दी। और वहां के भाईयों ने कब्जा ले लिया। कई किश्तें देने के बाद एक किश्त जमा न हो सकी। ट्रस्ट की ओर से स्थान को कैंसल करने का नोटिस भी मिल गया परन्तु दाल बाजार ने तथा किदवाई नगर के भाईयों ने धन एकत्रित करके आखिरी किश्त जमा करवा दी और निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया। श्री करतार चन्द

> # अनमोल वचन
>
> *किसी समस्या से बचने का सब से अच्छा उपाय है आप उसे सुलझा लें।* —एलन
>
> *जब मानव पशु हो जाता है तो पशु से भी बुरा होता है।* —ठाकुर
>
> *आदमी से सब से भयानक जन्तु है, जो व्यवस्थित ढंग से अपनी ही जाति के जन्तुओं का शिकार करता है।* —जेम्स
>
> *मानव से श्रेष्ठतम कोई जीवन नहीं परन्तु कुछ ने ही इसे निकृष्टतम (सब से बुरा) बना दिया है।*
>
> *दुनिया से भागो नहीं उसे बदलो।* —राहुल सांकृत्यान
>
> *विज्ञान प्रदत्त सुख सुविधाओं से समय की दूरी घटी परन्तु अशान्ति बढ़ी तो मार काट भी।*
>
> *ईश्वर दर्शन असम्भव है क्योंकि वह निराकार है। हां, अनुमति होती है कि ईश्वर है चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है बस सुश्रद्धा पवित्र हो।*
>
> *सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार, यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।* —महर्षि दयानन्द
>
> अविद्या का नाश विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
>
> संग्रहकर्ता रामपथिक वानप्रस्थ वैदिक साधनाश्रम यजीड़ अजनोहा (होशियारपुर)

आर्य पॉलिटिकल लाईन मे ५ गए। उनके स्थान पर महाशय हंसराज जी प्रधान बने। उनकी समाज के मन्त्री, कोषाध्यक्ष कोई बहुत पढ़े लिखे नहीं थे। इस कारण हिसाब-किताब ठीक न रख सके परन्तु श्री हंसराज जी ने मेहनत लग्न से समाज में कई दुकानें बना दीं जिससे काफी आमदनी होने लगी। इस आर्य समाज में गढवाल से आए हुए भाई जो किदवई नगर में रहते थे एवं कई और भाई भी सदस्य बन गए इस समाज को एक योग्य पुरोहित म भरत सिंह मस्ताना भी मिला हुआ है जो सत्संग एवं यज्ञ आदि करवाते हैं। म हंसराज की मृत्यु के पश्चात् ज्ञानी चरण सिंह इस समाज के प्रधान बने। वह भी बहुत पढ़े लिखे नहीं थे परन्तु उनकी आर्य समाज में अटूट श्रद्धा थी। वह कई वर्षों तक इस आर्य समाज को चलाते रहे उनकी मृत्यु के पश्चात् इस आर्य समाज का शेराजा बिखर गया। दो पार्टियां बन गई हैं। दो प्रधान बन गए हैं। आर्य समाज का काफी नुकसान हो रहा है। पंजाब के प्रसिद्ध आर्य समाजी महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल ने कई बार इनमें समझौता करवाया है पर चल नहीं सका। अब केस कोर्ट में चल रहा है दोनों गुटों को पॉलिटिकल पार्टियां सहायता दे रही हैं इसलिए सन्धि होना मुश्किल हो रहा है प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित है।

आर्य समाज मिल्लर गंज:—टिहरी गढ़वाल से आए हुए भाई जी हीरो साईकल एवं दूसरी फैक्ट्रियों में काम करते हैं श्री सत्यानन्द मुंजाल की प्रेरणा से आर्य से पुरानी हीरो फैक्ट्री गिल-रोड में आर्य समाज खड़ी कर दी। इस समाज के प्रधान श्री दीनदयाल जी शर्मा हैं। समाज को ठीक ढंग से चला रहे हैं। प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित है।

आर्य समाज फोकल प्वाईंट:—यह कालोनी है। श्री बलदेव राज जी आर्य जो कि रिटायर्ड होने के पश्चात् यहां रहने लगे। वह हर सप्ताह अपनी पत्नी के साथ आर्य समाज माडल टाऊन के साप्ताहिक सत्संग में जाते थे जो कि फोकल प्वाईंट से 5 किलोमीटर दूर है। वहां श्री सत्यानन्द जी मुंजाल की प्रेरणा से उन्होंने फोकल प्वाईंट में आर्य समाज की स्थापना की और दोनों पति-पत्नी इस की सेवा में जुट गए और अत्यन्त परिश्रम करके एक सुन्दर आर्य समाज खड़ी कर दी। हर वर्ष वार्षिक उत्सव एवं प्रचार का कार्य करते हैं। अब तो उनके साथ कई साथी जुड़ गए हैं। एक सुन्दर स्कूल भी इस समाज में चल रहा है। सुन्दर यज्ञशाला-हाल और कई कमरे बन गए हैं। श्री बलदेव राज तथा उनकी धर्मपत्नी हर समय आर्य समाज की उन्नति के लिए सोचते रहते हैं। इस समाज में योग्य पुरोहित भी हैं। श्री बलदेव राज बड़े सिद्धान्तवादी आर्य समाजी हैं। मेरे से प्रायः आर्य समाज के सम्बन्ध में बात करते रहते हैं। यदि आर्य जी थोड़े और तैयार हो जायें सबको लेकर चलें तो आर्य समाज काफी उन्नति कर सकती है। प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित है।

बटाला में महर्षि निर्वाण दिवस

आर्य समाज मन्दिर ओहरी चौक बटाला में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण दिवस व आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल व वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज बटाला के दिवंगत प्रधान व पत्रकार स्व. चौधरी नौनिदराय की बरसी पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि भेंट की गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता फतेहगढ़ चूड़ियां से विधायक श्री सुखजिन्द्र सिंह रंधावा ने की। इस अवसर पर आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल, वैदिक कन्या पाठशाला, आर्य माडल स्कूल और आर्य महिला क्राफ्ट स्कूल के बच्चों द्वारा स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र व दर्शन को समर्पित रंगारंग सांस्कृतिक समारोह का आयोजन भी किया गया। बच्चों द्वारा भावपूर्ण भजन, गीत व भाषणों द्वारा समय बांधा गया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का श्रेय पुरोहित ओंकार शास्त्री को जाता रहा। उपस्थित जन समूह ने जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और विधायक श्री रंधावा जी ने अपने मुखारविन्द से कहा कि अभी तक मैं अनेक स्कूल, कालेज व संस्थाओं में गया किन्तु जो आज आर्य समाज में बच्चों का कार्यक्रम देखा वह किसी भी संस्था या अन्य स्थान पर देखने को नहीं मिला। उसमें अपने देश की पुरानी सभ्यता संस्कृति एवं धार्मिक छवि छलकती थी। उन्होंने कार्यक्रम को देख कर एक हजार रुपए पुरस्कार बच्चों का उत्साहवर्धन के रूप में प्रदान किए। स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमति सोनिया सच्चर ने शिक्षा सहित अन्य गतिविधियों की जानकारी दी। श्री रंधावा जी (विधायक) ने अग्रणीय रहने वाले बच्चों को स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया। मुख्य अतिथि विधायक सुखजिन्द्र सिंह रंधावा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में स्कूल के बच्चों द्वारा शिक्षा व अन्य गतिविधियों में प्राप्त की गई उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए स्कूल के प्रबन्धकों व आर्य समाज द्वारा देश के भावी नागरिकों को संस्कारवान बनाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की। रंधावा जी ने नारी शिक्षा, विधवा विवाह सहित नारी व दलित समाज के उत्थान के लिए स्वामी दयानन्द के क्रान्तिकारी व सार्थक प्रयासों को नमन करते हुए आर्यजनों से आग्रह किया कि वे स्वामी जी के दर्शन को जन समाज तक पहुंचायें ताकि वर्तमान संदर्भ में जन कल्याण हो सके। विधायक जी ने आर्य जनों को सम्बोधित करते हुए कहा भारतीय परम्पराओं में आर्य संस्कृति से जुड़ें देश भक्ति की भावना जगायें आर्य युवक युवाओं को आगे लायें सभी आर्य जन प्राचीन परम्पराओं को बचाने हेतु प्रयास करें।

इस अवसर पर आर्य समाज बटाला के प्रधान प्रविन्द्र चौधरी, मंत्री लाजपतराय कुन्द्रा, स्कूल मैनेजर विजय अग्रवाल, हरजीत सिंह भल्ला, पं. उमाशंकर व अन्य आर्य समाजी नेता भी उपस्थित थे।

—प्रविन्द्र चौधरी, प्रधान

गुरुकुल कांगड़ी में संकल्प दिवस

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार में 9-11-2002 को संकल्प दिवस संघर्ष समिति ने मनाया। इस अवसर पर गुरुकुल के कई कर्मचारियों व अन्य सदस्यों ने संकल्प लिया कि हम गत दिनों बेची गई गुरुकुल कांगड़ी की भूमि को वापिस लेकर रहेंगे।

इस अवसर पर श्री डॉ० भारत भूषण, डा. प्रदीप जोशी, डा. कोशस्व पाण्डेय महामन्त्री शिक्षेत्तर संघ, डॉ० श्रवण जी प्रधान शिक्षक संघ, डॉ० अम्बुज शर्मा, डॉ० कश्मीरा सिंह, श्री करतार सिंह सम्पदाधिकारी, आचार्य वेद प्रकाश, रजिस्ट्रार महावीर, कुलपति प्रिं. स्वतन्त्र कुमार जी ने अपने विचार भूमि के सम्बन्ध में रखे।

अन्त में निश्चय किया गया कि इस भूमि को हर अवस्था में वापिस लेकर रहेंगे। इस अवसर पर दिल्ली, हरियाणा व पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा से भी अपील की गई कि इस भूमि को वापिस लेने की कार्यवाही शीघ्र अति शीघ्र की जाये।

धूरी में ऋषि निर्वाण दिवस

आर्य समाज धूरी में 2-11-2002 को ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें शहर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता एडवोकेट जसबीर रत्न जी ने की, मंच संचालन मन्त्री श्री रामपाल जी आर्य ने बड़े ही सुचारू रूप से किया। आर्य समाज के अन्तर्गत चल रही तीनों संस्थाओं ने बढ़-चढ़ कर सहयोग दिया। आर्य कालेज की लड़कियों ने स्वामी जी के जीवन पर गीत तथा कव्वालियां प्रस्तुत कीं।

आर्य सी. सै स्कूल के लड़के-लड़कियों ने गीतों की बौछार कर दी। यश चौधरी आर्य माडल स्कूल के बच्चों ने भी पूरा सहयोग दिया। इन तीनों संस्थाओं के प्रिंसिपल तथा अध्यापक, अध्यापिकाओं ने भी पूरा सहयोग दिया। आर्य सी.सै.स्कूल के बच्चों ने पंजाब का प्रसिद्ध भंगड़ा भी किया। जिसमें बोलियां स्वामी जी के जीवन से ओत-प्रोत थीं। इसका सारा श्रेय प्रिंसीपल भगीरथ लाल कालिया को जाता है। यह पंजाब में पहला कार्यक्रम है जो वैदिक मान्यताओं के आधार पर भंगड़ा किया गया। जिला आर्य सभा के मन्त्री श्री रामशरण जी ने भी आर्यों के कर्त्तव्य को दर्शाते हुए ऋषि के कार्यों को पूरा करने का संकल्प कराया। आर्य समाज संगरूर के मन्त्री राजेन्द्र कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए तथा आए हुए सभी लोगों ने ऋषि को श्रद्धांजलि दी और अपने जीवन में वैदिक मान्यताओं के आधार पर कार्य करने का संकल्प लिया। कार्य के माध्यम से बच्चों में नयी जागृति का कार्य संचालक महोदय ने बच्चों से छोटे-छोटे प्रश्नों को पूछ कर, सही जवाब देने वाले बच्चों को भी पुरस्कृत किया?

अन्त में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री जसवीर रत्न जी ने बच्चों से प्रश्नोत्तरी की और बच्चों को उत्साहित किया।

नोट-आर्य समाज धूरी का वार्षिक उत्सव 4 दिसम्बर से 8 दिसम्बर तक मनाया जा रहा है।

—मन्त्री, आर्य समाज धूरी

नवांकोट अमृतसर में समारोह

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस 31 अक्तूबर से 4 नवम्बर तक बड़ी श्रद्धा पूर्वक मनाया गया। जिसमें महात्मा विशोकायति जी ने भजनों तथा प्रवचनों के माध्यम से लोगों का मार्ग दर्शन किया। लोगों को सुखी गृहस्थ तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए वेद मार्ग पर चलने के लिए आहवान किया। डा० माधुरी योगमती जी ने बच्चों के निर्माण के लिए माताओं को जागृत करते हुए कहा कि माताएं ऋषि ऋण उतारने के लिए आगे आयें तथा बच्चों को चरित्रवान बनाएं। पं. बनारसी दास जी ने दीपावली के पवित्र त्यौहार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी जो कार्य अधूरे छोड़ गए हैं उन्हें पूरा करने के लिए सभी भाई बहन वेद मार्ग पर चलें और मिल कर आगे बढ़ें। भारी संख्या में लोगों ने महात्मा जी की कथा से धर्म लाभ कमाया।

सर्वश्री डा. प्रकाश चन्द्र, प्रेम प्रकाश अरोड़ा, विनोद महाजन, लक्ष्मण तिवारी, बाल किशन, हरविन्द्र कुमार, निर्मल, प्रीति नारंग, अश्विनी कुमार शर्मा, चरणजीत लाल ठुकराल तथा यजमान परिवारों का भरपूर सहयोग रहा।

फिरोजपुर छावनी में नामकरण एवं मुण्डन संस्कार

दिन 10-11-2002 को सायं 3 से 4.30 बजे तक आर्य समाज जी.टी. रोड फिरोजपुर छावनी के सेवक श्री बिन्दा प्रसाद की सुपुत्री का नामकरण एवं मुण्डन संस्कार आर्य समाज मन्दिर में बड़ी धूमधाम से किया गया। आर्य समाज के सभी सदस्य सम्मिलित हुए और उन्होंने बच्ची को शुभ कामना एवं आशीर्वाद दिया। बच्ची का नाम पूजा रखा गया। आर्य समाज के प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने भजनों द्वारा शुभ कामना व्यक्त की और अपने करकमलों से समाज की ओर से सेवक को शगुन भी दिया गया। अन्त में बिन्दा प्रसाद, सेवक ने सभी को प्रसाद बांटा और सब का धन्यवाद किया। —मनोज आर्य, मन्त्री

आर्य समाज मन्दिर फील्डगज लुधियाना मे ऋषि निर्वाण दिवस

3 नवम्बर 2002 रविवार को आय समाज मन्दिर फील्डगज लुधियाना मे ऋषि निर्वाण दिवस बडी श्रद्धा से मनाया गया। सुबह 9 बजे से 11 30 बजे तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी के जीवन का उल्लेख करते हुए आचार्य यशपाल जी शास्त्री (गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर) ने आर्यो को स्वामी दयानन्द जी के बताए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा का तथा अपनी मातृ भाषा राष्ट्र भाषा हिन्दा तथा सस्कृत के प्रसार के लिए एक जुट होकर कार्य करने का आह्वान किया। आदरणीय श्री आशानन्द जा आर्य ने आर्य समाज की गतिविधियो को बढाने क लिए सकल्प कराया तथा आर्य समाज फाल्डगज के कार्य मे पूर्ण सहयोग दने का आश्वासन दिया। प भारती जी शास्त्री एवम् राजिन्द्र शास्त्री जी ने भजनो स समय बाध दिया तथा आर्य समाज की उन्नति के लिए हर समय सहयोग दने का आश्वासन दिया। श्रीमती कमलेश सूद श्री हरीश सूद तथा रमेश जी सूद श्रामता लाला कपूर श्रीमती शाति देवी श्रीमती विनोद गाधी श्रीमती बाला रानी गम्भीर जी ने स्त्री सत्सग तथा साप्ताहिक सत्सग मे तन मन धन स पूर्ण सहयोग देने को कहा।

सत्सग म श्रीमती राजेश शर्मा प्रधाना जिला आर्य सभा ने सभी आर्य समाजियो का एक जुट होकर काय करने के लिए कहा। श्रा विजय सरीन जी सतपाल नारग जी श्रामती एवम् श्रामान ओम प्रकाश जी श्री मोहिन्द्र सूद जी श्री श्रवण बत्तरा जा न आय समाज के कार्य को बढाने का प्रोत्साहन दिया। श्रामता एवम् श्री श्याम स्वरूप कश्यप जी यजमान बने।

हष आर्य ने कहा कि सब को एक होकर आर्य समाज का कार्य जोर शोर से करना चाहिए तथा दूसरो का निन्दा म समय बबाद न करें। आय समाज मे सवा भाव से आए। अपन को प्रधान मन्त्री न कहे सेवक बन स्वामी दयानन्द जी के सच्च सेवक बने। श्रा विनोद सूद जी ने अपना कीमती समय देकर सत्सग मे पूरा योगदान दिया। प गोरगपुरा जा ने एक भजन द्वारा स्वामी दयानन्द जी का सन्देश दिया। श्रीमता नीलम थापर नाना बेरा श्रीमता बिमला जा ने सत्सग मे योगदान दिया। आर्य समाज म नियमित सत्सग समय देनिक यज्ञ प्रात 6 30 बजे सुबह स्त्री सत्सग बुधवार 4 बज साय साप्ताहिक सत्सग 9 बजे सुबह रविवार को आरम्भ होता है। **–हर्ष आर्य मन्त्री**

मुम्बई में ऋषि निर्वाण दिवस समारोह

ऋषि निवाण दिवस समारोह के मुख्य अतिथि श्री कृपाशकर जी सिह (गृहराज्यम त्रा महाराष्ट्र सरकार) न अपने भाषण म कहा कि ससार मे यदि काइ समाज विद्या शिक्षा सस्कार व सात्विकता दे सकता है ता आय समाज ही द सकता है। महषि दयानन्द क पथ पर चलने से हा विश्व का कल्याण हो सकता ह।

आर्य समाज सान्ताक्रुज क प्रधान डा सोमदेव शास्त्री व डा सत्यपाल (आइ जा मुम्बई) ने अपने ओजस्वा विचार प्रकट किए। समारोह के विशष अतिथि माननाय केप्टन देवरत्न आर्य (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) न कहा कि ऋषि दयानन्द न जीवन पर्यन्त पाखण्ड का दर करन का प्रयत्न किया। जन्मना जायत शूद्रा अर्थात् जन्म से सभा शूद्र हे सस्कारात् द्विजउच्चत अथात् सस्कार मे सभी द्विज कहलात है। **–सगीत आर्य महामन्त्री**

अलावलपुर में ऋषि निर्वाण दिवस

*आय समान मन्दिर महषि दयानन्द माडल स्कूल अलावलपुर म त्रा ी उ व डा धूमधाम मे मनाया गया। हवन यज्ञ श्री कृष्ण शरण ुस जा क दखरख म किया गया और शहर के जाने माने व्यक्तिया न भा हवन ज्ञ म भाग िया। बा म बच्चो द्वारा कक्षाओ मे की गई सजावट खा गइ जिमम आय समाज क प्रधान कष्ण शरण गुप्ता और कशा दाम श्म जा न कक्षाआ का निरीक्षण किया और बच्चा का उत्साह बढा * **–सत्यशरण गुप्ता मन्त्री**

कादिया में ऋषि निर्वाण दिवस

अमर शहाद प लखराम स्मारक मण्डल आर्य समाज कादिया जिला रदासपुर म गत त्रषा की भान्ति ऋषि निवाण दिवस मनाया गया। जिसम सभा सदस्या न भाग लिया आर महषि दयानन्द को अपनी श्रद्धाजलि भेट की।

इस अवसर पर आय बन्धुआ ने दीपावली फण्ड (वेद प्रचार फण्ड) इकट्ठा किया जिसका कुल राशि 400 रुपए बना जो ड्राफ्ट बनाकर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का भजा गई। **–रोशन लाल, मन्त्री**

आर्य समाज के संस्थापक युगदृष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमें सिखाया कि–

मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख दु ख और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।

कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

विद्या परमार्थ के लिए हे न कि स्वार्थ के लिए परमार्थ तो तभी है जबकि विद्या से अज्ञानियो को लाभ पहुचे।

जो पक्षपात रहित न्यायाचरण सत्याभाषणादि युक्त ईश्वराज्ञा वेदो से अविरुद्ध है उसको धर्म और जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञाभग वेद विरुद्ध हे उसको अधर्म कहते हैं।

पुस्तक समीक्षा

आर्य समाज बी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली ने कई महत्वपूर्ण पुस्तको का प्रकाशन किया है। उनमे मानव निर्माण और आर्य समाज तथा मनुर्भव दा लघु पुस्तकें मुझे प्राप्त हुई। साहित्य प्रकाशन मे इस आर्य समाज का यह अच्छा प्रयास है। दोनो की पृष्ठ सख्या 32 है। पहली पुस्तक मे तीन लेख हैं। पहला डा सुन्दर लाल कथूरिया दूसरा डा उदय भान बजाज तीसरा श्री ओम प्रकाश जी सपरा का लेख है। तीनो महत्वपूण लेख हे। दूसरी पुस्तक मे भी श्री डा सुन्दर लाल कथूरिया श्रीमती प्रभा आर्या श्रीमती विमला मलिक का लेख है। कागज व टाईटल अच्छा हे। यह पुस्तके आर्य समाज से प्रचारार्थ मगवा कर बाटने योग्य है। **–धर्मदेव आर्य, सम्पादक**

आर्य समाज मन्दिर फाजिल्का में ऋषि-निर्वाण दिवस मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर फाजिल्का मे दीपावली के दिन ऋषि निर्वाण दिवस डा० अमर लाल बाघला प्रधान की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के अध्यक्ष आनन्द अभिलाषी थे। निवदन कुमार शास्त्री ने हवन यज्ञ करवाया। शहर के गणमान्य व्यक्तियो तथा शहर के भिन्न भिन्न स्कूला के अध्यापका व विद्यार्थियो ने समारोह मे भाग लिया। स्त्री आर्य समाज का अध्यक्षा श्रीमती सुदश नागपाल ने अतिथियो व विद्यार्थियो का समारोह मे सम्मिलित हाने पर हार्दिक अभिनन्दन किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन पर भाषण प्रतियोगिता करवाई गई। इसके अतिरिक्त मन्त्र उच्चारण आर्य समाज के नियम तथा भजन प्रतियागिता भी करवाई गई। भाषण प्रतियोगिता मे ज्ञान ज्योति माडल स्कूल की मीनाक्षी सेनी प्रथम रही। मन्त्र उच्चारण आर्य समाज के नियम मे साक्षी नागपाल श्रीमती माया देवी डी ए वी स्कूल प्रथम रही। जबकि सोनम व पार्टी दयानन्द माडल स्कूल भजन प्रतियागिता म प्रथम रही मुख्य अतिथि आनन्द अभिलाषी जी ने विजेता विद्यार्थिया तथा स्कूलो का स्मृति चिन्ह दकर सम्मानित किया। प्रतियोगिता म भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियो को ईनाम दिया। श्रीमता सुदेश नागपाल सुश्रा प्रेम डोडा लालाधर खरे हरबस लाल तथा सन्दाप कुमार ने भजन गा कर सभा श्रोताआ का मन्त्र मुग्ध किया। मच का सचालन सुशील कुमार वमा ने किया तथा निणायका का भूमिका श्रीमती कृष्ण शर्मा, सुश्रा प्रेम डोडा तथा कृष्ण शान्त सगीतकार ने निभाई।

मुख्य अतिथि आनन्द अभिलाषी ने स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज द्वारा भारत म फैली हुई कुरीतियो को दूर करने मे अपने ा की जानकारी दी। डा० अमर लाल ब्राघला ने स्वामी दयानन्द का भारतीय स्वतन्त्रता क प्रेरक बताया। आर्य समाज द्वारा समाज मे फली कुरीतियो का जैसे बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अन्ध विश्वास अनपढता दूर करने के लिए किए गए योगदान का जिक्र किया। अतिथियों तथा विद्यार्थियो का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के उपरान्त प्रसाद का वितरण किया गया। **–डॉ० अमर लाल बाघला, प्रधान**

आर्य समाज अबोहर में विशेष समारोह

आर्य समाज मन्दिर अबोहर में वयोवृद्ध आर्य समाजी एवं पूर्व संरक्षक श्री राम शरण दास खुल्लर जी सेवा निवृत्त जिलेदार के 88वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में शुक्रवार को एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की सहयोगी खुल्लर जी की दोहती कुमारी कामिनी जी, चण्डीगढ़ निवासी थीं। इस विशेष समारोह में नगर व बाहर से बहुत संख्या में नर-नारी तथा बच्चे सम्मिलित हुए।

सायं 5 बजे श्री खुल्लर जी के आगमन पर सर्वश्री सोहन लाल सेतिया प्रधान, प्रेम प्रकाश आर्य महामंत्री तथा दूसरे अधिकारियों द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। वेद के पवित्र मंत्रों से श्री अशोक कुमार शर्मा पुरोहित द्वारा यज्ञ करवाया गया। यज्ञ पश्चात् आर्य समाज के मुख्य वक्ता श्री प्रेम प्रकाश आर्य द्वारा विशेष रूप से आमन्त्रित श्रीमती एवं श्री विजय आनन्द जी, प्रसिद्ध आर्य गायक एवं प्रधान आर्य समाज फिरोजपुर छा०, श्रीमती एवं श्री मनोज कुमार आर्य जी महामंत्री आर्य समाज फिरोजपुर छा०, श्री खुल्लर जी तथा कुमारी कामिनी जी का आर्य समाज मन्दिर मे पधारने पर उनका आभार व्यक्त किया तथा सभी से इनका परिचय करवाया तथा श्री खुल्लर जी की आर्य समाज के प्रति सेवाओं बारे जानकारी दी व उनके 88वें जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई दी गई तथा उनकी दीर्घ आयु बारे कामना कर परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई।

इस समारोह सम्बन्धी श्री विजय आनन्द जी द्वारा विशेष रूप से बनाई गई कैसेट "अभी मूर्य नहीं अस्त हुआ" का विमोचन श्री खुल्लर जी के कर कमलों द्वारा करवाया गया। श्री विजय आनन्द जी द्वारा कैसेट में भरे गीतों को निजी रूप में प्रस्तुत कर सभी को मत्र मुग्ध कर समय बांध दिया। इस अवसर पर श्री सुशील कुमार मेहत्ता द्वारा भजन, श्री प्रेम प्रकाश आर्य द्वारा वैदिक अरदास तथा श्री मनोज आर्य द्वारा भजन गाये गए। कुमारी कामिनी ने सभी का धन्यवाद किया तथा कुछ कैसेट बांटे। इस समारोह की एक मूवी भी बनाई गई। शांति पाठ उपरान्त आर्य समाज की ओर से सभी पधारे हुए धर्म प्रेमियों को जलपान करवा कर लड्डुओं के लिफाफे प्रशाद रूप में वितिरत किए गए।

—प्रेम प्रकाश आर्य, महामन्त्री

देवता बन गया

❑ ले० आचार्य भगवान देव "चैतन्य"

वक्त कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता
वक्त तो नाम ही गति का है।
हा यदि हम चाहे तो–
वक्त की बहती नदी से
अनगनित न्यामतें समेट सकते हैं।

वक्त को यू ही गुजरने दें
तो कुछ भी हाथ नहीं लगेगा
वक्त की रफ्तार का कोई अन्त नहीं,
कोई सीमा नही।

आदमी चाहे तो–
वह भी वक्त के पख बन सकता है
छू सकता है आकाश की ऊचाईया
नाप सकता है सागर की गहराईया,

वक्त सबसे बडी पूजी है
यह सूत्र जिस किसी के हाथ लग गया
उसका नाम–
इतिहास के नक्षत्रो से जुड गया।

वक्त का अपव्यय
अपना ही अपव्यय है
वक्त के घोडे के पाव की ठोकर ही
पतन है।
पीठ पर चढ अभियान करना ह
उत्थान है।

वक्त की लगाम पकडकर
जिसने भी इसे अनुकूल बना लिया
वही देवता बन गया।

लुधियाना में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी श्रद्धा से 2 नवम्बर शनिवार को मनाया गया।

इसमें बहनों ने उत्साह से भाग लिया विशेषरूप से श्रद्धेय सुमनायति, जिला प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी, हवीब गंज से विनोद गांधी जी इत्यादि बहनें आईं। सर्वप्रथम यज्ञ हुआ। यज्ञ पर श्रीमती नीलम थापर, श्रीमती कैलाश जो, विमला जी, चन्द्रकान्ता जी, मुधा आदि ने विशेष यज्ञ किया। तत्पश्चात् प्रभु भक्ति का सुन्दर भजन गाया। विनोद गांधी ने महर्षि देव दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा हम कितने जन्म लगा कर भी ऋषि ऋण मे उऋण नहीं हो सके। ऋषि महिमा का बहुत सुन्दर गीत भी सुनाया फिर बाला गंभीर, सीता नागपाल, नीना जी बेरी ने ऋषि दयानन्द का सुन्दर भजनों द्वारा गुणानुवाद किया। पश्चात् स्त्री आर्य समाज साबुन बाजार प्रधाना, सभा मंत्री राजेश शर्मा ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थपाना क्यों की? इस विषय मे उन्होंने कहा कि उनका मन्तव्य था श्रेष्ठ लोग मिल कर ससार का कल्याण करें। एक प्रभु की पूजा करके एक झण्डे के नीचे बुराईयों को दूर कर एकता सत्य पर आचरण कर एक सुन्दर जगत बनाएं। उन्होंने वेदो वाले की जय जयकार का सुन्दर भजन भी सुनाया। अन्त में सुमनायति जी जो कि ऋषि की अनन्य भक्त है उनका बहुत सारगर्भित प्रवचन हुआ। जनक जी ने भी भजन गाया। टंकारा का देव दयानन्द सब की आंखों का तारा, दुनिया का उपकार किया, याद करे तुझे जग सारा तथा उन्होने कहा कि ऋषि जो कहते थे। वह आज संसार कहता है। सब को दीपावली की शुभकामनाए देते हुए बधाई देते हुए सभी भाई-बहनो का हार्दिक धन्यवाद किया। शान्ति पाठ ऋषि जय-जयकार के साथ सभा समाप्त हुई। प्रसाद वितरण किया गया।

—जनक रानी आर्य

आर्य समाज तलवाड़ा का वेद प्रचार सप्ताह एवं वार्षिकोत्सव

आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह एवं वार्षिकोत्सव बहुत ही श्रद्धा-उल्लास एवं धूमधाम से मनाया गया। यह कार्यक्रम 28 अक्तूबर से 3 नवम्बर 2002 तक लगातार चलता रहा। इस शुभ अवसर पर पूज्य स्वामी माधवानन्द जी (हिसार) पं विजय कुमार जी शास्त्री महोपदेशक, श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली के उपदेश व भजन हुए।

28 अक्तूबर से 1 नवम्बर तक रात्रि 8.30 बजे से 11.30 बजे तक पूज्य स्वामी माधवानन्द सरस्वती जी का बहुत ही सुन्दर, ज्ञानवर्धक वेद-गीता, रामायण और महाभारत पर उपदेश होता रहा। स्वामी जी तो बहुत ही मधुर वाणी के धनी है। उनकी वाणी तो हर सुनने वाले के दिलों को छू जाती है।

हमारा प्रयास था कि वेद के ज्ञान का प्रचार जो लोग गांवों में रहते हैं, उन तक भी पहुंचे। आर्य समाज और वेद ज्ञान के बारे गांवों के लोगों को पता चले। इसलिए इस बार गांवों के लोगों को विशेष तौर पर बुलाया गया था। उनके भोजन और रात्रि को ठहरने की व्यवस्था आर्य समाज की ओर से की गई ताकि वह रात्रि में प्रचार सुन सकें जो कि बहुत ही सफल रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का भी मत है कि गांवों तक वेद ज्ञान पहुंचे। गांव टूडु, भटेड, भोल से ग्रामवासी आकर परिवार सहित वेद प्रचार सुनते और यहां पर ठहरते। इनमें मुख्य श्री गिरधारी लाल जी, राम रक्खा जी, श्री नरेश शर्मा जी गुमनाम रहे। श्री गुमनाम जी के हम आभारी हैं जिन्होंने गांवों तक प्रचार पहुंचाने और वहां से सदस्यों को लाने में मेहनत की। पैसा भी इकट्ठा करके दिया, सबके भोजन की व्यवस्था भी वहीं करते रहे। इसके अतिरिक्त गांव चगवा, भमवोंताड, इटियां, रैपरहाट, दातारपुर, रकडी, कराडी से भी श्रद्धालु यहां पहुंचते रहे।

1 नवम्बर को वेद प्रचार का प्रात: का कार्यक्रम श्री विनोद कुमार जी के निवास-स्थान रैपरहाट में रखा गया। तलवाड़ा आर्य समाज के सदस्य, स्त्री आर्य समाज के सदस्य, महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल के सदस्य, गांव भोज से, भटेड़ से नरेश गुमनाम जी, रामरक्खा जी टूडु से, केवल जी रकड़ी से वहां बसों और स्कूटरों द्वारा पहुंचे। आर्य समाज तलवाड़ा की ओर से वैन पूज्य स्वामी माधवानन्द जी, विजय कुमार जी शास्त्री, श्री सतीश और सुभाष जी को लेकर वहां गई। पहले पं विजय कुमार शास्त्री, पं. परमानन्द जी ने यज्ञ करवाया उसके पश्चात् सतीश और सुभाष जी के भजन हुए जिनको लोगों ने बहुत पसन्द किया। पं० विजय कुमार जी का बहुत सुन्दर उपदेश हुआ। बाद में पूज्य स्वामी माधवानन्द जी ने अपनी मधुर और अमृत रूपी वाणी से वेद ज्ञान की अमृतमयी वर्षा की तो लोग झूम उठे। लोगों ने भजन मण्डली और स्वामी जी और विजय कुमार जी का हौंसला भी बढ़ाया। यह कार्यक्रम गांव में अभी भी चर्चा का विषय बना हुआ है। आम लोग कहते हैं कि हमने ऐसा प्रचार कभी नहीं सुना। 2 और 3 नवम्बर को आर्य समाज में उत्सव मनाया गया दोनों दिन 5 कुण्डीय यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया। दोनों दिन 21-21 यज्ञमान यज्ञ पर बिठाये गये। इस शुभ अवसर पर गुरुकुल करतारपुर से भी ब्रह्मचारी अरुण कुमार जी, गुरुकुल हरिद्वार से बुधदेव जी, राजपाल जी, राजेश जी गुरुकुल करतारपुर से भजन मण्डली सहित 1 नवम्बर सायं को पहुंच गए थे। 2 तारीख शनिवार को पहले 5 कुण्डीय यज्ञ किया गया। पं० परमानन्द जी ने यज्ञ करवाया और ब्रह्मचारियों द्वारा बहुत सुन्दर और विद्वतापूर्ण वाणी से मन्त्र पाठ किया। पूज्य स्वामी माधवानन्द जी ने यज्ञ श्रेष्ठ कर्म है इस पर अच्छा प्रवचन किया। इसके उपरान्त सभी आए हुए श्रोताओं को प्रात:राश आर्य समाज की ओर से दिया गया। इसके बाद दूसरी सभा उत्सव की शुरू की गई। महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल तलवाड़ा के छात्र-छात्राओं ने बहुत सुन्दर ईश्वर भक्ति और महर्षि जी के जीवन पर भजन सुनाये छोटे-छोटे बच्चों से भजन सुन कर सभी बहुत खुश हुए।

इस समय पर पूज्य स्वामी सदानन्द जी, श्री रमेश शास्त्री जी के साथ दयानन्द मठ दीनानगर से पहुंच चुके थे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने बहुत सुन्दर कवालियां और भजन सुना कर सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया, सदस्य बार-बार सुनने की फरमाईश कर रहे थे। दिल खोल कर हौंसला भी बढ़ा रहे थे। सुभाष और सतीश जी के भी भजन हुए सभी ने भजन मण्डली को बहुत पसन्द किया और मंच पर जा कर पैसे भी दिए। दोपहर के भोजन की व्यवस्था और रात्रि की व्यवस्था आर्य समाज मन्दिर में ही की गई। रात्रि का कार्यक्रम भी हुआ जो 11.30 बजे तक चलता रहा।

2 नवम्बर सुबह 5 कुण्डीय यज्ञ हुआ इस यज्ञ के ब्रह्मा पं० विजय कुमार जी शास्त्री थे। शास्त्री जी ने बहुत सुन्दर ढंग से यज्ञ करवाया और गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने बहुत सुन्दर वेद पाठ और मन्त्र पाठ शुद्ध वाणी से किया। आर्य समाज मन्दिर को खूब सजाया गया था। सारा हाल, यज्ञशाला खचाखच श्रद्धालुओं से भरा रहा।

ब्रह्मचारियों के भजन, कवालियां सतीश-सुभाष जी के भजन, विजय कुमार शास्त्री जी का उपदेश, स्वामी माधवानन्द जी का उपदेश और प्रवचन हुआ दोनों दिनों में बहुत से शहरवासी और ग्राम वासी दूर दूर से आकर यज्ञमान बने।

श्री कुलदीप शर्मा दम्पत्ति गांव इटियां, विनोद कुमार दम्पत्ति गाँव रैपरहाट से, नरेश चन्द्र जी भटेड़, केवल कृष्ण जी गांव रकड़ी, चमन लाल जी भटेड़, राम रक्खा जी गांव टुड्, गिरधारी लाल जी गांव भोल, श्री अमर नाथ जी गांव कराड़ी, प्रकाश वती महाजन सशमां, परवीन कुमार कराड़ी, तलवाडा से राम कृष्ण भड़लोट, धर्मवीर, विकास, सीताराम, डॉ० रवि कुमार, हरबंस सिंह जी, हरीश चावला, श्री अमर नाथ आर्य, मनोहर लाल आर्य, गुलशन कुमार, रमेश चन्द्र भाटिया, वैजनाथ आर्य, कुलतार सिंह राणा, किशोरी लाल जी, पं० परमानन्द जी, सुशील कुमार, प्रभु सिंह, जगमोहन सिंह, जदू नाथ सभी दम्पत्ति यज्ञमान बने। इस प्रोग्राम और वेद प्रचार का बहुत असर और लाभ हुआ और वेद का ज्ञान गांव-गांव तक पहुंचा। अन्त में श्री अमर नाथ वरिष्ठ उप प्रधान आर्य समाज तलवाड़ा ने सभी का धन्यवाद किया।

अन्त में मैं आर्य समाज के सभी अधिकारियों का, स्त्री आर्य समाज के सदस्यों का महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल के स्टाफ, छात्र-छात्राओं का धन्यवाद करता हूं जिनकी लगन और मेहनत से यह उत्सव का कार्य सम्पन्न हुआ और स्कूल की छात्राओं व छात्रों ने बहुत मेहनत की है। श्री राम रक्खा जी और खासकर नरेश शर्मा जी गुमनाम जिन्होंने भोजन का प्रबन्ध और गांववासियों को लाने में बहुत योगदान दिया है और प्रबन्ध किया है धन्यवादी हूं। सभी आर्य विद्वानों का भी, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भी धन्यवादी हूं।

4-11-2002 को महर्षि जी निर्वाण दिवस भी आर्य समाज में मनाया गया। गुमनाम जी की कविता श्री अमरनाथ जी आर्य वरिष्ठ उप प्रधान एवं स्वामी माधवानन्द जी का उपदेश हुआ। 5-11-2002 को गांववासियों के अनुरोध से गांव भटेड़ में नरेश शर्मा जी के निवास स्थान पर स्वामी माधवानन्द जी का बहुत सुन्दर उपदेश हुआ। वहां सभी गांव वासी पहुंचे हुए थे। स्वामी जी ने वहां वेद ज्ञान की अमृतमयी गंगा बहाई तो सारे श्रोतागण झूम उठे। आर्य समाज तलवाड़ा के अधिकारी रमेश भाटिया जी प्रधान भी वहां गए।

—मनोहर लाल आर्य, मन्त्री

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन सिविल लाईन लुधियाना के तत्वावधान में प्रति रविवार को पारिवारिक सत्संग भिन्न-भिन्न परिवारों में निरन्तर हो रहे हैं। 24-11-2002 रविवार को श्री हरबंस लाल जी महाजन रिटायर्ड पोस्ट मास्टर मं.नं.-2012 समीप गऊशाला हैबोवाल कलां लुधियाना में सायं 3.50 से 5.50 बजे तक होगा। धर्म प्रेमी सज्जन लाभ उठावें।

—नरेन्द्र भल्ला

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

पंजि: पी बी डी 0381/2002

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सम्पर्क: गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

दूरभाष 292926

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (र्जि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–57 अंक 34 सृष्टि संवत 1960853103, 22 दिसम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस

□ ले० श्री मुलखराज आर्य, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस 23 दिसम्बर को सब आर्य समाजो में मनाया जाता है। उनका जन्म ग्राम तलवन जिला जालन्धर में सन् 1856 में हुआ था। उनका बचपन का नाम मुन्शीराम था। वह बहुत बडे वकील थे। मुन्शीराम शराब बहुत पीते थे मास खाते थे हुक्का भी पीते थे और ईश्वर को बिल्कुल नहीं मानते थे। मुन्शी राम के पिता पुलिस में कोतवाल थे। इनके पिता उत्तर प्रदेश में जब रहते थे तो मुन्शीराम भी उनके पास रहता था। वहा पर स्वामी दयानन्द जी महाराज पधारे तो मुन्शीराम के पिता की स्वामी जी के आने पर उस शहर में पुलिस में होने के कारण इन्तजाम करने की ड्यूटी लगाई गई थी। मुन्शीराम के पिता ने स्वामी जी के विचार सुनने के पश्चात मुन्शी राम को कहा कि एक महात्मा आया हुआ है [illegible] विचार जरूर सुनो। पिता के बार बार कहने पर मुन्शी राम स्वामी जी के विचार सुनने के लिए पहुंच गये और स्वामी दयानन्द जी को जब देखा तो वह बहुत ही प्रभावित हुए। उपदेश सुनने के पश्चात् मुन्शीराम ने स्वामी जी के पास आकर शका समाधान किया तो उस समय मुन्शी राम ने स्वामी जी को कहा कि स्वामी जी जो बात भी मैंने की है उसका उत्तर तो अब मेरे पास नहीं रहा परन्तु प्रभु पर मेरा विश्वास नहीं आ रहा। उस समय स्वामी जी ने यह उत्तर दिया कि जब प्रभु की कृपा होगी तो आप को प्रभु पर विश्वास भी हो जाएगा। यह मुन्शीराम की स्वामी जी के साथ पहली मुलाकात थी। स्वामी जी ने जो बात मुन्शीराम जी को कही थी उन बातो का मुन्शीराम पर इतना प्रभाव पड़ा कि सारी शकाए मुशी राम की समाप्त हो गई। मुन्शीराम के विचार ही बदल गए। मुशीराम ने जालन्धर में वापिस आकर आर्य समाज में प्रवेश कर लिया। वकील होने के नाते झूठे केस लेने ही बन्द कर दिए। शराब मास आदि सब कुछ छोड दिया तो एक बार मुशीराम किसी पार्टी में गए तो उस पार्टी में मुशीराम की थाली में मास की एक प्लेट भी आई तो मुशीराम ने मास की प्लेट उठाई और सब लोगों के सामने वह प्लेट सामने दीवार पर दे मारी तो सब लोग हैरान हो गए कि आज मुन्शीराम को क्या हो गया। उन्होंने मुशीराम से पूछा कि मुशीराम यह क्या बात है उसी समय उन्होंने उत्तर दिया कि मैंने मास खाना छोड [illegible] ही कह देते तो प्लेट हटा दी जाती तो उस समय मुशी राम ने कहा मैं आर्य समाजी बन गया हू मैंने ऐसी सब चीजे छोड दी हैं। यह इसलिए प्लेट फैंकी है कि आप सब को पता लग जाए ताकि अगली बार मेरे सामने ऐसी कोई भी वस्तु न आए। जितनी भी बुराईया थी सब को त्याग दिया है। वह आर्य समाज अड्डा होशियारपुर के प्रधान भी बन गए और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के भी प्रधान बन गए। उन्होंने वकालत को भी त्याग दिया जन्म तो उनका ग्राम तलवन मे हुआ था परन्तु वह जालन्धर मे ही रहते थे उनकी कोठी आर्य समाज अड्डा होशियारपुर के बिल्कुल सामने थी। वह मुन्शीराम से महात्मा मुन्शीराम बन गए। 32 वर्ष की आयु में उनकी धर्मपत्नि शिवदेवी की मृत्यु हो गई परन्तु मुन्शीराम ने यह फैसला कर लिया कि अब मैं और विवाह नहीं करूगा उनकी धर्मपत्नि का उनको बहुत सहयोग था। महात्मा मुशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गए और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वामी दयानन्द जी के बताए हुए मार्ग पर चलने और गुरुकुल खोलने का विचार बनाया और व्रत लेकर घर से निकला कि मैं गुरुकुल के लिए तीस हजार रुपया इकट्ठा करके घर वापिस आऊगा। वह तीस हजार रुपया इकट्ठा करके ही वापिस आए उस समय तीस हजार रुपया बहुत बडी राशि हुआ करती थी और गुरुकुल खोलने के लिए हरिद्वार में स्थान भी प्राप्त कर लिया और आपकी जो भी सम्पत्ति थी वह सब आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम कर दी और यह कहा कि सारी सम्पत्ति बेच कर गुरुकुल के नाम कर दी जाए। आर्य समाज के सामने जो बहुत बडी कोठी थी वह बेचकर सब कुछ गुरुकुल के लिए दे दिया अपने बच्चे भी गुरुकुल को दे दिए। वह गुरुकुल इस समय गुरुकुल कागडी के नाम पर बहुत मशहूर है। इस गुरुकुल से बहुत से विद्वान् बन कर निकले और सारे देश मे वेद का प्रचार कर रहे हैं।

स्वामी जी ने एक बार जामा मस्जिद दिल्ली में भी एक भाषण दिया था और भाषण करने से पहले मस्जिद मे वेद मन्त्र का उच्चारण किया। स्वामी जी बडे निडर थे। एक बार दिल्ली मे एक बहुत बडा जुलूस निकाला गया जिसकी रहनुमाई स्वामी जी कर रहे थे। उस समय उस जुलूस को चादनी चौक मे रोक लिया गया उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी चादनी चौक मे छाती तान कर खडे हो गए और उस समय गोरे सर्जेंट सगीने लेकर खड थे और स्वामी जी न कहा कि चलाओ गोली तो उस समय गोरे सर्जेंट ने अपनी सगीनें नीचे कर ली। यह थे स्वामी श्रद्धानन्द और जुलूस आगे निकल गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी शुद्धि का भी बहुत प्रचार करते थे। यही कारण है कि दिल्ली मे एक मुसलमान अब्दुल रशीद ने स्वामी जी को गोली मार दी और स्वामी श्रद्धानन्द जी 23 दिसम्बर 1926 को शहीद हो गए। स्वामी जी की जो कोठी आर्य समाज अड्डा होशियारपुर के सामने थी वह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने बेच कर सारा रुपया गुरुकुल को अर्पण कर दिया था। स्वामी जी की कोठी जिन्होने खरीदी थी वह दो भाई थे। इनमे स एक भाई ने आधी कोठी का जज घर बना दिया दूसरे भाई ने आधी कोठी किराये पर चढाई हुई थी। वह आधी कोठी जो शेष थी वह बेचना चाहता था तो मैं 1958 मे आर्य समाज का मन्त्री बन गया ओर सेठ शिवचन्द जी प्रधान बने ता हमने विचार किया कि यह आधी कोठी स्वामी जी वाली बिक रहा है वह ले ली जाए। ता हमने आर्य समाज के लिए 23000 रुपए म वह कोठी खरीद कर आर्य समाज की सम्पत्ति बना ला। स्वामा श्रद्धानन्द के आय समाज पर बहुत उपकार हैं आज हम स्वामी जा का श्रद्धाजलि अर्पण करते ह ओर सच्ची श्रद्धाजलि तभा हागा जब उनक बताये हुए मार्ग पर चलग।

गंगा के उस पार

☐ ले० –पं० [illegible] आर्य, [illegible]

शिव देवी ने खाना परोस कर मेज पर रख दिया तथा स्वय प्रतिदिन की भाति अपने पतिदेव का इन्तजार करने लगी इस विचार के साथ कि पतिदेव आयेगे और भोजन ग्रहण करेंगे। परन्तु आधी रात गुजर गई पतिदेव घर वापिस नहीं आये। प्रतीक्षा करते करते शिवदेवी की आँख लगने लगी तथा खाने के पास ही मेज पर सो गई। आधी रात को नशे मे धुत लडखडाते हुए जब पतिदेव घर आते हैं तो क्या देखते है कि शिवदेवी पति की प्रतीक्षा करते करते मेज पर सिर रख कर सा गई है। यह बात श्री मुन्शी राम वकील को अच्छी नहीं लगी। मन ही मन शर्मिंदगी महसूस करत हुए विनम्र भाव से कहते हैं कि शिवदेवी तुम खाना खा कर सो जाया करो। मेरे लिए भूखे न रहा करो तथा न ही इन्तजार किया करो। शिवदेवी बडी विनम्रता से उतर देती हुई कहती हे कि जिस पत्नी का पति आधी रात को शराब के नशे म धुत लडखडाता हुआ घर आयेगा उस अभागन का भूख क्या लगगा तथा उसको नींद कैसे आयेगी? महात्मा मुन्शी राम क मन पर गहरी चाट लगी तथा उन्होने जीवन का चलन बदलने का निश्चिय कर लिया। शिवदेवी को क्या पता था कि आज का मुन्शीराम कल का स्वामी श्रद्धानन्द बनेगा। उसे क्या पता था कि हिमालय की भाति सिर उठाये खडे रहने वाले गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना इन्हीं के हाथो से होगी। शिवदेवी को क्या पता था कि महर्षि दयानन्द के सपनो को साकार करने वाला उसका अपना पति ही होगा।

महात्मा मुन्शी राम ने यजुर्वेद का स्वाध्याय करते हुए मन बना लिया कि गुरुकुल की स्थापना शहरी आबादी के दूषित वातावरण से दूर एकान्त पर्वतो व नदियो के तट पर होनी चाहिए। इसलिए उन्हाने गगा के तट पर नथा हिमालय की गोद मे गुरुकुल कागडी का निर्माण आरम्भ किया। बाद के दिनो म यहा पर पहुचना बहुत ही कठिन था। अलग थलग रहने मे अग्रेजी सरकार का गुरुकुल के प्रति सदेह बढता गया। गुरुकुल वैदिक शिक्षा क अतिरिक्त देश भक्ति की शिक्षा का भी मुख्य केन्द्र था। ऐसे [illegible] भक्तों को पैदा करने का मुख्य लक्ष्य था जो देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहे। सरकारी [illegible] साधु सन्यासियों बाबाओ के भेष में गुरुकुल का भेद लेने के लिए आते थे। उनका विचार था कि गुरुकुल के विद्यार्थियो को राजद्रोह की शिक्षा दी जाती है। यज्ञशाला को वे पवित्र यज्ञशाला ही नहीं समझते थे बल्कि उनका मानना था कि यज्ञशाला के नीचे एक बडा तहखाना है और जहा पर ब्रह्मचारियों को गोला बारुद बमों के निर्माण की शिक्षा दी जाती है।

गुरुकुल का सरकार से कोई लेना देना नहीं था। गुरुकुल सरकार से कोई आर्थिक सहायता भी नहीं लेता था। गुरुकुल के अधिकारी सरकारी अफसरो की चमचागिरी नहीं करते थे। विद्यार्थी भी अग्रेजो को सलाम तक नहीं करते थे। जो व्यक्ति अग्रेजो को सलाम नहीं करता था अथवा उनकी खुशामद नहीं करता था उसे सदेह की दृष्टि से देखा जाता था। गुरुकुल के अधिकारियो व ब्रह्मचारियों का सबसे बडा दोष यही था कि न तो सरकार से कुछ मागते थे और न ही अग्रेज अफसरो के सामने सिर झुकात थे।

ब्रिटिश सरकार को सबसे बडा खतरा गुरुकुल व आर्य समाज से था। जहा बच्चों को देश भक्ति व बलिदान का पाठ पढाया जाता था। छोटे छोटे आठ वर्ष के बच्चो को माता पिता से दूर रख कर उनको तप त्याग व भक्ति भाव के साचे में ढाला जाता था। बच्चे 17 वर्ष की आयु तक आर्य समाज के सुयोग्य शिक्षको की देख रेख मे तैयार होते थे उनमें बलिदान की दृढ शक्ति पैदा की जाती थी जो ब्रिटिश साम्राज्य की गुलामी की जजीरे काटने में तलवार की भाति काम आई। गुरुकुल के ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश के 11वें समुल्लास की इस आज्ञा का पालन करते थे कि श्रद्धा एव प्रेम से अपने तन मन धन तथा सर्वस्व को देश हित के लिए अर्पण कर दे।

अग्रेज सरकार की अब यह चिन्ता बन गई थी कि गुरुकुल से शिक्षा लेने के बाद उनका सरकार के प्रति कैसा रवैया होगा। वे धर्म [illegible] लोगों को सरकार [illegible] होने के लिए [illegible] होंगे और लोगों [illegible] भी पढ़ेगा। आज जो व्यक्ति [illegible]-18 रु० के लिये पुलिस में [illegible] सिर कटवाता है, गुरुकुल के प्रांगण में आने के बाद ऐसे सिर कटवाने वाले आदमी सरकार को नहीं मिलेंगे। गुरुकुल अंग्रेज सरकार के लिए बहुत बडा खतरा पैदा कर सकता है।

गुरुकुल के अधिकारी व ब्रह्मचारी मिलकर वार्षिक उत्सव मनाते थे। लोग श्रद्धा पूर्वक उन्हें धन भी देते थे। जहा तक कि औरतें अपने आभूषण तक उतार कर दान मे दे देती थी जो क्रातिकारी अन्दोलन में देश भक्तों पर खर्च की जाती थी। गुरुकुल की शिक्षा पद्धति से अग्रेज काफी भयभीत थे। वे चिन्तित थे कि ऐसी शिक्षा से सरकार के लिये निकट भविष्य में सकट पैदा हो सकते थे। महाशय रामदेव जी ने लिखा है कि गुरुकुल मे दी जाने वाली शिक्षा सर्वांश में राष्ट्रीय है। आर्य समाजियो की बाईबल सत्यार्थ प्रकाश" है जो देश भक्ति के भावों से ओत प्रोत हे। गुरुकुल म जो इतिहास पढाया जाता है, वह देश भक्ति की भावना को जागृत करता है। इसमे जरा भी सदेह नहीं है कि गुरुकुल के यत्न से ऐसे सन्यासियो का दल तैयार किया जा रहा है जो सरकार के अस्तित्व के लिए सकट पैदा कर सकता है।'

गुरुकुल कागडी पर राजद्रोही सस्था होने का सदेह बढता ही गया। सरकार को यह सूचना मिली कि गुरुकुल मे हथियारों का बहुत बडा भण्डार है और यहा के ब्रह्मचारियो का शस्त्रास्त्र चलाने की शिक्षा दी जाती है। कुछ जासूसो ने बम बनाने के कारखाने की सूचना भी दी। महात्मा मुन्शीराम को पहले ही पता चल गया कि बिजनौर के कलैक्टर गुरुकुल की तालाशी लेने के लिये आ रहे है। सूचना मिलते ही महात्मा मुन्शीराम गोला बारूद ठिकाने लगाने को कह कर स्वयंमेव ही कलैक्टर साहब से मिलने चले गये। उन्होने इस विषय मे सारी स्थिति स्पष्ट कर दी और कलैक्टर साहब को गुरुकुल मे आने का निमन्त्रण भी दिया। कलैक्टर साहब ने आ कर देखा कि ब्रह्मचारी व्यायाम व कुश्ती कर रहे है और कहा कि "[illegible] मुख्य उद्देश्य तो इनको पहलवान बनाना है। [illegible] पर जो संदेह किया है, सब झूठ है।" इसके पश्चात महात्मा मुन्शीराम अंग्रेज अफसरों को अपने उत्सवों पर गुरुकुल में आमन्त्रित करते रहे [illegible]।

–अंग्रेज सरकार के गुरुकुल के प्रति संदेह के कुछ कारण थे। पहला यह कि सरकार को सूचना मिल चुकी थी कि "गुरुकुल में हथियार गोला बारूद बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।" दूसरा यह कि गुरुकुल के ब्रह्मचारियो को जहा वेद वेदांतों की शिक्षा दी जाती थी वहा इसके साथ साथ धनुर्वेद अर्थात् धनुषबाण चलाने की शिक्षा भी दी जाती थी। साथ साथ मे कुश्ती पटका फरी आदि खेल भी सिखाये जाते थे। एक जमींदार ने गुरुकुल को कुछ घोड़े दान में दे दिये थे इन पर ब्रह्मचारियो को घुडसवारी की शिक्षा दी जाती थी। जासूसो ने अग्रेज सरकार को सूचना दे दी कि गुरुकुल में सैनिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है जो राजद्रोह पैदा कर सकता है तीसरा यह कि गुरुकुल क्रातिकारियो तथा राजद्रोहियो के लिए एक बढिया शरण स्थली था। उन दिनों गुरुकुल देश भक्तो व स्वतन्त्रता सग्रामियो के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था। क्रांतिकारी रात को वारदात करते तथा दिन को गुरुकुल मे छिपे रहते । विशेषकर वे लोग जिनके सरकार ने वारट निकाले होते थे। वे गुरुकुल में आकर विश्राम करते क्यों कि यहा अपने को सरकार की दृष्टि से सुरक्षित समझते थे।

गगा के उस पार कथित गुरुकुल कागडी जहा वैदिक ग्रथो की शिक्षा के साथ साथ देश भक्ति का पाठ भी पढाया जाता है। इस शिक्षण सस्थान में हजारो ही वैदिक विद्वान, सन्यासी देश भक्त पैदा किये है जिन्होंने हसते हसते अपना सर्वस्व देश के लिये बलिदान कर दिया । गुरुकुल विश्वविद्यालय आज भी हिमालय की तरह गर्व से सिर उठाये खडा है और हमेशा रहेगा। इसका श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द को जाता है। जिन्होने अपनी लग्न परिश्रम व दूरदर्शिता से गुरुकुल की स्थापना गगा के उस पार शान्त व रमणीय वातावरण मे की।

पण्डित हरबंस लाल जी के प्रति लोगों में अगाध श्रद्धा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी का गत दिनों जालन्धर में देहावसान हो गया था। उनके अन्तिम दर्शन करने के लिए सारा पंजाब उमड़ पड़ा था। हजारों की संख्या में लोगों ने 3 दिसम्बर को जालन्धर पहुंच कर उनके अन्तिम दर्शन किए थे और उनके शव पर फूलों की वर्षा की थी। उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी थी। सभी लोग कह रहे थे कि जालन्धर में ऐसी शव यात्रा किसी की भी नहीं देखी गई। वास्तव में यह उनके उन पवित्र कर्मों के फल स्वरूप ही हुआ जो वह जीवन भर करते रहे।

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी, उप कुलपति आचार्य वेद प्रकाश जी, रजिस्ट्रार श्री महावीर जी अग्रवाल सम्पदाधिकारी श्री करतार सिंह जी तथा दूसरे गुरुकुल के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों की यह हार्दिक इच्छा थी कि पण्डित जी की अस्थियां गुरुकुल में लाई जाए भले ही उन्हें गंगा में हर की पौडी पर विसर्जित न किया जाए कहीं और कर दिया जाए परन्तु हरिद्वार अवश्य लाया जाए क्योंकि पण्डित हरबंस लाल जी शर्मा का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से बहुत स्नेह था और वह उसकी उन्नति के लिए अन्तिम समय तक कार्य करते रहे वह गुरुकुल में और सुधार देखना चाहते थे और इस लिए गत दिनों हरिद्वार आना चाहते थे इसके लिए उन्होंने श्री स्वतन्त्र कुमार जी कुलपति को बताया था कि मैं शीघ्र ही हरिद्वार आ रहा हूं परन्तु स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण वह आ न सके इसलिए गुरुकुल के अधिकारियों की इच्छा थी कि उनकी अस्थियां गुरुकुल में अवश्य लाई जाएं।

11-12-2002 को जब पण्डित हरबंस लाल जी शर्मा का अस्थि कलश लेकर उनके सुपुत्र श्री सुदर्शन जी शर्मा, श्री सुरेश जी शर्मा व श्री नरेश जी शर्मा हरिद्वार पहुंचे तो पण्डित जी के सुपुत्रों के दर्शन करने के लिए तथा अस्थि कलश के सम्मान के लिए तथा पण्डित जी को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए भारी संख्या में लोग वहां उपस्थित थे। हरिद्वार से कई मील दूर रुड़की की तरफ लोग सड़कों के दोनों ओर खड़े हुए थे। ज्वालापुर इन्टर कालेज का सारा स्टाफ व विद्यार्थी इन्जीनियरिंग कालेज का सारा स्टाफ व विद्यार्थी, ज्वालापुर महा विद्यालय का स्टाफ व शहर के गणमान्य व्यक्ति, गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के सभी विद्यार्थी, सभी अधिकारी, सभी कर्मचारी, आर्य वानप्रस्थाश्रम के सभी वानप्रस्थी, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के सभी कर्मचारी हरिराम इन्टर कालेज का सारा स्टाफ व कर्मचारी वहां उपस्थित थे। खुली जीप में पण्डित जी के तीनों सुपुत्र व कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी चल रहे थे उनके पीछे कारों का काफिला चल रहा था। यह सारा काफिला गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर बढ़ रहा था। इस अवसर पर उत्तरांचल सरकार की तरफ से पुलिस के दस्ते ने फायर करके सलामी दी और श्री डी.एम. महेश्वरी ने श्रद्धांजलि अर्पित की। स्थानीय एम.एल.ए. मदन कौशिक के नेतृत्व में शहर के गणमान्य महानुभावों ने अमन चौक में श्रद्धांजलि अर्पित की। ट्रैफिक पुलिस यातायात की सारी व्यवस्था कर रही थी कुछ देर रास्ता बिल्कुल अवरुद्ध रहा लोग पूछ रहे थे कि ऐसा यह कौन व्यक्ति संसार से चला गया जिसके लिए इतने लोग एकत्रित हो रहे हैं। जो पण्डित जी को जानते थे उन्हें तो यह सब देख कर कोई आश्चर्य नहीं हो रहा था क्योंकि उन्हें पता था कि ऐसे महान व्यक्ति का ऐसा सम्मान मृत्यु के बाद भी होना स्वाभाविक है। परन्तु साधारण लोगों को आश्चर्य हो रहा था। लोग कह रहे थे कि हरिद्वार के इतिहास में यह पहली घटना है कि किसी व्यक्ति के परिवार को देखने के लिए और अस्थि कलश के स्वागत के लिए व श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए इतने व्यक्ति कभी हरिद्वार की सड़कों पर आए हों।

श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा अपने जीवन में बड़े सम्मान से जीए जहां भी वह गये लोगों ने उनका सम्मान किया और मृत्यु के बाद भी उन्हें आर्य जनता ने बहुत सम्मान दिया। यह सब उनके पवित्र कर्मों का फल था जो उन्हें मृत्यु के बाद भी सम्मान मिला। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में लोगों ने हरबंस लाल जी शर्मा अमर रहें के नारे लगा कर आकाश गुंजा दिया। अस्थि विसर्जन के बाद गंगा के तट पर बृहद यज्ञ हुआ और फिर 12-12-2002 को प्रात: 10 बजे गुरुकुल कांगड़ी की भव्य यज्ञशाला में यज्ञ हुआ और उसके पश्चात् बृहद ऋषि लंगर प्रीति भोज हुआ जिसमें आर्य वानप्रस्थाश्रम के सभी सज्जनों, गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियों, सभी कर्मचारियों तथा दूसरे महानुभावों ने भोजन किया।

पण्डित हरबंस लाल जी को भुलाया जाना असम्भव है परन्तु जहां हमें उनके जाने का दुःख है वहां हमें यह भी प्रसन्नता है कि उनके तीनों सुपुत्र अपने पिता जी के पदचिन्हों पर चल रहे हैं और उनके स्वप्नों को साकार करने का संकल्प ले चुके हैं और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को अपना पूरा सहयोग दे रहे हैं।

—राजेन्द्र आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

22 व 23 दिसम्बर को लगभग सभी आर्य समाजों में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जा रहा है। कई आर्य समाजों के समाचार हमें प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए हैं। हम चाहते थे कि इस बार आर्य मर्यादा का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक प्रकाशित किया जाए परन्तु गत दिनों पण्डित हरबंस लाल जी शर्मा के देहावसान होने से हम इतने व्यस्त हो गए कि इसके लिए पूरी सामग्री नहीं जुटा सके। इसलिए जो लेख हमें स्वामी जी के जीवन के सम्बन्ध में प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए हैं उन्हें हम साधारण अंक मे प्रकाशित कर रहे हैं।

गत दो वर्ष से आर्य मर्यादा का खर्च बहुत बढ़ गया था छपाई व पोस्टेज का बहुत व्यय हो रहा था इसलिए इन पिछले दो वर्षों में हम आर्य मर्यादा का कोई विशेषांक प्रकाशित नहीं कर सके परन्तु अब सभा अधिकारियों ने निश्चय किया है कि आगामी वर्ष में आर्य मर्यादा के कई विशेषांक निकाले जाएंगे। आर्य मर्यादा को और उन्नत करने का और अधिक प्रयास किया जाएगा।

हमारी सभी आर्य समाजो के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह 22 व 23 दिसम्बर 2002 को प्रत्येक आर्य समाज मे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस अवश्य मनाए और इस बलिदान दिवस को मनाते हुए निश्चय करें कि उन्होंने जो शुद्धि का कार्य किया था और जिसके लिए उन्होंने अपना बलिदान दिया था, हम उस शुद्धि के कार्य को फिर आरम्भ रखेंगे। इस समय आर्य समाज में शुद्धि का कार्य नाम मात्र हो रहा है जबकि मुसलमान और इसाई निरन्तर हिन्दुओं को मुसलमान और इसाई बनाते जा रहे हैं।

एक बार महात्मा गांधी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को कहा था कि आपके शुद्धि के कार्य से कुछ मुसलमान भाई नाराज़ हो रहे हैं। मोहम्मद अली और शौकत अली एतराज कर रहे हैं कि स्वामी श्रद्धानन्द जी को कह कर इसे बन्द करवाएं। इसलिए आप शुद्धि का कार्य बन्द कर दे। स्वामी जी ने गान्धी जी को उत्तर में कहा था कि यदि मुसलमान हिन्दुओ को मुसलमान बनाना बन्द कर देंगे तो मैं भी शुद्धि का कार्य बन्द कर दूंगा परन्तु इसके लिए कोई तैयार न था गांधी जी ने कहा ऐसा होना मुश्किल है तो स्वामी जी ने कहा कि मैं भी शुद्धि का कार्य बन्द नहीं कर सकता। उन्होने इसके लिए अपना बलिदान दे दिया परन्तु अन्तिम समय तक शुद्धि का कार्य बन्द नहीं किया। कातिल अब्दुल रशीद भी उनके पास शुद्धि होने का बहाना करके ही गया था और समय पाकर 23 दिसम्बर 1926 को सायं उस कातिल ने स्वामी जी पर गोलियों की बौछार करके उन्हें शहीद कर दिया। आओ उनका बलिदान दिवस मनाते हुए हम स्वामी जी के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का संकल्प लें--

—स्वतन्त्र कुमार, महामन्त्री

धन्यवाद

मैं उन सब आर्य बन्धुओं, बहनों, गुरुकुलों के अधिकारियो, आर्य शिक्षा संस्थाओं के अधिकारियों, प्रिंसिपलों, प्राध्यापको व अध्यापको आर्य समाज के अधिकारियों व सदस्य महानुभावों का धन्यवाद करता हू जिन्होंने हमारे पूज्य पिता हरबंस लाल जी शर्मा के देहावसान पर उनके अन्त्येष्टि संस्कार तथा अन्तिम शोक दिवस में जालन्धर पधार कर हमारे सारे परिवार को इस दु:ख की घड़ी में धैर्य व इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान की है और हमारे पूज्य पिता जी श्री हरबंस लाल जी शर्मा को श्रद्धांजलि भेंट की है। सैंकड़ो शोक प्रस्ताव व श्रद्धाजलि पत्र हमें प्राप्त हुए हैं। मैं सभी को अलग से पत्र नहीं लिख पाऊंगा इसलिए मैं आर्य मर्यादा के द्वारा उन सभी बन्धुओं का धन्यवाद करता हू जिन्होने व्यक्तिगत तौर पर व अपनी संस्था की ओर से हमें शोक प्रस्ताव भेजे हैं।

पूज्य पिता श्री हरबंस लाल जी का आर्य समाज मे अपना एक विशेष स्थान था उन्होंने आर्य समाज की बहुत बड़ी सेवा की है शायद हम उन जितना कार्य तो न कर सकें परन्तु मैं आर्य जनता को विश्वास दिलाता हूं कि मैं और मेरा सारा परिवार उनके पदचिन्हो पर चलता हुआ, उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करता हुआ उनके गुणो और आदर्शों को जीवन में धारण करता हुआ आर्य समाज की सेवा करता रहेगा।

पिता जी चाहते थे कि मैं आर्य समाज का कार्य करू उनके आदेश का पालन करते हुए और आर्य जनता की भावनाओं का आदर करते हुए मैं यथा शक्ति कार्य करता रहा हूं और आगे भी यथा शक्ति कार्य करता रहूंगा ऐसा मैं आर्य जनता को विश्वास दिलाता हू। मुझसे जो भी बन पड़ेगा व जो भी मैं कर सकता हूं आर्य समाज की सेवा अवश्य करता रहूंगा।

—सुदर्शन कुमार शर्मा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी

ले० श्री ओंकार शास्त्री, आर्य समाज ओहरी चौक, बटाला

सारे भारत देश में आजादी की ज्वलन्त, ज्वाला धूं-धूं करके जल रही थी कितने ही निहत्थे लोगों पर अंग्रेजों द्वारा वार किये जा रहे थे। सूरज की लालिमा ललाट में ही छिपी जा रही थी। तभी परम तपस्वी योगी दयानन्द के परम भक्त उनके पद् चिन्हों पर चलने वाले शिष्य ने गुरु की बागडोर को अपने हाथों में ले लिया, ससार आतताईयों से पीड़ित है उन्होंने दु:खी जनों की पुकार को सुना और सुनकर उन्होंने मुशीराम से श्रद्धा के नन्द-श्रद्धानन्द बन कर फिर अपनी पूरी श्रद्धा व तन-मन धन से समाज व राष्ट्र की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर दिया। उनका जन्म तो पजाब के तलवन नामक स्थान पर हुआ था किन्तु लोगो की पुकार को सुनते हुए अपने गले मे याचना की झोली डाल ली और (उ प्र) हरिद्वार में जाकर गुरुकुल खोल कर जगल मे मंगल कर दिया। आज वही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के रूप में विश्व प्रख्यात हो गया। गुरुवर ऋषि दयानन्द ने श्रद्धा का ही मन्त्र दिया था, उनके लिए वही तारण मन्त्र बन गया। कहा मदिरा-मास खाने वाला व्यक्ति एक महान आत्मा के रूप मे प्रकट हुआ।

आर्य जाति के सर्वश्रेष्ठ सगठनकर्त्ता, शुद्धि आदोलन के सूत्राधार, दलितो तथा बिछुड़े हुओ को कण्ठ से लगाने वाले, हिन्दी भाषा को जीवन पर्यन्त अपनाने वाले, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के उन्नायक, वैदिक आदर्शों पर अपने जीवन के निर्माणकर्त्ता स्वामी श्रद्धानन्द थे। आज का युग तर्क प्रधान तो है किन्तु है पूर्णतया श्रद्धाविहीन। अत: आज के युग मे श्रद्धानन्द जी जैसे वीर बलिदानी की बहुत जरूरत है। चौडा सीना, धधकता ललाट, मस्तक पर तेज प्रकाश स्तम्भ के समान सदैव निर्भीकता से आगे बढने वाले महात्मा श्रद्धानन्द जी युवा पीढी के नायक, जन-जन के प्रेरणा स्रोत कायाकल्पधारी धर्मात्माओ के सामने झुकने वाले, अग्रेजो के सामने धडकने वाले मुनिवर यतिवर स्वामी श्रद्धानन्द जी का मैं आह्वान करता हू। इतिहास साक्षी है कि छोटी-छोटी बातों, घटनाओं और उपदेशों ने लोगों के जीवन बदल दिए। जीवन की दिशा ही बदल दी। जीव का कल्याण कर दिया। पतित जीवन से पवित्र जीवन बना दिया। पापात्मा से पुण्यात्मा हो गये। भोगी विलासी दुर्व्यसनी ऐसा काटा बदला कि जीवन तपस्वी, त्यागी, परोपकारी और धर्मात्मा बन गया। उनकी याद को आज हम भुला बैठे हैं। अब हमारा संकल्प तीव्र होना चाहिए कि उस महान पुण्यात्मा के पदचिन्हों पर चलकर अपने को पवित्र करें। आज भी कितने उत्सव, वेद कथाएं, जलसे जलूस और सम्मेलन-महासम्मेलन होते हैं और चले जाते हैं किन्तु हमारे जीवन में कहीं आत्म चिन्तन, आत्मसुधार, आत्म कल्याण आदि का भाव नहीं जागता है। विचारों की शून्यता से लोग जीवन और जगत को नरक बना रहे हैं।

इक हूक सी दिल में उठती है, इक दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठ कर रोते हैं जब सारा आलम सोता है॥

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज मातृभूमि की दासता, गौवश की दर्द भरी पुकार, मुस्लिम व ईसाइयो द्वारा भारतीय संस्कृति एवं धर्म पर निरन्तर प्रहार, नाना प्रकार की बुराइया, निर्जीव, निहत्थों पर गोरो के प्रकोप ने महात्मा के दिलो-दिमाग को झकझोर दिया था। उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग वैदिक धर्म की बलिवेदी पर खडे होकर तर्क की तलवार को सम्भाल लिया। बस देखना था आर्यत्व के खून में कितना दम होता है। उन्होने निराधार भ्रममूढ अन्धविश्वास विवेक हीन मान्यताओं और खोखली सामाजिक-बुराइयो का उन्मूलन करने हेतु सशक्त विद्रोह किया जो हिन्दू धर्म में घर कर गई थी। स्वामी जी ने उस परम अराजकता की दशा मे हिन्दू धर्म के उद्धार के लिए एक सीध मर्म का सन्धान किया जो उसके पश्चात् रामबाण सिद्ध हुआ। प्राय: महापुरुषों को अपनी प्रगतिशीलता और स्पष्टवादिता का मूल्य अपने प्राणों की आहुति देकर चुकाना पड़ा। अतएव मानवता की पीड़ा के महाचिकित्सक स्वामी श्रद्धानन्द जी को भी अपने युगान्तकारी कार्यों का मूल्य अपना बलिदान देकर चुकाना पडा। ब्रिटिश सरकार भी स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रभाव को देखकर चिन्तित हो उठी। इस सामाजिक एकता तथा सौहार्द को बिगाड़ने का अन्दर ही अन्दर षड्यन्त्र करने लगे। 30 मार्च 1919 को चांदनी चौक की ऐतिहासिक घटना के कारण स्वामी श्रद्धानन्द की ख्याति राष्ट्रीय स्तर पर हो गई। स्वामी जी को ज्ञात हुआ कि कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने लाल किले के मैदान में कुछ निहत्थे नागरिकों को अपनी गोली का निशाना बना दिया है। इस खबर से पूरी दिल्ली में हलचल मच गई। फिर क्या था एक विशाल जलूस निकाला गया जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी कर रहे थे। यह जलूस वर्तमान नगर निगम (तत्कालीन म्युनिसिपल कमेटी) चांदनी चौक होता हुआ लाल किले की ओर जाना था। चांदनी चौक पर कुछ गोरे सिपाही बन्दूकें तथा उन पर जहरीली संगीने लगाये जलूस के सामने खड़े हो गए। स्वामी जी ने कडकती आवाज में कहा-हिम्मत है तो चला दो गोली, संन्यासी का सीना खुला है। अन्त में गोरे सिपाहियों ने महान त्यागी वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द का रास्ता छोड दिया और जलूस आगे बढ़ गया। सत्य के निर्भीक योद्धा सद्धर्म (वैदिक धर्म) के प्रचारक स्वकीय जीवन के अनुरूप अमर हुतात्मा की मृत्यु का वरण करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द को सदैव अनेक रूपों में स्मरण किया जाता रहेगा। अन्त में किसी कवि के शब्दों में मैं कहूगा-

निर्भय होकर प्राण धर्म पर जिसने वारे।
वे थे श्रद्धानन्द यतिवर सन्त हमारे॥
जन का परखा धर्मवीर वह जन हितकारी।
उसके उर के अरमानों पर मैं बलिहारी॥

गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार जिसकी स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक सौ वर्ष पूर्व की थी, में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह 23 दिसम्बर से 27 दिसम्बर 2002 तक मनाया जा रहा है। 23 दिसम्बर को हाकी टूर्नामेंट राष्ट्रीय स्तर पर करवाया जा रहा है जिसका उद्घाटन हाकी फैडरेशन के प्रधान श्री के.पी.एस. गिल व आई जी. उत्तरांचल पुलिस श्री जे.डी. रतूड़ी और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी करेंगे। इसी दिन प्रातः अमृत वाटिका में यज्ञ होगा और कुलपति प्रो. स्वतन्त्र कुमार जी ध्वजारोहण करेंगे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न, महामन्त्री वेदव्रत जी शर्मा, वरिष्ट उपप्रधान श्री विमल वधावन, पंजाब सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, रजिस्ट्रार देवेन्द्र नाथ जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, उप प्रधान श्री सरदारी लाल आर्य, उपप्रधान चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, हरियाणा सभा के महामन्त्री आचार्य यशपाल मटिण्डु, उप कुलपति आचार्य वेद प्रकाश जी, रजिस्ट्रार डा. महावीर अग्रवाल तथा गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री महेन्द्र कुमार रल्हन जी नेतृत्व करेंगे। हाकी टूर्नामेंट के अतिरिक्त सायं काल 24 दिसम्बर को संस्कृत नाटिका, 25 दिसम्बर को कवि सम्मेलन व 26 दिसम्बर को भक्ति संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। 27 दिसम्बर 2002 को यह सभी कार्यक्रम सम्पन्न किए जाएगे जिसमे श्री जगमीत बराड़ एम.पी. दिल्ली, उत्तरांचल सरकार के खेल मन्त्री, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली तथा सार्वदेशिक सभा के अधिकारी उपस्थित रहेंगे।

—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

कैलेण्डर छप गए हैं शीघ्र मंगवाएं

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सन् 2003 के कैलेण्डर स्वामी दयानन्द जी के चित्र वाले छपवा लिए हैं जो सभा कार्यालय में आ चुके हैं। खर्चा अधिक होने पर भी कैलेण्डर का मूल्य गत वर्ष वाला ही रखा गया है। दो रुपए प्रति कैलेण्डर के हिसाब से सभा लेगी शेष सभी खर्च सभा वहन करेगी। जो महानुभाव कैलेण्डर लेना चाहें अपना व्यक्ति भेज कर सभा कार्यालय से दो रुपए प्रति कैलेण्डर के हिसाब से राशि भेज कर मंगवा लें।

—धर्मदेव आर्य, कार्यालयाध्यक्ष

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

[illegible]

महान् पुरुष अपने समय के कालचक्र कहे जा सकते हैं। अपने देश-प्रेम, समाज-सेवा व सर्वहितकारी कार्यों के द्वारा वह समय-धूलि पर अपने जो पद-चिन्ह छोड़ जाते हैं, उन्हें शताब्दियों पर्यन्त लोग देखकर उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करते रहते हैं। फाल्गुन बदी 15 सम्वत् 1913 विक्रमी सन् 1856 ई. में पंजाब के तलवन जिला जालन्धर के लाला नानक चन्द के यहां बालक 'बृहस्पति', जिसे मुन्शी राम और संन्यास लेने के बाद स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से जाना जाने लगा, भी ऐसे ही महापुरुषों की श्रेणी में आते हैं।

कुशाग्रबुद्धि बालक मुन्शी राम के पिता सरकारी कर्मचारी होने के कारण समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर बदलते रहे। इस कारण इनकी शिक्षा ठीक से न चल सकी किन्तु जो अध्यापक उनके भाईयों को पढ़ाता था, उसी की पढाई सम्बन्धी चर्चा को सुनते-सुनते पारंगत हो गए। ऐसे कुशाग्र बुद्धि मुन्शी राम ने वकालत पास कर अनेक अविस्मरणीय केसों में विजय प्राप्त की।

मुन्शी राम आरम्भ से ही धर्मप्रेमी थे किन्तु कुछ ढोगो व गन्दे आचरणों को देखकर धर्म से तब तक विमुख रहे, जब तक 'अनोखा जादूगर' कहे जाने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यान नहीं सुने। स्वामी दयानन्द के प्रति तो वह पूरी तरह समर्पित हो गए तथा उनकी पूर्ण दिनचर्या मे उनका साथ देने लगे। महर्षि दयानन्द से इनके सम्बन्धों को देख अंग्रेज हाकिम तिलमिलाए किन्तु मुन्शी राम ने चिन्ता नहीं की। बरेली में जो महर्षि दयानन्द के व्याख्यान में 'ओ ३ म्' चर्चा सुनी इससे इनके विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। धीरे-धीरे यह ब्रह्म-समाज सर्वहित-कारिणी सभा इत्यादि के भी सम्पर्क में आए किन्तु जो शान्ति इन्हें आर्य समाज की शरण में मिली, वह अन्यत्र कहीं भी न मिल सकी।

अब इन्होंने सत्यार्थ प्रकाश सहित आर्ष-कृत ग्रन्थों का अध्ययन कर दृढ़ सिद्धान्तों को अपनाकर अपने आपको आर्य समाज के कठोर सांचे में ढाल लिया। स्वयं आर्य समाज के सदस्य बने तथा हृदय में धैर्य को स्थापित किया।

आर्य सिद्धान्तों पर अटल :

मुंशी राम जी वैदिक सिद्धान्तों पर इतने पक्के हो गए कि पिता जी के विशेष आग्रह पर भी निर्जला एकादशी का व्रत नहीं रखा किन्तु पिता जी की सेवा व आर्थिक सहायता में सदैव तत्पर रहे। बाद में पिता जी भी वैदिक सिद्धान्तो को समझने लगे। उनकी मृत्यु पर उनका दाह-संस्कार भी वैदिक रीति से किया। मुन्शी राम जी की बढ़ती लोकप्रियता से पौराणिक पण्डितों में खलबली सी मच गई। उन्होंने शास्त्रार्थ के लिए ललकारा, गुण्डा-गर्दी का प्रयास किया किन्तु नित्य कठोर व्यायाम-प्राणायाम करने वाले मुन्शी राम के सामने आने की उनकी कभी हिम्मत न हुई। जाति-बहिष्कार का भय भी दिखाया किन्तु सत्य प्रकट होने पर कोई सामने न आया। लाला देवराज जी का उन्हें सदैव सहयोग मिला। उनका कथन था कि "कोई भी ढोंगी व्यक्ति कभी भी सुधारोन्मुख व्यक्ति का बाल भी बांका नहीं कर सकता।" इन के प्रभाव से ईसाइयों का प्रभाव भी फीका पड़ने लगा।

आटा-रद्दी-फण्ड :

सर्वहितकारी कार्यों में आर्थिक कठनाई आने लगी तो इन्होने एक आटा-रद्दी फण्ड स्थापित किया। उसके अन्तर्गत लोगों से अपील की गई कि प्रत्येक व्यक्ति अपने घर एक घड़े में एक मुट्ठी आटा प्रतिदिन डाले तथा रद्दी अखबार एकत्र करे। बाद में वह इसे दान करे। इससे उन्हें भारी सहयोग मिला। इस सहयोग से उन्होंने अछूतोद्धार व अन्य जन-हितकारी कार्य किये। अब अपना पूरा समय आर्य समाज की सेवा में लगाने लगे।

कांग्रेस में :

आप पायनियर व ट्रिब्यून के नियमित पाठक थे। इस कारण आप में राष्ट्रीय-भावनाओं को भी बल मिला। अतः आप भी कांग्रेस मार्ग पर चले। आपने प्रत्येक जिले में कांग्रेस-कमेटी स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की। जालन्धर व होशियारपुर से आपको भारी सहयोग मिला। इस अवसर पर सर सैय्यद खां का विरोध भी आपके कदम रोक न सका।

[illegible] शिक्षा :

समाज सुधार हेतु आपने सर्वप्रथम अपना घर सुधारना आवश्यक समझा। अतः आपने सर्वप्रथम अपनी पत्नी को शिक्षित किया। उसका घूंघट हटवाया, सैर करते समय उसे साथ ले जाने लगे। इस प्रकार स्त्री को समान अधिकार दिये। अपनी बेटियों को स्कूल भेजा। एक दिन ईसाई स्कूल से लौटी बेटी गा रही थी-

एक बार ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल,

ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।

यह सुनकर मुन्शी राम जी के हृदय में चोट लगी तथा तत्काल लाला देवराज जी के सहयोग से एक अपील की जिससे प्राप्त धन से विक्रमी 1947 को जालन्धर में कन्या विद्यालय की स्थापना की। यही कन्या महाविद्यालय आज स्त्री शिक्षा की अग्रणी संस्था है। इसी से आपका जन्म नाम बृहस्पति (गुरु) भी सार्थक हुआ।

सद्धर्भ प्रचारक पत्र :

अब आपने एक समाचार-पत्र की आवश्यकता अनुभव की। अतः साथियों के सहयोग से 'सद्धर्भ-प्रचारक' पत्र आरम्भ किया। उर्दू में प्रकाशित इस पत्र की भाषा हिन्दी सरीखी बना दी। आरम्भ में मुसलमानों ने इस भाषा का विरोध किया किन्तु धीरे धीरे अन्यों ने भी इसी भाषा का अनुसरण किया। उसमें संस्कृत के शब्द अधिक होते थे। इसे आर्य समाजी उर्दू कहा जाने लगा। बाद में यह पत्रिका हिन्दी में प्रकाशित होने लगी। इससे आर्य समाज के प्रचार को भारी गति मिली। इसी से ही राहू-केतू का खण्डन करने वाले पहलवान् चिरंजी लाल सरीखे सहयोगी मिले।

आचार विचार के दृढ़:

मुन्शी राम जी मन्दिरों के अनुचित प्रयोग के सदा विरोधी रहे। उन्होंने कभी सर्वप्रियता, नाम व पद् की इच्छा नहीं की। सभी ऐषणाओं से सदैव दूर रहे। यदि कार्य क्षेत्र में कभी सस्था के पदाधिकारी आए तो उनकी भी परवाह नहीं की। इसी कारण उनकी धर्मवीर पं. लेखराम तथा पं गुरुदत्त विद्यार्थी से अत्याधिक घनिष्ठता थी। स्वाध्याय व धर्म प्रचार के मानो अजस्र स्त्रोत थे। इसी कारण आप आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने तो पूरे पंजाब में शास्त्रार्थों की खूब धूम रही। आप नवयुवकों के लिये उत्साह व साहस का स्त्रोत थे। जब आपकी पत्नी का देहान्त हुआ तो आपने चारों बच्चों की देख-रेख का जिम्मा अपने भाई के कन्धों पर डाल दिया आप स्वयं वेद प्रचार व अन्य सार्वजनिक कार्यों में पूरा समय देने लगे।

वैदिक सभ्यता से विशेष अनुराग :

मुन्शी राम जी ने मांस भक्षण का खूब विरोध किया। सत्य सिद्धान्तो पर चलते समय कभी कष्टों की या विरोध की चिन्ता नहीं की। डी ए वी आन्दोलन में कमियों को देख, विशेष रुप से संस्कृत शिक्षण की कमी के कारण पं लेखराम, स्वामी पूर्णानन्द आदि के सहयोग से वैदिक शिक्षणालय खोलने का निर्णय लिया जिस हेतु चार वर्ष तक निरन्तर कार्य किया। आप इस में आश्रम-पद्धति, गुरुकुल हेतु 30 सहस्त्र का स्थापना कोष स्थापित किया तथा नगर से काफी दूर जंगली क्षेत्र में हरिद्वार के पास कांगड़ी स्थान पर गुरुकुल की स्थापना की, जो आज विश्वविद्यालय बन गया है। इस निमित्त सरकार से कोई सहायता न ली।

कठिन परीक्षाएं :

गुरुकुल में ब्रह्मचारियों को घुड़सवारी व धनुर्विद्या की शिक्षा देने के प्रावधान से सरकार की क्रूर दृष्टि व सन्देह बढ़ गया। लाला लाजपत राय के निर्वासन पर तथा सरकारी नौकरी के समय भी निर्वासन पर भी निर्भीक व्यवहार के कारण आप पर सरकारी सन्देह बढ़ता ही गया, तो भी आप ने कभी चिन्ता नहीं की।

पटियाला में आर्यो पर विद्रोह के आरोप में सभी आर्य समाजियो को गिरफ्तार किया जाने लगा। आपने आगे आकर उनके लिए मुकद्दमा लडा तथा उन्हें सम्मान पूर्वक बरी करवाया।

इस प्रकार पन्द्रह वर्ष पर्यन्त निरन्तर समाज सेवा के पश्चात् आपने सन्यास-दीक्षा ली। अब आपको स्वामी श्रद्धानन्द नाम से जाना जाने लगा। आपने अपनी सम्पूर्ण सम्पति दान की तथा घर

(शेष पृष्ठ 8 पर)

स्वामी श्रद्धानन्द को प्रणाम

□ ले० श्री [illegible]

मुशीराम का जीवन अनेक घात, प्रतिघातो सघर्षों, कठिनाईयों, दुर्गुणों, दोषों, विरोधों आदि के बीच से निकलकर श्रद्धेय श्रद्धानन्द की पदवी पर पहुचा। इस चमत्कारिक और अकल्पनीय परिवर्तन का श्रेय ऋषिवर देव दयानन्द को जाता है। जिनकी चुम्बकीय आत्मिक शक्ति तथा अगाध सत्य ज्ञान से पतित मुशीराम श्रद्धानन्द के रूप में कुन्दन बन गए। ऐसा तपस्वी, त्यागी बलिदानी और गुरु के प्रति दीवाना चरित्र इतिहास में दुर्लभ नजर आता है। उन्होंने देश-धर्म, सस्कृति शिक्षा समाज सुधार, राजनीति राष्ट्रीय एकता शुद्धि आदि के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किए हैं वे इतिहास में स्वर्णाक्षरो में अकित रहेंगे। उनका बलिदान आर्य जाति को सदा नवप्रेरणा जीवन्त चेतना और सगठित होकर चलने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

स्वामी श्रद्धानन्द का व्यक्तित्व एव कृतित्व अपने में महनीय है। उनकी तप त्याग तपस्या, कर्मठता सेवा श्रद्धा दृढता, राष्ट्रीय प्रेम प्रभु विश्वास आदि वन्दनीय हैं। उनका उत्तरार्द्ध का जीवन अनुकरणीय है। उनकी गुरु भक्ति स्मरणीय है। उनके कार्य प्रशसनीय हैं। उनका बलिदान प्रेरणीय है। उनका जीवन चरित्र पठनीय है। उनकी दुर्गुण व दुर्व्यसनो से मुक्ति अनुकरणीय और अर्चनीय है। उनकी देश धर्म, जाति और मानवता की सेवा श्लघनीय है। उनका सर्वस्व त्याग तथा समर्पण आदरणीय है। उनका गुरुकुल निर्माण उल्लेखनीय है। उनके जीवन्त स्मारक गुरुकुल कागडी का अतीत वन्दनीय है उनका वेदमन्त्र बोल कर जामा मस्जिद में हिन्दु मुस्लिम एकता का सन्देश देना विश्व इतिहास मे उल्लेखनीय है। उस वीर योद्धा का सगीनो के सामने सीना खोलकर खडे हो जाना नमनीय है। उनका सम्पूर्ण जीवन अतुलनीय है।

हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की जीवन लीला समाप्ति पर जो भावभीनी श्रद्धांजलियां और उद्गार देश विदेश के गणमान्य व्यक्तियों ने प्रकट किए थे। उससे उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व की झलक मिलती है। किसी ने उन्हें राष्ट्र निर्माता, किसी ने महान स्वतन्त्रता सेना, किसी ने पथ प्रदर्शक, किसी ने वीरता और बलिदान की मूर्ति, किसी ने सत्य, श्रद्धा और दृढता की प्रतिमा किसी ने गुरुकुल शिक्षा का उद्धारक, किसी ने निर्भय सेनापति, किसी ने असीम साहस की प्रतिमूर्ति, किसी ने हिन्दू जाति का चौकीदार, किसी ने सभी का हितैषी किसी ने हिन्दु मुस्लिम एकता का पक्षधर किसी ने भारत की सर्वश्रेष्ठ विभूति, किसी ने समाज राष्ट्र सुधारक, किसी ने सेवा-त्याग तथा बलिदान का आदर्शवादी, किसी ने प्रेरक गुरु, आदि विशेषताओं से सम्मानित एव स्मरण किया है।

स्वामी श्रद्धानन्द के आरम्भिक जीवन की ओर झाकते हैं तो एक ऐसे व्यक्ति का चित्र बनता है जिसमे नास्तिकता, विलासिता खान-पान व आचरण की अपवित्रता भोगी-विलासी, धर्म-कर्म, ईश्वर भक्ति, आदि से जिसका दूर का भी नाता नहीं था प्रभु की कृपा हुई। ऋषिवर का सान्निध्य मिला। ज्ञान चक्षु खुले। जीवन की दिशा ही बदल गई। जीवन का काया-कल्प हो गया। देवत्व की प्रवृत्ति जाग उठी। जीवन का रग-ढग बदल गया। सात्विक, धार्मिक तथा तप रत महापुरुषो के सत्सग एव निकटता में यह चमत्कारी प्रभाव सम्भव होता है। यह सब ऋषि का जादू था। जिसने मुशीराम के पतित जीवन को प्रेरक जीवन बना दिया। उनका सम्पूर्ण जीवन उत्थान पतन की ज्वलन्त कहानी है। ऐसा व्रती, सकल्पी चरित्र इतिहास में दुर्लभ नजर आता है। जो इतने पतन से इतना ऊचा उठा हो। जिसके उत्थान और निर्माण के इतिहास में लम्बी लकीर खींच दी हो। जिसने दुर्दान्त डाकूओं को भी साहस वीरता, तप, त्याग आदि से अपनी ओर खींच लिया हो। जो हिंसक जंगली [illegible] को भी अपने अनुशासन में बैठने का साहस रखता हो। ऐसा अद्भुत, प्रेरक स्वामी श्रद्धानन्द का चरित्र हमारी धरोहर है। ऐसे महान महापुरुष पर हमें गर्व है। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन चरित्र हमें पुकार-पुकार कर चेतना व प्रेरणा दे रहा है।

यदि आज हम स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा व सीख लेना चाहें तो बहुत कुछ सीख सकते हैं। हमारे जीवन तथा समाज में अनेक दुर्गुण, दुर्व्यसन, बुराईया आदि घर किए बैठी हैं। जीवन ऊपर की बजाय, नीचे की ओर जा रहा है। व्यर्थ की बातों, उलझनों समस्याओं, विवादों, स्वार्थ अहकार, पद लिप्सा आदि में जीवन तेजी से निकला जा रहा है। हमारे मनों में दोष, बुराईयों तथा गलत बातों को छोडने की दृढता, सकल्प एवं ललक नहीं है। इतना सुनने, पढने और देखने के बाद भी हमारा सुधार नहीं हो पा रहा है। सुधार व परिवर्तन आत्म ज्ञान से आता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने जो कहा वह कर दिखाया। हम कहते कुछ और हैं करते कुछ और हैं। कथनी तथा करनी में बड़ा अन्तर है। इसी कारण समस्याए तथा विवाद बढ रहे हैं। मुशीराम श्रद्धानन्द बन सकते हैं तो हम भी अपने दोषों और कमियों को दूर करके श्रेष्ठ, महान एव प्रेरक बन सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ बन सकता है। यह तब होगा, जब हमारे अन्दर अपने को सुधारने, सम्भालने और श्रेष्ठ बनाने की लगन, निष्ठा एव इच्छा शक्ति होगी। ऋषिवर दयानन्द के एक प्रवचन ने ही मुशीराम के जीवन को बदल दिया था? हमने कितने प्रवचन सुने, मगर स्थायी सुधार व बदलाव नहीं आया। महापुरुषों के जीवन चरित्र, पर्व, जयन्तिया, बलिदान दिवस आदि हमें समझाते हैं सोचने और कुछ करने की प्रेरणा देते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द महान थे। सवाल यह है हमने उनके जीवन से क्या सिखा और ग्रहण किया है? क्या हमारे जीवन में उनका कोई प्रेरक गुण आया है या नहीं? नहीं आया है, तो चिन्तन एवं मंथन करना चाहिए।

प्रतिवर्ष महापुरुषों के जन्मदिन जयन्तियां, स्मृति दिवस, बलिदान पर्व आदि आते हैं। हम वार्षिक जलसे, जुलूस तथा श्रद्धांजलि देकर अपने कर्तव्य की इति भी समझ लेते हैं। महापुरुष अपने कार्यों विचारों और आदर्शों से अमर रहते हैं। सच्ची श्रद्धांजलि वही होती है जिसमें महापुरुषों के अधूरे कार्यों को पूरा किया जाता है। उनके बताए मार्ग का अधिक से अधिक लोग अनुसरण करते हैं। उनकी कल्याणी विचारधारा को जन-जन तक पहुचाया जाता है।

आर्यों ! स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हमें पुकार रहा है। जो उन्होने हमें वसीयत और विरासत दी थी। उसे हम कितना आगे बढा रहे हैं? उनके जीवन स्मारक गुरुकुल कागडी को किस दिशा में ले जा रहे हैं? उस सर्वस्व त्यागी फ़कीर के गुरुकुल को स्वार्थ, लोभ और लाभ के चुगल से बचाना हम सब आर्यों का परम कर्तव्य है। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में आस्तिकता, धार्मिकता और आध्यात्मिकता थी। आज इन बातो का आर्यों के जीवन मे अभाव है। इसी कारण भूल मे भूल हो रही है। जब तक जीवन में सत्य, धर्म, सेवा, त्याग आदि के भाव नहीं होंगे, तब तक जीवन पवित्र व सेवाभावी न बन सकेगा। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

बलिदान दिवस के प्रेरक अवसर पर महामानव स्वामी श्रद्धानन्द की पावन स्मृति को अनेकश. स्मरण, नमन और श्रद्धाजलि। प्रभु हम सब आर्य जनों को बुद्धि, बल प्रेरणा और सगठन का भाव प्रदान करे। जिससे हम स्वामी श्रद्धानन्द के पदचिन्हों पर चलकर अपने जीवन को सफल बनावें।

अमर हुतात्मा, महान तपस्वी व त्यागी स्वामी श्रद्धानन्द जी

ले० कमल किशोर, 161 बैंक इन्कलेव जालन्धर

मरने को तो दुनिया में लाखों मरते हैं रज में एक के बाद एक मरते हैं।
पर वाले हैं पर वह जिन्दगी जावेद को धर्म पर जा निसार करते हैं।

कोई पत्थर दिल ही वह मनुष्य होगा जिस को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द को एक निर्दयी मुसलमान की क्रूरता से कत्ल करने पर हार्दिक दुख और आघात न हुआ हो। कातिल की गोली सिर्फ स्वामी जी की छाती पर नहीं लगी अपितु उस ने प्रत्येक आर्य तथा राष्ट्र प्रेमी के हृदयों को छलनी कर दिया। अमर शहीद सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या एक मुस्लिम के हाथों हुई जिस के पास उस की युक्तियों का कोई उत्तर उस के अतिरिक्त और कोई नहीं था कि बूढे सन्यासी के रोग से जीर्ण शरीर को गोलिया से छेद डाले। उस उकसाये हुये धर्मान्ध निर्दयी अब्दुल रशीद को क्या मालूम था कि जो कुछ वह करने जा रहा है उस के ठीक विपरीत भी होगा। वह नहीं जानता था कि वह इस अधर्म कृत्य द्वारा इस्लाम की चादर पर कभी न धुलने वाला कलंक का एक धब्बा लगा जायेगा। और जिस को वह ससार से मिटाने के लिये आया है उस को सदा के लिये अमर कर जायगा। निश्चय ही स्वामी जी को वह अमर पद प्राप्त हुआ जिस की खोज में दुनिया पहाड मंदिर मस्जिद गिरजा काशी मक्का काबा में भटकती फिरती है।

इस अमर शहीद का जीवन सच्चे क्षत्रियो की तरह अपनी वाणी का मान रखने में व्यतीत हुआ। जो कुछ वाणी से निकला वह पत्थर की लकीर हो गया और जो कहा कर के दिखा दिया। अन्त में जान भी सच्चे क्षत्रियो की तरह दी। एक के बाद दूसरी दूसरी के बाद तीसरी गोली सीने मे लगती है परन्तु इस शेर ए नर वीर सन्यासी की जुबान से उफ तक नहीं निकली।

स्वामी जी का जीवन अनुपम प्यार सिरतोड़ जद्दोजहद का क्षेत्र रहा है। आपने कठिन से कठिन मुश्किलो का जिस वीरता धैर्य साहस के साथ मुकाबला किया वह भारत के इतिहास में सदा अकित रहेगा।

गुरुकुल प्रणाली को न केवल स्थापित करना परन्तु स्थिर तौर पर सफल कर के दिखा देना ब्रह्मचर्य आश्रम का उद्धार करना एक ऐसा कार्य था कि स्वामी जी कोई और काम न भी करते तब भी उन के नाम को अमर करने के लिये काफी से बढ कर था। परन्तु आप ऐसे नेताओ में से न थे जो बहाव के साथ चलना जानते हों। आप ऐसे नेताओ मे से थे जो स्वय लहर पैदा करते थे और उसी के प्रवाह मे लोगो को बहा ले जाया करते थे।

आज कौन सा वो मर्दे जवान है जो स्वामी श्रद्धानन्द जी की तरह अपनी अच्छी भली चलती वकालत को एक धार्मिक भाव से प्रेरित हो अथवा अपने असली उद्देश्य की पूर्ति के लिये त्याग दे। जात पात के नारकीय कीड़े को समाप्त करने के लिये घोर विरोध के होते हुये अपनी कन्या का विवाह एक योग्य अरोड वशीय नौजवान से कर के एक रास्ता दिखा दिया। अपना सब कुछ यहा तक कि अपनी जालन्धर वाली कोठी भी गुरुकुल को भेंट कर दी।

किस की ताकत थी कि दिल्ली की जामा मस्जिद की वेदी पर खडे होकर वेद मन्त्रो त्व हि न पिता वसो त्व माता शतक्रतो वभूविथ अधाते सुम्नमी महे का उच्चारण कर सके। इतने भारी जनसमूह के सामने जामा मस्जिद के अदर खड़े होकर एक गैर मुस्लिम के लिये उपदेश करना एक पहला और शायद आखिरी उदाहरण था। सन् 1918 इस्वी के काले कानून के भयानक अत्याचारो के दिनों में स्वामी जी ने दिल्ली के चादनी चौक म जिस वीरता का परिचय दिया था स्वामी जी को समझने के लिये वह ही पर्याप्त है। भरी हुई सगीनो के सामने सीना तान कर जब बूढे स्वामी जी खडे हो गये और ऐसी सिह गर्जना की कि लो चलाओ गोली मुझ पर और मेरा सीना छलनी कर दो अग्रेजी सेना की सगीने झुक गई। अग्रेज को उस समय अपनी भूल का अहसास हुआ कि ऐसे सन्यासी पर गोलिया से शासन नहीं किया जा सकता। और यदि हम ने अपनी नीति मे परिवर्तन नहीं किया तो हमे भी चद दिनो मे ही सन्यासी बनकर भारत से निकलना पडेगा।

आर्य समाज आरम्भ से ही धर्म की वेदी पर और राष्ट्र की वेदी पर बडे बडे अनमोल रत्न बलिदान करता आया है। उन्हीं नर रत्नों ने हा अपने खून से आर्य समाज रूपी पौधे को सींचा। इसी के परिणाम स्वरूप आज वह जिन्दा है। आज यदि कोई शिथिलता है तो उसे दूर करन का साधन भी यही है कि हम अपने अमर शहीदो की स्मृति को ताजा रखे जिन्होने धम रूपी शमा के अमर परवानो की तरह अपने को कुर्बान कर दिया। तभी एक कवि ने कहा

शमा महिफल मे जलती रहेगी तो पतगे भी आते रहेगे
धर्म पर मरना है किस ने सीखा श्रद्धानन्द लेखराम ने सीखा।
उन का दुनिया से जाना न समझो वो सदा याद आते रहेंगे।

फिरोजपुर मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज लुधियाना रोड (जी टी रोड) फिरोजपुर छावनी मे 23 से 25 दिसम्बर तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जा रहा हे जिसमे श्री प निरजन देव जी इतिहास केसरी के उपदेश व श्री सतीश सुभाष भजन मण्डली भजन होगे। –मनोज आर्य मन्त्री

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन सिविल लाईन लुधियाना के तत्वावधान में 22-12-2002 रविवार को श्री पुरुषोत्तम लाल अरोड़ा म.नं -418 फेज-2 डुगरी अर्बन एस्टेट लुधियाना में सायं 3 से 5 बजे तक पारिवारिक सत्संग होगा। —नरेन्द्र भल्ला

आर्य समाज दानिशमन्दा का उत्सव

आर्य समाज लसूडी मोहल्ला बस्ती दानिशमन्दा जालन्धर का उत्सव 26 से 29 दिसम्बर 2002 तक मनाया जा रहा है। जिसमें उच्चकोटि के कई नेतागण पधार रहे हैं।

चण्डीगढ़ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज सै० 22 चण्डीगढ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 22 से 25 दिसम्बर तक मनाया जा रहा है। जिसमें कई उच्चकोटि के विद्वान व नेतागण पधार रहे हैं। —रामरत्न, महाजन

लुधियाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से 22 दिसम्बर 2002 को आर्य सी सै स्कूल पुरानी सब्जी मण्डी लुधियाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बडी श्रद्धा व उत्साह से मनाया जा रहा है। प्रात: 9.30 बजे 11 कुण्डीय यज्ञ से इसका शुभारम्भ होगा। यज्ञ के ब्रह्मा पं धर्मदेव जी कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब होंगे उनका सहयोग श्री प योगराज शास्त्री देगे।

11 बजे से दोपहर 1 बजे तक श्रद्धांजलि सम्मेलन होगा जिसमें स्वामी माधवानन्द जी, डा कुन्दन लाल जी (होशियारपुर) आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज जी तथा अन्य नेता व विद्वान भाग ले रहे हैं।

इस अवसर पर कु नम्रता सोनी, कु पूर्णिमा बत्रा और श्री सतपाल राजपाल भजन मण्डली के भजन होंगे। इसके लिए सभी भाई बहनें आमन्त्रित हैं। कृपया समय पधार कर स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करें।

विजय सरीन, मंत्री

राजेश शर्मा, प्रधान जिला आर्य सभा लुधियाना

आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर का उत्सव

आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर का उत्सव 16 से 22 दिसम्बर 2002 तक मनाया जा रहा है। 22 दिसम्बर 2002 रविवार को विशेष कार्यक्रम होगा। प्रात: 9 से 11 बजे तक यज्ञ, भजन, उपदेश और 11 से 2 बजे तक श्रद्धांजलि सम्मेलन श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में होगा। मुख्य अतिथि श्री सुदर्शन शर्मा सभा प्रधान, श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा रजिस्ट्रार, श्री मनोरजन कालिया व श्री हरभजन सिंह होंगे। ध्वजारोहण 1.30 बजे मास्टर चूनी लाल जी आर्य नगर करेगे। 2 बजे ऋषि लंगर होगा। —वेद आर्य, मंत्री

दयानन्द मठ जालन्धर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दयानन्द मठ ढन मोहल्ला जालन्धर मे 23-12-2002 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस प्रात: 7 30 से 10 बजे तक मनाया जा रहा है सभी आर्य बन्धु सम्मिलित हों।

—कुन्दन लाल अग्रवाल

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

(पृष्ठ 5 का शेष)

छोड़ देहली को केन्द्र बनाया। जो देहली देश की राजधानी होते हुए भी पिछड़ी हुई थी उसे समय की धारा के साथ जोड़ दिया।

कांग्रेस में सक्रिय सेवा :

आपने गांधी जी के अफ्रीका सत्याग्रह के अवसर पर वहां आर्थिक सहयोग हेतु धन भेजा। पंजाब में मार्शल ला लगा, चाहे रोलेट एक्ट, विरोधी आन्दोलन या दिल्ली में कोई काग्रेस का आन्दोलन हुआ, सर्वत्र आप नेता स्वरुप सबसे आगे रहे। देहली में जब अग्रेजी सेना ने निहत्थे लोगो पर गोली चलाने की तैयारी की तो आपने संगीनों के आगे अपना सीना तानकर कहा कि "निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती में सगीन घोंप दो।"

हिन्दु-मुस्लिम एकता :

आपने जामा मस्जिद के पवित्र मंच से वेद मन्त्रों द्वारा एकता का सन्देश दिया। मुसलमान आपके दीवाने व रक्षक बन गए। असहयोग आन्दोलन में खूब कार्य किया। जलियावाला काण्ड के बाद जब 40000 लोग जेलों में थे मार्शल ला लगा हुआ था, जब कांग्रेस का महाधिवेशन अमृतसर में करने का निर्णय हुआ, ऐसे भयानक अवसर पर आपने पजाब में आकर लोगों का साहस बढाया। स्वयं स्वागत समिति के प्रधान बने। यह पहला अवसर था जब किसी सन्यासी ने यह पद सम्भाला।

अछूतोद्धार :

अछूतोद्धार के आप मानो मसीहा थे। कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में एतदर्थ एक प्रस्ताव भी पेश किया। यह कार्य छोड़ने हेतु ईसाइयों द्वारा दिया प्रलोभन भी आडे न आया।

शुद्धि-हिन्दु संगठन :

आगरा के 5 लाख मलकाना राजपूत मुसलमान बने। यह आगरा, भरतपुर, मथुरा क्षेत्र के थे। आर्य समाज ने इन्हें शुद्ध करने का निर्णय लिया। शुद्धि के सभी अधिकार स्वामी जी को दिए गए। आपके प्रयास से हिन्दु पण्डितों में भी सहानुभूति की भावना पैदा हुई। अन्त में सब पर गंगा जल छिड़क कर उन्हें शुद्ध किया गया। आपने भारतीय हिन्दू सभा की स्थापना की। मालाबार में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध भी आप अड़ गये। मोपला विद्रोह में भी आपने महत्वपूर्ण कार्य किया।

आपने हिन्दू संगठन का नाद बजाया, हिन्दू रक्षार्थ महावीर दलो को आन्दोलन व अनेक सभाओ की स्थापना की। इन सभी कारणो से मुसलमान आपकी जान के प्यासे ही बन गये। आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने। पन्द्रह वर्ष तक गुरुकुल कांगड़ी के अधिष्ठाता रहे। मथुरा मे महर्षि स्वामी दयानन्द शताब्दी, हिन्दू शुद्धिसभा तथा दलितोद्धार सभा के आप कार्यशील प्रधान रहे।

अत्याधिक परिश्रम के परिणाम-स्वरूप जीवन के अन्तिम सात वर्ष अस्वस्थ रहते हुए भी लम्बी-लम्बी प्रचार यात्राएं करने से पुराने रोग भी पुनःजाग उठें। ऐसी ही अवस्था में जब आप (श्रद्धानन्द बाजार, देहली में) रोग शैय्या पर थे तो 23 दिसम्बर 1926 पौष संवत् 1983 विक्रमी को एक धर्मान्ध मुसलमान ने गोली मार आपको शहीद कर दिया।

इस प्रकार आजीवन आर्य समाज के लिए तन,मन,धन बलिदान करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना बलिदान देकर आर्यों में एक नया साहस व प्रेरणा दी, वेद प्रचार का मार्ग प्रशस्त किया।

स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना का उत्सव

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना का वार्षिकोत्सव 2,3,4 जनवरी 2003 को मनाया जा रहा है। जिसमें विश्वशान्ति महायज्ञ होगा। यज्ञ के ब्रह्मा पं सुरेन्द्र जी शास्त्री होंगे। इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी पातन्जल योगधाम हरिद्वार, ब्र माधुरी योगमती जी अमृतसर, माता सुमनायति जी, स्वामी शोभानन्द जी तथा दूसरे कई विद्वान पधार रहे हैं। मुख्यातिथि डॉ० सुमन जी शारदा, सुमन हास्पीटल लुधियाना होंगी। प्रात: 6 बजे प्रतिदिन योग शिविर लगेगा जिसके संयोजक श्री श्रवण कुमार जी बजाज व श्री आत्म प्रकाश जी होंगे।

यज्ञाग्नि प्रज्वलित श्री बलवीर जी खन्ना सुपुत्र श्री धर्मपाल जी खन्ना करेंगे। यज्ञ भजन उपदेश सायं 2.30 से 5 बजे तक प्रतिदिन हुआ करेंगे। भजन कु पूर्णिमा [illegible] के बच्चों के होंगे।

—जनकरानी, मन्त्री

श्री धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, [illegible] जालन्धर में मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन चोक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

रजि. नं. पी. बी. 0331/2002

ऋग्वेद | कृण्वन्तो | ओ३म् | विश्वमार्यम् | यजुर्वेद

साप्ताहिक
दूरभाष : 292926

आर्य मर्यादा

जालन्धर

सामवेद | अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–57 अंक : 35 सृष्टि संवत 1960853103, 29 दिसम्बर, 2002 दयानन्दाब्द 179 वार्षिक शुल्क 50 रुपये

उद्धार चाहती है महर्षि की ऐतिहासिक यज्ञवेदी

❑ ले० श्री देव नारायण भारद्वाज वरेण्यं एम.आई. जी. भूखंड-45 अवन्तिका कालोनी, रामकोट मार्ग, अलीगढ़, (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज के जीवन-चरित्र को जिसने भी पढ़ा होगा, उसने अलीगढ़ जनपद मे स्थित छलेसर ग्राम के नाम को अनेक पृष्ठों पर अवश्य अंकित पाया होगा। पर अधिकांश व्यक्तियों को यह पता नहीं कि ग्राम छलेसर ने ऋषि के जीवनकाल में आर्य समाज के बीजारोपण में न केवल अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की थी, महर्षि की जीवन रक्षा की थी, प्रत्युत आज भी प्रेरणाप्रद आर्य तीर्थ की धरोहर को अपने में समेटे हुए हैं। छलेसर निवासी रईस ठा० मुकुन्द सिंह जी के आग्रह पर सन् 1927 बि या सन् 1870 ई मे प्रथम बार जब स्वामी जी का यहां पदार्पण हुआ था, तभी स्वामी जी ने यहा पर वैदिक पाठशाला और यज्ञशाला की स्थापना ठा० मुकुन्द सिंह की सहायता से की थी। वंश परम्परागत से पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे ठा० मुकुन्द सिंह जी के वंशजों एवं ग्राम वासियों का सम्पूर्ण आर्यजगत को कृतज्ञ होना चाहिए, जो इन दोनों प्रतीकों को आज तक अवशिष्ट रखे चले आ रहे हैं। यज्ञशाला का प्राण उसका यज्ञकुण्ड होता है, जो ज्यों का त्यों स्वामी जी के समय का यहां पर विद्यमान है, और पास ही स्थित है वह बड़ा चबूतरा जहां पर स्वामी जी के ठहरने के लिए भवन व पाठशाला बनाई गई थी। अलीगढ़ से रामघाट राजमार्ग पर 15 कि.मी. की दूरी पर श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम पड़ता है, इसी के मुख्य द्वार के सामने वाली सड़क छलेसर के लिए मुड़ जाती है, जो यहां से लगभग छ: कि.मी. दूर है। छलेसर के महत्व को समझने के लिए थोड़ा इतिहास के झरोखे में झांकना पड़ेगा।

ठा. मुकुन्द सिंह जी का स्वामी जी से मिलन–उन दिनों स्वामी जी कर्णवास में ठहरे हुए थे। बड़े-बड़े विद्वान् पण्डित स्वामी जी के उपदेश से, या शास्त्रार्थ से, या उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मूर्तिपूजा छोड़कर यज्ञ-सन्ध्या, यज्ञोपवीत की दृढ़ दीक्षा लेते चले जा रहे थे। यहीं ठा. मुकुन्द सिंह जी ने स्वामी जी से भेंट की। दो घंटे के सत्संग में अपने संशयों का निवारण किया। लौट कर अपनी जमींदारी के क्षेत्र में वैदिक धर्म का डट कर प्रचार प्रारम्भ कर दिया और पाखण्डों के पाषाण ढहाने आरम्भ कर दिए। क्षेत्र में प्रबल विरोध के बाद भी वे अपने पथ से विचलित नहीं हुए। दूसरी बार वे स्वामी जी से सोरों में मिले, और तीसरी बार जब स्वामी जी काशी-शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त कर रामघाट में आए, तब सं. 1922 वि. में ठाकुर साहब ने वहीं स्वामी जी से भेंट की ओर छलेसर पधारने का आग्रह किया। वेद प्रचार व शास्त्रार्थ के लिए तो स्वामी जी एक परिवार की भांति सर्वत्र भ्रमण करते ही रहते थे, किन्तु किसी के स्वागत सम्मानार्थ आतिथ्य पर जाने की स्वीकृति वे तभी प्रदान करते थे, जब उनके समक्ष वैदिक पाठशाला खोलने की वह सज्जन हामी भरते थे। जैसा कि कासगंज की पाठशाला खोलते समय स्वामी जी ने नियम निर्धारित किये थे, उन्हीं के अनुरूप पाठशाला के साथ यज्ञशाला भी अनिवार्य होती थी। इसी आधार पर स्वामी जी ने फर्रूखाबाद, मिर्जापुर, कासगंज, छलेसर, वाराणसी और लखनऊ मे पाठशालायें खोली थी।

स्वामी जी का प्रथम बार छलेसर पदार्पण–ठाकुर मुकुन्द सिंह जी ने वैदिक पाठशाला के निमित्त स्वामी जी से साग्रह प्रार्थना की और स्वामी जी ने अगहनबदी चौथ या पंचमी सं. 1927 वि. तदनुसार शनिवार-रविवार 12 या 13 नवम्बर सन् 1870 ई. को छलेसर पहुंचने का कार्यक्रम निर्धारित कर दिया। ठाकुर साहब ने छलेसर से 2 मील पहले काली नदी पर पालकी तथा 250 नागरिकों सहित स्वामी जी का प्रात: 10 बजे स्वागत किया। स्वामी जी ने वहां पर स्नान किया और गंगारज को अपनी देह पर लगा लिया। अनुनय-विनय एवं आग्रह के बाद भी स्वामी जी पालकी पर नहीं बैठे। सभी के साथ पैदल ही चलकर दोपहर 12 बजे छलेसर आ गए। उनको पाठशाला के लिए निर्धारित स्थान पर ही ठहराया गया ओर 3-4 दिन में ही एक नया भवन निर्मित कर दिया गया। एक-दो दिन बाद जब पाठशाला की स्थापना की गई, तो सर्वप्रथम उत्तम यज्ञवेदी बनाकर हवन किया गया। आसपास के ब्राह्मणो क्षत्रियादिको को आमंत्रित कर भोज कराया गया, तथा ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर सम्मानित किया गया। सभी लोगों ने स्वीकार किया कि हम लोग बहुत भ्रान्ति मे थे जो कुछ स्वामी जी कहते हैं, वह सब सत्य है।

यही नहीं स्वामी जी के रहते छलेसर ने एक वैदिक राजधानी का रूप ले लिया था। पौराणिक पण्डितों के अतिरिक्त मौलवी व काजी भी स्वामी जी से शास्त्रार्थ के लिए यहां आये और मौन होकर चले गए। अतरौली के सत्यप्रिय विद्वान् काजी इम्दाद अली साहब ने स्वामी जी की शिक्षाओं पर अपनी सहमति प्रकट की। स्वामी जी लगभग 20 दिन छलेसर मे रहे और ऐसा कोई दिन नहीं गया कि जिन दिन 400-500 व्यक्ति यहा एकत्र न हुए हों। विद्वान् पण्डितों-मौलवियों के साथ-साथ साधारण ग्रामीण जन को भी यह अधिकार प्राप्त था, कि वह स्वामी जी से प्रश्न करके अपनी जिज्ञासा को शान्त करें। वैदिक पाठशाला का सारा व्यय ठा. मुकुन्द सिह जी ने अपने ऊपर ले लिया था, उसके शिक्षक आदि की व्यवस्था करके स्वामी जी अतरौली-विजौली होते हुए सोरों चले गए।

छलेसर में राजा जयकिशन दास से भेंट:–स्वामी जी ने पौष सुदी 1, सं. 1930 वि तदनुसार शनिवार 20 दिसम्बर 1873 ई को कासगंज से चलकर स्टेशन राजघाट पर कर्णवास के क्षत्रियो से भेंट की और उसी दिन छलेसर पहुंच कर पाठशाला में निवास किया। इस बार एक अद्भुत संयोग यह हुआ कि राजा जय किशन दास सी.एस आई. डिप्टी कलैक्टर अलीगढ़ स्वामी जी से भेंट हेतु यहां उपस्थित हुए और ठा मुकुन्द सिह जी के आतिथ्य में रहें तथा उन्होंने स्वामी जी से इसी पाठशाला में प्रात: 10 बजे से सायं 4 बजे तक सत्संग व शंका-समाधान किया। स्वामी जी से अलीगढ़ पधारने की स्वीकृति लेकर वे अलीगढ़ वापिस आ गए। स्वामी जी तीन-चार दिन तक नित्य पाठशाला मे व्याख्यान देते रहे और आस पास के सहस्रों व्यक्ति उनके विचारों को सुनने आते रहे। इस बार छलेसर पदार्पण पर कोई कोलाहल नहीं देखा गया, अपितु पण्डितो द्वारा सौम्य शंका-समाधान पूर्वक निश्चय करने का सम्मानजनक वातावरण प्रस्तुत किया गया। चूंकि इस बार छलेसर एक तेजस्वी धार्मिक राजधानी का रूप धारण कर चुकी थी, इसलिए स्वामी जी की विदाई भी राजसी ठाठ से की गई। स्वामी जी को एक सुसज्जित हाथी पर विराजमान किया गया और उनके साथ 20-25 अश्वारोही वीर क्षत्रिय पीछे-पीछे चले। सायंकाल 4 बजे अचलताल के समीप चाऊलाल की आम्रवाटिका मे पहुंचने पर राजा जयकिशन दास जी ने उनका स्वागत किया। (क्रमश:)

आर्यो उठो, अपने को पहचानो

□ ले० श्री इन्द्रपाल आर्य, प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर

आर्य मर्यादा के अंक में पं धर्मदेव जी का एक लेख "आर्य समाज फिर जनता का नेतृत्व करे" पढ़ने को मिला। महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना इसलिए की थी कि राष्ट्र व समाज को अच्छे (आर्य) लोगों का नेतृत्व मिल सके। आर्य समाज की स्थापना एक महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हुए थी। आर्य समाज एक आन्दोलन है, जिसका आधार वैदिक मान्यताओं पर आधारित है। आर्य समाज ने किस तरह सम्पूर्ण राष्ट्र को अपना नेतृत्व प्रदान किया उसे देखते हुए हर आर्य अपने आप मे गौरवान्वित होता है।

हैदराबाद का आन्दोलन, गौ रक्षा का आन्दोलन, चाहे हिन्दी आन्दोलन, आर्य समाज ने अपना कर्त्तव्य निभाते हुए सम्पूर्ण राष्ट्र का नेतृत्व दिया। छुआ-छूत, जात-पात, बाल विवाह के विरुद्ध, नारी उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी रहा। यह हमारा गौरवमयी इतिहास है।

स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज जी, पं लेखराम जैसे महान आर्य नेता दिए। शहीदे आजम भगत सिंह, लाला लाजपत राय जैसे अनेकों शहीद दिए। आज भी सारा राष्ट्र उनके आगे नतमस्तक हो रहा है। आर्य समाज, महर्षि दयानन्द ने सबसे पहले स्वाधीनता की बात कही, देश के अन्दर स्वाधीनता की लहर चलाई। देश के अन्दर कहीं भी स्वाधीनता की चिंगारी उठती थी तो अंग्रेज सरकार इस बात को मानते थे कि इसके पीछे आर्य समाज है। आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने किस तरह सामाजिक बुराईयों के खिलाफ अपनी आवाज उठाई, ओर इसके लिए अपने बलिदान दिए।

लेकिन दुर्भाग्य से हम यह समझ बैठे कि आर्य समाज का काम पूरा हो गया है। हम थोड़ा सा विश्राम की अवस्था में हो गए हैं। यहीं पर हमारी भूल हो गई, हमे (आर्यो को) आलस्य को छोड़ना होगा। अभी भी देश व समाज के अन्दर बडी कुरीतियां व समस्यायें मुंह भाए खड़ी हैं जिसका समाधान केवल व केवल आर्य समाज ही कर सकता है। देश के सामने जब भी कोई चुनौती आती थी तो आर्य समाज चट्टान की तरह खड़ा हो जाता था। आज भी आर्य समाज को आगे बढ़कर समाज व राष्ट्र का नेतृत्व करना होगा। वेद की इस ऋचा को चरित्रार्थ करना होगा।

ओ३म् वंयम राष्ट्रे जागत्याम् पुरोहितः हमें अपने राष्ट्र व आर्य समाज की जागरुकता के साथ पहरेदारी करनी होगी। यह तभी मम्भव है जब हर आर्य समाजी अपने आप में संकल्प करे कि वो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए आगे बढ़ कर काम करेगा। एक शेयर कई बार सुनने को मिलता है कि-

वडे शोक से सुन रहा था जमाना दास्तां हमारी
हम ही सो गए दास्ता कहते-कहते।

हमें अपनी दास्तां सुनानी होगी जमाना सुनने के लिए तैयार है। किसी कवि के शब्दों में-

आह्वान हो रहा है, अब आर्यो, आओ रण मे
कब तक पडे रहोगे तुम हार के आगन में।

आर्यो उठो, अपने आपको पहचानो, आपमें कितनी शक्ति व सामर्थ्य है। आपका कोई सानी नही है। सम्पूर्ण राष्ट्र आपको निहार रहा है।

स्त्री आर्य समाज फाजिल्का का चुनाव

स्त्री आर्य समाज फाजिल्का का चुनाव निम्न प्रकार से हुआ:- संरक्षक-सुश्री सरस्वती सहदेव। प्रधाना:-सुदेश नागपाल। उप प्रधाना:- निर्मला झांब, ईश्वर देवी, कृष्णा नागपाल। मन्त्राणी:-प्रेम डोडा। उपमन्त्राणी:-जय देवी विदानी। वित मन्त्राणी:-कृष्णा कुक्कड़। प्रचार मन्त्राणी:-विपिन कमला।

पं० हरबंस लाल जी शर्मा, एक अद्वितीय व्यक्तित्व

□ ले० [illegible]पाल आर्य एम.ए. मन्त्री आर्य समाज धूरी

हर एक व्यक्ति को,
कुछ अलग सा अनुभव
कराने वाला व्यक्तित्व,
आर्यत्व के आदर्शों के प्रचारक,
कार्य की श्रेष्ठता के प्रतीक,
"कर्म केवल श्रम ही नहीं है-तन्मय मनोयोग भी है"
-के उदघोषता,
मनोबल बढ़ाने वाले
कल्याणकारी, शान्तिमय, कार्य चलाने वाले,
आर्यत्व के कण-कण के प्रति
वेदना की आत्मीयता फैलाने वाले-
सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा और समर्पण
के भाव लाने वाले-
'पंडित हरबंस लाल जी शर्मा-'
का व्यक्तित्व ऐसा था कि...... वह-
एक अपरिचित को परिचित,
परिचित को मित्र,
मित्र को स्वयं सेवक,
और स्वयं सेवक को कार्यकर्त्ता
बना लेते थे-------
उनके जीवन का प्रत्येक क्षण
वैदिक लक्ष्य को समर्पित था"
और
उनका रोम रोम-
महर्षि को अर्पित था---"

व्यर्थ है! जी हां!

□ ले० श्री राम पथिक, कुटिया पंजौड़ (होशियारपुर)

चाहे कितना रूप भरा हो।
सुगन्ध नहीं तो फूल व्यर्थ है॥
चाहे जीवन भर मिलन हो।
स्नेह नहीं तो मिलन व्यर्थ है॥
जहां न पुष्पित हो डाली-डाली।
उसको कहना चमन 'बाग' व्यर्थ है॥
उमड़ पड़े न दर्द व दुख देख कर।
वह सुन्दर नेत्र भी व्यर्थ हैं॥
हृदय में नहीं सम्मान जिस के प्रति।
उसके पांव छूना तो व्यर्थ है॥
जिस में नहीं है विवेक, नम्रता जैसे गुण।
उसको कहना बुद्धिमान भी व्यर्थ है॥
साधु बनकर नहीं साधुता जिसमें,
उसे तो साधु-सन्त कहना ही व्यर्थ है॥

शिक्षा कला और संस्कृति के अलावा, क्रीड़ा जगत में डी.एम. कालेज आफ ऐजुकेशन मोगा, अग्रसर

डी.एम. कालेज ऑफ ऐजुकेशन, मोगा प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी रह रहा है। पिछले वर्ष से कालेज में अनेक प्रोग्राम करवाये गए जिनमें शिक्षा से सम्बन्धित, संस्कृति से जुड़े एवं कला के निपुण कार्यों में कालेज ने अदभुत् सक्रियता दिखाई और इस वर्ष क्रीड़ा क्षेत्र में भी अभी तक पंजाब विश्वविद्यालय स्टर के दो स्वर्ण पदक टेबल टेनिस और बेडमिन्टन में अर्जित किए। कालेज वास्तव में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधीन प्रधान श्री सुदर्शन कुमार जी शर्मा जी के नेतृत्व में दिन दौगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। सभा प्रधान और उनसे जुड़े सलाहकार सर्वश्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, श्री एस.के. स्यात और श्री स्वतन्त्र कुमार बधाई के पात्र हैं।

-सिद्धेश्वर शर्मा, प्रिंसीपल

सम्पादकीय....

वेद प्रचार की ओर ध्यान दें

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार है। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियम बनाते समय वेद को बहुत महत्त्व दिया। तीसरा नियम लिखते समय उन्होंने स्पष्ट किया कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है" इसलिए प्रत्येक आर्य समाजी को वेद के प्रचार व प्रसार के कार्य को अपना परम कर्म मानकर कार्य करना चाहिए।

पंजाब मे गत वर्षों में वेद प्रचार का कार्य तेज नहीं हो सका था उसके कई कारण थे परन्तु अब कोई कारण नहीं कि पंजाब में वेद प्रचार का कार्य न बढ़े। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों ने विशेष रूप से निश्चय किया है कि अब वेद प्रचार के कार्य को बढ़ाया जाएगा। सभा प्रधान श्री सुदर्शन जी शर्मा जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भी चांसलर हैं ने एक प्रैस विज्ञप्ति में गत दिनों कहा है कि जहां हमने यह निश्चय किया है कि हम अब गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार को पूर्व की भान्ति उन्नत करेंगे। जो-जो कमियां वहां आ गई हैं उन्हें शीघ्र अति शीघ्र दूर करेंगे। वहां के पठन-पाठन का स्तर ऊंचा करेंगे। वहां नए-नए कोर्स आरम्भ करेंगे। गुरुकुल की शिक्षा को इन्टरनैट से जोड़ेंगे। गुरुकुल में नीचे-ऊपर तक सभी प्रकार से सुधार करेगे। गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी का स्तर ऊंचा करेंगे। उसमें बनी औषधियों में और अधिक पारदर्शिता लाएंगे। उनकी गुणवत्ता पहले भी बहुत है परन्तु उसे और बढ़ाने का प्रयास करेंगे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय व गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी दोनों ही निरन्तर उन्नति की ओर बढ़ रहे हैं और अधिक बढ़ते रहेंगे। जहां हम स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित इस गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं वहां वेद प्रचार के कार्य को भी बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हम विशेष रूप से पंजाब में वेद प्रचार का कार्य भी तेज कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वह स्वयं भी समय निकालेंगे और अन्य सभा अधिकारियों को भी तैयार करेंगे जो आर्य समाजों में जाकर वहां की स्थिति को देखेंगे। जिस आर्य समाज का गत कई वर्ष से उत्सव नहीं हो रहा और जिस आर्य समाज की वेद प्रचार की गतिविधियां बन्द हो गई हैं वहां के अधिकारियों से मिल कर पुन: वेद प्रचार की गतिविधियां आरम्भ की जाएंगी। यदि किसी आर्य समाज में आर्थिक तंगी के कारण कोई कमी आई है तो उस आर्थिक तंगी को ठीक किया जाएगा। आर्य समाज की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया जाएगा। जिस आर्य समाज के भवन की मुरम्मत नहीं हो रही, उसकी मुरम्मत करवाई जाएगी। छोटी आर्य समाजों को बड़ी आर्य समाजों से अर्थात् नगरों की आर्य समाजों से जोड़ा जाएगा। प्रत्येक जिले की आर्य समाजों का एक संगठन बनाया जाएगा। जहां-जहां जिला आर्य सभाएं बनी हुई हैं वहां-वहां उनके अधिकारियों के जिम्मे यह कार्य लगाया जाएगा कि वह जिला की छोटी-बड़ी सभी आर्य समाजों में जाएं वहां जाकर देखें कि क्या वहां आर्य समाजों के उत्सव व साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से चल रहे हैं या नहीं। यदि कहीं नहीं चल रहे तो जिला सभा के अधकारियों का कर्त्तव्य होगा कि वह वहां इसके लिए व्यवस्था करें और सभा को अपनी रिपोर्ट दें कि वहां कैसे कार्य हो सकता है, सभा भी उन्हें आवश्यकतानुसार सहयोग देगी। सभा जो कर सकती है वह जरूर करेगी।

हमारा सौभाग्य है कि अब हमें नौजवान सभा प्रधान श्री सुदर्शन जी मिले हैं जिनमें कुछ करने की तड़प है और जो हर प्रकार से सक्षम हैं। इसके साथ ही वह सभा के सभी अधिकारियों व सदस्यों को साथ लेकर चल रहे हैं। अब यह आवश्यक है कि आर्य समाजों के अधिकारी भी सभा अधिकारियों को अपना पूरा-पूरा सहयोग दें।

वर्ष-2002 समाप्त हो रहा है और अब 2003 आरम्भ हो रहा है। इसलिए वर्ष 2003 का कार्यक्रम अभी से बना कर हमें अपना कार्य आरम्भ कर देना चाहिए। जनवरी 2003 से ही वेद प्रचार के कार्य मे तीव्रता आनी आरम्भ हो जानी चाहिए। प्रत्येक आर्य समाजी का कर्त्तव्य है कि वह आर्य समाज की उन्नति के लिए व प्रचार के लिए कार्य करे। यह एक व्यक्ति का कार्य नहीं है वेद प्रचार का कार्य सभी मिल कर ही कर सकते हैं। अब सुझाव देने का समय नहीं है। कुछ करके दिखाने का समय है। कई लोग बातें तो बहुत करते हैं परन्तु कार्य कुछ भी करने के लिए तैयार नहीं हैं हम दूसरों को कहने की बजाए स्वयं कुछ करके दिखाएं। अब सुझाव न दें, जो आप हमें सुझाव देना चाहते हैं उन्हे स्वय क्रियान्वित करें कुछ करके दिखाएं फिर सभा से बात करें।

मेरी सभी आर्य बन्धुओं व बहनों से प्रार्थना है कि वह अपने कर्त्तव्य को पहचाने जैसे हमारे आर्य समाज के पूर्व नेताओ व कार्यकर्त्ताओ ने बिना किसी स्वार्थ के, त्याग भाव से समाज की सेवा की है हम भी आज उन्हीं का अनुशरण करें। हम अधिकार तो चाहते हैं परन्तु कर्त्तव्य के पालन में पीछे हट जाते हैं। कार्य करने वालों को स्वयं ही अधिकार मिल जाते हैं उन्हें अधिकारों के पीछे दौड़ना नहीं पड़ता।

इसलिए मेरी सभी आर्य समाजों के अधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं से प्रार्थना है कि वह जनवरी 2003 से ही वेद प्रचार के कार्य के लिए सभा को अपना सहयोग देना आरम्भ करदें। प्रत्येक आर्य समाज के उत्सव की पहले से ही घोषणा हो जाए। जनवरी 2003 से दिसम्बर 2003 तक सभी महीनों के उत्सवों की तिथियां निश्चित हो जाएं। प्रत्येक आय समाज अपनी अन्तरंग सभा की बैठक बुला कर यह निश्चय कर ले कि उसने किस महीने में और किन तिथियों में अपना उत्सव करना है ओर यह निश्चय करने के पश्चात् सभा को उन तिथियों से अवगत करा दिया जाए। सभा आपके उत्सव का पूरा-पूरा प्रबन्ध करेगी। सभा के उपदेशकों का प्रबन्ध भी कर दिया जाएगा और सभा के अधिकारी भी आपके उत्सव में अवश्य पहुंचेंगे। क्योंकि अब सभी अधिकारी समय निकालने के लिए तैयार हैं परन्तु आर्य समाजों के अधिकारियों को एक योजना बना कर कार्य करना होगा सभा कार्यालय व सभा अधिकारियो से तालमेल बना कर चलना होगा ताकि सभी कार्य विधिवत रूप से सम्पन्न हों।

जिस आर्य समाज में साप्ताहिक सत्संग होता है वह आर्य समाज महीने में कम से कम एक बार पारिवारिक सत्संग या सार्वजनिक स्थान पर यज्ञ व सत्संग का विशेष आयोजन करे जिसमें आम जनता भाग ले सके। हमें पहले की तरह आर्य समाज का कार्य जन-जन तक पहुचाना पड़ेगा। आज देश को व समाज को आर्य समाज की बहुत बडी आवश्यकता है क्योंकि आर्य समाज एक जागरूक संस्था है। आज देश में व समाज के सामने फिर नई-नई समस्याएं व नई चुनातिया आ रहा हैं और उनका समाधान केवल आर्य समाज ही कर सकता है। इसलिए आर्य बन्धुओं को आगे आना चाहिए और कार्य करके दिखाना चाहिए ताकि पहले की तरह आर्य समाज का नाम जन-जन की जुबान पर हो।

इसलिए आर्य बन्धुओं को बिना किसी इन्तजार के अब अपना काय आरम्भ कर देना चाहिए, गिले-शिकवे बाद में होते रहेंगे। हो सकता है पहले सभा की ओर से भी कुछ कमी रही हो और वेद प्रचार की पूरी व्यवस्था न हो पाई हो परन्तु हम आपको विश्वास दिलाते हैं यदि आप हमें सहयोग देंगे और सभा से अपने उत्सव की तिथियों की स्वीकृति लेंगे तो हम हर सम्भव प्रयास करेंगे कि आपके उत्सव की पूरी-पूरी व्यवस्था हो। वर्ष 2003 आपके दरवाजे पर आ रहा है इस वर्ष मे कुछ करके दिखा दो। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का सारे भारत मे अपना एक विशेष स्थान रहा है और आज भी इसका अपना एक विशेष स्थान है। देश-विदेश में पंजाब सभा का नाम है हमने इसके नाम को और ऊंचा करना है।

—स्वतन्त्र कुमार, सभा महामन्त्री

"शहीदों का मान बढ़ाने व सच्चे भारतीय कहलाने हेतु, इतना तो करें"

निम्नलिखित अधिकारियों को आप भी पत्र डालें व डलवायें

☐ आचार्य आर्य नरेश वैदिकप्रवेषक, उद्गीथ साधना स्थली डोहर (राजगढ़) हिमाचल-173101

पहला पत्र, भारत के राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम, राष्ट्रपति भवन दिल्ली को:–

1 भारत की गुलामी के प्रतीक जार्ज पञ्चम की स्तुति में गाया गया "जन गण मन" हटाकर ब्राह्मण स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म तेजधारी और वन्देमातरम् गाया जाए। तथाकथित स्वतन्त्रता के 54 वर्ष पश्चात्।

2 अर्थव्यवस्था की आधारशिला गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जाए।

3. भारत के सर्वोच्चमान भवन राष्ट्रपति भवन के केन्द्रीय कक्ष से मलीम आदि को हटाकर स्वराज्य के प्रथम मन्त्रदाता व क्रान्तिकारियों के पेरणा स्रोत राष्ट्रपिता महर्षि दयानन्द का स्मारक स्थापित किया जाए।

4 गुलामी की निशानी 'इण्डिया गेट' के नाम को बदल कर उसे 'भारतद्वार' किया जाए।

5 राष्ट्रपति महोदय! आपको या किसी अन्य मन्त्री को यदि राष्ट्रभाषा हिन्दी बोलने का अभ्यास न हो तो गुलामी की निशानी अंग्रेजी न बोलकर अपने ग्राम की भारतीय भाषा को ही बोलें।

दूसरा पत्र, मुख्य न्यायाधीश वी.एन. किरपाल, उच्चतम न्यायालय, तिलक मार्ग दिल्ली को:–

1 सभी प्रकार का न्याय राजभाषा हिन्दी में हो।

2 अंग्रेजो की गुलामी की निशानी काले पेन, काले कोट व काले टोप को तुरन्त हटाया जाए।

3 भारतीय मुद्रा (नोटो) पर राष्ट्रपिता महर्षि दयानन्द, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस श्याम जी कृष्ण वर्मा, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक, चन्द्र शेखर आजाद व भगत सिंह जी के चित्रों को भी छापा जाए।

4 आतंकवादियों की संख्या को और अधिक बढ़ने से रोकने हेतु सम्पूर्ण देश मे मजहबी भेदभाव के बिना एक समान आचार संहिता (कानून) लागू किया जाए।

5 लुटेरे व हत्यारे बाबर तथा औरंगजेब आदि के नामों को भारत के नगरो ग्रामों, भवनों व मार्गो से कानूनन हटवाया जाए।

6 धर्मांतरण पर रोक लगाएं।

तीसरा पत्र, भूतलमंत्री भारत सरकार दिल्ली को:–

1 गुलामी की पहचान D.L, H.R. H.P. व U.P. को गाडियो की नम्बरप्लेट से हटाकर उसके स्थान पर दिल, हर, हि प्र व उ. प्र आदि हिन्दी अक्षरों को लिखने का विधान किया जाए।

2 धूम्रपान को प्रेरित करने वाले व जनता के स्वास्थ्य को बिगाडने वाले विज्ञापनो यथा-बीड़ी, हुक्का, पान मसाला, चुटकी, गुटका व पप्सी-कोक आदि आदि के विज्ञापनों को तुरन्त बसों से हटाया जाए।

3 गाड़ी के पजीकरण आदि का सब काम स्वतन्त्र राष्ट्रभाषा हिन्दी मे ही किया जाए।

4 प्राईवेट बसो की सीटो का नाप तथा बस की बाडी को पास करने से पूर्व प्रत्येक खिडकी के ऊपर महाराष्ट्र की बसों की तरह अन्दर वातावरण की शुद्धि हेतु रोशनदान अवश्य रखा जाए।

5 राष्ट्र के नागरिकों मे देशभक्ति व मानवता की भावना हेतु बसों व रेलो मे वैदिक सूक्तियां व देशभक्ति के गीतो को प्रसारित किया जाए।

चौथा पत्र, श्रीमती सुषमा स्वराज सूचना व प्रसारण मंत्री सफदरजंग लेन दिल्ली को –

1 संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध 'नमस्कार' को हटाकर 'नमस्ते' प्राचीन व शुद्ध एव पूर्ण अभिवादन वाक्य को रखा जाए। समाचार पढने वाले पुरुषों हेतु टाई के स्थान पर बंद गले का कुर्ता, जैकेट व कोट अनिवार्य किया जाए।

2 दूरदर्शन के विज्ञापनो मे बढ़ रही नग्नता को हटाया जाए। युवाओं का चरित्र हनन करने वाली छोटी सी लव स्टोरी जैसी फिल्मों को प्रतिबन्धित किया जाए।

3. अन्य प्रेमालाप फिल्मों के स्थान पर विद्यार्थियों व युवकों के चरित्र निर्माण हेतु अधिक फिल्में दिखाई जाएं।

4. दूरदर्शन को मात्र अभिनेता या नेताओं की ही बपौती न समझ कर इसमें भारतीय संस्कृति व मानवता के रक्षक महर्षि दयानन्द राष्ट्र के समाज सेवियों, श्रेष्ठ विद्यार्थियों, बलिदानी सैनिकों व 'वेद विज्ञान धर्म' नैतिकता तथा संस्कृत का प्रचार करने वाले लोगों को भी राष्ट्रीय प्रसारण में स्थान दिया जाए।

5. दूरदर्शन व आकाशवाणी से अज्ञान (अज्ञान) के स्थान पर 'अग्यान' न बोला जाए।

पांचवा पत्र, चुनाव आयुक्त भारत सरकार चुनाव आयोग कार्यालय दिल्ली को:–

1 योग्य नेता व निष्पक्ष चुनाव हेतु चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशी को अपने नाम के साथ जातिगत नाम लिखने व किसी भी प्रकार से प्रयोग करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाए। नियम का उल्लंघन करने वाले का चुनाव रद्द कर दिया जाए।

2 एक बार चुनाव जीतने वाले विधायक, सांसद या अन्य अधिकारी को जीवन भर का भत्ता (पैंशन) देकर देश को कंगाल न बनाया जाए।

3. देशद्रोह, डाका, कत्ल, चोरी, नशाखोरी, मिलावटखोरी व हेराफेरी तथा सीमा पर चोरी (स्मगलिंग) करते पकड़े गए अपराधी एव विदेशी मूल के व्यक्ति को चुनाव हेतु अयोग्य घोषित कर दिया जाए।

4 किसी भी राजनीतिक पार्टी को तिरंगे पर पंजा या घड़ी आदि बनाना प्रतिबन्धित कर दिया जाए। क्योंकि इससे राष्ट्रीय ध्वज का अपमान होता है। कारण यह है कि दूर से वह राष्ट्रीय ध्वज ही दिखाई देता है और उससे लोगों की भावना कुछ और ही बन जाती है।

5. या तो चुनाव लड़ने व वोट देने वाले मुसलमान कुरान की आतंक फैलाने वाली आयतों को छोड़ दें, अथवा उनके वोट देने व नेता बनने का अधिकार समाप्त कर दिया जाए।

छठा पत्र, मुरली मनोहर जोशी जी मानव संसाधन मंत्री दिल्ली को:–

1 उच्च शिक्षा के सभी ग्रन्थों को राजभाषा हिन्दी में अनुवाद करवा कर सच्चे स्वराज्य का उदाहरण उपस्थित करें। क्योंकि छोटे-छोटे देश जैसे कि कोरिया, जापान, जर्मन, फ्रांस व रूस आदि भी अपनी ही राजभाषा के माध्यम से विश्वस्तर के इन्जीनियर, सांईटिस्ट व खिलाडियों तथा गाड़ियों को बना रहे हैं।

2. दिल्ली व अन्य विश्वविद्यालय में पढ़ाये जाने वाले वेदभाष्य से गोमांस, भाग्यवाद व जादू-टोना आदि पाखण्डों व आतंकवाद हटाने हेतु महर्षि दयानन्द व अन्य वैदिक विद्वानों के प्रामाणिक वेदभाष्य को ही पढ़ाया जाए।

3. वर्तमान सरकार द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन सी.आर टी.) में किए गए सांस्कृतिक व ऐतिहासिक सुधारो हेतु हम पूर्ण समर्थन, प्रसन्नता एवं बधाई देते हैं।

4. सरकार द्वारा गौ आदि प्राणियों की रक्षा, पर्यावरण रक्षा, घरेलू उद्योग, निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की जानकारी व पिछड़े क्षेत्रों की उन्नति हेतु दी जाने वाली आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता का दूरदर्शन के माध्यम से समाचार प्रसारण से पूर्व या पश्चात् ब्यौरा दिया जाए।

5 शिक्षा के प्रति सच्चे आकर्षण एवं राजकीय-निजी पदाधिकारियो मे गुणवत्ता लाने हेतु आरक्षण की नीति बदली जाए। योग्यता के आधार पर प्रवेश व अंकों के आधार पर पद मिलने चाहिएं। इससे अनेक राजनीतिक पार्टियां वोट हेतु स्वार्थ सिद्ध कर रही हैं। अत: आर्थिक सहयोग जाति के अनुसार न दे कर गरीबी के आधार पर दिया जाए। शिक्षण संस्थाओं में अनुदान (डोनेशन) को प्रवेश हेतु समाप्त करवाया जाए।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

निम्नलिखित अधिकारों को.......
(पृष्ठ 4 का शेष)

(पृष्ठ 4 का शेष)

रक्षामंत्री भारत सरकार दिल्ली को:–

1 स्वास्थ्य के लिए हानिकारक व विद्यार्थियों तथा युवाओं को रोगी, चिड़चिड़ा व मानसिक रोगी बनाने वाले जिंक, आर्सेनिक, व कार्बोलिक एसिड आदि भयंकर तत्वों से युक्त पैप्सी, कोक, लिम्का, थम्सअप आदि को बंद किया जाए व उनके नीचे 'स्वास्थ्य के लिए हानिकारक' होने की चेतावनी मोटे शब्दों मे लिखवाई जाए।

2 स्वास्थ्य विनाशक रोगकारक व मतिभ्रामक बीड़ी, सिगरेट, शराब, गुटका तथा पान मसाला के नीचे लिखी जा रही 'स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' चेतावनी छोटे अक्षरों में न लिखकर जितने बड़े अक्षरों में उस नशे का नाम लिखा है उतने ही बड़े व मोटे अक्षरों में चेतावनी लिखने का नियम बनाया जाए।

3. भारतीय जनता द्वारा सेवन व प्रयोग किए जाने वाले सभी पदार्थों पर साफ-साफ मोटे शब्दों में उनमें पाये जाने वाले अण्डा या मांस मे प्राप्त टेलो, गिलेसरीन तथा जेलेटीन का संकेत लिखा जाए।

4 खेद का विषय है कि कितने ही शाकाहारी भारतीय लोग मांस या गोमास आदि से प्राप्त पदार्थों जैसे क्लोसअप, पैप्सोडैंट, कोलगेट, रिन, लक्स, पीजा व अन्य आईसक्रीम या टाफियों का प्रयोग करके अपने धर्म को खो रहे हैं। अत: ऐसा न लिखने वालो को शीघ्र दण्डित किया जाए।

5 डब्बल रोटियों या बिस्कुटों पर उनके निर्माण की तिथि को साफ-साफ व मोटे अक्षरों मे लिखा जाए।

शेष पत्र :–

मुलायम, लालू, सोनिया, हरकिशन सिंह सुरजीत आदि अन्यों को:–

1 वोट प्रेमी नेताओं वोट के प्रलोभन में देशद्रोहियों व आतंकवादियों का समर्थन करना छोड़ो।

2 यदि हिम्मत हो तो भारत सरकार द्वारा दंगे व आतंकवाद को बढावा देने वाली प्रतिबन्धित कुरान की आयतों को मुसलमानों से छुड़वाओ।

3 ऐसी आयतों से युक्त 'पुस्तक' कुरान के मानने वालों को भारतीय संविधान के विरुद्ध विचारधारा वाला अर्थात् देशद्रोही होने से उनके मत (वोट) देने का अधिकार समाप्त करवाओ।

4 वोट के लोभ में बिना कारण विचारे ऐसी विचारधारा वालों का समर्थन करना तथा गीत गाना छोड़ो, नहीं तो जैसे आज सम्पूर्ण कश्मीर में कोई भी मुसलमान व्यक्ति नेहरू या गांधी को नहीं चाहता ठीक वैसे ही तुम्हारी भी दुर्गति होगी।

5 मात्र मत (वोट) की चिन्ता छोड़ कर कुछ उन देश, धर्म व संस्कृति हेतु मरने वाले महर्षि दयानन्द, श्याम जी कृष्ण वर्मा, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, चन्द्र शेखर आजाद, वीरसावरकर व लाला लाजपत राय आदि महान् शहीदों का भी चिन्तन करो। कुर्सी प्राप्ति हेतु शहीदों के स्मारकों व राष्ट्रवादी भावनाओं को मत उजाड़ो।

6 थोडा विचारो कि यदि हजारों वीरों का बलिदान करवा कर अपने ही आजाद भारत मे भी अपनी ही 'सत्यमेव जयते' वाली सनातन वैदिक संस्कृति, संस्कृत, (हिन्दी) आर्य भाषा, गोरक्षा यज्ञ विज्ञान श्रीशंकर, श्रीराम श्री कृष्ण, राम प्रसाद बिस्मिल व महर्षि दयानन्द के कार्यो तथा इतिहास एवं ऐतिहासिक स्थानों की सुरक्षा न हुई तो फिर इस आजादी का क्या मूल्य हुआ।

नोट–1. सभी पत्र ठीक पते लिख कर दिल्ली भेजें–

2 विशेष जानकारी हेतु महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा आचार्य आर्य नरेश कृत धर्म के नाम पर, गोवा का खूनी इतिहास, वेद विज्ञान परिचय, गुप्त रहस्य, ईश्वर का ध्यान व मूर्ति विज्ञान आदि (तर्क तथा विज्ञान पर आधारित) पुस्तकें अवश्य पढ़ें। 'आतंकवाद का समाधान' पुस्तक केवल दो रुपए का टिकट भेज कर मुफ्त मंगवाएं।

क्रोध से बचो

क्रोध राक्षस है। राक्षस का अन्त विनाश है। क्रोध से बुद्धि द्वार बन्द हो जाते हैं। बुद्धि नाश से विनाश के गर्त में गिरना बहुत ही आसान काम है। बुद्धिनाशात् प्राणस्यति भगवान ने गीता मे कह कर माहर लगाई है कि क्रोध से बुद्धि का नाश हो जाता है और बुद्धि के नाश के बाद क्रोधी व्यक्ति नष्ट हो जाता है। क्रोध में भले बुरे का ज्ञान नहीं रहता, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का विवेक नहीं रहता। संयम, शालीनता, सोच विचार नष्ट हो जाते हैं। कितने ही साधन पास हो, कितने ही सहायक पास हों, कितनी ही शक्ति पास हो, एक क्रोध सबको स्वाहा कर देता है। कितने ही शुभ काम क्यों न करे क्रोधी का अंत विनाश ही है। सर्वशक्ति सम्पन्न राम विनयशीलता से भरपूर थे। रावण क्रोध का भण्डार था। दुर्योधन के पास अपरम्पार साधन और सहायक थे परन्तु एक क्रोध उसे ले डूबा। पाण्डवों के पास साधन और सहायक सख्या मे बहुत कम थे परन्तु वे विनयशील थे। हर बात को हर पक्ष से विचार करने का सामर्थ्य रखते थे। क्रोध उनके निकट भी नहीं था। विजय श्री ने उनका ही वरण किया। ''कृष्णस्तु भगवान स्वयम्'' कृष्ण तो साक्षात् भगवान ही थे। क्रोध उनके आस पास भी नहीं था। भगवान् जूठी पत्तलें उठाते रहे हैं। कल्पना करो और देखो आप कहा हैं।

यदि जीवन मे सफल होना चाहते हो तो होश में रहो जब भी क्रोध आए पूरे होश-हवाश के साथ उसका स्वागत करो फिर वह आपका कुछ भी बिगाड़ न सकेगा। क्रोध को रूपान्तरित करो सद्भावना में, उत्साह और उमग में। रूपान्तरित क्रोध आपको मानव से महामानव बना सकता है। एक ही साधे सब सधे, बहुत अधिक साज सामान की जरूरत नहीं है। एक क्रोध का ही रूप बदल डालिये, जीवन की सब सफलताएं आपको प्राप्त हो सकेंगी। कभी क्रोध में तमतमाया हुआ अपना चेहरा शीशे में देखें और कभी प्रसन्नचित्त स्मित हास्य युक्त चेहरा देखें। एक विद्रूप और दूसरा सौन्दर्य से परिपूर्ण है।

कभी शान्त चित्त से विचार करें आपने क्रोध में कितना गंवाया है। क्रोधी के कोई निकट नहीं लगता। कितने अपने पराए हो गए हैं। क्रोध आपको ले डूबेगा। क्रोध को मिटाना नहीं है केवल रूपान्तरण ही करना है। बिजली का स्पर्शमात्र विनाशकारी है। उसका रूपान्तरण अनन्त सुख सुविधाओं के द्वार खोल देता है। जरा विचार करने का ही जरूरत है।

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर की हीरक जयन्ती

आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार की स्थापना सन् 1928 में श्रद्धेय नारायण स्वामी जी द्वारा हुई थी। जिसके 75 वर्ष पूरे होने वाले हैं। यह आश्रम 15 16, 17, 18 अप्रैल 2003 को अपनी हीरक जयन्ती मना रहा है। यह भव्य समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाएगा। जिसमें देश-विदेश के प्रचारक विद्वान सम्मिलित होकर मार्ग दर्शन करेंगे। केप्टन देवरत्न जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा स्वागत अध्यक्ष होगे और डॉ० स्वतन्त्र कुमार जी कुलपति, गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय हरिद्वार जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री भी हैं, सरक्षक के रूप मे इस भव्य समारोह की सफलता के लिए दिन-रात प्रयास कर रहे हैं। इस समारोह मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन और कवि सम्मेलन इत्यादि की व्यवस्था की जा रही है। दिनाक 16-4-2003 को भव्य शोभा यात्रा वानप्रस्थ आश्रम से प्रारम्भ होकर वैदिक मोहन आश्रम तक होगी। वहां पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराने का समारोह होगा।

–यशवन्त मुनि, मन्त्री आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार

धूरी में विश्व शान्ति महायज्ञ

आर्य समाज धूरी में 'विश्व शान्ति महायज्ञ' 8-12-2002 दिन रविवार को पूर्णाहुति के साथ समाप्त हुआ। महायज्ञ शुरू करने से पहले पंडित हरबन्स लाल जी शर्मा को श्रद्धांजलि और भावभीनी विदायगी दी गई। महात्मा प्रेम प्रकाश जी ने दो पंक्तियां बोल कर पूरी उपस्थिति को आर्यत्त्व के रस से सरोबार कर दिया-"जीना उन्हीं का ठीक है, मरना उन्हीं का धन्य है, कुर्बान जो कौम के लिए, करते हैं जिन्दगानिया-"

तीन वर्ष से बहु-सम्मति से बन रहे युवा प्रधान श्री प्रहलाद कुमार आर्य के नेतृत्व मे इस 'विश्वशान्ति महायज्ञ' ने वेद प्रचार के नये आयाम स्थापित किये। सुर और आवाज के जादूगर 'भजनीक नरेन्द्र जी देहली' ने अपने वैदिक गीतो से श्रोताओं को लालायित कर दिया। प्रीतम जी मुसाफिर ने मधुर दयानन्द महिमा गान किया। गुरुकुल कुरुक्षेत्र से पधारे आचार्य देवव्रत जी, जिनको इस वर्ष "American Medal of Honour" के लिए चुना गया है, ने अपने सरल और सारमय भाषण से वातावरण में ताजा बहार के फूलो की सुगन्ध फैला कर लोगो के मनो को खुशगवार कर दिया। महात्मा प्रेम प्रकाश जी ने 'कुन्दन लाल लाजवन्ती ट्रस्ट' के माध्यम से बच्चो को 9000/- रुपए नकद वितरण किया। मा० सोम प्रकाश ने भी महाश्य लक्ष्मण दास जी की स्मृति को ताजा करते हुए बच्चो में कई ईनाम बांटे।

श्री प्रहलाद कुमार जी, श्री राधेश्याम जी मोहिल, प्रतिज्ञा पाल व श्री सुरेन्द्र जी, अशोक जी, शेषपाल जी, प्रिं० आर पी शर्मा जी, रमेश जी प्रो० अरजिन्दर पाल सिह श्री राजेन्द्र अत्री, एडवोकेट जसबीर रत्न जी, वासुदेव जी आदि ने अपनी 'पूर्ण और परिपूर्ण' उपस्थिति का योगदान देकर प्रोग्राम को सफल बनाया।

इस समारोह मे आर्य समाज संगरूर, मालेरकोटला, नाभा, समाना, पटियाला, बरनाला तथा और भी कई आर्य समाजों ने बढ-चढ़ कर भाग लिया। जिला सभा के प्रधान 'श्री सतीश सिंधवानी' व जिला सभा के मन्त्री श्री रामशरण जी ने अपना सक्रिय योगदान दिया।

धूरी आर्य समाज के मन्त्री रामपाल आर्य ने बच्चों से वैदिक प्रश्न पूछकर एक नई मनोरजक व प्रचार प्रणाली को प्रारम्भ किया, जिसमें बच्चो को दिल खोल कर ईनाम बांटे गए। कार्यक्रम और महायज्ञ की समाप्ति 'ऋषि लंगर' के साथ हुई। शुरू से लेकर अन्त तक प्रिंसिपल कृष्ण सिगला आर्य कालेज, प्रिं० बी एल कालिया सी सै स्कूल व प्रि कृष्णा आर्य माडल स्कूल का बेहतरीन योगदान व सहयोग रहा।

—रामपाल आर्य मन्त्री, आर्य समाज धूरी

अष्टम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव 23 से 25 फरवरी 2003 तक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न एक अत्यावश्यक बैठक मे निर्णय लिया गया कि अष्टम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव 2003 का आयोजन नवलखा महल, उदयपुर में दिनांक 23,24 व 25 फरवरी 2003 मे किया जाएगा। हाल ही में विदेशों में आर्य सामाजिक गतिविधियों का आकलन कर बैठक में उपस्थित, न्यास के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने बताया कि विदेशो से लोगो ने भारत आकर महर्षि से संबंधित पवित्र स्थानो के अवलोकन की हार्दिक अभिलाषा है। अत: इस समारोह को अन्तर्राष्ट्रीय रूप प्रदान किया जाएगा।

बैठक मे सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि उदयपुर मे पूर्व में आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव की शृंखला में प्रति वर्ष जिस प्रकार आर्य जगत् के मूर्धन्य तपस्वी संतों के अभिनन्दन की गौरवशाली परम्परा रही है उसी क्रम में आगामी महोत्सव में न्यास के पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती का उनके चरणों में आर्यजनों की ओर से 31 लाख रुपए की थैली भेंट कर अभिनन्दन किया जाएगा।

आर्य समाजों ने अपने-अपने कार्यक्रम निर्धारित किए

आर्य समाज वेद मन्दिर, भार्गव नगर, जालन्धर में 1-12-2002 (रविवार) को सायं 3 बजे आर्य समाजों की वेद प्रचार में आई शिथिलता पर विचार किया गया तथा आर्य समाजों को नई दिशा प्रदान करने पर विचार किया गया। सभी समाजों को अपने-अपने वार्षिकोत्सव करने तथा पारिवारिक सत्संग करने को भी कहा गया। उपस्थित आर्य समाजों के अधिकारियों ने अपने-अपने वार्षिकोत्सव निम्न प्रकार से निश्चित किए।

1. **जनवरी—बसन्त पंचमी**, आर्य समाज वेद मन्दिर, बस्ती बावाखेल।
2 **फरवरी-मार्च—महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व ऋषि बोधोत्सव**—आर्य समाज वेद मन्दिर, भार्गव नगर।
3 **मार्च—ऋषिबोधोत्सव**—आर्य समाज वेद मन्दिर, गढ़ा।
4 **अप्रैल—आर्य समाज स्थापना दिवस**—आर्य समाज वेद मन्दिर, गान्धी नगर-I।
5 **मई—आर्य समाज स्थापना दिवस**, आर्य समाज वेद मन्दिर, आर्य नगर।
6 **जून—आर्य समाज स्थापना दिवस**, आर्य सनाज वेद मन्दिर, गान्धी नगर-II।
7 **सितम्बर—आर्य समाज स्थापना दिवस**, आर्य समाज वेद मन्दिर, कबीर नगर।
8 **अक्तूबर—आर्य समाज स्थापना दिवस**, आर्य समाज वेद मन्दिर, सन्त नगर।
9 **नवम्बर—गंगाराम जन्मोत्सव**—आर्य समाज वेदमन्दिर, भार्गव नगर।
10 **नवम्बर—ऋषि निर्वाण दिवस**—आर्य समाज मन्दिर, गढ़ा।
11 **दिसम्बर—श्रद्धानन्द बलिदान दिवस**—आर्य समाज वेद मन्दिर, दानिशमन्दा यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष इसी प्रकार होंगे।

—कमल किशोर, प्रधान, आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर

गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ

गत दिनों 8-12-2002 को प्रात: 9.15 बजे श्री अनिल कुमार जी अग्रवाल सुपुत्र ला० कुलवन्त राय जी अग्रवाल प्रधान आर्य गर्ल्ज सी सै. स्कूल बठिण्डा के नये मकान में गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। हवन यज्ञ ब्रह्मचारी सूर्यदेव जी वैदिक मिशनरी जी के ब्रह्मत्व एवम् पं विजय कुमार जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज (आर्य समाज चौक) बठिण्डा तथा पं. राजेन्द्र कुमार जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। ब्रह्मचारी जी ने इस यज्ञ में गृह प्रवेश की विशेष आहूतियां डलवाकर उसका अर्थ बताते हुए कहा कि परिवार को स्वर्ग बनाने के लिए आपसी तालमेल एवं प्रेम भाव होना बहुत आवश्यक है।

इस परिवार के गृह प्रवेश की खुशी के अवसर पर हवन यज्ञ में अग्रवाल परिवार के सभी ईष्ट मित्र, आस-पड़ोस के लोगों के अलावा श्री प्रेम भाटिया जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवम् श्री तरसेम कुमार जी आर्य सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, प्रो. ओ.पी मंगला जी प्रधान एवं उपमंत्री श्री एम.पी. अरोड़ा जी आर्य समाज (आर्य समाज चौक) बठिण्डा, श्री पी.डी गोयल प्रधान जिला आर्य सभा बठिण्डा, श्री चमन लाल जी मेहता प्रबन्धक एवं श्रीमती शान्ति जिन्दल प्रधानाचार्या आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल भी सम्मिलित हुए। इन सभी ने अग्रवाल जी के पुत्र एवं पुत्र वधू को स्नेह पूर्ण आशीर्वाद दिया एवं परम [illegible] से प्रार्थना की कि यह नव गृह इस परिवार को सुख समृद्धि प्रदान क॰ एवं इसी भाँति हवन यज्ञ अपने गृह पर करवाते रहें।

ला० कुलवन्त राय जी अग्रवाल ने आर्य समाज बठिण्डा को 251 रुपए की राशि प्रदान की एवं सभी मानुभावों का गृह पर पधारने के लिए धन्यवाद किया। अन्त में सभी जनों से प्रार्थना की कि सभी जन ऋषि प्रसाद अवश्य ग्रहण करें। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—प्रेम भाटिया, महामन्त्री आर्य समाज (आर्य समाज चौक), बठिण्डा

लुधियाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में जिला लुधियाना की सभी आर्य समाजों की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 22-12-2002 को आर्य सी.सै. स्कूल लुधियाना में बड़े उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर 11 कुण्डीय विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। सभी यज्ञ कुण्डों पर चारों ...प यज्ञमान बैठे थे। यज्ञ की व्यवस्था श्री विजय सरीन मन्त्री जिला आर्य सभा, श्री श्रवण कुमार बत्रा, श्री रणवीर जी भाटिया कोषाध्यक्ष जिला आर्य सभा तथा प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा ने की। सभी हवन कुण्डों पर घी, सामग्री समिधा आदि की पूरी व्यवस्था की गई थी। यज्ञ के ब्रह्मा पण्डित धर्मदेव ने और श्री योगराज शास्त्री ने वेद मन्त्रों का पाठ करते हुए यज्ञ सम्पन्न करवाया। मुख्य यज्ञमान श्री रवि महाजन व उनकी धर्मपत्नि श्रीमती रमेश महाजन ने यज्ञ की अग्नि व ज्योति प्रज्जवलित करके यज्ञ का शुभारम्भ किया।

मच संचालन श्री विजय सरीन जी ने किया। इस अवसर पर श्री योगराज जी, कु नम्रता सोनी, कु पूर्णिमा व भजन मण्डली के भजन हुए। श्री कुन्दन लाल जी होशियारपुर जो विदेशों मे वेद प्रचार करके आए हैं ने समाज की वर्तमान स्थिति पर अपने विचार प्रकट करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। आदरणीय स्वामी माध्वानन्द जी हिसार ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के उद्‌गार महर्षि दयानन्द के प्रति उन्हीं के शब्दो मे कल्याण मार्ग का पथिक पुस्तक से सुना कर लोगो को भाव विभोर कर दिया। श्री धर्मदेव जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की निडरता व दृढता का परिचय देते हुए उनके बलिदान की चर्चा की। श्रीमती राजेश शर्मा प्रधान जिला आर्य सभा लुधियाना ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन सम्बन्धी दो भजन सुनाए। इस अवसर पर श्री प्राशानन्द जी आर्य, श्री नरेन्द्र जी भल्ला, श्री अयोध्या प्रसाद जी मल्होत्रा, श्री आत्म प्रकाश जी, प्रिं बलराज वर्मा, प्रिं सतीशा शर्मा, श्रीमती जनक रानी, श्रीमती नीलम थापर, श्री बलदेव राज, श्रीमती इन्दुमति गौतम नवांशहर तथा लुधियाना की सभी आर्य समाजो व स्त्री आर्य समाजों के अधिकारी वहा उपस्थित थे।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा का लुधियाना पहुचने पर लुधियाना की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने पुष्प मालाएं पहना कर भव्य सम्मान व स्वागत किया।

सभा प्रधान श्री सुदर्शन कुमार शर्मा ने सभी आर्य बन्धुओं व बहनों को स्वामी श्रद्धानन्द जी के बताए रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी। श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा ने कहा कि अधिक व्यस्त होने के कारण हम समय पर नहीं पहुंच सके इसका हमें खेद है।

श्री सुदर्शन जी शर्मा सभा प्रधान जी इस कार्यक्रम मे देरी से पहुचे क्योंकि इससे पूर्व वह प्रात: गुरुकुल करतारपुर की बैठक मे भाग लेने के लिए करतारपुर गए थे और उसके पश्चात् आर्य समाज आय नगर जालन्धर मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान उत्सव में भाग लेने गए थे इस कारण उन्हें पहुंचने में देरी हो गई। इस समय सभी सभा अधिकारी आर्य समाजो में जा रहे हैं और वेद प्रचार के कार्य के लिए सभी को प्रोत्साहित कर रहे हैं। सभा प्रधान श्री सुदर्शन कुमार शर्मा ने निश्चय किया ह कि एक बार वह पंजाब की मभी आर्य समाजों में जाएगे और उनका काय देखेंगे और जहां सुधार की आवश्यकता होगी, वहां सुधार करेंगे।

अन्त में जिला आर्य मभा लुधियाना की प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा न सभी आये हुए सभा अधिकारियो, विद्वानो, सभी आर्य समाजो के अधिकारियों, बहनों, भाईयो, आर्य मी सै स्कूल के प्रिंसिपल बलराज वमा तथा स्टाफ आर्य गर्ल्ज स्कूल की प्रिंसिपल व स्टाफ, आर्य कालेज क स्टाफ व दयानन्द पब्लिक स्कूल के स्टाफ का धन्यवाद किया।

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज पार्कलेन मिविल लाईन लुधियाना का पारिवारिक सत्सग 29-12-2002 को श्री अनिल सूद के निवास स्थान म न -99 प्रिंस होस्टल स्ट्रीट, ग्रीन पार्क लुधियाना में 3 से 5 बजे माय तक होगा। श्री प० बाल कृष्ण जी शास्त्री का उपदेश होगा।

श्री रामरत्न जी महाजन को पौत्र शोक

आर्य प्रतिनिधि पंजाब के अधिकारी व प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता आर्य समाज सैक्टर-22 चण्डीगढ़ के प्रधान श्री रामरत्न जी महाजन के पौत्र श्री विवेक का 27 वर्ष की आयु मे 16-12-2002 को बम्बई मे एक दुर्घटना में देहावसान हो गया। श्री रामरत्न जी महाजन के सुपुत्र श्री श्रेष्ठ कुमार जी सहायक सलाहकार योजना आयोग भारत सरकार नई दिल्ली में कार्यरत्त हैं इनका सुपुत्र विवेक जिसकी आयु अभी 27 वर्ष थी बम्बई में कार्य करता था जिसकी रेल दुर्घटना मे मृत्यु हो गई। इस दुर्घटना ने सारे परिवार को झकझोर कर रख दिया है। हम परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवगंतात्मा को सद्‌गति प्रदान करे और श्री रामरत्न जी महाजन व उनके परिवार को इस दारुण दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—धर्मदेव आर्य

अच्छे लोगों को बुरा समय क्यों देखना पड़ता है ?

❑ ले० रामगोपाल गुप्ता, (कोषाध्यक्ष) आर्य समाज सि. लाइन्स, मंगलनगर [illegible] उ.प्र.

प्रत्येक क्रिया का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। कारण पहले क्रिया बाद में, कर्म पहले कर्म फल बाद में। सफल वैद्य रोगी के रोग का कारण जानने के लिए प्रथम जांच करता है। भूमण्डल में जब कोई हलचल होती है, भूगर्भ शास्त्री हलचल के कारणो का अध्ययन करते हैं। हरिद्वार कुम्भ के मेले में ऋषिवर दयानन्द पाखण्ड खंडिनी पताका फहराते हुए हुंकार लगाते हैं, कि ऐ दुनिया के लोगो यदि सुख, शान्ति और समृद्धि चाहते है तो "वेदो की ओर लौटो" वेदोऽखिलो धर्म मूलम्=लोग आते हैं ऋषि का व्याख्यान सुनते हैं और चले जाते हैं। स्ववचनों का अपेक्षित प्रभाव लोगो के मानस पर न पड़ता देख दयानन्द बेचैन हैं। क्या कारण है ? योग साधना के बल से कारण का पता लगाते हैं। आओ विषय के मुख्य बिन्दु पर चर्चा करे।

हमारे ऋषियों ने युगो-युगो पूर्व स्वान्वेषण से बताया कि जिस प्रकार से यज्ञ कुण्ड मे डाली गई आहुति यज्ञकर्त्ता के साथ-साथ ससार के प्राणी मात्र का कल्याण करती है, ठीक उसी प्रकार काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहकार के वशीभूत होकर जो कार्य सम्पादित किये जाते हैं उन कर्मों के कुप्रभाव कर्त्ता के साथ-साथ संसार के समस्त जड चेतनादिकों को प्रभावित करते हैं। उक्त पंच विकारों के दुष्परिणाम समय-समय पर विश्व को भुगतने पडे और क्रमशः भुगतने पड रहे हैं। इतिहास साक्षी है इन्हीं पंच विकारों के चलते लकाधिपति रावण का सत्यानाश हुआ इन्हीं पाच विकारों ने ही महाभारत जैसे महाविनाशक विश्व युद्ध का सृजन किया, जिसके चलते आर्य जाति आज तक नहीं उबर पाई, इन्हीं विकारों के चलते क्षत-विक्षत जगत जननी भारत माता कराह रही है, सूर्योदय से पूर्व गौमाता के साथ साथ हजारों मूक पशुओं का वध कर दिया जाता है, मातृशक्ति की दुर्गति हो रही है, संसार के तमाम मत-मतान्तरों द्वारा आर्य सस्कृति, सभ्यता की हत्या की जा रही है।

उक्त शीर्षक को गम्भीरता से लेते हुए मैं स्पष्ट उल्लेख करना चाहता हूं कि इन्हीं पंच विकारों के चलते 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के स्थान पर 'इदम् मम्' का मन्त्र पाठ करते हुए वैदिक सिद्धान्तों की अर्थी निकाल रहे हैं। जो आर्य जगत के लिए चिन्तनीय विषय है। सारांश उन्हीं पच विकारो के चलते राक्षसी वृत्ति का खूनी पंजा सर्वत्र हावी है जिसके चलते मानवता कराह रही है, देव वृत्ति त्रस्त है। ध्यान रहे नदियां जब अपनी सीमाओं में बध कर बहती हैं सुखद वातावरण बनाती हुई फसलो को प्राण प्रदान करती हैं, लेकिन वही नदिया जब बाढ़ का रूप धारण करती हैं, तब चारों ओर दुख के पहाड टूट पडते हैं और फसलों की रक्षक-भक्षक बन जाती है।

आर्य विद्वानों की सेवा में निवेदन
निम्नलिखित दो शंकाओं के समाधान हेतु
एक विशेष चिन्तन

1. यज्ञ प्रकरण में जल सेन्चन की शंका :—महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने संस्कार विधि में ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व (इस मन्त्र से पूर्व) ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व (इससे पश्चिम) तथा तीसरे मन्त्र से उत्तर और चौथे मन्त्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कें ऐसा लिखा है। किन्तु पूर्व में दक्षिण से उत्तर या उत्तर से दक्षिण, पश्चिम में दक्षिण से उत्तर या उत्तर से दक्षिण की ओर एवं उत्तर में किस दिशा में किस दिशा की ओर जल छिड़कें कोई स्पष्टीकरण नहीं किया गया।

कुछ विद्वानों की पुस्तकों में तो स्पष्ट किया गया है कि पूर्व में दक्षिण से उत्तर की ओर, पश्चिम में दक्षिण से उत्तर की ओर और उत्तर में पश्चिम से पूर्व की ओर जल छिड़कें ऐसा लिखा है। किन्तु दायें-बायें अर्थात् सीधा-उल्टा विचार किया जाए तो प्रथम जल सेन्चन की प्रक्रिया पूर्व में दक्षिण से उत्तर की ओर उल्टा आरम्भ होती है। जबकि कोई भी धार्मिक यज्ञानुष्ठान मे वैज्ञानिक दृष्टि व साधारण रूप से भी देखा जाए तो प्रत्येक शुभ कार्य सुल्टा होना चाहिए न कि उल्टा हो। अतः आर्य जगत् के समस्त वैदिक विद्वानों की सेवा में नम्र निवेदन है कि आप अपनी-अपनी सम्मति अपने चिन्तन के अनुसार स्पष्ट करें कि जल सेन्चन की प्रक्रिया किधर से आरम्भ होनी चाहिए।

2. महर्षि दयानन्द जी को जहर दिये जाने सम्बन्धी शंका:— ऋषि जी को 17 बार जहर एवं अठारहवीं बार रसोइया जगन्नाथ द्वारा दूध में कांच का चूरा ज संखिया मिलाकर दिया गया था। यह बात तो पूर्णतया स्पष्ट है, जो ऋषि गाथा में भी वर्णित है। किन्तु विष देने की बात केवल एक बार ही स्पष्ट की गई है । एक बार पान मे विष देने का प्रमाण मिलता है कि अनूप शहर के किसी पंडित ने स्वामी जी को पान भेंट किया। स्वामी जी ने आदर सम्मान से दिया गया पान समझकर स्वीकार तो कर लिया, परन्तु जब स्वामी जी ने पान खाया तो पता चला कि इसमें जहर था। तत्काल नदी के किनारे जाकर उन्होंने यौगिक क्रियाओं के द्वारा पेट का समस्त भोजन वमन कर दिया।

किन्तु शेष सोलह बार जहर देने का कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलता। अतः कहां-कहां और कब-कब किसके द्वारा ऋषि जी को जहर दिया गया। कृपया विद्वान महानुभाव उक्त दोनों शंकाओं का सप्रमाण समाधान करने की कृपया करें ताकि आर्य समाज के सभी समाचार पत्रों में इसे प्रकाशित करवाया जा सके।

—आचार्य रामसुफल शास्त्री, "वैदिक प्रवक्ता"
शास्त्री भवन, लाल सड़क, हांसी 125033 (हरियाणा)

स्वर्गीय पण्डित हरबंस लाल जी शर्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कई संस्थाओं व महानुभावों ने शोक प्रस्ताव सभा कार्यालय में भेजे हैं उनमें से कुछ यहां प्रकाशित किये जा रहे हैं।

(गतांक से आगे)

181 श्री बलराज जी आर्य समाज मोगा।
182 श्रीमती कमलाशर्मा स्त्री आर्य समाज ऋषिकुंज, पक्का बाग, जालन्धर।
183 उत्तराचल आयुर्वैदिक कालेज, देहरादून।
184 श्री विशेष कुमार जी, 77/1 मोहाली (रोपड)।
185 आर्य समाज, नवाकोट, अमृतसर।
186 आर्य समाज सुल्तानपुर, लोधी।
187 आर्य समाज चौक, पटियाला।
188 ज्वालापुर इन्टर कालेज, हरिद्वार।
189 हरिराम इन्टर कालेज, हरिद्वार।
190 आय समाज फरीदकोट।
191 डॉ० अश्विनी कुमार, जी टी.रोड, तरनतारन।
192 डी ए.वी माडल सी सै. स्कूल, बुडलाढा।
193 स्वामी गगंगिरी जनता गर्ल्जकालेज, रायकोट।
194 आर्य समाज ओहरी चौक, बटाला।
195. आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरांचल, देहरादून।
196. आर्य समाज धामावाला, देहरादून।
197 आर्य समाज सिविल लाईन, लुधियाना।
198. श्री नरेन्द्र भल्ला आर्य समाज पार्कलेन, लुधियाना।
199. आर्य समाज बंगा (नवां शहर)।
200. श्री नरेन्द्र खन्ना ज्योति राम स्ट्रीट, पटियाला।
201. श्री रामदेव जी, फिरोजपुर शहर।
202. आर्य समाज सरस्वती, बिहार दिल्ली।
203. श्री यशवन्त राम आर्य समाज मोगा।
204 स्वामी सच्चिदानन्द, आर्य समाज मोगा।
[illegible] आर्य समाज मण्डी, (हि.प्र.)।
20[illegible]. आर्य समाज रानी का तालाब, फिरोजपुर।
207 राजेन्द्र दुर्गा आर्य समाज पश्चिमी पुरी, नई दिल्ली।
208 आर्य समाज [illegible]।
209. आर्य समाज बुढलाडा। (क्रमशः)

श्री धर्मदेव आर्य सभा कायालयाध्यक्ष, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा रचना प्रिंटिंग प्रैस, माडल हाउस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चोक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 292926

social, and eugenic reasons. It is now necessary to note that, no matter how much difference of opinion there may be regarding the economic, social or eugenic reasons for birth control, *there will always be a medical need for the prevention of conception* if the disease and illness rates are to be controlled in the spirit of modern scientific medicine And since poverty, various social problems, and the eugenic need for balanced reproduction are likely to exist also for a long time in the future, no nation can afford to discard knowledge of contraception on the ground that the world no longer needs it because population growth is levelling off The simple fact is that, so far as we can see into the future, there will always be a need for rational control of human fertility Such control of natural forces is one of the earmarks of higher civilizations

WHY ARE WE BEHIND EUROPE? It is now important to ask why the United States lags behind the rest of Western civilization (except for the recent dominance of the Nazis in Europe) in the intelligent use of birth control as a phase of national public policy Clearly and tersely stated these reasons are as follows. (1) Although the greatest physicians of all time since the great Greek physician of the second century, Soranos, have recognized that conception control was an important and constructive medical instrument, the medical profession, at least in the United States, has lagged behind the profession in Europe in recognizing its public duty However, much has been done in recent years to amend this situation. More recently, the American Medical Association has appointed a committee to study the subject and now recognizes birth control as an important instrument in preventive medicine and public health (2) The American people have not been as socially conscious as Europeans of the need of a sound national policy on this subject. We have found the same to be true with reference to certain other reforms, of which housing, unemployment insurance, old age pensions, and similar changes are merely a part (3) The peculiar legal situation in the United States, which, as we have shown, is quite out of accord with American opinion It represents, according to sociologists and

physicians, one of the most pronounced social lags in American culture The history of our birth control laws sheds a great deal of light on the difficult situation in which we find ourselves today.

THE BIRTH CONTROL LAWS

ORIGIN IN "COMSTOCKERY" The Comstock law, passed by Congress in 1873, provided for fine and imprisonment for certain *federal* offenses · importation, and use of the mails and common carriers for the interstate transportation of contraceptive devices, literature, etc To understand how a medical matter like contraception became mixed up with a general law on obscenity and pornography, it is necessary to understand the circumstances under which it became law Anthony Comstock was a vice crusader and purity advocate from New York City He became much alarmed about a wave of obscenity then allegedly sweeping the country He thought, as people so readily do, that "there ought to be a law against it" So he went to Congress Now, of course, all Congressmen, like the rest of us, are against obscenity. Accordingly, a bill was hastily and ill-advisedly drawn. Into it, either by Comstock or through his influence, was slipped the phrase "prevention of conception" *It is an undoubted historical fact that Congress did not know what it was voting on* The bill was passed at the end of a busy session under conditions of "you vote for my bill and I'll vote for your bill." *There is no proof at all that Congress intended to interfere with the education of the public in birth control* After 1873 several states passed laws more or less restricting the spread of birth control information But generally speaking, the laws do not interfere with medically controlled contraception

THE PRESENT-DAY LAWS The *practice* of birth control, as distinct from advice on it, is nowhere illegal in the United States (except in Connecticut where the law has, however, as we shall see later, been used for wider purposes) The statutes of nineteen states do not mention birth control The laws of nine states prohibit such things as the display, advertising and

circulation of literature about birth control devices, but not their sale The laws of eleven states forbid some sales but make definite exceptions for the medical profession. Thus in thirty-nine states the laws do not interfere with physicians in medical practice The statutes of four states indicate that they do not cover physicians Of the remaining five states Massachusetts alone condemns all contraception (except oral advice); and there the legal struggle is not finished In none of the other four states except Connecticut have the statutes been construed to prevent physicians from giving birth control advice Attorneys who have made a special study of the birth control laws are of the opinion that these state laws were not intended to restrict physicians in using their best medical judgment The American Medical Association has recently pointed out. "Information concerning contraception is admittedly available to persons in favorable economic circumstances There appears to be no law to prevent physicians who work in dispensaries from furnishing patients there with any information that may lawfully be furnished to patients in any other economic group In all cases, the legal justification is the medical need of the patient"

Recent Legal Victories Within the last few years, important legal victories have been won, notably in two cases In *United States vs One Package* the legal right of physicians to important contraceptive devices was established The Federal Circuit Court of Appeals in New York held that the law should not be interpreted to "prevent importation, sale or carriage by mail of things which might intelligently be employed by conscientious and competent physicians for the purposes of saving life or promoting the well-being of their patients"

The other important legal victory was in the case of *United States vs Himes,* in which the same Circuit Court of Appeals held that contraceptive literature could come into the United States provided the consignee was a person "qualified" to receive it. This freed *literature* as the early case had freed *devices* Prior to this decision it was the policy of the government to stop all contraceptive literature at the customs regard-

less of the identity of the consignee We now have an adjudication that such literature may freely enter, provided the consignee is a person qualified to receive it Scientists as well as physicians are qualified persons, according to the court. Probably nurses would be included Just how wide the term "qualified person" is will have to be defined in future court decisions if anyone should challenge the right to import contraceptive literature In the meantime, the qualifications of the consignee may be established by a mere affidavit, and the procedure is very simple.

Recent Legal Reverses In Massachusetts and Connecticut there have been two notable setbacks in the legal advances of the last decade There is considerable evidence that these cases were initiated by the hierarchy of a religious minority attempting to control the private conduct of the majority of citizens by force of law

On June 3, 1937, the Salem, Massachusetts, clinic was raided. The defendants were found guilty and fined $100 each Raids on other clinics promptly followed There was an appeal to the State Supreme Court. On May 28, 1938, it upheld the decisions of two lower courts. Accordingly, this decision of the Massachusetts Supreme Court is the first to declare that a physician in a particular state has no right under its laws to advise on birth control under any conditions whatsoever On October 10, 1938, the United States Supreme Court refused to review the case Clinics in the state have been closed.

On June 12, 1939, following a resolution of censure read by the Catholic Clergy Association of Waterbury, Connecticut, at all local Catholic pulpits on June 11, the Waterbury clinic was raided Contraceptive literature, materials, and clinical records were seized Later, three officials of the clinic (two doctors and a nurse) were arrested, but when Superior Court Judge Kenneth Wynne declared Connecticut's birth control law unconstitutional, they were released without bond pending appeal by the Assistant Attorney General of the State, a Catholic On March 20, 1940, the State Supreme Court upheld the Connecticut anti-birth control law, which prohibits the *use* of con-

traceptives without exception. However, the court nolle prossed (i e, dropped) the case against the two doctors and the nurse Otherwise this was a serious setback to the birth control movement, and led to the closing of all the clinics in the state, just as they had been previously closed in the state of Massachusetts.

The medical profession and laymen in both states are now organizing to protect their rights and the rights of the populace. The magazine *Life* scathingly satirized the position taken by the Connecticut Supreme Court

Social Effects of Confused Law. What are some of the effects of the confused status of birth control in the United States at present? They may be stated briefly as follows (1) Scientists are prevented from advancing knowledge as rapidly as would otherwise be possible. (2) Physicians and others who wish to instruct the public on up-to-date methods which meet scientific approval find their hands tied, while all sorts of commercialized trash freely circulates and a religious minority is free to broadcast the error that they have the best solution to this problem The legal situation will not catch up with contemporary opinion until such time as Congress and the state legislatures change our laws or until the laws are modified by court action. There are reasons to suppose that if carefully selected cases are brought before the courts, quicker and surer results will be attained.

BIRTH CONTROL METHODS

"Feminine Hygiene" Because of our unwise birth control laws, which are not only contrary to public opinion but also contrary to sound public policy, the business of selling "feminine hygiene" products has boomed all over the country. These products cannot legally be sold as preventive means, which they are in reality, but are sold and advertised freely under the fiction that they are for feminine hygiene, i e, for cleanliness Douche solutions, for example, are advertised in most of the women's magazines with large circulations Drug-

stores freely display all manner of products for feminine hygiene, no matter what the claims for these may be As a matter of fact, the Federal Trade Commission has lately found it necessary to issue orders of "cease and desist" and even to prosecute certain firms for excessive claims for their goods Some of the materials are even dangerous to health and life The strong coal-tar products sold for douche solutions, for example, have in some cases caused serious burns; and there are instances on medical record of deaths that have been caused by the use of such solutions when too concentrated. It is, therefore, imperative that women avoid the use of strong solutions, especially solutions made of coal-tar disinfectants, corrosive sublimate (bichloride of mercury), and iodine

Many "feminine hygiene" products are more or less effective in their action, but the consumer has insufficient guidance While these supplies are comparatively expensive and of doubtful effectiveness, a very reliable, recent scientific study shows that feminine hygiene practices, even when not preceded by medical instruction, were 61 percent effective They were less effective with first pregnancies than with later pregnancies Most methods become increasingly reliable with more experience.

COITUS INTERRUPTUS, or withdrawal of the male organ just before orgasm—sometimes it is known merely as "being careful"—is one of the most commonly used birth control methods It is undesirable because it is unnatural functioning, the act being incomplete Sometimes there is a leakage of semen prior to orgasm, and this fluid may contain sperms Unless the woman completes her satisfaction, either in the natural way or by the assistance of her husband, she may be left unsatisfied and in a nervous, tense state In extreme cases the prolonged use of withdrawal may cause an anxiety neurosis in the man, a form of mental breakdown

So much for the case against withdrawal. On the other hand, recent figures show that *coitus interruptus* is 78 percent effective—and this without medical instruction or guidance.

THE ORIGIN AND SANCTION OF THE RHYTHM OR STERILE PERIOD The rhythm or safe period dates from Soranos, second century A D But it was not until the work of Drs. Knaus (Prague) and Ogino (Japan) that there was reasonable scientific confirmation of a safe period for some women in relation to their time of ovulation. For centuries there have been many conflicting "safe" periods But the work of these and other physicians helped to clear up the matter The Catholic Church, pressed by its adherents for guidance on birth control, seized upon the sterile period as a way out It might satisfy the clamor for relief, but not give the best scientific protection The Catholic Church declared the rhythm to be a "natural" method and therefore in accordance with its dogma In 1931, in his encyclical on "Christian Marriage," Pope Pius XI sanctioned the use of such a "natural" method Immediately commercial publishers saw the possibilities A veritable avalanche of books describing the technique followed They sold by the hundreds of thousands, sometimes accompanied by calendars and slide rules, and at least one rhythm clinic has been established by a well known gynecologist

HOW IT WORKS The idea of the rhythm or sterile period of birth control, sometimes miscalled the "safe-period" method, is to restrict sexual union to certain days in the month when the woman is *supposed* to be sterile A record of menstruation must be kept from month to month for eight months or one year and then the supposed sterile period must be calculated according to the woman's individual cycle From the second century to the nineteenth century the middle of the cycle was thought to be the sterile period. Now we are told that is the fertile period So it seems to be in the sense that *most* women become pregnant in the middle of the cycle, at a point midway between the onset of two bleedings If we knew exactly when a woman ovulated, we could state with reasonable definiteness the five or six days of the month during which she is fertile The other days would be infertile A woman with a regular 28 day cycle is apt to conceive on any day between the 9th and 20th day, counting from the first day of bleeding, and is un-

likely to conceive on days 1-8 to 21-28. Some physicians find that the ten days just preceding the onset of menstruation are most certainly infertile

The most learned physicians in contraceptive medicine, the outstanding authorities on contraception, believe that the "safe" period as a birth control measure is insufficiently tested as yet, and warn against relying upon it. It is often difficult to determine just when a woman ovulates. Moreover, the most regular aspect of menstruation is its irregularity The method sometimes causes marital disharmony by restricting the rights of the husband to coitus in marriage Reliance on the "safe" period chains the sexual impulse to a calendar If a man will not voluntarily restrain himself to the infertile period of the cycle, what is an unprotected woman to do? Suppose she has a drunken husband who will not respect her cycle? Of what help is the method to women of low intelligence who would find it extremely difficult to keep the detailed record that is necessary and who probably do not have sufficient control over their emotions to employ if they could keep such a record *Any good contraceptive method will not only be reliable, but it will be capable of use during any phase of the menstrual cycle, or any time that coitus is reasonably desired* The sterile-period method is too unsafe, too little tested, to place much confidence in it Far from being the "O.K" method (after Ogino and Knaus) it should be called the "K O" method That is to say, it is liable to knock out sooner or later any woman who has a grave medical reason for preventing pregnancy: tuberculosis, heart disease, a serious disease of the kidneys, or any other severe medical condition that is likely to cause her death if she becomes pregnant.

The only possible advantages of the rhythm method are its cheapness, its lack of artificiality, and the fact that it may be used with a clear conscience by strict Catholics But its advantages are greatly outweighed by its chief disadvantages, its unreliability

USING BIRTH CONTROL

SOME GENERAL PRINCIPLES. The following section is not concerned with a description of birth control methods It treats of the general principles which a married couple must bear in mind if their contraceptive efforts are to be successful

Who should take the precautions? In the technique generally advised by contraceptive clinics responsibility almost invariably rests upon the woman It is argued that she is most likely to suffer if there is a failure in the method Owing to our repressive legislation on birth control, and owing to the inaccessibility of many clinics, responsibility in most cases has come to rest upon the man This is not so unfortunate as one might at first suppose owing to the fact that male devices are 86 percent effective even without medical instruction With proper guidance they are just as effective as the clinic method. In fact, one recent study shows them to be slightly superior, but the difference is not significant Despite the frequency of defects in devices used by men, high effectiveness is the general rule.

It is important to realize at the outset that there is no one method best for all people under all circumstances No simple set of rules without qualifications can be laid down on that point When a doctor is advising a woman he must take into consideration anatomical differences, social conditions, economic circumstances, and personality make-up Even after all the medical evidence has been considered by the doctor, there is often room for personal preference

It is well to remember that a *combination* of methods is more reliable than any *single* method, whether natural, chemical, or mechanical Although there are some methods which do not require an individual fitting by a physician, medically-guided birth control is, generally speaking, preferable to self-guided birth control This is a point that is naturally stressed by the doctors However, a recent scientific study financed by the Milbank Memorial Fund and reported by Drs Regine K. Stix, M D , and F W. Notestein, Ph D , and using methods of measurement more accurate and refined than most of the previous reports by doctors, shows that so-called "folk" contra-

ceptive practices, adopted without any previous medical instruction whatever, are far more reliable than heretofore supposed. By "folk" practices I mean the methods commonly used by married couples in marriage before women attend a birth control clinic The effectiveness ratios before clinic attendance are as follows: *coitus interruptus,* 79 percent effective, male devices, 87 percent effective, feminine hygiene, 61 percent, all methods, 80 percent. After medical advice at one of the very best clinics the effectiveness for all methods as a group increased 10 percent to 90. Is it any wonder the birth rate has been declining?

While effectiveness increased with medical guidance, the amazing fact of the Stix-Notestein report is how well married couples did without specific medical instruction White-collar workers used "folk" practices more effectively than manual laborers Catholics practised contraception unaided with less reliability than Protestants and Jews Also Catholics take up contraception later in married life, and rely upon less effective methods Consequently they have more failures and pregnancies. The conflict with religious teachings causes a differential fertility by religious groups This may have far-reaching social effects But this is not the place to explore them

GETTING ADVICE. An increasing number of physicians are now prepared to give contraceptive advice The Birth Control Federation of America keeps an accredited list of physicians If you are unable to find a doctor in your neighborhood willing and qualified to advise when the wife needs the information for the protection of her life or health, write the Federation at 501 Madison Avenue, New York City In North Carolina and South Carolina the state Public Health Service is undertaking a program of rural clinical service county by county This is a great step forward In North Carolina the program is backed by every county medical society If you are seeking a clinic, it is much more advisable to go to one well established under proper medical direction than to seek out a commercial clinic

A wife will certainly receive a friendly and sympathetic welcome at any of the approved birth control clinics But to

receive contraceptive advice she must have reasons approved by the doctor A special worker will take a brief history and the woman will then be introduced to a physician who will make a pelvic examination privately in order to determine what contraceptive is best for her individual needs

The cost of the service at the clinics is very moderate, and adjusted to the economic income of the patient's family If supplies are purchased outside privately in a drugstore, they are much more expensive. At the clinic, fees range from nothing to $5, the average being in the neighborhood of $1.25 or $1 50 Large numbers of patients are given this service gratis, especially if the husbands are unemployed or if the family is poor. The fees for private service range from $7 to $15, depending upon income Patients well able to afford the services of a private physician who is expert in this work should do so rather than rely upon a charitable clinic which is often overburdened, and which often takes patients only for medical indications.

Most contraceptive experts agree that the method chiefly relied upon by the clinics is, when medically guided, the most reliable, harmless, and effective method now known However, a great many people find clinics inaccessible As a consequence, male devices are much more frequently used in the United States today than methods employed by the woman, and they are in the main approximately as reliable Moreover, the method can be just as cheap as the clinical method

With all the methods, no matter how good, there must be cooperation on the part of the individuals concerned If, through carelessness or a "take-a-chance" spirit, a method is not used, the resulting failure can hardly be blamed on the method Where the life or health of the mother and the economic well-being of the family are at stake, the motives for birth control are apt to be strong, so that a married couple will want to choose one of the best methods and apply this carefully, with persistence, and mutual cooperation as long as protection is needed All children will then be wanted children, welcomed, loved, and cherished

CHAPTER 25

STERILITY

What is sterility?—Extent of sterility—Mistaken notions on causes of sterility—How fertilization takes place—Comparative responsibility of men and women—Frequent and infrequent causes—Need for early diagnosis and treatment—Nature of treatment—Success of treatment—Some good general rules—Other ways out—Adoption—Artificial impregnation—Eugenic possibilities of artificial impregnation

MOST married people want children, but after they have been married for several years they often find much to their amazement and disappointment that they cannot have the children desired, especially not at the exact time when they are wanted In a great many cases this leads to general unhappiness, both on the part of the man and on the part of the woman Perhaps women worry more about it than men for there is considerable pressure on women, even in these birth control days, to have a normal family, and it is only natural and proper that they should feel concerned There is grave danger that people who are infertile will develop feelings of inferiority Yet a physical limitation in this regard should be no more the subject of self-accusation than the presence of weak eyes or limited powers of digestion

WHAT IS STERILITY? Sterility is barrenness, it is the involuntary inability to produce children after a year or more of normal marital relations It is the failure of the sperm and ovum to meet, unite, and develop. Sterility may be absolute or relative In the former there is a complete inability to beget offspring, in the latter, only a partial diminution of the reproductive powers.

Many people think of sterility as a permanent or static condition This is not so. Fertility fluctuates somewhat, especially in view of the fact that the reproductiveness of a given marriage is measured by the combined fertility of the mates. It sometimes happens that a man or woman may be sterile in a particular marriage and yet fertile upon remarriage

Some women may conceive after one or two acts of intercourse, others conceive only with difficulty after a rather prolonged period Most of us have known cases in which a woman gave birth to her first child after ten, fifteen, or even twenty years of marriage But it is well to emphasize at the outset that, if a woman does not conceive within a year under conditions of normal coitus (allowance may be made for the first month or two of marriage when penetration may not be complete), a physician should be consulted It is better to act early than to wait four or five years, when the causes may become entrenched, and after which it is more difficult for a woman to conceive because of her greater age It is a biologically established fact that the fecundity of women declines as they get older

Extent of Sterility The extent of sterility is not exactly known But it is supposed that about 10 percent of the married couples in the United States are sterile, and that an additional 15 percent are relatively infertile The latter are sometimes called infertile combinations While the problem of sterility may not be as pressing in most marriages as the problem of controlling excess fertility, it can be seen from the above figures that large numbers of people are troubled with this problem On the other hand, it is probably true to say that the ratio of involuntarily sterile couples to fertile couples is no greater now than it ever was We are simply more conscious of sterility than formerly, and it has become a problem of greater social significance because of the declining birth rate At least it is not proved that involuntary sterility is more frequent among married couples today than formerly

Mistaken Notions on Causes of Sterility There are probably more mistaken notions and more superstitions and mysticism connected with the subject of the causes of sterility than almost any other aspect of sex life Before we go on to discuss the latest scientific medical literature on sterility it may be well to refute some of these ideas, many of which have come down through the older sex literature, and are being perpetrated by some modern writers on sex, or by people intending to mislead the ignorant

Some women may suppose that they will remain sterile so long as they do not experience the sexual climax or orgasm It has never been scientifically established beyond doubt that there is a relation between passionate intercourse and fertility. Yet several modern writers on sex, some of them regarded as experts, have played a part in spreading this fanciful notion For example, Dr Isabel E Hutton says that "The woman who participates vigorously in the sex act with her husband certainly conceives more readily than the one who is passive and frigid; it is supposed that when she is deeply aroused, the cervical opening widens and the seminal fluid is aspirated directly into the uterus" (*The Sex Technique in Marriage,* p 136) And Dr Norman Haire declares that while "It is quite possible for a woman to conceive even though she does not experience an orgasm," it is "probable that the woman's orgasm favors fertilization." (*Birth Control Methods,* Allen & Unwin, Cheap ed, 1937, p 184)

These statements are stronger in opinion than in scientifically demonstrated fact There is no scientific evidence to support the view that women who experience the orgasm are more fertile than those who do not Not only do many women conceive without ever experiencing the orgasm, but some women have been known to become pregnant without penetration of the penis, merely as the result of the semen being deposited outside the hymen on the vulva Dr Robert L Dickinson reports, in refuting the above ideas, that the insuck of semen is rare, if it occurs at all The idea that a relatively firm organ like the womb opens and closes like a fish's mouth is fantastic In view of the evidence, he derides "the gospel of

popular sex physiology" of the opening and shutting of the mouth of the womb and of the insuck of semen during orgasm And as for the relation between fertility and orgasm, Dr. Dickinson found, in his study of 1,000 office patients, that there was only a 2 percent difference in fertility between what he called the "responsive" and the "frigid" (67 vs 65 percent). (Robert L Dickinson, *Control of Conception,* 1938, 2nd ed , p 59) Professor Terman's study of happiness among married couples showed many women who had had several children, and yet who never experienced the orgasm, or who experienced it rarely

A small proportion of women have been known to call upon doctors complaining of sterility even when male penetration has not taken place This the physician knows because the hymen is still intact Such is the state of ignorance on sexual matters that still exists!

There is a widely held error that if a person looks healthy, he or she cannot be sterile Nothing could be further from the truth Some people apparently vigorous are completely sterile And, on the other hand, frail or poorly nourished people are often very fertile Witness the high fertility of poor people who often look unhealthy and undernourished

How Fertilization Takes Place In order to understand the causes of sterility, it is necessary to refresh our minds on the manner in which fertilization takes place In order for a woman to become pregnant a man must produce about 60,000,000 sperms Normally there are about 300,000,000 in each ejaculation A large proportion of these must possess the proper capacity for movement—they swim like tadpoles by lashing their tails—and most of them must be normal in physical form They should be deposited at the deep end of the vagina near the opening of the uterus The sperms must then swim up the uterus and out the fallopian tubes where an egg, normally produced at the proper time, is to be fertilized The egg must then make its three or four day journey through the hair-sized fallopian tube for four inches before it reaches the uterus and imbeds itself properly in its wall.

Hence it follows that when no sperms or too few sperms are formed, or when most of them are not of the proper shape viability, or movement, fertilization cannot take place Correspondingly, if there is any blockage of the sperm ducts, sterility may result In the same way, if the woman has excessive mucus or unhealthy secretions at the opening of the uterus—very common ailment and a factor which Dr Meaker believe is an important cause of sterility in women—the woman cannot become pregnant Also if normal eggs are not produced, or if there is some impairment of normal functioning or some pathology which prevents the fertilized egg from nesting in the wall of the uterus, pregnancy may be impossible.

Comparative Responsibility of Men and Women. Until recently it used to be thought that women were mainly responsible for sterility We now know that about one-third of the cases are caused by factors associated with the male At least this is the opinion of Dr William A Cary, a leading American medical authority on sterility. "My statistics," he reports, "disclose that in approximately ten per cent of infertile marriages, the husband is found sterile, that in an additional sixteen per cent his fertility is sufficiently impaired to make pregnancy improbable, and that in seven per cent more, reproductive vigor is sufficiently subnormal to warrant consideration as a contributory factor. Other observers have reported somewhat higher percentages." (*Birth Control Review,* February, 1938, p. 50.) Accordingly, in cases of sterility the man should be examined first in order to make sure that he can play his part in reproduction.

Most cases of sterility result from a combination of causes Relatively few cases, according to medical experts, have a single cause.

Frequent and Infrequent Causes. Few cases of sterility are caused by injury, disease (except gonorrhea), or maldevelopment Dr. Cary is authority for the statement that nearly half of the cases of sterility result from occlusion (stoppage) of the tiny reproductive ducts of both sexes. Such

a blocking is usually the result of an infection following or accompanying a venereal disease, a criminally induced abortion, or some injury Gonorrhea, which frequently inflames the sperm ducts of the male or the fallopian tubes of the woman, is one of the great causes of sterility In fact, some medical writers hold that nearly half of the cases of sterility in women result from the after-effects of gonorrhea which may block up the tubes or render the uterus an insuitable environment for the development of the fertilized egg.

Improper functioning of the glands of internal secretion is also a somewhat common cause of sterility in both sexes Infantilism, or underdevelopment of the uterus, may be a cause in women, but this is a factor much exaggerated by laymen Little can be done for its relief compared with some other causes.

In males lack of sperms (complete azoospermia) is not so frequent as poor quantity or quality of sperms Complete absence of sperms is relatively rare This condition may be caused by undescended testes, by mumps in youth which may cause inflammation and blockage of the tubes, or even atrophy of the sex glands Impairment of the quality or quantity of sperms may result from debilitating diseases, glandular impairment, chronic infection or inflammation, as well as by an insufficient vitamin E content in the diet It is supposed that sedentary men, especially those with nerve-wracking occupations, and those subjected to long-continued nervous strain, are more than ordinarily likely to become sterile Also the habitual use of certain drugs like opium, cocaine and morphine may cause sterility If the man cannot deposit semen bearing sperms into the vaginal tract because of failure of erection, this is impotence rather than sterility

Some of the causes of sterility in women have already been indicated Blockage of the tubes through gonorrhea, the presence of unhealthy cervical mucus, and imbalance or deficiency in certain glands, particularly of the thyroid and pituitary glands, are important causes. Yet, Dr Cary holds that "Hormone deficiency with consequent failure to activate the sex glands," is only "occasionally responsible" for sterility

He says this cause is "less common than popular literature would indicate," but adds nevertheless that "Improper development of these glands in either sex owing to some serious acute or chronic illness during the years of puberty is not infrequent" (*Birth Control Review*, February, 1938, p 51) Improper diet, ovarian disease, excessive vaginal acidity, or abnormal position of the uterus, may also be essential factors Stout women sometimes have reduced fertility not because obesity in itself causes infertility but because both are produced by a malfunctioning of the endocrine glands

Our discussion of the causes of sterility has been relatively full because it is necessary to demonstrate its complex nature It must be recognized that since the causes are many, complex, often obscure, and poorly understood by modern medical science, the best medical help must be sought Even the average medical practitioner may do harm if he thinks he knows more than he does and if he treats superficial symptoms Success in curing sterility will depend upon the skill in diagnosis and treatment There is a great deal of poor diagnosis in sterility work because of the difficulty in understanding the factors that operate to influence it Treatment of the wrong cause rarely helps

NEED FOR EARLY DIAGNOSIS AND TREATMENT. It is important to realize at the outset that there is no household remedy, no secret procedure, no miraculous operation, no medical panacea for the relief of sterility. In order for treatment to be effective, it is important to seek competent medical advice as early as possible A mere survey of the numerous and sometimes obscure causes of sterility should impress anyone with the urgent necessity and the importance of securing the best diagnosis and treatment of the *causes* of sterility On this subject, one medical authority has the following to say. "When the one or more causative factors have been accurately diagnosed and evaluated by meticulous, special methods of investigation, then, and then only, may intelligent treatment be undertaken or profitably abandoned All too often some symptomless disorder noted upon routine physical examination is subjected

to immediate correction in the hope it may result in relief. Occasionally, it does. An enthusiastic autoist, however, would not permit the finely adjusted carburetor or distributor of his stalled motor to be overhauled until satisfied that there was gasoline in the tank and the battery was charged, with all electric connections in order Not alone must the examiner be competent but he must be aided by the confidence and earnest cooperation of the patients" (W. H Cary, *Birth Control Review,* Feb., 1938, pp 51-52)

Once a couple have decided that they want to undergo tests for diagnosis and treatment of sterility, it is well for them to realize that frankness and complete cooperation with the physician and boundless patience are necessary If they consult their family physician first, he will probably refer the woman to a gynecologist or specialist in women's diseases and the man to a urologist or specialist in men's diseases

Nature of Treatment. It is not my purpose to consider treatment fully, but only to suggest the range of treatment No book can replace a physician's abilities in diagnosis and treatment But the more informed the patient is, the better he or she will be able to cooperate fully and intelligently with the physician Such a person will also be more likely to seek skilled help and will be less prone to be misled by quackery

Some cases of sterility yield easily to treatment Others are very stubborn. Most of them, as a matter of fact, are stubborn Some may require only brief periods of treatment, especially if the cause should fortunately be a simple one More frequently treatment requires a great deal of time

The methods of treatment followed may vary from surgery to glandular stimulation by administering hormone pills or injections, through change of diet, to simple rules of hygiene or instruction on coital technique If mucus plugs form at the uterine opening the condition may be treated with relative ease medically Frequently steps have to be taken to increase the number of sperms in the semen of the husband Surgery or other techniques may be needed to open the tubes, or to correct a misplaced or misshapen uterus

Unfortunately, it is not possible to determine in advance whether a woman produces normal eggs With men, samples of the semen can be placed under a microscope and tested for the number, motility, viability, and morphology (proper shape) of sperms.

It is, however, possible to test the tubes of women for "patency," that is, to see whether or not they are open or obstructed. Some gas like carbon dioxide or oxygen may be injected under pressure into the uterus. If the tubes are open, the gas will bubble out at the ovarian ends of the tubes. The physician will be able to hear the bubbling by listening on the abdomen. Also the pressure of the gas will fall on his indicator If the tubes are blocked, the pressure indicator will show a rise When testing the tubes in this manner, if the physician finds resistance, he may increase the pressure in an effort to free the tubes Gas is not always used for testing the openness of the tubes, however An opaque liquid (lipiodol) may be injected into the uterus and tubes The physician can then examine the condition of the tubes under a fluoroscope or take an X-ray picture The opaque liquid can fill only the hollow portions, that is, the uterus and the unobstructed portion of the tubes If part of the tubes throw no shadow, they are obstructed, for the liquid has been unable to reach that portion Thus may the physician determine if there is any blockage

Nicking a tough hymen or treating a vaginismus (a nervous spasm which makes all the female parts contract as the man is about to enter) is necessary in a few cases.

In some cases it has been found helpful to adjust the coital technique If before intercourse the woman will place a pillow under her buttocks so as to raise them and change the angle of penetration, a pool of semen will be formed at the deep end of the vagina, and the neck of the uterus may be bathed in it After ejaculation the woman closes her thighs and remains flat on her back for about an hour Sperms may thus have a better opportunity to swim into the uterus and up the tubes Dickinson and other physicians have recommended this as helpful in some cases

Some women who have difficulty in conceiving also find it

advisable to concentrate the frequency of intercourse around the midperiod of the menstrual cycle Ovulation probably takes place then in most women The woman may count back fifteen days from the time the *next* menstrual flow is anticipated, and then have intercourse at that time and repeat it once or twice before and after that date This method will be most useful for women with a regular and determinable menstrual cycle There are medical differences of opinion as to how well established the Ogino-Knaus theory is While it should not be relied upon by women who have strong medical reasons for preventing conception, it cannot do any harm to those who want to use it to promote their fertility On the other hand, this fact needs to be borne in mind it is probably true with most men that, if they have daily intercourse, the number of sperms in each ejaculation will be very much reduced. It may, therefore, be desirable to experiment with the frequency of sexual intercourse If a man, for example, has coitus daily for four days before the estimated day of ovulation, his semen may be pretty well exhausted by the time ovulation actually takes place In other cases the husband may want to limit intercourse to the supposed day of ovulation and to the day preceding and following it On the day of ovulation it may be helpful to have coitus twice

If no local conditions are found that might interfere with fertility, the doctor may undertake surgery or glandular therapy, but only after careful tests have been made to determine whether these are called for Thyroid may be administered, or a gland extract may be administered to either the male or female or both A diet high in vitamins may be tried out But any treatment that is undertaken should be prescribed and supervised by a competent physician and by him alone. Quack medicines and quack procedures, while they may do some harm, certainly can do no good and may cost a great deal in the long run

Success of Treatment. What are the possible chances of success? "After I have taken all sorts of tests, after I have faithfully followed the doctor's advice and prescription, what

are my chances of becoming pregnant?" a woman may well ask The chances of success depend, of course, to a large extent upon the causes. As we have said, some are relatively easily removed. Others are extraordinarily stubborn. Ordinarily the likelihood of cure is greater if there are only a few causes restricted to one sexual partner Infertile combinations are usually obstinate in yielding to treatment, and the chance of cure is reduced *All told, from 35 to 40 percent of cases may expect cure, if the patient receives the best diagnosis and treatment.* According to Doctors Dickinson and Cary there is about one chance in seven if the tubes are closed, and one in three in more favorable conditions (*Journal of American Medical Association,* January 1, 1927) If the grossly incurable cases are eliminated, good persistent treatment may cure half the cases But perhaps that is a little optimistic until there is better education of both physicians and of the general public A couple needs, accordingly, to face the fact at the very outset that diagnosis and treatment are apt to be a long-drawn-out and expensive process and that even then not all can hope for relief

Some Good General Rules It may be helpful to summarize here in condensed form certain general principles, already mentioned, that a couple in need of medical help might well bear constantly in mind

(1) *Seek treatment early* If marital relations have been normal for a year and no pregnancy has resulted, consult your physician It is better to consult him early, rather than to wait three to five years. With postponement, some of the causes may entrench themselves. Moreover, the woman will be older and less likely to conceive for that reason When early treatment is sought, the youth of the patient is usually a favorable factor Medical specialists hold that "not until after the age of thirty-eight in the female and somewhat later in the male does age usually become an important handicap" in relieving sterility

(2) *Remember that the man should be examined first!* It is hardly short of malpractice to perform an operation on the woman to relieve blockage of the tubes or to straighten

out the neck of the uterus before the physician makes certain that the man's sperms are normal

(3) *Get the best diagnosis and treatment possible!* Beware of the practitioner who has found a simple, single cause. He may be right But it is improbable

(4) *Be patient!* Do not expect the causes of sterility to be immediately relieved In some cases, there may be quick relief; in others it may take years before there are any results

If treatment is unsuccessful the situation is not hopeless

OTHER WAYS OUT If science cannot relieve their sterility, women especially are apt to become highly nervous, upset, or even obsessed with their own inadequacy They may become morose, embittered, or fearfully jealous of relatives and friends with children They worry excessively at a time when a calm mental attitude might place them in a nervous state receptive to fertility Instead they should try to profit by some of the simple rules of mental hygiene, keep themselves in good physical condition and cultivate a serene attitude toward life

This may be assisted by a sublimation of their maternal impulses. There are many children in this world who need mothering It is hardly necessary to go beyond the immediate neighborhood to find such children. There is much good hospital and charitable work to be done to aid children

ADOPTION. There is nearly always the avenue of adoption open In these days nearly every country is receiving child refugees from the totalitarian terrors Would it not be well to help them rather than to brood over the cruelty (if it is such) of fate? It takes all kinds of people to make a world, and different women have different functions Most of them find their service to society in caring for their husbands and their children, others follow a career, and contribute either to the advance of science and art or to industrial and commercial productivity Childless women ought not to feel, if they make themselves socially useful, that their lives are empty. If there should be any pronounced mental maladjust-

ment as a result of involuntary childlessness, it may be advisable to consult a psychiatrist or attend one of the numerous mental hygiene clinics that can be found in almost any part of the country

ARTIFICIAL IMPREGNATION This subject has received some attention in the press and in periodicals as one way of treating sterility The newspapers have referred to it as "test tube" babies or "substitute fathers" Here reference is usually made to artificial impregnation or to artificial insemination as it is sometimes called This is impregnation of the female by artificially syringing into the vaginal tract or into the uterus healthy male sperms, either of the husband or of a donor. While artificial impregnation is being used more and more widely, it is useful mainly in the instance of the biological failure of the man It is much less liable to work if the woman manifests factors contributing to sterility

Considerable space is devoted here to the subject, not because it ranks high as a remedial technique, not because it is frequently and generally applicable in most cases, but because the topic is so new, so interesting to many people and because the general public knows so little about it Even at the risk of losing our perspective temporarily, it is therefore desirable to consider the merits and limits of artificial impregnation rather fully, yet critically and succinctly.

Artificial insemination has been used on animals for some years. As far back as 1784, an Italian scientist, Spallanzani, artificially impregnated a bitch with the semen of a male dog. He was successful Ever since that day artificial insemination has been used by animal breeders with increasing frequency. It may be used to improve livestock because a large number of seeds can be secured from each male Also the semen can be stored and transported much more readily than the animal

The first artificial impregnation of humans seems to have been done by a distinguished English physician, John Hunter. The practice did not come into more general use, however, until about seventy years later It is still relatively infrequently resorted to and some medical authorities are very skeptical as

to whether artificial methods of impregnation will ever play a major role in the relief of sterility Dr. Cary, for instance, thinks that it is "rarely indicated, very rarely successful, and sometimes ill-advised unless utilized for the introduction of a donor specimen from a normal male." (p. 51)

If a donor is used, certain legal and social difficulties immediately become apparent. Will the child be legitimate? Since there has been no court contest, the matter is uncertain Formal adoption would legitimize, but that would publicize what it is desired to conceal If the name of the recipient is not kept secret from the donor, he may make claims on the child later on In like manner the recipient should not know the identity of the donor. It is imperative that identities should be withheld.

The donor should preferably be of the same physical type as the husband for whom he substitutes Certainly he should possess good health, and good genetic constitution When artificial insemination has been successful it is generally recommended that prenatal care be given the pregnant woman by a physician different from the one who made the impregnation He, then, as a matter of course, inserts the name of the husband as father on the birth certificate

The physician undertaking the artificial impregnation will usually insist that certain legal papers be signed by both the woman and her husband, declaring among other things, that approval is given to the artificial insemination The papers must also authorize the physician to select a donor. These are then kept in a bank vault by the physician to which a colleague also has access in case it may be later necessary to produce the records in court

Success with artificial impregnation is not certain. Ordinarily from three to ten trials are necessary to impregnate a woman, and these must be made on the right days, that is, in the middle of the menstrual cycle The fact that several attempts are required sometimes discourages some women. The technique is a careful but simple one. It does, however, call for the skill of the gynecologist, the specialist in disorders of women.

EUGENIC POSSIBILITIES OF ARTIFICIAL IMPREGNATION. The whole subject lends itself to interesting and fascinating speculation as to the improvement of the human species In a brilliant and readable book on human biology, *Out of the Night,* by Dr H J Muller, the noted geneticist who discovered that the irradiation with X-rays of fruit flies would change their genetic constitution and produce different types of flies, there is a vivid, original, and thought-provoking discussion of the eugenic possibilities of artificial impregnation

Certain scientific workers have recently demonstrated that one-celled animals instantaneously frozen at low temperatures may be preserved for considerable lengths of time and then revived There is a possibility that this may be done in the future with human sperms If so, it is not altogether fantastic that, if the world ever gets rational enough, it might be possible to save the sperms of our great geniuses for the artificial impregnation of women in the future for the improvement of the race Doubtless custom would oppose such a move But the difficulties do not seem insuperable. Years ago people objected to railroads because "God never intended that any man should travel more than fifteen miles an hour" and because they frightened the chickens and livestock American pioneers, when they crossed the prairies, refused to believe that good crops could grow in the Midwest because no trees grew there How could land that did not grow trees grow good crops? Yet we know today that the Central West, or the Cornbelt, is one of the most fertile regions in the world Likewise many of the farmers in that region refused, shortly after the steel plow was invented, to use it They had a notion that it "poisoned the soil." We now know what nonsense that was And so it is with many human problems In the early days of the invention of certain textile machinery in Great Britain, there were machine riots Men simply broke them Did they not cause unemployment? Yet in our more sober moments we have to admit that while the machine may cause some difficulties for us, at least of a temporary nature, they have freed rather than enslaved us

So it may be with such a great biological achievement as artificial insemination. If we become rational in matters of

public policy before what little brains we have is bred out of us by the differential birth rate we may yet come to see that the possibilities of improving the human stock as a result of artificial insemination are well-nigh boundless At least the matter ought to be worth a trial I am quite willing to predict that it will have a trial somewhere before many decades In fact it is already probable that on a small, informal scale it has already been tried to some extent Some of the donors who have been picked as substitute fathers in artificial impregnation have been men of exceptional ability Of course their semen was not kept for long periods because its immediate use was necessary But the above plan is only an extension of the present techniques. Who knows what the future will bring? Conservatives frequently talk as if they knew. But do they? There is nothing so constant as change

CHAPTER 26

SHALL WE ADOPT A CHILD?

Guard your own interests—Why do people adopt children?—What qualities are required in adoptive parents?—Finding a baby—Standards for making the choice—Trial period highly desirable—A recent court case—Avoiding misfits—Legal questions in relation to adoption—How well do adopted children turn out?—Telling the child of its adoption—As a child is bent

WITH the decline in the birth rate and with the "discovery" of the frequency of sterility, attention has come to be focussed more and more on the adoption of children The popular magazines have begun to discuss the subject, of course, with sensationalism and dramatic distortion of the facts, and even radio stations have uncovered a new source of human interest to exploit or satisfy as the case may be But it is most important that those who feel a desire to adopt should inform themselves on the relevant issues and facts The step is too consequential to be undertaken lightly, with partial knowledge, with a poor comprehension of their own motives and without a knowledge of the desirable standards of choice of a baby How can the couple protect their interests when social workers and nearly all the literature commonly place the child's interest first? Who is fit to adopt? What qualities does it require in the parents? Where can a good baby be found? What must prospective adoptive parents know about a child if they are to make a wise choice? How can they best avoid misfits? What do the couple owe the child? What problems does adoption present? What is the state's interest in the matter? What practical principles or policies need to be followed all along the line from the time of weighing the advisability of adoption

to selecting the child, wading through the necessary legal formalities, to breaking the news of adoption to the child as it grows older? Lastly, but by no means irrelevant, is the question: How well do adopted children turn out?

These are some of the matters on which adopting parents should be informed Since the demand for babies to adopt is likely to increase with a further decline in marital fertility, it is doubly important that we should adopt a general educational program to make sure that the interests of the child, of the state, and of the adopting parents are properly protected in accordance with the standards discussed elsewhere in this chapter.

In the account that follows, however, the emphasis will be upon questions of interest to adoptive parents Therein it differs from the general run of literature on adoption which stresses social work standards, the interests of the child, or of the state Such an emphasis has its place; and there is need for it. But a balanced, informed discussion presented in terms of the needs of adoptive parents has long been overdue

Guard Your Own Interests It is common for child-placing agencies and for social workers to put the interests of the child first Such is the attitude, for example, of the Child Welfare League of America and of most social agencies. A leading American social worker and authority on the social work aspects of adoption writes. "The child should at all times be the focus for the adoption worker The desires and needs of the foster parents are relatively unimportant as compared with those of the children" (Sophie Van S Theis, "Social Aspects of Child Adoption" New York· Child Welfare League, p 5.) This is an inexcusably narrow position from which a reaction is overdue.

It is unsound that any *one* interest—whether of the child, adoptive parents, or the state—should be put "first." While it is important that every legitimate interest of the child should be protected, that it should receive good physical and mental care and be encouraged to develop according to the level of its inherent abilities, the child's interest is not the sole interest

to be considered. The state has an undoubted right to set minimum standards of child care and to control the legal process of adoption Its future citizens are one of its greatest assets That the state has an obligation to protect its adopted children and that it ought to do more than it is now doing to protect them is the generally current judgment among those best informed in this field. A leading authority, Dr C C Carstens, has declared, for example, that only half the states have fairly adequate adoption laws. Children are commonly being placed with little or no inquiry into their background They are placed in homes of which little is known, without a trial period, as a rule, and without the proper amount of supervision. Yet no one in this country agrees that the state's rights should be paramount.

Neither should the interests of adoptive parents be paramount For it is only when there is a balance of interests that all are served. But, in view of the overemphasis on the child up to this time, it is high time that the needs and rights of adoptive parents be given some attention. It is only natural that those anxious to protect illegitimate children should bend every effort to see that they get proper care in a good foster home Yet it is also true that prospective parents are interested in securing at least a normal child of reasonable health, and with good mental endowment, one capable of profiting by superior economic opportunities For, as we shall see later, most children are adopted *into* homes of better than average standing Since this book is intended primarily as a handbook of counsel, not only for engaged couples but for married people in different age groups, any advice given will be directed to their needs, demands, and interests

WHY DO PEOPLE ADOPT CHILDREN? The motives for adoption vary and they should be clearly understood by an adopting couple Some parents want to make their home lives more complete. Perhaps they have lost by death an only child They may look for a child that resembles it in personality and be disappointed. Or, if they find one, they may make unfortunate comparisons between the two Other parents want com-

panionship for a child or children already in the family Still others are unwise enough to look upon adoption as a panacea for holding a mate of wandering impulses Yet other couples want a child to mold after their own "distinguished image," etc

Many women of strong maternal impulses want to adopt children because ill health, not necessarily sterility, has made it difficult or dangerous for them to have children of their own One woman, for example, wanted a child so much that she was willing to undergo all sorts of hardships during pregnancy to achieve her aim. But one pregnancy resulted in a miscarriage, another in convulsions in which the baby died, and the third in still another miscarriage when the mother almost lost her life Since the doctor advised against further pregnancies because of the danger to the mother's life, and the mother felt she had to have a child, adoption was her way out, and a happy way out it was for her. A certain neurotic tendency after the last miscarriage gave way to joy and a new desire to live because her maternal urge was satisfied by the adopted child

Women sometimes develop other conditions that may make childbearing inadvisable, such as a severe illness after marriage. The wife may develop tuberculosis, an uncompensated heart disorder, or some other severe impairment that would lead her physician to advise against pregnancy In such cases adoption may be the way out if there is a strong urge for children, and provided the condition of the mother is such that child care would not seriously aggravate any illness that may be present. Adoption may be a reasonable desire especially if the disease is not infectious

On the other hand, among the enlightened there may be a strong eugenic motive for adoption. Some couples may feel that they should not have children of their own because of some hereditary taint in the family Close relatives may go insane or have several feebleminded children. In such cases, the couple may prefer to take a chance on adopted children rather than have children of their own

Sometimes the statement is heard, uttered half jokingly and half seriously, "If you want a *natural* child of *your own,*

adopt one." Some of us probably know cases from our own experience in which this has been true. But it is a biological fallacy to suppose that adopting a child will cure sterility in the adoptive parents. Yet a writer on popular eugenics, Professor H. F. Perkins, has presented some figures purporting to show such an effect of adoption (*Eugenical News*, xxi (1936) 95-101) He alleges that when parents adopt a child, there is a tendency for their own fertility to reassert itself. But his evidence and conclusions are unconvincing

WHAT QUALITIES ARE REQUIRED IN ADOPTIVE PARENTS? Whatever the motives for adoption, parents should explore them objectively in order to make sure that the desire is real and that they are fitted for parenthood They should not have ulterior or questionable motives It is particularly important that a child should not be adopted in an attempt to hold together a home about to break up "Every child needs two parents working in harmony for his good If the couple is unable to react to each other on an adult level of sportsmanship and loyalty, they will be unable to act together in the crises that demand a united front of authority or of unselfish devotion Parenthood is no more a panacea for a disappointing marriage than marriage is a cure for a personality at war with itself." (Lee M. Brooks and Evelyn C Brooks, *Adventuring in Adoption*, p. 31)

A desire to smother a child with affection is not enough There must be real understanding of, and a desire to promote its developmental needs, physical and mental. This does not mean that the parents should be wealthy In fact, it will probably be better for the child if the adopting parents are in the middle economic class It will in most cases secure more individual parental care and attention than if brought up by nurses in a wealthy home.

But parents should be able to provide a healthy, harmonious home atmosphere and emotional security. A home, for example, in which there is much discord or pronounced jealousy, is not a suitable place for a child, whether it be natural or adopted.

Professor Brooks, in the book already mentioned, has raised a series of questions that adoptive parents ought to ask themselves. "Adoption should be seriously considered," he says, "only after certain searching questions are answered Will my motives stand the test? Is adoption something more than a passing whim? Am I capable of warm, steady affection? Do I really like children? Can I grow with a child, be flexible enough to meet his needs as he grows beyond babyhood? Have I the poise and control that will keep me from projecting myself and my ambitions upon a child? Am I content with my mate and with other family members who must live under my roof? Do I realize that children were never meant to be mere emotional outlets for adults and that a child should not be adopted as a means of resetting a badly fractured home life? Am I in the habit of seeing my undertakings through? Perhaps few people can answer an unqualified 'Yes' to all these questions True it is that not all own parents can measure up to such self-examination, but adoptive parents in general have a harder task than own parents since they must face all the common problems of parenthood and certain specific problems growing out of adoption. It would seem," concludes Professor Brooks, "that an added measure of such qualities as steadiness, courage, alertness, and flexibility is needed by the adoptive parent." (pp 25-26)

It is necessary to emphasize further that adoptive parents especially have to make up their minds to take a child as he is and to let him develop according to his abilities. It is nothing less than tragic that many adopted children cannot profit from the superior educational opportunities that can be given them But this is a problem that the parents should face from the very beginning, and not fool themselves with the possibility that environment can work wonders.

There are certain other questions as to parental qualification that need passing mention Should, for example, a single person adopt children? In general, this is inadvisable, as a child is entitled to the guidance of both a mother and a father. Rarely is a single person in a position to offer a child full opportunities for guidance and growth This is especially true

where the adoptive single parent is busy in the business or professional world.

Another important question as to the qualification of parents has to do with age Prudent couples are apt to feel that they are too old to adopt children. There are many matters to be considered in this connection. While the average age of adoptive parents is unknown, most couples who apply for children to adopt are in their thirties or forties and in some cases even in their fifties If the couple is in the late thirties, they may derive some comfort from the fact that their age probably does not vary much from the average age of adoptive parents

The question, however, has a bearing upon the age of the child to be chosen Should they adopt an older child on the ground that if a very young child is adopted the parents will be in their fifties when the child goes through adolescence? Will the parents then have the mental flexibility and physical capacity to stand the strain? Will old age bring sickness and financial strain on the parents so that it may be more difficult to carry through the educational program of the child, especially if it is a gifted one? Will the old age of the adopting parents place undue burdens on the adopted child? These are all imponderables that have to be weighed. They do not necessarily have any dogmatic answer.

It is true, on the other hand, that the fear that a couple will be too old is commonly exaggerated Mental flexibility, willingness to let a child develop along its own lines, patience with its mistakes are not necessarily a function of age As one writer well observes, "Mental and social age, emotional maturity and balance count for more than calendar age" Then again it may be possible that older parents can offer the children a certain mellow life experience and guide them with wisdom and tact through many difficult crises. Furthermore, with postponed marriage now pretty general, and with the widespread adoption of contraceptive practices, own children are born much more commonly in early middle age than formerly

In summarizing, we can do no better than quote the Brookses, careful students of this problem, who ask and an-

swer the question: "Who, then, should adopt? The good citizen and the good neighbor, the self-supporting and the forward-looking, who can understand and love the child, those who are willing to prune away what might be considered less important interests, those who have not become dry and stiff in spirit but in whose trunk and branches there are the vitalities of growth into which young life can be grafted with prospects of enrichment and fruitfulness." (p. 36)

FINDING A BABY If the decision is made to adopt a baby, the prospective parents will need to give attention to certain important facts and principles The first is that, in view of the scarcity of babies in relation to the demand for them, it will be necessary for the couple to *apply early* if they are not to be disappointed.

Why is there a scarcity of babies for adoption? Babies for adoption come mainly from two sources. (1) the break-up of homes with the illness or death of one or more parents or their divorce, desertion or separation, (2) illegitimate births The mothers of illegitimate children are often forced by social ostracism or by their own economic circumstances or those of relatives to give up their children for adoption While most of the children in the first group, namely, those born in wedlock, are taken by relatives, sometimes that is impossible for economic or other reasons Many such babies were formerly adopted. Nowadays, with the growth of mothers' aid laws, there is an increasing tendency for mothers alone to take care of such children and for the state to aid them financially in their care Thus the passage of mothers' aid laws and the increase of social security generally have contributed to the solution of the problem of child care and prevented the necessity of many adoptions.

There is some dispute among social scientists whether illegitimate births are increasing Of one thing, however, we can be reasonably sure Despite the undoubted increase in extra-marital sexual relations in recent decades there has been no *corresponding* increase in illegitimate parenthood. We wonder how much truth there is in the rather cynical statement of

the physician who remarked, "Only two kinds of girls nowadays have illegitimate babies, those too dumb to know anything about birth control and those who fear the ordeal of an abortion." While this statement probably goes too far, there is certainly a residue of truth in it. As birth control information becomes democratized, that is, as knowledge of the really effective methods spreads among the less privileged socially, we may expect a still further decline in the number of illegitimate children available for adoption.

As for abortion, we ought to realize, as already pointed out, that there are some 700,000 to 1,000,000 interruptions of pregnancy in the United States annually. About 70 percent of these are criminal abortions, illegally induced If we could somehow reduce their number, a program quite possible if the proper steps are taken, there would be many more babies available for adoption, and the mothers, the children, and the country would be better off all around However, we need to realize that most of these abortions are secured by *married* women who already have several children rather than by unmarried girls "in trouble." Nevertheless there are enough pregnancies among unmarried girls to offer enough babies for adoption were it not for resort to abortion

While the supply of babies for adoption has been either decreasing or, at best, stationary, the demand for babies has certainly increased This has resulted not from an increase of involuntary sterility in marriage, but from the growth of the *small-family system.* Voluntary sterility has increased, but probably not involuntary sterility. Large numbers of married couples, in an effort to raise their standard of living, have postponed childbearing. Then many of them discovered that their fertility is low They had either no children or perhaps only one child A certain proportion of these couples, more numerous than formerly, has created a demand for babies to adopt

Moreover, in recent years the standard of living of the American people has been rising. In view of the fact that most babies are adopted into homes of better than average economic status, it would seem that the improving standard of living has

also contributed to the scarcity of supply in relation to the demand.

When two out of three babies are illegitimate and very limited in intelligence compared with the demands likely to be made upon them by the prospective parents, when most of the babies adopted in the United States are placed, not by fully accredited social agencies but by commercial maternity and nursing homes who have little interest in seeing that the prospective parents make a wise choice by modern scientific standards, it behooves prospective parents to ask themselves not only "Where can we find a baby?" but rather "Where can we find a *good* baby?" Here are a few principles that need to be borne in mind

It is well to avoid maternity homes that advertise In nine states such homes are legally free to advertise widely. They do a considerable business in "bootleg" babies for a flat fee No records are kept and no questions are asked of the mothers or of the adoptive parents They try to get as many babies as possible to place. To these homes unmarried mothers throng in great numbers from far and wide upon promises to relieve them of the burden of the care of their children and upon promises to place their children to advantage Such homes need social control not only because they encourage illegitimacy by making it easy for mothers to be relieved of their obligations but because the chances of securing a good baby in such a place are remote Although 16,000 or 17,000 children are adopted annually in the United States, only about 10 percent of them are safeguarded by sound methods of child placement according to the testimony of Dr C C Carstens, late Executive Director of the Child Welfare League Unlike modern social service agencies of the better sort these maternity homes rarely make proper investigations of the parenthood of their children, are rather careless about the homes in which their children are placed, and they rarely insist upon a trial placement and upon adequate social service supervision Often such maternity homes are primarily interested in the fees they can collect To encourage them is to encourage anti-social and unscientific methods of child placement and adoption. It is

unwise for couples to use them. It will be to their interest to seek a child in other quarters

The average social service agency, specialized child-placing agency, or family welfare society is to be preferred to the average commercial maternity home. That statement holds even for a certain well-known organization in the country that has received considerable publicity of late because some wealthy people and not a few movie stars have seen fit to adopt babies from that source. The State Department of Welfare or the local Council of Social Agencies can direct a couple to an approved agency. Remember that scientific adoption service is a highly skilled and individualized process Why rely on amateurs?

Sometimes clergymen who know of girls "in trouble" or physicians, especially obstetricians, are able to be of assistance. However, the average private physician, no matter how high the level of his ethics, is rarely in a position to make the careful investigation of parenthood that a competent social agency can make On the other hand, some family physicians and obstetricians know pretty well the background and physical and mental health of their patients. But do not expect a thorough investigation from the average physician His office is not equipped to perform that service, no matter how much his professional standards may recognize the need for information

Standards for Making the Choice Married couples seeking to adopt children are often influenced in their choice by trivialities Too many of them look for a "chubby little thing with round face, blue eyes and blond hair," and pay altogether too little attention to the physical and mental inheritance of the child

Such an unwise basis of choice was well demonstrated in a recent case dramatized over the radio in which sentimentality and tearfulness were emphasized at the expense of common sense A young couple who had recently lost a baby went to a maternity home seeking to adopt a child to take its place Miraculously enough they found one who was just like the child that died in that he had an unruly lock of hair falling

down his forehead, and simply would not go to sleep without his Teddy bear! And that was all they wanted to know about the child!

Such a basis for choice can usually be avoided if the couple goes to a well-established child-placing agency with scientific methods of social work They will usually have a tolerably full record on any child that may be available for adoption, unless the mother has been promiscuous Often, however, the record is blank in important particulars, especially if the father is unknown Insist upon seeing with your own eyes the record of investigation into the mental and physical health of the parents Make sure that the record includes an investigation also of the mental and physical health of brothers and sisters of the parents as well as of the grandparents of the child Any further information of a favorable nature that can be gathered on aunts, uncles, cousins, or other relatives is so much additional security on the probable health and mental level of the child to be adopted

Oftentimes, however, there is not really much choice that can be made Most of the children available for adoption are girls of illegitimate birth under five years of age Most parents, however, at present would like to have an infant they can nurture from early years or even months, yet it is possible that some adoptive parents may prefer an older child, especially if they feel they are older than the average. If they do choose an older child, they will, of course, miss the enjoyment of seeing a baby develop in its younger years But it would seem that there are compensations and disadvantages whatever age is chosen

Trial Period Highly Desirable No matter what the age decided upon—since, as we have seen, there is a scarcity of babies there may not be a wide choice—no child should be taken into the home except on "trial" for not less than six months, preferably for a year. The risks of adoption can be minimized if final legal steps are not taken prematurely It would be wise not to adopt a child at an age of less than four to six months as a basic minimum; and then only after a

proper physical examination by a competent physician and after a study of the child and its family background by a psychologist or psychiatrist While something can be told about the normality of a child at six months, much more can be told at the age of one year or eighteen months Better yet, several tests should be made over a period before final steps for legal adoption are taken.

The laws of a few states require a trial period In New York state, for example, the law demands a six month trial before final papers are passed Ordinarily there is no legal fee for the adoption process, and some state laws prohibit legal charges except for the incidental fees incurred in searching for data and copying records It would be well for future adoptive parents to inform themselves on the laws of adoption existing in their own states.

If final adoption papers are not passed until the end of the trial period, the parents have an opportunity to change their minds This is an important freedom, not lightly to be given up While experience shows that adoptive parents rarely give up their children, in unusual circumstances it may be necessary

A Recent Court Case. An interesting court case developed recently in New York state When an adopted child turned out to be feebleminded, the court upheld the right of the adoptive parents to give it up. While the wisdom of this decision may be questioned by social workers, possibly it represents a new trend in the direction of protecting the rights of adoptive parents. If so, it may be overdue While such a decision represents a new tack for the courts, and while it may cause some confusion in adoption law, a case can be made for considering the rights of parents as well as of children If a feebleminded child is otherwise well provided for, as in an institution, its rights are taken care of On the other hand, it can be argued that, if parents are made to hold fast to their choice, they will ultimately exercise greater prudence in their selection. Practically, however, that seems a harsh and unrealistic position because parents rarely repeat the experience of adoption; and since many of them have no experience what-

ever with it, it would seem severe to make them keep a defective child because of their ignorance It is unreasonable to contend that if the adopting parents did not exercise due caution by investigation prior to adoption, the risk should be theirs exclusively Furthermore, this assumes that even a parent exercising due prudence can avoid accepting a feebleminded child in its early months of life Actually this is not always possible.

The risks of getting a moron or even a feebleminded child are by no means small when the children available for adoption are compared with the general child population of the country This arises from the fact that most of the children available for adoption are illegitimate and born of parents of low or dull normal intelligence, and it is an established fact that the intelligence of illegitimate children is, on the whole, lower than that of legitimate children Accordingly, the risks are greater than with children born in wedlock and not available for adoption

Avoiding Misfits. Some tragic stories of misfits could be related Bright and gifted children may be placed in ordinary homes that cannot give them the educational advantages they ought to have The opposite, however, is usually the case Children who cannot profit from advantages are placed in superior homes. A study of figures on adoption shows that children are generally adopted into one-child families by parents of higher than average economic status. Accordingly, they attain higher educational, economic, and social status than they probably would be able to attain had they remained with their natural parents Some can adjust to these circumstances, others cannot If too great educational demands are put on them, the children may become emotionally unstable, or psychologically maladjusted in many different directions This is tragic from the point of view of the child.

Consider the case of a nine-year-old girl who did not do as well in school as her teachers expected They took it for granted that she should have been at the head of her class because she was known as the daughter of a college professor It seems improbable that she will ever finish high school, yet

nearly all of the children in the group to which her adoptive parents belong will go to college If the child had been placed in a home where education was not so important, her failure to go to college might not have been such a tragedy for her

On the other hand, children who are misfits may cause tragedy to the adoptive parents The author recalls the case of a Harvard classmate, an exceptionally gifted young man who later became a leader in his profession As there were no children by the union, two were adopted At least one of them was grossly defective. How much better it would have been for all concerned if, in this brilliant, gifted and economically substantial family, a child of unusual endowment had been selected by prudent investigation! The aid of a psychologist should have been enlisted This mistake brought great unhappiness not to the child, about which social workers are always worrying, but to the adoptive parents themselves This case also illustrates that the intelligence of the adoptive parents was not enough to solve these problems They must draw upon the experience of others Hence this brief account which attempts to summarize that experience essentially from the point of view of the needs of the adoptive parents

Legal Questions in Relation to Adoption In addition to having the adoption itself legalized by proper procedure, other legal questions come up relative to adoption What name should be entered on the birth certificate as the father? The Child Welfare League of America urges that birth records should be so revised as to shield the adopted child from unnecessary embarrassment One-third of the states have authorized their Bureaus of Vital Statistics to issue birth certificates under the legal, adopted name And there is at present a tendency for legislation to be amended in that direction New York, for example, has done so In such states when proof of age is necessary for entering school, for obtaining work certificates, etc, no problems will arise because the adoptive parents' name is used

Parents should be prepared to grant the right of inheritance to adopted children. At present there is confusion in the

laws of many states with regard to such rights. The dead hand of the common law thwarts or retards progress. It is a cardinal principle of the Child Welfare League of America that parents, when they adopt a child, should "assume as serious and permanent an obligation as do parents rearing their own children, including the right to inherit" The League also urges a trial period of residence, and an adoption procedure sufficiently flexible to "avoid encouragement of illegitimacy, on the one hand, and trafficking in babies on the other"

It is also important that the identity of the adopting parents should be kept from the natural parents Otherwise claims may be made and difficulties arise.

There is a possibility of legal complications if a child is secured outside of the state of residence of the adoptive parents Some state laws prohibit it It is best to apply to an agency of recognized standing near home Only by using such an agency can people be certain that all legal requirements have been met One couple accepted a child from an unaccredited agency much ballyhooed in the press only to find out that the mother of the child had signed a fictitious name on the papers releasing custody of the child Had this not been discovered the mother could later have claimed that she had never given consent for the child's adoption The next time that couple will use an accredited agency and avoid possible legal difficulties

How Well Do Adopted Children Turn Out? A sociologist who has made a special study of adoption avows that "The adopted child tends to make satisfactory family and community adjustments and to remain permanently loyal to adoptive relationships and obligations When maladjustments do occur as a result of the adoption situation they most often grow out of delayed disclosure of the fact of adoption, or they may come from rejection by the adoptive parents, from divergence in standards between own and adoptive homes, and from feelings of disadvantage and inferiority" (*Social Forces*, May, 1939, p 510.) Experience seems to indicate that adopted children are in most cases as affectionate as own children; that they adjust well to a home in which they receive proper care

and emotional security; and that they eventually accept their full share of family responsibilities.

"In the most successful adoptions the child is placed in infancy by a social or child welfare agency, has spent a period of trial residence in the adoptive home, is told of his adoption at an early age, is adopted by emotionally mature people of financial security but not of wealth." (*Ibid.*)

A study of more than 3,000 cases by Miss Sophie Van S. Theis, for thirty years in charge of the child-placing and adoption committee of the New York State Charities Aid Association, showed that three-quarters (77 percent) turned out to be decent law-abiding citizens, and that one-quarter (23 percent) "ranged from the harmless to the actively harmful" Miss Theis concluded that, since fourteen times as many of these children had come from bad homes as from good homes, the fact that three-quarters of them turned out to be decent, law-abiding citizens was a satisfactory showing. Though a dozen became professors in colleges and universities, and one eventually planned the recreation program for an entire state, and though two married into the social register of New York City, the majority gravitated, as one might expect, to humble positions and occupations And though there were quite a number of ministers, the policemen and firemen outnumbered them.

If the matter is viewed from the broad social standpoint, and even if some allowance is made for the environmental enthusiasm of most social workers, this looks like a pretty good record for the social agencies, especially in view of all the difficulties. Certainly, it was a service to the children. But we wonder about the one parent in every four that got a "dud"; that adopted a child that turned out to be socially ineffective, ranging from the harmless and relatively useless to the actively anti-social and harmful.

Judging from this study, therefore, prospective adopters should calculate that, under the best conditions, they have no better than three chances in four of getting a child that will turn out well Is there only one chance in a thousand that they will get an exceptionally gifted child?

The author knows a very well trained competent psy-

chiatric social worker who was employed for years by one of the best child-placing agencies in the country to find foster parents, investigate homes, and place children It was her experience—she is now married to a professional man—that, of all the children she has placed for adoption, there were only two that she would care to adopt in her own family One was the illegitimate child of a college girl by a prominent local businessman; the other was the illegitimate child of an intelligent business-school graduate student and a debutante of good family and intelligence So much of the literature on adoption has been written by social workers and child welfare "experts" who, as we have indicated, put the interests of the child "first," that there is need to correct such a limited point of view.

The needs and interests of adoptive parents should be given greater weight Social workers are so accustomed to seeing the unfortunate influences of bad social conditions on human development that they underestimate the role of heredity Insist, therefore, upon an adequate investigation of the child's inheritance. If you are not fully satisfied, do *not* take a chance This advice is particularly important for professional people who have the means and the interest to induce an able child to secure a college education and enter a profession. For the general run of people, high intelligence in a child is of less importance

TELLING THE CHILD OF ITS ADOPTION This is a problem that adoptive parents should face courageously despite the temptation to put it off lest the news be a shock to the child Even before the child can comprehend the matter, it is advisable to inform him that he has been "chosen" A new book, *The Chosen Baby,** may be read to a young child, and the remark added, "That is what you are to us, *our* chosen baby." After this the fact of adoption should be referred to casually from time to time and the circumstances of the choice explained simply, naturally, sincerely. Confidence between parents and

* By Valentina P Wasson, New York: Carrick & Evans, 1939, pp. 46 Foreword by Sophie Van S Theis of the Child Placing and Adoption Committee of the State Charities Aid.

children can be more effectively preserved if this information comes from the parents than from playmates who have learned about it indirectly. Coming in this indirect way, it may well be a shock on account of which the child's whole life-outlook may become warped.

This was true in the case of a young girl of twenty who did not know that she was adopted. When she married and went to a distant town to live with her husband, a college teacher, she visited one of her mother's friends. During the course of the visit, the friend praised the mother very highly for her kindness and altruism. "Why, just see what she has done for you! She adopted you when you were a baby!" the friend exclaimed. "My dear friend, you are wrong," the young girl exclaimed, quite upset. "I know my sister is adopted, but I am my mother's own child. I think you must be confusing me with my sister." When the friend saw that the girl did not know of the adoption, she hastily murmured an apology and added that she probably was mistaken.

But the damage was done. The matter weighed on the girl's mind. Was she really adopted? Was she her mother's own child? Finally, she could stand the suspense no longer, packed her things, and took a train clear across the continent to her mother. There she blurted out her experience and challenged her mother. The mother had to admit then that the girl was really an adopted child. This was such a shock that the girl had a nervous breakdown and had to be put in a sanatorium.

In other cases the shock may not be so severe. But, on the whole, frankness is best. No matter what attempts parents make to keep an adoption secret, through some means or other, it might leak out, and they may lose the confidence of the child as a consequence.

As the child grows older, adoptive parents should be prepared to answer: "Why was I given up?" "Where are my parents now?" "What was my mother like?" "My father?" If the couple are forearmed with the answers, honestly and sincerely told, confidence and emotional security are built up. These are perfectly natural questions for which adoptive parents should

be prepared One couple even kept photographs of the mother, the father being unknown

As a Child Is Bent. After a child has been adopted into a happy, stable home where he will have proper care and emotional security it is important for the parents to allow the child to develop according to its abilities along the lines best for him, not for the egoistic satisfaction of the parents. Why try to make a doctor or lawyer out of a boy not capable of becoming one but who might be a first-class automobile mechanic? It is the child's ambitions that are most important, not the parents'. If a child is forced into a mold for which he is not suited, unhappiness and maladjustment may result. Of course, these principles are applicable to all parent-child relationships Every college instructor has met with hundreds of boys who are being pushed through college by the social ambitions and egotism of parents who ought to realize that less maladjustment and unhappiness would result if boys and girls were not unduly pressed to satisfy the unrealized ambitions of parents Professional and business families ought to face the fact that probably most adopted children will not have the ability to make a success in the professions This is no slight on adopted children It is true of the majority of children

In spite of all this, however, there are many adoptive parents, most adoptive parents in fact, who would not give up their children for anything in the world They have brought joy and happiness to them They may also have brought sorrows and cares, but when accounts are balanced they will admit that the balance lies on the "credit" side of the ledger

CHAPTER 27

IF YOU STILL NEED HELP

How to select a marital counsellor—Typical cases—
Epilogue

IN Europe—particularly in Germany before the Nazis—and to a lesser extent in the United States, there has been a development in recent years of bureaus to offer advice to those contemplating marriage or to those having special difficulties in marriage. The majority of clients calling at marital advice bureaus are young; the emphasis, therefore, is usually on the prevention of marital disharmony.

In the United States there are as yet only a few such bureaus that are well organized. (See the list in Appendix B of those known to be functioning.) But there are also many individuals skilled in such advising. A few physicians, but by no means most of them, are qualified. Some churches and many clergymen have lately become interested in the movement. The counsellors at well established bureaus have contact with psychiatrists, medical specialists, and lawyers, when these are not on the regular staff. In the charitable clinics a small charge is customary to help defray the expenses of the work. Private advisers' fees show a great range, sometimes scaled to income.

The range of service and probably the scientific quality of the advice vary greatly. Many of the best counsellors are not physicians. Nor is it necessary that they should be. But it is desirable that they should be well balanced, well-read in the fields dealt with, and that they should possess certain personality traits such as a sympathetic nature and that indefinable quality called capacity for creative listening: the capacity to draw people out. Especially do they need to know the limits of their knowledge and when it is desirable to refer the applicant to another specialist.

It is important to avoid charlatans and those guided more strongly by commercial than scientific motives If there is no bureau near you, here are some tips on how to select a counsellor

How to Select a Marital Counsellor It is perhaps more important to offer certain principles which may assist the reader in choosing a competent marital counsellor than to offer a list of approved agencies Is the counsellor a graduate of a school of medicine, a school of social work, a theological seminary, or does he or she hold a post-graduate university degree in sociology or psychology? If the counsellor is a social worker, it is desirable that she should be a member of the staff of a recognized licensed agency where counselling is at least one phase of the agency's work If you choose a sociologist who has specialized in the family or a psychologist it is important to know what his or her professional standing is in the eyes of other professional colleagues Inquiry is called for. An independent counselling agency, if it is first rate, is likely to have an advisory board made up of reputable physicians, psychologists, sociologists, psychiatrists, gynecologists, lawyers, etc. The active workers may be mainly lay people, but they will operate under the direction of highly skilled persons professionally trained in some specialty.

It should be clearly understood, however, that many individuals in medicine, theology, psychology, sociology, and other professions may be competent enough in their special fields but not equipped either by training or personality make-up to function sympathetically and competently as marital counsellors Graduate training in a specialty, therefore, while this is indispensable as background equipment, is not a guarantee of efficient counselling service. There can be no doubt, however, that if readers ask questions along the lines outlined above, they will at least have added protection against charlatanry and general incompetence

At this stage in the development of the marital counselling movement it will be appreciated that no one specialty can justly claim a monopoly on the diagnosis and treatment of

marital problems. As we have already suggested, they may be medical, psychological, economic, sociological, or legal, or any combination of these. Experimentation by various workers is at present essential. The marital counselling movement is now only feeling its way. It is struggling to codify and improve its standards and to find more accurate, scientific solutions for the manifold problems presented No one can reasonably expect at this stage that all the evidence is in But if a counsellor is chosen wisely there will at least be the satisfaction that an intelligent effort has been made to solve problems scientifically

TYPICAL CASES. The following cases, prepared by Mrs. Emily B H. Mudd of the Philadelphia Marriage Counsel (published in *Mental Hygiene,* April, 1937), will suggest the range of problems dealt with and the manner in which the counsellor functions

The first case illustrates clearly the type of advice the marriage counselling center gives and the problems and questions discussed by a young engaged couple, both responsible in their attitudes, and both eager to lay a sound and lasting basis for a permanent marriage

"The young woman in this case was about twenty-one, attractive, well-dressed, with a friendly and open manner. The young man was a few years older, nicely dressed, quiet, and somewhat diffident at first, gradually becoming very easy and friendly. They were both holding good positions

"They said that they expected to be married as soon as their finances would permit and wanted to get as much background and knowledge as possible in regard to the relationships involved Asked whether they wished to talk to the counselor together, or one at a time, or both, the girl answered that as they had talked pretty frankly together already, she thought they would just as soon have the interview together The girl did most of the questioning in the beginning, stating that a friend, a former client, had been to the Counsel before she was married and had suggested that the present client would find it helpful to come in She said that she thought it might be a good thing if they read some books. A discussion followed

about the background of the client and her fiancé and the particular subjects in which they were interested They both wanted to understand the psychology as well as the physiology of the sexual side of marriage The counselor talked for a while about attitudes as influenced by our parents and their effect upon our feelings in the marriage relationship, about differences in the point of view of men and women, etc The clients decided to borrow several books at intervals from the library.

"The conversation then turned to the question of anatomy and childbirth and the possibility of physical examination before marriage The young man became more actively interested, asking many direct questions, particularly in regard to the technique of contraception To answer these the counselor used anatomical diagrams and described drugstore and clinic methods of birth control This appeared to be a relief to him, and he volunteered the remark that he felt it would be a good thing for his fiancée and possibly for him to go to a physician before marriage. Both clients seemed anxious in regard to first intercourse and rupturing of the hymen, about which they had heard various alarming tales Then they asked whether later on the counselor would give them the names of suitable physicians and whether they might return to borrow more books They raised the question of payment, offering $2 00 and saying that they would like to pay more as they went along and could afford it They returned the books after a few weeks

"A year later this young couple referred two friends of theirs, an engaged couple, who quoted them as saying that they had been helped so much by their interview before marriage that they wanted their friends to talk with the counselor before they got married

"A month after that this client came into the office with her sister, who was to be married in two weeks. She said, 'You helped me so much last year before I was married that I wanted my sister to be sure to talk with you before her wedding. I have not discussed anything with my sister, myself, as I thought it would be best for her to talk directly with you'

"The client explained that she had not gone to see the

doctor recommended until a week after her marriage, but had liked her very much. She looked well and happy. She smiled and laughed a great deal, spoke of her husband most affectionately, and in general gave the impression of a well-adjusted young woman."

The case below is entirely different in nature. It reveals the problem a frail young woman had to face in her married life and how it was successfully dealt with by the marriage counselling center.

"A frail, sensitive, pitifully tense young woman was referred to the Marriage Counsel by a medical clinic. In her ten years of marriage she had produced with great difficulty five full-term babies, none of whom had lived more than a few weeks. Twice she had all but lost her life. After each delivery she was told by the physician in charge that, because of abnormalities, she should have no more babies. Since her husband had lost his job two years ago, they had wandered from town to town, eking out a meager existence. A progressive social worker had referred her six months ago to a birth control clinic, where the doctor had told her that her anatomical condition made her a poor bet for modern methods of contraceptive technique. However, Mrs. E. had been successful for three long and happy months. Now, in spite of all her conscientious following of instructions she was again pregnant, and desperately determined not to endure what was predestined to failure. She would gladly go to a good hospital—if not, whatever was available in the neighborhood. She asked to be sterilized. In spite of the suffering evident on her whole face, there was no whining, no bitterness, no loss of self-control. Her quiet courage and determination under the circumstances seemed amazing.

"After explaining her situation, we were able to obtain the active cooperation of the head of the obstetrical service of a good city hospital, and the head maternity social worker. Mrs. E. was examined and found to have a heart condition warranting therapeutic abortion. By odd jobs she herself saved her registration fee of $5.00. Friends, interested in the Mar-

riage Counsel, raised the remaining $25, to cover hospitalization This was advanced as a loan, at Mrs E's request. Mrs E. was sterilized and convalesced well A report from the physician stated that the conditions found at operation showed that she would again have been unable to produce a living child—would never have been able to A few weeks later Mrs. E wrote, 'When I am able to go back to work, I will communicate with you to make a plan for repaying you. The financial support you gave me we can repay, but your kindness—never'"

The last case given below again shows the advice a marriage counselling center can give in more general problems of personality adjustment

"Mrs G. was a college graduate of over thirty. She had always been rather unhappy and lonely. In spite of the fact that her seven years of marriage had been full of frustrations and difficulties, about which she had sought the help of many specialists, and that her husband was desirous of a separation, she came to the Marriage Counsel office, saying she did not want a divorce At the end of the first interview Mrs. G asked for an evaluation of the total situation The counselor explained that she thought this was impossible without much greater study, and that she doubted if Mrs G was interested in making use of any such study, as she had already tried several experts If she cared to find out details regarding the legal situation for a woman in her position, should her husband precipitate matters, we could talk this over with a reliable lawyer cooperating with the Counsel, and report to her. Mrs G appeared most desirous and appreciative of this She was made to feel free to utilize the Counsel for help in specific situations as they might arise, and arrangements were made for some payment at each visit.

"Over a period of a year Mrs G used the Counsel, limiting herself very definitely to the use that we had made available. She followed up the legal situation, getting a clear picture of that, read some books in the lending library, and then asked for a second interview, further to clarify her point of view,

in order finally to reach her own decision. In all, Mrs. G. made five visits, the first three at monthly intervals, the last two about four months apart She used these interviews to redefine her situation as it changed, to discuss attitudes about all of this, to test her own strength and independence Between visits she occasionally utilized the office by letter and telephone, as a source of information about organization group work, specialists, and so forth.

"By working on one phase of the total problem at a time, Mrs. G. seemed able at the end of a year to accept the fact which had been apparent to the experts whose advice she had sought before coming to our office—namely, that because of her own personality difficulties, and her husband's abnormalities, separation or divorce was an inevitable step in the solution of her marital situation Her last message stated that this step was now being undertaken, and that she was standing it well."

From the above cases we get some conception of the wide variety of problems upon which a marital counsellor is ordinarily prepared to furnish help There are, of course, many others not dealt with in these cases Especially if problems are brought early to a competent counsellor, and if full cooperation is given by the applicant, much personal suffering and even some tragedies can be prevented There can be little doubt that a steady growth of such bureaus in the United States would promote marital harmony and healthy family life, both of which help to lay a better foundation for the rising generation

Epilogue. We have now finished our survey of some of the factors—economic, psychological, social, and sexual—that bear upon the founding and maintenance of happy adjustment in marriage With a subject as wide and deep as life itself it is quite impossible for any single author to know or to discuss in illuminating fashion all the circumstances that have a bearing on the problems treated in this book. But it is hoped that our consideration of them has been reasonably thorough (space considered); that the accounts of various subjects have been balanced, objective, and sensible, based on facts and interpreted

in the spirit of modern science It has been necessary to omit material on anatomy and physiology, on pregnancy, child care, divorce and numerous other subjects. My object has not been to write an encyclopedia but rather to focus on the most pressing problems of young people who are either about to marry or who have recently married. Throughout the book an attempt has been made to fix attention on certain suggestions believed to be constructive in an effort to promote marital adjustment and happiness. The emphasis has been upon practical suggestions rather than on academic matters. Another purpose has been to tie up counsel to the individual with some perspective on the broad issues involved. For we cannot live to ourselves alone except as we shrivel spiritually Man lives with, by and (we hope) increasingly for others. And that is as it should be.

APPENDIX A

SCORES FOR TESTS

MARITAL PREDICTION TEST

PART ONE ITEMS FOR PROSPECTIVE HUSBAND

Do not read this score key until you have taken the tests in Chapter 6

Items Used in Man's Test	*Score Value Assigned*
1 Your place in the family	
Only child	0
Oldest	15
Middle	20
Youngest	15
No reply	0
2. Most attached to which sibling	
Only child	0
No special attachment but have sibling	20
Older brother	20
Older sister	10
Younger brother	15
Younger sister	15
No reply	10
3 Area of residence	
Large city: rooming-house area	0
Large city: area of "first settlement"	15
Large city: area of "second settlement"	20
Large city: hotel area	0
Large city: apartment and apartment hotel	10
Large city: private homes of "better class"	20
Large city: suburbs	30
Other city	10
Small town (not suburb)	20

Items Used in Man's Test	*Score Value Assigned*
Rural	5
No reply	5
4. Education	
Grades only	5
High school	0
Professional school (not collegiate grade)	0
College	15
Graduate or professional work (beyond college)	20
No reply	0
5. Occupation	
None	0
Unskilled industrial work	0
Clerical and semiskilled	0
Farmer	20
Small trades and skilled	0
Sales and semiprofessional	5
Professional—teaching	20
Professional—ministry	20
Professional—law, medicine, etc.	5
Large business management	20
Other—student, etc.	0
No reply	0
6. How long held position	
Less than one year	10
One to less than three years	0
Three to less than five years	10
Five to less than seven years	5
Seven years or more	0
No reply	0
7. Work record	
Never worked because in school	15
Worked only at school vacation time	15
Irregularly employed or continually changing job	0
Regularly employed	20
No reply	0
8. Monthly income	
None	10
Under $150	0
$150 to under $250	10

Items Used in Man's Test	*Score Value Assigned*
$250 to under $350	5
$350 or more	0
No reply	0
9. Amount saved	
None	0
Under $1,000	10
$1,000 to under $2,000	20
$2,000 to under $3,000	15
$3,000 or over	10
No reply	0
10 Financial index (obtained by dividing total savings at marriage by the product of his age at marriage and his monthly earnings at time of marriage)	
0 (no savings)	0
.01 to 29	15
30 or over	20
No reply	5
11. Family background index (to get index, see pages 405-406)	
Under 70	0
70 to 89	5
90 to 119	25
12 Religious activity (church attendance)	
Member, but amount of church attendance not stated	5
No attendance at church affairs	0
Attend not more than once a month	10
Attend two or three times per month	20
Attend four or more times per month	15
No reply	0
13. Age when stopped going to Sunday school	
Never went	10
Stopped at 10 years or younger	0
Stopped at 11 to 18 years of age	25
Stopped at 19 years of age or over	30
No reply	10
14 Number of social organizations of which a member	
None	0
One	10

Items Used in Man's Test	*Score Value Assigned*
Two	15
Three or more	20
No reply	0
15. Childhood and adolescence spent chiefly in	
City	0
Small town	10
Country	30
No reply	0
16. Number of women went with steadily before marriage	
None but woman intend to marry	10
One	5
Two to three	5
Four to five	5
Six or more	0
No reply	0
17. Number of men friends	
Almost none	0
A few	5
Several	20
Many	20
No reply	0
18. Marital status of parents	
Married, both living	5
Separated or divorced	0
Both dead	5
Father dead	15
Mother dead	20
No reply	5
19. Rating of happiness of parents' marriage	
Very happy	40
Happy	20
Average	10
Unhappy	20
Very unhappy	0
No reply	20
20. Amount of conflict with father	
None	40
Very little	30

Items Used in Man's Test	*Score Value Assigned*
Moderate	30
A good deal	15
Almost continuous	0
No reply	20
21. Extent parents favor your marriage	
Both favor it	20
One favors it; other does not	0
Both do not favor it	5
No reply	5

SCORES FOR CALCULATING HUSBAND'S FAMILY BACKGROUND INDEX

A. *Religious preference of parents*

Both none	2
Both Protestant	5
Both Catholic	2
Both Jewish	5
Any other combination	2
One or both no reply	2

B. *Similarity of religious preference of father and mother*

Same	10
Different	3
One or both no reply	5

C. *Mother's religious activity*

Inactive	2
Moderately active	5
Quite active	4
No reply	2

D. *Father's religious activity*

Inactive	2
Moderately active	5
Quite active	4
No reply	2

Both no reply . . 2

E. *Similarity in religious activity of mother and father*

Same	5
Moderate difference	4
Great difference	1
One or both no reply	2

F *Mother's education*

College	10
High school	6
Grammar or none	5
Mother no reply	1

G. *Father's education*

College	10
High school	4
Grammar or none	8
Father no reply	8

Mother and father no reply . 4

H. *Order of birth of mother*

Only	2
Oldest	4
Middle	8
Youngest	10
Mother no reply	2

I *Order of birth of father*

Only	4
Oldest	5
Middle	6
Youngest	10
Father no reply	4

Mother and father no reply . . . 2

J. Size of mother's family

6 or more children	10
4-5 children	8
2-3 children	6
Only child	3
Mother no reply	4

K. Size of father's family

6 or more children	10
4-5 children	6
2-3 children	6
Only child	4
Father no reply	6

Mother and father no reply 4

L. Father's occupation

Retired	8
Laborer	3
Clerical	1
Farmer	2
Trades	2
Sales	3
Teacher	4
Minister	10
Medicine, law, etc	3
Big business and management	2
Other	1
No reply	2

M. Economic status of family

Very wealthy	2
Wealthy	2
Well-to-do	5
Comfortable	5
Meager	4
Poor	4
No reply	2

N Social status of family

Leading family	5
Upper class	5
Reputable	5
Inferior or below	0
No reply	1

O Appraisal of parents' marriage

Very happy	10
Happy	8
Average	4
Unhappy	6
Very unhappy	4
No reply	4

TOTAL ☐

Now add up your total for this section to get your family background index number Then refer to No 11 on page 403 for the score values assigned to different sizes of index. For example, if your index is below 70, the score value assigned is 0; if your index is between 70 and 89, the score value assigned is 5, etc.

PART TWO. ITEMS FOR PROSPECTIVE WIFE

Do not read this score key until you have taken the tests in Chapter 6

Items Used in Woman's Test	*Score Value Assigned*
1 Your place in the family	
Only child	0
Oldest	10
Middle	10
Youngest	0
No reply	0
2. Area of residence	
Large city rooming-house area	5
Large city area of "first settlement"	10
Large city area of "second settlement"	5
Large city. hotel area	5
Large city apartment area and hotel apartments	0
Large city private homes ("better class")	15
Large city suburbs	15
Other city	10
Small town (not suburb of large city)	20
Rural	15
No reply	5
3 Education	
Grades only	0
High school	20
Professional school (not collegiate in grade)	20
College	30
Graduate or professional work	40
No reply	10
4. Occupation	
None	5
Domestic service	0
Unskilled industrial work	0
Clerical and office, semiskilled operators, etc	0
Skilled office secretaries, stenographers	10
Nursing	5
Professional—teaching	20
Professional—social work	5

Items Used in Woman's Test	*Score Value Assigned*
Professional—law, medicine, etc	0
"Business woman" (higher paid)	10
Other—student, etc.	5
No reply	10
5. How long held present position	
Less than one year	0
One to less than three years	5
Three to less than five years	10
Five to less than seven years	10
Seven years or more	20
No reply	0
6 Was your occupation in harmony with your vocational ambitions?	
No vocational ambition	0
Same	20
Slightly different	20
Great difference	5
No reply	15
7. Your work record	
Never worked	0
Occasionally employed	5
Regularly employed	15
Housekeeper at home	10
Outside interest activity (not gainful employment)	20
No reply	10
8. Income	
None	10
Under $100	0
$100 to $150	15
$150 to under $200	20
$200 or over	20
No reply	0
9. Amount saved	
None	15
Under $500	5
$500 to under $1,500	15
$1,500 to under $2,500	0

Items Used in Woman's Test	*Score Value Assigned*
$2,500 or over	20
No reply	5
10. Family-background index (to get index, see pp 411-412)	
Under 55	0
55 to 64	15
66 and over	25
11. Religious activity (attendance)	
Member no church attendance stated	5
Never attended	0
Attend not more than once per month	5
Attend two to three times per month	5
Attend four or more times per month	10
No reply	5
12. Age when stopped attending Sunday school	
Never went	0
Stopped at 10 years of age or younger	0
Stopped at 11 to 18 years of age	10
Stopped at 19 years of age or over	20
No reply	0
13. Number of social organizations of which a member	
None	5
One	0
Two	10
Three or more	20
No reply	0
14. Number of women friends	
Almost none	0
A few	20
Several	10
Many	30
No reply	20
15 Rating of your parents' marriage	
Very happy	20
Happy	20
Average	10
Unhappy	0
Very unhappy	0
No reply	0

Items Used in Woman's Test	*Score Value Assigned*
16. Amount of conflict with your father	
None	10
Very little	0
Moderate	0
A good deal	5
Almost continuous	5
No reply	5
17 Do parents favor your marriage?	
Both favor it	20
Father favors it, mother does not	15
Father does not favor it, mother does	0
Both do not favor it	5
No reply	5

PART THREE ITEMS COMMON TO PROSPECTIVE HUSBAND AND WIFE

1. How long have known one another?	
Under six months	0
Six months to less than two years	10
Two years to less than five years	20
Five years to less than ten years	25
Ten years or more	30
No reply	20
2 How long have you been "keeping company"?	
Under one year	0
One year to under three years	5
Three years and over	20
No reply	5
3. Difference in age between husband and wife	
Same age	5
He is older by one to three years	5
He is older by four to seven years	0
He is older by eight or more years	10
You older by one to three years	10
You older by four or more years	30
No reply	0

SCORES FOR CALCULATING WIFE'S FAMILY BACKGROUND INDEX

A. *Religious preference of parents*

Both none	3
Both Protestant	5
Both Catholic	2
Both Jewish	2
Any other combination	2
One or both no reply	2

B. *Similarity of religious preference of father and mother*

Same	4
Different	3
No reply (one or both)	5

C. *Mother's religious activity*

Inactive	2
Moderately active	5
Quite active	4
Mother no reply	3

D. *Father's religious activity*

Inactive	3
Moderately active	5
Quite active	4
Father no reply	5

Both no reply 4

E. *Similarity in religious activity of mother and father*

Same	5
Moderate difference	3
Great difference	2
One or both no reply	3

F. *Mother's education*

College	4
High school	1
Grades or none	3
Mother only no reply	5

G. *Father's education*

College	4
High school	4
Grades or none	5
Father only no reply	5

Mother and father both no reply 2

H. *Order of birth of mother*

Only	3
Oldest	5
Middle	5
Youngest	2
Mother no reply	5

I. *Order of birth of father*

Only	2
Oldest	3
Middle	5
Youngest	5
Father no reply	5

Mother and father both no reply 2

J. *Size of mother's family*

6 or more children	5
4-5 children	4
2-3 children	3
Only child	5
Mother no reply	3

K. *Size of father's family*

6 or more children	5
4-5 children	4
2-3 children	3
Only child	5
Father no reply	4

Mother and father both no reply 2

L. *Father's occupation*

Retired	8
Laborer	2
Clerical	3
Farmer	3

L. *Father's occupation* (Cont.)

Trades	3
Sales	4
Teacher	5
Minister	5
Medicine, law, etc	5
Big business and management	2
Other	2
No reply	3

M. *Economic status of family*

Very wealthy or wealthy	4
Well-to-do or comfortable	5
Meager or poor	3
No reply	4

N. *Social status of family*

Leading family or upper class	5
Reputable	4
Inferior or below	1
No reply	3

O. *Appraisal of parent's marriage*

Very happy	5
Happy	4
Average	4
Unhappy	3
Very unhappy	3
No reply	4

TOTAL ☐

Now add up your total for this section to get your family background index number Then refer to No. 10 on page 409 for the score values assigned to different sizes of index For example, if your index is below 55, the score value assigned is 0; if your index is between 55 and 64, the score value assigned is 15, etc.

MARITAL ADJUSTMENT TEST

State Approximate Extent of Agreement or Disagreement on Following Items

Check Each Column	*Always Agree*	*Almost Always Agree*	*Occasionally Disagree*	*Frequently Disagree*	*Almost Always Disagree*	*Always Disagree*
1. Handling family finances	10	8	6	4	2	0
2. Matters of recreation .	10	8	6	4	2	0
3 Religious matters . . .	5	4	3	2	1	0
4 Demonstration of affection . . .	10	8	6	4	2	0
5 Friends	10	8	6	4	2	0
6 Intimate relations . .	10	8	6	4	2	0
7 Caring for the baby* . .						
8 Table manners . . .	5	4	3	2	1	0
9 Matters of conventionality . . .	10	8	6	4	2	0
10 Philosophy of life .	10	8	6	4	2	0
11 Ways of dealing with in-laws	10	8	6	4	2	0

* This item was not used in the adjustment score, since such a high proportion of the Burgess and Cottrell sample had no children

12. When disagreements arise, they usually result in:
    - Husband giving in 1
    - Wife giving in 1
    - Agreement by mutual give and take 10
13. Do husband and wife engage in outside interests together?
    - All of them 10
    - Some of them 10
    - Very few of them 1
    - None of them 0
14. In leisure time husband prefers.
    - To be "on the go" . . . .
    - To stay at home . . . .

    Wife prefers:
    - To be "on the go" . . . .
    - To stay at home . . . .

(If both husband and wife have checked "stay at home," 10 points are given, if both checked "on the go," 3 points. If they checked differently, 4 points)

15. Do you kiss your husband (wife)?
    - Every day 10
    - Occasionally 1
    - Almost never 0
16. Do you confide in your husband (wife)?
    - Almost never 0
    - Rarely 0
    - In most things 10
    - In everything 10
17. Do you ever wish you had not married?
    - Frequently 0
    - Occasionally 2
    - Rarely 4
    - Never 15
18. If you had your life to live over, do you think you would
    - Marry the same person? 15
    - Marry a different person? 1
    - Not marry at all? 0
19. What things annoy and dissatisfy you most about your marriage?
    - Nothing listed 10
    - One listed 7
    - Two listed 1
    - Three or more listed 0
20. What things does your husband (wife) do that you don't like?
    - Nothing listed 7
    - One listed 5
    - Two listed 1
    - Three or more listed 0
21. Do you often feel lonesome, even when you are with other people?
    - Yes 0
    - No 1
    - ? 0
22. Are you usually even-tempered and happy in your outlook on life?
    - Yes 1

No 0
? 0

23. Do you often feel just miserable?
Yes 0
No I
? 0

24 Does some particular useless thought keep coming into your mind to bother you?
Yes 0
No I
? 0

25. Are you usually in good spirits?
Yes I
No 0
? 0

26 Do you often experience periods of loneliness?
Yes 0
No I
? 0

27 Are you in general self-confident about your abilities?
Yes I
No 0
? 0

APPENDIX B

LIST OF FUNCTIONING MARRIAGE AND FAMILY COUNSELLING SERVICES IN THE UNITED STATES

SINCE marriage and family counselling services are as yet for the most part in the organizing stage in the United States, they vary greatly in their community structure, their approach, and the type of service they are able to render. The list below represents those known to be operating on Nov 10, 1940 Most of these are available to all classes in the community and charge a fee which is on a sliding scale. This list does not include the extensive marriage and family consultation work being carried on through workers in family societies, public charity organizations, psychiatric or mental hygiene institutes, child guidance clinics, or teaching institutions, unless definite marriage or family counselling services are announced by such groups. A few private services are included here and are marked with asterisks for the convenience of the reader.

California

American Institute of Family Relations,
607 S Hill Street,
Los Angeles
Paul Popenoe, Sc D , Director.

Family Relations Center,
1200 Hyde Street,
San Francisco.
Henry M. Grant, Executive Director.

Alto Psychologic Center,
126 Post Street,
San Francisco.
Herman de Fremery, Chief Psychologist.

Connecticut

Marriage Counsel Bureau,
38 Arch Street,
Greenwich
Dr A. Louise Brush, Psychiatrist and Counsellor
Mrs Margaret Ensign, R N., Assistant Counsellor.

Illinois

Association for Family Living,
Marriage and Family Consultation Service,
220 South State Street,
Chicago.

The Marriage Embassy,
A School of Marriage,
4846 Sheridan Road,
Chicago.
A. H. Hirsch, Ph D., General Director
Ernest W Burgess, Ph.D , Research Director.

Harriet Mowrer, Ph D ,*
2214 Sherman Avenue,
Evanston.

Massachusetts

Counseling Service,
Massachusetts Society for Social Hygiene,
316 Huntington Avenue,
Boston
Lester W. Dearborn, Chief Consultant.

Marriage Study Association,
41 Bay State Road,
Boston.
James C Janney, M D., Secretary.

Michigan

Advisory Service,
Merrill-Palmer School,
71 East Ferry Avenue,
Detroit.
Robert G. Foster, Ph D., Director.

* Private service rather than an organization.

The Marriage Counsel Clinic,
863 Fisher Building,
Detroit.
David C Kimball, A.B., M D., Clinician.

New York

Family Guidance and Consultation Service,
Child Study Association of America,
221 West 57 Street,
New York City.
Mrs Sidonie M. Gruenberg, Director.

Marriage Consultation Center,
The Community Church,
550 West 110 Street,
New York City
Hannah and Abraham Stone, M D , Directors.

Bureau of Marriage Counsel and Education for Social and Family Relations, Inc.
54 West 53rd Street,
New York City
Valeria Hopkins Parker, M D , Director.

Jewish Institute on Marriage and the Family
40 West 68th Street,
New York City
Dr. Sidney E Goldstein, Chairman

Dr. Theodore V Moldenke, Th D , Ed D
Sewanhaka High School for Adult Education,
Central High School District No. 2,
Floral Park, Nassau County, New York

Institute of Euthenics,
Vassar College,
Poughkeepsie.
Ruth Wheeler, Ph D , Director.
Mary Shattuck Fisher, Ph D , Associate Director.
(In session for six weeks every summer)

North Carolina

Marriage and Parenthood Consultation Service,*
Chapel Hill
Ernest R Groves, Ph.D , Director.
Gladys H Groves, Ph.D , Director

Council on Family Relations,
Greeneville
M L Wright, General Counsellor
Frederick P Brooks, M D , Medical Counsellor.

Ohio

Cincinnati Social Hygiene Society,
312 West 9th Street,
Cincinnati
Richard W. Weiser, M D., Executive Secretary.

Family Consultation Service,
312 West 9th Street,
Cincinnati
Mrs Anna Budd Ware, A B , Director.
Marian S Goodwin, A B , M A., Co-Director.

Maternal Health Association,
2101 Adelbert Road,
Cleveland
Gladys Gaylord, Executive Secretary.

John A. Reimers, Ph D ,*
Assistant Professor of Social Case Work,
School of Social Administration,
Ohio State University,
Columbus.

Oregon

Oregon Social Hygiene Society,
376 Pittock Block,
Portland
Fred B Messing, D P E., Director.

* Private service rather than an organization.

Pennsylvania

Marriage Counsel,
253 South 15th Street,
Philadelphia.
Counsellors:
Mrs. Emily B H. Mudd, M.S.W., Director.
Elizabeth Kirk Rose, M D.
Mrs. John Scott Overton, A.B.
Louis H Twyeffort, M D.

Family Guidance Counsel,
119 East Fayette Street,
Uniontown.
Rabbi Samuel Glasner, Director.

INDEX